काबल धर मुक्कलिय आनि अटक्किय रेवापर ॥
उनंमत्त होय सरिता उतरि गति सवेग काबल गयो ॥
निद्रित जगाय अद्धिय रजनि आलम प्रति दल अप्पयो॥१॥
बुल्लो दे कग्गरहिँ छत्र भग्गत भुव भग्गी ॥
अब निवारि निंदरिय पिक्खि पव्वय दव लग्गी ॥
घर फुट्टा जर फुट्टि फुट्टि हिंदुव मिलि आवत ॥
आजम अन्नय सिचान परत दिल्लिय पारावत ॥
बंधहु प्रपंच मंडहु बिहित यह न बेर फिरि आयहै ॥
बिन जतन गये लव लव बहुरि दूजे कलप दिखायहै ॥२॥

[निःशाणी]

अद्धीके घरियारपैँ चर पत्र लगाया ॥
धूजि थरत्थर नाजरूँ अवरोध चलाया ॥
साहबहादुर सैँनसैँ बरजोर जगाया ॥
जिन खंधैँ सुख निंद ते परलोक पलाया ॥ ३ ॥
जिनकी बाहर चाहते तिन धाट बनाया ॥
अब उट्ठैही अप्पनाँ नहिँ छत्र पराया ॥
योँसुनि बेगम अप्पनी कर आँचि उठाया ॥
जाकोँ कंत कहावते यह बासर आया ॥ ४ ॥
लाय सिलग्गी भक्खरोँ तुम निंद लुभाया ॥
योँ सुनि आलम जग्गिकैँ अवरोध उठाया ॥
कग्गर बंचि प्रपचकैँ बुधसिंह बुलाया ॥

कृमिजा" इतिहैमः ॥ रेवा नर्मदा. दल ।अ. अप्पयो दयो ॥१॥ बुल्लोइति ॥ भग्गत नष्टहोत. निंदरिय निद्रा. सिचान लोकमें बाज. पारावत कपोत. "पारावत. कलरवः" इतिहैमः ॥ बिहित योग्य ॥ २ ॥ निःशाणी ॥ अद्धीकेइति ॥ अद्धी अर्धरात्रि. देशीप्राकृत. ताके चर दूत. (नाजर) यावनी. अंतःपुर में जायबे योग्य नरवेसधारी नपुंसक तिननैं. अवरोध अंत पुर तासैं. "शुद्धान्तश्चावरोधश्चेत्यमरः ॥ सैंन सयन तासौं. निंद निद्रा ॥३॥ जिनकीइति॥ बाहर सहाय. धाट लोकमें धाड़ा. बासर दिन॥४॥ लाय सिलग्गीइति॥ भक्खर पर्वत. देशीप्राकृत.

नैंन मिलाया नेहसैं भुज भार झिलाया ॥ ५ ॥
बस सताके वीर तू कहि यों बिरुदाया ॥
हिंदू भूप हराम है सब फोरि मिलाया ॥
दिल्लीके कुच कुंभपैं कर आजम लाया ॥
जोर जनानैं जारका नहिं जात पचाया ॥ ६ ॥
अब तेरे भुजदंडपैं रसवीर बढाया ॥
बाजीमैं और न रहया पण प्राण लगाया ॥
हारैं भुग्गन हूर है जितैं जस माया ॥
यों सुनि राव उछाहकैं कर मुच्छ मिलाया ॥ ७ ॥
मुट्ठि सम्हारी सभरी रस सत्त ७ उडाया ॥
थाई वीर रउद्रका इक्कैं छक छाया ॥
ज्यौं कंदल कनउज्जके भट सजमजाया ॥
कै गोरी सुरतानपैं गजि कन्ह धकाया ॥ ८ ॥
ज्यौं जभासुर जगपैं सतसत्त सुहाया ॥
कै द्रोणाचल लैनकों कपिराज कसाया ॥
पीवन पारावार कैं घटजात घुमाया ॥
कै बन सुत्ता बिंटिकैं मृगराज जगाया ॥ ९ ॥
कै काकोदर चपतैं फनफैल बनाया ॥

नमैं अवरोधउठाया दूर किया कग्गर पत्र फैकारिकैं बुधसिंह बुंदीकस्वा
ाकों फलाया दिया॥५॥ वसइति॥ सताके शत्रुशल्यके जोर पराक्रम पचा
ा पाचन किया दिल्ली मेरें भोगने योग्य स्त्री रूप है;ताके कुच कुंभपैं आजम
स्ताक्षेप कियो चाहत है यातैं जनानेके जार आजमका जार मेरे पाचन नहीं
ोता ॥ ६ ॥ अबइति ॥ बाजी खेल तामैं पण दाव युग्गन भोगियेकों हूर अ
सरा वाकी माया वैभव ॥ ७ ॥ मुट्ठिइति ॥ खड्गकी यह शोभ सत्त सप्त ७
ाई स्थाईभाव वीररउद्रका वीररस रौद्ररस का उत्साह अरु क्रोध यह अ
ं गोरी सुरतानपैं कन्ह पृथ्वीराज चहुवानका काका ॥ ८ ॥ ज्यांइति ॥ स
तसत्त सतसत्र (इन्द्र) शुक्रप्राकृत, कपिराज हनुमान कसाया सज्जीभूत हुआ
ारावार समुद्र ताकों घट कलस तासों जात जन्में ऐसे अगस्त्य, घुमाया
उत्साह युक्त भया ॥९॥ कैइति ॥ काकोदर सर्प ताकों, लायात बारूद तामैं-

सोर किधौं सावातसैं दव हुंग मिलाया ॥
जमका शृंखल जानिकैं कहि पाव दवाया ॥
यौं सुनि दत्तैं संभरी मन जंग लगाया ॥ १० ॥
सोक सिलग्गा साहका कहि बैन समाया ॥
सो सिर जोलौं कंधपैं सुख अप्प कुमाया ॥
शही ज्यौनपनाहकी हम बीर सिवाया ॥
धर्गहरामी सेर ठहे कोऊ न कहाया ॥ ११ ॥
अग्गैं पंडव जित्तिकैं कुरवंस नसाया ॥
रावन किन्नी रामसौं सोही फल पाया ॥
पापन पक्की होनदे दल होहु सिवाया ॥
ऐंचौं आजम कंठमैं धरि चाप अधाया ॥ १२ ॥
यौं सुनि साह सिराहकैं तजबीज लगाया ॥
सेनानी संभर किया चतुरंग सजाया ॥
बड्डे प्रात प्रयानकौं फरमान चढाया ॥ १३ ॥
जंग नग्गरौं नद्द ठहे धर काबल छाया ॥
सिंधू राग रनंकिया चढि सोर सिवाया ॥
डेरौं डेरौं सज्ज ठहे नर बाजि कसाया ॥
जालग तीजे जामका घग्घियार बजाया ॥ १४ ॥

हुग दांग (छिमली) जानि इच्छा पूर्वक ॥ १० ॥ सोकइति ॥ सिलग्गा प्रज्वलितभया. ससाया सासित किया. सोसिर सेरो मस्तक कंधपै कांधे पर. तोलों यह यंप. कुमाया संचय किया. ज्यान प्राण मनुष्यके तिनके. पनाह रक्षक. ऐसे आप. तिनकी है षष्ठीतत्पु. ज्यान पनाह ए दोऊ यावनी लब्ज हैं. सिवाया सवसों सिवाय. सेर सिंह यावनी ॥ ११ ॥ अग्गैइति ॥ पक्की प्रारब्धकी सिद्धि. दल सेना. होहु भवतु धातुको लोट् लकार के प्रथम पुरुषके भवतु प्रयोग को प्राकृत है. अधाया अतृप्त ॥ १२ ॥ यौंइति॥ सिराह प्रशंसा ताकों. कै करिकै. आम बडी सभा तजबीज देशीप्राकृत. प्रारब्धकी रचना विशेष. सेनानी सेनापति. संभर बुधसिंह. फरमान हुकम ॥१३॥ जंगइति ॥ रनंकिया यह शब्द को अनुकरण. कसाया सज्जभया. जाम प्रहर ॥ १४ ॥ केइति ॥ घेरों घेरे ह-

के गज घेरों घल्लिकैं चेरों गरदाया ॥
काहू व्याज प्रपचकैं चिरुदाय मिलाया ॥
अग रुमालों मंजिकैं रजरग उडाया ॥
दै दै मनके मानके सजाव खिलाया ॥ १५ ॥
के जल देगों पायकैं सुख लोभ लगाया ॥
अग्गें रक्खि गजीनकों विसवास बढाया ॥
झपि महाउत कधपैं गति वदेर आया ॥
जगी ह्रोदन मढिकैं गुड नद्ध वनाया ॥ १६ ॥
घाय घग्गारी घोरज्यों घालि घट झिलाया ॥
चाप तुपकों आदिकैं सब हेति सजाया ॥
वधि वरत्तों सज्जकैं वड वाक लगाया ॥
फोजों नायक भार ए सिर तेरे आया ॥ १७ ॥
यों कहि कथा थप्पिकैं रन रग रचाया ॥
जगी अदुक डारिकैं आलान छुराया ॥
वारी वाहिर वाकतें रचि डाक डगाया ॥
केक मतगों तुगके धुमदड झुकाया ॥१८॥
मेघाडबर के कसे सिर अवर लाया ॥
केक हवद्दों सज्जके गल गज्ज मचाया ॥
यों नभ अवर अभ्र भू १०००प्रिमान गिनाया ॥

सी क अनुचर तिनने व्याज कपट. रुमाल वस्त्र के खंड विशेष तिनकरि सं-
जाप लग्याव लाक सारा तथा हलवा खिलाया मद्वशकराया ॥ १५ ॥ केइ
ति॥ देग देशीप्राकृत बहुत बडे पात्र विशेष तिनको गजी हस्तिनी तिनकों
गति तरह पद्र पार ताकी गुड हस्ती की सिलाह तिनकरि मद्ध वध ॥१६॥
घायइति ॥ हेति आयुध वरत रस्से तिनकरि वद्ध बडे. वाक वचन ॥ १७ ॥
'याइति ॥ अदुक जंजीर आलान बंधनकोखूटा तथा लभा "आलान बंधनस्त
भ" इतिहैम ॥ वारी हस्तीको ठान ताके "वारी तु गजबन्धभू" रितिहैम॥
तुंग ऊंचे ॥ १८ ॥ मेघइति ॥ मेघाडंबर छायावारे होदा ताके अपावार्मी

हत्थी आलमसाहके यन एह सजाया ॥ १९ ॥
लक्ख१०००००तुरंगों लैनपैं वर साज बनाया ॥
देत खलीनों दोरपैं नगि कंध नमाया ॥
जंग पलानों डारिकैं कसि तंग मिलाया ॥
घोर घमंकी पक्खरों छोनीतल छाया ॥ २० ॥
रंग बिरंगे राह के गजगाह लगाया ॥
छोरि दुवग्गों ठानतैं चर बाहिर लाया ॥
तुक्कि मलंगों तुंगपैं रवि रुक्कि लुभाया ॥
तोप हजारा१०००तीरकैं चहकात चलाया ॥ २१ ॥
डारि दवाली बीर जे सजि जंग लुभाया ॥
साहबहादुर सज्ज ह्वै अब बाहिर आया ॥
बारनपट्ट अरोहिकैं फरमान लगाया ॥
कुंच नकीबो बुल्लिकैं हरवल्ल बढाया ॥
एते मान बिहानका घरियार बजाया ॥
पाय रकाबों मंडिकैं चढि बीर चलाया ॥
छोनि सचक्की भारकैं फन नाग डगाया ॥
चौंके दिग्गज चिक्करैं उर कल्प भ्रमाया ॥ २३ ॥
ध्यान समाधी छोरिकैं मन चित्र बढाया ॥

के कितेकनपैं. नभ शून्य०.अंबर शून्य०.अभ्र शून्य०.भू एक१. ऐसे हजार१००० ॥ १९ ॥ लक्खइति ॥ लैन पंक्ति. तिनपैं. खलीन लगाम तिनकों ॥ २० ॥ रंगइति ॥ राह रीति. तिनकरिकैं. दुवग्गों दोऊ तरफ पवके अगारी के रस्से तिनकों. तुक्कि तुलितुलिकैं. तुंग ऊंचो. तिनपैं. तोपहजारा तोपनको हजार. हजार १००० तोप यह अर्थ. तीरकैं तीर उनको निवाला बादरूकी थैली अरु गोला सो उनमें डारिकैं. चहकात चहकनों. चरखनके शब्दको अनुकरन॥२१॥ डारिइति ॥ दवाली मेखलाकों. देशीप्राकृतमैं. बारनपट्ट मुख्यबारन हस्ती ता पैं ॥ २२ ॥ एतेइति ॥ कल्प प्रलयकाल ॥ २३ ॥ ध्यानइति ॥ समाधि समाधि

तद्दिन धूरि वितानके घन भान पिधाया ॥
सारद पुरिणामका ससी जिम वारद छाया ॥
दक्खि धरित्ती पक्खरों इक ओघ लखाया ॥ २४ ॥
सेलों अंबर ढकिया नभचार रुकाया ॥
झंड वात झपेटकैं फीलों फहराया ॥
तारा उत्तरि पोडकी सुभ सौंन वताया ॥
दक्खिन भारद्वाजनैं हुन लाभ दिखाया ॥ २५ ॥
यों दरकुच अनीकनैं लाहोर निराया ॥
पंजाबी दल बुल्लि कैं कछु तत्थ मिलाया ॥
आलमसाह सिपाह यों सजि सेर सिवाया ॥
दिल्लीके सिर दावपैं करि चाव चलाया ॥ २६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पुके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति बुधसिंहचरित्रे दूतद्वाराबहादुरशाहान्तिकौरंगजेबपञ्चत्वोदन्तप्रापणं १, सेनापतीकृतबुधसिंहससैन्यबहादुरशाहलवपुरागमनवर्णनं दशमो मयूख ॥१०॥ आदितोऽष्टचत्वारिंशोत्तरद्विशततम ॥२४८॥

वारे तिननैं पिन्न अखिरज. पिधाया अन्तर्धान हुआ पुण्यम पूर्णिमा था दिवस वारिद मघ ओघ समूह ॥ २४ ॥ सेलोंइति ॥ नभचार पक्षी वात पवन फीलों फील[हस्ती] यावनी. तिनपैं तारा वाम दिशासे दक्षिण दिशा कालो चिरी आधै ताकों कहिये पोदकी काली चिरी सौंन शकुन भारद्वाज लोके रूपारेल तथा सुखाव्हा सानचिरी ॥ २० ॥ योंइति ॥ निराया निकटालिया पंजाबी पंजाबका. दल कटक बुल्लि बुलाया तत्थ तहां सेर सिंह यावनी चाव चाह [उत्साह] ॥ २६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के राजा बुधसिंह के चरित्र में दूत द्वारा बहादुरशाह को औरंगजेब के मरने की खबर मिलना, बुधसिंह को सेनापति करके सेना सहित बहादुरशाह के लाहोर आने के वर्णन का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ अड़तालीस २४८ मयूख हुए ॥

अहवा कुणवसरीरे अव्वो पच्चागया असुणो ॥ ७ ॥

मायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

[पट्पात्]

किय उछाह इम साह वंचि कग्गर चूगरम ॥
बुल्लि नृपति बुधसिंह कह्यो तदुदंत विहित क्रम ॥
इक्क१इक्क१संजोग होत जिहिंविधि एकादस११ ॥
इम अर्जाम गढ लेत दइव दीसत अप्पन वस ॥
अल्लाह सहर सूचक यहै अब न बीच अरि भय अटक ॥
आगरा ओर पद्धति उचित क्रम सवेग हंकहु कटक ॥८॥
यह प्रपंच अनुकूल पिक्खि बुधसिंह चमूपति ॥
किय फोजन दरकुंच मंडि व्यूहन विदग्ध मति ॥
सेन मध्य सुरतान हड्ड नरनाह हरोलो ॥
सुवन साहके तीन३वाम दक्खिन चंदोलो ॥
जयसिंह अनुज कूरम विजय लघुवय लखि नृप संग लिय॥
इहिं क्रम उपेत दव्वत अवनि चलि सवेग चतुरंगिनिय॥९॥
काकोदर कलकलत फनन फुंकरि पलटावत ॥
कद्रू हिय अकुलात लखत पुत्तहिं लचकावत ॥
त्यों बिनता उर तिक्ख पुव्व चिंतत दासीपन ॥
यह कोतुक अदभूत फैलि कस्यपघर फोजन ॥
संकर समाधि तजि तजि सहज कारन लखत बिचार करि॥

अथवा कुणपशरीरे अहह प्रत्यागता असवः ॥७॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रित भाषा ॥ पट्पात् ॥ कियइति ॥ चूगरम साम सहित. बुल्लि बुलाय. तदुदंत वा अर्जाम को वृत्तान्त. ओर तरफ. पद्धति मार्ग. "सरणी पद्धती पद्ये" त्यमरः ॥ ८ ॥ यहइति ॥ व्यूह रचना विशेष सुवन पुत्र. मोजदीन १ रफीलकदर२ अख्तरबिलंद ३. उपेत सहित ॥ ९ ॥ काकोदरइति ॥ काकोदर यहां शेष. कद्रू नागमाता. बिनता गरुड़माता. पुव्व पहिलो दासीपनों. कद्रूनें याकों दासी करीही वह भाव. नवमालहेतु नवीन मुंड माला को कारन. इनहिं इनकों यिवकों. गहकि सों थोकिकें. गवरि पार्वती १०

...ाल हेतु कहि कहि इनहिं गहकि मोद बाढत गवरि ॥१०॥
मिजल इक्क१साहसन अग्ग चोकी तिरसहस्सन ॥
अरिन छन्न उपचार प्रबल विस आदि परक्खन ॥
निधि तृन अन्न निधान मग्ग मैदान मुकामिक ॥
खग मृग तरु उद्यान जात सोधत इम जामिक ॥
प्रतिदिस जिहान खलभल परिग मनहुँ वज्र भुव फोरिहैं ॥
पापिन निदान आय कि प्रलय छलि समुद्र हद छोरिहैं।११।
कमठ भग गिलि अंग प्रान नारिन परि बुड्डिय ॥
भिरि हमल्ल भुव भार पिट्ठि पावक घसि उड्डिय ॥
फगि दमग बढि फाल जात कच्छप पतग जरि ॥
दरित टारि दतुलिय टिक्कत सूकर तुडाकरि ॥
आतंक सुग्न उतपात इहिं कुपत जग कारन कहिय ॥
बुधसिंह मनहुँ आगम बिजय अकूपार आहुति दिय ॥१२॥
अहि कच्छप भूदार द्रुहिन दिग्गज दिगपालक ॥
भूलोक रु तिम भुवर बहुरि सुरलोक बिसालक ॥
इम समस्त अतलादि तिमहि सागर इत त्रासहिं ॥
इकहिं परि आयास अवर आतंक उपासहिं ॥

॥ मजलइति ॥ अग्ग अगारी त्रिसहस्सन तीन हजारन ३००० की अरिन शत्रुनके छत्र तुम्र मैदान चौगान पायनी मुकामिक मुकाम सबकी खग पक्षी मृग पशु उद्यान बन पापिननिदान पापी बहुत बढे तिनके कारन सों कि मनों हद सीमा ॥ ११ ॥ कमठइति ॥ नारिन नाडिनमें पतग कीट पतंग तुल्य बढा जात ऐसो वर्तमान प्रयोग कियो यातैं एक कच्छप जरत विधाता दूजो बनावत सो जरत तीजो बनावत ऐसे जानिये दरित भीत "दरितश्चकितो भीत." इतिहैम ॥ सूकर बराह अकूपार कच्छपराज "अकूपार कूर्मराजे महोदधौ" इतिमेदिनी ॥ १२ ॥ अहिकच्छपइति ॥ अहि शेष कच्छप कूर्मस्तम्भक भूदार बराह "क्रोडो भूदार इत्यपि" इत्यमर ॥ द्रुहिण ब्रह्मा "धाताऽब्जयोनिर्द्रुहिण" इत्यमर ॥ भुवर भुवर्लोक अतलादि अतलको आदि दैकैं सातों ही तैसे लोक इकहिं इनमेंसों एकको अधाको सो आयास भ-

चलत पंगु जयचंद्र जिम, वसुधातल्ल दव्वंत ॥ ३ ॥
इम पत्तो ग्वालेरपुर, आजम विभव उपंत ॥
साजि किल्ला वनितादि सब, रक्खिय तत्थ निकेत ॥ ४ ॥

॥ षट्पात ॥

अग्रज अवरंगीय साहदारा अभिधानी ॥
ताकी तनया ब्याहि लई आजम अभिमानी ॥
यह अग्गैं इकबार पकरि बंधी मरहट्टन ॥
तब अनिरुद्ध नरेस जिति आनी भुजदंडन ॥
दीदारबखस जाके उदर ताहि नगर ग्वालेर धरि ॥
उततैं उफान सागर उपम आयो आजम कोपकरि ॥ ५ ॥
अकबरपुर इन तजिय तजिय ग्वालेरनगर उन ॥
ए दक्खिन सम्मुह रु वेसु उत्तरपर आरुन ॥
इम आवत दुव कटक मिले जाजव दिन अत्थैं ॥
रहि मुकाम वह राति कलह उग्गतरवि कत्थैं ॥
दुव २ दल प्रपात सोहत सहज मनहुँ सिंधु वीचिन भारिग॥
बद्दल उदीचि आवाचिके प्रबल्ल बात भेट कि परिग ॥ ६ ॥

थाके सेन पहुनकी. असी लाख घोरे हे, याते सेनाके बाहुल्यमें थाकी उपमा दीनी. दव्वंत दाबंत ॥ ३ ॥ इमइति ॥ पत्तो प्राप्त भयो. उपंत सहित. किल्ला ग्वालेरपुरको. वनिता स्त्री. तिनको आदि देकें सब वैभव. निकेत स्थान ॥४॥ षट्पात् ॥ अग्रजइति ॥ अग्रज बडो भाई. अवरंगीय औरंगजेबको. साहदारा अभिधानी दाराशाह नामक. तनया पुत्री. यह आजमकी स्त्री. अनिरुद्ध बूंदीको राजा बुधसिंहको पिता तातैं. ताहि वा अपनी स्त्रीकों ॥ ५ ॥ अकबरइति ॥ अकबरपुर आगरा. इन बहादुरशाहने. उन आलमशाहने. ए बहादुरशाहकी सेनावारे. रु अरु. वे आजमशाहकी सेनावारे. सु पादपूर्णार्थ है. आरुन ससाकन. जाजव आगरा अरु ग्वालेरके बीचमें ग्राम विशेष तहां. कलह युद्ध कथैं कहैं. प्रपात पछाव. वीचिन वीची (तरंग) तिनकरि. भारिग अरयो. बद्दल मेघ. उदीचि उदीची (उत्तरदिशा) ताके. आवाचिके दक्षिण दिशा ताके. बात पवन ताकरि. कि मनों ॥ ६ ॥ दोहा ॥ सकइति ॥ जुग च्यार ४. खट छै ६. सत्रहसै चौसठि १७६४. असित कृष्ण पक्षकी ॥ ७ ॥ पद्धतिका ॥ दैदइ-

॥ दोहा ॥

सक चउश्खट सत्रह१७६४समय, असित तीज३आषाढ ॥
दिय मुकाम दुव दलन इम, मिलि जाजव गहि गाढ॥७॥

(पद्धतिका)

दै दल मुकाम जुदिय नरेस, किय मन्त्र पिक्खि अरि दल बिसेस ॥
रतिवाह वाह रोकन विचारि, निज दल प्रबंध बंधिय निहारि ।८।
पखरैत सहँस द्वादस१२०००प्रवीर, सजि थप्पि सेन बाहिर सधीर ॥
निज भट रनपाहित जैत नाम, तिनमाँहिं मुख्य करि रक्खि ताम।९।
यह बेरिसल्ल कुल भो अभंग, निज बंधु जैत दिय सोधि संग ॥
कहि नेह बचन सनमानकीन, अब काका दिल्ली तव अधीन १०
जो रचहिं सत्रु रतिवाह जाल, तो झेलि चास भेजहु उताल ॥
इम भाखि छर्वानाँ किय तयार, हय जैतसंग द्वादसहजार१२०००
दल परिधि जाय तिन चक्र दिन्न, क्रम इम प्रबंध चहुवान किन्न॥
पुनि वाहिय नीति साहहिं प्रबाधि, सुख सैंन करहु अब काल
सोधि ॥ १२ ॥
निस जाम रहत निंदहिं निवारि, पिक्खहु बिहान रन भट प्रचारि॥
सुनि साह सैंन मंडिय सतोस, भूपाल बुद्द भुज दुव भरोस ॥१३।
सब साह हसम डेरन सम्हारि, नृप सिबिर आय कटिपट निवारि

ति ॥ रतिवाह रात्रि समय अचानक आय लरै सो युद्ध ताके वाह वार स
था प्रकार प्रबंध रचना विशेषसा फौजका रास्ता बंधिय बध्या निहारि दे-
खिकैं ॥ ८ ॥ पखरैतइति ॥ जैतनाम जैतसिंह नामक बेरीशल्लात हाडा पलो-
दी नगरको अधिराज तिनमाहिं व छर्वानाक बारह हजार १२००० पखरैत
सेनाके बाहिर गिरदकी चाकी फिरनेका भेजे तिनमें ताम तहां ॥ ९ ॥ यहइ
ति ॥ यह जैतसिंह भव भयो बधु सपिंड कुलमें सोधि विचारिकैं ॥ १० ॥
जोरचहिंइति ॥ रतिवाह रात्रिका युद्ध ताको चास खबर ॥ ११ ॥ दलइति ॥
परिधि गरद [चक्र मण्डल फिरना] सैन सयन [सोवना] ॥ १२ ॥ निसइति ॥
जाम एक प्रहर निर्दहिं निद्राकों विहान प्रातकाल सैन सयन सतोस सो-
ष प्रसन्नता सो सहित ॥ १३ ॥ सबइति ॥ हसम सैन्य देशीभाषा छिपर

ड सुनि अनीक व्यूहन बिबेक, आजमहु रचिय जामिक अनेक
र किय मुकाम दुवदल अमान, दुवघाँ निघात वज्जत निसान२१
त माहताब उद्दित दुरओर, चकि चौंकिपरत जिन लखि चकोर
ढि दुरदल चंद्रजोतिनबिकास, पुरिणम मयंक बहुबिफुरिपास२२
हुँओर बाजि गज रथ दुरत, दुवसेन उच्च डेरन दिपच ॥
हुँओर सूर जामिक दुरूह, सजि सजि अनेक बिचरत समूह।२३।
हुँओर लखत प्रछन्न दूत, दुव दल नकीन आरव अभूत ॥
कडन झपेट मच्चत दुरओर, सिंधुव अलाप टचदिस सजोर॥२४॥
दुहुँओर करत जामिक दुराव, दुहुँओर छबीनाँ लखत दाव ॥
दुहुँओर बाजि फाँदत दुरवध, दुहुँओर दंति गज्जत मदंध ॥ २५ ॥
दुहुँओर सुद्द मेलन चमक्क, दुहुँओर घट पक्खर घमक्क ॥
दुहुँओर सूर हूरन उछाह, दुहुँओर होत हरि हर इलाह ॥ २६ ॥
दुहुँओर सुतर जघाल जात, दुहुँओर चाम पल्ल पल्ल दिखात ॥
दुहुँओर करत बहुरीति दान, दुहुँओर होत त्रिधिजुत बिधान।२७।
गुन३जाम रत्ति हुव इम अतीत, गहकिय सु जग आरभ गीत ॥
निद्दहिं निवारि बुंदिय नरेस, करि नित्य बंदि प्रभु द्वारिकेस।२८

वाद्यविशेष ॥ २१ ॥ रतइति ॥ माहताब चावनी हवाई विशेष जाको प्रकाश चंद्रिका के माफिक होता है सो दुओर दोऊ तरफ दुदल दोऊ दलनमें चंद्रजोतिन चंद्रज्योति नामक हू हवाई विशेष होत है तिनको विशेष प्रकाश पुरिणम पूर्णिमासी ताके मयंक मृगांक(चंद्रमा) बिफुरि बिस्फुरित भये पास समीप ॥ २२ ॥ दुहुआरेति ॥ रथ शब्द दिपत सोहत दुरूह ऊहा तर्कना तामें दुगमसों आये ऐसे ॥ २३ ॥ दुहु०लखतइति ॥ प्रच्छन्न गुप्त आरव शब्द अभूत अद्भुत॥२४॥दुहु०करतइति॥दुराव पैलनका न दीखै ऐसो गुप्त चोकीमें छिपनों बाजी घोरे फादत कूदत दुपथ दोऊ आगारी पिछारीके बंधन छसेंहू दंति दंती[हस्ती]॥२५॥ २६ ॥ दुहु०सुतरइति ॥ सुतर ऊँट चावनी जघाल अति वेगवान् "जघालोऽतिजवस्तुल्य"इत्यमर ॥चाम खचरि ॥२७॥ गुनइति ॥ गुन तीन३ जाम प्रहर रत्तिरात्री अतीत व्यतीत ॥ २८ ॥२९॥ सुनिइति ॥ उवाच

जामिकेन साह आलम जगाय, बुधसिंह तबहि हुव लिय बुलाय ॥
कहि उचित मंत्र मंडहु नरेस, अब नहिं बिलंब हुव अब असेस ।२९।
सुनि नृप उवाच नय कछु सनर्म, अब होत जंग विधि लिंघि अधर्म ॥
बहु तोप करत दूरहि बिनास, वीरहु सकैं न यह टारि त्रास ।३०।
लैजात सबन धरि सिरत घोर, मनमाँहि रहत सुभटन मरोर ॥
तस्मात अप्प दल पिछि दूर, गहि छन्न काल काटहु जरूर ।३१।
इम सुभट जुद्ध पंडित हरोल, विधि सब निबाहि नय धर्म बोल ॥
अथि दल समुद्र भुज मंदराग, निज बल कृपान रचि चंड नाग ।३२।
जयरत्न काढि जतनन जरूर, ल्है रुपात निबर्दहिं निज हजूर ॥
इहिनीति छन्नसाहहिं निकासि, दल सजिय अप्पहिय जय बिकासि ॥
दल चढन बेग दै निज निदेस, विधि करि विहान संध्या विसेस ॥
सजि उनहु चढन आपस प्रसारि, नर गज तुरंग कलकल पसारि ।३४।

॥ दोहा ॥

दुवरदल इम खलभल परिग, गहकि नफीरिय गान ॥
किलक नफीबन हुव कहर, पहर पलान पलान ॥३५॥

॥ भुजंगप्रयातम् ॥

जगी सेन दोऊ रही जाम रत्ती, बजे बंब भेरी बढी हल्ल पत्ती ॥
दुहूँ ओर ल्है सुद्ध के नित्य मंडै, दुहूँ ओर संसारतैं प्यार छंडै ।३६।
दुहूँ ओर गंगोद कैं अंग गंजैं, दुहूँ ओर गीतादि गीतादि रंजैं ॥
दुहूँ ओर बानैत नागोद बंधैं, दुहूँओर के टोप सन्नाह संधैं ।३७।

कहत नयो. सनर्म नर्म लोके ठट्ठा. त्रासहित ॥ ३० ॥ लैजातइति ॥ सिरत ना-क ॥ ३१ ॥ इमइति ॥ मंदराग मंदर नामक अग पर्वत. ताकरि नाग वासुकि. ॥ ३३ ॥ जयइति ॥ यहनीति या नीतिसों. दल सेना ॥३४॥दलइति ॥ निदेश हुकम. उन आजमशाहनैं कलकल कोलाहल ॥३४॥ दोहा ॥ दुवइति ॥ नफीरी वाद्य विशेष. देशीप्राकृत ॥ ३५ ॥ भुजगप्रयात ॥ जगीइति ॥स्पष्ट ॥३६॥ दुहूँ गंगोद इति ॥ गंगोद गंगाजल. ताकरि.गीतादि भगवद्गीतादिक. पुनः गीतादि गान लदादि करि नागोद लोके पेटी ॥ ३७ ॥ दुहू०आलीइति ॥ जाली लोके

दुहूँओर जाली दवालीन ढारैं, दुहूँओर धाराल धाराल धारैं ॥
दुहूँओर सिंधून उच्छाह जग्गैं, दुहूँओर वाजीनपैं जीन लग्गैं ।३८।
दुहूँओर भ्रुडाल सुडाल गज्जैं, दुहूँओर हिंजीर जंजीर बज्जैं ॥
दुहूँओर उच्चूल नेजा फरक्कैं, दुहूँओर के जोर छाती मचक्कैं ।३९।
दुहूँओर धानुष्क टंकार पूरैं, दुहूँओर देखैं लगी लोभ हूरैं ॥
दुहूँओरमैं दुत ठड्डे भूत भिल्लैं, दुहूँओर बेताल खेताल खिल्लैं।४०।
दुहूँओरके भीरु उड्डान मंडैं, दुहूँओरके वीर बानैत तंडैं ॥
दुहूँओर बंदीनको सोर बड्डै, दुहूँ ओर तोपैं दरावीन चड्डैं ॥४१॥
परैं कुंत बंदूक तुल्लैं बरच्छी, हुलैं हकि हत्थी खुलैं सज्ज कच्छी
बड़ी सेन दोऊ बड़ी जग चाहे, अवाची उदीची घटा ज्यों उमाहे४२

॥ दोहा ॥

बुधिपपति सन्नद्ध बनि, नप निकासि निज साह ॥
दल साग्ध दुरन्तस्व२५०००लै, चढ्यो तुरग जय चाह।४५।
उत आजम आरोहि गज, लै दल सम्मुह आय ॥
मुत्तक प्रलय आगम मनहुँ, उदधि सत्त उफनाय ॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिबुधसिंहचरित्रे अकबरपुरप्रस्थितबहादुरशाहगोपाद्रिपुरप्रस्थि

जिरह "जालिका त्वगरक्षणा" इति हैम ॥ धाराल अच्छी धारावाले धाराल खड्ग ॥ ३८ ॥ दुहूँ०भ्रुडालइति ॥ भ्रुडाल भ्रुंडाधार सुडाल हस्ती ॥ 'सुडाल नामजो नाग" इतिधनंजयः॥हिंजीर हस्तीके जंजीर जंजीर हस्ती विना और पात्वर तोप आदिके जानिये उच्चूल ऊपर मुख घडे फुंदावारे॥"अस्याऽच्चूला-धचूलारऽपादूर्ध्वामुखकूर्चका" विनिहैम ॥ ३९ ॥ दुहूँ०धानुष्कइति ॥ धानुष्क धानुष्क कमनैत॥"तूणी धनुष्मान् धानुष्क" इत्यमर ॥ भिल्लैं मिलै खेताल क्षेत्रपाल ॥ ४० ॥ दुहूँ०कभीरु ॥ बंदीव भाजनो तडै गर्जनाकरै ॥४१॥४२॥ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

श्रीयशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में आगरा में बहादुरशाह और ग्वालियर से आजमशाह का

ताजमशाहरक्षाहेतुजाजवनगरशान्तिकरकन्धावारनिवेशनं द्वादशो मयूखः ॥ १२ ॥

आदितः पञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५० ॥

(दोहा)

सक चउ खट सत्रह१७६४समय, मिलि चउत्थि सुचि मास ॥
असित पक्ख उग्गत अरक, बढि दल विजय विलास॥१॥

(मुक्तादाम)

बढे दल तोपनकों करि अग्ग, मिले भट उद्धत संगर मग्ग ॥
इतेबिच कौतुक जंग अछक्क, उयो उदयाचलके सिर अक्क ॥२॥
लख्यो रवि दोउन बंदि बिसेस, भयो तब तोपन पुब्ब निदेस ॥
पलट्टनि पिक्खि रुमालन सैंन, लगी दुहुँओर अलातन दैंन॥ ३॥
मिली तँहँ तीनहजार३०००न अग्गि, बली अफलैत दुहूँदिसलग्गि
भयो नभ धूमित धुंधरि भान, लगे दृग मीचन देव बिमान ॥४॥
परे अप गोलक बिद्युत पात, जुरे नर गैंवर है उडिजात ॥
उगल्लत फैरहिँ फैर अखंड, चलै चटका रिनके मित चंड ॥५॥
भुजंगमके सिर नच्चत भुम्मि, धरैं फनतैं फन घायन घुम्मि ॥
नचे जिम कन्हर कालिय कंध, बनैं इम छोनिय तंडव बंध ॥६॥
लगे डगमग्गन अद्रिन सृंग, गिरैं जिनतैं सृग भ्रामित भृंग ॥

लश्कर युद्ध के अर्थ जाजव नामक नगर के पास मुकाम करने के वर्णन का बारहवां १२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पचास २५० मयूख हुए॥

सकइति॥ चउत्थि चतुर्थी. ४ सुचि आषाढ. असित कृष्ण॥मुक्तादाम॥बढेइति॥ अछक्क अतृप्त. उयो उदयभयो. अक्क अर्क (सूर्य) ॥ २ ॥ लख्यो ॥ पलट्टनि पयादे सिपाहनकी पंक्ति ॥ ३ ॥ मिलीइति ॥ अफलैत तोपनके तीर करायबे की क्रिया विशेष ॥ ४ ॥ परैंइति ॥ फैरहि फैर अवाज प्रति अवाज. मित प्रमान. भुजंगमइति ॥ भुजंगम शेष ताके. कन्ह कृष्णावतार. कालिय कालीनाग

निवानन आकुलि तुट्टत नीर, परयो इक आतप ग्रीखम पीर ।७।
तजैं वढि वीचिन सागर सीम, भ्रमैं प्रलयानिलमैं जिम भीम ॥
जुरयो दिन दव्वि कुहू तम जग्गि, अलात लगैं जनु प्रेतनअग्गि८
परैं दृग वे उत सोर प्रकास, लखैं इनहू इत फेर उजास ॥
दुहूंदिस यों लखि भारत दाव, भयो दुहुंघां इम सोर प्रभाव ॥९॥
सज्यो वढि धूम सुरालय संग, अजों नभ बद्दल राजिहिं रंग ॥
गिरैं बिच गोलक गोलक फेट, मनों पविर्ते पवि चंडचपेट ॥१०॥
गिरैं गजमत्थ छिनच्छिन छूट, कटैं पवि पात कि अद्रिन कूट ॥
गिरैं गज भट्टहु गोलन गोन, गिरैं तरु ताल कि पव्वय पोन ११
लख्यो रवि उग्गत ज्यों तम लाल, किते अब भुल्लत आह्निक काल ॥
बिहानहु कोकन लग्गि वियोग, विनाँ नर जानत जामिनि जोग
परैं गज गंडन गोलक पात, करैं जनु भद्रक जातिन ख्यात ॥
परैं दुहुँ ओर तुपक्कन पथ, मच्यो रव भ्राष्ट्रक ज्यों हरिमथ॥१३॥
चहूँदिस चंड चढ्यो रज चूर, पर्यो रजताचललों उडि पूर॥

ताके ॥ ६ ॥ ७ ॥ जुरयइति ॥ भीम भयकर कुहू चन्द्रकला रहित अमावास्या की रात्रि ताके सो तम अन्धकार ॥ ८ ॥ परैंइति ॥ वे वेकी सेनाके उत वातरफके सोर बारूद ताके प्रकाशतें दीसे इन ओरकी सेनावारेनकों इत वातरफके लखैं देखैं ॥ ९ ॥ सज्योइति ॥ सुरालय सुरलोक ताकों अजों अबभी नभ आकाश बद्दल मेघ ए स्याम जिहरंग या धुवाके रंगसों है बद्दलवार-रंगके न हे गोलक गोलासों पवि वज्र ॥१० ॥ गिरैंइति ॥ गोन गमन तासों तरुताल तालवृक्ष कि मनों पव्वय पर्वतसों पोन पवन करिकैं ॥ ११ ॥ लख्योइति ॥ तम अंधकार तामें काल मणिक्य बिनानर मनुष्य रहित और प्राणीमात्र जामिनि रात्रि ताको ॥ १२ ॥ परैंइति ॥ भद्रकजातिन भद्रजातिवारेनके ख्यात प्रकट भद्रजाति हस्तीनके मस्तकसों मोती निकसे हैं यातैं रव शब्द भ्राष्ट्रक लोकके भाड तामें हरिमथ चना॥"चणको हरिमंथकः"इतिहैम'। चहूंदिसइति ॥ रजताचललों रजताचल कैलास पर्वत तहां तांगि जटी शिव

जटी जटजूटहु पंकिलजात, लगे कुव कंजन पुंज लसात ॥१४॥
भज्यो ससि भीरुक भालहिँ छोरि; रहैं रज लेत सुधा सम चोरि।
अकंज सकंज भये इम ईस, समात न सादि भयो भर सीस ।१५।
महानट पाँलहि खेद समाज, निमीलत नैंन ममाधिक व्याज ॥
जलंधर बंचित चंडिय अग्ग, लखैं धव संकि महाभय लग्ग ॥१६॥
भयो यह विग्रह संकरभान, गिरैं पृतना इत गोलन गान ॥
थरत्थर भुम्मि जथा जल थाल, कन्यौं रन तोपन यों बिकराल१७
सिलग्गहिँ तज्जहिँ गज्जहिँ सोर, लग्गज्जहिँ बज्जहिँ सिंधु हिलोर॥
भजैं गज संगर लंगर तोरि, महावत रावत लावत सोरि ॥ १८ ॥
दिसाबिदिसा जगि जारत ज्वाल, मनों कुहु उज्ज दसेंधन माल ॥
चलैं उडि सोर सिखा चमकात, परैं जिम पहव बिज्जुव पात ।१९।
भ्रमैं कढि सुंडि गिरैं उडि भाग, मनों जनमेजय अध्वर नाग ॥
परावलि गिद्धनकी मजरात, जटायुक अग्रज ज्यों गिरिजात ।२०।
उडैं ध्वजदंडन खंड अकास, रचैं जिम उड्डहि केकिय रास ॥
जरैं गज पिट्ठि पताकन जूट, किधौं दव लग्गिय अद्रिन कूट ।२१।

तिनकी. जट जटा ताको जूट जूरा. पंकिल पकवारा जात भयो कुवकंज कुव कुवलय. लोके गहूल. कंज कमल तिनके. "कुवेल कुवल कुवं" इतिहैमः ॥ १४ ॥ भज्योससिइति ॥ भालहिँ शिवके ललाटकों छोरि त्यागिकैं अकंज कंज चंद्रमा ताबिना. कंज कमल. तिनसहित सादि पंक. "कर्दमश्च निषद्वरः सादः" इतिहैमः ॥ १५ ॥ महानटइति ॥ महानट शिव. "महापरादेवनटेश्वरा हरः" इतिहैमः ॥ व्याज मिससों. जलंधरबंचित जलंधर दैत्यकी ठगी. चंडिय पार्वती. धव अपनों पति. ताकों लग्ग लग्न. लांके लग्यो ॥१६॥ १७ ॥ सिलग्गहिइति॥ तज्जहिँ तर्जना करैं. सोर बारूद. हिलोर महातरंग ॥ १८ ॥ दिसाइति ॥ कुहू चंद्रकला रहित अमावास्या की रात्रि तामैं. "सा नष्टेन्दुकला कुहूः" इतिहैमः॥ उज्ज कार्तिकमास तामें. "बाहुलोर्जौ कार्तिकिकः" इत्यमरः ॥ दसेंधन दीपक. तिनको माल. "दशेन्धनो गृहमणि" रितिहैमः ॥ १९ ॥ भ्रमैं इति ॥ अध्वर यज्ञ. तामैं. 'वितानं बर्हिरध्वरः' इतिहैमः ॥ जटायुकअग्रजज्यों संपाति गृध्रके समान ॥ २० ॥ उडैंइति ॥ उड्डहिँ ऊपरही. केकिय मयूर. रास नृत्य ।२१।

कहँ पुर जाजव हो अर्धकोस, दग्यो चहुँघा तउ मगति दोस ॥
तप्यो समरगन तोपन ताप, चढ्यो नभ जामल२जाम दिवाप ॥२२॥

॥ दोहा ॥

इम तोपन रन होत इत, इत कोतूहल्ल आस ॥
रवि दुपहरलौं चढि रुक्यो, तक्षन तुमुल्ल तमास ॥ २३ ॥
इहिँ अतर दुवादिस अतुल, धुग्त ताप निर्घात ॥
साहबहादुर भाग सन, बज्ज्यो उत्तर वात ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

पलटत उत्तर पवन दाह तोपन इत दग्गिय ॥
उद्धत पिक्खिय अनीक लाग सत्रुन उर लग्गिय ॥
आजम गज आरूढ हुतो निज कटक हरोली ॥
गोला लगि लोगयउ पारि दल मध्य प्रतोली ॥
इम तोप जनक आजम्म उडत निज दल लखिपर भर नयो
दीदारवखस तस सुत दुसह ह्वै नायक हरवल भयो ॥५२॥
आजमसुत इम कहिय मरन मगल भट सगर ॥
करहु सोक जिन वीर धरहु पायन लज लगर ॥
इम विसासि सब सेन अग्ग ठह्यो आजमसुत ॥
गति अगद पय गह्यि मरन मड्यो जनूँन जुत ॥
दे पुनि निदेस तापन दगन नृप नबाब हल्लकारि सब ॥
दीदारबखस सज्ज्यो दुजन गुमर टेक मडत गजब ॥ २६ ॥

कहँपुरइति ॥ जामल उभय दिवाप दिसापति (सूर्य) ॥ २२ ॥ दोहा ॥ इमइति ॥ तक्षन देखत तुमल सकुलितयुद्ध ताको ॥ २३ ॥ इहिअतरइत्यादि ॥ वात पवन ॥ २४ ॥ षट्पात् ॥ पलटतइति ॥ हरोली फोजके अग्रभाग प्रतोली थी थी ताके गली "रथ्या प्रतोली विसिखा" इतिहैम ॥ तस ताको ॥ २५ आजमसुतइति ॥ सगर युद्धमें रहहुये भट सूरवीर को मगल उत्सव होतहैं तातैं जनून पागलपना क्रोध ॥ २६ ॥ दतियापतिइति ॥ इतेन इतन सहित इनमत्र

दतियापति राउत्त नाम दलपति बुंदेलह ॥
नरउरपति गजसिंह बंस कछवाह समेलह ॥
रामसिंह चहुवान अनय आकर कोटापति ॥
लगि बुंदियधर लोभ गिनत भोरो न कालगति ॥
सचिवन इतेन आजमसुवन गजारूढ करवल्ल गहि ॥
इनमंत्र अबहि आजम उदयो सुचन स्वास अवसेस रहि ।२७॥
इम आजम उद्धतहि सुवन ठट्ठो चढि सिंधुर ॥
दगत तोप दुहुँओर उवत बीरन रस अंकुर ॥
इहिँ अंतर जयसिंह नगर आमेर नरेसुर ॥
निज नकीब मुक्कलिय बुद्ध भूपति प्रति आतुर ॥
गृहविधि कहाय प्रच्छन्न गय जामिप तुम ए खल जवन ॥
कुल स्वसुर टारि मडहु कलह होत तोप सालक हवन॥२८॥

[दोहा]

बुंदियपति यह सुनि बिनय, प्रतिउत्तर पठवाय ॥
घर अप्पन संबंध घन, यँहँ रन दंड उपाय ॥ २९॥
तातैं तुम साहस तजहु, बय नय समर बिचारि ॥
बचहु बाम दक्खिन बदलि, तोपनको मग टारि ॥ ३० ॥
इम कहाय बुंदिय अधिप मंड्यो तोपन जंग ॥
इहिँ अंतर दूतन कह्यो, भो आजम असु भंग ॥ ३१ ॥
बलहिँ प्रचारत भटन बिच, हो हत्थिय आरूढ ॥
गोला लागि दोजख गयो, महा अनय रत मूढ ॥
तब ताको सुत सज्जहुव, तथा सचिव नृप तीन ॥

ए तीन सचिव कहे तिनके मंत्रसों ॥ २७ ॥ इमइति ॥ उवत उदयहोत. रस बीररस ताको. हवन होम ॥ २८ ॥ दोहा ॥ बुंदियइति ॥ अप्पन अपने ॥ २९ ॥ तातैंतुमइति ॥ साहस हठ ॥ ३० ॥ इमइति ॥ असुभंग प्राणभंग ॥ ३१ ॥ बलहिंइति ॥ दोजख. यावनी. नरक ॥ ३२ ॥

नरउरपति दतिया नृपति, कोटा पति इक कीन ॥३३॥

[षट्पात्]

सुनत एह बुंदीस मंत्र निजदल मह मंडिय ॥
अरि आजम उद्धतहि लग्ग तमसुत हरोल लिय ॥
अरक जाम अवसग्ग तोप चल्लत त्रिजाम गय ॥
अब हय देहु उठाय जानि इग्गिहत्थ जयाजय ॥
इम कहि नरेस सुभटन उचित हयन हक्कि सम्मुह हल्लिय ॥
नीरद उदीचि दिसतैं गगनहु चड पवन दविहन चल्लिय ॥३४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे जाजवनगरान्तिके बहादुर [आलम] शाहाजमशाहनाम्नीय-भ्रात्रियाम्यरणाजमशाहवध पितृस्थानीयिताजमसूनुदीदारबख्तसमरावतारो नाम चतुर्दशो मयूखः ॥ १३ ॥

[नाराचम्] उठाय जंग यों तुरंग बुद्धसिंह उप्परयो ॥
मनों कजाक हद्द हाक वीर वाक वित्थर्यो ॥
महा गभीर धीर वीर नीर छीर ज्यों मिले ॥
हमल्ल झोंक भुम्मिलोक खंड खंड व्है खिले ॥ १ ॥
झनंकितति सिंधवी अलाप राग झुक्कयो ॥
रनंकि जीन पक्खरीन पौन गौन रुक्कयो ॥
खनंकि धार व्है प्रहार अंग भंग उल्लटैं ॥
सनंकि स्वास सेसकी फनालि फुक्करैं फटैं ॥ २ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में जाजव नगर के समीप बहादुरशाह [आलमशाह] और आजमशाह में दुपहर तक तोपों का युद्ध होकर आजमशाह का मारा जाना १ आजम के पुत्र बीदारबख्त का पिता के स्थान में स्वामी होकर लड़ने के वर्णन का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ इक्यावन २५१ मयूख हुए॥
नाराच ॥ यह स्पष्ट ॥ १ ॥ झनंकिइति ॥ यह स्पष्ट ॥ २ ॥ छनंकिइति ॥ छिपियों

छनंकि बान लै उडान आसमान छद्दयो ॥
ठनंकि घंट जंग जोम नाग तोम नद्दयो ॥
तनंकि रंच खंचतैं प्रतंच चाप टंकरैं ॥
भनंकि पच्छ भूरि भच्छ गिद्धनी फरफ्फरैं ॥ ३ ॥
चली भली कृपान खानसुद्ध राव बुद्धकी ॥
अरीन जुद्धकी उमंग राज रंग रुद्धकी ॥
मच्यो अनीक संभगीक आजमीक अंगम्यो ॥
चलैं कु चक्र भोगि भोगभोगपैं भ्रम्यो भ्रम्यो ॥ ४ ॥
प्रहार खग्गधार मार लुत्थि लुत्थिपैं परैं ॥
चिरैं वितंड गंड झुंड खंड खंड ह्वै झरैं ॥
दिसादिसानमैं कृपान विज्जुमान निक्खसी ॥
भिरैं गरूर पूर सूर पिक्खि हूर हुल्लसी ॥ ५ ॥
सुबाजि सोक ओकओक भीरु लोक भग्गये ॥
लगैं निघात सस्त्रपात इक्करीठ लग्गये ॥
झरैं सखुंड गै भुसुंड कंध बंधतैं कटैं ॥
अटैं सु रुंड गोलकुंड फाटि मुंड उच्छटैं ॥ ६ ॥
छिकैं बिछेक बान के पलान हान वित्थरैं ॥
गिरैं उलट्टि सूर पिक्खि हूर झूर झग्गरैं ॥
जमाति जुग्गिनानकी पिवंत पेय पत्तकैं ॥

आच्छादित किये. नागतोम नाग हस्ती तिनको. तोम समूह. भूरि बहुत ॥ ३ ॥ चलीइति ॥ मानसुद्ध खान खुरसान. ताकरिकैं तयार. अरीन अरिनकी. राज-रंग राजनके लरिबे योग्य रंग संग्राम भूमि तामैं. रुद्धकी रोकी. आजमी आ-जमका पुत्र. कुचक्र भूमिचक्र. भोगि भोगभोगपैं भोगी शेष ताके भोग फन फनपैं ॥ ४ ॥ प्रहारइति ॥ वितंड वतंड [हाथी] तिनके. गंड कपट. विज्जुमान विज्जु प्रमान ॥ ५ ॥ सुबाजिइति ॥ सुबाजि अच्छेबाजी तिनकी सोकसों. सखुंड सुंडादंड स-हित. गैभुसुंड गै हस्ती तिनके भुसुंड दतन सहित मुख. कंधबंधतैं कलावाके बंधके स्थानतैं ॥ ६ ॥ छिकैंइति ॥ हान त्याग. झूर झुंड. पेय उनके पीबे योग्य रुधिर.

किलाकि बीर बावनी ५२ फिरैं उमत्त रत्तकैं ॥ ७ ॥
चलैं समग्ग खग्ग के कटार पार निक्खसैं ॥
सुबीर सीस सचयी गिरीस हुल्लसैं हसैं ॥
दरारि वारिजत्र ज्यों छुलाकि घाय उच्छकैं ॥
अनीक नागि के छइल्ल छोह छाकमैं छकैं ॥ ८ ॥
ढुरैं विषान सुक्कि दान कुक्कि भुक्कि के करी ॥
बजत हेति हत्तिकैं मनो कि दड चच्चरी ॥
जगैं वितंड पिट्ठि भंड अद्रिकूट तालज्यों ॥
बहत रत्त खाल के विसाल ताल नालज्यों ॥ ९ ॥
सिलग्गि सोर ओरओर ज्वाल जोर सज्झयों ॥
भयो निसान ध्वान जो दिसा दिसानमैं भम्यों ॥
विधाय भानु रेनुको वितान व्योम विस्थर्यो ॥
लखे परै न अप्प पार अधकार यों भर्यो ॥ १० ॥
चलच्चली मही रु गेन आजमी खलब्भली ॥
कलक्कली किलक्क भाल ज्वालकी भलब्भली ॥
गिलत गृद्ध गिद्धनी फिकारि फिक्करी फिरैं ॥
खिलत कंक रपार खग्ग धार धारते खिरैं ॥ ११ ॥
उडैं दुअोर बीर यों तुपक्क तोप त्यों चलैं ॥
जरैं दुकूल के हठी हकारि सम्मुहे हलैं ॥

चरियावर्नी बीरनकी बावनी ५२ ॥ ७ ॥ चलैंइति ॥ सुबीर अच्छे बीर तिनके सीसनके सचयवारे गिरीस शिव ॥ ८ ॥ ढुरैंइति ॥ विषान सुंडि बिना दान मदके गिलेक होनि हैं तिनके शस्त्रशस्त्र करिकैं दडचच्चरी चर्चरीहु बृत्त पासरलोग फागनमैं कगावैहैं ते ताल तडाग ओक तलाव ताके ॥ ९ ॥ सिलग्गिइति ॥ ध्वान शब्द "ध्वनिध्वानरवस्वना" इत्यमर ॥ विधाय अतध्यान करिकैं भानु सूर्यको ॥ १० ॥ चलच्चलीइति ॥ फिक्करी श्रृगाली ॥ ११ ॥ उडैंइति ॥ दुवार दोऊ तरफ तुपक बंदूक दुकूल वस्त्र कालखंड कलेजा ॥ १२ ॥

छिकैं बितंड कालखंड ब्वान गिद्धनी धमें ॥
गिरिंद्र स्यामकी गुफा महामुनिंद्र ज्यों दमें ॥ १२ ॥
सिलग्गि अग्गिकी सिखा पतंकि गैनलों चढै ॥
बिमान अच्छरीनके उदाय दाह यों दढै ॥
उडैं अलात ओकओक कोक लोक संकुरैं ॥
खुलैं समाधि ईसकी छुटी दिगीसकी धुरैं ॥ १३ ॥
उर्द्धाचि वातके प्रपात संग आगरी नरी ॥
हरोल चंड चुडकी कराल कुक्की हरी ॥
डराल डक्क डिंडिमी डमंकि डाकिनीनकी ॥
नसैं उमंग साकिनीन नाकि नाकिनीनकी ॥ १४ ॥
बिकृत्त घाव रत्तकी छटानि छिद्रि उच्छरैं ॥
परैं कि जाल जावकी सिखा कि पावकी चरैं ॥
हवाक्कि घाय नद्धके कपोत भाय उग्गरैं ॥
पलट्टि काटि के उलट्टि हक्क डक्कपै परैं ॥ १५ ॥

[दोहा]

लरत भरत चहुँदिस सुभट, मिल्लि पय मत्त मिलाप ॥
कछु कछु तोपन दगन क्रम, परत हक्क असि धाप ॥१६॥

[पद्धात]

कोटापति वारन बढाय रस वीर अघायो ॥

सिलग्गिइति ॥ गैनलों गगनलों. छुटी धीरता. दिगीस दिक्पालनकी ॥ १३ ॥ उर्द्धाचिइति ॥ डिंडिमी वाद्य विशेष नसे नासिकातें. साकिनीन साकिनी अनेक पक्षी भयंकर आई तिन करिकैं नाकिनाकिनीनकी नाक स्वर्ग ताचारी नारी स्त्री तमासे देखवे अनेक आई तिनकी ॥ १४ ॥ विकृत्तइति ॥ विकृत्त छिदि ऐसैं वत्त घाय तिनसों. जावकी जावक संबंधी. पावकी अग्नि संबंधी कपोत भाय कपोतकी तरह ॥ १५ ॥ दोहा ॥ लरतइति ॥ पय दुग्ध. मिष्टरस विशेष. इनके मिलापकी तरह असि खड्ग ॥ १६ ॥ पद्धात ॥ कोटाइति ॥ निविड़

गहुगहु बढि बानी भटन भयानी धार धपानी मार मचैं ॥
ढालन लगि ढल्लरि के असि कल्लरि गव सु झल्लरि भाव रचैं॥
कटि हड्डु करक्कैं फिप्फ फरक्कैं तेग तरक्कैं एक उडैं ॥
चाटन असि चंडैं खंडैं खंडैं छोरि बितंडैं गिरत गुडैं ॥ २१ ॥
बिलु मत्थ दुबाहे संभु सिराहे चंडिय चाहे उट्ठि अरैं ॥
डोलैं गज डारे फुट्टि नगारे पत्थ हठारे बत्थ परैं ॥
गजदंत उपारैं कोप करारैं मीरन मारैं बीर बढैं ॥
कटि धार कृपानन गात सु गानन बीर बिमानन केक चढैं॥२२॥
जुग्गिनि जय जंपैं कातर कंपैं बाजि बिझंपैं बेग बली ॥
लुत्थिन भुव छावैं बीर बढावैं मिच्चु न मावैं छोह छली ॥
कोटेस बिनाँ हय छंडि मदा गय रुट्ठि बडे रय गारि रुप्यो॥
गज बाजि गहम्मह कूह कहक्कह त्रंब महल्लह लोक लुप्यो ।२३।

[दोहा]

कोटापति किलकत परयो, आजम दल सिर आय ॥
करि सु संध चंडासि कुल, तुट्टयो आसिन अघाय ॥ २४ ॥

स्तु यथा वसे' त्यमरः ॥ २० ॥ गहुगहुइति ॥ धपानी धपायवेवारी. केकितेक. असि खड्ग. कल्लरि कालरूहके. गव शब्द. झल्लरिभाव देवालयमें बाद्य विशेष ताकी तरह. फिप्फ लोकमें फेफरा. तेग खड्ग. तरक्के तडाकें. एक केवल 'एकं संख्यान्तरे श्रेष्ठे केवले तरयाऽपि च' इतिमेदिनी॥ बितंडैं बेतडौंके. गुडैं गुड हस्तीकी झिलह. तहां बहुवचनमें अकार है ॥ 'गुडकं हस्तिसन्नाहः' इतिमेदिनी ॥ ॥ २१ ॥ बिलुइति ॥ दुबाहे दोऊ हस्तों से तुल्य प्रहार करैं ते. गजडारे गजनके पटके. पत्थहठारे पत्थ पार्थ ताकी तरह हठवारे. मीरन मीर जवन विशेष तिनकों. गात गवत. सुगानन अच्छे गाननकों ॥ २२ ॥ जुग्गिनिइति ॥ जंपैं कहैं. बिझंपैं विशेष करिकैं झंपैं. बीर बीर रस. मिच्चु मृत्यु. नमावैं नहीं मावैं. छोहछली जोभसों उफनी हुई. यहां देशकालदोंं मिच्चुको स्त्रीलिंग कियो. गय गज. रय वग. गहम्मह घनी भीर. कहक्कहा प्राकृत. लुप्यो लुप्त भयो ।२३। दोहा ॥ कोटाइति ॥ सुसंध श्रेष्ठ है संधा प्रतिज्ञा जाकै ऐसो ॥ २४ ॥ पद्मपा-

छल इहिं अनेक कटि भट छकत मिच्चु चहत न चहत मुरन ।३।
गज पय खडन जोरि रचत उप्पर नर रुडन ॥
सजि सुडिन उच्छीस मजु कदुक नृप मुडन ॥
गुड पक्खर गद्दी रु वधि वहु अत वरत्तन ॥
इहिं मचक आरूढ मात कालिय अधप्प मन ॥
लै तिहिं पिसाच वाहक महत घहत उछाहक महमहत ॥
जित तित सुगधि तित ते सजव रुहिर मिठ्ठ हेरत रहत ।४।
भटन भूत कहुँ भिरत कहुँक कातर आक्रदत ॥
करभ कहुँक कल्लरत गिरत गज कहुँक चिक्करत ॥
कहुँक अश्व कटि परत कहुँक घायल भट घुम्मत ॥
कहुँ कवध उठि लरत कुहु कुणपन कहुँ झुम्मत ॥
कहुँ कक मेद कवलन करत कहुँ सिचान झारत झपट॥
॥ ५ ॥
कहुँक नैंन कढि परत कहुँक कटि भौंह फदक्कत ॥
उत्तमग कहुँ उडत गहत हर उद्द मोदगत ॥
कालखंज कहुँ कटत बुट्टि बुक्कन कहुँ बुट्टत ॥
कहुँ फुल्लत हिय कज मधुप मानस उडि उट्टत ॥
कर पय विभिन्न तरफत कहुँक मनहु मीन जल तुच्छ मत ॥

ससरियेको छलयह या भूसनके छलमों मिच्चु मृत्यु मुरन मुरयो॥३॥ गजप पद्मति ॥ पय पद उच्छीस उसीसा कदुक छोटतकिया, गुड गजमिलह गद्दी बिछोना तिरैं धाकालीका महमहत महकत सुगध मीठे रुधिरको जानिये ॥ ४ ॥ भटनइति॥ करभ उट कबध बिना मस्तक क्रियापत सूरवीर कुहकु को हु लोके स्याल कुणपन कुणप मृतक तिनके ॥ ५ ॥ कहुकइति ॥ उत्त ऊर्ध्व अप रही मोदगत मादप्राप्त कालखज कलेजा 'कालखज कालखड कालेय कासि प यकृदि' इतिहैम ॥ मधुप भ्रमर सोही मानस मन उडिउड्डत या हियकजाई सो यामैं कत गत, छमत रमत, ए घन्त्याऽनुप्रास राखे या रीति सर्वत्र एकसों सीकैं जितनैं चाचरनको अन्त्याऽनुप्रास लटावैं तितनैं अच्चरनको पद जुदो क-
... भाषा के ग्रथनमें

करकावलि इहुन खंड किरैं, फटि टोप उडे वकपंति फिरैं ॥
चमकैं जो इरिंगणलौं चिनगी, उद सोनित वृष्टि झरैं उमगी॥१७
रन जाजव पाउस यौं विरच्यो, मुगलान चुहानन दाव मच्यो ॥
भट खग्गन के कटि सुंडि भजैं,अहि ज्यों जनमेजय अध्वरमें ॥१८
करकैं कटकावलि कोच कढैं, फरकैं कढि कालिक वक्क फटैं।
तरकैं तरवारिन हड्ड तुटैं, छरकैं छिति छिंछिन रत्त छुटैं ॥१९ ॥
लटकैं असवार तुखार लरैं, पटकैं गहि इक्कहिं इक्क परैं ॥
चटकैं कटि टोपनकी चटकैं, छटकैं भट वाजिन लोह छकैं॥२०॥
गटकैं पल गिद्धनि प्रेत गिलैं, खटकैं असि खुप्परि खंड खिलैं ।
अटकैं कि रकाबन पाय अरैं, भटकैं भट गज्जहि छोह भरैं ॥२१॥
लगि कोसन जंगनकी लरसैं, बरखा नरअंगनकी बरसैं ॥
सननंकत प्रोथन प्रान सरैं, झननंकत आयुध आगि झरैं ॥२२॥
तननंकत तेगनकी तरकैं, थरकैं रननंकत लोह थकैं ॥
रन होत मुहूरत मान रह्यो, चलतैं बल लोह सुमार वह्यो॥२३॥

[दोहा]

बल बल लोह सुमार बढि, घोर मचिग घमसान ॥

करका लोके गड़ा तिनकी. आवली पंक्ति. किरैं बिखरैं. इङ्गिणस खद्योत. लोके जिगनियांके तुल्य. 'खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः" इत्यमरः ॥ यहां णकार विशिष्ट ओकारको प्राकृत तासों ह्रस्व जानिये. यातैं लगनको ह्रास भयो नहीं यथा॥ 'इहिआरा विंदुजुआरा ओगुहा. अवरांमिलिआ वि लहुलहूवंजणसंजो- ये परे असेस विसविहास" इति पिंगले नागराजः ॥ उद जल. यहां नग्गी मग्गी अन्त्याऽनुप्रास ॥ १७ ॥ रनेति ॥ अध्वर यज्ञ तासैं ॥ १८ ॥ करकैंइति ॥ कालिक कलेजा. वक्क लोके छाती. रत्त रक्त॥ १९ ॥ लटकेइति ॥ तुखार उत्तम हय विशेष. "ताजिकाश्च खुरासाणास्तुषाराश्चोत्तमा हयाः"इति नकुलपांडव॥ चटकैं चटक खंड ताके बहुवचनमैं ऐकार है ॥ २० ॥ गटकेइति ॥ कि कितेक. ॥ २१ ॥लगिइति॥ लरसैं लरस. पंक्तिको वाचक. देशीप्राकृत ताके बहुवचनमें ऐकार. प्रान हृदयमैं रहिबेवारे प्राण विशेष. सरैं चलैं ॥ २२ ॥ २३ ॥ दोहा ॥

आजमसुत अधार भो, चंडकिरन चहुवान ॥ २४ ॥

(षट्पात्)

घटिय दोय २ रवि रहत मथित आजम सुत पिल्ल्यो ॥
नरउर दतिया नृपति ठानि हरवल दल ठिल्ल्यो ॥
कुक्क परिग चहुँकोद टुक्क टुक्कन दल तुट्टत ॥
हूरन मोह हुलास छोह सूरन असु छुट्टत ॥
निज साह भाग रनरीति नव मचल नीति फल पक्कयो ॥
बुंदिय नरेस पावक विसम तृन आजम दल तक्कयो ॥२५॥

(मुक्तादाम)

घटानिभ फोजन भो घमसान, उतै जवनेस इतैं चहुवान ॥
वजैं असि हड्डन मड्ड बिदारि, किधौं तरु कट्टहिं कूर कवारि ॥२६॥
अर्‌यो दतियापति सम्मुह आय, पर्‌यो झरि वीर लयो फल पाय ॥
रुप्यो गजसिंहहु कूरमराज, सज्यो इत हड्डनको सिरताज ॥२७॥
वढी बुध भूपतिकी हतवाह, कटे भट ओर भज्यो कछवाह ॥
धरा नभ मगर मक्कुलि घुरि, लयो नृप आजमको सुत रुधि ॥२८॥
रुपे इम जाजव के दल गारि, झरे असि झल्लरिलों झनकारि ॥
महानट नच्चत मुंडन मोह, करै किलकारत कालिय कोह ॥२९॥
झुकैं विहसैं चउगाहिंछुटन झुंड, रचै असिवार नचैं वहु रुंड ॥
भगैं इकतैं इक वत्थन आय, परै गज पब्बय ज्यों पवि पाय ॥३०॥
थरत्थर भुम्मि चलच्चल थान, लग्यो अहिभोगनकों लचकान ॥
कुलालक चक्र भयो भमि कच्छ, घरक्कत सूकर दष्ट्र बिलच्छ ॥ ३१ ॥

चउइति ॥ अधार अधकार चंडकिरन सूर्य ॥ २४ ॥ षट्पात् ॥ घटियइति ॥ प्रथित विख्यात ॥ २५ ॥ मुक्तादाम ॥ घटाइति ॥ कवारि कपारी वनकटे ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ २८ ॥ रुपेइमइति ॥ महानट शिव कोह कोलाहल ॥ २९ ॥ झुकैंइति ॥ असि खड्ग ताके धार प्रहार रूप चिन्ह मस्तक के क्रियावान सुभट 'रुंडकबन्धौ त्वपशीर्षे क्रियायुजि" इतिहैम ॥ पवि वज्र ताको ॥ ३० ॥ थरत्थरइति ॥ भो- [illegible] ॥ ३१ ॥ छगेइति ॥ त्रिविष्टप स्वर्ग नूतन भूष-

लगे अतलादिक कंपन लोक, इतैं अकुलात दिगिभ्रप ओक ॥
रमैं पलचारहु आरुन रंग, सबै इम सूचत सोनित संग ॥ ३२ ॥
चढ्यो गज आजमपुत्त सचाव, धर्यो नृप रच्छक उक्कन धाव ॥
कमानन खैंचत कानन कानि, तक्यो इम मारन बानन तानि ॥ ३३ ॥
लगैं सर छत्तिन व्है इम लीन, मनों बिल सर्प बिसंभर गीन ॥
सजैं बजि पत्तन सायक सोक, उडैं सलभा जिम अंतर ओक ॥ ३४ ॥
चलैं असि कुंत बरच्छिन चोट, अमूर दुरैं बहु हत्थिन ओट ॥
उडैं बहु अंबर अग्गि अलात, जरी गिरि गिद्धनि चिल्हनि जात ॥ ३५ ॥
फिरैं रचि फेरव फेरन फाल, गिद्धुलत काक उडैं विहगाल ॥
कमान फटैं रु हटैं कमनैत, पलान कटैं उलटैं पखनैत ॥ ३६ ॥
हरैं कहुँ प्रान लरैं कहुँ हक्कि, जरैं कहुँ पुच्छ परैं कहुँ जक्कि ॥
बरैं कहुँ हूर भरैं कहुँ बाढ, गिरैं कहुँ भीत धरैं कहुँ गाढ ॥ ३७ ॥
रुलैं कहुँ मत्त खुलैं कहुँ रास, हुलैं कहुँ हत्थि हुलैं कहुँ हास ॥
बकैं कहुँ प्रेत छकैं कहुँ बाग, धकैं कहुँ ज्वाल हकैं कहुँ धाग ॥ ३८ ॥
चढैं कहुँ बाजि बढैं कहुँ चाव, पढैं कहुँ बंदि कढैं कहुँ पाव ॥
धमैं कहुँ स्वास नमैं कहुँ धून, भ्रमैं कहुँ गिद्ध रमैं कहुँ भूत ॥ ३९ ॥
मचैं कहुँ रीठ जचैं कहुँ मुड्ड, रचैं कहुँ माग नचैं कहुँ रुंड ॥
बजैं कहुँ प्रोथ सजैं कहुँ बाह, लजैं कहुँ भीत भजैं कहुँ लाह ॥ ४० ॥
खसैं कहुँ घुम्मि हसैं भट खग्ग, त्रसैं कहुँ गोय कसैं कहुँ संग ॥

ना करत. सोनितसंग रुधिरके संगती ॥ ३२ ॥ चढ्योगजइति ॥ कानि अवाधि ॥ ३३ ॥ लगैंसरइति ॥ सघर जल तामैं पत्रन अपनें पतन करिकैं ॥ ३४ ॥ चलैंइति ॥ अमूर कातर अलात अगारे जरी दग्ध भई, ॥ ३५ ॥ फिरैंइति ॥ फेरव शृगाल. 'क्रोष्टुः फेरवः शिवा" इतिहैम. ॥ फेरन फेराफिरकें ॥३६॥ ३७॥ रुलैंकहुंइति ॥ हुलैं रसैं हत्थि हस्ती ताको. हास हान ॥ ३८ ॥ चढैंकहुंइति ॥ बंदि बंदीजन. धमैं धमन करैं ॥ ३९ ॥ मचैंकहुंइति ॥ जचैं मांगैं. लाह उपाय विशेष प्रोथ हयनासा बाह प्रहार. लाह लाभ ॥ ४० ॥ खसैंकहुंइति ॥ त्रसैं

घटैं कहुँ सोन घटैं कहुँ चेत हटैं कहुँ पिक्खि रटैं कहुँ हेत ॥४१॥
थटैं कहुँ लगि रहैं कहुँ बैर, खहैं कहुँ भिरि चहैं कहुँ खैर ॥
चवैं कहुँ उट्ठ फवैं कहुँ चोट, श्रवैं कहुँ मिच्छु ढवैं कहुँ श्रोट ॥४२॥
झिलैं कहुँ वार खिलैं कहुँ झुम्मि, मिलैं कहुँ घुम्मि मिलैं कहुँ भुम्मि।
लगैं कहुँ मोह वगैं कहुँ कोह, दगैं कहुँ तोप जगैं कहुँ द्रोह ॥ ४३ ॥
गिनैं कहुँ घाय वनैं कहुँ गात, हनैं कहुँ दागि भनैं कहुँ हाय ॥
चिपैं कहुँ सोन लिपैं कहुँ चेल, छिपैं कहुँ भाजि दिपैं कहुँ छेल॥४४॥
तनकत चाप प्रपञ्चन तुट्टि, खनकत खग्ग सु मुट्ठिन खुट्टि ॥
सनकत बानन प्रानन सक्कि, झनकत पक्खर राचि झमक्कि॥४५॥
वढ पग्गवानक नद्द विहद्द, महाबल बुद्ध रच्यो अवमद्द ॥
परयो अरि सैन उपक्रम पूर, सज्यो इम समर पुंगव सूर ॥ ४६ ॥
थेइत्थेइ नच्चहिं उट्ठि कवंध, मलप्पहिं दै कर ताल मदंध ॥
निसादिन जादिन छिन्न अनंत, भिरैं गजतें गज मत्त भ्रमंत ॥४७॥
थरैं बहु वीति विनाँ असवार, उलट्टहिं खुट्टहिं जान अपार ॥
गिरैं इभपालक दागित गत्त, मनों तरुतैं कपि निंद प्रमत्त॥ ४८॥

घाम पायें सान रुधिर॥४१॥थटैंकहुइति॥थटैं पक्ष महदंशीय प्राकृत उक्त तासों थरैं, भिरि मिलिकैं खैर यावनी कुशल उट्ठ श्रोष्ट ताके रोठ॥ ४२ ॥ ४३॥ गिनैंकहुइति ॥ घाय नाम तिनकौं, सोन कांधर चेल वस्त्र 'चेल चैल वसुस्वए' इत्यभिधानकोशकारः ॥ छैल मरा सनासुदर्गीके रसिक जानिये ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ वढइति ॥ पग्गवानक पणव वाद्य विशेष आनक ढाल तिनके विहद्द घने अट अवमद्द अवमर्द याको कवरघाण ॥ "अवमर्दस्तु पीडन" इत्यमरः ॥ उपक्रम पलायन, "उपक्रमसमुत्थानाग्राग" इतिहैम ॥ समरपुंगव समर नामके वधुधाननमें श्रेष्ठ ॥ ४६ ॥ थेइथेइइति ॥ ए दाऊ नृत्यके अनुकार शब्द हैं ॥ यही थकार विशिष्ट दोऊ पकारनकौं प्राकृत तासों पढिल लिख्या या नागराजके वचनसों रहस्य जानिये निसादिन निसादी हाथीनके असवार तिन करिकैं "हस्त्यारोह सादियन्ता महामात्रनिसादिन" इतिहैमः ॥ जादिन यादिसमर्मे छल हीन भ्रमत आरिनिकै ॥ ४७ ॥ थरैंइति ॥ वीति अश्व "गन्धर्वो वा स वीति" इतिहैम ॥ इभपाल ताके महावत, "गजाजी इभपालकः" इत्यमर [illegible] नाम जिनके पेड निद निरा॥ ४८ ॥ पता-

पताकिन होत सदंड मपात, बडे तरु ताल सकीस कि बात ॥
फिरैं बहु मस्तक लस्तक कट्टि, गिरैं गुन तुट्टि फिरैं धनु फट्टि॥४९॥
खिरैं बिखरैं सर छोरि निखंग, जथा बिलतैं बहु भीम भुजंग ॥
इली असिधेनुन छुट्टि अपार, किधौं मलयाचल नागकुमार॥५०॥
बहैं परिघातन कुंत सवेग, त्रिसीसक सांगि रु पट्टिस तेग ॥
अरैं कति अश्वन मंडि नियुद्ध, करैं तुमुलाहव के भट क्रुद्ध॥५१॥
परैं फटि दुंदुभि भेरिन पूर, गरज्जहिं के नर मंडि गरूर ॥
परैं स्फुरि बग्ग कवी रुलपान, कटैं खुर प्रोथ हयच्छद कान॥५२॥
रची इम संभर जाजव रारि, हनी अरि सेन घनी हलकारि ॥
घटा गज मध्य सु दै घन घाय, लयो नृप आजम पुत्त निराय ।५३।
भयो जबहीं असु आजम भंग, सबै नृप तत्थ टरे तजि संग ॥
भज्यो इक १ भूप रु द्वै २ हनि भिंटि, लयो अब आजमको सुत
बिंटि ॥ ५४ ॥

किनइति ॥ पताकिन पताकी पताका रखवेवारे. लोकमें निसानिबरदार. तिनके. सदंड ध्वजा दंड सहित. तरुताल तालवृक्ष सकीस कीस बानर तासहित "कपिः कीशः प्लवंगमः" इतिहैमः ॥ कि मनो. बात पवन सों. फिरैं बिखरैं. लस्तक धनुषकी मुष्टी. "द्रोणासो लस्तकोस्यात"रितिहैमः ॥ गुन प्रत्यंचा. ॥ ४९ ॥ खिरैंबिखरैंइति ॥ सर तीर. भीम भयंकर. इली लोकमें गुप्ती॥"स्यादिली करवालिके" तिहैमः ॥ असिधेनु छुरी. "छुरिका चासिधेनुका" इत्यमरः ॥ ॥ ५० ॥ बहैंइति ॥ परिघातन परिघ लोकमें लोहांगी. "परिघः परिघातनं" इत्यमरः ॥ त्रिसीसक त्रिसूल. "सर्वला तोमरे शल्यं शंकौ शूले त्रिशीर्षक" मितिहैमः । अरैं लरैं. अश्व घोरेनकों. नियुद्ध भुजयुद्ध. "नियुद्धं बाहुयुद्धं स्या"दित्यमरः । तुमुलाहव संकुलित युद्ध ॥ ५१ ॥ परैंफटिइति ॥ पूर समूह. गरूर देशीप्राकृत गर्व. बग्ग घोरेनकी बाग. कवी लगाम. हयच्छद घोरेनके स्कंध. "स्पर्शांगो हयच्छदे" तिहारावली ॥ ५२ ॥ रचीइमइति ॥ घटागजमध्य हस्तीनकी घटाके बीच. "हस्तिनां घटना घटे" तिहैमः ॥ सु सो ॥ ५३ ॥ भयोइति ॥ असु प्राण. आजम लुप्तषष्ठीक. नृप आर्यराज. इक नरवरको राजा गजसिंह कछवाह भज्यो. रु अरु. द्वै २ कोटाको महाराव रामसिंह अरु दतियाको राजा दलपतिसिंह बुंदेला २ ए दोउ तिनकों. भिंटि मिलिकैं. बिंटि घेरि ॥ ५४ ॥

चढ्यो गजहो अभ हारि विचारि, रची सुत आजम बानन रारि ॥
सु समर हेति सबै बरसाय, दयो अरि निब्बल पारि दबाय॥५५॥
हुती हय७लक्ख चमू हमगीर, भयो अवसान न इक्कहु भीर ॥
रच्यो जिहिं विग्रह भुग्गन राज, बचैं वह तित्तिरि क्यों लहि बाज।५६।
फितूर दफै करि मडल केरि, घनी निज सेन लयो गज घेरि ॥
कियो तउ बानन जंग कराल, कहाँलग जोर करैं लहि काल ॥५७॥
अधर्म न होत सहायक अंत, लगे बुध आयुध मर्म मिलंत ॥
भयो सुत आजम मोहि विभान, चल्यो समतगहि लै चहुवान५८

(दोहा)

घटिय इक्क खिल रवि रहत, घल्लिय सभर घत्त ॥
आजमसुत इभपाल सह, मोहित भयउ प्रमत्त ॥ ५९ ॥
इभ समेत लै तिहिं अधिप, उमँडि सुकामन आय ॥
साहबहादुर ढिग सजव, पत्र विजय पठवाय ॥ ६० ॥
सरिता इक ढिग सजतहो, सफरन वडिस सिकार ॥
आयो डेरन विजय सुनि, कहत बुद्ध जयकार ॥ ६१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे आजमप्रधनानन्तरमनेकार्यराजाजमसेनाप्रथ-

चढ्योइति ॥ सु सो (दीदारबख्श) समर बुधसिंहनें हेति शस्त्र ॥ ५५ ॥ हुती इति ॥ हय सात ७ लाख अवसान अंत समय भीर सहाय भुग्गन भोगिव कों ॥ ५६ ॥ फितूरइति ॥ फितूर यावनी झूठो गर्व लुप्तद्वितीयाक दफै याव नी नष्ट तउ तथापि काल मृत्यु ताहि ॥ ५७ ॥ अधर्मइति ॥ अंत अवसान तामैं मोहि मूर्छित व्हैकैं विभान विना भान समतगमत मातग वाको ह-स्ती तासहित ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ घटियइति ॥ खिल शेष जोके बाकी घत्त घात इभपालसह महावत सहित ॥ ५९ ॥ इभसमेतइति ॥ अधिप राजा (बुधसिंह) सजव वेग सहित ॥ ६० ॥ सरितेति ॥ सफरन सफर मत्स्य तिनकी वडिस वनसी जोके पालिया ताकरिकैं ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के पति बुधसिंह के चरित्र में आजम के मरे पीछे अनेक आर्य राजाओं का आजम की

गभवन १ नरवरनृपकूर्मगजसिंहरणापलायन २ दतियाभूपदलपति सिंहमरण ३ आजमात्मजदीदारवख्समूर्छितदशाग्रहणं पञ्चदशो मयूखः ॥ १५ ॥

आदितस्त्रिपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५३ ॥

(दोहा)

आजम दल अबलग वज्यो, पृथक लोभगति पाय ॥
अब टरिटरि सब उत्तरे, आलम दल विच आय ॥ १ ॥

(षट्पात्)

चरमाचल रवि चढत चित्त प्रमुदित निसचारन ॥
आजम सुत तजि मोह बहुरि झुल्ल्यो थित बारन ॥
को जित्यो दल कोन सु सुनि इन कहिय कुसीलित ॥
जित्यो आलमसाह कटक वाको तुम कीलित ॥
दीदारबख्स यह सुनि दुचित होदासों सिर हनिमरिय ॥
धत्ति लोह छकित इभपालहू परि प्रमत्त असु परिहरिय॥२॥

[दोहा]

जिहिं उप्पर आजम सुवन, मरिग फोरि उतमंग ॥
बारन वह सोनित बमत, आयुध भेदित अंग ॥ ३ ॥

सेना से जुदा होना १ नरवर के राजा गजसिंह कछवाहे का युद्ध से भागना २ दतिया के राजा दलपतिसिंह बुंदेले का मारा जाना ३ आजम के पुत्र दीदारबख्स का मूर्छित दशा में पकडेजाने का पन्द्रहवां १५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ त्रेपन २५३ मयूख हुए ॥

दोहा ॥ आजमइति ॥ अबलग अद्यावधि. पृथक् जुदो ॥ १ ॥ षट्पात् ॥ चरमेति ॥ चरमाचल अस्ताचल ताके ऊपर "अस्तस्तु चरमक्ष्माभृ" दित्यमर ॥ प्रमुदित प्रमोदित लोभकारि. मोह मूर्च्छाकों सु सो इन बुधसिंह के सुभटों नें. कुसीलित यह संबोधन है. खोटे सीलवारे ते. कीलित बद्ध. लोके कैदी प्रमत्त मोहित. असु प्रान. परिहरिय तजिय ॥ २ ॥ दोहा ॥ जिहँउप्परइति ॥ सोनित रुधिर. बमत उगलत ॥ ३ ॥ आजमइति ॥ जेवर यावनी आभूषण.

आजमसुत मृत सुनि अधिप, इभ सु सम्हारिय आनि ॥
कोटि इक्क१००००००० जेवर काढिय, पृथक सु धरिय प्रमानि ॥४॥
स्वघर भेजि निज साह ढिग, कथ सब विदित कहाय ॥
आजमसुत गत असु भयो, प्रभु अप्पन जय पाय ॥ ५ ॥
कोटि इक्क१ जेवर कढ्यो, सो थित फील समेत ॥
आयस वसि प्रात कि अबहि, आऊँ सबन उपेत ॥ ६ ॥

(षट्पात्)

सुनि बुद्धोदित साह खास निज दास खिनायो ॥
मडि विविध मनुहारि कथित अति नम्र कहायो ॥
बल तेरे बुद्धीस उमँडि आजम पर आये ॥
कावल जेते कहिय बैन करि सत्य बताये ॥
अब परिय रत्ति तुम श्रमित अति वपु विसल्य करि विधि विहित ॥
सेना सम्हारि मडहु सयन आवहु प्रात नरेस इत ॥ ७ ॥

[दोहा]

तब यह सुनि सन्नाह तजि, निज वपु सल्य निकारि ॥
किय विधान भिसकन कथित, सब दल प्रथम सम्हारि ॥८॥
भीम निसा आगम भयो, इहिँतर तिहिँतर अैन ॥ ९ ॥
क्रम सब सायकृत्य करि, सभय मडिय सैन ॥

॥ तोटकम् ॥

छपि भानु छपा सु जिहान छई, मिलि कज बिरजहु सोक मई ॥

स्वघरइति ॥ स्व अपने घर दास गतअसु गतप्राण ॥ ५ ॥ ६ ॥ षट्पात् ॥ सुनिबुद्धोदितइति ॥ बुद्धोदित बुधसिंहको कह्यो विसल्य विना शल्य शस्त्रनके शल्य रहे हाय तिनका निकासिके यह अर्थ ॥ ७ ॥ दोहा ॥ तबयहइति ॥ सन्नाह कवचोंको विधान क्रिया भिषक वैद्य कथित तिनका कह्यो ॥ ८ ॥ क्रमसबइति ॥ सायकृत्य सायंकालको कर्म सैन सयन भीम घोर भयंकर अैन अयन स्थान ॥ ९ ॥ तोटकम् ॥ छपिइति ॥ छपा क्षपा रात्री जिहान

बिबुधालय झल्लरि घंट बजे, सुरभीन स्ववच्छन मेलसजे ॥ १० ॥
दिन मूकन घूकन हूक दई, चित चक्रन चौंकि तजी चकई ॥
चिलकारिन पिंगलिका चहकी, निधिसी निसचारन धारनकी ॥ ११ ॥
चहुँओरन चोरन चाय चढे, बहु जारन दारन मोद बढे ॥
दिनचार अपार अगार दुरे, छबि व्योम नछत्रन चित्र फुरे ॥ १२ ॥
जुरि दीप निवासन भास जगी, दहनोदय चुल्हिन हेति दगी ॥
रचि गायक गोरिय गान रहे, गनिकान उमंगि भुजंग गहे ॥ १३ ॥
रस पीय स्वकीयन हीय रजे, परकीयन तीयन पीय तजे ॥
भय मुद्ध नवोढन चित्त भरयो, हिय हृच्छय मध्यन बोध हरयो ॥ १४ ॥
बसि प्रोढन केलि त्रपा बिसरी, क्रुध धारि अधीरन रारि करी ॥
छमि आगस धीरन नाह छले, चढि चाव बिदग्धन दाव चले ॥ १५ ॥

यावनी संसारमैं. बिरंज बिना रंज. बिबुधालय देवालयमैं ॥ १० ॥ दिनमूक- इति॥ चिलकारिन चीत्कारी वाके शब्दको अनुकरण है. "चिलीतिस्यान्ले चि- लीलिती" दीपवसंतराज ॥ पिंगलिका कोचरी. की करी. कही नही अन्त्यानु- प्रास है ॥ ११ " चहुँइति ॥ अपार अपवारे ॥ १२ ॥ जुरिदीपइति ॥ जुरि ज्व- लित व्हैकैं.दीप दीपक. निवासन घरमैं. भास कांति. "भाश्छविद्युतिर्दीप्तयः" इत्यमरः॥ दहनोदय दहन अग्नि ताके उदय करिकैं. चुल्हिन चुल्ही चुल्ली लोके चूल्हा. रसोई पकायवेके तिनमैं. हेति झाल. "अर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियां" मि- त्यमरः ॥ गोरियगान गोडी रागिनीको गान. हनुमान कपिराजके मतमैं तथा आधुनिक गायकनके मतमैं गोडीको समय सायंकाल है. भुजंगगहे भुजंगस्य अपने पति ॥ "भुजंगो गणिकापति" रितिहैमः ॥ १३ ॥ रसपीयइति ॥ पीय प्रिय. अपनों परिणीत. अपनों परिणीत नायक. तत्संबंधी रस शृंगार तामैं. स्वकीयन स्वकीया नायिकानको. हीय हृदय रजे रंजित भये. मुद्धनवोढान मुद्ध मुग्धा नवोढन नवोढा तिनके हिय ह्री लज्जा तानैं. "मंदाक्षं ह्रीस्त्रपा व्री- डा" इत्यमर ॥ हृच्छय काम तानैं "विषमायुधो दर्पककामहृच्छयाः" इतिहै- मः ॥ मध्यन मध्या नायिकानके ॥ १४ ॥ बसिप्रोढनइति ॥ प्रोढन प्रौढा नायि- कानमैं. केलिवश व्हैकैं. त्रपा लज्जा कों. क्रुद्ध क्रोध कों. अधीरन अधीरा नायि- कानमैं. छमिआगस आगस अपराध ताकों. छमि क्षमाकरिकैं. धीरन धीरा नायिकाननैं. नाह नायक. बिदग्धन विदग्धा परकीया नायिका बिशेष तिननैं. वाक्‌विदग्धा १, क्रियाविदग्धा २ ए दोऊ तिनके. दाव चातुर्यसों नायकको

रस भूति स्वदूतिन ऊति रची, वयवारिन लच्छितिकान वची ॥
कुलटा तजि गेह सनेह भ्रमी, जियमैं मुदितान सु प्रीति जमी ।१६।
अनुपुब्बसयानन भीति अरी, पिय सग सहेट न भेट परी ॥
परभोगदुखीन सखीपरखी, त्रिय रूप रु प्रेमवती हरखी ॥ १७ ॥
पतिप्रोपितकान विलाप परयो, क्रुध मानस खंडितिकान करयो ॥
छिन टेक निबाहि अबैं दरिता, तजि मान उठी कलहंतरिता ॥ १८ ॥
भगि विप्रसलब्धन सोक भिल्यो, मन सेट सहेट न आनि मिल्यो।
उतकंठिनि पुच्छि निदान अली, लखयो मग वासकसज्जलली१९
भर दर्प अधीनइनान भज्यो, अभिसारिनि वेस नयो उपज्यो ॥
वहु गंध कुवेलनको बिकरयो, ससिहू व उदैगिरितैं निकस्यो।२०।
ससिके वसि ओपधि पोप लहयो, गहकाय चकोरन मोद गहयो।

संकेतादि सूचना करिबेके ॥ २० ॥ रसभूतिइति ॥ रसभूति रसहीमें भूति वैभव जिनकें ऐसी स्वदूति स्वयंदूतिकानमें यह नायिका प्राचीननें लिखी नहीं यद्द चमत्कार विशेष हू नहीं तथापि आधुनिक भाषाकविनके मताऽनुसार लिखिदीनी है ऊति क्रीडा वयवारिन वयवारी अपनें समान अवस्थावारी सखी तिनसें लच्छितिका लक्षिता नायिका वचधी नहीं छिपी रही. सनेह नेह सहित भ्रमी चली मुदिता मुदिता नायिकानके ॥१६॥ अनुपुब्बइति ॥ अनुपुब्बसयानन अनु है पूर्वमें जिसके ऐसी सयानन सयाना जे अनुसयाना तिनके भीति त्रास संकेतके नाशादिककी सहेट संकेत तहां भेट मिलाप. परभोगदुखीन अन्यसंभोगदुःखिता तिनकें सखीपरखी यहां विपरीत लक्षणासा याकी याद्यु जो नायकसों संभोग करिआई सो दूती जानिये रूपरुप्रेम. वती रूपगर्विता प्रेमगर्विता ए दोऊ॥१७॥पतिप्रोसतिकाइति॥ पतिप्रोसतिका प्रोपितपतिका तिनके क्रुध क्रोध मानस मन खंडितिकान खंडितानमें दरिता डरी हुई ॥ १८ ॥भगिविप्रइति ॥भगि दूती प्रकुपित व्हैकैं विप्रसलब्धन विप्र सहित लब्धा जे विप्रलब्धा तिनकै मनसेट मनस इट, मन ताको इट स्वामी एसो नायक उत्कंठिनि उत्कंठिता तिननैं पुच्छि पूछयो निदान आदिकारन नायकके अनागमको लखयो लखयो मग मार्ग वासकसज्जलली वासकसज्जा ललनानैं ॥ १९ ॥ भरदर्पइति ॥ भर भार दर्प गर्व ताको अधीन इन अधीन वशीभूत है इन पति जिमकै ऐसी जे स्वाधीनपतिका तिननैं अभिसारिन अभिसारिका तिननैं कुवेलनको कुवेल कुवलय कोके गंधूल तिन॰

भुवपैं इम होत निसीथ भयो, रस प्रेतन साह नयो रचयो ॥२१॥
थित निंद प्रजा व्यवहार थके, जिम संजम इंद्रिय जोगिनके ॥
गति या भति रत्ति सु बित्ति गई, भल ब्रह्ममुहूरत वेर भई ॥२२॥
बिरुदारव बंदिनको बिथर्यो, क्रम जग्गि तहाँ नृप नित्य कर्यो॥
छकतैं कसि आयुध जोस छल्यो, चढि बाहरु साह हजूर चल्यो२३
इत आगम प्रात लुभे अहके, चटकी चरनायुधहू चहके ॥
दिक्र प्राचिय आरुन रंग दिपी, लगि अंबर भुम्मि सु रोचि लिपी २४
लघु दिठ्ठि नछत्रन निठ्ठि लहैं, चित ज्यौं तजि भोगन ग्यान चहैं॥
भजिकैं तम अद्रि गुफान भर्यो, जिम तत्व लहैं गृह दंद जर्यो २५
दुति पूर जरूर इतैं दमक्यो, चढि अक्क उदैगिरिपैं चमक्यो ॥
छकमैं तिहिं बेर नरेस छयो, गति अर्जुन साह समीप गयो ॥२६॥

(दोहा)

साहबहादुर तिहिं समय, बैठो आस बनाय ॥
नजरि निछावरि लेत निज, परिकरतैं जय पाय ॥ २७ ॥
सुनि आगम बुंदीसको, दारु अटा चढि देखि ॥
प्रमुदित्त आयो तखत पुनि, लोभ बिजय हिय लेखि ॥२८॥

(मनोहरम्)

एतेमैं नरेस आय अंदर प्रवेश होत,
उमडि नकीब कीनी सूचना अभूती है ॥
जाय करि नजरि निछावरि मिसल लेत,

को. ब अथ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ इतआगमइति ॥ अहके दिनके. चटकी चिरी. चरनायुध कुक्कुट. दिक दिशा. प्राचिय प्राची पूर्व. आरुन अरुन लाल रंगकी. सु सो. रोचि कांति ॥ २४ ॥ लघुदिठ्ठइति ॥ भोगन शब्द स्पर्शादि विषयनको. तम अंधकार. तत्वलहैं तत्वज्ञान भये ॥ २ ॥ दुतिपूरइति ॥ दुति कांति. ताको पूर समूह. अक्क अर्क सूर्य ॥ २६ ॥ दोहा ॥ साहबहादुरइति ॥ आम बडी सभा ॥ २७ ॥ सुनिआगमइति ॥ दारुअटा काठकी बुरज. प्रमुदित अधिक प्रसन्न. पुनि फिरि. लेखि देखिकैं॥ २८ ॥ मनोहरम् ॥ एतेमैंइति ॥नरे-

निकट बुलाय साह बखसी बिभूतीहैं ॥
दोऊहाथ हियसों लगाय मुसिकाय कह्यो,
मरद बली तैं रखी खूब मजबूतीहैं ॥
दिल्लीपुर गादी मैं लहीं जो यह वादी वीर,
मेरे महारावराजा रावरी सपूतीहैं ॥ २९ ॥

(पादाकुलकम्)

महारावराजा इम अक्खयो, भूपहिं छिनक लाय हिय रक्खयो ॥
पुनि बखसीस करी दिल्लिपपति, रामनृपति वह सुनहु रक्खिवरति ३०
कोटादिक चोवन५४गढ दीनें, कहत नाम कछु कछु हम चीनें ॥
कोटा१बहुरि झलरापट्टनि२, गग्गरोनि३तीजो दुर्गन मनि॥ ३१ ॥
साहाबाद४सेरगढ५थानक, अरु बडोद६चेचत७अभिधानक ॥
छबडा८अरु गूगेर९दुर्गवर, पचपहाड१०पडाप११डग१२नगर ।३२।

॥
॥ ३३ ॥
॥
॥ ३४ ॥
॥
॥ ३५ ॥

स बुधसिंह अदर सिरायधेके मध्य सूचना जानकारी पहूती और काहूके आयबेसा जा सूचना नहीं भई ऐसी आजमशाहके मारिबेवारे अरु दीदार-बख्श को मूर्छित समतंगज कीलित करि ल्यायबेवार, बुदासके आयबेतैं नकी-यनें कीन्हीं विभूति विशेष वैभव ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

स्वयं ग्रन्थकर्ता [सूर्यमल्ल] की रचीहुई टीका यहां तक ही हमको मिली सो हमने ग्रन्थकर्ता के रक्खेहुए क्रम के अनुसार ज्यों की त्यों यहां लिख दी है अब यहां से आगे हम [बारहठ कृष्णसिंह] अपने रक्खे हुए क्रम के अनुसार मूल कठिन शब्दों पर अंक देकर नीचे टीका लिखते हैं.

॥
॥ ३६ ॥
॥
॥ ३७ ॥

साह सिक्ख डेरन दिन्नी जब, बिन्नति नृप करजोरि करी तब ॥
कूरम नृप जयसिंह हरामिय, पै सेवक मंगी तस जामिय॥ ३८ ॥
तातैं तिहिं संबंध अरज यह, आजम दोस आहि जग्गी वह ॥
जो आयँस तिहिं ढिग तो जाऊँ, सेवक करि अप्पन समुझाऊँ३९
सुनि यह अरज साह कछु अक्खैं, तव संबंध सहर तस रक्खैं ॥
पुर आमेर सु तो फिरि पावहु, अब तव संग भलैं ढिग आवहु४०
यह सुनि नृप कूरम ढिग आयो, मदर पाय सिक्कन वह पायो ॥
तीर एक१भुज सब्यँ लग्यो तस, जाजव रन इक१कंठ लाहन तस४१
सो जस भयो बुध सरनागत, छकि कूरम पाये केवल छतँ ॥
तिन सिक्कत जायरु नृप तक्यो, करि मनुहारि नेह हिय छक्यो।४२।
कही बहुरि नृप नेह कहाई, आजग वासि आमेर दिराई ॥
आलम सेवा अबहि अराधहु, सर्तृप जोर दुलभ सुख लाधहु॥४३॥
डेरा अब आलम दल मंडहु, लगि कछु दिन निपति दुखखंडहु॥
कूरमकौं लै संग यहै कहि, चाहुवान निज दल आयो वहि॥४४॥
अप्पन ढिग कछवाह उतारे, सालक जामिप विनय लस्हारे ॥
बिधि इहिं कदँन अपूरब बित्त्यो, जाजव रन दुलभ नृपँ जित्त्यो ४५

---

१ उसकी बहिन की मुझसे सगाई (अंगनी) हुई है ॥ ३८ ॥ २ आजम के पक्ष में होने के अपराध से ३ घायल है ४ आज्ञा होवे तो ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ तीर के घाव को तपाताहुआ ६ वाम भुज पर ॥ ४१ ॥ ७ घाव ही पाया, यश नहीं पाया ॥ ४२ ॥ ८ बहिन के पति (बहिनोई) बुधसिंह के बल से ॥ ४३ ॥ ९ सहन करके ॥ ४४ ॥ १० साला बहिनोई ने अधिक नम्रता की ११ इस रीतिसे अपूर्व (पहले नहीं हुआ ऐसा) नाश १२ राजा बुधसिंह ॥ ४५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे मूर्छोत्थितश्रुतस्वानीकपराजयकरिपल्याणमहारभग्न मस्तकदीदारबख्शमरण १ दीदारबख्शगजगतकोटिमुद्रालङ्कारोपेतनिजयप्राप्तिबुधसिंहबहादुरशाहसेवानिवेदन २ द्वितीयदिनप्रभातयवनेन्द्रबहादुरशाहसभासमागतबुधसिंहार्थमहारावराजपदसाहितद्वापञ्चाशत्प्रान्तयवनेन्द्रप्रदान ३ बुधसिंहालमसेनासमानीतामेराधीशजयसिंहालमसेवकत्ववर्णन षोडशो मयूख ॥ १६ ॥

आदित चतुपञ्चाशोत्तरद्विशततम ॥ २५४ ॥

(षट्पात्)

मरत साह अवरंग मत्र मंडिय रट्ठोरन ॥
अब न साह अवनीस मूढ तस सुत प्रमाद मन ॥
इहिं अंतर पह पिक्खि आनि बंभन अगार सन ॥
पट्ट तखत जोधपुर नृपहिं रक्खहु निसंक मन ॥
यह मिसल ग्रष्ठ८उपजाय उर द्विज गृहतें तव आनि दुतें ॥
नृप अजितसिंह रक्ख्यो तखत सवन तत्थ जसवत सुत ।१।

(दोहा)

इत आलम छहि विजयअरु, प्रभुपन सत्य प्रमानि ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवे राशि मे बुंदी क भूपति बुधसिंह के चरित्र मे, मूर्छा से सचेत हुए दीदारबख्श का अपनी पराजय सुनकर हाथी के होदे मे मस्तक फोड कर मरना १ दीदारबख्श के हाथी पर कोड रुपयों के भूषण सहित विजय मिलने का बुधसिंह का बहादुरशाह की सेवा में निवेदन करना २ दूसरे दिन बुधसिंह क प्रभात समय बादशाह बहादुरशाह की सभा म जाने पर बादशाह का बुधसिंह को महारावराजा के पद के साथ बावन परगने देना ३ आमेर के राजा जयसिंह को बुधसिंह का आलम की सेना में लाकर आलमशाह के सेवक बनाने के वर्णन का सोलह वा १६ मयूख समाप्त हुआ और आदि मे दोसौ चोपन २५४ मयूख हुए ॥

राठोडो ने १सलाह की २ भूमि का पति बादशाह अब नहीं है उसका मूर्ख पुत्र उन्मत्त मनवाला ३ ब्राह्मण के घर से ४ जोधपुर क उमरावो की गणना मे मुख्य आठ मिसल (बैठन की जगह) मानी जाती हैं ५ शीघ्र ॥ १ ॥ २ ॥

सृत जखमिन आजम मरन, नृपन हरामी जानि ॥ २ ॥
इहिं अंतर मरुधर१ खबरि, पहुँची विविध प्रकारि ॥
रट्ठोरन जसवंत सुवँ, दयो तख्त बैठारि ॥ ३ ॥

[षट्पात्]

यह सुनि आलमसाह करि हिंदुनपर कुप्यो ॥
प्रलय रुद्र जिम प्रबल तेज धीरज सब लुप्यो ॥
दिय आयस तिहिंबेर नगर आमेर१ स नगरन ॥
कोटापत्तन३ बहुरि पुर इतिया४ रु जोधपुर५ ॥
आमैर आदि चउ४राज्य ये आजम सेन उतारि लिय ॥
रट्ठोर हुकम बाहिर रहत सैन्य रोष मरुधर धाविय ॥४॥
समँर जित्ति यह साह गनिग चउ४नाग मुजावर ॥
इसं दसमी१०अवदात चलिव मारुधर उप्पर ॥
परिन जागति करन बुद्धि अजमेर बखानों ॥
करि फोजन दरकुंच आय आमेर ठहानों ॥
बुधसिंह हितु जयसिंह तब कहिय पुह परिनैन ससय ॥
इत साह संग अन१३वधि गमन बहिनि गई इत उचित वय ॥ ५ ॥

(दोहा)

साह जेर करि जोधपुर, करिहै दक्खिन जेर ॥
बेग न पुनि आवन बनै, ब्याहनको यह बेर ॥ ६ ॥
लग्गी हमरी ख्याल लै, रजधानी रन रोस ॥

---

१ मारवाड़ देश की २ पुत्र को ॥ २ ॥ ३ क्रोध करके अथवा जुल्म के साथ हिंदुओं पर क्रोधित हुआ ४ आमेर को आदि लेकर चार राज्य तो आजम के पक्ष से होने के दोष से उतार लिये और राठोड़ पहिले से ही हुकम बाहि-रैं थे इसकारण ५ मारवाड़ पर क्रोध में ६ जला (प्रज्वलित हुआ) अथवा क्रो-ध करके मारवाड़ पर चला ॥ ४ ॥ ७ जाजव का युद्ध ८ आश्विन ९ सुदि दश-मी १० मारवाड पर क्रोध करके ११ से १२ परनने (विवाह करने) का १३ विना अवधि १४ विवाह के उचित अवस्था॥५॥६ ॥ १५लड़ाई करने के क्रोध

*अतहपुर सामोदगढ, रक्ख्यो भटनें भरोस ॥ ७ ॥
तातैं द्वैरदिन सिक्खलै, वहिनी लेहु बिवाहि ॥
सगहि अैहैं साम्ढिग, चित्त बहुरि भुंव चाहि ॥ ८ ॥
बुंदियपति यह सुनि कहिय, सुनहु अरज मम साह ॥
मुलतान जु सवध भो, जानत ज्यानपनाह ॥ ९ ॥
कूरम नृप यातैं कहत, सहर निकट सामोद ॥
छैरदिन अतर लगनहै, विरचहु व्याह विनोद ॥ १० ॥
तातैं जो आयसें लहौं, आऊँ करि उदवाह ॥
छैरदिनकी यह सुनि मुदित, सिक्ख दई तब साह ॥ ११ ॥
सभर कूरम सिक्खलै, आये दुहु सामोद ॥
बनि दुल्लह बुधसिंह नृप, सद्वि लगन सविनोद ॥ १२ ॥
जामि वडी जयसिंहकी, अमरकुमारि अभिधानं ॥
बुंदियपति हिय हित बिरचि, व्याही विहित बिधान ॥१३॥
इत आलम अजमेरपुर, पहुंच्यो गजब गरूर ॥
बुंदियपति आमेरपति, आये बहुरि हजूर ॥ १४ ॥

(षट्पात)

इम आलम अजमेर आय पूजन पीरन करि ॥
रचि मारुन पर रोस हैल्यो दरकुच अलस हरि ॥
अजितसिंह सुनि एह नमित मरुदेस नरेसुर ॥
वेग आय कर बधि परयो पायन अलैहनपुर ॥
इम साह धन्व किय निज अमल सत्थ रक्खि जसवंतसुव॥

सें राजधानी (आमेर) खालसे होगई *जाना १ उमरावों के भरोसे ॥ ७ ॥ २ भूमि लेने की चाह से ॥ ८ ॥ ३ मुलतान में ध लप ॥ ९ ॥ १० ॥ ४ आज्ञा ५ विवाह ॥ ११ ॥ १२ ॥ ६ बहिन ७ नाम ८ उचित रीति से ॥ १३ ॥ ९ बहुत घमंड से ॥ १४ ॥ १० मारवाड़ों पर ११ चला १२ आलस्य मिटा कर १३ आलयपावास नामक नगर में१४मारवाड़ में १५ जशवंतसिंह के पुत्र को

मृत जखमिन आजम भटन, नृपन हरामी जानि ॥ २ ॥
इहिं अंतर मरुधर[1] खबरि, पहुँची विविध पुकारि ॥
रठोरन जसवंत सुव[2], दयो तखत बैठारि ॥ ३ ॥

[षट्पात्]

यह सुनि आलमसाह कहर[3] हिंदुनपर कुप्यो ॥
प्रलय रुद्र जिम प्रबल रज्ज धीरज सब लुप्यो ॥
दिय आयस तिहिंबेर नगर आमेर१रु नरउर२ ॥
कोटापत्तन३ बहुरि पुरी दतिया४ रु जोधपुर५ ॥
आमेर आदि चउ४राज्य[4] ये आजम दोख उतारि लिय ॥
रठोर हुकम बाहिर रहत पँन्व[5] सीस अमरख[6] धंकिय ॥४॥
समँर जित्ति यह साह रहिय चउ४मास सुसावर ॥
इस[8] दसमी९[9]अवदात अनखि मारवंधर[10] उप्पर ॥
परिन जारति करन[11] लुद्धि अजमेर बहानौं ॥
करि फोजन दरकुंच आय आमेर रहानौं ॥
बुधसिंह हिंतु जयसिंह तब कहिय एह परिनेय समय ॥
इत साह संग अनवधि[13] गमन वहिनि भई इत उचित वय[14] ॥ ५ ॥

(दोहा)

साह जेर करि जोधपुर, करिहै दक्खिन जेर ॥
बेग न पुनि आवन बनैं, ब्याहनको यह बेर ॥ ६ ॥
लग्गी हमरी खालरौ, रजधानी रन[15] रोस ॥

१ मारवाड़ देश की २ पुत्र को ॥ ३ ॥ ३ क्रोध करके अथवा जुल्म के साथ हिंदुओं पर क्रोधित हुआ ४ आमेर को आदि लेकर चार राज्य तो आजम के पक्ष में होने के दोष से उतार लिये और राठोड़ पहिले से ही हुकम बाहिर थे इसकारण ५ मारवाड़ पर क्रोध में ६ जला (प्रज्वलित हुआ) अथवा क्रोध करके मारवाड़ पर चला ॥ ४ ॥ ७ आजम का युद्ध ८ आश्विन ९ सुदि दशमी १० मारवाड पर क्रोध करके ११ से १२ परनने (विवाह करने) का १३ बिना अवधि १४ विवाह के उचित अवस्था ॥ ५ ॥ ६ ॥ १५ लड़ाई करने के क्रोध

*प्रतहपुर सामोदगढ, रक्ख्यो भटनं भगेस ॥ ७ ॥
तातैं द्वैरदिन सिक्खलै, बहिनी लेहु विवाहि ॥
सगहि श्रैहैं साहढिग, चित्त बहुरि भुव चाहि ॥ ८ ॥
बुंदियपति यह सुनि कहिय, सुनहु अरज मम साह ॥
मुलतान जु सबभ भो, जानत ज्यानपनाह ॥ ९ ॥
कूरम नृप यातें कहत, सहर निकट सामोद ॥
द्वैरदिन अतर लगनहै, विरचहु व्याह विनोद ॥ १० ॥
तातैं जो आयसैं लहौं, आऊँ करि उदवाह ॥
द्वैरदिनकी यह सुनि मुदित, सिक्ख दई तब साह ॥ ११ ॥
समर कूरम मिरखल्ल, आये दुहुँ सामोद ॥
बनि दुल्लह बुधसिंह नृप, सहि लागन सविनोद ॥ १२ ॥
जामि बडी जयसिंहकी, अमरकुमरि अभिधानँ ॥
बुंदियपति हिय हित विरचि, व्याही विहित विधान ॥१३॥
इत आलम अजमेरपुर, पहुँच्यों गजब गरूर ॥
बुंदियपति आमेरपति, आये बहुरि हजूर ॥ १४ ॥

(षट्पात्)

इम आलम अजमेर आय पूजन पीरन करि ॥
रचि मारून पर रीस हैल्यो दरकुच अलसँ हरि ॥
अजितसिंह सुनि एह नमित मरुदेस नरेसुर ॥
वेग आय कर बंधि परयो पायन अलैहनपुर ॥
इम साह धन्व किय निज अमल सत्थ रक्खि जसवंतसुव॥

से राजधानी (आमेर) खालसे होगई ॥ जाना १ उमरावों के भरोसे ॥ ७ ॥ २ भूमि लेने की चाह से ॥ ८ ॥ ३ मुलतान में थ तय ॥ ९ ॥ १० ॥ ४ आज्ञा ५ विवाह ॥ ११ ॥ १२ ॥ ६ बहिन ७ नाम ८ उचित रीति से ॥ १३ ॥ ९ बहुत घमंड से ॥ १४ ॥ १० मारवाड़ों पर ११ धावा १२ आलस्य मिटा कर १३ आलयपावास नामक नगर में १४मारवाड़ में १५ जसवंतसिंह के पुत्र को

उप्पारि[1] उफान सागर[2] उपम[3] दक्खिन पर गज्ज्यो [4]गरुव॥१५॥
रहि कछुदिन अजमेर सज्जि संभर[5] सेनापति ॥
दक्खिनपर दरकुंच गब्ब[6] धरि चल्लिय जनक[7] गति ॥
होय दुरग चित्तोर हेठ[8] दसउर[9] मिल्लान दिय ॥
यँहँ रानाँ अमरेस[10] प्रनति[11] मनुहारि पठाविय ॥
हिंदवान सीस मिच्छन[12] हुकम तामैं कुल रानन[13] रख्यो ॥
जवनेस तदपि[14] निकसत निकट प्रनति द्रव्य पठवन[15] पर्यो ॥१६॥

[दोहा]

अमररान अप्पन अनुज[16], तखतसिंह अभिधान[17] ॥
देवसिंह वेघमपुर प[18], दुवर्पठये सनिदान[19] ॥ १७ ॥
इक्क१अनेकप[20] च्यारि४हय, साह काज दिय संग ॥
च्यारि४वाजि चहुवान[21] हित, इम पठवाय अभंग ॥ १८ ॥

(षट्पात्)

अट्ठ८वाजि गज इक्क१भेट अमरेस पठाये ॥
तखतसिंह अरु देव लै रु दसउर[22] दुवर्आये ॥
वाजि च्यारि बुधसिंह हेत नतिपुब्ब[23] निवेदिय ॥
मंडि बिबिध मनुहारि जानि जामिप[24] प्रमोदि जिय ॥
पुनि कहिय साहहित[25] रान प्रभु हय हत्थिय पठये हुलासि[26] ॥

साथ रख कर वहां से १ उपड कर २ समुद्र के चढाव के ३भांति४बहुत (भारी) ॥ १५ ॥ ५ चहुवाण बुधसिंह को ६ गर्व ७ पहिले इसका पिता औरंगजेब गया था उसी रीति से ८ चित्तोड़ के नीचे होकर ९ मंदसोर मुकाम किया १० अमरसिंह ने ११ विशेष नम्र होकर १२ हिन्दुस्थान के ऊपर म्लेच्छों के हुकम से १३ रानाओं का कुल ही बचा है १४ तोभी १५ भेजना पड़ा ॥ १६ ॥ १६ अपना छोटा भाई १७ नाम १८ पति १९ कारण सहित [अपने देश में आये हुए बडों को भेट देनी चाहिये इसकारण से] ॥ १७ ॥ २० हाथी २१ बुधसिंह के लिये, 'अभंग' यह महाराणा का विशेषण है ॥ १८ ॥ २२ मंदसोर नामक पुर में २३ नम्रता पूर्वक २४ बुधसिंह को बहिन का पति जान कर २५ बादशाह के लिये २६ प्रसन्न होकर

मिलवाय हमहिं यह भेट अब* विदित निवेदहु समय वसि।१९।

दोहा—सुनि सभर तिन्ह संग लै, जवनेईस ढिग जाय ॥
मिलवाये दसतूर मित, क्रम सलाम करवाय ॥ २० ॥
सीसोदन अक्खी सबहि, नुति जु कहाई रान ॥
आलम अंगीकार किय, नुति रु भेट सनिदान ॥ २१ ॥
बुंदियपति करि सिक्ख तब, लै तिन्ह डेरन आय ॥
नृप कूरम रट्ठोरहू, लीन्हे उभय बुलाय ॥ २२ ॥
अजितसिंह जयसिंहकों, इक सभर अवलंब ॥
पुच्छिय मत्र नरेसपति, कहिकहि कित्ति कदंब ॥ २३ ॥

[षट्पात्]

धैरहु बत्त बुदीस ग्रैाय रुक्कत हम आतुर ॥
लियउ कुप्पि जवनेस छिन्नि आमेर जोधपुर ॥
नहिं निबाहि अब सकत विभव गज बाजि बिमैन अति ॥
सोत सफरं जिम साह गहत दिनदिन उलटी गति ॥
सुनि यह नरेस अक्खिय उचित बाँसर कछुधीरज बईहु ॥
सेवन बढाय कछु साहको गत मही सु निजनिज गहहु ।२४।
बुंदियपतिको हुकम साह दलै माँहिं सबनासिर ॥
सीसोदन यह पिक्खिं जानि जैामिप जग जाहिर ॥
रान सुभैट राउत्त देवसिंहह बेघम पति ॥

---

* प्रसिद्ध॥१९॥१बुधसिंह२बादशाह के पास३रीति के अनुसार॥२०॥४नम्रता या स्तुति५कारण सहित अर्थात राणाओं ने पहिले नम्रता और भेट कभी नहीं की थी इसकारण से॥२१॥६आमेर का राजा कछवाहा जयसिंह७जोधपुर के राजा राठोड अजीतसिंह का ॥ २२ ॥ बुधसिंह का ही ८आधार था९बुधसिंह से १० कीर्ति का समूह ॥ २३ ॥ ११ कहो १२ हम आमद रुकने से १३ पीडित हैं १४ उदास १५ जल के प्रवाह में मच्छ के समान [बहतेहुए जल में मच्छ उलटाही जाता है] १६ बुधसिंह ने कहा १७ दिन १८ धारण करो ॥ २४ ॥ १९ बादशाह की सेना में २० देखकर २१ पहिनोई २२ महाराना का उमराव देवसिंह

संभर प्रति करजोरि बिहित आक्खिय यह बिन्नति ॥
करि नेह गेह पावन करहु मंजु बिवाहहु जाँमि मम ॥
सुनि यह नरेस स्वीकार किय सिक्ख बिमंगिय साह सम ॥

[दोहा]

दस बासरकी सिक्ख दिय, साह बिहित सनमान ॥
अजितसिंह जयसिंहसौं, तब आक्खिय चहुवान ॥ २६ ॥
बेघम ब्याहन जात हम, तुम रहि साह समीप ॥
मन न गिनहु कुमहर महर, उर बिचारि अवनीप ॥ २७ ॥

[षट्पात]

सुनि कूरम रट्ठोर दुहुन आक्खिय सनेह सधि ॥
साह कितवके संग अबहु जैहैं रेवाऽवधि ॥
इहिं अंतर कछु होय ततो रहिहैं संगति सर ॥
नहिं तो ऐहैं सुररि अप्प करियो कछु उप्पर ॥
यह सुनि नरेस पुनि उच्चरिय यह उचित न तुमकों अबहि ॥
जोलौं बिबाहि आऊँ सजवे तोलौं पुनि रक्खहु हितहि॥२८॥

[दोहा]

इम प्रबोधि बुंदिय अधिप, मन जय जुब्बन मत्त ॥
दसउरतैं दरकुंच करि, पुर बेघम दुत पत्त ॥ २९ ॥
पुत्ती अनुपमसिंहकी, फूलकुमारि अभिधान ॥
देवभ्रात सबिनय दई, बुद्धहिं बिहित बिधान ॥ ३० ॥
बान तक्क मुनि इक्क१७६५सक, पुरिगाम माधव मास ॥

१सुंदर २ बहिन ३ मांगी ४ बादशाह से (यहां 'सम' शब्द 'से' का वाचक है) ॥ २५ ॥ ५ दिन की ॥ २६ ॥ ६ अकृपा और कृपा ७ हे राजाओ ॥ २७ ॥ ८ छली [ठग] के साथ ९ नर्मदा नदी पर्यन्त जावेंगे १० साथ चल कर ११ वेग सहित ॥२८॥ १२समझाकर १३ जाजव के युद्ध की जय और जोबन से मन में मस्त होकर १४ प्राप्त हुआ [गया] ॥ २९ ॥ १५ पुत्री १६ नाम१७ भाई देवसिंह ने १८ उचित रीति से ॥ ३० ॥ १९ वैशाख ॥ ३१ ॥

चुडाउति व्याही चतुर, बुदियपति सविलास ॥ ३१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे दृष्टयवनेन्द्रराज्यदौर्बल्यमारवठकुराजितसिंहयोधपुरपट्टाभिषेचन १ श्रुतमरुदेशोदन्तक्रुद्धयवनेन्द्राजममित्रत्वापराधहृतामरकोटानरवरदतियाराज्ययोधपुरयात्रा २ हृतयोधपुरालमशाहदक्षिणदेशगमन लप्तदशो मयूखः ॥ १७ ॥

आदित पञ्चपञ्चाशोत्तरद्विशततम ॥ २५५ ॥

[पट्पात्]

चोवन८,१गढ जब साह दये जाजव रन जित्तत ॥
कोटाहू तिन मांहिं नृपहिं दिन्नों अरिचित्तत ॥
जय उद्धत चहुवान नांहि सम विसम विचारयों ॥
भातन सुव लरि लेन प्रथम दल उतहि हकांरयो ॥
कंगगर पठाय लिखि अप्प कर पेषस सनं बुदिय नगर ॥
करिलेहु प्रथम कोटा अमल भट मन्त्रिय स्यरमति समर॥१॥
यह कंगगर हुत बचि मत मडिय इत बुदिय ॥
जोधराज परधान बनिंक बपहृद्ध प्रपञ्चिय ॥
धावें गंगाराम सूर सुभटन इक्कत करि ॥
कोटा उप्पर कटक वेग मडिय बीरन वरि ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बादशाही का निर्बल देख कर मारवाड के उमरावों का अजितसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बिठाना, मारवाड की खबर सुनने से बादशाह का क्रोधित होकर आजम के साथी होने के दोष से आमेर, कोटा, नरवर, दतिया इन चारों राज्यों को खालसे करके जोधपुर पर चढाई करना २ जोधपुर को खालसे करके आलमशाह के दक्षिण में जाने का सत्रहवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ पचपन २५५ मयूख हुए ॥

१ बुधसिंह का २ शत्रुओं का नाश होने पर ३ सेना ४ भेजी ५ कागज [पत्र] ६ अपने हाथ से ७से ८युद्ध में सलाह करके ॥ १ ॥ ९ पत्र १० बनिया ११धाक

मुहुकम्म वंस कनकेस[1] सुत जोगीराम हिंदुस्थ किय ॥
यह वीरधीर हड्डुन उमगि चलि सम्हारि चतुरंगिनिय ॥२॥

[दोहा]

कोटापति जालम भयो, तासे[3] तनय नृप भीम ॥
वेसतरुन लै पट्ट बल, सो न तजत निज सीम ॥ ३ ॥
बालकृष्ण निज व्यास अरु, फतेचंद कायत्थ ॥
बुंदिय पठये भीमनृप, करन मास नय कत्थ ॥ ४ ॥
आय हुँडुन किन्नी अरज, कोटा इक्कठन लेहु ॥
मुलक ओर सबही नजरि, निज गिनि धरहु सनेहु ॥ ५ ॥
नाथाउति नृपमात[6] तब, अरज न मन्नी एह ॥
हिंदुनके दिन पत्तरे, उपजत लोभ अछेह ॥ ६ ॥
तमकि[7] तत्थ दोऊ सचिव, पच्छे निज पुर पत्त ॥
भक्खी[8] भूपति भीमसों, रन मंडहु अनुरत्त[9] ॥ ७ ॥
इत बुंदियतें उमडि दल[10], चम्मलि उत्तरि चंड[11] ॥
गंजन जोगियराम गो, भिरत अंब[12] भुजदंड ॥ ८ ॥

(मुक्तादाम)

सज्यो उत भीम[13] महादल[14] सूर, गज्यो इत जोगियराम गरूर ॥
कचोंदियखेट[15] मिले दुव आय, दये दल[16] दोउन बाजि[17] उठाय ॥ ९ ॥
वजी रन रीठ[18] मची धमचक्क, चलच्चल छोनिय[19] लग्गि लचक्क ॥

१ कनकसिंह का पुत्र २ लेना ॥ २ ॥ ३ बल रामसिंह का पुत्र भीमसिंह तरुण अवस्था में था तो भी ॥ ३ ॥ ४ राजा भीमसिंह ने नीति के कथन से मिलाप करने को भेजा ५ अपने जान कर ॥ ५ ॥ ६ बुधसिंह की माता ने ॥ ६ ॥ ७ तहां क्रोध करके ८ कहा ९ युद्ध में अनुरक्त होकर युद्ध रचो ॥ ७ ॥ १० सेना ११ भयंकर (यह या तो सेना का विशेषण है अथवा चाम-ल नदी का विशेषण है) १२ आकाश से ॥ ८ ॥ १३ भीमसिंह १४ बड़ी सेना १५ कचोदीखेड़ा में १६ सेना में १७ घोडे उठादिये ॥ ९ ॥ १८ बल पूर्वक प्रहार अथवा निरंतर प्रहार १९ भूमि चलायमान होकर झुकने लगी

खटक्किय हड्डन हड्डन खग्ग, मचक्किय पब्बय लौं डगमग्ग ॥१०॥
बढेबल भीम करी हतवाह, कटे बहु बुंदिय सेन सिपाह ॥
तिलत्तिल तुट्टिग स्वामिय काम, परयो कनकाउत जोगियराम॥११॥
दयो सब बुंदिय सेन बिगारि, जयो नृप भीम हजारन मारि ॥
उतैं सु कबंध रु कूरम नत्थ, गये दुव मेकलजा लग सत्थ॥१२॥
तथाँपि न साह भयो अनुरत्त, चल्यो दरकुचन जात उमत्त ॥
वहै सरितां तब साह उतारि, फिरे दुव भूपति डेरन जारि ॥१३॥
मिल्यो नृप रान इतैं अनुरत्त, उदैपुर द्वरदरकुचन पत्त ॥
इते दुलही नृप मेघग च्याहि,चल्यो जवनेंधिप सेवन चाहि ॥१४॥
लयँ त्रय रानिन सौंग सग, मिल्यो जवनेसहिं धारि उमग ॥
गयो दरकुचन दक्खिन साह, सजे दल सब्बल सूर सिपाह ॥१५॥

(दोहा)

कामबखस निज भ्रातहो, दक्खिनधर रक्खवार ॥
भागनगर बीजापुरंपं, हुव तिहिं सिर हुसियार ॥१६॥
विक्रमनृप परमारभो, उज्जइनीपुर ईस॥
ता पीछैं नृप भोज भो, धारानगर अधीस ॥ १७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे कोटारावभीमसिंहस्यकोटाविजयार्थप्रस्थितबुन्दीसैन्यनिरसनमष्टादशो मयूखः ॥ १८ ॥

१हाथों के खङ्ग दांतों पर खटके॥१०॥२टूटा (मारागया)॥११॥३ विजई हुआ ४ भीमसिंह ५ कछवाहों का नाथ (पति) ६ नर्मदा तक साथ गये ॥ १२ ॥ ७ लोभी ८ अनुकूल ९ उन्मत्त १० यह नर्मदा नदी ॥ १३ ॥ ११ बादशाह को सेवन की इच्छा से ॥ १४ ॥ १२ बुधसिंह १३ सबल (बलवान्) ॥१५॥ १४पति ॥ १६ ॥ १७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवे राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में कोटा के राव भीमसिंह का कोटा विजय करने को गईहुई बुंदी की सेना को नष्ट करने का अठारहवां १८ मयूख समाप्त हुआ

आदितःषट्पञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५६ ॥

(दोहा)

इन लग हिंदुन अद्दरयो, छक्कि उचित रन छोभ ॥
इन पिच्छैं नय धरम तजि, लग्गे केवल लोभ ॥ १ ॥
पृथ्वीराज चुहान नृप, जयचंदह रट्ठोर ॥
इनलगहू कछु अनुसरी, हिंदुन धरम हिलोर ॥ २ ॥
तिनपिच्छैं तुरकान हुव, निज नय धरम निधान॥
पीढिन कछु अंतर परत, छंडो तिनहु कुगान ॥ ३ ॥
इत बुंदियपति अद्दरिय, कोटाउप्पर कोप ॥
इत आलम रन अंकुरयो, लाज धरम करि लोप ॥ ४ ॥
कामबखस आलम अनुज, अग्गैं जिहिं अवरग ॥
भागनगर वीजापुरह, सूबा दिय हित संग ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

तुरकन दिन बिपरीत आय आलम तिहिं उप्पर ॥
धर दक्खिन धमचक्क सजिय वीजापुर संगर ॥
बुधसिंहहिं बलईस बिराचि अति कोप बढारयो ॥
कामबखसकों पकरि मुद्द आगस बिनु मारयो ॥
बप्पके दये छलकरि कुविधि लिय वीजापुर भागपुर ॥
सूबा सम्हारि सज्जिय अमल आलम अनय उमंगि उर ॥६॥
इत कूरम रट्ठोर आय बिरहित अति आतुर ॥
मेकलजासन मुररि उररि दुव पत्त उदैपुर ॥

और आदि से दोसौ छप्पन २५६ मयूख हुए ॥

१ युद्ध में उचित क्रोध करना इन तक ही रहा २ नीति ॥ १ ॥ २ ॥ अपनी नीति और धर्म मे निधान ऐसे ३ यवनों का राज्य हुआ ॥ ३ । ४ युद्ध में खड़ा हुआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५ युद्ध ६ सेनापति ७ मूर्ख ने ८ अपराध बिना ९ पिता को दिये हुए १० बुरी रीति से ११ अनीति से ॥ ६ ॥ १२ अपने राज्यों की आमद के विरह से पीड़ित होकर १३ नर्मदा से १४ उदंड होकर (धीठता से) १५ प्राप्त हुए

दहवारी दिस इक हुते वहुरा जु विनायक ॥
आप रान अमरेस तत्थ भिंट्यो छल तच्छक ॥
तिन३हि नरेस केकानें तजि मन प्रसन्न वत्थन मिले ॥
रानहिं निहारि भूपन दुहूनरखुविंथ हिय पंकज खिले ॥७॥

(दोहा)

अग्गैं रान प्रतापसे, भये अरौतिन भीम ॥
आपसह् नहि अहग्यो, साहनको जिन सीम ॥ ८ ॥
साह सिकंदर जुलिकरन, अरु गज्जन गोरीस ॥
अग्गैं हिंदुन जित्तिकैं, भये प्रबल भुव ईस ॥ ९ ॥
तिनतैं अवलग नहिं तक्यो, सीसोदन गिनि साँह ॥
यह कुल राउल वप्पको, रक्खैं हिंदुन राह ॥ १० ॥
पुर आमेर रु जोधपुर, साह सुभट सरमाय ॥
आलमतैं अब तोरिकैं, उभय उदैपुर आय ॥ ११ ॥
अमर रान अति मोद करि, भिंटेयो सनमुख आय ॥
कूरम तँहँ जयसिंह कछु, चरनन हत्थ चलाय ॥ १२ ॥
पकरि हत्थ हियलाय तब, कहिय रान अमेरेस ॥
भूपति मैं पावन भयो, आवन दुँहुँनर अरसेस ॥ १३ ॥

(षट्पात्)

इम मिलाप करि रान आय तिनसहित उदैपुर ॥
महलन परिखंद मंडि उभयर खुल्ले अवनीसुर ॥
वाहिर परिखद लांघि रान सम्मुह पुनि आयो ॥ ॥

१ महारा विनायक नामक [गणेश] २ छल को काटनेवाला [यह महाराणा का विशेषण है] ३ घोड़ छोड़ कर ४ खुशी से ॥७॥ ५ शत्रुओं को न पकड़ हुए ६ हुक्म ॥ ८ ॥ ९ ॥ ७ पादशाह अर्थात् उनका सदैव ही शत्रु ही समझे पादशाह कभी नहीं समझे ८ बापा राउल (इनका नाम महेन्द्र और उपपद बापा था) का कुल ॥ १० ॥ ९ पादशाह के उमराव ॥ ११ ॥ १० मिला ॥१२॥ ११ हृदय से लगाकर १२ अमरसिंह ने ॥ १३ ॥ १३ सभा

करि जुहार कर सीस रक्खि बहु मोद बढायो ॥
कर दुहुँन[2]थंभि निज संग करि हुल्लासि खास परिखद हल्तिय ॥
उमराव बुल्लि निजनिज उचित करन[1] मंत एकंत्त किय ॥१४॥

(दोहा)

तहिनी बुल्लहिँ ब्याहि इत, देवसिंह तखतेस ॥
वेगसैँ[3] द्रुत आयकैँ, मिंट्यो[4] रान नरेस ॥ १५ ॥
दिलखुसाल प्रासादके,[5] गोख मध्य पगधारि[6] ॥
बैठे भूपति तीनहीं, चोरी गहर ढारि ॥ १६ ॥
मध्य रान अँमरेस[7] अरु, कूरम नृप दिस वाम ॥
दक्खिन दिस रट्ठोर नृप, इम रहि सज्जिग साम[8] ॥ १७ ॥

॥ षट्पात् ॥

कूरमपति करजोरि कहिय सीसोद नृपति प्रति ॥
तुरकनको नहिँ तोर[9] भयो सब जोर मंद गति ॥
राजाकुल तुमरो सु[10] हह हिंदुन तुन रक्खैं ॥
जोखौ[11] दिल्लिय जार प्रबल आनँन[12] तुम पक्खैं ॥
साहसौं तोरि हम आय इत राज धरम साहस परखि ॥
हिंदुन हँकारि[13] हिंदुव अवनि हिंदुनेपति[14] सुग्गहु हरखि ॥१८॥

(दोहा)

इत बुल्ल्यो रट्ठोरनृप, हम रावरे सुभट्ट[15] ॥
सुग्गहु अज्जाँउत्त[16] भुव, लहि दिल्लिय पुर पट्ट ॥ १९ ॥

(मुक्तादाम)

---

१ मंत्र (सलाह) करने को २ एकत्र (इकट्ठे) ॥ १४ ॥ ३ शीघ्र ४ मिला ॥ १५ ॥ ५ दिलखुशाल नामक महल के झरोखे में ६ पधार कर ॥ १६ ॥ ७ अमरसिंह ८ मिलाप किया ॥ १७ ॥ ९ प्रताप १० सो ११ योषित (स्त्री). दिल्ली रूपी स्त्री है सो तुम जैसे प्रबल जार का १२मुख देखती है १३ हिंदुओं को बुलाकर हिन्दुओं की भूमि को १४ हे हिन्दुओं के पति हर्ष के साथ भजो १५ उमराव १६ आर्यावर्त की भूमि ॥ १९ ॥

यहँ सुनि रान कही अमरेस, न मैं पुरदिल्लिय जोग्य नरेस ॥
सुनै हम दिल्लियको दसतूर, रहो सब साजलि साह हजूर ॥२० ॥
प्रवेसत सायुध इक्क न धाम, सजैं सब बारहि बार सलाम ॥
जहाँ बिनु आयस बुल्लि सकैंन, नमैं इकटक्क निहारत नैंन ॥२१॥
जहाँ नहिं बैठक दुक्ख दुरूह, तरज्जत तहँ नकीबन जूह ॥
चलैं सब पैदल आनन अग्ग, प्रभूजिम मन्नि पलोटत पग्ग ॥ २२ ॥
पठावत नारिनकों नबरोज, उठावत पत्तनकों हतओज ॥
बजावत बंब न जावत बार, सजावत पुत्रिन व्याहि सिंगार॥२३॥
सुनों यह साहनको दसतूर, हलैं सब हिंदुव धुज्जि हजूर ॥
प्रभुप्पन मिच्छन भोग्यहि एह, लिख्यो बिधि हिंदुन गोधि न लेह२४
रु कोउ करैं हम हिंदुव राज, भिरैं तब जानि असूयन भाजं ॥
हमैं तसभांत न दिल्लिय हौंस, दहैं घर रक्खन ही निस द्यौंस॥२५॥
रु जो हठ दोउनको मत एह, गिनों तब दिल्लियही यह गेह ॥
रजू तुम साह उथप्पन राज, उदैपुर ही तब दिल्लिय आज ॥२६॥
पुरैं नृप कूरम मांन जु किन्न, पधारि सुधारि वहै तुम लिन्न ॥
अबै हठ अप्पन ज्यों जस होय, जथा करिये बल कालहिं जोय॥२७॥

---

१ हाथ जोड़ेहुए ॥ २० ॥ २ आयुध सहित ३ चौथी सभा में ४ बिना आज्ञा बोल नहीं सक्ता बादशाह के देखत ही नेत्र नहीं टिमका कर ५ झुकते हैं ॥ २१ ॥ ६ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसा दुःख ७ गर्जना करके नकीबों का समूह डराता है और मुख आगे सब पैदल चलते हैं ८ स्वामी के समान मान कर ९ पैर दबाते हैं अथवा पग पोंछते हैं ॥ २२ ॥ १० नगारा ११ उनसे विवाह करके पुत्रियों को शृंगार कराते हैं ॥ २३ ॥ १२ यह स्वामीपन म्लेच्छ के भोगने योग्य ही है १३ ललाट में नहीं लिखा १४ लेख ॥ २४ ॥ जाति की असूया के १५ पात्र १६ इसकारण हम को दिल्ली की चाह नहीं है १७ घर की रक्षा में ही जलते (छीजते) हैं ॥ २५ ॥ १८ इस घर (उदयपुर) को ही दिल्ली जानों ॥ २६ ॥ १९ पहिले २० तुम्हारे प्रपितामह राजा मानसिंह ने जो किया था (मानसिंह ने बादशाह अकबर की सेना का सेनापति होकर महाराणा प्रतापसिंह से युद्ध किया था और सामिल भोजन नहीं कराने के कारण राणा की पुत्रियों को यवनियें बनाने का भय दिखाया था) २१ जिसप्रकार ॥२७॥

बद्यो पुनि कूरम भूप वृतंत, भल्लौ सवई करिहै भगवंत ॥
अबैं करि हिंदुन इक्कत *ग्रत्थ, सजें पुनि आलमपें निज सत्थ ॥

(दोहा)

हिंदुव चाकर रानके, इक परंतु यह ओग ॥
आलमतैं हम तोरिकैं, लिपउ गावगे जोग ॥ २९ ॥
देस दुहुनर्के खालसे, ओर न लेन उपाय ॥
तो हम जित्तैं मुलक निज, जो दल देहु सहाय ॥ ३० ॥
जित्ति मुलक पुनि कटक सजि, दें दुवरगान हजूर ॥
दक्खिनपर दरकुंच करि, जित्तहिं साह जरूर ॥ ३१ ॥
रानकहिय कछुदिन उभयर्, रहहु अत्थ गृह जानि ॥
पुनि जो जो भवितव्यहै, लेहैं सबहिं प्रमानि ॥ ३२ ॥
वाँदिन डेरन सिक्ख दिय, दोउनतें कहि एह ॥
इक१इक१गज हैरहै अरव, दोउरन अप्पि सनेह ॥ ३३ ॥
अतरपान पुनि बुल्लिकैं, इन ढिग रक्खे रान ॥
तब दोउनर्कर ओडि कहि, देहु अप्प कर दान ॥ ३४ ॥
रान तथापि न पान दिय, पानदान गहि हत्थ ॥
जिहिं अंतर कर दुहुँनर्के, संग्रहि धरिय समत्थ ॥ ३५ ॥
दोऊर्नृप इन पान लै, निज निज डेरन आय ॥
दूजेदिन किय गोठि तब, रान अमर रस भाय ॥ ३६ ॥
दोऊर्नृप बुल्लिलय बहुरि, पंति परिय चहुँ ओर ॥
करिय अरज तहँ रान प्रति, पुनि कूरम रठ्ठोर ॥ ३७ ॥
इक१थाल बिच अप्पनों, हमसंह भोजन होय ॥
अबतैं संतत एकता, करहु न संसय कोय ॥ ३८ ॥

---

* यहां ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ १ जोधपुर और आमेर के दोनों राजा ॥ ३१ ॥ २ यहां ३होनेवाला ॥ ३२ ॥ ४ उस दिन ॥ ३३ ॥ ५बुलाकर ६ हाथ मांड(फैला) कर ७ आप के हाथ से ॥ ३४ ॥ ८ तोभी ९ पकड़ कर, उस समर्थ (महाराणा) ने ॥ ३५ ॥ १० स्नेह की रीति से ॥ ३६ ॥ ३७॥ ११हमारे साथ१२निरंतर॥३८॥

सुनि बुल्ल्यो *भट रानको, दृढमन गंगादास ॥
सगताउत पुरवानसी, पति कछु †रोस प्रकास ॥ ३९ ॥
‡कूरम पति यह राव्रे, पुरखन अग्गैं कीन ॥
ताहू कुल उज्जल यहै, भो नहिं धरम विहीन ॥ ४० ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्गैं अकबरसाह लैन जुगराज लुभाये ॥
भगवतसिंह रु मान पिता सुत उभय२पठाये ॥
दरकुचन इन दौरि जोर जित्ती गुज्जरधर ॥
पलटे पुनि सुत जनक मिजल पंचक५के अतर ॥
भगवतसिंह आयो प्रथम दिल्लिय जावत रान घर ॥
जिनदिनन छत्र राना उदय धारन हिंदुन धर्मधर ॥ ४१ ॥
नृप भगवतहिं रान जाय सम्मुह गृह लायो ॥
उनहू भोजन करन रान जुत प्रसंभ रचायो ॥
दिय उत्तर तव रान देत तुरकन तुम पुत्तिय ॥
हम हिंदुत्र अकलंक धरम छंडै न जात जिय ॥
तसमात सुनहु दोउन२अमन इक्क१थाल नाहिन उचित ॥
यहसुनि नरेस भगवत तव पृथक जिम्मि बुल्ल्यो बिदितं ॥४२॥

॥ पज्झटिका ॥

नृप सुनहु पच बासर बिहाय, सुत मौन इहाँ ऐहैं सुभाय ॥

---

* महाराणा का उमराव † क्रोध करके ॥ ३९ ॥ ‡ हे कछवाहा के पति (जयसिंह) आप के बडाउवों ने भी पहिले ऐसा ही किया था ॥ ४० ॥ १ मानसिंह २ गुजरात ३ पुत्र और पिता ४ पाच दिन के अंतर * मे ॥ ४१ ॥ ५ हठ किया ६ निष्कलंक ७ इसकारण से ८ भोजन ९ भिन्न (जुदा) जीमकर १० प्रसिद्ध बोला ॥ ४२ ॥ ११ पाच दिन बिताकर १२ मेरा पुत्र मानसिंह

छठे राशि की टीका के नोट में हम लिख आये हैं कि आमेर के राजा मानसिंह के साथ भोजन नहीं करने का विरस महाराणा प्रतापसिंह से हुआ था उदयसिंह का नाम भूल से लिखागया है सोही यहां जानना चाहिये ॥

वासौं नरेस व्है हठ प्रमत्त, बुल्लहु न भुल्लि ऐसी *कुवत्त ॥ ४३ ॥
यह कहि नरेस भगवंत वत्त, दरकुंचन दिल्लिय नगर †पत्त ॥
दिन पंचक अंतर कुमर मान, भिंट्यो पुनि ‡सम्मुह जाय रान ॥४४॥
मिलि तास[१] बिरचि अति मानुहारि[२], पुनि रान स्वगृह तिन[३]जुत पधारि
रचि गोठि बिबिध व्यंजन रसाल[४], बैठारयो मानहिं पृथक थाल ॥४५॥
रहि रान दिठ्ठि परुसन[५] लगाय, तब कुमर मान बुल्ल्यो हिताय ॥
तुमकौंहु उचित बैठन नृपाल, भुञ्जैं[६] दुव भुञ्जन[७] इक थाल ॥४६॥
तब कहिय रान राजाधिराज[८], एकासन[९] व्रत मैं करिय आज ॥
कूरम तथांपि[१०] बुल्ल्यो निहोरि, सागंस[११] न होत व्रत इक छोरि ॥४७॥
हमरो हुव आगम समय पाय, है इक्कथाल भोजन हितांय[१२] ॥
इम प्रसंभ[१३] पुंज मानहिं निहारि, पटु रान उदय[१४] बुल्ल्यो प्रचारि ४८
तुम लोभ धारि लिय जवन रीति, हमरे घर हिंदुन धर्म नीति ॥
तुम अधम जामि[१५] दुहिता[१६] कलत्र[१७], तुरकन समप्पि हुव सचिवतत्र ॥४९॥
अकलंक यहै इकलिंग ऐन[१८], तसमात[१९] संग भोजन बनैं न ॥
यह सुनत मान कुप्यो[२०] कराल, बुल्ल्यो सु उठ्ठि छंकि छोरि थाल ५०
तुम तियन पारि तुरकन प्रसंग, कछु दिनन अंत[२२] खैहैं[२१] वैं संग ॥
यह कहि द्रुत दिल्लिय मान जाय, अकबरहिं अत्थ आन्यो कुपाय ५१

*ऐसी खोटी वार्ता भूलकर भी मत कहना ॥ ४३ ॥ † प्राप्त हुआ (पहुंचा) ‡ सन्मुख जाकर मिला ॥ ४४ ॥ १ उस मानसिंह से २ मनुहार ३ उस मानसिंह सहित ४ रसयुक्त ॥ ४५ ॥ ५ परोसने में दृष्टि लगाकर ६ भोजन करैं ७ भोजन ॥ ४६ ॥ ८ राजाओं के पति [महाराना] ने कहा ९ दिन में एक समय भोजन करने का व्रत १० लोभी कछवाहा बोला कि ११ एक व्रत छोडने से अपराध नहीं होता ॥ ४७ ॥ १२ हित के अर्थ १३ मानसिंह का हठ का समूह देख कर वह चतुर १४[महाराणा उदयसिंह) ललकार कर बोला ॥ ४८ ॥ १५ बहिन १६ बेटियें और १७ स्त्रियों को देकर वहां (यवनों के) सचिव हुए हो और यह १८ एकलिंगेश्वर का घर [मेवाड़वालों के इष्टदेव एकलिंग महादेव हैं] कलंक रहित है १९ इसकारण २० क्रोध में पूर्ण होकर ॥ ५० ॥ २२ अब २१ साथ खावेंगे ॥ ५१ ॥

बहु बरस रहिय चित्तोर जग, रान न तथापि छड्यो स्वरंग ॥
बिनु वित्त लहिय बरसन बिपत्ति, छिति हित तथापि कपी नछत्ति।
यह कुल वहै हि निज नय उपेत, दुहितादि तुम सु तुरकान देत।
इकथाल असन तातैं बनैंन, भट हम निसक मिथ्या भनैंन॥५३॥
यह सुनि कबध कछवाह राय, खमि समय जानि रोस न दिखाय॥
करजोरि कहिय दुवरनृपनफेरि, हिंदुन नरेस तुम धर्म हेरि ॥५४॥
हम किय अधर्म गिनि बिभव हानि, मरजी सु करहु भट हमहिमानि॥
अमरेसरान यह सुनि उदार, बुल्ल्योसु व्यावहारिक बिचार ।५५।
मम गेह ओर नहिं तुमहिं देय, इक वत्त सुनहु दुवरनृप अजेय ॥
सौंपहु जो निजकर लिखित सत्य, अबतैं न देहिं तुरकन अपत्य।५६।
तो दुवरसुतों सु दोउन२विवाहि, देसहु लौं देहैं अरिन दाहि ॥
सहभोजन तो नहिं उचित आहि, पत्रावलि जिम्मत हम सदाहि५७
तुम डारि रजत विष्टर विसाल, नगजटित मध्य धरि कनक थाल
इम भुंजत तुरकन एधमान, इत्यादि हेतु सह असन हयान ५८
करि लिखित देहु जो कथित चाहि, तो देहिं सिक्ख पुत्रिन बिबाहि
दुवरनृपन यहै सुनि असन किन्न, राम सु परुसावन रहिय भिन्न५९
नृप दुव जिमाय इम सिक्ख अप्पि, डेरन इनै आय रु मत्र थप्पि ॥

---

१ लोभी २ अपनी धर्मपरायणता का रंग नहीं छोड़ा ३ धन ४ लोभी भूमि के अर्थ छाती नहीं कांपी ॥ ५२ ॥ ५ अपनी नीति सहित ६ पुत्री आदि ॥ ५३ ॥ ७ सहन करके ॥ ५४ ॥ ८ उमराव मानकर ९ व्यवहार सम्बन्धी ॥ ५५ ॥ १० देने योग्य ११ किसी से नहीं जीते जावैं ऐसे १२ अपने हाथ का लिखा हुआ १३ सन्तान (पुत्री) ॥५६॥ १४ पुत्रियें हैं सो १५ शामिल भोजन करना तो १६ उचित नहीं है १७ पातल (वृक्ष के पत्रों के निर्मित पात्र) में ॥ ५७ ॥ १८ चांदी का बाजोट १९ सोने का थाल २० भोजन करते हो २१ यवनों का पकाया हुआ [यहां 'इध एधने' इस धातु से एधमान शब्द हुआ है जिसका अर्थ पकाना है] ॥ ५८ ॥ २२ मैंने कहा उसकी [विवाह की] चाहना होवे तो २३ भोजन किया २४ न्यारे ॥ ५९ ॥ २५ इन दोनों राजाओं ने

यँहँ उभय साहसौं तोरि आय, करि लिखित[1] दैंन इत इंन कहाय ६० ॥
अब करहि साह कुमहर अजेय, तसमांत[2] रान कथित[3]हि बिधेय[4] ॥
यह सोधि लिखिय नयँ दुहुँन[5] आदि, तुरकन न देहिँ अवतें सुतादि[6] ॥
कहिहैं जु रान धरिहैं सु सीस, इम लिखित ठानि दुव भुव[7]अधीस ॥
यह लिखित रानकर दियउ आय, प्रभु रान सुनत विश्वास पाय ॥
दुहिता दुहून[8] व्याहन बिचारि, बिरचिय विवाह उच्छव बढारि ॥
कूरमनरेस यह समय पाय, प्रछन्न रान प्रति कथ कहाय ॥६३॥
संग्रामसिंह पट्टप कुमार, मुहिं तास जामि[9] देहो उदार ॥
सुनि रान बहुरि पच्छी कहाय, इक लिखित ओर अप्पहु लिखाय ॥
याकै जु पुत्र जगदीस देहिं, वह मुख्य राज आमेर लेहिं ॥
आंमेरईस[10] सुनि यह उपाय, लिखि स्वकर पत्र दिन्नों पठाय ॥६५॥
दुहिता[11] स्वकीय जनिहै सु पुत्त, आमैर पट्ट लहिहै अभुत्त[12] ॥
यह लिखित रान बंचि रु विचारि, निज पुत्ति[13] उचित कूरन निहारि ।

(दोहा)

निज पुत्तिय[14] संबंध तव, कूरम सैंन[15] किय रान ॥
निज काकासुत पुत्रिका, दिय रट्ठौरहिँ दान ॥ ६७ ॥
चंद्रकुमरि कूरम लहिय, कृष्णाकुमरि रठोर ॥
इम बिबाहि दुव[16] भुवअधिप, जचिय[17] सिक्ख इन जोर ॥६८॥
हाटक[18] दोलाजंत्र[19] तव, दुहुँन रान नृप दिन्न ॥

---

१ महाराणा ने ॥६०॥ २ इसकारण से ३ राना का कहना ही ४ उचित है ५ दोनों ने नीति को आगे करके ६ पुत्री आदि ॥ ६१ ॥ ७ भूपति ॥ ६२ ॥ ८ छानैं ॥ ६३ ॥ ६ आप के पाटवी पुत्र संग्रामसिंह की पुत्री ॥ ६४ ॥ १० जयसिंह ने ॥ ६५ ॥ ११ आप की पुत्री १२ अभुक्त (नहीं भोगने योग्य अर्थात् छोटा होने पर भी आमेर का राज्य लेवैगा) १३ पुत्री यहां सामान्य रीति से पोती को पुत्री करके लिखा है ॥ ६६ ॥ १४ पुत्री का १५ से ॥६७॥ १६ भूपति १७ मांगी [इन, विवाह कीहुई कन्याओं के बल से, अथवा महाराना के, बल से ॥ ६८ ॥ १८ स्वर्ण का १९ हिंडोला [हींडलाट] ॥ ६९ ॥

दुहुँन तुल्य दायज अरपि, कुसल सिक्ख तब किन्न ॥६९॥
सत्त सहँस७०००निज दल सबल, करि दुव भूपन संग ॥
रान सिक्ख देसन दई, अवनी लैन अभंग ॥ ७० ॥
तब दुव भूपति सिक्खकरि, बढि चल्लिय बरजोर ॥
छोनी दब्बत साहकी, उमँडिय संभर ओर ॥ ७१ ॥
दुव नृप इम दरकुच करि, संभर उप्पर जात ॥
नागनोल सय्यद सुनी, संभा विलुट्टन वात ॥ ७२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे दक्षिणगतालमशाहहतस्वानुजकामबख़्शभागनगरबीजापुरादान १ आलमशाहविरुद्धनर्मदाप्रत्यागतामेराधीशजयसिंहयोधपुराधीशाजितसिंहोदयपुरागमन २ सहभोजनानङ्गीकारापमानितलेखितयवनेन्द्रकन्याप्रदानप्रतिषेधपत्रोक्तोभयराजमहाराणामरसिंहनिजात्मजायुगलपरिणापन ३ पट्टपाभावेऽपिलेखितग्रदौहित्रामेरस्वामित्वहरताक्षरमहाराणामरसिंहस्वपट्टपपुत्रसंग्रामसिंहकन्याजयसिंहपाणिपीडनवर्णनमेकोनविंशो मयूख ॥१९॥

१ सेना २ भूमि लेन को [अभग, यह महाराना का विशेषण है]॥ ७० ॥ ३ सांभर नगर की ओर बढे [उठे] ॥ ७१ ॥ ४ सांभर लूटने की ॥ ७२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि मे बूंदी के नृपति बुधसिंह के चरित्र में, आलमशाह का दक्षिण मे जाकर अपने छोटे भाई का मबख़्श को मार कर भागनगर और बीजापुर लेना १ आमेर के राजा जयसिंह और जोधपुर के राजा अजितसिंह का आलमशाह से विरुद्ध होकर नर्मदा नदी से पीछे फिरकर उदयपुर आना २ महाराणा अमरसिंह का उक्त दोनों राजाओं को सामिल भोजन नहीं करा कर अपमान किये पीछे आगे कभी यवनों को पुत्रियें नहीं विवाहने का पत्र लिखा कर दोनों राजाओं को अपनी दो पुत्रियें विवाहना ३ अपना दौहित्र पाटवी नहीं होने की अवस्था में भी आमेर के स्वामी होने के अक्षर लिखा कर महाराणा अमरसिंह का अपने पाटवी पुत्र संग्रामसिंह की पुत्री का जयसिंह से विवाह करने के वर्णन का उन्नीसवां १९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सत्तावन २५७

आदितः सप्तपञ्चाशोत्तरद्विशततमः ॥ २५७ ॥

[षट्पात]

जाजव संगर जित्ति साह अति गैब्ब[1] सम्हारयो ॥
संभर[2] पिक्खि सहाय धरा जित्तन मन धारयो ॥
हुसनअली सय्यद नबाब आदिक सम्मंत[3] करि ॥
जित्ति सँजव[4] जोधपुर धाय दक्खिन साहस धरि ॥
कूरम कबंध अवनीप[5] इत अमररान[6] पुलिनपरानि ॥
पृतनाँ[7] प्रचारि लुट्टन प्रथम पँत्ते[8] लगि संभरसरनि[9] ॥ १ ॥

[दोहा]

नारनोलपुर सेनंपति[10], हुसनअलीके भ्रात ॥
घिंसीखान रु नूरदी, तँहँ पँत्ती[11] यह बात ॥ २ ॥

॥ षट्पात ॥

हुसनअली सय्यद नबाब सुभटन अग्रेसर[12] ॥
नारनोलके फोजदार ताके सोदर भँर[13] ॥
घिंसीखान रु नूरदीन तिन बत्त सुनी यह ॥
लुट्टत संभर नगर सुपहु कूरम कबंध सह ॥
साजि तबहि सेन द्वादस सहँस१२००० रुमाँ[14] नगर रक्खन चलिय ॥
इत नृपन लुट्टि संभर सहर कहँर[15] काल बेहाल किय ॥ ३ ॥

(दोहा)

पुरहिँ लुट्टि दुवर नृप कढत, सय्यद पत्ते आय ॥
भट कूरम रठोरके, बुल्ले तिन बिहसाय ॥ ४ ॥

मयूख हुए ॥
१ गर्व २ बुधसिंह को अपनी सहाय पर रखकर ३ सहमत (सलाह) ४ शीघ्र
५ भूपति ६ राणा अमरसिंह की ७ सेना ८ प्राप्तहुए ९ सांभर के मार्ग में लग
कर ॥ १ ॥ १० सेनापति ११ पहुंची ॥ २ ॥ १२ उमरावों में अग्रणी मुख्य) १३ भ-
ड [वीर] १४ सांभर नगर की रक्षा करने को चले. इधर काल रूपी १५ क्रोध कर-
के इनने बुरा हाल कर दिया ॥ ३ ॥ ४ ॥

हेरवैं राउत हकिये, आतप करत उभ्फेल ॥
श्रमजेल हत्थ पसीजिहै, मुंठि न पैहे मेल ॥ ५ ॥
सुनत एह सय्यद भटन, दिय उत्तर अति आघ ॥
छोहानल विच छिज्जिकैं, नैठो दरित निदाघ ॥ ६ ॥
इम कहि वाजिन वग्गलै, तुट्टे हिंदुन सीस ॥
दल दोउन धमचक्क वजि, ज्यों कैटभ जगदीस ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

मिलि हिंदुव मुगलान धिट्ठ रन रिठ रैमापुरि ॥
भिरि भट चचल सपनें पपन चचल जिम पातुरि ॥
लुत्थिन लुत्थि अँहुट्टि जुत्थि जुत्थिन भट कट्टिय ॥
हड्डन खग्ग खनकि रुड मुंडन भुव पट्टिय ॥
डाकिनिन डक्क डिंडिमि डमक्कि नचि भैरव डैरुव नदियें ॥
जिम बनिजैंकार टंडा ढरत इम अनीकँ भुव अच्छदियें ॥८॥

॥ दोहा ॥

घिंगीखान रु नूरदी, दुवर सय्यद लिय मारि ॥
सहँस१०००सूर दुहुँ ओरके, झरिगे घोर खग झारि ॥९॥
इम कूरम रट्ठोर नृप, पुरसभर जय पाय ॥
दिल्ली गहि दोउन२ दई, लहँगे अदर लाय ॥ १० ॥

॥ सोरठा ॥

निज निज देसन आय, दुवर नृप सभर लुट्टिकैं ॥

१घोर २धूप [गरमी] ३परिश्रम के जल[पसीने] से हाथ फिसलैं [रपटैं] गे, इसकारण ४तलवार की मूठ से मेल नहीं पावैंगे अर्थात् हाथ से तरवार नहीं थामी जावेगी ॥ ५ ॥ ६ क्रोध रूपी अग्नि म जलकर गरमी से ७ टपकनेवाला जल (पसीना) ८ नष्ट होगया॥ ६ ॥ ८सेना ९जिसप्रकार कैटभ नामक दैत्य और विष्णु भगवान् के युद्ध हुआ था वैसे ॥७॥ १० धृष्ट (ढीठ) ११यत्न पूर्वक प्रहार १२सांभर १३चमक हाथों से १४युद्धकरके १५नादयुक्त किया अर्थात् भैरवने डरू (भैरव के वाद्य विशेष) को बजाया १६बनजारा १७सेना से१८भूमि को आच्छादन की॥८॥१९झड़े (मारेगये)२०भयंकर खड्ग चलाकर॥ ९ ॥ २१ दिल्ली रूपी स्त्री के लहँगे (घाघरे)

थानाँ दियउ उठाय, आलमके करि करि अमल्ल ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इत कोटापति भीम[2] दिय, बुंदिय कटक[3] बिगारि ॥
जुज्झ्यो जुग्गियराम हद, मारि मरद तरवारि ॥ १२ ॥
धावर गंगाराम पुनि, सेनानायक[4] होय ॥
कोटा उप्पर उप्परयो, उत्तरि चम्मलि[5] तोय ॥ १३ ॥
कायथ घासीराम किय, पंचोलिय परधान ॥
मंत्रि बनिक हरिराम किय, गुज्जर कुमति गुमान ॥ १४ ॥
अलीखान अभिधान[6] इक, जवन रुहिल्ला बुल्लि ॥
पंचसहँस५०००पँति[7] रक्खगो, खमग[8] पताकन खुल्लि ॥ १५ ॥
यह सुनि कग्गर[9] भीम नृप, धावर प्रति पठवाय ॥
बाबा[10] धावर हमहुको, रक्खहिं बुंदिय रोय[11] ॥ १६ ॥
जान्यौं धावर नीतिजड़[12], गुज्जर गहल गमार ॥
बाबा कहिकहि जो लिखत, भिरैं न सो रन भार ॥ १७ ॥
दै मिल्लान[13] बहु दिन रह्यो, तब धावर नय छिन्न ॥
अलियखानको हक्क[14] चढ्यो, दोय२मास दिन तिन्न३ ॥ १८ ॥

॥ पज्झटिका ॥

लहि समय भीम[15] तब किय उपाय, बहु बित्त[16] रुहिल्ला हित पठाय
अक्खिय[17] धावर प्रति बेंदहु[18] बेन, हक देहु न तो अब हम लेंन ॥ १९
धावरहिं कहिय यह अलियखान, जब किय कुमंत्र[19] गुज्जर[20] अजान

में अग्नि लगा दी ॥ १० ॥ १ मारवाड़ और ढूंढाड़ में अमल (अधिकार) करके आलमशाह के थाणे उठादिये ॥ ११ ॥ २ भीमसिंहने ३ सेना को ॥ १२ ॥ ४ सेनापति ५ चामल नदी के जल को उतरा ॥ १३ ॥ १४ ॥ ६ नाम ७ पांच हजार सेना का स्वामी ८ आकाश मार्ग में ध्वजाएं खोलकर ॥ १५ ॥ ९ कागज (खत) १० हे बाबा धाऊ [धाय का पति] ११ बुंदी का राजा ॥ १६ ॥ १२नीति में मूर्ख उस धाऊ गूजर जाति वाले ने जाना कि ॥१७॥ १३ मुकाम १४ तनखा ॥ १८ ॥ १५ भीमसिंह ने १६धन १७कहा १८धाऊ से कहो ॥ १९ ॥ १९ बुरीसलाह २० गूजर जाति के मूर्खने

बुदिय भट बुल्लि रु कहिय एहु, मिल्लि सबहि जवन इक चित्तदेहु २०
जो चित्त तो न इय करमै टारि, सब याहि देहु भरनाँ बरारि ॥
सुनि यह कुमंत्र दुर्मन सिपाह, चढिचढि समस्त लगि घरन राह २१
तुरकन दिय धावर कैद घत्ति, यह खबरि देस दक्खिन हु पत्ति ॥
सुनि नृपति बुद्ध आयसैं पठाय, नहि लेहु मूढ धावर छुराय॥२२॥
बहुदिन तब धावर कैद लिन्न, हरिरामसाह पुनि अरज दिन्न ॥
तब हुकम पाय जवनन चुकाय, हरिराम लियउ धावर बुलाय२३
कोटा नरेस इम खग्ग झारि, छै२वेर कटक दिन्नों बिगारि ॥
इत कामबखस मोदरँहि मारि, निज अमल देस दक्खिन बिथारि२४
दरकुच उतरि रवा दुरंत, उज्जैनि आय करि भ्रात अंत ॥
गिरिवर मुकुंददर मध्य होय, पुर पट्टनि चंम्मलि लंघि तोय ।२५।
लक्खैरिय गिरि दरैं कढि सुभाय, अजमेर पीर भिंटन चलाय ॥
सक सत्त तक्क मुनि इक्क१७६७मान,अजमेर आय दिन्नो मिलान २६
तब बुद्धसिंहप्रति कहिय साह, कूरम कबध किन्नाँ गुनाह ॥
सभैरहि लुट्टि लिय स्वस्व देस, तसमातँ जग मडहु नरेस ॥२७॥
कहि भूप जियत अवरंगसाह, हिंदून कियउ सांसन निबाह ॥
यह आदि मुलक हिंदुन असेस, विनु नीति अमल करनों न बेसँ २८
फरमान दे रु दोउन२बुलाय, अबही नहि रुकहु दुहुँन२ आय ॥
अवरहु अनायें किय भुम्मि भोंज तिन सबन समप्पहु स्वस्वराज२९

१ घन॥१०॥२ ऊँटों को छोडकर ३ उदास होकर ॥ २१ ॥ ४ कैद मे घालादिया [रखदिया] ५ हुकम भेजा ॥ २२ ॥ ६ अरजी भेजी ॥ २३ ॥ ७ सगे भाई को ॥ २४ ॥ ८ दूर है अंत जिसका ऐसी नर्मदा नदी ९ नाश १० मुकुंदरा का घाटा कोटा के राज्य म है ११ चामल नदी का पानी लांघकर॥ २५ ॥ १२ लाखेरी के पर्वतों के दरे से निकलकर १३ मुकाम ॥ २६ ॥ १४ सांभर का १५ अपने अपने देश १६ इसकारण से ॥ २७ ॥ १७ आज्ञा का पालन किया १८ उत्तम नहीं है यावनी भाषा में बेस शब्द अधिक का वाचक है परन्तु यहां लाक्षणा से उत्तम के अर्थ में लिया है॥२८॥ १९ आमदनी २० बिना आमदनी २१ भूपतियों को

यह कहि पठाय फुरमान तत्त, संभरहु लिखिय बुधहु नृपन पत्त ॥
इम कहि गुनाह सब किमउ दूर, आवहु निसंक तुम आप हजूर ॥३०॥
यह सुनि कमंध कूरम चलाय, अजमेर साह मिल्ले सुभाय ॥
तब कहिय साह गिनि अप्प जोर, संभर दुहुन लुट्टिय स्वजोर ॥३१॥
कूरम कमंध तब कहिय एह, निज स्वामि निमक खद्धो सनेह ॥
आज्ञा अधीन अब उभय आँहि, जँह स्वामि काम तँह लरन जाँहि ॥३२॥
आलम सराहि तब दुव नरेस, दोउन लिखाय दिय स्वस्व देस ॥
दतियादि राज अवरहु लिखाय, सहदेस सबन दिन्नें बुलाय ॥३३॥
इम हिंदु नृपन बिरचाग्गि साह, गहि नीति सबन अप्पिय गुनाह ॥
दिन कछु बिताय अजमेर ब्रंग, अब आप तखत दिल्लिय उमंग ॥३४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे योधपुरराजराष्ट्रवराजितसिंहाम्बरराजकूर्मजयसिंहयोर्महाराणासैन्यसहायशाकम्भरीपुरीलुण्ठनानन्तरस्वस्वराज्य-स्वाधिकारप्रापणं १ कोटाविजयप्रस्थितबुन्दीसेनापतिधाबरगंगारामगूर्जरस्य यवनकरकारानिपतनं २ अजमेरागतालमशाहस्याहूताजितसिंहजयसिंहभूपतिद्वयतद्राज्यपुनर्दानानन्तरेतरराजदतियादि

॥२९॥ १ तहां २ बुधसिंह ने भी ३ पत्र ॥३०॥ ४ मिला ५ अपना प्रताप जानकर ६ अपने बल से ॥३१॥ ७ स्नेह पूर्वक निमक खाया 'सांभर नगर में निमक की झील है इसकारण यहां निमक खाना कहा है' ८ हैं ॥३२॥ ९ दतिया को आदि लेकर १० देश सहित ॥३३॥ ११ सब के अपराध दिये [क्षमा किये] १२ नगर में ॥३४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में जोधपुर के राजा राठोड़ अजितसिंह और आमेर के कछवाहा राजा जयसिंह का महाराणा की सेना की सहायता लेकर सांभर नगर को लूटकर अपने अपने दोनों राज्यों में अपना अधिकार करना १ कोटा को विजय करने को गये हुए बुंदी के सेनापति धाभाई गंगाराम गूजर का एक यवन की कैद में होना २ शाह आलम का अजमेर आकर राजा अजितसिंह और जयसिंह को बुलाकर दोनों को दोनों के राज्य पीछे दिये पीछे अन्य रा॰

राज्यपुनर्दानवर्णन विंशो मयूख ॥ २० ॥

आदितोऽष्टपञ्चाशोत्तरद्विशततम ॥ २५८ ॥

[दोहा]

नृप कूरम रट्ठोर सिर, साह नजरि लखि सुद्ध ॥
हुसनअली सय्यद धंकर्यो, बधुत बैर प्रबुद्ध ॥ १ ॥
पति बुंदिय अरु जवनपति, जाजव रन दुव जित्ति ॥
अब अभिमानन उप्फनें, करन किति अपकित्ति ॥ २ ॥
कामबखस जबतें हन्यों, तबतें आलम मुद्ध ॥
वाहि मुढपनें चिंतयो, बुंदियपति अब बुद्ध ॥ ३ ॥
पुर दिल्लिय दिन पत्तर, आलम गरब उपेत ॥
पुर बुंदिय दिन पत्तर, उपजिय धरम अहेत ॥ ४ ॥
तुरक हिंदु सब संग तक्कि, उपजि अपुव्व उछाह ॥
करिय कुच अजमेर सन, लिय दिल्लिय मग साह ॥ ५ ॥
सेखाउत कूरम सहर, नाम मनोहरद्रंग ॥
दिन दुवरत्त मिलान दिय, आलम अधिक उमंग ॥ ६ ॥
नृप कूरम रट्ठोरकों, दिय निज देसन सिक्ख ॥
चित्त बुद्ध बुंदिय चहिय, तोरें गरब जय तिक्ख ॥ ७ ॥

[षट्पात्]

किय बिन्नति करजोरि रावराजा आलम सन ॥
बदगीहु क्रिय बहुत रचिय पुनि स्वामिधरम रन ॥
पुरबुंदिय अब पास सिक्ख बखसहु प्रसाद सँग ॥

जाओं को दतिया आदि राज्य पीछे देने का बीसवा २० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठावन २५८ मयूख हुए ॥

१ क्रोधित हुआ २ लड़ाई का बैर स्मरण होने से ॥ १ ॥ ३ बादशाह ४ कीर्ति को अपकीर्ति करने के लिये ॥ २ ॥ ५ मूर्ख (मूढ़) ६ जानकर मूर्खपन का स्मरण किया ७बुधसिंह ने ॥ ३ ॥ ८सहित ९धर्म की शत्रुता ॥ ४ ॥ १०अपूर्व ॥ ५ ॥ ११ मनोहरपुर १२ मुकाम ॥ ६ ॥ १३ बुधसिंह ने १४प्रताप ॥ ७ ॥ १५ प्रसन्नता से १६ से

भट बिग्रह मम भुम्मि उतहु रचिहैं कछु उद्यम ॥
मम जैत नाम काका मरद बीरसह्ल कुल उद्गम ॥
*सादी हजार१०००सुभटन सहित रहिहैं हाजरि चतुग्गन॥८॥

(दोहा)

यह सुनि बुंदिय सिक्ख दिय, बुद्ध नरेसहिं माह ॥
जेतसिंह भट सहँस जुत, संग लयो १उच्छाह ॥ ९ ॥
इम आलम दरकुंच करि, पुर दिल्लिय संपत्त ॥
सत्त तक्क मुनि इक्क१७६७सक, बैठो तख्त बिमत्त ॥ १० ॥
फर्रुक्कसेर अजीम सुत, करि तिहिं संग करीम ॥
पूरब सूबा ताहि दिय, रक्ख्यो निकट अजीम ॥ ११ ॥
बिनु बिक्रम अरु नीति बिनु, रहत पिक्खि दिल्लीस ॥
दक्खिन काबल दोहु दिस, सीमा दबिय सरीस ॥ १२ ॥
इत आलमनैं सिक्ख लै, चित इच्छत घर चाव ॥
चलिय मनोहर ढंग तैं, बुंदिय दिस बुधराव ॥ १३ ॥

[षट्पात]

इक्क कनफटा नित्यनाथ कउलँन आचारिज ॥
हरि हर धरम हटाय करत अधमन मत कारिज ॥
सिस्य बहुत तस संग सुभट हय गँय सिविका सह ॥
जावत दक्खिन देस नृपहिं मगमाँहिं मिल्यो वह ॥
गजमुखँह पुरोहित नृपति को कउलमग्ग सेवत रहत ॥
तिहिं जाय नाथ भिंट्यो त्वरित परिय पाय कित्तिय कहत १४

(दोहा)

---

* सवार ॥ ८ ॥ ९ ॥ १ संप्राप्त हुआ (सुख से पहुंचा) २ विशेष मत्त होकर ॥ १० ॥ ३ फर्रुखसियर नामक ४ करीमबख्स नामक ॥ ११ ॥ ५ रीस (क्रोध) सहित ॥ १२ ॥ ६ राव बुधसिंह ॥ १३ ॥ ७ वाममार्गियों का ८ वैष्णव ९ शैवधर्म को हटाकर १० हाथी ११ पालखी सहित १२ पुरोहित का नाम है १३ वाममार्ग १४ मिला १५ शीघ्र १६ कीर्ति ॥ १४ ॥

नित्यनाथकों *गुरुव नमि, गजमुख नृप ढिग आय ॥
सिद्ध मन्त्रि गोरक्ख सम, महिमा कहिय बनाय ॥ १५ ॥
यातैं †सकति प्रसन्न अति, याहि सकति वर दिद्ध ॥
दै मनवंछित यह करत, सिस्यहुकों सम सिद्ध ॥ १६ ॥
अनुष्ठान जप होम अरु, मन्त्र जन्त्र मतिमंत ॥
कहैं जाहि भसमहु करैं, कहैं जाहि भुवकंत ॥ १७ ॥
किय नृप गजमुख कथितं सुनि, नाथ निकेत प्रयान ॥
बुंदियको बिगरन समय, अरु भावी बलवान ॥ १८ ॥
नित्यनाथ ढिग जाय नृप, पय परि करिय प्रनाम ॥
कहिय सिस्य मोकों करहु, भरहु भेट धन धाम ॥ १९ ॥
लक्ख१०००००रुपय्यन करैं सुलभ, ऐसे ग्राम अनूप ॥
गहहु दच्छिना छत्त गिनि, रहहु इहाँ गुरु रूप ॥ २० ॥
नित्यनाथ यह सुनि कह्यो, हम दक्खिन वसवान ॥
गुरु मृत सुनि हुत जातहैं, न रहैं तास निदान ॥ २१ ॥
हम भवदीय पुरोहितहि, मुख्य मन्त्र देजात ॥
यातैं सिच्छा लेहु तुम, देहु याहि वसु व्रात ॥ २२ ॥
यह कहि मंनु गजमुखहि दै, गयो कनफटा देस ॥
इत बुंदिय ढिग कुचकरि, आयो बुद्ध नरेस ॥ २३ ॥
जन काबल नृप बुद्ध हो, तब निज सोदर जोधं ॥
चढि तरंडं गुनगोरि दिन, किय जलकेलि कुँबोध ॥ २४ ॥

---

*गुरु के समान ॥ १५ ॥ † शक्ति १ अपने बराबर का सिद्ध करदेता है॥१६॥ २ बुद्धिमान् ३ राजा करता है ॥ १७ ॥ ४ गजमुख का कहा हुआ ५ उस नित्यनाथ नामक नाथ के स्थान पर गया ॥ १८ ॥ ६ पैरों में पड़कर ॥ १९ ॥ ७ सुगमता से लाख रुपये प्रतिवर्ष हासिल के आवैं ऐसे ८ छात्र (शिष्य) ॥ २० ॥ ९ गुरु को मरा हुआ सुन कर १० इसकारण से ॥ २१ ॥ ११ आप के पुरोहित को १२ शिक्षा १३ धन का समूह ॥ २२ ॥ १४ मन्त्र ॥ २३ ॥ १५ सगा भाई जोधसिंह १६ नाव पर १७बुरी बुद्धि से ॥ २४ ॥

सुभट सचिव अनुचर सकल, बैठे पोतन तत्थ ॥
नचि गावत पातुरि* निकर, [1]श्रुति स्वर तारन सत्थ ॥२५॥
गज इकलिंगप्रसाद इक, इहिं अंतर [1]मदमत्त ॥
[2]निजदायज आयो हुतो, उदयनेरतैं अत्त ॥ २६ ॥
वह[3] बारन अति दानछक, जल पीवन तँहँ आय ॥
ताल पिक्खि पोतन तिरत, कुप्पि चल्यो अति[4]काय ॥२७॥
सत्थ सकल आपान[5] थित, किन्नौं कछु न उपाय ॥
[6]निज पोतहि पकरी निठुर, एतेमैं गज आय ॥ २८ ॥
धाइभ्रात[7] निज संगहो, तास भयो इक वार ॥
एतेबिच उलटाइ इभ[8], बोरी नाव सु बार[9] ॥ २९ ॥
नियति जोग सब तिरि कढिय, [10]असु [11]बसु त्वरित अवेरि ॥
धाइभ्रात अरु अप्प[12] दुवर, स्वस[13]त निकासे हेरि ॥ ३० ॥
निकसत[14] छिन गुज्जर मरिय, असु निज कछु अवसेस ॥
सो[15] पंचउत्थि तसमात सो, पत्तो मृत पर[16]देस ॥ ३१ ॥
अनुज राज जयसिंहको, भीम सुता[17] यह तास ॥
जोध[18] नारि सह[19]गमन करि, पत्ती दिव[20] पति पास ॥ ३२ ॥
पातैं पुर अविरत अवहु, आदर सुच[21] न समाय ॥
मति तदपि[22] सबोधि मन, इम कुरढिग नृप आय ॥ ३३ ॥

---

*समूह। राग के साथ की पातुरि श्रुति और स्वर तथा तालों के साथ॥२५॥ १ मदमस्त २ जोधसिंह के दहेज में ॥ २६ ॥ ३ वह एकलिंगप्रसाद हाथी ४ बड़े शरीर वाला (वह हाथी चला जिसका नाम है ॥ २७ ॥ ५ पानगोष्ठी (मतवाल) में ६ जोधसिंह की नाव को ही ॥ २८ ॥ ७ धाय भाई (धाय का पुत्र) ८ हाथी ने ९ जल में वह नाव डुबा दी ॥ २९ ॥ १० प्राणरूपी ११ धन को शीघ्र अबेर कर १२ जोधसिंह १३ छूटते हुए (अन्तिम)स्वास लेनेहारों को ॥ ३० ॥ १४ निकसते समय गूजर जाति का धायभाई मर गया और जोधसिंह का कुछ प्राण बाकी था सो १५ इसके चौथे दिन मर कर १६ परलोक गया ॥ ३१ ॥ १७ बनेडा के राजा भीमसिंह की पुत्री १८ जोधसिंह की स्त्री १९ सती होकर २० स्वर्ग गई ॥ ३२ ॥ २१ शोक २२ तोभी बुद्धि से मन को समझा कर

सुनि भूपहिं आवत सुभट, सचिव वेग ४ समुपेत॥
बुंदिपपुर सन निकसि सब, सम्मुह आय †सहेत ॥ ३४ ॥
नगर जैतगढ ताल्लें तट, रहि नृप अरप मिलान ॥
प्रात पुरहिं प्रविसत प्रकटि, गृहगृह मंगल गान ॥ ३५ ॥
कोटारन निज भट साथो, जुग्गियराम निसंक ॥
ताको सुत सालम लयो, गजहिंढ नृप अंक ॥ ३६ ॥
इम आलमके पंथ रहि, पदह १५वरस बिहाय ॥
इष खट सत्रह१७६७ सह सित, प्रविस्यो बुंदिप आय ॥३७॥
बुंदिपपुर प्रविसत समय, सउन किइ मग रुद्ध ॥
विधवार्वाल रजस्वला, पिक्खी सम्मुह बुद्ध ॥ ३८ ॥
इत्यादिक असउन विविध, मन मन्ने नहिं तेत्त ॥
प्रविस्यो उत्तरद्वार पुर, जाजव जय उनमत्त ॥ ३९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे अजितसिंहजयसिंहबुधसिंहार्थदत्तस्वस्वराज्यगमनाज्ञालमशाहदिल्लीगमन १ गुणगौरिदिनबुधसिंहानुजयोधसिंहस्य नावा सह बुन्दीतडागमज्जनसूचनमेक विंशोमयूख ॥२१॥
आदित एकोनषष्ठ्यधिकद्विशततम ॥ २५९ ॥

॥ ३३ ॥ ४ सहित † सोम्हे साम्हने ॥ ३४ ॥ १ तालाब के किनारे २ मुकाम ॥ ३५ ॥ ३ विना जाने वाला जोगीराम ४ हाथी पर चढ़ाकर राजा ने गोदमें लिया ॥ ३६ ॥ ५ अधीन ६ भादवा सुदि पक्ष में ॥ ३७ ॥ ७ शकुनों ने मार्ग रोका ८ बालविधवा और रजस्वला को बुधसिंह ने ९ सामने देखी ॥ ३८ ॥ १० इनको आदि देकर अनेक प्रकार ११ अशकुन १२ तदा ॥ ३९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में अजितसिंह, जयसिंह, बुधसिंह इनको आपने अपने राज्य की सीख देकर बादशाह आलम का दिल्ली जाना १ गुनगौर के दिन बुंदी के तालाव में बुधसिंह के छोटे भाई जोधसिंह का नाव सहित डूबने की सूचना का इकीसवां २१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ उनसठ २५९ मयूख हुए ॥

(छप्पई)

बुंदिय गद्दिय बैठि बुल्लि[1] गजमुखह[2] पुरोहित ॥
मन्नि गुरुत्व सुनि मंत्र कउल[3] मारग चाहयोचित ॥
लक्ख१०००००रुपय्यन मुलक हत्थि[4] सिबिका[5] हय अप्पिय ॥
गद्दिय[6] तक अधिकार बख्खसि गजमुख गुरु थप्पिय ॥
आचार अधम अद्दरि रहिय पंच मकारन[7] मुदित मन ॥
बुंदीस बुद्धि बिगरी बिबिध कउल कम्म[8] लग्गो करन ॥१॥
जब काबल बुंदीस हुतो आलम अनुगामी ॥
तबहि रान जयसिंह गयो परलोक सु नामी ॥
तास तखत अमरेस[9] रह्यो रानाँ कछु बच्छर[10] ॥
पत्तो[11] वह परलोक सुनी बुंदिय पह[12] संभर ॥
लै सिक्ख तबहि पटरागिनी[13] रानाउति पीहर गई ॥
उम्मेदकुमरि तत्थहि अचिर[14] भावीबसि असु[15] बिनु भई ॥२॥

[दोहा]

पटरागिनि पंचत्व[16] इम, लयो उदैपुर जाय ॥
च्यारिलक्ख४०००००मुद्रा प्रमित, रह्यो तहाँ तस राय[17] ॥३॥
इहिं अंतर बुंदीस प्रति, सगपन[18] हित रतरसाय ॥
पुर भनाय रट्ठोरके, नारिकेल[19] द्रुत आय ॥ ४ ॥
सो सगपन स्वीकार करि, नारिकेल लिय केलि ॥

---

१ बुलाया २ गजमुख नामक पुरोहित को ३ वाममार्ग ४ हाथी ५ पालखी ६ गादी पर बैठने तक का अधिकार ७ वाममार्ग के *पांच मकारों में मन प्रसन्न करके ८ वामियों के कार्य ॥ १ ॥ ९ अमरसिंह १० वर्ष ११ प्राप्त हुआ १२ चहुवान बुधसिंह ने १३ पाटराणी १४ शीघ्र १५ प्राण विना ॥ २ ॥ १६ मृत्यु १७ धन ॥ ३ ॥ १८ संबंध के लिये १९ नारियल (सम्बन्ध करने का प्रथम दस्तूर)

*वाममार्गियो में, मदिरा १ मास २ मैथुन ३ मुद्रा ४ और मत्स्य ५ ए पाच मकार प्रसिद्ध हैं, जिनके सेवन से वामीलोक मोक्ष होना मानते है, जिनका विशेप विवरण देखना होवै तो वामियों के 'भैरवी चक्र' नामक ग्रन्थ मे देखे ॥

मन परतु लगि कउल मत, मथित बेदमत पेलि ॥ ५ ॥
रहत चक्रपूजानुरत, विधि नय धरम बिसारि ॥
आलस मद्य प्रमाद करि, बिगरी राज सम्हारि ॥ ६ ॥
इहिअंतर लाहोरतैं, दिल्लिय आय पुकार ॥
सूबा बिच दल बधि सब, सिख मिलि करत बिगार ॥७॥
नानक मत अनुगामि सिख, अजितसिंह तिन ईस ॥
सो मडत अप्पन अमल, सूबा खडि सरीस ॥ ८ ॥

(षट्पात)

सुनत एह दिल्लीस अटकादिस कटक अगजित ॥
सजि चल्लिय द्रुत साह राह उद्धत जय रजित ॥
सबहि पुत निज सग हुरम बेगम सब हाजरि ॥
तीन लक्ख३००००० तुरंग्वार भार सतपच५०० ताम भीर ॥
सक्रमित साह आलम सबेल क्रम प्रवेस लाहार करि ॥
वह अजितसिंह सब सिखन हनि दढिखडि लिन्नों पकरि ॥९॥

(दोहा)

त्रासितै करि सब सिखनतैं, नानक पथ छुराय ॥
मुडित डह्ली मूछ करि, दडि[12] दये निकसाय ॥ १० ॥
सालमार उपबन निकट, रह्यो कछुक दिन साह ॥

शीघ्र आये ॥ ४ ॥ १ मस्लिक २ हटाकर ॥ ५ ॥ ३*चक्रपूजा म ४ गफलत [भूल] ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५ नानक के मत के साथ चलनेवाले ६ रीस (क्रोध) सहित ॥ ८ ॥ ७ घोड़े ८ पक्ष कर ९ सेना सहित १० दंडे तोड़ कर [नानक मतवाले हाथों में दंड रखते हैं] ॥ ९ ॥ ११ त्रासयुक्त करके १२ उन दंड रखनेवालों को दाढ़ी मूछ मुंडवा कर निकाल दिये [दाढ़ी मूछ का मुंडवाना नानक मत के विरुद्ध है] ॥ १० ॥ १३ सालमार नामक बाग के समीप

* वाममार्गियों के ग्रंथों में "भैरवी चक्र" की पूजा की विधि विस्तार से लिखी है, वह यहां नहीं लिखी जासक्ती जिस किसीको देखना होवे वह "भैरवी चक्र" नामक ग्रन्थ में देखै, उसका सिद्धान्त नीचे के श्लोक से जानना चाहिये ॥

प्रवृत्ते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णा द्विजोत्तमा ॥ निवृत्ते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णा पृथक् पृथक् ॥ १ ॥

अब अभाग तुरकानको, उलटो करत *इलाह ॥ ११ ॥

(षट्पात्)

कलिजुग भूपन कुमति †निलय नारिन भरि रक्खैं ॥
रहैं इक्क अनुरत्त अवर जारन तब चक्खैं ॥
यौंही आलम संग निकर[1] नारिन अंतहपुर[2] ॥
तिनमैं बेगम इक्क लज्ज लंघिय कामातुर[3] ॥
सँहँसन सिपाह जामिक[4] रहत रुक्कन तोहु न काममग[5] ॥
निसदीह जार इच्छत निलज सरंभा[6] जिम सारद[7] समय ॥१२॥

(दोहा)

गायक[8] आवत गान गृह, सिक्खवन[9] नारिन गान ॥
तिनबिच पिक्ख्यो[10] रूप बर[11] गायक इक्क जवान ॥ १३ ॥
छन्नै ताहि कहायकैं, रक्ख्यो चिकन दुराय ॥
प्रतिसीरा[12] पलटाय पुनि, लिन्नों रत्ति बुलाय ॥ १४ ॥
दिन रक्खैं मंजूस धरि, रत्ति निकारैं ताहि ॥
यौं बेगम दिल्लीसकी चिपी कलावत चाहि ॥ १५ ॥
पिक्खि सँउत्तिन[13] इक्क निस, अक्खी आलम अग्ग ॥
सुनत प्रमादी साह धकि, लयो तौंहि गृह मग्ग[14] ॥ १६ ॥
साहागम[15] बेगम सुनत, छन्नैं संगैं[16] लगाय ॥
जाय सउच[17] संकानिलय[18], आई ताहि दुराय ॥ १७ ॥

(पादाकुलकम्)

---

* ईश्वर वाची यावनी शब्द है ॥ ११ ॥ † स्त्रियों से घर भर रखते हैं, उन में एक से प्रीतियुक्त रहता है १ स्त्रियों का समूह २जनाने में ३ काम से पीड़ित ४पहरायत ५ काम का वेग ७ सरदऋतु के समय में ६ कुत्ती के समान॥ १२ ॥ ८ कलावंत ९ गाना सिखाने के लिये १० देखा ११ श्रेष्ठ ॥ १३ ॥ १२ कनात सें लपेटकर ॥ १४ ॥ १५ ॥ १३ सौतों ने १४ उसी बेगम के घर का मार्ग ॥ १६ ॥ १५ बादशाह का आना १६ छानें अपने साथ लेकर १७ पाखाने जाकर १८ पाखाने में १९ उस कलावंत को छिपाआई ॥ १७ ॥

इहिं अंतर आलम तँहँ आयो, तिय जुव्वन *तसकर नहि पायो ॥
तब नचाय †सोतिन दृगतारा, ‡सहचगेह दिय सैंन इसारा ॥ १८ ॥
सु लखि साह अक्खिय बेगम सन, मैं §विरेकगद ¶अज्जविकल मन ।
यह सुनि गायक मिच्चु विचार्यो, खजर दारि साह हिय मार्यो ।
२ढक फारि पार वह फुट्टो, छिन अंतर आलम ४असु छुट्टो ॥
नियति जाग इम लेहु निहारें, दिल्लीसहिं गायक हनिडारें ॥ २० ॥
गायकहू नारिन गहि मार्यो, साह कुविधि मरि सुजस बिगार्यो ॥
अंतहपुर तब बजिग अचानक, इतउत रुदनराग उरआनक ॥ २१ ॥

(षट्पात)

हुरम हार शृंगार तोरि झूरत तोबा करि ॥
झारिझारि बगरिन परत लुट्टत उट्टत परि ॥
मोजदीन पट्टप कुमार यह सुनि द्रुत धायो ॥
सुत्तौ कुमर अजीम मुंद्र ताकँह हनिआयो ॥
लघुभ्रात दोय तिन सिर निलज पिल्ल्यो दलँ हलकारिकैं ॥
दोउन १३मराय गहिय लई आजमें अनय विचारिकैं ॥ २२ ॥

(दोहा)

आलम मरन अपुब्ब हुव, फुट्टी दिस दिस वत्त ॥

*स्त्री के जोबन का चोर [सौतों ने नेत्रों की पुतलियों का इशारा करके ‡सहवास में होने का इशारा किया ॥ १८ ॥ §दस्तों के रोग में ¶आज १मृत्यु ॥ १९ ॥ २पासे की [पीठ की लपी] ३टी अथवा पीठ को फाड कर ४प्राण ५भाग्य के योग से ६कलावत ॥ २० ॥ ६ बज ७ रोने के राग और ८ छातियों के ढोल ॥ २१ ॥ ९ फारसी में तोबा शब्द परित्याग की प्रतिज्ञा का वाचक है जिसका अन्वय 'हार शृंगार' के साथ है, अर्थात् हार शृंगार के परित्याग की प्रतिज्ञा करके १० शीघ्र ११ मूढ [यहां मूढ कहने का अर्थ यह है कि अजीम, आलमशाह का छोटा पुत्र होने से वह पाट का हकदार नहीं था तो भी उस मूर्ख ने वृथा मार डाला १२भेजी १३ सेना १४ आजमशाह के किये हुए अनय [अनीति] को विचार करके अर्थात् आजम ने भी आलम के छोटे भाई होने पर दिल्ली के तखत का दावा किया था इसीप्रकार ये भी कर बैठे तो आश्चर्य नहीं, यह जानकर ॥ २२ ॥ १५ अपूर्व

मोजदीन लय३भ्रात हनि, बैठो तख्त प्रमत्त ॥ २३ ॥

(षट्पात)

आलम मृत सुनि अजितसिंह मरुदेस नरेसुर ॥
करि फोजन दरकुंच आय अजमेर निडर उर ॥
लिन्नौं *बिंटुलि दुग्ग साह थाँनाँ हनि †संगर ॥
सूबा दब्बि ‡सजोर भयो बिनु संक गब्ब भर ॥
इत तक्कि छिद्र दक्खिन अवँनि मरहट्टन बल मंडयो ॥
जित तित उठाय दिल्लिय अमल छंडि कातरपन छंडयो॥२४॥

(दोहा)

मँति प्रमाद आलम मरत दिल्ली तिय बरजोर ॥
तक्की मारि कटाँच्छ दृग, सहर सितारा ओर ॥ २५ ॥

(षट्पात्)

देसदेस मचि दंग चंग भूखन चमकाये ॥
पुरपुर धाटिन धात पयन घुग्घर घमकाये ॥
अलस अँस अन्याय हावभावन बिस्तारत ॥
आसवपान अपार मार आतुर दृग मारत ॥
गनिकान बिभव अधिकार गत चंडौतक घुम्मर रचिय ॥
दिल्लिय नवोढ दुलहनि बनिय सहर सितारा बरन प्रिय॥

(पहले किसी बादशाह का मरना नहीं हुआ ऐसा) ॥ २३ ॥ * अ-जमेर के गढ का नाम 'बींटली' है † युद्ध में ‡ जोर [बल] सहित १ भूमि मे २ बढ कर ३ कायरपन छोडा ॥ २४ ॥४प्रमाद की बुद्धि से ५ कटाक्ष ॥२५॥ अब यहां रूपक अलकार से दिल्ली रूपी स्त्री का सितारा शहर को बरने का वर्णन करते हैं कि ६ उपद्रव (दंगा) मचा सोही तो ७ चंगे (सुन्दर) भूषण चमकाये और पुरपुर में ८ धाड़े (डाके) ९ पड़े वेही पैरों में घूघरे बजाये १० अत्यंत मद्य पीना ही कामदेव से पीडित होकर नेत्र चलाये [नजारे मारे] गनिकाओं को वैभव मिलना और राज्य के अधिकार [उहदे] मिलना ही ११लहँगे[घागरे) की घूमर लगाई (स्त्रियों के समूह के नृत्य का नाम घूमर है) ॥२६॥

॥ दोहा ॥

मोजदीन इत भ्रात हनि, बढि तखत बनि वीर ॥
निलज दूर किन्नों *अनखि, आलमसाह वजीर ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

हुसनअली †आलमवजीर करि दूर ‡कुसिक्खन ॥
जुलफकारखा नाम प्रवर थप्पो लखि §इक्खन ॥
तजि पत्तन लाहोर रचिय दरकुच गेह रुख ॥
जतिजव दिल्लिय आय पट्ट पायो सु परम सुख ॥
आसव ¶विपान अनुरत्त अति हठ प्रमत्त लय³भ्रात हनि ॥
गनिकान संग गादर रहत दिल्लिय पादप दीमें बनि ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

नायक लाडकपूर इक, गायक गेहिर गुमान ॥
तास लालकोंवा वहिनि, अधिक रूप गुन आन ॥ २९ ॥
पट्ट हुरम ताकों करी, मोजदीन बस होय ॥
गलबाँहीं छिनछोरिकेँ, कम्म सुनैं नहिं कोय ॥ ३० ॥

पादाकुलकम् ॥

नारिन संग फिरत कांतारन, नारिनहीमैं सहल सिकारन ॥
इक दिन राग करी असवारी, नाजर मग तथा सब नारी ॥ ३१ ॥
पान कापिसायन अति किन्नों, सामैं चढन सासन पुनि दिन्नों ॥
दिन वेला बनि कालि बिहाई, अपरअन्ह संध्या अब आई ॥ ३२ ॥

* क्रोध करके ॥ २७ ॥ † आलमशाह के वजीर को ‡ बुरी शिक्षा से [लोगों के निकालने से] § परीक्षा करने के लिये अथवा अपने नेत्रों से देख कर ¶ विशेष पान [अधिक पीने] में अनुरक्त १ दिल्लीरूपी वृक्ष का २ दीमक (उदही) ॥ २८ ॥ ३ कलावतों का अफसर ४ कलावत [गानकार] ५ गहरे घमंड वाला ६ घर अथवा नखरा ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ७ वनों में ॥ ३१ ॥ ८ मद्यपान ९ सन्ध्या समय १० दिन का समय क्रीडा में बिताया ११ अपरान्ह स-

मोजदीन अतिपान बिमत्तो, [1]रहसि लालबीबी अनुरत्तो ॥
सोधि तास सिविका बिच सोयो, जावतखिन काहू नहिँ जोयो ॥३३॥
असवारीके समय अचानक, इत उत बजे चटनक आनक ॥
कहि कहि [3]त्वरा दरोगन किन्नी, सब हुरमन सिविका कसि दिन्नी ॥
लैलै चले कहार नृजानन, जोवत फिरत साहकौं सब जन ॥
भटन लालबीबिय ढिग भास्यो, खोजन तब तहँ जाय निकास्यो ॥३५॥
खोलि बंध सिविका इक नाजर, आन्यौ साह भटनके अंतर ॥
अति अचेत सिविकाबिच डारयो, बुहुहिँ राज समग्र बिचारयो ॥३६॥
आई तब दिल्लिय असवारी, मनजित साह रहैं इम भारी ॥
दे अधिकार बिभव सुखदायक, गुरुमंत्री किन्नैं सब गायक ॥३७॥
दोहा—इत दिल्लिय इम मचि अनय, इत बुंदिय अवनास ॥
साहबहादुर सिंघु सुनि, सोचि रु धुन्यौं सीस ॥ ३८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहवामसमार्गधारणं १ नानकमतीयोपद्रवश्रवणालमशाहलाहोरगमनं २, आलमशाहकलत्रोपपतिगायककरालमशाहपञ्चत्वप्रापणं ३ हतानुजत्रिकमोजदीनदिल्लीपट्टोपविशनं ४ अतिमद्यपमोजदीनगायककनीलालबीबीवशीभवनं द्वा-

न्ध्या [सायंकाल] ॥ ३२ ॥ १ विशेष मस्त हुआ २ एकान्त में ॥ ३३ ॥ ३ शीघ्रता ॥ ३४ ॥ ४ पालखियों को ५ नाजरों ने ॥ ३५ ॥ ६ डेरामों के भीतर ॥ ३६ ॥ ७ बादशाह के मन को जीतने वाली ८ महामारी [मरी] रोग विशेष जिसको अंगरेजी में प्लेग कहते हैं, यह लालबीबी का विशेषण है ९ बड़े सलाहकार सब कलावतों को किये ॥ ३७ ॥ १० अनीति ११ मृत्यु ॥ ३८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के नृपति बुधसिंह के चरित्र में, बुधसिंह का वाममार्ग धारण करना १ नानक मत वाले सिक्खों का उपद्रव सुन कर आलमशाह का दिल्ली से लाहोर जाना २ आलमशाह की बेगम के जार [उपपति] एक कलावत के हाथ से बादशाह आलमशाह का मारा जाना ३ तीन छोटे भाइयों को मार कर मोजदीन का दिल्ली के तखत पर बैठना ४ अत्यन्त मद्यपान करनेवाले मोजदीन का एक

विंशो मयूख ॥ २२ ॥

आदित षष्ट्युत्तरद्विशततम ॥ २६० ॥

दोहा ॥

मति बिगारि भजि वाममत, सजि लिंगिछित समाज ॥
आलस पर आसिक्त भयो, राजकाज तजि राज ॥ १ ॥

षट्पात् ॥

हुसनअली सय्यद नवाब इक मंत्र रचिय इत ॥
मोजदीनकों मत्त जानि चिंतिय प्रपच चित ॥
पूरब पुर पटनाँ सु साहफूरुक अजीम सुव ॥
तब पत्रनं मिलि ताहि भिरन आन्यौं दिल्ली भुव ॥
रन मोजदीन तासन बिरचि भजि दिल्लिय अदर दुरयो ॥
लगि पिट्ठि साहफूरुक सजव आय ताहि हनि अकुँरयो ॥२॥

दोहा ॥

सक नव खट सत्रह १७६९ समय, बिक्रम हायन वट्ट ॥
मोजदीनकों मारिकैं, बैठो फूरुक पट्ट ॥ ३ ॥
जुलफकारखाँ सचिव तस, हन्यौं सोहु हमगीर ॥
सय्यद फूरुकसाह किय, हुसनअली सु वजीर ॥ ४ ॥
पलटी गाहिय तीन ३ इम, बरस इक्क १ के माँहिं ॥
आलम पिच्छैं मोजदी, अब यह फूरुक आँहिं ॥ ५ ॥
बुध नृपके याही बरस, भयो कुमर कुलभान ॥
कछवाही रानी उदर, देयसिंह अभिधान ॥ ६ ॥
होत जनम दिग्दिम दये, लक्खन दम्म लुटाय ॥

कलावत की पुत्री लाल बीबी के वशीभूत होने का बाईसवां २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ साठ २६० मयूख हुए ॥

१ वाम मत का सेवन करके ॥ १ ॥ २ फूरुकशाह ३ पुत्र ४ पत्रों से मिल कर अर्थात् लिखा पढ़ी करके ५ युद्ध करने के लिये ६ उस फूरुकशाह से ७ खड़ा हुआ ॥ २ ॥ ८ विक्रम के सम्वत् के मार्ग से ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ९ रुपये

जातकरम अरु दान जप, सबबिधि[1] पुव्व सधाय ॥ ७ ॥
कुमर जनम आमेरपुर, सुनि जयसिंह नरिंद ॥
पठये कुल पहिरावनी, दस १० हय दोय २ करिंद[2] ॥ ८ ॥
मास तीन ३ रहि कुमर वह, छोरि गयो निज देह ॥
बिगरि बाममग बुद्धमति[3], आलस गहिय अछेह ॥ ९ ॥
ऐसो आलस अँवर गत[4], सुन्यौं न पिक्ख्यो रंच ॥
सातौं ७ प्रकृति[5] सम्हार नहिं, बिगरत सबहि प्रपंच ॥१०॥
पुर भनाय संबंध भो, तिहिं पर लगन लिखाय ॥
रट्ठोरनकौं खबरि दिय, आवत बुंदिय राय ॥ ११ ॥
विप्र पुरोहित निज बिबुध[6], नाम भवानीदास ॥
महडू[7] केसोदास पुनि, कुल चारन मतिकास[8] ॥ १२ ॥
ये दुव२ भूप तयार करि, पठये नगर भनाय ॥
लगन बेर हम आयहैं, दिन्नी एह कहाय ॥ १३ ॥
द्विज चारन दुव २ जायकैं, भाखि लगन रहि तत्थ ॥
इत नृपकौं आलस अधिक, उपजत बिबिध अनत्थ[9] ॥१४॥
वहै लगन नृप चुक्किकैं, दूजो लगन दिखाय ॥
लगन पंच५इम चुक्कयो, व्याहन गो न भनाय ॥ १५ ॥
द्विज चारन प्रति कहिय तब, पति भनाय करि रीस ॥
अब तुम सिर कन्या हनौं, कै आनहु बुन्दीस ॥ १६ ॥
तब चारन तत्थहि रह्यो, द्विज आयो नृप पास ॥
बुल्ल्यो अब मरिहौं न तो, व्याहहु आलसबाँस[10] ॥ १७ ॥
यह सुनि द्विज संकोच करि, गो नृप नगर भनाय ॥

---

१ विधिपूर्वक ॥ ७ ॥ २ बड़े हाथी ॥ ८ ॥ ३ बुधसिंह की बुद्धि ॥ ९ ॥ ४ अन्य में गया हुआ। ५ स्वामि, अमात्य, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग, सेना ये राज्य के सातों अंग हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ ६ पंडित ७ चारणों की एक शाखा का नाम है ८ बुद्धि का प्रकाश करने वाला ॥ १२ ॥ १३ ॥ ९ अनर्थ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १० हे आलस्य का स्थान ॥ १७ ॥

परनि सुता रट्टोरकी, विविध त्याग बटाय ॥ १८ ॥
बुदिय दिस पुनि कुच किय, अति आलस *अलसात ॥
आत आत मगमाँहिं रुकि, बहु मुकाम रहि जात ॥ १९॥
चलत रुकत रुकि चलत इम, नगर मालपुर आय ॥
तहँ तेडाग[1] अतर उतरि, कटक[2] मुकाम कराय ॥ २० ॥
व्याहयो मासतपस्य[3] बिच, रह्यो[4] अलग सुगाढ ॥
रहत मास पुरताल विच, आयो सिर आषाढ ॥ २१ ॥

पट्पात् ॥

गरजि मेघ घनघोर ओर उत्तर सन आये ॥
अधिक मंडि आसार[5] चिहित[6] सबर[7] बरसाये ॥
आयो जल जब ताल तवहि स्पदर्न[8] मँगाय इक ॥
तिहिं उप्पर थित होय रहयो बहु दीह आलसिक ॥
मालपुर सचिव यह सोधि मन कूरमपति[9] प्रति पत्र दिय ॥
उन कहिय नीर परिवांह[10] मग कहहु तव यह इन करिय ।२२।

गीर्वाणभाषा ॥ उपजाति ॥

इत्थ स वक्षोद्दपसे कृपीटे रथस्थितो मालपुरातडागे ॥
बहून्यहानि ह्यवसत्प्रमत्तश्चिरक्रियो बिन्दुमतीक्षितीशः॥२३॥

अनुष्टुप् ॥

तत्रैव फरुके शाहे, जाते भटसहस्रभृत् ॥
स्वामिदर्शनसाकाङ्क्षो, जैत्रसिंह समागत ॥ २४ ॥

॥ १८ ॥ * आलस्य करता हुआ ॥ १९ ॥ १ तालाब के भीतर २ सेना का ॥ २० ॥ ३ फागुन में ४ बस आलस्य को गाढा (दृढ) पकडा ॥ २१ ॥ ५ मेघ धारा ६ वचित ७ जल ८ रथ मँगवा कर ९ आमेर के राजा जयसिंह प्रति १० जल निकलने के मार्ग [मोरी] के रस्ते से ॥ २२ ॥ इसप्रकार पेट छाती प र्यन्त जल आने पर रथ में बैठाहुआ मालपुरा के तलाब में मदोन्मत्त आलसी बुंदी का राजा बहुत दिनों तक रहा ॥ २३ ॥ वहां ही फरोखशाह के बादशाह होने पर हजार योद्धाओं को धारण करनेवाला और स्वामी के दर्शनों की इ च्छावाला जैत्रसिंह आया ॥ २४ ॥ जिस पीछे श्रावण मास के आने पर, आ

वंशस्थः ॥

ततो नृपः श्रावणिके समागते, बुन्दीं समागम्य विपुत्रशुद्धिभृत्।
आलस्यमाश्रित्य चिरक्रियेश्वरोऽवसद्यथापूर्वमवस्थितः पुनः ।२५।

प्रायो व्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत मरुनृप अजमेर लिय, तब विग्रह हुव एक ॥
रूपनगर रट्ठोर नृप, राजसिंह किय टेक ॥ २६ ॥
मरुभूपति सौं नहिं मिल्यो, हठपुग्व हमगीर ॥
साहहिं गिनि भानेज सुत, भो वह दिल्लिय भीर ॥ २७ ॥
याकै अरु मरुईसकै, बनी नाँहिं जब वत्त ॥
तब रजधानी संगलै, दिल्लियपुर वह पत्त ॥ २८ ॥
बुंदियहू तब आय वह, राजसिंह रट्ठोर ॥
नहि किन्नौं सतकार तसु, हुंहु नलस वरजोर ॥ २९ ॥
राजसिंह निज पुत्रिका, सरपन हित कहि वत्त ॥
सोहू नृप मन्नी नहीं, अलस नारि अनुरत्त ॥ ३० ॥
पाय अनादर तब गयो, कोटापुर रट्ठोर ॥
कन्या भीमहिं ब्याहिकैं, जुरि संड्यो इक जोर ॥ ३१ ॥
रूपनगर पति शीत डहिं, भीम हिंतु करि मंत्र ॥
निज रजधानी संगलै दिल्लिय गयउ स्वतंत्र ॥ ३२ ॥
मरुनृपको बाने बनि पिसुन, अनय साहसौं आक्खि ॥

लस्य का आश्रय लेकर, आलसियों का शिरोमणि, सोई हुई बुद्धि को धारण करनेवाला, राजा [बुधसिंह] जिसप्रकार पहिले स्थित था तिसीप्रकार बुन्दी में आकर फिर रहा ॥ २५ ॥ १ मारवाड़ के राजा ने २ किशनगढ के राज्य के प्राचीन राजधानी का नाम रूपनगर है ॥ २६ ॥ २७ ॥ ३ राजधानी की हाथी घोड़ा आदि सब सामग्री ४ प्राप्तहुआ ॥ २८ ॥ ५ बुधसिंह ने ॥ २९ ॥ ६ आलस्य रूपा स्त्री से अनुरक्त ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ७ भीमसिंह से सलाह करके ॥ ३२ ॥ ८ चुग-
ल ९ अनीति

साह लगत भानेज सुत, यातैं अद्दर रक्खि ॥ ३३ ॥

पद्धति ॥

इत बैठि पट्ट फूरुक सिताव, कारि सचिव मुख्य सय्यद नवाब ॥
फरमान देसदेसन पठाय, सतकारपुब्बं सब नृप बुलाय ॥ ३४ ॥
बुधसिंह पास नैंति सहित तत्र, निज हत्थ मंडि पठयो सु पत्र ॥
द्रुत सदलं आय सत्रुन बिदारि, चाचा नें रचहु मम घर सम्हारि३५
सोहू न पत्र मन्न्यो नरेस, विधिजोग राज बुड्ढन विसेस ॥
हय छत्रमहल्ल वित्र सतत वास, अब सुभट मन्त्रि सब हुव उदास३६

दोहा ॥

चारन केसोदाससों, इकदिन अक्खिय बुद्ध ॥
मरुनृप जो अप्पन मिलैं, जुरैं साहसों जुद्ध ॥ ३७ ॥
बुंदिय तजि उत हम चलहिं, वे आवहिं इत बेग ॥
ततो उभयश्मगमाँहिं मिलि, धर दब्बहिं गहि तेग ॥ ३८ ॥
महडू केसोदास तब, यह सुनि गा अजमेर ॥
मरुनृपसों मिलिकैं कह्यो, अब नहिं करहु अबेर ॥ ३९ ॥
हेरतहो मरुनृप यहहि, कोऊ मिलहिं सहाय ॥
यातैं द्रुत दरकुच करि, बुंदिय तरफ चलाय ॥ ४० ॥
कुच तीन ३ मरुनृप करिय, चढ्यो तथापि न बुद्ध ॥
तब आलस्य अचेत गिनि, फिर्यो कबधहु क्रुद्ध ॥ ४१ ॥
दिल्लीपति फरमान इत, नहिं मन्नैं बुंदीस ॥
यातैं अनखं बिचारि उग, रची साहहू रीस॥४२॥
रूपनगरपुँर भूपको, तबही लग्गो दाव ॥
सभरको मरुपति सहित, चरच्यो पिसुन चंवाच ॥ ४३ ॥

॥ ३३ ॥ १ पूर्वक ॥ ३४ ॥ २ नम्रता सहित ३ सेना सहित ४ हे काका अप
॥ ३५ ॥ ५ बुंदी के एक महल का नाम है जिसमें निरंतर रहना मांडा ॥३६॥
॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥६क्रोध करके ॥४२॥ ७ रूपनगर नामक पुर के
राजा का ८ चुगल ने ९ चुगली रची ॥ ४३ ॥

[पट्पात]

रूपनगर पति कहिय सुनहु मम वत्त साह श्रुतं[1] ॥
मरुपति अरु बुंदीस जुरत मिलि उभय[2]मंत्र जुत ॥
कोटापुर पति मरद वाहि बुल्लहु करि अद्दर ॥
दै तिंहिं बुंदिय देस प्रबल पिल्लहु तिन उप्पर ॥
कूरम नरेस जयसिंह कहँ छंद लिखाय हिय प्रीतिछकि
उज्जैन नगर सूबा अपि तत्थ[3] पठावहु नीति तकि ॥४४॥
सुनत एह दिल्लीस पत्र लिखि भीम[4] बुलायो ॥
महारांव कहि मिलि रु बहुत सतकार बढायो[5] ॥
दै तिंहिं बुंदिय देस साह पिल्ल्यो दोउन[6]पर ॥
इहिं तब कोटा आय सेन सज्जिय हित संगर ॥
इत साह भेजि आमेर दल जयसिंहहिं इम हुकम दिय ॥
सूबा सम्हारि उज्जैनपुर करहु जाय हम सहर किय॥४५॥

(दोहा)

सुनि कूरम उज्जैन दिस, करि दरकुंच चलाय ॥
सूर सबलं[9] सेना सहित, बुंदिय निकस्यो आय ॥ ४६ ॥
संभर सम्मुह जायकैं, आन्यौं पुरहिं वधारि ॥
रक्ख्यो कछुदिन प्रीति रस मंडि विविध मनुहारि ॥४७॥
अंतेउर[10] कछवाहको, अंतेउर[11] विच आय ॥
मिलि ननंद[12] भाउज मुदित, रही हृदय हरखाय ॥ ४८ ॥
उपालंभ[13] कूरम दयो, बुद्ध नरेसहिं तत्थ ॥
मन्नैं नहिं फरमान तुम, किन्नौं बहुत अनत्थ[14] ॥ ४९ ॥

---

१ कानों में २ पत्र ३ तहां (उज्जैन) ॥ ४४ ॥ ४ भीमसिंह को ५ कोटावाले इस समय से पहिले केवल राव कहलाते थे अब महाराव की पदवी मिली ६ भेजा ७ युद्ध के अर्थ ८ पत्र ॥ ४५ ॥ ९ वह शूर और बलवान् जयसिंह ॥ ४६ ॥४७॥ १० कछवाहे का जनाना ११ बुन्दी के जनाने में आया १२ बुधसिंह की स्त्री ननंद और जयसिंह की स्त्री भोजाई॥ ४८ ॥ १३ ओलंभा १४ अनर्थ ॥ ४९ ॥

कोटापुर पति भीम अब, बुंदिय लिन्न लिखाय ॥
तुम प्रमत्त वह छिद्र तकि, करिहैं विग्रह आय ॥ ५० ॥
यातैं मम मत आहि यह, सजहु भ्रात दुव साम ॥
मैथित सत्य मैं बीच परि, कहौं ओह निकाम ॥ ५१ ॥
तब प्रमत्त नृप कहिय फिरि, एह गेहकी रारि ॥
घरहीमैं हम समुझिहैं, लिन्नी बिबिध बिचारि ॥ ५२ ॥
सक अबर रिखि सत्त ससि१७७०, फग्गुन द्वादसि स्याम॥
कछ्वाही उर कुमर हुव, भावतसिंह स नाम ॥ ५३ ॥
भागिनेय हित हरख करि, करिय कुच कछ्वाह ॥
पहुँचावन बुंदीसहू, चढ्यो तुरग हित चाह ॥ ५४ ॥
चढत बाजि प्रासाद सिर, बुल्लयो बिकट उलूक ॥
काकन ककनँ कुक्कुरन, किय फेरउन कूक ॥ ५५ ॥
यह असकुन चिंते न चित, चल्ल्यो चढि चहुवान ॥
कूरमकों पहुँचायकैं, मुरस्यो अलस अमान ॥ ५६ ॥
नाथाउत नगराजको, गुढा नाम इक गाम ॥
मातुलकुलं चहुवानको, किन्नें तत्थ मुकाम ॥ ५७ ॥
सक अबर रिखि सत्त इक १७७०, फग्गुन मेचेंक भूत १४ ॥
कोटापति लै देल चढ्यो, बुंदीपर मजबूत ॥ ५८ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे हतदिल्लीपतिमोजदीनफूरुकसियरशाहयवनेन्द्री

॥ ५० ॥ १ मेरी सलाह है २ प्रसिद्ध ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ३ कृष्णपक्ष की ॥ ५३ ॥ ४ भानजे के ॥ ५४ ॥ ५ घोड़े पर चढते समय ६ महल के ऊपर ७ पक्षि विशेष ८ कुत्तों ने ९ गीदड़ों [स्यालियों] ने कूक की ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १० बुधसिंह के मामा के कुलवालों का था ॥ ५७ ॥ ११ कृष्णपक्ष की चतुर्दशी १२ सेना ॥ ५८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में दिल्ली के पादशाह मोजदीन को मारकर फरुकशाह का

भवन १ बुधसिंहदीर्घसूत्रताहेतुभगाग्रायपपुत्रीविवाहलग्नपञ्चका-
तिक्रमणं २ मरुपाजितसिंहाजमेरग्रहणतदितरूपनगरराजराजसिंह
दिल्लीगमन ३ आज्ञापत्रातिक्रमफर्रुखसियरबुधसिंहबुन्दीहरणान-
न्तरकोटापतिभीमसिंहप्रदान ४ आमेराधीशजयसिंहोज्जयिनीप-
दप्रेषणं त्रयोविंशो मयूखः ॥ २३ ॥

आदित एकषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६१ ॥

[षट्पात्]

पोतन चम्मलि छाय धाय वाऽज्ज्ग निस्सान घन ॥
पक्खर घंट घमंकि वेग हल्लिय दग वारैन ॥
माधानी सब संग मिग्गन अववग्ग अनेक भट ॥
सहँस वीस२००००हय वाजि भीम आगग्ग रट उक्कट ॥
निस घटिय दोय २ रहतें निडर लग्गन धीर जगिग लटे ॥
प्रातहि पुकार बुंदीस प्रति भय निहत्त हाजरि भटे ॥ १ ॥
सुनत एह बुंदीस चलिय चढ्ढि वाजि सुनै मन ॥
खबरि इते बिच आय पुरि पिन्नों प्रारि पत्तन ॥
तवहि मग्ग बिन टार वाम लंघि असतान्ती भूधर ॥
आय सुरथपुर करिय रक्खतदंता दग्गन वर ॥
गजमुखह पुरोहित कहिय तव मंतो जावन लरन रन ॥
भीमसौं मिटि दिल्लगाय भुज नगर द्वार रचिहौं मरन ॥ २ ॥

बादशाह होना १ बुधसिंह के अत्यन्त आलस्य के कारण भगाग्र के राजा की पुत्री से विवाह करने में पांच लग्नों को चुकाना २ मारवाड़ के राजा अजितसिंह का अजमेर लेना और रूपनगर के राजा राजसिंह का अजितसिंह के विरुद्ध दिल्ली जाना ३ फरमान नहीं झेलने के कारण फ़रकसियर का बुधसिंह से बुंदी छीनकर कोटा के राव भीमसिंह को देना ४ आमेर के राजा जयसिंह को उज्जैण के सूबे पर भेजने का तेईसवां २३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ २६१ मयूख हुए ॥

१ नावों से चामल नदी को छाकर मेघ के २ समान नगारे बजे ३ हाथी ४ माधोसिंहोत हाड़े ५ विना मार्ग ॥ १ ॥ ६ मन का मूर्ख ७ पुर ८ ससतोली ना-

यह कहि गजमुख आय प्रविसि पच्छिम पुर तोरन ॥
दक्खिन तोरन निज निकेत तँहँ जाय रच्यो रन ॥
भरि भरि वाहत तुपक पिक्खि नृप भीम कहाई ॥
दोउन २ कैं तुम वंद्य मिलहु करि वध लराई ॥
गजमुखहु पाय तब लोभ गति मंद जाय भीमहिं मिल्यो ॥
पकराय तबहि खिन्नो निपुन गुरुतामद तब द्विज गिल्यो ॥३॥

(दोहा)

गजमुखकों पकराय इम, तोरन अररन फारि ॥
आय तखत कोटेस अरि, बुद्धिप अमल बिथारि ॥ ४ ॥
इत नृपसों सालम कह्यो, मग्ग उचित इहिं जुद्ध ॥
जो न रुचत ता लरहिं हम, हमहिं सिक्ख अब सुद्ध ॥५॥
यह कहि सज्ज्यो जाय गढ, निज पुर करउर नाम ॥
नृप सु सुरथपुरतें मुरगि, गो मेवारन गाम ॥ ६ ॥
मेवारहिं पुनि दाहिनें, करि गो मालव देस ॥
सालक मिट्यो जाय तँह, पुर आमेर नरेस ॥ ७ ॥
इहिं अतर उनियार पति, नरुवंस सग्राम ॥
नैननंगरके ग्राम कति, दब्बे तकत कुकाम ॥ ८ ॥
कैरातैं गजमुखहु कढि, गो मालव नृप पास ॥
तवहि अनादर तर्जि नृप, अतर भो जु उदास ॥ ९ ॥
छिन्नि अखिलौ अधिकार तस, द्विज सिवदासहिं दिद्ध ॥
कउल मग्ग गुरुसिर कहर, कोप विगारि अब किद्ध ॥१०॥

म पर्यंत लाघकर ॥ २ ॥ १ शहर के द्वार में २ अपना घर ३ नमस्कार करने योग्य ४ मूर्ख ५ चतुर भीमसिंह ने ॥ ३ ॥ ६ पुर के द्वार के ७ किवाड़ों को तोड़कर ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ मेवाड़ के गामों में ॥ ६ ॥ ९ शाला [जयसिंह] से मिला ॥ ७ ॥ १० उणियारा का पति ११ नरूका संग्रामसिंह १२ नैणवा नगर के ॥ ८ ॥ १३ कैद से १४ धमकाकर ॥ ९ ॥ १५ सब १६ क्रोध "यहां क्रोध की अधिकता दिखाने को एकार्थ वाची दो शब्दों का प्रयोग है" या कहर का अर्थ जुल्म है

कोटापति बुंदिय मुलक, इत समस्त अपनाय ॥
अनायत्त[1] करउर रामुक्कि, घेर्यो मालम जाय ॥ ११ ॥
बुंदियपुर अवरोधतैं[2], रानिय बिपति बिरत्त[3] ॥
इक १ बेघम आमेर इक १, पुर भनाय इक १ पत्त ॥ १२ ॥
अवर लोक अवरोधके, बिभव सचिव तिहिं वार ॥
सब बेघमपुर संचरे, देवसिंहके द्वार ॥ १३ ॥
खरच रुपय्ये अट्ठसत ८००, अरपि[4] तिन्न तिन्ह पत्र ॥
इक १ हायन[5] बुंदिय बिभव, कुमर निबाह्यो केव ॥ १४ ॥
इत नृप मालव जायकैं, लिन्नें तुरग अनाय ॥
बेघमपति प्रति मोलकों, हुंडिय दिन्न पठाय ॥ १५ ॥
देवसिंह वह बंचि दल[7], गिनि गगपन ठगवार ॥
दिन्नी हय सोदागरन, मुद्रा तीस हजार ३०००० ॥ १६ ॥
बिपति बीच इम बंदगी, चुंडाउत किय चाहि ॥
अप्पन सिर रुन किय अमित, बुंदिय बिभव निबाहि ॥ १७ ॥
इत करउरपुर भीम नृप, रह्यो रिटि रनरत्त ॥
अट्ठारह ८१ अंह[10] अंकुरच्यो[11], मुरच्यो न मालम मत्त ॥ १८ ॥
पल पल बिच गोलन परिग, प्राकारन बिच पथ ॥
सब करउर तोपन सिलागि, हुव भ्राष्ट्रन[13] चरिसंथे ॥ १९ ॥
मुहुकमकुल उमराव इक, सुखसिंहह चहुवान ॥
पुत्रहिं दै घर बिभव पद, किय कसायैं[15] परिधान[16] ॥ २० ॥
वह आनिच्छ[17] बिचरत फिरत, कोटा दल[18] बिच आय ॥

॥ १० ॥ १ स्वतंत्र ॥ ११ ॥ २ जनाना से ३ विरक्त होकर ॥ १२ ॥ १३ ॥ ४ देकर तिनको धारण किए (रक्खे) ५ एक वर्ष ॥ १४ ॥ ६ कुछ आमद नहीं तो भी ॥ १५ ॥ ७ पत्र ८ घोड़ों के सोदागरों का ॥ १६ ॥ १७ ॥ ९ युद्ध में प्रीति करके १० अठारह दिन ११ खड़ा रहा ॥ १८ ॥ १२ कोटों से मार्ग होकर १३ भाड़ में १४ चने होवें ऐसे होगया ॥ १९ ॥ १५ भगवा १६ वस्त्र ॥ २० ॥ १७ इच्छा रहित १८ कोटा की सेना में आया

मिलि गढ्ढिय तजि भीम नृप, दयो ताहि बैठाय ॥ २१ ॥
कह्यो भीम करजोरि तब, मो सिर करहु निदेस ॥
सुखसिंहहु यह सुनि कह्यो, चढि घरजाहु नरेस ॥ २२ ॥
तबहि कहैं सुखसिंहकौं, वह चढि बुंदिय आय ॥
नतो कितो करउर नगर, लेतो इतहि छुगाय ॥ २३ ॥

(पादाकुलकम्)

कोटापति सुखसिंह कथित किय, जान्यों लोकन सालम जित्तिय।
कूरमपति इत गत बिचारयो, जालम बुंदिय हीन निहारयो॥२४॥
अमर रानके पट्ट उदैपुर, लसत रान सग्राम धरम धुर ॥
तिहि प्रति दत्त जयसिंह पठायो, रत्त कर महि सतकार सिवायो॥२५॥
हे नृप तुम भीमहिं समुझावहु, बुद्धहिं बुंदिय देस दिवावहु॥
यह मोसिर अेसान करहु अब, तुमरो हुकम भीम स्वींकृत सब॥२६॥
तबहि रान यह पत्त बिचारयो, कूरमपति सकाच सम्हारयो ॥
निज काका तखतेस बुलायो, बुंदिय भीम समीप पठायो ॥ २७ ॥
तबहि आय तखतेस भीम प्रति, अक्खिय बिबिध रानकी बिन्नति ॥
बुंदिय तजि निज गेह पधारहु, मो सिर यह अेसान बिचारहु ॥२८॥
यह सुनि भीम कह्यो धरि गब्बहिं, बुध नृपतैं बुंदिय नहि दब्बहिं ॥
जमी समस्त साहकी जानौं, तजिहौं तो ह्वैहैं तुरकानौं ॥ २९ ॥
यह कहि सिक्ख दई तखतेसहिं, तजत भीम नहिं बुंदिय देसहिं ॥
तब देसहिं सालमं लागि लुट्टन, कोटा पति थानन करि कुट्टन॥३०॥

[दोहा]

मेवावत सामतहर, इन हड्डन गढितेग ॥

॥ २१ ॥ १ आज्ञा ॥ २२ ॥ २ शीघ्र ही ॥ २३ ॥ ३ कहना किया और लोगों ने जाना कि सालमसिंह जीतगया ॥ २४ ॥ ४ महाराणा अमरसिंह के ५ पत्र ॥ २५ ॥ ६ स्वीकार (मंजूर) करैगा ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ७ गर्व ८ यवनों का राज्य ९ बुन्दी के देश को सालमसिंह लूटने लगा ॥ ३० ॥

बुंदिपतिहिं पुर जैतगढ़, तुट्टिय आप सवेग ॥ ३१ ॥
तिन पर पठयो भीम नृप, धाइभ्रात भगवान ॥
वाँनैं जाय धनावपुर, किन्नों हद घमसान ॥ ३२ ॥
मेवावत सामंत हर, मरे बहुत करि जंग ॥
धाइभ्रात भगवानके, घाय विलग्गे अंग ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावभीमसिंहबुन्दीहरणं १ बुन्दीन्द्रबुधसिंहजयसिंहनृपान्तिकमालवगमनं २ बेगमरावदेवसिंहबुन्दीकुटुम्बपालनं ३ सुखसिंहाभिधहड्डपतिकथनमहारावभीमसिंहकरवरनगरप्राकृत्युत्थापनं ४ जयसिंहलेखमहाराणासंग्रामसिंहस्य बुन्दीमुक्त्यर्थमहारावभीमसिंहमानतदस्वीकारणावर्णनं चतुर्विंशो मयूखः ॥ २४ ॥

आदितो द्विषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६२ ॥

(पज्झटिका)

संग्राम रान सादर कहाय, सो भीम नाँहिं मन्निय सुभाय ॥
तकसीर तास मेटन विचारि, कोटेस उदय पत्तन पधारि ॥१॥
सीसोदभिटि संग्राम रान, दिय भीम तत्थ कछुदिन मिलान ॥

॥ ३१ ॥ १ युद्ध ॥ ३२ ॥ २ सामंतसिंह के वंशवाले ३ विशेष करके घाव लगे ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, कोटा के महाराव भीमसिंह का बुंदी छीनना १ बुंदी के रावराजा बुधसिंह का राजा जयसिंह के पास मालवे में जाना २ बेगम के राव देवसिंह का बुंदी के कुटुंब की पालना करना ३ महाराव भीमसिंह का सुखसिंह नामक हाडा सन्न्यासी के कहने से करवर नगर का घेरा उठाना ४ जयसिंह के लिखने से महाराणा संग्रामसिंह का बुंदी छोडने के अर्थ महाराव भीमसिंह को कहलाना और भीमसिंह के अस्वीकार करने का चौबीसवां २४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ बासठ २६२ मयूख हुए ॥

४ आदर सहित ५ उदयपुर ॥ १ ॥ ६ मुकाम

*अट्टाल सीस इक दीह आय, बैठे दुरनूप †परिखद बनाय ॥ २ ॥
‡प्रासाद तासके हट्ट पास, इक नटिय आय किन्नों §तमास ॥
कौटेस कुजस करि कहि कुबत्त, बुल्लिय सालम जस चढि बत्त ३।
सो सुनत सीस कर मुच्छ घल्लि, लै सिक्ख आप बुदय उम्मल्लि ॥
रट्ठोर सुभट जयसिंह नाम, सालम सिर पिल्लयो जय सकाम ॥४॥
दल सहँसबीस२००००ल तब दुरूह, जयसिंह बिनि गसजि तोपजूह
करउर सु जाय विटिय सजोर, इक१मास रहिय घमसान घोर ।५।
करउर रजपूतन इम उपत, सर पूर सँगधि जिम सोम दत ॥
जयसिंह पुर रु तुट्टन नजानि, मन सानि श्रय सामहिं प्रमानि ॥६॥
सालम समाप लिखि दल पठाय,अब मास हगहि तुम मिलहुआय॥
अरु तुवरे सुत मा है अजेय, मम दुहिता सगपन ह बिधय ॥ ७ ॥
सालम कहाय तन इन श्रीक, पुरताने अदर मिलनठीक ॥
मन्नी यहै हु रट्ठोर तथ्य, पुर द्वार गगो लै तुच्छसाथ ॥ ८ ॥
उतर्तें चढिसालम सद्दैश आय, रट्ठोर लियउ त्रार बुलाय ॥
सालम सु मिल्यो जालम जँनून, हुव घटिय गढ नैठक हुहून ॥९॥

(गाहा)

बीससहँस२००००दलतें बचें, ऐसो करउर हो न ॥
यहै नजानैं क्यों मिल्या, मारैं कमध मि या न ॥ १० ॥
सालम सुत परतापसों, रायें सुता सबन्ध ॥
करि बुद्धिय गो कुचकरि, सु जयसिंह तह संधें ॥ ११ ॥

---

*ऊन रू ऊपर †सभा करके॥२॥‡उसी महल के नीचे§ तमाम ॥३॥ मूँछ पर हाथ रख कर रवाना कर जय की कामना सहित॥४॥ फौजनाई स पराना मे पावँ ऐसा समूह॥ ॥ सहित (संयुक्त) जैसे पाया मे पूर्ण सायाओं मां देर तैस ८ सास बनाय ॥ ५ ॥ ६ पत्र ॥ ७ ॥ १० कोटा की सना में ११ शहर के द्वार के भीतर मिलना ठीक है 'बाहर निकलने में पकड़ लेने का भय था इसवा स्ते" ॥ ८ ॥ १२ सेना सहित १३ जुल्म करने वाला क्रोध से ॥ ९ ॥ १४ कायर ॥ १० ॥ १५ अपनी (जयसिंह राठोड़ की) पुत्री का १६ विजय करने काम-

जायो जुग्गियरामको, अंकुरि करउर एम ॥
जेरं न होरहु बग भो, भावी मिटैं सु केम ॥ १२ ॥
इत कूरम कहि संभरहिं, उज्जइनी हम जात ॥
जोलों तुम अत्थहि रहहु, हम करिहैं सुव हात ॥ १३ ॥
यह कहि वह उज्जैन गो, सूबापति सरसाय ॥
गाम नाम कायत्थिया, रह्यो सु बुंदिय राय ॥ १४ ॥

(षट्पात्)

इत मरुपति निज भटन पुच्छि लखि समय मंत्र किय ॥
मिलि अप्पन कूरमन अग्ग संभरपुर लुट्टिय ॥
अब कूरम पति फुट्टि भयो सूबा सिर स्वामी ॥
एकाकी अप्पनहि रह दिल्लीस हरामी ॥
अवर न उपाय सुज्झत अबहि उचित आहि दिल्लिय गमन ॥
सुंदर बिबाहि साहहि सुता रहैं सदा सिर कूरमन ॥ १५ ॥

(दोहा)

अमर लिखाई उदयपुर, मेटि रीति वह सुद्ध ॥
पुलिन सहैं पहुमि पुनि, लग्गो रक्खन लुद्ध ॥ १६ ॥
निज तनया तब मगले, यह कुमंत्र उपजाय ॥
अजितसिंह दिल्लिय गयो, परयो साहके पाय ॥ १७ ॥
तब हिंदुन जिम तासैंकी, सुता बिवाह्यो साह ॥
अजितसिंहकों इक्कठ, किन्नें माफ गुनाह ॥ १८ ॥
साह बनाया सय्यदन, यातैं वे हमगीर ॥
हुसनअली इच्छित करैं, बाहिदेनात्र वजीर ॥ १९ ॥

तिज्ञा छोड कर ॥ ११ ॥ १ उदय [खड़ा] होकर २ आधीन (नहीं झुका) ॥ १२ ॥ ३ बुधसिंह को ॥ १३ ॥ १४ ॥ ४ अकेले ५ बादशाह को बेटी परना कर ६ कछवाहों के मस्तक पर रहैं ॥ १५ ॥ ७ महाराणा अमरसिंह ने बादशाहों को पुत्री नहीं देने की रीति लिखवाई थी उसको मेट कर ८ सूर्य ने ९ बदले में १० लोभी ॥ १६ ॥ १७ ॥ ११ उसको ॥ १८ ॥ १२ सय्यद १३ चाहा हुआ (चाहै सो) करैं

तिनसों मारहु दबि रहत, सम्मुह सजत न सत्थ ॥
हुसनअलीके हुकमकों, मिट्टन कोन समत्थ ॥ २० ॥
हुसनअली काइ मुकल्यो, यह मरु भूपति पास ॥
सभर पुत्र भाई हने, वेर बिभंगो तास ॥ २१ ॥
यह सुनि तब मरुपति गयो, हुसनअलीके गेह ॥
करन जोरि मरु साथ करि, अक्खो तिहिं प्रति एह॥२२॥
मैं करम बरज्यो बहुत, सोहस तदपि सम्हारि ॥
जयसिंहहि पुर लुट्टिगो, ख्यात रावरे मारि ॥ २३ ॥
सपथ हुयो करि इन मिलन, सय्यदसों मरुमोर ॥
सय्यद तब मागस गिन्यो, जयसिंहहिं बरजोर ॥ २४ ॥
जयसिंहहु यह मन सुन्यों, मरुपति सय्यद मेल ॥
तब उज्जइनी नीति तकि, अकुरि रहिय अठेल ॥ २५ ॥
इहिं बिच दक्खिन देसकी, पत्ता आनि पुकार ॥
मरहट्टे लुट्टत मुल्क, करि करि बिबिध बिगार ॥ २६ ॥

(षट्पात्)

हुसनअली सय्यद नवाब दक्खिन पुकार लहि ॥
पुर अवरंगाबाद चल्यो दरकुच बिजय चहि ॥
सारथलक्खव१५०००० तुरंग सग सत दोय२०० तोप साजि ॥
आनत घन जिम उमहि बब निकरब तनित बजि ॥
उज्जैन निकट आयो जबहि कूरमपति इक नीति करि ॥
पैंतीस३५कोस दरकुच गो दुल्लहनि व्याहनव्याज दौरि॥२७॥

(दोहा)

॥ १९ ॥ २० ॥ १ उनका वैर मागना हुआ ॥ २१ ॥ २२ ॥ २ हठ ३ तोमा ॥ २३ ॥ ४ क्रूर सोगन ५ मारवाड़ का मुकुट ६ अपराध सहित ॥ २४ ॥ ७ यहाँ छिपे ऐसा जाकर ॥ २५ ॥ २६ ॥ ८ यहाँ अजहत् स्वार्था लक्षणा से सवार जानने चाहिये ९ नगारों का समूह १० मेघ की गर्जना के समान बज कर ११ विवाह के मिस से दौड़कर ॥ २७ ॥

सा त्रि३५कोस उज्जैनतैं, इक चहुवानन ग्राम ॥
तिन तनया सगपन कियउ, कूरमसौं सह सँग[1] ॥ २८ ॥
वह सगपन मन चिंति अरु, सठ्यद गिनि बरजोर ॥
बिनुहि लगन ब्याहन गयो, कूरम कुल सिरमोर ॥ २९ ॥

गीर्व्वाणभाषा ॥

वंशस्थः ॥

लग्नं विनोद्वाहचिकीर्षया गतो नीतिस्थ आमेरपुरो नरेश्वरः ॥
तस्यस्य पत्नी खलु चाहुवाणजा पल्लंकपाया वलयान्यधारयत् ।३०।

प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

कूरम[2] कौं परिनाय इम[3], सठ्यद दक्खिन पैंत[4] ॥
नवँवर[5] ता उज्जैनपुर, आयो परनि उमत्त ॥ ३१ ॥

[षट्पात]

नववर आय अवंति जानि सठ्यद दक्खिन गत[6] ॥
लिखि बिन्नति मुक्कलिय साह फूरुक हजूर तत ॥
बुंदीपति आयँत्त[7] स्वामि आयस लुप्यो किन[8] ॥
आलमके अतिसोक नाँहिं फरमान लये इन ॥
बुंदिय लिखाय वक्खरहु इनहिं लिर सब हुकम चढायहै ॥
फरमान दे रु बुल्लहु बुधहिं अब हजूर हुत आयहै ॥३२॥

दोहा ॥

यह सुनि साह नवाब इक, नाम दलावरखान ॥

---

[1] मिलाप के साथ॥२८॥२९॥नीति में स्थित, आमेर का राजा बिना लग्न ही विवाह की इच्छा से गया इसकारण से उसकी स्त्री, चहुवाण की पुत्री ने निश्चय ही लाख की चूडियें धारण कीं, अर्थात बिना लग्न अचानक विवाह से के कारण दांत का चूडा उपस्थित नहीं होसका ॥ ३० ॥[2]कछवाहे को [3] इसप्रकार बिना लग्न ही व्याह कर[4]गया [5] नवीन वर [जयसिंह] ॥ ३१ ॥ [6] गया हुआ [7] आपके आधीन है [8]मालिक का हुकुम किसने लोपा ॥ ३१ ॥

लिखित पटा जुत मुद्रलयो, करम अरज प्रमानें ॥ ३३ ॥
आय दलावरखान तब कूरमें सचिव समेत ॥
बुंदी लौ इत भीमसों, अर्प्पी इनहिं सहेत ॥ ३४ ॥
प्रथम नाद किय खालसें, बुद्धहिं तदनु समप्पि ॥
कोटाके उठवायकें, थानौं इन निज थप्पि ॥ ३५ ॥
सुता भनाय अमीसकी, रानी जो रहोरि ॥
सुतौं नाम सूरज कुमार, हुत ताके गुनगोरि ॥ ३६
सक अनग हय सत्त इक१७७०, प्रमा रु फग्गुन मास ॥
कोटापति बुंदिपलई, गिल्या सु देजर प्रास ॥ ३७ ॥
सक जामल हय सत्त इक१७७२, अगहन दाहास स्याम ॥
आई पुनि बुंदीसके, वमधा कुलटा वामें ॥ ३८ ॥
बुलि सचिव बुंदीसके, फेरि बुद्ध नृप आन ॥
दै बुंदी दिल्लिय गयो, जवन दलावरखान ॥ ३९ ॥
अवर देस बुंदीसकें, आयो सबहि बहोरि ॥
भीमें नगर बारौं मऊ, द्वै परगना न छोरि ॥ ४० ॥
तदनंतर फरमान पुनि, पठये साह जरूर ॥
बुद्धसिंह जयसिंह नृप, बुल्ले उभय२ हजूर ॥ ४१ ॥

(पट्पात्)

फरमानन इत स्कालि सज्यो कूरम नरेस जब ॥
बुंदीसहिं बुलवाय कह्यो औंहूत उभय२ अब ॥
ए विरेंखहु फरमान चलहु दिल्ली हम सत्थें ॥
लोंहें साह रिझाय मुकुट देहें अरि मत्थें ॥

१ माफिक ॥ ३३ ॥ २ जयसिंह के कामदार सहित ॥ ३४ ॥ ३६ ॥ ३ पुत्री ॥ ३६ ॥ ४ अमावास्या ५ दुर्जन (शत्रु) ने ॥ ३७ ॥ ६ कृष्णपक्ष की ७ स्त्री ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ८ भीमसिंह ने ॥ ४० ॥ ९ जिस पीछे ॥ ४१ ॥ १० शीघ्र ११ दोनों को बुलाये हैं १२ देखो १३ शत्रुओं के मस्तक पर

कूरम नगेस यह कहि चढ्यो बुंदीपति तदपि[1] न चढत ॥
आलस अचेत मतिमंद[2] अति पल पल प्रति चालिहै पढत ४२

सुनत एह जयसिंह आसु[3] बुंदिय दल[4] आयो ॥
जामिय[5] बुद्धहिं कढिय साल[6] सजि मंद सिखायो ॥
अब नृजान आरुहहु[7] चलहिं धरि खंध भृत्य हम ॥
निज असु[8] सपथ[9] दिवाय एह आक्खय नृप कूरम ॥
संकोच तास चहुवान तब चढि तुरंग तिन संग हुव ॥
इहिं रीति छोरि मालव अवनि दक्खिय चल्लिय भूप दुव ४३

[दोहा]

कढि मुकुंद दर उल्लंगि, चम्मलि पट्टन ओर ॥
लक्खैरिय गिरि लंघिकैं, आय ग्राम अनघोर ॥ ४४ ॥
कछुदिन तत्थ मुकाम करि, चैंग[10] मुक्कलि[11] हित चाय ॥
संभर निजउमराव सब, दे दल[12] लिन्न बुलाय ॥ ४५ ॥
प्रथम इंद्रसल्लोत भट, नगर इंदगढ नाह ॥
मघ सुवन छित्वर मरद, आयो अधिक उछाह ॥ ४६ ॥
छित्वरसौं जयसिंह नृप, मिल्यो न बत्थैन[13] घल्लि ॥
इन अक्खी तुम आमई[14], हम मिलिहैं अब हल्लि ॥ ४७ ॥
इम कहि कूरमसौं मिल्यो, दे पय गहिय सीस ॥
इक्क सूरपन अनुसर्यो, अनखि इंद्रगढ ईस ॥ ४८ ॥
करउरपति आयो तदनु, मिल्यो उँरर[15] उद्योत ॥
सालम जुग्गीरास सुव[16], भट मुहुकमसिंहोत ॥ ४९ ॥
रन करउर पचि पचि रह्यो, सु नृप भीम हत संध[17] ॥

१ तोभी २ मंद बुद्धिवाला ॥ ४२ ॥ ३ शीघ्र ४ सेना में ५ बहिन पति बुधसिंह से ६ साले ने ७ पालखी पर चढो ८ अपने प्राण का ९ सौगन ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १० हलकारे भेज कर ११ पत्र देकर ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ १२ हाथ बढा कर नहीं मिला १३ रोगी ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ २ जिस पीछे १५ उरड़ (घमंड) प्रकाश करके १६ पुत्री ॥ ४९ ॥ १७ प्रतिज्ञा छोड कर

यातैं दोउन आदर्यो, सालम अप्पत्ति सत्र ॥ ५० ॥
सुभट वैरिसल्लोत सजि, नगर पलोरी नाह,
जैतसिंह जाजव जयो, आयो मरम सिपाह ॥ ५१ ॥
वैरिसल्ल कुल उद्भग्न, इछ्छा रन रमगीर ॥
बलवनपति आयो बहुरि, अभयसिंह अति वीर ॥ ५२ ॥
पुर खातोली पति प्रबल, अमरसिंह आमंडान ॥
इंद्रसिंह कुल उद्भग्न, चाप मिल्यो चहुवान ॥ ५३ ॥
मिल्यो आने उद्धत गुमर, चडि समर चहुवान ॥
सेरसिंह सामंत हर, भजनेरी पुर भान ॥ ५४ ॥
नाथाउत नगराजहू, नगर गुढाको नाह,
पुनि दूजो निम्मान पति, आयो मिलन उछाह ॥ ५५ ॥
सबल मिले उमराव सब, इम स्वामी ढिग आय ॥
सबहि सिराहि सूरपन, जयसिंहहु जस गाय ॥ ५६ ॥
दोहा—सबन कह्यो दिल्लीस ढिग, बुदिय लिखित लिखाय ॥
तें कंग्गार पिक्खैं हमहु, तब इन दिन्न रिखाय ॥ ५७ ॥
पिक्खि पटा सबहिन कह्यो, कूरम नृपहिं सिराहि ॥
सऊ नगर बागी मुलक, ए न पटाविच आहि ॥ ५८ ॥
कूरम नृप बुधिसाय कहि, दुव २ हम दिल्लिय जात ॥
अब लौं कहि साहसों, गेरं मुलक बसु जातँ ॥ ५९ ॥
इम कहि श्रवरन सिक्खदे, चल उभय नृप तत्थ ॥
सालमसिंह रु जैतसी, सुभट लपेटव ७ सत्थ ॥ ६० ॥
इम दुव २ नृप आमेरपुर, इरकुचन चलि आय ॥
जामिप सालक प्रीति जुत, रहे कछुक दिन राय ॥ ६१ ॥

---

१ जयसिंह और बुधसिंह इन दोनों ने आदर किया ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ २ नाम ॥ ५३ ॥ ३ युद्ध में भयंकर ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ४ पत्र ॥ ५७ ॥ ५ है ॥ ५८ ॥ ६ बागी का देश ७ धन का समूह ॥ ५९ ॥ ८ तहाँ से ॥ ६० ॥ ९ महिमानी और साला १० राजा

गये तदनंतर सर्वहि आम, सजी हित पुग्व नम्र सलाम ॥
विलंब कछू करि आयउ भीम, तक्यो हिय हेत रची तसलीम ।७२।
सिरे लखि बुद्धहिं मुद्द गिमाय, जग्यो मनमाँहिं सु कप्पो मिटिजाय॥
दई उठि साह समस्तन सिक्ख, रही तँहँ वृद्ध बलापति तिक्ख७३

(शुद्धप्राकृतभाषा)

(मालिनी)

इय उअयउराओ तत्थ सङ्गामराणा,
णरवइजयसिंहं पेसिअ णेहपत्तम् ॥
जइ कुणइ पमाअं फुरुआ तुज्भ धीए,
वसइ णाणु तदो मे पट्टणं चित्तऊडम् ॥ ७४ ॥
णयमयजयसिंहो त क्खु दट्ठूण पत्तं,
समयबलविएगी णाइ एकत्तु वुद्धिम् ॥
दढत्रढहि गयो सो साहआमम्मि कुम्मो,
कहिउ जवणणाह फुरुअं राणवत्तम् ॥ ७५ ॥

॥ प्रायोदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

(षट्पात्)

---

१ जिस पीछे सब आम दरबार से गये २ आदाब ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

इत उदयपुरात् तत्र सङ्ग्रामराणानरपतिजयसिंह प्रेषित स्नेहपत्रम् ॥
यदि करोति प्रमाद फुरुकशाह बुद्धौ भवति ननु तदा पत्तनं चित्रकूटम्॥७४॥
नयमय जयसिंहः स खलु दृष्ट्वा पत्रं समयबलविवेकी नीत्वा एकत्र बुद्धिम्॥
शीघ्रं गतोसौ शाहकार्ये कूर्मः कथयितुं यवननाथफुरुक राणवार्ताम् ॥ ७५ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

इधर राणा संग्रामसिंह ने वहां राजा जयसिंह को प्रीति पत्र भेजा कि जो तुम्हारी बुद्धि मे फुरुकशाह कृपा करै तो निश्चय ही चित्तौड़ बस जावै।७४। इस समय को और बल को जाननवाला जयसिंह नीति के पत्र को निश्चय देख कर बुद्धि को एकत्र करके बादशाह के कार्य में शीघ्र वह कछवाहा फुरुक वार्ता कहने को गया ॥ ७५ ॥

अग्गैं अकबर साह लियउ चित्तोर दुग्ग बर ॥
पच्छी आदिय बहुरि रह्यो तब वह उजार ॥
साह हुकम बिनु रान जाय रुच्छंद बसे किम ॥
यातैं पठई अत्थ अरज संग्रामसिंह इम ॥
अप्पहु निदेस बसवाय अब चित्रकूट हमहू रहैं ॥
सतपंच५००सुभट पग्गैत मम कथनकरो तहँ निव्वहैं७६॥

[दोहा]

नजरि द्रव्य करिहैं कितो, यहैं कही जब साह ॥
तबहि दम्म त्रयलक्ख३००००० मित, अक्खे कूरमनाह७७

(षट्पात्)

सुनि सु रान मुक्कलिय नजरि हुंडी लय३लक्खन ॥
कूरम किन्नी नजरि साह पिक्खी सु मोद मन ॥
लियउ पाट लिखवाय रही महुरहि अवसेसह ॥
अरज इक्क पुनि करिय नगर आमेर नरेसह ॥
खुमसिंह भीम विग्रह विरचि छिज्जहिं लरि लरि परस्पर ॥
दोउन मिलाय अब अप्प हुन मेटि बइर संडहु महर॥ ७८ ॥

[दोहा]

सुनत एह कर्निसगौं, दिन्नी साह कहाय ॥
करहु मल्ल खुदास मन, जयसिंहह ढिग जाय ॥ ७९ ॥
जा तुम दिन्न्यो हुकम लहि, सो सब पच्छो देहु ॥
उभयभ्रात एकत्त जुरि, सनय साम करि लेहु ॥ ८० ॥

(हरिगीतम्)

बरजोर आयस साहको सुनि भीम भ्रातुन धी भई ॥

---

१ शून्य २ स्वच्छंद ३ कहना करो तहां ॥ ७६ ॥ ४ कछवाहों के पति ने ॥७७॥ मुहर लगाना ५ बाकी रहा ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ६ बलवान् आज्ञा ७ भय सहित ८ बुद्धि

जयसिंहके घन रूप डेरन जाय बिन्नति मंडई ॥
कछवाह कहि बारौं मऊ अब छोरि इन लिखि दीजिये ॥
बुदायमों मिलि सोमकौं इकथाल भोजन कीजिये ॥ ८१ ॥
तब साह औ कछवाह दुश्मन मञ्च इक्कत जानिकैं ॥
कोटेस वह तजि देस रानों लेख कग्गर ठानिकैं ॥
करि अर्सन इकसाह थाल सो भूपाल त्रय दिन बित्थरयो ॥
नृप भाम उप्पर ओर सो मनमाँहि दाख भरयो जु थो ॥८२॥
सक तीन हय गिरि इंदु १७६३ मैं यह बत्त तीननकैं भइ ॥
इहि बीच जट्टनकी पुकार अपार दिल्लिय उँन्नई ॥
इक नेर थूहनि ईस जट्ट सु नाम चूडामनि रहै ॥
धन जोर औ मन जोर जो रन जोर फाजन निव्वहै ॥८३॥
तब साह जट्ट पुकारपैं कछवाह भूपति पिल्लयो ॥
बुदीस बिनु सब संग नृप करि सेन सञ्चय ठिल्लयो ॥
इन जाय तोपन मार कैं रचि जाल थूहनि बिंटई ॥
इत साह बुद्धिय नाह बुल्लि रु रौन बत्त सु पुच्छई ॥८४॥
बुधसिंह रान पठाय बिन्नति चित्रकूट बसावहीं ॥
किय भेट दम्म त्रिलक्ख३००००० यो अपनो निदेस उठावहीं ॥
नर्मद हद्द नरिंद यों सुनि कुंभम कानि हु नाँकरी ॥
जयसिंह उक्त प्रपंचै जानत हू यहै कथ उच्चरी ॥ ८५ ॥
वह दुर्ग अकबर साह रन करि अब्द द्वादस लों लयो ॥
हम आदि बहुनन रौंन तजि नव सीस साहनकों नयो ॥
वह चित्रकूट बसायकैं पुनि रान फैल प्रचारिहैं ॥

---

१ नाम उपाय [मत] करके ॥ ८१ ॥ २ और ३ पत्र लिख कर ४ भोजन ५ विस्तार [फैलाया] ॥ ८२ ॥ ६ जाटों की ७ उठी ॥ ८३ ॥ ८ भेजा ९ नाश करके १० बुला कर ११ राणा की वार्ता ॥ ८४ ॥ १२ हे बुधसिंह १३ नीति में मूर्ख १४ जयसिंह को १५ जयसिंह का कहा हुआ यह रचना जानता था तो भी ॥ ८५ ॥ १६ राणा का छल कर बादशाहों का शिर झुकाया है

अवनीप हिंदुन फोरि अंकुरि[2] साह नाह विसारिहैं ॥ ८६ ॥
यह राह फूरुक साह सुनि वह पत्र भीत[3] विदार्‍यो ॥
जयसिंहपैं इत भीम थूहनि जंग मोह प्रसार्‍यो ॥
करजोरि कहि मम गेह पुत्तिय अप्प उपनय[4] कीजिये ॥
कछवाह तब जयसाह कहि कछु दीह[5] अंतर दीजिये ॥ ८७ ॥
नृप बुद्ध सोदर[6]की सुता हम पुव्व[7] सगपन कैं[8] वगी ॥
वह व्याह करि इन रावरे गृह बत्त उपनय[9] अद्दगी ॥
जयसिंह यह कहि भीमसौं बुधसिंह प्रति दल[10] पिल्लयो
तुम व्याह मंडहु बेग मैं पुनि भीमको वच[11] झिल्लयो ॥ ८८ ॥
बुधसिंह यह सुनि साहसौं लहि सिक्ख थूहनि संक्रम्यो[12] ।
जल घोर सिंधु हिलोर ज्यौं दल[13] जोर जट्टनपैं जम्यो ॥
लिखि पत्र बुंदिय जोध[14] सोदरकी सुता नृप बुल्लई[15] ॥
उम्मेदकुमरि सु नाम जो परिनाय कूरमकौं दई ॥ ८९ ॥
कोटेस भीमहु अप्पनी तनया[16] सु तत्थ बुलायकैं ॥
बरजोर[17] कूरम मोर कौं दिय प्रीति सह परिनायकैं ॥
सक अग्गि हय रिखि इंदु१७७३हायन नैर थूहनि जंगमैं ।
कछवाह इम दुव व्याह कीने बीर[18] सींचे रस र[19]गमैं ॥ ९० ॥
करि व्याह कूरम नाह यौं पुनि ताव जट्टनपैं दयो ॥
हरिमंथ[20] भ्राष्ट्रकं[21] रोव[22] ज्यौं तरकाव तोपनको भयो ॥
उडि कोट अट्टन[23] थट्ट यौं गढ बट्ट[24] जट्टनकैं परे ॥

१ हिन्दु राजाओं का २ उदय होकर बादशाह का स्वामी पन भूलेगा ॥ ८६ ॥ ३ डर कर फाडडाला ४ विवाह ५ दिन की छुट्टी ॥ ८७ ॥ ६ बुधसिंह के सगे भाई की बेटी ७ पहिले ८ शीघ्र ९ विवाह की वार्ता स्वीकार करी १० पत्र भेजा भीमसिंह का ११ वचन ॥ ८८ ॥ १२ चला १३ सेना का १४ छोटे भाई जोधसिंह की बेटी को १५ बुलाई ॥ ८९ ॥ १६ पुत्री को १७ बलवान् उस वीर कछवाहे को १८ युद्ध में १९ शृंगार रस किया ॥ ९० ॥ २० चनों का २१ भाड़ में २२ शब्द होवै तैसे २३ बुरजें २४ मार्ग

लिखि पत्र सय्यदपैं *नतक्खिन देस दक्खिन मुक्कल्यो ॥
इत साहकी हित चाहसौं कछवाह भूपति †उज्झल्यो ॥
जयसींह यह कछु दाहमैं अधिकार अप्पने पायहैं ॥
बनिकैं वजीर समग्र मस्तक चडि[1] घात चल्लायहैं ॥ ९७ ॥
रहनौं तुम्है जु वजीर ह्वै अरु बंधु बैर निबेरनौं[3] ॥
तो बेग आवहु तेग मंडि घुमंडि कूरम घेरनौं ॥
द्रुत पिक्खि यह छद[4] सज्जि सय्यद सेन सम्मद[5] उप्परयो ॥
सजि अग्ग तोपन मग्ग कोपन लज्जलोपन संचरयो[6] ॥ ९८ ॥
उज्जैन आय रु साहकौं दल्ल मडि दूतन अप्पये ॥
हम आनि पूरब देससौं तुम पट्ट दिल्लिय थप्पये ॥
जयसिंह नृप मम भ्रात मारक ताहि निज हिय लायकैं ॥
मम तुल्लय अद्दर[10] अद्दरयो सु दये हि अप्प[11] भुलायकैं ॥ ९९ ॥
कछु लाग[12] नहि बिसवासहै अब पास आय रु अक्खिहों[13] ॥
रन चाय आयस पाय[14] मैं निज बंधु बैर न रक्खिहौं ॥
सुनि साह यह निज मातसौं सब बात सय्यदकी कही ॥
तब मात अक्खिय घात यह जयसिंह उप्परहै सही ॥ १०० ॥
तिहिं देहु सादर[15] सिक्खसौं आमेर नेर पठायकैं ॥
तब चूक[16] अप्पनमाहिं नाहिं लगैं जु सय्यद आयकैं ॥
सुनि साह यह कछवाहसौं हित चाह अक्खिय सबही ॥
तुम जाहु बेगहिं सिक्खि लै अति फल्ल सय्यदको सही॥ १०१ ॥
जयसिंह अक्खिय भो वजीर जु मोजदीनहिं मारिकैं ॥
लैहैं सु आवत बैर मै सब चौंर छत्र उतारिकैं ॥

* उसी समय † बड़ा १ आरूढ वजीर पन का २ भयंकर ॥ ९७ ॥ ३ भाइयों का वैर मिटाना होवे तो ४ पत्र ५ हर्ष सहित ६ चला ॥ ९८ ॥ ७ पत्र लिख कर ८ हलकारों को दिया ९ मारनेवाला १० आदर से मेरे बराबर किया ११ अपने ॥ ९९ ॥ १२ डर १३ कहूंगा १४ हुकम पाकर युद्ध की चाह से ॥ १०० ॥ १५ आदर के साथ १६ दोष (भूल) ॥ १०१ ॥

तस्मात सज्जहु सेन सम्मुह सत्रु सपद मारिहैं ॥
सबहिंदु पायन लाय हिंदुस्थान आन बिथारिहैं ॥१०२ ॥
काह साह तुम गृह जाहु जो अति जोर सपद जानिहैं ॥
पुनि तुमहिं बुल्लि प्रपञ्च करि तिहिं मारि खेर प्रमानिहैं ॥
तब कहिय कूरम रानहित फरमान जो वह निर्भयो ॥
चित्तार दुग्ग बनायवेहित सो समुद्रह नांभयो ॥ १०३ ॥
धुंरास नैनन चिंति तब यह साह नांहिं न स्वीकरी ॥
कछु और मग्गहु रान हित देहैं सु यह पुनि उच्चरी ॥
आमरपति तब एह अक्खिय रामपुर लिखिदीजिये ॥
करि मान भूपति रान सर्वसमान सेवक कीजिये ॥१०४॥

[दोहा]

मालवधर अतर मुलक, नगर रामपुर नाम ॥
चन्द्रावत सीसोद तँहँ, स्वामि नाम सग्राम ॥ १०५ ॥
याके पुरुखन अग्ग अति, सेये दिल्लिय साह ॥
किये सुभट तब राव कहि, राज बखारि हित राह ॥ १०६ ॥
तबतें बुंदिय जोधपुर, पुर आमेर समान ॥
सनमानित सीसोदहू, सेवत रहि सुलतान ॥ १०७ ॥
तिन कुल यह सग्राम नृप, रह्यो मुरारि लहि काल ॥
छिद्र पहे तकि गहन छिति, कहि कूरम भूपाल ॥ १०८॥

पट्पात् ॥

कहि कूरम करजोरि सुनहु मम बत्त साह श्रुतें ॥
रामपुर पैं सग्राम रहिय अब मुरारि जोर जुत ॥

---

[1]इसकारण से ॥ १०२ ॥ २ कुशलता ३ लिखागया था सो [4]मुद्रा [छाप] सहित नहीं हुआ अर्थात् छाप नहीं लगी सो लगवादेवें ५ स्वीकार नहीं करी ६ आदर करके ॥ १०३ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ ७ सन्मान पाकर ८ बादशाह का॥१०७॥ ९ समय १० भूमि लेन के लिये ॥ १०८ ॥ ११ कान में १२ पति

जनपद[1] लेहु उतारि रहैं मुगलैं न ठिकानाँ ॥
रानहिं देहु लिखाय रचहि सेवन यह रानाँ ॥
सुनि यह लिखाय फरमान दिय करि समुद्र[2] जयसिंह कर॥
रान तुम दक्खि गढ रामपुर सज्जहु सेवन सुभट वर ॥१०९॥

दोहा ॥

रामपुरहिं लिखवाय इम, रान अरथ हित राह ॥
सजव सिक्ख करि साहसौँ, नीति चतुर कछवाह ॥११०॥
जामिपँ[3] डेरन आय कहि, चलहु अप्प करि सिक्ख ॥
इहाँ समय कछु औरभो, रहैं न रंजस[4] तिक्ख ॥ १११ ॥

षट्पात् ॥

सुनत एह बुंदीस दियउ कूरम प्रति उत्तर ॥
तुम आयउ लहि सिक्ख सजव सज्जित पद्धति[5] पर ॥
हमहि सिक्ख अब होत कछुक अंतर परिजैहैं ॥
चलहु अप्प तस्मात[6] सिक्ख लै द्रुत हम ऐहैं ॥
जयसिंह सु सुनि आमेरपुर आय कटक[7] बहुसज्ज किय ॥
इत सँदल आय दिल्लिय उमँडि हुसनअली अनखात हिय॥११२॥
स्वसुर साहको मूढ अजित अभिधान[8] धन्वपति[9] ॥
रूपनगर रठोर जनक[10] मातुल[11] बिमंदमति[12] ॥
पांडाको[13] जामात भीम कोटेस राम सुत ॥
बंधुवरग[14] त्रय जानि सांच डारय विसास जुत ॥
कहि साह खान सय्यद बिरचि राजकाज निबहहु सकल ॥

---

१ देश २ छाप (मुहर) लगाकर ॥ १०९ ॥ ११० ॥ ३ बहिनोई [बुधसिंह] के डेरे पर ४ राजापन की या रजोगुन की ॥ १११ ॥ ५ मार्ग पर ६ इसकारण से ७ सेना सहित ॥ ११२ ॥ अजितसिंह ८ नाम ९ मारवाड़ का पति १० बादशाह फ़र्रुखसियर के पिता का ११ मामा १२ विशेष मूर्ख बुद्धिवाला १३ इसी राजसिंह का जमाई भीमसिंह कोटा के राजा रामसिंह का पुत्र १४ इन तीनों को सम्बन्धी जानकर

इन दियउ डारि सय्यद अवनें उन सब फोरिय मलबल॥११३॥
ए तीन ३ हि अनजीप लचिग अति भुम्मि लुभाये ॥
बदलि साहसों छन्न अराम सय्यद बिच आये ॥
साहहिं दै बिसवास इक्क वासर जुरि इक्कत ॥
बैठे करन रहस्य साह पचम५ कारि सम्मत ॥
तब सोंह तीन भूपनें पक्कार बधि जाँहिकी पग्घ करि ॥
मखतूल पासि गल डारिकैं मारि गिरायउ गारि लरि ११४

हरिगीतम् ॥

सक वेद हय गिरि इंदु १७४४ हायन माम फग्गुन गोरमैं॥
हनि साह नृप नैरनाह सय्यद चाह हुव अति जोरमैं ॥
परि कूक दिस दिम हुरमखानन नारि तोबैंह उच्चरैं ॥
आतक सय्यदका प्रतीत सु द्रव्य गोपनहू करैं ॥ ११५ ॥
लै मयन हुरमन द्रव्य धन्नैं धरेसें धा गृहमें धर्यो ॥
मरुईस सुनि वसुजुतें पुत्तिपैं बुल्लि लोभहि अहर्यो ॥
सह वित्त मुक्कलि धन्व दिय तनया सु यों मरुईसनैं ॥
अरु भीमें सय्यदसों कही बुधसिंह वर रचैं घनैं ॥ ११६ ॥
जयसिंह जौमिय हे यहै तुमसौंहु छल्ल करि तोरिहै ॥
तसैमान मारहु याहि सब मिल्ल जोर छल्ल यह जोरिहै ॥
सुनि एह सय्यद फेरि फोजन पैंठ बुदिय बधयो ॥

१यह पानी मरदाद फकामों म डालदा॥११३॥२भूमि के ता म से ये तीनों राजा न- म गये३एक दिन एकत्र होकर४एकान्त सलाह करने बैठे५पादशाह को६तीनों राजाओं ने७उसको (पादशाह) की पगड़ी मे ८ रेशम की फांसी ९ गालियां से लड़कर अर्थात् पादशाह का तालिय दफर॥११४॥१०सम्वत् के ११शुक्लपक्ष म १२ राजा १३ 'माया माया' करने लगी १४ धन छिपाने लगी ॥ ११५ ॥१६ मारवाड़ के १७पात की १७ पुत्री के घर में१८ जन१९साहित पुत्री का २० पती को धन सहित मारवाड़ म भेज दी२१कोटे के महाराव भीमसिंह ने ॥ ११६ ॥ २२ महिम का पति २१ इसकारण स २४ बुन्दी का मार्ग -

अवनीस तीनन[1] अप्प लै बुधसिंह डेरनपैं गयो ॥ ११७ ॥
बुंदीस यह सुनि सेन सज्जि रु सेन सम्मुह संक्रम्यों[2] ॥
तब जैत[3] आक्खय घोर यह अति जोर सय्यदको जम्यों ॥
लाहोर तोरन[4] होय नृप तुम जाहु कूम्म देसमैं ॥
हम धार रन हमगीर जुज्झहिं बीर जीरठ बेसमैं[5] ॥ ११८ ॥
यह कहत आतुर[6] आय खल दल जानि बद्दल लुंबये ॥
बजि बीर आनक[7] यों अचानक राग सिंधुव लग्गये ॥
बजि डैरु डिंडिम डक्क ओ बहरक्क[8] अंभ[9] फरक्कई ॥
अहि भोग[10] लेत लचक्क ओ धरनी सु धक्कन धक्कई ११९
परि ओर ओरन रोर[11] दिल्लिय जोर जालम जंग भो ॥
हटनारि हट्टन लागि पट्टन[12] अंग रंग बिरंग भो ॥
प्रजरात जात बजार बीथिन[13] यों अलीत[14] सु उच्छरैं ॥
जिम मास बाहुल[15] दर्स[16]पैं नेहास[17] कास[18] करैं जरैं ॥१२०॥
आकास धूम रु धूलि धुंधुरि भान भासन[19] लुप्पयो ॥
बजि कंक गिद्ध सिचान पच्छन[20] तिरारि सय्यद रुप्पयो ॥
अनिरुद्ध सुव[21] तब तेग झारत मीर मारत निक्कल्यो ॥
कुल बैरिसल्लज[22] जैतसिंह सु सेन सम्मुह उज्झल्यो[23]॥१२१॥
पुनि जोधराज प्रधान ऊरुज[24] आय ए रन अंकुरे[25] ॥
लहि रोक कोकन[26] सोक भो पुरलोक ओकन[27] मैं दुरे ॥

---

१ आप (सय्यद) तीनों राजाओं को साथ लेकर ॥ ११७ ॥ २ चला ३ जैतसिंह ने कहा ४ लाहोरी दरवाजे होकर ५ वृद्धावस्था में ॥ ११८ ॥ ६ शीघ्र वा घबराया हुआ कि बुधसिंह भाग नहीं जावै ७ ढोल ८ ध्वजा ९ आकाश में १० फण ॥ ११९ ॥ ११ शब्द १२ हाटों के किवाड लग कर १३ गलियों में १४ अग्नि १५ कार्तिक मास की १६ अमावास्या पर १७ दीपक १८ प्रकाश ॥ १२० ॥ १९ सूर्य का दीखना छुपगया २० पंख २१ पुत्र (बुधसिंह). बैरीसाल के कुल में २२ जनमा हुआ २३ बढा ॥ १२१ ॥ २४ वैश्य २५ खडे हुए २६ सूर्य की रोक देखकर चकवा चकवियों को शोक हुआ २७ घरों में छिपे.

कमनैत फौजनमैं पग्यो भट जैत हक्क हकारिकैं ॥
रन नैर दिल्लियकी रही तिय जालरंध्र निहारिकैं ॥ १२२ ॥
तरवारि नागिनि जतकी विस मोह सत्रुनकौं दयो ॥
दल जुद्ध जाव प्रबुद्ध व्है नृप तौव तोरन लघयो ॥
निकसाय स्वामिय सकरैं बाने ओट तोरनपै अरयो ॥
बाजि हक्क रन धमचक्क यों बिनु मत्थ जैत लग्यो पर्यो ॥१२३॥
परि वीर सत्रह १७ सगके दल जाम इक्क १ सु रुक्कयो॥
लगि क्रोध कै परि जोर ऊरुज स्वामि क्रन सब चुक्कयो ॥
लाहोर पद्धति भूप कढि कछवाह जनपद मक्कम्यो ॥
इत जीति सगर घोर सय्यद जार दिल्लिय मैं जम्यो ॥१२४॥
किय साह नाम रफ लदाला मास छह६बिच सा मर्यो ॥
तब ओर किय दुव२ मास बिच तजि साहु सर्वर संचरयो ॥
तब किय मुहुम्मदशाह सौंह सु चाह सय्यदकी भई ॥
यह यों छह६थापनमैं छ ६ साहन थौंपि दिल्लिय भुग्गई ॥१२५॥

(षट्पात्)

सक बसु खट हय इंदु १७६८मरिग आलम ओरंग सुव ॥
गुनहत्तरि ६९ हनि मोजदीन फरुक्क पट्टप हुव ॥
किय रफीलदौला सु ताहि हनि सक चउहत्तरि७४ ॥
पचहत्तरि७५ यह मास अबर किय सोहु गयो मरि ॥
सय्यद चजोर पुनि मत्र सजि आलम नाती जानि जिय ॥
तक्कत रफीलकदरग्ग तनय साहमुहुम्मद साह किय ॥१२६॥

---

१ दिल्ली नगर की स्त्रियें २ जालियों के छिद्रों में ॥ १२२ ॥ ३ मूर्छा ४ सेना से जब तक युद्ध हुआ ५ तब तक राजा सचेत होकर ६ शहर का द्वार लांघ गया ॥ १२३ ॥ ७ सेना को एक पहर तक रोकी ८ फरक ९ जोधराज वैरग १० मार्ग ११ देश म १२ चला ॥ १२४ ॥ १३ शरीर को छोड कर १४ मजा (मरा) १५ पादशाह १६ छ वर्ष में छ बादशाहों म १७ दौड़कर (शीघ्रता से) ॥१२५॥ १८ पुत्र १९ आलम का पोता

(दोहा)

सक मर हय मत्रह१७७५समय, सय्यद थपि सु लाह ॥
पुर दिल्लीके पट्टपर, धग्यो मुहम्मदसाह ॥ १२७ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति बुधसिंहचरित्रे महाराणासंग्रामसिंहभणनबुन्दीमुक्त्यर्थाकारापराधक्षमापनमहारावभीमसिंहोदयपुरगमन १ करवरसमरनिराशकोटाकटकपत्यागमन २ मरुधराधीशाजितसिंहदिल्लीन्द्रफूरुकसियरस्वसुतापरिणायन ३ आत्तसैन्यहुसनअलीसय्यददक्षिणादिग्गमन ४ वैवाहिकनक्षत्रमन्तरापिहुसनअलीभीतत्यक्तोज्जयिनीनगरशरणुणकोशान्तरजयसिंहस्वविवाहार्थगमन ५ जयसिंहप्रार्थनापत्रागमभीमसिंहत्याजितबुन्दीबुधसिंहप्रत्यर्पण ६ यवनेन्द्राह्वानजयसिंहबुधसिंहदिल्लीसरण ७ जयसिंहद्वारामहाराणासंग्रामसिंहस्य पुनश्चित्रकोटवासहेतुफूरुकसियराज्ञाग्रहण ८ चूडामणिजट्टविजयार्थंजयसिंहाधिकारथूहणएग्यवनेन्द्रसैन्यप्रेषण ९ थूहणपुरसमरविवाहद्वयकरणानन्तरजयसिंहजट्टविजयन १० जयसिंहविरोधेन कोटाधी-

॥ १२६ ॥ १ अपना श्रेष्ठ लाभ ॥ १२७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के पति बुधसिंह के चरित्र में, महाराणा संग्रामसिंह के कहने से बुन्दी नहीं छोडने का अपराध क्षमा कराने को महाराव भीमसिंह का उदयपुर जाना १ करवर के युद्ध में कोटा की सेना का निराश होकर पीछी आना २ मारवाड़ के राजा अजितसिंह का दिल्ली के बादशाह फूरुकसियर को बेटी विवाहना ३ सय्यद हुसनअली का सेना लेकर दक्षिण में जाना ४ हुसनअली के भय से उज्जैन को छोड कर पैंतीस कोस के अंतर पर जयसिंह का बिना ही लग्न विवाह करने को जाना ५ जयसिंह की अरजी जाने पर भीमसिंह से छुडा कर बुधसिंह को बुन्दी पीछी देना ६ बादशाह के बुलाने पर जयसिंह और बुधसिंह का दिल्ली जाना ७ महाराणा संग्रामसिंह का जयसिंह द्वारा बादशाह फूरुकसियर से चीतोड़ बसाने की आज्ञा मांगना ८ चूडामनि जाट को विजय करने के अर्थ बादशाह का जयसिंह के अधिकार में थूहणपुर पर सेना भेजना ९ थूहणपुर के युद्ध में राजा जयसिंह का दो बिवाह किये पीछे

शभीमसिंहादिसय्यदहुसनअलीदक्षिणादिल्लीप्रापणम् ११ हुसनअलीभयपयवनेन्द्रजयसिंहामेरप्रेषणजयसिंहमहाराणासंग्रामसिंहार्थरामपुरदापन १२ योधपुरकोटारूपनगरराजत्रयसहायहुसनअलीयवनेन्द्रफरुकसियरहनन १३ कृतयुद्धचूडसिंहदिल्लीनिःसरण १४ यवनेन्द्रद्वयशीघ्रशीघ्रमरणानन्तरहुसनअलीमुहम्मदशाहयवनेन्द्रीकरण पञ्चविंशो मयूख ॥ २५ ॥

आदितस्त्रिषष्ट्युत्तरद्विशततम॰ ॥२६३॥

[षट्पात]

इत कूरम गृह आय सेन सय्यद डर सज्जिय ॥
लिखित रामपुर पत्र रान अतिक सुखालि दिय ॥
मुलक रामपुर दक्खि अमल मडहु हुत अप्पन ॥
दल पुनि सजहु तुरत मत्त बलवत थप्पि मन ॥
हम सीस घात सय्यद तकत आततायि दल दर्प अति ॥
जो परहिं काम तो इत सजेन पिक्खहु दल चित्तोर पति ॥ १ ॥

[दोहा]

यह कहाय सजि दल अतुल, इत कूरम मतिमान ॥
गाम सु टोडा भीमकौं, दिन्नैं आनि मिलान ॥ २ ॥
इहिं अतर कूरम सुन्यों, दिल्लिय जासिंघ जग ॥

जाटों का विजय करना १० कोटा के महाराव भीमसिंह आदि का जयसिंह के विरोध पर सय्यद हुसनअली का दक्षिण से दिल्ली में चलाना ११ हुसनअली के भय से पादशाह का जयसिंह को आमेर भेजना और जयसिंह का महाराणा संग्रामसिंह को रामपुरा दिलाना १२ जोधपुर कोटा और रूपनगर के तीनों राजाओं के साथ हुसनअली का पादशाह फर्रुखसियर को मारना १३ चूड़ासिंह का युद्ध करके दिल्ली से निकलना १४ दो पादशाहों के शीघ्र शीघ्र मरे पीछे हुसनअली का मुहम्मदशाह को पादशाह बनाना का पचीसवाँ २५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ त्रेसठ २६३ मयूख हुए ॥

१ महाराणा के समान २ शीघ्र ३ क्रूर है घात जिसका (पहुंच) ४ मन (संवाद) ५ शाघ ६ सेना सजना ॥ १ ॥ ७ मुकाम ॥ २ ॥ ८ पहिलोई से

लंघि पहर खट६ असनै लिय, पुनि सुनि कुसल प्रसंग ।३।
दिल्लीतैं इहिं बिच निकसि, रन वारि बुंदिय नाह ॥
मिलिय आनि जयसिंहसौं, टोडा अधिक उछाह ॥ ४ ॥
कोटापति अग्गैं लियउ, सोपुर मुल्क छुगाय ॥
इंद्रसिंह सोपुर अधिप, निकस्यो प्रान बचाय ॥ ५ ॥
गोर बंस अवतंस यह, सोपुर पुर अधिराज ॥
आयो मिलि बुंदीससौं, कूरम ढिग भुवकाज ॥ ६ ॥

उद्धुर ॥

इत उदयपुर पति एस, संग्रामसिंह नरेस ॥
पुर रामपुर लहि पत्त, सजि सेन पिल्लिय तत्त ॥ ७ ॥
तिन रामपुर नरनाह, संग्रामसिंह सचाह ॥ ८ ॥
कर बंधि नैर बिहाय, पय रान लग्गिय आय ॥
तब रान लखि नँत एस, दिय मंडि अद्ध दस ॥ ९ ॥
लहि अद्ध भुव तब राव, हुव रानको उमराव ॥

बराव १ मराव २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

भुव अद्ध छिन्निय रान, थित च्यारि४ पुर जुतथान ॥१०॥
जिन्नोद १ जीरन २ दंग, सजि कुक्कुटेश्वर३संग ॥
लिय नैर नीमचि४नाम, किय तत्थ सेन मुकाम ॥ ११ ॥
भुव अद्ध लै इम रान, दिय फेरि अप्पन आन ॥
भुव अद्ध पत्तिहिं रक्खि, लिय बंदगी रस चक्खि ॥ १२ ॥
खट सत्त हय इक१७७६मान, लिय रामपुर इम रान ॥
इत जोर सप्पद किन्न, गहि हत्थ दिल्लिय लिन्न ॥ १३ ॥
निज पति मुहुम्मदसाह, ताको न कछु जिय चाह ॥

१भोजन॥३॥४॥५॥२गोड़ वंश का मुकुट१पति ॥ ५ ॥ ४ पत्र ५ भेजी तहाँ॥७॥ ॥ ८ ॥ ९ नगर को छोड़ कर ७ नम्र देख कर ८ आधा देश लिख दिया "यह रामपुरा वाले पहिले से चीतोड़ के राव थे परन्तु उस महाराणा की विपत्ति में स्वतंत्र राजा होगये थे" ॥ ९ ॥ १०॥ ६ नीमच ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

कोटेस अरु मरुनाह, किय दोहु१खुल्लि सु लाह ॥ १४ ॥
तुम जाय निज निज देस, सज्जहु अनीक२ बिसेस ॥
खगमार धारन खेरि, लैहैं ब कूरम घेरि ॥ १५ ॥
दुवर्गमाल जाँमिप मारि, आमेर बुदिय धारि ॥
रहिहैं निरंकुस होय, पिच्छैं न कटक कोय १६ ॥
मरुईस सुनि यह वत्त, मरुदेस आयउ मत्त ॥
लगि सेन सज्जन अध, कछवाह सीस कवध ॥ १७ ॥
इत भीम भुम्मि उमग, व्रज आय गोकुल द्रग ॥
गुरु गोकुलस्थ बिचारि, लिय मंत्र वल्लभ५ धारि ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

वल्लभमत चहि मत्र लहि, रजत६तुला किय दान ॥
हुव सेवक व्रजनाथको, कोटापति चहुवान ॥ १९ ॥

(पादाकुलकम्)

कृष्णादास निज नाम कहायो, नदगाम कोटा लिखवायो॥
सेरगढ़ सु थप्पिय वरसानों, इन नामन व्यवहार चलानो ॥२०॥
कोटकोट अतर कोटापुर, किय व्रजनाथ निवेदित आतुर ॥
दान रु द्विज भोजन बहु दिन्नों, चिकन८माँहिं रहनों पुनि लिन्नों २१
दुरयो कितवे हेनरके अंदर, बाहिर नांयो पद्रह१५बौसर ॥
रोग रोग कहि मृत्यु उडायो, कोटापुर सुनि सोक अघायो ।२२।
माधाँनी१२ मिलि चाहि जुद्ध चित, सावधान कोटा किय सज्जित॥
द्वारन अरैं लगाय धीर धुत्र, बुरज बरन सिर मग्न मंडि हुव २३
जान्यौं मृत भीमहिं सुनि ऐंडैं, बुंदिय कटक छिन्नि गढ लैहैं ॥
सोहि भई सालम सुनि धायो, लुट्टन कोटा मुलक लगायो ।२४।

१मारवाड़ का पति ॥ १४ ॥ २ सेना ॥ १५ ॥ ३ साका ४ चढ़ाई॥१६॥१७॥ ५ वल्लभ सम्प्रदाय को ॥ १८ ॥ ६ चांदी की ॥ १९ ॥७सेरगढ़ का नाम बरसाना रक्खा ॥ २० ॥ ८ भेद ॥ २१ ॥ ९ छुपा १०नहीं आया११दिन ॥ २२ ॥ १२ माधोसिंहोत हाडा १३ किवाड़ ॥ २३ ॥ २४ ॥

दिल्लीतैं नृप साल बिहत्तरि७२, सालम पठयो मुख्य सचिव करि॥
इहिं तब ऐसो राज अवेख्यो, *फिर्‌यो †सम्मुख्य विनु फेरयो फेरयो२६,
अब यहँ साल छहत्तरि ७६ अनग, सृत ‡मृत सुनि भीमहिं §बालिसबर॥
बुंदियतैं चढि बेग कुबुद्धा, रुपि सालम कोटा धर ¶रुद्धा ॥ २६॥
बिनु नृप +आयस द्रोह बढायो, मार लूट करि फेल मचायो॥
सु सुनि भीम गोकुल सन चल्ल्यो, गिनि सागर¹ मुच्छन कर घल्ल्यो
कोटापुर पत्तो निस बेला, द्वार आय सुभटन दिय हेला ॥
खुल्लहु अरर⁴ जियत हम आये, प्रात सबहि करिहैं मनभाये ॥ २८ ॥
यह सुनि अजबसिंह माधानी, प्रेम सुवन बानी पहिचानी ॥
हसि तब आपउ द्वार कन्ह हर, अरर खुल्लि भूपहिं लिय अंदर।२९।
बंटिय घर तब कुसल बधाई, इम सु भीम वह रत्ति बिहाई ॥
प्रातहि कटक अचानक सज्ज्यो, गहि गुमान सालम सिर गज्ज्यो३०
पुर आटोनि हुतो वह सालम, पहुँच्यो भीम जोर दल जालम ॥
सालम दलहिं पक्खि बित्थर सह, सबन सुनाय भीम अक्खी यह३१

प्लवङ्गमम् ॥

सालम दल बहु सज्जि मुलक निज मारयो ॥
अप्पन अब इहिं खेत लरन ललकारयो ॥
बुद्ध नियनि बलवान ततो हम जित्तिहैं ॥
कोटापति सकुटुंब नतो यहँ ¹⁰बिच्चि हैं ॥ ३२ ॥

(दोहा)

अर्जुन नाती हड्डहो, पुर बड़ोदपति पाम ॥
तिहिं अक्खी नृप भीमसौं, उक्टी यह किम आस ॥३३॥

*बरुह हुआ †बिना समझे ‡निर्बुद्ध ॥२६॥ ‡भीमसिंह को ताप मरा सुन कर§ मूर्खों में श्रेष्ठ ¶रोकी॥२६॥ +राजा की बिना आज्ञा के ¹अपराध सहित॥२७॥२पहुंचा ३ रात्रि के समय ४ किवाड ॥ २८ ॥ ५ मेरसिंह के पुत्र ने ॥ २९ ॥ ६ रात्रि बिताई ७ घमंड करके ॥ ३० ॥ ८ विस्तार सहित ॥ ३१ ॥ ९ बुधसिंह का भाग्य १० नाश होवेगा ॥ ३२ ॥ ११ पोता ॥ ३३ ॥

भीम कहिय जित्ते विनाँ, अप्पन जियत रहैंन ॥
अप्पन त्रिनु यह उभठहै, लैहैं बुदिय अैंन ॥ ३४ ॥
यह कहि वाजिन वग्गलै, पग्यो भीम पवि पात ॥
खरकोंनन मनु चुगत खिन, घल्ली सेनन घात॥ ३५ ॥

मरुभाषा डिंगलभाषेत्येके ॥
अस्मिन्सजातीयेष्वेवप्रसिद्धगीतनामकं मरुदेशीयं छंद ॥
गीतेष्वपिसुपङ्खोगीतः ॥

भूमी लागरै लुंमाया डागाँ सपाति रूपरा भडाँ,
लेताँ तागाँ वागरै भूपराँ लग्गी लीह ॥
अैरापा खागरै वीरेस मागरै ऊपरा आयो,
सालमेस नागरै धींग भीमसीह ॥ १ ॥
घटा बीज घैटकाँ उनाळे खागाँ वाग घाँचै,
रटा त्रवाटकाँ वागाँ घोळ नागाँ राडि ॥
दे कैंवाँ रामर छटा त्रिहगगाटकी दोळे,
फैंटा सेना त्रिगोळे झाटकी फाडि फाडि ॥ २ ॥

१बुन्दी का स्थान लेवेगा॥३४॥२वज्र पड़ने के समान ३मानों चुगते हुए तीसरा पहर विषाद (सिकरे) ने घात डाली॥३५॥मरुभाषा जो डिंगल भाषा कहलाती है उसमें हमारी जाति में ही प्रसिद्ध है ऐसा गीत नामक मारवाडी छन्द, जिन गीतों में भी यह सुपङ्खरा गीत है ॥ ४भूमि का ४लोभ लाग कर ५ डाकी, लगा हुआ (मस्त) सपाति रूप के वीरों में घोड़ों की वागें ६ खींचने ही ७भूमि पर ८लकीरसी लग गई ख़ड्ग से ९ अतृप्त [भूखा] १० वीर [पक्षी] जिन के ईस (गरुड) के मार्ग से सालमसिंह रूपी भर्ग के ११ मस्तक पर भीमसिंह आया ॥ १ ॥ घटा में बिजुली के १२ रूपवाले ख़ड्ग को हाथ में साल कर, वीरों को घेर (धकेल) कर १३ तासों के निरन्तर शब्द होने पर सर्पों से युद्ध करके रामसिंह के पुत्र ने १४ घेरा देकर, पक्षियों के राजा [गरुड] की शोभा से चारों ओर, सेना रूपी १५ सर्पों को १६उठाये, और उनमें नागों को फाड़ फाड़ कर पछाड़ डाली ॥२॥ डाका लगेहुए (उस स की धीरों का विशेषण है)

डांखाँ ओक ओक *जाँगी जैतरा रुड़ाया डाकी,
तोक चंचाँ केवाखाँ छुडाया वीर ताळ ॥
†पाँखाँ झोक संभरी असंखाँ के उडाया प्राँखाँ,
बाखाँ सोक पंखाँ के उडाया बूंदीवाळ ॥ ३ ॥
काटी पूंछ झंडा ले ‡किशोर दूजे दाटी कोपि,
सेना फटा फाटी मैं कटार पंजाँ साजि ॥
बैनतेय भीमसी झपाटी तेग आगैं बचे ,
भोगी जोगीरामरो त्रिपाटी गया भाजि ॥ ४ ॥ ३६ ॥

प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

§अहि सालम इम भज्जिगो, फोज फटा सु फटाय ॥
१रोंधि सहित २कृमि ३बैर की, ४अतिजव बुंदिय आय ॥३७॥
कोटेसहु द्रुत पिट्ठि लगि, लिन्नी बुंदिय घेरि ॥
सठ सालम इक दीह लगि, गो भजि आयुध गेरि॥ ३८ ॥
जागो जुग्गियरामको, आयो नगर झलाय ॥
कोटापति इत लुट्ठ करि, बुंदिय दिन्न जराय ॥ ३९ ॥
फग्गुन ६सित ७चउत्थि८सक, रस हय सत्रह१७७६मानँ ॥
बहुरि भीम बुंदिय लई, इम फेरी निज आन ॥ ४० ॥

ने घर घर मे विजय के * नगारे बजाए और तरवारों रूपी चंचुओं में उठाकर खड्गों की मूठों से वीरों की तालयां [हथेलियें] छुडाईं, इसकारण हे चहुवाण तुम्हारे † हाथों को धन्य है कि जिन से असंख्यों के प्राण उडाए और बांखों के मोक रूपी पांखों से बुन्दीवालों को उडाये ॥ ३ ॥ उस सेना के झंडे लेने रूपी पूंछ को काटा और ‡ दूसरे किशोरसिंह ने क्रोध करके दबाई कटार रूपी पंजों का भय सज कर सेना रूपी फण को फाड़ा, इसप्रकार गरुड़ रूपी भीमसिंह की शीघ्र चलनेवाली तेग के आगे बच कर, जोगीराम का पुत्र रूपी सर्प शीघ्रता की दौड में भाग गया ॥ ४ ॥ ३६ ॥ § सर्प १ क्रुद्ध २ रोंग सहित ३ वह बैर का कोढ़ा ४ बहुत शीघ्र बुन्दी आया ॥ ३७ ॥ ५ शीघ्र ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ६ सुदि पक्ष की ७ प्रमाण चाला ॥ ४० ॥

सबहि देस बुंदीसको, ग्रहर भीम अपनाय ॥
लूट माँहिं बहु द्रव्यलै, इम पुनि कोटा आय ॥ ४१ ॥

(पादाकुलकम्)

अवरहु भीम देस बहु छिन्नें, चउदह सहँस१४०००गाम निज किन्नें
अग्गें लिखित *कूरमहिं अप्पो, सो सब लुप्पि लोभ हिय थप्पो४२
हुलासि एह आक्खिय सुभटन हित, अब व्रजनाथ करहि सबइच्छित॥
रन जयसिंह †बुद्ध जरि मारहिं ‡वसुमति आन §अमोघ बिथारहिं४३
इक पुत्रहिं बुंदियगढ अप्पहिं, थिर इक्कहिं कोटागढ थप्पहिं ॥
इक सुतहिं सोपुरगढ दैहैं हम उज्जैन राज अब लैहैं ॥ ४४ ॥
तदनंतर सय्यद प्रति कग्गर, पठयो इन लिखि भीम अप्पंकर ॥
इत दल सजव सज्जि हम आवत, उत तुम आवहु कटक अमावत४५
पकरि बुद्ध जयसिंह बिपक्खन, लैहैं पहुमि मारि भट लक्खन ॥
यह लिखि सँगर भीम उमाह्यो, चमु साजि सहँस बीस २००००
जय चाह्यो ॥ ४६ ॥

[दोहा]

इम सय्यदसों मिल्लन लहि, अजितसिंह मरु आय ॥
जहँ सुभटन एकत्त जुरि, आक्खिय मत्त उपाय ॥ ४७ ॥

[षट्पात्]

मिलत अठ्ठ उमराव जबहि रट्ठोर इक्क जुरि ॥
अजितसिंह प्रति आक्खि अनयें किन्नों तुम अंकुरि ॥
कूरमपतिसों तोरि आप सय्यद चाह्यो उर ॥

॥ ४१ ॥ * कछवाहा जयसिंह को दिल्ली में लिख दिया था कि बुन्दी के परगन छोड देवेंगे, उसको ॥ ४२ ॥ † बुधसिंह का ‡ पृथ्वी पर § पाछा नहीं फिरै ऐसा धाप्प फैलावेंगे ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ जिस पीछे २ पत्र ३ अपने हाथ से ४ मर्यो माथै मैमा ॥ ४५ ५ शत्रुओं को ६ भूमि ७ युद्ध पर ४ उत्साह युक्त हुआ ८ सेना ॥ ४६ ॥ ९ मारवाड में १० एकत्र ॥ ४७ ॥ ११ अनीति करि १२ खड़े होकर

अज्ज गई आमैर कल्हि जैहैं सु जोधपुर ॥
स्वामिकों मारि मध्यद सवल कानि न रक्खहिं अप्पनी ॥
तससौंत[2] जोरि जयसिंहसों धन्व[3] पहुमि रक्खहु धनी ॥४८॥
दोहा—कूरमसों सगपन विरचि, मरुधर बुल्लहु नाहि ॥
रुचिर सुतौं[4] अब रावरी, बिधिजुत देहु बिवाहि ॥ ४९ ॥
मरुपतिसों यह मंत्र करि, पठयो सुभटन[5] पत्त[6] ॥
नृप कूरम आवहु निडर, यँहँ ब्याहन अनुरत्त[7] ॥ ५० ॥
कूरम सुनि पच्छी कहिय, धरा अलप तुम धाम[8] ॥
रक्खहु पुत्रिन जतन रचि, परहिं साहसों काम ॥ ५१ ॥
यह सुनि इन पच्छी लिखिय, हम तुम बिच हरि[9] आहिं ॥
आवहु अप्पन इक्कहैं, जावहु ससुख बिवाहि ॥ ५२ ॥
सु सुनि कूरम जयसिंह किय. साजि दल्ल सबल्ल सिपाह ॥
बुंदी सोपुर नृप उभय२, चल्लिय संग हित चाह ॥ ५३ ॥

(पादाकुलकम्)

रस हित विनय परस्पर [10]रत्त, तब नृप तीन३जोधपुर पत्ते ॥
रट्ठोरन आक्खिय कूरम सैंन, लागनबर अब चलहु बि[12]बाहन॥५४॥
मरुपति सौं तब सबन [14]समक्खा, कूरमपति सुभटन यह अक्खी ॥
[15]हम नृप परनि पधारहिं जोलौं, हमबिच रहहु [16]धन्वपति तोलौं ॥५५॥
अजितसिंह यह मन्नि रह्यो यँहँ, कूरमपति गो तब ब्याहन कँहँ ॥
[17]रनं जिम सज्जि कवच धारन करि, [18]बैर दुलहनि रट्ठोरि लई वरि॥५६

१ उसके पति बादशाह को मार कर बलवान् हुआ है २ इसकारण से ३ मारवाड़ की भूमि ॥ ४८ ॥ ४ सुन्दर पुत्री ॥ ४९ ॥ ५ उमरावों ने ६ पत्र भेजा ७ प्रीति युक्त ॥ ५० ॥ ८ तुम्हारे घर में ॥ ५१ ॥ ९ विष्णु भगवान् हैं ॥ ५२ ॥ ५३ ॥१०अन्त ११रक्त प्रीतियुक्त हुए१२जयसिंह से कहा १३ ...॥ ५४ ॥१४समर्थ सामंत, शेखरू१५महाराजा [जयसिंह] १६ है मारवाड़ का पति [अजितसिंह] तब तक हमारे बीच में रहो "भीतर जयसिंह को चूक करके न मार सके इसकारण से" ॥ ५५ ॥ १७जैसे युद्ध में सज्जित होकर जाता है तैसे १८ श्रेष्ठ दुलहनि राठोड़ी को वरी ॥ ५६ ॥

(दोहा)

इक नवाब कलीजखाँ, इहिं अंतर लहि *काल ॥
दक्खिन मन आयो दुसह, दिल्लीपर रचि जाल ॥ ५७ ॥

(षट्पात्)

हुसनअली सय्यद वजीर सुनि एह बंटि †जर ॥
नाम दलावरखान मुगल ‡पिल्ल्यो तिहिं उप्पर ॥
नरउर पति गजसिंह संग सह सेन दयो सजि ॥
कटोपति प्रति पत्र त्वरित लिखवाय गव्व तजि ॥
मारहु कलीजखानहिं मरद खानदलावर सग रहि ॥
जयसिंह जेर पिच्छैं करहिं यह करि जेर कलीज अहि॥५८॥

(दोहा)

सु सुनि भीम सिर धुन्निकैं, दिय दल अधिक छुराय ॥
जान्यो तप जयसिंहके अत अप्पनो आय ॥ ५९ ॥
बुद्दे वीरन सग लै, तव यह मरन विचारि ॥
सम्मुह खानकलीज सों, रचन चल्यो अब रारि ॥ ६० ॥
खानदलावर भीम अरु, नरउरपति कछवाह ॥
दरकुचन चलि भिटये, सत्रुन सबल सिपाह ॥ ६१ ॥
मेकलजाके पार इक, तटिनी कोढी नाम ॥
तीनन३ खानकलीज सों, सजिय तत्थ संग्राम ॥ ६२ ॥

षट्पात् ॥

सल्ली जुरि दुवरसेन हुलासि जुज्झन बढि दल्ली ॥
कादबिनि चल्ली किं बाढ चमकत घनवल्ली ॥

---

* समय पाकर ॥ ५७ ॥ † धन बांट कर ‡ भजा १ घमंड को छोड कर २ हे वीर ३ दलावरखां कैसा थरह कर ४कलीजखा रूपी सर्प को ॥ ५८ ॥ ५ जय सिंह के मारने को अधिक सेना रक्खी थी जिसको छोड कर ६ जयसिंह के तप से ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ७ नर्मदा नदी के पास ८ नदी ॥ ६२ ॥ ९ घोडा के सवार १० मेघमाला ११ मानों १२ विद्युत् (बिजुली)

दिट्ठि जुरत हय दपटि मिले रनरसिक महाभट ॥
तब बज्जिग तरवारि भीरु भज्जिग बट *उब्बट ॥
गिद्धनि सिचान †संकुलि गगन रचि ‡मयूख अवरोध किय ॥
खुरतार मार §जव धार खुदि दिसदिस ¶पुहवि दरारदिय ६३
लग्गे[1] जिम जिम लोह छोह[2] तिम तिम उर छायो ॥
धायो जिम जिम धीर बीर[3] तिम तिम प्रकटायो ॥
जिम खादित जैपाल[4] मथत अंत्रन द्रुत दुज्जर[5] ॥
इम कलीज दल[6] अतुल मथ्यो सायुध[7] सय संभर ॥
हैदराबाद भट बहुल[8] हनि चिरि अच्छरि रस चक्खयो ॥
भूपाल[9] भीम कोटस सिर रुद्रमाल नेन रक्खयो ॥ ६४ ॥
हत्थी भज्जत हड्ड चढ्यो हयबर रेंय[10] चंचल ॥
हय कट्टत पयचार[11] बन्यो खयकार[12] महाबल ॥
तोमर[13] तुट्टत तेग तेग तुट्टत करि कत्तिय[14] ॥
कत्तिय कट्टत करद[15] घोर छत्तिय अरि घत्तिय ॥
देख्यो कजीज जीवन दुलभ मिलत भीम भद्दव सुदिर[16] ॥
जिम जिम स्वसीस[17] रज रज रचिय तिम तिम धुन्निर्य[18] संभु सिर ६५

दोहा ॥

सुनि हय मत्त रु इक्क १७७७ सक, जेठ रु पुण्णिम दीह ॥

*विना मार्ग †आकाश म भर कर ‡सूर्य की किरणों को रोक दी §शीघ्र दौड़ने के वेग से ¶भूमि ने ॥ ६३ ॥ १ शस्त्र २ क्रोध वा उत्साह ३ वीर रस ४ जिसप्रकार दुःख से जरनेवाला खाया हुआ ५ अजैपाल्या [जमालगोटा] आंतों को शीघ्र मथ डालता है तिसीप्रकार महाराव भीमसिंह ने ६ कलीजखां की बडी सेना को मथी ७ आयुध सहित हाथ से चहुवाण ने ८ बहुत ९ राजा भीमसिंह ने अपने मस्तक को शिव की मुंडमाला के अर्थ नहीं रक्खा, अर्थात् टुकडे टुकडे होगया १० वेग में चपल घोडे पर चढा ११ पैदल होकर १२ नाश करनेवाला [यमराज] १३ भाला १४ खड्ग विशेष १५ कटारी अथवा मतांतर से छुरी १६ भादवा के मेघ के समान १७ अपने मस्तक को १८ मुंडमाला के योग्य नहीं रहने के कारण शिव ने मस्तक धुना ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

परयो दलावरखान रन, सहित *भीम गजसिंह ॥ ६६ ॥
नरउरपति जाजव भज्यो, परयो इहाँ तजि मान ॥
मारि हजारन भीम जिम, परयो भीम चहुवान ॥ ६७ ॥

(षट्पात्)

सुनि कोटापुर भयउ †भीत मरतहि निज भूपति ॥
धाइभ्रात भगवान हुतो बुंदी सु जानि ‡हति ॥
बुंदिय बिच बुधसिंह आन फिरवाय सोधि उर ॥
अप्पन सब थानाँ उठाय आयउ कोटापुर ॥
सुनि खबरि एह मातंगद मठ मालम आय भलाय सन ॥
बनि सचिव मुख्य बुंदिय बहुरि राजकाज लग्गो करन ।६८।

[दोहा]

तनय तीन ३ नृप भीमकैं, जेठो अर्जुन १ नाम ॥
अमरान भानेज यह, तब भूपति हुव ताम ॥ ६९ ॥
स्यामसिंह २ मध्यम सुवन, लघु सुत दुरजन साल३ ॥
राज लोभ निसदीह रखि, कट्टत एहू काल ॥ ७० ॥

[षट्पदी]

हुसनअली इत सज्जि छोह कूरम सिर छायो ॥
साह मुहुम्मदकों चढाय आमेर चलायो ॥
सय्यद अति बरजोर साह दुर्म्मन इहिं कारन ॥
चिंतत रहत उपाय मन्त्रि निहचै तिहिं मारन ॥
तब नाम मुहम्मदखान इक तूरानी तक्कयो प्रबल ॥
रचि मल साह तासों रहसि माग्यो सय्यद छेदि छल ।७१।
दोहा—तब पच्छे दरकुच करि, हुसनअलीकों मारि ॥

* भीमसेन के समान ॥ ६७ ॥ †भय ‡ भीमसिंह का नाश जानकर ॥ ६८ ॥
१ महाराणा अमरसिंह का २ तहां [कोटा में] ॥ ६९ ॥ ३ पुत्र॥७०॥ ४ उद्दाम
५ एकान्त में सलाह करके ॥ ७१ ॥

बनि स्वतंत्र इम साहहू, पुर दिल्लिय*पगधारि ॥ ७२ ॥
बरस तीन३ नृपकैं बच्यो, भावतसिंह कुमार ॥
दुव२रानिन उर दोय२सुत, बहुरि भये इहिं बार ॥ ७३ ॥
नाम भवानीसिंह सुत, कछवाही गृहजात¹ ॥
पदमसिंह दूजो२ भयो, चुंडाउति जठरांत ॥ ७४ ॥
कुमर बधाई जोधपुर, पत्ती संभर³ पास ॥
जयसिंहहु तत्थहि सुन्यौं, सय्यद सत्रु बिनास⁴ ॥ ७५ ॥
सुनत कुंच जयसिंह किय, बिनस्यो सय्यद बैर ॥
सोपुर बुंदिय नृपन सह, आयो पुर आमैर ॥ ७६ ॥
संभरैं⁵ किय ढुंढाहरहि, बसवा निवसथ⁶ बास ॥
अनाँहूत⁷ जयसिंह गो, साह मुहम्मद पास ॥ ७७ ॥
अठ सत्त हय इक्क १७७८ सक, चित्त महर⁸ करि चाह ॥
अकबरपुर सूबा दियउ, कूरमपतिकों साह ॥ ७८ ॥

पज्झटिका ॥

पुनि कहिय साह कछवाह राय, क्यौं नाँहिं अत्र⁹ बुंदीस आय ॥
जयसिंह कहिय सालमैं¹⁰ नरेस¹¹, आबाद रखत पुनि नहिं असेस ७९
कोटेस भीम करि जोर दाँय¹², बारा मऊ सु लिन्नैं छुराय ॥
बिनु खरच नाँहिं निबहत प्रवास, जर कोस सबहि हुव नैंठ¹³ जास ॥
सतपंच ५०० सुभट सादी¹⁴ सुमंत¹⁵, मम संग दिय सु हाजरि रहंत ॥
सुनि साह दयो अमरख¹⁶ निवारि, असी अनेक दिय कुम्म¹⁷ टारि ८१
चूड़ामनि सुत मुहुक्कम्म जट्ट, इन दिनन बहुरि लग्गो कुबट्ट¹⁸ ॥

---

* पधारा ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ कछवाही के घर में १ जन्मा २ जठर (उदर) से ॥ ७४ ॥ ३ बुधसिंह के पास ॥ ७५ ४ नाश हुआ(मिटा) ॥ ७६ ॥ ५ बुधसिंह ने ६ बसवा नामक ग्राम में ७ बिना बुलाया ॥ ७७ ॥ ८ कृपा ॥ ७८ ॥ ९ यहां १० सालमसिंह ११ राजा (बुधसिंह) का ॥ ७९ ॥ १२ जोर की रीति से [बल पूर्वक] १३ नष्ट ॥ ८० ॥ १४ सवार १५ श्रेष्ठ बुद्धिवाले १६ क्रोध १७ जयसिंह ने ऐसी अनेक आपत्तियें टाल दीं ॥ ८१ ॥ १८ कुमार्ग।

करि लूट मुलक सिर घालि घेत्त, मरुईस सरन मरुदेस पत्त॥ ८२॥
जयसिंह वदन जट्टहिं सहेत, बहुभुव दिवाय थूहनि समेत॥
व्है साह दितु मुहुकम हराम, यातैं पलाय गय धन्व धाम। ८३।
तब साह कहाई हे नरेस, आतुर गहि भेजहु जट्ट एस॥
मन्न्या न हुकम यह मेरु महीस, रचि साह मुहम्मद सुनत रीस ८४]
इन लहि प्रमाद आलस अनंत, बुंदीस गाम बसवा बसंत॥
तँहँ किय अनीति लोकन अपार, दण्डिय अनेक परकीय दार ८५
ताडन रु लूट तर्ज्जन विधाय, पत्तन प्रजा युं किय दुखित प्राय॥
पुरजन सब लहि तब दुख अपार, कूरम प्रति दिल्ली किय पुकार८६
सुनि कहिय भूप कूरम हसंत, बसवा गु गाम ऐंचहु बसंत॥
कहि पुनि वे जामिय अरमदीयँ, सहनों समस्त दुक्खहु सेंगिय ८७
तुम माँहिं अबहु जो परहिं त्रास, तो कहहु जाय बुंदीस पास॥
मम ढिग जो ऐहो बहुरि भज्जि, देहों निकासि तो तोडि तज्जि ८८
यह कहि पुरवासिन सिक्ख दिन्न, कूरम इम जोगिय हितहि किन्न॥
मन्न्यो न हुकमइतमरु ईस, लैलगजियसाहतिहिंसिरविसेस॥८९॥
मरु पिल्लि बहादुरखान मीर, पिल्लगा पुनि कूरमपति प्रबीर॥
इम दुवरचलाय मरु दिस प्रमान, भेरुबहु सुनि सम्मुह किय प्रयान९०
मगरूर पूर बनि मरु महीप, सजि आय मनोहरपुर समीप॥
इततैं सेसन मारन उपाय, जयसिंह बहादुरखान आय॥ ९१॥
मरु ईस अतुल्ल लखि साह सैन, भजिगो तजि डेरन अप्प ऐन॥

१चालरमारवाड गया॥८२॥२मारवाड़ ग भाग गया॥८३॥४जीघ५मारवाड़ के पति ने॥८४॥६पराई स्त्रियां को ७ पीडना ८ धमकाना ९ करके १० उस नगर की प्रजा का ११ बहुत दुःखी की॥ ८५॥ १२ काछमाहा ने कहा कि क्या अब भी यह ग्राम बसता है १३ हमारे पत्नियों हैं १४ भारी दुःख होवे सो भी सहना चाहिये॥ ८६॥ १५ ताडना और तर्जना करके॥ ८८॥ १६यहिन के पति का १७मारवाड के राजा ने १८भेजना॥ ८९॥ १९मारवाड में भजा २० समीप २१मारवाड़ के पति ने भी॥ ९०॥२२सेना सहित॥ ९१॥ २३ अताव (बहुत) २४ अपने घर (जोधपुर)

सक अंक सप्त हय इक्क १७७९बीच, रन छोरि लगाई गालि नीच ९२
सुनि साह कटक श्रौति जव चलाय, रहोर बिमन लिय लुट्टि आय
संभर बिनु कहुँ लरतहु सुन्यौ न, भजि गाजि गो समर छोरि भौन ९३
अग्गौं जब आलम गो चलाय, अल्हनपुर लग्गौ पयन आय ॥
पुनि अँमर रान कर लिखित दिन्न, सो मेटि साह जामात किन्न ९४
अरु बहुरि सय्यदन मिलि अधर्म, जामात साह हनि किय कुकर्म
पुनि तब तृतीयपुरुन समय पाय, पृतना तजि कातर गो पलाय ९५
जयसिंह बहादुर लगिय पिछ्छि, इन नचिय मंत्र गृह जाय निछ्छि ॥
रघुनाथ सचिव रहोर सर्व, मिलि कहिय राज गय आप्प गर्व ९६
कर बंधि परहु अब साह पाय, जो यह नँ देहु कुमरहिं पठाय ॥
भट सचिव मंत्र इम तब बिचारि, जयसिंह नरेसहिं बीच डारि ९७
सुत अभयसिंह पट्टप समर्त्थ, पठयो पुर दिल्लिय कुम्भ सत्थ ॥
रघुनाथ सचिव दिय संग तासँ, लहि साह जाय इन किय मलाम ९८
गृह जाहु कुमर यह कहिय साह, आवत हम मंडहु रन उछाह ॥
तब कुम्म कहिय यह गिनत आन, याको न दोस जनकहि अमान ९९
पुनि कहिय साह जो यह प्रपन्न, तो जनक हनहु तब हम प्रसन्न ॥
यह सुनि उवाचँ कछवाह ईस, इहहँ जु हुक्म धरिहै सु सीस १००
प्रल्हाद एँह तुम हरि प्रमान, मरुपति हिरण्यकसिपुव समान ॥
यह सीस साह सेवन वहंत, चित जनक इहिँ न यातैं चहंत १०१

॥ ९२ ॥ १ बादशाह की सेना २ बड़े वेग से ३ सांभर नगर के बिना ॥ ९३ ॥ ४ राणा अमरसिंह के हाथ में ५ लिखावट लिखकर दी थी उसे मिटाकर ६ जमाई ॥ ९४ ॥ ७ जमाई बादशाह को मारकर ८ सेना छोड़कर भगगया ॥ ९५ ॥ ९ आपके घमंड से ॥ ९६ ॥ १० जो यह नहीं करो तो ॥ ९७ ॥ ११ समर्थ १२ कछवाहा जयसिंह के साथ भेजा १३ वहां ॥ ९८ ॥ १४ नहीं माननेवाला इसका पिता ही है ॥ ९९ ॥ १५ शरणागत है तो १६ पिता (अजितसिंह) को मारडालै तो १७ बोला ॥ १०० ॥ १८ यह [अभयसिंह] १९ इसकारण से पिता इसको नहीं चाहता ॥ १०१ ॥

*प्रल्हादवत्त कूरम सुनाय, इम अभयसिंह हित सिस उडाय ॥
कहि साह हमहिं जो गिनत ईस, सुत तो अब आनहु जनक सीस १०२
रघुनाथ सचिव किय अरज तत्थ, सब करहिं पाय आयस समत्थ॥
हेरन बडो गिलहि सिक्ख आय, दैन अभयसिंह पठयो लिखाय १०३
निज अनुज भ्रात बखतेस नाम, तिहिं प्रति उदंत सब लिखिय ताम
यह मिच्छ जनक सिर कुपित आज, लै है उतारि धुव धन्वराज ॥
लहि राज भाग जो चहत लाल, तो तात हनहु जनकहिं उताल
देहों तब तोकहँ अद्ध देस, नागोरपुर पैं करिहों नरेस ॥ १०५ ॥
बखतेस मुंढ यह पत्र पाय, जनक सु निज मारयो सुप्त जाय ॥
हाकार जोधपुर नगर होय, रनवास अचानक उठिय रोय।१०६॥
सुनि मिसल अष्ठ ८ उमराव एह, गहि तेग कुमर विंट्यो सगेह
बखतेस भीतें तब नीति विधाय, दिय अभयसिंह कैंगार दिखाय॥
गिनि तब समस्त यह मतगूढ, अब किय नरेस चितिको अरूढ
नाजरन सहित सुंदरि नारि, चिति अगि भस्म हुव असिह च्यारि ८४
सक गगन अष्ठ हय इक१७८०साल, यह खबरि भई दिल्लिय उताल

---

*प्रहलाद की वार्ता १ पिता का मस्तक ॥१०२॥ २समर्थ ३आज्ञा पाकर ४पत्र ५ अपने छोटे भाई ६ बखतसिंह के नाम ॥१०३॥ ७ वृत्तान्त ८म्लेच्छ ९पिता के ऊपर १० निश्चय ही मारवाड़ का राज्य उतार लेवेगा ॥ १०४ ॥ ११ शीघ्र १२ नागोरपुर का पति करके १३ राजा करूँगा ॥ १०५ ॥ १४ मूढ १५ सोते हुए पिता को ॥ १०६ ॥ १६ अपने घर में घेरलिया १७ भय से १८ नजराना करके १९ पत्र ॥ १०७ ॥ २० चिता पर चढाया २१ जनाने की स्त्रियां २२ * चिता की अग्नि में चौरासी जन भस्म हुए ॥ १०८ ॥

---

* इसके लिये राजपूताने में ऐसा प्रसिद्ध है कि नाजर आदि जिन जिन का बखतसिंह का अपने से विरुद्ध होने का खटका था उन ८४ जनों का चिता की अग्नि में बलात्कार डाल कर भस्म कर दिये इस बखतसिंह की बुराई का यह छप्पय छंद प्रसिद्ध है ॥

छप्पय ॥ प्रथम तात मारियो, मात जीवती जलाई ॥ असीप्यार आदमी, हत्या भारी पण आई ॥
फेर गादी इकव्यास, वेग जैसिंह बुलायो ॥ मिट मुरधर मरजाद, भरम गांठ को गुमायो ॥
कीयपणो हुँवे चेयोफर, पंचायदक छत्ता धरी ॥ बखतसी जनम पायो पछे, कुमाइत आछी करी ।१।

सुनि गीलिक मराल बखसि साह, किय अभयसिंह मरुदेस नाह[1] १०९
अरु कहिय राज्य जमवाय जाय, पुनि आवहु सेवन मोद पाय ॥
मरुपति[2] उचाय तब नाय मत्थ, नागोर देत मैं अनुज[3] अत्थ ।११०।
सो सुभट मोहि नहिं देन देत, करि लिखित अप्प[4] पठवहु निकेत[5]
राजाधिराज पद वाहि देहु, अप्पहु निदेस करि सहर एह ।१११।
इम अभयसिंह कहि धन्य आप, पुनि दियउ साह लिखित सु पठाय
राजाधिराज उपपद समेत, नागोर देहु बखतेस हेत ॥ ११२ ॥
यह सुनि वकोरन तजिय टेक, कहिय दिन मरुपति मरु[6] कितेक
हनि अजितसिंह पितु बुद्धि हीन, इम बखतसिंह नागोर लीन ॥
पहिल कुमार गजसिंह[7] जाम, हुव अग्ग वीर अमरेस नाम ॥
सुत[8] इंद्रसिंह नामी जु तास, सो करत पट्ट नागोर वास ॥ ११४ ॥
नृप अभयसिंह ताकौं निकारि, नागोर दई अनुजहिं विचारि ॥
इत कुंम्म[9] साह सेवन बिताय[10], लहि सिक्ख यहहु आमेर आय ॥
आमेर हुतो बुंदी नरेस, पुनि कियउ भूप कूरम प्रवेस ॥
मिलि तबहि साला जामिय समोद, बिरचिय दुहून२ कति दिन बिनोद

दोहा ॥

सक ससि बसु सत्तह१७८१समय, कहि बुद्धहिं कछवाह ॥
बिरचहु राज्य प्रबंध तुम, वा हम रचहिं सुलाह ॥ ११७ ॥
बिनु प्रबंध आलस बहत, रहत न सुरपुर[11] राज ॥
कहत होत बुद्धिय कुनय[12], अह[13] प्रति महत अकाज ।११८।
बुंदीपति आक्खिय तबहि, अच्छी करहु विचारि ॥
पठवहु कोउ नीति पटु, सब जो करहि सम्हारि ॥ ११९ ॥

---

१ मारवाड़ का पति ॥१०९॥ २ अभयसिंह ने कहा-३ छोटे भाई बखतसिंह को ॥ ११० ॥ ४ आप ५ हमारे घर [जोधपुर] ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ६ मारवाड़ में ॥ ११३ ॥ ७ गजसिंह का पुत्र ८ उसका पोता ॥ ११४ ॥ ९ जयसिंह १०करके ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥११स्वर्ग का१२अनीति१३दिन प्रति ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

नाथाउत नगराज तब, नृप मातुल कुल जानि ॥
पठयो वह कूरम सु पहुँ, बुंदी विभव बखानि ॥ १२० ॥
आय लखि रक्खयो नृपति, द्विगुन खरच निज सत्य ॥
सब मेटयो नगराज सो, अधिप खिज्यो इम अत्थ ॥१२१॥
कछवाही सेवन करत, श्रीहरि मूर्त्ति सुमतं ॥
कउलं भूप बरजत कुढतं, तदपि न टेक तजत ॥ १२२ ॥
पति पतनीकैं याहि पर, बनैं न हितकी बत्त ॥
दृढ न लोपै तिय हुकम, तदपि कउल मत रत्त ॥ १२३ ॥
अग्गं नव हय सत्त इक१७७९, कछवाही पह किद्ध ॥
लै सालमम्मौं सचिवपन, निज अनुचरकों दिद्ध ॥ १२४ ॥
राम नाम निज दास इक, सो करि सचिव सु भाय ॥
इम रानी पति हुकम बिनु, रही राज्य अपनाय ॥ १२५ ॥
अब खरच कट्टत लग्यो, नाथाउत बिख रूप ॥
रानी प्रति तब प्रीति रचि, भाखी बुदिप भूप ॥ १२६ ॥
निज अनुचर प्रति लिखहु तुम, रनं कारि रक्खहु गेह ॥
नाथाउत नगराजकों, द्रंग न प्रविसन देहु ॥ १२७ ॥
रानीहू समुझी तबहि, रुकहिं मार निदेस ॥
सो करिहैं नगराज जो, कहिहैं कुम्भ नरेस ॥ १२८ ॥
यातैं अनुचर राम प्रति, दिय लिखि पत्र पठाय ॥
नन सौंपहु नगराजकों, अप्पन गृह ठेपय औय ॥ १२९ ॥
तब बुदिप नगराज तिन, दिन्नों प्रविसन नाँहिं ॥
महुरछाप दैंहिं न कह्यो, अधिप निदेस न औहिं ॥१३०॥

---

१ बुधसिंह के मामा के २ कुल म श्रेष्ठ राजा ने १२० ॥ १२१ ॥ ३ श्रेष्ठ बुद्धि ४ वाममार्गी राजा [बुधसिंह] ५ जलता [छीजता] ६ तो भी ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ स॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ ६ युद्ध करके ७ पुर में मत घुमने दना ॥ १२७ ॥ ८ जयसिंह कहेगा सो करेगा ॥ १२८ ॥ ९ खरच १० आमद ॥ १२९ ॥ राजा की आज्ञा नहीं ११ है ॥ १३० ॥

तिनहिँ *ठिल्लि नगराज तब, प्रविस्यो बुंदिय आय ॥
राजकाज लग्गो करन, †नूतन छाप धराय ॥ १३१ ॥
आय खरच सब लिखिलियउ, ‡खंधावार सम्हारि
स्वामि समुझि बुधसिंहकों, बिगरत लिन्न सुधारि ॥१३२॥
द्विगुन खरच मेटत कियउ, मातुल[1] पर नृप रोस ॥
अर्च्छामैं उलटो समुझि, दिय कूरम सिर दोस ॥ १३३ ॥
इत द्रुत[2] जामिप[3] राज्यको, करि प्रबंध कछवाह ॥
दरकुंचन दिल्लिय गयो, सविनयँ[4] भिट्यो साहँ[5] ॥ १३४ ॥
तदनंतर[6] मरुईसहू, जय नयँ[7] राज्य जमाय ॥
दिल्लिय भिट्यो मुगल द्रुत, साहमुहुम्मद आय ॥ १३५ ॥
कूरम प्रति मरुपति कहिय, मम भट[8] अति मगरूर ॥
जमन देत नहि राज्य जुरि, करहु अप्प मचकूर[9] ॥ १३६ ॥
पठयो कूरम जोधपुर, तब निज कटँक[10] उताल ॥
रठ्ठोरन समुझाय रहि, कट्ट्यो तँहँ बहुकाल ॥ १३७ ॥
हुते भूप जयसिंहकैं, सुतों दोय२सुत दोय२[11] ॥
सुनहु रामनृप[12] नाम तिन्ह, सावधान श्रुति होय ॥ १३८ ॥
जेठो सुत सिवसिंह१जो, मारयो जनक प्रमत्त[13] ॥
अनुज ईश्वरीसिंह२तस, तात कथित[14] कर तत्त ॥ १३९ ॥
सुता बिचित्रकुमारि१इक१, दूजी२कृष्णा कुमारि ॥
सु पहु[15] रान संग्रामकी, जाँमेयी[16] निरधारि ॥ १४० ॥

---

*ठेल (हटा) कर † नवीन ॥ १३१ ॥ ‡ स्कंधावार [राजधानी] को ॥ १३२॥ १ मामा पर ॥ १३३ ॥ २ शीघ्र ३ बहिनोई के राज्य की ४ नम्रता सहित ५ बादशाह से मिला ॥ १३४ ॥ ६ जिसपीछे ७ नीति से जीतकर ॥ १३५ ॥ ८ उमराव ९ विचार ॥ १३६ ॥ १० सेना ॥ १३७ ॥ ११ पुत्रियां १२ हे राजा रामसिंह कानों से सावधान होकर सुनो ॥ १३८ ॥ १३ उन्मत्त होने के कारण पिता (जयसिंह) ने मारडाला १४ पिता जयसिंह का कहना करनेवाला ॥ १३९ ॥ १५ सो प्रभु राणा संग्रामसिंह की १६ भानजी ॥ १४० ॥

भयो विचित्रकुमारिकों, वय*उपयम अनुसार ॥
जानि जनक जयसिंह जब, रचिय व्याह व्यवहार ॥१४१॥
अभयसिंह मरुईससों, करि सगपन कछवाह ॥
सामग्री किय उचित सब, नेयपटु¹ जैपुर नाह² ॥ १४२ ॥
सिक्ख तबहि लहि साहसों, दुवनृप मथुरा आय ॥
अतहपुर³ आमैरतें, लिन्नों सकल बुलाय ॥ १४३ ॥
सक ससि वसु सत्रह१७८१ असित⁴, अष्टमि८सिंह⁵ विचारि ॥
तनया व्याही मरुपतिहि, कुम्म विचित्रकुमारि ॥ १४४ ॥
माता नृप संग्रामकी, रानी अमर कलत्र⁶ ॥
चाहुवान पुरवेदला, पतिकी तनया तत्र ॥ १४५ ॥
ससु वह जयसिंहकी, गंगा न्हावन आय ॥
मुरत मग्ग मथुरा मिली, लीनी कुम्म बधाइ ॥ १४६ ॥
चाहुवानि पिक्ख्यो रुचिर, बिट्टी तनयाँ⁷ व्याह ॥
बरनि विचित्रकुमारि नव⁸, नव दुल्लह मरुनाह ॥ १४७ ॥

[षट्पात्]

ससमुकी जयसिंह कानि⁹ किंकर जिम किन्नी ॥
इक दिन गोकुल जात खध सिविका¹⁰ तस लिन्नी ॥
इक्क वंस¹¹ गहि अप्प मैरुप कर इक्क गहायो ॥
मातासों गिनि मैंहत¹² विहितै¹³ सतकार बढायो ॥
अप्पनों गिनहु मोकों अनुगै¹⁴ पैंहँ तीरथ हरि अवैतरिय¹⁵ ॥

---

* विवाह के ॥१४१॥ १ नीतिचतुर २ जयपुर का पति "थोड़े ही समय में जयपुर बसावेगा इससे जयपुर का पति कहा है" ॥१४२॥ ३ जनाना ॥१४३॥ ४ कृष्णपक्ष ५ भादवा की ॥१४४॥ ६ उदयपुर के राणा अमरसिंह की स्त्री ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ ७ बेटी की पुत्री [दौहित्री] का ८ बींदनी (दुलहिन) नवीन ॥ १४७ ॥ ९ मर्याद १० पालकी ११ एक बांस तो आप [जयसिंह] ने लिया और दूसरा बांस जोधपुर के राजा [अभयसिंह] का पकड़ाया १२ बड़ी १३ उचित १४ सेवक १५ विष्णु भगवान् ने अवतार लिया सो तुम यहां

तुम देहु बैठि हाटक[1] तुला करन[2] जोरि इम अरज किय ॥१४८॥

दोहा ॥

यह सुनि महिषी[3] अमरकी[4], बोली नयमय[5] बैन ॥
दुहिताके[6] वसुतैं[7] तुला, हमको उचित यहै न ॥ १४९ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ॥

श्रुत्वैवम्मुदिताऽमरस्य महिषी प्रोवाच जामातरं,
वस्वस्माकमकब्बरादनुचितञ्जातन्तथाप्यायतम् ॥
भावत्कम्भुवनम्भवेद्यदि सुभूभृद्भूरि भर्म्माकरं,
पौरट्यो बहुशस्तुलास्तदिह कार्या जामिजामेययोः ॥१५०॥

स्रग्विणी ॥

एवमाकर्ण्य कूर्म्मेश्वरः साहसी स्वस्वसारन्तदोवाच कार्या तुला ॥
बुन्दीभृज्जाययाऽप्रीति नोरीकृतन्तत्कृता भागिनेयस्य राज्ञा हठात् ॥

प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

सुत नाम भवानीसिंह निज, हो जामेयहु तत्थ ॥
जेठ ताकी तब हाटक[8] तुला, किय कूरम हठ सत्थ ॥ १५२ ॥
रान[10] मात जामात[11] प्रति, पुनि अक्खिय चित प्रेय[12] ॥

१ सोने की तुला दो २ दोनों हाथ जोड़ कर ॥१४८॥ ३ पटरानी ४ राणा अमरसिंह की ५ नीतिमय ६ बेटी के ७ धन से॥१४९॥ प्रसन्नता से ऐसा सुन कर अमरसिंह की पटराणी जमाई से बोली कि हमारा धन तो बादशाह अकबर से युद्ध होने में अनुचित गया। अर्थात् ऐसे पुण्य में नहीं लग सका और उसी प्रकार उस [अकबर] के आधीन गया. हे उत्तम राजा जो आप की भूमि बहुत सोने की खान वाली होवे तो आपके बहिन और भानजी की सोने की बहुत तुला करो ॥१५०॥ ऐसा सुन कर उस साहसवाले कछवाहों के पति ने उस समय अपनी बहिनको तुलादान करनेको कहा यह बुन्दीके राजाकी स्त्रीने भी स्वीकार नहीं किया तब वह तुला राजाके हठसे भानजेकी कीगई।१५१। ८ भानजा ९ स्वर्ण की तुला॥१५२॥१० राणा की माता ने ११ जमाई जयसिंह से १२ प्यार से

पुल *कालिंदी सरित पर, वधों सुगम †विधेय ॥ १५३ ॥
इन तब लिखि दिल्लीससों, लिन्नों हुकम मगाय ॥
सठि सहँस६००००‡मुद्रा खरचि, §इन पुल दिय वधाय१५४
कुमर रान संग्रामकै, जगतसिंह ¶अभिधान ॥
ताहूके तिहिं दिन तनय, भो [१]प्रताप कुलभान ॥ १५५ ॥
सुत सुत सुतकी [२]मधुपुरहि, सुनी खबरि चहुवानि ॥
दिय [३]हाटक लक्खन द्विजन, मुदित वधाई मानि ॥ १५६ ॥
कूरमपति पठयो तदनु, अतहपुरँ आमेर ॥
इत पत्ती चहुवानिहू, निज उदयादिकनेर ॥ १५७ ॥
अभयसिंह जयसिंह ए, दुव२पुनि दिल्लिय आय ॥
हाजरि साह हजूर हुव, लाह विनय हित लाय ॥ १५८ ॥
सक दग वसु सत्रह१७८२समय, [११]सेयें रिझायो साह ॥
सोहि करत दिल्लीम सब, कहत जोहि कछवाह ॥ १५९ ॥
सूबा दुव २ जयसिंहकैं, आगरा रु उज्जैन ॥
अब सूबा अजमेरको, वहुरि दयो हित वैन ॥ १६० ॥
[१२]मतिमें [१३]नयमें [१४]मतमें, सबमें [१५]कूरम सेर ॥
विनु वजीर दब्बे वहत, जवन हिंदु सब जेर ॥ १६१ ॥

[षट्पात्]

अभयसिंह मरुईस सुन्यो निज देस [१६]दंवर दुख ॥
सिक्ख साहसों मगि रचिय दरकुच गेह रुख ॥

---

* जमुना नदी पर † सुगमता से पथ सक तो पुल बनाया ॥ १५३ ॥ ‡ रुपये ‡ महाराणा की माता ने ॥ १५४ ॥ ¶ नाम १ पुत्र २ प्रतापसिंह नामक ॥ १५५ ॥ ३ पड़पोते की ४ मथुरा में ही ५ लाखों ब्राह्मणों को सोना दिया या ब्राह्मणों को लाखा मुहर दीं ॥ १५६ ॥ ६ जिस पीछे ७ जनाने को ८ प्रास हुई (पहुंची) ९ उदय है आदि में जिसके ऐसा नगर अर्थात् उदयपुर॥ १५७ ॥ १० काम ॥ १५८ ॥ ११ सेवन करके ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १२ बुद्धि में १३ नीति में १४ सलाह में १५ सिंह (बलवान्) ॥ १६१ ॥ १६ उपद्रव (लूट खसोट)

संग दियउ जयसिंह सेन वसुसहस८०००जुत्त वर ॥
राजामल्ल निज सचिवकेर सिवदास *सहोदर ॥
†कहि जाय राज्य मरुईसको सजव जमावहु जोर सन ॥
समुझाय सवहि रट्ठोर सठ पारहु तुम मरुपति पयन ।१६२।

[दोहा]

आयो मरुपति गेह इम, सत्थ सचिव सिवदास ॥
इत मेट्यो कूरम अधिप, तँहँ इक हिंदुन त्रास ॥ १६३ ॥
दिल्लीमैं यह दुसह दुख, सहि सब कट्टत काल ॥
गहि गहि हिंदुन वरस प्रति, कर मंगत चंडाल[1] ॥ १६४ ॥
बीस २० दम्म वसुमान[2] सौं, इक१ अवसु[3] सौं लेत ॥
जन[4] प्रति हेरत स्वपच[5] जर, दिन प्रति यौं दुखदेत ॥ १६५ ॥

पादाकुलकम् ॥

दिवाकित्ति तिनमैं[6] इक नायव[7], स्वपच ओर तस कथित करैं सब[8] ॥
दिन प्रति करि हिंदुन हरवल्ली[9], स्वपच कहँ स्वामिहिं जुरि सल्ली[10]१६६
हमरी यह रैय्यत हे नायव, आई हासिल दैन इहाँ अव ॥
तब वह आक्खि स्वामि[11] जिम उत्तर, कथित[12] रीति सब हिंदुन[13] गहँकर१६७
कर गहि लिखि बंधैं[14] दल कंठन, यह लखि स्वपच तजैं इक हायन[15]
दूजे बरस बहुरि गहि लावैं, अह[16] प्रति दंद[17] मदंध उपावैं ॥ १६८ ॥
हिंदुन हेरत फिरत हीन दल[18], करत [19]राहि दिन प्रति कोलाहल॥

---

* सगा भाई कहा ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १ भंगी (चांडाल) ॥ १६४ ॥ २ धनवान् से बीस रुपये सालियाना ३ निर्धन से एक रुपया ४ मनुष्य प्रति ५ भंगी [चांडाल] धन लेता था ॥ १६५ ॥ ६ उन भंगियों में एक नाई ७ हाकिम [अफसर] था ८ सब भंगी [चांडाल] उसका कहना करते थे ९ आगे करके १० सवार होकर ॥ १६६ ॥ ११ स्वामी [मालिक] कहै तिस प्रकार १२ ऊपर कहीहुई रीति से १३ से ॥ १६७ ॥ १४ वह कर लेकर कंठ मे पत्र बांध देते १५ एक वर्ष तक उसको चांडाल छोड देते थे १६ दिन प्रति १७ उपद्रव ॥ १६८ ॥ १८ विना पत्र वालों को १९ रोक कर

स्वपचन प्रनति करहिं हिंदू सब, तेदपि दंड अप्पहिं छुट्टहिं तब१६९
दिल्लिप पह दिनप्रति दुस्सह दुख, सब कर दयें बिना न लहैं सुख॥
कूरम नृप यह माफ करायो, लिखित लिखाय साह सन लायो१७०
छाप वजीर करैं नहिं उद्दत, बहुत बेर सुनि टारि गयो वैत ॥
द्विज इक दया बहादुर नागर, सो जावत दक्खिन सूबापर ॥१७१॥
जाको मनसुब सत्त७हजारी, तीन अयुत३००००भट संग तुखारी॥
वासौं मिलि कूरम यह अक्खी, रहैं कानि हिंदुन तब रक्खी१७२
कहि द्विज करन सिक्ख हम जैहैं तब छपाय बल करि देउ लैहैं॥
जो वजीर सम्मुह पिल्लैं दल, तो तुम करहु सहाय खडि खल१७३
यह कहि विप्र तास गृह पत्तो, संग सबहि सुभटन अनुरत्तो ॥
वह वजीर वैरखानमुहुम्मद, हुसनअली सुहन्यौं जिहिं सप्पद१७४
मद१पद२ अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥

सुभट संग सहँसन तूरानी, इम बरजोर रहैं अभिमानी ॥
यह द्विज वीर गयो तस आलय, रोके भट सु रुकेन वहे रय१७५
दै पय खान मुहुम्मद गहिय, इहिं देल छाप करहु यह वहिये ॥
लखी वजीर छाप यह लैहैं, जोर करैं अतिवल हनि जैहैं॥१७६॥
इम बिचारि पत्र सु छप्पो उन, हटि भग्गो तबतैं दुख हिंदुन ॥
सक गुन अठ सत्त इक१७८३अतर, किय बरजोर समुंदसु कैंगर१७७
यह जयसिंह अपूरव किन्नी, नागर किति बंटि इम लिन्नी ॥
बहु ऐसी किन्नी कूरम बरैं, कहि साहहि मिटवाय गया कर१७८

[पट्पात]

---

१ लोभी॥ १६९॥१७०॥२यामी ॥ १७१ ॥ ३घोडों के सवार ४ अरब॥१७२।५पत्र ६ सन्मुख सेना भेजे तो ॥ १७३ ॥ ७ वजीरों में श्रेष्ठ ॥ १७४ ॥ ८ समक पर ९घड वेग से ॥ १७५ ॥ १० इस पत्र पर छाप करो यह ११ कहा ॥ १७६ ॥ घस।१२पत्र को१३मुद्रा (छाप) सहित किया ॥ १७७ ॥ १४ श्रेष्ठ॥ १७८ ॥

कौटिक[1] अरु कांदविक[2] द्रव्य विक्रय[3] ढिग धारैं ॥
अनुक्रम आपन[4] अवलि[5] क्रय[6] निज निज वित्थारैं[7] ॥
सोहू साहहिं अक्खिय प्रबल मेटी कूरमपति ॥
इम करि कित्ति[8] अनेक साह सेयो नय सम्मति ॥
लहि धरम मग्ग मनुमत[8] समुझि श्रुति[9] निदेस कछु अनुसरिय ॥
पटु बुद्धि भयो इहिं समय [10]पै कहिहैं [11]दस[12] अनुचित करिय ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे उदयपुराधीशराणासंग्रामसिंहरामपुरविजयन १ कोटाधीशमहारावभीमसिंहस्य वल्लभसंप्रदायानुयायिताहेत्वन्तर्हितत्वकारणमरणप्रख्यापन २ महारावमरणज्ञानकोटाहरणहेतुबुन्दीनगरसालमसिंहकोटानगरगमन ३ अकस्माद्रात्रिसमयगोकुलागतभीमसिंहसमरपराजितसालमसिंहपलायनभीमसिंहबुन्दीहरण ४ आमेराधीशजयसिंहस्ययोधपुराधीशाजितसिंहकन्याविवाहन ५ कोटामहारावभीमसिंहदलावरखांसमरमरण ६ पुनर्बुधसिंहा-

---

१खटीक [कसाई] और २कंदोई हलवाई ३ बेचने की वस्तु पास पास रखते थे अर्थात् मांस और मिठाई पास पास बिकती थीं अनुक्रम से४बाजार में५पंक्ति बांधकर ६ अपनी अपनी बेचने की वस्तु को फैलाते थे ७ कीर्ति ८ मनु के मत [मनुस्मृति] को समझकर ९ कुछ वेद की आज्ञा के साथ चला १० परन्तु ११ जयसिंह ने दश बातें अनुचित कीं जो आगे कहेंगे ॥ १७९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के पति बुधसिंह के चरित्र में उदयपुर के महाराणा संग्रामसिंह का रामपुरा विजय करना १ कोटा के महाराव भीमसिंह का वल्लभ मत धारण करके पड़दा में रहने के कारण मरना प्रसिद्ध होना २ महाराव को मराहुआ जानकर कोटा लेने के अर्थ बुंदी से सालमसिंह का कोटे जाना ३ गोकुल से अचानक रात्रि के समय आये हुए भीमसिंह से सालमसिंह का पराजित होकर भागना और भीमसिंह का बुंदी लेना ४ आमेर के राजा जयसिंह का जोधपुर के राजा अजितसिंह की पुत्री से विवाह करना ५ कोटा के महाराव भीमसिंह का दलावरखां के युद्ध में दक्षिण में मारा जाना ६ बुन्दी का फिर बुधसिंह

धिकारबुन्दीगमन ७ अर्जुनसिंहकोटापट्टप्रापण ८ जयसिंहमारणार्थसपवनेन्द्रप्रयाणकर्तृसय्यदहुसनअलीछलमारकयवनेन्द्रमुहम्मदशाहपुनर्दिल्लीगमनजयसिंहार्थाकबरपुराधिकारसमर्पण९ मरुदेशोपरियवनेन्द्रसेनायानभीतपत्ताधिताजितसिंहनिजज्येष्ठात्मजाभयसिंहदिल्लीप्रेषण १० यवनेंद्रनिदेशनिजानुजबखतसिंहकरमारितजनकाजितसिंहाभयसिंहयोधपुरपट्टाधिगमन ११ गृहीतयवनेन्द्राज्ञाभयसिंहनिजानुजबखतसिंहार्थनागाधिराजपदसहितनागोरनगरराजप्रदान १२ अभयसिंहस्य जयसिंहकन्यापाणिग्रहण १३ जयसिंहरयानुचितहिन्दुकरमोचन १४ जयसिंहानेकप्रशंसनीयकार्यगणनासहितदनुचितदशकार्यप्रदर्शनप्रतिज्ञान षड्विंशो मयूख ॥ २६ ॥

आदितश्चतु:षष्ट्युत्तरद्विशततम ॥ २६ ॥

[दोहा]

इत कोटा अर्जुन नृपति, पायो त्रिवरख प्रान ॥[1]

के अधिकार में होना ७ कोटा में अर्जुनसिंह का गद्दी बैठना ८ जयसिंह को मारने के लिये पादशाह सहित चढाई करनेवाले सय्यद हुसनअली को छल घात से मार कर बादशाह मुहम्मदशाह का पीछा दिल्ली जाना और जयसिंह को आगरे का सूबा देना ९ मारवाड पर पादशाही सेना जाने के कारण डरकर भागेहुए राजा अजितसिंह का अपने बड़े पुत्र अभयसिंह को दिल्ली भेजना १० बादशाह की आज्ञा से अपने छोटे भाई बखतसिंह के हाथ से पिता अजितसिंह को मरवाकर अभयसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बैठना ११ बादशाह की आज्ञा लेकर राजा अभयसिंह का अपने छोटे भाई बखतसिंह का राजाधिराज की पदवी के साथ नागोर का राज्य देना १२ राजा अभयसिंह का राजा जयसिंह की पुत्री से विवाह करना १३ जयसिंह का हिन्दुओं के ऊपर से अनुचित कर का छुड़ाना १४ जयसिंह के अनेक प्रशंसनीय कार्यों की गणना के साथ उनके दश अनुचित कार्य बताने की प्रतिज्ञा का छब्बीसवां २६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ चौसठ २६४ मयूख हुए ॥

[1] तीन वर्ष जीवित रहा

स्यामस रु दुज्जनसल्लके, भो भू छित धमसान ॥ १ ॥
आमेज स्यामसिंह मारिकै, सो नृप दुज्जनसल्ल ॥
बुंदीपर दावा बिरचि, हठि सु बिचार सहल्ल ॥ २ ॥
इत दिल्लिय कूरम अधिप, साह त्रिवर्षन सेव ॥
सक्क चउ४बसु सत्रह१७८४समय, आयो निजन अमेव ॥ ३ ॥
करि अमात्य नगराज दिय, बुंदिय कुलमँ पठाय ॥
बुंदीपति इहिं पर बिमर्न, रक्खत चित्त रिसाय ॥ ४ ॥
कछवाही प्रति नृप कहिय, अंनुज प्रबोधहु आज ॥
राज तुम्हैं जो दब्बनौं, तो रक्खहु नगराज ॥ ५ ॥
भ्रातहिं इम रानी भनत, कह्यो तमकि कछवाह ॥
भगिनी तुमरी भुम्मिकों, चित्त न रक्खत चाह ॥ ६ ॥
जामिपै अलस प्रमाद जुत, अरु तुमरी मति एह ॥
गेह छिर भूपन बिगरते, बिगरयो इक्कहि गेह ॥ ७ ॥
हम आन्यौं बिगरत बिभव, लैहैं अरहु उधारि ॥
तुमरी मति भ्रम माँहिं तो, हमहु दयो हित टारि ॥ ८ ॥
यह कहि नृप जयसिंह तब, लिय नगराज बुलाय ॥
रंच सिराही रॉगिनी, इहिं पर बुंदिय राय ॥ ९ ॥
चुंडाउति उर जो भयो, कुमर पदम अभिधान ॥
किय महाप्रस्थानँ ॥ १० ॥
आमेय बस तिहिं इन दिनन, बुल्लयो बिबिध रिसाय ॥
लाधाउत कूरम नृपति, बुंदिय सालम आय ॥ ११ ॥
राजकाज लग्गो करन,

---

१ स्यामसिंह और दुज्जनशाल के भूमि के अर्थ युद्ध हुआ ॥ १ ॥ ३ बड़े भाई स्यामसिंह को ॥ २ ॥ ४ बादशाह की तीन वर्ष सेवा करके ५ अपने घर (आमेर) आया ॥ ३ ॥ ६ प्रधान (कामदार) ७ जयसिंह ने ८ उदास ॥ ४ ॥ ९ बुधसिंह ने कहा १० छोटे भाई [जयसिंह] को समझाओ ॥ ५ ॥ ११ क्रोध करके १२ बहिन ॥ ६ ॥ १३ बहिनोई ॥ ७ ॥ ८ ॥ १४ रानी सो ॥ ९ ॥ पद्मसिंह १५ नाम का १६ रोग [illegible] वश १७ परलोक गया ॥ १० ॥ १८ बुलाया ११ ॥

कछवाही रान याहिपर, कछु प्रसन्न बुंदीस ॥
चुडाउति रट्ठोरि गिर, यहहि रही बनि ईस ॥ १२ ॥
दिल्लीसन बुंदीस जब, ढुंढाहर धर आय ॥
चुडाउति रट्ठोरि तब, लिन्नीही बुलवाय ॥ १३ ॥
कछवाहीके डर दुहुँन२, रक्खि *निवाई नैर ॥
पटरानीके वचन वसि, अप्प रहिय आमैर ॥ १४ ॥
नाम भावानीसिंह निज, पटरानी किय पूत ॥
औरस वो कृत्रिम यहै, सु हम न जान्यौं सूत ॥ १५ ॥

पादाकुलकम् ॥

सिख तब रानी सुतहिं सिखावहिं, पति ढिग भोजन काल पठावहिं
अग्गज कुमार असनहित अक्खहिं, भिन्न थाल भोजन तब रक्खहिं १६
उर भ्रम सबन यहै लखि आन्यौं, पै काहू न तत्व पहिचान्यौं ॥
छित्तरसिंह इन्द्रगढ स्वामी, नृप ढिग मिलन आय भट नामी ।१७।
भुज्जन नृप बैठो छित्तर सह, रानी तबहु पुक्कल्यो सुत वह ॥
छित्तर लग्गि ताहि बैठावन, दिय तब नृप उत्तर छल दावन।१८।
खलु सुर अर्चन कछुक रह्यो खिल, करि वह इक्क थाल भुंज्जहिं कैल ॥
दिन प्रति इम बढि बढि भ्रम दोरयो, सोतिन आदि सबन मन मोरयो ॥ १९ ॥
रानी अब नृप सीस रिसावैं, पुत्तहिं असनैंकाल न पठावैं ॥

॥ १२ ॥ १३ ॥ * निवाई नामक नगर में ॥ १४ ॥ १ कछवाही ने २ कछवाही के डर से उत्पन्न हुआ था या कृत्रिम (बनावटी) था सो ३ ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि यह हमने भी नहीं जाना ॥ १५ ॥ ४ भोजन करने के अर्थ ५ कुमार को भेजे ६ थाल में ॥ १६ ॥ १७ ॥ ७ भोजन करने को ८ छीतरसिंह के साथ ॥ १८ ॥ ९ निश्चय ही १ देवपूजन (कुमर के अर्थ देवताओं की अनुष्ठान करी थी सो) करना १० बाकी है सो ११ वह पूजन करके १२ एक थाल में कुमर के साथ १३ निश्चय ही भोजन करेंगे ॥ १९ ॥ १४ भोजन के समय

नृप जयसिंह यहैं नहि जानैं, मिथ्याही भगिनी रिस मानैं ॥२०॥
प्रीति दिखाय रह्यो नृप उप्पर, अरुचि धरैं रानीपर अंतर ॥
*कुम्महिं नहिं बुंदीस कहावैं, †पुत्तहिं लखि ‡संतत दुख पावैं॥२१॥
सक चउ४वसु सत्रह१७८४संवच्छरे, धल्लपो यह विग्रह बुंदियघर ॥
लोकहु बहु बदनीति मचाई, सुनि सुनि सब जयसिंह पचाई ।२२।

(षट्पात्)

बुंदी लोकन बहु अनीति आमेर मध्प किय ॥
सठ नाजर किसतूर नगर कुतवाल मारि लिय ॥
पकरि पकरि परदार जार बहुतन गहि रक्खी ॥
मार लूट मचवाय नगर लज्जा सब नक्खी ॥
सुनि सुनि अनीति कूरम सहिय कहिय कछु न बुंदीस प्रति ॥
जिम जिम सही सु तिम तिम जुलम अनय प्रचारयो नरन अति२३

(दोहा)

दिन दिन अब कूरम दुमन, कह्यो कछूहुन जाय ॥
अंधु छाँह जिम कछु अनख, राखी हृदय समाय ॥ २४ ॥
सुता रान संग्रमकैं, ईडरपति भानेज ॥
स्वसा सहोदर नाथकी, उपयम उचित अजेज ॥ २५ ॥
लै चर ताके लाँगली, आये जैपुर अत्थ ॥
सुभट केसरीसिंह पुर, सँलूमरिप के सत्थ ॥ २६ ॥
सगपन ईश्वरिसिंहसौं, कूरम सुतसौं ठानि ॥
कछवाही भ्रातहिं कह्यो, मम सुत ब्याह प्रमानि ॥ २७ ॥

॥ २० ॥ * जयसिंह को † पुत्र को ‡ निरंतर ॥ २१ ॥ १ सम्वत्सर (वर्ष) में ॥ २२ ॥ २ पराई स्त्रियों को ३ अनीति ॥ २३ ॥ ४ उदास ५ कुए की छाया के समान ॥ २४ ॥ ६ सगी बहिन ७ नाथसिंह की, जिसको मेवाड़ में नाथजी' कहते हैं ८ विवाह के उचित ९ विलंब रहित शीघ्र ॥ २५ ॥ १० नारियल ११ यहां १२ सलूंबरके पति के साथ ॥ २६ ॥ २७ ॥

भ्रात स्वीय भानेजहु, ब्याह उचित अब एह ॥
करिये सगपन रानके, कुमर सुतो तस गेह ॥ २८ ॥

(गीर्व्वाणभाषा)

(इन्द्रवज्रा)

श्रुत्वेत्थमाहूय सलूमरीश चुराडाउत केसरिसिंहसंज्ञम् ॥
राणेशसामतचयोडुचन्द्र प्रोवाच ढुंढारधराधवरतत् ॥ २९ ॥

[स्रग्धरा]

बुंदीधीशात्मजोपञ्ज्वलनकुलमणिर्भागिनेयोऽस्मदीयो,
युष्मज्जामातृभावगमितमुचित इत्येवमालोच्य तस्मात् ॥
अस्मायष्टाऽब्दकायाप्युदयनगरनाथेन पद्मायना सा,
राणेनादिराज्ञा लवजननभृता सव्विवाह्या स्वपौत्री॥३०॥

(स्रग्विणी)

इत्थमाकर्ण्य वुन्दीनरेशस्तदाऽऽहूय चुराडाउतम्प्रावदत्स्वम्मतम् ॥
राणराजा ध्रुवनघ्निकोढाहकृन्नोररीकार्यमस्मन्निदेशं विना ॥ ३१ ॥

प्रायोदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

कूरमपति यह बत्त सुनि, सभर भूप समीप ॥

१हे भाई२तुम्हारा भानजा भी३राणा के कुमर के पुत्री है॥२८॥ऐसा सुन कर केसरीसिंह नाम सलूमर के पति को बुलाया जो राणा के तारों रूपी उमरावों में चन्द्रमा रूपी था उससे ढुंढाहड़ के पति ने विवाह सम्बन्धी बातें कहीं ॥ २९ ॥ यह अग्नि वंश का मणि बुन्दी के पति का पुत्र और हमारा भानजा है, इसकारण से निश्चय करके तुम्हारा जमाई होने के योग्य और उचित है सो विचारो इसका शरीर आठ वर्ष का है और यह उदयपुर के पति की कन्या ८ वर्ष की है महाराणा लव के वंश को धारण करनेवाले आदि राजा हैं, सो अपनी पोती को अच्छे प्रकार से विवाहने योग्य हैं ॥ ३० ॥ इस प्रकार सुन कर बुन्दी के राजा ने उस सलूंबर के पति चुंडावत को बुला कर अपना सिद्धान्त कहा कि मेरी आज्ञा के बिना राणा की पोती के विवाह का कार्य स्वीकार मत करना ॥ ३१ ॥ ४ राजा बुधसिंह के पास

कूरम पुच्छन सुकल्यो, *कुंभानी भट †दीप॥ ३२ ॥

[षट्पात्]

दीपसिंह कछवाह जाय बुंदीस निकट तब ॥
यह सगपन ‡अवरोध संधि §अंजलि पुच्छ्यो सब ॥
कहिय बुद्ध सुनि कुमर आँहिं मम ¶जात नाँहिं यह ॥
रानी कृत्रिम रचिय सोति सुत +जानि गब्भ सह ॥
जो चहत भूप जयसिंह अब बंस बरनसंकर करन ॥
तो उदयनैर व्याहहु सुतहिं निगम रीति यह उचित नन॥३३॥

दोहा ॥

यह कहि मुद्रा [२]रजतमय, सत्तरि सहँस १००००मँगाय ॥
दिन्नी [३]कूरम दीप हित, न्याय तथा अन्याय ॥ ३४ ॥
न लिय दीप तब कहिय नृप, जंपि सपथ छल जोरि ॥
इम थिति रक्खहु सम्मय हित, लैहैं संगि बहोरि ॥ ३५ ॥
दीपसिंह जान्यों बहुरि लैहैं द्रव्य मँगाय ॥
[४]पत्तो पुनि नृप पास पै, [५]जुलम कह्यो नहिं जाय ॥ ३६ ॥
कूरम नृप [६]सुभटहिं कह्यो, पुच्छी सो कहिदेहु ॥
कहिय दीप तिन अलस करि, अबही कह्यो न एहु ।३७।
आक्खिय तब जयसिंह यह, रखत [७]जामि पर रीस ॥
कुमरहिं [८]इम कृत्रिम कहत, [९]बिरचि अनय बुंदीस ॥ ३८ ॥
यह कहि बुंदी ईस प्रति, कहि पठई कछवाह ॥
मम [१०]जनपदं अब रहहु मति, चलहु [११]जैत्थ चित चाह ॥ ३९ ॥

*कुंभाणत शाखा के कछवाह उमराव †दीपसिंह को भेजा ॥३२॥ ‡रोकने का कारण § हाथ जोड़ कर ¶ यह कुमर मुझ से उत्पन्न हुआ नहीं है + सौत को पुत्र वाली समझ कर गर्भ सहित १ वेद की रीति से यह उचित नहीं है ।३३। २ चांदी के रुपये ३ कछवाह दीपसिंह के अर्थ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ४ गया ५ परन्तु वहां जाकर यह जुलम की वार्ता नहीं कही ॥ ३६ ॥ ६ उमराव को ॥ ३७ ॥ ७ बहिन पर ८ इसकारण ९ अनीति ॥ ३८ ॥ १० मेरे देश में ११ जहां जी-

गीर्वाणभाषा ॥

इन्द्रवज्रा ॥

श्रुत्वेति बुन्दीनृप प्रमादी कूर्मेश्वरस्सत्यवदद्दलेन ॥
युष्माभिराहे प्रथम रहस्य तद्युष्मदुक्त सकल करिष्ये ॥ ४० ॥

अनुष्टुप् ॥

रहस्याहूय बुन्दीश जयसिंहस्तदा नृप ॥
पप्रच्छ जामिजोदन्त नम्रो नीतिपरायण ॥ ४१ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

आर्या ॥

सोऊण पयिउ रण्णा स्सालु दुट्ठकुल क्खु विय होइ ॥
णाणभे ओरसविट्टो राणीए कित्तमो किद्दो ॥ ४२ ॥

गीर्वाणभाषा ॥

शालिनी ॥

श्रुत्वेत्थं कूर्मराजो महात्मा प्यामर्षी भोग्नह्मभोगीवसर्प्प ॥
तर्जन्नुग्रो जामिपस्सत्युवाचास्मज्जामेये ऽनौरसे कोत्र हेतु ॥४३॥

चाहै वहा जाओ ॥ ३९ ॥ यह सुन कर छन्नमस्त बुन्दी के राजा ने कछवाहों के पति को पत्र से उत्तर दिया कि मैं पहिले आपके पास एकान्त चाहता हूं फिर आपका कहा हुआ सब करूंगा ॥ ४० ॥ तब बुन्दी के राजा को एकान्त में बुला कर उस नीतिनिपुण जयसिंह ने नम्र होकर मामले का वृत्तान्त पूछा ॥४१॥

संस्कृत अनुवाद ॥

श्रुत्वा कथं राज्ञः श्यालदुष्टकुल खलु एव भवति ॥ नन भूत औरसपुत्रो राज्या कृत्रिम कृत. ॥ ४२ ॥

भाषानुवाद ॥

यह सुन कर राजा बोला कि ह साला मेरा भ्रष्टकुल दुष्ट (दूषित) होजावेगा क्योंकि यह औरस पुत्र नहीं हुआ है रानी ने कृत्रिम किया है ॥ ४२ ॥ इस प्रकार सुन कर महात्मा कछवाहों के राजा ने क्रुद्ध होकर फण उठाये हुए सर्प के समान उग्र तर्जना करके बहिनोई (बुधसिंह) से कहा कि हमारे भानजे के अनौरस होने में यहां क्या कारण है ॥ ४३ ॥

प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ।

(षट्पात्)

कह्यो प्रकट कछवाह प्रीति तुमरी न जानियर ॥
सेवत श्रीगोविंद बीज इत्यादि कउलेवर ॥
चुंडाउति पर चित्त तात जो छांडि तनग तव ॥
देहो ताकहँ राज्य सोधि दगहु किन्नी सब ॥
बहु८बरस पालि पुत्रहिं सविधि धिक मन लिगु गाल धरिय॥
अभिसाप अप्प अप्पत अनग किन अलोकं जनमत करिय ।४४।

दोहा ॥

संभर अक्खिय एह सुनि, हमहिं कालिका ध्यान ॥
कछु करि संकट टारिहौ, सो सब करहिं प्रमान ॥ ४५ ॥
कूरम अक्खिय कउल तुम, सपथन नहिं बिस्वास ॥
लिखि स्वहत्थ अप्पहु लिखित, तब लैहै असुतास ॥४६॥
चुंडाउति रट्ठोरि कों, निपजहु पुत्र निसंक ॥
वाहि न दैहैं राज्य अब, अवरहिं लैहैं अंक ॥ ४७ ॥

(षट्पात्)

सुनत एह बुंदीस कूर निज हत्थ लिखित किय ॥
चुंडाउति रट्ठोरि जनित पै हैं नहिं बुंदिय ॥
तुम कर अप्पहि ताहि करहु अप्पन मन इच्छित ॥
कहिहो जिहि कछवाह सूनु थप्पहि करि सिच्छित ॥

१बाहिन पर २कारण ३हे वाममार्गियों ने ४ऐठ ५बरस चुंडाउति के अब ताप ६मिथ्या दोष देते हो सो जन्मते ही ४नाश क्यों नहीं करदिया ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ७तुम वाममार्गी हो इसकारण तुम्हारे सौगनों का विश्वास नहीं है ८ अपने हाथ से लिखावट लिखकर दो ९ तब उस लड़के के प्राण लेवेंगे ॥ ४६ ॥ १० दूसरे को गोद लेवेंगे ॥ ४७ ॥ ११ कूड़ (मूर्ख) ने यह लिख दिया कि १२ चुंडावतों और राठोड़ी के पुत्र होवेंगे सो हम तुम्हारे हाथ में देवेंगे फिर तुम १३ अपना मन का चाहा करना १४ हे कछवाह १५ शिक्षित

दलें दियउ एह जयसिंह कर सक्खी लिखि हड्डन सवन॥
कोऊन लिखत ऐसी कुविधि लिप्प्यो जिम संभर लिखन४८

(शुद्धप्राकृतभाषा)

इम लिहिअ कत्तु तदो प्पिअवयणेहिं णिहाय सवन्धम् ॥
रणा जयसिंहाण सुज्जकुमारी णिअप्पजा दिन्ना ॥ ४९ ॥

(षट्पात्)

याहि बरस जयसिंह नगर जयपुर बसवायो॥
सित सहस्य द्वादसिय १२ मकर रवि लगन मिलायो ॥
सिल्प तंत्र अनुसार सबहि व्यवहार सधाये ॥
बारह१२कोस बिथार बिबिध प्राकारं बधाये ॥
रचि जुकति दम्म कोटिन खरचि पुर अपुब्ब किन्नौं प्रकट॥
हिंदुवसथानें दूजो नहिन सहर प्रातिबिंबक सुघट ॥ ५० ॥

गीर्व्वाणभाषा ॥

भुजङ्गप्रयातम् ॥

विधायैवमग्र्यम्पुरं कूर्मराज श्रुतीर्धीर आसेव्य लब्ध्वा स्मृतीश्च॥
द्विजेन्द्रान् समाहृत्य धर्मानुगस्तत्सवर्णाश्रमश्रेय आविश्चकार ५१

---

१ पत्र २ साक्षी ३ बुधसिंह ने लिखा जिसप्रकार ॥ ४८ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

एष लिखितं कृत्वा तदा प्रियवचनैर्निधाय सम्बन्धम् ॥ राज्ञा जयसिंहाय सूर्यकुमारी निजात्मजा दत्ता ॥ ४९ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

तब ऐसा लिखित करके प्रिय वचनों से सम्बन्ध स्थापन करके उस राजा (बुधसिंह) ने जयसिंह को सूरजकुमारी नाम अपनी पुत्री दी ॥ ४९ ॥
४ पौष सुदि बारस ५ शिल्प शास्त्र के अनुसार ६ विस्तार ७ कोट ८ युक्ति ९ रुपये १० अपूर्व ११ हिन्दुस्थान में १२ इसके सदृश प्रतिबिंबवाला ॥ ५० ॥ धर्म को धारण करनेवाले कछवाहों के राजा जयसिंह ने इसप्रकार प्रधान नगर [जयपुर] बसाकर वेद विहित कर्म करके स्मृतिशास्त्र पाकर ब्राह्मणों को एकत्र करके धर्म शास्त्र की मर्यादा से चलकर चारों वर्ण और आश्रम के कल्याण कारी मार्ग को प्रकट किया ॥ ५१ ॥ वह अग्रणी राजा बुद्धि

धिया रत्न१४विद्याःसमाकर्ण्य धौर्यस्ततोऽनीतिमेत्य प्रकृष्टाः कलाश्च।
यतद्वृद्धराज्यांगसप्तोपपुष्टो जनेनाऽनूनान्समाक्रम्य तस्थौ ॥५२॥
मुखम्पुण्यभूमीश्वराः प्रक्षमाणा वजीरश्च यद्बुद्धिवेगन्न जग्मुः ॥
विहायैव तन्म्लेच्छभूपोऽप्यन्यभूपानियायोच्चमालंवमामेरमौलिम् ॥५३
विधायाऽग्निहोत्राऽध्वराद्येकयज्वा नियम्याऽप्यधर्मं हर्याकेशभक्तः॥
सितारेशदिल्लीशसंपृष्टमंत्रः कृती पुण्यभूमौ बभूवाग्र्यनामा॥५४॥
कृतो धीसखः खानदौराऽभिधेन प्रणत्यैव दिल्लीन्द्रसेनाधिपेन ॥
महात्मा स विष्णवात्मजः कूर्मराजो रराजाखिलेष्वर्यमैको यथाह्नि

(कामक्रीड़ा)

तंत्रावापोपेतं स्कन्धावारं सर्वोच्चीकुर्वन्,
वब्राज श्रीविष्णुत्रातो नीत्या दिल्लीशोन्मुखपथम् ॥
आन्वीक्षिक्या धर्मार्थार्थी चक्रे राज्यं कृत्वारिं,
भोजाचारं भेजे भूम्पूज्याशीर्भ्राजद्भूभर्त्ता ॥ ५६ ॥

से चौदह विद्याओं को पढ नीति शास्त्र को प्राप्त हो चौसठ कलाओं को सीख यत्न करते हुए और बढे हुए राज्य के सातों अंगों में पुष्ट होकर अपने से न्यून नहीं ऐसे राजाओं को दबाकर रहने लगा ॥ ५२ ॥ आर्यावर्त के राजा उसका मुंह ताकते थे और बडे बडे वजीर उसकी बुद्धि के वेग को नहीं पहुंचते थे बादशाह भी दूसरे राजाओं को छोडकर आमेर के मुकुट (जयसिंह) को ऊंचा [बडा] आलंबन समझते थे ॥ ५३ नित्य यज्ञ करके नैमित्तिक यज्ञ का एक ही कर्ता पापों का निवारण करके ईश्वर का भक्त जिससे सितारा और दिल्ली के पति सलाह पूछते थे ऐसा चतुरों का अग्रणी (जयसिंह) आर्यावर्त में हुआ ॥ ५४ ॥ बादशाह के सेनापति खांनदौरां ने बडी नम्रता के साथ उस राजा को अपना मंत्री (सलाहकार) बनाया. विष्णुसिंह का पुत्र महात्मा वह कछवाहों का राजा सब में ऐसा प्रकाशमान हुआ कि जैसे दिन में अकेला सूर्य होता है ॥ ५५ ॥ राज्य वृद्धि और शत्रु वश करने की चिन्ता सहित, राजधानी को सब से उच्च बना कर श्रीविष्णुभगवान् से रक्षित जयसिंह नीति से दिल्ली के सन्मुख गया और ब्राह्मणों के आशीर्वाद से राज नीति के अनुसार, धर्म और अर्थ [पुरुषार्थ] को चाहता हुआ वह तेजस्वी राजा शत्रुओं का नाश करके भोज के समान राज्य करता था ॥ ५६ ॥

(नर्कुटकम्)

मतिरुड्डुराश उत्वगादारदतमिश्रहरि,
समिदतत्तरगर्णवविलङ्घन एकतरि ॥
जयनयधार्य्यकार्य्यमननार्य्य उदग्रगति,
भुवि यशसा रराज जयसिंह इलाधिपति ॥ ५७ ॥

प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

[षट्पात]

इम कूरम जयसिंह हिंदु मिच्छन उप्पर हुव ॥
जाप धरम श्रुति जजन भूरि अध्वर बित्थरि भुव ॥
निंदत निगम पिछानि जार तुरकान प्रजारन ॥
सहर सितारा धीस मत्रि बुल्ल्यो तिन मारन ॥
साहू नरेस लहि तब समय दिल्लीपति उप्पर दुसह ॥
सिंधिया बहुरि हुलकर सुभट पिल्ले दुवर दल अमित मह ॥ ५८ ॥

दोहा ॥

नृप साहू नवलक्ख ९००००० दल, सहर सितारा ईस ॥
पिल्ले हुलकर सिंधिया, दब्बन भुव दिल्लीस ॥ ५९ ॥
इन अवरंगाबाद लरि, पहिलैं अमल प्रचारि ॥
बई नागर सूबा अधिप, दयाबहादुर मारि ॥ ६० ॥

भूपति राजा जयसिंह अपने यश से पृथ्वी पर प्रकाशमान था जो बुद्धि के लिये चन्द्र रूप और उत्कट (उग्र) दरिद्र रूपी अथवा अनीति रूपी अन्धकार का नाश करने को सूर्य रूप, युद्ध रूपी अथाह समुद्र को लांघने के लिये अद्वितीय नौका [नाव] रूप जय और न्याय से धारण करने योग्य कार्य का विचार करने में श्रेष्ठ और बड़ा ऊंचे पदवाला शोभायमान हुआ ॥ ५७ ॥ १ यज्ञ २ देवपूजन ३ बहुत यज्ञ ४ भूमि पर विस्तार [फैला] कर ५ वेद की निंदा करने वाले समझ कर यवनों का बल जलाने के अर्थ ६ सितारा के दोनों उमरावों को भेज ७ सेना के अत्यन्त उत्साह से ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ८ वह हिंदुओं के कर छुड़ाने के पत्र पर छाप करानेवाला नागर जाति का ब्राह्मण ॥ ६ ॥

इत *गुज्जर धर जवन इक, सरबिलंद †सप्रसाद ॥
सूबापति वह साहको , नगर अहमदाबाद ॥ ६१ ॥
सु[1] बसु[2] गाम सत्तरिसहँस७००००, आयसुँ[3] जास अधीन ॥
मरहट्ठन सोहू मिल्यो, लिखि पत्रन अँघ[4] लीन ६२ ॥
उज्जइनी अकबर[5]नगर, अरु पत्तन अजमेर ॥
सूबा त्रय३ जयसिंहकैँ, सो बुल्लत बल[6] सेर[7] ॥ ६३ ॥
इत खटकत दिल्ली उदर, साह मुहम्मद सूल ॥
कंटक अरि काजीन[8]कौँ, अनय अैस अनुकूल[9] ॥ ६४ ॥
मंद[10] नपुंसक[11] रत मुदित, यौँही पुनि अनुचार[12] ॥
रक्त[13] कापिसायन रहत, सचिवैँहु[14] मंद समार[15] ॥ ६५ ॥
मोजदीनतैं इक्कसे, भये पंच५ दिल्लीस ॥
दिन दिन बोरि कुरान दिय, रचिय नबी[16] पर रीस ॥ ६६ ॥
इत बुंदिय पति लिखित करि, रचि सालकैँ[17] सन साम ॥
बिट्टी[18] हित जयसिंह बरि, आरंभिय उपयाम[19] ॥ ६७ ॥
नगर निवाई हितु[20] लिय, रानी उभय२ बुलाय ॥
सुज्जकुमरि[21] जयसिंहकौँ, प्रथित[22] दई परिनाय ॥ ६८ ॥
संगानैर समीप यह, बुंदीपति किय व्याह ॥
दायज बसु[23] त्रय लक्ख३०००००दिय, अधिक दिखाय उछाह ६९
सक चउ बसु सत्रह१७८४समय, तिथि तपस्य[24] सित आदि ॥

---

*गुजरात में †प्रसन्नता सहित ॥ ६१ ॥ १ सो २ धनवान अथवा श्रेष्ट धनवाले ग्राम ३ जिसकी आज्ञा में ४ पाप में ॥ ६२ ॥ ५ आगरा. उस जयसिंह ने ७ बलवान सेना को ६ बुलाई २ ॥ ६३ ॥ ८ काजियों का शत्रु ९ आसक्त ॥ ६४ ॥ १० वह मूर्ख ११ हींजडों से रत[मैथुन]करने में प्रसन्न १२ चलन [बरताव] १३ मद्य में आसक्त १४ उसका वजीर भी मूर्ख १५ कामी था ॥ ६५ ॥ १६ खुदा [यावनी भाषा का ईश्वरवाची शब्द है] ॥ ६६ ॥ १७ साले जयसिंह से मिलाप[सुलह] १८ बेटी [पुत्री] के अर्थ १९ विवाह ॥ ६७ ॥ २० से २१ सूरजकुमारि २२ प्रसिद्ध ॥ ६८ ॥ २३ धन ॥ ६९ ॥ २४ फाल्गुन सुदि एकम

कूरम इम *जामात किय, पति चहुवान †प्रमादि ॥ ७० ॥

पादाकुलकम् ॥

यह विचार समर उर आयो, कूरम ‡रिस बसि लिखित करायो ॥
अब रिस गयें लिखित मुहि अप्पहिं, थिर सुत §अंक लेन नहिं थप्पहिं
बिट्टी निज यह सोधि बिवाही, सत्य लिखित कूरम यह साही ॥
ओरस सुत होहि सु हम लैहैं, दायादजहि अंक धरि दैहैं ॥७२॥
मम जामिज कृत्रिम जिहिं मानत, मारहिं तिहिं अब न्याय लि-
खित मत ॥
जामिंप अंक अवर कोउ रक्खहिं, चुडाउति न पुत्र फल चक्खहिं ७३
यह जयसिंह नियम अवगाह्यो, सत्य लिखित उप्पर हठ साह्यो॥
बुंदीपति अब दुमर्न बिचारैं, टेक न यह कूरम नृप टारैं ॥ ७४ ॥
बुंदी लिखित सग हम बोरी, जुल्लम भयो चलहिं न अब जोरी ॥
उर दयितां भव सुत अकूरी, मुरस्यो नृप लै इम ठग मूंरी ॥७५॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपति बुधसिंहचरित्रे कोटामहारावार्जुनसिंहमरणमारिताग्रजश्यामसिंहदुर्जनशालनृपीभवन १महाराणासंग्रामसिंहसुताया जयसिंहपुत्रेश्वरीसिंहेन सह सम्बधभणन २ बुंदीमहारावराजबुधसिंहस्य स्वात्मज-

---

* जमाई † भूल से [बुधसिंह ने समझा था कि इस सपथ और दायजा देने के कारण जयसिंह प्रसन्न होकर मेरे हाथ का लेख मुझे पीछा दे देवैगा, इस भूल से) ॥ ७० ॥ ‡ क्रोध के वश § गोद ॥ ७१ ॥ १ पुत्री २ कछवाहे ने इस बात को पकड़ी कि यह लिखावट सत्य है ३ सपिंडों में से ४ गोद रख देवेंगे ॥ ७२ ॥ मेरे ५ भानजे को ६ लिखावट के मत से ७ बहिनोई की गोद ॥ ७३ ॥ ८ उदास ॥ ७४ ॥ ९ डुबोई १० प्यारी चुंडावति के उदर में पुत्र के जन्म का अङ्कुर हुआ ११ ठगकीसी मूली [झूठी आशा] लेकर ॥ ७५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के राजा बुधसिंह के चरित्र मे कोटा के महाराव अर्जुनसिंह के मरे पीछे बड़े भाई श्यामसिंह को मार कर दुर्जनशाल का राजा होना १ महाराणा संग्रामसिंह की पुत्री की राजा जयसिंह के पुत्र ईश्वरीसिंह से सगाई होना २ बुंदी के महा

भवानीसिंहकृत्रिमत्वप्रदर्शनपूर्वकोदयपुरसंबंधनिवारणा ३ भवानीसिंहमारणावस्थायां दत्तजयसिंहचुंडाउतिराष्ट्रकूटीजठरजातजयसिंहदत्तदत्तकपुत्रार्थबुंदीराज्यप्रदानप्रतिज्ञाविषयबुधसिंहहस्ताक्षरकरणा ४ जयसिंहजयपुरनगरनिर्माणा ५ दिल्लीन्द्रपञ्चयवनेन्द्रनिन्दनजयसिंहमन्त्रागतमहरट्टदिल्लीधराक्रमणा ६ जयसिंहरूप बुधसिंहपुत्रीविवहनं सप्तविंशो मयूखः ॥ २७ ॥

आदितः पञ्चषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६५ ॥

नाराचः ॥

इतैं अरीन जावदाख्य नैर रानको हन्यौं ॥
सुनी अवाज कूर्मराज सज्ज भौंरकौं बन्यौं ॥
भनंकि भौंर झौंर के ठनंकि अंदु गै गुरे ॥
कुँदार नैंन चारके तुखार सज्ज संजुरे ॥ १ ॥

रावराजा बुधसिंह का अपने पुत्र भवानीसिंह को कृत्रिम बताकर उसके उदयपुर संबंध होने को रोकना ३ भवानीसिंह को मारडालने की अवस्था में चुंडाउति और राठोड़ी के उदर से पुत्र उत्पन्न होवें उन पुत्रों को जयसिंह को देकर जयसिंह के दिये हुए दत्तक पुत्र को बुंदी का राज्य देने की प्रतिज्ञा का बुधसिंह का अक्षर करना ४ राजा जयसिंह का जयपुर नगर बसाना ५ दिल्ली के पांच बादशाहों की निन्दा और जयसिंह की सलाह से आएहुए मरहठों का दिल्ली की भूमि को दबाना ६ जयसिंह का बुधसिंह की पुत्री से विवाह करने का सत्ताईसवां २७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ पैंसठ २६५ मयूख हुए ॥

इधर महाराना के १ जावद नामक नगर को शत्रुओं ने मारा [लूटा] जिसकी २ खबर कछवाहों के राजा (जयसिंह) ने सुनी इसकारण ३ सहाय करने को सज्जित हुआ सो ४ भ्रमरों का समूह उडकर ५ जजीरें बजकर ६ हाथी गुड़े (हाथियों को सज्जित करते समय उनको जमीन पर लेटाकर रज झाडने हैं इसी कारण उनका गुडना लिखा है) ७ कुदाटा (खोटी) ८ स्त्री के नेत्र चलने के समान चपल ९ घोड़े सज्जित होकर एकत्र हुए; अथवा कु (पृथ्वी) जिसको विदारण करनेवाले "दृविदारणे" इस धातु से दार शब्द का अर्थ विदारण है अर्थात् अपने चरणों के आघात से भूमि को विदारण करनेवाले और नेत्रों के

चमू हजार अश्व दान५० लै कृपान भानकी ॥
सिपाह कुम्भराय यों चल्यो सहाय रानकी ॥
बुलैं नकीब दोयसै २००हुलैं हरोल हाँकरैं ॥
झुकैं भटालि भीर त्यों रुकैं समीर साँकरैं ॥ २ ॥
बजैं निसान नाद सो दिसा दिसान बित्थरैं ॥
सँकूक ददसूककी फटा हजार फुक्करैं ॥
मवासँ बास आसपास जास त्रास कप्पये ॥
चकार चीस कैं पुरीसँ दिक्करीसँ चप्पये ॥ ३ ॥
चले मतंग आदि अंग स्याम रंग सज्जके ॥
कुरंग फाँद के चले तुरंग जंग कैज्जके ॥
चले दुबाह के सिपाह स्वामिधर्म सग्गले ॥
चली सु तोप सट्ठि६० त्यों चँटक्कि चक्र चीसलै ॥
मिलै प्रबीर पंतबाह पत्रबाहि बेधते ॥
कमान पंत्थके कमान पत्थकी निसेधते ॥
भिरे भुँवाँल भुम्मियाँ सु भागधेयँ भेटलै ॥

समान चलनेवाले [चपल] नेत्रों का धर्म ही चपल है इसकारण यह दूसरा अर्थ भी सगत है ॥ १ ॥ १ सूर्य के समान तेजवाली अथवा चमकती हुई तर वारें लेकर २ सेना के अग्रभाग को चलाने की हाक करके ३ वीरों की पंक्ति चलती है जिनकी सकड़ाई [भीड़] से ४ पवन रुकता है ॥ २ ॥ ५ न क्कारों का शब्द बजकर दिशा दिशाओं में ६ फैलता है जिससे ७ फूक स हित ८ शेषनाग के हजार ६ फण फुकार करते हैं "यहां हजार फणों के योग से सामान्य सर्प शब्द के होने पर भी शेषनाग का ग्रहण है" जिसकी त्रास से आस पास के १० चोरों और लुटेरों के स्थान धूजते हैं और चीस और ११ छाद [विष्टा] करके १२ दिशाओं के हाथी १३ दब ॥ ३ ॥ १४ हाथियों की कलाग भरनेवाले १५ युद्ध के काम के १६ वीर १७ पहियों के खिंचने का चीस करके [यह बल पूर्वक खिंचने के शब्द का अनुकरण है] ॥ ४ ॥ अत्यन्त वीर १८ बाणों से १९ पक्षियों को बेधते हुए मिले २० धनुष के मार्ग में (धनुर्वि द्या की रीति में) २१ अर्जुन के धनुष का निषेध करते हुए २२ भूपाल (राजा) औ र भूमिये २३ भाग्यशाली (धिराज) भेट ले लेकर मिले

कहौंन ओज[1] उन्नयो[2] जु तास[3] फोज भेटलै ॥ ५ ॥
फरक्कि केतु[4] गैंन यों बिजेय[5] बैंन बित्थरी ॥
सहाय दैंन कुम्म सैंन रान ऐंन[6] संचरी ॥
सुनी सु रान कान त्यौं प्रयानँ सम्मुहो[7] कियो ॥
हिले मिले दुहूँ २ नरेस हेत हुल्लस्यो हियो ॥ ६ ॥

[षट्पात]

मिच्छन धाटि[8] प्रपातं[9] रान जनपंद[10] जावद सुनि ॥
पृतना[11] सँहँस पचास ५०००० चंड[12] क्रोधन जोधन चुनि ॥
आमैरो नरनाह पत्त[13] हित चाह उदैपुर ॥
दहबारी लग रान आय सम्मुह मुद आतुर ॥
महिपाल उभय हिय लाय मिलि सुख सह पत्तन संचरिग[14] ॥
करि दल मिलान[15] कूरम रहिय सुपहु[16] रान महलन सरिगँ[17] ॥

[दोहा]

सक[18] सर बसु सत्रह१७८५समा, लहि कूरम निज भीर ॥
अति आदर शाँना कियउ, ठहै प्रंशामन[19] हमगीर ॥ ८ ॥
इक जामिप[20] पुनि दल[21] अतुल, बहुरि बढ्यो लहि काल[22] ॥
यातैं तँहँ प्रति नम्र अति, भयउ रान भूपाल ॥ ९ ॥
इक्क१ थाल क्रिन्नौं असन, पुब्ब[23] रीति सब पेलि ॥

---

१ किसीमें तेज [पराक्रम] २ नहीं उठा कि ३ उस जयसिंह की सेना से टक्कर लेवे ॥ ५ ॥ आकाश में ४ ध्वजा उड़कर ५ विजय करने के वचन फैले ६ राणा के घर में कछवाहे की सेना चली ७ महाराणा ने सम्मुख गमन किया ॥ ६ ॥ म्लेच्छों का ८ धाड़ा ९ पड़ना १० राणा के देश में ११ सेना १२ भयंकर क्रोधवाले १३ प्राप्त हुआ १४ पुर में गये १५ सेना का मुकाम करके १६ वह प्रभु राणा १७ चला ॥ ७ ॥ १८ विक्रम के शक में सत्रहसौ पिच्यासी के सम्वत् में १९ विशेष नम्र होकर ॥ ८ ॥ २० जामाता (जमाई) यहां 'जामि' शब्द का अर्थ 'पुत्री' है सो ही शब्दार्थ चिन्तामणि कारने लिखा है "जामिः. दुहितरि" बहुत २१ सेना २२ समय पाकर ॥ ९ ॥ २३ पहिले की जुदा भोजन करने की रीति को हटाकर

कछु अंतर हितमैं न किय, हिय तव हिंदुन हेलिं ॥ १० ॥
कूरमहु करजोरि कहि, प्रति नति करि पलटाव ॥
मंत्रहु-प्रणपत्र-सुभट मुहिं, जिम सोलह१६ उमराव ॥ ११ ॥
मैं इनहूसौं अनुगतम, ममहित नहिं मरजाद ॥
बिधि सब कैंहौं बदगी, पैहौं रान प्रसाद ॥ १२ ॥
यह कहि कूरम चमर गहि, कियउ रान सिर उट्ठि ॥
रचि अंजलि तव रानहू, वरजि निट्ठि हित बुट्ठि ॥ १३ ॥
इत्यादिक किय अनुगपन, कूरम हित निकरबं ॥
जामिपं विनु रानहु जप्यो, अवर न मम आलंब ॥ १४ ॥
(षट्पात्)
कूरम प्रति दिन इक कहिय सीसोद जोरि कर ॥
रामपुरेप सग्राम वदलि अब रहत टेक वर ॥
नैंकन करत निदेस भुम्मि अद्धी पुनि भुग्गत ॥
सुनि अक्खिय जयसिंह वाहि हनिहौं रन उद्धत ॥
रामपुर देहु मोकँहँ नृपति मैं सेवन करिहौं मुदितें ॥
कहि यह सलाम जयसिंह किय मुलक लेन लक्खन प्रमितें ॥१५॥
महासुंदरी ॥
सुनि यौं मन रानौं खिसानौं महा अहिग्रस्त छुछुंदरि ज्हैनौं परयो ॥
दुवखेर कही हमरोही हुतो तव दंम्म त्रिलक्ख३०००००० दै लैनौं परयो
सुनि यौंहू सलाम करी जयसिंह नयो तव रानकौं नैनौं परयो ॥

१ हिन्दुओं के सूर्य ने (यह महाराणा का विशेषण है) ॥ १० ॥ २ अन्तर में न म्रता का पलटा करके ३ आपका उमराव जिसप्रकार सोलह उमराव हैं तिसी प्रकार ॥ ११ ॥ इनसे भी अधिक ४ सेवक ५ करूंगा ६ प्रसन्नता ॥ १२ ॥ ७ हाथ जोड़कर ॥ १३ ॥ ८ सेवकपन ९ हितका समूह १० जमाई के विना ॥ १४ ॥ ११ रामपुर का पति १२ प्रसन्न होकर चाकरी करूंगा १३ लाखों की आमद के प्रमाणवाला ॥ १५ ॥ छछूंदर को पकड़नेवाले १४ सर्प के समान छ छूंदर को पकड़कर छोड़ने से सर्प अंधा होजाता है और खाने से मरजाता है १५ रुपये १६ जयसिंह झुका तब राणा को भी झुकना पड़ा

लिय साहकों सेय जो रामपुरा सु कृती कछवाहकों[1] दैनों पय्यो१६

(दोहा)

नीति निपुन भुव लोभ लगि, इम कूरम तहँ आय ॥
लियउ रामपुर रानसों, करि नुति[2] लिखित कराय ॥ १७ ॥
रान सचिव कायत्थ तहँ, कग्गरं[3] छाप करी न ॥
तब कूरम गृह जाय तस,[4] पाई नीति प्रवीन[5] ॥ १८ ॥
पटु प्रपंच इम रामपुर, लियउ नीति लगि लाह ॥
बहुरि रान सन अनुग[6] बनि, किय रहस्य[7] कछवाह ॥१९॥

(षट्पात्)

कहिय मंत्र कछवाह दइव[8] हिंदुन सुभ दायक ॥
मिटत जानियत मिच्छ निगम[9] निंदक भुव नायक[10] ॥
कबहु न सुनत कुरान नहिंन कलमा निमाज नंत[11] ॥
काजिन उप्पर क्रुद्ध मुद्ध[12] नन जात महज्जत ॥
रत पान कापिसायन[13] रहत मासूकन[14] जानत महत[15] ॥
बिधि थप्पि संड मोहन[16] बहत चित प्रपंच[17] कछुहु न चहत ॥
अब बिचारि हम एह मंत्रि[18] बुल्लत मरहट्ठन ॥
सजि प्रपंच तिन संग बोरि तुरकान हिंदु बन[19] ॥
हे नृप हिंदुन हेलि[20] अप्प इक१ छल रहहु अब ॥

---

१ वह चतुर कछवाहे को ॥ १६ ॥ २ स्तुति ॥ १७ ॥ राणा के प्रधान बिहारीदास कायस्थ ने ३ पत्र पर छाप नहीं की ४ उस बिहारीदास के घर ५ छाप कराई ॥ १८ ॥ ६ सेवक बनकर ७ एकांत में सलाह की ॥ १९ ॥ ८ भाग्य ९ वेद की निन्दा करनेवाले १० भूमि के पति ११ झुकते हैं (यावनी भाषा में परमेश्वर के वाक्य को कलमा कहते हैं अर्थात धर्मोपदेश को नहीं झुकते) १२ मूढ १३ मद्य पीने में १४ यावनी भाषा में प्रीति करनेवाले को आशक और जिस पर प्रीति कीजावे उसको माशूक कहते हैं उस माशूक को ही १५ बड़ा जानते हैं १६ नपुंसकों से मैथुन करते हैं १७ राज्य प्रबंध को चित्त पर कुछ नहीं चाहते ॥ २० ॥ १८ सलाह करके बुलाते हैं १९ हिन्दुओं रूपी जल में यवनों को डुबोकर २० हे हिन्दुओं के सूर्य

भुग्गहु दिल्लिय भुम्मि सचिव हम करहिं जेर सब ॥
मरहट्ठ पार मडहिं अमल अप्पन चम्मलि वार इत ॥
यह अक्खि बहुरि कूरम आधिप लिपउ हत्थ जामिपै लिखित॥२१॥

दोहा ॥

लिखवायो पहिलें लिखित, सभैग्गैं जयसीह ॥
सो दिखाय सग्रामकों, अक्खी सम्मत ईह ॥ २२ ॥

[षट्पात]

सुनहु रान सग्राम साल खट हय सत्रह १७७६ जब ॥
सभरपतिके सुनु भयो मम जामि जठर तब ॥
रखत जामिपर रीस कउल जागिप बिनु कारन ॥
कृत्रिम कहि सु कुमार मोहि गोपत अब मारन ॥
हम कहिय क्यों न जनमत हन्यों गत इहिं हान मपच आति॥
पापहु तथापि तुम करहु पै मम जनपद अब रहहु मति।२३।
उत्तर पुनि उच्चरिय कउल जगदब सपथ करि ॥
मैं नहिं हनन समत्थ अप्प यह हनहु वस ऑरि ॥
जुल्लमसीलें तुम जॉमि कलह हमसह वह कत्थहिं ॥
कछु तुमतैं नन कहहिं अप्प थप्पत श्रुति ग्रंत्थहिं ॥
यह अघ अरिष्ट तसमात अब कूरम जिम तिम मेट करि ॥
कहिहो जु सीस धरिहैं कथितें नहिं स्वतत्र रहिहैं निवारि।२४।
हठ उत्तर सुनि हमहु हेतुं कृत्रिम बिच हेरे ॥

---

१ चामल नदी के उधर २ चामल नदी के इधर ३ पहिनाई [बुधसिंह] की लिखावट हाथ में ली ॥ २१ ॥ ४ बुधसिंह से ५ राय दने की चेष्टा करी ॥ २२ ॥ ६ बुधसिंह के ७ पुत्र ८ मेरी बहिन के उदर से ९ मेरे देश में ॥ २३ ॥ १० सौगन ११ समर्थ १२ वश के शत्रु को (षर्यत्नकर हान के कारण यह भवानीसिंह का विशेषण है) १३ जुलम करनेवाला स्वभाव १४ तुम्हारी बहिन का १५ आप वद के १६ अथ का स्थापन करते हो इसकारण १७ पाप का उत्पात १८ हे कूरम (जयसिंह) १९ कहना ॥ २४ ॥ २० उस बालक के जाली होने के २० कारण।

पै[1] इक्कन तँहँ पत्त[2] बहुत ऋत[3] माँहि निवेरे ॥
कह्यो बुद्ध नृप कबहु निकट रानी मम नाई[4] ॥
यह जो तो किम अग्ग भये तदुदर[5] दुवरभाई ॥
पुनि कउल एह[6] वह[7] हरि प्रनत करैं न अघ इम[8] कोप कित ॥
बसु८बरस बहुरि न सुन्यौं बितथ[9] पुनि चुंडाउति अधिक प्रिय ॥२५॥
कुंभाँनी[10] भट दीप बहुरि पुच्छन पठयो हम ॥
रूप्पय सत्तरि सँहँस ताहि दिन्नैं प्रछन्नतम[11] ॥
तब मैं भंडारेज[12] छिन्नि भट दीप निकास्यो ॥
पंच हेतु इम पाय भगिनि पुत्रहि ऋत[13] भास्यो ॥
हम तब बिचारि चहुवान हठ प्रतिबंच[14] अक्खिय नीति पर ॥
करि लिखित देहु जिम हम कहत कृत्रिम तब मन्नहि कुमर ॥२६॥

(दोहा)

सीसोदनि रठोरि सुत, होहि सु तुमकों देहिं ॥
जु[15] तुम अंक[16] धरि थप्पिहो, सु सुत मन्नि हम लेहिं ॥२७॥
हम जान्यौं यह लिखित छठि, न लिखहिं बुद्ध नरेस ॥
हत्यातैं तब टरहिं हम, इहिं भल मारहु एस ॥ २८ ॥
लिखि पठैहु दुक्कर[17] लिखित, मम कर दिन्नौं मुग्ध[18] ॥
सब हड्डनको सक्खि[19] धरि, बालिस[20] पुंगव[21] बुद्ध ॥ २९ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

(आर्या)

---

१ परन्तु २ एक भी प्राप्त नहीं हुआ ३ सत्यता में ४ नहीं आई ५ उसके उदर से ६ बुधसिंह तो वाममार्गी और ७ राणी वैष्णव है ८ इसकारण ९ यह झूठे वचन ॥ २५ ॥ १० कुंभावत शाखा के उमराव दीपसिंह को ११ अत्यन्त छाने १२ नगर का नाम है १३ सत्य दीखा १४ पीछा वचन [प्रत्युत्तर] ॥ २६ ॥ १५ जो १६ गोद ॥ २७ ॥ २८ ॥ १७ दुष्कर [कठिनाई से किया जावे ऐसा] १८ मूर्ख १९ साक्षि २० मूर्खों में २१ श्रेष्ठ बुधसिंह ने ॥ २९ ॥

संस्कृत अनुवाद ॥

तह्मा लिहि अवकज्ज कज्जं अह्मेहिं सच्चवयणेहिम् ॥
तिम चेयवि तुह्मेहिं कज्जाकज्ज वियज्ज सीकज्जम्।३०।
इन्द्रवज्रा ॥
सोऊण सगामणरिस्सरोवि होऊण सक्खी लिहिअम्मि तह्मि ॥
घेत्तूण णाइ णिअलेहिणीए सो अप्पऊरीकरण लिलेह ।३१।
उपजाति ॥
खु पास्सए विन्दुमईसपट्टे अणोरसो तम्स धिय कुविट्ठो ॥
दिट्ठूण लेह बुहसीहकिद्ध सगामराणा लिहिअ मए वि॥३२॥
(इन्द्रवज्रा)
गाण भडाण विजिसोलहाण१६लेह दले सो इय लेहिऊण ॥
दिद्धं तदो कुम्मकरम्मि पणा लिद्ध हि तह्मा पिहुल पसाअम्।३३
प्रायोदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

तस्मात् लिख अपकृत्य कृत्यमस्माकं सत्यवचनेन ॥ तथैव युष्माभिर्रा कार्याकार्य विचार्य स्वीकार्यम् ॥ ३० ॥ श्रुत्वा सङ्ग्रामनरेश्वरोऽपि भूत्वा साक्षी लिखिते तस्मिन्॥गृहीत्वा नीतिं निजलेखिन्या सोऽपि आत्मीरीकरणं लिलेख॥३१॥खलु पार्श्वके विन्दुमतीपापत्रे अनौरसस्तस्य बुद्धौ कुपुत्र ॥ दृष्ट्वा लेखं बुधसिंहकृतं सङ्ग्रामराणेन लिखितं मयापि ॥३२॥ तेषां भटानामपि च षोडशानां लेखन्दले स इति लेखयित्वा ॥ दत्तं तदा कूर्मकरे पत्रं लब्धस्तस्मादपि प्रचुरः प्रसादः ॥ ३३ ॥

॥ भाषानुवाद ॥

इसकारण से हमारा कृत्य अकृत्य होवे सो आप सत्य वचन से लिखो तैसे ही आप भी इस कार्य अकार्य का विचार कर स्वीकार करो ॥ ३० ॥ यह सुनकर राणा सग्रामसिंह ने भी उस लिखित पर आप साची होने का नीति ग्रहण करके अपनी लेखिनी से स्वीकार लिखदिया ॥ ३१ ॥ निश्चय ही बुन्दी के पति के पत्र को देखा उस (बुधसिंह) की बुद्धि में यह पुत्र अनौरस है सो बुधसिंह के किये हुए लेख को देखकर मुझ (सग्रामसिंह) ने भी लिख दिया है ॥ ३२ ॥ उन सोलह उमरावों से भी उस [सग्रामसिंह] ने यह लेख लिखाकर यह पत्र कछवाहे [जयसिंह] के हाथ में दिया जिससे बहुत प्रसन्नता हुई ॥ ३३ ॥

(दोहा)

*सभट रानकी †सक्खि इम, ‡बहुल प्रपंच बनाय ॥
बुद्ध लिखित §दल सिर सविधि, लिय कूरम लिखवाय॥३४॥
कछु दिन रहि कौतुक करत, नृप कूरम तिहिं नैर ॥
पाय रान सन सिक्ख पुनि, आयो पुर आमैर ॥ ३५ ॥
गो कूरम जब रान गृह, ¶बुद्ध तबहि बुंदीस ॥
सह कुटुंब आमैर सन, रचिय प्रयान १रुसीस ॥ ३६ ॥
द्विजबर गुरु जयसिंहको, रतनाकर २अभिधान ॥
३कानीखोह ४मुकाम तँस, दिन्नैं तत्थ मिलान ॥ ३७ ॥

(षट्पात्)

जिहिं रतनाकर विप्र सुगुन जयसिंह सिखायो ॥
स्मृति रु निगम ५खट६ सत्थ विविध नृप धर्म बतायो ॥
चउदह१४पुनि चउसट्ठि६४ कला विद्या पटु किन्नों ॥
जयसिंह ६गँ दारिद्र जोग भूसुर ७जिहिं भिन्नों ॥
धारन कराय सब कुल धरम ८कलि भूपन सिरमोर किय ॥
जिन जिम प्रताप कूरम जग्यो आचारिज तिम अद्दरिय।३८।
बिनु त्रि९संध्य१० जलपान जंग्य पंचक५ बिनु भोजन ॥

---

* उमरावों सहित † साक्षि ‡ बहुत § बुधसिंह के लिखे हुए पत्र पर ॥३५॥ ३६ ॥ ¶ बुधसिंह ने १ क्रोध सहित गमन किया ॥ ३६ ॥ २ नाम ३ उस रत्नाकर का काणीखोह ग्राम था ४ तहां मुकाम किये ॥ ३७ ॥ ५ वेद ६ जयसिंह की जन्मपत्री में दारिद्र योग गया हुआ [प्राप्त] था जिसको ७ इस ब्राह्मण ने मिटाया ८ कलियुग के राजाओं में ॥ ३८ ॥९ तीनों सन्ध्या किये बिना जल नहीं पिया १० गृहस्थी के प्रति दिन करने के * पांच यज्ञ किये विना

---

* पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः ॥ एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ इत्यमरः ॥ अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥ अर्थ—विधि पूर्वक वेद पढाना ब्रह्मयज्ञ कहाता है तर्पण करना है सो पितृयज्ञ है, वैश्वदेव का होम है सो देवयज्ञ कहाता है बलि अर्थात् जीवों को अन्न देना है सो भूतयज्ञ कहाता है और घर मे आएहुए अतिथि की सेवा करके खान पानादि से सत्कार करना है सो मनुष्ययज्ञ कहाता है इन्हीं प्रतिदिन कियेजानेवाले पाच यज्ञो का नाम महायज्ञ है.

बिनु स्मृतीनँ व्यवहार ख्यात नँय बिनु वसु खोजन ॥
द्विज सुपात्र बिनु दान ध्यान हरि हर बिनु धारन ॥
बिनु विधि काल व्यवाय मत्त नय बिनु अरि मारन ॥
बिन न्हान निगम पाठन बहुरि बिनु प्रपञ्च समर विकट ॥
इहिँ द्विज प्रमाद कूरम इते नन रक्ख निज भुव निकट ॥
जब कूरम जोधपुर चल्यो व्याहन नय चातुर ॥
तब मध्यद इर ताकि ऊंच पठयो अतहंपुर ॥
नगर करौली नाह भूप जदुवंस जासभुव ॥
दुर्ग बहादुरदुग्ग धीर रक्ख्यो सु तत्थ ध्रुव ॥
अवरोध संग हो द्विज यहहु तिहिँ तँहँ दिन्नो देह तजि ॥
तब कुम्म तास जठो तनय भूसुर गंगाराम भजि ॥ ४० ॥

दोहा ॥

गंगारामहु अमित मति, भो द्विजराज सुभाय ॥
वहु मैत्र नृप किय जास बल, वलि जैपुर बसधाय ॥ ४१ ॥
निसैंसय कानीखोह तम, रहिय ग्राम बुन्दीस ॥
कछवाहा आमेर रहि, रचत स्वामिपर रीस ॥ ४२ ॥

(षट्पात्)

इत कूरम गृह ग्राम कालकोविदँ प्रपंचकिय ॥
मरहट्ठन छन्न मिलि दई अरजी पुनि दिल्लिय ॥

भोजन नहीं किया १ धर्म शास्त्र के बिना जिसका व्यवहार प्रसिद्ध नहीं हुआ २ बिना नीति के ३ धन नहीं लिया सुपात्र ब्राह्मण के बिना दान नहीं दिया, विष्णु और शिव के बिना ध्यान नहीं किया, उचित समय के बिना ४ मैथुन नहीं किया, नीति की मर्यादा के बिना शत्रु को नहीं मारा बिना स्नान किये ५ वेद का पाठ नहीं किया, बिना ६ रचना [व्यूह] के भयंकर युद्ध नहीं किया ॥ ३९ ॥ ७ कूर्म ८ जाने में पंडित की ९ जनाने का १० नगर ११ बहादुर गढ़ नामक १२ जनाना के साथ १३ ब्राह्मण गंगाराम का भजन किया ॥ ४० ॥ १४ अपार बुद्धिवाला १५ यज्ञ ॥ ४१ ॥ १६ ग्राम ॥ ४२ ॥ १७ समयचतुर

रचत दौर¹ मरहट्ठ लूट मंडत चम्मलि लग ॥
जो भेजहु वल² वित्त³ प्रवल हम लरहिँ मंडि पग ॥
सुनि साह पुच्छि सचिवन सवन उचित मंत्र यह उच्चरहु ॥
कथ तँाव खानदौराँ कहिय कहत कुम्म जिम तिम करहु॥४३॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे महाराणासंग्रामसिंहजावदनामनगरधाटीपतनोदन्तश्रवणसमकालससैन्यजयसिंहोदयपुरगमनं १ महाराणासकाशाज्जयसिंहरामपुरप्रापणं २ दत्तकपुत्रबुन्दीदानबुधसिंहलेखविषयसाक्षीकृतमहाराणाजयसिंहजयपुरागमनं ३ जयसिंहगुरुरत्नाकरप्रशंसया सह महाराजजयसिंहप्रशंसावर्णनमष्टाविंशो मयूखः ॥ २८ ॥

आदितः षट्षष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६६ ॥

[दोहा]

इत कोटापति नृप उमँडि, संभरे⁵ दुज्जनसल्ल ॥
पायो कुम्म⁶ जु रामपुर, हठि लुट्ट्यो रन हल्ल ॥ १ ॥

पादाकुलकम् ॥

पंच अष्ठ मुनि ससि१७८५सम्मित सक, इक विग्रह कोटा हुव ओचक

---

१ दौड़ अथवा फैलाव २ सेना ३ धन ४ तहाँ ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बूंदीके भूपति बुधसिंहके चरित्र में महाराणा संग्रामसिंह के जावद नामक पुर में धाड़ा पड़नेकी खबर सुनने से सेना सहित जयसिंह का उदयपुर जाना १ महाराणा से राजा जयसिंह का रामपुरा पाना २ दत्तक पुत्र को बूंदी देने के बुधसिंह के लेख पर जयसिंह का महाराणा की साक्षी कराकर जयपुर आना ३ जयसिंह के गुरु रत्नाकर की प्रशंसा के साथ महाराजा जयसिंह की प्रशंसा के वर्णन का अठाईसवाँ २८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ छासठ २६६ मयूख हुए ॥

५ चहुवाण ६ जयसिंह ने राणा संग्रामसिंह से पाया वह ॥ १ ॥

मेवाउत हड्डा भट *छित्वर, प्रबल सिपाह बढ्यो छक उप्पर ॥२॥
महाराव भट यहै मत्त मन, घटीपति राउत्त †गव्व घन ॥
कछुक वत्त उप्पर वह कोप्यो, लज्ज रु स्वामिधरम सब लोप्यो॥३॥
करउर अग्ग लग्यो जो रनकरि, तिहिं कबध जयसिंहहिं ‡सहरि॥
रत्ति निकसि हड्डा सु बढेरय, रामपुरय सग्राम सरन गय ॥ ४ ॥
कोटापति सुनि एह कहाई, सरन न रक्खहु चोर सहाई ॥
चद्राउत सु सुनी न धरी चित, तब धकि दुज्जनसल्ल बढ्यो तित॥५॥

हरिगीतम् ॥

करि हल्ल दुरजनसल्ल नृप तब रामपुर पर उप्परयो ॥
बजि नेह मेहल हह सँहल भेह बहल ज्यों भरयो ॥
उडि केतु दतिन पति पतिन सिंधु ततिनँ लग्गये ॥
नखराल चालन बाजि जालनै ज्वाल नालन जग्गये ॥६॥
ठननंकि घटन घोर त्यों रननकि कोचैनकी करी ॥
सननंकि सैत्तिन नास सास भनकि पक्खर भल्लरी ॥
बिरुदैतैं बीर पटैतैं कइ कैमनैत सज्जित संक्रँमे ॥

*छीतरसिंह ॥ २ ॥ †बहुत गर्व से ॥ ३ ॥ ‡मारकर॥४॥ १क्रोध करके ऊपर चढा ॥ ५ ॥ तब राजा दुर्जनशाल हल्ला करके रामपुरा के ऊपर चढा जब ५ मादलों के भरे हुए मेघ के समान ४ पूर्ण शब्दायमान होकर ३ मर्दल [ज्यों मृदग के आकार 'मादल' नाम से बाजाविशेष प्रसिद्ध है] का २ शब्द हुआ ६ हाथियों पर ध्वजा की अनेक पक्तियें उडकर ७ सांग के बाजों पर सिंधवी [बड़ाराग] रागनी लगी ८ नखरावाली ९ चालों से घोडों के १० समूह की ११ नालों [खुरतालों] से * अग्नि लगी ॥ ६ ॥ हाथियों के घट और १२ कवचों की क-ड़ियें बजीं १३ घोडों के नाकों (फुरणों) से श्वास बजकर झालरों के समान पाखरें बजीं १४ बिरुदाये (स्तुति किये) हुए कितने ही १५ पटा फैंकनेवाले बीर और कितने ही १६ कमानवाले [धनुषधारी] सज्जित होकर १७ चले

* अग्नि शब्द पुल्लिंग है परन्तु लोकरूढी से जहां तहां हमने स्त्रीलिंग लिखा है जिसको अशुद्ध नहीं जानना चाहिये, इसीप्रकार देवता और दोहा आदि कितने ही स्त्रीलिंग शब्दों को लोकरूढी के कारण पुल्लिंग करके लिखे हैं उनको भी शुद्ध ही जानें क्योंकि "यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं ना करणीय नाचरणीय म्" यह प्राचीनों का मत है सो ही समीचीन है ॥

रन सैंन[1] लखि लगि लोंन[2] के गन[3] गेंन[4] गिद्धनके भ्रम ॥७॥
डगमग्गि अद्रिन कूट[5] तूटत सेतु सागर लुप्पयो ॥
दर दिट्ठिदै[6] भुव पिट्ठि कच्छप निट्ठि निट्ठिन रुप्पयो ॥
नउबत्ति नादन[7] बीर वादन[8] छोंनि छादन[9] वित्थरयो ॥
जिम भद्द संबर[10] धूलि डंबर[11] एम अंबर उच्छरयो ॥ ८ ॥
फटकारि सुंडिन मत्त गै नभ घत्त पच्छिन के करें ॥
जिन मान[12] पव्वय प्रान गव्वय[13] दान निज्झर[14] निज्झरें ॥
असवार तोंके[15] तुखार के भट चक्रचार[16] फिरावहीं ॥
अबलों सु सिक्खत पोंन[17] पै वह गोंन रंचन आवहीं ॥ ९ ॥
तिन धोर[18] मार भयार[19] भार हजार भोगप[20] जेक्कयो ॥
खुरतार अग्गन[22] भुम्मि फूटत ज्यों उदुंबर[23] पक्कयो ॥
खुरली[24] सु खिल्हत बीर के धुरली[25] सु सिंधुव उच्चरें ॥

---

१ युद्ध करनेवाली सेना को देखकर गीधनियों के ३ समूह की २ पंक्तियें लगकर ४आकाश में भ्रमने (उडने) लगीं ॥७॥ पर्वत हिलकर ५ शिखर टूटनेलगे और समुद्र ने मर्यादा छोडी ६भय की दृष्टि देकर भूमि को पीठ पर लियेहुए कच्छप कठिनाई से खड़ा रहा ७ नोबतों के शब्द ८ वीरों के वचन ९ भूमि को ढकनेवाले होकर फैले १० भादवे की मेघधारा "यहां शम्बर शब्द सामान्य जल का वाचक है परंतु भाद्रपद के योग से मेघधारा का ग्रहण है" के समान धूल [रज] का ११ आडंबर होकर आकाश में उछला ॥ ८ ॥ मस्त हाथी सुंडों को फटकार कर आकाश में कितने ही पक्षियों की घात करते हैं १३ बल के गर्ववाले जिन हाथियों का १२ प्रमाण पर्वतों के समान है उनके डाण (मदधारा) १४ झरणा के समान झरता है कितने ही घोड़ों को १५ वागों में उठाकर वीर १६ चक्र के चलने के समान [गोलकुंडा] फिराते हैं उस गति को १७ पवन अब तक सीखता है "पवन वात्या (बघूल्या) होकर गोलाकार फिरता है सो मानो इसीकी नकल करता है" परन्तु गति कुछ भी नहीं आती ॥९॥ १८ उन घोड़ों की गति [दौड़] की मारके १९ भयंकर भार से हजार २०फणों का पति [शेषनाग] २१ गिरा. उन घोड़ों की खुरतालों के २२अग्र भाग से पके हुए २३ ऊमर वृक्ष के फल की भांति भूमि फटी कितने ही वीर २४ शस्त्राभ्यास के खेल खेलते हैं और २५वंसियों में बड़े राग का उच्चार करते

किलकारि जुग्गिनि सग ह्वै हलकारि भैरव हुंकरैं ॥१०॥
भट भीमलों निज सीमतैं सुन भाम यों चढि संचरयो ॥
लिप घेरि दुग्ग सु रामपुर दल फेरि सगरं बित्थरयो ॥
लगि अग्गि तोपन काल कोपन नैर लोपन मडयो ॥
खगि गोख जालन सौंध सालन दुग्ग गोलन खडयो ।११।
जरि हट्ट पट्टन बट्ट बट्टन धूम धोरनि धुधरे ॥
दुरि ओक ओकन सोक कै पुरलोक संसयमैं परे ॥
प्राकार गिरि गिरि जात कहुं छिकि वंप कपिसिरं उच्छटैं ॥
कहुं फुट्टि खोमेंन तोमें गिरि परिखान पूरि सु उप्पटैं ।१२।
दगि दाव तुट्टि लदाव मडव ग्रेव गिद्धनि ज्यों चढैं ॥
प्रासाद पत्थर मोर सत्थरें ह्वै थरत्थर के कढैं ॥
छकि छिन्न तोपन छूट कै परिकूट गोपुरतैं गिरैं ॥
फुलिंगे फालन जग्गि ज्वालन चित्रसालन के किरैं ।१३।

हैं, किलकार करके योगनियें साथ होती हैं और वीरों को ललकार कर भैरव हुंकार करते हैं ॥ १० ॥ १ भीमसेन के समान वीर होकर अपनी सीमा से महाराव भीमसिंह का पुत्र चढ कर २ चला ३ सेना का घेरा लगा कर ४ युद्ध फैलाया ६ काल के कोप के समान तोपों से ५ अग्नि लगा कर नगर का नाश रचा और गोले लग कर झरोखे, जालियें ७ महल और शालाओं को गिराई ॥ ११ ॥ हाटों में बस्त्र जल कर मार्ग मार्ग मे धुआ की धोर से अंधेरा होगया शोक के साथ ८ घरों घरों में छुप कर पुर के लोग ९ जीवन के संदेह में पड़गये कि जीवित रहेंगे या नहीं १० छोटा कोट गिरता है और कहीं पर ११ बड़ा कोट छिक कर १२ कांगरे उछटते हैं 'जो कोट धांस हाथ से नीचा होवे उसको प्राकार और इससे बड़ा होवे उसको वप्र कहते हैं और मतान्तर से धूल कोट का नाम भी वप्र है' कहीं पर १३ बुरजों के १४ समूह गिर कर १५ खाइयों को पूरण करके उछलते हैं ॥ १२ ॥ अग्नि लग कर लदाव और मडप (गुमज) टूट कर उनके १६ पत्थर गृधनियों के समान आकाश में चढते हैं और १७ बारूद के साथ घुज कर महलों के पत्थर निकलते हैं, तोपों से फट कर १८ नगर के द्वारों से छूट कर उन के शिखर गिरते हैं और अग्नि लग कर १९ अग्निकण उड़ने से कितनी ही चित्रशालियें गिरती हैं ॥ १३ ॥

छहरात गोलन थंभ के थहरात छत्रिन छुट्टिकैं ॥
छिकि जात छप्पर छज्ज के टिकि जात टप्पर तुट्टिकैं ॥
अंगार छार अगार द्वार बजार बीथिन उच्छरैं ॥
न रहैं निवानन छिज्जि नीर समीर ग्रीखमलौं ररैं । १४ ।
जरि जात पर परि जात गिद्धनि डोरि तुट्टत चंगज्यों ॥
झरिजात झंडन दंड के गिरिजात केकिंप भंगज्यों ॥
धकि धाम धामन धुम्मतैं पुररामैं बिब्भल कुक्कयो ॥
इम हल्ल दुरजनसल्ल करि हरवल्ल झेल्लन झुक्कयो ॥ १५ ॥
दै दै निसैनिन बीर के हमगीर अट्टनपैं चढे ॥
के दोरि अररन तोरि अग्गलें पोरि मग्ग लगे वढे ॥
वह हड्ड छित्वर आय चैत्वर धीर धारनमैं धरयो ॥
करि जंग कछु बिधि झारि खग्ग सु झारि फोजहिं निक्खरयो१६
संग्राम नृप यह काम सुनि तब रामपुर तजि भज्जयो ॥
इत जित्ति दुरजनसल्ल हत्तन लुट्टि पत्तन गज्जयो ॥
बरजोर कूरममोरैं कौं गिनि भीति मानससौं भिरी ॥
जयसिंह वह लिय रानसौं इम आन अप्पन नाँ फिरी ।१७।

१गोलोंके गिरने[बरसने]से छतरियोंके थंभ धूज कर छूटते हैं, कितने ही छपरे और छाजे छिकते हैं और कितने २ टापरे टूट कर ठहरजाते हैं दरवाजों के बाहर बजार में और ४ गलियों में अंगारे और ३ भस्म उडती है निवाणों में छीज कर पानी नहीं रहा और ग्रीष्मऋतु के समान (गरम) ५ पवन ६ चलने लगा ॥ १४ ॥ जैसे डोरी टूट कर ७ पतंग [कनकव्वा] गिरै तैसे पंख जल कर गीधनियें गिरती हैं कितने ही ध्वजाओं के दंड जल कर ऐसे गिरते हैं जैसे मरेहुए ८ मयूर ऊपर से गिरैं ९ घर घर जल कर धुवां से घबराया हुआ १०रामपुर कूका इसप्रकार दुर्जनशाल हल्ला करके सेना के अग्रभाग को ११ झेलने को बढ़ा॥१५॥१२बुरजों पर चढे और कितने ही १३ कॅवाड़ों को और १४ आगळों (अर्गला, भागळ) को तोड़ कर द्वार के मार्ग लग कर बढे वह हाडा छीतरसिंह १५ चौक में आकर ॥ १६ ॥ १६ छीतरसिंह के निकलजाने का कार्य सुन कर १७ हाथों से १८ नगर को लूट कर १९ कछवाहों के पति (जयसिंह) को बलवान जानकर २० मन में भय हुआ [डरा] ॥ १७ ॥

(दोहा)

कोटापति नहिं अमल किय, कूरम नृप भय भार ॥
लुट्टि रामपुर *जाम लग, आयउ अप्प †अगार ॥ १८ ॥

[षट्पात्]

चद्राउत सीसोद नृपति सम्रामसिंह इत ॥
पुर [1]भिंभोली आय रह्यो चिंतत प्रपच चित ॥
मातुल[2] हो परमार नाम बिक्रम भिंभोली ॥
इहिं कारन[3] तँहँ आय खूब भज्जत कटि खोली ॥
धनकुमरि नाम जननीहु तस ही पीहर इम तत्थ रहि ॥
दिन कछु बिहाय दिल्लिय गयो साहमुहम्मद सरन गहि ।१९।

(दोहा)

कछु बसु हुंडी नजरि करि, लिय निज भुम्मि लिखाय ॥
दिय कोटा आमेर दुव, बनि बनि पिसुन बताय ॥ २० ॥
कछु दिन रहि निज पुर कंम्प्यो, पटा मुलक सब पाय ॥
सरँनि मध्य जयसिंह सो, मार्‌यो चूक कराय ॥ २१ ॥

(षट्पात्)

तदनंतर सेक बान अष्ठ सत्रह१७८५ सवच्छर ॥
अमा अहर्गन पोस भयउ सुत पुनि कूरम घर ॥
रानाउति जँठरज[12] नाम माधव नृप नदन ॥
सुनत खबरि जयसिंह घुम्मि महिप उच्छत्र घन ॥
दिय द्विजन दान रुप्पय अयुत१००००कथित रीति जप जज्ञ करि ॥
सुत प्रसवकँर्म[14] सद्धिय सकल आमनाय अनुसार सैंरि ।२२।

---

*एक पहर पर्यन्त †घर ॥ १८ ॥ १मांमा २भींभोली नामक नगर में ३इसकारण ४चिंता कर ॥ १९ ॥ ५ धन ॥ २० ॥ ६ चला ७ मार्ग में ॥ २१ ॥ ८ जिस पीछे ९ विक्रम के शाक के १७८५ के वर्ष में १० अमावास्या के ११ दिन १२ उदर से उत्पन्न १३ कहीहुई रीति से १४ जातकर्म १५ वेद के अनुसार चलाकर ॥ २२ ॥

(दोहा)

कछवाही भ्रातहिं कहिय, उदयनैर तुम *पत्त ॥
†भामजको संबंध भो, वा नहिं अक्खहु ‡अत्त ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

कहि कूरम तब कुप्पि §भाम कृत्रिम तिहिं भाखत ॥
हमतैं ¶इम नहिं होय बदहु पतितैं जु करहिं बत ॥
कछवाही सुनि कहिय तुमहु कृत्रिम हम जानत ॥
बिजयसिंह मम अनुज[1] सत्य पै जग नहिं मानत ॥
यह अक्खि अनुज कटिबंध[2] गहि खंजर[3] खैंचन करिय कर[4] ॥
भंभटि[5] छुराय कूरम झटिति आयो बाहिर दै अरर[6] ॥ २४ ॥

दोहा ॥

कछवाही पिच्छैं[7] निकसि, हुंत[8] निज सत्थ बुलाय ॥
चढि सपुत्र[9] स्यंदन चली, स्वामी[10] निकट रिसाय ॥ २५ ॥

(षट्पात्)

जामिप[11] प्रति जयसिंह तबहि चर[12] भेजि कहाई ॥
पहुँचे सब तुम पास भलैं बिरचहु मनभाई ॥
हत्या देत जु हमहिं ततो हम करहिं लिखित तकि ॥
नतो अप्प गृह जाहु करहु चित चाह पाप पकि ॥
यह सुनत भूप पच्छी कहिय अप्प निवेरहु कलह यह ॥
हैं सदा लिखित अनुसार हम अवर न मन जानहु असह ।२६।
सुनत एह जयसिंह मुख्य मंत्रिय राजामल्ल ॥
पठयो अक्खि प्रपंच लैन भानेज छन्न छल्ल ॥

---

* गये सो † भानजे का ‡ यहां कहो ॥ २३ ॥ § बहिनोई [बुधसिंह] इसको करतबी कहते हैं ¶ इसकारण १ मेरा छोटा भाई २ कमरबंधा पकड़कर ३ शस्त्र विशेष ४ झिटका देकर ५ शीघ्र ६ किवाड़ देकर बाहिर आगया ॥ २४ ॥ ७ शीघ्र ८ अपने साथ को ९ पुत्र सहित रथ पर चढके १० बुधसिंह के पास ॥ २५ ॥ ११ बहिनोई बुधसिंह से १२ हलकारा भेजकर ॥ २६ ॥

तब खत्री तँहँ जाय कह्यो कारन रानी प्रति ॥
सुरझ्यो कलह समस्त *अनुज तुम पच्छ करिय अति ॥
कहिहो तँहाँहि सगपन करहिं बुंदीसहु नहिं अब †बिमन॥
करि लिखित दिन्न जयसिंह कर किन्न सबहि उररीकरन ।२७।

पादाकुलकम् ॥

तब रानी नृप हिंतु कहाई, भाँनज निजहिं बुलावत भाई ॥
सुरझ्यो जो बिग्रह हित सत्थहि, तो भेजहिं अप्पन सुत तत्थहिं।२८।
तब बुंदीस कह्यो रानी प्रति, तुमरो अनुज बलिष्ठ बढ्यो अति॥
हम सुरझी उरझी सुन चिन्ही, अक्खी उन जिम तिम लिखि दिन्ही
यह सुनि जान्यों साम भयो अब, समुझ्यो रानी द्रोह मिट्यो सब॥
तबहि भवानीसिंह स्वीय सुत, मातुल ढिग पठयो खत्री जुत।३०।
राजामल लै तिहिं तहँ आयो, कुम्म सु ताकहँ हतन कहायो ॥
दुर्ग माँहि इक दुर्ग भयकर, नाम चिल्हटोला कारागर ॥ ३१ ॥
तहँ चढाय बालक वह मार्यो, नृप कूरम काहू न निवार्यो ॥
एह कुमार हमहु अनुमान्यों, पै असत्य सत्य न पहिचान्यों ॥३२॥
कुटिल कुसील लखत कछवाही, इम हम मति कृत्रिम अवगाही
पुनि बुंदीस नष्ट मति पिक्खत, देखि हेतु अबरहु अँत दिक्खत ३३
प्राचीनेन यह कथ इम रक्खी, याँतें हमहु अनिश्चय अक्खी ॥

---

*तुम्हारे छोटे भाई [जयसिंह] ने तुम्हारा बहुत पक्ष किया † उदास १ अंगीकार [स्वीकार] ॥ २७ ॥ २ पुत्रसहित मेरा भाई जयसिंह ३ अपने भानजे को बुलाता है ४ तहां ॥ २८ ॥ ५ बलवान् ६ नहीं देखा ॥ २९ ॥ ७ अपने पुत्र को मामा के पास राजामल खत्री सहित भेजा ॥ ३० ॥ ८ कैद [जेल]खाना॥३१॥ ९ राजा जयसिंह को किसीने नहीं रोका १० ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि इस कुमार के लिये हमने भी अनुमान किया ॥ ३२ ॥ ११ बुरे स्वभाववाला १२ कृत्रिमपन का ही थाह लिया अर्थात् कपटकी ही जाना १३ नष्ट बुद्धि वाला १४ मरण दीखता है ॥ ३३ ॥ १५ इधानि लिखनेवाले प्राचीन लोगों ने इस कथा को इसीप्रकार रक्खी है ॥ ३४ ॥ १६ इसकारण हमने भी संदेहवा-

*द्रुत सुनि सूनु कैद हिय दाही, किन्नौं कलह कुप्पि कछवाही३४
पति सन कहिय हन्यौं तुम पुत्रहि, यातैं तजिहौं देह अमुत्रहि ॥
इम कहि अन्न त्याग अवधारयो, व्याकुल नृप तब सोक विचारयो३५
मतिजड़ भूप कउल निश्चित मन, नारिन नैंक उदास सहैं नन ॥
बिनयादिक करि कोप बहावैं, अंतर तबहि इष्ट सुख आवैं ।३६।
ललना मात्र कहह सु न लुप्पैं, करैं प्रनति जब जब कोउ कुप्पैं ॥
यह बुंदीपति सील अपूरब, तातैं करि करि प्रनति कही तब ३७
सत्रुन हत्थ तुमहि सौंप्यो सुत, अब क्यौं रिस हम कियउ कहा उत
कहिहो पुनि सोही हम करिहैं, असन लेहु इच्छित अनुसरिहैं३८
यह सुनि दिय रानी प्रतिउत्तर, कुमर सु मम मंडहु यह कग्गरं ॥
तब नृप लिख्यो कलह दुख टारक, कछवाहीको एह कुमारक३९
कलह उग्र रानी पुनि किन्नौं, निट्ठिनैं अन्न दिनैंन बिच लिन्नौं ॥
इत पुनि गरभ धर्यो चुंडाउति, होवत जास जग्य जप आहुति ।४०।

उति १ द्रुति२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अब तक्कत कूरम नृप याकँहँ, कब सुत होय मंगिहौं ताकँहँ ॥
कुमर भयैं जामिज गति कैहौं, दुहिता जो स्वसुतहिं तो दैहौं ।४१।

चौपाई ॥

कूरम इम हेरत जानि कौल, रक्खे भट जामिकँ रक्खवाल ॥
घुमडि रहे डेरन जे घेरि, नृपं सुत लोभ लयो मन फेरि ।४२।

ली ही रक्खी है * शीघ्र पुत्र को कैद सुनकर ॥ १ परलोक के अर्थ २ धारण किये ॥ ३५ ॥ ३ मूर्ख बुद्धिवाला ४ वाममार्ग में मन का निश्चय करनेवाला ५ नहीं चाहता ॥ ३६ ॥ ६ स्त्रीमात्र ७ विशेष नम्रता ॥ ३७ ॥ ८ तुम्हारा चाहा हुआ करेंगे ॥ ३८ ॥ ९ वह कुमर मेरा था १० यह पत्र लिख दो ११ टालने [मेलने] वाली ॥ ३९ ॥ १२ कठिनता से १३ कई दिनों में ॥ ४० ॥ १४ भानजे की गति हुई सो ही करूंगा अर्थात् मार डालूंगा १५ बेटी हुई तो अपने बेटे ईश्वरीसिंह को परणादूंगा ॥ ४१ ॥ १६ बालक जन्मने के समय को १७ पहरायत १८ बुधसिंह ने पुत्र के लोभ से जयसिंह से मन फेर लिया॥४२॥

[षट्पात्]

तदनु ईश्वरीसिंह सुपहु जयसिंह पट्ट सुत ॥
रान कुमर जगतेस सुता ब्याह्यो हित सजुत ॥
सर वसु सत्रह१७८५ साल माघ सित लगन मिलायो ॥
जयहि उदेपुर जाय उचित उपयम करि आयो ॥
इत दक्खि मुलक मालव कियउ मरहट्ठन मद अमल ॥
आजलों दूर सुनते इनहिं प्रविमन अब लग्गे प्रबल ।४३।

दोहा ॥

रन अवरंगाबाद रचि, पहिलैं कटक प्रचारि ॥
दयाबहादुर विप्र वह, सूबापति लिय मारि ॥ ४४ ॥

(षट्पात्)

इहिं द्विज दिल्लिय अग्ग मेटि हिंदुन दुख दिन्नों ॥
साह हुकम पुनि पाय कुच दक्खिन सिर किन्नों ॥
तीन अयुत३०००० तुक्खार सुभट निज संग सिधारे ॥
सहँस बीस२०००० पुनि साह कँटक भट दिन्न करारे ॥
कोटा नरेस प्रति पत्र लिखि दुज्जनसल्लहु सग दिय ॥
इन जाय सरित रेवा उतरि कछुदिन पार मुकाम किय४५
कोटापति करि कपट तत्थ कछु काल बिहायो ॥
द्विज ढिग निज दल रक्खि आप कोटा चलि आयो ॥
उत अवरंगाबाद लुट्टि मरहट्ट चलाये ॥
द्विज त्रि३ बेर दल पिल्लि पिल्लि रचक ठहराये ॥
अति जोर बलिय मरहट्ठ अरि तब द्विज सम्मुह झिल्लये ॥
पासक कृपान चोपरि प्रथित खेत प्रान पैंन खिल्लये ।४६।

---

१ जिस पीछे २ राणा संग्रामसिंह के पुत्र जगतसिंह की पुत्री ३ सुदि ४ विवाह ॥ ४१ ॥ ४४ ॥ ५ आगे ६ घोड़ों [सवार] ७ सेना ८ नर्मदा नदी ॥ ४५ ॥
९ तहां कुछ समय बिताया १०अपनी सेना ११आप्रमग्र तीन बार सेना भेजकर १२ छह रूपी पासा से युद्धक्षेत्र रूपी १३ प्रसिद्ध चोपड़ म १४ प्राणों का दाव

दयाबहादुर बीर बिप्र नागर सूबा पति ॥
खूब झारि रन खग्ग मारि बहु सत्रु महामति ॥
तिल्ल तिल्ल तेकन तुट्टि बिरचि अच्छरि लगबाँहीं ॥
गंजि अरिन करि गरद भरद पत्तो दिवं माँहीं ॥
जिम जिम प्रमाद मिच्छन जगिय भोगैन जिम जिम भुल्लये ॥
तिम तिम कटाच्छ तिरछे बिरचि दिल्ली जारन बुल्लये ।४७।

(दोहा)

मारि द्विजहिँ मंडल अमल, रेवा लंघि रिसाय ॥
मरहट्ठन मालव लयो, उज्जइनी लग आय ॥ ४८ ॥
लै मंडू दसउर लियउ, निज निज थानाँ रक्खि ॥
सूबापति गुजरातको, सोहु मिल्यो हित सक्खि ॥ ४९ ॥
तवके आवत दक्खिनी, भुव दब्बत बरजोर ॥
अब कूरम कहि मुक्कल्यो, तजहु रामपुर मोर ॥ ५० ॥
जानि इनहु जयसिंहको, रामपुर सु दिय छोरि ॥
अवर देस उज्जैन लग, बढि बढि लिन्न बहोरि ॥ ५१ ॥
कूरम तब मुक्कलि कटक, अमल रामपुर किन्न ॥
मरहट्ठन सँन छन्न मिलि, दिल्ली सिर भर दिन्न ॥ ५२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावदुर्जनशल्यरामपुरलुण्टन १ रामपुरपलायितदिल्लीगतरावसंग्रामसिंहपुनारामपुरलेखन २ प्राप्तरा-

---

लगाकर खेला ॥ ४६ ॥ १ स्वर्ग में गया २ भोग भागने में ३ कटाक्ष ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ४ हित की साक्षी [गवाही] से ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५ अन्य ॥ ५१ ॥ ६ सेना भेजकर ७ से ८ भार ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में कोटा के महाराव दुर्जनशाल का रामपुरे को लूटना १ रामपुरा से भागेहुए राव संग्रामसिंह का दिल्ली जाकर पीछा रामपुरा लिखाना २ जयपुर के राजा जयसिंह का रामपुरा पाकर पीछे आते हुए राव

मपुरमत्यागच्छज्जयपुराधीशजयसिंहस्य रावसंग्रामसिंहच्छलघात-
मारण ३ जयसिंहकनिष्ठसूनुमाधवसिंहजनन ४ जयसिंहस्य स्व-
भागिनेयबुन्दीपट्टराजकुमारभवानीसिंहमारण ५ जयसिंहपट्टकुमा-
रेश्वरीसिंहोदयपुरविवाहन ६ गृहीतोज्जयनीकमहरट्टदशपुरपुराव-
ध्याक्रमणवर्णनमेकोनत्रिंशो मयूख ॥ २९ ॥

आदित. सप्तषष्ट्युत्तरद्विशततम. ॥ २६७ ॥

[दोहा]

अजयसिंह मरुईस इत, मरुधर राज जमाय ॥
स्वामिधरम वेहि साहको, अतिजवे दिल्ली आय ॥ १ ॥
इत नृप कानीखोह गहि, तज्यो वचन गहि गाढ ॥
सक खट वसु सतह१७८६समय, आयउ अब आषाढ॥२॥

[षट्पात्]

असित पक्ख आषाढ मास सनिवार चउहसि१४ ॥
चुडाउतिं उर कुमर भयो दहमास जठर बसि ॥
धात्रेयी नृप निकट उल्वँ सहितहि गहि आन्यों ॥
बुल्ली नीति विचारि जनन अबलग नहिँ जान्यों ॥
पे अत्र न छन्न रक्खन उचित कोउ न पुनि कहिहैं कुमर॥
॥ ३ ॥

पादाकुलकम् ॥

संग्रामसिंह को छलघात से मरवाना ३ जयसिंह के छोटे पुत्र माधवसिंह का जन्म होना ४ राजा जयसिंह का अपने भाणेज और बूंदी के पाटवी राजकुमार भवानीसिंह का मरवाना ५ जयसिंह के पाटवी पुत्र ईश्वरीसिंह का उदयपुर में विवाह होना ६ मरहठों का उज्जैन लेकर मन्दसोर तक बढने का उनतीसवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सडसठ२६७मयूख हुए॥
१ धारण करके २ अत्यन्त शीघ्र ॥ १ ॥ २ ॥ ३ कृष्णपक्ष ४ दशमास उदर में वास करके ५ धाय की बेटी ६ बुधसिंह के समीप ७ आवल [जन्म की थैली] सहित ८ अन्य मनुष्यों ने अथवा कुमर का जन्म अन्य लोगों ने नहीं जाना

अग्गैं जबहि *भीम लुट्टी भुव, †तनया तब कूरम कुमारि हुव ॥
रिपुभयसौं सुत सुत करि राखी, भावतसिंह प्रगट सुत भाखी ॥ ४ ॥
जँहँ सुताहिं सुत सुत कहि ठानैं, तिहिं पुनि सुता कहैं जग मानैं ॥
सुतँहिं सुता कहि कहि जहँ रक्खहिं, ताहि बहुरि कोउ न सुत अक्खहि ॥
हुव संतान सबन यह जान्यौं, पुत्री सुत अबहि न पहिचान्यौं ॥
पैं छन्नैं रक्खैं नहिं भल मत, ख्यात कियैं कूरम इहिं संगत ॥ ६ ॥
हमरी मति सु फुरत प्रकटावन, पुनि कहिहो सु करहिं किंकरपन ॥
धात्रेयैं जु अनिरुद्ध नरेसह, देवकरन अभिधान हुतो वह ॥ ७ ॥
ताकी इहिं तनया धालेई, कोविदं नीति कही इम केई ॥
सुहि पुनि नाजर अमर सुनाई, बंटहु सुत भव प्रकट बधाई ॥ ८ ॥
भावसिंह नृपको यह नाजर, बय नैंय वृद्ध रु राजकाज बर ॥
अग्गैं नृप अनिरुद्ध समय जब, अंतहपुर कोउ बेलं चल्यो तब ॥ ९ ॥
सिबिका छोरि अपुब्ब सयानी, रथहि चढी राजाउति रानी ॥
चिकन ओट कछु लखत प्रपंचकैं, बाहिर कढी अंगुली रंचकैं ॥
कहि तब नाजर अमर करोरी, छरी तीन३ अंगुलि पर मारी ॥
उपालंभ अनिरुद्ध भूप दिय, नाजर तवहि जोरि कर अक्खिय ११
दासी जन अंगुलि मैं मानी, रानी रथ आरूढ न जानी ॥

है ॥ ३ ॥ * कोटा के महाराव भीमसिंह ने † पुत्री १शत्रु के इस भय से कि अब इनके पीछे कोई पुत्र नहीं है इसकारण बूंदी को दबालेना चाहिये २ यह कह कर प्रसिद्ध किया कि भावतसिंह नामक पुत्र हुआ है ॥ ४ ॥ ३ जहां पुत्री को ही पुत्र पुत्र कहकर रखते हैं ४ तो पुत्र को ५ पुत्री कहकर रक्खेंगे तो ६ उसको फिर कोई पुत्र नहीं कहेगा ॥ ५ ॥ ७ परन्तु ८ प्रसिद्ध करने से ९ जयसिंह इसको मांगता है ॥ ६ ॥ १० हमारी बुद्धि प्रसिद्ध करने से ही चलती है ११ नौकरपन के कारन १२ धायभाई १३ नाम ॥ ७ ॥ १४ बेटी१५नीति चतुर ने कई बातें कहीं १६ पुत्र के जन्म की ॥ ८ ॥ १७ अवस्था और नीति दोनों में वृद्ध १८ श्रेष्ठ १९ जनाना २० किसी बाग में ॥ ९ ॥ २१ अपूर्व २२ शहर आदि की रचना देखने को २३ थोड़ी सी ॥ १० ॥ २४ करड़ी (कठिन) २५ छड़ी २६ ओलभा ॥ ११ ॥

यातैं रही अंगुली अक्खेय, नहिं तो लेतो कट्टि रीति नेंय ॥ १२ ॥
ऐसो तुंजक हुतो वह नाजर, किन्नों तिहिं येंहँ अरज जोरि कर
बुंदिय जो वारिधिं बिच बोरहु, छन्नैं रक्खि ततो नेंय छोरहु ॥ १३ ॥

(षट्पात)

सुं सुनि भूप बुंदीस कुमर जाहिर तब किन्नों ॥
दुंदुभि बज्जिग द्वार दठप विप्रन बहु दिन्नों ॥
गणकन अरु नेवगिन कुम्म नृपसौंहु कहाई ॥
सत१०० सत१०० रुप्पय सवन दई जयसिंह बधाई ॥
बुद्धहि कहाय पठई वहुरि सोंपहुँ अब हम हत्थ सुंव ॥
गहि लिखित रीति लखि बंधुगन धारहु अवरहि अंके ध्रुव १४

[दोहा]

कहि पठई बुधसिंह तव, पच्छी ठंपाज बिसास ॥
करन देहु जैतक करम, पुनि भेजहिं तुम पास ॥ १५ ॥

(षट्पात)

जातकरम सव करिय तेंनय उच्छव तदनंतर ॥
सुन्यौ कुमर ससार नाम उम्मेदसिंह वर ॥
वहुरि कुम्म इक वनिकें सचिव पठयो हीरामल ॥
कह्यो देहु मुहिं कुमर छोहें तब किपउ रेंपात छल ॥
भक्खिय रिसाय बुंदिय अधिप पुत्रहु कहिं मगे मिलत ॥

१ चय रहित २ न्याय की रीति से अंगुली काटलेता ॥ १२ ॥ ३ प्रबंधकर्ता (यह यावनी शब्द अनेकार्थ वाची है, जिसके अर्थ दपदया थान शोकत प्रबन्धकर्ता आदि कई हैं) ४ समुद्र में डुबोना होवे तो ५ नीति ॥ १३ ॥ ६ सो ७ नगारे बजे ८ ज्योतिषियों और ९ नेग पानेवालों ने जयसिंह से भी १० बुधसिंह का ११ सुत [पुत्र] १२ लिखावट की रीति से भाइयों के समूह में से १३ निश्चय किसीको गोद रखलो ॥ १४ ॥ १४ छल से विश्वास देकर कहलाई १५ जन्म समय के वेद विहित कार्य ॥ १५ ॥ १६ पुत्र के उत्सव का १७ जिस पीछे १८ बनिया १९ क्रोध करके २० प्रसिद्ध

बरजोर लेहु हो तुम प्रबल हम रन इच्छत[1] खग्ग हत[2] ।१६।
सुनत एह जयसिंह घल्लि कर मुच्छ रिसायो ॥
पन्नग[3] पय दब्ब्यो किं[4] छुधित सद्दूल[5] खिजायो ॥
तमकि[6] भूप ततकाल[7] सचिव राजामल बुल्ल्यो[8] ॥
कह्यो कहा करतव्य[9] खिज्जि अब उन छल खुल्ल्यो ॥
करि उचित लेहु खत्री कहिय गृहबासिन[10] इन हनहु नन[11] ॥
इच्छितहिं[12] राज बुंदिय अरपि प्रथित[13] निबाहहु लिखित पन[14]१७

(दोहा)

तब छित्वर[15] प्रति इंद्रगढ, कुम्म लिखी यह चाहि ॥
देवसिंह भेजहु कुमर, बुंदी अप्पहिं ताहि ॥ १८ ॥
प्रथम राज तुमकों मिलत, जो यह तुमहिं रुचै न ॥
तो हम अवरहिं अप्पिहैं, बदहु न पिच्छैं बैन ॥ १९ ॥
छित्वरसिंहहु तबहि लिखि, पठई कूरम गेह ॥
हम किंकर बुंदीसके, अनुचित करहिं न एह ॥ २० ॥
अवरहु गोपीनाथ कुल, नट्यो अनुक्रम पाय ॥
बुंदीतैं[16] कूरम तबहि, सालम[17] लिन्न बुलाय ॥ २१ ॥
कह्यो धरहु तुमरो कुमर, बुंदी गद्दिय बीर ॥
लखहु एह जामिप[18] लिखित, हम सहाय हमगीर ॥ २२ ॥
सठ सालम यह लोभ सुनि, बुल्ल्यो[19] कुमर प्रताप ॥

---

१ युद्ध करना चाहते हैं २ तरवार मारकर ॥ १६ ॥ ३ सर्प को पैर से दबाया ४ किधों ५ भूखे सिंह को क्रोधित किया ६ क्रोध करके ७ तुरन्त ८ बुलाया ९ क्या करना चाहिये १० अपने घर में बास किये हुओं को ११ मारो मत "यहां अधिक निषेध के लिये दो नकारों का प्रयोग है सो अन्यस्थानों में भी जहां 'नन' शब्द आवै वहां अधिक निषेध समझना चाहिये" १२ चाहे जिस को बून्दी का राज्य देकर १३ प्रसिद्ध लेख [लिखावट] की १४ प्रतिज्ञा निबाहो ॥ १७ ॥ १५ छीतरसिंह के नाम १६ जयसिंह ने ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ १७ सालमसिंह को ॥२१॥ १८ बहिनोई [बुधसिंह] की लिखावट ॥२२॥ १९ बुलाया

नय विचारि सोहू नटयो, उच्चरि दुरित[1] अमाप ॥ २३ ॥
जइ सालम बुल्लयो जबहि, मध्यम कुमर दलेल ॥
करउरतैं आयो कुटिल, मन इच्छित लहि मेल ॥ २४ ॥
अभयसिंह इत मरुअधिप, बखसि साह वसु व्रात,
सरबुलंद सिर मुक्कल्यो, दै सूबा गुजरात ॥ २५ ॥
दिल्लीतैं मारव नृपहु, आयो जैपुर अत्थ ॥
बरखनलग जैपुर बस्यो, हो जयसिंहहु तत्थ ॥ २६ ॥
तब दरकुच्चन आय तँहँ, मरुपति दिन्न मिलान ॥
इहिं सुनि कानीखोहतैं, चढि आयो चहुवान ॥ २७ ॥
मरुपतिसौं अति हेत मिलि, कहि सब लिखित कुकाम ॥
जयनिवास उपवन निकट, किय बुदीस मुकाम ॥ २८ ॥

मुक्तादाम ॥

मिले मरुभूप रु बुद्ध विनोद, परस्पर हेरन आय प्रमोद ॥
सु हेरकरि गोठिनें जिम्मन साजि, दये लिय दोउन रयौरन बाजि २९
मरू प्रभु हेरन कुम्महु आय, सुतापति जानि मिल्यो सरसाय ॥
कह्यो करि पावन जैपुर जेवँ, ममालय भोजन कै चलिये वँ।३०।
कह्यो मरुभूपहु यों सुनि तत्थ, चलैं हम बुद्ध बेलापति सत्थ ॥
ठगे इनकों तुम जानि प्रमत्त, हमें इनतैं हित है न अत्त॥ ३१ ॥
यहे सुनि कूरम अखिलय एह, चुक्यो मिलि जामिपतैं यहदेह ॥
यहे कहि लै मरुभूपहिं जाय, दई बिनु जामिपै गोठि जिमाय॥३२॥

---

१ पाप ॥ २३ ॥ २ दलेलसिंह को ॥ २४ ॥ ३ बादशाह ने धन का समूह देकर ॥२५॥ ४ मारवाड़ का राजा ५ यहां ६ कई वर्षों से वास किया हुआ ॥२६॥ ७ मुकाम ॥ २७ ॥ ८ जयसिंह को लिखावट कर देने का खोटा कार्य कह कर ९ बाग के समीप ॥ २८ ॥ १० गोठ ११ हाथी घोड़े ॥ २९ ॥ १२ अपनी पुत्री का पति जानकर १३ रस युक्त [प्रसन्न होकर] १४ शोभा १५ मेरे घर १६ भोजन करने पर १७ अब चलिये ॥ ३० ॥ १८ यह बुधसिंह का विशेषण है १९ त्याज्य नहीं है ॥ ३१ ॥ २० यहिताई से यह देह मिल चुका अर्थात् अब कभी नहीं मिलसका "यह काकु भाषा का कथन है" २१ बिना बुधसिंह के ॥३२॥

चल्यो लहि कूरम सिक्ख कबंध, बयो[1] नृप बुंद्धहि फेरि प्रबंध ॥
रहो तुम कूरमकी यह जानि, कछू कारिहे[2] मम भद्र प्रमानि ।३३।
सु तो सब गो तुमरी लिपि[3] संग, अबैं नँन[4] रक्खहु राज्य उमंग ॥
चलो मम सत्थहि जो चहुवान, ततो इन्ह ठिल्लहिँ[5] लै तुम थान ३४
यहै हु न मन्निय बुंदिय ईस, रची मरुभूपतिहू कछु रीस ॥
क्रम्यो[6] करि कुंचन धँन्व कबंध, रच्यो धर गुज्जर लैन प्रबंध।३५।
इतैं सठ संभर[9] मोह अरोहि[10], क्रम्यौं निज डेरन कानियखोह ॥
दई पुनि बुद्धहिं[11] कुम्म कहाय, भयो सुत औरस सौंपहु सांय[12]।३६।
रू लै सुत सालम[13] अंक दलेलँ[14], मनौं इहिं पुत्र गिनौं लहि मेल ॥
न मन्निय फेरिहु बुंदिय नाह, कुप्यो गहि मुच्छ तबै कछवाह ३७
दलेल बुलायउ सालम नंद, मिल्यो नृप कूरम प्रीति अमंद[15] ॥
बरब्बर गद्दिय पैं बइठारि, कहयो तुम बुंदिय भूप हँकारि[16] ॥३८॥
अबैं तुमकौं दुहिता हम अप्पि, थिरौं[17] निज भुग्गन भेजहि थप्पि।
बिराजहु बुंदिय गद्दिय जाय, सबै हम रान[18] समेत सहाय ॥३९॥
रह्यो अभिसेक सुतो लहि कौल[19], सबै सधिहे[20] पुनि सत्रुनसाल ।
यहै कहि सालमसिंह बुलाय, प्रबोधितँ बुंदिय दिन्न पठाय ।४०।
कहयो बुधसिंहहिं आन न देहु, सबै तस राज्य रजू करिलेहु ॥
सज्यो तब सालम बुंदिय सीस, हरास[21] तजी नय धर्म हदीसँ[22] ४१

(दोहा)

---

१ बुधसिंह से कहा २ कल्याण ॥ ३३ ॥ ३ लिखावट के साथ ४ नहीं ५ जयसिंह को हटाकर ॥ ३४ ॥ ६ चला ७ मारवाड़ में ८ गुजरात की भूमि लेने का ॥ ३५ ॥ ९ बुधसिंह १० अज्ञान [भूल] पर सवार होकर ११ जजसिंह ने कहलाया १२ लिखावट की रीति पूर्वक ॥ ३६ ॥ १३ सालमसिंह के पुत्र १४ दलेलसिंह को गोद लेकर पुत्र मान कर रहो ॥ ३७ ॥ १५ बहुत प्रीति से १६ ललकार करके कहा ॥ ३८ ॥ १७ अपनी [बुन्दी की] भूमि भोगने को १८ उदयपुर के राणा सहित ॥ ३९ ॥ १९ समय पाकर २० समझाकर ॥४०॥ २१ उस हरामी ने नीति और धर्म की २२ सीमा [मर्यादा] छोड दी ॥ ४१ ॥

यह सुनि कानीखोहतैं, वुद्ध नेरसहिं छोरि ॥
मुरि मुरि सालममैं मिले, वहु भट सचिव वहोरि ॥ ४२ ॥

पद्धतिका ॥

इक वनिक नाम वानाँ१अधर्म, किय मुख्य सचिव जोरत कुकर्म
यह जोधराज *जामिज अनीति, पलट्यो सठ सालमपैं समीति ४३
सुखराम२नाम कायत्थ स्वान, भरि लोभ चोधरी उदयभान३ ॥
नागर द्विज इक जगदीस४नाम, हल्ला पुनि भ्तिुव५हुव हराम ४४
भट अनय पुंज हल्ला भवान६, थित नेर दुघारी जास थान ॥
पुनि धाउभ्रात सुभराम पाप, मुरि कियउ दुष्ट सालम मिलाप४५
अरु सठ अलोदपुर पति अमान, मातुल सु महारामाभिधान ७ ॥
इत्यादि सचिव भट सठ अनेक, टरि टरि सालम विच गय सटेक ४६
इत किय प्रपच कछवाह राय, दिल्ली सु अरज पठई लिखाय ॥
बुदीस वुद्ध आलस वहत, नित अव न साह सेवन चहत ॥४७॥
नहिं पुत्र आहि इनके निकेत, तसमात भ्रातजहिं राज्य देत ॥
मुहुकम्म वम सालम अठेल, वर कुमर तास म८पम दलेल ।४८।
अति गुन प्रपच रन पटु उदार, विक्रांत सुभग वर मति विचार ॥
बुदीस राज्य अव देत ताहि, अरु मरुप रान हम मतिहु आहि४९
तसमात पटा मुद्रितं कराय, मम निकट देहु हजरत पठाय ॥
सुनि साह मुहम्मद अरज एह, लिखवाय पटा पठये सनेह ।५०।
मुदिय दलेलसिंहहिं समप्पि, बुधसिंह पट्ट इहिं देहु थप्पि ॥
तुम जाहु कुम्म मालव सु देस, आवत गिनीमैं रोकहु असेस ५१
पठये हम रुप्पय त्रि सास१३०००००लक्ख, इन घल अनीकें विरच-

*भानजा ॥४३॥ ४४ ॥ १ अनीति का समूह ॥ ४५ ॥ २ नाम ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ३ है ४ घर मे ५ इसकारण से ६ भतीजे को ॥ ४८ ॥ ७ वीर ८ मेरी सलाह भी है ॥ ४९ ॥ ९ इसकारण से १० छाप कराकर ॥ ५० ॥ ११ हे जयसिंह १२ सब शत्रुओं को ॥ ५१ ॥ १३ सेना

हु अपक्ख[1] ॥
उज्जैन वार आवन न देहु, लागि पिछि समस्तन मारि लेहु॥५२॥
कूरम नरेस तव भुज भरोस, हैं हम निचिंत अति मुदित होस ॥
इम लिखि पठाय फरमान साह, कछवाह बंचि मंडिय उछाह॥५३॥

॥ षट्पात् ॥

बंचि साह फरमान हरखि जयसिंह महीपति ॥
रुप्पय तेरह१३लक्ख पाय मंडिग दल[2] दुम्मति[3] ॥
मनतैं मिलि दक्खिनिन अक्खि[4] उप्पर आमिखस[5] ॥
किय मालव पर कुंच बुत्थि आमिख[5] जिम वायस[6] ॥
संगहि दलेल सालम सुवन लै मंडिग दक्खिन चलन ॥
बुंदीस इत सु बिगर्यो बिविध मन्नि न उग्गन अत्थमन॥५४॥
किय बुंदीस[7] बिचार जान मालव सालक[8] जिय ॥
बिजयसिंह निज अनुज[9] कुम्भ[10] कारागृह रक्खिय ॥
जाहि कढ्ढि बरजोर थिरहि जैपुर नृप थप्पहिं ॥
करि फोजन एकत्त यौंहि दारिद अब अप्पहिं ॥
यह किय प्रपंच बुधसिंह इत सो सब नृप जयसिंह सुनि॥
वह बिजयसिंह[11] सोदर[12] अनुज पठयो हनि करि अनय[13] पुनि५५
धरमधीर[14] जयसिंह करग अनुचित यह किन्नो ॥
बिजयसिंह हनि अनुज भेजि जामिप[15] ढिग दिन्नो ॥

---

१ मरहठों का पक्ष नहीं करनेवाला ॥५२॥५३॥ २ सेना ३ दुर्मति (बादशाह से रुपये लेकर उलटे मरहठों से मिल जाने के कारण यह विशेषण दिया है)४ बादशाह की आज्ञा ५ मांस के टुकड़े पर ६ कागचों की भांति ॥ ५४ ॥ ७ बुधसिंह ने ८ अपने साले (जयसिंह) के मालवे में जाने के विचार से ९ जयसिंह ने अपने छोटे भाई विजयसिंह को १० कैद कर दिया था ११ जयसिंह को १२ सगे छोटे भाई को १३ अनीति करके मारकर बुधसिंह के पास भेजदिया ॥ ५५ ॥ १४ धर्म को धारण करनेवाले १५ बुधसिंह के पास

कहि पठई पुनि कुंभ जामि भ्रात रु तव सालक ॥
आयउ यह मम ईस प्रथित ढुंढाहर पालक ॥
इहिं विधि कहाय वह निज अनुज कटक बुद्ध ढिग दगध किय॥
पुनि लिखि पठाय बुदिय पुरहि प्रति सालम यह मन्त्र प्रिय ॥५६॥

(दोहा)

हम जावत मालव पहुमि, मिलि रुक्कन मरहट्ठ ॥
बुंदिय धर तुम जतन वल, करि रक्खहु नहिं कट्ठ ॥५७॥
साह मुहम्मद तुमहि सब, बुंदिय धर दिय वीर ।
राठ बुद्धहिं देहु न धसन, हड्डन पति हमगीर ॥ ५८ ॥
सालम प्रति यह लखि सबल, लै निज सग दलेल ॥५९॥
मालव उप्पर उप्परयो, मरहट्ठन हिय मेल ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहपुत्रोम्मेदसिंहजयसिंहयाचन १ बुधसिंहपुत्रदाननिषेधाबुधसिंहदत्तकीकृतकरवरपतिसालमसिंहमध्यात्मजदलेलसिंहार्थजयसिंहबुन्दीसमर्पणं २ प्रदत्तानल्पवित्तमरुधराधीशाभयसिंहयवनेन्द्रमुहम्मदशाहाहमदाबादोपरिप्रस्थापन ३ प्रेपितमा-

---

१ जयसिंह ने २ पत्नि [कछवाही] का भाई और तुम्हारा साला ३ मेरा पति [जिसको तुम मेरा स्वामी बनाना चाहते थे वही] ४ प्रसिद्ध ढूंढाड़ देश की पालना करनेवाला ५ बुधसिंह की सेना के पास जाकर ६ यह प्यारा मंत्र ॥ ५६ ॥ ७ कष्ट नहीं है अर्थात् बादशाह की आज्ञा मंगवा देने के कारण अब बूंदी की भूमि का यत्न करना कुछ कठिन नहीं है ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ८ सेना सहित ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बूंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बुधसिंह के पुत्र उम्मेदसिंह के जन्म होने पर उसको जयसिंह का मांगना १ पुत्र के देने से बुधसिंह के नाहीं करने पर करवर के पति सालमसिंह के मध्यम पुत्र दलेलसिंह को बुधसिंह की गोद रखकर राजा जयसिंह का उसको बूंदी देना २ मारवाड़ के राजा अभयसिंह को बहुत धन देकर बादशाह मुहम्मदशाह का अहमदाबाद भेजना राजा ३ जयसिं-

र्थनापत्रजयसिंहदलेलसिंहार्थबुन्द्यधिकाराज्ञापत्रलेखन ४ मरहट्ट-वारणार्थोज्जयिनीप्रस्थात्तजयसिंहस्य स्वानुजविजयसिंहमारणं त्रिंशो मयूखः ॥ ३० ॥

आदितोऽष्टषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ २६८ ॥

दोहा ॥

सक खट बसु सत्रह१७८६समय, उर्ज्ज¹ मास अवदात² ॥
कूरम मालव कुंच किय, मनसिज³ तिथि१३ उमहात ॥१॥
सुता भनाय अधीसकी, बुंदिय पति लघु बाम⁴ ॥
संगानैर समीप सो, ही असती⁵ रु हराम ॥ २ ॥
सस्सू यह जयसिंह की, सुज्जकुमारि⁶ प्रसूति ॥
पलटाई कूरम नृपति, अब नवीन रचि ऊँति⁷ ॥ ३ ॥

पज्झटिका ॥

रट्ठोरि निकट जयसिंह राय, पहु दिय⁸ दलेलसिंहहिं पठाय ॥
कहि यह सु पुराय⁹ तुमरो कुमार, इहिं गिनहु राज्य थंभन उदार॥४॥
सुनि यह दलेल सन अति कसूर¹⁰, कहि पुत्र मिली रट्ठोरि कूर ॥
इम कूरम संगानैर आय, सस्सू¹¹ पलटाई छल सहाय ॥ ५ ॥

ह का बादशाह को अरजी देकर दलेलसिंह के नाम पर बूंदी का फरमान मगाना ४ मरहठों को रोकने के अर्थ उज्जैण जाते हुए राजा जयसिंह का अपने छोटे भाई कैदी विजयसिंह को मारने का तीसवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अड़सठ २६८ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक के २ शुक्ल पक्ष में ३ कामदेव की तिथि [ज्योतिषियों में त्रयोदशी तिथि का स्वामी कामदेव है] ॥ १ ॥ ४ बुधसिंह की छोटी स्त्री ५ कुलटा [यहां अत्यन्त कुलटा होने के कारण असती, और हराम एकार्थ वाची दो शब्दों का प्रयोग किया है] अथवा पति से विरुद्ध होने के कारण हराम पद दिया है तो यह अर्थ है कि वह कुलटा और स्वामी हरामी [अधर्मिणी] सांगानेर के समीप थी ॥ २ ॥ ६ सूर्यकुमारी जननेवाली ७ क्रीड़ा [नया खेल रचकर] ॥ ३ ॥ ८ राजा दलेलसिंह को भेजा ९ यह तुम्हारा धर्म पुत्र है ॥ ४ ॥ १० बडे अपराध सहित था तो भी ११ सासू को ॥ ५ ॥

इम दुव२दल्लेल्ल कूरम *अमान, मिलि नैर निवाई दिय †मिलान॥
बुदिय लिखि पठई पुनि बिचारि, मालम तुम मडहु घर सम्हारि६
हम मिलन प्रथम आवहु हजूर, पुनि भुग्गहु बुंदिय ‡कटक पूर ॥
सुनि यह सठ सालम अनय साम, कूरम ढिग आयउ मिलन काम७
मिलि उभय२गाम मुंडवा मिलान, दिय कुम्म सालमहिं सिक्खदान
कहि जावहु बुंदिय तुम निसंक, अब तव कुमार सिर पट्ट३अंक८
इहिं लौ हम मालव जात आज, सूबा अवति रक्खन समाज ॥
सालम तुम जावहु गृह सधीर, बुद्धहि नन प्रविसन देहु बीर ॥ ९ ॥
यह अक्खि सालमहिं सिक्ख अप्पि, मालव चलि कूरम कुच मप्पि
दल भरन भुम्मि फुट्टत दरारि, चचल मतग हल्लिय चिंकारि ॥१०॥
वहि सजवे तरारन जेत बाजि, उद्धत भट महन कपट आजि ॥
रचि इम दरकुचन कूर्मराज, कोटा धर सर्कमि प्रथित काज ॥११॥
नदि कुसक तीर परि दल अनत, दिस दिसन फुट्टि गय यह उदंत
कोटा नृप दुज्जनसल्ल कूर, हित सचिव दोय२पठये हजूर ॥ १२ ॥
नागर द्विज बेणीराम नाम, रन चतुर व्यास दोलत्तराम ॥
इम दुव पठाय कूरम अनीकें, कोटेस रचिय प्रनतिय कितीक १३

[षट्पात]

कुसक छोरि पुनि कुच करिय अग्गैं नृप कूरम ॥
सिंधु सरितें निवसथ वडोद किय तँहँ मुकाम क्रम ॥
उज्जइनीके अनुग गोड़१ उम्मट सभैर गन३ ॥
अरु कबंध४ कछवाह६ सुपहु खिच्चिय७सुनि सेवन ॥

---

*अत्यन्त (अत्यन्त) †मुकाम॥५॥‡पूर्ण सेना से१अनीति का मिलाप करने का ॥७॥२बुन्दी के पाट का लेख॥८॥३बुधसिंह को कदापि मत घुसने देना ॥ ९ ॥ ४ सेना के भार से ५ चीत्कार शब्द [चीसली] करके ॥ १० ॥ ६ वेग सहित ७ सेना के उद्धत वीर मार्ग में कृत्रिम युद्ध करते जाते थे ८ चला ९ प्रसिद्ध कार्य के लिये ॥ ११ ॥ १० वृत्तान्त ॥ १२ ॥ ११ कछवाहे की सेना में १२ विशेष नम्रता ॥ १३ ॥ सिंधु नामक १३ नदी १४ ग्राम १५ सेवक १६ चहुवाण

सूबाधिनाथ कुम्भहिँ समुझि नृप ये सब आयउ निकट ॥
सजि सजि मिलाप जयसिंहसन किय सासन सृणि सिर करँट१४

(दोहा)

निज गढ सोपुर गोड़ नृप, उम्मट पट्टनि ईस ॥
कोटापति चंडासि कुल, संभरवार बत्तीस ॥ १५ ॥
गढँगाघव बज्जंगगढ, ये खिच्चिय चहुवान ॥
नरउरपति कछवाह नृप, सुत गजसिंह सयान ॥ १६ ॥
पति ईडर रतलामपति, हुव रट्टोर दलेस ॥
इत्यादिक उज्जैनके, आये अनुग असेस ॥ १७ ॥

(पादाकुलकम्)

सूबानुग नृप समय सयाने, मिलि जयसिंह सबहि सनमाने ॥
अरु कोटेस पटालय आयो, भीम जनकके भव सोक भुलायो॥१८॥
जान्यौं दई दलेलहिँ लुद्दिय, होय यहै इनकौं स्वीकृत हिय ॥
इम बिचारि कोटा अपनायउ, बहु मुद डेरन जाय बढायउ॥१९॥
जयहरि लौ इम सबन बढे जब, मंडुवपुर प्रबिस्यो धर मालव ॥
प्रकट दिखात साह किंकरपन, मिल्यो किंतव अंतरै मरहट्टन२०
कछुदिन समर व्याज तहँ कट्टि, बहुल पिक्खि दक्खिन दल बट्टि॥
लुब्भि कटक अप्पन लुटवायो, मरहट्टन कहँ बिजय मिलायो२१
कछु धन बसनें निवेदन किन्ने, लोभ छन्न तिनके बचे लिन्ने ॥

१सूबा का पति [स्वामी]२समीप३से४जैसे अंकुश को५शपने मस्तक पर हाथी सहन करैं तैसे ॥ १४ ॥ ६ चहुवान ॥ १५ ॥ ७ राघवगढ ॥ १६ ॥ ८ सेना के ईश ९ सेवक ॥ १७ ॥ १० सूबा के साथ चलनेवाले ११ पिता भीमसिंह के मरने का शोक मिटाया ॥ १८ ॥ १२ कोटावालों को स्वीकार होजावे इसकारण १३ कोटे को अपना किया ॥ १९ ॥ १४ जयसिंह १५ उज्जैन से १६ प्रवेश किया १७ छली १८ भीतर के मन से मरहटों से मिला हुआ था ॥ २० ॥ १९ युद्ध के मिष से २० बहुत देखकर २१ उस [जयसिंह] लोभी ने अथवा लोभ करके अपनी सेना को लुटवाई ॥ २१ ॥ २२ वस्त्र २३ वचन

ठहे कूरम इम साह हरामी, किय मरहट्ठ मेल भुव *कामी॥२२॥

(दोहा)

†तदनंतर करि सिक्खगो, कोटापुर कोटेस ॥
अवर रहे हाजरि अखिल, नरउर आदि नरेस ॥ २३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरिते जयसिंहकोटागमनपूर्वकोज्जयनीगमन १ मल्हपुरमरहट्टमिश्रितकपटिजयसिंहस्वानीकलुण्टनमेकत्रिंशो मयूख ॥३१॥

आदित एकोनसप्तत्युत्तरद्विशततम ॥ २६९ ॥

(षट्पात्)

इत बुंदिय ‡अवनीस चाहि §बुद्धह नृप चल्लिय ॥
कानीखोह मुकाम छोरि बुंदिय दिस छल्लिय ॥
रस बसु सत्रह१७८६मैं रत पाय अगहन सित पंचमि५ ॥
किय स्वदेसपर कुच भुल्लि ज्यों मृगथल जल भ्रमि ॥
चंद्रसु निवाई मग्ग चलि भगवतगढ भोरा रहिय ॥
इत सुनि उदंत सालम यह सु बुंदियतजि सम्मुह बहिय।१।
उग्र बंधिक कछवाह समय सधि रु सर साहस ॥
हठ गुन साह निदेस चाप चतुरंग रगरसं ॥

* भूमि की कामनावाला ॥ २२ ॥ † जिसपीछे ॥ २३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में राजा जयसिंह का कोटे होकर उज्जैन जाना १ मल्हपुर में मरहठों से मिलकर छली राजा जयसिंह का अपनी सेना को लुटवाने का इकतीसवां ३१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ उनहत्तर २६९ मयूख हुए ॥

‡ बुन्दी का राजा § बुधसिंह १ उछलना [चला] २ सम्वत् ३ मृगतृष्णा के जल से भ्रम कर मृगस्थल में जावै जैसे ४ चांदसू ५ समाचार ६ सालमसिंह ॥१॥ जयसिंह तो उग्र ७ शिकारी और समय है सो ८ भाथा है जिसमें हठ है सो ही बाण है बादशाह की आज्ञा ही दृढ९ प्रत्यंचा है १०युद्ध के रसवाली सेना है

वन हड्डोतिय बिकट स्वान सालम दलेल सह ॥
लिखित बागुरा[1] लग्गि गाढ मत कउल[2] फंद ग्रह ॥
मुढ्ढपन अलस लहि सोह मन बुद्ध सु मंत्र बिबेक[3] विन ॥
उनमत्त एँन संभर अधिप इच्छत जल बुंदिय इरिनँ ॥ २ ॥

[दोहा]

सुनि इत आवत संभरहिँ[6], बनि सालम बुंदीस ॥
लै दल सम्मुह उलटयो, स्वामि हराम सँरीस ॥ ३ ॥
लहि सीमा बुंदिय मुलक, अड्डो ठड्डो आय ॥
यह सुनि सठ बुंदिय अधिप, बाम मुरयो विहसाय ॥ ४ ॥
जैतसिंह जाजव जयी, दिल्लिय रन अँसु[10] दिन्न ॥
तास देवसिंहह तनय, भकति स्वामि रस भिन्नँ[11] ॥
नगर पलोधी धाम निज, वैरिसल्ल भव वंस ॥
कुसथल पंचोलास पुनि, ये दुव पुर उँत्तंस[12] ॥ ६ ॥
साह समप्पे संभरहि, चोवनगढ गाहि बाँहँ ॥
कुसथल पंचोलास ए, उभय२इजाफाँ[13] माँहिँ ॥ ७ ॥
तब संभर दिय जैत हित, कुसथल पंचोलास ॥
सय्यद सैन[14] दिल्लिय समर, बिरच्यो जिहिँ दिवँ[15] बास ॥ ८ ॥
तास देवसिंहह तनय, स्वामिधर्म रत सूर ॥
ताके पुर कुसथल तबहि, आयउ बुद्ध जरूर ॥ ९ ॥

सो ही धनुष है हाडोती देश रूपी विकट वन और सालमसिंहसहित दलेलसिंह ही स्वान [कुत्ते] हैं बुधसिंह ने जयसिंह को लिखावट कर दी वह लिखावट ही १ बागर [फंदा] है जिसमें २ वाममार्ग की दृढता ही फंदों की गांठें हैं मन पर मूर्खपन और आलस्य रूपी सोह लेकर ३ बिना सलाह और विना विचार का वह चहुवाण राजा बुधसिंह रूपी उन्मत्त ४ मृग बूंदी रूपी ५ ऊपर भूमि [मृगतृष्णा] का जल चाहता है ॥ २ ॥ ६ बुधसिंह को ७ क्रोध सहित ॥ ३ ॥ ८ बुधसिंह ॥ ४ ॥ जाजव के युद्ध में ९ जय पानेवाला १० माराग़या ११ भीगा हुआ ॥ ५ ॥ १२ नगरों के मुकुट ॥ ६ ॥ १३ सिवाय (तरक्की) में दिये ॥ ७ ॥ १४ से १५ स्वर्ग को गया ॥ ८ ॥ ९ ॥

विष्णुसिंह तनया बहुरि, अनुपम तनया आप ॥
ये सगहि रानी उभयर, पति प्रमत्त गति पाप ॥ १० ॥
पुरवाहिर पृतना परिग, घन जिम डेरन घेर ॥
देवसिंह महिमानि दिय, वुद्धहिँ गोठि हिरनेर ॥ ११ ॥
परि डेरन लग पामरे, धाम भ्रीपे पधराय ॥
निज सरवस्व निवेदयो, देवसिंह हित दाय ॥ १२ ॥
यह सुनि पुर वलनन अधिप, अभयसिंह अति धीर ॥
निज दल सजि आयउ निडर, बुंदिपपति ढिग बीर ॥१३॥
अभयदत्र य भट उभयन, पेरिसह्ल भत्र त्रस ॥
सम्मलि हुव बुद्धीगकेँ, नेह अगपि सजि दस ॥ १४ ॥
यह उदर्त सुनि इन्द्रगढ, सुभट इन्द्रसल्लोत ॥
देवसिंह छि वर सुनन, आयउ दल उद्योत ॥ १५ ॥
कछु किसोर वय वसि कछुक, क्रम भय लहि क्रूर ॥
देव पृथक डेरा दये, दल सबैं तजि दूर ॥ १६ ॥
इन सठ सालम पिठि परि, कृतघन चिंति कुकाम ॥
पत्तने पद्मोलास ढिग, किन्ने लरन मुकाम ॥ १७ ॥
कुल वधत्र मुहुकँम्मके, मिलि सत्र सालम माँहिँ ॥
पट्टालीपुर पति मथितें, मिल्यो जवान सु नाँहिँ ॥ १८ ॥
तोप इक्क १ जंबूर सत १००, हैसत २०० सजि बंदूक ॥
मिल्यो आनि बुधसिंहमैं, अनुचर धरम अचूक ॥ १९ ॥
त्योंही इक १ नगराज तँहँ, मुहुकम बस वतसैं ॥
सालममैं न मिल्यो सुभट, पट्टु विख्यात प्रसंग ॥ २० ॥

१विष्णुसिंह की पुत्री २मथन के रावत अनोपसिंह की पुत्री ॥ १० ॥ ३पचाव से (सेना का डेरा) हुआ ॥ ११ ॥ ४ पावडे (पगमंडे) ५ अपने स्थान पर ६स्नेह की रीति से ॥ १२ ॥ १३ ॥ ७ कवच समझकर ॥ १४ ॥ ८ वृत्तान्त ॥ १५ ॥ ६ देवसिंह ने १० बुधसिंह की सेना को दूर छोडकर ॥ १६ ॥ १२पुर ॥ १७ ॥ ११ मोकमसिंह के कुल के हाक १३ विदित ॥ १८ ॥ १६ ॥ १४ मुकुट ॥ २० ॥

[षट्पात्]

सुनि इत रन जयसिंह[1] भीर सालम दल भेजिय ॥
तीन सहँस३०००तुरक्खार[2] पंच५उमराव मुख्य प्रिय ॥
ईसरदापुर ईस नाम कोजुव[3]१निसंक नर ॥
सारसोपपुर स्वामि निहित फतमल्ल२बीरवर ॥
साँवल३मुहाड़पुर पति सबल प्रबल अचल४नानोड़ि पति ॥
बहादुरसिंह५कूरम बहुरि लुहानीपुर पति बिमति ॥ २१ ॥

[दोहा]

ब्रजभुव[4] बागी सुभट बलि, नरुवं[6] वंस कछवाह ॥
नामधेय[7] सिरदार१निज, सो दिय संग सिपाह ॥ २२ ॥
पृथ्वीसिंह२रु कनक३पुनि, उभय नरुव अवतंस[8] ॥
घासीराम४रसोरपति, बलि भट कूरम वंस ॥ २३ ॥
सेरसिंह खिज्जिय सबल, पुनि जहन परताप२ ॥
हरि१तोवर आज्ञा हुकम१, मारन[10] करन१मिलाप ॥ २४ ॥
उदयसिंह१पुनि रूप२अरु, जोध३सुरत४भट जत्थ ॥
सालम हित कूरम सजे, सोलंखी चउ४सत्थ ॥ २५ ॥
आमेर पैं[12] पठये इते, लागि बुंदिय भुव लैंन ॥
बिग्रह[13] बहुरि प्रवास[14] बसि, सब गक्खिय ढिग सैंन ॥ २६ ॥
नरउरपति गजसिंह सुव[15], जयसिंहहिं तहँ जंपि ॥
समर प्रपंची मम सचिव, चाहत जय अरि[16] चंपि ॥ २७ ॥
भेजहु तिहिं इनसंग भल, कूरम तब मुसिकाय ॥
मंगहि दिय नरउर सचिव, नाम सु खंडेराय ॥ २८ ॥

१इधर युद्ध सुनकर २घोड़े (घोड़ों के सवार) ३ विशेष बुद्धिवाला ॥ २१ ॥ ४ व्रज की भूमि में रहनेवाले उमराव ५ फिर ६ नरू के वंश का [नरूका] कछवाहा ७ नाम ॥ २२ ॥ नरूकों के मुकुट ९ पुनि ॥ २३ ॥ १० बुधसिंह को मारने और ११सालमसिंह से मिलाप करने का ॥ २४ ॥ २५ ॥ १२ आमेर के पति ने १३मरहठों से युद्ध और१४विदेश में बसने के कारण ॥ २६ ॥१५सुत१६दवाकर

(षट्पात्)

सुभट मानसिंहोत कलह इम पञ्च५मुख्य किय ॥
अवरहु सुभट अनेक सेन सम्मिलि हुत सज्जिय ॥
करि यह दल दरकुच मुलक मालव तजि मडुव ॥
जुरि आयउ जंघाल भीर सालम कुसथल भुव ॥
करि दल मिलान सालम कटक हड्डन पति ढिग मिलन हित॥
इन पञ्च५भटन आय रु कहिय बुद्ध श्रवन धारहु विदित२९

(दोहा)

अभयसिंह बलवन अधिप, पट्टनि भज्जिग एह ॥
भीम हिंतु अति मन्नि भय, दुल्लभ मन्नत देह ॥ ३० ॥
जाके बल जयसिंहतें, अब रन रचहु न एहु ॥
दिनप्रति रुप्पय दोयसत२००, रहि वृंदावन लेहु ॥ ३१ ॥
नहिं बुल्ल्यो बुंदिय नृपति, क्रम सब सहित कुवैंन ॥
राजाउत पचन रोरिस, निठुर दिखाये नैंन ॥ ३२ ॥

(षट्पात्)

कूरमपति भट कुवच प्रकट सुनि सुनि बलवन पति ॥
अभयसिंह अति वीर भयउ धकि प्रलय रुद्र भति ॥
कराखि मुच्छ डसि अधर निरखि पचन५उफनायो ॥
पन्नग पय चप्यो कि मत्त मृगराज खिजायो ॥
बुल्लयो विदित भुज ठोकि बल गल्ल बजत गोदर हरैं ॥
बुधसिंह आन कूरम बलोंहिं केहरि हम गेहरिकरैं ॥३३॥

(दोहा)

॥ २७ ॥ २८ ॥ १ ये मानसिंहोत राजावतों के नाम से प्रसिद्ध हैं २ शीघ्र ३ शीघ्र चलनेवाले ४ सालमसिंह की सेना में ५ हे बुधसिंह सुनो ॥ २९ ॥ ६ पाटन के युद्ध में भगा था ७ कोटा के राजा भीमसिंह से ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ८ रोष (क्रोध) सहित ॥ ३२ ॥ ९ भांति १० सर्प को पैर से दबाया ११ बुधसिंह के सौगन हैं कि १२ कछवाहे की सेना को हम सिंह होकर १३ गाभर (भेड़) के स

१ातन अग्गैँ हम भजत, गृहँ रन अनुचित गाय ॥
अप्परनतैं रन आहुरत, पव्वयँ हड्डन पाय ॥ ३४ ॥
इम हक्कारि बलवन अधिप, फुरि उट्ठिग गहि मुच्छ ॥
फँटाटोप मंडिग मनहुँ, पन्नँग दब्बत पुच्छ ॥ ३५ ॥
तब कूरम सुभटन तँमक्कि, सजिय जाय निज सैन ॥
जुत सालम सब इक्क जुरि, लगि दल बंधिग सैन ॥ ३६ ॥
देवसिंह छित्वर सुवन, इंद्रगढप सुनि एह ॥
भीरु मान्न जयसिंह भय, गया सपरिकर गेह ॥ ३७ ॥
हृदयनरायन हरिय कुल, ए बंधुव उमराव ॥
करन भीर बुंदीसकी, हुत आये रन दाव ॥ ३८ ॥
हड्ड मेव सामंत हर, माधव हर भट मोर ॥
कुल बल्लन अरु नाथ कुल, ये चालुक न्रप ओर ॥ ३९ ॥

शुद्धप्राकृतभाषा ॥

(आर्य्या)

विइहअणेहविएगी अणुअं बुंदीसपट्टवं पिक्खि ॥
सालमउत्तपआवो जिट्ठो मिलिओ बुहेण भूवइणा ॥ ४० ॥

प्रायो देशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

मान करेंगे ॥ ३३ ॥ १ घर का युद्ध अनुचित कहकर २ हाडाओं के पैर पर्वत के समान हैं ॥ ३४ ॥ ४ मानों सर्प ने पूंछ दबाते ही ३ फण का आटोप (छत्र) रचा है ॥ ३५ ॥ ५ क्रोध करके ६ सेना की पंक्ति (परेट) बांधी ॥ ३६ ॥ ७ परिग्रह सहित घर गया ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ वालणोत शाखा के९सोलखी१०बुधसिंह की ओर ॥ ३९ ॥

संस्कृत अनुवाद

विविधानेहोविवेकी अनुजं बुन्दीशपट्टपम्प्रेक्ष्य ॥ सालमपुत्रप्रतापः ज्येष्ठो मिलितो बुधेन भूपतिना ॥ ४० ॥

अनेक प्रकार के समयों को जाननेवाला छोटे भाई को बुन्दीश के पाट का पति देखकर सालमसिंह का बडा पुत्र प्रतापसिंह राजा बुधसिंह से मिला ।४०।

(दोहा)

राजसिंह अन्वयं रतन, बंधव निज वरवीर ॥
दौलतसिंहहु सज्जि दल, भट आयउ नृप भीर ॥ ४१ ॥
हाजरि भट प्रथमहि हुते, महासिंह कुल मोर ॥
असित पक्खके इंदु जिम, लग्यो घटन दल घोर ॥ ४२ ॥
इम हजार टंनना बद्लि, सब हुव सालम संग ॥
दस हजार१००००नृप निकट दल, रहिय रचावन रंग॥४३॥
उभय पक्ख अरि मित्र तजि, समय जोर दरसाव ॥
रहिय इंद्रगढ आदि बहु, उदासीन उमराव ॥ ४४ ॥
सालम ढिग तेरह सहस१३०००, नृप ढिग दस निरधार ॥
इत कुप्पो बलवन अधिप, भुज धरि बुंदिय भार ॥ ४५ ॥
बुद्ध नृपति बरजत रह्यो, दोउन संपथ दिवाय ॥
इहे भज्जन नाँ सुनै, लग्गी अदर लाय ॥ ४६ ॥
अभयसिंह अरु देव इत, अरु कछु सभरं सैंन ॥
जिहिं विच जे भट सज्ज किय, बरनत तिन्ह कवि बैंन।४७।
महाराम मातुलं कुलज, मुरयो जु सालम मेल ॥
वाको सुत संग्राम १इत, सोहि सज्यो गहि सेल ॥ ४८ ॥
प्रेमसिंह२सज्ज्यो प्रथितें, नाथाउत रन नूर ॥
बखतसिंह३जगभानु४ बैंलि, सजे इह अति सूर ॥ ४९ ॥
साँवलदास५ सजोर सजि, गोरं बस उजियार ॥
जोरावर६कछवाह जुरि, परसुराम७ परिहार ॥ ५० ॥
बरजत नृप बुंदीसकैं, सहठ दिवावत सौंहँ ॥

---

१ वंश ॥ ४१ ॥ २ कृष्ण पक्ष के चन्द्रमा के समान ॥ ४२ ॥ ३ सेना ४ बुधसिंह के पास ५ युद्ध करने को ॥ ४३ ॥ ६ दोनों पक्षवालों से शत्रुता और मित्रता छोड़कर ७ तटस्थ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ८ सौगन दिखाकर ॥ ४६ ॥ ९ चतुरंगिणी सेना ॥ ४७ ॥१०बुधसिंह के मामा के कुल में उत्पन्न ॥ ४८ ॥ ११प्रसिद्ध१२पुनि ॥ ४९ ॥१३गौड़ वंश का प्रकाशक ॥ ५० ॥ ५१ ॥

अभयदेव संगहि इते, भटन तनंकिय मोंहँ ॥ ५१ ॥
देवसिंह अभमल्ल दुव, दुल्लह ललित उदार ॥
अच्छरि दुलहनि अद्दरिय, जन्य[1] इते जुहार ॥ ५२ ॥
अवर भटन पिक्ख्यो[2] समय, मालम अयुत अनीक ॥
छोरहु नृपहि न इक्क छिन, को जानैं वे[3] कितीक ॥ ५३ ॥
जो भूपहु सिर घात जड़, कूरम घल्लहिं कूर ॥
तो सब स्वामि समीपही, सत्रुन गंजहिं[3] सूर ॥ ५४ ॥
स्वामि दये न लरन सपथ[4], बोलि[5] नृप तजन न वेस[6] ॥
नय बिचारि इम इन निकट, सकल रहे सुभटेस ॥ ५५ ॥
बीर जिते पहिलैं बदिय, तिन नंन मन्निय मोंहँ ॥
अभयसिंह संगहि उठिय, भयद फुरावत भोंहँ ॥ ५६ ॥
कहि कुबैन उठि कूरमन, निजदल पिल्लिय जाय ॥
यह सही न बलवन अधिप, लगिय सोर बिच लाय ॥ ५७ ॥
अभयसिंह अरु देव इत, कुप्पि चलिय जिम काल ॥
सिर घंसत[11] अंजलोकसौं, पय परसत पायाल[13] ॥ ५८ ॥
सालम अरु कूरम सुभट, जुरि इत प्रबल जरूर ॥
बुंदिय दल सिर बग्गलै, सकल चढे बढि सूर ॥ ५९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे ज्ञातदक्षिणागतजयसिंहत्यक्तकाणोखोहग्रामबुधसिंहबुन्दीदिग्गमन १ आत्तसैन्यसालमसिंहबुधसिंहसंमुखसरणं २

॥५२॥ १जानैंतो २अब ॥५३॥ ३मारेंगे ॥५४॥ ४सौगन ५पुनि ६उत्तम नहीं है ॥५५॥ ७कहे ८सौगन नहीं माने ९भय देनेवाले ॥५६॥ १०अपनी सेना को भेजी ॥५७॥ मस्तक १२ब्रह्मलोक से ११घिसता है और पैर १३पाताल का स्पर्श करते हैं ॥५८॥५९॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में राजा जयसिंह को दक्षिण में गया हुआ जान कर रावराजा बुधसिंह का काणोखोह नामक ग्राम को छोड कर बुंदी की ओर आना १ सालमसिंह का बुन्दी से सेना लेकर बुधसिंह के सम्मुख जाना २

सालमसिंहसहाय जयसिंहसैन्यसहित जयपुरसामन्तपञ्चककुसथ-लाख्यनगरनिकटसालमसिंहसंमिश्रण ३ प्रत्यहद्विशतमुद्राग्रहणपूर्वक बुधसिंहवृन्दावनवासार्थजयपुरसामन्तभणन ४ जयसिंहभीतिप्रकबुधसिंहकतिपयबुन्दीसैन्यसालमसिंहमिलनकतिपयसामन्तोदासीनभावतटस्थतासादन ५ सालमसिंहसैन्यभीतबुधसिंहस्य युद्धाकरणार्थस्वसामन्तशपथदापन ६ देवसिंहाभयसिंहादिकतिपयसामन्तशपथभगपूर्वकसमरसज्जभवनवर्णनद्वात्रिंशोमयूख ॥३२॥

आदितः सप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७० ॥

[दोहा]

सक हय वसु सत्रह१७८७समय, माधव दर्स३०मिलाप ॥
घटिय रुद्द११रविके चढत, उलटि समुद्रन आप ॥ १ ॥

[दुर्मिला]

दुव सेन उदग्गन खग्ग समग्गन अग्ग तुरग्गन वग्ग लई॥
मचि रग उतग्गन दग्ग मतग्गन सज्जि रनग्गन जग्ग जई ॥

सालमसिंह की सहायता पर राजा जयसिंह की भेजी हुई सेना सहित जयपुर के पांच उमरावों का कुसथल नामक नगर के समीप सालमसिंह के सामिल होना ३ जयपुर के उमरावों का प्रतिदिन दोसौ रुपये लेकर वृंदावन वास करने को बुधसिंह से कहलाना ४ जयसिंह के भय से बुन्दी की बहुधा सेना का बुधसिंह का छोड़ कर सालमसिंह से मिलना और कितने ही उमरावों का उदासीन भाव से तटस्थ रहना ५ सालमसिंह की सेना से डरेहुए बुधसिंह का अपने उमरावों को नहीं लड़ने के सौगन दिलाना ६ देवसिंह और अभयसिंह आदि थोड़े से उमरावों का सौगन नहीं मान कर युद्ध के अर्थ तैयार होने का बत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सित्तर २७० मयूख हुए ॥

[1]वैशाख मास की[2]अमावास्या के मिलने पर ग्यारह घड़ी दिन चढ़े पर समुद्रों का [3]पानी उलटा ॥ १ ॥ [4]उदग्र [उछलते हैं अग्रभाग जिनके ऐसे] खड्ग लेकर दोनों सेना के [5]समग्र योद्धाओं ने घोड़ों की बाग आगे लीं अर्थात् घोड़े उठाये उस युद्ध में युद्ध जीतनेवाले सजेहुए ऊंचे हाथियों का [6]युद्ध हुआ

लगि कंप लजाकन भीरु भजाकन वाक कजाकन हाक वढी ॥
जिम मेह ससंबर यों लगि अंबर चंड अडंबर खेहचढी ॥२॥
फहरक्कि दिसान दिसान वड वहरंक्कि निसान उडैं विथरैं ॥
रसना अहिनाथककी निकसैं कि परा झल डांगियकी प्रसरैं ॥
गज घंट ठनंकिय भेरि भनंकिय रंग रनंकिय कोचँ करी ॥
पखरान झनंकिय वान सनंकिय चाप तनंकिय ताप परी ॥ ३ ॥
धमचक्क रचक्कन लग्गि लचक्कन कोल मचक्कन तोल कढ्यो ॥
पखरालन भार खुभी खुरतालन ठपाल कपालन साल वढ्यो ॥
डगमग्गि सिलोच्चय शृंग डुले झगमग्गि कृपानन अग्गि झरी ॥
वजिखल्ल तवल्लन हल्ल उझल्लन भुम्मि हमल्लन घुम्मि भरी ॥४॥
मचि घोरन दोर दुहुओर समीरन जोर उमीरन घोर जम्यो ॥
अभमल्ल उछाहन हड्ड हठी कछवाहन गाहन चाह भम्यो ॥
सुव जैत इतैं भट देव सही करि स्वामि महीहित संग मज्यो ॥

जिस से १ लज्जित होनेवाले और भागनेवाले कायरों को कंप [धुजनी] लग कर २ युद्ध करनेवाले वीरों के वचनों की हाक वढी और ३ जल सहित मेघ के समान भयंकर आडंबर से आकाश में खेह [रंजी] चढी ॥ २ ॥ ४ वडी ध्वजायें और छोटी ध्वजायें फरक कर दिशा दिशा में उड कर फैलीं सो मानों ५ शेषनाग की जिव्हा निकलती है अथवा होली की झाल फैलती है उस युद्ध में हाथियों की घंटा ६ नोवत और ७ कवचों की कड़ियें वजीं ८ घोड़ों की पाखरों का झणकार वाणों का झणकार और धनुषों के खिचने से भय हुआ ॥ ३ ॥ उस युद्ध में टक्कर लेने से भूमि में लचक लग कर भूमि को धारण करनेवाले ९ वाराह के झुकने का तोल कढा १० पाखरों वाले घोड़ों के भार से चुभी खुरतालों से ११ शेषनाग के कपाल में साल वढा १२ पर्वत हिल कर उनके शिखर डुलने लगे और १३ तरवारों से चमकी हुई १४ अग्नि गिरी, उस हल्ले के वहाव में खाल के ऊपर १५ तवलें (कुठार विशेष] वज कर भूमि हमल्लों से घूमने लगी ॥ ४ ॥ घोड़ों की दौड से दोनों ओर का १६ पवन चल कर उमीरों [सरदारों] का भयंकर वल जमा उस समय हठवाला हाडा अभयसिंह कछवाहों को मारने की चाह से १७ चला इधर जैतसिंह का १८ पुत्र देवसिंह निश्चय ही अपने १९ स्वामी [बुधसिंह] की भूमि के अर्थ स-

दुहुओर कुलाहंक तोप दगी लगि भद्द बलाहक नैद लज्यो ॥५॥
उततैं कछवाहन उग्र उछाहन बेग सु वाहन वग्ग लई ॥
बनि बुद्दिय वालमें जग सु जालम सगाहि सालम दोरं दई ॥
परि रिट्ठि कृपानन चड चुहानन गिद्धि उडानन गूद गहैं ॥
गनें धीर गुमानन पीर प्रमानन वीर कमानन तीरवहैं ॥ ६ ॥
वढि वुत्थिन वुत्थि छई वसुधा लगि लुत्थिन लुत्थि परैं प्रजरैं ॥
घटैं सेल घमाकन रों रमाकन हक्क सु हाकन होस हरैं ॥
लखि खग्ग उदग्गन मग्ग लगी जुरि अच्छरि जग्ग प्रजापतिज्यों।
गलवाँह करैं करि वीर वरें गमनैं गन गैवरकी गतिज्यों ॥ ७ ॥
छननकि उडानन बान छये ठननकि गयदन घट घुरे ॥
फननकि दुवाहन टोप फटे रननकि सिपाहन कोंचं रुरे ॥
हुलि भैरव हेरुवतैं डहकी डगि डाकिनि साकिनि चोंकिचली ॥

जित हुआ उस समय दोनों ओर १ कोलाहल करनेवाली अथवा खोटा का-म करन (मारने) वाली अथवा कु (पृथ्वी) का नाम करनेवाली तोपें चलीं जि-नसे २ बादलों के ३ मद की ४ गर्जना लज्जित हुई ॥ ५ ॥ उधर से बड़े उत्साह वाले कछवाहों ने घोड़ों की शीघ्र बागें उठाई और उनके साथ ही युद्ध में जुल्म करनेवाला सालमसिंह ६ बुन्दी का पति बन कर ७ दौड़ा अधकर यु-द्धाओं के खड्गों के ८ निरंतर प्रहारों से उड़ते हुए गीधों ने गूद ग्रहण किया धीर लोगों के ९ समूह के घमंड की पीड़ा का प्रमाण करने के लिये वीरों की कमानों से तीर बहते हैं ॥ ६ ॥ जिनसे बूथ [नाम के टुकड़े] बढ़ कर १० भूमि ढक गई और ११ लोथ (मृतक शरीर) पर लोथ गिर कर जलने लगीं १२ यु-द्ध में क्रीड़ा करनेवाले वीरों के १३ शरीरों पर भालों के धमाके होकर हाथा पाइयों की हाक उनकी चाहना मिटाते हैं १४ उदग्र तरवारों को देख कर अप्सरायें १५ जिसप्रकार दक्ष प्रजापति के यज्ञ में गईं तिसप्रकार इस युद्ध के मार्ग में लगीं, वे गलबाँहीं करके वीरों को वरती हैं और उनका समूह १६हाथियों की चाल के समान चलता है॥७॥ छनक शब्द करके उड़ने वाले बाण छागये और ठनक शब्द करके १७ हाथियों के घंटे बजे फनक शब्द करके १८ वीरों के टोप फटे और रणक शब्द करके १९ सिपाहों के कवच बजे भैरव के हेरू से २० चमकी हुई डाकिनियें और शाकिनियें (देवी की दासी विशेष) डर कर इधर उधर हुल कर चौंक कर चलीं

नचि नारद *नच्चबिसारद ह्याँ बिबि बारद भाँति मिले खुरली ॥८॥
कटि खग्ग कलापं रु दंत कढैं कटि कुंभ मउत्तिन मेह फुरैं ॥
तरिता तनु तेग तहाँ तरकैं घन गज्ज मतंगज गज्ज घुरैं ॥
बॅक पंतिय दंतिय दंत बढे चहुँओर अचानक अंभ चढे ॥
कटिकैं उडि चातक घंट कढे प्रति पक्खर भेक अनेक पढे॥९॥
यह आनि सुमाकरमैं बरखा बढि माधवमास अमा बिथुर्यो ॥
लखि नायक सूरन हूरन हूरन अंगनें अंग अनंग फुर्यो ॥
इत सूरन चंदन अस्र चढे रस कैं इत हूरन राग रचे ॥
उमहे इत सिंधुनकी ध्वनितैं सम्मुहै उत सिंजित सह मचे ॥१०॥
इत डाकिनि दूति कैंजाकिनि ओ इत साकिनि नाकिनि या ससखी ॥
सब हूर सुहागिनि इक्क अभागिनि बुद्ध विभागिनि सो बिलखी ॥

*नाचने में चतुर नारद नाचा और दो मेघों के समान शस्त्र विद्या जाननेवाले बीर मिले।८।हाथियों के १कलावे [गरदनें] कट कर दंत निकलते हैं और २कुंभस्थल कट कर मोतियों का मेह होता है ३बीजली के ४विस्तार वाले खड्ग चलते हैं और मेघ की गर्जना के समान हाथी गर्जना करते हैं ५बुगलों की पंक्ति के समान ६ हाथियों के दंत कट कर अचानक चारों ओर ७ आकाश में चढते हैं और हाथियों के घंटे कट कर चातक [पपीहा] के समान निकलते हैं और पाखरों रूपी अनेक मींडक बोलते हैं ॥ ९ ॥ इसप्रकार ८ पुष्पों की खान ऐसी वसंत ऋतु में ९ वैशाख मास की १० अमावास्या के दिन वर्षा बढी, जहां ११ वीरपतियों को देख कर १२ अप्सरा अप्सरा प्रति १३ प्रत्येक अंग में१४ कामदेव बढा इधर बीरों के चंदन रूपी १५ रुधिर चढा और उधर प्रीति करके अप्सराओं ने गाना रचा इधर बीर लोग१६सिंधवीरागनी [वडाराग] की ध्वनि पर उत्साहित हुए और उधर १७ सम्मुख [अप्सराओं में] १८ भूषणों का शब्द हुआ ॥ १० ॥ १९ युद्ध कराने वाली इधर डाकिनी और इधर साकिनी दोनों सखियों सहित २० अप्सराओं ने यात्रा की. यहां 'य' शब्द यात्रा वाचक है यथा 'या यात्रायाम्' इति शब्दार्थचिंतामणौ॥ वे सब हूरें सुहागिनी हुई उनमें जो बुधसिंह के २१ बंट में आई वही एक अप्सरा दुहागिन रही सो २२ रोई (बुधसिंह डर कर युद्ध में नहीं आया इसकारण उसके बंट में आईहुई अप्सरा ही निर्भाग्य रही) उस अभागिनी ने

द्रुत हार सिंगार बिगारि दये धुपि अंजन रोदन बारि वह्यो ॥
कर कंकन फोरि मरोरि कलापहिं छोरि अलापहिं ताप सह्यो॥११
यह आइय डाकिनिकी सिखई धवहीन भई अब छोहि छई ॥
अति आरति अच्छरिकी लखिकैं हसि डाकिनि डिंडिम हक्क दई॥
सहनाइय सुंडिनकी करिकैं गन बावन भैरव गावनमैं गहक्कैं ॥
कटि मुंड रु रुंड किरैं[12] इतकौं चउसट्ठि जुगिन झुंड नचैं चहक्कैं॥१२॥
पखरालि तुरंगन पूर किते नखरालि कुरंगन फाल मचैं ॥
भट वार कटारन पार करैं असि झार अंगारन मार मचैं ॥
फटकारि मतंगज सुंडि फिरैं कटकारि चमूनन झुंड झमैं ॥
हलकारि चुरेलिनि होम हरैं ललकारि भयंकर भूत भमैं ॥१३॥
खंग धारन धार खिरैं खटकैं पलचारिन झुंड झटैं झपटैं ॥
खुरतारन भार खुदैं पहुमी असवारन वार दटैं दपटैं ॥

---

१ शीघ्र हार शृंगार बिगाड़ दिये और ३ रोने का पानी (अश्रु) बहने से उसका २ कज्जल धुप गया, हाथों के कंकणों को फोड़ कर ४ कटिमेखला (करधनी) को मरोड़ (तोड़) कर और ५ गाना छोड़ कर दुःख सहा ॥ ११ ॥ यह अप्सरा ६ डाकिनी के सिखाने से बुधसिंह को वरने को यहां आई थी सो ७ पति से हीन होकर ८ अत्यन्त क्रोध में हुई इस अप्सरा की अत्यन्त ९ पीड़ा देख कर डाकिनी हँस कर अपनी डिमडिमी [वाद्य विशेष] बजाई और उधर हाथियों की कटी हुई १० सूंडों की सहनाइयें बना कर बावन भैरव गान में ११ प्रसन्नता की बोली बोलते हैं, रुंड और मुंड कट कर १२ गिरते हैं और इधर १३ चौसठ योगिनियों का झुंड नाच कर बोलते हैं ॥१२॥ कितने ही १४ पाखरोंवाले घोड़ों का समूह १५ नखरा करनेवाले १६ हिरणों की छलांगें भरते हैं वीर खड्ग धार से कटार पार करते हैं और १७ तरवारों की ज्वाला से अंगारों की मार मचती है १८ हाथी सूंड का फटकार कर फिरते हैं और १९ सेना के शत्रु चुड़ायों के समूह २० चलते हैं उन चुड़ायों की हलकार [ललकार] चुड़ैलों की चाह को मिटाती है भयंकर ललकार से भूत फिरते हैं ॥ १३ ॥ २१ तरवारों की धार पर तरवार की धार लग कर खिरती और खटकती है और २२ मांस खाने वालों का समूह शीघ्रता से झपटते हैं घोड़ों की खुरतालों के भार से भूमि खुदती है और असवार अपने वार से २३ दौड़ते और दपाते हैं कितने ही वी

उपकारन कार[1] किते उमहे[2] सिव धारन काज गहैं सिरकौं ॥
दल मारन मार मिले दुवघाँ[3] मद बारन[4] बार चले चिरकौं ॥ १४ ॥
घमसानन[5] बान उडानन लै अरि प्रानन पीवत काल अही[6] ॥
चहुवानन के करकी उपमा पवमान[7] न मानस[8] ह्वाँ निबही ॥
करवालन[9] चंड उडी चिनगी भट जालन[10] भीर भिरैं भुरसैं[11] ॥
बढि ज्वाल करालन लोक बरैं[12] दिक्पाल कपालन साल बसैं ॥
गजराजन ढाल[13] ढहैं ढरवैं रत[14] भाजन घाय भरैं भभकैं ॥
लगि लाजन सूर लरैं लटकैं छटकैं भुव[15] काजन लोहँ[16] छकैं ॥
कटि कालिक[17] पीहँ[18] किरैं[19] कलिमैं[20] फटि मस्तक खंड उडैं फबिकैं[21]
जिम सैलनशृंग खिरैं बिखरैं प्रतिमल्ल[22] पुरंदर[23] के पबिकैं ॥ १६ ॥
मथि मंथनि[24] मत्थ[25] गहैं गतिसौं गन गिद्धनि गोद[26] गिलैं गहकैं[27] ॥
मनु ग्वालिनि मट्ठ[28] दही मथिकैं[29] नवनीत निकारन[30] बारनकैं ॥

र उपकार के १ काम पर २ उत्साह युक्त होते हैं और शिव को धारण कराने को मस्तक उठाते हैं सेना को मारने की मार से ३ दोनों ओर से मिले और ४ मस्त हाथियों के मद का पानी बहुत समय तक चला ॥ १४ ॥ ५ युद्ध में उडान लेकर बाण ६ काले सर्पों के समान शत्रुओं के प्राण पीते हैं. वहां पर चहुवाणों के हाथों की उपमा ७ पवन और ८ मन से भी नहीं निभी ९ खड्गों से भयंकर अग्निकण उडकर १० वीरों के समूह से भिड़कर ११ जलते हैं भयंकर ज्वाला बढकर लोक १२ जलते हैं और दिग्गजों के कपालों में शाल बसते हैं ॥ १५ ॥ हाथियों के ऊपर से १३ बडे झंडे गिरकर पड़ते हैं और भरेहुए घाव १४ रुधिर के पात्र होकर उभलते हैं भागने की लज्जा लगकर सूरवीर लड़कर लटकते हैं और १५ भूमि के अर्थ गिरकर १६ शस्त्रों से छकते हैं १७ कलेजा और १८ प्लीहा [तिल्ली] कटकर १९ युद्ध में २० गिरते हैं और जिसप्रकार २१ शत्रु २२ इन्द्र के २३ वज्र से पर्वतों के शिखर खिर खिरकर बिखरें तिसप्रकार फटे हुए मस्तकों के टुकड़े उडकर २४ शोभा देते हैं ॥ १६ ॥ २५ बिलोवणी रूपी २६ मस्तक को लेकर गीधनियों का समूह उनको मथकर २७ भेजी [मस्तिष्क] खाकर २८ प्रसन्नता की बोली बोलती हैं सो मानों ग्वालनी दही के २९ मटके को मथकर ३० मक्खन निकालने में

चहि मार दुधारें चलैं चमकैं असवार तुखारें कटैं उलटैं ॥
फटि मक्कुन ऊरु फटै उछटैं कटि बाहुलैं बाहुलं बाहु कटैं॥१७॥

(दोहा)

इहिँ रन बिच बलवन अधिप, अभयसिंह अति बीर ॥
फतमल्लहिँ खोजन फिरत, हुलसि दृष्ठ हमगीर ॥ १८ ॥
जबहि पचप्रजयसिंहके, ये कूरम उमराव ॥
बुंदीपति अग्गैं बिदित, बुल्ले कुबचँ बढाव ॥ १९ ॥
इनहूमैं फतमल्ल यँहँ, सारसोप पति सूर ॥
कहि कातर्र अभमल्लकौं गह्यो बहुत मगरूर ॥ २० ॥
इहिँ कारन अभमल्ल अब, तिहिँ हेरत गहि तेग ॥
दुरयो कहाँ कूरम दरित, बीर बतावहु बेग ॥ २१ ॥

(षट्पात्)

जिम नागहिँ खगराज मृगहिँ मृगराज महाबन ॥
जंभहिँ जिम जंभारि मधुहिँ मानहुँ मधुसूदन ॥
पानी जिम पावकैंहिँ तृनहिँ पावक जिम तक्कत ॥
सजत कपोतहिँ सेन हनन हेरन जिम हक्कत ॥

चिलम नहीं करती है मारना चाहकर दो १ धारोंवाले चमकते हुए खड्ग चलते हैं जिनमे सवार और २घोडे कटकर उलटते हैं उन खड्गों से ३जंघा और ४ जंघायें कटकर उछलती हैं और ५ दस्तान [बाहुत्राण] कटकर ६ बहुत बाहु कटते हैं ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ खोटे वचन ॥ १९ ॥ ८ कायर ॥ २० ॥ ९ डरकर ॥ २१ ॥ जिसप्रकार १० सर्प को ११ गरुड और मृग को बलवान् १२ सिंह जंभासुर को जैसे १३ इन्द्र और जैसे मधु दैत्य को १४ विष्णुभगवान् १५ अग्नि को जैसे पानी और तृणों को जैसे अग्नि, कबूतर को जैसे वेगवान् १६ शिकरा (बाज पक्षी) मारने को हेरकर * यहै तेम प्रथम

---

* इस छन्द में ' हनन हेरन जिम हक्कत'' इस क्रिया पद के आये पीछे फिर उपमा दी है सो समाप्तपुनरात्त दोष है परन्तु क्रिया के आये पीछे एक ही उपमा फिर दी जाये वहां यह दोष होता है किन्तु क्रिया आये पीछे फिर अनेक उपमा आजावे वहां यह [समाप्तपुनरात्त] दोष नहीं रहता सो ही यहां जानना चाहिये ॥

आखुहिं[1] बिडाल[2] तिमिरहिं[3] अरुन नर रंकहिं[4] दारिद्रनिभ ॥
फतमल्ल रूप पोमिनि[5] फिरत इम हेरिय अभमल्ल इभ ॥ २२ ॥

(दोहा)

सम्मुख पिक्खि फतमल्लसों, इम अक्खिय अभमल्ल ॥
गीदर गाल बजायकैं, अब किन करत उझल्ल ॥ २३ ॥
इम हकारि बलवन अधिप, मंडत बानन मेह ॥
उफनावत आयो उमँडि, दँस[7] न मावत देह ॥ २४ ॥

(पद्धरी)

पय दब्बत अहि[8] पुच्छ मुच्छ ऐंचत मयंदे[9] जिम ॥
सोर[10] मनहुँ साबात अग्गि[11] लग्गत प्रचंड इम ॥
हेलि[12] मयूख हजार १००० जेठ दुपहर जनु जग्गिय ॥
प्रलय उग्र जिम प्रथित[13] लाप अंखिन अति लग्गिय ॥
कानन प्रमान बानन करखि कूरम देह सु मेह किय ॥
मदमत्त लखहु हड्डे मरद गड्डे पद[14] अंगद गतिय ॥ २५ ॥

[मुक्तादाम]

जुरयो अभमल्ल इतैं रुपि जुद्ध, अरयो फतमल्ल उतैं करि[15] क्रुद्ध ॥
उभै निज स्वामिनकी धुव आस, तकावत चक्कहिं चक्क[16] तमास ॥ २६ ॥
उभै रन दच्छ बडे उमराव, उभै उमँडे रनधीर उगाव ॥

१ चूहे को २ बिल्ली ३ अंधेरे को सूर्य ४ रंक मनुष्य को दरिद्र हेरे तैसे फतहसिंह रूपी ५ हथनी को अथवा पद्मिनी (कमलनी) को अभयसिंह रूपी हाथी ने हेरा ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ७ कवच में ॥ २४ ॥ ८ सर्प ९ सिंह १० रजक का बारूद [तोड़ादार बंदूक के कान में डालने के लिये बारूद को दुबारा करके तेज करते हैं उसको 'साबात' कहते हैं और मतान्तर से जामकी [तोड़ा] को भी साबात कहते हैं जो डिंगलभाषा में प्रसिद्ध है; अथवा रजक और साबात दोनों ही बारूद के नाम हैं जो अत्यंत प्रबलता दिखाने के अर्थ वीप्सा के अर्थ में एकार्थवाची दो शब्दों का प्रयोग किया है] ११ अग्नि १२ सूर्य १३ प्रलय का शिव जैसे प्रसिद्ध है १४ अंगद के समान चरण रोपे ॥ २५ ॥ १५ युद्ध में क्रुद्ध होकर १६ सेना का तमासा ॥ २६ ॥

उभै जय थप्पनहारि उथप्पि, उभै उफनाय कुवेनन थप्पि ॥ २७॥
उभै दृढ दुल्लह सज्जित अंग, उभै भर अैंचत सुच्छ अभंग ॥
उभै अनुरूप रिझावत रंभ, उभै रन अंगनके जय खंभ ॥२८॥
उभै सिव दारिद मिट्टनहार, उभै पलचारनके उपकार ॥
उभै झमकावत खग्ग उदग्ग, उभै चलि पेत हसावत अग्ग॥२९॥
उभै भवतैं तजि मोह अलुद्ध, उभै मन वृत्ति लगावत उद्ध ॥
उभै तुम वाहहु वाहहु अक्खि, उभै करि सूरजकों निज सक्खि ३०
उभै कनकाचलकौं पायन वधि, उभै दैंम उद्धत महारि सधि ।
उभै तुलसी धरि मस्तक आप, उभै जल गंग उमंग अचाय ॥३१॥
उभै वृखंजानि जुरे इक धेनु, उभै करिराज कि इक्क करेनु ॥
उभै इक सिंहनि ज्यों वनईस, जुरे इम कूरम हड्ड जगीस ॥ ३२ ॥
मिले पहिलैं दुव तीरन मार, कढे सर दोउन भेदि कगार ॥
चटक्कहि चड प्रतचन चाप, उहै सलभा जिम रोपे अमाप ॥ ३३ ॥
जहाँ करि वानन यों रन जोर, मिले पुनि सेलन द्वैभट मोर ॥
सु कक्कट भेदि कढे घंट सारि, किधौ तरु तर्जन अग्ग कुदारि॥३४॥
चली अभमल्ल वराचिठय अच्छ, पर्यो छिदि कूरम वाजि दुपच्छ॥
वहाँ इप ओर चढ्यो कछवाह, रुप्यो अभमल्लहु पव्वयराह॥३५॥

---

१ पहे ॥ २७ ॥ २ मद ३ अपने महत्ता ४रंभा नामक अप्सरा को 'डिंगल भाषा' में सामान्य अप्सरा को भी रंभा कहते हैं' ॥ २८ ॥ ५ शिव का मस्तकों रूपी दरिद्र मिटानेवाले ६मांस खानेवाला के ७ उदग्र (उछलते) हुए अग्रभाग ॥ २९ ॥ ८ संसार से ९ निर्लोभी १० ऊपर ११ साक्षी ॥ ३० ॥ १२ सुमेरु पर्वत को १३ दण्ड देने में १४ नीति के प्रथम संधि गुण का संहार करके १५ पीकर ॥ ३१ ॥ १६वृषभ १७ गज पर १८ हथिनी पर १९ सिंह ॥ ३२ ॥ २० टीड़ियों के समान २१ पाप ॥ ३३ ॥ २२ कवच को और २३ शरीर को फोड़कर २४ मानो घास के वृक्ष का २५ अग्रभाग २६ भूमि को फोड़ कर निकला ॥ ३४ ॥ २७ कछवाहे का घोड़ा दोनों बाजू से छिद कर गिरा२८पर्वत की भांति ॥ ३५ ॥

बराच्छिन जंग अपुव्व बिधायें, लई अब खापनतैं हिमलायें ॥
किधौं घनतैं कढि बिज्जु कराल, किधौं बिलतैं किल कुंडलिकाल ३६
किधौं नभतैं ससि द्वैज कला कि, कढी जमके मुखतें दसना कि॥
हली कि हुतासनतैं कढि हेति, मयूख नभोमनितैं अथवाति ॥३७॥
कढी ध्वनि व्याकृतितैं कि सकासैं, कढे मत गोनमतैं कि समास॥
कटाच्छ किधौं कुलटा दृग कुंजैं, पयोभव कोरकतैं अलि पुंज॥३८॥
कलिंदकतैं निकसी जमुना कि, प्रजापतितैं परिपूरि प्रजा कि ॥
गुनत्रयतैं कि चले महदादि, महानटकी जटतैं मैमथादि ॥ ३९ ॥
हिमालयतैं जिम गंग हिलोर, किरोरवरके मुख दंतुलिकोर ॥
अनंतक आननतैं जिम जीह, सटाधुनि थंभहितैं नरसीह ॥ ४० ॥
नवोढनके उरतैं कि उरोज, उदैगिरितैं कि दिवाकरओज ॥
कि अंजनिके उरतैं हनुमान, परासरनंदनतैं कि पुरान ॥ ४१ ॥
सुराधिपके करतैं जिम संब, कढे धनु गांडिवतैं कि कलंब ॥
सही कपिलाननतैं जनु साप, लयांचन गायनतैं कि अलाप॥४२॥

अपूर्व युद्ध१करके २ म्यानों में से ३ ठढी अग्नि ली (यह तरवार का विशेषण है। ४ मेघ से विद्युत् [बिजुली] की कांति ५ निश्चय६काला सर्प [यह आंधी हुई तरवार की उपमा है] ॥ ३६ ॥ ७ दोज के चंद्रमा की कला [जहां जहां अकेला 'कि' आवै वहां किधों, किंवा मानों अर्थ जानना चाहिये. प्रत्येक स्थान पर इसका अर्थ लिखने से बिस्तार होता है] ८ दाढ ९ अग्नि से १० ज्वाला [झाल] १२ अथवा ११ सूर्य से किरण प्रकाश करैं जैसे ॥ ३७ ॥ १३ व्याकरण की १४ समीपता से शब्द कढे जैसे १५ नेत्रों के कोनों से १६ कमल की कली से १७ भ्रमरों का समूह ॥ ३८ ॥ १८ पर्वत विशेष १९ जमुना नदी २० ब्रह्मा से परिपूर्ण प्रजा निकले तैसे २१ सत, रज, तम, इन तीन गुणों से महदादि चौबीस तत्व निकले तैसे २२ शिव की जटा से २३ गंगा निकले जैसे ॥ ३९ ॥ २४ वाराह के मुख से २५ शेषनाग के मुख से २६ गरदन के केश धुजा कर थांभे से २७ नृसिंह निकले ऐसे ॥ ४० ॥ २८ कुच २९ सूर्य का तेज ३० वेदव्यास से ॥ ४१ ॥ ३१ इन्द्र के हाथ से ३२ वज्र ३३ वाण ३४ कपिलदेव के मुख से ३५ मानों श्राप निकला ३६ लय को जानने वाले कलावंत से ॥ ४२ ॥

धपी जनु नीरदतैं जलधार, महाबल माधवतैं मनु मार ॥
त्रिलोचनके करतैं कि त्रिसूल, मउत्तिय सुत्तिपतैं कि अमूल॥४३॥
कढे इम दोउन खापन खग्ग, मिले प्रलयानल व्है रन मग्ग ॥
उभै करि लाघव दाव दिखात, परस्पर देत प्रहार निपात॥ ४४ ॥
उभै फिरि मंडल टारत वार, प्रघावत भार दुधारन मार ॥
दई धपि सभर दाहिन अंस, पर्यो कटि कूरम रुपातैं प्रसस॥४५॥

(दोहा)

हठि कूरम फतमल्ल हनि, अभयसिंह चहुवान ॥
कूरम कोजुवरामकौं, पिक्खत गाहक मान ॥ ४६ ॥
ईसरदा पुरपति अतुल, वह कोजुर कछवाह ॥
अप्पहिं खोजत इक्खिकैं, अभिमुख रचिग उछाह ॥ ४७ ॥
मिलि दोउन रक्किन्न मुदित, नागफन मनुहारि ॥
अक्खी पुनि अभमल्ल इम, कूरम सुनहु हकारि ॥ ४८ ॥
सब तुम मिलि हमरे सुनत, भूपहिं हारी भीति ॥
तुमहूमैं फतमल्ल तहँ, अक्खी अधिक अनीति ॥ ४९ ॥
काकोदरहिं कुपायकैं, कोउ न जियत सकोप ॥
फननैं हन्यों फतमल्लकौं, अब तव सिर आटोप ॥ ५० ॥
फरतैं बान फतमल्लके, छत्ति अभय छेत छेक ॥
जनु छानन जय अरु अजय, बन्यों तितैंउ सबिबेक ॥५१॥

मानों २ मघ से ३ जलधारा १ दौड़ा घड़े बलवान् ४ श्रीकृष्ण से मानों कामदेव ५ शिव के हाथ से ६ जिसप्रकार सीप से मोती निकले तिस प्रकार दोनों ने म्यानों में से तरवार लकर ॥ ४३ ॥ ७ प्रलय की अग्नि के समान ८ शीघ्रता से ॥ ४४ ॥ ९ चक्राकार (गोलकूंडा) १० दौड़के चहुवाण ने दहिने कंधे पर दी ११ प्रसिद्ध प्रशंसावाला ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ १२ सामने ॥ ४७ ॥ १३ अफीम की ॥ ४८ ॥ १४ भय ॥ ४९ ॥ १५ सर्प को क्रोधित करके १६ फणों से १७ उठाव ॥ ५० ॥ अभयसिंह की छाती में १८ घावों के छिद्र करके फतहसिंह के घाव ऐसे १९ शोभा देते हैं २० मानों इस युद्ध के जय और अजय छानने के लिये विचार पूर्वक २१ चालनी [छलनी] बनी है ॥ ५१ ॥

यातैं कोजुवराम अब, मिलि बुल्ल्यो रन माँहिं ॥
जिनके बानन तुम छिदे, तिनतैं गब्बहु[1] नाँहिं ॥ ५२ ॥

[षट्पात्]

यहै सुनत अभमल्ल खग्ग कोजुव[2] सिर झारिय ॥
सजि कोजुव इत संगि हड्ड उर तक्कि प्रहारिय ॥
याके खग्ग उदग्ग कट्टि बाहुत्त[3] कर कट्टयो ॥
वाकी संगि अपुब्ब चक्खि हिय रीढक चट्टयो ॥
अरि तब सिराहि बलवन अधिप पुनि असि झारिय मत्थ पर ॥
कटि टोप सीस कट्टिय सकल मनहुँ बिरवंधव बंटि घर ॥ ५३॥

(दोहा)

कोजुवराम सु सिर कटत, बेग बसन सन[6] बंधि ॥
कर इक्कहि असिबर कराखि, सिर झारिय जय संधि५४
कोजुवको दक्खिन कर सु, इम कट्टयो अभमल्ल ॥
यातैं गहि कर वाम असि, झारी बहुरि उझल्ल ॥ ५५ ॥
टोप कट्टि तिरछी तरकि, तुट्टि परिय तरबारि ॥
अक्खिय तब अभमल्ल इम, बाहहु नैक विचारि ॥ ५६ ॥
जिहिं करतैं असिबर जुरत, तिरछी तरकत तुट्टि ॥
जनि ताकौं हरखैं जननि, क्यों बहु थालन कुट्टि ॥ ५७ ॥
कहि इम कोजुवराम पर, असि झारिय अभमल्ल ॥
सिव गहि लिन्नौं उडत सिर, ढरयौ यहहु रंनढल्ल ॥५८॥
ईसरदाके पतिहिं इम, बलवन पनि हनि बेग ॥
साँवलदास सुडाड पति, तक्कयो झारत तेग ॥ ५९ ॥

---

[1]गर्व मत करो॥५२॥[2]कोजूराम के मस्तक पर [3] दस्ताना काट कर [4] पीठ को [5] सातों दो भाइयों ने घर का पट किया॥५३॥ वस्त्र [6] से शीघ्र बांध कर [7] श्रेष्ठ तरवार खेंच कर॥५४॥५५॥५६॥५७॥[8] वह युद्ध की ढाल [8] गिरा॥५८॥

(मुक्तादाम)

चवी यह दूतन भूतन चार्स[२], सुनी सब कूरम साँवलदास ॥
उदायुध उग्र दिवाकर अंस, रहै इतनी सहि क्यों रघुवंस ॥६०॥
मिल्यो अभमल्लहु उद्धत मान, धपावत धारहिं दे बलिदान ॥
धर्यो कुवलाश्व कि धुंधुंहि धारि, किधों रन रावन राम हकारि ६१
किधों बलपै बल वासव क्रुद्ध, जटासुरपै कि वृकोदर जुद्ध ॥
कुं अर्थे भ्रमावत हत्थ कृपान, दिखावत सक्करकों अति दान ६२
सुहाडपै[२] हू इततैं गहि सांगि, मिल्यो अभमल्लहिं भल्ल उमागि ॥
नची तँहँ तालिनें चासठि६४ नारि, रची इम हड्ड रु कूरम रारि ६३
जहाँ तँहँ आवहिं आवहिं जाप जहाँ तँहँ खूटत खग्गन खापें ॥
जहाँ तँहँ प्रेत हकारत जोर, जहाँ तँहँ घायन घायल घोर ॥६४॥
जहाँ तँहँ नारदको अति नच्च, जहाँ तँहँ सूरन हूरन मच्च ॥
जहाँ तँहँ भूतन भूख प्रकास, जहाँ तँहँ गिद्धिनि गूद विलास ६५
जहाँ तँहँ डाकिनि डिंडिम डक्क, जहाँ तँहँ धारनकी धमचक्क ॥
जहाँ तँहँ हत्थिन चंड चिकार, जहाँ तँहँ फेरविकान फिकार ।६६।
जहाँ तँहँ फुट्टन भू अति जोर, जहाँ तँहँ अंचक तड्डन तोर ॥
जहाँ तँहँ दिग्गज कातर[२२] गज्ज, जहाँ तँहँ साहत सूरन सज्ज॥६७॥
जहाँ तँहँ कातर कूकन कूक, चहाँ तँहँ चाहत चंचल चूक ॥
जहाँ तँहँ फुट्टत फीलन मत्थ, जहाँ तँहँ सूरन हूरन हत्थ ॥ ६८ ॥

दूसरों रूपी भूतों ने यह २ खबर ३ कही ३ ऊंचे किये हैं शस्त्र जिसने ४ सूर्यवंशी ॥ ६० ॥ माना ६ कुवलयाश्व नामक राजा ७ धुंधु नामक राक्षस को देख कर ९ दौड़ा ॥ ६१ ॥ ८ पराक्रमी इन्द्र क्रोधित हुआ ९ भीमसेन का युद्ध १० भूमि के ११ अर्थ हाथ में तरवार फिराता हुआ ॥ ६२ ॥ १२ सुहाड का पति १३ अच्छे पराक्रम से मिला १४ वहां पर तालियें देकर चौसठ योगिनियें नचीं ॥ ६३ ॥ १५ तरवारों से स्थान स्थान टूटते हैं ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ १६ तरवारों की धाराओं की हाथियों को १७ भयंकर चीत्कार १८ फेरिया [स्यालनियां] के फेत्कार ॥ ६६ ॥ १९ भूमि २० तारे [ग्रह विशेष] २१ सूरमा और रीति के २२ दिग्गजों की २२ कायर गर्जना ॥ ६७ ॥ २३ खवाधा २४ हाथियों के जा २५ अप्सराओं का हाथ [मस्तक] जुड़ता है]

जहाँ तहँ खग्गन खंड खिरंत, जहाँ तहँ गैवर गंज गिरंत ॥
जहाँ तहँ जुग्गिनिको जयकार, जहाँ तहँ रुंडन मुंडन मार ।६९।
जहाँ तहँ साकिनि सोर सुनाव, जहाँ तहँ पंडिन अंग प्रभाव ॥
जहाँ तहँ हत्थन बत्थन जुट्टि, जहाँ तहँ तेग तरक्कन तुट्टि ॥ ७० ॥
जहाँ तहँ सोनिन सौं बढि साँद, जहाँ तहँ प्रेतन भच्छ प्रमाद ॥
जहाँ तहँ बाल चुरेलिनि चौंकि, जहाँ तहँ भैरव भैरव भौंकि ७१
जहाँ तहँ हड्डन जालम जोर, इतैं तहँ दुस्सह कूरम ओर ॥
सुहाडँप कूरम साँवलदास, मिल्यो अभमल्लहिं पुंज प्रकास ॥७२॥
कहैं दुव दाहहु बाहहु कत्थ, रचैं रन त्यौं रवि रुक्कन रत्थ ॥
स्रवैं जलजंत्र कि घायन सोन, जुरैं इन दाउननैं तहँ जोन ॥७३॥
लरैं अभमल्ल सु कुंडिय लाज, करैं उत कूरम जैपुर काज ॥
बहैं असि बान बरच्छिन बात, परैं मनु मद्दव बिज्जुव पात ॥७४॥
ऐंड थेड़ नच्च कबंधन थुल्ल, बनैं तहँ कातर पत्त बघुल्ल ॥
नलंगत भैरव सोनित मत्त, छलंगत गिद्ध बनैं सिर छत्त ॥ ७५ ॥
नचैं निकसे हियपैं कढि नैन, सरोज कि सोन मिलीमुख सैन ॥
कढैं फटि बुक्कन टुक्क विकास, मनौं सुमैं किंसुक माधवमास ७६

---

१ टुकड़े २ हाथियों के समूह ३ जय हो जय हो ऐसा शब्द ॥ ६९ ॥ ४ कोलाहल ५ बाथों से [दोनों हाथों को फैला कर अंक में भर कर बाहुयुद्ध होता है] लड़ते हैं ६ तरवारें फिसल कर टूटती हैं ॥ ७० ॥ ७ लोहू का कीचड़ ८ खाने का ९ भयंकर १० गाजते हैं ॥ ७१ ॥ ११ जुल्म करनेवाला १२ दह जुल्म कछवाहों की तरफ नहीं सहने योग्य है १३ सुहाड का पति १४ प्रकाश का समूह ॥ ७२ ॥ १५ फुहारा चलै जिस प्रकार १६ घावों में रक्त चलता है ॥ ७३ ॥ १७ समूह ॥ ७४ ॥ १८ बिना मस्तक वाले क्रियावान् शरीरों का १९ समूह २० कायर २१ बघूले (वायु के गोटे) के पत्तों के समान २२ रक्त से मस्त होकर २३ छत्र ॥ ७५ ॥ २४ छाती पर नेत्र निकस कर नाचते हैं सो मानों २५ लाल कमल पर २६ भ्रमर शयन करते हैं २७ बूकों (गुरदों) के टुकड़े होकर फट कर निकलते हैं सो मानों ३० वैशाख मास में २९ ढाक के (केसूला के) २८ पुष्प फूले हैं ॥ ७६ ॥

उड़ैं सिर अंबर पच्छिन पेलि, करैं जनु कालिय कंदुक केलि ॥
उछट्टहिं ढालनमैं कढि अंत, भुजंग टिपारनमैं कि भ्रमत ॥७७॥
फुरैं सिर अद्ध फट्यो इहिं रारि, दयो जनु जुग्गिनि खप्पर डारि॥
सिखा कटि सूरनकी फहरात, किधौं जयकेतु प्रभंजन पात।७८।
किरैं फटि टोपनतैं करवाल, फँटा बिनु लेत भुजंग कि फाल ॥
सुहावत के झरि नक्क समूल, फबैं इसमास मनों तिलफूल ७९
लगैं असि ओठ झरैं कटि लाल, पके जनु बिंब कि पुंज प्रवाल
उड़ैं कटि दंतन ओघ अखंडैं, खिरैं फटि हीरनके जिम खंड॥८०॥
किरैं सह मुत्ति प्रहारनैं कान, बनैं सह मुत्ति सु सुत्ति बिधान ॥
जहाँ झरि हत्थ गिरैं अति जुद्ध, किधौं फन पंचकके अहि क्रुद्ध८१
तिरैं बहु खेटक सोनित ताल, मनों कि सरस्वति कच्छप माल॥
झुकैं बहु सूर झटक्कन झार, गिरैं जिम आसव मत्त गमार८२

पक्षियों को २ हटाकर आकाश में ३ मस्तक उछल हैं सो ३ मानों कालिका गेंद ४ खेलती है, ढालों के ऊपर ५ आंतें गिरती हैं सो मानों टिपारों में ६ सर्प फिरते हैं ॥ ७७ ॥ इस युद्ध में आधा फटा हुआ मस्तक ७ गुड़ता [लुढ़कता] है सो मानों योगिनी ने खप्पर डाल दिया है ८ वीरों की चोटियें कट कर उड़ती हैं सो मानों ९ विजय की ध्वजा १० पवन से पड़ती है ॥ ७८ ॥ टोपों के ऊपर से टूट कर ११ तरवारें १२ गिरती हैं सो मानों १३ बिना फण सर्प उछलते हैं १४ मूल सहित नासिका कट कर ऐसी दीखती है कि मानों १५ आसोज मास में तिलों के फूल शोभा देते हैं ।७९। ११ तरवार लग कर लाल होट कट कर गिरते हैं सो मानों १७ बिम्बफल (एक फल विशेष) और १८ मूंगों (नग विशेष) का समूह है १९ बिना टूटे हुए दांतों के समूह कट कर उड़ते हैं सो मानों हीरों के टुकड़े होकर गिरते हैं॥८०॥२२ प्रहारों से २१ मोतियों सहित कान २० गिरते हैं सो विधान पूर्वक मोतियों सहित २१ सीपें बनती हैं ॥ ८१ ॥ उस २३ रुधिर के तालाब में बहुत २४ ढालें तैरती हैं सो मानों २५ सरस्वती नदी में कच्छपों की पंक्ति तिरती है (सरस्वती नदी के पानी का रंग लाल प्रसिद्ध है) २७ तरवारें चला कर 'डिंगल भाषा में तरवार के एक वार में दो टुकड़े होजायें उसको झटका कहते हैं परन्तु लौकिक में इसकी रूढ़ि लक्ष्य में होगई है इसीकारण यहां तरवार लिखा है'

डरावत डाकिनि दंत दिखाय, जरावत साकिनि लावत लाय ॥
तिन्हैं भट नाटकके[1] नट तोर, गिनैं रस अद्भुतही नहिं घोर[3]॥८३॥
गिरैं कहुँ भज्जत[4] भीरुन सीस, उठावत पूर्व बिहावत[5] ईस ॥
गिलैं तिनको नन गूदहु गिद्ध, बुरे इम[6] जे कि मरे भय बिद्ध॥८४॥
मिले दुवरया गतिके रन माँहिं, जचैं जुरनों तँहँ[7] नाँहिं सु नाँहिं॥
लगी गर बुंदिय जैपुर लाज, करैं नहि अग्घ[8] सरैं नहिं काज ८५
भयो बल साँवलको बैल भाव, दयो अभमल्ल पुरंदर[10] दाव ॥
चली पबि[11]की छवि ते असि चंड, खुल्यो सिर साँवल ज्यों गिरि खंड८६

(पद्धपात्)

अभयसिंह सुत अत्थ प्रबल सुगतेस१रु पूरन२ ॥
दासी औरस दुव रहि चले चाहत अरि चूरन ॥
खारसोपके सुभट बह्वि पहुंचे सुहाड़[12] बैल ॥
भट साँवल के भंजि दब्बि नाँनेड़ि दयो दैल[13] ॥
इन्ह हनत पिक्खि कूरम अचल[14] दोउन३भुग्गन हूर दिय ॥
उभै[15] पुत्र मरत अभमल्ल अब लरि अचलेस समीप लिय८७
अचलसिंह तरवारि परिय अभमल्ल बाँजि[16] पर ॥
झरत खंध हय झुकिय इनहु झारिय इहिं अवसर ॥
सूर अचलको सीस तरकि तुट्यो असि उच्छट ॥

॥ ८२ ॥ १ अग्नि लाकर वीर लोग उसको नटों के २ खेल की भांति अद्भुत रस ही मानते हैं ३ भयानक रस नहीं गिनते ॥ ८३ ॥ ४ भागते हुए फिर कायरों के मस्तक समझ कर ५ छोड देते हैं, और वे भय से बिंध कर मरे ६ इसकारण बुरे हैं अथवा उन का स्वाद (मजा) बुरा है ॥ ८४ ॥ ७ वहां बहुत कायरों के मस्तक गिरते हैं जिनको पहिले तो महादेव उठालेते हैं परन्तु नाहीं करने की ही नाहीं थी ८ प्राणों का अघ नहीं करते अथवा पाप नहीं करते ॥ ८५ ॥ सांवलदास का बल राजा ९ बलि की भांति होगया उस समय अभयसिंह ने १० इन्द्र के समान दाव दिया ११ वज्र की छवि से तरवार चली ॥ ८६ ॥ १२ सुहाड़ की सेना में १३ नानेड़ी की सेना को १४ अचलसिंह ने १५ दोनों ॥ ८७ ॥ १६ घोड़े पर

लिपउ झेलि लगि लाह नच्चि बहु मडि *महानट ॥
अचलहिं बिदारि अभमल्ल इम सुतन बैर कड्ढ्यो सकल ॥
बिनु बाजि जाय गज्यो बलिय बुद्धानीपुर पति प्रबल॥८८॥

दोहा ॥

बीर बहादुरसिंह तब, बुद्धानी पुर नाह ॥
अश्व रहित अभमल्लकों, इक्खत रचित उछाह ॥ ८९ ॥
बेग हयहिं झपटाय बलि, सम्मुह झाग्गिय सांगि ॥
अभमल्लहिं पह लग्गिय इम, अंग सिर पंचि कि उमगि ९०

॥ षट्पात्॥

लगत सांगि अभमल्ल छत्ति फुट्टन नन छोहिंउ ॥
बिरचि बंपा बखसीस हकिं कूरम दल डोहिंउ ॥
बिनाँ तुरग हठ बधि तुमुल कोऊ नहिं तक्कत ॥
पह अचिज्ज सहि सांगि बढ्यो सम्मुह अप बंकत ॥
जिम तुंला दड खभहि जुरत उर मैंविद्ध अभमल्ल इम ॥
बुद्धानि नगर ईसहिं सविधि तुँल्लि पटक्किय अवनि तिम९१

[दोहा]

पर्यो बहादुरसिंह इत, इत सु पर्यो अभमल्ल ॥
इम कूरम भट पच५ अरि, हनि सुत्तो हरवल्ल ॥ ९२ ॥

पज्झटिका ॥

चहुवान देवसिंहहिं बिचारि, सिरदार कुम्म नैंरव सम्हारि ॥
नाथाउत चौलुक प्रेम नाम, किप आहव नरउर सचिव कौंम९३
सग्राम नाम चालुक्य सग, जुरि करनसिंह कछवाह जग ॥

* शिव ने ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ १ बरछी २ पर्वत पर ३ घज । ९० ॥ ४ मूर्छित नहीं हुआ ५ मत्रा ६ कूद कर ७ मथा ८ आश्चर्य है कि बरछी को सहन करके ९ बोलता हुआ १० लकड़ी की डाली किसी खम्भे से बांधी जावे जैसे ११ बेधन होकर १२ तोल (उठा) कर भूमि पर पटकी ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ १३ नरूका १४ सीसली १५ कार्य ॥ ९३ ॥

परिहार*परसुधर बल प्रचंड, दिय जोध चालुकहिँ दुरह दंड ९४
गेजन अरि साँवलदास गोर, उडि रूपसिंह चालुक्य ओर ॥
जोरावर †नारव कुम्म जत्थ, सुरतेस बीर चालुक्य सत्थ ॥ ९५॥
बखतेस हड्ड असि करत बाह, चलि उदयसिंह चालुक्य चाह ॥
जगभानु हड्ड अति ‡चित्र जंग, सजि कूरम पृथ्वीसिंह संग॥९६॥

(दोहा)

इम बुंदिय आमेर भट, रचिग परस्पर रारि ॥
जुद्ध मिले जल §दुद्ध जिम, ¶अब्बन बग्ग उपारि॥ ९७ ॥

[मुक्तादाम]

चली असि बान बरच्छिन चोट, लगे कति लेत कबुत्तर लोट९८
उलट्टिय सत्त[1] समुद्दन आप, प्रकट्टिय कूरमको[2] यँहँ पाप ॥
थरक्किय त्यौं अतलादिक थान, लरक्किय सेस फटा लचकान९९
तरक्किय कच्छप पिट्ठि सत्रास, बनैं जनु अंडकटाह विनास ॥
टिक्यो किरि तुंडहिँ दंतुलि टारि, चिक्यो दिक्कुंजर पुंज चिकारि
छुटैं सिर छत्तिँन छत्तिन छोकि, कढैं बनतैं जिम कुक्कत केकि ॥
करक्कहिँ कोचनकौं आसि कट्टि, फरक्कहिँ बिज्जुव ज्यौं घन फट्टि १०१
खरक्कहिँ हालनके कटि खंड, दरक्कहिँ तालनसे ध्वजदंड ॥
छरक्कहिँ छोनिपैं छिंछिन रत्त, बरक्कहिँ बौहुत्त टोप विघत्त॥१०२॥
भरक्कहिँ इक्कहिँ इक्क भटक्कि, थरक्कहिँ रुंड लरक्कहिँ थक्कि ॥
गरक्कहिँ खंजर पंजर गोदि, जरक्कहिँ जोर महाभट मोदि ॥१०३॥

---

* परशुराम ॥९४॥ † नरूका कछवाह ॥ ९५ ॥ ‡ आश्चर्य युक्त युद्ध करनेवाला ॥ ९६ ॥ § दुग्ध ¶ घोड़ों की बागें उठा कर॥ ९७ ॥ ९८ ॥ १ जल २ जयसिंह का ३ रूप ॥ ९९ ॥ ४ मानों ब्रह्मांड का विनाश (प्रलय) होवेगा५वाराह का मुख ६ दिग्गजों का समूह चीसली करके हटे ॥ १००॥७क्षत्रियों की छातियों को फोड़ कर८मयूर९कवचों को काट कर१०खड्ग११बिजुली॥१०१॥१२ताड़ वृक्ष के समान १३ भूमि को १४ रक्त की छींछों (पिचकारियों] से १५ दस्ताने १६ विशेष घात से ॥ १०२ ॥ १७ शस्त्र विशेष [एक प्रकार की छुरी] १८ शरीर को खोद कर १९ प्रसन्न होकर गिराते हैं ॥ १०३ ॥

प्लवंगन मोथैं सनकिय स्वास, भनंकिय 'भेरि बलाहक भास ॥
रनकिय कोचनं रोचन रुंड, झनकिय अक्खरं पक्खर झुंड॥१०४॥
खनकिय हड्डन हड्डन खग्ग, फनकिय फेनिल सेस समग्ग ॥
छनकिय बान उडानन छूट, ठनकिय घट करी कटिकूट ॥१०५॥
इतैं तहँ देव उतै सिरदार, हमल्लन भल्लन देत प्रहार ॥
उभै २ झपटावत सत्तिनं सूर, उभै अँधिवीर महा ममरूर ॥ १०६॥

(दोहा)

महाचड अरु चड मनु, दोऊ भट जम दास ॥
अँसु दल गाहक अँकुरे, रन मौरी भव रास ॥ १०७ ॥

[षट्पात्]

देवसिंहके सुभट हनिय सिरदारसिंह खट६ ॥
नारवके रन रुप्पि देव सद्धिय द्वादस भट ॥
द्विगुन जोर लखि द्रुतहि अक्कें पहिलौं तिन्ह अँहरि ॥
अरु महल मिर्दवाय प्रथम पठये स्वधर्म परि ॥
डाकिनि पिसाच पह कूक दिय सु सुनि सोर नारव सुभट
दस१०मान उग्र अड्डे दुसह बहुरि आनि ठैंट्ठे विकट॥१०८॥

---

१ घोड़ों के २ फुरणा[नासिकाओं] म ३ नोबत ४ मेघ की शोभा से बजे ५ कवचों से शोभायमान घड़ ६ जहाँ गिरे हुए अर्थात् हाथी घोड़ों पर लगे हुए पाखरों के समूह बजे॥१०४॥७हाडा क्षत्रियों के खड्ग८शरीर के हाडों पर बजे, वा हड्डों के शस्त्र हाडाओं पर ही बजे [क्योंकि यहां दोनों ओर के युद्ध करने वाले हाडा ही थे] ९ झागों सहित शेष के सब फण फेन [झाग] सहित होकर फूत्कार करने लगे [यहाँ फेनों के योग से फणों का ग्रहण है]१०हाथियों के कुमस्थल फट कर ॥ १०५ ॥ ११घोड़ों को१२वीरों के पति [स्वामी] ॥१०६॥ १३सेना के प्राणों के ग्राहक१४अड़े हुए१५युद्ध में महामारी (प्लेग) का नृत्य हुआ अर्थात् मनुष्यों के समूह का नाश करनेवाली महामारी का नृत्य हुआ ॥ १०७ ॥१६सूर्य मे१७देवसिंह के वीरों का आदर करके१८सूर्य मण्डल का भेदन कराकर १९ मरूके २० दश का प्रमाण वाले अर्थात् दश भट आ २१ खड़े हुए ॥ १०८ ॥

(दोहा)

सुभट अष्ट८निज संटिकैं, देवसिंह द्रुत दाय ॥
नारवके ते दस१०निगलि, नारव त्तिय निपराय ॥ १०९ ॥

(षट्पात)

अब उन्नतंतम अंस उपर दिनकर आरोहत ॥
चित्र जंग दिय चंच्छु मुदित सारथि सह मोहत ॥
देवसिंह सिरदार जय रु राधेय मिले जँहँ ॥
बिरचत दुवरवल्ल बंधि तुमुल थल्ल रंग जंग तँहँ ॥
सत्तन खलीनं खंचिय अरुन चुक्कि सैंकति फनिपंति चकिय॥११०॥
दुवरजाम अधिक संजोग सुख तंदिन चक्क चक्किन तकिय ॥
जिम द्रोणाचल लैन उठ्यो अंजनि सुत लासक ॥
अचवन जिम अंभोधि बिदित आतापि बिनासक ॥
चंडी जिम चंडपर खान मुष्टिक संकरखन ॥
पन्नगपर कि सुपर्ण गरबि तिम हिमकर ग्रासन ॥

दो [illegible]कर २ नरूके सरदारसिंह को समीप लिया ॥ १०९ ॥ इस समय १बदले में दे[illegible]न [illegible]भाग (मध्यान्ह) पर चढ कर ४ सूर्य ने इस ५ आश्चर्य वाले ३ अत्यंत ऊंचे [illegible] ६ युद्ध पर ७ चक्षु [नेत्र] दिये और सारथि सहित प्रसन्न होकर मोहित हुए. जहां देवसिंह और सरदारसिंह रूपी ८ अर्जुन और ९ कर्ण मिले तहां दोनों ने बल [illegible]ध कर युद्ध क्षेत्र में भयंकर युद्ध किया वहां सूर्य के सारथि अरुण ने घोड़ों की सातों १० लगामें खेंचीं (युद्ध देखने को रथ रोका) और ११ अपनी गति को भूल कर १२ शेपनाग डिगा १४ उस दिन चकवा चकवियों ने १३ दो पहर तक संयोग का अधिक सुख देखा अर्थात् युद्ध का कौतुक देखने के कारण सूर्य दो पहर अधिक ठहरा इससे वह दिन छै प्रहर का हुआ ॥ ११० ॥ जिस प्रकार १५नृत्य करता हुआ हनुमान द्रोणाचल लेने को उठा. जिस प्रकार १७समुद्र को १६पीने के लिये आतापि नामक राक्षस को १८मारने वाला (अगस्त्य) उठा. चंड दैत्य को मारने के अर्थ चंडी और मुष्टिक मल्ल को मारने के लिये १९बलदेव किंवा सर्प के ऊपर २०गरुड़ और २२ चन्द्रमा को ग्रहण करने को घमंड करके २१राहु उठा तिस प्रकार

कुल उद्धरन लरि समीप नारव लियउ ॥
। हठ पय मुररि दुरसासन उप्पर दियउ ॥११॥

भुजगप्रयातम् ॥

के वस मंज्झी, दुहूँ फौजमैं श्रोजतैं मोजें दंज्झी
भुम्मि दव्वी, इतैं गोमुखा भेरि वज्जे अरव्वी॥११२
॥ बेस भिन्नों, किंटी दतुली टारिकैं तुह दिन्नों॥
। ल त्राता न कोऊ, सस्यो वैच्छ वीभैच्छ दोलें-
यें सोऊ॥११३॥

कूँट हल्ले, चहूँ कोदँ रम्भोदके श्रोत चल्ल ॥
दि लोकेसं भौं नं,लगो ईसकों सीसके लाभ लौनें
लोग भिन्ने, नची जुग्गिनी ताल्ल वेताल दिन्न॥
बुलै अखर्ई, मनों फग्गमैं चच्चरी दह मर्ई ॥११५॥

का उद्धार करनेवाले देवर्षि) २ युद्ध करके ? नरक से
। लिया सो मानों २ पीछा फिर का भीमसेन ने दुस्सा-
दिया ॥ ११ ॥ इस प्रकार ३ अग्नि वंशी और सूर्य वंशी
ीर) मिले जिनकी ५ नाप से दाना ओर की सेना की ६
न दोनों के प्रताप के जोर से भूमि का दबाई और इधर
[विशेष] नोपत और ८ ताशा तास बजे ॥ ११२ ॥ शेष
अत्यन्त दीन के वेस में होगया और १०वाराह ने दतुली
नीचा कर लिया उस समय पाताल में ११ शेष नाग की
कोई नहीं निकला और १३ ग्लानी युक्त होकर १४ कमठ
पन्न चला ॥ ११३ ॥ उस इठ वाले दोनों वीरों के १५ युद्ध
पर्वत के ११ शिखर हिलने लगे और चारों १७ दिशा में
के साथ चले 'समान्तर में समुद्र चार मान हैं परन्तु शास्त्रा
न ही लिखे हैं' १६ स्वर्ग आदि के लोक भग कर २० आश्रा
। ११ शिव का मस्तकों का लाभ २२ सुन्दर लगा ॥११४॥
ने) की लागबाछा (वीर रस का पोषक) २३ सिंधवी राग छ
१० जोगनियें नचीं और वेतालों ने ताल दी, हड्डियों पर तर
र शब्द होने लगा सो मानों फाग में अथवा फाल्गुन मास
[हो] के दबे बजते हैं ॥ ११५ ॥ दोनों ओर के समूह वाले

उभै२ मंडली धावें बाजी उडावैं, उभै वारकी मारमैं नांहिं आवें ॥
इतैं लज्ज बुन्दीसकी ठांकि ठिल्लैं, उतैं रूपालह जैसिंहके जोर खिल्लैं ॥ ११६ ॥

उभै जेठके भानके मानं उग्गे, परैं फोजके ओजके अंसु पुग्गे ॥
बकी डाकिनी डक्क डैरों बजाये, घने भेदके मेदं पेरों अघाये ११७
फिरैं फेक्करी चंड फेरंड फुल्ले, भिरैं भूत के रत्तमैं मत्त भुल्ले ॥
भ्रमैं गिद्धनी चिल्हनी मेद भक्खैं, रमैं पंकमैं कंक नां संक रक्खैं
तपैं रंगे वाजीनके तंग तुट्टैं, छिपैं भीरु विद्राव कैं चाव छुट्टैं ॥
उलट्टी नदीलों गिरैं को उछट्टैं, फिरैं गीस कैं ईसके सीस फट्टैं११९
कटी के पताका उडी अंभ्र कढ्ढैं, चंमू मेघके जोर ज्यों मोर चढ्ढैं ॥
झुकैं झंड वेतंडपैं वात झंपैं, किधों सैलके शृंग खज्जूरि कंपैं १२०
बन्यों संकुली सत्थ लै वंत्थ वांहीं, निभ्यो पोनपैं ठहां सैदागौंन नांहीं

दौड़ से २ घोडों को उडाते हैं सो दोनों ओर के प्रहारों में नहीं आते इधर तो बु-की लज्जा के अर्थ (कि हमारे कारण से ही उसकी लज्जा रहजाये) शत्रुओं-बदले से दूर ३ हटाते हैं और उधर जयसिंह के जोर से लड़ाई का खेल खेलाते ॥ दोनों ही ज्येष्ठ मास के सूर्य के ४ समान उदय हुए जिनकी ५ अत्यंत ऊंचे किरणों के पहुंचने से सेना गिरती है उन फौजों के गिरने से दा-युद्ध पर ७ डरव बजाकर बकने लगीं और बहुत प्रकार के ७ मांसों से भैरव-अ. तृप्त हुए ॥ ११७ ॥ स्यालनियें फिरती हैं और भयंकर ९ स्याल फूलते हैं १ रुधिर में मस्त होकर भूले हुए भूत परस्पर भिड़ते हैं और उड़ती हुई गीधनि-यें और चीलहें मांस खाती हैं उस लोही मांस के कीचड़ में कंक [ढीच] पक्षी निःशंक होकर क्रीड़ा करते हैं ॥ ११८ ॥ ११ युद्ध में तपे हुए घोड़ों के तंग टूट-ते हैं १२ कायर लोग भागकर उत्साह छोड़कर छिपते हैं और कितने ही उल-टी हुई नदी के समान उछट कर गिरते हैं और क्रोध करके शिव की मुंडमा-ला के गएहुए मस्तक भी फटते हैं ॥ ११९ ॥ १४ सेना में फटी हुई १३ ध्वजा ऐसी दीखती है जैसे मेघ के जोर से १५ आकाश में मयूर चढते हैं १७ पवन लगने से १६ हाथियों पर झंडे ऐसे दीखते हैं जैसे १८ पर्वत के शिखर पर ख-जूर का वृक्ष कांपता है ॥ १२० ॥ २० एक दूसरे को भुजाओं में भरकर वह सेना ऐसी १९ भरगई कि जिसमें होकर पवन का २१ सदागोन [निरंतर ग-

गहे कोदं कट्टार के पार गोदैं, खुरौं बाजि के घुम्मिकैं भुम्मि खोदैं
फिरैं के गदा मारि गै मत्थ फोरैं, चिरैं कुंभ मुत्तीनको रगचोरैं ॥
कढैं हत्थि हौदेनके उड्ड कच्छी, मुरैं तारकी वग्ग ज्यों बारमच्छी
किते कुप्पि हौदेनमें सूर कुद्दैं, मरोरैं निसादीनके कंठ मुद्दैं ॥
भिदैं त्यों गजाजीवं के जीव भुल्लैं, वढे मोहमैं के पदग्रस्त बुल्लैं १२३
नदैं भभंकी फुट्टि भेरी नगारे, बदैं के विदारैं हहा हाय हारे ॥
चढी अग्गि जगी चिनगी चमंकी, सिकींझार ससारकीबुद्धिसकी
तपैं पक्खरी बाजि दंज्झैं तरक्कैं, जपैं राम के घुम्मिकैं भुम्मि जक्कैं
खिरैं हड्ड के झुंड के खंड खंडी, मनो बुट्ठि ओरेनकी मेघ मंडी।।१२५।
चलैं रोप त्यों चाप जीवों चटक्कैं, नचैं खेचरी भूचरी प्रान नट्ठैं ॥
बहैं वेगतैं तेग सन्नाह बढ्ढैं, किधौं सैंभुकी पतिमैं तति कढ्ढैं ॥

मन] नहीं होसका "पवन का नाम हो सदागति है वह सार्थक नहीं हुआ" कट्टार ग्रहण करके उसका १ कोना [नोक] मार मे २ पार करते हैं और कितने ही घोड़े फिर कर भूमि को खोदते हैं ॥ १२१ ॥ कितने ही गदाओं से ३ हाथियों के मस्तक फोड़ते फिरते हैं और चिरेहुए ४ कुम्भस्थलों से ५ मोतियों का रंग चुराते हैं अर्थात् श्वेत रंग के मोतियों को रुधिर से लाल कर देते हैं ७ घोड़ों को हाथियों के होदों से ६ ऊपर निकालते हैं वे घोड़े खुत के तार की धाग वे ८ पानी में मच्छी मुड़े तैसे मुड़ते हैं कितने ही वीर क्रोध करके होदे में कूदते हैं ९ हाथी के सवारों के कंठ मरोड़ कर प्रसन्न होते हैं १० कितने ही महावत भिद कर जीव भूलते हैं कितने ही हाथियों के ११ पैरों में दब कर मूर्छित होकर बोलते हैं ॥ १२॥ १३ भभ [फूटे बाजे के शब्द का अनुकरण है) करके कितने ही १४ नोपत और नगारे १२ बजते हैं कितने ही कटेहुए हाय हाय करते हैं १५ युद्ध सम्बन्धी अग्नि चढ कर उसकी चिनगारियें चमकीं जिनकी ज्वाला से ११ जल कर संसार की बुद्धि शंकित हुई ॥ १२४ ॥ पाखरों वाले घोड़े तप कर १७ जलते हैं तड़कते हैं अथवा कूदते हैं और कितने ही राम राम करके घूम कर भूमि पर १८ गिरते हैं कितने ही हाथों के खंड टुकड़े टुकड़े होकर खिरते हैं सो मानों मेघ मे १९ ओलों (गड़ों) की वृष्टि रची है ॥ १२५ ॥ ज्या २० बाण चलते हैं त्यों धनुष की २१ प्रत्यंचा चटकती है खेचरी भूचरी [देवी की दासी विशेष] नचती है और प्राण २२ नष्ट होते हैं बेग से तरवारें पड़कर २३ कवच कटते हैं सो मानों २४ सापन की पंक्ति

जरैं अभ्भ*गैदंत दो†ओरसौं जो, दिपैं‡पुव्वआखाढ सो§रिच्छ द्वैरक
अँगारी उभैर अभ्भ काहू उछारी, कढे उत्तग द्वैरभ मंचानुकारी
इतैमैं उडैं अभ्भ यौरैं अंगारे, त्रिकोणाभ जे ते भिजिं तीन३तारे।
भं गोबिंदको ज्यौं कह्यो मग्ग त्यौं भो, मृदंगैं लख्यो चो ४ ध
निष्ठा भ ज्यौं भो ॥
उडैं चर्म सो१००चंद्र माला अरोह्यो, सुही ह्वैंत बारीसको रिच्छं
सोह्यो ॥ १३८ ॥

महारत्ति अर्केंदुके संग मन्ने, छह्तारे रहे कृत्तिका अंत छन्ने ॥
त्रिजामाहिँ पुव्बा भई यो त्रिजामा, परी फैलि ज्यौं अस्रउद्भेद पाम।
हठी बीर जैसिंहके घूंक हुक्के, कुहू सालमी स्तूर फेरंडे कुक्के ॥
फिरैं भग्गली बग्गुली गिद्ध फुल्लैं, भ्रमैं पिंगला सेन भी लेन भुल्लैं।१४०।

आकाश में * हाथी के दाना † ओर के दंत जलते हैं सो (गज दंत के आकार) § दो तारों का ‡ पूर्वाषाढा नक्षत्र होता है। १३६। १ आकाश में दो अंगारे किसीने उछाले सो २ उत्तराषाढा नक्षत्र के दो तारे ३ मंच के आकार हुए आकाश में और अंगारे उडते हैं सो ४ त्रिकोण के आकार ५ अभिजित् नक्षत्र के तीन तारे दीखते हैं ॥ १३७ ॥ ७ विष्णु भगवान् का ६ नक्षत्र "ज्योतिष में श्रवण नक्षत्र के देवता विष्णु हैं" मार्ग के आकार श्रवण नक्षत्र हुआ ८ मृदंग के आकार चार तारों का धनिष्ठा नक्षत्र हुआ ९ ढाल के ऊपर के चांद (फूल) १० चढहुए उडते हैं सो ही ११ गोलाकार सौ तारों का वरुण का १२ नक्षत्र शतभिषा शोभायमान है "ज्योतिष में शतभिषा नक्षत्र का स्वामी वरुण है" ॥ १३८ ॥ १३ उस काल रात्रि में १४ सूर्य चन्द्रमा के साथ मानेहुए इसकारण कृत्तिका नक्षत्र के अंत तक पूर्वाभाद्रपद १ उत्तराभाद्रपद २ रेवती ३ अश्विनी ४ भरणी ५ कृत्तिका ६ ये छः नक्षत्र १५छुपे रहे अर्थात् नहीं दीखे "ये नक्षत्र वैशाख मास में सूर्य के आस पास रहते हैं और अमावास्या का दिन होने के कारण सूर्य चंद्रमा का साथ होना लिखा है" १६ रात्रि के १७ पहिले ही इसप्रकार की१८रात्रि हुई वह ऐसी फैली कि जैसे१९रुधिर में पामा रोग२०प्रकट हुआ ॥१३९॥अभयसिंह के वीरों रूपी २१उल्लू बोले २२ उस नष्टचंद्रा अमावास्या में २३ सालमसिंह रूपरूपी २४ गीदड बोले २५ भागलों (भागनेवाले कायरों) रूपी २६ बागल (चमगीदड) प्रफुल्लित हुए २७ वह सेना कोचर पत्ती की २८ कान्ति को लेना नहीं भूलकर भ्रमती है ॥ १४० ॥

भन्यौं बेगिसल्लोत भूतेस भायो, जग्यो देवकच्छपाद जो जैत जायो।
नरूजात से गात यों लीलालिन्नौं, नहीं ईस जच्च्यो सु पै सीस दिन्नौं ॥ १४१ ॥

[दोहा]

गिरत गिरत नारव गजब, हुंत मडिग सिरदार ॥
देवसिंह किय छकिन दे, असि उपवीत उतार ॥ १४२ ॥
अब सुं देव हनि नारवहिं, खाय डक्क तस खग्ग ॥
धर्यो प्रबल हरवल्ल धुर, फिरत मचावत फग्ग ॥ १४३ ॥

(षट्पात्)

अग्गै तच्छक उरग बहुरि पय पुच्छ बिदब्बिय ॥
अग्गैं बर बारूद छोरि पावक सिर छब्बिय ॥
अग्गै दिनकर असह मुररि उत्तर मग लिद्धो ॥
अग्गैं छुधित मयंद बहुरि बिच्छिय डंक बिद्धो ॥
अग्गैं सु देव आहव अडर अरु नारव अति उप्फन्यो ॥
जयसिंह मान भज्जक सँजव बेतालन रंजक बन्यो॥१४४॥

[निशाणी]

---

१ बरीशाल के चलानेवाला २ शिव के मन भाया ३ देवसिंह "कच्छपाद सिंहे" इति शब्दार्थचिंतामणि ॥ ४ जैतसिंह का पुत्र (देवसिंह) जगा ५ नरूका से ६ गात्र (शरीर) ७ लीला (खेल) से ८ शिव ने उसका मस्तक नहीं मांगा ९ परन्तु ॥ १४१ ॥ १० नरूके सरदारसिंह ने ११ शीघ्रता की १२ तरवार से जनेऊ दी (जनेऊ के आकार शरीर को काट देने को जनेऊ उतार कहते हैं) ॥ १४२ ॥ १३ यह देवसिंह १४ नरूके को १५ प्रथम ॥ १४३ ॥ पहिले ही १६ तक्षक सर्प था और फिर चरण से उस की पूछ को १७ दबाई १८ पहिले ही श्रेष्ठ बारूद था और फिर १९ आग्नि के ऊपर डाला २० पहिले ही नहीं सहने योग्य सूर्य था और फिर मुड़कर उत्तर दिशा का मार्ग लिया, २१ पहिले ही भूखा २२ सिंह था और फिर पीछे के २३ डंक से बींधा गया इसप्रकार देवसिंह पहिले ही २४ युद्ध में निर्भय था और फिर २५ नरूका सरदारसिंह बहुत बढ़ा इसकारण जयसिंह के मान को २६ मिटानेवाला होकर बेतालों को २७ शीघ्र २८ प्रसन्न करनेवाला हुआ ॥ १४४ ॥

नारवकौं देवा निगाजि अग्गैं उफनाया ॥
इत नरउर नृप के सचिव चालुक्क चँपाया ॥
प्रेमसिंहहू कैं पलट द्रुत दाव दिखाया ॥
झल्लरिलौं झननंक ते तेगा तरकाया ॥ १४५ ॥
सूरौं हूरौं सत्थव्है गलवत्थ मिलाया ॥
खंडेराय खिल्हारहू रन फग्ग रचाया ॥
पात गदा के पुट्टली फटकार फवाया ॥
घाय छब्बकैं रंग के जलजंत्र चलाया ॥ १४६ ॥
खेह गरद्दी मेहलौं अँव्वीर उडाया ॥
फूल कलेजे फिप्फरे फवि फाँक फुलाया ॥
गोली गोटे गुलालके चहुओर चढाया ॥
डेरौं डिंडिम डाकिनी डफ डक्क बजाया ॥ १४७ ॥
गनिका ज्यों नचि जुग्गिनी थेई थरकाया ॥
भैरौं गाँयक भायकैं आलाप उठाया ॥
नाथाउत प्रेमहु निडर खग खेल खिल्हाया ॥
दोऊ फग्ग उँदग्गमैं इम कौतुक आया ॥ १४८ ॥

नरूके को खाकर देवसिंह आगे १ बढा २ सोलंखी को दवाया ३ शीघ्र खड्ग विशेष ॥ १४५ ॥ वीरों और ५ अप्सराओं ने साथ होकर ६ उस फाग में कितनी गदाओं का पड़ना ही ७ पोटली का फटकारना ८ शोभायमान हुआ और कितने ही घाव उबकते हैं सो ही रंग के ९ फुहारे चलाये ॥१४६ मेघ के समान अंधेरा करके धूल उडती है सोही १० गुलाल उडाई उस युद्ध में कलेजे और फेंफरों की फांकें हैं सो ही फूले हुए फूल हैं और गोलियां रूप ११ गुलाल गोटे चौतरफ चढाए और भैरव के वाद्य डैरव और डाकिनियों के वाद्य डिंडिमियें बजे सो ही उस फाग में डफ बजाये॥ १४७ ॥ और वैश्याओं के समान थेई थेई करके जोगिनियें चलीं और बावन ही भैरवों ने १२ कलावंतों की भांति आलाप ली, नाथावत प्रेमसिंह ने भी निर्भय होकर तरवार का खेल खिलाया १३ उदग्र (उछलते हुए शस्त्रों की अथवा निरंकुश फाग में इसप्रकार खेल पर आये ॥ १४८ ॥ इसप्रकार तीरों से छातियों के

छेदैं तीरन छत्ति यों वीरन विरमाया ॥
सेल घमाकों सकुले छाकों कि छकाया ॥
दोऊरमारत दाव जे घन घाव घुमाया ॥
नरउर मन्त्री प्रेमको बहु वार बचाया ॥ १४९ ॥
खंडे खडेरायके द्रुत प्रेम दबाया ॥
चचल चड चमक्किकैं ग्रीवा गरकाया ॥
सिवकों दे सिर प्रेमका गतमान गिराया ॥
चालुकको नरउर सचिव हनि यों रु हकाया ॥ १५० ॥
देखि निरकुस देव इहिं सज्जित समुहाया ॥
धर दोउन धमचक्कै फनमाल फिराया ॥
हड्डन मसँ निहारहीं हड्डा हठ आया ॥
जिम लग्गैं तिम लै चलैं खग पान पचाया ॥ १५१ ॥
कक्कर्ट टोपों काट्टिकैं कढि जात अधाया ॥
ज्यों सबनीगर सव्वुमैं चहि तत्र चलाया ॥
यों असि उच्छट देवकी रन चित्र रचाया ॥
खंडेराय खिलहारकों खग्गों वल खाया ॥ १५२ ॥

(दोहा)

नरउर पतिको सचिव हनि, खडेराय सु नाम ॥
बहुरि देवसिंहह बळ्यो, कूरम दल जग काम ॥ १५३ ॥

(पद्पात)

छेद कर वीरों को १ विरमाया (आनन्द पूर्वक ठहराया) भाला के प्रहार २ भर गये (अवकाश रहित होगये) सो मानों मद्य के प्याला से तृप्त किया है ३ प्रेमसिंह का ॥ १४९ ॥ प्रेमसिंह को खंडेराय ने ४ तरवार से शीघ्र दबाया ५ गरदन में घुस गया ६ सम्मुख आया ७ जहां हड्डे हठ पर आते हैं सदा ८ छुरियों पर मांस नहीं रहता तरवार के पाण से पकाया हुआ मांस जैसा ९ तरवारें खाती हैं लड़ा में ले जाती हैं ॥ १५१ ॥ वे कवच और टोपा को काट कर ६ भूमि ही निकल जाते हैं जैसे कि १० मायन पेपनवाजा मायन में ताल चलाये पर भूमि ही निकल जाती है ११ युद्ध में आश्चर्य किया॥ १०२॥

महाराम नृप *माम मुढ पहिलें जु पल्लट्यो ॥
सुत ताके संग्रामसिंह कूरम दल कट्ट्यो ॥
करनसिंह कछवाह चाहि तिहिँ ओर चल्लायो ॥
पानी मानहु प्रलय उदधि सत्तन उफनायो ॥
झमकात खग्ग झारत झपटि बाजि दपटि सम्मुह कढ्यो
अयनैनें निरखि वयरेय तदिन पग पग प्रति जय जय पढ्यो १५

इत संग्राम असंक करन कूरम उत उद्धत ॥
इत बुंदिय जय आस उत सु जैपुर जय इच्छत ॥
दोऊ जुरि जम दाव घाव खँग घाव घुमाये ॥
बहुरि मान अच्छरिन लुब्भि आयास लुभाये ॥
बीर रु रउद्द बीभच्छ वलि अति अचिज्ज रस उप्पज्यो ॥
नच्चत अनेक मुंडन निरखि भालचंद्र तदिन भज्यो ॥१५५

करभन ग्रीवा कटत उनहिं वेताल उठावत ॥
अंत्र तंत आरोप बीन लय लीन वजावत ॥
मनुजन रुंड मृदंग ढोल वज्जत हय ढढ्ढर ॥
गोमुख गति गज सुंडि मचत संगीत मनोहर ॥

॥ १५३ ॥ *राजा बुधसिंह का मामा. मानों सातों १ समुद्रों से प्रलय का पानी बढा २ घोड़े दौड़ा कर ३ उस दिन ३ शिव ने अवस्था का ४ वेग देख कर पग पग प्रति जय जये का शब्द पढा ॥ १५४ ॥ ६ कछवाहा करणसिंह ७ पाक्षियों की दौड़ से चूके ८ फिर इन लोभियों (अप्सराओं से विवाह करने के लोभियों) ने ९ अपने युद्ध के परिश्रम पर उनमानवाली अप्सराओं को विवाह के लिये लोभ युक्त की वहां वीर रस, रौद्र रस, १० बीभत्स रस और ११ आश्चर्य (अद्भुत) रस उत्पन्न हुए और शिव की मुंडमाला से अनेक मस्तकों को नाचते हुए देख कर राहु से ग्रहण होने की शंका करके १२ शिव के ललाट का चन्द्रमा उस दिन भागा १५५ ॥ १३ ऊंटों की गरदनें कटती हैं जिनको उठा कर उनके आंतों की १४ तांत बना कर वेताल लय में लीन होकर उस वीणा को बजाते हैं १५ मनुष्यों के रुंडों की मृदंगें और घोड़ों के १६ अस्थिपंजरों [हड्डियों के पींजरों] के ढोल बजाते हैं हाथियों की कटी हुई सूंडों को १७ गोमुख

गायत पिसाच जुग्गिनि गहकि लहकि सुसिर आनंद तत ॥
करि ताल खड सीमक किलकि हल्लीसक डाकिनि हलत१५६

(दोहा)

रन दोऊ या बिधि रचत, सजि करन रु संग्राम ॥
आजि न रुक्के लै अडर, ताजिन वग्ग तमाम ॥ १५७ ॥
कुप्पि दलिय कूरम करन, सोलखी उर संगि ॥
प्रतिभट पर अति भट पहहु, इततैं बढिय उमगि ॥१५८॥
झारिय खग चालुक झपटि, बेल हय दपटि अचूक ॥
छिप सिर कूरम करनको, टोप सहित द्वै टूक ॥ १५६ ॥
हनि पाछि रु झल्ला हुकम, खिच्चिय सेर खपाय ॥
छिप अथ गाम रसोर पति, घासीराम निराय ॥ १६० ॥
कूरम घासीराम तब, सिर झारिय सैंमसेर ॥
कट्टत छिन वह गिर छिपउ, सिव निज मौलि सुमेर १६१
समर पर्‌यो सग्रामको, देवसिंह द्रुत देखि ॥
कूरम घासीरामको, पूगो सम्मुह पेखि ॥ १६२ ॥
देवसिंहके उर दुसह, द्रुत कूरम खग दीन ॥
पैठो कटि नौगोद पुनि, तरकि पंसुली तीन३ ॥ १६३ ॥
इहिं अंतर देवहु अतुल, तस सिर झारिय तेग ॥

(वाद्य विशेष) की भांति बेपर अनोहर लगाते मचाते हैं जहां १ प्रसन्नता की मौजी से पिशाच और जोगनियें गाती हैं तथा २ फूंक से बजने वाले [वंशी आदि] ३ स्वाद से मृदंग [वाद्य आदि] बाजे बजा कर कटेहुए मस्तकों के ४ ताल मजीरे करके ५ घूम के नाच से किलकारी करके डाकिनियें हलती हैं 'स्त्रियों के समूह के नाच का नाम हल्लीसक है' ॥ १५६ ॥ ६ युद्ध में यहां रुके ७ घोड़ों की वाग ८ कायी, करके (घोड़ा की वाग कायी करना दौड़ाने का सूचक है) ६ कछवाह करणसिंह ने क्रोध करके १० वरछी शत्रु पर वाह बलवन्त वीर इधर से बढ़ा ॥ १५८ ॥ १ झपट, धौके को रौंदा कर ॥ १५६ ॥ २ समीप ॥ १६० ॥ ३ खड्ग ४ समय १५ अपनी सुषमा सेक्र सुमेरु ॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ १ उदर का कवच [पेटी] कट कर ॥ १६३ ॥ १ पसली

हनि रसोर पतिकों हुलासि, बढ्यो वहुरि अति वेग ॥१६४॥
हरिपसिंह तोंवर हठी, पुनि जद्दव परताप ॥
करनसिंह रट्ठोर कुल, ये अरि पिक्खि असाप ॥ १६५ ॥
*लिखत इन्हैं मानहुँ †लिखे, खग ‡सिचान §खरकोन ॥
आयो देव सु उप्परहि, प्रलय माँहिं जिम पोन ॥ १६६ ॥
तबहि देवके खंध तकि, तोंवर झारिय तेग ॥
तीनन[3]इन हनिकैं तऊ, वीर न भो हत वेग ॥ १६७ ॥
जैतसुवन[1] के इम जवर, तीन[3]लागिय तरवारि ॥
अरु खट[6]भट आमेरके, मरद लये रन मारि ॥ १६८ ॥
अब सु देव अति लोह छकि, पर्‌यो मूरछित प्रान ॥
हूरनकों[2] होंसहि रही, यँहँ आयुहिं वलवान ॥ १६९ ॥
सालम दल सागर[3] मथ्यो, अभय देव अति लाग ॥
तोउ न लद्धो[4] जय रतन, यँहँ बुंदीस अभाग ॥ १७० ॥
सठ सालम इक खाल[5] विच, दुर्‌यो रह्यो भय दाव ॥
बुंदिय दल सम्मुह बढे, आमेरे[6] उमराव ॥ १७१ ॥

(षट्पात्)

परसुराम परिहार जोध चालुक्क अति जुट्टिय ॥
साँवल गोर सजोर रूप चालुक्य अहुट्टियँ ॥
जोरावर नरु बंस लरिय चालुक्य सुरत सह ॥
बलि हड्डा बखतेस उदय चालुक लिय अग्गह ॥
जगभानु हड्ड उद्धत जुर्‌यो कूरम पृथ्वीसिंह सन ॥
सजि माँहिं माँहिं दुव दल सुभट लग्गे इम लग्गन खरन॥१७२॥

॥ १६५ ॥ *देख कर † देखे ‡ सिचाण (बाज, शिकरा) पक्षी ने § तीतर पक्षियों को ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १ जैतसिंह के पुत्र के ॥ १६८ ॥ २ अप्सराओं को इसके वरने की चाहना ही रही अर्थात् मरा नहीं ॥ १६९ ॥ ३ समुद्र को ४ जय रूपी रत्न नहीं मिला सो बुधसिंह का अभाग्य था ॥ १७० ॥ ५ नाले में छिपा रहा ६ आमेर के ॥ १७१ ॥ ७ छड़े ८ आगे ॥ १७२ ।

[निशाणी]

दोऊ ओर दुवाह यों असि वाह अछक्कैं ॥
डरों डाइलं डिंडिमी डक्कों ढक ढक्कैं ॥
सेल भचक्कैं सकुले अति घाय उचक्कैं ॥
सीस कपालों सयहैं कालो सु किलक्कैं ॥ १७३ ॥
खून वजाई खग्गनें धारा धमचक्कैं ॥
कुक्कैं क्रोड कराहिकैं कमठेस मचक्कैं ॥
नीसासा नासानुगी आसाँगज तक्कैं ॥
भोगी भोग न झिल्लिसक्कैं भुम्मी अकबक्कैं॥१७४॥
चौहों दिस रोहों रुक्के छोहों भट छक्कैं ॥
जैड्डे जजीरन जरे वड्डे गज वक्कैं ॥
ताजी तगन तोरिकैं फालों फरक्कैं ॥
मेह महयर मडतो रज अवर ढक्कैं ॥ १७५ ॥
के सूरन थक्कैं क्रूलह के हूरन तक्कैं ॥
गात नमावैं गिद्धनी गिलि गूद गजेक्कैं ॥
के घायक पायक कटैं सायकें सकसक्कैं ॥
खधे खेलह खिल्हारके भट सेल भचक्कैं ॥ १७६ ॥
खड चटक्कैं खुप्परी लागि लुत्थि लटक्कैं ॥
सेलों मार सुमार व्है असवार उचक्कैं ॥
धुकि हत्थी धीरन धरैं जजीरन जैक्कैं ॥
लैकलक्कैं वरछी लगत छोलि घाप छक्कैं ॥ १७७ ॥
रीस वटक्के अगके के सीस पटक्कैं ॥

१वीर२वाघ विसेप३अवकाश रहित४शिव॥१७३॥५वराह६नासिका के साथ पवनेधाके निश्वास से ७ दिशाओं के हस्ती ८ शेष नाग ९ व्याकुल होकर फणा पर भूमि नहीं झेल सका ॥ १७४ ॥१०चारों दिशा ११ रोक से १२ क्रोध १३जाड़े [मोटे]१४घोड़े ॥ १७५ ॥ १५ स्मारभजनें [हूंग] १६ बाण ॥ १७६ ॥
१७ जजीरों से, पांध, फर, पकड़ लेते हैं १८ कापते हैं ॥ १७७ ॥

गीत अलापों जुग्गिनी लै जात ललक्कै ॥
ग्राम सुपै गधारमै तीखे स्वर तक्कै ॥
ज्यों नर त्यों ईश्वर उडै ज्यौंगैवर जक्कै ॥ १८३ ॥
धातों जग निम्मानके अभिमान अँसक्क ॥
पानी सुम्मि पताललौं जिम थाल थरक्कै ॥
अग्घे अग्घे होहु यों वैहे भट वक्कै ॥
त्यों त्यों पय पच्छे लगे छत्ती धक धक्कै ॥ १८४ ॥
समय घोर संग्रामको इहिरीति उवक्कै ॥
कौंन पिता को पुत्र यों नाते सब थक्कै ॥
उव्वैरिवैमै इकमे मन भीनें मुरक्कै ॥
जिम तिम प्यारे जीवकों तजनों नन तक्कै ॥ १८५ ॥
कलवंछी बानी कढ़ै भ्रम्मि भीरु भटक्कैं ॥
पाय नटक्कैं पेंगड़ों लगि लुँत्थि लटक्कैं ॥
आंत उलज्झै आतसों जिम फंद जरक्कैं ॥
इक झटक्कै इक्कों पखरैत पटक्कैं ॥ १८६ ॥
केते होदन कगुरों खुरताल खनक्कैं ॥
चापि कलेज क कढ़ै के ढँढ्र ढक्कैं ॥
पिट्ठि मचक्कै पसुली गोढैं वरक्कैं ॥

---

१ गाती है २ जो भी गान्धार ग्राम म तीव्र स्वर से गाती है 'राग के समूह को ग्राम कहते हैं वे तीन हैं, यथा-

"षड्जग्रामो मध्यमादौ मध्यमग्राम एव च ॥
गान्धारग्राम इत्येतत् ग्रामत्रयमुदाहृतम्" ॥

३ घोड़ ४ हाथी गिरते हैं, ॥ १८३ ॥ ५ प्रजा ससार ६ बनाने के अभिमान में ७ अशक्त होना है अर्थात्, जिनसे मनुष्य-मार जाते हैं इतने पीछे प नाये नहीं जाते ८ आगे, पढ़ो आगे बढ़ो ॥ १८४ ॥ ९ नाश का १० सम्बन्ध ११ पक्षने मा १२ मय से ॥ १८५ ॥ १३ कतराई हुई १४ घोड़ों के पागडा (रकाब) म १५ मृतक शरीर ॥ १८६ ॥ १६ शरीर का पिंजर १७ पीठ की लगी हड्डी

केते हूल[1] कृपानकी बाँतुल[2] बबक्कैं ॥ १८७ ॥
फट्टैं मुंडन फाँक ज्यों दारिम दरक्कैं ॥
कंध कफोणी[3] कर कटैं करकोर्च[4] करक्कैं ॥
कट्टे[5] किरत नितंब के जिम कच्छप जक्कैं ॥
कटि जंघा सक्थी[6] कटैं हत्थी हनि हक्कैं ॥ १८८ ॥
व्यंजन[7] प्रेत बनात के गहकांत[8] गटक्कैं ॥
केते टोप कटाहकैं[9] पय लोहितैं[10] पक्कैं ॥
उंबी[11] सिंबी[12] अंगुली बहु सेकि बटक्कैं ॥
खाजे पूपी[13] खल्लके ताजे करि तक्कैं ॥ १८९ ॥
खुरमाँ खंडी खुप्परी चक्खैं धमचक्कैं[14] ॥
भेजा भात भरायकैं गिलि जात गैंजक्कैं[15] ॥
फैले घेउर फिप्फरन छैले[16] बनि छक्कैं ॥
बुक्का ठोर बनायकैं बुक्का[17] भरि हक्कैं ॥ १९० ॥
भुंजन[18] अैसे भूत गन करि केक किलक्कैं ॥
जिहिं बेलाँ[19] संके सुरत बंके अकबक्कैं ॥

१तरवार की हूल से२घायड़ा (बावला)॥१८७॥३कुहनी४हाथ का कवच (दस्ताना) ५ कटेहुए नितंब (ढूंगे) गिरते हैं सो किधों कच्छप पड़े हैं ६ नितंबों के नीचे की जाडी जंघा को (जांघ) और उससे नीचे की ओर घुटनों से ऊपर की पतली जंघा को सक्थी (साथल) कहते हैं॥ १८८ ॥ प्रेत७ भोजन के पदार्थ बना कर ८ प्रसन्नता की बोली बोल कर खाते हैं सो कितने ही कटेहुए टोपों के ९ कडाह बना कर १० रक्त रूप पानी में पकाते हैं, उन में अंगुलियां रूपी ११ दांघी (जव, गेहूं का फल) और १२ फलियां सेक कर खाते हैं और खाल (चर्म) के ताजे ताजे खाजे १३ पुड़ियां बना कर देखते हैं ॥ १८९ ॥१४ उस युद्ध में कटी हुई खोपरियों के खुरमे करके खाते हैं और भेजा रूपी भात मिला कर १५ खारभंजना (गजक) निगलते हैं फैलेहुए फीफरों के घेवर बना कर १६ रसिक होकर तृप्त होते हैं और बूकों (गुड्दों) के ठोर बना कर उनसे १७ मुख भरकर चलते हैं ॥ १९० ॥ १८ इस प्रकार के भोजन करके कितने ही भूतों के समूह किलकारियें करते हैं १९ उस समय टेढे वीर भी युद्ध

फाटि बक्तर विक्खरैं के टोप चटक्कैं ॥
फील छटक्कैं फांदते खग हक्क खटक्कैं ॥ १९१ ॥
भुल्लैं के मग भाँवरी पग पंक खचक्कै ॥
घुम्मै खेतरपाल लौ घन रत्त घुटक्कैं ॥
चाहे रत्त चटंक्किकैं चउसट्ठि६४चहक्कैं ॥
काय उझक्कैं के कटै झरि पाप झझक्कैं ॥१९२॥
लग्गैं अंबर लायसी के घाय टपक्कैं ॥
के वटके वटके करैं झटकेन झमक्कै ॥
नाच न चुक्कै डकिनी लौ हांच डचक्कैं ॥
ज्वाल झरक्कैं के जरी गजढोल ढरक्कैं ॥ १९३ ॥
वीर बक्तर पारके दे तीर तमंक्कै ॥
दत दमक्कै हीरलां चिनगी कि चमंक्कै ॥
सत्त लोक उप्पर सिक्कै धर सत्त धँमक्कै ॥
परि अट्ठों दिकपालके कप्पाल कसक्कै ॥ १९४ ॥
के झुक्कैं गाफिल कटैं लगि नैंन पलक्कैं ॥
सेस करक्कैं सकुली फनंपति फरक्कैं ॥
घापन सत्थे स्वास के भरि फनें भभक्कैं ॥
छोह गरूरी छोरि के सिर फोरि ससक्कैं ॥ १९५ ॥
मुल्लि भटक्कैं के भिरे केलि खान कटक्कै ॥
महिलां पय मंजीरलों हिंजीर ठमक्कैं ॥
धव्वँ ठहक्कैं वीरँमैं के त्रव्वँ ग्रहक्कैं ॥

करने को सकते और घपराते हैं १ हाथी ॥ १९१ ॥ २ भँवर (चक्र) खाकर ३ कीचड़ में घुसते हैं ४ रक्त की घूँटें ५ पीकर ६ शरीर ॥ १९२ ॥ ७ आकाश में ८ घाव ९ तरवारों से १० युद्ध में पड़ा ग्रास ११ हाथियों के औसाण गिरते हैं ॥ १९३ ॥ १२ तीरों को खैंच कर १३ हीरों की भांति १४ अक्षत हैं १५ नीचे के सातों लोक धूजते हैं १६ कपाल (खोपरी)॥ १९४ ॥ शेष नाग की रीढ़क (पीठ की हड्डी) टूटती है और १७ फणों की पंक्ति फुरकती है १८ झाग १९ धमक ॥ १९५ ॥ २० युद्ध में २१ स्त्रियों के पगों के नूपुरों के समान २२ साकळे पज ती हैं २३ नगारे २४ वीर रस मे २५ तासे पजते हैं

पिट्ठि कसकैं*कच्छपी धर धुज्जि धसक्कैं ॥ १९६ ॥
बे[1] दंतुलि[2] वाराहकी बहु भार बरक्कैं[3] ॥
लों के घायल लक्कलकी मैटि निट्ठि मरक्कैं ॥
के रजपूतों बल्ल कढि धूंतों[4] परि धक्कैं ॥
पत्त[5] खरक्कैं जुग्गिनी के रत्त[6] छरक्कैं ॥
तक्क्यो जिन तैसो तुमुल[7] ते फेरि न तक्कैं ॥
तद्दिन[8] पंचोलासपें नर नास न थक्कैं ॥
यों बुंदी आमेरकी अति लाज अटक्कैं ॥
हड्डे कूरम हल्लसों हरवल्लन हक्कैं ॥ १९८ ॥

[दोहा]

इहिं अंतर अवसेस अब, दुवर[9] नाड़ी[10] दिवसेसें[11] ॥
बुंदी भट छिज्जत बढ्यो, विजय कूरमन वेसें[12] ॥१९९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहदलेलसिंहोभयभूपसेनासमरतद्भयप्रच्छन्नासीनबुधसिंहकुत्साख्यापन १ चाहुमानाभयसिंहसारसोपठक्कुरफतहसिंहेसरदाठक्कुरकोजूरामहुहाड़पतिश्यामलदासकूर्माचलसिंहबुद्धानीपतिबहादुरसिंहमारणानन्तरमरण २ बुन्दीजयपुरवीरद्वन्द्व

* कच्छप की ॥ १९६ ॥ १ दोनों २ दांत ३ जाँघजन टोकर ४ धूंतों के ऊपर ५ पत्र ६ रक्त ॥ १९७ ॥ ७ संकुलित युद्ध ८ उस दिन ॥ १९८ ॥ ९ चार्की १० दो घड़ी ११ सूर्य रहते १२ अंश ॥ १९९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, बुधसिंह और दलेलसिंह बुंदी के दोनों राजाओं की सेना का युद्ध होना और युद्ध के भय से छिप कर बैठे हुए बुधसिंह की निंदा की सूचना १ चहुवाण अभयसिंह का सारसोप के ठाकुर फतैसिंह को मारना अभयसिंह का ईसरदा के ठाकुर कोजूराम को मारना अभयसिंह का हुहाड़ के पति श्यामलदास को मारना अभयसिंह का कछवाहे अचलसिंह को मारना अभयसिंह का बुद्धानीपति बहादुरसिंह को मार कर मारा जाना २ बुंदी और जयपुर के वीरों का द्वंद्व युद्ध करना ३ चहुवाण दे-

४वन ३चाहुमानदेवसिंहस्य नरूकासरदारसिंहहननं ४ देवसिंहस्य प्रेमसिंहहन्तृनरउरसचिवखण्डेरावमारणं ५ बुधसिंहमातुलपुत्रसंग्रामसिंहस्य कूर्मकरणसिंहासुहरणं ६ रसोरपतिघासीरामस्य संग्रामसिंहहननदेवसिंहतन्मारणं ७ हतपट्कूर्मदेवसिंहमूर्छासादनं ८ दृष्टकुल्याप्रच्छन्नबुन्दीपतिसालमसिंहबुधसिंहसेनोपरिजयपुरसैन्यसमाक्रमणं ९ मुहूर्तावशिष्टास्ताचलचुम्बिनि मरीचिमालिनि हतबुधसिंहसैन्यकूर्मकटकविजयवर्णनं त्रयस्त्रिंशो मयूख ॥ ३३ ॥

आदित एकसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७१ ॥

[दोहा]

नृपके बरजत जे निडर, अभय देव जिम आय ॥
तिल तिल बुदिय बीर ते, तुट्टे असिन अघाय ॥ १ ॥
तिनमैं इक१जैतह तनय, देवा लरन उदार ॥
मिच्चु न तउ मूरछि मरद, सुत्तो त्रि३असि समार ॥

(षट्पात्)

पर्‌यो अभयहरि प्रथम पारि पच५हि गजाउत ॥
पुनि निज सगहि परिंगं सुगत पूरन दोऊ२सुत ॥
हह्ह देव पुनि हनिय नँरुव सिरदार स्वतंत्री ॥

यसिंह का नरूके सरदारसिंह को मारना ४देवसिंह का प्रेमसिंह को मारनेवाले नरवर के सचिव खंडेराव को मारना ५बुधसिंह के मामा के बेटे भाई संग्रामसिंह का कछवाहे करणसिंह को मारना ६ रसोर के पति घासीराम का संग्रामसिंह को और देवसिंह का घासीराम को मारना ७ देवसिंह के छै कछवाहों को मार कर मूर्छित होना ८ बुंदीवाले सालमसिंह को एक नाले में छिपा हुआ देख कर बुधसिंह की सेना पर जयपुर की सेना का चढना ९ बुधसिंह की सेना के मारेजाने पर दो घड़ी दिन बाकी रहते जयपुर की सेना के जय पाने का तेतीसवां ३३ मयूख हुआ और आदि से दोसौ इकहत्तर २७१ मयूख हुए ॥

१ तरवारों से तृप्त होकर ॥ १ ॥ २ मृत्यु नहीं थी तोभी ३ मूर्छित होकर ४ तीन तरवारों की मार सहित ॥ २ ॥ ५ अभयसिंह ६ पड़े ७ स्वतंत्री (अपने अधिकार में रहनेवाला, अथवा अपने अधिकार में होकर) नरूके सरदारसिंह को

खिजि पुनि खंडेराय मारि नरउर पति मंत्री ॥
हनि पुनि रसोर पति वह हुलसि कूरम घासीराम कलि ॥
जइव कबंध तोंवर जुरे वह्वे ते अरि तीन[1]वलि ॥ ३ ॥

(दोहा)

खग्गन इम उमराव खट६, मारि देव बसि मोह[2] ॥
रिपु रुंडन मंचक रसिक, लरि सुत्तो छकि लोह ॥ ४ ॥
करन हुकम अरु सेर इन, तीनन[3] हनि बलि तेग ॥
नाथउत्त संग्राम नर, बिजु सिर नच्चयो वेग ॥ ५ ॥
बदलेहू यह बप्पकैं, नामी बदल्यो नाँहिं ॥
सीस अरथ बुधसिंहकैं, दै पत्तो दिव माँहिं ॥ ६ ॥

(षट्पात्)

परसुराम परिहार पस्यो चालुक जोधहिं हनि ॥
चालुक रूपहिं चक्खि पस्यो साँवल गोरन मनि ॥
जोरावर नरु जात सुरत चालुक हनि सुत्तो ॥
उदयसिंह हनि परिग हड्ड बखतेस बिरुत्तो ॥
जगभानु हड्ड जुज्झत हन्यों कूरम पृथ्वीसिंह कहँ ॥
लगि माँहिं माँहिं छिज्जे लरत तोउ न कोप समात तहँ ७

(दोहा)

बुंदीपतिको भट्ट बलि, नाम सु जहाँगाय ॥
अति उद्धत हनि पंच५अरि, तुट्यो असिन अघाय ॥ ८ ॥
बारहसै१२००इत्यादि बढि, दुवरदिस परिग ढुंवाह ॥
भट हजार१०००घायल भये, निडर देव तिन नाह[11] ॥ ९ ॥

---

१ युद्ध से २ बलवानों को अथवा फिर ॥ ३ ॥ ४ मूर्छा के ३ वश होकर ५ शत्रुओं के धड़ों रूपी मंच (चयारपाई) के ऊपर ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ पिता के बदलने पर भी ७ स्वर्ग में गया ॥ ६ ॥ ८ गौड़ वंश के क्षत्रियों का माणि ९ विना शब्द करने वाला (मूनक होकर ॥ ७८ ॥ १० वीर ११ उन घायलों का निर्भय

(षट्पात्)

कुसथल पचोलास भयउ इम जगभयंकर ॥
चरमं अद्रि ढिग चपल हकि पहुँचत रवि हैवर ॥
विखम रारि हुव वध लुत्थि पत्थरि वट उब्भट ॥
दुवघाँ सों लखि दाव खेत खोजन मेजे भट ॥
कृशापन कृसानुं चिति होम करि लाये हेरन घायलन ॥
जैपुर नरेस,जयसिंह जय बुंदीपति अनजय विमन ॥१०॥

[दोहा]

वित्तो इम आहव विकट, जित्तो सालम जोर ॥
सोधत अव घायल सुभट, आगम निसें दुहुँ ओर ॥
त्रिअसि घाय जैतह तनयं, देख्यो घुम्मत देव ॥
निज सिविका पठवाय नृप, आन्यों वह ढिग एवें ॥१२॥
सुनत पराजय खग्ग सजि, खिजि तँहं भोप खवास ॥
पासवान रघु दुहुँन पुनि, क्रिच्यो लरि दिवं वास ॥१३॥
वरजतहू तिल तिल वढ्यो, कट्टि अरिन अति कोप ॥
स्वामि हारि सहि नहि सक्यो, भलभल नापितं भोप॥१४॥
कछु,अनीकं बुंदीसको, अभय संग इम लग्गि ॥
यह रन करि अव हारि गिनि, पलट्यो द्रोहन पग्गि॥१५॥
समय घोर परखे सुभट, वदलो सब नय वोयें ॥
घायहु सेके घायलन, सालम दल विच सोय ॥ १६ ॥
रहे मँनुज बुदीस ढिग, इक्क सहँस अनुकूल ॥

पति देवसिंह था ॥ ९ ॥ २ चपल घोड़ा को हांक कर सूर्य के ३ अस्ताचल के समीप पहुंचते ही ४ मार्ग और बिना मार्ग ‍लुथें ५ फैल कर ५ दोनों तरफ में ६ मुर्दों को ७ चिता की अग्नि में ८ विजय नहीं होने से उदास हुआ ॥१०॥ ९ रात्रि के आने पर॥११॥ १० जैतसिंह के पुत्र देवसिंह को तरवारों के तीन घावों से ११ इसप्रकार घूमते हुए को ॥१२॥ १२ स्वर्ग में ॥१३॥ १३ नाई ॥ १४ ॥ १४ सेना १५ अभयसिंह के साथ॥१५॥ १६ नीति को छोड़ कर ॥१६॥ १७ मनुष्य

सालम बिच दल नव सहँस९०००, मुरयो बहुरि अघ मूल १
इहिँ अंतर अंधार अति, कुहु निस आगम कीन ॥
बुंदीपति मतिमंद बुध, नोंती बिपति नवीन ॥ १८ ॥

(षट्पात्)

जिहिँ बुंदिय हित देवसिंह मैंनन रन मारिय ॥
जिहिँ बुंदिय हित समरसिंह वर दुर्ग विथारिय ॥
जिहिँ हित सूरजमल्ल रतन रानाँ खिजि खग्गो ॥
जिहिँ हित भोज सजोर लरि रु सूरति जय लग्गो ॥
जिहिँ हित जयसिं संभर सता साहजिहाँकोँ सीस दिय
बुध धवहिँ छोरि जारन बिखय तद्दिन वह बुंदिय तकिय१९

(दोहा)

बुंदी पति बहुबिधि बिगरि, ऐसो भयउ असत्त ॥
अचँ बिनु हल जिम अंधकी, बरनी जाय न बत्त ॥ २० ।
कूरम दल इत बिजय करि, सालम सहित सहास ॥
अमल किन्न आमेरको, कुसथल पंचोलास ॥ २१ ॥
इमै कुसथल अनिरुद्ध सुव, पाय अनादर उच्च ॥
[illegible]ना रत्ति बितायकैं, कोटाकोँ किय कुच्च ॥ २२ ॥
संभर देव सु जैतसुव, असि त्रप३पायल अंग ॥
छुट्टी जानि स्वकीय छिति, सिबिका चढि हुव संग॥२३॥

॥ १७ ॥ १ नष्टचन्द्रा अमावास्या की रात्रि २ बुलाई ॥ १८ ॥ ३ सैनों को ४ श्रेष्ट गढ का विस्तार किया ५ सूरत नामक शहर से ६जय करनेवाले ७ चहुवान शत्रुशाल ने ८ पति बुधसिंह को छोड कर. जारों से९भोग करने को उस बुन्दी ने जारों को उस दिन देखा ॥ १९ ॥ १० अशक्त (नाताकत) ११जिसप्रकार बिना स्वर की सहायता के हल् अक्षर नहीं बोला जाता तिस प्रकार उस अन्ध की वार्ता नहीं कही जाती ॥ २० ॥ १२ हास्य सहित ॥ २१ ॥ १३ इसकारण १४ बुधसिंह १५ उदास होकर रात्रि बिता कर ॥ २२ ॥ १६ अपनी १७ भूमि छूटी जानकर

(षट्पात्)

चढि चल्लिय चहुवान छोरि बुंदिय छत्रधर्म ॥
कोटा निवसथ मगरोल किय तहँ मुकाम क्रम ॥
ह्यो दुवरराणिय संग पुर सु कोटा पठवाई ॥
पठयो सालक पास कुमर निज रु यह कहाई ॥
तुम देवसिंह जिहिं तिहिं तरह याहि जिवावहु छत्र अब ॥
जयसिंह जोर पिक्खहु जवर गुमर तोर महत गजव ॥२४॥

[दोहा]

सेवा सु हरी ग्रामको, गुज्जर गेंदा गोत ॥
जिहिं निज धावर धाइ जुत, पलनाँ लिय धरि पोत ॥२५॥
चुंडाउत सीसोद भट, भारतनाम सुभाय ॥
कढन छत्र नृप कुमरकौं, सो दिय संग सहाय ॥ २६ ॥

[पादाकुलकम्]

धावर भारतसिंह पिधाये, चम्मलि उत्तरि सजव चलाये ॥
हल्लिय नाम बिंदुमति ग्रामह, आय उहाँ बिरचिय बिश्रामह॥२७॥
जहँ दलसिंह हड्ड भोजाउत, जतनेन रक्खे गेह बिनय जुत ॥
कुमर उमेद रत्ति यँहँ कट्टी, मात लगिय बेघम मग पेंट्टी ॥ २८ ॥
गिरिबर घटिय लघि बेग गति, पहुँच्यो बाल नैर बेघम प्रति ॥
देवसिंह मातुल बेघम हुत, जाय बधाय लयो उच्छव जुत ॥२९॥
इत सालम लगि पिट्ठि उडायउ, मगरोल बुद्दहिं पहुँचायउ ॥
पच्छो मुरि आयउ बुंदिय प्रति, अमल स्वकीय कियउ जय उन्नति ३०

॥२१॥ १ अधम (नीच) क्षत्रिय २ ग्राम१अपने साले बेघम के रावत देवसिंह के पास। ३ घमण्ड और प्रताप से ॥ २४ ॥ ५ धाऊ ६,बालक [उम्मेदसिंह] को पलने में धर लिया ॥ २५ ॥ २६ ॥ ७ छिपेहुए अथवा पीछे ८ बुन्दी का ग्राम ॥ २७ ॥ ६ यत्नों से १० नम्रता सहित ११ बेघम की सीध से ॥२८॥ १२श्रेष्ठ पर्वत (मायापक्ता) की घाटी लांघ कर १३ मामा ॥ २९ ॥ अपना अधिकार ॥ ३० ॥

दिन्नी मुलक्क[1] दलेल दुहाई, सेठकों नृपता[2] अधिक सुहाई ॥
छत्रमहल बिच रहि छत्राधम[3], किय्यउ राजधानी भुग्गन क्रम ।३१।
भुल्लि गुनहँ[4] इम ऐस भुलायो, मनहु राज पीढिनतें पायो ॥
झुल्लत कर दासिन[5] झकझोरन, कनक[6] पउत्त कनक[7] हिंडोरन।३२।
मंगरोलतैं इत मति मुद्दह[8], बिनु सुधि चल्यो करभ[9] जिम बुद्दह[10] ॥
स्यंदनें[11] सत१००बारन[12] बत्तीसह, बद्दलदल[13] डेरा इकबीसह२१॥३३॥
पुनि सतसत्तरि१७०सँकट[14] प्रमानह, रुचिर[15] पालकी तखतरवानहँ[16]॥
इत्यादिक बहु रँखत[17] सुहाये, खरचहीन तत्थहि रखवाये ॥ ३४ ॥
अप्प चल्यो जित मुँह[18] तित ऐसैं, पै[19] न बिचार कोन गृह पैसैं ॥
गहन लंघि तोरज[20] गिरि घंटिय, भूखन भंजि बेलहिँ[21] जर बंटिय ३५
राजा इम पहुँच्यो प्रमाद रँढ[22], ग्राम प्रेमपुर जहँ मधुकरगढ ॥
कछुदिन तत्थ रह्यो कउलेसह[23], देखन चह्यो रानको देसह।३६।

(दोहा)

असित जेठ तेरासि१३दिवस, सिद्धियोग रविवार ॥
मधुकर गढतैं बुद्ध नृप, मुरि चल्ल्यो मेवार ॥ ३७ ॥
कुसलसिंह भट रानको, भैंसरोर गढ धाम ॥
तत्थ बंभनी[24] सरित तट, किन्ने जाय मुकाम ॥ ३८ ॥

पादाकुलकम् ॥

सगताउत भट भैंसरोर पति, बहु प्रज[25] कुसलसिंह रचि बिन्नति ॥

---

१ मुल्क का २ राजा पन ३ अधम (नीच) क्षत्रिय ॥ ३१ ॥ ४ अपराध भूल कर ५ दासियों के हाथों के झोलों से ६ कनकसिंह का पोता ७ स्वर्ण के हिंगलाट पर ॥ ३२ ॥ ८ मतिमूढ ९ ऊंट के समान १० बुद्धसिंह ११ रथ १२ हाथी १३ दल बादल (यह बडे डेरे का विशेषण है) ॥ ३३ ॥ १४ छकडे (गाडियां) १५ सुन्दर १६ तखतरवाँ (खास) नरयान विशेष १७ सामग्री (सामान) ॥ ३४ ॥ १८ जिधर मुख हुआ उधर १९ परन्तु २० पर्वत का नाम है २१ सेना को ॥ ३५ ॥ २२ बावलापन के हठ से २३ वामसार्गियों का पति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ २४ बम्हणी नामक नदी के किनारे ॥ ३८ ॥ २५ बहुत सन्तान वाला

सम्मुह आय नजरि हय किन्नों, अरु तिहिं नृपहु बाजि इक१दिन्नों ३९
रत्ति इक पिच्छैं बेग्रम रहि, चाहुवान गो उदयनेर चहि ॥
आय रान सग्राम मन्नि सुहे, मोहिल्ला मगरी लग सम्मुह ॥ ४० ॥
मिलतहि मुद बुदीस बढायो, चरन रान प्रति हत्थ चलायो ॥
रान सु हत्थैं पकरि अनुरत्तो, मुसकिलाये छत्तिय मय मत्तो ॥४१॥
इहिं विधि प्रकट किये अति आदर, अरु विमना कूरम हित अंतर
प्रविस्यो पुनि वुद्धहिं लै पत्तन, महिमानी पठई राको चंन ॥ ४२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे सग्रामहतक्षतमाणिगणनया सह समराङ्गणान्वेषणात्यक्तबुधसिंहबुन्दीसुभटसालमसिंहमिलन १ सालमसिंहकुसथलाधिकारानन्तरमद्भुतबुधसिंहकोटादिग्गमन २ कोटामुक्तपत्नीद्वयबुधसिंहस्वकुमारोम्मेदसिंहबेगमप्रेषण ३ मगरोलमुक्तगजरथादिपरिकरबुधसिंहोदयपुरगमन चतुस्त्रिंशो मयूख ॥ ३४ ॥

आदितो द्विसप्तत्युत्तरद्विशततम ॥ २७२ ॥

(दोहा)

---

१ घोड़ा ॥३९॥ २सुख मान कर ॥ ४० ॥ ३ मोद ४राना के चरणों में हाथ लगाया ५प्रीति युक्त ६मुसकरा कर छाती के लगा कर ७हृदय में मदमस्त हुआ ॥४१॥ ८ जयसिंह के कारण भीतर से उदास था ९ नगर में गया १० अपने घर पर आने के आशीष से महिमानी भेजी ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के राजा बुधसिंह के चरित्र में युद्ध में मरनेवाले और घायलों की गणना के साथ युद्धक्षेत्र को देखने का वर्णन और बुन्दी के उमरावों का बुधसिंह को छोड़ कर सालमसिंह से मिलना १ कुसथल में सालमसिंह के अमल करने पर बुधसिंह का कोटा की ओर जाना २ बुधसिंह का अपनी दोनों राणियों को कोटे और कुमर उम्मेदसिंह को बेगम भेजना ३ बुधसिंह के हाथी रथ आदि सामान को मगरोल में छोड़ कर उदयपुर जाने का चौंतीसवाँ ३४ मयूख समाप्त हुआ, और आदि से दोसौ बहत्तर २७२ मयूख हुए ॥

इत कूरम मालव अवनि, सुनि कुसथल संग्राम ॥
कंदन[1] मन्नि निज भटनको, कुप्पि फिरयो जयकाम ॥१॥

पादाकुलकम् ॥

मनहुँ बग्घ[2] बिच्छिय[3] चटकायो, जानि प्रलय भूतेसँ[4] जगायो ॥
कुच्च कलहँ[5] जयसिंह मानि किय, कोटा सीम मुकाम आनि किय२
हो दलेल संगहि सालम सुत, चहयो राज जिहिँ स्वामि धरम च्युत[6]
वा जुत नृप कूरम उफनायो, इम द्रुत सरित[7] कुसक तट आयो॥३॥
कुसकहि गयो मिलन कोटापति, बिरचिय समय जानि अति बिन्नति
हय गज बसन नजरि करि हद्दा[8], तजि नृप धरम खुच्यो अघ[9] हद्दा॥४॥

पज्झटिका ॥

उज्जैन अँनुग[10] नृप करि इकत्त, तनि मंत्र जाल जयसिंह तत्त ॥
लिय बुद्ध[11] हिँतु[12] जो दैल लिखाय, दिय प्रकट बचि सबहिन दिखाय५
कहि रानहु छप्प्यो लिखित एह, लिखवाय सँक्खि[13] निज भटन लेहँ[14]
अब निजनिज छापन तुमहु अंकि, रवी करहु हुकम दिल्लीस संकि६
कोटेस छाप तब प्रथम कीन, इत ओर नृपन पुनि छापदीन ॥
सूबाँनुग[15] भूपन सबन सक्खि, राजा लिखाय लिय टेक रक्खि॥७॥
पुनि तिहिँ मुकाम कूरम प्रबीन, क्रमजुत दलेलँ[16] अभिसेक कीन॥
कोटेस हत्थ पहिलैँ कराय[17], बलि तिलक हत्थ अवरन बिधाय ८
करि बहुरि अप्प कर तिलक कुम्म, सिर धरिय छत्र नग लँलि[18]-
त लुम्म
पुनि ढारिय चामर अप्प पानि, बुन्दीस रावराजा बखानि ॥ ९ ॥

---

१ नाश ॥ १ ॥ २ बाघ (सिंह) को ३ बिच्छू ने काटा ४ शिव को ५ युद्ध होना मान कर जयसिंह ने कूंच किया ॥ २ ॥ ६ स्वामि धर्म से गिर कर ७ नदी ॥ ३ ॥ ८ राजाओं का धर्म छोड कर ९ पाप के खड्डे में फसा (गडा) ॥ ४ ॥ १० सेवक ११ बुधसिंह से १२ पत्र लिखवाया था वह ॥ ५ ॥ १३ साक्षि १४ लेख ॥ ६ ॥ १५ सूबा के साथ चलने वाले (सेवक) अर्थात् उज्जैन के सूबे के राजाओं ने ॥ ७ ॥ १६ दलेलसिंह के १७ करा के ॥ ८ ॥ नगों की १८ सुन्दर लूंबोंवाला ॥ ९ ॥

अरु कोटापतिसों कहि अठेल्ल, बुन्दीस गिनहु अब यह दलेल ॥
जो आवहिं बुंदिय सुभट छुट्टि, तो ताहि न रक्खहु लेहु लुट्टि॥१०॥
हय अठ सप्त इक १७८७ अब्दं मान, वनि विसद जेठ तेरसि १३ बिधान ॥
इम करि दलेल अभिसेक अंक, समयानुकूल्य कूरम निसंक११
निज कृष्णा कुमरि तनया सु नाम, लागलि भिजाय ताके ललाम
मन्नि सु दलेल जामात स्वीय, गज इक१अरोहि दोऊ२गरीय१२
कोटेस पटालयं किय प्रयान, थिर हुव त्रय३इक१हि तखत थान॥
सिरुपाव वाजि दुव२दुव२नवीन, कोटेस दुहुनकी नजर कीन १३
तदनंतर कूरम तोरें तिक्ख, कोटेसहिं कोटा दियउ सिक्ख ॥
उज्जैन अनुग अवरहु असेस, दें सिक्ख रु पठये स्वस्व देस।१४।
कूरम दलेल जुत बिरचि कुच्च, आयउ भुव कुसथल गुमर उच्च॥
संग्राम भुम्मि तँहँ लखि समस्त, आत्मीयँ भटन बटिय अत्रस्तं१५

[दोहा]

इह अभय पहिलें हरियँ, सारसोप पति रवास ॥
वाके सुत रतनहिं दियउ, पैत्तन पंचोलास ॥ १६ ॥
अजितसिंह कोजुव तनय, ईसरदापुर ईस-॥
कुसथल पुर ताकों दयो, हठि जयसिंह महीस ॥ १७ ॥
साँवलदास सुहाडपति, सुत सोभाग सनाम ॥
याहि पलोधी पुर दियउ, कूरम नृप जय काम ॥ १८ ॥
नाह नगर नानेडिको, आहव मृत अचलेस ॥

---

१ नहीं डिगे जैसा (यह दलेलसिंह का विशेषण है) २ बुन्दी के उमराव॥१०॥ ३ प्रमाण वाले संम्वत् में ४ शुक्ल पक्ष ५ विधि पूर्वक ॥ ११ ॥ ६ पुत्री ७ मारियक्त८स्थापना-जमाई॥१२॥९.यह हाथी पर दोनों राजा सवार होकर१०डे-रा म ॥ १३ ॥११जिस पीछे१२प्रताप की तीक्ष्ण से ॥ १४ ॥१३पड़े, घमंड से१४ अपने उमरावों को१५निर्भय होकर बांटी ॥ १५ ॥१६अभयसिंह ने १७ लिया १८ पुर ॥ १६ ॥ कोजूराम का १९ पुत्र २० भूपति ने ॥१७॥ १८॥ २१ -युद्ध

सुवन तास हरिसिंहकौं, *बसु८ग्रामक दिय वेस ॥ १९ ॥
सुवन बहादुरसिंहको, पुर कुल्हानी †पाल ॥
दस१०ग्रामक तिहिं हित दये, ढुंढाहर गिनि ढाल ॥२० ॥
घासीराम रसोर पति, पुत्तहिं ग्रामक पंच५ ॥
दिय भूपति जयसिंह दुत, पेहु रचि नीति प्रपंच ॥ २१ ॥
[1]पंच १ प्रपंच २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
अभयसिंह आ[2]त्मज अधम, नाथूरामह नाम ॥
पलटयो सठ रनके प्रथम, सालमसौं करि साम ॥ २२ ॥
यातैं नहिं बलवन लियउ, मिल्यो जानि इन माँहिं ॥
नाथूरामहिं मन्नि निज, विस्वास्यो गहि माँहिं ॥ २३ ॥
देवसिंहकी मेदि[3]नी, इम वंटी कछवाह ॥
देवहु गिनि बु[4]द्धहिं अधन, कोटा गयउ सचाह ॥ २४ ॥
पुनि तजि पंचोलासकौं, किय जयसिंह प्रयान ॥
प्रबिस्यो जैपुर निज नयर, उद्धत बिजय अमान ॥ २५ ॥

सोरठा ॥

स्वीय जननिके सत्थ, उदयनेर ही जो अवहि ॥
तनयां बु[5]ल्लिय तत्थ, कारन ब्याह दलेलके ॥ २६ ॥

दोहा ॥

सुत समेत जयसिंहसौं, रानाउति सु रिसाय ॥
बरख छिंयासी ८६ माघ बिच, पत्ती पीहर जा[6]य ॥ २७ ॥
ही तबतैं तत्थहिं-सु[7]न्यौं, अब तनया आव्हान ॥
सालम सुतके ब्याहकौं, यातैं पठई [8]सा न ॥ २८ ॥

---

* आठ उत्तम ग्राम दिये ॥ १९ ॥ † पालन करनेवाला ॥ २० ॥ १ प्रभु (राजा) ने ॥ २१ ॥ २ पुत्र ॥ २२ ॥ २३ ॥ ३ भूमि ४ बुधसिंह को निर्धन जान कर ॥ २४ ॥ २५ ॥ ५ पुत्री को जयपुर बुलाई ॥ २६ ॥ ६ गई ॥ २७ ॥ ७ पुत्री का बुलाना ८ उसको नहीं भेजी ॥ २८ ॥

कूरम पुनि कहि मुक्कलिय, नहिं यह साखम भेद ॥
है अब यह बुंदीस *सुव, अधिप दलेल अमद ॥ २९ ॥
हुकम साह लिखवाय हम, दिय इहिं राज्य दिवाय ॥
जिहिं रक्खन हम रान जुत, सब कछवाह सहाय ॥ ३० ॥
यातैं कछु न बिचार अब, इहिं ललाट नृप अंक ॥
तनया देहु पठाय तुम, सोक बिहाय निसंक ॥ ३१ ॥
निज रानी प्रति पत्र इम, पठयो कूरम पाल ॥
पै कुमरी कछु रोग पगि, आय सकी नहिं हाल ॥ ३२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे जयपुराधीशजयसिंहरयोज्जयनीतो बुन्दीदिग्गमन १ बुंदीराज्याभिषिक्तदलेलसिंहेन सह जयसिंहस्वसुतासम्बधकरण २ हटकुसस्थलयुद्धक्षेत्रमृतस्वभटतत्सूनुबुंदीग्रामवितरण ३ दत्तभूमिजयसिंहजयपुरगमनवर्णन पञ्चत्रिंशो मयूख ॥ ३५ ॥
आदितस्त्रिसप्तत्युत्तरद्विशततम ॥ २७३ ॥

(दोहा)

इत नृप प्रविस्यो उदयपुर, स्वसुर हवेली पास ॥
ओंधे छज्जनके महल, उतर्यो तत्थ उदास ॥ १ ॥
मोदक फल भोजन अमित, पुनि रुप्पय सत पंच ५०० ॥

* बुन्दी के पति का पुत्र है ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुन्दी के राजा बुधसिंह के चरित्र में, जयपुर के राजा जयसिंह का उज्जैन से बुन्दी की ओर आना १ दलेलसिंह के बुन्दी का राज्याभिषेक करके अपनी पुत्री का दलेलसिंह से सम्बन्ध करना २ राजा जयसिंह का कुशस्थल के मुकाम युद्ध क्षेत्र को देख कर, वहां मरे हुए उमरावों के पुत्रों को बुन्दी के ग्राम जागिर में देना ३ जागीरें दिये पीछे जयसिंह के जयपुर जाने का पैंतीसवां ३५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ तिहत्तर २७३ मयूख हुए ॥

१ बुधसिंह २ श्वसुर की हवेली [जहां पर अब रेजीडेंसी है] के पास ३ औंधे छाजा के महल (अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है)॥१॥ ४ लड्डू (मिठाई) ५ पांच

महिमानी इम मुक्कलिय, रान बिरचि हित रंच[1] ॥ २ ॥
बिपति अतीव बिचारिकैं, इक्कत[2] करि उमगाव ॥
कहिय रान बुधसिंहकैं, द्रुत धर आवन दाव ॥ ३ ॥
पंचन कहि तब रान प्रति, बिधि कोटेस बुलाय ॥
मंत्र रचहु नृप तीन[3] मिलि, पहुमी लैन उपाय ॥ ४ ॥

पादाकुलकम् ॥

पहु बिचारि इम रान मंत्र पन, कोटा पति बुल्लिय इहिं कारन ॥
पुनि गिनि बुद्धहिं जनक जामि पति[4], अंतहपुर बुल्लिय मंडिय मति[5] ॥
रीति सु सुनि कूरमपति रानी, रान सहोदर[6] जामि रिसानी ॥
जनक[7] जामि मम भुआ जियत नन, अंतहपुर बुल्लहु जिहिं कारन ६
बिनु कारन बुल्लहु नन बुद्धहिं, कछु मन्नहु कूरमपति क्रुद्धहिं ।
जामि बचन सुनि रानै सोचि जिय, बुद्धहिं निज अवरोध न बुल्लिय[9]
इहिं अवरोध गमन अवरोधंहु, सुनि रु गमन चित्यो बिनु स्रोधहु ।
बिष्णुसिंह पुर बंसबहाला, भगिनी तस गुन रूप सुभाला ॥ ८ ॥
नाम गुमान कुमरि सुभ लच्छन, बहुरि सील गुन बिनय बिचच्छन[12]
बच्छर[13] दुवरके पुब्ब बिधाई[14], संभरपति सौं तास सगाई ॥ ९ ॥
संपति बिनु पुनि ब्याह सुहायो, पत्र दूत द्रुत अग्ग पठायो ॥
मंगिय सिक्ख रान प्रति मुद्दह[15], बरजिय तदपि रान नृप बुद्दह॥१०॥
पहुमी निज हित मंत्र प्रचारन, कोटापति बुल्लिय तुम कारन ॥
अरु मम भटहु घरन तजि आये, अप्पन हित इम मंत्र उपाये ।११।

---

१ थोड़ा सा स्नेह करके ॥ २ ॥ २ एकत्र ॥ ३ ॥ ३ उदयपुर, कोटा और बुन्दी के तीनों राजा मिल कर ॥ ४ ॥ ४ पिता की बहिन (भुवा) का पति ५ रावले (जनाने) में बुलाने की ॥ ५ ॥ ६ राना की सगी बहिन ७ पिता की बहिन ॥ ६ ॥ ८ बहिन के ९ अपने जनाने में नहीं बुलाया ॥ ७ ॥ १० जनाने में जाने का रोकना सुन कर उदयपुर से जाना विचारा ११ श्रेष्ठ भाग्य वाली ॥ ८ ॥ १२ विचक्षण १३ दो वर्ष पहिले १४ की थी ॥ ९ ॥ १५ मूढ़ ने ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥

तुमकों रुचत अनवसर उपनयें, मन्नहु तो इक वचन नीति मय ॥
मम सालिय पानिग्रह मढहु, वधुनकैं ओरहु तनया वहु ॥ १२ ॥
जो हिय रुचहिं व्याहि तिहिं अत्थहि, सजहु भुम्मि उद्यम हम सत्थहि
सभरकहि यह पुब्ब सगाई, वलि छोरैं नन होत बडाई ॥ १३ ॥
हठि हठि रान वराजि पुनि हारयो, बुद्द मुद्द नयें तउ न विचारयो।
पुनि कहि रान भ्रात कोटा पति, आये तुम घर हमहिं लज्जअति१४
यातैं कछु विरचत उपाय अव, तुम इत जात कोन करिहैं तव ॥
यह जो दृढ व्याहि रु द्रुत आवहु, जो वरं सचिव रक्खि तिहिं
जावहु ॥ १५ ॥
मयाराम तव अप्प पुरोहित, अँवनि उपाय काज रक्खिय इत ॥
अप्प विवाह हरख उफनायो, चहि दिस दक्खिन द्रुतहि चलायो १६
करहिं न व्याह विपति विच कोऊ, सभर पति अच्छो गिनि सोऊ
मही सरित उत्तरि प्रमत्त मन, पहुँचिय वसवहाला पत्तनं ॥ १७ ॥
सावन असितें सत्त वसु८७सवत, सद्दि लगन एकादसि११सगत॥
व्याहिय विष्णुसिंह भगिनी वत, राउल अजव सुता रमनी रंत १८
वहु विधि राउल हरख वधाये, स्वागत सवन अपुब्ब सधाये ॥
रुचि वरात आश्विन लग रक्खिय, अरु पुनि हू जावहु नन अक्खिय
धरिय वैरनि तत्थहि आधानह, यातैं तहँ रक्खिय चहुवानह ॥
अभयसिंह मरुधर नरेस इत, चहि दिल्लीस निदेसं करन चित २०
सूबापति गुज्जरधर स्वामी, ग्राम महँस सत्तरि७००००अनुगामी॥
प्रवल अहमदाबाद नगर पति, सरबिलंद जित्तन करि सम्मति२१
सक मुनि वसु अत्यष्टि१७८७मास ईस, द्रुत हक्किय गुजरात पहु-

१ विना समय २ विवाह ३ विवाह ४ हमारे भाइयों के ॥ १२ ॥
॥ १३ ॥ मूर्ख सुयसिंह ने तो भी ५ नीति नहीं विचारी ॥ १४ ॥ ६ अष्ट ॥१५॥
७ भूमि के ॥ १६ ॥ ८ मही नामक नदी ९ पुर म ॥१७॥१०वदि पक्ष ११सन्तोष युक्त ॥ १८ ॥१२उत्सव या रुचि पूर्वक ॥१९॥१३कुलहित ने१४ गर्भ१५ बादशाह की आज्ञा ॥ २० ॥१६गुजरात के१७सूबा के साथ॥२१॥१८आश्विन मास १९ शीघ्र

मि दिस ॥

विदित बिजय दसमी सनि बासर, विंटि अहमदाबाद लयो बर२२
अंग कछुक तोपन रचि जाहिर, बुल्लयो बहुरि डाक दै बाहिर ॥
लखि आवत रट्ठोर लरन हित, चहि रन सब हंकिय प्रसन्न चित२३
ऊदाउत चंपाउत उद्धत, मेरतिया कुंपाउत दृढ मत ॥
जैताउत पुनि जैतमालउत, बल्लूहाउत करनोत जोरजुत ॥ २४ ॥
पाताउत रु कलाउत प्रतिभट, वहि धूहड़ रानाउत रन वट ॥
भद्दाउत रु महेचे विजु भय, रूपाउत रु सताउत अतिरयं ॥२५॥
गोगाउत रु करमसीउत जँहँ, देवराज रनधीर वंसि तँहँ ॥
चाहड़देवउत रु पोकरनाँ, चंडाउत हुमंडि दृढ मरनाँ ॥ २६ ॥
जोधे रतन केसरी कुल भव, धंधल अरु सिंधल अरि बन दँव ॥
भूपतिउत रतनोत बडे भर, मंडनउत चुंडाउत असिकर ॥ २७ ॥
बरसिंहोत नराउत अति बल, सोहड़ रायपालउत अतिभल ॥
रनमल्लोत मंडले रनरत, मुदित भारमल्लोत लरन मत ॥ २८ ॥
बहुरि चंद्रसेनोत महाबल, इत्यादिक संजुरि चित उज्जल ॥
नृप अभमल्लहिं हत्थ दिखावत, लगे लरन मुच्छन कर लावत २९
सरबुलंद सूरज कर सक्खियं, निडर मिंच्छ उततैं हय नक्खिय

---

१ दिन २ घेर अहमदाबाद को घेर लिया ॥ २२ ॥ ३ क्रोध दिखाकर ॥ २३ ॥ (अब यहां राठोडों की शाखा गिनाते हैं) ॥ २४ ॥ ४ शत्रु से युद्ध करने वाले ५ उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह विपत्ति के दिनों में मारवाड में 'लोयाणा' के पर्वतों में रहे थे तब प्रसन्न होकर लोयाणा के ठाकुर को 'राणा' की पदवी दी थी जो अब भी राणा कहलाता है जिसके वंशवाले राणावत कहलाते है और राव रिड़मल के वंश में राणा नामक एक प्रसिद्ध पुरुष हुआ था उसके वंश वाले राणावत कहलाते हैं सो अब भी विद्यमान हैं और इसी जाति से प्रसिद्ध है परन्तु इस समय इनके अधिकार में कोई ठिकाना नहीं है ६ वेग वाले ॥ २५ ॥ ॥ २६॥ ७ शत्रु रूपी बनों की अग्नि ८ हाथ में तरवार रखने वाले ॥ २७ ॥ ९ युद्ध में प्रीति करने वाले ॥२८॥ १० साक्षी करके ११ म्लेच्छ ने

आकुल भोग सहँस अकुलानैं, डग मगि पव्वय कूंट झुलानैं।३०
घने घुमड वग्ग ऐंचि घोरन, रारि मचिग मिच्छन रट्ठोरन ॥
किलक प्रेत डाकिनि गन किन्नी, लोंस्रय व्यैक्ति चउसट्ठि६४ न
लिन्नी ॥ ३१ ॥
हिगि बीचिन सिंधुन जल होइयो, अरुन अव्वँ सप्तक अवरोहियो ॥
कटि कंकट निकसत वपु कैसैं, जिह्मग गन काचुक तजि जैसैं।३२।
कटि कटि कुंभ तिरत सोनित किम, जल अगाधं घट उडुपं पृ-
थुल जिम ॥
अली इमाम होत उत औरव, इत हरि अच्चुत भूतनाथ भव॥३३॥
भूत किलकि कहुँ हय भँरकावत, गौ कि चोर लखि ग्वाल चलावत
कहुँ भट चरन रकीबन अटकत, मूढचित्त भोगन जिम दुर्मत॥३४॥
फट्टित केतु इभन फहरावत, रंभा तरु कि अद्रि लहरावत ॥
गुटिका भ्रमत रीति पइ रक्खिय,मनहु क्रुद्ध सरघाभिध मक्खिय३५

निर्भय होकर घोड़े बढ़ाये १ कर्तव्यता में मूढ़ (अब क्या करना चाहिए) होकर शेष नाग के हजार फण घबराये और पर्वत हिलकर उनके २ शिखर झुके ॥ ३० ॥ बहुत घमंड से घोड़ों की बागें ३ खींच कर (घोड़े दौड़ा कर) म्लेच्छों और राठोड़ों के युद्ध हुआ वहां प्रेतों ने और डाकिनियों ने किलक करी ५ चौसठ शरीरों से योगिनियों ने ४ नृत्य किया ॥ ३१ ॥ ६ तरंगों ने चल कर समुद्र के जल को मथा और सूर्य के सारथि अरुण ने सूर्य के ७ सात घोड़ों के समूह को ८ रोका ९ कवच कट कर वीरों के अंग ऐसे निकलते हैं जैसे १० सर्पों का समूह कांचली छोड़ कर निकलता है ॥ ३२ ॥ जैसे १२ गहरे जल में घड़ा (कलश) तिरै अथवा १४ बड़ी १३ नाव तिरै वैसे ११ हाथियों के कुंभस्थल लटक कर रुधिर में तिरते हैं उधर (म्लेच्छों की ओर) तो अली और इमाम आदि पैगंबरों के १५ शब्द करते (नाम लेते) हैं और इधर (राठोड़ों) में विष्णु विष्णु और १६ शिव शिव करते हैं ॥ ३३ ॥ कहीं पर भूत मिल कर १७ घोड़ों को चमकाते हैं सो मानों चोरों को देख कर १८ गउओं को ग्वाल भगाते हैं जैसे मूर्ख चित्तवाला दुर्मति मार्गों में पड़ा रहै वैसे १९ पागड़ों में चरण उलझ कर वीर लटकते हैं ॥ ३४ ॥ फटीहुई ध्वजा २० हाथियों पर उड़ती है सो मानों २२ पर्वतों के ऊपर २१ केले का वृक्ष झोंका खाता है और क्रोधित हुई २३ मधुमक्खियों के समान भिनभिनाती हुई गोलियां भ्रमती

निकसत*गोद कपाल हिंतु इम, मंजु†मदन‡मधुजाल हिंतु जिम
बहु आयुध आयुध पर बज्जत, लखि झल्लरि§देवालय लज्जत३६
इम रन करि रहोर बढे अति, मिच्छन हनत धन्वपति सम्मति ॥
सरबुलंद लखि प्रबल भज्यो सठ, हार्‍यो तजि गुजरात सहित
हठ ॥ ३७ ॥
बलि दिल्लीपति अमल बढायो, इम मरुभूप जित्ति रन आयो ॥
मुदित भयो सुनि साह मुहुम्मद, सरबुलंद दक्खिन गय दुम्मद ३८
हुम्मद १ दुम्मद २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
बुंदिय पति इत स्वसुर गेह रहि, दुलहनि तत्थहिं रक्खि गमन चहि
कत्तिय मास कुह्व अप्पुन किय, दायज वसु बहुबिधि राउलदिय३९
दंतिय गहैराव सु दत्तह, मास रहत बारह १२ मयमत्तह ॥
नृपके इभपालन वह नायो, अंपत निगड जोर उफनायो ॥ ४० ॥
यह सुनि रान लयो वह हत्थी, सहँस१००० भेजि रुप्पय चर सत्थी॥
इत [illegible] कोटेस उदैपुर आयउ, अधिप रान सह मंत्र उपायउ॥ ४१ ॥
मयार[illegible]म बिप्राधमैं तत्थहि, बुल्ल्यो कुँबच कुँनय अघ सत्थहि ॥
कहा रान[illegible] पुच्छत कोटेसहिं, दब्ब्यो इन पहिलैं नृप देसहिं॥४२॥
इनकी लखि[illegible] अवरन मन चल्ल्यो, तबहू इत न मुच्छ कर घल्ल्यो
कग्गर लिखि जयसिंह कथितं किय, इनहिं पुच्छि लहिहो किम
बुंदिय ॥ ४३ ॥

छ ॥ ३५ ॥ ‡ मधु मक्खियों के छातों (मुहाल के छातों) से सुंदर † मैंख निकलने के समान मस्तकों से * भेजे (मस्तिष्क) निकलते हैं कितने ही श-स्त्र शस्त्रों पर बजते हैं जिनको देख कर § मंदिरों मे बजती हुई झालरें लज्जित होती हैं ॥ ३६ ॥ १ मारवाड़ के राजा की सलाह से ॥ ३७ ॥ २ पुनि ३ मारवाड़ का राजा ४ दुर्मद (मान हीन होकर) ॥३८ ॥ ५ धन ॥ ९ ॥ ६ गाडेराव नामक हाथी ७ दिया ८ मदमस्त ९ बुधसिंह के महावतों से १० न-हीं आया ११ सांकलों को खैंचती हुआ ॥ ४० ॥ १२ हलकारे के साथ ॥४१॥ १३ नीच ब्राह्मण१५अनीति और पाप के साथ१४खोटे बचन बोला १६ बुधसिं-ह के देश का ॥ ४२ ॥ १७ पत्र १८ कहना

यह सुनि महाराव धंकि उट्ठ्यो, रानहु विप्र अधमपर रुट्ठ्यो ॥
इम नृपकाज बिगार विप्र पँहँ, पहुँच्यो मगहि मद्ध्य सँभग पँहँ४४
इम पुनि बुद्ध उदेपुर आया, बिपति जोर सब गुंमर बिहायो ॥
सम्मुह आय रान हित सज्जिय, लै प्रविस्यो पत्तन चहि लज्जिय४५

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे बुंदीहरणामन्त्रहेतुमहाराणासंग्रामसिंहस्य कोटामहारावदुर्जनशल्योदयपुराकारणं १ पाणिग्रहणहेतुबुधसिंहबांसवहालागमनबुधसिंहपुरोहितकटुवचनश्रवणाद्दुर्जनशल्यक्रोधकरणं २ योधपुराधीशाभयसिंहाहमदाबादविजयनं ३ बुधसिंहोदयपुरप्रत्यागमनवर्णनं षट्त्रिंशो मयूखः ॥ ३६ ॥

आदितश्चतुःसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७४ ॥

(षट्पात्)

रान नगर बिच रहिय इहु भूपति इक १ दंपन ॥
सर सत५००रुप्पय नित्य रान पहुँचात मान मन ॥
सभा समय सभरहु जात पहँ रान निकट जब ॥
अदब रक्खि अति अग्ग तखत तजिदेत रान तब ॥
लैजात आय सम्मुह सरल इकासनं बैठत उभय२ ॥
सभरहिं मन्नि पाहुन सँमुद बिनु बुदिय धारत बिनय ॥१॥

---

१ क्रोध करके (भीतर से जल कर) २ बुधसिंह के पास ॥४४॥ ३ घमंड छोड़ा ॥४५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सातवें राशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में बुंदी लेने की सलाह करने के अर्थ महाराणा संग्रामसिंह को कोटा के महाराव दुर्जनशाल का उदयपुर बुलाना १ बुधसिंह का विवाह करने के अर्थ बांसवाला जाना और बुधसिंह के पुरोहित के कडुवे वचनों से दुर्जनशाल का क्रोधित होना २ जोधपुर के राजा अभयसिंह का अहमदाबाद को विजय करना ३ बुधसिंह के पीछा उदयपुर आने के वर्णन का छत्तीसवां ३६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चोहत्तर२७४मयूख हुए ॥

४ एक वर्ष ५ प्रभु ६ एक गद्दी पर ७ दर्प सहित ॥ १ ॥

पादाकुलकम् ॥

बुद्ध पुरोहित मंत्र बिगारयो, नृपति रान हित तदपि न टारयो ॥
अक्खिय पुनि बुंदिय जब ऐहैं, तमहिं भूप जीवन तव दैहैं ॥ २ ॥
अवनि[2] दैन कूरम प्रति अक्खहिं, रानापनको गब्ब[3] न रक्खहिं ॥
जब स्वाधीन राज निज जोवहिं, सुख सह निंद हमहु तब सोवहिं ।३।
तोलौं खरच स्वकीय मानें तत, दिन प्रति [illegible] पसात ५०० प-
हुँचत ॥
[illegible] कहौ, लगि हमरे हित बुंदिय लैहो ॥४॥
कहि न्यवरत कूरम पति, मम भुव जो दैहैन टक मति ॥
तो रन करि लैहौं कि तंतविखन, प्रीति तथा करिहौं परपक्खिन ।५।
सुनियह रान सुजान नीति सम, कहिय आज दिल्ली कर कूरंम ॥
अकबरपुर[11] अजमेर अवंतिय[12], सूबा तीन३ अधीन साह किय ॥६॥
मित्र खानदोरां जिहिं मन्नत, सेनानी[13] जु जवन पति सम्मत ॥
साहहु जास कथित[14] सिर धारत, बलि अवरन जिहिं सम[15] न बि-
चारत ॥ ७ ॥
पुनि निज बनिबनि स्वसुर मालप्रिय, अकबरतैं अबलौं धन संचिय ॥
अरु बहु मुलक अप्पन न ऐसो, जास सचिव राजामल जैसो ॥८॥
राय कृपारामहु वकील रत[16], जास कथित[17] जवनेस न लुप्पत ॥
गृह जाके दिल्लिय उमीर गन, पहुँचत कर जोरत किंकरपन ॥९॥
जिनकी अरज साहप्रति जंपत, बसु[18] अधिकार मिलत तिनकौं बत ॥

१तो भी॥२॥२भूमि पीछी देने का३गर्व॥३॥४आप के खरच के प्रमाण माफिक) बुधसिंह ने कहा कि ५ जयसिंह की ॥ ४ ॥ ६ नम्रता ७ उसी समय ८ जयसिंह के शत्रुओं से प्रीति करूंगा ॥ ५ ॥ ९ मे १० जयसिंह पर दिल्ली के हाथ हैं (यहां लक्षणा से दिल्ली के पति का ग्रहण है)११आगरा १२ उज्जैन ॥६ ॥ १३ सेनापति १४जिस जयसिंह का कहना १५जिसके बराबर ॥ ७ ॥ ८ ॥ १६ अनुकूल१७जिसका कहना ॥९ ॥ १८ धन और अधिकार सन्तोष दायक मिलते हैं

है२ द्वे २ मत १००* मिविका† जिहिं द्वारह, बढि पतिन ढकिजात वजारह ॥ १० ॥
बैठक जाहि खास खिलवत्तिय, रमत साह सतरज हुलसि हिय ॥
जिनके घर अै सेवकील जन, थिरन उथप्पि स्वामि जय थप्पन॥११॥
जंग बिरचि तिनतैं को जित्तहिं, विनुहित काहि बिगारहि ‡वित्तहिं
इहिं कारन तिनतैं रन उचित न, अवर उपाय रचहिं बहु अप्पन १२
§भेद उपाय कोहु नहिं सभव, लग्गें नहिं बिनु समय जास लवं ॥
यातैं साम दान अनुसारहैं, कूरमसौं तुमसौं हित करिहैं ॥ १३ ॥
बिनु नैय समय होत नहि चाही, समर टेक नाहक तुम साही ॥
निज हठ तो मम राज्य नसैहो, प्रज्ञ तुमहु को फल तव पैहो॥१४॥
सच्च कहत नृप मुद्द रिसायो, चलन हुकम सत्थहि पहुँचायो ॥
हे सब अनुग मूढ हथजोरे, न चलहु इम काहू न निहोरे ॥१५॥
सक बिक्रम अष्ठ रु बसु सत्रह १७८८, बाहुल मास वृथा करि बिग्रह ॥
अनखि चल्यो सभर अज्ञानी, बरजत रह्यो रान हित बानी॥१६॥
जदपि मुरयो न रान तउ सज्जन, गज भूखन सिरुपाव बाजिगन॥
पठये मित दसतूर बुद्ध प्रति, इनअक्खिय हम करजदार अति१७
इनक दम्म पठावहु यातैं, बनिकन दै हम करज बिघातैं ॥
तिनकी तीस सहँस ३०००० मुंद्रा तव, जानि बिपत्ति रान पठई जव ॥ १८ ॥
करज झारि तिनकरि कउजेमैंह, बुद्ध चलिय पैसुमति नरबसह॥

* पालकियें † जिसके द्वार पर ॥ १० ॥ ११ ॥ ‡ धन ॥ १२ ॥ § परस्पर भेद कराना (फोड तोड़) १ लेशमात्र ॥ १३ ॥ २ बिना नीति ३ युद्ध की ४ तुम बुद्धिमान हो ॥ १४ ॥ ५ मूढ ६ सेवक ७ हाथ जोडनेवाले ॥ १५ ॥ ८ कार्तिक मास में ९ क्रोध करके १० बुधसिंह ॥ १६ ॥ ११ तो भी १२ दस्तूर के माफिक ॥ १७ ॥ १३ बनियों को देकर १४ रुपये ॥ १८ ॥ १५ वाममार्गियों का पति, १६ पशु की बुद्धि और मनुष्य के वेष से

हुत*साहुल मेचक चउत्थि४दिन, आयउ चलि ।नाथद्वार +हड्डइन१९
इकसत१००दम्म भेट हरि[1] अप्पिय, थाँवल[2] गाम मुकाम सु थप्पिय
बसि तत्थ रु दुव२मास बिताये, लंघन पुनि चालीस लगाये ॥२०॥
अधिक अफीम बढ्यो नृप अग्गैं, पैसे त्रि३मितै[3] नित्य हित पग्गैं॥
पुनि तिम मद्य अवद्यँहु[4] पीवहिं, जड़ बिनु भूख आयुबल जीवहिं२१
अमन लेत सत्तम७अट्ठम८दिन, तुच्छ बहुत सोपै न पचैं तिन ॥
इहिं बिधि अन्न अरुचि पर आये, लंघन तब चालीस४०लगाये२२
तबहि अफीम मद्य दुव त्यागे, लै पुनि पथ्य लोभ भुव लागे ॥
बिरचि कुच वह ग्राम बिहायो, लुट्टन रानाँ मुलक लगायो ॥२३॥
सठ नृप नहि परकर[5] समुझायो, बहु बहु लूट प्रपंच बनायो ॥
रानहु सुनि गिनि मुद्ध[6] रिसानौं, बुद्ध सु कँउलन[7] हत्थ बिकानौं २४
दुव२मिलानँ[8] कुंपासाणि किन्नैं, दुव२त्रय३पुर गंधेरहु दिन्नैं ॥
पथ इहिं रुक्कत चलन प्रमत्तो, पुर बेघम स्वसुरालय[9] पत्तो ॥ २५ ॥
बसु बसु सत्त इक्क १७८८ मित संबत, गंउर[10] चउत्थि ४ सहरप[11]
मास गत ॥
मंजु[12] गिन्यौं न जुद्ध करि मरनौं, स्वसुर अन्नजीवन लिय सरनौं२६
परदुख सदय[13] हृदय देवहु पुनि, सालक निज बुद्धहिं आवत सुनि
अभिमुख[14] जाय निजालय[15] आनैं, बिनय प्रीति कर जोरि बखानैं २७
बुद्ध मुख्य महलन बसवायो, अप्प लालबारिय कढि आयो ॥
रखतँ[16] सुराजबाग खिल[17] रक्खिय, अब कैसैं निभिहोहु न अक्खिय २८

*कार्ति बदि चौथ के दिन ।नाथद्वारे में +हाडों का राजा आया ॥१९॥ १ विष्णुस्वरूप बालक के भेट किये २ थाँवला नामक ग्राम में ॥२०॥ ३ तीन पैसा भर ४ वह अधम बुधसिंह मद्य भी पीता था ॥२१॥२२॥२३॥ ५ परगह ने उस मूर्ख राजा को नहीं समझाया; अथवा उस मूर्ख ने परगह को नहीं समझाई ६ मूर्ख जानकर ७ वासियों के हाथ बिकगया ॥ २४ ॥ ८ मुकाम ९ ससुरे के घर में गया ॥ २५ ॥ १० शुक्ला ११ पौष मास १२ सुन्दर ॥ २६ ॥ १३ दयावाला हृदयवाले देवसिंह ने १४ सामने १५ अपने घर ॥ २७ ॥ १६ सामग्री (सामान) १७ बाकी का ॥ २८ ॥

दिय लोक बिचार बिहीनों, क्रम लुट्टन तत्पहि अति कीनों ॥
राउत देव तिनहि बरजाये, पै न रहे तव ग्रहन पठाये ॥२९॥
सठ बुद्धहु सुनि रोकि न रक्खिय, उपालंभ देवहिं मति अक्खिय॥
धरनि विपत्ति लोक मम धारत,वलि अत्थहि आधार विचारत३०
लुट्टन खान देहु तुम सालकं, क्यों मोरन पकरात कृपालक ॥
जो सुनि देव तबहु कर जोरे, माफकरहु ओगन कहि मोरे॥३१॥
अति सहनत्व देव अव लीनों, बुद्ध हितु बनि अधिक अधीनों ॥
पचहजारि ५००० ग्राम दिय पंचक ५, रुप्पय अट्ठ ८ नित्य सु न रंचक ॥ ३२ ॥
निवहनकों यह देव निवेदिय, जह सभंर तोउ न धप्पत जिय ॥
करजहु करि रक्खैं नहिं कोऊ, समुझी तुच्छ मूढ नृप सोऊ।३३।
अग्ग त्रिलक्ख हजार अढारह ३१८०००, भुगते दम्म करज सह भारह ॥
वसु सत ८०० नित्य दये इक १ वेच्छर, तीस सहँस ३०००० हैंय हित उदारतर ॥ ३४ ॥
विभव देय जिहिं करज मिलायो, तोऊ अब गृह नजरि बतायो॥
हो सब हेयं अधम नृप इड्ढा, बिरचिय तदपि देव हित वेड्ढा॥३५॥

[मनोहरम्]

बुंदीके बिनामैंति बिडौरि देवेके जे,
तिन्हैं राखि बहु बेरन विपत्ति बिकलायो नौं ॥
याहीतैं रिसाय राँन छीनि लीनी वेघम,
कहायो नाँहि रक्खहु तथापि लास तायो नाँ ॥

१परतु॥२९॥२ (उरहना) ओलमा ३ फिर ॥ ३० ॥ ४ हे साले ५ मेरे लोकों को ॥ ३१ ॥ ६ सहनशीलता ७ बुधसिंह से ८ पाच ग्राम पांच हजार रुपये सालाना आमद के ९ यह कमती नहीं थे ॥ ३२ ॥ १० बुधसिंह का ॥ ३३ ॥ ११एक वर्ष पर्यन्त१२घोड़े मोल लिये जिनके ॥ ३४ ॥१३ सब प्रकार से त्याज्य था१४पहुत ॥ ३५ ॥१५निर्बुद्धि१६निकाल देने योग्य १७ महाराणा ने

पाघ पावलीनकी रु पैसेनकी पेनई,
मिली पै मजबूती मानि मन मुरझायो नाँ ॥
चौंडासौं[2] सपूत बप्प[3] राउलके वंस कोऊ,
धर्म धुर धोरी धीर देवासो दिखायो नाँ ॥३६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुंदीपतिबुधसिंहचरित्रेमहाराणासत्योपदेशक्रुद्धत्यक्तोदयपुरमार्गप्राप्तनाथद्वारथाँवलाग्रामगतबुधसिंहचत्वारिंशल्लङ्घनोपायमद्याहिफेनऱ्हसन १ मेदपाटग्रामलुराटाकबुधसिंहश्वसुरदेवसिंहगेहबेघमगमन २ सोढापरितऽयस्वगृहरक्षितबुधसिंहराउतदेवसिंहप्रशंसनं सप्तत्रिंशो मयूखः ॥ ३७ ॥

आदितः पञ्चसप्तत्युत्तरद्विशततमः ॥ २७५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

याहि बरस दुरभिच्छ[4] भयो अति, नहिँ तृन अन्न धनीहु धरैँ नँति[5]
इक १ रुप्पय उपधान्य[6] जतन इत, मूल्य बिक्यो द्वैसत२००टके[7] मितँ ॥ १ ॥

अब नृप[8] तजि जन जान लगे इम, तरु अपत्र अफलहिँ[9] पच्छिय तिम
मनहुँ ताल[10] सुकैँ जल मच्छे, इम नहिँ गये छुद्मातक[7]अच्छे॥२॥

१पगरखियां (जूतियां)२ चूँडा के विना ३ बापा रावल के वंश में ॥ ३६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुधसिंह के चरित्र में महाराणा के सत्य उपदेश करने पर क्रोधित होकर बुधसिंह का उदयपुर छोड़कर नाथद्वारे होकर थांवला नामक ग्राम में चालीस लंघन करके अमल और मद्य को कम करना १ मेवाड़ के ग्रामों को लूटते हुए बुधसिंह का अपने ससुर देवसिंह के घर बेघम में जाना २ असह खरच भुगत कर बुधसिंह को अपने घर में रखने की रावत देवसिंह की प्रशंसा का सैंतीसवां ३७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ पचहत्तर २७५ मयूख हुए ॥

४ दुर्भिक्ष (कहत) ५ धनवान भी नम्रता धारण करते थे ६ अड़क धान्य (सांवां, मळीचा आदि) ७ एक रुपये का दोसौ टकों भर ॥ १ ॥ ८ मनुष्य ९ विना पत्ते और विना फलों के वृक्ष को पक्षी छोडे जैसे१०सूखे तलाव में ॥ २ ॥

*यादि गजादि†रखत अव आयो, मगरोल रक्ख्यो सु मँगायो॥
नृप कोटेस सोहु पठयो नन, खान खरच दै जाहु कह्यो घन।३।
इम ‡ठौंठौं वहु बिभव रह्यो अव, सभरकों निंदत जिहान सव॥
पै अफीम आसव तजि पक्के, छुधा वढाय असन वहु छक्के॥ ४॥
अग्गहि तजि कोटापति आहुति, आई निज पीहर चुडाउति॥
हुति १ उति २ अन्त्यानुप्रास १॥
कोटापुरहि रही कछ्वाहिय, अवसु नृपहु वेघम अवगाहिय॥५॥
जैतसुवन उत देव जग जय, गिनि वुद्धहिं अधन रु कोटा गय॥
तत्थहि घाय अच्छ हुव तत्तो, पुनि कोटेस सभा वह पत्तो॥६॥
महाराव तब कहिय दर्प मत, सारधलक्ख १५०००० पटा तुमरो
गेत॥
हम दुवलक्ख२०००००पटा अवदैहैं, अरु अच्छनं तुमरे घर ऐहैं ७
अव बुंदीस नामहु न अक्खहु, रीति अदव दुगुनों यह रक्खहु॥
यहै सुनत देवा रिस आयो, दरवीकर जिम पुच्छ दवायो॥ ८॥
उठ्यो भट भुज ठोकि अचानक, इत उत परिग सभा बिच ओदक
नक १ दक २ अन्त्यानुप्रास १॥
अरु उत्तर बुल्ल्यो असक उर, पति कूरम अग्गों दिल्लिय पुर॥९॥
बुद्ध रु भीमे उभय करि इक्कत, त्रय ३ नृप इक्क१ थाल जिम्मिय
तेत॥
है मम जनक जैत तँह हाजरि, कह्यो तिनहिं कूरमपति हितकरि
सुभट जैत तुम मिलहु भीम सन, अव न विरोध सौंम हुव अप्पन

* स्मरण † हाथी आदि सामान॥ ३॥ ‡ ठाम ठाम (जगह जगह)॥ ४॥
१ बुधसिंह ने निर्धन बेघम का धारा लिया॥५॥२ ताता (चपल) ३ गया॥६॥
४ घमंड की युक्ति से ५ गया ६ निर्मलता से, अथवा घायल हुआ उसमें अच्छे होने के उत्सव में, अथवा तुमारे घर तक सम्मुख आयेंगे 'अच्छम् अभिमुखे' इति शब्दार्थचिंतामणिः॥७॥ ७ सर्प॥८॥ ८ भय॥९॥ ९ बुधसिंह और भीमसिंह को १० तहां ११ जयसिंह ने॥१०॥ १२ मिलाप

सु सुनि भीम*अग्घो कर किन्नौं, द्रुतहि जैत उत्तर तब दिन्नौं११
हड्डनकी जननी रे अघहिय, भामिनि गिनि बुंदिय तैं सुग्गिय ॥
यातैं स्वामिहराम अधम अति, मिलहिं तोहि किम धरम स्वच्छ
मति ॥ १२ ॥
कहि इम दिय उठेलि ताको कर, वाके सुतहिं कहत इमअक्खर
अप्पन स्वामि तोहिनसुहावहिं, तोनहमहिंतवआश्रयभावहिं ॥१३॥
देव न इम परिखद बिच दृट्यो, फिरि धकि उठत घाप इकफट्यो
महाराव कर जोरि मनायो, यह मन्न्यौं न मुररि तउ आयो।१४।
फटत घाय अंतक गद फैलिय, कातिक मास विच त्रिदिवबासकिय
इम भट देव धरम अवधार्‌यो,बिपति सहि रु धन अनप बिडार्‌यो १५
कलिजुगँ काल भयो यह भीखम, है इक जीह कहैं कोलौं हम
होवत कुल सुहुकम्म हरामी, निकस्यो वैरिसल्ल कुल नामी १६
बुध इत गरभ जानि नव वाला, व्याहि जु रक्खिय बंसबहाला ॥
ताके उदर कुमर उंद्गम हुव, धरिय नाम जिहिं चंद्रसिंह ध्रुव ॥१७॥
मधुगत अमा सत्त बसु ८७ संबत, मातुल घरहि बाल यह भो बत
इहिं असु धारिय मास अढारहि१८, बेघम नायसक्यो इक१बारहि
चुंडाउति रानिय इत बेघम, गर्भ धर्‌यो सु भयो पुनि उंद्गम ॥
संबत मान अंक बसु सत्तह १७८९, अरु सित बाहुल भालचंद्र
अह १४ ॥ १९ ॥

---

*हाथ आगे किया (हाथ आगे बढाया)।जैतसिंह ने शीघ्र ही॥११॥१स्त्री जान कर॥१२॥२उस जैत्रसिंह के पुत्र को इसप्रकार कहते हो ॥ १३ ॥ ३ इसप्रकार सभा में देवसिंह नहीं दबा ॥ १४ ॥ ४ काल रोग ५ स्वर्ग में ६ धारण किया ॥ १५ ॥ ७ कलियुग के समय में यह देवसिंह भीष्म के समान हुआ ॥ १६ ॥ ८ बुधसिंह ने ९ नवीन स्त्री को १० जन्म ॥ १७ ॥ ११ चैत्र मास की अमावास्या को १२ मामा के घर में १३ संतोष दायक, अथवा बालक के होने की वार्ता हुई १४ प्राण १५ नहीं आ सका ॥ १८ ॥ १६जन्म [उत्पन्न] १७कार्तिक सुदि १८ शिव का दिन (ज्योतिष में चौदस तिथि के स्वामी शिव हैं) ॥ १९ ॥

भृगु वासर इम हुव कुमार भव, दीपसिंह नामक अरि बन दव ॥
इत जैपुर साहस अधिकाई, वलि जयसिंह जु सुता बुलाई ॥ २० ॥
कृष्णाकुमारि नाम अति अग्गई, अभयसिंह मरुपति साली यह॥
गह१ यह२ अन्त्यानुप्रास १ ॥
माधव बहिनि वही लहि मेलहिं, दई सविधि परिनाय दलेलहिं२१
तब कूरम घर व्याह अनंतर, बसि जामातं सुता इक१ वर्च्छर ॥
अक अष्ठ सत्रह१७८९सक आगम, सिक्ख पाय जयसिंह जनक सम
आई अब बुंदिय कछवाही, बाहिर रहि यह टेक निबाही ॥
स्वसुर स्वकीय पापमति सालम, छत्रमहल रहत जु छत्राधम॥२३॥
लम१धम२अन्त्यानुप्रास १ ॥
जो यह राज्य हत्थ निज जानैं, काहूको न कथित उर आनैं ॥
सुत तिय जानि रु मानि स्वसुर मुंह, सो तिहिं बेर गोहु नहि सम्मुह२४
कछवाही इहिं अनख रिसाई, कूर स्वसुर प्रति यहै कहाई ॥
मैं बुधसिंह तनयकी नारी, किंकर तुम मम भाखितकारी ।२५।
स्वसुर मन्नि सम्मुह सठ नाँयउ, कर जोरि न पुनि बिनय कहायउ
नृप महलन रहिकैं अति उन्नति, भुग्गत राज्य अध बनि भूपति२६
बसहु छोरि महलन पुर बाहिर, जो सुख चहत होहु कढि जाहिर
चँवि इम ताहि निकारन चाही, बहु सिपाह पठये कछवाही ।२७।
पुनि सालम निकस्यो अति सोचत, निजेन सहित करजोरि अधिक नतँ ॥
चत १ नत २ अत्यानुप्रास ॥१॥
जान्यौं अबहि प्रतिष्टा जैहैं, कछवाही इच्छित अब कैहैं ॥२८॥

१शुक्रवार २ हठ की अधिकाई स ३ फिर॥ २० ॥ ४ आमह (आदर) से ५माधो-सिंह की ॥ २१ ॥ ६ व्याह क पीछे ७ जमाई और बेटी ८ वर्ष ९ पिता से ॥ २२ ॥ १० अपना ॥ २३ ॥ ११ कहना १२ मुख ॥ २४ ॥ १३ मेरा कथन (कहा) करनेवाला ॥२५॥१४नहीं आया ॥ २६ ॥१५इसप्रकार कह कर ॥ २७ ॥१६अपने लोगों सहित१७नम्र होकर १८ करि हैं (अपना चाहा हुआ करेगी) ॥ २८ ॥

इम बिचारि पुर बाहिर आयो, वल्लि तत्थहि निज निलय बनायो ॥
खवबसि राज्य इम करि हठ साहिय, अब महलन प्रविसी कछ-
वाहिय ॥ २९ ॥

प्रथमहि फल सालम यह पायो, अब नव नव पैहैं अकुलायो ॥
इत मरुपति गुजरात विजय करि, धर मारवं पुनि आय गरु
धरि ॥ ३० ॥

बुद्ध उदंत सुनि रु लिखि कग्गर, पुर बेघम पठये चर सत्वर ॥
बेघम रहे मरुप चर मासन, तउ न जवाब लिख्यो जड़तासन ३१
इम दस१०बेर मरुप दल आयउ, पै इक१दल न बुद्ध सन पायउ॥
यह सुनि भो मरुभूप उदासह, रहि इत बेघम नृपहु निरासह ३२
बुद्धि बिगरि उंदबेग बढ्यो अति, रहन लग्यो एकांत मंद मति ॥
खीयं जनहु नहिं निकट सुहावहिं, काम परहिं तब टेरि बुलावहिं ३३

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
पतिबुधसिंहचरित्रे कोटामहारावोपरिपरिषत्क्रुद्धविदीर्णान्तबुन्दी-
सुभटदेवसिंहमरण १ बुधसिंहपुत्रद्वयप्रसव २ परिणीतजयसिंह-
कन्यबुन्दीनवनृपदलेलसिंहबुन्द्यागमन ३ बुधसिंहोन्मादगदवर्णनं
मष्टत्रिंशो मयूखः ॥ ३८ ॥

आदितः षट्सप्तत्यधिकद्विशततमः ॥ २७६ ॥

१मकान२अपने आधीन ॥ २९ ॥ ३ मारवाड़ में ॥ ३० ॥ ४ बुधसिंह का वृत्तान्त सुन कर ५ पत्र ६ हलकारा ७ शीघ्र भेजा ८ मूर्खता से ॥ ३१ ॥ ९ मारवाड़ के राजा के पत्र ॥ ३२ ॥ १० चित्तभ्रम ११ अपने लोक भी ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुंदीके राजा के चरित्र में बुंदी के उमराव देवसिंह का सभा में कोटा के महाराव पर क्रोध करने के कारण घाव फटकर मरना१बुधसिंह के दो पुत्रोंका उत्पन्न होना२बुंदी के नवीन राजा दलेलसिंह का राजा जयसिंह की पुत्री से विवाह करके बुंदी आना ३ बुधसिंह को चित्तभ्रम होने की बीमारी के वर्णन का अड़तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से दो सौ छहत्तर २७६ मयूख हुए ॥

प्रकार किया १२ ... बुधसिंह ... बुंदी ... २३८

पादाकुलकम् ॥

इत जयसिंह प्रताप बढ्यो अति, *प्रथित करैं सु करैं दिल्लिय पति॥
अदबहु लिखैं बिसेस साह अब, कग्गरमाँहिं लिख्योहु जो न कब१
जँहँ राजाधिराज उपपदं जुत, लिखत राजराजेंद्र लग्यो हुत ॥
तिम तिम बढयो सबन सिर कूरम, तहाँ अवर कोउन हुव तासम२
किय रुप्पय कोसन कोटिन धन, सहँसन गज हय चतुर मंदुरन।
घन१ रन२अन्त्यानुप्रास' ॥ १ ॥

जो नहि साह वजीर सके करि, सो जयसिंह करैं बल सभरि३
स्मृतिनैं सुधाय न्याय विसतारै, विप्रन अग्घ विसेस बढारैं॥
बाहिर इम धरमानुग दीसैं, पै सु रच्यो न पिष्टे कँहँ पीसैं ॥ ४ ॥
जो निज धरम रच्यो कूरम हिय, क्यों तब कर्म अधर्म इते किय॥
हन्यो प्रथम सिवसिंह स्वीयसुत, जोहु तास जननी निज तिय जुत५
पुनि जननी निज स्वर्ग पठाई, भट घेरैं विजयसिंह बंलि भाई ॥
पुनि भानेजं सत्य जो होतो, अरु असत्य सिसुं हो तउ सोतो॥६॥
पुनि सग्रांम रामपुर स्वामी, हन्यों दग्ग रचि होय हरामी ॥

---

*प्रसिद्ध (एकान्त में कहना करना स्नेह का, और प्रसिद्ध में कहना करना दयाव का सूचक है)॥१॥१पदवी (खिताब) की २शोभा॥२॥३गजशाला और हयशालाओं में हजारों हाथी घोड़े करदिये४पल से भरपूर, अथवा अपने पक्ष को समाप्त कर ॥ ३ ॥ ५ धर्मशास्त्रों को दिखा कर ६ आघ (आदर) ७ ऊपर से इस प्रकार धर्म के साथ चलने वाला दीखता था, परन्तु ८ उस धर्म में रचा (रगा) नहीं था ९ पिसे हुए को पीसता रहा ॥ ४ ॥ यदि १० जयसिंह का हृदय धर्म में रचा हुआ था तो इतने अधर्म के काम क्यों किये ११ अपने पुत्र शिवसिंह को मारा १२ उस शिवसिंह की माता और जयसिंह की स्त्री सहित ॥ ५ ॥ १३ जयसिंह की माता को मारी १४ श्रेष्ठ वीर १५ फिर अपने भाई विजयसिंह को मारा १६ अपने भानजे और पुरी के कुमर भवानीसिंह को मारा १७ यदि वह कृत्रिम था तो भी बालक था ॥ ६ ॥१८संग्रामसिंह नराधम को१९ अधर्मी होकर दगा से मारा

सत्त अष्ठ सत्रह १७८८ * मित संवत, तेरह लक्ख १३००००० साह रूप्पय † तत ॥ ७ ॥
लै अरु ‡ कितव मिल्यो मरहट्ठन, सो मुरयो न अवलग अधर्म § सन ठन १ रन २ अंत्यानुप्रासः ॥१॥
साह तास बिस्वासहि रक्खैं, यह तउ मंत्र दक्खिनिन अक्खैं॥८॥
ऐसी लखि अक्खिय निंदा हम, अरु अच्छीहु करी वहु कूरम ॥
अब नव बसु सत्रह १७८९ मित संवत, आयो पुनि मालवधर उद्धत ॥ ९ ॥

पद्धात् ॥

अब हायन[3] नव अष्ठ ८९ विसद वाहुल[4] दर्प्पक[5] १३ दिन ॥
आयउ पुर उज्जैन अवनि[6] दव्वत कूरम इन[7] ॥
सत्तलक्ख ७००००० साह सन व्याज[8] रुप्पय मँगाय बलि[9]॥
मरहट्ठन किय मेल किय न हित साह मंडि कलि ॥
दल[10] लिखिय रान संग्राम प्रति तुमहु सेन भजहु अतुल्ल[11] ॥
यह आय भुम्मि दव्वन समय मिलि मरहट्ठन बल विपुल[12] १०

दोहा ॥

सुनत रान संग्राम यह, दल[13] पठयो सु दराज[14] ॥
सबन सिरोमनि निज सचिव, धाइभ्रात[15] नगराज ॥ ११ ॥
दराज १ गराज २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
बिनु सादड़ि[16] अरु बेदला, सर्व सुभट दिय संग ॥
ते दसउर आये त्वरित[17], अवनी लोभ उमंग ॥ १२ ॥

---

* प्रमाणवाले † तहां ॥ ७ ॥ ‡ छली § मे १ उस जयसिंह का २ सलाह ॥ ८ ॥ ९ ॥ ३ संवत् ४ कार्तिक सुदि ५ कामदेव की तिथि (ज्योतिष में तेरस तिथि का स्वामी कामदेव है) ६ भूमि को ७ कछवाहों का पति ८ छल से ९ बादशाह का हित रच कर युद्ध नहीं किया १० पत्र ११ तुलना रहित १२ बहुत ॥ १० ॥ १३ सेना १४ बडी १५ धाय भाई ॥ ११ ॥ १६ सादड़ी के राजराणा और बेदला के राव बिना १७ शीघ्र ॥ १२ ॥

दसउरतैं पुनि कुंच करि, आपउ पुर उज्जैन ॥
कूरमसों हित मिलन करि, सग रहिय बस सैन ॥ १३ ॥

षट्पात् ॥

*बुल्ल्यो तब नगराज देवसिंहहु बेघम पति ॥
तबहि देव करि कुच चल्यो सहसत्थ वेग गति ॥
तबहु मर्द बुदीस चल्यो निज सालक संगहि ॥
सोधी यह कुम्भ सन मिलि रु लैहैं स्वकीय महि ॥
जयसिंह व्याहि तनया जु पै पट्ट दलेलहिं थप्पिदिय ॥
पिक्खहु तथापि जड बुद्ध मति लैन जात निज बसुमतिय ।१४ ।

दोहा ॥

देवसिंह निज जामिंपहिं, आत देखि अकुलाय ॥
नगर सलूमरि नाह प्रति, लिखि दल अग्ग पठाय ॥ १५ ॥
जामिप आवत सग मम, निज हठ मन्नैं नाँहिं ॥
कूरमको आसय लिखहु, यातैं हम थित आँहिं ॥ १६ ॥
जु सुनि केसरीसिंह जब, नगर सलूमरि नाह ॥
पुच्छिय यह जयसिंह प्रति, कहिय कुप्पि कछवाह ॥ १७ ॥
तुम सु रान घर मुख्य भट, अरु छन्नै नहि येहु ॥
चिंति सु बत्त रु रहहु चुप, अँवनन मुदन देहु ॥ १८ ॥
सुँ सुनि सलूमरि पति लिखिय, देवसिंह प्रति पत्त ॥
आवन देहु न बुद्ध यँहँ, रस नहिं कुम्भ बिरत्त ॥ १९ ॥

षट्पात् ॥

[illegible] ॥ १३ ॥ नगराज में बेघम के पति देवसिंह को * बुलाया [illegible]में १ मूर्ख २ सोची (विचारी) ३ जयसिंह से ४ मेरी भूमि लेवेगा ५ पुत्री व्याह [illegible]कर ६ अपनी भूमि लेने को जाता है (यह कवि का वक्रोक्ति का वचन है) [illegible] ॥ १४ ॥ ७ बहिनोई को ८ पत्र लिखकर ॥ १५ ॥ ९ यहां ठहरे हुए हैं ॥ १६ ॥ [illegible] ॥ १७ ॥ १० उमराव ११ कानों को बंद करलो ॥ १८ ॥ १२ सो १३ जयसिंह प्रतिकूल है ॥ १९ ॥

देवसिंह तब यह*उदंत बुधहिंतु निवेदिय ॥
तबहु अंध बुन्दीस नाँहिं पच्छो प्रयान किय ॥
यह लिखि देव उदार कुंच विरच्चिय वेघम प्रति ॥
ताहि बिगारन तबहि मुरयो बुधसिंह हीन मति ॥
यह सुनत राम संग्राम धकि देवहिंतु वेघम लई ॥
सह्नत बिमूढ जामीसं सुख सालक विच यह गति भई ।२०।

दोहा ॥

नगर फुरक्काबाद पति, नाम मुहुम्मद मिच्छ ॥
कूरमपति वासौं कियउ, अग्ग बइर रन इच्छ ॥ २१ ॥
अब बुंदिय आमेरकैं, जवन वहै लखि जुद्ध ॥
भल कग्गरं भेजत भयो, वेघम पुर प्रति वुद्ध ॥ २२ ॥
सहजराम खत्रिय सचिव, ताको लै दल तत्त ॥
वेघम आय रु वुद्धसौं, मिल्यो लख्यो सु प्रमत्त ॥ २३ ॥
वह तँथापि बहुदिन रह्यो, मंग्यो दल सु मिल्यो न ॥
ठहै उदास निज गेह तव, गो खत्रिय करिं गोन ॥ २४ ॥
सक नभ नव सतह १७९० समय, द्वादसि१२माघ वॅलच्छ ॥
तजिय रान संग्राम तँनु, दान समय नय दॅच्छ ॥ २५ ॥
तबहि उदैपुर पट्ट लहि, हुव रानाँ जंगतेस ॥
बुद्ध सु इत देवहिं बिपति, अँदय दई जड़ एस ॥ २६ ॥
सक नभ नव सत्रह१७९०समय, अब फग्गुन अँवदात ॥
मंगलवार चउत्थि ४ मिलि, प्रकटत समय प्रभात ॥२७॥
चुंडाउति रानी जठॅर, रहि नव ९ मास प्रमान ॥

*वृत्तांत १ बहिन के पति का ॥ २० ॥ २ युद्ध चाह कर ॥ २१ ॥ ३ कागद (पत्र) ॥ २२ ॥ ४ तहां पत्र लेकर ॥ २३ ॥ ५ तोभी ॥ २४ ॥ ६ शुक्लपक्ष. दान में, समय में और नीति में ८ चतुर संग्रामसिंह ने ७ शरीर छोडा ॥ २५ ॥ ९ जगत्सिंह १० निर्दय ने ॥ २६ ॥ ११ शुक्लपक्ष ॥ २७ ॥ १२ उदर से

*दुहिता हुव वुंदीसकैं, दीपकुमरि अभिधान ॥ २८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ वुन्दी-पतिवुधसिंहचरित्रे जयपुरनृपजयसिंहस्तुतितदनुचितकर्मगणन १ सज्जसैन्यजयसिंहावन्तिगमनवुधसिंहप्रमदन २ उदयपुरमहाराणासंग्रामसिंहमरणानन्तरजगतसिंहतत्पट्टाधिवेशनवर्णनमेकोनचत्वारिंशो मयूख ॥ ३९ ॥

आदित सप्तसप्तत्यधिकद्विशततम ॥ २७७ ॥

षट्पात् ॥

इत यह ह्व प्रतापसिंह सालम जिंहों सुव ॥
अनुजहिं गिनि अवनीस भूप सम्मलि कुसथल भुव ॥
आयो तव नृप याहि नहिं अहरि मुह लायो ॥
अव तिहिं कोटा आय रानि प्रति मंत्र रचायो ॥
विसवासि ताहि तिय वुद्धकी कछवाही यह मंत्र किय ॥
हम देत खरच तुम जाय हठि वल दक्खिन आनहु वलिय ॥१॥
तव प्रताप हठ तिक्ख मिल्यो दक्खिन मरहट्ठन॥
लखि श्रीमन्तं अनीकं अतुल्ल आरभ मुदित मन ॥
वावा पंडित रामचंद्र १ संध्या राणाजिय१ ॥

---

*पुत्री १ नाम॥ २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राजा बुधसिंह के चरित्र में, जयपुर के राजा जयसिंह की स्तुति और उनके अनुचित कार्यों की गणना १ जयसिंह का सेना सज कर उज्जैन जाना और बुधसिंह का प्रमाद २ उदयपुर में महाराणा संग्रामसिंह का देहांत होकर महाराणा जगतसिंह के पाट बैठने के वर्णन का उनचालीसवां ३९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सितहत्तर २७७ मयूख हुए ॥

२ ज्येष्ठ (बड़ा) पुत्र १ छोटेभाई को बुन्दी का राजा जानकर कुशथल की युद्ध ४ भूमि में ५ बुधसिंह ने ६ बुधसिंह की स्त्री कछवाही ने ॥ १ ॥७ पूना के पति की ८तुलना रहित आरंभवाली सेना को देखकर मन प्रसन्न हुआ

पुणा[1]पतिके पासवान बलमैं[2] पति ए बिय२ ॥
इनतैंहु अधिक श्रीमंतके दल[3] मालिक उमराव दुव२ ॥
आनंदराव परमार१ अरु हुलकरराव मलार२ हुव ॥ २ ॥

दोहा ॥

इन चयारि४न दल मुख्य लिखि, मिलि प्रताप अति मोद॥
दम्म लक्ख खट६०००००दैन किय, बुंदियपर स बिनोद॥३॥
इत कूरम कछु कज्ज[4] बसि, मालव अवनि बिहाय[5] ॥
सालम सुवन[6] दलेल सह, जैपुर पत्तो जाय ॥ ४ ॥
मरहट्ठन परताप मिलि, दै खट लक्ख६०००००सु दम्म[7] ॥
दल दुस्सह लाग्रो लरन, कन्नल[8] बुंदिय कम्म[9] ॥ ५ ॥
सक इक नव सत्रह१७९१ समय, अमा[10] रु माधव[11] मास॥
बुंदी बिंटिय आनिकैं, गहत अरक[12] तम[13] ग्रास ॥ ६

भुजङ्गप्रयातम् ॥

बढे दक्खिनी त्यों लगे नैर बुंदी, खुरांपक्खरां घुम्मि है[14] भुम्मि खुंदी
झगी[15] ज्वालिकी[16] दीपकी मालिकासी, दगीं[17] नालिका कालिका बालिकासी ॥ ७ ॥
हट्यो पोन झडनमैं गोन हंक्यो, बढ्यो घोर अंधार संसार ढंक्यो ॥

---

१ पूना के पति के पास रहनेवाले २ सेना में ये दोनों पति थे ३ सेनापति ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ कछवाहा जयसिंह कुछ कार्य वश होकर ५ मालवे की भूमि को छोडकर ६ सालमसिंह के पुत्र दलेलसिंह सहित ॥ ४ ॥ ७ रुपये ८ बुन्दी के युद्ध के ९ कार्य पर अर्थात् बुंदी से युद्ध करने को लाया ॥ ५ ॥ ११ वैशाख मास की१०अमावास्या के दिन१२सूर्य को१३राहु ने ग्रसा (ग्रहण हुआ) उस समय बुंदी के घेरा लगाया ॥ ६ ॥ दक्षिणी बढकर बुंदी नगर के लगे सो १४ घोडे घूमकर खुरों से और पाखरों से भूमि को खूंदी (कुचली) और दीपमाला के समान १६ ज्वाला १५ प्रज्वलित हुई और कालिका की पुत्रियों के समान १७ तोपें दगीं ॥ ७ ॥ झडों में नहीं चल सकने के कारण पवन रुकगया और भयंकर अंधेरा बढकर संसार ढकगया.

चलै *लोल गोला झगैं अग्गि झारैं, दुवाजू छिकैं कोट देदे दरारैं
परैं गोख अट्टाल तुट्टैं पताका, उडैं छद्दके भद्दमैं ज्यौं बलाका ॥
छिकैं त्यों गिरैं थंभ प्रासाद छत्री, पताका उडैं अभ्भ ज्हैंज्हैं पतत्री९
उडैं गैन गिड्डी लगैं पच्छ अग्गी, लखैं चंगके पुच्छ ज्यौं राललग्गी
डिगैं कोल त्यौं व्याल पाताल डोलैं, अकूपारकी भारसौं पिट्ठि
बोलैं ॥ १० ॥

चलैं तोप प्राकारको लोप मंडैं, खिरैं खोमके तोमके खंड खंडैं ॥
जरैं हट्ट बाजार यौं हेति जग्गी, मनौं राल कौ तूलमैं अग्गि लग्गी११
कहौं दद्ध पाटीर कारी कँवारी, बुझावैं कहौं डारिकैं नीर नारी ॥
चिनंगी उडैं चित्रसारीन चढैं, मनौं बाग खद्योत प्रद्योत मंडैं ।१२।
वडे पट्ट अट्टालिका पात वज्जैं, घनी बालिका पालिका छोरि भज्जैं
कहौं झारसौं धेनु हंभारैं कड्डैं, बरैं द्वार आगारपैं छार बड्डैं ॥१३॥

*चपल गोले चलकर अग्नि की ज्वाला जगती है जिससे कोट दरारें देकर दोनों
ओर फूटता है॥८॥उन गोलों से १ झरोखे२छतें बुरजें गिरकर ध्वजायें गिरती
हैं और जैसे भाद्रपद मास में ३ बक (बगुले) उड़ते तैसे छादित होकर चलती
हैं, थंभे ४ महल और छतरियें छिपकर गिरती हैं और५आकाश में ६ध्वजा ६
पक्षी होकर चलती है ॥ ९ ॥ पाखों में ७ अग्नि लगकर प्रीघनियां आकाश
में उड़ती हैं सो मानों ८ पतंग (कनकवा) के पूंछ में राल लगी होवे
वैसे दीखती हैं ९ वराह डिगता है १० पाताल में शेषनाग हिलता है और
भार से ११कमठ की पीठ बोलती है "अकूपार कूर्मराज" इति शब्दार्थचि-
न्तामणौ ॥ १० ॥ तोपें चलकर १२ कोट का नाश करती हैं और कितनी ही
१३ बुरजों के १४ समूह के टुकड़े टुकड़े करती हैं, बाजार में दुकानें जलकर
ऐसी १५ ज्वाला (झाल) उठी कि मानों राल में १६ किना १७ रूई में अग्नि
लगी है ॥ ११ ॥ कहीं पर १९ चन्दन की की हुई कँवाड़ियें (कपाट विशेष) १८
जलती हैं, सो मानों बाग में २० जुगनू २१ प्रकाश करते हैं ॥१२॥छतों के पड़े
पाटों के २२ पड़ने का शब्द होता है जिससे बहुत स्त्रियें २३ पलंग छोड़ कर
भागती हैं, कहीं पर ज्वाला से गउयें २४ करुणामई शब्द करके निकलती हैं
२५ घरों के जलने से दरवाजों पर २६ भस्मि (राख) पड़ती है, अथवा जलने
से घरों के द्वार पर भस्मि पड़ती है ॥ १३ ॥

फरक्कैँ कहाँ गोख प्रासाद फुट्टैं, तरक्कैँ ध्वजादंडके खंड तुट्टैं ॥
गिरैं दोहरे तेहरे गेह गोलैं, घने*पीठ†पल्ल्यंक बीथीन डोलैं१४
धुनैं धप्पि‡गोपानसी§खप्पराली, उडैं मेदपैं ‖इद्ध ज्यौं गिद्ध आली
हुते ज्यौं रहे त्यौं सबै लोक हारे, भिली ओट बुंदी परे कोटवारे१५
इतैं **दुग्गपैं बीर दैदै निसैंनी, बढे [1]बंदरी सेन ज्यौं लंक लैनी ।
भज्यो [2]सालमाँ सो गह्यो खूब ठोक्यो, जनानाँ लुट्यो रारि थाने
न रोक्यो ॥ १६ ॥

किते बीर जैसिंह जे [3]अत्थ रक्खे, तके सम्मुहे रागपैं जानि [4]तक्खे।
हरामीनँ[5] हड्डनकी हारि होतैं, [6]जनी अप्पनी बि[7]प्फुरे जंग जोतैं।१७।
मची मार बाजारमैं बाढ बज्ज्यो, लग्यो कंप भीरूनकौं नीर लज्ज्यो
मिले दक्खिनी कूर[8]मी बीर मत्ते, करा[9]कैं बजे हाडकी आड केत्ते१८
बढ्यो [10]घंत्त [11]आरत्त बी[12]थी बजारैं, उडैं मुंड त्यौं रुंड नच्चैं अखारैं ॥
कढे नैन नच्चैं गिरैं भौंह काला, मनौं कं[13]जके झौंरके भौंर माला१९
बढैं हत्थ केते बनैं लुत्थि बत्थी, बनैं अच्छरातैं घनैं [14]लुत्थि बत्थी ॥
बजी चाप टंकार भंकार [15]भेरी, घने दक्खिनी कूरमी सेन घेरी २०

---

*बहुत चोकियें (बाजोट)†पर्यङ्क (पलंग) गलियों में डोलते हैं॥१४॥‡सियालें "गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि" इत्यमरः॥जलकर उनके ऊपर से §छप्परों की पंक्तियें उडती हैं सो मानों मांस के ऊपर गीधों की ‖बड़ी पंक्ति उडती है॥१५॥ **दुर्ग (गढ) पर लंका को लेने के लिये १ बंदरों की सेना चढी जैसे २ सालमसिंह भगा जिसको पकड़ कर खूब ठोका ॥ १६ ॥ ३ यहां रक्खे थे वे ४ राग के ऊपर तक्षक सर्प के समान सम्मुख हुए ५ अधर्मी हाडाओं की हार होते ही उस युद्ध को देखकर अपनी ६ उत्पत्ति को "जनिरुत्पत्तिरुद्भवः" इत्यमरः ॥ ७भूल गये अर्थात् हाडा क्षत्रियों में जन्म लेकर भागना नहीं चाहिये था सो भूलकर भाग गये॥१७॥८कछवाहे वीर मस्त होकर मिले, हड्डियों की आड पर ९ तलवारों के कड़ाके बजे ॥ १८ ॥ १२ गलियों और बाजारों में १० घावों से ११ रुधिर का समूह बढा (यहां आरत्त का आकार समुच्चय अर्थ में है) १३ मानों कमल के गुच्छे पर भ्रमरों की माला है ॥१९॥ १४ अप्सराओं से गाढ आलिंगन करके (अंग भिड़ाकर) मिलते हैं१५नोबत भयंकर शब्द से बजी ॥२०॥

झुकैं सत्थ द्वै२हत्थतैं मत्थ झारैं, कुलाली किधौं चक्क भड्डा उतारैं॥
कढैं पार लै जार अंतैं कटारी, मनों गारुड़ नागिनी हत्थ भारी२१
वहैं नारि अच्छी कि अच्छी वरच्छी, मिलैं कोचकों फारि ज्यों
वारि मच्छी ॥
वजी रीठ बुंदी सु वैसाख अद्दे, सजे दक्खिनी तांवके घाव सद्दे २२
घनों चक्ककों देखनों अंक चाह्यो, सुपैं पर्वमैं गाहकी राह साह्यो ॥
सक्यो देखि यों नांहि स्वर्भानु सारैं, नतो ता दिनौं जाम अट्ठो ८
निहारैं ॥ २३ ॥
कहौं मोहमैं आरोप कुक्कै कंथासी, वकैं वांरुनी मत्त ज्यों ग्राम वासी।
किते उल्लटैं फाटि छत्ता कँवारे, मनों द्वार भंडार हो के उघारे॥२४॥
भगैं कढैं खुप्पैरी फुट्टि भेजे, फरक्कैं कहौं फिप्फैरे के कलेजे ॥
भिरे दक्खिनी बुंदके काज भारी, मिली जित्ति ओकुरमी सेन मारी२५

पट्पदी ॥

मिलि प्रताप मरहट्ठ जित्ति बुंदिय जस लिन्नों ॥

१दोनों सेना झुककर दोनों हाथों से मस्तक उतारती हैं सो मानो २चाक के ऊपर १से कुम्हारी भाडा (कलश) उतारती है और ३आंतों को साथ लेकर कटारी पार निकलती है सो मानो ३गारुडू (कालबेलिये) के हाथ में बड़ी सर्पिणी है॥२१॥ ४नाडिय (नसें) बहती हैं और कवचों को फाड़कर बरछियें चलती हैं सो मानो पानी में मच्छियें बहती हैं (यहां बरछी के कवच को फोड़ने की उपमा के संबंध से मच्छी के जाल को तोड़कर निकलना समझना चाहिये, अथवा जैसे जल में मच्छी निकले तैसे कवचों को फोड़कर शरीर में बरछियें निकलती हैं)५ताप देनेवाले॥२२॥७सूर्यने इस६सेना को बहुत देखना चाहा परन्तु उपराग में उस (सूर्य) के ८ग्राहकी ९राहु ने पकड़ लिया, अथवा युद्ध के ग्राहकी सूर्य को ग्रहण में राहु ने पकड़ लिया इसकारण१०राहु के वश में होकर नहीं देखसका नहीं तो उस दिन११आठ पहर देखता ॥२३॥ कहीं पर १२मूर्छा में१३कथा करने के समान झुकता है जैसे१४मद्य में मत्त होकर गावों में रहनेवाला (ग्रामीण) झुकता है१५हृदय रूपी भंडार के कपाट खोले हैं॥२४॥१६खोपरी १७और कहीं कहीं कई फेफरे और कलेजे फफकते हैं, १८बुधसिंह के अर्थ १९कछवाहों की सेना को॥२५॥

गहि सालम्म निज *जनक बंदि हुलकर वसि किन्नौं ॥
सालमको सरबस्व सज्ज निज करन सुहाई ॥
नगर नैनवा जाय दई निज नाम दुहाई ॥
बुंदिय छुराय मरहट्ठ इत रस ६ मुकाम तत्थहि रहिय ॥
दिस दिसन बत्त फुट्टिय †द्रुतहि कविन वाद दक्खिन कहिय२६

॥ दोहा ॥

सहर लुटिय सालम गहिय, फिरिय बुद्ध नृप आन ॥
अरु चउसत ४०० दुहुँ ओरके, परे सुभट गत प्रान ॥ २७ ॥
कछवाही कोटा नगर, यह सुनि बुंदिय आय ॥
दिय महिमानी दक्खिनिन, दुव२दिन सेन रखाय ॥ २८ ॥
कछवाही मल्लार कर, ‡रक्खी बंधिय रानि ॥
अरु ताकी तियकी अँतुल, किय भावज सम२कानि ॥ २९ ॥
तँहँ हुलकर मल्लार तब, सँधा लिय हित पग्गि ॥
बुंदिय जो जैहैँ बहुरि, लैहैँ तो हठ लग्गि ॥ ३० ॥
अवरहु त्रय३ दलके अधिप, तिनहूकौं हित धारि ॥
दिन्ने हय सिरुपाव द्रुत, रानी सुनय बिचारि ॥ ३१ ॥
कछवाहीप्रति सिक्खकरि, तदनंतर जय तोर ॥
प्रबल बीर पच्छे पलटि, उमडिय दक्खिन ओर ॥ ३२ ॥
कटक सु डब्भिय ग्राम कढि, रहि विंझोलिय रैन ॥
बेघम कँग्गर बुद्ध प्रति, लिखे मिलन जस लैन ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

मिलन न आयउ तबहु बंचि कग्गर बुंदिय पति ॥
तब उप्परि मरहट्ठ गये दक्खिन सवेग गति ॥

*प्रतापसिंह के पिता सालमसिंह को †शीघ्र॥२६॥२७॥२८॥ ‡राखी (रक्षा) बांधी १बहुत २ भोजाई के समान ३ अदब ॥३१॥४प्रतिज्ञा ५ फिर जावेगी तो ॥३०॥ ६सेनापति ७ श्रेष्ठ नीति विचार कर॥३१॥८जिसपीछे ९ चढे॥३२॥१०पत्र॥३३॥

साहू सितारधीसपैं जु*अनीस †अब्दनतैं रहे ॥
तिहिं तत्थ ‡ साहुव छत्रपति आदाब अति करि अहैं ॥
वइठारि गद्दिय कोनपैं काका कहैं रु कही करैं ॥ ४६ ॥
सग्राम रान § निपात सुनि तिहि सिक्ख साहू सौं चही ॥
जयसिंहसौं यह जानि बाजेराय मत्रियहू कही ॥
मम मात पूरब जातं जात जु न्हान तित्थ विधान सौं ॥
तिहिं लौ उदैपुर जाहु एह उदंत अक्खहु रान सौं ॥ ४७ ॥
तुम रान कूरम सौं कहाय यहै कहावहु साहसौं ॥
मम मात कासिय जात जो देहैं न कर रहि राहसौं ॥
स्वच्छद मग्गहुमैं कहौं रुकिहै न दलजुत जायहै ॥
पुनि फल्गुगय सिर पारि पिंडन अध्व इच्छित आयहै ॥४८॥
जयसिंह वग्घहनद यौं सुनि तास मातहिं सगलै ॥
आयो उदैपुर औ मिल्यो वह रान हिंतु उमगलै ॥
करजोरि अक्खिय पेसवा नृप साहु मत्रिय आहि जो ॥
तसमात आवत रावरे घर पुंव्व तीरथ चाहि जो ॥ ४९ ॥
सुनि एह सम्मुह जाय रान अतीव अहैर अहरी ॥
महिमानि मडि दिवाय डेरन कानि मातहिलौं करी ॥
अंवरोधमाँहिं बुलाय प्रीति बढाय विन्नति अक्खई ॥
सुनि रान विन्नति बात मत्रिय मात मोदमई भई ॥ ५० ॥
गज वाजि वस्त्र विसेस रान निवेदि ताहि घनौं नयो ॥

---

* निरन्तर † वर्षों स ‡ छत्रपति पदवी वाला राजा साहू ॥ ४६॥ § पतन (देहान्त) १ पूर्व दिशा की जात्रा को जाती है २ विधि पूर्वक तीर्थ स्नान करने को ३ वृत्तान्त ॥४७॥ ४ मार्ग में स्वतन्त्र ५ सेना सहित फल्गु गया में पिंड करके चाहे हुए ६ मार्ग से आवेगी ॥४८॥ ७ से ८ है ९ इसकारण से अर्थात् साहू आप के वश में है और यह उसके मन्त्री की माता है इसकारण आपके (आती है १० पूर्व दिशा के तीर्थ ॥४९॥ ११ बहुत आदर से १२ माता समान १३ जनाने में ॥ ५० ॥ १४ भेट करके

पुनि जाय डेरन सिक्खदै सँग रवीय सेनहुकों दयो ॥
नगरी सलूमरि नाह केसरिसिंह मुख्य सु संगभो ॥
जयसिंह पुनि वह बग्घ नंदन संग उच्च उमंग भो ॥ ५१ ॥
खुरतार मारन भुम्मि देत दरार दारिम[1] पक्कज्यों ॥
नवलक्ख९०००००दलपति मंत्रि जननी चंड[2] संगहि चक्कज्यों॥
बैहरक[3] दंति बडेनपैं फहरक्कि फैलतसी फिरैं ॥
झिलि फेट झंड झपेटपैं पवमा[4]न चंचलहू चि[5]रैं॥ ५२ ॥
श्रियमंत मात सुखेन[6] यों सह सेन जैपुर संचरी[7] ॥
कछवाह रा[8]यहु आय सम्मुह कानि राँ[9]नहि लौं करी ॥
जयसिंह प्रीति बढाय तास दिवाय डेरन मोदसों ॥
बेतं[10]ड बाजि उदंड ढुवरक्किय भेट बं[11]दि विनोदसों ॥ ५३ ॥
महिमानि दै अति अग्घसों अवरोध[12] मध्य बुलायकैं ॥
सकुटुंब सम्मुह जाय मंदि[13]र लाय मत्थहिं[14] नायकैं ॥
बइठारि गद्दिय ताहि अप्पुन अ[15]ल्प आसनपैं रह्यो ॥
नग बस्त्र न[16]व्य निवेदिकैं हम दास कूरम यों कह्यो ॥५४॥
त[17]नया सु कृष्णाकुमारि अप्पन जो दलेलहिं[18] अप्पई ॥
गहि ताहि हत्थन कुम्भ यों थिर तास अं[19]कहि थप्पई ॥
कहि मोर पुत्रिय बुंदि भूप दलेल रानिय है यहै ॥
तस लज्ज भुम्मि सुहागकी तुमको सु अज्ज अभै यहै॥५५॥

हैयहै१ भैयहै२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

तिहि लाय हिय श्रियमंत मातहु अक्खि प्रीति पं[20]रा पगैं ॥

॥ ५१ ॥ १ पकी हुई दाड़िम के समान २ भयंकर सेना ३ झंडे बड़े हाथियों पर ४ पवन चंचल है तो भी ५ देरी करता है अर्थात् उन झंडों में हो कर शीघ्रता से निकल नहीं सक्ता ॥५२॥ ६ सुख से ७ गई ८ राजा ९ राना ने की जैसी १० हाथी ११ नमस्कार करके ॥५३॥ १२ जनाने में १३ घर (महल) में १४ मस्तक नमाकर १५ आप छोटे आसन पर बैठा १६ नवीन ॥५४॥ १७ पुत्री १८ दलेलसिंह को विवाही १९ उस की गोदी में बिठाई ॥ ५५ ॥ २० परम

रुपये पचीस हजार२५०००छोरिय जे न बुंदियकों लगैं ॥
जब कुम्म मालव पत्त तत्त सु साह छन्नहिं मेलकैं ॥
निंन्नेहजार९००००लिखायलिपठहराय दम्म दलेलकैं॥५६॥
तब दक्खिनिन नृप साहुसौं अरजी कराय निदेसले ॥
यह अंक थप्पिय बुंदियैं कहि कोउ नाँहिं बिसेस लै ॥
तिनमाँहिंसों श्रियमत मात थ छोरि दम्म इते दये ॥
पुनि अक्खि पुत्तिय लाय च्छत्तिय नेह बीज वये नये ॥५७॥
श्रियमत मातहि रक्खि यों जयसिंह जैपुर माससों ॥
पुनि साह हिंतु लिखाय मग कर माफ तास प्रवासलों ॥
चलि तास डेरन जाय कूरम राय वंदनकैं चली ॥
साजि स्वीय सेनहु संग दै वह पथ पूरब मुक्कली ॥ ५८ ॥
भट रान केसरिसिंह ग्रो जयसिंह तत्थहि ए रहे ॥
दस ओर संगहि तास दै पुनि मास जैपुर जे रहे ॥
एरहे१जेरहे२ अंत्यानुप्रास १ ॥
नगरी सलूमरि नाह केसरिसिंह धुंत्त अधीर ज्यों ॥
जयसिंह वग्घहनंद हो यह वेदपाठक बीर त्यों ॥ ५९ ॥
सनमान दोउनको कियो कछवाह डेरन जायकैं ॥
हय हत्थि कूरमसों ति लै पहुँचे उदैपुर आयकैं ॥
मल्लार अरु परमार ए करि कैद सालमकों इतैं ॥
तजि नैर बुंदिय कुच कैं पहुँचे ति मालवमैं तितैं ॥ ६० ॥
परमार दौलतसिंह इक्क१सु सेन दक्खिन संगही ॥

१जयसिंह मालवे में गया २ तहां बादशाह ने छाने १ दलेलसिंह से रुपये ठहरा लिये ॥ ५६ ॥ ४ आज्ञा लेकर ५ इसको बूंदी पर गोद रक्खा है; अथवा रुपयों का यह अंक बुंदी पर स्थापन किया ६ आंख ७ पुत्री कहकर ८ छाती से लगा कर ॥ ५७ ॥ ९ विदेश में रहने तक का १० नमस्कार करके ॥५८॥ ११ धूर्त १२ वेद का पाठ करने वाला अर्थात् वेद के मतानुसार चलनेवाला ॥ ५९ ॥१३ ते (वे) ॥ ६० ॥

यह रान को उमरावहो अरु नीति जंग अभंगहो ॥
तिहिँ अक्खि सालमसिंह सो कँहँ लेहु जामिन है अबैं॥
दुवलक्ख२०००००रुप्पय लेहु सो इन्ह देहु जावहुँ मैं तबैं६१
जितनैं उदैपुरमैं रहौं अरु रानको जस वित्थरें ॥
मम पत्र लेहु लिखाय औ लिखिदेहु तुम इनके करैं ॥
*इनको अमात्यहु इक्क१ रुप्पय लैन संगहि लीजिये॥
तिहिँ ग्राम पंचहजार ५०००को हम देहिँ सत्य पतीजिये ६२
तुमकौंहु बुंदियको पटा मिलिहै हजारपचीस२५०००को॥
सुनि एह दोलतसिंह पत्र लिखाय सालम हीसको ॥
अरु अप्प राव मलारसौं परमारसौं इम अक्खई ॥
दुवलक्ख२०००००रुप्पय देहिपै गृह लैहिँ तो लिखि सो दई।६३।
हम रान जामिन बीच जो नहिँ देहिँ तो हम देहिंगे ॥
बँलि रान भूप बलिष्ट जे इनतैं निवेरिहु लैहिंगे ॥
परमार यौं लिखि पत्र जो परमार हुलकरकौं दयौ ॥
निज संग हुलकर दास भट्ट महादिदेवं सु पै लयो ॥६४॥
पुनि जे उदैपुर आय दक्खिन सेन सौं इम सिक्खकैं ॥
सुनि रान चाहि सिराहि दोलतसिंहकौं तब तिक्खकैं ॥
लिखि पंत्त बुंदि दलेलकौं दंम दम्म सालम मंगये ॥
बदल्यो दलेलहु बप्प हिंतु कँपर्द दोयरहु नाँ दये ॥ ६५ ॥
तब सुभट दोलतसिंह जुत करि सिक्ख सालम रानसौं ॥

१ सालमसिंह ने दौलतसिंह से कहा २ मरहठों को ॥ ६१ ॥ ३ तुम तो मुझसे लिखवा लो और मरहठों को तुम लिखदो ४ कामदार ५ विश्वास करो ॥ ६२ ॥ ६ उस दुःख वाले सालमसिंह को "ही विषादे" इति शब्दार्थचिन्तामणौ ॥ और स सहित अर्थात् विषाद सहित जो सालमसिंह था उस का पत्र लिखा गया ॥ ६३ ॥ ७ फिर ८ बलवान् है सो ९ महादेव ॥ ६४ ॥ १० पत्र ११ दंड के रुपये १२ बाप से दो १३ कौड़ी भी नहीं ॥ ६५ ॥

चलि नैनवा निज नैर आयउ भीरु उव्वरि मानसों ॥
नेज कोसतें दुव लक्ख२०००००रुप्पय देस दक्खिन मुक्कले ॥
पुनि कुंम्म आयस पाय दोउनकोंहि दिन्न पटा भले ।६६।
ससि अक्क सत्त रु इक्क१७९१संवत मास कत्तिय गोरमें ॥
कछवाह किय सब भूप इक्कत जानि दक्खिन जोरमें ॥
मेवारमें आगोंच नामक ग्राम सर्व मिले तहां ॥
अरजी लिखाय पठाय दिल्लिय सेन भेजहुगे यहां ॥ ६७ ॥
सुनि साह सेन समस्त सजुत खानदोरह मुक्कल्यो ॥
यह मास अगहन कृष्ण पचमि५ च० चक्रहिं लै चल्यो ॥
इत आय मुल्कव देसमें बुलवाय कूरमहू लयो ॥
विनु-रान तब सब भूप सजुत सोहु मालवमें गयो ॥ ६८ ॥
तिहिं साल बिच इत नैर बेघम पोस मास अमा जहां ॥
कछवाह रानिय देह हानिय दान कैं रु करी तहां ॥
इत कों नवाब रु कुंम्म मालवमें मिले अति प्रीति सों ॥
सब हिंदु भूपन सत्थ लै रन मत्र मंडिय रीतिसों ॥ ६९ ॥
अभमल्ल नृप मरुईस बीकानेर भूपति सत्थही ॥
कोटेस दुरजनसल्ल सोपुर भूप गोर समत्थही ॥
रतलाम झब्बुवके रु ईडरके कबधहु सजुंरे ॥
बुंदेल नृप दतियादि भूप भदोर भड पैं बिप्फुरे ॥ ७० ॥
रचि मेल वीर बघेल बघुव भूप सम्मलि सज्जयो ॥
नगरी करोलिय भूप जद्दव सेन सजुत सो ठयो ॥
पुनि रूपनैर कबध भूप जु पाय लग्गिय आनिकैं ॥

---

१ जयसिंह की आज्ञा पाकर॥६५॥२शुक्ल पक्ष में३आगोंचा के पास ही हुरडा नामक पुर में इकट्ठे हुए थे॥६७॥४भयंकर ५ सेना ६ साथ ॥ ६८ ॥ ७ बेघमपुर ८ अमावास्या ९ जयसिंह मालवा देश मे मिले ॥ ६९ ॥ १० एकत्र हुए ११ भूपति ॥ ७० ॥ १२ खडा हुआ १३ रूपनगर का ॥ ७१ ॥

यह रान को उमरावहो अरु नीति जंग अभंगहो ॥
तिहिँ अक्खि सालमसिंह[1] मो कहँ लेहु जामिन उहँ अबैं॥
दुवलक्ख२०००००रूप्पय लेहु सो इन्ह[2] देहु जावहुँ मैं तबैं६१
जितनैं उदैपुरमैं रहौ अरु रानको जस वित्थरैं ॥
मम पत्र लेहु लिखाय औ लिखिदेहु तुम इनके[3] करैं ॥
*इनको अमात्यहु[4] इक१ रूप्पय लैन संगहि लीजिये ॥
तिहिँ ग्राम पंचहजार ५०००को हम देहिँ सत्य पतीजिये[5] ६२
तुमकौंहु बुंदियको पटा मिलिहै हजारपचीस२५०००को।
सुनि एह दोलतसिंह पत्र लिखाय सालम ह्रीसको[6] ॥
अरु अप्प राव मल्लारसौं परमारसौं इम अक्खई ॥
दुवलक्ख२०००००रूप्पय देहिंपै गृह लौहिँ तो लिखि सो दई।६३
हम रान जामिन बीच जो नहिँ देहिँ तो हम देहिंगे ॥
बँलि[7] रान भूप बलिष्ट[8] जे इनतैं निवेरिहु लेहिंगे ॥
परमार यौं लिखि पत्र जो परमार हुलकरकौं दयौ ॥
निज संग हुलकर दास भट्ट महादिदेवं[9] सु पै लयो ॥६४॥
पुनि जे उदैपुर आय दक्खिन सेन सौं इम सिक्खकैं ॥
सुनि रान चाहि सिराहि दोलतसिंहकौं तब तिक्खकैं ॥
लिखि पैंत[10] बुंदि दलेलकौं दंम[11] दम्म सालम मंगये ॥
बदल्यो दलेलहु बंप्प[12] हिंतु कपर्द[13] दोयरहु नाँ दये ॥ ६५ ॥
तब सुभट दोलतसिंह जुत करि सिक्ख सालम रानसौं ॥

---

१ सालमसिंह ने दौलतसिंह से कहा २ मरहठों को ॥ ६१ ॥ ३ तुम तो मुझसे लिखवा लो और मरहठों को तुम लिखदो ४ कामदार ५ विश्वास करो ॥ ६२ ॥ ६ उस दुःख वाले सालमसिंह को "ह्री विषादे" इति शब्दार्थचिन्तामणौ ॥ और स सहित अर्थात् विषाद सहित जो सालमसिंह था उस का पत्र लिखा गया ॥ ६३ ॥ ७ फिर ८ बलवान् है सो ९ महादेव ॥ ६४ ॥ १० पत्र ११ दंड के रुपये १२ बाप से दो १३ कोड़ी भी नहीं ॥ ६५ ॥

चलि नैनवा निज नैर आयउ भीरु उब्बरि प्रानसों ॥
निज कोसतैं दुव लक्ख२०००००रुप्पय देस दक्खिन मुक्कले ॥
पुनि कुंम्म आयस पाय दोउनकोंहि दिन्न पटा भले ।६६।
ससि अक सत्त रु इक्क१७९१संवत मास कत्तिय गोरमैं ॥
कछ्वाह किय सब भूप इक्कत जानि दक्खिन जोरमैं ॥
मेवारमैं आगोंच नामक ग्राम सर्ब मिले तहाँ ॥
अरजी लिखाय पठाय दिल्लिय सेन भेजहुगे यहाँ ॥ ६७ ॥
सुनि साह सेन समस्त सजुत खानदोरह मुक्कल्यो ॥
यह मास अगहन कृष्ण पंचमि५ चंड चैकहिं लै चल्यो ॥
इत आय मालव देसमें बुलवाय कूरमहू लयो ॥
बिनु-रान तब सब भूप सजुत सोहु मालवमैं गयो ॥ ६८ ॥
तिहिं साल बिच इत नैर बेघम पोस मास अमा जहाँ ॥
कछ्वाह रानिय देह हानिय दान कैं रु करी तहाँ ॥
इत कों नवाब रु कुंम्म मालवमैं मिले अति प्रीति सों ॥
सब हिंदु भूपन सत्थ लै रन मत्र मंडिय रीतिसों ॥ ६९ ॥
अभमल्ल नृप मरुईस बीकानेर भूपति सत्थही ॥
कोटेस दुरजनसल्ल सोपुर भूप गोर समत्थही ॥
रतलाम झब्बुवके रु ईडरके कबंधहु सज्जुरे ॥
बुंदेल नृप दतियादि भूप भदोर भट्ट पै बिप्फुरे ॥ ७० ॥
रचि मेल बीर बघेल बघुव भूप सम्मलि सज्जयो ॥
नगरी करोलिय भूप जद्दव सेन सजुत सो ठयो ॥
पुनि रूपनैर कबंध भूप जु पाय लग्गिय आनिकैं ॥

---

१ जयसिंह की आज्ञा पाकर॥६५॥२शुक्ल पक्ष में३आगोंचा के पास ही हुरडा नामक पुर में इकट्ठे हुए थे॥६७॥४भयंकर ५ सेना ६ साथ ॥ ६८ ॥ ७ बेघमपुर ८ अमावास्या ९ जयसिंह मालवा देश में मिले ॥ ६९ ॥ १०एकत्र हुए ११ पति ॥ ७० ॥ १२ सबा दूसरा १३ रूपनगर का ॥ ७१ ॥

पुनि आय नेर भनाय भूपति जोर मिच्छन जानिकैं ॥ ७१ ॥
बजरंग राघव दुग्गको[1] महिपाल खिचिपहू मिल्यो ॥
नगरी सिरोहिय देवरा नृप आनि आयसको[2] झिल्यो ॥
रचि चक्क टट्टिय[3] आय भट्टिय नेर जेसलमेरको ॥
बलि नैर पट्टिनि भूप उम्मट आय आतहि[4] वेरको ॥ ७२ ॥
कछवाह नग्गर नाह मिच्छ[5] नवाबहू कितने कहाँ ॥
मिलि खानदोरह सों सबै परि तत्थ रुंधि दिसा[6] चहाँ[7] ॥
सबकौं सिराहि रु खानदोरह सेन दक्खिनपैं सज्यो ॥
मरहट्ठ सेनहु पिक्खिकैं चहि रट्ठ सम्मुह ह्वै गज्यो ॥ ७३ ॥
रचि मंत्र मंडित रामचंद्र मलार ओ परमार त्यों ॥
राणांजि सम्मलि संधिया वढि जंग जीत विचार त्यों ॥
दलमाँहिंसों पक्खरैत[8] अट्ठ हजार८०००कह्रि रु यों क[9] ॥
तुम जाय जेपुर देस लुट्टहु त्यौंहि मिच्छनकी मही ॥ ७४ ॥
असवार अट्ठ हजार८०००वे तत्र सीम जेपुर जायकैं ॥
टोडा रु टौंक बिगारि लुट्टिय कुम्म आन उठाय कैं ॥
नगरी निवाइय लुट्टिकैं पुनि लुट्टि मालपुरा लयो ॥
लंबा रु डाग्गिय लुट्टि पङ्खलि दाव ढुंढ्ढवपैं दयो ॥ ७५ ॥
तिहिं माहि जारि नराननैर[10] रु जाय साँलिय[11] लुट्टई ॥
मोजाद पत्तन लुट्टिकैं हलसूरि घैत्तन[12] दै लई ॥
इम रारि खग्गन झारि मारि विगारि जैपुर देसमैं ॥
पुनि नैर संभर आदि लुट्टिय साहके अवसेसमैं[13] ॥ ७६ ॥

१बजरंगगढ और राघोगढका। २हुकम को झेला। ३सेना की टाटी(थोड़ीसीआड) रच कर। ४आते समय ॥७२॥ ५म्लेच्छ (यवन)। ६चारों दिशा रोक कर। ७राष्ट्र(राज्य) की चाहना करके ॥७३॥ ८ पाखरों वाले ९ म्लेच्छों की भूमि को ॥ ७४॥ ... पुरका नाम है॥ ७५ ॥ नराना नामक नगर को जलाकर ११ साली पुर लूटा १२ घातें १३ बाकी मे ॥ ७६ ॥

जिम कुम्म भो यँहँ साहको मरहट्ठ नाँहिं गिने मिले ॥
तिम तेहु दक्खिन बीर मिल्ल रु ग्राम जैपुरके गिले ॥
असवार मान हजार अट्ठन लूट पों इत मडई ॥
उत रामचद्द मलार ओ परमार बंग्गनकों लई ॥ ७७ ॥
निज सुत्त साह अनीकपैं पविपात पव्वय ज्यों परैं ॥
वजि वत्र आनक त्यों अचानक कूटि बिब्भक्त ए करैं ।
तब ज्यों हुते तिम साहके उमराव भीरुक भग्गये ॥
लचि कुम्मभोरह खानदोरह लज्जि मंग्गहि लग्गये ॥ ७८ ॥
तब सेन भज्जत साहको दखिनीन खग्गन खड्यो ॥
उढि खेह अबरैं यों छई जिम मेह सबर मड्यो ॥
अंचलाहु लक्खनैं फोजकी धमचक्क धक्कनतैं झुकी ॥
बढि व्पांधि दिग्गज दत तुट्टि समाधि सकरकी चुकी॥७९॥
फररक्कि फीलन केतु त्यों थररक्कि अवर अच्छरी ॥
बररक्कि दड्ढ बराह भूं दररक्कि कच्छप भो दरी ॥
तरवारि दक्खिन सेनकी दल मारि दिल्लियको दयो ॥
दृग मीचि भज्जत साहके दल राह बुदिपको लयो ॥ ८० ॥
लगि पिट्ठि दक्खिनके अनीकंन लाग चम्मलिलों करी ॥
इत अग्ग आय रु साहकी पृतना धुंनी वह उत्तरी ॥

---

[१] जिसप्रकार जयसिंहको बादशाह का ही हुआ समझें [२] मरहठों से मिलाहुआ नहीं समझें इसप्रकार दक्षिणियों ने जयपुर के देश को लूटा [३] प्रमाण [४] घोड़ों की भागें उठाईं ॥ ७७ ॥ [५] बादशाह की सोतीहुई सेना पर [६] पर्वत पर वज्र पड़े जैसे [७] नगारे और ढोल [८] ठोक कर [९] कायर [१०] कछवाहों का मुकुट जयसिंह (यहां स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है सो सब जगह ऐसा ही जानो) [११] लज्जित होकर मार्ग ही लगे ॥७८॥ [१२] मरहठों ने [१३] आकाश मार्ग [१४] जलधारा [१५] भूमि भी [१६] लाखों सेना की [१७] पीठ ॥ ७९ ॥ [१८] हस्तियों के [१९] अप्सरा [२०] भूमि [२१] भय युक्त हुआ; अथवा गुफा रूप होकर अपने अंगों भीतर समेट लिये [२२] नेत्र बन्द करके ॥ ८० ॥ [२३] सेना ने [२४] चामल नदी तक पीछा किया [२५] सेना [२६] वह नदी (चामल)

तजि भानपुर कोटानदी लग सेन भज्जतही गयो ॥
जब चुरोंग[3] रुप्पय इक्क१को इक्क१ सेर तद्दिन[3] बिक्कयो॥ ८१ ॥
अतिही छुँधातुर[4] साहको दल आपगा[5] इम उत्तर्यो ॥
पुनि आय बुंदिय खानपान दलेल सालमकैं करयो ॥
कछवाह नाह रु खानदोरह सर्ब भूपन सत्थही ॥
रहि तत्थ मंडिय मंत्र दक्खिन सेन मन्नि समत्थही[6] ॥ ८२ ॥
कछु देस अँज्ज[7] दयँ बिनाँ उनको नहीँ मन धप्पिहै ॥
तस्समात[8] अक्खहु साहसौं सुनि साह मालव[9] अप्पिहै ॥
तब खानदोरह मंडि यौं पठवाय[10] ब्रिन्नति साहकौं ॥
लिखिदेहु मालवकौं नतो खल आत दिल्लिय चाहकौं ॥ ८३ ॥
यह मंडि औ इत सेन दक्खिनपैंहु कग्गर मुक्कल्यो ॥
तुम लेहु मालव साहसौं करि साम संचित[11] जो फल्यो ॥
मरहट्ठ बीरन बंचि कग्गर बत्त मालव स्वीकरी[12] ॥
जवनेसहू सुनि पत्र मालव दैन बत्तहि अद्दरी[13] ॥ ८४ ॥
लिखि पत्र मालव दैनको जवनेस बुंदिय प्रेर्यो[14] ॥
सुनि खानदोरह कुम्ममोरह[15] सोहि दक्खिनकौं दयो ॥
मरहट्ठ तत्तह[16] बंचि पत्तह[17] लै अवंति खुसी भये ॥
नदि नाँहि चम्मलि उत्तरे मुरे ति मालवही गये ॥ ८५ ॥
मधुमास[18] चंद रु अंक सत्त रु इक्क१७९१संवत यौं भई ॥
इत खानदोरह सिक्ख भूपन दे रु दिल्लियही लई ॥
तब चाहकैं कछवाह भूपति दुग्ग[19] बुंदिय देखनैं ॥

१भाणपुरा को छोडकर२उस दिन३चून रुपये का एक सेर बिका॥८१॥४भूख से पीड़ित ५ नदी ६ समर्थ ॥ ८२ ॥ ७ आज ८ इस कारण से ९ मालवा देश देवेगा ॥ ८३ ॥१०पत्र भेजा११तुम्हारा संचित कर्म फलीभूत हुआ है सो मिलाप करके मालवा देश लेलो१२मालवा लेने की बात स्वीकार की१३आदरी (स्वीकार की)१४भेजा१५कछवाहों के मुकुट जयसिंह ने१६तत्रह (तहां) १७पत्रह (पत्र) को (यहां भी स्वार्थ में ह प्रत्यय है सो सब जगह ऐसा ही जानना) ॥ ८५ ॥१८चैत्र मास १९ बुन्दी का गढ देखना चाहा ॥ ८६ ॥

चढिकैं दलेल समेत हत्थिय इक१ वीरहु लै घनैं ॥ ८६ ॥
प्रबिस्यो सु उत्तर द्वार *पत्तन पति पिक्खत †सचरयो ॥
चढि दुग्ग ‡हत्थिपपोरिठै §नवठान चोकहि उत्तरयो ॥
सठ पाप सालम आप सम्मुह जोरि हत्थनकों नयो ॥
इम राजमंदिर पिक्खिकैं पुनि कुम्भ ¶पब्बयपैं गयो ॥८७॥
बरसिंह भूपति अग्ग बंधिय दुग्ग जो बिगरयो लख्यो ॥
कपिसीस भित्ति रु खातिका कहुँ खोमें तामें परयो लख्यो॥
कछवाह नाह दलेलसों तब दुग्ग बंधनकी कही ॥
सुनि सञ्च मन्नि दलेलहू स्वसुरेस उक्त कियो सही॥ ८८॥
रहि दोप२रत्ति रु आक्खि यों जयसिंह जयपुर सचरयो ॥
नव दुग्ग बंधि दलेलहू इत सज्ज बुंदियको करयो ॥
इहिं साल अग्गहन मासमैं जगतेस रानहु जानिकैं ॥
दिय नेर बेघम देवसिंहहिं फेरि कग्गर ठानिकैं ॥ ८९ ॥
दुवलक्ख२०००००रुप्पय दंडके लिय रान राउत देवसों ॥
सहि दुक्ख दारिद बिग्गरयो इम साल जामिय सेवसों ॥
पुनि रान काम सु राजको नगराजसों सब छिन्नयो ॥
लखि वृद्ध कोविदं जो बिहारियदास कायथको दयो ।९०।
जिहिं अग्ग बिल्लिय जायकैं सब रान काम सुधारयो ॥
जयसिंहकों बिच डारिकैं लिखवाय रामपुरा लयो ॥
पुनि भीतें पद्दह१५अब्दतैं भ्रिपद्वार कायथ जो रहयो ॥
अब रान बुल्लि बहोरि हू तिहिं मुख्यमन्त्रियकैं चहयो॥९१॥

---

*पुरमें चला †हाथीपोल होकर §नवठाणों के चौक में उतरा ¶पर्वत पर (पर्वत के ऊपर के तारागढ में) ॥ ८७ ॥ १ कांगरे २ कोट ३ खाई ४ बुरजों का ५ समूह गिराहुआ देखा ६ ससुरे और स्वामी (अपन को बुन्दी की गद्दी पर बिठाने वाला पति) का कहना सही किया ॥ ८८ ॥ ७ रात्रि ८ फिर पत्र (पट्टा) लिख कर ॥ ८९ ॥ ९ यह साला ९ चाहिनाई की सेवा करने से बिगड़ा १० चतुर ॥ ९० ॥ ११ भय से १२ वर्ष १३ नायमारा म १४ राना न बुलाकर ॥ ९१ ॥

दुव अंक सत्रह१७९२मान संबत पक्ख *उज्जल पोसमैं ॥
निज बंधु भूप †अमान मन्नि रु रान उप्फानि रोसमैं ॥
दल पंति[1] दुद्धर बंधिकैं जगतेस साहिपुरा लग्यो ॥
चहुँ ओर सोर सजोर ह्वाँ घनघोर तोपनमैं दग्यो ॥ ९२ ॥
तब रान सम्मलि होनकौं जयसिंह जैपुरसौं चढ्यो ॥
सुनि एह साहिपुरेसकौं अति सोक कूरमकौं[2] बढ्यो ॥
तब दंड रुप्पय लक्ख१०००००साहिपुरेस अप्पिय रानकौं ॥
करि कुंच रानहु गो उदैपुर रक्खि बंधुव मानकौं ॥ ९३ ॥
इहिं साल मेचक[3] माघमैं दबि रोग दुस्सहतैं गरयो ॥
निज नैनवापुर माँहिं अंध सु मंद सालमहू मरयो ॥
मरुभूप दिल्लिय आय इत गुजरात जित्ति उछाहसौं ॥
अरजी करी कर जोरि बुद्धहिं[4] दैन बुंदिय साहसौं ॥ ९४ ॥
तँहँ खानदोरह जो नबाब जबाब पेस न होनदै ॥
जयसिंहको मति मित्र[5] यौं अरजी सु लग्गन जो न दै ॥
नव९मास बुंदिय काज यौं मरुभूप दिल्लियमैं रह्यो ॥
बखसीस क्रिन्न बिसेस पै यहतो न साह करयो कह्यो ।९५।
तब कुप्पिकैं बिनु साह आयस[6] सेन धँन्वप[7] सज्जयो ॥
सब देस लुट्टत साहको मरुदेस गर्बित ह्वै गयो ॥
दुव अंक सत्रह१७९२ साक यौं सितपक्ख फग्गुनमैं[8] भई ॥
इत साह दक्खिनमैं मिल्यो यह जानि कूरमकी लई ।९६।

*पौष सुदि पक्ष में †नहीं मानने वाला (निरंकुश) १ सेना की पंक्ति, दुर्धर्ष (दुःख से धर्षण करने मे आवै ऐसी) बांधकर ॥ ९२ ॥ २ जयसिंह के आने का ॥९३॥ ३ माघ बदि पक्ष में ४ बुधसिंह को बुन्दी देने की ॥ ९४ ॥ ५ इच्छा मित्र (अपनी इच्छा से मित्र था जयसिंह का किया हुआ मित्र नहीं था) अथवा बुद्धि से मित्र था ॥ ९५ ॥ ६ बादशाह की बिना आज्ञा ७ मारवाड़ का पति ८ फाल्गुन शुक्ल पक्ष में ॥ ९६ ॥

तबही नवाब उमीरखाँ चुगली सु दोउनकी करी ॥
प्रभु[1] खानदोरह कुम्ममोरह[2] यों हरामिय अहरी ॥
मिलि सत्रु सेननसौं गये अरु लाभ दक्खिनतैं लयो ॥
दुव कोटि२००००००रुप्पय देस मालव मंडि साहुवकों दयो९७
चुगली सु जानि रु कुम्महू पुनि पत्र दक्खिन मुक्कल्यो ॥
श्रिपमत आवहु वेग इत्थौं हम दोरं दिल्लियको दल्यो ॥
श्रिपमतहू नृप सौंह मंत्रिय बचि पत्र सु बेगलै ॥
दलं दर्प दुंद्दर बधिकें गति काल कीलिय तेगलै ॥ ९८ ॥

दोहा ॥

नृप साहुव नवलक्ख९०००००दल, नगर सितारा नाह ॥
सज्जित भो ताको सचिव, बाजेराय दुबाह ॥ ९९ ॥

॥ षट्पात् ॥

बाबा पंडित रामचंद्र हुलकर मल्लारह ॥
गायाजिय सध्या रु प्रथित आनंद पमारह ॥
अवहु मुख्य करि इनहि चढि रु श्रिपमत चलायउ ॥
सालम सुवन प्रताप सोहु सगहि भट आयउ ॥
कूरमहिं जानि आव्हानकर इम दक्खिन सन उप्परिय ॥
ताहिनें अपार दल भार तकि फनपति फेनन फुकरिय१००
परिय१ करिय२ अन्त्यानुप्रास १ ॥
गरद गैनं वित्थरिय जरंदे जैंम जैंनक रंग किय ॥

---

१ हे प्रभु २ जयसिंह ॥ ९७ ॥ ३ कैलाय ४ बादशाह के मन्त्री राजा (जयसिंह) का ५ सेना, घमंड से, अथवा सेना के घमंड स ६ दु:ख से बर्षया की जावे एती ७ समय की गति को खड्ग से कीली ॥ ९८ ॥ ८ वीर ॥ ९९ ॥ ९ पुत्र १० जयसिंह को बुलाने वाला जानकर ११ उस दिन १२ सेना का अपार भार देखकर १३ शेषनाग फणों से फूत्कार करने लगा ॥ १०० ॥ १४ आकाश में गरद फैलकर १५ शनैश्चर के १६ पिता (सूर्य) का रंग १७ पीला करदिया

मरद मंत्रि उम्माहिय दरद भूदार दह्न दिय ॥
पंच अयुत५००००पक्खरिय सहँस१०००दंतावल्ल सज्जिय।
दल पदाति दक्खिनिय गर्बि दुवलक्ख२०००००गगज्जिय।
बहुबिधि निसाँन भेरिय बजिय बंल नकीब हंकत वढिय।
पेसवा प्रथित बिप्र सु बलिय चामर वैर बित्तर चढिय॥१०

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी पतिबुधसिंहचरित्रे बुधसिंहपत्नीकूर्मीसंमतिमहाराष्ट्रपत्तषळ्ययुतद्रकीलितसालमसिंहतदात्मजप्रतापसिंहबुन्दीहरणं १ कूर्मीमल्लारक्षाबन्धन २प्रेषितायुतद्वयसैन्यजयसिंहस्य युद्धमन्तरापिपुनर्दलेलसिंहबुन्द्यधिकारप्रापणं ३ कोटामहारावदुर्जनशल्यस्य राणाजगत्सिंहजामिपाणिग्रहणं ४ तीर्थयात्राप्रस्थितसिताराधीशसाहूमन्त्रिबाजेरायजनन्या मार्गागतोदयपुरजयपुरसत्काररवीकरणं ५महाराणासुभटदौलतसिंहस्य माहाराष्ट्रकीलितहड्डसालमसिंहमोचन जयपुराधीशजयसिंहस्य खारीनदीसमीपराजस्थानान्तर्वर्तिराजपु

---

१ वीर साहू का मंत्री उत्साहित हुआ २ बाराह की दाढ पीड़ा की ३ पाखरों वाले सवार ४ हाथी ५ पैदल सेना ६ गर्व करके ७ नगा ८ नोबत ९ सेना को १० पेसवा पदवी वाला प्रसिद्ध ब्राह्मण ११ श्रेष्ठ चम रों को १२ विस्तर (फैला) कर चढा ॥ १०१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के राव बुधसिंह के चरित्र में, सालमसिंह के बड़े पुत्र प्रतापसिंह का बुधसिंह की रा णी कछवाही से मिल कर मरहठों को छ लाख रुपये देकर सालमसिंह को कै करवा कर बुन्दी छुडाना १ राणी कछवाही का मल्लार के राखी बांधना जयसिंह का बीस हजार सेना भेज कर विना ही युद्ध किये बुन्दी पर दले सिंह का पीछा अधिकार कराना ३ राणा जगत्सिंह का कोटा के महाराव जैनशाल के साथ अपनी बहिन का विवाह करना ४ सितारा के अधीश स हू के मंत्री बाजेराव पेसवा की माता का तीर्थ यात्रा जाते समय उदयपु और जयपुर में अत्यन्त आदर सत्कार होना ५महाराणा के उमराव दौलतसिं का हाडा सालमसिंह को मरहठों की कैद से छुडाना ६ राजा जयसिंह राजपूताना के राजाओं को मेवाड़ में खारी नदी के समीप एकत्र करना

कतोकरण ७ उदयपुराधीशमृतेराजस्थानाशेषक्ष्मापालसहितदिल्लीसे
नापतिखानदोराख्यस्य महाराष्ट्रोपरिदक्षिणादिग्गमन ८ महाराष्ट्रगात्रि
णापराजितससैन्यखानदोरापलायन ९ खानदोराजयसिंहयोर्दिल्ली
द्रान्महाराष्ट्रमालवदेशदापन १० महाराणाजगत्सिंहस्य शाहपुरेशवेष्ट
नलक्षमुद्रादण्डादान ११ आहूतजयसिंहमहाराष्ट्रसैन्यदिल्लीप्रस्थान
वर्णन चत्वारिंशो मयूख ॥ ४० ॥

आदितोऽष्टसप्तत्युत्तरद्विशततम ॥ २७८ ॥

॥ दोहा ॥

कटक विमद्दरकुच करि, आयउ लोंनावाह ॥
सु सब रान जगतेस सुनि, लग्गि वधावन लाह ॥ १ ॥
जब काका निज जनकको, बुल्लि तखत अभिधान ॥
वहुरि सलूमरि नाह विय२, पठये प्रेम प्रमान ॥ २ ॥
मिलन गये श्रीमतसौं, तब वह सम्मुह आय ॥
मुख्य रान भट मन्निकैं, विय३लिय अग्ग बढाय ॥ ३ ॥
प्रथम लिखिय श्रीमत प्रति, जैपुर नृप बरजोर ॥
सजि मिलाप तुम रान सन, आवहु पुनि हम ओर ॥ ४ ॥
यातैं उप्परि पेसवा, प्रथम उदैपुर पत्त ॥

उदयपुर के महाराणा के बिना राजपूताना के सब राजाओं को साथ लेकर दिल्ली के सेनापति खानदोरा का मरहठों पर दक्षिण में जाना ८ मरहठों के रतिपाह से पराजय पाकर सेना सहित खानदोरा का भागना ९ खानदोरा और राजा जयसिंह का बादशाह से मरहठों को मालवा देश दिलाना १० महाराणा जगत्सिंह का शाहपुरे को घेरकर एक लाख रुपयों का दंड लेना ११ जयसिंह के बुलाने से मरहठों की सेना का दिल्ली पर जाने के वर्णन का चालीसवां ४० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठहत्तर १७८ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अपने पिता (संग्रामसिंह) का २ तख्तसिंह नामक ॥ २ ॥ ३ दोनों को ॥ ३ ॥ ४ जयपुर के बलवान राजा (जयसिंह) ने ॥ ४ ॥ ५ ॥

सम्मुह आयउ कोस दस१०, रानहु हित अनुरत्त ॥ ५ ॥
आसिरबादहि अग्ग यह, लिखतो गुमर लसंत ॥
पै नमिकैं यँहँ रान प्रति, किय सलाम श्रियमंत॥ ।६॥

॥ प्लवङ्गमम् ॥

रानहु बिरंचि प्रनाम मिल्यो अति मोदसों,
बाजेरायहिं लाय बधाय बिनोदसों ॥
आहड़ ग्राम समीप सिबिर दलको कर्यो,
हो जँहँ चंपकबाग अप्प तँहँ उत्तर्यो ॥ ७ ॥
पुनि पठई महिमानि रान बहु रीतिसौं,
रूप्यय पंचहजार५०००बसन गज बीति सौं ॥
दूजे दिन श्रियमंत सभा रचि बुल्लयो,
बिप्रहु गो तब बेग नेह बिथर्यो नयो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

तबहु द्वार प्रछन्नतक, आयउ सम्मुह रान ॥
दूजी गद्दिय बिप्र हित, बिछवाई सु बिधान ॥ ९ ॥
तिहिं उठवाय रु पेसवा, बिनु गद्दिय गय बैठि ॥
रच्यो अदब यह रानको, प्रीति अतुल हिय पैठि ॥ १० ॥
गद्दिय पर रानाँ रह्यो, सिर दुव२ चमर ढराय ॥
चमर इक्क१हुव बिप्र सिर, बलि हित बत्त बढाय ॥ ११ ॥
रान कहिय नमनीय तुम, तब द्विज कहिय सचाव ॥
मोहि गिनहु नृप रावरो, जिम सोलह१६ उमराव ॥ १२ ॥
रान तबहि जर जीन जुत हय चउ४हत्थिय एक१ ॥

१घमंड से शोभित होकर२बडा होवै सो आशीर्वाद देता है और छोटा होवै सो सलाम करता है तथा लिखता है॥६॥३करके४डेरा (पड़ाव) ५ चंपाबाग ॥ ७ ॥ ६ वस्त्र ७ घोड़ा ॥ ८ ॥ ८ भीतर के द्वार (डोढी) तक ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ९ नमस्कार करने योग्य (पूज्य) १० उत्साह सहित ॥ १२ ॥

नग जराय भूखन नेवल, बिप्रहिँ दिय सबिवेक ॥ १३ ॥
सढ्ढ लक्ख१५०००० इक१ साल प्रति, स्वीकरि दक्खिन दम्मं॥
दियउ परग्गन बनहडा, तिनमैं लिखि हित कम्म ॥ १४ ॥
ताल मध्य इक रानकैं, जगमंदिर प्रासाद ॥
ताहि दिखावनकी कही, बाँसर दूजे बाद ॥ १५ ॥
रान पिसुन बनि कोउ तब, बाजेरावहिँ अक्खि ॥
लै जावत मारन तुमहिँ, रान कपट हिय रक्खि ॥ १६ ॥
दक्खिन मन्त्रियं एह द्विज, हो तथापि सुनि एह ॥
मूरख सच्ची मन्निकैं, किय रोखारुन देह ॥ १७ ॥
पठई यों कहि रान प्रति, मैं छलघात मरों न ॥
कैलिहि मंह सज्जहु कटक, करहिँ साम अब कोन ॥१८॥

॥ पद्धतिका ॥

यह सुनत रान हुव सोक लीन, पठये पुनि दुव२ भट वे प्रबीन॥
तखतेस रु केसरिसिंह तत्थ, जाय रु द्विज बंदियँ जोरि हत्थ ॥१९॥
कहि रान अधिक सनमान कीन, अप्पन न होहु अमरख अधीन ॥
किहिँ मूढ कहिय यह द्रोह कैंत्थ,सोकहहु अप्प सब विधि समत्थं२०
जो कहहु नाँहिँ तजि देहु रोस, नाहक न देहु अभिसाप दोस ॥
श्रियमत तदपि भो नहिँ प्रसन्न, तब सत्त लक्ख७०००००दिय देम्म छन्न ॥२१॥

संग्रामरानकी मात अंग्ग, चहुवानि मरी निज भुग्गि भैंग्ग ॥

१नवीन२ब्राह्मण बाजेराव पेसवा को विचार पूर्वक दिये॥१३॥३डेढ लाख रुपये ४ हित के कार्य के लिये॥१४॥५पीछोला नामक तालाव में६महल७दूसरे दिन ८ पश्चात ॥ १५ ॥ पहले ९ राणा का चुगली करने वाला पत्रकार ॥ १६ ॥ १० यह ब्राह्मण दक्षिण का सलाहकार था११तोभी १२ क्रोध में लाल शरीर किया ॥ १७ ॥१३युद्ध रच कर ॥ १८ ॥१४ऊपर के कहेहुए१५ब्राह्मण को नमस्कार किया ॥ १९ ॥ १६ क्रोध के १७ वचन१८समर्थ ॥ २० ॥१९ मिथ्या दोष २० रुपये ॥ २१ ॥ २१ आगे २२ भाग (बट)

तब हुव लिलक्ख३००००० मित*कनक दान, सो रानदयो बिप्रहिं सयान ॥ २२ ॥

दल कुंच कियउ लै बिप्र दाम, श्रियद्वार आय किय प्रभु प्रनाम ॥
सतपंच५००दम्म किय भेट तत्थ, बल्लभ कुल बंदिय पुनि समत्थ२३
गोस्वामि नाम गोवर्द्धनेस, बिरचिय तिन अग्गहु †नति बिसेस ॥
तिनकौंहु‡दम्मसतपंच५००अप्पि, मरहट्ठ चलिय दलकुंच मप्पि२४
पुनि होय जाजपुर नगरपास, बल कियउ केकड़िय द्रंग वास ॥
उततैं सुनि कूरम भूप आय, चतुरंग चक्क दुद्दर चलाय ॥ २५ ॥
धमि नैर कृष्णगढ निकट धाम, भिंटिय दुव २भंभोलाव ग्राम ॥
पठई तब कूरम राह अक्खि, हम मिलहि रानघर रीति रक्खि ।२६।
पठई कहि बिप्रहु नहि प्रमान, है रान सुपेंहु साहू समान ॥
जे कबहु मिंच्छ अनुचर बनैंन, अनुचर सदाहि तुम लोभ ऐंन ॥२७॥
जिहिं हेतु मोहुकौं अधिक जानि, पै मिलहिं अज्ज समंता प्रमानि ॥
तुम जानत गद्दिय दै उठाय, पै बैठहिं दुव२ इक१पीठंपाय ॥२८ ॥
हम तत्थंहु दक्खिन ओर होय, दै बाम तुमहिं इम मिलहिं दोय ॥
जयसिंहहु यह सुनि प्रबलजानि, इक आसन स्वीकरि मिलिय आनि
चढि उभय२ चक्कं हुव सज्ज आय, तिन बीच इक्क पटगृह तनाय ॥
तामाँहिं मिले दुव२ गज्जन छोरि, बैठे इक१ आसन जानु जोरि ३०
द्विज किय तहँ हुक्काजंत्र पान, लगि धुम्र्म कुम्म मनबिच रिसान ॥

* सुवर्ण दान ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ † नम्रता ‡ रुपये ॥ २४ ॥ १ सेना का २ नगर दुःख से धर्षणा की जावै ऐसी ३ चार प्रकार (हाथी, घोड़े, रथ, पैदल) की सेना ॥२५॥ २६ ॥ ४ यह तुम्हारा कहना प्रमाण नहीं है ५ श्रेष्ठ राजा ६ सितारा के पति साहू के समान है ७ यवनों के ८ लोभ के घर ॥२७॥ ९ इस कारण मुझ को वडा मानो परंतु आज १० बराबर के मान कर मिलेंगे ११ एक आसन (गद्दी) पर ॥ २८ ॥ १२ तहां हम दहिनी ओर रहकर १३ एक गद्दी पर बैठना स्वीकार करके ॥ २९ ॥ १४ मिलाप के स्थान पर दोनों सेना सज्ज हो कर रही १५ डेरा १६ हाथियों से उतर कर १७ घुटने मिला कर॥३०॥ १८ धूम

पुनि सुभट मुख्य निज निज बुलाय, बैठारि मिसल*आयत बनाय ३१
दक्खिन भट हाजरि सबहि तत्थ, इक१ न मल्लार आयउ समत्थ॥
सधा जिहिं बुदिय लौन लिन्न, द्विज बाजेरावहु वचन दिन्न ॥३२॥
श्रिपमत यहाँ मिलि पलटि पोन, कछवाह बुदि छोरहु कह्यो न ॥
पोन१ छोन २ अन्त्यानुप्रास १ ॥
सालम सुत सजुत आसु उट्ठि, इहिं कारन हुलकर चलिय रुट्ठि३३
श्रिपमत कुम्म इम मिलि सुभाय, अब निज निज डेरन उभय २आय
यँहँ सुनिय विप्र रुट्ठिय मल्लार, गय तबहि निहोरन प्रकटि प्यार३४
अक्खिय तब हुलकर अत्थ आय, तुम बुदिय लौन न किय उपाय
करि सपथ लौन पुनि देहु बैन, तुम संग न तो अब हम चलैं न॥३५॥
नृप साहु सपथ तब विप्र बुल्लि, लैहौं अब बुदिय तेग तुल्लि ॥
बिचमैं कछु वासर जान देहु, दोउन२मनाय लिय अक्खि एहु ३६
कूरम रु विप्र पुनि मिलन कीन, लहि कूर्म हौंर्द रचि मंत्र लीन॥
उततैं दल लक्खन तुम बनाय, आवहु इत जैपुर है सहाय ॥३७॥
अब हाँ न लरन अवकास अच्छ, दक्खिन अमात्य तुम नीति दच्छ
मिलि बहुरि दैहिं मिच्छन मिटाय, जैव करि दल सज्जहु गेह जाय
कूरम गय जैपुर अक्खि एह, श्रिपमत मुरयो दक्खिन सनेह ॥
दुव अक्क सत्त इक १७९२ सक्क दुरंतँ, यह भयउ मास फग्गुन उँदंत ॥ ३९ ॥
दरकुच तेंदनु करि द्विज पयान, बेघम ढिग आय रु दिय मिलान

(धुआ) लगन में जयसिंह मन में रिसाया *पड़ा ॥ ३१ ॥ १ तहां २ समर्थ ३ प्रतिज्ञा ॥ ३२ ॥ ४ शीघ्र उठकर ५ रोष (क्रोध) करके ॥ ३३ ॥ ६ आज्ञा (बाजेराव) ने ॥ ३४ ॥ ७ यहां आकर फिर बुंदी लेने का ८ सौगन ॥ ३५ ॥ ९ राजा साहू का (सौगन) १० दिन ॥ ३६ ॥ ११ मिलाप १२ जयसिंह का अभिप्राय ॥ ३७ ॥ १३ अच्छा १४ हे दक्षिण के मन्त्री १५ दक्ष (चतुर) १६ शीघ्रता करके सेना सजो ॥ ३८ ॥ १७ क्रूर है अन्त जिसका, अथवा बुरा है अन्त जिसका १८ गुप्त ॥ ३९ ॥ १९ जिस पीछे २० मुकाम

यँहँ भट प्रताप इक्क सु अभंग, श्रियमंत चेरहु लै इक्क[1] संग ।४०।
बुन्दीस निकट गय नमिय बीर, सब यह उदंत जंपिय सधीर ॥
कथ पेसवाहु यह तब कहाय, तुमतैं न जुदे हम बुंदिराय ॥ ४१ ॥
अबतो हम आये लोभ ठानि, लैहैं पुनि बुंदिय लेहु मानि ॥
बुंदीस मिलन हित कछु कहाय, टारी सु बिप्र इम दल[3] लिखाय४२
तदनंतर[4] दक्खिन द्विज प्रपत्त[5], गो इक्क प्रतापहु संग तत्त[6] ॥
इत दिल्लिय कूरम कुजस उठ्ठि, श्रियमंत मिलन सुनि साह रुठ्ठि ४३
तब साँह निजामनमुलक बुल्लि[7], आयउ नबाब सुनि तेग तुल्लि ॥
हो यह कलीजखाँ नाँम बीर, गाजुद्दीखाँ सुत रन गँभीर[8] ॥ ४४ ॥
वह भट द्रुत[9] दिल्लियनैर आय, बल्लि साह हिंतु सिजदा[10] विधाय[11] ॥
जवनेसहिँ कूरम कुपित जानि, पुनि लिखिय पत्र दक्खिनप्रमानि४५
अवसर अब आयउ भुम्मि लैन, श्रियमंत बेग आवहु ससैनैं[12] ॥
यह सुनत बज्जि जिततित निसान[13], उमडिय अनीकैं[14] सागर उफान४६
फहराय झंड हत्थिन फरक्कि, भहराय भज्जि भीरुक[15] भरक्कि ॥
सज्जत भट बाहुल[16] कवच टोप, अतिकाय[17] चरक्खन चढत तोप ॥४७॥
खुरसान धार आयुध खनंकि, पावक[18] प्रचंड झारत झनंकि ॥
दक्खिन अनीकैं[19] गज्जिय दुरंत[20], इहिँ रीति बीर सज्जिय अनंत४८
संबत त्रि अंक हय इक्क१७९३मान,इसमास[21] बिजयदसमी१०उफान
संक्रमियं[22] सिताराधीस सैन, श्रियमंत मुख्य लगि भुम्मि लैन।४९।
अतिकाय बाजि फाँदत अकास, मिटिजात दुग्ग[23] पद्धर मवास[24] ॥

---

१ श्रीमंत के हलकारे को ॥ ४० ॥ २ वृत्तान्त कहा ॥ ४१ ॥ ३ पत्र ॥ ४२ ॥ ४ जिस पीछे ५ गया ६ तहां ॥ ४३ ॥ ७ बादशाह ने निजामुल्मुल्क को (यह खिताब है. जिसका मतलब है मुल्क का इन्तजाम करने वाला) बुलाया ८ युद्ध में गंभीर ॥ ४४ ॥ ९ शीघ्र १० सलाम ११ करके ॥ ४५ ॥ १२ सेना सहित १३ नगारे १४ सेना ॥ ४६ ॥ १५ कायर १६ दस्ताने १७ बडी तोपें चरखों पर चढीं ॥ ४७ ॥ १८ अग्नि १९ सेना २० दूर है अन्त जिसका ऐसी ॥ ४८ ॥ २१ आश्विन मास २२ चली ॥४९॥ २३ दुर्ग २४ लुटेरों के रहने के स्थान सीधे होगये

रयि लिपउ ढंकि खुरतार खेह, मंडिय कि भद्द आसार मेह ।५०।
किलकिलत सग कालिय कराल, खिलखिलत मलगत खेत्रपाल॥
जुग्गिनि जमाति जय जयति जंपि, झपटत झुकत बेताल झंपि।५१।
बकबकत सग बावन ५२ प्रमत्त, संकसकत गिद्ध सिर होत छत्त॥
डमरुक्क डक्क डाँहल्ल डमंकि, ठहनाय हूर नेउर ठमंकि ॥ ५२ ॥
सजि चलिय सग भैरव त्रिसूल, फरक्किय सिचान हिय असन फूल॥
आतंपि ओघ ढकत अकास, फेरंड फलगत गिलन ग्रास॥ ५३॥
इम चलिय सग पलचर अनेक, कटकट विरॉव प्रेतन कितेक ॥
लगि अतल वितल सुतलन लचक्क, मुरकत बराह दतुलि मचक्क ५४
पावनैं खुरतालन झरत अग्गि, जिहिं रव समाधि प्रमथेस जग्गि ॥
अकबकत सेतु सागर उमंगि, भुल्लत दिसान नर मद कि भंगि ।५५।
तररक्कि भुम्मि छेकत तुखार, दररक्कि देत पब्बय दरार ॥
रननक्कि गँव ककट्ट करीन, छननक्कि होत जल नैंदन छीन ।५६।
उडिजात उपल चूरन अनत, गडिजात तिमिर पूरन दिगत ॥

---

१ जलधारा ॥ ५० ॥ २ कोलाहल करके ३ डमनाहुआ ४ 'जय हो, जय हो,' यह कहकर ॥ ५१ ॥ ५ बहुत बोलते हुए (बकवाद करते हुए) बावन वीर (जहां जहां बावन की संख्या आवे तहां तहां बावन वीर जानना चाहिये) ६ पखों के शब्द का अनुकरण (नकल) है ७ बाघ विशेष ८ अप्सराओं के ९ पायजेब (पदभूषण) बजे ॥ ५२ ॥ १० भोजन के कारण हृदय फूलकर सिचाण पक्षी बढ़े ११ चीलों के समूह से आकाश ढकगया और निशाल गिद्धों के १२ गिरोह कूदने लगे ॥ ५३ ॥ इसप्रकार १३ मांस खानेवाले अनेक पशु पक्षी साथ चले और कितने ही प्रेतों के दांतों का कटकट १४ शब्द हुआ ॥ ५४ ॥ १५ पत्थरों से और घोड़ों की खुरतालों से अग्नि झड़ने लगी जिसके १६ शब्द से १७ शिव की समाधि छूट गई. घबरा कर समुद्र १८ मर्यादा भूलकर ऐसा बढ़ा जैसे १९ भाग के नशे में मनुष्य दिशा भूलजाता है ॥ ५५ ॥ तरार ले कर २० घोड़े भूमि को फांदते हैं और २१ पर्वत फटकर दरारें (भेदें) दल दें, रणकार करके २३ कवच की कड़ियों का २२ शब्द होता है २४ बड़े जलाशयों का पानी क्षीण होता है ॥ ५६ ॥ २५ अनेक पत्थर चूर्ण होकर बहजाते हैं

इभराज अंदु[2] ऐंचत अभंग, रज्जू[3] कि खेत्र[4]फल मपन रंग ॥ ५७ ॥
बहिचलिय धातु अद्रिन अनेक, सलसलिय[8] पंथ गज दान सेक ॥
इम हलिय सेन दक्खिन अनंत, दिल्लीस मुलक दब्बत दुरंत ।५८।
सुनि साह सेन सज्जिय सिताब, बल[9] मुख्य उभय दक्खिय नवाब
इक खांनकमरुदी निजवजीर, बलि[11] संग निजामनमुल्क बीर ।५९।
दुवर चलिय सेन हरवल्ल हंकि, घनघोर घंट पक्खर घमंकि ॥
कुलटा कनीनि[12] बिधि तरल बाज, उड्डत भलंगि आगामि आजि[13]६०
मनके रु पवनके जे सुमित्र, चलत रस[14] धाव[15] मंडन बिचित्र ॥
खंधन बिनेम्ब्र[16] झुकत स्खलीन[17], मक्खतूल[18] बग्ग जर[19] जिलह लीन ।६१।
बिरचत निकम्मे[20] नलि जेरबंध, खेह[21] जात झंपि तउ सेहस[22] खंध ॥
दल[23] मध्य उलटपलटन दिखात, तिमि[24] मच्छ मनहु अर्नव[25] तिरात ६२
भुवको[26] पति प्रबल[27] बाथन भरंत, कामिनि[28] गर लग्गत जानि कंत[29]॥
नादिन[30] सुख साधित सहज सब्य[31], फिरिजात छत्रकी छांह मब्य६३
असवार चहत जिहिं रूप द्रव्य[32], नचि रु दिखात सुहि रूप नव्य[33] ॥

और अंधेरे से पूर्ण होकर दिशा दिशा गडजाती (अदृश्य होजाती) है ! बडे हाथी नहीं लूटनेवाले २ जंजीरों को खैंचते हैं सो मानों ४ खेतों को मापने को ३ डोरी (जरीब) खैंचते हैं ॥ ५७ ॥ १ अनेक पर्वतों से ७ हाथियों के मद के ८ सींचने से मार्ग ६ गीले होगये ॥ ५८ ॥ ९ सेना में १० कमरदीखां ११ फिर ॥ ५९ ॥ कुलटा के १२ नेत्रों की पुतली के समान चपल घोड़े१३आगे आनेवाले युद्ध के अर्थ उडते हैं ॥ ६० ॥१४चलने में रस (स्वाद) उत्पन्न करते हैं और१५दौडने मे आश्चर्य करने हैं१६विशेष झुके कंधों वाले १७लगामों को चाटते हैं वे घोड़े१८रेसम की बागें और१९जरी की शोभा में लीन हैं ॥ ६१ ॥ स्वाभाविक झुके हुए कंधों से२०जेरबंद को निकम्मा करते हैं २१ आकाश में उडकर जाते हैं तो भी कंधा २२ वैसा का वैसा ही झुका हुआ रहता है वे घोड़े२३सेना में उलट पलट दिखाते हैं सो मानों २५ समुद्र में २४ बडे मच्छ तिरते हैं ॥६२॥ २६ वे घोडे भूमि को अपनी २७ बाथों (भुजाओं) में भरते हैं सो मानो २९ पति २८ स्त्री के गले लगता है ३१ सहज साधन से३०सवारों के सुख को साधते हैं और छत्र की छाया में फिर जाते हैं।६३। सवार जिस३२भव्य; अथवा विशेष नम्र रूप को देखना चाहे उसी ३३ नवीन

रन आजिर बज्र जिनके रकाब, हरखात चढाकन मन हिसाब ६४
इम चलिय अर्व्व थेइन थरक्क, हकिय अनेक हत्थिन हलक्क ॥
चचल चखि पच्छिन करत चोट, जिन अग्ग मद्दु झक्खत आगोट ६५
अति बीतँ पाय रोपत अडोल्ल, लगि बहुरि हाँक बढिजात लोल्ल॥
जंजीर लव खैंचत सजोर, सिर रचत भौंर गुजार सोर ॥ ६६ ॥
आधोरेन रक्खत बहु बिसासि, हकत तथापि उद्धत हुलासि ॥
इम हलिय साह प्रतैना अभग, दक्खिन दल सम्मुह रचन जंग ॥६७॥
सुनि इनहि आत दक्खिन दलेस, द्रुत बढिय बिगारत साह देस ॥
खटमास बट्ट आवत बिताय, चक्कँ सु अब दिल्लिय गिर चलाय ।६८।
ग्वालेर लुट्टि बहु अरिन गजि, अब चलिय आग्ग रनबीर गजि ॥
मग चुक्कि अग्ग कढिगयउ मिच्छ, इन आनि लई दिल्लिय स्वइच्छ ।६९।
सक वेद अक सत्रह१७९४सुभाय, अष्टमि८ वलच्छ मधुमास आय
दिल्लीपुर वाहिर प्रथुल दोर, अति रुचिर सिलपविधि ओरओर ७०

रूप को नचकर दिखाते हैं १ युद्ध के अखाडे में जिनके रकाब (पागडे) वज्र रूपी हैं जो २ चढने वालों के मन को प्रसन्न करते हैं ॥ ६४ ॥ इस प्रकार के ३ घोडे नचकर चले और अनेक हाथियों के ४ झुण्ड चले (सौ हाथियों के समूह का नाम हलका है) जो चचल हाथी पाछियों को देखकर चोट करते हैं जिनके ६ आगे ५ मद का जल बहता हुआ दीखता है ॥ ६५ ॥ अत्यन्त ७ हूलने और आकुश लगाने से अपने पगों को निश्चल रोपकर खडे रह जाते हैं और फिर ८ क्रोध दिलाने वाले साटमारों के छोटे प्रहारों पर ९ चपल होकर बढजाते हैं बडे जजीरों को बल पूर्वक खींचते हैं और जिनके मस्तक पर गुजार करते हुए भ्रमर कोलाहल करके चलते हैं ॥ ६६॥ जिन हाथियों को १० महावत विश्वास देकर रखते हैं, ११ तोभी प्रसन्नता के साथ अनम्र होकर चलते हैं १२ बादशाह की अभग सेना इस प्रकार चली १३ युद्ध करने को ॥ ६७ ॥१४दक्षिण के सेनापति १५ वह सेना ॥ ६८ ॥ १६ वीर रस मे प्रीति करके१७यवन आगे बढ गये१८मरहटों ने अपनी इच्छानुसार दिल्ली को आ ली ॥ ६९ ॥१९श्रेष्ठ रीति से २१ चैत्र २० सुदि २२ बडे फैलाव से २३सुदर शिल्परचना की रीति से चारों ओर ॥ ७० ॥

थित इक्क कालिया देवि थान, मेला तहँ तद्दिन[1] हो महान ॥
बढि रहिय तत्थ लक्खन बनिज्ज[2], जिन्ह लखत[3] होत धनदहिं[4] अचिज्ज[5]
दक्खिन दल आय रु खगन खंडि, मेला वह लुट्टिय जुलम मंडि ॥
कढि कढि तब बिब्भल बनिजकार[6], तजि द्रव्य भजिग कालिंदि[7] पार
कोटिन धन दिल्लिय कहर[8] कुप्पि, लुट्टिय मरहट्ठन कानि लुप्पि ॥
बहु जलज[9] हीर मानिक बिथार, प्रतिमुल्ल लाल मरकत[10] अपार ७३
इम महुर[11] हून रुप्पय अनंत, भूखन जराय कुंडल सुभंत[12] ॥
कोटीर[13] तिलक आपीड़[14] केक, अरु ताडपत्र[15] नूपुर अनेक ॥ ७४ ॥
सिरपेच हार केयूर[16] स्वच्छ, ऊर्मिक[17] अवाप[18] कटिसूत्र अच्छ ॥
बहु मारि हट्ट[20] लुट्टिय बिजाज, सन सूत्रमय रु रांकव[21] समाज ।७५।
कौसेय[22] पग्ग साटिन कलाप[23], नीसार[24] नव्य[25] थुरमा अमाप ॥
अत्तार बिपनि[26] लुट्टिय अनेक, करटी[27] रु बीति[28] पुनि भक्ष्य[29] केक ७६
हारव[30] हुव दिल्लिय हंत हंत, दल[31] कढिय तत्थ पुरतैं दुरंत[32] ॥
इत रचत लूट दक्खिन अनीक[33], श्रियमंत सज्ज चाहत समीक[34] ।७७।

---

१ उस दिन बडा मेला था २ लाखों व्यापारी, अथवा लाखों का व्यापार बढ रहा था ३ जिनको देखने से ४ कुबेर को भी ५ आश्चर्य होता था ॥ ७१ ॥ ६ व्यापारी ७ यमुना नदी के परले किनारे भाग गये ॥ ॥ ७२ ॥ ८ जुल्म करनेवाला क्रोध करके ९ बहुत मोती हीरे और माणिकों का विस्तार, अत्यन्त मूल्य वाले लाल १० पन्ना ॥ ७३ ॥ ११ सुवर्ण की मोहरें और अनंत रुपये, जडाव के भूषण १२ श्रेष्ठ रीति के कर्ण भूषण १३ किरीट (मुकुट) कितने ही शिवतिलक और १४ चूडामणि (मस्तक भूषण विशेष) १५ कर्णफूल (स्त्रियों के कानों का भूषण) अनेक नूपुर (चरणभूषणविशेष) ॥ ७४ ॥ १६ भुजबंध १७ अंगूठियां १९ कटिमेखला अर्थात् करधनी (कणगति) १८ प्राप्त की (लूटी) फिर बजाजों की २० दुकानें लूटीं जिनमें सण के, सूत के और २१ ऊन वस्त्रों के समूह थे ॥ ७५ ॥ २२ रेसमी पगड़ियें और साड़ियों के २३ समूह २४ ठंढ को मिटानेवाले २५ नवीन अपार थुरमे (दुशाले) अनेक अत्तारों के २६ बजार लूटे फिर २७ हाथी २८ घोड़े और कितने ही २९ खाने के पदार्थ लूटे ॥ ७६ ॥ दिल्ली में खेदकारक ३० हाहाकार शब्द हुआ तहां पुरसे ३२ दूर है अन्त जिसका ऐसी ३१ सेना निकली, इधर दक्षिण की ३३ सेना तो लूट कर रही थी और श्रीमन्त (दक्षिण का वजीर) सज्जित होकर ३४ युद्ध चाहता था ॥ ७७ ॥

यहँ सुनिय कम२दीखाँ वजीर, वलि कहिय निजामनमुलक बीर॥
अप्पन मग चुक्कि रु अग्ग आय, दिल्ली खल पंत्ते लैंन दांय ७८
पह आक्ख मुर लौ दल अभंग, पहुँचे अधारहिं जिम पतंग ॥
उततैं दल पत्तनसौंहु आय, इततैं नवाब दुव२हय उठाय ॥ ७९ ॥
मरहट्ठ लुट्टत प्रमत्त, मतिमल्ल मिच्छ दुहुँ२ओर पत्त ॥
मचि समर घोर समसेर मार, बजि निनंद बब अवक बिथार।८०।
धर धुरुत धुज्जि धावन धसक्कि, कुंडलि कपाल दरकिय कसक्कि ॥
कटि परत भोंह रद अधर कंध, किलकिलत मुंड नच्चत कबंध८१
डमरुक मँड्डु डाहल डमकि, घहरात ढोल पक्खर घमकि ॥
बबक्कारि करत बावन५२विलास, रच्चत जँहँ जुग्गिनि केलि रास८२
जितितितहिं मत्थ उडि परत जत्थ, तुंबा कि तैंग्ल अवधूत हत्थ ॥
चढि गगन टोप चमकहिं अनेक, तुटि जँगर जात तननकि तेक।८३।
सपें गिरत भिन्न बाहुले समेत, अहि पच५फन कि कचुक उपेत ॥
जिरहन बिच कढि दग फदक्कि जाँहिं, मानहुँ झखदासनं जालि माँहिं
कटि कटि गिरत कहुँ मुच्छ कई, रगे मृगनाभि कि दोज२चंद ॥

१पुनि २दक्षिण में प्राप्त हुए (गए) ३दिल्ली की फौज की रीति से ॥७८॥ जैसे पावर पर ४सूर्य पहुँचे तैसे पहुँचे ५ उधर दिल्ली शहर से भी सेना आई ॥ ७९ ॥ मरहठों को लूट में ६ असावधान (गाफिल) पाये और दोनों ओर से यवन ७अग्र ८ प्राप्त हुए ९ तरवारों की मार से घोर युद्ध हुआ और नगारे व तासे बजकर १० शब्द का विस्तार हुआ ॥ ८० ॥ ११ घोड़ों आदि की दौड़ से नीची बैठकर भूमि धुजी १२ शेषनाग का मस्तक दबकर फटा १३ बिना मस्तक के क्रियावान धड़ नाचते हैं ॥ ८१ ॥ १४ कापालिकों का वाद्य विशेष १५योगिनियें रासक्रीड़ा करती हैं ॥ ८२ ॥ १६तपस्वी अवधूत के हाथ से तूंबा गिरै तैसे १७कवचों के ऊपर तड़ाकार शब्द करके १८तरवारें टूटती हैं ॥ ८३ ॥ २०बाहुत्राण (दस्ताना) सहित १९हाथ कटकर गिरते हैं सो मानों कांचली २१सहित पांच फण के सर्प हैं २२लोहे की जालीवाले टोपों में केश निकल कर फड़कते हैं सो मानों २३धीमरों की जाल में से मच्छी जाती है ॥ ८४ ॥ कहीं पर टेढ़ी मूछों के २४ समूह कट कर गिरते हैं सो मानों २५ कस्तूरी में रंगेहुए द्वितीया के चन्द्रमा हैं

नागोद कट्टि कहुँ कढत गत्त, मो[2]चातरुतैं जिम गर्भ पत्त ॥ ८५ ॥
कंकट बिदारि प्रबिसत कटार, बिल बीच पन्नग कि मच्छ वार ॥
खंजर कढि पंजेर पार जात, सोनित सँन्यो सुंघ्रति छबि सुहात८६
मानहुँ गवाक्ष रंजदिन दिखान, कर पट्टु क्रिया कि जावक चुवान
द्विपि गुरज मत्थ पारत दरार, कीर कि तरबूजन मुट्ठि मार ॥ ८७ ॥
चलैं असिन होत गज कुंभ चीर, जगदीस भत्त जुत्त कि करीर ॥
सोनित तिरात धमनिनं समूह, जल अरुन जानि अलगई जूह८८
सरघा सम छुट्टत बिसिख ब्रात, मधु जाल छत्त मत्थन बनात ॥
खिचिजात सरासन करन कानि, जमराज लपनं जमुहात जानि८९
मिलिजात कोटि लस्तकं मचक्कि, सुकुमार नारि लंक कि लचक्कि॥
तुरखीर तुट्टि उड्डत अमाप, केकीनके कि चंदक कलाप ॥ ९० ॥

१ पेट का कवच (पेटी) कटकर शरीर निकला है सो मानों २ केला के वृक्ष से भीतर का पत्ता निकलता है ॥ ८२ ॥ ३ कवच फाड़ कर कटार प्रवेश करते हैं सो मानों बिल में सर्प घुमता है किंवा ४ पानी में मच्छ घुसता है ६ रुधिर से ७ भीगाहुआ खंजर (छुरीविशेष) ५ अस्थिपंजर (धड़) के पार जाता है सो ऐसी अत्यन्त शोभा देता है ॥ ८६ ॥ जैसे कि १० क्रियाचतुर नायिका अपना ९ रजस्वला होना दिखाने के लिये जावक (लाल रंग विशेष) से ११ टपकता हुआ हाथ ८ झरोखे से दिखाती है अर्थात् अपने जार को जावक का टपकता हुआ हाथ दिखाकर व्यंग्य से अपना रजस्वला होने का संकेत करके उस जार के आने का निषेध करती (रोकती) है ॥ ८७ ॥ १२ चपल तरवारों से हाथियों के कुंभस्थलों की चीरें होती हैं सो मानों जगदीश के १३ भात सहित १४ कलश की चीरें होती हैं १५ नाड़ियों (नसों) का समूह रक्त में तिरता है सो मानों १६ लाल पानी में १७ पानी के सर्पों का समूह तिरता है ॥ ८८ ॥ १८ मधुमक्खियों के समान तीरों के १९ समूह छूटते हैं सो मानों २० मस्तकों को मुवाल के छाते बनाते हैं २१ धनुष कानों पर्यन्त खिचता है सो मानों यमराज २२ मुख से २३ जंभाई (उबासी) लेता है ॥ ८९ ॥ धनुष की २४ मूठ मचक कर दोनों गोशे (नोकें) मिलजाती हैं सो मानों सुकुमार स्त्री की कमर लचकती है २५ भाथा टूटकर अमाप बाण उड़ते हैं सो मानों कितने ही २६ मयूरों के चंद्रों (चंद्रवों) के समूह

सधत सर धनु बिच यों सुहात, दंष्ट्रा कि काल आनन दिखात ॥
खग झरत फुल धारन खनकि, तुटिपरत चाप चिल्लन तनकि ९१
ढालनपर पप कटि ठहरि जात, कच्छप पर मंदर सम सुहात ॥
छलिजात रुहिर घायन छछकि, छुटिजात प्रान कहुँ लोह छकि ९२
जिन वंदन इकनाँरिन उछिष्ट, चुवत श्रृगाल तिन उदित इष्ट ॥
मनि कनक मच निंदक अमान, ते सूर धूर सज्जा सयान ॥ ९३ ॥
वहु वीर वैठि अच्छरि विमान, ताडंवे उपेत सुनि गान तान ॥
चित मुंदित हारि गलवाँह चाहि, रँव कवध लरत पिक्खत सिराहि ९४
हिय तिरत अंत्र जुत निकसि हाल, मानहुँ सनाल लोहित मृनाल
उर गिद्ध वैंवा हित धसत आय, वैठे गृही कि वंलभी वनाय ॥९५॥
भट गिरत पाय अटकत रँकाव, घुम्मत घने कि उद्धत सँराव ॥
तुटिजात तग मैंजरत पलान, कटि परत वाँजि गैंल मोथें कान ।९६।
काढिजात कुतें पक्खर विदारि, बढिजात रुहिर जिँमजल बारि ॥

उड़ते हैं ॥ ९० ॥ धनुष के बीच में सधान किया हुआ १ बाण ऐसी शोभा देता है मानों यमराज के २ मुख में दाढ़ दीखती है, तरवारों की धारों पर धारें खणक कर अग्नि कण उड़ते हैं ३ प्रत्यंचा तणक कर धनुष टूटते हैं ॥ ९१ ॥ कितने ही चरण कट कर ढालों के ऊपर ठहर जाते हैं सो कमठपर ४ मंदराचल के समान शोभा देते हैं ५ रुधिर ॥ ९२ ॥ जिनके ६ मुख ७ एक स्त्री के ८ उच्छिष्ट थे उनके मुख ९ भाग्य उदय होने से गीदड़ चाटते हैं "यह इष्ट उदय होना शृगाल का विशेषण है" मणियों से जड़े हुए सुवर्ण के मंचों (पलंगों) की निन्दा करनेवाले व वे वीर मान रहित १० धूल की शय्या पर सोते हैं॥९३॥ ११ नृत्य सहित १२ प्रसन्न चित्त से १३ अपने धड़ को लड़ता हुआ देख कर प्रशंसा करते हैं ॥९४॥ तुरत का निकला हुआ हृदय आंत सहित गिरता है सो मानो नाल सहित १४ लाल कमल तिरता है १५ चरबी के लिये गीध पेट में घुसते हैं सो मानो गृहस्थी १६ सबसे ऊपर का मकान बनाकर बैठा है "वलभीकूटागारे" इति शब्दार्थचिंतामणि ॥९५॥ तिरते हुए वीरों के चरण १७ पागड़ों में अटक जाते हैं सो मानों मंदिरों में थंभों के ऊपर १८ श्रावकों (सरावगियों) के देवता ऊंचे झुकते हैं १९ जलते हैं २० घोड़ों के २१ गले २२ फुरणे और कान गिरते हैं ॥९६॥ पाखरों को फाड़कर २३ भाले निकल जाते हैं और २४ जैसे फुहारे से पानी

कटि असिन केतु उड्डत अकास, मानहुँ मयूर गन भद्द मास ।९७।
इम परत खग्ग बहु भटन अंग, भ्रमत कि पटीर तरु पर भुजंग ॥
इम मचिय घोर आहव अनूप, बहु कटि दक्खिन भट हुव बिरूप९८
उडि चलिय अँग्गि बढि ओर ओर, जमुना जल सुक्किय ताप जोर॥
संकुलिय मच्छ खलभलि सुमार, पन्नग कि आहिं तुंडिक टिपार९९
यहँ भयउ देव दिल्लीस ओर, घन कटिय जंग मच्चहु घोर ॥
लूटहु समस्त लिन्नी छुराय, दक्खिन बिहाल किय प्रबल दाय १००
भ्रियमंत भीत गति मति बिसारि, भज्ज्यो सु क्यों न बंभन भिखारि
इहिं भजत भज्यो दक्खिन अनीक, घनबिकल कहां कहिय घनीक१०१
मूरखन मिच्चु सोध्यो न मत्थ, बनि कांदिसीक भरि जियन वत्थ ।
उद्धाव तांव बिब्भल अनेक, खुंचि मरिय भानुजा गलनि केक१०२

॥ दोहा ॥

मनतैं मूढ जुदे नहे, जियन मरन अंत जानि ॥
संघन पंक गडि मरिय सब, अंककसुता बिच आनि ।१०३।

निकलै तैसे रुधिर निकलता है ? तरवारों से उड़कर ध्वजा आकाश में उड़ती है सो मानों भाद्रपद मास में मयूर उड़ते हैं ॥ ९७ ॥ वीरों के शरीरों पर तरवारें ऐसी पड़ती हैं जैसे २ चन्दन के वृक्ष पर सर्प पड़ें ३ उपमा रहित युद्ध ॥ ९८ ॥ ४ अग्नि ५ भरगये ७ मानों टिपारों में सर्पों के फण ६ हैं ॥ ९९ ॥ ८ प्रबल रीति से ॥ १०० ॥ ९ भय से युद्ध की गति और बुद्धि को १० भूलकर भागा सो ११ क्यों नहीं भागे १२ भिक्षा मांगने वाला ब्राह्मण था अर्थात् उसका भगना यथार्थ था १३ सेना ॥१०१॥ उन मूर्खों ने यह नहीं सोचा कि मृत्यु तो १४ मस्तक पर है जिससे भगकर कहां जावेंगे परन्तु १५ भयव्रुत होकर भागे (भयभीत होकर; अथवा क्या करूं, कहां जाऊं इसप्रकार घबराकर भागे) और १६ जीने की चाह (भुजों) से भरा १७ उस भागने में अनेक विह्वल होकर कितने ही १९ जमुना नदी की कलल में (दल दल में) १८ गड़कर मरगये ॥ १०२ ॥ वे मूर्ख मन से जुदे नहीं थे अर्थात् मन साथ चलने वाले थे और मन का धर्म डरने का है २० मरने जीने को सत्य जानकर (वेदान्त के मत से मरना जीना स्वप्नवत् है) सब २२ जमुना नदी के २१ गहरे कीचड़ में आकर गड़ मरे ॥ १०३ ॥ हे बुद्धिमानो! सुनो, यह

मनोहरम् ॥

सुनौरे सयानैं त्रिगुनन को तमासो जाहि,
वस्तुतें विचारैं ज्ञान ज्वलन प्रचारैं हैं ॥
सिद्धको न साधन कहौं मैं कोन रीति वहै,
कारनन काज श्रो दुहूँमैं धुर धारैं हैं ॥
वाहि जे नजानैं याहि सत्य करि मानैं यातैं,
झूठे सुख दुक्ख मानि वेद्यकौं बिसारैं हैं ॥
जानैं अनजानैं की परिच्छा पारखेवी जानि,
डारिबेकी ठोर धीर वीर देह डारैं हैं ॥ १०४ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम सेनहिं मरवाय भैरकि भज्जिग द्विज कातर ॥
अवसेसन सजि सत्थ मुरिग प्रतिमुख भय माछर ॥
तर १ बर २ अन्त्यानुप्रास १ ॥
पिक्खि सिद्दकौं रयार पटकि उच्चार पलायउ ॥
किरिलिसों गव्वन काज अनखि कोटापर आयउ ॥
चालीस४०दिवस तोपन तरकि लरिरुप्पय दसलक्ख१०००००० लिय

संसार सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण का तमाशा है जिसको वेदान्त से विचारैं तो ज्ञान की अग्नि इस को जलाता है, और सिद्ध जो परमेश्वर है उसका कोई साधन नहीं है अर्थात् जैसे इस जगत् का साधन तीनों गुण है जिस को मैं कैसे कहूँ इस में गीता का भी प्रमाण है कि "यो वुद्धे परत स्तु स " यह किसी का न तो कारण है और न कार्य है और इन दोनों की धुर को ही धारण करता है उस परमात्मा को जो नहीं जानते हैं वे इस संसार को सत्य मानते हैं इस कारण झूठे सुख और दु ख को मानकर जानने योग्य (परमात्मा) को भूलते हैं उस परमात्मा को जानने और नहीं जानने की परीक्षा करने की पहिचान यही है कि जहां शरीर डालने का स्थान होता है वहीं धीर और वीर डालते हैं ॥ १०४ ॥ १ चमक कर २ कायर ब्राह्मण भागा ३ बाकी के लोगों का साथ ४ पीछा मुड़ा ५ विष्टा डालकर भागा ("लींद पटक कर भागा" यह राजपूताना की लोकोक्ति है) और ६ लोमड़ी (लूँगती) से ७ गर्व करने के काम पर क्रोध करके

डरपात अलप सत्वर दुमति द्विज वह दक्खिन संचरियं।१०५।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे उदयपुरागतसिताराधीशच्छत्रपतिसाहूमन्त्रिबाजेरावपेसवाख्यस्य महाराणासनाधस्तादुपवेशन१बाजेरायस्य महाराणादण्डादान २ भम्भोलावग्रामान्तिकबाजेरायजयसिंहमिलनोभयैकासनाधिवेशन ३ ज्ञातदिल्लीयुद्धसमयाभावजयसिंहमन्त्रबाजेरायपुनर्दक्षिणादेशगमन ४ श्रीमंतपेसवामिलनहेतुपरिज्ञातयवनेन्द्राप्रसादजयसिंहस्य दिल्लीं प्रति ससैन्यबाजेरायपुनराकारण५दिल्लीबहिःप्रदेशसमराङ्गणयवनजयमहाराष्ट्रपराजयकथन ६ अवशिष्टसैन्यसहितप्रत्यावृत्तदण्डितकोटामहारावबाजेरावस्यदक्षिणागमनवर्णनमेकचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४१ ॥

आदित एकोनाशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २७९ ॥

॥ षट्पात् ॥

इतं दिल्लीस वजीर जित्ति संगरै[३] मरहट्ठन ॥

---

१ छोटों को शीघ्र डराता हुआ वह दुर्मति २ गया ॥ १०५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुंदी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, सितारा के राजा छत्रपति साहू के मंत्रि बाजेराव पेसवा का उदयपुर आकर महाराणा की गद्दी नीचे बैठना १ महाराणा से बाजेराव का दंड लेना २ भंभोलाव नामक ग्राम के समीप महाराणा जयसिंह से मिलना और दोनों का एक गद्दी पर बैठना ३ दिल्ली से युद्ध करने का समय नहीं जान कर जयसिंह की सलाह से बाजेराव का पीछा दक्षिण में जाना ४ श्रीमन्त बाजेराव पेसवा से मिलने के कारण बादशाह को अपने पर अप्रसन्न जानकर राजा जयसिंह का बाजेराव पेसवा को सेना सहित फिर दिल्ली पर बुलाना ५ दिल्ली शहर से बाहिर युद्ध होकर यवनों का जय और मरहठों का पराजय होना ६ बचीहुई सेना से पीछे आते बाजेराव का कोटा के महाराव से दंड लेकर दक्षिण में जाने के वर्णन का इकतालीसवां ४१ मयूख हुआ और आदि से दो सौ उनासी २७९ मयूख हुए ॥

३ युद्ध में

हरखित गयउ हजूर साह बहु दियउ रीझ रन ॥
इक इक प्रति आदाब उचित सब लिय सलाम करि ॥
दूजे दिवस कलीजखान हुव त्यों तहँ हाजरि ॥
याकोंहु देत्त वैभव अतुल लिय सब पृथक सलाम नत ॥
हसि ताहि खानदोराँ कहिय बुड्ढा बदर बेर नचत ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि साह रु परिखद सकल, मुसकिंय आसव मत्त ॥
अंट्टाट्टहु कतिकन करिय, त्रंपा न रक्खिय तेत्त ॥ २ ॥
खानकलीज नबाव यह, जथा यावनी जीमं ॥
जिहिं अग्गैं गजसिंह जुत, मखे दलावर भीमं ॥ ३ ॥
जिहिं अक्खिय यह बुद्धि जो, रहिहै साह तिहाँर ॥
बेगहि बदर नच्चिहै, पुर दिल्लिय प्राकार ॥ ४ ॥
यह सुनि साह सिराहि कछु, पच्छो पापिय रोस ॥
पै पापिनें बिगरयो समय, सो न लखैं अपसोस ॥
मोजदीनसौं इकसे, भये पच५ दिल्लीस ॥
मत्त काापिसायनें मुदित, हिय इच्छित रतही सैं ॥ ६ ॥

१ अदब के साथ (सलाम) २ दिया तुलना रहित (बहुत) वैभव ३ जुदा जुदा ४ झुककर सलाम करके ५ श्रेष्ट (अच्छा) नाचता है ॥ १ ॥ ६ सब सभा ७ मुसकराये (मंद हास्य से हसे) ८ मद्य में मस्त ९ कितना ने बड़े स्वर से भी हास्य किया १० लज्जा ११ रहा ॥ २ ॥ १२ जिस प्रकार यावनी (फारसी) भाषा में १३ जीम अक्षर होवे तिस प्रकार अर्थात् बड़े पेटवाला (फारसी में जीम अक्षर ऐसा होता है) जिसने पहिले नरवर के राजा और कोटा के महाराव गजसिंह सहित १४ दिलावरखां और १५ कोटा के महाराव भीमसिंह को मारे थे ॥ ३ ॥ १६ जिसने कहा कि १७ तेरा बादशाह इस बुद्धि से रहेगा तो दिल्ली नगर के १८ कोट पर शीघ्र ही बंदर नचेंगे ॥ ४ ॥ १९ उन पापियों का २० चिंता है ॥ ५ ॥ २१ मद्य में मस्त होकर प्रसन्न रहते थे २२ वे (बादशाह) हृदय में २३ मैथुन ही चाहते थे अथवा 'हीस' शब्द यावनी भाषा के 'हिर्स' का अपभ्रंश है तो इसका अर्थ चाहना है सो मैथुन की अधिकता बताने के अर्थ वीप्सार्थ में एकार्थवाची दो शब्द दिये हैं ॥ ६ ॥

मनोहरम् ॥

गानमैं गडे जे बाल[1]कानमैं बडे जे बारु-
नीके बहकायैं[2] तैं मुसंडन पनैं लगे ॥
इष्यतकी रगनि रजीली जो निहारैं ताहि,
बलन बुलाय रुपात ठेडे ठेडे चाखनैं लगे ॥
कथितं[3] कुरानको बिसारि बैठे बालिमैं[4],
भनैं जो रीतिकी तो चुप[5] चूड भाखनैं लगे ॥
दिल्लीके घरानैं उलटी करि इलाहसौं वें[6],
बुलिके[7] ठिकानैं पंडं[8] पायु[9] राखनैं लगे ॥ ॥७॥

दोहा-जुमाँ[10] महज्जत जात नन, सुरा[11] मत्त मठ साह ॥
रहैं सुधि न दिन रत्ति[12] की, लहैं सुरत रस लाह ॥ ८ ॥
इक दिन काजिय दिय अरज, उचित महज्जत आन ॥
कोऊ बिधि बैठो सु चित, जत्थ[13] बिचारिय जान ॥ ९ ॥

पद्धपात् ॥

तहिँन[14] रचि आपानं[15] अधिक आसव बनि उद्धत ॥
संगहि लै संडं[16] गन मत्त सब पत्त[17] महज्जत ॥
बिरचि बिरचि गलबाँह साँह[18] जुत रबहिँ[19] नमैं सब ॥
यह को रीति अपुब्ब[20] तरकि[21] जंपिय काजी तब ॥
सुनि हसि रु एह अक्खिय सबन रे नहिँ तू जानत रुचितं[22] ॥

---

१ बालकों (मूर्खों) में २ मद्य के बहकाये हुए ३ कुरान का कहना (उपदेश भूलगये) ४ मूर्ख ५ मूर्ख कहने लगे कि चुप रहो ६ अब आप परमेश्वर की आज्ञा से विरुद्ध करके ७ वे योनि के स्थान में ८ नपुंसकों की ९ गुदा को रखने लगे अर्थात् स्त्रियों के स्थान में नाजरों से गुदा मैथुन करने लगे ॥ ७ ॥ १० शुक्र वार के दिन; अथवा बड़ी महजत में ११ मद्य में मत्त १२ दिन रात्रि की ॥ ८ ॥ १३ जहां (मस्जिद में) जाना विचारा ॥ ९ ॥ १४ उस दिन १५ पानगोष्ठी (मतवाल) रचकर १६ नाजरों अथवा हींजड़ों के समूह को साथ लेकर मस्त होकर मसजिद में १७ गये १८ बादशाह सहित सब १९ खुदा को झुके वहां २१ क्रोध करके काजी ने कहा कि यह कौनसी २० अपूर्व रीति है २२ सुन्दर

माशूकं जनत आसिक मिलन आदि रीति सुनियत उचित॥१०॥

दोहा ॥

काजी तबहि कुरानकी, अप्पनें सिर दिय उट्ठि ॥
आयउ आलय सबन सह, रचक साहहु रुट्ठि ॥ ११ ॥
नीति रहित दिल्लिप नेपर, इम मच्चिग अधेर ॥
कोउ सुनत न काहुकी, घर घर हा रव घेर ॥ १२ ॥
कछुकं खानदोरों कहिय, साह धुनिय हसि सीस ॥
पातें खानकलीज अब, रचत दुहुँनपर रीस ॥ १३ ॥
तिहिं वजीर पलटाय लिय, खानकमरदी तत्त ॥
बहुरि महाब्दतखान प्रति, पठयो पूरब पत्त ॥ १४ ॥
खानसहादत हा यहै, हुब्बर पूरब देस ॥
हाजरि सूबा च्यारिहै, पूरबके जिहिं पेसें ॥ १५ ॥
ता प्रति खानकलीजके, पत्ते सैंतर पत्त ॥
इहाँ समय कछु औरभो, आवहु कोउ न अंत्त ॥ १६ ॥

॥ सोरठा ॥

लिपउ वजीर मिलाय, अप्पन तीनउहि इकहैं ॥
सेन सम्हारहु आय, हनहिं खानदोरहिं सहज ॥ १७ ॥
रहें निरंकुस होय, पटकि जोर कछु साह पर ॥
सेनापति तुम सोप, हम वजीर अब इक हुव ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

हम तुम सम्मलि हैंनहिं खानदोरों कपटी खल ॥
तब सेनापति तुमहिं साह करिहै गिनि सब्बल ॥

---

[1]माशूक लोगों से आशिकों का मिलना प्रीति करनेवाले को आशक और जिस पर प्रीति की जावे उसको फारसी में माशूक कहते हैं)[2]योग्य॥[1]०॥[3]घर में[4]क्रोध करके॥[1]१॥[5]नगर[6]मचा (हुआ) ७ हाहाकार शब्द ॥ [1]२ ॥ ८ कहुए [9]सचन ९ कलीजका ॥ ११ ॥ १० कमरदीखा का [11] पत्र ॥ [1]४ ॥ १२ जिसके आधीन ॥[1]५॥[13]शीघ्र पत्र गये[14]यहां ॥ १६ ॥ [1]७ ॥ १८ ॥ १९ सामिल होकर मारेंग

सु सुनि सहादतखान सेन सज्जित पूरब सन ॥
लगि सेनापति लोभ आय दिल्लिय चहि अप्पन ॥
अट्ठ सत८००तोप जिहिँ बसि अतुल दगतबेर कोसन दहत॥
लहि एह हेतु[1] ताकँहँ खलक[2] कँहर[3] भाड़भुंजक कहत॥१९॥

॥ दोहा ॥

आय सहादतखान वह, मिलि कलीज सह मोद ॥
इक्क वजीर रु अप्प व्है, बिरच्यो कपट बिनोद ॥ २० ॥

॥ षट्पात् ॥

नादरसाह सु नाम तपत ईरान जवन इत ॥
प्रबल सबहि प्रत्यंत[4] जाहि मन्नत जित ही तित ॥
गाजुद्दीज कलीज भाड़भुंजक जुत भाये ॥
बुल्लन[5] नादरसाह पत्त[6] ईरान पठाये ॥
आवहु निसंक सुरताँन[7] इत तिय दिल्लिय तुमकोँ चहत ॥
सम्मुह चलाक कोउन सुभट मचत दंद[8] दिन दिन महत२१

॥ पद्धतिका ॥

यह सुनिय बत्त पुर इस्पहान, अति बढिय सोर जनपद[9] इरान ॥
प्रत्यंत[10] मुख्य बुलवाय पंच, पँहु[11] रचिय साह नादर प्रपंच ॥ २२ ॥
तामाचकुली नामक वजीर, बलि[12] मिलिय अली[13]निसुरुत प्रबीर ॥
सम्मन पुनि कम्मन कुतब सूर, गाजी हुसैन हाजी गरूर ॥ २३ ॥
रुस्तम सलेम सेरन रहीम, कालन कमाल रोसन करीम ॥
मारूफ मलिकमहमूद मीर, आतमतअली सय्यद सधीर ॥ २४ ॥

---

१ इस कारण से उसको २ संसार ३ जुल्म करनेवाला भड़भूज्या कहता है ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ म्लेच्छ देशों में (इस ग्रन्थ में आर्यावर्त के सिवाय सब देशों को म्लेच्छ देश माने हैं और अन्य आर्ष ग्रंथों का भी यही मत है) ५ नादिरशाह को बुलाने के लिये ६ पत्र ७ हे सुलतान (बादशाह) ८ उपद्रव वा युद्ध ॥ २१ ॥ ९ ईरान देश में १० म्लेच्छ देश के ११ उस प्रभु नादिरशाह ने ॥ २२ ॥ १२ पुनि १३ निसुरुतअली ॥ २१ ॥ २४ ॥

दाऊद[1] सेख इसहाकदीन, मँहदी रु मुहम्मद मौनदीन ॥
कदीन १ नदीन२ अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥
अहमद नियाज मसुऊद आय, सादी कुरेस मीरन सुभाय ॥२५॥
गालिब हवीब लानन गुमान, पीरोज फतैनसियब पठान ॥
आरास हसन यूसफअलीहु, दरियावखान सुनि मोजदीहु ॥ २६ ॥
याकुबअली रु अम्मन इमाम, नासिर असद पुनि नूर नाम ॥
इत्यादि साह भट वर अत्रस्त[1], सह सचिव[2] किन्न इकत समस्त २७
सब भटन साह नादर सुभाय, दिय तव कलीज कग्गर[3] दिखाय ॥
कहि अब न जोर मुगलन निकेत[4], दिल्लिय कटाच्छ[5] मेम ओर देत२८
अवरगजेब मिरजा मरत, धर हिंदु धव न धारक धरत[6] ॥
सचिवन नवाब भट सानुकूल, मिटि गय रसूल[7] मजहब समूल २९
गायक[8] इन्योंहि आलम अजान[9], पुनि मोजदीन अति मद्य पान ॥
मिलि बहुरि हिंदु सय्यद बिमंद, फूरुक[10] गहि मार्‌यो पासि फंद३०
मुगलेस दोय २ पुनि साल मद्ध्य, जाहलन[11] हने जे इन अवद्ध्य[12] ॥
सय्यद अधीन पुनि तप नसाय, मिरजा समुहुम्मद पट्ट पाय॥३१॥
सय्यदहिं[13] मारि पुनि लोभ सीर, तूरानि मुहुम्मद भो वजीर ॥
जासों इक बम्भन[14] पटकि जोर, हिंदुन कर बोर्‌यो नद हिलोर ३२
जिततित गिनीम दव्वत जमीन, कटकन[15] बढि रेवां[16] अमल कीन॥

॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ १ निर्भय २ वजीर सहित ॥ २७ ॥ ३ कलीजखां का पत्र ४ मुगलों के घर में ५ मेरी तरफ नजारे मारती है ॥ २८ ॥ ६ हिंदुस्थान की भूमि नहीं धारण करने योग्य पति को धारती है; अथवा यह धरा किसी हिंदु को पति बनाना चाहती है ७ पैगंबर का नाम है ॥ २९ ॥ ८ कलावंत ने ९ बहुत मूर्ख १० फुरुकशियर बादशाह को, पासी का फंद डालकर ॥ ३० ॥ ११ मूर्खों ने मारडाले १२ इनसे नहीं मारे जाने योग्य थे, अथवा ये बादशाह को मारने वाले इन पिछलों से नहीं मारे गये ॥ ३१ ॥ १३ हुसन अली नामक सय्यद को मारकर १४ दया बहादुर नामक ब्राह्मण ने ॥ ३२ ॥ १५ फौजों ने १६ नर्मदा नदी तक

अब तत्थ कमरदी हुव वजीर, सम्मलि कलीज लेय विन रारीर ३३
रक्खैं न खबरि सठ रत्ति दीह, लुप्पिय सम्हारि नय लज्ज लीह
चाकर चहंत मालिक मिटान, इहिं इच्छत मालिक अनुग हान ३४
मिरजा सु मुहुम्मद तिन समंत, जो कहत जाहिको मन्नि लेत ॥
नहिं लखत अंध किम बद रु नेक, कहिये प्रमाद ऐसे कितेक ३५
गनिकान गुँमर आसिक अनंत, हीरान जिनौं सु अंत हत हत ॥
अधिकार गायकँन दिय अनीति, पटु नरनसौं वं नहिं नेक प्रीति ३६

पावनीभाषा ॥

मस्तदिलाँ अज्जामैं शराब दिल्ली च्यकुनद बस् बे क्वाब ॥
सुहबत् बदाँ बदाना दिलाँन ताजीम तहम्मुल् मुकाबिलाँन ३७
गहदरून गुजारद् शहर बाब शैतांश नवीनद् रह सवाब ॥
अफ्वाजि दखन् आमद् बजोर बुजराय कलाँ गर्दीद कोर ३८
किश् मुल्क कसाँरापासबाँन मरदम् बजमानँद् अमाँन ॥
इन्साफ अदल रफ्तनह बज्पोर अजखास आम आमद् बशोर ३९

प्रायोदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

---

१ विना नीति का बदमाश ॥ ३३ ॥ २ चाकर का मारना ॥ ३४ ॥ ३ बुरा ॥ ३५ ॥ ४ घमंड ५ हृदय (दिल) से ६ मैथुन में ७ प्रीति युक्त हैं सो खेद की बात है ८ कलावंतों को ९ चतुर मनुष्यों से १० अच ॥ ३६ ॥

शराब (मद्य) के प्यालों से दिल मस्त हैं, दिल्ली क्या करै बहुत बेगोब है, बुरे लोगों की सोबत (संगति) अकलमंदों (बुद्धिमानों) के साथ है, भले मनुष्य भी उस बुरी सोबत का आदर करते हैं और उस सोबत को सहन करते हैं ॥ ३७ ॥ शैतान जो नेकी का रस्ता नहीं देखता है वह शहर के दरवाजे को नहीं छोडता है दक्षिण (मरहठों) की सेना (फौजें) जोर से आगई हैं और बडे बडे-वजीर अंधे होगये हैं ॥ ३८ ॥ मुल्क का और मनुष्यों का कोई रखवाला (रक्षा करनेवाला) नहीं है और जमाने में कोई अमन (चैन) में नहीं है न्याय जुल्म से जाता रहा है "यहां अदल और इनसाफ, दोनों एकार्थवाची शब्द न्याय चलेजाने की अधिकता दिखाने के अर्थ लिखे हैं" और बडे व छोटे सब पुकार (त्राहि त्राहि) कर रहे हैं ॥ ३९ ॥

गोजा निमाज कलमाँन रेत्त, मेंहगीन[2] संग जड सतत मत्त ॥
रेवाँ रु अटक बिच पृथुल राज, सब नेय बिहीन निरत समाज ॥४०॥
मालव लिय दक्खिन दलन आय, दिल्लीलग लुट्टिय दुसह दाय ॥
निचेत मुगल बासर बितात, दल सजहु इहाँ न रोधक दिखात ४१
तामाचकुली यह सुनि वजीर, बुल्लिय सिराहि भुज ठोकि बीर ॥
जुलिकरन सिकंदर अग्ग जाय, जित्तिय जर्मान हिंदुनइराय॥४२॥
तैमूर बहुरि गोरी पठान, हत्थन सत जित्तिय हिंदवान ॥
बहु पुरत पठानन रहिय राज, सो लिय बहोरि मुगलन समाज४३
अग्गैं गुमाय दिल्लिय अनीति, भज्ज्यो जु हमायों मुगल भीति॥
आयो सु इहाँ पुर इरपहान, सुरतान मदति दिन्नी समान ॥ ४४ ॥
ईरान कटकैं तब जाय संग, लै दिपउ राज जुरि जीति जंग ॥
सुरतान हिंतु इम करन जोरि, दिल्ली सु हमायों लिय बहोरि ४५
पुनि ता सुत अकबर पट्ट पाय, सो गिनत रह्यो सिरपर सहाय ॥
ताके सुत सुतके सुत बहोरि, अवरंग पट्ट लिय जग जोरि ॥ ४६ ॥
ताकैहु तनय अकबर सनाम, आयो सु सरन अत्थहि अधाम ॥
पुनि मरिय अत्थ कछु रोग पाय, दिल्लीहि न तो देते मिलाय॥४७॥
यों मुगल याहि घरके गुलाम, दिन्नों सु रक्खि नहि सकत धाम
तो अब जमीन अप्पन सम्हारि, बधहिं प्रपंच आपस बिथारि॥४८॥
गोगन सकैं न जो ग्वाल रक्खि, अवरहिं तब अप्पत स्वामि आक्खि
कृखि गन सेकादिक जो करै न, तो भू क्रिया पटुन उचित देन॥४९॥

[1]प्रीति नहीं है [2]चद्रमुखी नायिकाओं के साथ (फारसी में चन्द्रमाका नाम महर है) [3]निरंतर [4]नर्मदा [5]यहां [6]नीति बिना॥४०॥[7]दिन [8]रोकनेवाला यहां नहीं दीखता ॥४१॥[9] आग ॥ ४२ ॥[10]अपने हाथों से [11] पीढियों तक [12] समूह ने॥४३॥[13] मान सहित ॥ ४४ ॥ [14] सेना ईरान के पादशाह [15]से [16]हाथ जोड कर ॥४५॥ ॥ ४६ ॥ उस ओरंगजेब का [17]पुत्र [18]बिना स्थान होकर [19] यहां ॥ ४७ ॥ [20] दिया हुआ घर नहीं रख सकते हैं ता [21]हुक्म फैलाकर॥४८॥[22]गउओं के समूह को [23]किसी अन्य को सोंपता है [24]कर्षक लोग सींचने आदि खेती का कार्य नहीं करै तो [25] भूमि की क्रिया में चतुर होवे उन कास्तकारों को देना उचित है

जो रक्खि सकहिं तुम हुकम जोरि, ग्रैहैं तो दिल्लिय दे वहोरि॥
तामाचकुली यह कहिय*तत्थ, सुनि साजिय साह नादर †समत्थ५०

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे खानदोरांकटुवचनहेतुयवनेन्द्रविरुद्धकलीजखांखानदोरांमरणोपायकरण१ मद्यपयवनेन्द्रमुहुम्मदशाहनपुंसकासक्त्यादिनिमित्तनिन्दनदिल्लींप्रतीशानाधीशनादरशाहाह्वानार्थकलीजखांपत्रप्रेषण३ उक्तपत्रपठननादरशाहदिल्लीसमाक्रमणसैन्यसज्जनवर्णनं द्वाचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४२ ॥
आदितोऽशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २८० ॥

॥ निःशाणी ॥

नादरसाह इरानके अब सेन सजाया ॥
लग्गा घाय निसानपैं[1] घन जानि घुगाया ॥
उर अट्ठौं दिकपालकैं नैटसाल[2] खुभाया ॥
हाक नकीबाँ हल्लकौं दरकुंच सुनाया ॥ १ ॥
जंगी डैरु डमंकिया त्रंबक[3] त्रहकाया ॥
ईरानी भट उप्फने बैंपु[4] सज्ज बनाया ॥
टोप बकत्तर जालिका[5] रन ओप रचाया ॥
बेबे[6] तुग्गस बंधिकैं कटि[7] खग्ग कसाया ॥ २ ॥

॥४९॥ * तहां † समर्थ ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में खानदोरां के कटुवचन के कारण कलीजखां का बादशाह के विरुद्ध होकर खानदोरां को मरवाने का उपाय करना १ मद्यपी बादशाह मुहुम्मद शाह की नपुंसकों से आशक्त होने आदि की निन्दा २ ईरान के बादशाह नादरशाह को दिल्ली पर बुलाने का कलीजखां का पत्र भेजना ३ उक्त पत्र को पढकर नादरशाह के दिल्ली पर सेना सजने के वर्णन का बियालीसवां ४२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अस्सी २८० मयूख हुए॥

१ नगारों पर २ नहीं निकलै ऐसा साल चुभा ॥ १ ॥ तासे ३ बजे ४ शरीर को ५ जाली (पाखर) ६ दो दो भाथे ७ कमर पर खड्ग बांधे ॥ २ ॥

वे वे चाप बहादुरौं फटकारि बजाया ॥
तद्दिन देस इरानमैं नर बाजि नमाया ॥
के अफगान पठानके मुगलान[2] मिलाया ॥
बलखी कज्जलबास के छौहैं छक छाया ॥ ३ ॥
अरबी रूसी उजबकी हरखाय हकाया ॥
खपसी खूमी खूबही रन सज्ज सुहाया ॥
आतसबाजी अफससी क्रम वाई कहाया ॥
आरमनी सीधी इतैं आदेन उम्हाया ॥ ४ ॥
फ्रास इतालिहु उप्फने समसेर सजाया ॥
खधारी जारी खरे वहलीम बुलाया ॥
ओलदेजी उज्जले कर मुच्छ मिलाया ॥
रन तिब्बत तातारके दातार दिखाया ॥ ५ ॥
वीर बुखारी काबिसी रसवीर रचाया ॥
कायेनी अरु कासिदी लरने तिं लुभाया ॥
यूनानी रु यहूदिया सब सग सिधाया ॥
गालीली अरु गिंगिनी धर लौन धकाया ॥ ६ ॥
जद्दाके अरबी जिते मक्का मन लाया ॥
काजिदके अरु काबली सह सेन सजाया ॥
तूरान रु हीरातके मीरात मिलाया ॥
तिगरीके रु तिदोरके छक जोर छलाया ॥ ७ ॥
तत्ते तुरक त्रिपोलिके कत्ते कसिआया ॥
हल्ले इम लक्खौं जवन दिल्ली करि जाया ॥

---

१ उस दिन २ मुगल ३ पलख देश के (यहां से लेकर सात के छन्द तक कहीं देशों और कहीं शहरों के नामों से वहां बसनेवालों के नाम हैं) ॥ ३ ॥ ४ प्रशंसा के वचन ॥ ४ ॥ ५ इटलीवाले ॥ ५ ॥ ६ ते (वे) ॥ ६ ॥ ७ यवनों के तीर्थ स्थान का नाम है ८ मीर सय्यद का खिताब है ॥ ७ ॥ ९ ताते (चपल) १० खड्ग ११ स्त्री बनाकर

पंच निमाजी पूत जे बल धर्म बढाया ॥
केन मुहम्मद निजनवी रब्ब केन रटाया ॥ ८ ॥
के बुल्ले इसहाक ओ दाऊद दिपाया ॥
के याकुब हि सगेनकों आक्खें बल आया ॥
अर्मीनादबके अरम मतमें बतलाया ॥
के यंाथम आहस कहें मल्तसान सुहाया ॥ ९ ॥
के बोयस ओबेदकों चिंतें चित लाया ॥
सुलेमान मतके किते हिंदवान हकाया ॥
इत्यादिक अति गव्वके चढि मिच्छ चलाया ॥
नादरसाह सनाहके बिनु देह दिपाया ॥ १० ॥
चोला काल बनातका सुहि टोप सुहाया ॥
कर दोऊन २ कुरानलै मन नैन लगाया ॥
बेसरके स्यंदन बडे चढि वेग चलाया ॥
हाक नकीवों हल्लकें दल डाकडगाया ॥ ११ ॥
उग्र बिडाली अंखिके बहु मिच्छ बढाया ॥
केके अरव्वी फारसी बुल्लें बिकसाया ॥
पंचक५ टंकी चाप जे रक्खें भुज भाया,
चक्खें बक्कर एक१ जे मगरूर न माया ॥ १२ ॥
तौजी पक्खर सज्जके वाजी बल छाया ॥
ईरानी अरबी किते जर जीन सजाया ॥

---

१ दिन मे पांच वार निमाज पढने से २ पवित्र ३ कितने ही ४ खुदा को ॥८॥ ५ कितने ही (यहां से दस के छन्द तक यवनों के पैगंबरों के अथवा कहीं कहीं तीर्थ स्थानों के नाम हैं जिनके मजहब पर वे यवन चलते) थे ॥९॥ ६ गर्व वाले ७ बिना कवच ॥ १० ॥ ८ खच्चरों के ९ बडे रथ पर १० सेना को क्रोध दिलाकर चलाया ॥ ११ ॥ ११ बिल्ली जैसा आंख नेत्र) वाले १२ कितने ही १३ प्रसन्न होकर (फूलेहुए) १४ यह कमान की ताकत देखने का एक प्रकार का तोल है, औ धनुष का बल परापधि अठारह टंक का माना जाता है ॥१२॥ १५ नवीन १६ घोड़ों

बैंडे हत्थिन झुंडके भुजदंड झुकाया ॥
नादरसाह उछाह कैं सहसेन चलाया ॥ १३ ॥
सत्यलोक लग यों रु यों पाताल पचाया ॥
फट्टा रीढ़क सेसका फनमाल फिराया ॥
हल्ली जुग्गिनि सगही थेई थरकाया ॥
फाल फलंगी डाकिनी कर ताल बजाया ॥ १४ ॥
कावल सीमा व्हें कटक अब अटक निरोया ॥
हाक परी हिंदवानमैं सब सोक अँघाया ॥
लघि अटक पजाबका थांनीं घन घाया ॥
सूबा नायक साहका सब फोरि मिलाया ॥ १५ ॥
आन चलाया अप्पनाँ मुगलान मिटाया ॥
सूर इरानी सचरे मगरूर मचाया ॥
यों नादर अति वेगसों दिल्ली सिर आया ॥
पानीपथ किरनालपैं झंडालं झुकाया ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

सोरं मचिगौं दिल्ली सहर, जोर इरानिन जानि ॥
साह मुहम्मद अब सुनी, मद्यप सच्ची मानि ॥ १७ ॥

॥ सोरठा ॥

ईरानपैं सुनि आत, सठ प्रसन्न सबही मचित्र ॥
सोक न तदपि समात, इक्क खानदोरौं उदर ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

कूरम प्रति जैपनेर खानदोरौं पठये दंल ॥

---

१ सना सहित ॥ १३ ॥ २ इधर ३ पीठ की हड्डी ४ छलांग भर कर फाँदि ॥ १४ ॥ ५ सेना ६ अटक नदी को समीप की ७ तृप्त हुए (भरगये) ॥ १५ ॥ ८ कट खड़ किये "डिंगल भाषा में अत्यन्त ऊँचा करने का झुकाना कहते हैं" ॥ १६ ॥ ९ हाक १० मची ॥ १७ ॥ ११ ईरान के पति को ॥ १८ ॥ १२ जयपुर १३ पत्र

तू दुर्द्धर कछवाह साह तोहीसौं सब्बल ॥
आवत दल्ल ईरान रचहु दिल्लिय सहाय रन ॥
हम तुम इक्कत होय भुम्मि करिहैं वासि भुग्गन ॥
मम सीस भार आयउ अमित सो तोसैन अब उत्तरहिं ॥
सिर धरि कुरान करियत सपथ जो उपकृत यह वीसरहिं।१९।

॥ दोहा ॥

तेरीही यह बेरहै, आवहु सदल उछाह ॥
तोहि दुरग रनथंभ अब, रीझि समप्पहिं साह ॥ २० ॥
इम अनेक कग्गर लिखे, साह चमूपति सूर ॥
सच्चे करिकैं सपथ सो, कुम्म गिनैं नहिं कूर ॥ २१ ॥
मैं आवत तुम साह जुत, बाहिर करहु मुकाम ॥
यौं लिखि लिखि दल मुक्कले, कूरम कलुख दुकाम ॥ २२ ॥

॥ षट्पात ॥

इम जवनन बिस्वासदै रु कूरम छल किन्नों ॥
अंतहपुर निज अखिल उदयपुर मुक्कलि दिन्नों ॥
सावधान सह सत्थ रह्यो जैपुर कूरम पति ॥
यह अचिज्ज लिखि आंत हों रु मरन न किन्नी मति ॥
अवरहु नरेस हिंदुव अखिल यह जयसिंह उदंत लखि ॥
कोऊ न गयउ दिल्लिय कलह मबल्ल काल भाविय परखि२३

॥ दोहा ॥

टारी इम कूरम कितव, इत दिल्लीस अनीक ॥
सबल खानदोरा साजिय, सम्मुह चहत समीक ॥ २४ ॥

---

१ सेना २ प्रमाण रहित (अमाप) ३ तुझसे ही ४ सौगन ५ उपकार ॥ १९ ॥ ६ सेना सहित ॥ २० ॥ ७ पत्र ८ बादशाह के सेनापति के ९ शपथ (सौगन) ॥ २१ ॥ ११ पाप के बुरे कार्य से १० पत्र भेजे ॥ २२ ॥ अपने १३ सब १२ जनाने को १४ आश्चर्य १५ लिखे हुए पत्र आते थे तो भी १६ वृत्तान्त देख. कर १७ युद्ध में १८ समय ॥ २१ ॥ १९ छली २० सेना २१ युद्ध में चाहता

इहिँ अंतर परताप वह, जेठो सालम नद ॥
दिल्ली आय रु दासभो, छल्ली जवनपति छंद ॥ २५ ॥
पानीपथ आयो समुझि, सईन तजि अब साह ॥
सेनापतिके कथित सैम, रचिय कुच रन राह ॥ २६ ॥

तोटकम् ॥

कटकेस चँमू सब सज्ज करी, प्रतिहार नकीबन हाक परी ॥
बल पाय निसानन घाय बजे, लखि जे घन भद्दव नद्द लजे ॥२७॥
खुरसानन फुज्ज कृपान खिरे, चमकात चिनगिन बाढ चिरे ॥
झननंकि हुतासनं धारझरी, घननंकि बजी गज घट घेरी ॥ २८॥
पखरैत पटैतं घने उमहे, कमनैतं कटैतं न जात कहे ॥
बहु वाजिय ताजियं सज्ज बने, जँव जान मनौं पवमानं जने।२९।
क्रकचच्छद कन्न मनौं कलिका, कच याल लखैं भुजगावलिका॥
सहनाईमुखे जिन मोथें सदा, पँय लोलं मनौं गनिका प्रमदा॥३०॥
कैलि जित्तिन कंधर वक्र कसैं, कुलटा कि क्रियापटु लक कसैं

हुआ ॥ २४ ॥ १ इसी समय के भीतर २ प्रतापसिंह ३ अधिकार म ॥ २५ ॥ ४ नपुसकों को छोडकर ५ कहने से ॥ २६ ॥ इधर ६ सेनापति (खानदोरा) ने ७ सेना सज्जित करी जहां ८ द्वारपालों की और छडीदारों की हाक पडी, सेना को प्राप्त होकर, अथवा बल पूर्वक ९ नगारों पर घाई बजी जिसको देखकर भादवे के मेघ का शब्द लज्जित हुआ ॥ २७ ॥ खुरसाणों पर १० तरवारों के अग्निकण उडे और उन चिनगारियों के चमकते हुए बाढ घिरे और झणकार करती हुई धाराओं से ११ अग्नि झडी और हाथियों की घटा रूपी १२घड़िया बजीं ॥ २८ ॥ बहुत से पाखरोंवाले और १३पटा फैंकनेवाले उत्साह युक्त हुए १४धनुष धारण करनेवाले और १५तरवारों से काट करने वाले कहे नहीं जासकते १६ताजिक देश के बहुत घोडे सज्जित हुए जो १७वेग में मानों १८पवन के पुत्र (हनुमान) हैं ॥ २९ ॥ जिनके कान मानों १९ केवडा की वा केतकी की कली है और केसवाली के केश२०सर्पों की पंक्ति के समान शोभायमान हैं २१ जिनके फुरणें सदैव २२ सहनाई के मुख के समान फूले रहते हैं २३ जिनके पगों की २४ चपलता मानों गणिका २५ स्त्री के समान है ॥ ३० ॥ २६ युद्ध जीतने को २७ कंधा को टेढे कसते हैं सो मानों२८क्रिया

टरिजात उडात करी टकरी, सकरी गिलिखानं वनें चकरी ॥३१॥
बिधुरे गजगाहन वीजित जे, जवके वल राहन वीजित जे ॥
पक्खर जर जीन सजे सखरे, नचि मंडत चेरिनके नखरे ॥ ३२ ॥
धरि धोरित वल्गित धाव धपें, मनकी गति जे छिन माहिं सपें॥
छलि गात चलात धुनात छिती, किल कोट पटी बिच वत्त किती॥३३॥
भटके मन भाय फिरे लटके, धटके निपजे कि वेटा नटके ॥
हुलसैं करि विज्जुलिकी हसना, रयमें मनु तक्किंकी रसना ॥३४॥
खुर राजत रंजत पत्त खरे, जिन पक्क महायस नाल जरे ॥
लगि यों खुरसों खुरताल लसैं, गहिकें स्वरभानु कि चंद ग्रसैं ३५
चलैं बोधितरुच्छदसे चमकैं, झपटात कनीनिय ज्यों झमकैं ॥
सवार चढें सु करें अनुठी, भलपें वनि फाल गुलाल मुठी ॥३६॥

...दृग्धा कुलटा नायिका कमर कसती है जिनके उडान की टक्कर में १
...र्थी टलजाते हैं और सकड़ी २ गलियों में चकरी के समान पलटते हैं ॥ ३१ ॥
...ले हुए गजगाहों से जिनको ३ पवन (पंखा) होता है और वेग के बल से
...मार्गों में ४ पक्षियों को जीतते हैं ५ पाखरें और जरी के जीनों से ६
...सुंदर सजे हुए, अथवा फैले हुए जरी के जीनों से सुंदर सजे हुए जो नृत्य करके
...लौंडियों के समान नखरे करते हैं ॥ ३२ ॥ ८ धौरित और वल्गित आदि
...घोड़े की पांचों गतियों से ९ दौड़ते हैं जो क्षण मात्र में १० मन के चलने
...की गति को माप लेते हैं, शरीर को फुला कर ११ भूमि को धुजा कर चलते
... जिनकी पट्टी (शीघ्र दौड़) में १२ निश्चय ही कोट क्या बात है अर्थात्
...उनके आगे कोट कुछ चीज नहीं है ॥ ३३ ॥ १३ धाट देश के निपजे हुए घोड़े
...सवारों के मन माफिक झुक कर फिरते हैं सो मानों नट का १४ छोकरा (पट्ठा)
...करता है, बिजुली की १५ हंसी करके प्रसन्न होते हैं और १६ वेग में मानों
१७ तार्किक (न्याय शास्त्र पढे हुए) की जिव्हा है ॥ ३४ ॥ जिनके खुर १८
चांदी के पत्रों से शोभायमान हैं जिनमें १९ बडे पक्के लोह (गजवेल तथा
फोलाद) के नाल जडे हैं वे खुरताल खुरों से लग कर ऐसी शोभा पाते हैं
जैसे चंद्रमा को पकडकर २० राहु खाता है ॥ ३५ ॥ २१ चपलता में २२ पीपल
के वृक्ष के पत्ते के समान चपलते हैं और दौड़ाने में २३ नेत्र की पुतली के
समान झमकते हैं २४ अनूठी (अपूर्व) ॥ ३६ ॥

परि सग कुरगनै जे पकरैं, छिति चौ४करमैं पलटा छ६करैं ॥
वपुं जोर उछक्कत प्रोथ वजैं, सफँरी पलटान उडान सजैं ॥ ३७ ॥
रस लेह खलीन अधीन रहैं, गतिमैं भरि वल्गन भुम्मि गहैं ॥
करि झप वढैं नटकी न कला, चलि जात दिखात मनौं चपला ३८
प्रतिमल्ल वनैं नभ पच्छिनपैं, बहुरैं उडि दोप२ वग्च्छिनपैं ॥
कुल जाति वनायुज आदि किते, जवमैं पवमान उडान जिते ॥ ३९ ॥
कुलटैं उलटैं उछटात करी, पलटैं मनु पातुरिकी पुतरी ॥
इक लक्ख१००००० तुरगन या गतिके करगा सु हजार१००० भली भंतिके ॥ ४० ॥
झरनी नल दानन दान झरैं, कुपितारुन पच्छिन चोट करैं ॥
श्रय लंगर अंचत अंड भरे, खिजि खून भरे रुकिजात खरे ॥ ४१ ॥
ढगैं देत डरावत डाकनतैं, पलटैं खिजि छाँहैं पताकनतैं ॥
त्रिपदी पय बद्ध तऊ तरकैं, वंमथुन लगावत बढ्ढरकैं ॥ ४२ ॥

साथ होकर जो हरिणों को पकड़ते हैं ३ चार हाथ के विस्तार वाली भूमि में छ प-लटे करते हैं ४ शरीर के जोर से ५ मचकने से ६ फुरणों बजते हैं ७ मच्छी के पलटने के स-मान उड़ान सजते हैं ॥ ३७ ॥ ८ लगाम के चाटने के रस से आधीन होकर रहते हैं और चलने में भूमि को वाग से पकड़ते हैं ९ जिनके झप लेने में नट की भी कला नहीं बढ़ती, अथवा हाथियों को फांदने में नट की कला भी नहीं बढ़ती (नट के फांदने की पूर्ण अवधि हाथी को फांदने की समझी जाती है) चले जाने में मानों १० बिजुली दीखते हैं ॥ ३८ ॥ आकाश में पक्षियों के ११ शत्रु (मुकाब-ला करनेवाले) बनते हैं और दो बगछियों पर उड़ कर पीछे फिरते हैं, कुल में कितने ही १२ बनायुज आदि देशों के उत्पन्न १३ वेग में १४ पवन के समान उड़नेवाले ॥ ३९ ॥ १५ हाथियों को उछाल कर १६ कुलाट लेकर पलटते हैं अ-थवा कु (पृथ्वी) को लाटते हैं और हाथियों को उछाल कर उलटते हैं और पलट-ने में मानों वेश्या के १७ नृत्य की पुतली पलटती है, अथवा नृत्य करते समय वेश्या की पुत्री (लड़की) पलटती है १८ हाथी १९ भली भांति के ॥ ४० ॥ २० क्रोध में लाल होकर पक्षियों पर चोट करते हैं २१ लोहे के जंजीर २२ घमंड से भर कर ॥ ४१ ॥ २३ नाटमागा के क्रोध दिखानेवाले छोटे घावों में डराने वाले २४ पैंड देते हैं २५ ध्वजा की छाया से खिज कर पलटते हैं २६ हथकड़ी (पग बंधन) से पग बंधे हैं तो भी तड़कते हैं २७ सुंड के उजड़ना का पोंछणों

घन *चीत घुमावत मत्थ मुरैं, फहरात निसानन जिन्ह फुरैं ॥
फटकारत सुंडिनतैं नभकों, मिर भौंर भनंकत गंधभकों ॥ ४३ ॥
बहु खावन रावनभ्रात बनैं, जल ऐंचन काज अगस्ति जनैं ॥
मखतूल कलापक कंध कसे, लगि गत्त वरत्तन नद्ध लसे ॥४४॥
भल जंगिय होदन सज्ज भये, बलमैं चर पौनहिं पै पठये ॥
कट सुंडि कलापक रंगि रचे, बहु चित्र चितेरनके बिरचे ॥ ४५ ॥
रिरचे१ बिरचे२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १
बहु औदिन निंदत उच्चपनौं, मजबूत रुपैं जमदूत मनौं ॥
बलके सिरताज महाबलजे, सनि राहु तमोगुन भीमलजे ॥ ४६ ॥
मदछाकन घुम्मत पैंड मते, बल बाद हिमाचलसौं बदते ॥
मते१ दते२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
तृन भाँन बडे तरु तोरत जे, मनतैं रवि केतु मरोरत जे ॥ ४७ ॥
कनकाँचल लड्डुव गोट गिनैं, रवि चंद मलीदन रोट गिनैं ॥

के लगाते हैं ॥ ४२ ॥ * बहुत अंकुश लगाने और झूलने से मस्तक घुमा कर मुड़ते हैं जिन पर ध्वजा उडती शोभा देती है वे (हाथी) सुंडों मे आकाश को फटकारते हैं जिनके मस्तक पर १ सुगंध के लिये भ्रमर उडते हैं ॥ ४३ ॥ बहुत खाने में रावण के भाई (कुम्भकर्ण) २ जल पीने म अगस्ति के पुत्र (अगस्त्य) बनते हैं, कंध मे ३ रेशम के ४ कलावे कसे हुए शरीर में लगेहुए ५ रस्सों से ६ बंधे हुए शोभायमान ॥ ४४ ॥ बल मे मानों पवन पर ७ हलकारे भेजे हैं जिनके ८ कपाल और सुंड रंग के समूह से रचे हुए ॥ ४५ ॥ कितने ही हाथी ऊंचेपन में ९ पर्वतों की निंदा करते हैं और दृढता में मानों यमदूत रुपते हैं वे हाथी १० सेना के शिरताज और बडे बलवान जो शनैश्चर, राहु और तमो गुण के समान ११ काले हैं "तमोगुण का रंग काला है" ॥ ४६ ॥ घमंड के भरे हुए पैंड पैंड पर मद की छाकों मे घूमते हैं और बलवान पन का वाद हिमालय से करते हैं, बडे वृक्षों को तृण के १२ समान तोड़ते हैं और मन से सूर्य की ध्वजा को मरोड़ते हैं ॥ ४७ ॥ १३सुमेरु पर्वत को लड्डुओं के गोले गिनते हैं और सूर्य चन्द्रमा को १४ अपने भोजन के रोट गिनते हैं "हाथी के भोजन का नाम डिंगल भाषा में मलीदा है" तारों पर कठिन किलकारी करके

किलकारत तारनपैं करगें, चंल सुद्धि चलात घनें फेरें ॥ ४८ ॥
कटपैं कुरुबिंद प्रकासकरैं, सनि भौमें भिरे जनु लग्गि गरैं ॥
करि त्यों हरिताल सुढाल करयो, गुरु जानि बिधुंतुद पासि परयो ४९
चरखीन चिकैं न घटाहटपैं, उडिजात अचानक आहटपैं ॥
कति बीरन कुंतें लगैं कटसौं, बलि निष्ठि बहोरत उब्बटसौं ॥ ५० ॥
जनकों निअरांय रचैं जबरी, बढि खैंचत बेंग्घन की बकरी ॥
जिन लंगर पाय धरैं जितनें, जमकी इक रज्जुव बद्धवनें ॥ ५१ ॥
सिरपैं मनि हाटक जात सिरी, मेरुमाचलसौं में तती कि भिरी ॥
इम इक्क हजार१०००बडे इभज, निकसे सजि बद्दल के निभ जे ५२
तुरकान तयार भयो रनपैं फरके भुव खड फनी फनपैं ॥
खग उद्धत सय्यद सेख खिले, मिरजा मुगलान पठान मिले ॥ ५३ ॥
भुजदंड कमानन केक धरैं, स लुलायैं पखालन बेध करैं ॥
बहु वीर बँदूकन दाव रचैं, वर सिरैंत जुरैं अरगु नाँहि बचैं ॥ ५४ ॥

उनको पकड़ने के लिये १ चपल सुद्ध का चला कर बहुत २ फिरते हैं ॥ ४८ ॥ ३ कपोलों पर ४ हिंगलू प्रकाश करता है सो ५ मानों गल मे लग कर शनैश्चर और ६ मंगल मिले हैं "शनैश्चर का रंग काला और मंगल का रंग लाल है" इसीप्रकार ७ सुंदर हरताल से श्रेष्ट किया (गा) है सो मानों ८ बृहस्पति ९ राहु की पासी मे पड़ा है "बृहस्पति का रंग पीला और राहु का रंग काला है" ॥ ४९ ॥ १० चरखियों (अग्नि क्रीड़ा विशेष) का घटा टूट पर टिकत हो नहीं हैं और कभी आहट (अथवा आदि लगने का सूक्ष्म शब्द) पर उड़जाते हैं, कितने ही धीरों के ११ भाले १२ कपोलों पर लगते हैं और १३ बिना मार्ग आते हुओं को फिर कठिनाई से फेरते हैं ॥ ५० ॥ मनुष्यों को १४ समीप लाकर जबरी करते हैं और आगे बढ़कर खैंच लेते हैं सो मानों बकरा का १५ सिंह खैंचता है इन हाथियों के लंगरों (जंजीरों) पर चरण धरते हैं उतने ही यमराज की एक १६ रस्सी में बंधते हैं ॥ ५१ ॥ मस्तक के ऊपर मणियों की जड़ी हुई १७ सुवर्ण की सिरी (मस्तक भूषण) है सो मानों १८ सुमेरु पर्वत से १९ नक्षत्रों की पंक्ति मिली है २० महत ॥ ५२ ॥ २१ शेषनाग के फणों पर ॥ ५३ ॥ २२ महिष (भैंस) सहित २३ श्रेष्ठ सीष

करि केक त्रिभागनतैं खुर्ली, बढि धावन दाव बचातबली ॥
तरवारिन वार करैं कितने, घमकावत संगिन[२] लच्छैय[३] घने ॥ ५५ ॥
सब दिल्लिय मीर उमीरसजे, रनमैं भट भीम रहीम रजे ॥
प्रतिवासर[४] पंच ५ निमाज पढैं, कलमाँ बिच गुप्त बयान[५] कढैं ॥ ५६ ॥
बिरचैं बहुनेक तजैं बदकौं, मन चिंति रसूल[६] मुहम्मदकौं ॥
रसि[७] कंठ कुरानसिरीफ रहैं, बल उच्च रु डाढ्हिय[८] कुच्च बहैं ॥ ५७ ॥
लखि मुच्छ न लंब सिखा जिनकी, बिधिछिन्निय रीति प्रतीपनकी[९] ॥
छबिके बपु[१०] मुद्गर दंड छटे, प्रतिमल्ल[११] घुमावत फैंकि पटे ॥ ५८ ॥
बदे[१२] केक कितेक तजैं कपटैं, रब[१३] पीर[१४] वलीन अलीन[१५] रटैं ॥
असि ढल्लन मल्ल अपुब्ब अरैं, कति बान बिहंगन[१६] बेध करैं ॥ ५९ ॥
खट६ टंक कमानन खैंचतजे, अतुली[१७] पय लंगर अंचत जे ॥
बदे[१८] खानकलीज महादतमे, बलि[१९] मूढ वजीर मुहब्बतमे ॥ ६० ॥

जुड़ने पर ॥ ५४ ॥ १ कितने ही भालों से शस्त्राभ्यास करते हैं २ बरछियों से ३ निसानों को ॥ ५५ ॥ ४ प्रतिदिन कलमा में "लाइलाह इल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह" यह यवनों का कलमा है जिसके ५ छिपे हुए आशय निकालते हैं ॥ ५६ ॥ ६ यवनों के पैगंबर का नाम है ७ डोरी में लटकी हुई कुरान शरीफ जिनके कंठों में रहती है वे बडे बल और ८ डाढी के बडे केशों को धारण करते हैं अर्थात् डाढी के बाल नहीं कटवाते ॥ ५७ ॥ जिनके चोटी नहीं है और मूछें लंबी नहीं हैं ९ मानों आर्यों से विरुद्धता की रीति को विधि पूर्वक छीन ली है अर्थात् जिन रीतियों को आर्य लोग प्रतिकूल मानते हैं उनको यवन अपने अनुकूल मानते हैं, मुद्गर फेरने और दंड करने से शोभायमान जिनके १० शरीर ११ सन्मुख होकर युद्ध करने वाले मल्ल को ॥ ५८ ॥ उन यवनों में कितने ही १२ दुष्ट और कितने ही कपट को छोडने वाले १३ खुदा को गुरु (उपदेशक) को १४ खुदा (ईश्वर) के भक्त और १५ अली "यह यवनों के पैगंबर का भाई और जमाई था जिसको खलीफा (उत्तराधिकारी) भी कहते हैं" को रटते हैं. कितने ही तरवार और ढाल से अपूर्व मल्ल युद्ध करते हैं और कितने ही बाणों से १६ पक्षियों का बेधन करते हैं ॥ ५९ ॥ १७ अपने समान दूसरे को नहीं समझनेवाला पैर में प्रतिज्ञा का लंगर पहनता है सो जब उसको विजय करनेवाला मिलता है तब खोलता है १८ दुष्ट १९ पुनि, वजीर

भट रुस्तुमखान चमूप भले, सजिकैं दल दिल्लिपतैं निकले ॥
चाहे फौज मुहम्मदसाह चढ्यो, बजि इक्क निसानन ध्वान बढ्यो॥६१॥
बल के हरवल्लनके थढतैं, कंरटी पुरतोरनके कढतैं ॥
गजढाल मलब सु तुट्टिपरी, कमि मंडल मंडल कूक करी ॥६२॥
दिन मूक उलूकन हूक दई, ''छिति व्योम भयानक खेह छई ॥
अपसौन उँपश्रुति पिट्ठि पढी, कुंचमुक्त रजोवैति दिट्ठि कढी ६३
उनमत्त क्रमेलक आत लख्यो, रु दिगंबर दंत दिखात लख्यो ॥
चिरंमेहि लुँलाय मिले समुहे, छुटि व्याल कराल बिडाल छुहे॥६४॥
इम गौंन कुसौन अनेक बनैं, मन उद्धत बीरन जे न मनैं ॥
जिम वेद विरंचनके मुखतैं, गन ज्यौं गिरिजेसैं जटा रुखतैं ॥६५॥
जिम जान्हवि अंडकटाहकतैं, वरखा कि उँदीचि बलाहकतैं ॥

टाहकतैं१ लाहकतैं२ अन्त्यानुप्रास १ ॥

रचना कि गुनैं अपरतैं बिकसी, पृतना इम दिल्लिपतैं निकसी ६६
हुव हाक नकीब हजारनकी, हलकार बढी प्रतिहारनकी ॥
मग डोरिनैं मप्पत फोज चली, उरमी जिम सागरतैं उछली ॥६७॥

कमरदीखा जैसे मूर्ख ॥ ६० ॥ १ सेनापति (खामदोरी) २ हाथी पर ३ नगारों का ४ शब्द ॥ ६१ ॥ ५ हाथियों के ६ शहर के द्वार से निकलते ही ७ हाथी का लगा निसान टूट पड़ा ८ चक्राकार (गोलकुंडा) फिर कर ९ कुत्ते ने ॥ ६२ ॥ १० दिन में मूक (गूंगे) रहने वाला ११ भूमि और आकाश में १२ पीठ पर आकाश वाणी हुई कि शकुन बुरे होते हैं १३ खुले हुए केश वाली १४ रजस्वला स्त्री को देखी ॥ ६३ ॥ १५ मस्त ऊंट को सन्मुख आता देखा १६ नग्न पुरुष को हँसता हुआ देखा १७ गधा और १८ महिष (भैंसा) सामने आते मिले १९ भयकर सर्प छूटा और उस पर बिल्ली क्रोधित हुई ॥ ६४ ॥ २० ब्रह्मा के मुख से वेद कढे जैसे २१ शिव की जटा से गंगा निकले जैसे ॥ ६५ ॥ २२ ब्रह्मांड से गंगा निकली जैसे २३ उत्तर दिशा के २४ मेघ से वर्षा निकले जैसे २५ सत- रज- तम- इन तीनों गुणों से संसार की रचना निकली जैसे २६ तैसे दिल्ली से सेना निकसी ॥ ६६ ॥ २७ हारवालों का २८ बड़े राजाओं की सवारी निकलती है तब मार्ग के दोनों किनारों पर डोरियें लगाई जाती हैं २९ लहरें

उमडात डगात बली बलवाँ, धमकात धुजात रसातलकाँ ॥
इक अक्खहिं नादरकौं गहिहैं, इक अक्खहिं तूरनमें रहि हैं॥६८॥
इक अक्खहिं जित्ति इरान लई, इक अक्खहिं मंत्रि न साहमई ॥
इक अक्खहिं खानकलीज फंटयो, रु वजीर सहादत पै पलटयो॥६९॥
इक अक्खहिं अप्पन सेनपती, सब जित्तहिं तोरि इरान तती ॥
इक अक्खहिं जित्तहिं नादरही, पति दिल्लिय बुद्धि प्रमादरही॥७०॥
इम चंड चल्यो दल दिल्लियको, डठ जानि इरानिनके हियको ॥
क्रमि मारग सत्त७ मुकाम करे, पथपानियसौं वं समीप परे॥७१॥
खट६ कोस इरान अनीकि रह्यो, क्रम तत्थ चैमूप मुकाम कह्यो
असवार हजार असी ८०००० उतरे, अरु बीस २०००० छबीनिन
सज्ज अरे ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

दिल्लियपति अब उत्तरिय, परिय अनीक पैसाम ॥
रहसि खानदौराँ रचिय, बंदन इरानिन बात ॥ ७३ ॥

॥ निःशाणी ॥

दलईसं खानदौराँ लिखि पत पठाया,
ईरान ईस अग्गैं सुनसीन सुनाया ॥
तुमं तोरके तरारे चतुरंग चलाया,
लाहोर आदि सूबा बदफैल फटाया ॥७४॥
पंजाब पेसं थाँनाँ निज आन नआया,

॥ ६७ ॥ ६८ ॥ १ वजीर बादशाह के अनुकूल नहीं है २ जुदा (भिन्न) होगया है ३ सहादतखां भी "पै" का अर्थ कहीं 'परंतु' और कहीं 'भी' होता है, ॥ ६९ ॥ ४ पंक्ति. दिल्ली के पति की बुद्धि ५ पागलपन (भूल) में रही ॥ ७० ॥ ६ भयंकर ७ चलकर ८ पानीपथ से ९ अब ॥ ७१ ॥ १० सेना ११ सेनापति (खानदोरां) ने १२ सेना की रात्रि समय की चोकी पर ॥ ७२ ॥ १३ सेना का पड़ाव पड़ा १४ एकान्त में (गुप्त) १५ दुष्ट ईरानियों से वार्ता रची ॥ ७३ ॥ १६ सेनापति खानदोरां ने १७ प्रताप के ताप के उफान से १८ सेना चलाई ॥ ७४ ॥ १९ आधीन

हिंदू सबै हरामी सौंने सु लगाया ॥
दिल्ल होरं चोर भारें वरजोर बनाया ॥
गिनि इरपहान लुट्टी पैर लोभ लुभाया ॥ ७५ ॥
भारत अनूप दिल्ली लखि दाव चलाया,
जानी यह न कोऊ वर तोंस बनाया ॥
सैतानक सिखायें मगरूर मचाया,
दिल्लीसों न सके दिल भरत दिखाया ॥ ७६ ॥
सुलतानकी जमीपैं समसेर सजाया ॥
कसमीरकों फते कें मुलतान लुटाया ॥
दरियावकों दगासों लखि नाव लँघाया ॥
पाया पुकार सों "पै सुलतान पचाया ॥ ७७ ॥
चाहो सुलाह जो तो करिजाहु पैंयानों ॥
जो जगको जरूरि तो देर नजानों ॥
दिल्लीसकी गुलामी प्रतिरोज प्रमानों ॥
सुलतान देरजमानैं वर नायव मानों ॥ ७८ ॥
इम पत्र खानदौरां पठये ति" पैंठाये ॥
ईरान साह मत्री उमराव बुलाये ॥
एकात ले इंजाँके अँहवाल सुनाये ॥
भेजे ति खानदौरां दैल खोलि दिखाये ॥ ७९ ॥

१ छाती से २ दिल यहाकर ३ पराई ॥ ७५ ॥ ४ उपमा रहित ५ उस (दिल्ली) ने नादिरशाह को यति बनाया है ६ घमंड ॥ ७६ ॥ ७ बादशाह को ८ तरवार ९ करके १० नदी (अटक) को ११ परन्तु ॥ ७७ ॥ १२ प्रयाण (गमन) १३ जमाने (समय) में १४ श्रेष्ठ अथवा ऊपर हाकिम समझो नायब शब्द सामान्य रीतिसे तो मातहत का है परन्तु विशेष रीति से यह अन्य लोगों का हाकिम होने के कारण हाकिम के अर्थ में लिखागया है ॥ ७८ ॥ १५ते (वे) १६ पहुंचाये १७ इस जगह के, अथवा इनके, और यदि 'ज' पर अनुस्वार नहीं होवे तो [illegible] (दुःख) का अर्थ होता है अर्थात् दुःख के हाल सुनाए १८ वृत्तान्त हाल) १९ खानदौरा ने भेजा यह पत्र ॥ ७९ ॥

ईरान साह अक्खी तामच कुलीसौं ॥
तैंहा वजीर[1] आनैं अफवाजि[2] खुलीसौं[3] ॥
एतो नहीं निहारे ततबीर[4] डुलीसौं ॥
आला[5] वजीर आये समसेर तुलीसौं ॥ ८० ॥
हिंदू न एक आया सब सोर[7] डरानैं ॥
तोक्कू वे लाख१००००० ताजी[8] पखरैत[9] पलानैं ॥
हाथी हजार१०००मत्ते घनरूप घुमानैं ॥
लक्खौं सवार अच्छे बैर[10] हूए लुभानैं ॥ ८१ ॥
तोपैं हजार दो २०००पैं नीसान फिरानैं ॥
छोहैं लगे छवीनाँ भट भीर भिरानैं ॥
लक्खौं पयाद जंगी समसेर सजानैं ॥
खुदमोजैं[12] खानदौराँ बर फौज खजानैं ॥ ८२ ॥
एतो कलीजखाँका नाहक फरेब[13]है ॥
गाफिल जरा न दिल्ली जैर[14] जोर जेब[15]है ॥
सबही सुलाह[16] मंडे करनौं कि जंग नाँ ॥
उनतो यहै कहाई हमकौं दिरंग[17] नाँ ॥ ८३ ॥
ईरानसाह अक्खी सबकौं सुनायकैं ॥
उमराव वीर बोले मन मंत्र लायकैं ॥
निसुरुत अली रु हाजी काजी करीमसे ॥
गाजीहुसैन रुस्तुम रोसन रहीमसे ॥ ८४ ॥
बुल्ले कलीजखाँपैं अहवाल पठावैं ॥
फौजी सु क्यौं बुलाये बैरजोर सुनावैं ॥

१ हे वजीर! २ प्रसिद्ध फौज (सेना) से ३ देखे ४ उपाय ५ बडे ६ जोर के (बल क) साथ ॥ ८० ॥ ७ कोलाहल सुन कर ८ अश्व ९ घोड़े, पाखरोंवाले १० अष्ठ अप्सराओं पर लोभित हुए ॥ ८१ ॥ ११ ध्वजा १२ स्वेच्छाचारी (स्वतंत्र) ॥ ८२ ॥ १३ झूठ १४ धन और बल से १५ शोभायमान है १६ सलाह (मंत्र) रचो १७ देर (विलंब) नहीं है ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ १८ पद हुआ १९ हूं मेषि २० जबरी (बलात्कार) से

जाहिल्[1] दंगाजना[2] यो नाकिसू[3] न नाकहैं[4] ॥
हमहू हराम[5] तोपैं कातिल्[6] कजाकहैं[7] ॥ ८५ ॥
ईरान्शाह[8] ऐसैं लिखि पत्र पठाया ॥
आया कमरीखांपैं[9] इन मन्त्र उपाया ॥
जुरि मल खांकमदीं[10] दिल्ली वजीर जो ॥
दूजो सु भाइभुजा जालम् सेरीर जो ॥ ८६ ॥
मिलि तीन३ मन्त्र कीनों अपनी जमीनहै ॥
अरु साह पैं मुहुम्मद अपनैं अधीनहै ॥
ईनेसों[12] व खानदोरां[13] दुसमन् मरायके ॥
कछु दइदे रुपैये देहैं पठायकैं ॥ ८७ ॥
इम मत मडि पच्छो तँहँ पत्र पठायो ॥
इरिये हजूर नांही हम काम बनायो ॥
सब रावरे रंजूहैं तुमसों न रारिहैं ॥
इक नां जु खानदोरां फर्दाहि[11] मारिहै ॥ ८८ ॥
तुम जगकी कहावो न कबूल मामलें[14] ॥
तब सज्ज खानदोरां ऐहै तमामलें[15] ॥
[1] लमामलें१ तमामलैं२ अन्त्यानुप्रास १ ॥
हम रावरे भटोंसें मिलि ताहि मारिहैं ॥
ईरानकी दुहाई वजमैं[16] बिथारिहैं ॥ ८९ ॥
सुनि एह साह नादर बग्जोर कहाई ॥

[1] हे मूर्ख [2] दगा करनेवाला [3] निकम्मा [4] तेरे नाक है कि नहीं है [5] हे अधर्मी [6] कतल करनेवाले [7] लुटेरे हैं अथवा 'कजा' शब्द के साथ स्वार्थ में 'क' प्रत्यय किया है सो मृत्यु का नाम है ॥८५॥ [8] नादिरशाह ने [9] कमरदीखां [10] दुष्ट ॥ ८६ ॥ [11] अप ईरानियां से ॥ ८७ ॥ [12] आधीन है [13] एक खानदोरां आधीन नहीं है सो उसको कल ही मार डालेंगे (फारसी में आगामि दिन को फरदा और दीरोज कहते हैं) ॥ ८८ ॥ [14] मामला (दंड) अर्थात् फौज खरच लेना मंजूर मत करो [15] सब को लेकर आयेगा [16] जमाने के साथ (जमान में ॥ ८९ ॥

*फर्दाहि †खानदोराँ तुमसौं ब लराई ॥
सुनि एह खानदोराँ सब सेन सजाई ॥
दुहुँओर होत ऐसैं वह रत्ति बिताई ॥ ९० ॥
जाई१ ताई२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
अब प्रातकाल आया ‡कृकवाकु कुकानैं ॥
§अरबिंदतैं उडे के १अलि २रत्ति रुकानैं ॥
परदार ३छोरि छाती नर जार ४पलाया ॥
गिरि५राजकी गुफामैं तम तो६म चलाया ॥ ९१ ॥
दर७ घंट देहरोमैं बर नाद बजाया ॥
चहि भोग चक्क चक्की सुख मेल सजाया ॥
तारेन मंद तेजी दबिबिंब दुराया ॥
मंथान८ ग्वाल गेहौं घनघोर घुराया ॥ ९२ ॥
तजि पंथ चोर तक्के छिपनौं दरीन९ मैं ॥
गहि मौन घूक बैठे तरु कोटरीन१०मैं ॥
उदयाद्रिपैं अनूठी इक रोचि११ लखाई ॥
चल चाँ१२टकेर चौंके चहकानि मचाई ॥ ९३ ॥

॥ दोहा ॥

सेन खानदोराँ सजिय, स्वामिधरम धरि सीस ॥
अनय सहादत मंडि इत, रचिग साहपर रीस ॥ ९४ ॥

॥ षट्पात् ॥

कहिय सहादत कज१३लबास बैभव मम लुट्टत ॥
देहु साह आदे१४सैं नरन नाहक सिर तुट्टत ॥

---

† हे खानदोराँ अब * कल ही तुम से लड़ाई है ॥ ९० ॥ ‡ मुरगे वाले §कमलों से १ भ्रमर २ रात्रि के रुके हुए ३ पर स्त्रियों की छाती को छोड कर ४ जार पुरुष ५ भगा ६ पर्वतों के राजा [सुमेरु] की गुफा में ६ अंधेरे का समूह गया ॥ ९१ ॥ ७ शंख ८ बिलोना (दधिमंथना) ॥ ९२ ॥ ९ गुफाओं में १० वृक्षों के कोटरों में ११ कान्ति १२ चपल चिड़ियाँ बोलीं ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ १३ कजल के रहनेवाले; अथवा काले कपड़ों वाले (ईरानी) १४ हुकम

तब नेंप अक्खिय साह पृथक लरनों न उचित अब ॥
इक्क होय अंकुरहि सजहिं तुम हम कलीजें सब ॥
कहि तदपि भाडभुंजक कुटिल सब कातरं दिल्लीस दल ॥
पिक्ख्यो न जात हमतें मवल बिरचत लूट इरान बल ।९५।
यह सुनि अक्खिय साह पृथक लरि मरहु सहादत ॥
अधम सुनत द्रुतं उट्ठि भाडभुजक अति उद्धत ॥
चढि निज दल लै चलिय खानदोराँ प्रति यों कहि ॥
दीजे हमहि सहाय चमूअधिराज विजय चहि ॥
इम अक्खि जाय ईरान दल मिल्यो मूढ लवहुं न लर्यो ॥
सब भेद साह नादर समुझि अधम सहादत उच्चर्यो ।९६।

॥ दोहा ॥

मूढ सहादत जो मिल्यो, चहि ईरान अधीस ॥
पच्छी यों कहि मुक्कली, अंतुल भार मम सीस ॥ ९७ ॥

॥ निशानी ॥

सुनि एह खानदोराँ चढि वेग चलाया ॥
वाँकों सहाय देवे छक छोहैं छकाया ॥
दिल्लीसकी चमूको अधिराज वीर जो ॥
हरवल्ल व्है रु हक्यो धमचक्क धीर जो ॥ ९८ ॥
अच्छे सिपाहलोंके अब अब्भ उडाये ॥
मानों घटा उँदीची आसार मचाये ॥
धरनी धमकि धूजी सिर फूटि सेसका ॥

---

१ नीति के वचन कहे २ जुदा ३ लड़े ४ होयेंगे ४ कलीजखाँ ५ लोभी ६ कायर ॥ ९५ ॥ ७ शीघ्र उठ कर ८ अपनी सेना ९ हे सेनापति १० यह कहकर ११ क्षणभर भी नहीं लड़ा १२ सहादतखां को नीच कहा ॥ ९६ ॥ १३ पहुत १४ सहादतखां को १५ क्रोध के छक [मद] में १६ सेना का पति युद्ध में धैर्य रखनेवाला ॥ ९८ ॥ १७ उत्तर की घटा ने १८ जलधारा

दिनं चंदसा दिखानाँ दिपनाँ दिनेसका ॥ ९९ ॥
दल भार मार दड्ढा बरकी बराहकी ॥
कमठेस पिट्ठि फट्टी बत्त आह आह की ॥
काली तथा कँपाली आये उछाहसौं ॥
बेताल प्रेत नच्चे चतुरंग चाहसौं ॥ १०० ॥
गन सेन कंक गिद्धी गोमायु गँहक्के ॥
जंजीर तोप जाली गज घंट ठहक्के ॥
बैंडे हजार हत्थी बढि लैंन बिथारे ॥
ताजी तुरंग तत्ते नभ लेत तरारे ॥ १०१ ॥
चढि बीर खानदोराँ इम सेन चलाई ॥
ईरानकी अँनीपैं अब बँग्ग उठाई ॥
उततैं हु सेन आयो सुनि याहि आतही ॥
पाताललौं पुकारैं पहुँची प्रभातही ॥ १०२ ॥
सक बान अंक सत्रह १७९५ बदि फग्गुन मासे ॥
रवि देखनैं रुकानौं तरवारि तमासे ॥
नमासे१ तमासे २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १
दुहुँओर तोप दग्गी धपि धम धोरनी ॥
कीनैं बिमान कारे अति गौंज डप्फनी ॥ १०३ ॥
डगमग्गि मेदिनीके गिरि कूटँ गिरानैं ॥
सरितौं तड़ाग छिज्जे पसु पच्छि पिरानैं ॥
आकास अच्छरीके गन गान मचायो ॥
डँकैं सु डाकिनीके रस रास रचायो ॥ १०४ ॥

१ दिन के चन्द्रमा के समान २ सूर्य दीखने लगा ॥ ९९ ॥ ३ वार्ता ४ शिव ५ सेना में ॥ १०० ॥ ६ गीदड़ ७ प्रसन्न होकर बोले ८ पंक्ति फैलाई ९ ताजिक देश के घोड़े ॥ १०१ ॥ १० सेना पर ११ घोड़ों की बागें उठाईं १२ गर्जेना बढ़ी ॥ १०२ ॥ १३ भूमि धूज कर कितने ही १४ पर्वतों के शिखर गिरे १५ नदी १६ तालाब १७ पीड़ित

गोले गरूर गज्जैं हत्थी न हल्लकैं ॥
बारूद झार झग्गैं सर्पा कि सल्लकैं ॥
आवाज तोप उट्ठैं जिम सॅघ सानुसों ॥
ज्वाला कराल जग्गैं बढि चद भानुसों ॥ १०५ ॥
आकास तूटि झडे उडिजात ओरसे ॥
समसेर मेहँ नच्चैं नभ मत्त मोरसे ॥
कर्ट कूट काटि डारैं गोले अेरातिकी ॥
मानों पिछानि पारैं गज भद्रजातिकी ॥ १०६ ॥
हुसियार खानदोरां समसेर चलाई ॥
पहुमी सु रंग पिक्खी लागि रैत्त ललाई ॥
फूटैं कपाल भेजे तरवारि तरक्कैं ॥
के कुत्तें कक्कटोमें गत सॅाल गरक्कैं ॥ १०७ ॥
केते तुखारैं कट्टैं असवार उलट्टैं ॥
कट्ठें कटार भूखे हिय कालिकें चट्टैं ॥
नॅागोद वान फुट्टै नर कातर नट्ठैं ॥
टक्कार चाप वज्जैं चिल्ला सु चट्ठैं ॥ १०८ ॥
घायल अचेत घुम्मै लटके रकाबसों ॥
मानों गमार मत्ते सरसे सराबसों ॥
कटि पिप्फरे कलेजे फॅबि फांक फुलावैं ॥
वैसाख मांहिं केसूं जिम जेवैं बनावैं ॥ १०९ ॥

१घमंड मिटाते हैं २ हाथियों के हलकों के ३ बिना बिजली चमकती है ४पर्व-तों के शिखरों से ५ वज्र की आवाज होवे ऐसे ॥ १०५ ॥ ६ तरवार से झंडे टूट कर आकाश में उडते हैं सो मानों ७ वर्षा में मत्त मयूर आकाश में नाचते हैं ८ हाथियों के गडस्थल और कुंभस्थल ९ शत्रु की तोपें ॥ १०६ ॥ १० उस युद्ध की भूमि ११ रुधिर लग कर लाल रंग की दीखी १२ भाले १३ कब-चों में जाकर १४ साल सहित घुसते हैं ॥ १०७ ॥ १५ घोडे १६कलेजा १७ पेट के कबचों (पेटियों) में तीर फूटते हैं१८कायर मनुष्य भागते हैं१९प्रत्यंचा खैं-चत हैं ॥ १०८ ॥२०शामित२१ढाक वृक्ष के फूल (केसूले) २२ शोभा ॥ १०९ ॥

सुंडा करीन कट्टैं जिम पन्नग कारे ॥
भंभं भयानं[1] बज्जैं भट भिन्न[2] नगारे ॥
आकास अग्गि[3] पत्ते[4] सुरलोक उजारे ॥
महरादि लोक वारे जनलोकैं[5] सिधारे ॥ ११० ॥
बिनु चेत बीर बक्कैं बहु दंत बजावैं ॥
घोरे अनेक घुम्मैं मुख झग्ग हलावैं ॥
धाराल[6] बाढ बज्जैं अति बीर बकारैं ॥
समसेरकौं सिराहैं मुख मार उचारैं ॥ १११ ॥
पंचासदोय ५२ भैरूँ ललकार लगावैं ॥
लैलै ललाम[7] लोही चउसट्ठि६४ चढावैं ॥
के सीस ईस[8] लैकैं गल भेट भिरावैं ॥
के अच्छरी अनूठी[9] बरमाल गिरावैं ॥ ११२ ॥

षट्पात ॥

तीन३ पहर तरवारि खानदौरा बर बज्जिय ॥
अनिय मोरि ईरान सबल दिल्लिय जय सज्जिय ॥
रवि अत्थतैं[10] रन रुकिय घाय लग्गिय अट्ठारह१८ ॥
खेत सहादैंत[11] खान लखन हेरिय बहु बारह ॥
पापिय कहौंन पायो तँदपि[12] देख्यो सब ईरान दल ॥
यह जानि भाड़भुंजक अधम दूत पठायउ छुंद[13] छल ॥११३॥

॥ दोहा ॥

खानसहादत दूत दल, पठयो चमुपति पास ॥
मोहि इरानिन जित्तिकैं, गाह दिय काराबास[14] ॥ ११४ ॥
अब प्रदोस[15] आगम अधिक, अरु तुम घायल अंग ॥

---

१ भयंकर २ वीरों के फोडेहुए नगारे ३ अग्नि ४ पूग कर ५ जन लोक में गये ॥ ११० ॥ ६ तरवारों के ॥ १११ ॥ ७ सुन्दर ८ शिव ॥ ११२ ॥ ९ श्रेष्ठ १० सूर्य अस्त होते ११ सहादतखां को देखने के लिये १२ तोभी १३ उस नीच ने छल से दूत भेजा ॥ ११३ ॥ १४ कैदखाने में ॥ ११४ ॥ १५ सन्ध्या समय का

कल्हि छुरावहु मदति करि, जानहु दुर्गम जग ॥ ११५ ॥
बदलि मूढ ईरान बिच, खल सु सहादतखान ॥
यह फरब कहि मुक्कल्यो, बनि सठ बदीवान ॥ ११६ ॥
सेनापति यह सुनि फिर्यो, जय जस कछुक उबारि ॥
सोधि समर घायल भटन, चल्यो नृजानन हारि ॥ ११७ ॥

पट्पात् ॥

इत दिल्लीस वजीर खानदौरहिं सुनि आवत ॥
मारन ताकहँ मूढ ईष्ट बहु ब्याज उपावत ॥
कह्यिप साहसों जाय भजिंग कातर सेनापति ॥
कजलवास लगि पिट्ठि आत हारन इत आपति ॥
मैं अबहि देन दलपति मदति तोपन बल रोकत तिनहिं ॥
यह अनृत अखिल गोलन गजब गंजर विथारिय को गिनहिं॥११८॥

॥ दोहा ॥

यह वजीर अति घोर किय, खेता कमरदी खान ॥
सेनसहित सेनेसको, पिन्नौं तोपन प्रान ॥ ११९ ॥
टुव २ हि खानदौरह चरन, गोलन उड्डिग गैंन ॥
अति घायल हुअ तदपि द्रुत आयउ डेरन अैंन ॥ १२० ॥

॥ निशाणी ॥

अति घाय खानदौरॉ इम डेरन आया ॥
खूंनी कलीजखाँको सँवजीर बुलाया ॥
मन मंत्रे नीति भही सबकोंहि सुनाया ॥
हाँनाँ सु तो हुवा ज्यों हम ज्याँन गुमाया ॥ १२१ ॥

१दुर्गम ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ २ अनुकूल ३ मिस (छल) ४ भागा ५ईरानी ६ सेनापति (खानदौरा) को ७ झूठ पोल कर ८ निरन्तर प्रकार ॥ ११८ ॥ ९अपराध (कसूर) ॥ ११९ ॥१०गोलों से आकाश में उड़गये ११स्थान में ॥१२०॥ १२खून करने वाले (घातक)१३वजीर सहित१४नीति की सलाह ॥ १२१ ॥

अब तीन ३ मंत्र अक्खैं हम सो तुम कीजै ॥
ईरानसौं लराई इक १ हौन न दीजै ॥
दिल्लीस हिंतु दूजैं २ नादर न मिलावो ॥
तीजै ३ न ताहि दिल्ली तुम जाय दिखावो ॥ १२२ ॥
मंगैं सु दै रुपैये प्रतिगोन[3] करावो ॥
कीनी तुम्है जु मोसौं क्यौं सो वँ कहावो ॥
यौं अक्खि खानदौराँ बपु सद्य[5] बिहायो ॥
सुनि साह पैं[6] मुहुम्मद अति सोक अघायो ॥ १२३ ॥
अब खाँकलीजकौंही सेनापति कीनों ॥
अर्थ भाङ्सुंजकके[9] अत्थ न दीनों ॥
इतकौंहु साह नादर अकुलाय[10] बिचारी ॥
उमराव इक्क किन्नी मम सेन दुखारी ॥ १२४ ॥
तबही कलीजखाँपैं लिखि पत्र पठाया ॥
लै दंडके रुपैये हम गोन[11] उपाया ॥
सुनि सो कलीजखाँहू अति मोद बढाया ॥
एकांत साह अग्गैं अब मंत्र बनाया ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

कहैं कलीज रु कमरदी साह अग्ग कर जोरि ॥
सेनापति मार्‍यो समुझि, देहु लरन अब छोरि ॥ १२६ ॥
इक्क कोटि १०००००००० दम दम्मलै[12], नादर पच्छो जात ॥
सोहि बत्त अब स्वीकरहु[13], लरैं न पुग्गहिं तात[14] ॥ १२७ ॥
मन्नि साह यह मंत्र तब, नादर प्रति लिखवाय ॥
दम्म कोटि लेजाहु घर, अरु नन मिलन उपाय ॥ १२८ ॥

---

१ तीन सलाह कहता हूं २ से ॥ १२२ ॥ ३ उलटा गमन ४ अब ५ शीघ्र शरीर छोडा. बादशाह मुहुम्मद ६ भी ७ मर गया ॥ १२३ ॥ ८ यहां ९ सहादतखां के अर्थ सेनापति पन नहीं दिया १० घबरा कर ॥ १२४ ॥ ११ जाना विचारा है ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२ दंड के रुपये लेकर १३ स्वीकार करो १४ हे स्वामी! ॥ १२७ ॥

इक १ भाग अबही लहहु, इक १ जाय लाहोर ॥
इक १ गिनहु लघत अटकं, इम लीजे दर्मं मोर ॥ १२९ ॥
यह सुनि नादरसाह अब, करन विचारिय कुच्च ॥
खानसहादत जानि यह, अधम जप्पो अघ उच्च ॥ १३० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

खानसहादत एह विचारी, नाँहिं अवर कोऊ भटभारी ॥
आन खानदोराँ जब देहैं, सेनापति तब माँहि बनै हैं ॥ १३१ ॥
यहै विचारि वजीर मिलायो, मूढ सु वृथा चमूप मरायो ॥
साह कलीज कियउ सनापति, यातैं जप्पो सहादत अवभाति॥१३२॥
नादरपति इम बैन सुनाये, वृथा कलीज तुमहिं बहकाये ॥
दिल्लिय राज दयो तुमकों रबं, क्यों नहिं लेत रु जान कहत अब१३३
खान कलीज मिलन मिस बुल्लहुं, पुनि करि कैद खीज सिरखुल्लहु
तब तुमरे बसि साह मुहुम्मद, ह्वैहैं द्रुतहि तजहिं साहस हद१३४
तब इन खानकलीज बुलायउ, करन मत्रं वह सठ द्रुतं आयउ॥
तबहि पकरि कारोंविच डाप्यो, अब नादर अति गर्व सम्हाप्यो १३५
अक्खिय सुनहु कलीज कहावहु, दिल्लीसहिं यँहँ मिलन बुलावहु॥
सिर कुरान धरि सपथैं उचारत, एकासैंन बैठहिं हित सम्मत १३६

रत १ मत २ अन्त्यानुप्रास १ ॥

तबहि कलीज पत्र लिखि प्रेरय, आवहु मिलन इनहु हित हेरिय॥
यह सुनि तखत खान औरोहिय, चलत साह बहु बीरन रोहियँ १३७

अरोहिय १ नरोहिय २ अन्त्यानुप्रास १ ॥

कोऊ कहत जाहु नन हजरत, कोऊ कहत अबहु दल बलवंत ॥

॥ १२८ ॥ १ अटक नदी उतरा तब २ इस प्रकार मुझसे दंड लो ॥१२९॥१३०॥
॥ १३१ ॥ १३२ ॥ ३ खुदा ने ॥ १३३ ॥ ४ बुलाओ ५ क्रोध ६ शीघ्र ही ७ हठ
की सीमा छोड़ देवेंगा ॥ १३४ ॥ ८ कलीजखा का ९ सलाह करने को १०
शीघ्र ११ कैद मा १२ गर्व ॥ १३५ ॥ १३ सौगन १४ एक गद्दी पर ॥ १३६ ॥ तख्तखा
पर १५ चढ़ कर १६ रोका ॥ १३७ ॥ १७ सेना बलवान् है

है हाजरि भट लक्ख१०००००कटारे, पैहो मिलि न भली फलप्यारे
काहूकी न साह श्रुति कीनी, चल्यो मिलन सेनहु नहिँ लीनी॥
संग सु लये पंचसत ५००सादी, पानीपथ इम गयउ प्रमादी॥१३९॥
पावकोस लग नादर पुत्तह, गय सम्मुह बेसर रथ जुत्तह ॥
इम ईरान अनीकें गयो यह, डोढी लग आयउ सम्मुह वह १४०
जाय सभा बैठे इकआसन, भाई कहि हुव दुव संभासन ॥
तब नादर दिल्लीसहिँ अक्खहिँ, सचिवहु सचिव मिले हित रक्खहिँ१४१
तुम वजीर बुल्लहु यहँ यातैं, हम वजीर रक्खहिँ हित तातैं ॥
तब दिल्लीस पत्र लिखि निजँ कर, बुल्ल्यो स्वीयँ वजीर पापपर१४२
यह कग्गर नादर कर अप्पिय, नादर ताहि बुलावन अप्पिय ॥
तब पचीस२५ असवार पाठाये, चंड ति कग्गर लै रु चलाये १४३
ते उद्धत आये दिल्लिय दल, बदत वजीर वजीर कुंजे बल ॥
यह सुनि खानकमरदी कपिगँ,तिन सह चल्यो नाँहि कछु जंपिगँ१४४
तबहि मंत्र अक्खिय उमरावन, जंग वजीर रचहु जावहु नन ॥
वन१ नन२ अन्त्यानुप्रासः ॥
पापी जन न सुल्लहिँ पिछानैं, बिपरीतहिँ अनुकूल बखानैं ।१४५।
कहिय वजीर लरहु जिन कोऊ, करिहैं साम साह हम दोऊ२ ॥
इम कहि लै द्वै सत२००असवारन, गो वजीर चित मंत्र बिचारन १४६
सोहु नजरिकैदी किय नादर, दिल्लिय दल सुनि भजिग महा दरँ ॥
नादर१ दादर२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

१कटा (कतल) करनेवाले मिल कर भला फल नहीं२पाओगे॥१३८॥३सवार।१३९। ४पुत्र (यहां स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है) ५ खच्चरों के रथ जुताकर ६ सेना में ७ नादिरशाह ॥ १४० ॥ ८ एक गद्दी पर ९ वार्तालाप १० कहा, वजीर से वजीर मिलकर ॥ १४१ ॥ ११ तुम्हारे वजीर को बुलाओ १२ हमारा वजीर उससे स्नेह रक्खेगा१३अपने हाथ से१४अपने पापी वजीर को बुलाया ॥ १४२ ॥१५पत्र ॥१४३ ॥१६सेना में घुसे१७धूजा१८कुछ नहीं कह कर ॥ १४४ ॥ १९ सलाह को नहीं पहचानते २० प्रतिकूल को अनुकूल कहते हैं ॥ १४५ ॥ ॥ १४६ ॥ २१ बड़े भय से

अब प्रयान ईरान साह करि, आयउ पुर दिल्लिय उद्धत अरि १४७
सक सर अक सत्त इक १७९५ *हायन, परि फग्गुन †सित दस-
मि १० ‡पलायन ॥
इम नादर दिल्लिय पुर आयउ, होय निरंकुस तोरें चलायउ ॥१४८॥
साह मुहम्मद खानसहादेत, बहुरि बजीर रु खांकलीज वेत ॥
ए च्यारि४हि कैदी करिआनैं, ईरानी दिल्लिय प्रविसानैं ॥ १४९ ॥
अप्प मुख्य महलन निवास किय, दल मिलान नगरी अंतर दिय॥
तत्थं रहत निस दोय२ विताई, पैं सेना अनसन अकुलाई ॥ १५० ॥
कोउ न बनिक हट्ट पट खोलैं, बैठे दुरि गेहन नन बोलैं ॥
दलें नादर प्रति अरज दई तब, अत्थ बनिक बेचैंन अन्न अब १५१
तँहँ किय अरजे भट्ट बंदीजन, राजा जुगलकिसोर प्रीति पन ॥
दल ईरान देंहसति मन डोलत, यातैं बनिक बजार न खोलत १५२
तब नादर पठई कहि जाहिर, बसहु जाइ मम दल पुर बाहिर ॥
तब आदेसें अधीन कटक चढि, बाहिर पुरके जान लग्यो बढि१५३
तिहिं खिन पुर उद्घोसें विथार्यो, महलनमें नादर हनि डार्यो॥
वाको कटक भजत अब यातैं, पथ रुक्कहु इन सबन निपातैं १५४
यह सुनि जनन जरे दरवाजे, बहु बंदूक रु पत्थर बाजे ॥
पहर दोय२ तेंस सेन पचाई, अब नादर प्रति अरज रचाई ॥१५५॥
हुकम अधीन जात बाहिर हम, पुरजन जान न देत कुटिल क्रम ॥
बंदूकन प्रांवन पुनि मारत, हम सु रांवरो कथित निहारत॥१५६॥

॥ १४७ ॥ * संवत में † शुक्ल पक्ष ‡ भगे १ प्रताप ॥ १४८ ॥ २ सहादतखां ३ इन चारों को सन्तोषदायक कैदी करके ४ प्रवेश हुए (घुसे) ॥१४९॥ ५सेना का मुकाम ६ शहर के भीतर ७ तहां ८ भूख से ॥ १५० ॥ ९ सेना ने ॥ १५१ ॥ १० भय से ॥ १५२ ॥ ११ हुकम के आधीन ॥ १५३ ॥ १२ हाका फैलाया १३ नादिरशाह को मारडाला १४ मारैं ॥ १५४ ॥ १५ उस (नादर) की सेना ने ॥१५५॥१६पत्थरों से१७आपका हुकम देखते हैं ॥ १५६ ॥

निज[1] दल[2] अरज न मन्नी नादर, अप्पहि लखनैं[3] चल्यो अन[4] आदर ॥
संके तदपि नाँहिं जन सारे, याहूपर पत्थर बहु मारे ॥ १५७ ॥
नादरकोंहु सत्य तब भासी, कट्ठ[6] मुट्ठि निज किरचि निकासी ॥
ठ्यजनँ ताहि उच्ची कारे बुल्ल्यो, ईरानिन यह सुनि खग तुल्ल्यो १५८
भयो कतल दिल्लियपुर भारी, लक्खन कटे बाल नर नारी ॥
स्वार्न[8] बिडाल[9] धेनु हय कुंजर,[10] एँडक[11] अँज[12] रु महिख खर बेसँर[13] १५९
कटे कँहर[14] को गिनैं अनंतन, प्रलय मच्यो त्रय जाम[15] घोर पन ॥
यह सुनि खानकमरुदीन अरज किय, तब नादर यह[16] रुक्कि अभय
दिय ॥ १६० ॥

फग्गुन मास बिसँद द्वादसि१२दिन, इम पुर कतल कियउ ईरानिन
नादर दँत्त[18] अभय अब जानिय, तब तम भटन कोस असि[19] ठानिय १६१
रहि नादर दुव २ मास बितायउ, दिल्लिय पति सँन[20] लिखित[21]
लिखायउ ॥

हो मैं साह जु हिंदवान पति, सो जित्यो नादर इरान पति ॥१६२॥
वानपति१ रानपति२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
ज्यान माल बखसीस कियउ सब, सो मैं लियउ अधीन उभय अब
इम लिखाय नादर दँल लिन्नौं, कछु न मुहुम्मद आदर किन्नौं॥१६३॥
छिन्नि बिभूति लई सब बँर[22] बर, सत्रह१७ मन अनमोल जवाहर ॥
हीरा इक आयँत[23] चतुरंगुल, जो बुंदीस भोज किय बाहुल[24] ॥१६४॥

---

१ अपनी २ सेना की ४ बादशाही लवाजमा लिये विना ३ देखने को ५ तो भी नहीं डरे ॥ १५७ ॥ ६ काष्ठ (लकडी) की मूँठ की तरवार को निकाल कर, उसको ऊँची करके ७ कतल बोला ॥ १५८ ॥ ८ कुत्ते ९ बिल्ली, गाय, घोडे १० हाथी ११ मैंढे १२ बकरे, भैंसे, गधे १३ खच्चर ॥ १५९ ॥ १४ उस जुल्म में १५ तीन पहर तक १६ इस (कतल) को रोक कर ॥ १६० ॥ १७ सुदि १८ नादर का दिया हुआ १९ तरवारों को म्यानों में की ॥ १६१ ॥ २० दिल्ली के बादशाह से ॥ १६२ ॥ २१ पत्र ॥ १६३ ॥ २२ श्रेष्ठ श्रेष्ठ ऐश्वर्य छीन लिया २३ चार अंगुल मोटा बुंदी के पति भोज ने २४ भुजबल किया था ॥ १६४ ॥

गुल १ हुल २ अन्त्यानुप्रास १ ॥

तोहीगाहु छिन्नि लियनादर, तखत दम्म नवकोटि९००००००० मुलबर
आयुध अतुल बसन भूखन प्रिय, अच्छेसब इत्यादि छिन्नि लिय।१६५।
रहि दुर मास दिल्लिय इम नादर, करिगय कुच सेन सह सादर
अब इत खानसहादत जानी, मैं हराम यह साह पिछानी ॥१६६॥
जेपत नहिँ छारहिँ हजरत हठ, यह बिचारि बिस खाय मर्यो सठ॥
साह मुहम्मद तेज नसायो, लगि कुमग्ग सब बिभव लुटायो१६७
देल्लिय निबल सबन अब जानिय, पुनि मरहट्ठन हल्ल प्रमानिय॥
इत बुधसिंह देह अब छोर्यो, बुंदिय राज उदधि बिच बोर्यो१६८

॥ दोहा ॥

पुरबेघम सनैं कोसत्रय ३, नाम बाघपूर ग्राम ॥
जत्थ देह सभर तजिय, निज बिथारि बदनाम ॥ १६९ ॥
संवत खट नव सत्त इक १७९६, अर्मा३० रु माधव मास ॥
इम सु बुद्ध अनिरुद्ध सुव, किय परलोक निवास ॥ १७० ॥
प्रेत करम सब बिधि सधिय, भो न भूमि गजदान ॥
बसुधा बिनु किहिँ घर बनैं, बैदिके मृतक बिधान ॥१७१॥
रम्य महल१ सर२ बाग३ रचि, करन नाम बय काल ॥
सेवन आलमसाह४७।१ कोँ, प्रबिस्यो बुद्ध१९७।१ नृपाल १७२
कछवाही १९७।२ रानी कियउ, पुर निरचन प्रारंभ ॥   ॥
जयनिवास१ अभिधान धरि, थप्पन भुव जस थंभ ॥१७३॥
बिच अच्युत मंदिर बिरचि, पुर ताके चहुँ ४ पास ॥

अष्ट तख्त (यह तख्त बादशाह शाहजहाँ ने बनाया था और 'तख्तताऊस' स का नाम था)१यत्न ॥ १६५॥२ ६६॥३कुमार्ग॥१६७॥४समुद्र में डुबाया॥१६८॥ में ६ जहाँ ७ बुधसिंह ने शरीर छोड़ा ॥ १६९ ॥ ८ अमावास्या ९ चैत्र मास ० अनिरुद्धसिंह के पुत्र ने ॥ १७० ॥११भूमि और हाथी का दान नहीं हुआ १२बिना भूमि के१३वेद विहित कर्म॥१७१॥१४सुन्दर१५प्रवेश किया॥१७२॥१६ गर बसाने का कार्य प्रारम्भ किया१७नाम रखकर॥१७३॥१८विष्णु भगवान का

रानी रचन बिचार किय, जैपुर उपमिति[1] जास ॥ १७४ ॥
है गनेस घंटी बिहित[2], ताके बाहिर तत्थ ॥
दिस उत्तर४।७ केदारतैं, लग्यो बसन अति अंत्थ[3] ॥ १७५॥
बिच चत्वर[4] तँहँ बनि सक्यो, पँहु[5] पह आलय पीढ[6] ॥
बिनु बुंदिय रुकिगो बहुरि, तुंग[7] न भो नभ लीढ[8] ॥ १७६ ॥
निलय जोध[9]१९७।२ रहि नृप अनुज, व्यय बिस्तरि बँसु[10] वार॥
पुरतैं पच्छिम३।५ कोस१ पर, कमन[11] रच्यो कँसार[12] ॥१७७॥
नाम जोधसागर १।२ सर१रु, निबसथ[13]२ रचित नवीन ॥
बाग३ महल४ सर सेतु[14]बिच, प्रभु[15] मंदिर५ ढिग पीन[16] ॥१७८॥
भूपति धावर गंग भो, जिहिँ पुर पूरब जत्थ ॥
बिरचे उँपबन[17]१ बापिका[18]२, अप्पि हजारन अंत्थ[19] ॥ १७९ ॥
कोटवाल नृपको कथित, रामचंद अभिधान[20] ॥
बिरचे बापी१ बाग२ जिहिँ, पुरबिच पच्छिम३।५थान॥१८०॥
गजमुख भूप पुरोहितहु, पच्छिम३।५दिस पुर पास ॥
दधिमति देवीको सदन१, बिरच्यो बिभव बिलास ॥१८१॥
तत्थहि बल्ल[21]१रु बापिका३, छत्री४ किय तिहिँ छीव[22] ॥
पुरके दक्खिन२।३प्रांत पुनि, ऊँचे महल५अतीव ॥ १८२ ॥
नृपदासी राधा तनय[23], गंग नाम इक दास ॥
नाल[24] ताल नँवलक्खके[25], सबिध महल१ तिम तास ॥१८३
समय भूप बुधसिंह१९७।१के, परिकर[26] जनन जितेक ॥

१जिस को जयपुर का उपमान बनाने का विचार किया॥१७४॥२उचित गणे
घाटी है३धन॥१७५॥४बीच का चौक५हे प्रभु रामसिंह, प्रभु (विष्णु) के मंदि
का६थाला ही बन सका७ऊँचा नहीं हुआ ८ आकाश को चाटने वाला ॥१७६
९. बुधसिंह के छोटे भाई जोधसिंह ने घर (बुन्दी) में रह कर१०धन के सम्
का खरच फैला कर११सुन्दर१२तालाव रचा ॥ १७७ ॥१३ग्राम१४पाल के ऊप
१५विष्णु भगवान् का१६बडा मंदिर॥१७८॥१७बाग१८बावड़ी १९धन देकर॥१७९
२०नाम॥१८०॥१८१॥२१बाग२२क्षीव (मत्त, पागल) ने ॥ १८२ ॥२३पुत्र २४ न
में तलाव २५ नौलखा के नाम से बनाया ॥ १८३ ॥ २६ पास के मनुष्यों ने

विरचे आउठान बहु, न वर्ने कबहु तितेक ॥ १८४ ॥
पिक्खहु निर्यति उदर्क पहु, अैसे विभव अपेतं ॥
सो वेघम तजि संहनन, गो इम निःस्व निकेत ॥ १८५ ॥
अतहपुँरके जननमैं, हित पति संगति होन ॥
काहूनें कुलरीति करि, सद्यो नहिं सहगोन ॥ १८६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिबुधसिंहचरित्रे ससैन्यनादरशाहार्यावर्तपानीपथकरनालागमन १ खानदोरास्वसहायजयपुरराजजयसिंहाकारणाव्याजदर्शनतदनागमन२जयसिंहागमननिराशखानदोरानादरशाहसमुखसैन्यसज्जन३पवनेन्द्रमुहम्मदसहितसमुखप्रस्थितखानदोरानादरशाहान्तिकपत्रप्रेषणद्वारासंधिविग्रहाभिप्रायचोदन ४ भयभीतनादरशाहान्तिककलीजखांप्रभृतिप्रेषणद्वारायुद्धसन्नद्धीकरण ५ समरसमयमुहम्मदविरुद्धशहादतखानादरशाहसम्मिश्रण ६ विजितेरानसैन्यागच्छत्खानदोराविरोधदिल्लीमहामात्यकमरदीखातन्मारण ७ गृहीतदण्डरूप्य-

---

१आईठाण स्थान)॥१८४॥२भाग्य३राजा के आगे आनेवाले कर्मों का फल४ऐसे वैभव को छोड कर५वेघम नामकपुर में शरीर छोडकर६दरिद्री होकर घर से गया ।१८५।७जनाने के लोकों में ८ पति के साथ स्नेह नहीं था९सती नहीं हुई॥१८६॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति बुधसिंह के चरित्र में, नादरशाह का सेना लेकर हिन्दुस्थान में पानीपथ, करनाल में आना १ खानदोरा का अपनी सहायता पर जयपुर के राजा जयसिंह को बुलाना और जयसिंह का बहाना करके नहीं जाना २ जयसिंह के आने की आशा छोड कर खानदोरा का नादर के सम्मुख सेना सजना ३ बादशाह मुहम्मद को लेकर गये हुए सेनापति खानदोरा का नादरशाह के समीप पत्र भेज कर युद्ध करने अथवा सुलह (सन्धि) करने का अभिप्राय पूछना४डरे हुए नादरशाह के समीप कलीजखां आदि का पत्र भेज कर उसको युद्ध पर सन्नद्ध करना ५ युद्ध के समय शहादतखां का मुहम्मद से विरुद्ध होकर नादरशाह से मिलना ६ ईरान की सेना को विजय करके आतेहुए खानदोरा को दिल्ली के वजीर कमरदीखां का परस्पर के विरोध के कारण मारना ७ दंड के रुपये लेकर जाने की इच्छावाले नादरशाह को समझा कर सहादतखां का सलाह

कांजिगमिषुनादरशाहप्रबोधपूर्वक शहादतखांमन्त्रणयाजाहूतकमरुद्दीनखांकीलन ८ संधिछलाजाहूतयवनेन्द्रमुहुम्मदमहामात्यकमरुद्दीखांकीलनानन्तरनादरदिल्लयागमन ९ विहितदिल्लीहत्याकोपितमासद्वयकारितमुहुम्मदविजयपत्रगृहीतदिल्लीसर्ववैभवनादरशाहेरानप्रतिगमन १० दिल्लीशहादतखांविषभक्षणमरणदिल्लीराज्यनिर्बलीभवन ११ बुन्दीपतिबुधसिंहपरासुतावर्णनं त्रिचत्वारिंशो मयूखः ॥ ४३ ॥

आदित एकाशीत्यधिकद्विशततमः ॥ २८१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे श्रीमत्परमधार्मिक-सकलशुभगुणान्वित-शोदा बारहठशाखाक-चारणकुलावतंसशाहपुराप्रतोलीपात्राऽनडसिंहपुत्रेण, उदयपुरमहाराणासज्जनसिंह-तदुत्तराधिकारिमहाराणाफतहसिंह-योधपुराधीशमहाराजयशवन्तसिंह-ईडरमहाराजप्रतापसिंहकृपापात्रशाहपुरानिवासि-योधपुरमहाराजाश्रितसुकविबारहठकृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीनामटीकायां सप्तमराश्यन्तर्गतबुधसिंहचरित्रस्य टीका समाप्तिमिता ॥

के मिस से बुलाकर कमीजखां को नादर की कैद में कराना ८ सन्धि के मिस से बादशाह मुहुम्मदशाह और वजीर कमरुद्दीखां को बुलाकर कैद किये पीछे नादरशाह का दिल्ली आना ९ दिल्ली मे कतल किये पीछे दो मास पर्यन्त रहकर मुहुम्मदशाह से विजय पत्र लिखा कर दिल्ली का सब वैभव लेकर नादरशाह का पीछा ईरान में जाना १० दिल्ली में शहादतखां का विष खाकर मरना और दिल्ली की बादशाहत का निर्बल होना ११ बुंदी के राजा बुधसिंह के मरने के वर्णन का तियालीसवां ४३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ इक्यासी २८१ मयूख हुए ॥

इतिश्री श्रीमान् परमधार्मिक, सकलशुभगुणान्वित, शोदा बारहठ शाखा के चारणकुलावतंस शाहपुरा के पोळपात ऐसे अनाडसिंह के पुत्र उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह और उनके उत्तराधिकारी महाराणा फतहसिंह, तथा जोधपुर के महाराजा यशवंतसिंह और ईडर के महाराजा प्रतापसिंह के कृपापात्र शाहपुरा निवासी और जोधपुर के महाराज के आश्रित सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की कीहुई उदधिमंथिनी नामक टीका में वंशभास्कर के सप्तम राशि के अंतर्गत बुधसिंह चरित्र की टीका समाप्त हुई ॥

॥ श्रीगणेशायनम ॥

अथ उम्मेदसिंहचरित्रप्रारम्भ ॥

॥ चूलिका पैशाची भाषा ॥

॥ गीति ॥

तुमटकतनपलपञ्जो हवति सता य्येव पीतपङ्गुरनो ॥
सा पउमाए सन्तलपामङ्गो या नमिय्यते तेवो ॥ १ ॥
सम्फु कन्तप्पहलं चराडीस कजमुह कनाथिपतिं ॥
तन्तून फारतिं म करेमि अयउत्तलत्थक कथम् ॥ २ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ अनुष्टुब्युग्मविपुला ॥

वन्देऽग्मदीयवप्तार चराडीदान महामतिम् ॥
त्रैगुणयतिमिरध्नं विद्यावाग्भूपिताननम् ॥ ३ ॥
बुधसिंहेऽथ बुन्दीद्रे प्रयाते पञ्चतत्वनाम् ॥
सुनुरुम्मेदसिंहोऽरपाऽभिपिक्तोऽभून्महामना ॥ ४ ॥
पराननादीन्दु १७९६ सख्याभृद्विक्रमाब्दोत्तरायणे ॥
वसन्ताऽर्जुनवैशाखे त्रयोदश्या १३ नरेन्द्रता ॥ ५ ॥

दुष्टकदनपरप्राज्ञो भयति सदा एघ पीतप्रावरण ॥ स पद्मया सुन्दरयामाङ्गो नन् नम्यते देव ॥ १ ॥ शम्भु कन्दर्पहर चराडीश गजमुख गणाधिपतिम् ॥ नत्वा भारती मह करोमि यथोत्तरस्थक ग्रन्थम् ॥ २ ॥

लक्ष्मी सहित सुन्दर है धाम अग जिनका और सदैव पीत वस्त्रवाला, बुद्धिमान् निश्चयही दुष्टों के नाश में तत्पर होता है, उस देव को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥ चण्डी के पति, कामदेव को नाश करने वाले, शिव को और गज के मुखवाले गणपति (गणेश) को और सरस्वती को, मैं नमस्कार करके जिस पीछे ग्रन्थ करता हूँ ॥ २ ॥ विद्या और वाणी से शोभायमान है मुख जिनका, त्रिगुण रूपी अन्धेरे के सूर्य, बडे बुद्धिमान्, मेरे पैदा करने वाले (पिता) चण्डीदान को नमस्कार करता हूँ॥३॥अब बुधसिंह का देहान्त होने पर उसका पुत्र महात्मा उम्मेदसिंह अभिषिक्त (राजा) हुआ ॥ ४ ॥ विक्रम के सत्रह सौ छिनवे १७९६ के संवत् के जाने पर उत्तर अयन में वैशाख सुदि तेरस के दिन यह उम्मेदसिंह राजापन को प्राप्त हुआ ॥ ५ ॥ (ज्योतिष म

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ प्लम्वकम् ॥

*पानिग्गहन चउ४हि करि पायो†सुत पंचक५‡उम्मेद१९८।४सधीर
उभय२खवासि तहाँ इक §औरस सुत दुव२दुव२हि¶सुतासम सीर[१]
प्रथम[१०]व्याह झल्ला दलपतिकी तनया[२] गर्गराटपुर थान ॥
कमनैवरात पहुँचि अभिधा[३] करि चिमनकुमरि१९८।१परन्यों चहुवान६
दूजी२रासि नगर पति दुहिता[५] नव[६] वय कुंदनकुमरि१९८।२सनाम ॥
ऊदाउति रट्ठोरि बरी इम करि बखतेस स्वसुर जस काम ॥
बखतकुमारि१९८।३ईडरेची बालि[७] जुग२कर[८] जुग२ अंचल[९] जुग२जोरि
परनी ईडर भूप पितृ[१०]व्यक रामसुता तीजी३ रट्ठोरि ॥ ७ ॥
अजितसिंह ईडर पहु[११] पुत्री क्रमचोथी४ तिम उदयकुमारि१९८।४ ॥
विजय[१२] नरेस जोधपुर बुल्लि रु व्याही नृपहिँ सनेह बिथारि ॥
तनय[१३] बडो१इनमैं तीजी३भैंव[१४] सजव[१५] मर्‍यो सु१९९।१न भो तस नाम
पुनि सुत हुव दूजी२ पत[१६]नीकै अजितसिंह१९९।२दूजो२अभिरामा[१७]।८।
तीजो३तनय बहादुर१९९।३तासहि[१८] क्रम सोदर[१९] ए दुव२हि कुमार ॥
पुत्र दुव२हि चोथी४पतनीकै सुत चोथो४तिनमैं सरदार१९९।४ ॥
पुत्र त्रिलोकसिंह१९९।५हुव पंचम५ सिसु वय हुव तासहु अवसान[२०]॥
सुनहु खवासि रूपरसराय१ रु अपर[२१]२ गुमानराय२अभिधान[२२] ॥ ९ ॥
दूजी२कै संतति चउ४बि[२३]धि दिय सुत सिवसिंह१तथा संग्राम २ ॥

सम्वत् को गत मानते हैं, वर्तमान नहीं मानते) * विवाह † पांच पुत्र पाये ‡ धीरज वाले उम्मेदसिंह ने § विवाहिता स्त्री के उदर से ¶ दो पुत्रियें १ शीलवाली २ पुत्री ३ सुन्दर ४ नाम (यश) करके ॥ ६ ॥ ५ पुत्री ६ नवीन अवस्थावाली ७ पुत्रि ८ दोनों हाथ ९ दोनों वस्त्र जोड़कर १० ईडर के पति के काका रामसिंह की पुत्री ॥ ७ ॥ ११ प्रभु (राजा) १२ राजा विजयसिंह ने जोधपुर बुलाकर १३ पुत्र १४ जन्मा सो १५ शीघ्र मर गया १६ स्त्री के १७ सुन्दर ॥ ८ ॥ १८ उस सहित अथवा उसी स्त्री के १९ सहोदर (सगेभाई) २० अन्त २१ दूसरी २२ नाम ॥ ९ ॥ २३ ब्रह्मा वा भाग्य ने

अनिरुद्धकुमारि१वडी१अरु*अनुजा२सुता भई ब्रजकुमरि२सनाम ॥
जेठी१जनकं दई जयसिंह१हिं जामाता जदुकुल सम जानि ॥
सुत तस सप्त७राजसिंहा१दिक प्रकट भये कुल नियति प्रमानि१०
दूजी२सुता जैतसिंह१।२हिं दिय तकि सम कुल रठोर सतेज ॥
नवलसिंह१ताके इक१नंदन भयो प्रकट इह६१न भानेज ॥
दीपसिंह१९८।६इत भूप सहोदर दिय जिहिं थान कापरनिद्रंग ॥
भये बिबाह तास खट भार्वी सुव इक१दोइ२सुता बिधिसंग ॥११॥
अनुपमकुमरि१९८।१वडी१ठकुराइनि सोवर दीपसिंह१९८।६हित सत्य
इडरसिंह तनया सगताउति सील१चरित२गुन३रूप४समत्थ ॥
अरु उम्मेदकुमरि१९८।२गागरनी दूजी२ अभय सुता रठोरि ॥
तीजी३तिय ईडरपति तनया गदितें भवानकुमरि१९८।३गुन गोरि१२
जादव सोनपाल तनया जिम फतेकुमरि१९८।४चोथी४निज नारि ॥
नृप सामंत सुता रूपनगर क्रम पंचम५सु किशोरकुमारि १९८।५ ॥
परनाई जु पितृव्य बहादुर यह रठोरि कृष्णागढ आंसु ॥
क्रमि सीहोर छठी६अमर कुमरि१९८।६सगताउत्त अमान सुतासु१३
अजित सुता तीजी३ तिय इनमें अग्रजकी साली जुहि अंस ॥
सुत जेठो१सुरतानसिंह१९९।१हुव तनया चंद्रकुमरि१९९।१हुव तास
तिय चोथी जहांनि जनी तिम दूजी२सुता बिचित्रकुमारि२ ॥
परिनाई जयनेर प्रतापहिं सो श्रीजितं श्रुति बिधि अनुसारि ॥१४॥
अधिपति१को रु अनुज२को अक्खिय इहां बिबाह१प्रजा२क्रम एस

* छोटी१पुत्री२पिता उम्मेदसिंह ने३जयसिंह को४जमाई५समान (बराबरीवाला) ६राजसिंह आदि ७ भाग्य के अनुसार ॥ १० ॥ ८ पुत्र ९ उम्मेदसिंह का छोटा भाई १० आगे आने वाले समय में ॥ ११ ॥ ११ नगर का नाम है ।१२ ईडर के पति की पुत्री जिसका नाम भवानकुमरी कहते हैं ॥ १२ ॥१३जिसका विवाह काका बहादुरसिंह ने किया १४ शीघ्र १५ जाकर ॥ १३ ॥ १६ उम्मेदसिंह की साली १७ है१८बुन्दी का राज्य छोडकर वानप्रस्थ हुए पीछे उम्मेदसिंह ने अपना पद (खिताब) श्रीजित (लक्ष्मी को जीतनेवाला) रक्खा था १९ वेद की विधि के अनुसार ॥ १४ ॥ २० उम्मेदसिंह का

जो सब प्रभु[1] भावी३बिधि जानहु बर्त्तमान२अब सुनहु बिसेस ॥
पाइ जनक पट्टहिं दुर्गत[2] पन करि जो जो दुष्कर रन काम ॥
पुहवि लई१रु दई२जिम पुत्रहिं रोचक[3] सकल सुनहु प्रभुराम[4]२०३।४

॥ दोहा ॥

पन[5]१पटु रन२पटु बचन३पटु, बार बरस दस१०बेस ॥
बैठि तखत बुधसिंहकैं, हुव उम्मेद नरेस ॥ १६ ॥

॥ हरिगीतम् ॥

कोटेस दुर्जनसल्ल यह सुनि सोचि कछु हित हेरयो ॥
बखतेस पृथ्वीसिंह सुत निज बंधु बेघम प्रेरयो ॥
तिहिं खग्ग[6] निज कर बंधि स्रो नृप भाल[7] तिलकहु मंडयो ॥
नजरि रु निछावरि ठानिकैं निज थान परिखद बैठयो[8]॥ १७ ॥
तिमही पुरोहित व्यास चारन भट्ट नजरि निवेदई[9] ॥
भट बर्ग पुनि कछु हे जिन्हैं इम भप भूपतितां[10] लई ॥
गोस्वामि गोपियनाथ नृप तब लैन मंत्रहि बुल्लये[11] ॥
करि नाँहिं आयउ नाँहिं जे जयसिंहके भय भुल्लये ॥ १८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कुम्मै[12] दलेल[13] कानि बैंसु[14] कामी, गोपियनाथ नटिय गोस्वामी ॥
कहिय मैं न कोटापुर छोरौं, दिन चउ[15]४मास कितहु नहिं दोरौं १९
यह सुनि पुर बेघम नृप माता, बिपति स्वीय लखि नीति बिधाता
पुनि बिन्नति पठई कोटा पुर, धारक तँहँ रामानुज मत धुर॥२०
द्विज नागर उपपद सहोदर, बेणीराम सनाम भट्ट बर ॥
पठयो दल[16] चुंडावत तिन प्रति, तुम समदिट्ठि[17] गिनहु सेवकतति

१हे प्रभु रामसिंह २दरिद्रपन में ३रुचिकारक ४हेप्रभु रामसिंह॥१५॥ ५ प्रतिज्ञा
चतुर॥१६॥६खड्ग ७ललाट मदसभा में बैठा॥१७॥९उनने भी नजर न्यौछावर
१०राजापन ११गुरु मंत्र लेने को बुलाया॥१८॥१२कछवाहा (जयसिंह १३ बुन्दी
का वर्तमान राजा दलेलसिंह के भय से १४धन की कामनावाला १५चौमासे
दिनों में ॥ १९ ॥ २० ॥१६पत्र १७ समदृष्टि १८सेवकों की पंक्ति में ॥ २१ ।

मम सुन कल्हि सत्रु निज मारहिं, बुंदिय अप्पन आन बिथारहिं॥
जो यह नियति जोग नहिं पावहिं, तोपै तुमहिं सदा सिर लावहिं२२
जो तुम मत्र वैन हित हेरहु, तो आवहु पुत्रहिं वा प्रेरहु ॥
बेणियराम सोधि यह वत्ती, बिरचि अनुग्रह जानि बिपत्ती ॥ २३ ॥
दैन मत्र पठयो बेघम हुंत श्री गोविंद नाम जेठो सुत ॥
तिहिं आय रु उपदेस मत दिय, नृप उमेद सानुज सिच्छा लिय२४
चहि बुंदिय पति भक्ति धर्म चित, गेह रु देह नियेदिय गुरुहित ॥
श्रद्धामय अर्पित गहि भूंसुर, पुनि करि सिक्ख गयउ कोटा पुर२५
गहिय जवहि बुधसिंह मरन गति, उदयनेर हो तब बेघमपति ॥
अब ईसे मास माँहिं वह आयो, उर जामीसें सोक अकुलायो॥२६॥
नयन अैरत जलधार निरतर, आँधि अतुल्ल छिज्जत अँसु अतर॥
बुद्ध भैंसम पूजन मसान किय, अरु स्वर उच्च टेरि यह अक्खिय२७
बिनु सेवक तुम त्वरी विचारी, करिहों मैं सेवन द्रुतकारी ॥
इम कहि देवसिंह गृह आयउ, लालित जामि तनय हिय लायउ२८
अजितसिंह मरुईस अग्ग मृत, सुत सप्तक७ हे तास कलुख कृत
हो दिल्लिय पट्टप नैंय हीनों, तदनुजें बखत जनक जिय लीनों २९
पच५ हुते तासों लघु भाई, उनकों कैद करन मति आई ॥
भाजे सुनत कितेक महा भय, डारे कैद कितेकन निर्दय॥ ३०॥
रायसिंह१ आनद२ भ्रात दुव२, ईडरपुर अधिराज जाय हुव ॥

१भाग्य के योग से २ लोभी ॥ २२ ॥ ३ अथवा तुम्हारे पुत्र को भेजो ४वार्ता ५ आपदा जानकर ॥ २३ ॥ ६ शीघ्र ७ छोटे भाई सहित शिक्षा ली ॥ २४ ॥ ८ अर्पण किया सो लेकर ९ वह ब्राह्मण ॥ २५ ॥ १० आश्विन मास में ११ पश्चिम के पति के ॥ २६ ॥ १२ बहती हुई १३ मन की पीडा से १४ प्राय १५ बुधसिंह की भस्मी का ॥ २७ ॥ १६ शीघ्रता की १७ शीघ्रता करनेवाला अर्थात् मैं भी शीघ्र मरकर तुम्हारे पास आऊँगा १८ लाड करके १९ भानजे का ॥ २८ ॥ २० पाप करनेवाले २१ बिना नीतिवाले २२ उसके छोटे भाई बखतसिंह ने २३ पिता को मारा ॥ २९ ॥ ३० ॥ २४ ईडर के पति होगये

इक१ईडर तजि मालव आयो, जोर महँदपुर अमल जमायो ॥३१॥
यह सुनि आनि लगे दक्खिन दल, काढ्यो वह रठोर बंधि बल॥
आतुर पुर बेघम तब आयो, देवसिंह अति मोद दिखायो ॥ ३२ ॥
रुप्पय पंच५नित्य तँहँ दैकरि, धन्वप² भ्रात रक्खि लिय हित धरि ॥
तदनंतर³ सक खट नव सत्रह१७९६, अगहन मास बिसदँ⁴ पंचमि ५ अँह ॥ ३३ ॥
बेघमपति देवहु बपु⁶ छोर्यो, जिहिँ जसहेत कँपर्द⁷ न जोर्यो ॥
पट्ट सु दुनियसिंह तस पायो, रान सुनत हिय लोभ रचायो॥३४॥
ताकै सिर दुवलक्ख२०००००दम्म किय, बलि लिय तबहिँ उदैपुर बुल्लिय ॥
रस नव सत्त इक्क१७९६ मित बच्छर, बिसँद माघ मासगैं पंचमि ५ पर ॥ ३५ ॥
दुनियसिंह गय रान सभा जब, अदरि रान समुख आयउ तब ॥
दंड लियउ वहँ¹² दोस दबावन. आक्खय रान कियउ मैं पावन ३६
इम कहि तिलक भाल तस कीनौं, अँच्छत मुत्तिय मंडि नवीनौं ॥
निज हत्थहि तरवारि बँधाई, सयन¹⁴ जोरि कहि मेघसिवाई ॥३७॥

॥ दोहा ॥

नाम सिवाईमेघ तस, कहिय रान कर जोरि ॥
पुर बेघम करि सिक्ख पुनि, वह आयउ मन मोरि ॥३८॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ भूभृ-

॥ ३१ ॥ १ सेना ॥ ३२ ॥ २ मारवाड़ के पति के भाई को ३ जिसपीछे ४ शुक्ल पक्ष ५ दिन ॥ ३३ ॥ ६ देवसिंह ने भी शरीर छोड़ा ७ कोडी भी इकट्ठी नहीं की ॥ ३४ ॥ ८ फिर ९ सम्वत १० सुदि ११ माघ मास में गई हुई ॥ ३५ ॥ १२ दंड लिया जिस दोष को दबाने के लिये ॥ ३६ ॥ १३ मोतियों के आखे चढ़ाकर १४ हाथ जोड़कर १५ सवाई मेघसिंह नाम रक्खा॥३७॥३८॥

श्री * वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, भूपति उमेद

* यहां पर हमको उम्मेदसिंह चरित्र और अजितसिंह चरित्र के मयूखों की इतिश्रिये ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल)

दुम्मेदसिंहाऽभिषेचनवल्लभसम्प्रदायशिक्षानमिलनश्रीरामानुजशि-
क्षाप्राप्तवेघमपतिदेवसिंहमरणादुनीसिंहतत्पीठोपवेशनसिवाईमेघ
नामभवन प्रथमो १ मयूखः ॥ १ ॥   ॥ २३८ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
दोहादिवृत्तोपादिनीचूलिआला ॥

इत वेघम बुंदीस अब, वय दस१० *हायन मान बिराजत ॥
दय विद्या सिक्खत हुलसि, नय †दमधर्म निधान बिराजत ।१।
तोमर असि पट्टिस तुपक, चापन साधक चड चलावत ॥
खुरली बिनु बित्तैं खिन न, मन जाको ब्रह्मंड न मावत ॥२॥
ब्रह्ममुहूरतें जग्गि बलि, सध्या न्हावन आदि सुधारत ॥
सावित्री जप इक सहँस१०००, अरु हरि नाम अनादि उचारत३
व्रत सजमँ उपवास बिधि, इक १ न टारत अप्प इलापति ॥
सच्चीमैं हित अनुसरैं, गिनैं न मुढन गप्प महामति ॥ ४ ॥
स्वीयजनक बुधसिंह सठ, अति आसवँ अधिकार उपायो ॥
सो मग करि उच्छिन्न सब, वैष्णव धर्म बिचार बढायो ॥५॥
हरिपूजन नैंति जुत हुलसि, बिधि सह खोडस १६ अंगबनावैं॥

सिंह का आमर्षक होकर वल्लभसम्प्रदाय की शिक्षा नहीं मिलने के कारण श्रीरामानुज संप्रदाय की शिक्षा लेना १ वेघमनगर के पति देवसिंह का मरना २ उसकी गद्दी पर बैठकर दुर्नासिंह का सवाई मेघ के नाम से प्रसिद्ध होने का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ बियासी २८२ मयूख हुए ॥

* दश वर्ष के प्रमाणवाली अवस्था † नीति और दया १ शोभायमान ॥ १ ॥ २ कटारी ३ धनुषों से भयकर बाण ४ शास्त्राभ्यास के बिना ॥ २ ॥ ५ चार घड़ी रात्रि बाकी रहे ६ गायत्री के ॥ ३ ॥ ७ इन्द्रियों का रोकना ८ भूपति ॥ ४ ॥ ९ अपने पिता १० मद्य का ११ उस मार्ग को उखाड़कर अर्थात् बुधसिंह के वाममार्ग को छोड़कर ॥ ५ ॥ १२ नम्रता सहित १३ सोलह अंगों सहित

की कीहुई मिलगई हैं जिनका भाषानुवाद करके आगे विष्णुसिंह चरित्र और रामसिंह चरित्र की इतिश्री ये नहीं बनावेंगे ॥

पंच५जज्ञ करवाय पुनि, लघुभोजी[1] मन जंग लगावैं ॥ ६ ॥
भारत स्मृति पुनि भागवत, बेद बचन धरि चेत बिचारैं ॥
मृगया[2] रस रत्तो मुदित, सिंहन स्वकुल[3] समेत बिडारैं ॥ ७ ॥

॥ पज्झटिका ॥

उम्मेदनृपति बुधसिंह पट्ट, दस १० अब्द[4] बेस अति छक उछट्ट ॥
अरु मंजु[5] बालससि[6] जिम अनूप, भल बैन सबन मन हरत भूप ॥ ८ ॥
कर्कादि[7] निसा मकरादि[8] दीह, इम बढत रक्खि भुव लैनईह[9] ॥
तिम सारदूल[10] सिसु निस रु द्यौस, हत्थीन हनन मन धरत हौंसे[11] ९
इम नृपहिं लैन बुंदिय उमंग, आयुध समरत सझ्झत अभंग ॥
बुधसिंह सुतहिं सुनि इम समत्थ[12], सब मिलिय आनि भट[13] सचिव सत्थ ॥ १० ॥
धरि सबहि महासिंहोत धर्म, भृत्या[14] बिनु आदरि भृत्य कर्म ॥
जे बीर रहे नृप पास जाय, पति आधिपत्य[15] चिंतत उपाय ॥ ११ ॥
इम भुप बढत दिन दिन अमान[16], अवनी निज लेवेकौं[17] उफान ॥
इहिं बेरहिं दोलतसिंह रंच, हरदाउत हड्डा किय प्रपंच ॥ १२ ॥
नृप अनुज दीपसिंहाभिधान[18], किय तास पृथक परिखंद[19] बिधान ॥
बहु नरन फोरि अप्पिय बिसास, पुनि यह नृप माता हुव सत्रास १३
सुखसिंह महासिंहोत बुल्लि[20], अक्खिय सुलाह[21] गति समय खुल्लि ॥
मम पुत्र दुवरहि अब बैय[22] महंत, चैल[23] सुभट इनहिं फोरन चहंत १४

पूजन करता है १ लघुभोजन करना वीरता का सूचक है ॥ ६ ॥ २ शिकार के रस में प्रीति करके ३ उनके कुल सहित ॥ ७ ॥ ४ दश वर्ष की उमर में ५ मनोहर ६ द्वितीया के चन्द्रमा के समान ॥ ८ ॥ ७ कर्क संक्रांति के आदि से रात्रि बढै जैसे ८ मकर संक्रांति के आदि से दिन बढै जैसे ९इच्छा से १०जैसे सिंह का बच्चा ११ चाहना ॥ ९ ॥१२समर्थ१३उमराव ॥१०॥ १४तनखा अथवा जागीर (वेतन) विना ही१५भूपति होने का ॥११॥१६अमाप १७अपनी भूमि ॥ १२ ॥१८नाम१९उस दीपसिंह की जुदी सभा करने लगा ॥ १३ ॥२०बुलाकर २१ सलाह कही २२ अवस्था में बडे होगये हैं २३ चंचल

हम गेह हुती जो राजरीति, आपत्ति सु पै पलटी अनीति ॥
छोटे रु बड़े बैठे समस्त, अंजलि बिनु[1] बुल्लत तिन्ह अत्रस्त[2]।१५।
दोलतसिंह सु विग्रह बढ़ात, दुव२बंधुन बिच अंतर दिखात ॥
ऐसे भट बहु बिरचत अकाज, तस्समात[3] हमहिं यह उचित आज१६
धारत तुम नय[4] जुत स्वामि धर्म, बिस्वासहु तुमरो भक्ति बर्म[5] ॥
यातैं समरत ऐसे निकासि, बलि[6] लेहु सुद्ध हृदयन बिसासि।१७।
रहिहैं समस्त जो राजरीति, तो हमहिं बढ़न ठहैहैं प्रतीति ।।
सुखसिंह महासिंहोत बीर, धरि हिय यहैहि किय धर्म धीर॥१८॥
दोलतसिंहादिक वे दुबुद्धि[7], सब दिय बिडारि[8] किय रीति सुद्धि ॥
नृप मातहिं[9] पुनि अक्खिय निदान, स्वनिलय[10] निवाह चिंतहु सु-
जान ॥ १९ ॥
जयसिंह गिनहु अति उग्र जोर, दिल्ली रु दक्खिनहु सहत दोर[11]॥
तस्समात[12] हमहिं इक मंत्र आय, नृप अनुज हेत[13] बिरचहिं उपाय२०
जगतेस रान सन यह निवेदि, कछु लेहु पटा भट तास भेदि[14] ॥
सुनि यह नरेस जननी सुभाय, अब रान हितैं[15] चिंतिय उपाय।२१।

॥ दोहा ॥

इत मरुपति अभमल्ल नृप, सज्जि अनीक[16] अमान[17] ॥
बीकानेर अधीस सन, चिंतिय लरन पयान ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

नृप अनद अभिधान अग्ग बीकानेर पै[18] मृत ॥
तब काका सुत तास भटन[19] गजसिंह भूप कृत ॥

॥ १४ ॥ १ हाथ जोड़े बिना २ निर्भय होकर बोलते हैं ॥ १५ ॥ ३ इस कारण से ॥ १६ ॥ ४ नीति सहित ५ हे भक्ति के कवच ६ पुनि ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ दुर्बुद्धि ८ निकाल दिये ९ उम्मेदसिंह की माता को १० अपने घर का ॥ १९ ॥ ११ फैलाव १२ इस कारण से १३ उम्मेदसिंह के छोटे भाई के अर्थ ॥ २० ॥ १४ उनके किसी उमराव को मिलाकर १५ से ॥ २१ ॥ १६ सेना १७ प्रमाण रहित ॥ २२ ॥ १८ पति १९ उमरावों ने गजसिंह को राजा बनाया

यह इक्क नव हय इंदु १७९१ भयउ जंगलधर भूपति ॥
अब हय नव मुनि इंदु१७९७मरुप तिहिँ लग्ग किन्न मति ॥
यह सुनि नरेस गजसिंह अब कूरमपति प्रति पत्र दिय ॥
हरि गज सहाय तिम तुम हुलसि मम सहाय रक्खहु महिय २३
सुनि यह नृप जयसिंह रान अरु अप्प इक्क बनि ॥
पठये दाउन२ पत्र सजव मरु देस क्रोध सनि ॥
इन्ह तुम गिनि अंकस्थ विभव निज करन विगारत ॥
उचित नीति नन एह मूढबनि बंधुन मारत ॥
इत रूपनगर उत वहँ अतुल दुग्ग जोधपुर पंच्छ दुवर ॥
बिनु पच्छ गिद्ध संपाति विधि धरिहो नहिन उडान धुव॥२४॥
यह कग्गर द्रुत बचि मरुप नैंकनमन्नें मन ॥
अक्खी स्वसुर असंक रानजुत बनत किंत्ति धन ॥
सुभट मोर गजसिंह ताहि क्यों नहि समुझाऊँ ॥
मैं गुज्जर धर जैतवार अरि गरद मिलाऊँ ॥
यह कहि कबंध लै दल अतुल बीकानैरहिँ विंटि लिय ॥
तरकाव ताव तोपन तपिय मनहुँ दाव तिंदुन मचिय ॥२५॥
जिम दंतन बिच जीह इच्छु जिम जंत्र अरोहित ॥
इम आतुर गजसिंह मन्नि संकट हुव मोहित ॥
सुनि आगति जयसिंह कुंच जैपुर सन किन्नों ॥

१रथाड के राजा ने२जयपुर के राजा जयसिंह के नाम३जिसप्रकार विष्णु भगवान ने गज की सहाय की तिसप्रकार मेरी सहाय करके४भूमि रक्खो॥ २३ ॥ ५महाराणा और आप एक बनकर ६ शीघ्र ७ क्रोध में भीजकर ८ गोद बैठे हुए जानकर ९ किसनगढ की प्राचीन राजधानी का नाम है १० बीकानेर ११जोधपुर के गढ की१२दोनों पांखें हैं ॥ २४ ॥१३पत्र१४मेरा श्वशुर (जयसिंह) १५ उदयपुर के राणा सहित हुआ तोभी१६क्या धन है१७मेरा उमराव१८गुजरात की भूमि को १९ जीतनेवाला हूं २० सेना२१तींदू वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी जलाते समय अग्नि कण बहुत उडते हैं ॥ २५ ॥ २२ जिव्हा २३ इक्षु (गन्ना) २४ चरखी में चढाया २५ मूर्छित (घबराया) हुआ २६ पीड़ा के वचन

बुल्ल्यो रानहु बेग लैन मरुधर पन लिन्नौं ॥
दरकुच चलिय कूरम दुसह खंड चउद्दह१४खलभलिय ॥
सुरलोक वत्त फुट्टिय सहज किहिँसिर कूरम कोपक्रिय २६
नागराज फन फटिय कमठ गेढकं बरगक्रिय ॥
बसुधा भर विद्दरिय मनहुँ दारिम दरक्किय ॥
रवि लुक्किय रज मेघ दान दिग्गज गन सुक्किय ॥
मग रुक्किय पवमान तान अच्छरि चकि चुक्किय ॥
अतुलित अनीक जयसिंह इम जाय रु विंटिय जोधपुर ॥
रानहु प्रयान यह सुनि रचिय प्रबल सेन ह्कत प्रचुर॥२७॥

दोहा बिंटयो कूरम जोधपुर, जोरयो तोपन जाल ॥
मनहुँ भगाली दच्छमख, किन्नौं समय कराल ॥ २८ ॥
सुनि मरुपति अभमल्ल यह, सत्थ अलपतम सज्जि ॥
वेस वदलि आधी निसा, पैठो निजपुर भज्जि ॥ २९ ॥
इत कूरम नागौर पुर, दिन्नौं पत्र पठाय ॥
बखतसिंह आवहु तुम्हैं, देहैं तखत बठाय ॥ ३० ॥
हेरतहो बखतेस यह, भज्यो त्वरित तजि भौन ॥
जिहिं सठ जनक निपात किय, भ्राता तिहिं चित कौन ३१
सत्रै आनि जयसिंहसौं, मिल्यो मूढ भुत्र लोभ ॥
मरुपति हिय यह सुनि अमित, छयो अनुज सिर छोभ ॥ ३२ ॥
जान्यौं अग्गहि कुँम्म यह, उभय लक्ख २००००० चतुरंग ॥
पीछैं आवत रान पुनि, सहँस असी ८०००० दल सग ॥ ३३ ॥

॥ २६ ॥ १ शेष नाग के २ पाठ ३ भार से भूमि ऐसी विदीर्ण हुई ४ मानो दाडिमवृक्ष का फल फटा रज रूपी मेघ से सूर्य ५ छिपा ६ पवन का ७ अतोल सेना से ८ बहुत ॥ २७ ॥ ९ शिव ने १० दक्ष प्रजापति के यज्ञ में ॥ २८ ॥ ११ थोडा साथ समझकर ॥ २९ ॥ ३० ॥ १२ शीघ्र १३ घर छोडकर १४ जिस दुष्ट ने पिता को मारडाला उसके लिये भाई कौन बात है ॥ ३१ ॥ १५ शीघ्र १६ क्रोध ॥ ३२ ॥ १७ यह जयसिंह १८ सेना ॥ ३३ ॥

जित्तैं बिनु नहिं जीवनौं, अरु जित्तन बहु दूर ॥
ध्रुवहि अनुज सिर छत्र धरि, जैहैं स्वसुर जरूर ॥ ३४ ॥
यातैं नतिही[1] उचित अब, मंगैं सुहि दै द्रम्म[2] ॥
कूरम कुंच कराइये, कछुदिन जीवन कम्म[3] ॥ ३५ ॥
स्वसुर पितासम निगम[4] मत, अरु सुत सम जामात[5] ॥
यहै गैली[6] अब कढ्ढिकैं, भुव रक्खहिं निज हात ॥ ३६ ॥
कूरम प्रति कहि मुक्कलिय, इम बिचारि अभमल्ल[7] ॥
बंदनीय[8] तुम स्वसुरहो, हम करैं न रन हल्ल ॥ ३७ ॥
जो मंगहु सो देहिंगे, लै जावहु निज गेह ॥
मम सोदर[9] सठ फोरिकैं, अनुचित करहु न एह ॥ ३८ ॥

॥ षट्पात् ॥

नृप कूरम बाईस लक्ख२२०००००रुप्पय तब मंगिय ॥
इक्खिं समय[10] मरुईस[11] अखिल रुप्पय किय अंगिय[12] ॥
रट्ठोरन यह जानि बहुत बरज्यो मरु भूपति ॥
दम्म इते क्यौं देत मरन मंडहु निसंक मति ॥
सचिवन तथापि[13] अभमल्लसौं दंड दैन अक्खिय उचित ॥
सो सब कबंध[14] स्वीकार किय देस काल निब्बल[15] दुचित३९

॥ दोहा ॥

कूरम तब जामात[16]कौं, नमितजानि इम साफ ॥
निज तनयाकौं चोलिके[17], तीनलक्ख३०००००किय माफ४०
सेसं[18] लक्ख गुनईस १९ रहि, तिनमैं बहु भरि लिन्न ॥

॥ ३४ ॥ १ नम्रता २ रुपये ३ जीने के काम से, अथवा जीवन से काम है ॥ ३५ ॥ ४ वेद के मत से ५ जमाई ६ मार्ग ॥ ३६ ॥ ७ अभयसिंह ने ८ नमस्कार योग्य ॥ ३७ ॥ ९ मेरे सगे भाई को ॥ ३८ ॥ १० समय देखकर ११ मारवाड़ के पति ने १२ सब रुपये स्वीकार (मंजूर) किये १३ तोभी १४ अभयसिंह ने १५ निर्बल ॥ ३९ ॥ १६ जमाई अभयसिंह को १७ अपनी पुत्री को कांचली में ॥ ४० ॥ १८ बाकी के

अवमेसन हित ओलिमैं, निज प्रधान उन दिन्न ॥ ४१ ॥
रतनसिंह अभिधानं यह, मरुपति सचिव सुभाय ॥
दमं के लक्खन दम्मलै, कूरम हेरन आय ॥ ४२ ॥
वट्टेके रुप्पय निरखि, पुनि किय कूरम रोस ॥
रतनसिंह तब उच्चरिय, देहु न नाहक दोस ॥ ४३ ॥
जैसे रुप्पय जोरकरि, हमतैं छिन्नत हाल ॥
तैसेही तुम दीजियो, हमकों कोउक काल ॥ ४४ ॥
यह सुनि कुम्म सिराहि अरु, ओलिमांहिं तिहिं डारि ॥
करिय कुच निज गेहकों, विनु रन विजय विचारि ॥ ४५ ॥
मिले स्वसुर जामात गिनि, लगी वेखत हिय लाय ॥
मुह विगारि नागोरकों, कुंम्महि निंदत आय ॥ ४६ ॥
प्रत्यागम जयसिंह किय, अतिदल अतुल उछाह ॥
नगर नाम सरवाड ढिग, मिलिय रान कछवाह ॥ ४७ ॥
रानहि कूरम कहिय हम, कियउ जोधपुर जेर ॥
अप्पहु अब अच्छे फिरहु, वढहिं खरच विनु वेर ॥ ४८ ॥
कहिय रान आयउ निकट, पुसकर तीरथ एह ॥
यों न अवहि फिरनों उचित, न्हाय रु जैहैं गेह ॥ ४९ ॥
इम काहे गिनि न्हावन उचित, पुसकर रान पधारि ॥
कूरम आयउ आगरा, सूबा करन सम्हारि ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ पो-
गण्डकालोम्मेदखुरलीसाधनश्रोतव्यश्रवणमहासिंहोतरत्रासिसंत्र -

१ बाकी रहे जिसमें २ रुपया के एवज की कैद में ॥ ४१ ॥ ३ नाम ४ दृष्ठ के लाखों रुपया में ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ५ जमाई अभयसिंह ६ बखतसिंह के हृदय म ७ जयसिंह की निन्दा करता हुआ ॥ ४६ ॥ ८ पीछा गमन ॥ ४७ ॥ ९ विना समय ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में दश वर्ष की अवस्था म उम्मेदसिंह का शस्त्राभ्यास करना सुनकर, महासिंह के पंचमार्गों का

नदौलतसिंहादिनिष्कासनयोधपुरराजाऽभयसिंहबीकानेरयुद्धकर - णातन्नृपगजसिंहजैपुरसहायपत्रप्रेषणाजयसिंहजामातृवारणाकूर्मक टकयोधपुरवेष्टनदण्डद्रव्यानयनसरवाड़रणाजगत्सिंहाऽऽगरानग - रगमनं द्वितीयो २ मयूखः ॥ २ ॥ ॥२८३॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

अग्गैं नादरसाहके समय जयसिंह दिल्ली न गयो ॥

मुहुम्मदसाहनैं किल्ला रनथंभोर दैनौं करि बुलायो तथाँपि टरि- बेकौं बहानौं लयो ॥

तदनंतरै नादरसाह दिल्लीकी कतलकरि तमाम बादसाही बैभ- व लूटि अपनैं मुलक ईरान सिधायो ॥

अरु मुहुम्मदसाहनैं सरबस्वके साथ अपनौं तेजही गुमायो ॥१॥

ऐसी अनेक बदफैली जयसिंहनैं कीनी तथापि हिन्दुस्थानमैं जोरावर जान्यौं ॥

अरु पहिलैं याकौं सूबा दयेहे ते रैजूही रखे रु बिनयसौं बखान्यौं॥

राजाधिराजराजराजेन्द्र सवाईजयसिंह ऐसो उपटंक लिखायो॥

अरु अग्गैं काहूको न भयो ऐसो फरमानमैं सतकार बिसेस बढायो ॥ २ ॥

यातैं जयसिंह जोधपुरकी फतै करि दरकुंच आगरा प्रवेस कीनौं॥

अरु रानौं जगत्सिंह पुष्कर सेमहातीर्थके स्नान को लाह लीनौं॥

स्वामि की सेवा करना १ दौलतसिंह आदि को निकालना २ जोधपुर के राजा अभयसिंह का बीकानेर में युद्ध करना ३ बीकानेर के राजा गजसिंह का सहाय के अर्थ जयपुर पत्र भेजना ४ जयसिंह का अपने जमाई (अभयसिंह) को मना करना ५ कछवाहों की सेना का जोधपुर को घेरना ६ दंड के रुपये लेकर सरवाड में राणा जगत्सिंह से मिलकर जयसिंह का आगरे जाने का दूसरा २ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ तियासी २८३ मयूख हुए ॥ १ नादरसाह ने दिल्ली की लूट की तब २ तोभी ३ जिस पीछे ॥ १ ॥ ४ बलवान् ५ आधीन ६ खिताब ॥ २ ॥

तहाँ व्यास दौलतराम रानाँ सौं अरजकरि मेवारके उदकैनकी वेगारि मिटाई ॥

अरु अपने हाथ मैं उदकैं झालि दोऊरनकी कीर्त्ति चोतरफ चलाई ॥ ३ ॥

अग्गैं रानानकी विपत्तिमैं यह बगारि जागी भई ॥

अब व्यासके आतंकसौं तमाम मेवार छोरि गई ॥

या रीति पुष्करमैं पाप धोय रानाँ जगतसिंह उदैपुर प्रविष्ट भयो॥

अरु रठोर वखतसिंहनैं पछिताय हाथ जोरि अपनैं अग्रज जोधपुरके राजा अभयसिंहको प्रसादैं लयो ॥ ४ ॥

कही स्वामिसों हरामी भयो सो अपराध मेरो माफ कीजिये ॥

अरु अपनें घरके बिगारे कछवाहके ऊपर फोजबधीको हुकम दीजिये ॥

राजा अभयसिंह यह बात विचारमैं लीनी ॥

अरु अधर्मी अनुजके बिगारवेकी सार रठोरनकौं एकातमैं सुनाय फोजैं जयसिंहपैं जगकौं सज्जीभूत कीनी ॥ ५ ॥

अठ नव सप्रह१७९८के साल मारवारमैं नर तुरग न माये ॥

नव९ कोटी नाथक सेनाके सँभार हजारहौ भोग भोगीसके भ्रमाये ॥

बैंडे हत्थीनपैं लवी लालरगकी पताका फँरकानैं लगी ॥

मानों रक्तवीजैके समय कालिका जिव्हाकों थरकानैं लगी॥

---

[1] उदक भूमियालों को [2] पानी ॥ १ ॥ [3] भय से [4] प्रवेश किया [5] अभयसिंह की [6] प्रसन्नता ॥ ४ ॥ ५ ॥ [7] भार से [8] फणा [9] शेषनाग के [10] ध्वजा उड़नलगी (जोधपुरवालों का निशान लाल रंग का है) [11] रक्तबीज नाम राक्षस को वरदान था कि तुम्हारे रुधिर की जितनी बूंदें भूमि पर गिरेंगी उतने ही शरीर उठकर शत्रु से युद्ध करेंगे, सो कालिका से रक्तबीज का युद्ध हुआ तब, उसका रुधिर भूमि पर नहीं गिरने देन के अभिप्राय से अपनी जिव्हा को फैलाकर रक्तबीज का सम्पूर्ण रुधिर

कैधौं पिंगल नागराज गरुड़के आतंक बचिवेकों बड मात्राछं-
दकी पताका[2] बनाई ॥
कैधौं अंधकके ऊपर त्रिलोचनके त्रिसूलकी तीखी नोंख न-
जरि आई ॥
कैधौं चंदनके दंडपें पलेटा डारि रक्तराग रंजमान नागराज
फहरानौं ॥
कैधौं दुस्सासनके भुजदंडतें सैरंध्रीकी सारीको समूह लहरानौं ७
कैधौं प्रचंड पवनके पातसौं होरीकी झार बढनैं लगी ॥
अरु भद्दवकी मेघमालामैं इंद्रके रोहित चापसौं लागि चंचेला
की चलाकी कढनैं लगी ॥
कैधौं सुमेरुके शृंगतें संभुसेखरगास्रवंतीके सीधे स्रोतें छूटे ॥
अरु कल्पकारस्करके कंधतें साखाके समूह फेलि फूटे ॥८॥
असैं अनेक फेतूहें फीलनपें फहराय छोनिछाई ॥
रु राजा रठौर जयसिंहकौं जीतिवेकौं जैपुरपैं चंड चैतुरंगिनी
चलाई ॥
या रीति सोदर बखतसिंह सहित राजा अभयसिंह वडी धकसौं
मेरता नगर आय मुकाम दीनें ॥
अरु बागनके विलासकी मरजी मानि मालीकारनने प्रसूननके

चाटलिया, जिसकी कथा मार्कंडेय पुराण आदि ग्रंथों मे विस्तार से लिखी हुई है, वही उपमा यहां दी है ॥ ६ ॥ १ गरुड़ के भय से बचने के अर्थ पिंगल नागराज ने मात्रा छंद की इतनी बडी २ पता का (छन्दों के षोड़श कर्मों के अन्तर्गत एक कर्म है) बनाई जो समुद्र के तट तक पहुंचगई तब, पिंगल गरुड़ की कैद से भागकर समुद्र में कूद पड़ा ३ अंधक नामक दैत्य के ऊपर ४ शिव के ५ लाल रंग वाला सर्प ६ शोभायमान ७ द्रौपदी की ८ साडी का ॥ ७ ॥ ९ प्रचंड पवन के पड़ने से १० इन्द्र के सीधे धनुष मे (जिसको लौकिक में मच्छ कहते हैं) ११ बिजुली की १२ शिव के मस्तक से बहनेवाली (गंगा नदी) के १३ प्रवाह १४ कल्पतरु के १५ मूल से ॥ ८ ॥ १६ ध्वजा १७ हाथियों पर उड कर १८ भूमि को. भयंकर १९ सेना २० सहोदर (सगेभाई) २१ मालियोंने २२ पुष्पों के

पैर नजरि कीनैं ॥ ९ ॥

ते प्रसून राजा रठ्ठोर अपनैं उमरावनकों वखसीस वटि दये ॥
अरु रठ्ठोर उमराव अनेक मैंडी वैंडी तरह लपेटेनपैं धारत भये॥
तहाँ आउवानगरके अधिराज चाँपाउत रठ्ठोर कुसलसिंह राजा सों प्रसून नांहिं लीनों ॥
अरु कारनके पूछें अहंकारके उफान अँगुष्ट उत्तर दीनों॥१०॥
अज्ञानतें आपकों प्रसूननके पैसारिवेमें लज्जाको लेसहू हमें न जान्यों पैं ॥
रठ्ठोरनके पाघ अरु नासिका कछवाहननें छीनिलीनें यातें अज्ञानके प्रसून लेकैं कोन ठाम धारन करैं ॥
यह सुनतही राजा अभयसिंहको सोदरानुज नागोरको अधिराज रठ्ठोर वखतसिंह खिसाय ऊठि वुल्ल्यो ॥
अरु मेरे मिलें पह भई ऐसें अभ्रजसों अंक्खो अरु जुद्धोही जुद्ध करिवेकों जयसिंहपैं जैनूनसों चंडै चंद्रहास तुल्ल्यो ॥ ११ ॥
अरु यातरफ जोधपुरसों फोजवधी करि रठ्ठोरनके चलायवेको सुनि वड विस्तारकी वैरूथिनी लै जयसिंह आगरासों कुच कीनों॥
अरु जोधपुरकीही सीमामें जाय सज्जीभूतह्वै निसाननपैं निहोन को हुकम दीनों ॥
वातरफमों रठ्ठोर वखतसिंह अपनें पाँचहजार५०००पखैरतों सं वाग उठाई ॥
अरु धूलीकी धुंधिमें धकाय सजोगी चक्क चकीनके चाहकी चौंप मिटाई ॥ १२ ॥

---

१ पुष्प (समूह) ॥ ९ ॥ २ पगड़िया पर ३ पति ४ अपूर्व ॥ १० ॥ ५ पुष्पों के ६ फैलाने (देन) में ७ सगा छोटा भाई ८ राजा ९ खिसा (लज्जित होकर) १० मैं जयसिंह से मिल गया तब ११ अभयसिंह से १२ कहकर (रिसाव के साथ) १३ भयकर १४ खड्ग उठाया ॥ १२ ॥ १५ सेना १६ नगा १७ रा पर १८ पक्ष पूर्वक निरन्तर प्रहार (पजान) का १९ चकवा चकवी के २० लाग

मकराकर मेखला मही महानागके मस्तकके हजारे[3] पै नचन लगी
अरु बाराहकी तुंडापैं मचक्कनकी मार मचनलगी ॥
अतल १ बितल २ सुतल ३ तलातल ४ रसातल ५ महातल ६
पाताल ७ साताँही धराके अधोभाग[4] धूजिगये ॥
अरु भूलोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ महर्लोक ४ जनलोक ५
तपलोक६सत्यलोक७सहित ऊपरके ओकवासी[5] व्याकुलभये।१३।
ऐरावत१पुंडरीक २ बामन३कुमुद ४ अंजन५ पुष्पदंत ६ सार्वभौम
७सुप्रतीक८आठौंही आसाके[6] अनेकपन[7] कंपकैं[8] कातर कृक करी।
अरु पुरुहूत १ पावक २ परेतपति ३ पुण्यजन ४ परंजन५प्रभंजन
६ पौलस्त्य ७ पिनाकपाणि ८ आठौंही लोकपालनकों लोक र-
क्षामैं बिपत्ति बिसेस जानिपरी ॥
लवणोद१ इक्षुरसोद२ मद्योद३ आज्योद४ क्षीरोद५ दधिमंडोद
६ शुद्धोद७ साताँही समुद्रन क्षोभ[9] पायो ॥
अरु अंनूरुनैं[10] अब्बर्नकी अवछेपैंनी[11] ऐंचि आदित्यकों[12] अरजी
अकिख अपुब्ब आहव आलोकन[13] उछाह लगायो ॥ १४ ॥
अष्टापद[14] अद्रिसों[15] अतित्वर[16] आय महानट[17] मनोज्ञ[18] मुंडमालाको
मिलाप मान्यों ॥
अरु डाकिनीन डिंडिम डमरूक डाहलादिकनपैं[19] डंके डारि हल्ली-
संक[20] नच्च तान्यों ॥
गोदनके[21] गूदनके[22] ग्रासकों गिद्धि गन गैनमैं[23] गरूरीसों गहकानैं ॥

(इच्छा) ॥ १२ ॥ १ समुद्र की है २ कटिमेखला (कर्धनी) जिस के ऐसी भूमि ३ हजार फणों पर ४ नीचे के भाग (लोक) ५ ऊपर के स्थानों में रहने वाले ॥ १३ ॥ ६ आठों ही दिशा के ऊपर कहेहुए नामोंवाले ७ हाथी ८ कायर (यहां कहेहुए दिग्गज और लोकपालों के नाम पूर्वदिशा से प्रारंभ करके यथाक्रम से हैं) ९ चलायमान हुए १० सूर्य के सारथि ने घोड़ों की ११ बाग खैंच कर १२ सूर्य को १३ युद्ध देखने का ॥ १४ ॥ १४ सुवर्ण के १५ पर्वत (सुमेरु) से १६ शीघ्र १७ शिव ने १८ मनचाही (इच्छानुसार) १९ डाहल आदि बाजों पर २० घूमर का नाच २१ मस्तिष्क (भेजा) २२ मींजी २३ आकाश में घमंड

अरु कराल कलहके कोलाहल कातरनके कलाप दहकानें[15]

बावन५२ बीर चउसठि६४ जोगिनीनके जाल जुद्धकी जलूसी जोयबेकों जागि भये ॥

अरु रठोर कछवाह दोऊ२सेनाके सरदार तत्काल तुमुलयुद्धमैं तीखे तोरसों तत्ते तुरगन तोकिबेकों तयारी भये ॥

राजा जयसिंह जगी होदेके हत्थीपैं आरूढ होय संग्रामभूमिकी सीमाके समीप अपनी अनीकके अंतर अतीव उच्छाहसौं उद्धत होय आनि खरो रह्यो ॥

अरु रचनाविसेससौं सेनाको व्यूह बनाय बांई दाहिनी दोऊ २ तरफ खवासीके हत्थी लगाय सूरबीरनकों श्रवन करायबेकों पंडितनकों उच्चारनको आदेस कह्यो ॥ १६ ॥

सो आदेस सुनिकैं दोऊ२खवासीके हत्थीनपैं पंडितराज रामायन लंकाकांड१ महाभारत द्रोनपर्व२ कहन लगे ॥

अरु बंडे बीरनकों बंदीजन बीररसमैं बिरुदाय चतुरंगकी चलाकी चहन लगे ॥

कछवाहकी सेनाको संभार झेलिबेकों पुँहवीहू वासमय समर्थ न भई ॥

अरु राजा जयसिंह असे अनीकके उफानसौं रठोरनपैं अँबै उठायबेकी आज्ञा दई ॥ १७ ॥

जा सेनामैं साहिपुराके अधिराज रानाउत उम्मेदसिंहसे बाईस २२ राजा सज्जीभूत खरे ॥

अरु औरहू अधीन होय आहवपैं उंमाहे अनेक सूरबीरनके

से प्रसन्नता की बोली बोले कायरों के १ समूह भोंक ॥ १५ ॥ २ समूह ३ शोभा ४ अवकाश रहित युद्ध मे ५ चंचल घोड़े ६ चलाने को ७ सेना के ८ भीतर ९ अत्यन्त १० अनम्र ११ खड़ा ॥ १६ ॥ १२ भाट लोग १३ सेना की १४ भार १५ भूमि भी १६ सेना के प्रवाह से १७ घोड़े ॥ १७ ॥ १८ पति १९ उत्साह

संघट्ट[१] अरे ॥

वा समय रठोर बखतसिंह पाँचहजार ५००० पखरैतनसौं बडे बेग बाजी बीच डारे ॥

अरु द्वैलाख २००००० सेनाके समुद्रमैं पार पूगिबेकौं पोतके प्रमान पधारे ॥ १८ ॥

दोऊ२ कटकनके[३] कंकटी[४] क्रूर कालरूप बैंडेभीर[५] कालिंग कुटिल[६] कोसनतैं[७] कालायस कराल करवालनके[९] कलाप[१०] काढि कज्जललसे कारे कुंजरनके[११] कूटसे[१२] कुंभनपैं झारन लगे ॥

अरु धीर बीर धन्वदेसी[१३] बडी धकसौं धकाय धूँपकी[१४] धारासौं धपाय पंच[१५]रंगी ध्वजादंडनकौं पारिडारन लगे ॥

पर्बतसौं मयूरके माफिक कुंभीनके[१६] कलापनके[१७] कलापनतैं[१८] पताकानके[१९] पुंज उडन लगे ॥

अरु गाढे गरूरी[२०] रठोरनके गंजे[२१] गिरन लगे गजराज गुड़न लगे१९

हयनकी हयछटौं[२२] कबंधनके[२३] कराल करवालनतैं काटि काटि कलहमैं[२४] कूदते कबंधनके[२५] कंधनपैं[२६] फहरन ठहरन लगी ॥

कैधौं हयग्रीवावतारकी हजारन प्रतिमा लास्यके[२७] लालित्यसौं छाकि लहरन लगी ॥

दोऊ२ चमूके मजबूत मगरूरी महाबीरनके मंडलाग्रनकी[२८] मार औसैं मचन लगी ॥

युक्त हुए १ समूह २ नाव क समान ॥ १८ ॥ ३ सेना क ४ कवच धारण कियेहुए (सिलहपोश) ५ काले और ६ टेढे ७ म्यानों से ८ भयंकर काल की आज्ञा के समान; अथवा काले लोहे के ९ खड्गों के १० समूह निकाल कर ११ हाथियों के १२ शिखर रूपी कुंभस्थलों पर प्रहार करने लगे १३ मारवाड देशवाले १४ तरवार की १५ जयपुर की ध्वजा का रंग पचरंगा है १६ हाथियों के १७ समूह को १८ करधनियों (कक्षगतियों) से कसे हुए १९ ध्वजाओं के समूह उडने लगे२० घमंडी राठोड़ों के२१ मारे हुए ॥ १९ ॥ २२ घोड़ों के कधे२३ राठोड़ों के भयंकर खड्गों से २४ युद्ध में२५ बिना मस्तक वाले क्रियावान शरीरों के कंधों पर२६ उडकर ठहरने लगी२७ नृत्य की सुन्दरता से २८ तरवारों

मानों होलीके हुलासपामरें पुरुखनके पानितें चर्चरीकीडहेंइरिरचन लगी
तगनकी तराकन पोंगरनके पल्लटेदेत सिंधुरनके सुडादडफ्फारन लगे
मानों जन्मेजयके जिंह्मग जज्ञमें मत्रनके मार पन्नगनके पूर परन लगे
गिरे टोपनकों ग्रहनकरि जोगिनीनकी जमाति वैंड बीरनके
वंपासों भरन लगी ॥
अरु लोहितकी लालीमें कालोकूदि कूदि सोसनीरग धारनकरन लगी
सच्चे सूरनके सीस महेसकी मनोज्ञ मुडमालामें गुंफेगये तथापि
देहु देहु यों दक्कालन लगे ॥
तिनको सोर सुनि अनेक अंभ्रपिसाच आये मानि आतकसों
भालचंद्रके प्रान चालन लगे ॥
जावकके जंत्र जिम सोनितके स्रोतकी छक्कें छूटि छूटि
छोनितल छायबेकों परन लगी ॥
तिनकों साकिनीनकी सर्हंति आनन उबाय ऊपरही झेलि झे-
लि पान करन लगी ॥ २२ ॥
कबधनके कलाप मानों अपने उत्तमागकी आंखिनसों देखि
देखि दाव देवेकों दोरन लगे ॥
अरु पैने मडलाग्र मारि मदमत्त मातगनके मत्थ फोरन लगे ॥
सकचुक पच ५ फनके पन्नगके प्रमान बाहुल समेत बाहुल

को १ उत्साह म २ नीच (ग्रामीण) लोगों के हाथ में ३ फाग (वसन्त की क्रीड़ा विशेष) की ४ गेहर (डंडों का खेल विशेष) ॥ २० ॥ ५ हाथी की सूंड के अग्रभाग (पुष्कर) के ६ हाथियों के ७ सर्पयज्ञ में ८ सर्पों के समूह ९ गूद (चरबी) से १० रुधिर की ललाई मे ११ लाल में काला रंग मिलाने से सोसनी रंग होता है ॥ २१ ॥ १२ मनोहर १३ गुथेगये १४ राहु १५ शिव के ललाट के चन्द्रमा के प्राण (अमृत के) भय से चलायमान होने लगे १६ फुहारे १७ रुधिर की पिचकारियें १८ समूह १९ मुख फाडकर ॥२२॥ २० राठोड़ों के समूह २१ मस्तकों की आंखों से (कटेहुए मस्तकों की आंखों से) २२ तीक्ष्ण खड्ग मस्त २३ हाथियों के २४ मस्तक २५ काँचली सहित पाँच फणोंवाले सर्पों के समान २६ दस्ताने सहित २७ बहुत हाथ

रवाहु तूटन लगे ॥

अरु अवमर्दके आतंक कातरनके गाढ छूटन लगे ॥ २३ ॥

बाग टल्लाके इसारें बेगवान बाजी जंगी होदनकी बरब्बर झंप लैन लगे ॥

अरु सादीनक सस्त्र संपात करि नष्ट नूर होय निसादानके नैन नैंन लगे ॥

बंके कमनैत कठोर कोदंडनकौं गोसपचीकी बरब्बर तानि तानि तीर मारन लगे ॥

ते तीर कितेक आसमानमैं उडान लैकैं सरदकालके सलभन की सोभा धारन लगे ॥ २४ ॥

रट्ठोर बखतसिंह जयसिंहकौं जोयबेकों घनैं हत्थानके होदे हेरिडारे

अरु द्वैलाख २००००० सेनाके पार निकसि अरे बीरनसौं बैरी की बरूथिनीमैं बड बेग बाजी फेरिडारे ॥

ऐसैं दूजाबर पैलेनकौं पृतनामैं पैठत देखि राजा जयसिंह साहिपुराके अधिराज राजाउत उम्मेदसिंहसौं राजा कहि बुल्ल्यो ॥

अरु बखतसिंहकौं पैने लोह चखायबेकों सिद्धांत खुल्ल्यो ॥२५॥

अग्गैं राजा न कहता रु अब कह्यो यातैं साहिपुराके अधीस राजा उम्मेदसिंह बडो उम्मेदसौं ओट होय कबधनकी लैंकापझेल्यो

अरु मारवनको मगरूर मारि खार्गा खग्गनको फाग खेल्यो ॥

वा जुद्धमैं राजा रट्ठोर बखतसिंहके च्यारि हजार सातसै ४७०० पखरैत झरि परे ॥

अरु तीनसै ३०० पखरैतन सहित उम्मेदसिंहकी चमूसिवरसौं

१संकुलित युद्ध के२भय से ॥ २४॥ ३घोड़ों के सवारों के ४ शस्त्रों के प्रहार से ५शोभा बिगड़कर६हाथियों के सवारों के नेत्र७नीचे होने लगे८कान की बराबर ९ टीड्यों की ॥२४॥१०देखने की ११ सेना मे १२ घोड़े१३शत्रुओं को१४सेना में घुसते देख कर१५पति१६तीखे शस्त्र॥२५॥राठोड़ों के१७समूह की१८श्रेष्ठ खड्ग से

अछक छकि मरिवोही मानि कछवाहके कादंबिनी रूप क सों टरि परे ॥ २६ ॥

या रीति पलायन होय रठोर बखतसिंह नागोरको मार्ग लीनों ॥

अरु राजा अभयसिंहहू याहीके बिगारिबेकों आयोहो यातें चल्यो जोधपुरकों कुच कीनों ॥

ऐसें है २ बेर कछवाहकी सेनाको समुद्र तरि तीजी ३ क ताकत न जानि बखतसिंह निकसि नागोर आयो ॥

अरु जाके इष्ट गिरिधर परमेश्वरके हाथी तथा पातुरिखा सहित डेरनकों कछवाहको कटक लूटि लायो ॥ २७ ॥

तब वह बखतसिंहको इष्ट परमउग्वरतो जयसिंहनैं नाहिं पठायो अरु पातुरिखानैंकों पच्छा भेजि कागरमैं कातर कहि लिखायो कहया अर्तहपुर हमारे भेट कीनों परन्तु हमकोंतो अभुक्तके ग्राहक जानों ॥

१तृप्त होकर २ जयसिंह की मघमाला रूपी सेना से ॥ २६ ॥ ३ भागकर ४ गो-वर्धननाथ की मूर्ति सहित ५ सेना ॥ २७ ॥ ६ पत्र में ७ कायर ८ जनाना जिसका भोग पहिले किसीने नहीं किया हावे उसके

*उम्मेदसिंह को जयसिंह का राजा नहीं कहना और इस समय राजा कहने के कारण उम्मेदसिंह बखतसिंह से युद्ध करना लिखा सो यह बात समझ में नहीं आती। क्योंकि शाहपुरा के राजा भारत को दिल्ली के बादशाह आलम बहादुरशाह) ने विक्रमी संवत १७६५ में राजा का खिताब देकर तीन हजारी का मनसब दिया था सो कई प्रमाणों से सिद्ध है, और भारतसिंह के पुत्र राजा सिंह ने बखतसिंह से गिरधारी की मूर्ति सहित सेना की हथनी छीनली सो वह मूर्ति इस समय तक में लक्ष्मीनारायण के मंदिर में विद्यमान है और इसी युद्ध में इस टीकाकार (बारहठ कृष्णसिंह) के वृद्ध तामह बारहठ देवीसिंह बड़ी वीरता के साथ घायल हुए और नागों की जमात के एक वीर के हाथी की सूंड कट जाने के कारण उस नागेको मारकर देवीसिंह ने वह तरवार छीनली जो इस शाहपुरा के शस्त्रागार (सिलहखान) में नागावाली तरवार के नाम से विद्यमान है, इस खड्ग की थोड़ी कथा है सो विस्तार के भय से यहां नहीं लिखी जासकती इस युद्ध का किंवदन्ती ऐसी प्रसि है कि शाहपुराका राजा उम्मेदसिंह एक ओर खड़ा था जिनका हठजाने का रागोंने न कहलाया कि उम्मेदसिंह ने पीछा कहलाया कि यदि वीरता का घमंड है तो यह करके हटाकर आगे जाओ इ इनसे युद्ध हुआ जिसमें राजा उम्मेदसिंह के छोटे भाई कुशलसिंह आदि बड़े बड़े वीर मारे गये ॥

यातैं तुमारो तुम अबेरि फेरि ढुंडाहरसौं लरिबेकी न *हौंस आनौं ॥ २८ ॥

या रीति अठ्ठ नव सत्रह १७९८ के साल राजा जयसिंह रठ्ठोरनसौं जंग जीति आयो ॥

अरु या जंगको जस साहिपुराके †अधिराज रानाउत राजा उम्मेदसिंह पायो ॥

या तरफ बेघम नगर रावराजा उम्मेदसिंहकी माता चुंडाउति अपने निर्बाहको ‡अवलंब बिचारत बरस तीन३ निकारे ॥

अरु सुखसिंह महासिंहोतके §सम्मतसौं अपने छोटे पुत्र दीपसिंहके अर्थ रानाँ जगतसिंहसौं पटा लैबेकौं पुरोहित दयारामकौं उदयपुर पठावनमैं कारन बिचारे ॥ २९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ राणा जगत्सिंहपुष्करस्नानसोदकदत्तभुग्विष्टित्यजनबखतसिंहस्वाऽग्रजमिलनसेनासज्जीकरणजयसिंहतदभिमुखाऽऽगमनमरुराजानुजकूर्मराजकलहकरणबखतसिंहपराभवनं तृतीयो३मयूखः ॥ ३ ॥२८४॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कहिय मास बाहुल बिसद, प्रतिपद१ दिन अति प्यार ॥
सत्त७ रूप इकत करिय, कोटानृप श्रीपद्वार ॥ १ ॥

---

* इच्छा ॥ २८ ॥ † स्वामी ‡ आधार § सलाह से ॥ २९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, राणा जगत्सिंह का पुष्कर स्नान करके उदकवालों की बेगार छोडना १ बखतसिंह का अपने बडे भाई से मिलकर सेना सजना २ जयसिंह का इनके सम्मुख आना, ३मारवाड़ के पति (अभयसिंह) के छोटे भाई (बखतसिंह) का जयसिंह से युद्ध करना ४ और बखतसिंह का पराजय होने का तीसरा मयूख ३ समाप्त हुआ और आदिसे दोसौ चोरासी २८४ मयूख हुए॥

१ कार्तिक सुदि एकम के दिन कोटा के राजा ने ३ नाथद्वार में २ सात स्व-

विठ्ठल१ अरु नवनीत प्रिय२, बहुरि द्वारकानाथ३ ॥
गोकुल४ मथुरा५धीस गिनि, गोकुलचंद६ *सुगाथ ॥ २ ॥
मदनमोहन७हु सत्त७ †मित, ए वल्लभकुल इष्ट ॥
कोटानृप इक्कत करिय, अप्पन दहन ‡अरिष्ट ॥ ३ ॥
खरचि दम्म इक लक्ख१०००००मित, उच्छव रचिय अपार ॥
रानहिं तब §निमत्रदै, बुल्ल्यो विहित विचार ॥ ४ ॥
तँहँ रानौ कोटेस प्रति, विरचि नेहमय बैन ॥
माधवं निज भानेज हित, अक्खी जैपुर लैन ॥ ५ ॥
कोटेसहु तब रान प्रति, नय वैच भक्खिय नूंन ॥
जब मरिहै जयसिंह तब, ऐहै पहुमि दुंरहूँन ॥ ६ ॥
बुंदिय मिलहिं उमेदकों, माधवकों जयनैर ॥
पै जोलग जयसिंह प्रभु, बदहु न तोलग बैर ॥ ७ ॥
कोटापति अरु रान दुव२, किय रहस्य यह वत्त ॥
ईहिं तुम जावहु उदयपुर, रान करहु अनुरत्त ॥८॥
रानाउति पीहर ससुतं, रहत कुंम्मसों रुष्ठ ॥
इहिं रानहु कूम्म अहित, वप्पं बहिनि हित बुढि ॥ ९ ॥
अप्पन पुव्वहि कुम्म अगि, अब रानहु अरि ओहि ॥
यातें कछु दीपैंहिं पटा, देहिं तुं देहिं सिराहि ॥ १० ॥
यह विचारि निज बिप्र बह, दयाराम सबोधि ॥
पठयो मतिगति उदयपुर, समय देस हित सोधि ॥ ११ ॥

रूप इकट्ठे किये ॥ १ ॥ *श्रेष्ठ कथा वाले ॥ २ ॥ †प्रमाण ‡ पाप जलाने के लिये ॥ ३ ॥ § नेता देकर उचित विचार से बुलाया ॥ ४ ॥ १ माधोसिंह ॥ ५ ॥ २ नीति के वचन कहे ३ निश्चय ही ४ उमेदसिंह के बुंदी और माधवसिंह के जयपुर आवेगा ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५ एकान्त में ६ इस कारण ॥ ८ ॥ ७ पुत्र (माधवसिंह) सहित ८ कछवाहा जयसिंह से रूठ (क्रोधित हो)कर ९ पिता की बहिन (भुआ) पर हित की दृष्टि करके जयसिंह से रुष्ट है ॥ ९ ॥ १० जयसिंह के ११ है १२ दीपसिंह को १३ तो ॥ १० ॥ १४ अपनी बुद्धि की गति से दया-

तानैं जाय रु *तक्कयो, नगर सलूमरि नाह ॥
जान्यौं या बिनु होय नहिं, सब छहिं हत्थ सलाह ॥ १२ ॥
अक्खी केसरिसिंहसौं, बत्त यहै तव †छिप्र ॥
बुंदीपति लघु पुत्र हित, पटा चहत हम छिप्र ॥ १३ ॥
यह ‡उदंत कहि रानसौं, §बिहित दिवावहु वेग ॥
हैं हठ्ठे बाल न गिनहु, कल्हि करैंग तेग ॥ १४ ॥
सुनि यह केसरिसिंह सठ, मानि लोभ निज मित्त ॥
संगरपर उपकृत समय, चाह्यो नेह न चित्त ॥ १५ ॥

॥ षट्पात् ॥

इहिं चुंडाउत अग्ग मुख्य भुव लोभ सोधि मन ॥
सजि दलेल मन साम प्रकट अक्खरि किंकर पन ॥
रोरै नाम लघु सुवन अप्प बुंदिप्पुर रक्ख्यो ॥
पटा सहँस पैंतीस ३५०००लेरु अधिपति वह अक्ख्यो ॥
तिहिं लोभ अबहु उलटी तकत यह न पुरोहित अक्खरि
बिनु समय कछु न हम सन बनहिं कहि यौं रु उपहास किय

॥ दोहा ॥

दयाराम यह सुनि दरित, इच्छि अवर आलंब ॥
दोलतराम सु व्यास द्रुत, सोध्यो दुख गिरि संबँ ॥ १७

॥ षट्पात् ॥

पहिलैंहीं यह व्यास छोरि कोटा किहिं कारन ॥
रहिय रान ढिग आय मंत्र नय चतुर महामन ॥
तबहि पुरोहित ताहि मिलि रु अक्खिय उदंत सब ॥
समयो दैन सहाय आहि बुधसिंह सुतहिं अब ॥

राम को समझा कर ॥ ११ ॥ *देखा ॥ १२ ॥ †शीघ्र ॥ १३ ॥ ‡ वृत्तान्त ॥ § उचित १ लोभ को अपना मित्र मानकर २ चहुवाण पर उपकार कर समय ॥ १५ ॥ ३ रोड़सिंह नामक ४ दलेलसिंह को स्वामी कहा ॥ १६ डरकर ६ अन्य आधार चाहा ७ दुःख रूपी पर्वत का वज्र ॥ १७ ॥ १८ ॥

बिनु धन निबाहि सकन न बिभव यातैं रानहिं करि अरजो
कछु देहु पटा लघु भ्रात हित गिनि बिपत्ति कहहु गरज॥१८॥

॥ दोहा ॥

द्विजबर दौलतराम सुनि, अक्खिय रानहिं एह ॥
दीपसिंहहित दीजिये, कछुक पटा करि नेह ॥ १९ ॥
सु सुनि रान जयसिंहको, चिंत्यो *नहर प्रचंड ॥
अक्खी वह करम अतुल्ल, दिय †मरुपहु जिहिं दंड ॥ २० ॥
किये अहित यह कुम्भ का, बिगरहिं राज [िसाज]
यातैं तुम उनसौं कहहु, कहहु कछु विधि काज ॥ २१ ॥
यह उत्तर जगतेस दिय, सो सुनि कुमर प्रताप ॥
अक्खी घर आयेन कौं, क्यौं नहिं रक्खत आप ॥ २२ ॥
सत्रुकोहु आयें सदन, मानत अग्घ महत्त ॥
सुपहु अप्प असे समय, कूरम आस कहत ॥ २३ ॥
यह कहिकुमर प्रताप , पटा हजार पचीस २५००० ॥
जनकहुसौं बरजोर बनि, किय तयार बखसीस ॥ २४ ॥
नगर पटा बिच मुख्य लिखि, लाखोला अभिधान ॥
अवरहु वस्तु अनूप चउ ४, चित करिय पहुँचान ॥ २५ ॥
इक कृपान हय २ खास इक, इक चामर ३ बर बेस ॥
इक सिरुपेच ४ उमेद हित किय तयार कुमरेस ॥ २६ ॥
सगताउत सुरतेस सुत, निडर उमेद सनाम ॥
किय तयार बुंदीस प्रति, बधम भेजन काम ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

यह कुमार अति जोर बढ्यो जुव्वन बय उब्भट ॥

---

* भयंकर प्रताप † मारवाड के राजा को भी ॥ २० ॥ १ जयसिंह का २ बड़ा ॥ २१ ॥ ३ राणा जयसिंह के कुमर प्रतापसिंह ने कहा ॥ २२ ॥ ४ घर ५ आप ६ आप श्रेष्ठ राजा होकर ॥ २३ ॥ ७ पिता से ॥ २४ ॥ ८नाम॥२५॥२६॥ २७ ॥

अगामि जनक[1] अमात्य भिंदि कति लिय मिलाय भट[2]॥
भिल्लाड़ा पुर भिन्न वंधि अप्पन रजधानी ॥
दखल्लु राज बिच डारि रहैं उद्धत अभिमानी ॥
यह सोधि[3] रान जगतेस अब पकरन पुत्तहिं किन्न मत ॥
तिन दिनन भूप बुंदीसको उदयनैर यह बिप्र गंत[4] ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

नटत रान इम निंदि द्रुत[5], उद्धत कुमर प्रताप ॥
संभर हित स्वच्छंद[6] तब, लिखि पटा रु किय छाप ॥ २९ ॥
लखि सुतको यह मत्तपन, सोचि रान जगतेस ॥
हे भट निज अनुकूल ते, इक दिन बुल्लि असेसँ[7] ॥ ३० ॥
कहिय कैद मम सुत करहु, अनर्थ[8] प्रचारत एह ॥
निज निज सुत या ढिग रहत, तिनहिं पठावहु गेह ॥ ३१ ॥
ग्रह बिचही एते दिनन, करत रह्यो अपकार ॥
पै हम बिनु पैले नृपन, हुव अब रक्खन हार ॥ ३२ ॥
यातैं अब अज्ञान द्रुत, मेटहु गाहि उमराव ॥
अरु जो नहिं तो आग्गें यह, सजलनदहँन स्वभाव ॥ ३३ ॥
इढ प्रपच इम रान करि, भटन सिक्ख दिय भाय[11] ॥
इन निज पुत्र अनेक मिस, दिन्नैं घरन पठाय ॥ ३४ ॥
सगताउत दारूनगर, पति सुरतेस[12] स नाम ॥
स्वसुतहिं[13] अक्खिय ताहुनैं, घरजावहु कछु काम ॥ ३५ ॥
यह उमेदसिंह सु कुमर, जो किय बेघम त्यार ॥
ताहूसौं इम पितु कहिय, जावहु गेह कुमार ॥ ३६ ॥

१ पिता के सचिव को पकड़ कर २ उमरावों को ३ विचार कर ४ गया ॥ २८ ॥ ५ शीघ्र ६ स्वतंत्र ॥ २९ ॥ ७ सबको बुलाए ॥ ३० ॥ ८ अनीति ॥ ३१ ॥ यह जलती हुई ९ अग्नि है जिसका १० जलाने का ही स्वभाव है ॥ ३३ ॥ ११ रीति पूर्वक ॥ ३४ ॥ १२ सुरतसिंह १३ अपने पुत्र से कह

इहिं कुमार मतिबल कछुक, जान्यों रान प्रपंच ॥
अक्खिय स्वामि प्रताप अब, जानि न छोरौं रच ॥ ३७ ॥
तदनतर इकदिन यहै, रान कुमार प्रताप ॥
अलपसत्थ रहि जनक की, परिखदं पत्तो आप ॥ ३८ ॥
उपवन कृष्णाविलास नृप, बैठो गेहन उपाय ॥
इहिं विच कुमर प्रताप यह, डोढी पहुँच्यो आय ॥ ३९॥
प्रतिहारन अक्खिय अरज, लीजे दुवरचरं पास ॥
लै जानन अवर न हुकम, चतुर अप्पनय चास ॥ ४० ॥
निज सत्थहिं तँहँ रक्खि तव, लै अनुचर दुवरसग ॥
परिखद पत्त प्रताप तँहँ, रानहिं नमि रचि रग ॥ ४१ ॥
अप्प मिसल वैठिय उचित, रचि सैंन रु तव रान ॥
सुभट चपारि४ निज पुत्र सिर, डारिय भरत उडान ॥४२॥
नाथनाम१लघु भ्रात निज, पुर वेंगघोर अधीस ॥
रानाउत भारत वहुरि, नगर जाजपुर ईस ॥ ४३ ॥
चुडाउत पुर देवगढ, पति जसवत३ स एव ॥
देलवाडपुर पति वहुरि, झल्ला राघवदेव४ ॥ ४४ ॥
ए भट रान अधीस की, सैंन होत छल सोर ॥
चड परे प्रतिमल्ल चउ४, जानि कुमर अति जोर ॥ ४५ ॥
तिनके परत प्रताप तव, जैंनक गहन मत जानि ॥
हो कितेक पै पितु हुकम, कहि छोरिय असि पानि ॥४६॥
इन तथापि मूढन चउ४न, गहि दिखाय वल दिट्ठि ॥
नाथसिंह तस वाहु गहि, जॅालु मचक दिय पिट्ठि ॥ ४७ ॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ १ बुद्धि बल से ॥ ३७ ॥ २ पिता की ३ सभा में गया ॥ ३८ ॥ ४ बाग ५ पकडने के उपाय मे ॥ ३९ ॥ ६ द्वारपालों ने ७ सेवक ८ दूसरों को लेजाने का हुकम नहीं है ९ नीति की खबर है ॥ ४० ॥ १० सभा में गया ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ११ बागोर पुर का पति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ १२ पिता पकडता है यह जानकर १३ हाथ से तरवार छोडदी ॥ ४६ ॥ १४ घुटने का ॥ ४७ ॥

कहिय पटा फैंकत कुमर, मल्लन लरत *उमाहि ॥
अज्ज कहाँ वह बल गयउ, होत निबल को †चाहि॥४८॥
कहि इम कुमरहिं कैद किय, चउ४ भट कुवच प्रचार ॥
सक नव अंक९९ ‡सहस्य गत, §बिसद तीज३रवि वार॥४९।
अग्गैं अनुचित कुमर करि, इहाँ उचित अवधान[1] ॥
पकरन जानत पहिल किय, खग्ग रु खेटक[2] हान ॥ ५० ॥
गहत अचानक इम कुमर, फुट्टिग[3] हक्क अपार ॥
डोढीपर निज सत्थ सुनि, भज्यो बिकल भय भार ॥ ५१ ॥
कुमर[4] जु कुमर तयार किय, बेघम भेजन बीर ॥
सगताउत उम्मेद सो, धँप्यो[5] सभा विच धीर ॥ ५२ ॥
असि झारत मारत अरिन, रान लियउ नियराय[6] ॥
जिहिं पिल्लितँ[7] तिहिं बपु जुगल[8]२, करत खंड अतिकाय ॥ ५३॥
ताहीको काका तबहि पिल्ल्यो रान प्रचारि ॥
स नंति[9] पुब्ब इक बार सहि, मरद सोहु लिय मारि ॥ ५४ ॥
सुरतसिंह तब तस जनक[10], रोकन पिल्ल्यो[11] रान ॥
तिहिं लखि कुमर उमेद तजि, असिवँर[12] नमिय असान[13]॥५५।
जानि धरम इहिं असि तजिय, इहिं मूरख किय एह॥
नमत बेर निज पुत्र सिर, कट्ट्यो नूँतन नेह[14] ॥ ५६ ॥
कुमर प्रताप सु कैद करि, इम खिजि जनक अमान[15] ॥

---

* उत्साह करके † चाह कर कौन निर्बल होता है ॥ ४८ ॥ ‡ पौष § सुदि ॥ ४९ ॥ १ सावधानी २ तरवार और ढाल का त्याग कर दिया ॥५०॥३हाक फूटी ॥ ५१ ॥ ४ कुमर प्रतापसिंह ने जिस कुमर को बेघम भेजने को तैयार किया था वह उम्मेदसिंह ५ दौड़ा॥५२॥६समीप७जिसको भेजते हैं उसी के शरीर के ८दो टुकड़े करता है॥५३॥९नम्रता पूर्वक, पहिले उसका एक वार सहकर ॥ ५४ ॥ १० उस कुमर के पिता सुरतसिंह को ११ राना ने रोकने को भेजा १२ श्रेष्ठ तरवार छोडकर १३ मान रहित नमा ॥ ५५ ॥१४नवीन स्नेह को काट दिया अर्थात् पुत्र उम्मेदसिंह को मारडाला॥५६॥१५ अमाप (प्रमाण रहित)

पकरन वारे चउ४नकों, मुख्य सचिव किय रान ॥ ८७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ कोटापतिदुर्ज्जनशल्यश्रीद्वारगमनसप्त ७ स्वरूपैकत्रकरणबुन्दीन्द्रपुरोहितदयारामोदयपुरप्रेषणदीपसिंहार्थपटोपनामकनिर्वाहवसुप्रार्थनतत्सलूमरीशकेसरिसिंहाऽपह्सनव्यासदोलतरामवाक्सहायविरचनराणाजगत्सिंहाऽनङ्गीकरणतद्राजकुमारप्रतापसिंहस्वीकरणपटाबेघमप्रेषणविचारणाद्यौद्धत्यधारणतद्राणाकुमारकाराक्षेपणतद्भटोम्मेदसिंहकुमाररणमरणराणासोदरनाथादिसचिवचतुष्टयी ४ करणं चतुर्थो४मयूखः ॥ ४ ॥　　॥ २८५ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ चूलिकाश्चाला ॥

नृप उमेद इत व्याह किय, मालव धर पुर गर्गराट पति ॥
झल्ला दलपतिकी सुता, चिमनकुमरि अभिधान महामति॥१॥
सक नव नव सत्रह१७९९समा, नवमी९राधं वलच्छ लगन किय॥
गुर्न३वासर रहि स्वसुर ग्रह, वेघम आनि मिलान बहुरि दिय॥२॥
प्रतिदिन बुदिय लेन पट्ट, वढत भूप उम्मेद बलापति ॥

॥ ८७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में कोटा के पति दुर्जनसाल का नाथद्वारा में जाना सात स्वरूपों को इकट्ठा करना बुन्दी के राजा के पुरोहित दयाराम को उदयपुर भेजना दीपसिंह के अर्थ पटा है उपनाम जिसका ऐसे निर्वाह (खरच निबाहने) की प्रार्थना करना उसकी सलूमर के पति केसरीसिंह का हँसी करना व्यास दोलतराम के वचन की सहायता करने को राणा जगत्सिंह का अस्वीकार करना उसको राणा के राज कुमार प्रतापसिंह का स्वीकार करके पटा बेघम भेजने का विचार करना आदि उद्धतता धारण करने से राणा का उस कुमर को कैद करना उस कुमर के वीर कुमर उम्मेदसिंह का युद्ध मे मरना राणा का सगे भाई नाथसिंह आदि चारों को सचिव करने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ पिच्यासी २८५ मयूख हुए ॥

१ नाम ॥ १ ॥ २ वैशाख १ सुदि ८ तीन दिन ५ मुकाम ॥ २ ॥ ६ आज्ञा पत्ता

सावन गत आसार के, के सित पक्खगं द्विजर्कलापति ॥३॥

॥ सोरठा ॥

सुनि बुंदिय यह सोर, चूक दलेल विचारिकें ॥
चूड़ाउत वह रोरं, मारन बेघम मुक्कलिय ॥ ४ ॥
भोपसिंह तस संग, हरदाउत हल्ला दियउ ॥
जो पति धोवढ़ ढंग, सालम सुत हितकंर कुटिल्ल ॥ ५ ॥
दोउ२न बेघम आय, द्विरदं मत्त निज छोरि दिय ॥
जान्यों कौतुंक पाय, सिसु उमेद अंहैं लखन ॥६॥
तबहि दगा बल ताहि, मारि रु बुंदिय मुक्कलहिं ॥
इम सठ उभय२ उमाहि, पहर तीन३ गज सँग फिरिय॥७॥
सो सुनि लखन न आय, सानुकूल नृपकी नियंति ॥
छन्न गये दुख छाय, मुह बिगारि दुव२ सठ दुमन ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

जैपुर नृप जयसिंह इत, जित्ति मरुरथल जुद्ध ॥
अद्वितीय अप्पहिं समुझि, मान गहिय वनि मुंद्ध ॥ ९ ॥
मद्य पान हित गिनि मुदित, निस दिन रचत अनंत ॥
निधुंवन रुचि धप्पत नहिन, दम हुव आगन अंतं ॥ १० ॥
निस रु दीह आसव नसा, रक्खत हृदय अंरूढ ॥
छोरत नहि कामुक छगलं, मंजों नारिन मूढ ॥ ११ ॥
अैसी बिधि अवसानंके, आगम हुव कछवाह ॥

नामक पर्वत का पति बढता है १ श्रावण की मेघ धारा बढे जैसे २ किंवा शुक्ल पक्ष के द्वितीया के३चन्द्रमा की कला बढे जैसे ॥ ३ ॥ ४ वह मलूमर के रावत का छोटा पुत्र रोड़सिंह ॥ ४ ॥ ५ सालमसिंह के पुत्र (दलेलसिंह) का हित करने वाला ॥ ५ ॥ ६ मस्त हाथी ७ तमाशा जान कर ॥ ६ ॥ ८ भेजे- गें ॥ ७ ॥ ९ भाग्य ॥ ८ ॥१०मूर्ख बन कर ॥ ९ ॥११मैथुन से १२ अंत समय का आगम हुआ ॥ १० ॥१३हृदय पर चढाहुआ१४वह कामी बकरा१५स्त्रियों रूपी छालियों (बकरियों) को नहीं छोडता ॥ ११॥१६कछवाह के अन्त का ॥ १२ ॥

राजामल सिर राज्यकी, रक्खी निवहन राह ॥ १२ ॥
वैदन सेन ओषधि बलन, अधिक ठानि आहार ॥
उभय२ घटी ओदन अदन, बढ्यो कुम्भ इहिं वार ॥१३॥
आगम सकल अनंगके, सठ एकात सुधाय ॥
मोहन मेहन वृद्धि मुख, सेय देवा दरसाय ॥ १४ ॥
वरज्यो जदपि चिकित्सकन, मन्न्यो तदपि न मंद ॥
आराधत अविरत अतुल, आसव सुरत अनंद ॥ १५ ॥
राजामल इक दिन कहिय, क्यों नृप करत कुजोग ॥
अक्खो तुम छत हम अभय, भुग्गत अब यह भोग ॥१६॥
हुव प्रमत्त जयसिंह इम, मन लगि मोहन मद्य ॥
अवर कोन मम सम यहे, सोधि गरव गहि सद्य ॥ १७ ॥

॥ रोला ॥

इकदिन आसव मत्त होय कछवाह मूढ मति ॥
उदयनेर लिखवाय पत्र पठयो रानाँ प्रति ॥
मम आदेसँ अमोघेँ चतुर जगतस विचारहु ॥
बेघम जे बुधसिंह नद निज दस निकारहु ॥ १८ ॥
सुनि यह कूरम कथितँ रान जगतेस भीरुँ बनि ॥
दिय बेघम आदेस देस मम तजहु भूप भनि ॥
यह सुनि भूप उमेदसिंह अरु दीप भ्रात हुव २ ॥
कछु दिन कठिन निकारि धरिय धरलैन चित्त ध्रुव ॥ १९ ॥

---

१ वैद्यों से बल बढाने की औषधियों के सेवन से बहुत भोजन करके दो दो घड़ी में २ अन्न ३ खाना ॥ १३ ॥ ४ सब शास्त्र ५ कामदेव के एकान्त में दिखाया कर ६ मैथुन की और ७ लिंग की वृद्धि (बढाना) ८ आदि ९ औषधों का सेवन करके दिखाया अर्थात् औषधियें खाकर मैथुन और लिंग की वृद्धि दिखाई ॥ १४ ॥ १० वैद्यों ने मना किया तो भी ११ वह मूर्ख नहीं माना १२ निरन्तर, मद्य और मैथुन के अत्यन्त आनंद का आराधन (साधन) करता रहा ॥ १५ ॥ १६ ॥ १३ मैथुन १४ तुरत (शीघ्र) ॥ १७ ॥ १५ मेरा हुकम १६ पीछा नहीं फिरने (खाली नहीं जाने) वाला ॥ १८ ॥ १७ जयसिंह का कहा हुआ १८ कायर ॥ १९ ॥

सक ख अभ्र बसु सोम१८००असित[1] पंचमि५असाढ गत॥
कोटा जनपद[2] क्रमिय[3] छोरि वेघम रन उद्धत ॥
सुनि यह दुज्जनमल्ल भीरु कूरम भय भाखिय ॥
निज ढिग बुल्लिय नाँहिं दुहुँन मधुकरगढ राखिय ॥ २० ॥
रहिय तत्थ चउ४मास भूप उम्मेद अनुज[4] सह ॥
मृगयादिक[5] कौतुक अनेक रचि वीर महा मह[6] ॥
घाँट[7] रुक्कि गिर घेरि झुंड तुपक्कन नृप झारे ॥
अति प्रगल्भ[8] आयुधन सद्धि मृगपति बहु मारे ॥ २१ ॥

॥ रुचिरा ॥

इत कूरम[9] नृप रोग विवसि हुव देह विकसि कृमि[10] पुंज[11] परे ॥
मास बहुत यह दुक्ख सह्यो अरु मेद[12] पैल्लल[13] तनु[14] विक्लन[15] गरे ॥
इक१अंगुल्ल परिमित[16] लंबे कृमि स्याम लपन[17] सव देह धसे ॥
चर्म[18]१लोहित[19]२पैल[20]३मेद[21]४न खावत अस्थिन अंतर विविध वसे२२
भस्म तलप[23] सोवत दुख भाजन[24] नैंक न पीड़ित निंद लहैं ॥
जिम विकसत तरबूज पक्यो इम विग्रह[25] रंचन गाढ गहैं ॥
सुप्तहि[26] मूत्र तथा मल मोचन निजकृत[27] दुरितन[28] चिंतिकैं[29] ॥

१ कृष्णपक्ष की २ देश में ३ गये ॥ २० ॥ ४ छोटे भाई दीपसिंह सहित ५ शिकार आदि ६ बड़े उत्सव रचकर ७ घाटा रोककर ८ शस्त्रों में बुद्धिमान् अथवा उस बुद्धिमान् ने शस्त्रों का साधन करके बहुत सिंह मारे ॥ २१ ॥ ९ कछवाहों का राजा जयसिंह रोग वश हुआ जिसका शरीर फटकर उसमें १० कीड़ों के ११ समूह पड़गये सो कई मास तक यह दुःख सहा और १२ चरबी व १३ मांस १४ शरीर से १५ ग्लानि युक्त होकर गिरा १६ एक अंगुल के प्रमाण वाले १७ काले मुख के कीड़े सब शरीर में घुस गये वे कीड़े१८चमड़ी१९रुधिर२०मांस२१चरबी नहीं खाकर २२ हड्डियों के भीतर घुसगये ॥ २२ ॥२४उस दुःख के पात्र (राजा जयसिंह) ने २३ भस्म की शय्या पर शयन करके उस पीड़ा से नींद नहीं ली २५ शरीर २६ वह राजा सोया हुआ ही मल मूत्र का त्याग करता था और २७ अपने कियेहुए२८पापों को २९ याद करता था

अनुज विजय तिय मात सुतादिक मारिय ते सब दिट्ठि परैं॥२३॥
इम अति कष्ट विकल कूरम नृप सचित अघ भर भुगि भज्यो ॥
खखनसुससि१८००विक्रमसक इसगत बिसँद चतुर्दसि१४देहतज्यो
हुव जैपुर घर घर हाहारव प्रेतहपुर अति त्रास परयो ॥
ईस्वरिसिंह तत्रहि पट्टप सुत देखि निगम विधि दाह करयो।२४।

॥ दोहा ॥

इम उमेद नृप भाग बल, तजिग देह कछवाह ॥
यह उदतैं दिस दिस उडग, हुव अरि घगन उछाह॥ २५ ॥
यह कथ सुनि कोटा अधिप, खुासय मन्नि तजि खेद ॥
मधुकरगढतैं अनुज जुत, बुल्ल्या निकट उमेद ॥ २६ ॥
मधुकरगढ सामत हर, इक्का हरजन नाम ॥
किल्लापति कोटेसको, जु हो भुजिंग्या जाम ॥ २७ ॥
मुख्य सचिव बुंदीसको, कोटापति वह किन्न ॥
कोटा आय उमद नृप, हयन हर चउ४लिन्न ॥ २८ ॥
लेत हयन कोटस लखि, अक्खी भूपहिं एहु ॥
तुम हित हम रक्खत कैंटक, लगैं खरच सु देहु ॥ २९ ॥
सुनि नृप निज भूखन दये, मोल लक्ख दुव२ दम्म ॥
इक१ किलगिय कैंटक जुग२, करन जग भुव कम्म ।३०।
लोभी दुज्जनसल्ल सठ, लखी बिपत्ति न रच ॥
इम भूखन बुंदीसके, लिन्नें कपट प्रपच ॥ ३१ ॥

---

१ छोटे भाई विजयसिंह, माता और २ पुत्र आदि को मारे थे वे सब ३दीखने लगे ॥ २३ ॥ ४ संचय किये हुए पाप के भार का ५ बहुत भोगा ६ आश्विन मास के ७ शुक्ल पक्ष की ८ शब्द ९जनाने में १० वेद विधि से॥२४॥ ११वृत्तान्त ॥ २५ ॥ २६ ॥ १२ पासवान स्त्री का पुत्र ॥ २७ ॥ १३ अच्छे हैं का चार घोड़े लिये ॥ २८ ॥ १४ तुम्हारे लिये सेना रखते हैं जिसका खरच लगे सो दो ॥ २९ ॥१५मस्तक पर लगाने की एक जड़ाऊ किलगी और हाथों के १६ दो कड़े दिये पृथ्वी के लमे क अर्थ युद्ध का १६ कार्य करने को ॥ ३० ॥ ३१ ॥

तदनंतर[1] दल[2] इक्क सहँस१०००, पठयो बुंदिय सीम ॥
आय रु तिहिँ लुट्टिय मुलक, भेद मचायउ भीम[3] ॥ ३२ ॥
नृपति ईस्वरीसिंह हुव, इत जैपुर लहि पट्ट ॥
श्रद्धाजुत करि जनक[4]को, प्रेतकरम विधि वट्ट[5] ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ भूभृदुम्मेदसिंहमालवगर्गराटपतिझल्लादलपतिसिंहपुत्रीप्रथमोद्वहनतन्मारणादलेलसिंहविचारणकूर्मराजमद्यमदमज्जनललनालोलुपीभवनोदयपुरदलप्रेषणराणाहड्डेन्द्रदेशनिष्कासनजयसिंहमरणतदुम्मेदकोटाऽऽह्वयनकोटेशतद्भूषणमार्गणसेनासमुच्चयनबुन्दीदेशविग्रहकरणजयपुरेशेश्वरीसिंहपट्टप्रापणं पञ्चमो ५ मयूखः ॥ ५ ॥ ॥ २८६ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कोटापुर इत मंत्र किय, दुज्जनसल्ल उमेद ॥
इकत करि हड्डे अखिल, भाखिय संगर[6] भेद ॥ १ ॥
कहि भट बेणीरामसों, कोटापति कर जोरि ॥
गिनत तुम्हैं सब भूप गुरु, छल रु छोनिँ छक्क[7] छोरि ॥ २ ॥
यातैं जैपुर जाहु तुम, बुंदिय लैन उपाय ॥

१जिस पीछे २ सेना ३ भयंकर ॥ ३२ ॥ ४ पिता का ५ रीति के मार्ग से॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में भूपति उम्मेदसिंह का मालवे में गागरूण के पति झाला दलपतसिंह की पुत्री से प्रथम विवाह करना १ उम्मेदसिंह को मारने का दलेलसिंह का विचारना २ कछवाहों के राजा (जयसिंह) का मद्य के नसे में डूबकर स्त्रियों का लोलुपि होना और उदयपुर पत्र भेजना ३ राणा का उम्मेदसिंह को देश बाहर निकालना ४ जयसिंह का मरना और उम्मेदसिंह को कोटा में बुलाना ५ कोटा के पति का उम्मेदसिंह से भूषण लेना ६ सेना एकत्र करके बुन्दी के देश में उपद्रव करना ७ जयपुर के राजा ईश्वरीसिंह के पाट बैठने का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ छियासी २८६ मयूख हुए ॥

६ युद्ध का ॥ १ ॥ ७ भूमि का घमंड छोडकर ॥ २ ॥

कूर्म जो यह स्वीकरैं, तो लरनों न हिताय ॥ ३ ॥
हम जावत श्रिपद्वार पुनि, मिलहिं रानसों तत्थ ॥
करहिं न हित कछवाह तो, लज्जहिं उभय समत्थ ॥ ४ ॥
यह सुनि भट जैपुर चलिय, दुजनसल्ल श्रिपद्वार ॥
अन्नकूट सद्धिय समय, अधिक भक्ति उपचार ॥ ५ ॥

॥ हीरकम् ॥

पुनि रानहिं पठयो दलँ अप्प मिलन आइये ॥
माधर्व निज भागिनेय हित हु हृदय लाइये ॥
बुंदिय पुर लन कोहु मत्र मिलि रु ठानिहैं ॥
दुढाहर मेदिनि पर सज्जि संगर तानिहैं ॥ ६ ॥
यह सुनि जगतेस रान कुच करिय वेगही ॥
कोटापतिके मिलाप नीति रीति के गही ॥
उदयनगरके समीप सेनहिं फरमानदै ॥
नाहरमगराभिधान थान तहँ मिलानदै ॥ ७ ॥
कोटापति पाप पास प्रीति पत्र प्रेरयो ॥
आवहु मिलिहैं इहाँहिं जो तुम हित हेरयो ॥
कोटेमहु सुनत एह नाहरमगरा गयो ॥
रानहिं मिलि रीतिसहित मंत्र सहितै महयो ॥ ८ ॥
अग्गैं अमरेस रानकी पुत्रिय व्याहिबे ॥
रौनाउति दुर्लभ गिनि चिंतित जस चाहिबे ॥
निजकर जयसिंह कुंम्भ कग्गर लिखी कीं सही ॥

१ कछवाहा ईश्वरीसिंह २ स्वीकार करे तो लड़ना ३ हित नहीं है ॥ ३ ॥ ४ तहां ५ समर्थ ॥ ४ ॥ ६ पूजना ॥ ५ ॥ ७ पत्र ८ आपके भानजे माधवसिंह के हित का ९ भूमि १० युद्ध ॥ ६ ॥ ११ नाम १२ मुकाम ॥ ७ ॥ १३ पापी के पास (आगामि समय में बुंदी को दबावेगा इससे यह विशेषण दिया है) १४ हित के साथ सलाह की ॥ ८ ॥ १५ राणा की पुत्री को १६ कछवाहा जयसिंह ने पत्र लिखकर १७ सही की

रानाउति पुत्र होहिं ढुंढाहर ईस हीं ॥ ९ ॥
पहिलैं इतनी लिखाय रानहु तनया[2] दई ॥
चिंतहु पट्ठु[3] नीति अप्प तथ्य[4] न सब जो भई ॥
जिट्ठहि[5] जयसिंह पुत्र राज्य अखिल अंगम्यों[6] ॥
माधव हित कछु दयो न नति[7] जुत तुमसौं नम्यों ॥ १० ॥
बुंदिय दुवर हत्थन[8] गाह छोरनहु न उच्चरैं ॥
अप्पन इहिं कारन दुवर सज्जित दलकों[9] करैं ॥
दोउनर यह मंत्र थाप्प इक्कत पृतना[10] करी ॥
बिप्र सु उत बगिराम कूरम प्रति उच्चरी ॥ ११ ॥
छिन्निय जयसिंह सोहि बुंदिय अब दीजिये ॥
कूरम उपकार यहहिं कीटा सिर कीजिये ॥
राजामल्ल जुत नरेसैं[11] बिप्रहिं तब अक्खई ॥
बुंदिय हमरे पिचंड[12] क्यौंकरि काढिहै गई ॥ १२ ॥
अक्खिय सुनि एह बिप्र तुर कैंतरि[13] कढ्ढिहैं ॥
दुद्धर[14] दल हंकि हड्ड जैपुर सिर चढ्ढिहैं ॥
यह कहि द्विज आय बत्त हड्डनपति सौं कही ॥
सो सुनि चहुवानन रानर सज्जिय पृतना[15] सही ॥ १३ ॥
लंबित धुजदंड मत्त हत्थिन सिर खुल्लये ॥
बीरहु निज निज समस्त बंधन[16] बल बुल्लये ॥
त्रंबक डक्क बज्जि बेग सिंधुन[17] स्वर लग्गये ॥
पब्बय डगमगि भोग भोगियं[18] भंग[19] भग्गये ॥ १४ ॥

---

१ इस रानावती के पुत्र होगा सोही निश्चय जयपुर का पति होगा ॥ ९ ॥ २ पुत्री ३ आपनीति चतुर हो सो विचारो ४ वह सत्य नहीं हुई ५ जयसिंह के ज्येष्ठ पुत्र (ईश्वरीसिंह) ने ६ सब राज्य दबालिया ७ नम्रता सहित ॥ १० ॥ ८ दोनों हाथों से पकड़कर ९ सेना को १० सेना एकत्र करी ॥ ११ ॥ ११ ईश्वरीसिंह ने १२ हमारे पेट में है सो ॥ १२ ॥ १३ बडे पेट को चीरकर १४ दुःख से धर्षण की जावै ऐसी सेनाको १५ सेना ॥ १३ ॥ १६ सेना बांधने के लिये बुलाये १७ वीर रस को बढानेवाला राग विशेष १८ नाग के फण १९ भार से टूटे ॥ १४ ॥

*मकुलि धर धूलि धुंधि रुधि रु रवि ढकयो ॥
†चिक्कार लखि चड चेत दिग्गज गन सकयो ॥
दिकपालनके ‡कपाल नाटसालसे चुभे ॥
वीर सु मगरूर मडि हूरन हित के लुभे ॥ १५ ॥
सागर सब लै हिलोर ओर ओर उज्झले ॥
हाटकेगिरिके समस्त शृंग भग ह्वै हले ॥
कोटापति सेन रान सेन उभय[2] यों चली ॥
सो सुनि कछवाह भूप इक्कन बैल[3] कैं बली ॥ १६ ॥
मंडिय दरकुच रान सम्मुह मैंगरूरतैं ॥
मानहु घन भद्द मास पाप पवन पूरतैं ॥
राजामल कग्गर लिखि रान निकट पल्लयो ॥
हहनके पेचमाँहिं मानस तुम क्यौं दयो ॥ १७ ॥
जो हित हममों बनैं सु आरन मैन नाँ बनैं ॥
आवत हमहू हजूर अप्पन सिरहीं मनैं ॥
माधव निज जामिज हित बाँट पहुमि लीजिये ॥
हहन सन भिन्न होय नेंकहु न पतीजिये ॥

॥ दोहा ॥

यह दल अग्गहि मुक्कल्यो, राजामल्ल सचिवेनें ॥
पुनि नृप ईश्वरसिंह जुत, सम्मुह हक्किय सेन ॥ १९ ॥
इन गन रु कोटेस दुव[2] बग सु कैंग्गर बांचि ॥

---

*आम पर रज छाकर †इस सना का नावना सुनकर धीमली करके चित्त स दिया था कहाथियो का समूह थ रायुक हुआ ‡नहा निकलने वाला साल 'कि' से मानों अथ समझा जाता है इसीप्रकार 'क' से किसने यह अथ सब जगह जानना चाहिये) ॥ १५ ॥ [1]सुमरू पर्वत के शिखर २ सेना इकट्ठा की ॥ १६ ॥ [3]घमंड से [4]पवन के समूह स ५ भजा ६ मन ॥ १७ ॥ ७ आपका मस्तक पर मानते हैं ८ बहिन का पुत्र १० विश्वास मत करो ॥ १८ ॥ ११ पत्र १२ सचिवों का पति ॥ १९ ॥ १३ वह पत्र बांचकर

धाये सम्मुह खग्गचि धन, सेना अतुलित संचि¹ ॥ २० ॥
नगर जाजपुरके निकट, जामोली इक गाम ॥
उत्तरि तँहँ भूपति उभयर, किय चालीस मुकाम ॥ २१ ॥
सगताउत सावर अधिप², इंद्रसिंह अभिधान³ ॥
तिहिँ दब्ब्यो इक रानको, नगर देवली थान ॥ २२ ॥
ताहि तजन जगतेस तब, बहुत कहाई बत्त ॥
सगताउत मन्नी न सो, सुररि रह्यो जिम मत्त⁴ ॥ २३ ॥
इहिँ रानाँ अब देवली, रचन लेन गढ गारि⁵ ॥
राजाउत भारत⁶ सहित, पठयो कटक⁷ प्रचारि ॥ २४ ॥
दलहिँ जात अब देवली⁸, सुनि सावर पति पुत्त⁹ ॥
सालम नाम सु सज्जि बनि, धरयो लरन गढ धुंत्त¹⁰ ॥ २५ ॥
दिन पंचक५ पहिलैं यहै, ब्याह्यो सालम बीर ॥
कंकन मोचन हू न किय, हुव जुज्झन हमगीर ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंह १ दुर्जनशल्य २ मन्त्रणावर्णरामभट्टजैपुरप्रेषणकोटेशश्रीद्वारगमनराणासमाह्वयननाहरमगराभय २ मिलनवर्णरामेश्वरसिंहविरसीभवनभट्टप्रत्यागमनराणामहारावसेनाभिनिर्याणतदभिमुखकूर्मराजाऽऽगमनदेवलीकुमारसालमसिंहसज्जीभवनतद्राणाससैन्य

१ एकत्र करके ॥ २० ॥ २१ ॥ २ सावर का पति ३ नाम ॥ २२ ॥ ४ मस्त होवे जिसप्रकार ॥ २३ ॥ ५ इसकारण देवली नामक नगर लेने को ६ भारतसिंह ७ सेना भेजी ॥२४॥ ८ सेना को देवली जाती हुई सुनकर ९ पुत्र १० अनम्र ॥ २५ ॥ २६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह और दुर्जनसाल का सलाह करना १ भट्ट वर्णराम को जयपुर भेजना २ कोटा के पति का नाथद्वारे जाकर राणा को बुलाना ३ नाहरमगरा नामक स्थान पर दोनों का मिलना ४ वर्णराम और ईश्वरीसिंह का परस्पर विरस होना ५ भट्ट के पीछे आने पर राणा और महाराव का सेना सहित गमन करना ६ इन के सम्मुख कछवाहा के राजा का आगमन ७ देवली में कुमर सालमसिंह का

भारतसिंहप्रेषणाशसन षष्ठो ६ मयूख ॥ ६ ॥   ॥२८७॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

गह्यो जिहिं अग्ग प्रताप कुमार, वहै हुव भारतसिंह तयार ॥
दयो तस संग अभंग अनीक, सजे भट उद्धत चाहि समीक ॥१॥
सिगाहि कह्यो सबसों इम रान, लहो गढ घोर रचो घमसान ।
चल्यो सुनि भारतसिंह प्रचंड, उमंगत हक्किय सेन अखंड ॥ २ ॥
भयो दिक्पालन मोह भयान, प्रकंपत दिग्गज मुल्लिय मान ॥
मचक्किय पन्नगकी फनमाल, भचक्किय पक्किय सूकर भाल ॥३॥
छछक्किय अद्रिनतें कटि धातु, लचक्किय लोक कहैं हरि पातु ॥
सरक्किय एम उदैपुर चंक्क फरक्किय हत्थिनपैं बैहरक्क ॥ ४ ॥
करक्किय कंकटकी कटिकाल्लि, ढरक्किय पैब्बय शृंगन ढालि ॥
खरक्किय खप्पर जोगिनि संग, झरक्किय नालन अग्गि दमंग ॥५॥
घुरक्किय अक्खर पक्खर घोर, थरक्किय अच्छरि अंबर ओर ॥

सत्र हाना ८ उस पर महाराणा का सेना सहित भारतसिंह को भेजने के कथन का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सित्यासी २८७ मयूख हुए ॥

जिसने पहिले राणा के कुमर १ प्रतापसिंह को पकड़ा था वह भारतसिंह तैयार हुआ २ सेना ३ युद्ध करना चाहकर ॥ १ ॥ ४ युद्ध ॥ २ ॥ ५ भयंकर ६ धूजने हुए ७ शेषनाग का (यहां फनमाल शब्द के योग से शेषनाग का ग्रहण है) मचक लगने से ८ वराह का ललाट पक गया ॥ ३ ॥ पर्वतों से धातु की पिचकारियें छूटने लगीं और भूलोक आदि लचककर कहने लगे कि हे परमेश्वर ९ रक्षा करो १० इसप्रकार उदयपुर की सेना चली और हाथियों पर ११ ध्वजाएं चढ़ीं ॥ ४ ॥ १२ कवच की १३ कड़ियों की पंक्तियें टूटने लगीं और १४ पर्वतों के शिखर चलायमान होकर गिरने लगे और योगिनियों के साथ खप्पर बजने लगे १५ तोपों की नालों के साथ १६ अग्नि के कण झड़ने लगे (डिंगल भाषा में दमंग शब्द अग्नि और अग्निकण दोनों का वाचक है) ॥ ५ ॥ घोड़ों की पाखरों का आकाश में घोर शब्द हुआ, अथवा नहीं च्युत होने (गिरने) वाली पाखरों का भयंकर शब्द हुआ १७ आकाश की ओर अप्सराएं ठहरीं

दरक्किय छोनिय दारिम रीति, भरक्किय खंड चउद्दह[१]भीति[४] ॥ ६ ॥
घमंक्किय घोग्न घुग्घरमाल, चमंक्किय सेलन सोचिं[५] सचाल[४] ॥
छमंक्किय अच्छरि नेउर गैन, झमंक्किय भूखन लक्खन लैन[६]॥७॥
टमंक्किय त्रंबिय बंब्रियँ बज्जि, ठमंक्किय घंट मतंगन गज्जि ॥
डमंक्किय डाहल डिंडिम लोल[१०], ढमंक्किय सँद्दल[११] मँद्दल[१२] ढोल ॥८॥
द्रमंक्किय दुंदुभि[१३] दिग्घ द्रमोम[१४], धमंक्किय धुज्जि रसातल धाम ॥
उलट्टिय सेन कि सागर अंभ[१५], पलट्टिग जानि पुरंद[१६] जंभ ॥ ९ ॥
चल्यो इम गान मही पति चंक्क, लग्यो उडि पावक तोप ललक्क ॥
लयो गढ देवलिका गग्दाय[१८], धम्यों रन तोपन भुम्मि धुजाय॥१०॥
कही तँहँ[१९] भीमत सालम काज, मिलौं गढ छोरि लहो अँसु आज॥
यहै सुनि बीर न किन्न अँबेर[२१], कहाइय सालम जुज्झन केर॥११॥
उदैपुरको[२२] दल दुर्लभ लाय, इहाँ तुमसे भट पाहुन आय ॥
नँकैं[२३] हम जो तुमरी मनुहारि, लजैं पितु मात लगैं कुल गारि१२
खरे तुमहू नँय[२४] जानत ख्यात[२५], करैं सब स्वागत[२६] पाहुन आत ॥
अबैं इहिँकारन धर्महिँ धारि, पधारहु स्वीकरि[२७] मो मनुहारि ॥१३॥
हुते हम सावरके पति हर्त[२८], कहाँ तिनकों सुख स्वर्ग मिलंत ॥

और दाडिम की भांति १ भूमि फटी २ भय से चौदह ही लोक चौंके ॥ ६ ॥ ४ चपलता सहित ५ भालों की कान्ति चमकी ६ आकाश में अप्सराओं के नूपुर बजे और उन अप्सराओं की लाखों ६ पंक्तियों में भूषण चमके ॥ ७ ॥ तासे और ७ नगारे बजने का शब्द हुआ ८ हाथियों पर शोभायमान घंट बजे ९ डाहल और डिंडिम आदि देवी और भैरव के वाद्य १० चपलता से बजे ११ उस सेना के साथ अथवा शब्दायमान होकर १२ मर्दल (मांदळ जो मृदंग के आकार होता है) और ढोल बजे ॥ ८ ॥ १३ बड़े नगारे१४नोबतें बजीं१५मानों समुद्र के जल के समान सेना उलटी; सो मानों जंभासुर पर १६ इन्द्र पलटा ॥ ९ ॥ १७ सेना चली १८ देवली के गढ को घेर लिया ॥ १० ॥ १९ भीमसिंह ने कुमर सालमसिंह को कहलाया २० प्राण२१ विलंब नहीं किया और सालमसिंह ने युद्ध करने को कहलाया ॥ ११ ॥ २२ सेना लाकर२३तुमारी मनुहार नहीं करैं तो ॥१२॥२४प्रसिद्ध २५ नीति जानते हो२६आये का सत्कार सभी करते हैं२७स्वीकार करके पधारो ॥ १३ ॥२८खेद

परतु कृपाकरिकैं तुम भाप, ततो मम बिन्नति मन्नि हितायु॥१४॥
गुरू तुम आसिख अक्खहु एहु, सुपुत्रक स्वर्ग सभा सुख लेहु॥
कथा यह सालमसिंह कहाय, रुप्यो जिम भ्रंगदको रनराय ॥१५॥
रची सुनि भारत तोपन रागि, हनी इन सेन घनी हलकारि ॥
चलैं पबिपात कि गोलक चंड, दिपैं जिम मोर उडैं धुजदंड॥ १६ ॥
गिरैं गृह मंडप फुट्टि लदाव, तप्यो पुर तोपनके तरकाव ॥
नठे चहुँकोद निवानन नीर, परी जलजतुन दुस्सह पीर ॥ १७ ॥
घिरयो पुर देवलिका दल घोर, जम्यों दुहुँभोर प्रवीरन जोर ॥
जँबूरजजावलि तोप तुपक्क, चलैं द्रुत चंडे मचैं धमचक्क ॥ १८ ॥
चुहट्टन हट्टन बट्ट बजार, उडे दंमकैं बहु वृंद अँगार ॥
जगत किरंत बिजाजन पट्ट गुंडी जनु लग्गिय राल गॅरंट्ट ॥१९॥
वनिक्कन आपनें लागि भ्रलाव, दहैं घन कानेन ज्यों तृन दाव ॥
जगें घृत भ्रादेंन तेल रु तूंल, दिवाग्गिय दीपक होत दुकूल ॥२०॥

के साथ १ हित क अर्थ ॥ १४ ॥ २ तुम यह हा मो यह आशीर्वाद दो कि ३ ऐ पुत्र स्वर्ग की सभा का सुख ला, जिसप्रकार यह कथा कहाई तिसीप्रकार वह ९ युद्ध का राजा, अथवा युद्ध ही है धन जिसके ऐसा सालमसिंह ४ शरीर दूंन को खड़ा हुआ ॥ १५ ॥ ६ भारतसिंह ने ७ वज्र पडने के समान भयंकर गोले चलते हैं और मयूरों के समान उडते हुये ध्वजादंड शोभा पाते हैं ॥ १६ ॥ ८ चारों दिशा के जलाशयों का जल नष्ट होगया ॥ १७ ॥ देवली नगर भयंकर ६ सेना से घिर गया और विशेष वीरों का बल दोनों ओर जमा १० शीघ्र ११ भयंकर चलकर युद्ध हुआ ॥ १८ ॥ उन तोपों के चलने से चौहटा, दुकान १२ मार्ग और बजार में अग्नि के १४ अंगारों क बहुत समूह उडकर १५ चमकते हैं जिनसे बजाजों क १६ वस्त्र जलकर १५ गिरते हैं सो मानों १७ पतंग कनकौवा) अथवा राळ क १८ समूह में अग्नि लगी (यहां अग्नि का व्यापार ऊपर के प्रकरण से हाता है) ॥ १९ ॥ इसप्रकार वनियों की १९ व्यापार की गलियों में २० अग्नि लगकर बहुत तृणोंवाले २१ वन का अग्नि लाय) जलावे तसे जलाता है जिसम घी २२ अन्न २३ रुई जलती है सो मानों दीपक ही हैं वस्त्र जिसके ऐसी दीवाळ होती है और उस ज्वाला में काष्ठ क ऊपर और फूस की छपरियें अथवा छापरे (फूस के छाये घर जलते) हैं

जरैं कटछप्पर टप्पर ज्वाल, झरैं जिम फग्गुन होरिय झाल ॥
छिकैं बहु अट्टन कंगुर छुट्टि, तरक्कत पत्थर छत्रिन तुट्टि ॥ २१ ॥
परैं प्रजरैं बहु मंच कपाट, घिरयो पुर पावक दुग्गह घाट ॥
जरैं ससिसालन ज्वालन जूह दगैं गृह अंगन अग्गि दुरूह ॥२२॥
द्रवैं जरि नागं रु बंग अदब्बैं, उडैं लगि पावक पागद अंभ ॥
मनौं गढको अघ मेटन मान, करायउ सालम अग्गि सनान।२
घने दिन भो रन तोपन घोर, छिक्यो गढ गोलन मार दुरओर
कढयोतब सालम खुल्लि कपाट, झुक्यो रन वीर वजावत झाट २
बजी सगताउतकी हतबाहँ, चले कर ओदँन ज्यों सिसु चाह ॥
उडैं हय खंधगिरैं असवार, कटैं भट छत्तिन छेदि कटार ॥ २५
तरक्कत टोपनपैं तरवारि, दिपैं मनु देवल झल्लरि झारि ॥
कटैं फटि कंकट बीरन अंग, तजैं निरमोकँ कि भीमँ भुजंग ॥२
चटक्कत टोप समस्तक चीर, किधौं जगदीस प्रसाद करीर ॥
उलट्टत अब्बनँ तुट्टन तंग, पलट्टत के जिम एनँ पलंगँ ॥ २७ ।
झरैं गज सुंडिन झंडन झुंड, रचैं घन घुम्मत तंडव रुंड ॥

सो जैसे फाल्गुन मास में होली की झाल जलै तैसे जलते हैं १ बहुत बुर्ज
कांगरे छूटकर वे छिकती हैं और छत्रियों से तड़ककर पत्थर टूटते
॥ २१ ॥ बहुत से २ मांचे और कॅवाड़ जलकर गिरते हैं इसप्रकार नहीं
की जावे जिस रीति के ३ अग्नि से वह पुर घिरगया ४ चंद्रशालाओं
के ऊपर के मकानों) में ५ अग्नि का ६ समूह जलता है और घर के चौक
८ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसा अग्नि ७ जलता है ॥ २२ ॥ वहां १०
सा ११ रांगा जलकर १२ बहुत ९ बहता है और उसके अग्नि से पानी
१३ आकाश में लगता है ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ १४ प्रहार १५ चावल
पर बालक के हाथ चलै तैसे ॥ २५ ॥ १६ कवच फटकर वीरों
निकसते हैं सो मानों १८ काला सर्प १७ कांचली छोड़ता है ॥२६॥
फटकर मस्तक सहित चीरें होती हैं सो मानों जगदीश के प्रसाद
घड़ा फटता है (जगदीश के प्रसाद से भरेहुए घड़े का चौफाड़ होकर
ना प्रसिद्ध है) २१ तंग तूटकर घोड़े उलटते हैं और कितने ही घोड़े
हरिण पर २३ चीता पलटे तैसे पलटते हैं ॥ २७ ॥ २४ बिना

परैं हग *रत्त फदक्कन पुंज, गिरैं जिम सीतसमै पकि †गुंज॥२८॥
थरक्कहिं अवर अच्छरि थट्ट, भरक्कहिं भीरुक ‡उब्बट वट्ट ॥
परैं कति पक्खर §वग्ग पलान, मरैं भट छाकि रजोगुन मान॥२९॥
उरज्झत ¶अंत्रन गिद्ध अनेक, तरप्फत घायल मूढ कितेक ॥
किलक्कहिं कालिय कूदि कराल, खलक्कहिं सोहित लोहित खाल॥३०
छुलक्कहिं घाय छटक्कन रत्त, भलक्कहिं सूरन भ्राज उमत्त ॥
न तक्कहिं कातर दूरहु नंहि, ललक्कहि बावन५रओ चउसट्ठि६४॥३१॥
उलट्टत हत्थिनतें भट ऑहिं, मनों तिहरी नट भग्गल माँहिं ॥
उछट्टहिं आयुध तुट्टहिं तानें, सुलट्टहिं कर्ते उचट्टहिं सानें ॥ ३२ ॥
दपट्टहिं बाजिन जुट्टहिं दाव, भपट्टहिं ज्यों तरितो भमकाव ॥
भटक्कहिं डक्कहिं इक्क भँभारि, पटक्कहिं भूतनकों रन रारि ॥ ३३ ॥
अटक्कहिं पाय रकाबन केक, गटक्कहिं गोदन गिद्ध अनेक ॥
खटक्कहिं रुहनपैं लगि खग्ग, छटक्कहिं के उडि अंबरमग्ग॥३
लटक्कहिं थक्कहिं रान अनीकें, सटक्कहिं के मठ घोर समी
बढ्यो इम सालम बाजि उडाय, लगो हुंत भारतसिंहहिं जाय॥३
कह्यो तुम मान्नय मो मनुहारि, धरे दल सज्जि बनै उपकारि

शरार नृत्य करते हैं जिसप्रकार शरद ऋतु में पकीहुई † चिरमी गिरें ि
प्रकार * लाल नेत्रों के समूह उछलकर गिरते हैं ॥ २८ ॥ ‡ बिना म
§ पाग (कुसा) ॥ २९ ॥ ¶ आंतों में १ कालिका २ रुधिर के न
बहते हुए शोभित हैं ॥ ३० ॥ ३ रुधिर ४ उन्मत्त वीरों का ॥
कायर नहीं दखते हैं ५ दूर से भागते हैं ६ जहां केवल चौसठ की
आवे यहां चौसठ जोगनियें जानो, और बावन की संख्या से बावन भैरव
मों ॥ ३१ ॥ ८ उलटते हैं ९ भागल में (हाथी को फांदने के लिये नट
लकड़ी (काष्ठ) बांधते हैं उस का नाम भागल है) १० बांधे ११ ध्वजा
ती है १२ रुधिर उछलता है ॥ ३२ ॥ १३ घोड़ों को दौड़ाते हैं १४ बि
चमके जैसे १५ मांसाहारियों को भयंकर युद्ध में गिराते हैं ॥ ३३ ॥ १६
(भेजा) १७ आकाश के मार्ग ॥ ३४ ॥ १८ राणा की सेना १९ भयंकर
से भागते हैं २० शीघ्र ॥ ३५ ॥ २१ हठ पूर्वक ठहरे ॥ ३६ ॥

पितामह मोहि गिन्यौं सिसु वर्ग, दयो करुणाकरि दुर्लभ स्वर्ग३६
बच्यो *खिल जो मम आयु बहोरि, मिलौं तुमकों सु घटी पल जोरि
तज्यो तिहिं याविधि आकिख कुमार, पर्यो भट औरनपैं रन प्यार
दुरु हत्थन झारत खग्गन दाय, गयो बहु वैरिनके †असु खाय ॥
घनी अरि नागिन कंकन झारि, घनैं मदमत्त ‡मतंगन मारि।३८।
तज्यो प हल्लो वह कंकन चाहि, नयो वेलि बंधिय अच्छरि व्याहि
तज्यो इम सालम मानुज देह, लयो सुर विग्रह नूतन नेह ॥३९॥
उदैपुरके बड बीर पचास५०, हनैं अरु अल्प गिनैं उपहास ॥
परे निज वीरहु सत्रह१७ संग, मर्यो इम सालम स्वर्ग उमंग॥४०॥

॥ दोहा ॥

रानाउत भारत वहै, इम रन सालम मारि ॥
रान अमल किय देवली, अप्पन विजय उचारि ॥ ४१ ॥
सगताउत सावर अधिप, मंद सु सुतहिं मराय ॥
जामोली जगतेसकैं, पाँसर लग्गो पाय ॥ ४२ ॥
तदनंतर कछवाह नृप, आयउ कटक अमान ॥
ग्राम नाम पडेर ढिग, दिन्न मुदित मिलान ॥ ४३ ॥
बुंदियतैं यह सुनि विदित, करिय दलेलहु कुच्च ॥
कूरम ईस्वरिसिंहसौं, उतहि मिल्यो छक उच्च ॥ ४४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे २ सप्तम ७ राशौ

*बाकी की जो मेरी उमर बची है वह तुमको मिलो अर्थात तुम जीते रहो मैं मरता हूं यह कहकर सालमसिंह ने उस भारतसिंह को छोड दिया और वह वीर युद्ध में प्यार करके दूसरों पर गिरा ॥ ३७ ॥ † प्राण ‡ मस्त हाथियों को मारकर ॥ ३८ ॥ १ पहिले का डोरड़ा २ फिर ३ मनुष्य शरीर छोडा ४ देव शरीर लिया नवीन स्नेह से ॥ ३९ ॥ ६ कांटों को गिनने से हमी है ॥ ४० ॥ ७ भारतसिंह ॥ ४१ ॥ ८ सूर्य ९ नीच जामोली नामक ग्राम में जाकर राणा जगत्सिंह के चरण लगा १०जिसपीछे ११प्रमाण रहित १२मुकाम ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में राणा जगत्सिंह

राणाजगतिसहसेनानीभारतसिंहदेवलीयुद्धकरणशावरपनीन्द्रसिंह–कुमारमालमसिंहमरणातज्जनकराणाचरणापतनदेवल्युदयपुरकेतना रोपणाकूर्मराजेश्वरीसिंहपरडेरमामर्शविरस्थापनतद्दलेलसिंहमिलन ७ नमो ७ मयूख ॥ ७ ॥ ॥२२८॥

मायोव्रजदेशीया प्राकृता मिश्रितभाषा ॥

॥ गगनागनम् ॥

राजामल कूरमनृप सचिव *नत्थ गो गनपैं ॥
अक्खिय कर जोरि चढन कौनकाज घमसानपैं ॥
यह सुनि जयसिंह लिखित लै रु गन वच्यो तहाँ ॥
अक्खिय इहिं पत्रमाँहिं जो लिखी सु अब है कहाँ ॥ १ ॥
बुल्लिय सुनि कुम्म सचिव जवनईस यह जानिकैं ॥
अक्खिय लिखि पत्र भूप करहु जेठसुत मानिकैं ॥
यों यहै नृपता भई सु जवनइंद फरमानसों ॥
लोपन तिहिं को समत्थ विरचि बैर बलवानसों ॥ २ ॥
अप्पहु नृप नीति चतुर समय देस हिय लाइय ॥
किहिं विधि जवनेस हितु समर साजि जय पाइये ॥
नाथे जु निज अनुज ताहि तुम दयो सु पुनि पेखिये ॥
गृह गृह सबके यहेहि राजराति हढ देखिय ॥ ३ ॥
अनुचर हमतो तथापि नृपसमत सब गावर ॥

सेनापाल भारतसिंह का देवली में युद्ध करना १ सावर के पति इन्द्रसिंह के कुमार मालमसिंह का मरना २ उसके पिता का राणा के चरणों में गिरना और देवली में उदयपुर का निशान रोपना ३ कछवाहों के राजा ईश्वरीसिंह का पंडेर नामक ग्राम में डेरे लगाना ४ उसमें दलेलसिंह के मिलन का सातवां ७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठ्यासी मयूख हुए ॥२८८॥
* तहां राणा के पास गया १ युद्ध पर २ जयसिंह का लिखा हुआ पत्र ॥ १ ॥ ३ ईश्वरीसिंह का सचिव ४ बादशाह ने यह वृत्तान्त जानकर ५ इसप्रकार, या इसप्रकार ६ ईश्वरीसिंह ६ बादशाह के हुक्म से राजा हुआ है ७ कौन समर्थ है ॥ २ ॥ ८ बादशाह से युद्ध सजकर ९ आपके छोटे भाई नाथसिंह को ॥ ३ ॥ १० ईश्वरीसिंह

अप्पहिँ वहिकाय लग्न लैचल्लै सु सठ बावरे ॥
अब मम बिनती बिचारि हुकम धर्मगहि दीजिये ॥
माधवं हित रीति रक्खि कछु मिवाय भुव लीजिये ॥ ४ ॥
रानहु सुनतहि इतीक गिान बोलिष्ठ कछवाहकों ॥
राजामल इंद्रजाल बनि बिमूढ तजि राहकों ॥
अंक्खय मर लक्ख५००००दम्म पहुमि माधवहिं दीजिये॥
सुनतहि द्रुत कुम्मं सचिव लिखि पटा रु कहि लीजिये ॥
टौंक नगरको समग्न परगनां सु लिखि यों दयो ॥
रानहु बनि मंद भागिनेयं हेत वहही लयो ॥
तदनंतरं यह उदंतं सुनि अनिष्ट कोटेसहू ॥
रानहिं बहक्यो बिचारि तजिय तत्थ मुंद लेसहू ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

राजामल्ल कूरम सचिव, माया बचनन मंडि ॥
दिय माधव हित टौंक पुर, लग्न रान मत खंडि ॥ ७ ॥
तदनु रान जगनेस अरु, कोटापति चहुवान ॥
दुवरभूपन कूरम सिबिरैं, किन्नो मिलन पयान ॥ ८ ॥
हो पहिलैं आवन उचित, कुंम्महिं रान महीप ॥
पै तस पितु सुच मेटनौं, मन्न्यौं प्रथम महीप ॥ ९ ॥
यातैं रान अंराहे अब, कानकैं तखतरवान ॥
रतन छत्र छायितैं चल्यो, जँहँ दल कुम्म मिलान ॥ १० ॥
संग गयन कोटेसहू कूरम डेरन कान ॥

सहित १ माधवसिंह के अर्थ ॥ ४ ॥ २ बलवान् ३ मूर्ख धनकर ४ रुपयों की भूमि ५ ईश्वरीसिंह के सचिव ने ॥ ५ ॥ ६ भानजे के लिये ७ जिस पीछे ८ वृत्तान्त ९ प्रतिकूल १० हर्ष ॥ ६ ॥ ११ माधवसिंह के अर्थ ॥ ७ ॥ १२ जिस पीछे १३ कछवाहे के डेरों पर ॥ ८ ॥ १४ ईश्वरीसिंह को १५ जयसिंह का शोक ॥ ९ ॥ १६ सवार होकर १७ सुवर्ण के खासे में १८ छादित (छाया हुआ) १९ जहां कछवाह की सेना के मुकाम थे ॥ १० ॥

निज निज भट अद्दर लये, कैलह जई रु कुलीन ॥११॥
तँहँ कोटापतिके भटन, किय भटभीरे विसेस ॥
कीलनसंहित सिरायचे, गिरे ठेलाठल ठेस ॥ १२ ॥
पिक्खत यह कोटेस मति, कुंम्भ भयउ प्रतिकूल ॥
तिम रानहु अहितहि तकिय, मन फट्टिय सह मूल ॥१३॥
इम रान रु कोटेस दुव२, कूरम डेरन पत्त ॥
रान चित्त पलटयो समुझि, हुव कोटेस विरत्तं ॥ १४ ॥
तीन३ सहँस कछवाह तँहँ, सज्जित पिक्खि सिपाह ॥
कोटापति सब सहि रह्यो, किन्नी इन जु कुराह ॥१५॥
कछुक काल रहि सिक्ख करि, इम दुव २ डेरन आय ॥
रान पटेलय कूरमहु, पुनि आयउ हित पाय ॥ १६ ॥
अँह दूजे नृप रान अरु, मिलि कूरम अतिमोद ॥
पिक्ख्यो सरित बनास विच, वाँरन जुद्ध विनोद ॥१७॥
बुल्ल्यो नहिं कोटेस तँहँ, यातैं अनँखि विसेस ॥
विनुहि सिक्ख कोटा गयउ, लुट्टत बुंदिय देस ॥१८ ॥
इत रानहि कूरम अधिप,अद्दरि साम उपाय ॥
टोंक नगर लघुभ्रात हित, अप्पि रु जैपुर आय ॥ १९ ॥
रानहु पत्तन वनहडा, महिमानी इक मानि ॥
किंतव कूरमनको ठग्यो, आयो गृह भय आनि ॥ २० ॥
षट्पात्–मरुपतिसौं जयसिंह दम्म गुनईस१९ लक्ख लिय ॥
ते अब ईस्वरिसिंह पिक्खि समय रु पच्छे दिय ॥

१युद्ध जीतनेवाले।११।२वीरों की भी।३वा धक्काधक्की४मेखों सहित५ढेरे६उस भीड़ की टक्कर से॥ १२ ॥७ईश्वरीसिंह॥१३॥८ विरक्त (प्रीति रहित) ॥ १४ ॥८ईश्वरी सिंह ने ९ सजे हुए सिपाही देखकर १० कोटा के पति ने जो कुरीति की वह सब सहन करके चुपरहा ॥ १५ ॥ ११ राना के डेरे ॥ १६ ॥ १२ दूजे दिन १४बनास नदी में१५हाथियों के युद्ध का कुतूहल१६देखा ॥१७॥१६कोटा के ईश को नहीं बुलाया१७क्रोध करके ॥ १८ ॥ १९ ॥ १८ कपटी कछवाहा का ठगा हुआ ॥ २० ॥ १९ मारवाड़ के पति (अभयसिंह) से २० रुपये

इत कोटापति अनखि सेन बुंदिय सिर सज्जिय ॥
करि हड्डन एकत्त गुमर धरि उच्च गरज्जिय ॥
बज्जिय निसान डाहल बिसम यह उदंत जग उज्झज्जिय ॥
संभर उमेद कोटेस सह क्रमत लैन बुंदिय वलिय ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

नागर द्विज गोबिंद निज, सेनापति कोटेस ॥
तबहि जोधपुर मुक्कल्यो, लैन मदति बँल वेस ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

द्विज नागर गोबिंदराम कोटेस सेनपति ॥
पठयो तब जोधपुर मंडि कग्गर सहाय मति ॥
यहै समय मरुईस लैन बुंदिय दल पिल्लहु ॥
सिर हड्डन आसान करहु कूरम अहि किल्लहु ॥
गोबिंद बिप्र यह पत्र गहि अभयसिंह अंतिक गयउ ॥
बहुदिन बिताय अवसर उचित भूपति प्रति हाजरि भयउ २३

॥ दोहा ॥

कछुक ब्याज मरु भूप कहि, सेन दयो नहिं संग ॥
तरकिं बिप्र अजमेर तब, आयो मुरारि अभंग ॥ २४ ॥
फक्करुद्दोला नाम इक, सबल नबाब सिपाह ॥
पठयो जो गुजरात प्रति, सूबापति करि साह ॥ २५ ॥
जवन पीर जारति करन, आयो वह अजमेर ॥
तासौं मिलि गोबिंद तब, किय रहस्य हित केर ॥ २६ ॥
कहिय बिप्र इक लक्ख१०००००तुम, हमसन रुप्पय लेहु ॥
संगचलहु चतुरंग सजि, लारि बुंदिय लै देहु ॥ २७ ॥

---

१ घमंड २ चहुवाण उम्मेदसिंह, कोटा के पति सहित ३ बुन्दी लेने को जाता है ॥२१॥ ४ सेना की अधिक सहायता लेने को ॥ २२ ॥ ५ पत्र ६ सेना भेजो ७ उपकार ८ कछवाहे रूपी सर्प को कीलो ९ समीप गया ॥ २३ ॥ १० मिस ११ क्रोध करके ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ १२ एकान्त वार्ता ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥

यह अंगीकरि मिच्छ वह, भयउ सहाय अभंग ॥
साहिपुरप सीसोद पुनि, सजि उमेद हुव संग ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

द्विज तब लिखि कोटा पठयो दल, इततैं हम आवत रन उज्झल
गुज्जर धर सूबापति संगति, पुनि उमेद नृप साहिपुरापति॥२९॥
उततैं तुम दोऊ२ नृप आवहु, चढ लरन चतुरंग चलावहु ॥
दुज्जनसल्ल उमेद भूप दुव२, हल्लनपति सुनि लरन सज्ज हुव ३०

॥ दोहा ॥

खुग्ग्ली पटु नेप धिंज्ज खम, वरस चउद्दह १४ वेस॥
निडर सज्यो उम्मेद नृप, दुपहर जेठ दिनेस ॥ ३१ ॥
रेसा रसातल बोरि दिय, कनककनैन बुध कूर ॥
अब उमेद किरिगज इहिं, सज्यो उधारन सूर ॥ ३२ ॥
सेसा दीपकुमरी सहित, कोटा मातहिं रक्खि ॥
सानुज भूपति सज्ज हुव, अवनि लैन निज अक्खि ॥ ३३ ॥
सक इक नभ वसु ससि१८०१समाँ, मिलि द्वादसि१२सुचि मास
कोटापुर सज्जिय कटकें, निडर करन अरि नास ॥ ३४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ राणाशिविरकूर्मसचिवागमनमाधवसिंहार्थपचलक्षरौप्यकाऽऽर्घटोङ्कन

१अंगीकार (मंजूर) २ शाहपुरा का पति ॥ २८॥ ३ पत्र भेजा४साथ॥२९॥३०॥
५ शास्त्रविद्या में चतुर ६ नीति चतुर ७ धीरजवाला ८ क्षमा रखनेवाला
९ ज्येष्ठ मास के दुपहर का सूर्य ॥ ३१ ॥ ११बुधसिंह रूपी हिरण्याक्ष(हिरण्या-
क्षस) ने १० भूमि को पाताल में डुबो दी थी जिसको फिर१२वाराह अवतार
की भाँति उम्मेदसिंह १३ उद्धार करने (निकालने) को सजा ॥ ३२ ॥ १४
पाहिम १५ छोटे भाई सहित१६अपनी भूमि लेना कह कर ॥ ३३ ॥ १७संवत्
१८आषाढ १९सेना सजी ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में राणा के डेरे पर
कछवाहे के सचिव का आना और माधवसिंह के अर्थ पांच लाख रुपयों के मूल्य

गरदेशलिखनराणानिवेदनतन्मायाजगत्सिंहमोहनतत्पूर्वजयपुरगशिविरागमनकोटेश्वरदुर्मनीभवनबुन्दीदेशधाटिपातनाऽलुकोटाऽऽगमनकूर्मराजजनकनीतमरुदण्डद्रव्यप्रत्यर्पणमहारावसहायार्थगोविंदरामयोधपुरप्रेषणसाहिपुरेश्वरादिसहिततत्प्रत्यागमनबुन्दीविजयार्थहड्डेन्द्रसेनसंचयनमष्टमो ८ मयूखः ॥ ८ ॥ ॥ २८९ ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

सटा[१] धूनिकैं सिंह उम्मेद सज्ज्यो, गदा लै कि दुज्जोधपैं[२] भीम गज्ज्यो
बिडोजा[३] मनौं जंभपैं छोह छायो, लग्यो लंक कैं अंजनीको[४] लडायो
किधौं कुंडलीपैं[५] बली पन्नगासी[६], रिसानौं कि अंधारपैं[७] तेजरासी ॥
किधौं सिंधुके सूनुपैं[१०] संभु तंड्यो[११], मनौं चंडपैं कालिका कोप मंड्यो.२
जटाजूटतैं[१२] बीरभद्रेस[१३] जग्ग्यो, महासेन[१४] कै क्रौंचको[१५] लैन लग्ग्यो ॥
फटाटोप[१६] कै रागपैं नाग किन्नौं, कुवेलाश्व[१७] कै धुंधुपैं[१८] दाव दिन्नौं ॥३॥

(हॉसिल) का टाक नगर का देश लिखकर राणा की नजर करना १ उसकी इन्द्रजाल में राना का ठगा जाना २ राणा जगत्सिंह का पहिले ईश्वरीसिंह के डेरे आना ३ और कोटा के पति का उदास होकर बुन्दी का देश लूटकर कोटे जाना ४ ईश्वरीसिंह का, पिता (जयसिंह) के लियेहुए मारवाड़ के दंड के द्रव्य पीछे देना ५ महाराव का सहाय के अर्थ गोविन्दराम को जोधपुर भेजना ६ शाहपुरा के पति सहित उसका पीछा आना ७ बुन्दी को विजय करने के अर्थ हाडों के इन्द्रका सेना संचय करने का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ निवासी२८९मयूख समाप्त हुए ॥

१ उम्मेदसिंह रूपी सिंह गरदन के केस धुजाकर सज्जित हुआ, किंवा गदा लेकर २ दुर्योधन के ऊपर भीमसेन ने गर्जना की ३ मानों जंभासुर पर इंद्र क्रोधित हुआ किंवा लंका के ऊपर ४ अंजनी का पुत्र (हनुमान) लगा ॥ १ ॥ किंवा ५ सर्प के ऊपर बलवान् ६ गरुड़ किधूं ८ अंधेरे पर ९ सूर्य ने ७ क्रोध किया किंवा समुद्र के १० पुत्र (कामदेव) पर शिव ने ११ गर्जना की, मानों चंड नामक दैत्य पर कालिकाने कोप रचा॥२॥ १२ मानों शिव की जटा के जूट से १३ वीरभद्र उठा किंवा १४ स्वामिकार्तिक १५ क्रौंच नामक पर्वत को लेने लगा अथवा बडा सिचाण पक्षी क्रौंचपक्षी को लेने लगा किंवा गिरनारी राग पर सर्प ने १६ फण का आटोप (छत्र) किया किंवा १७ कुवलयाश्व नामक राजा ने १८ धुंधु राक्षस

कियों हैहयाधीसपैं रामकुप्यो, किधों राम लंकेसके आंजि उप्यो ॥
रच्यो चाप गांडीव टंकार रज्यो, गज्यो के गुडाकेस राधेय गज्यो॥४॥
सज्यो कन्ह के साहगोरीसं सत्थैं, मुच्यो लंगरी जानि जैचंद मत्थैं ॥
धक्यो सोखिवे सिंधु वातापि ध्वंसी,अरयो छत्रपैं वालि ज्यों इंद्रअंसी५
बलाधीस भू लैन यों भूप बढ्यो, चमू संकुली भेद ज्यों मेघ चढ्यो ॥
लगे सान झंझान धारालं धारी, भ्रमासक्त दज्झै झरैं फूल भारी ६
लेंगे गाय नोवत्तिपैं घाय लग्गों, भराक्रांतव्है सर्प्पके दर्प्प भग्गैं॥
पताका खुली मत्त हत्थीन मत्थैं, मजे डाकिनी प्रेत वेताल सत्थैं ७
धुरा टोप सन्नाह त्रिंक्रात धारैं, इचैं चाप घोंघी निसानों उतारैं ॥
दारोवीन आरूढ के तोप दग्गैं, जैटा ज्वालकी माल ज्यों ऊंज जग्गैं८
समै कैल्पको मो डिग्यो रत्नसानू, भयो दीहके भेसके वेस भानू॥

पर दाव दिया ॥ ३ ॥ किधा कार्तवीर्य (सहस्रार्जुन) पर १ परशुराम ने क्रोध किया किंवा रावण के २ युद्ध में रामचन्द्र शोभायमान हुए किंवा गांडी व धनुष की टंकार करके शोभायमान ३ अर्जुन ने ४ कर्ण को मारा अथवा डराया ॥ ४ ॥ ५ किंवा गोरीशाह के साथ पृथ्वीराज का काका कन्ह सज्जित हुआ ६ किंवा पृथ्वीराज का सामंत लंगरीराय कनौज के राजा जयचंद्र पर छूटा किंवा समुद्र को सुखाने के अर्थ ७ वातापि राक्षस का मारने वाला (अगस्त्य ऋषि) क्रोधित हुआ अथवा ८ इन्द्र के अंशवाला वालि नामक पद्-रा का राजा छत्र राक्षस से अड़ा ॥ ५ ॥ इसप्रकार ९ आबूपर्वत नामक पर्वत का पति भूमि लेने को बढ़ा और जैसे ११ भादवा का मेघ चढ़े तैसे सेना १० भरगई १२ सकलीगर सान को झनकाने लगे जिस से अग्निकण झड़कर १३ भ्रम को फेरनेवाला सकलीगर जलने लगा ॥ ६ ॥ १४ लदी लगकर (निरंतर प्रहारों से) नोवत पर घाई लगी १५ अथवा लगो ऐसा कहकर नोब तों पर घाई लगी १६ भार से पीड़ित होकर १७ शेषनाग का घमंड भगा (यहां भार से पीड़ित होने के संबंध से शेषनाग का ग्रहण है) ॥७॥१८युद्ध का धुर खींचनेवाले वीर टोप, कवच धारण करने लगे १९ दिशा दिशाओं में धनु षों को खैंचकर निशाना उतारने लगे २० चरखों पर चढ़ीहुई कितनी ही तोपें दगती हैं सो मानों ज्वालमाला की २१ शिखा २२ कार्तिक मास में जग-ती है ॥ ८ ॥ २३ प्रलय का समय होकर २४ सुमेरु पर्वत डिगा और दिन के २५ नक्षत्रेश (चन्द्रमा) के रूप से २६ सूर्य होगया, कितने ही शस्त्रधारी

धरैं[1] कुंकुमी[2] चैल के सस्त्रधारी, नचैं मोद[3] कै[4] व्याहिबे स्वर्गनारी।९।
बनैं पिट्ठि बेतंड[5] हादे बिसाली, रचैं जीन बाजीन के पक्खराली[6] ॥
धुजादंड हत्थीनपैं बेणु[7] बढ्ढे, मनों सैलके शृंग[8]पैं ताल[9] ठढ्ढे ॥ १० ॥
लची मेदनी राग सिंधून लग्गे, भ्रमैं भुम्मियाँ[10] भुम्मिकों छोरि भग्गे
परी त्रास मेवास[11] आवास[12] पत्ती, बढी यों बलाधीस[13]की जोर वत्ती[14]११
घुरैं गज्ज दंती[15] खुलैं सज्ज घोरे, डकेती रचैं चाकरके[16] हत्थ[17] डोरे ॥
जरी ओपकें[18] तोप जंजीर जाली, करैं पिक्खि उच्छाह काली कपाली[19]

॥ दोहा ॥

जंगर[20] टोप बाहुल[21] जटित, हुलसि सूर असि[22] हत्थ ॥
सजिय सेन बुंदिय सुपहु, सह कोटेस समत्थ ॥ १३ ॥

॥ षट्पात् ॥

गज मत्तन गैरदाय[23] मिलिग बिरुदाय महाउत ॥
पालकाप्य[24] आगम प्रभाव जैव[25] पाव दाव जुत ॥
नट कछनी कछि निडर मल्ल रन निपुन महाबल ॥

१केसर के रंग के २वस्त्र करते हैं और हर्ष ३करके ४अप्सराओं को व्याहने के लिये नाचते हैं अथवा वीरों को विवाहने को हर्ष करके अप्सराएं नाचती हैं ॥ ९ ॥ ५ हाथियों की पीठ पर बडे हांदे कसते हैं और घोडोंपर जीण और ६ पाखरों की पंक्ति लगाते हैं, हाथियों पर ध्वजा दंड के ७ बांस बढे सो मानों पर्वत के ८ शिखर पर ताड के वृक्ष ९ खडे हैं ॥ १० ॥ वीर रस का सूचक सिंधवी राग लगकर १०भूमि चलायमान हुई भोमिये भ्रमकर भूमि को छोडकर भागे ११लुटेरे और चोरों के स्थानों में त्रास पडकर वह त्रास उनके घरों में १२ प्राप्त हुई, इसप्रकार १३आडाबला के पति के जोर की १४वार्ता बढी ॥ ११ ॥ १५ हाथी गरजना करके घूमे और घोडे सज्जित होकर खुले जो १६चाकरों के हाथ में १७डोरों से बंधे हुए कूदने लगे १८शोभा युक्त करके तोपों को जंजीरों की जाली में जडी जिनको देखकर कालिका और १९शिव उत्साह करते हैं ॥ १२ ॥ २० कवच (जगड) टोप और २१ बाहुत्राण (दस्तानों) से जडे हुए वीर २२ तरवारि हाथ में लेकर हर्ष युक्त होते हैं ॥ १३ ॥ मस्त हाथियों को २३ घेरकर उनको विरुदाकर महावत मिले २४ पालकाप्य मुनि के किए हुये शास्त्र (हस्त्यायुर्वेद) के प्रभाव से उन महावतों के पग दाव और २५शीघ्रता से युक्त

आडपेच रचि अतुल अग भसमी धरि उज्जल ॥
अयरेख भालिक नागज तिलक करि मनहुँ पिसाच कुल ॥
इभपाल गयउ बिकराल इम वारिन ढिग डकंत वहुल१६
लागि दुकच्छ लगोट कठिन बजरग तग कसि ॥
दड ऐंचि दस बीस फेंकि मुद्गर बिद्या वसि ॥
झपन बिबिध बनाय अग उच्छटाय मैंड भरि ॥
प्रान त्रान कारन पुकारि केसव प्रनाम करि ॥
गजबाग हत्थ निर्भर गुमर आयउ सिर गौरव अलप ॥
मारुत पजात बदर मनहुँ मदर पर लिन्निय मलप ॥ १५ ॥
इम कलाप हुंत आय अक्खि बिरुदन आधोरन ॥
फोजों नायक फील्ल फते अप्पहु जस जोरन ॥
जय व्यंजक भंजक कपाट वक्क गढ गजक ॥
अब तेरे सिर धार भार रक्खिय रन रजक ॥
आरुहि मलगि बिरुदाय इम झट मिलाय लिय मदझरन॥
कहि जनक नाम बुल्लिय कुसल कुभत्थल थप्पलि करन१६
फुरत अग फटकारि रग रज झारि रुमालन ॥
प्रति मेचक आमलन जाल मडिग जगालन ॥

---

१ ललाट म तीन रेखावाला २ सिंदूर का तिलक किये हुए ३ महावत ४ हाथियों के ठाणों म " वारी तु गजबधने त्यमर " ५ कूदते हुए ६ बहुत गये ॥ १५ ॥ ७ घमड भरकर ८ प्राणों की रक्षा के लिये परमेश्वर को प्रणा म करके ९ वश अकुश हाथ में लेकर १० घमड से भरे हुए ११ थोडे भार से हाथी के मस्तक पर आये सो मानों १२ पवन के १३ पुत्र (हनुमान्) ने १४ मदराचल पर मलग ली ॥ १५ ॥ १५ हाथी के कलावे पर १६ शीघ्र आकर १७ महावतों ने उन हाथियों की स्तुति की १८ सेनाओं के पति १९ हे हाथी! यश को जोडने के लिये विजय देना२०जयके प्रकाश करने वाले२१कँवाडों को तोडने वाले२२युद्ध में प्रीति करने वाले२३धकर२४हाथियों को २५ पिता का २६हाथों से ॥ १६ ॥२७शोभायमान शरीर को २८ अत्यत काले २९ आम लों से और ३० अगाल से ३० जाली (चित्रविशेष) रची

कटे विचित्र कुरुवृंद बहुरि हरिताल बिथारिय ॥
जंगी अंदुक जोरि दोर डुंगर पग डारिय ॥
त्रिपदीन गत्त नद्धिय अतुल लगि कलाप जेवर लसिय ॥
कुंथ डारि गुडन सन्नद्ध करि क्रम धैरत्त हौदन कसिय॥१७॥
सकल हेति सिर सज्जि छिप्र आलान छुरायउ ॥
देदै बिरुद दुरूह घोर घन गज्ज घुरायउ ॥
बारी बाहिर बाक हाक बल अचल डगाये ॥
बढि चरखिन बारूद ज्वाल विकराल जगाये ॥
हिंजीर लंब अंचत हुलसि बल अमान हरवल्ल बढिय ॥
मानहुँ अपुव्व मेचक सुंदिर कज्जलगिरि जंगम कढिय॥१८॥
भद्द्र१मंद२मृग३ भव्य मिश्र४चउ जाति महाबल ॥
बसाँ लोभ अति वेग सरत उछटावत शृंखल ॥
बाल पोत अरु बिक्क कलभ मक्कुन अतिकायक ॥
जूहनाह जव जोर सज्ज हुव समर सहायक ॥
गज्जित अनेक उद्धत गुमर बहु सज्जित मदकल बलिय ॥

१कपालों पर विचित्र२हींगलू और हरताल फैलाया।३बडे जंजीर४जोड़ कर५पर्वत के समान फैलाव वाले पगों में डाले ६ रस्सों से तुलना रहित ७ शरीर को ८ बांधा और ९ कलावा लगाकर जेवर से भूषित किया १० झूल (गदरा) डालकर ११ पाखरों से १२ सज्जित करके क्रम पूर्वक १३ रस्सों से हौदे कसे ॥ १७ ॥ उन हौदों में सब १४ शस्त्र सजकर १५ शीघ्र १६ खंभों से खोले और १७ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसी स्तुति करके १८ मेघ के समान भयंकर गर्जना करते हुए हाथियों को १९ ठाणों से बाहर २० छोटे भालों से क्रोध दिलाने के बल से निकाले २१ लंबी जंजीरों को २२ अग्रभाग बलवाले २३ अपूर्व काले २४ मेघ अथवा २५ चलते हुए कज्जल के पर्वत निकाले ॥ १८ ॥ २६ भद्र आदि चारों जाति के बलवान् शुभ हाथी २७हथनियों के लोभ से २८सांकल को उडाते हुए वेग से २८ चलते हैं उन हाथियों में कितने ही ३० छोटे ३१बच्चे ३२ तुरत के पैदाहुए ३३ पाठा ३४मुकने (विना दांतवाले) ३५बडे शरीरवाले ३६जूथनाथ (यूथ के पति) वेगवाले और बलवान्, युद्ध में सहायता करनेवाले सज्जित हुए, निरंकुश घमंड से गर्जना करनेवाले अनेक बलवान्३७मस्त

गभीरवेदि परिणात गजब चतुरगन रच्छक चालिय ॥ १९ ॥
कतिक [2]ऊंपाल अतिकोप कतिक उपवाह्य[3] कुलाचल ॥
ईसादंत[4] अनेक वढिग घुम्मत समीर[5] बल ॥
झरत प्रवृत्ति[6] पटान मौंर[7] करटन भननकत ॥
अरु कंदुक[8] जिम उडत झाट अंदुक[9] झननकत ॥
फटाकरि सुडि वमथुन[10] फुहरि पच्छिन नभ छिरकत प्रकट॥
बुदीस सेन अंग्ग[11] ति वढिग कमठानन तजि पीनकंट[12]।२०।
अहि[13] फन जिम आटोप रचत पुक्खर[14] सिर रक्खत ॥
हग लघु दीरघ दिट्ठि[15] चलत मोचाफल[16] चक्खत ॥
वगर कंनक[17] विखान[18] जटित अति जेब जवाहर ॥
आधोरन[19] आसनन वीत[20] मारत हकत वर ॥
चूलिका[21] हरित चित्रित रुचिर अच्छिकूट[22] पीत रु अरुन ॥
बुदीस हुकम हकिय विविध तोर जोर बारन[23] तरुन॥ २१॥
नील हरित निंज्जान[24] कतिक करटन[25] कलमासन ॥
कतिक अवग्रह[26] कपिस अधिक रोहित कति आसन ॥
अति कठार[27] औरच्छ[28] विसद वादित्थ विराजत ॥

हाथी सज्जित हुए १ अंकुश नहीं माननेवाले और गजब करनेवाली तिरछी घात करनेवाले सेना के रक्षक हाथी चले ॥ १९ ॥ २ कितने ही दुष्ट हाथी ३ सवारी के पर्वत ४ लंबे दांतों वाले ५ पवन के समान चलनेवाले ६ पटों से दान का प्रवाह झरता हुआ ७ गंडस्थलों (कपोलों) पर भ्रमर चलते हुए ८ गेंद के समान उछलती है ९ जंजीर १० सूंड के जलकणों की फुँहार से आकाश में पक्षियों को छिड़कते हैं १२ पुष्ट (मोटी) कमरवाले ख़साओं (खस्सों) को छोड़कर ११ आगे बढे ॥ २० ॥ १३ सर्प के फण के समान १४ सूंड के अग्रभाग का मस्तक पर छत्र किये हुए छोटे नेत्र और लंबी १५ दृष्टिवाले १६ केलावृक्ष के फल को चखतेहुए १७ सुवर्ण के पेंगड १८ दांतों में जडेहुए १९ महावतों के २० अंकुश लगाने और पैरों से हूलने से श्रेष्ठ चलते हैं २१ कानों के मूलभाग हरे रंग से रंगेहुए २२ नेत्रों के भाग पीले और लाल रंग से रंगे हुए २३ बडे प्रताप और बलवाले तरुण हाथी ॥ २१ ॥ २४ नेत्रों के पास नीला और हरारंग २५ कपोलों पर काला रंग २६ ललाट पर काला और पीला मिलाहुआ रंग २७ पीलवान पर पीला २८ कुंभस्थल के

पीत अरुन प्रतिमान लखत *सुरगुरु †कुज लाजत ॥
‡विदुदेस हरिन पालास बनि §शातकुंभ नील रु विसद ॥
बुंदीस संग हरवल्ल बढिग ¶मातंगप इम झरत मद ॥२२॥
+तलपन पीन रु तुंग छजत ÷पीढक पर छादित ॥
कच्छा[1] रेसम कठिन नद्ध[2] होदन[3] घन नादित ॥
झुकि कतिकन झंडाल कतिन मेघाडंबर[3] कसि ॥
सिंहासन कति सज्ज लंब[4] हिंजीरं[5] अवरँ लसि ॥
डाकनं[6] अमान निठ्ठिन डगत झगत जंग अमरख[7] झलक ॥
उम्मेद हुकम घुम्मत अतुल ढंकिय इम हत्थिन हलक॥२३॥
मिलि अनेक मंदुरन[8] प्रीति मंडिय हय पालन ॥
झलक खेह झटकारि देह फटकारि दुमालन ॥
दै खलीन[9] बिरुदाय अंसं[10] थप्पलि कर ओपितं[11] ॥
जंगी पक्खर जीन अंचि तंगन आरोपितं[12] ॥
गजगाह मंडि चित्रित गहर लहरदार लूमन ललित ॥
आनिय तुरंग कंपन अरिन कृत[13] कंजाक झंपन कलितं[14]॥२४॥
गरुत[15] रूप गजगाह उडत मानहुँ उरगासन[16] ॥
पय नेउर रवँ प्रचुर[17] ललित मंडत बहु लासनं[18] ॥
खुरसान ताजिक तुखार भाडज भुम्मि भवं[19] ॥

नीचे का भाग स्वेत * पीले रंग मे बृहस्पति और † लाल से मंगल लज्जित होता है ‡ कुंभस्थल के बीच का भाग काला और हरा § कुंभ का अधोभाग, नीला और स्वेत ¶ हाथियों के पति ॥ २२ ॥ + बिछोने मोटे और ऊँचे ÷ पीठ पर छाये हुए शोभा पाते हैं, रेसम के गुच्छे १ दृढ बंधेहुए २ झंडे ३ छायावाले होदे ४ लंबी जंजीर ५ दूसरे हाथियों के शोभायमान है६सांटमारों के क्रोध दिलानेवाले प्रहारों से कठिनाई से डिगते हैं ७ क्रोध की॥ २३ ॥ ८ हयशालाओं में ९ लगाम देकर १० कंधे थापल कर ११ शोभायमान करके १२ आरोपण किये १३ युद्ध करनेवाले झंप में १४ प्रसिद्ध ॥ २४ ॥ १५ पांखों के रूप से गजगाव उडते हैं १६ सो मानों गरुड़ उडना है १७ बडा शब्द १८ नृत्य १९ उत्पन्न

वनायुज रु बाल्हीक जात काबोज महाजव ॥
केकान गोजिकानहु कतिक मोढहार धावन प्रबल ॥
हाजरि हइद नृप अग्ग हुव पलटत पल न लगात पल।२५।
आजानेय अनेक पारसीकहु विनीत पथ ॥
पंचभद्र जय पूर अष्टमंगल सुलाभ अथ ॥
चक्रवाक जवचपल मल्लिलोचन अछेह मन ॥
कति किंयाह कोकाह पीत खुंगाह सुद्द मन ॥
आलाल कपिल वोल्लाह अरु हालक सान हलाह हय ॥
पंगुल कुलाह उकनाह पुनि वोरुखान अति रय सु वय।२६।
सुलभ लाट अरु सीस कध मणिवध कथित क्रम ॥
देस नाभि हिय देस भांति मुख त्रिक उत्तम भ्रम ॥

---

१ उत्पन्न २ बड़े वेगवाले ३ कितने ही गोजिकान के घोड़े ४ गमन पूर्वक दौड़ने में निपुण ५ पलटने में नेत्रों के पलकों की भांति ६ समय भी नहीं लगाते ॥ २५ ॥ ७ मार्ग में शिक्षा पाये हुये कितने ही सुंदर घोड़े ८ चारों पैर और ललाट जिसका श्वेत होवे उस घोड़े को पंचमंगल कहते हैं ९ चारों पैर, ललाट केसवाली गर्दन और पालका जिस घोड़े का श्वेत होवे उसको अष्टमंगल कहते हैं और मतान्तर से गर्दन के स्थान में श्वेत छाती को अष्टमंगल मानते हैं १० लाभ के अर्थ ११ पीले रंग के घोड़े के, नेत्र और पैर श्वेत होवे उसका नाम चक्रवाक है १२ वेग में चपल १३ महुवा रंग के घोड़े के चरण और मुख श्वेत होवे उसको मल्लिलोचन अथवा मल्लिकाक्ष कहते हैं १४ कुमैत १५ श्वेत (नुकरा) और पीले १६ श्याम वर्ण के (लक्खा) १७ नीले १८ नीले पीले मिले हुए रंग के अबलख १९ पीला और श्वेत अबलख २० पीले और हरे रंग के अबलख २१ सुवर्ण के अथवा कमल के रंग के २२ चित्र विचित्र रंगवाले अर्थात् अनेक मिले हुए रंगवाले २३ काच के समान कान्तिवाले २४ काले घुटनोंवाले २५ पीले और लाल रंग के अबलख २६ समदे २७ अत्यन्त वेगवान् और श्रेष्ठ अवस्थावाले ॥ २६ ॥ २८ गले का मणिवंध २९ कहे हुए क्रम से ३० नाभी के स्थान पर और ३१ हृदय के स्थान पर ३२ शोभायमान है मुख पर तीन ३३ भंवरी जिनके

रंध्र जठर गल रुचिर विहित आवर्त विराजत ॥
चन्द्रकोस जुत चपल लखत नक्षत मन लाजत ॥
कति इन्द्र पदम लच्छन कतिक चक्रवर्ति चिंतामनिक ॥
हुव सज्ज दवत छोनिय हयति फबत माल पालन फनिक२७
इक्क बिजय आवर्त वहत इक सुक्कल महावत ॥
इक्क कुसुम आमोद इक्क चंदन गँव उज्जल ॥
इक लोहित इक असित इक्क सारंग सेत इक ॥
पिंग इक्क इक पीत इक्क पलास एत इक ॥
खुरअग्ग भुम्मि सज्जित खनत वलि गज्जत ऊरध वदन ॥
चहुवान राज आयस चलिय सहँसन हय जय जय सदन २८
दिपत परुख चउ४ दढ्ढ रंग कालिक रद वारह १२ ॥

१घोड़े के कुक्षि (कूख) और नाभी के मध्य प्रदेश का नाम रंध्र है २पेट पर ३गले पर सुन्दर और ४ उचित ५ बालों की भवँरियें शोभा देती हैं ६ जिस घोड़े के ललाट में दो भवँरियें होती हैं उसको चंद्रकोस कहते हैं ७ जिस घोड़े के कंठ में दक्षिण तरफ दो भ्रमरियां होवें उसको इन्द्र कहते हैं और जिसके कंध के एक ओर एक भ्रमरी होवै उसको पद्म कहते हैं ८ जिस घोड़े की नासिका पर एक अथवा दो भ्रमरी होवै उसका नाम चक्रवर्ति है ९ कंठ के मणि-बंध पर भ्रमरी होवे उसको चिन्तामणि अथवा देवमणि कहते हैं १० भूमि को दबाते हुए ११ वे (वे) घोड़े १२ सर्पों की माला के समान जिनकी केसवाली शोभा देती है ॥ २७ ॥ ॥ १३ विजयमणि नामक भ्रमरी (भँवरी) वाला जो थापे पर होती है १४ धारण करता है १५ भ्रमरी विशेष १६ मुख में पुष्प की गन्धवाला, जिसका ब्राह्मण वर्ण मानते हैं १७ मुख में चंदन की गंधवाला जिसका क्षत्रिय वर्ण मानते हैं १८ लाल रंग वाला १९ काले रंगवाला (लक्खी) २० अनेक (चित्र विचित्र) रंगवाला २१ श्वेत (नुकरा) रंग वाला २२ पीतल के समान पीले वर्णवाला जिसका नाम विशेषकर सोवन कलश रक्खा जाता है २३ सामान्य पीले रंगवाला २४ हरा रंगवाला २५ कर्बुर (अबलख) रंगवाला २६ सज्जित हुए पीछे अगले खुर से भूमि २७ खोदनेवाला २८ ऊँचा मुख करके गाजनेवाला २९ आज्ञा से ३० वेग के और जय के घर ॥ २८ ॥ (ऊपर के दोनों छन्दों में शुभदायक घोड़ों के लक्षण कहे हैं ३१एक पुरुष (ऊबदा, परस) ऊँचे शोभायमान हैं३२काले रंग की चार दाढ़ें३३दांत

अंगुल सत१००वपु उच्च कुद्ध समर जयकारह ॥
वीससत्त२७ मुख निहित करन अंगुल खट६ केतक ॥
चाप उपम चालीस अट्ठ४८ मित कध उपेतक ॥
चउवीस२४पिट्ठि ओपत रुचिर कलित तीस३०अंगुल कमर
वालधि प्रलंब चालीस वसु४८चल धुनाय ढारत चमर।२९।
चउ४दीर्घ चउ४रत्त च्यारि४ सुच्छम चउ४उन्नत ॥
च्यारि४ ह्रस्न नंत च्यारि४च्यारि४आयत मुनीन मत ॥
मुख१ भुज२केस३निगाल४ सेफ१जीह२रु ओठ३ काकुद ॥
कंग्न२पुच्छ३पयकोष्ठ४प्रोथ१ सफ२गोधि३तथा गुद४ ॥
उर१कान वंस३अंतर दुहुन४ कुक्ख१उदर२ जानुक३ ककुद ॥
मुख१खध२जानु३पसुलि४महित लच्छन हयन मचात मुंद ४॥३०॥

कति किसोर अति जोर कतिक जुव्वन छक डकत ॥

१सौ अंगुल का ऊंचा शरीर २युद्ध में ३जय करनेवाला ४ सत्ताईस अंगुल लंबा ५धारण मुख ६छः अंगुल के कान ७केतकी की कली के समान ८धनुष की उपमा वाले अड़तालीस अंगुल के प्रमाणवाले लंबे कंधे ९ सहित १०चौबीस अंगुल की पीठ ११ विदित १२पालछा लंबा १३चपलता से अथवा चलता हुआ, पालछे को हिलाकर चमर करनेवाला ॥ २९ ॥ शुभदायक घोड़े के १४ चार अंग लंबे १५ चार अंग लाल १६ चार अंग पतले १७चार अंग उठेहुए १८ चार अंग छोटे १९चार अंग झुकेहुए २०चार अंग मोटे चाहिये सो २१ शालिहोत्र बनानेवाले मुनियों के मत से कहे हैं "इन अंगों को आगे यथाक्रम से स्पष्ट बताते हैं" मुख, भुज, केश २२गला ये चार तो लंबे होने चाहिये और२३लिंग, जीभ, ओठ २४तालुवा ये चार अंग लाल होना शुभ है२५दोनों कान, बालछा,२६पैरों के गांठे (मोढे) ये चारों अंग पतले चाहिये२७कुरणा (नासिका) २८ खुर (सुम) २९ ललाट ३०गुदा ये चार अंग उठेहुए होवें ३१ दोनों कान ३२ बांसे का हाड़ (पीठ की लंबी हड्डी) ३३ दोनों कानों के बीच का अंतर (छेटी) ये चार अंग छोटे होवे सो उत्तम है ३४ कूंख (पार्श्वी, तार पेट ३५ घुटने ३६मदूदू, ये चार अंग झुके हुए और मुख, कंधा, घुटना, पांसली ये चार अंग बड़े (लंबे) होना ३६ पूज्य है और ये उपरोक्त घोड़ा के लक्षण ३७ हर्ष कराते हैं ॥३०॥ घोड़ों के कितने ही बड़े यौवन अवस्था के छक में बड़े बल से कूदते हैं

प्रोथ बजत पवमान हुलसि अंबर बढि हंकत ॥
धोरित१ बल्गित२धाव इमहि प्लुति३अरु उत्तेरित४ ॥
उत्तेजित५पुनि अटत पंचधारन मग प्रेरित ॥
झारत फुलिंग६ नालन झपटि अतुल प्रसारत उड्डयन॥
चातुरि मलंग धारत चपल पातुरि गति डारन पयन ॥ ३१ ॥
रजत८ पत्त खुर रंजत९ ललित अयं१० पक्क नाल लगि ॥
थित जिम देवल११ थंभ चरन अति दृढ लगैं न चँगि१२ ॥
पुट्ठे गरद प्रपीन१३ रुचिर छतिय परिणाहित१४ ॥
कंध कुटिल१५ कोदंड१६ सजव१७ धंज१८ कसत समाहित१९ ॥
मारत मलग सेनन२० मुकुट एनन२१ जव पारत अलप ॥
उम्मेद नृपति अग्गल२२ अटत मानहु नट भग्गल२३ मलप ॥३२॥

१फुरणे २ पवन के जोर से बजते है और प्रसन्न होकर ३ आकाश में बढ कर चलते हैं ५ ऊपर कही हुई घोड़े की पांचो गतियों का नाम धारा है उन पांचों धाराओं में प्रेरणा किये हुए ४ फिरते हैं "उपरोक्त पांचों गतियों की संक्षेप व्याख्या यह है कि चतुराई युक्त सीधी गति (आदम और दुड़की) को धौरित कहते हैं और खाटे स्थलों में अगले शरीर को समेट कर मुख टेढा करके चलता है उसको वल्गित कहते हैं शरीर के अगले और पिछले दोनों अंगों को उछाल कर (चौकड़ी भर कर) दौड़ना है उसको प्लुत कहते हैं उत्तेरित जिसका दूसरा नाम आस्कंदित है, इसमें घोड़ा वगांध होकर न तो कुछ सुनता है और न कुछ देखता है जिसको लौकिक में पट्टी या सरपट कहते हैं, उत्तेजित जिसका दूसरा नाम रेचित है जो मध्यवेग से गोलाकार फिरने को गोलकुंडा कहते हैं" वे घोड़े दौड कर नालों से ६ अग्निकण उडाते हैं और तुलना रहित ७ उड़ान फैलाते हैं ॥ ३१ ॥ ८ चांदी के पत्रों से ९ शोभायमान खुरों में सुदर पक्के १० लोहे की नाल लगी हुई और ११ मंदिर के थंभ के समान जिनके चरण जो दृढता के कारण कभी १२ भूल कर (फिसल कर अथवा ठोकर खाकर) नहीं लगते जिनके १३ पुष्ट और गोल पुट्ठे १४ सुंदर चौडी छाती १५ धनुष के समान १६ टेढा (झुका हुआ) कंधा १९ समाधित (एकाग्रचित्त) होकर १७ वेग के साथ १८ शोभा बनाते हैं २० सेनाओं के मुकुट वे घोड़े मलंग लगाकर २१ हरिणों के वेग को न्यून करते हैं २२ आगे चलते हैं २३ जैसे भागळ मे नट मलंग लगावे तैसे लगाते हैं ॥ ३२ ॥

नव *चेरिन नखराल घलत घुम्मर नचि घेरिन ॥
फट लगत जिन †फाल फिरत हत्थिय चकफेरिन ॥
‡तीय कनीनिय तरल सरल सच्चे §मुख सोहत ॥
मजु पसम ¶मखतूल मुकुर ×विग्रह छवि मोहत ॥
रयँ जोर लन संगर रचक भचक पागि अहि भुम्मि भर ॥
चरनन नमाय मारत मचक लचक जानि हिंडोल लर ३३
चरखन तोप चढाय चित्र मडिग तिन चारन॥
सँनि आनन सिंदूर पूर सज्जिय गढ पारन ॥
दिपत लव धुजदंड जीह अंतक जिम हल्लत ॥
इक्क निमेष अनेह अष्ट८नव९फैर उगल्लत ॥
विथुरात ज्वाल लालिय विखम अरि छत्तिन सालिय उपितं॥
आलियँ अनेक नालियँ अतुल कालिय जिम चालिय कुपित३४
कुभीनँस आनत किनीक मकर रु मइंदँ मुख ॥
कँरभ सँरभ कति कोलँ वदन धारत रँस रुख ॥
हकत खिन दरवल्ल होत दुद्दर नर हल्ले ॥
ग्रँचत टूँख गन अग्ग पिट्ठि मारत गज टल्ले ॥
अयँपिंड गिलत धटिकँा उभय२बलि दर्ग न पञ्चय बचत॥

*नवीन लौंडिया के समान नखरे करनेवाले † मस्तक में ‡ स्त्रियों के नेत्रों की पुतली के समान चपल § मुख सच्चे और सीधे शोभायमान ¶ रेसम के समान सुंदर जिनके शरीर के केस और काच की छविवाले × शरीर से १ मोहित करते हैं २ युग के पक्ष मे ३ युद्ध मे ४ टक्कर लते हैं और भूमि और घाव पर मचक (टक्कर) गाडते हैं ५ हींदे की लव ॥ ३३ ॥ ६ तोपों के चाकरों ने ७ तोपों के मुख को सिंदूर में भिजोकर ८ यमराज की जिव्हा जैसी ९ नेत्रों के पक्ष लगने जितने समय में अग्नि की नहीं सहन योग्य लपटें १० फैलाती है ११ शाश्वत १३ तुलना रहित तोपा की १२ अनेक पंक्तियां ॥३४॥ १४ फणा किये हुए सर्प के मुखवाली १५ सिंहमुखी १६ ऊँट के मुखवाली १७ केसरीसिंह के मुखवाली १८ सूअर के मुख को धारनेवाली १९ आगे से बैलों का समूह खैंचता है २० लोहे का गोला २१ दस सेर के (शास्त्र में पांच सेर

हंकिय दलेल्ल उप्पर हलक रेव[1] चटक्क चक्कन रचत ॥३५॥
सब अनीक इम सज्जि अप्प हयराज अरोहिय[2] ॥
लिय कोटेसहिं लार सार अक्खिय रन सोहिय ॥
घुरि नोबति घनघाय कलह त्रंबक जय कारन ॥
बजि कजाक[3] वड वाक द्वार प्रतिहार[4] हजारन ॥
संक्रमि अनेक उद्धत सुभट तरिन[5] बैठि चम्मलि[6] तरन ॥
बुंधसिंह सुवन आदेस[7] वस लगिय मग्ग बुंदिय लरन॥३६॥
चम्मलि तट मिलि चक्र पंति छादित जल पोतन[8] ॥
क्रीड़ा बहुबिध करत सूर छक्कत जव स्रोतन[9] ॥
उडुपन[10] कति आरूढ तिरत कति भेलन[11] तरंडन[12] ॥
कतिक झारि बंदूक रचत कुंभीरन[13] खंडन ॥
दल भीर नीर बढि बढि दुह दिस मरजादन[14] लोपत महत॥
सजि सेतु मनहुँ दसकंध सिर बंदर जल अंदर वहत ॥३७॥
अवधिराज[15] उम्मेद दीप[16] सोदर लछमन दुति ॥
कोटापति[17] कपिराज निडर सुग्रीव रचत नुति[18] ॥
सजि अंगद सिवसिंह बैरिसल्लोत देव सुव[19] ॥
पवन[20] पुत्त सुखसिंह महासिंहोत धीर धुव ॥
तोक रु प्रयाग नल नील तिम गिलि हंकिय जय जंग मन ॥
बुंदिय[21] बिदेहतनया अरथ हठि[22] दलेल रावन हनन ॥ ३८ ॥

का नाम भटी है) १ पहियों के शब्द रचती हुई ॥ ३५ ॥ २ आप (उम्मेदसिंह) घोडे पर चढा ३ युद्ध के बडे वचन ४ द्वारपालों की ५ नावों में २६ चामल नदी को २७ उम्मेदसिंह के हुकम के आधीन ॥ ३६ ॥ ८ नावों से ९ पानी के प्रवाह को १० कितने ही छोटी नावों पर चढ ११ भेलो (नाव विशेष) १२ नाव विशेष १३ मगरों का १४ सीमा [ढावों] को ॥ ३७ ॥ १५ उम्मेदसिंह है सो तो रामचन्द्र है १६ छोटा भाई दीपसिंह लक्ष्मण है १७ कोटा का महाराव सुग्रीव निडर होकर १८ स्तुति करता है १९ वैरीसालोत देवसिंह का पुत्र अंगद के समान सजा २० हनुमान २१ बुन्दी रूपी सीता के अर्थ २२ हठवाले दलेलसिंह रूपी रावण को मारने के लिये ॥ ३८ ॥

तरि इम चम्मलि तोय कटक आरुहि केकानन ॥
हकिय रन हुसियार वीर वेधत खग बानन ॥
चोलुक कति चहुवान जोध कूरम कति जद्दव ॥
कति सीसोद कवध भटन मडिय घन भद्दव ॥
कोतुक अनेक खुरलिय करत रन दुरूह पंडित रजिय ॥
बुधसिंह सुवन अतिजोर बल सठ दलेल उप्पर सजिय ।३९।
चलत रेनु रवि ढकि चक्क चकिन वियोग बनि ॥
कुभीनस कसमसत भोग फट्टत हतं भनि ॥
दिग्गज गन डगमगत जगत सकर समाधि जिम ॥
उदधि नीर उच्छलत तुंग गिरि हलत शृंग तिम ॥
जिम फल अनार कन रद जँगध इम भीरुन जल उत्तरिग॥
दिस दिस जिहान महिग दुमन प्रलयकाल सभ्रम परिग ४०
प्रत्यागम रचि पवन फिरत लगि लगि दल फेटन ॥
झुड गजन झडोल झुकत फहरात झपेटन ॥
वन जंतुव हतवेग रहत थकि थकि जिहिं अतर ॥
चलिग चक्र इम चढ दब्बि निज ओघे दिगतर ॥
भप सुनि अपार गन भुम्मियन जित तित बढि भज्जन जिकर ।
पक्खर न मात गेलन पहुमि नभ न मात सेलन निकर४१

---

१ चामल नदी का जल उतर कर २सेना ३घोड़ों पर चढ कर ४बाणों से पक्षियों को वेधन करते हुए ५ कितने ही सोलंखी ६ यादव ७राठोड़ ८शस्त्राभ्यास के खेल ९ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसे युद्ध के पंडित १० शोभायमान हुए ११ बलवान् सेना ॥ ३९ ॥ १२ सर्प (शेष) १३ फण फटने से खेद के वचन [हाय] कह कर १४ ऊँचे पर्वतों के १५शिखर १६दाने का १७दांतों से कुचलने से पानी उतरता है ऐसे १८कायरों का जल (पराक्रम) उतरा ॥ ४० ॥१९उलटा गमन २०सेना की फेट से २१झड़े २२वन के जीवों का वेग हत होकर २३ इसप्रकार भयंकर सेना चली २४ अपने समूह से २५ भूमि के मार्गों में पाखरें नहीं समाती हैं और २६ आकाश में भालों के समूह नहीं माते हैं ॥ ४१ ॥

निज हठ कच्छप निठुर हत्थ बासुकि छवि छावत ॥
तिम मंदर[3] तंक्राट[4] भिदुर[5] करवाल भ्रमावत ॥
दल कोटापति दितिज[7] अदिति संभव दल[8] अप्पन ॥
उद्यम गति अनुसार थोक सम्मिलि फल थप्पन ॥
जागर[9] बिथारि गंद[10] अरि जनन कहि कहि गुन[11] आगर कथन
चहुवान इंद्र नागर[12] चढिय मनु बुंदिय सागर[13] मथन ॥ ४२ ॥
प्रलय पौंन परमान दिपत हंकिय दल[14] दुद्धर ॥
मिलिय आनि मग मध्य कातिक पर[15] भट निवेदि कर ॥
सक इक नभ बसु सोम१८०१मास आसाढ पक्ख सित[16] ॥
तिथि द्वादसि१२दल तुंग इलिय रन मत्त लरन हित ॥
छिति[17] अप्प लैन रस बीर छकि द्रुत मुकाम इक१बीच दिय
बड अंतरीप[18] जलजाल बिधि नृपबर बुंदिय बिंटि लिय॥४३॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ कोटेश सहितहड्डेन्द्रावराडुम्मेदसिंहसज्जीभवनसेनासौभाग्यविजयाभिनि-

---

१अपना हठ है सोही कठोर कच्छप है२हाथ है सोही वासुकि सर्प की शोभा पाते हैं ५ वज्र रूपीदतरवार को भ्रमाता है सोही ३ मंदराचल रूपी ४ मंथनदंड (रई) है कोटा का पति है सोही ७ दैत्य है "कोटा का पति रावुराल उम्मेदसिंह से छीनकर बुंदी को अपने वश में करलेवैगा इसकारण उसको दैत्य लिखा है" ८ उम्मेदसिंह की सेना है सोही अदिती के पुत्र (देवता) हैं चलने के अनुसार (बुंदी पर चलता है सोही) समुद्र के मथने का उद्यम है और सेना का शामिल होना ही मथन के स्थल का स्थापन करना है, शत्रुओं में ९ आगरण रूपी १० रोग फैलाकर ११ गुणों के समूह का (अपनी सेना के गुणों का) कथन कहकर चहुवाणों के इंद्र (उम्मेदसिंह) रूपी १२ परमेश्वर बुंदी रूपी १३ समुद्र के मथने को चढा ॥ २४ ॥ १४ कठिनाई से धर्षणा की जावे ऐसी सेना चली १५ शत्रु (दलेलसिंह) के उमराव खिराज देकर१६शुक्ल पक्ष १७ अपनी भूमि लेने के अर्थ, जल के समूह में १८ बडे टापू के समान बुंदी को घेर ली ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में कोटा के पति सहित हाडों के इन्द्र रावराजा उम्मेदसिंह का सज्जित होना १ विजय करने वाली

र्णाणगजहयनालीयन्त्रसुभटादिवर्णनचर्मण्वतीलघनमार्गैक१प्रपा-
तकरणदिगन्तरातङ्कप्रसरणबुन्दीवेष्टननालीयन्त्ररणमारम्भणनव
मो ९ मयूख ॥ ९ ॥ ॥ २९० ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

धकि पावकं धमचंक जाल तोपन जजीरित ॥
जपि जपि क्रदनं जाप पुर सु तपि तपि हुव पीरित ॥
परत वेप्र प्राकार गिरत कंपिसिर उडि गोलन ॥
वरत द्वार बाजार भार मारुत भक भोलन ॥
त्रिखरत गवाक्ष जालिय बहुल भरत सौधं मडप भपट ॥
मानहुँ बिनास भावक मचिग लकापुर पावकं लपट ॥ १ ॥
डिगि पब्बय कटि कूंट तपिग उंन्नत तारागढ ॥
बढिग भाल बिकराल रचिग सगर रावन रंढ ॥
नैरं परिग हटनारि सकल पुरजन अति त्रासित ॥
जरत गेह यढि ज्वाल प्रबल बारूद प्रकासित ॥
छिज्जत नियान पानिय छिनकि हुव धूमित दस१०मित हरित॥

सौभाग्यवती सेना का निकलना १ हाथी, घोडे, तोपें, सुभट आदि का वर्णन ३ चामल नदी लांघकर बीच में एक मुकाम करना ४ दिगन्तों तक भय फैला कर बुन्दी को घेरना ५ तोपों के युद्ध का प्रारंभ होने का नवमा ९ मयूख स-माप्त हुआ और आदि से दो सौ निव्वै २९० मयूख हुए ॥
जञ्जीरों से जडी हुई तोपों की जाल (समूह) से २ युद्ध में १ अग्नि जला १ रोने के वचन कह कहकर ४ पीडा युक्त हुआ और गोलों से ५ धूलकोट ६ चूना से बना हुआ पक्का कोट ७ कागरे उड उड कर गिरने लगे ८ पवन के झकोलों से ९ झरोखे १० बहुत जालियें ११ महल और घुमटे अग्नि की झपेट से गिर ते हैं सो मानो १२ प्रलय का भाव मचकर लंका में१३अग्नि की ज्वाला लगी ॥ १ ॥ १४ पर्वत के शिखर फटकर डिगे और १५ ऊंचा १६ तारागढ (बुंदी के गढ का नाम तारा गढ है)तप गया १७ रावण के समान हठ से १८ नगर में १९ दश ही दिशाए धूम युक्त होगई

रुकि जीह दंत*संकट रहत इम बुंदिय दल†आवरित ॥२॥
कटि गोलन परि ‡कूट गिरत जित तित पुनि §गोपुर ॥
गृह ¶चत्वर[1] शृंगाट[2] प्रचुर[3] प्रासाद तप्यो पुर ॥
[4]सिंहद्वार संजवन[5] जरत कुट्टिम[6] घन ज्वालन[7] ॥
[8]बीथी बिपणि[9] बजार दहत अंगार दवालन[10] ॥
[11]अपवरक कोश[12] [13]अवसथ[14] अटज जगत चंद्रसालन[15] ज्वलन[16] ॥
होत्रीय[17] काय मानन[18] दहत छबि अलात[19] रचि उच्छलन ॥३॥
आथरबन आताप मचत फुंलिंग[20] महानस[21] ॥
तपि कटाह जिम तेल मनुज कुकत दुख मानस[22] ॥
आवेसन[23] वपनी[24] अनेक सिलगंत प्रतिश्रय[25] ॥
पाकपुटिन[26] झलपट्ट लगत जिम आगि महालय[27] ॥
गर्त्तिका[28] बहुल गोसालगृह[29] गंजा[30] पक्कवण[31] घोखगन[32] ॥
मंदुरा[33] वतुर[34] सिलगत अमित जगत द्वार वेदिन[35] ज्वलन ॥४॥

---

*ऐसे दांतों के घेरे से जीभ रुकजाती है तैसे सेनामे बुंदी †घिरगई॥ ॥‡दरवाजों के ऊपर के शिखर गिरकर §शहर के द्वार गिरते हैं ¶घर का चौक १ चतुष्पथ (चोहटा) २बहुत ३महल और नगर तपगया ४प्रथम प्रवेश करनेका द्वार (सिंहपोळ) ५सम्मुख चार द्वारवाली चोपाड़ ६छोटे घर ७बहुत अग्नि से जलते हैं ८गलिये ९ व्यापार की गलियें, बाजार १० दीवारें बहुत अंगारों से जलती हैं ११ बीच का घर १२ भंडार १३ औषधिशाला में १४ आश्चर्य उत्पन्न करानेवाला अग्नि जलता है इसीप्रकार १५ सब से ऊपर के मकानों में भी १६ अग्नि जलता है १७ होमालय (अग्निशाला) के शरीर के १८ प्रमाण (सदृश) १९ शोभा के साथ अग्नि उछलता है ॥ ३ ॥ अथर्ववेद सम्बंधी (अथर्ववेद में मारण मोहन आदि संताप होता है तैसे) अथवा शान्तिगृह में २१ रसोई में २० अग्नि कण मचे अथवा रसोई में अग्नि कण उड़ते हैं जैसे शान्तिगृह से उड़ने लगे २२ दुःख के मन से कूकते हैं २३ शिल्पशाला (कारीगरों के घर) २४ नाइयों के घर २५ सभा का स्थान २६ कुंभशाला अर्थात् कुम्हार के आव(भट्टी)में झाळें उठैं ऐसी २७ बडे स्थानों में झाळें उठती हैं २८ तंतुशाळा (जुलाहों के घर) २९ गउवां रहने के घर ३० मदिरागृह (कलालों के घर) ३१ भीलों के घर ३२ अहीरों के घर ३३ हयशाला ३४ गजशाला (फीलखाना) ३५ द्वार

गृह अरिष्ट पक्ष गृह वेस मंडप अंगन वट ॥
लगि वासोकं अलाव चवत एडूक चटचट ॥
उत्तरंग पुनि अरर थंभ छत्रिन थहरावत ॥
परिघ बिटंक प्रघाणोँ लगत पौँवक लहरावत ॥
नौसा रु पटलोँ वलभिन निकर इन्द्रकोसँ दतक अतुल ॥
प्रग्रीवँ बहुरि जालक प्रथितँ मजरत इम गेहन बिपुल ॥५॥
कति सह अन्न कुंसूल निकर सोपान निसैनिनँ ॥
जरत सालभजीनँ उडत वनि छार सु नैनिनँ ॥
पेटी पुनि सपुंटक कतिक वर सिल्प करंडक ॥
कंडन मुसल कलिंजँ भति बाहुलँ चय भंडक ॥
इत्यादि सकल गृह उपकरन दगि अलाय पावक दहत ॥
इगँ जन त्रसित यह लखि दुर्गनँ तहखानन काननँ चहत ॥

के बाहर के मयूनर भ्राग्न म जलते हैं ॥५॥ १ सूतिकागृह (जापा का घर) २ तक्षा का घर, उसम मंडप और आगने का ३ मार्ग ४ शयन के घर में ५ अग्नि लगकर ६ भींतें (दीवार) चटचट करती हैं ७ द्वार के बाहर लगी हुई काष्ट की पाटियें ८ कपाट जलते हैं और छतरियों के थंभे धुजते हैं ९ कपाट के रोकने का काष्ट अर्गला (आगळ अथवा भागळ) १० घरों में पक्षिया के पालने के अर्थ काष्ट के बनाये हुए घरों में ११ बाहर के द्वार में १२ अग्नि लगकर लहराती है "अग्नि शब्द पुल्लिंग होने पर भी लोकरूढी से स्त्रीलिंग लिखा जावे गा अशुद्ध नहीं है" १३ बारमोल (बोकट) अथवा छावणा १४ छज्जे (छाजे) १५ छपरा के आधार वक्र काष्टों (मियाणों) १६ के समूह अथवा कूटागार (मच के ऊपर के मकानों के समूह) १७ माथा १८ खूंटियें १९ झरोखे वा खिडकिये २० जालिये, घरों में इसप्रकार बहुत २१ प्रसिद्ध जलती हैं ॥५॥ २२ अन्न के भरे हुए कोठे २४ सीढियें (जीने) २५ नीसरनिया के २६ समूह २६ काष्ठ की बनी हुई पुतलिये जलकर २७ श्रेष्ठ नेत्रवाली स्त्रियों के नेत्रों में पड़ती हैं अथवा उन श्रेष्ठ नेत्रवाली पुतलियों की भस्म होकर पड़ती है २८ पेटियें (सपूक) २९ डिब्बे ३० कितने ही श्रेष्ठ कारीगरी के टोकरे (छाबके) ३१ ऊंखळी मूसल ३२ चटाइयें ३३ बहुत प्रकार के ३४ भाण्डों [मिट्टी के पात्रों] के समूह ३५ इनको आदि लेकर घर की सब ३६ सामग्री को अग्नि का समूह जलकर वह अग्नि जलाती है ३७ नगर के लोक डरकर ३८ घुसने के लिये तहखाने और ३९ वन

तूरु देवल पुर ताल काल कचमाल कदंबित॥
जरत बिपंचिन जाल नागदंतन अवलंबित ॥
मंचं बहुरि प्रतिमंचं सुघट बिष्टर सिंहासन ॥
बिखरत बीथिनं बीच परत आलयं चहुँ पासन ॥
त्रंपु नाग द्रवत अतिसैय तपित पारद उडत अकास पथ ॥
जुत तूल राल गंधक जरत करत तोप कल कल अकथं॥७॥

॥ दोहा ॥

इम तोपन आताप अति, बुंदिय नगर बिहाल ॥
सठ दलेल अति भय सहित, कलि वह मन्न्यों काल ॥ ८ ॥
तारागढ चढिगय त्वरित, अंतहपुर जुत एह ॥
इम उमेद भूपति अतुल, मंड्यो गोलन मेह ॥ ९ ॥
साहिपुरप जुत सेनंपति, इततैं वह द्विज आय ॥
जंग कठिन लखि तिंहिं जवन, लिय गुजरात पलाय ॥१०॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

याँरीति रावराज उम्मेदसिंह बैरिनके बिडारिबेकौं बुन्दी बिं-

को चाहते हैं ॥ ६ ॥ वृक्ष १ देवालय [मंदिर] २ नगर और तलाव ३ काल-मर्द [वृक्षविशेष] अथवा राज ४ केसों के समूह "यहां यदि कालक चमाल, एक पद किया जावै तो इसका अर्थ अश्लील होजाता है क्योंकि केसों के साथ काला शब्द लगाने से गुह्य स्थान के केसों का बोधक होजाता है जैसे राजा, रात्रि, निद्रा, पण्डित आदि शब्दों के साथ महा शब्द के लगाने से विरुद्ध अर्थ होजाता है सो ऐसा प्रयोग उत्तम कवि नहीं करते हैं" ५ उपरोक्त वस्तुओं का समूह और ८ खूँटियों पर ६ लटके हुए ६ वीणाओं के ७ समूह १० मांचे ११ बडे मांचे (हैला) १२ श्रेष्ट घड़े हुए बाजोट जलकर १३ गलियों में बिखरते हैं १४ घरों के चारों ओर १७ बहुत तपने से १५ कथीर १६ सीसा बहता है और १८ पारा आकाश के मार्ग उडता है १९ रूई सहित राल, गंधक जलता है और २० कहा नहीं जासके जैसा तोपें कोलाहल करती हैं ॥ ७ ॥ २१ उस युद्ध को ॥ ८ ॥ २२ जनाना सहित ॥ ९ ॥ २३ सेनापति गोविंदराम आम्रस २४ उस गुजरात के सूबेदार यवन ने २५ भागकर गुजरात

टिलीनी ॥

अरु ताकदार तोपनकों लगाय महाप्रलयके माफिक मार दीनी ॥
अच्छे बारूदके उडान वज्रपातसे गोले गिरन लगे ॥
अरु तारागढके*प्राकार कगुरेनकों†कलाप‡किरन लगे ॥११॥
जिन तोपनके§कलाप कुलटानायिकाके समान सोभित भये ॥
अरु गोलदाजनकों जार जानि पूर्वानुराग[1]के प्रभाव समीप लये॥
जिनके अद्भुत अनग[2]की आगि असी कि उदरमें नमावैं यातैं आननकी[3] ओर उफनाय कढै ॥
सो समीपके सवनकों बचाय दूरके दुर्ग दाहिबेकों बढैं ॥१२॥
जिनकों आहार पचेतैं अपने स्वामीकों आनद नाँहि आवैं ॥
अरु वमन कियेतैं विट[5] विदूषकन सहित नायक मोदपावैं ॥
जे खिन खिनमें गर्भाधान धारिकैं प्रसूतिकाल[6]को बिलब नाँहि करैं ॥
परन्तु जिनके बालक कुपुत्र यातैं होतही जनक जननीकों छोरि वैरिनके वृंदमें[9] बसिवेकों कूदिपरैं ॥१३॥
जिनकों बत्तीस बत्तीस३२ जार भोगैं तथापि अल्प साधन जानि रति जगके विजयकी पताका उडावैं ॥
अरु तृप्तिके अभाव वडे वैलनके जोट जीति वैंडे हत्थीनके टल्ले खावैं ॥
आगि देवेवारोही[10] जनाइवेवारी दाई ताकों जलदीसूँ जनाइवेमैं बधिरता[11]की बखसीस करैं ॥
असी उनमत्त जानि कितनेक दरितै[12]दाईनके संदोह[13] जनायवे

वी ॥ १० ॥ * कोट † कागरों का समूह ‡ गिरने लगे ॥ ११ ॥ § समूह बिखरने लगे १ पहिले की प्रीति २ कामदेव की अग्नि ३ मुख की तरफ ॥ १२ ॥ ४ उघाट (के) ५ कामी पुरुष के सखा ६ बालक जनने के समय में ७ पिता ८ माता को ९ समूह में ॥ १३ ॥ १० अग्नि देने (बत्ती बताने) वाला ११ बहरेपन की १२ डरनेवाले १३ समूह ॥ १४ ॥

की हाँस न धरैं ॥ १४ ॥

जिनके *आनन †आरक्तमानों ‡वन्हिके वमनहीसों यह रंग धरैं

अरु आलस ऐसे कि अपनी सज्जापर सूतांही आहार विहारादिक कर्म करैं ॥

जे बलिष्ठ ऐसी कि जंगी कारतूस बिना §स्रवद्गर्भा होय जावैं ॥

अरु जंगी कारतूसकरि जरायु[1]थैलीसों जुद्धा पुत्र उपावैं ॥ १५ ॥

जिनकी तीखी नजरिके कटाक्ष लागें गढ पर्वत आदि जंगम[2] हू लोटी परैं ॥

अरु चंडवेग[3] चिरवेग[4] ऐसी कि संप्रयोग[5] सूरिनतैं[6] कामकलहकों जीति जीति गर्ज्जना करैं ॥

ऐसी तोपनके फेर पर फेर जारी भये ॥

अरु पत्तनके[7] प्राकारकों दुरबाजू छेकि छेकि गोले आडऽद्रिके[8] अंतर बिहार करन गये ॥ १६ ॥

तारागढके प्राकार कपिसिर[9] वंप्रन[10] समेत थहराय तूटन लगे ॥

कैधौं आखंडलके[11] असिनिसों[12] उत्तुंग अद्रिनके[13] कूट फूटनलगे ॥

या रीति तोपन बुन्दीके वंरखाकों[14] वेधि घनें घंटापथनके[15] समान पंथ कीनैं ॥

अरु रावराजा उम्मेदसिंह महाराव दुर्जनसाल हल्लेको हुकम दे बारिबाह[16] बीजुरीसे खेटक[17] खग्ग[18] लीनैं ॥ १७ ॥

---

* मुख † लाल ‡ अग्नि के उगलने से § गर्भ पटकनेवाली १ उल्व (आवळ) रूपी थैली से ॥ १५ ॥ २ जड़ भी ३ भयंकर वेग ४ बहुत ठहरनेवाली ५ रत करनेवाले ६ चतुरों से ७ नगर के कोट को ८ आडावला नामक पर्वत में ॥ १६ ॥ तोपों के इस रूपक में कुलटा नायिका के साथवाले शब्दों में श्लेष है परन्तु अश्लील होने के कारण हमने उनका अधिक विवरण छोड दिया है और यथार्थ में इनका अर्थ भी सीधा है ९ कंगुरे १० कोट सहित ११ इन्द्र के १२ वज्र से १३ ऊँचे पर्वतो के शिखर १४ कोटको १५ चौड़े मार्ग (राजमार्ग) १६ मेघ और बिजुली के समान १७ ढाल १८ तरवार ॥ १७ ॥

दक्खिनकी तरफसौं सज्जीभूत सेना समेत दोऊ२ नरेस पत्तन मैं पैठि चन्द्रहास चलाये ॥

अरु पच्छिमकी तरफसौं साहिपुराके*अधिराज उम्मेदसिंह कोटाको†कटकेस गोविंदराम‡तोरनकौं तोरि हमगीरहरोलनके झुंड हलाये

दोऊ२ तरफसौं§वरूथिनी बढि भीतरके भटनपैं महाकाल रूप ¶मंडलाग्रनकी मार दीनी ॥

तिनकौं दबते देखि दलेलसिंह तारागढ सौं एक हजार १००० सच्चे सूरबीर भेजि सहरके स्वकीय सिपाहनकी भीर कीनी ।१८।

तिनमांहिंसौं कितेक बदूकनके चलाक गृहस्थनके गेहनके ऊँचे अंट्टनकौं अरोहि पैलेनको पहिचानि गोलीनतैं गजब करन लगे ॥

अरु सेस जे असेस धाराधरहीसौं धापिबेको सकल्प सच्चे करि पैलेनकी पृतनामैं पैठि अश्वमेध अध्वरके फलके उपमान आपुनैं अहाल अग्निनकौं अगदकी रीति धरन लगे ॥

चिरकालसौं विछुरे मित्रनके माफिक कितनेक अछूती अनीके लाडा छातीसौं छाती भिराय मिलन लगे ॥

अरु परस्परके प्रहरने प्रपात असित अंबुदसे अज्झैलनपैं झिलन लगे ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

ससि अंबर वसु इक१८०१ समा, बिक्रम सक गत बेर ॥
बुंदिय पुर बाजार बिच, झरिग बाढ आसि झेर ॥ २० ॥

॥ मुक्तादाम ॥

अमावसि सावन मास अनेहँ, मच्यो इम बुंदिय खग्गन मेह ॥

---

* पति † सेनापति ‡ नगर के द्वार को § सेना ¶ तरवारों की १ अपने २ सहायता ॥ १८ ॥ ३ छतों पर चढकर ४ तरवार से ५ सेना में ६ यज्ञ के ७ पैरों को ८ बहुत समय से ९ शस्त्रों के प्रहार १० काले मेघ जैसे ११ ढालों पर झेलने लगे ॥ १९ ॥ १२ सम्वत् ॥ २० ॥ १३ समय

छई नभ गिद्धनि चिल्हनि छत्ति, घुमंडत गुदन चंचुव घत्ति ॥२१॥
लगी लुभि घुम्मन अच्छरि लैन, गुञ्यो रस भाव बिभावनगैन ॥
रच्यो इत तंडव नारद रारि, झुक्यो ऋषि व्हाँ महती झनकारि २२
उडे सिर झेलत उँद्धहि ईस, बढैं इत चंडिपके भुज बीस ॥
चटठ्ठहिं रत्त खिलैं चउसठ्ठि६४, बबक्कहिं बावन५२ गावन गंठ्ठि॥२३॥
चुरैलिनि मंडत फाँलन चाल, लगावत डाइनि घुम्मरताल ॥
बजैं लगि खग्गन खग्गनैं बाढ, गिरैं भट भीरु भजैं तजि गाढ । २४ ।
उमेद दिनेस रच्यो खग खेल, दुरयो सठ घुग्घुब दुंग्ग दलेल ॥
फबैं असि खुप्परि टोपन फारि, बहैं जनु सब्भुव तंति बिदारि ॥२५॥
किरैं कटि हड्डन खंड करक्कि, भरैं उडि धारन बूं झरक्कि ॥
कटैं सह सत्थिंन जानुव जंघ, सु ज्यों गज सुंडिन खंडन संघ । २६ ।
फदक्कहिं कठ्ठहिं कालिक फिप्फ, भचक्कहिं टोप कपालन भिप्फ ॥
उडे सिर फुट्टत भेजन अोघ, मनों नवनीत मटक्किय मोघ ॥ २७ ॥
मचक्कहिं रीढक बंके अमाप, चटक्कहिं ज्यों मिथिलापुर चाप ॥
धसैं कढि लोचन सोंनित धार, चढैं सिसु मच्छ बिलोम कि बार२८
कटैं गल्ल स्वास बजैं बिक्कगार, धमैं धमनी जनु लगि लुहार ॥

१छाकर२चोंच घाल कर॥२१॥३शृंगार रस के भाव अनुभाव गुंथ (रस के अनुकूल मन का विकार होवे उसको भाव और भाव के जनानेवाले को अनुभाव कहते हैं, यहां अमरकोशकारने (विकारो मानसो भावो) लिखा है जिसका रसतरंगिणी कार खंडन करता है) विभाव उद्दीपन को कहते हैं ४ आकाश में ५ नृत्य ६ नारद की वीणा का नाम है ॥ २२ ॥ उडे हुए मस्तकों को शिव ७ ऊपर ही झेलते हैं ८ रक्त पीकर ९ चौसठि योगनियें प्रफुल्लित होती हैं १० एकत्र होकर (गांठ बधकर ॥ २३ ॥११मलंगों से (फांदने, कूदने से)१२तरवारों का तरवारों पर लगकर बाढ बजता है॥२४॥१३गढ में छिपगया॥२५॥१४जाडी जंघा को साक्थ (साथल) और पतली को जंघा कहते हैं सो साथल, घुटना और जंघा कटती हैं१५समूह ॥ २६ ॥१६कलेजे और फैंफरे१७कपालों को भेदन करके १८मक्खन की मटकी फूटी ॥ २७ ॥ १९ पीठ का हाड २० जनक राजा की पुरी (तिरहुत देश) के धनुष २१ छोटी मच्छी पानी में उलटी चढै जैसे ॥ २८ ॥ २२ धमनी (धमण)

कढैं हिय छतिय फट्टि किवार, सु ज्यों ँहद लोहित कज्जे सुढार२९
परैं कढि अंत अपुव्व पकारि, फनी गन जानि टिपारन फारि ॥
परैं छुटि संधित प्रान अपान, मनों पय पानिय लोन मिलान ॥३०॥
बनें फटि डांच कढे रद वड्ड, किधौं घृत डब्बिय रंक कवड्ड ॥
गिरैं रसना कढि झग्गन धाम,चढैं नचि नागिनि ज्यों पय ओम३१
लगैं दृग मुच्छ फरफ्फत लीन, मनों उरझी बंसी मुख मीन ॥
छलैं छत रत्त छछक्कन छुट्टि, फबैं जनु गैंगरि जावक फुट्टि ॥ ३२ ॥
झुकैं असि मत्त दुहत्थन झारि, मनों रंजकालि सिला पट मारि॥
छुटैं फटि पेटिय लोटिय लंब, तनैं पट जानि कुँविंद कदंब ॥३३॥
मचैं रव टोप उडैं फटि मत्थ, अलाबुव जांन अतीतन हत्थ ॥
कढैं दृग लग्गि कनीनिय काल, मनों कुंब लोहित मौरन माल३४
चलैं फटि ढाल बकत्तर चीर, सु ज्यों तरु ताडन पत्त समीर ॥
धसैं हिय गोलिय गात्रत गित्त, मनों पटवा बटवा बिच बित्त ।३५।
रटैं फटि कोचैं करी रननक्कि, झरैं घँन वादन ज्यों झननक्कि ॥
घटैं दम मत्त बकैं छकि घाय, मनों मद पामर जीह जडाय ॥ ३६ ॥
कढैं बँपु छक्कि वराच्छिन वौंत, तृंगाध्वज अग्ग कि गैंज्ज प्रपात ॥
लगैं निकसैं छकि पैंट्टिस लाल, मनों परतीयनके कर जाल ।३७।

१जलाशय (दह) में२लोक कमल३श्रेष्ठ रीति से॥२९॥४अपूर्व रीति से५सर्पों का समूह६मिल हुए श्वास और ११'श्वास की संधि छूटती है७लवण (नमक) मिलाने से दूध और पानी फटजावैं जैसे॥३०॥८मुख फटकर पडे दन्त दीखते हैं सो मानों दरिद्री ने डिब्बे में९कोडियें रक्खी हैं१०झागों के समूह को जमि निगलती है सो मानों सर्पिणी ११कचा दूध पाती है॥३१॥१२मच्छी पकडने का कांटा मच्छी के मुख में उलझा१३घायों से रुधिर१४जावक का घडा॥ ३२ ॥ १५ धोबियों की पंक्ति१६लंबी पडी हुई१७जुलाहों के समूह वस्त्र फैलाते हैं॥३३ ॥ मानों जोगियों के हाथ से१८तूंबे गिरते हैं१९नेत्रों की काली पुतली २० लाल कमल में ॥ ३४ ॥ २१ पवन से ताड वृक्ष के पत्र फटैं जैसे ॥ ३५॥ २२ कवच की कडी २३ कांसी आदि धातु का बाद्य ॥ ३६ ॥ २४ शरीर को २५ समूह२६बाँस वृक्ष का अग्र मेघ की २७ गर्जना से भूमि से निकले जैसे २८ कटारी २९ परकीया नायिकाओं के हाथ जालियों से कढैं जैसे (परकीया नायिका अपना

सुहैं फटि हड्ड चटच्चट संधि, चटक्कत प्रात गुलाब कि गंधि ॥
उठैं बिनु मत्थ किते तनु *तुंग, थेइ त्थेइ नच्चत थुंगत थुंग ॥ ३८ ॥
बबक्कत †डाच कितेकन बैन, मनौं बड बक्कर टक्कर ‡मैन ॥
गिरैं बररक्कत पंसुलि गात, मनौं कठछप्पर पत्थर पात ॥ ३९ ॥
छुटैं §पल जानु कढैं ¶नल हड्ड, मनौं रद ÷बारन बंगर बड्ड ॥
लटक्कत पाय रकाबन रुक्कि, मनौं तप सिद्ध अधोमुख झुक्कि॥४०॥
मलंगत छत्तिनके क्रम मप्पि, मनौं नट पट्टरि पाय मलप्पि ॥
छुटैं घन घायक[1] सायक सोक, उडैं सरघा[2] गन ज्यौं तजि ओक[3]।४१।
छके कति वृत्त[4] फिरे सुधि छोरि, बनैं जनु बालक भंभह भोरि[5] ॥
गिरैं सर बिद्ध घनैं सिर तत्त, मनौं सरघान[6] तजे मधुछत्त[7] ॥ ४२ ॥
सरैं घन संगिन[8] भिन्न सरीर, कुमारिनके[9] जनु उंज्ज[10] करीर ॥
बकैं बहु प्रेत मिल्त गल बत्थ, किधौं रन मल्ल अपूरब कत्थ ॥ ४३ ॥
जगावत हाक रचावत जंग, लगावत भैरव नट्ट मलंग ॥
घसैं चढि डाकिनि के मृत[11] छत्ति, मनौं कि बिटूँसक[12] कों तिय मत्ति४४
अटैं पय इक्क[1] किते छक ओप, किते इक[1] नैंन लखैं भरि कोप
करैं कटि जीह किते अंअ[13] कूक, मनौं कि परेंगिर[14] प्रेरित मूक।४५।

महँदी का हाथ दिखा कर लाल रंग के संकेत से जार को अपना रजस्वला होना जनाकर उसके आने का निषेध करती है। ॥ ३७ ॥ * ऊँचे ॥ ३८ ॥
† कितनों के मुख से अवाच्य शब्द निकलते हैं सो ‡ बडे कामी बकरे की टक्कर में, अथवा बडे बकरे की टक्कर में भी नहीं होवैं ऐसे बकाई खाने के वचन कहते हैं ॥ ३९ ॥ § मांस छूटकर घुटने सहित ¶ नली की हड्डियें निकलती हैं सो मानों ÷ हाथी के बडे दन्त बगड़ों सहित हैं ॥ ४० ॥ १ घाव करने वाले बाण २ मधुमक्खी ३ घर छोडकर ॥ ४१ ॥ ४ चक्राकार (गोल) ५ भांभाभोली, भमल (चक्कर) खाने का बालकों का खेल विशेष ६ मधुमक्खियों के छोडे हुए ७ मुवाल के छाते हैं ॥ ४२ ॥ ८ बरछियों से बहुत छिदे हुए शरीर चलते हैं सो मानों ९ कार्तिक मास में लड़कियों के बहुत छिद्र वाले १० घडे हैं॥४३॥११ मरे हुओं की छातियों को डाकिनियें घिसती हैं १२ कामी पुरुष को मस्त स्त्री॥४४॥१३ बकाई खाकर स्पष्ट नहीं बोले जानेवाले अवाच्य शब्द का अनुकरण है १४ दूसरे का वाणी से प्रेरणा किया हुआ गूँगा मनुष्य॥४५॥

फ्रैमैं इक१ ओठ किते इक१ कान, घनें मुख अद्द रचैं घमसान ॥
किते इक१ हत्थ किते गत केस, बनैं वहुरूप मनों नव बेस ॥ ४६॥
मिलैं रसना कढि नक्कुटे मूल, फवैं भुजगी कि लगी तिलफूल॥
किते कर टेकि उठैं रन रत्त, मनों मदछाकन पामर मत्त ॥ ४७
रहैं कति गिद्धनकों गल लाप, कहैं कति हू रव खैंचत हाय ॥
बकैं कति मात पिता तिय बैन, गिरैं कति मोहितें उच्छलि गैन४८
श्रेव घन सावनको इत तुंठ्ठि, वरूथ घटा इत आयुध बुट्ठि ॥
वहैं पुर श्रुदिय सोनें बजार, वर्षा जनु जोहि सरस्वति धार॥४९॥
गिरैं जल बद्दल गग सु गाथ, पुर त्रिय असुव जामुन पाथ ॥
बही इम बेनिय पत्तन बीच, मिलैं बहु मुक्ति जहाँ लहि मीचें।५०।
बन्यों रन बुंदिय सावन अद्द, दुहघाँ असि ज्वाल भयो पुर दद्द ॥
चुहट्टन लग्गिय लुत्थन लुत्थि, विथग्गि हट्टन वट्टन बुत्थि ॥५१॥
समाकुल रुंड परे खिलि खंड, ढरे बनिजारनके जनु टंड ॥
हडक्कत डौंरुल के डमरूक, घुगावत घाय घने जनु घूंक ॥ ५२ ॥
रटैं सिर मार अटैं कति रुंड, मिटे कति जोर फटैं कति मुंड॥

१फिरते हैं२कई आधे मुखवाले युद्ध करते हैं३भाँति४नवीन स्वांग करे जैसे ॥४६॥ ५जीभ कटकर६नासिका के मूल से मिलती है सो मानों७तिल के फूल में लगी हुई सर्पिणी शोभा देती है८युद्ध में प्रीति करनेवाले॥४७॥९गले से लगा कर १० शब्द ११ मूर्छित होकर १२ आकाश में उछल कर गिरते हैं ॥४८॥ १३ इधर श्रावण मास का मेघ १४ प्रसन्न होकर वर्षा करता है १५ सेना रूपी घटा इधर शस्त्र बरसाती है१६रुधिर बहता है सो १७ वही मानों सरस्वती की लाल धारा बही ॥ ४९॥ बादलों से जल गिरता है सोही श्रेष्ठ यशवाली गंगा है पुर की स्त्रियों के कज्जल युक्त नेत्रों से आंसू बहते हैं सोही श्याम वर्णवाली १८यमुना नदी का१९जल है२०इसप्रकार नगर में त्रिवेणी बही २१ मृत्यु लेकर जिस त्रिवेणी में मुक्ति मिलती है ॥ ५० ॥ २२ दोनों ओर की तरवार की ज्वाला से पुर२३दग्ध होगया ॥ ५१ ॥ मस्तक रहित शरीरों के टुकड़े होकर २४मस्तकाल रहित (मरे) पड़े सो मानों २५ टांडा (बालद) पड़ी है २६ भैरव और देवी आदि के बाद्य बजते हैं२७ घुघुओं (उल्लूओं) के समान कितने ही

बरैं सिर मंगि भरैं हर बैल, छकैं कति छोह हकैं रन छैल ॥५३॥
लगैं कति कंठ लरत्थर पाय, जगैं कति प्रेत ठगैं भट जाय ॥
लखैं कति हूर चखैं मिलि लाह, नखैं नभ फूल रखैं गिनि नाह॥५४
किरैं कहुँ कोच खिरैं लगि खग्ग, फिरैं कति मत्त भिरैं जनु फग्ग
चिरैं सिर बाढ गिरैं अति चोट, घिरैं नद सोंन तिरैं कहुँ घोट५५
जरैं उडि आग्गि झरैं आसि जोर, ढरैं भट केक टरैं जिम ढोर ॥
दरैं कति कुप्पि धरैं धक दाव, भरैं कति भूरि करैं मृत भाव ५६
मरैं थकि स्वास परैं कहुँ मूढ, अरैं कहुँ हूर बरैं नवऊढ ॥
ररैं हरि केक लरैं धकि रोस, हरैं जिय केक सरैं तजि होस५७
फटैं धर प्रेत बटैं सिर फाँक, लटैं मन केक कटैं उर लाँक ॥
खुलैं कहुँ नैंन डुलैं कहुँ खग्ग, झुलैं कहुँ उंद्ध फुलैं मुख झग्ग ५८
छुलक्कत घायन रत्त छछक्क, उरज्झत केस बनैं अकबक्क ॥
त्रहक्कत तंतिन सिंधुव तार, दहक्कत भूतल देत दरार ॥ ५६ ॥
झनंकत पक्खर बेधित बंट, घमंकत घुग्घर घंटन घंट ॥
बढी कुणापावलि उग्र बखान, मनौं बड पत्तन दिग्घ मसान॥६०॥

घाव बोलते हैं ॥ ५२ ॥ कितनेही मस्तकों को शिव १ अपनाकर (वशीकरके) मांगकर बैल भरते हैं २ रणरसिक क्रोध में छककर आगे बढते हैं ॥ ५३ ॥ उनमें कितने ही ३ लुढ़कते हुए चरणों मे शत्रुओं के कंठ से लगते हैं, कितने ही प्रेत उठते हैं और वीरों को ठगते हैं ४ आकाश से पुष्प डालकर ५ उनको अपना पति मानकर रखती हैं ॥ ५४ ॥ तरवारें लगकर कहीं पर कवच ६ गिरते हैं ७ रुधिर की नदी में घिरे हुए कहीं पर ८ घोड़े तिरते हैं ॥ ५५ ॥ बल पूर्वक तरवारों के पड़ने से अग्नि उड़कर जलती है जिससे कितने ही वीर गिरते हैं और कितने ही ९ पशु (गऊ) के समान टलते हैं, कितने ही क्रोध करके धक के साथ दाव देकर १० विदारण करते (काटते) हैं "दृ विदारणे" इस धातु से यह शब्द बना है. ११ बहुत ॥ ५६ ॥ १२ मूर्छित होकर कितनी ही अप्सराएं हठ करके १३ नवीन वर करती हैं १४ कितने ही वीर विष्णु भगवान को रटते हैं १५ चेत को छोड़कर चलते हैं॥५७॥१६धड़१७बांटते हैं १८मन मुड़कर१९लंक (कमर) २० ऊपर झूलते हैं ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ २१ मुरदों की पंक्ति २२ बड़े नगर के २३ बड़े श्मशान ॥ ६० ॥

गवाक्षन जालिनके पट डारि, रही रन बुदिय नारि निहारि ॥
बढी घन मार मची हथवाह, रुक्यो रवि जंपत वाह सिराह ॥६१॥
अरयो नृप छोनिय लेन उमेद, खिंज्यो इम देत दलेलहिं खेद ॥
बढे गढ सम्मुह छेकि बजार, मिली तह सत्रु हजारन मार ॥६२॥
चले सर चंड चटक्कत चाप, मचावत पक्खन सोक अमाप ॥
बहे बरछी असि तोमर तोम, बनैं नर कातर लोमबिलोम ॥ ६३ ॥
उरज्झत अंत्र कटारन तोरि, गही जनु नागिनि अंकुस डारि ॥
लगैं खेर खजर पजर लीन, मनों प्रतिलोमें धसैं जल मीन ॥६४॥
चलैं फटि पात गदा सिर चीर, मनों तरबूज हनें कर कीर ॥
चलैं तजि म्यान छुरी पल चाह, मनों पिचकारिन बारि प्रवाह ६५
झरप्फर चिल्हनि गिद्धनि झुंड, मरारत चंचुन ऐंचत मुंड ॥
किलोलत स्यार सिवा गन कंक, नचैं बहु डाकिनि प्रेत निसंक।६६।
घनैं हननकत घोटक घुम्मि, भिरैं कति भिन्न गिरैं छकि भुम्मि
कुसाँ गल छुट्टत तुट्टत तंग, भभक्कत मारुत प्रोथन भंग ॥ ६७ ॥
परैं प्रजरैं जर जीन पलान, किते कविका बिनु लेत उडान ॥
बहे पुर तद्दिन रत्त रु वार, धपी बढि वीथिनें बीथिन धार॥ ६८ ॥
मनों यह दुग्ग छुधातुर पाय, दये बलि मानव संभर राय ॥
समाकुल लुत्थिन बुत्थिन बट्ट, चढें पल चिक्कन हट्ट चुहट्ट ॥६९॥
सह्यो घन चोरनको दुख जीय, लगैं अब बुदिय भूपति हीय ॥

१ झरोखों की जालियों पर वस्त्र डालकर २ प्रशंसा का वचन कहता हुआ ॥६१॥ ३ भूमि लेने को ४ कार्य करके ॥६२॥ ५ भयंकर बाण ६ धनुष खैंच कर ७ भालों का समूह ॥ ६३ ॥ ८ आँतों मे ९ कटारी की ताड़ियें १० मानों सर्पिणी को अंकुश डालकर पकड़ी है ११ तीक्ष्ण खंजर शरीर में लीन होता है सो मानों १२ उलटा ॥ ६४ ॥ १३ मांस की चाह से ॥ ६५ ॥ १४ गीदड़ियां १५ हीच (पक्षी विशेष) ॥ ६६ ॥ १६ घोड़े १७ घाग १८ फुरनों को चीरता हुआ ॥ ६७ ॥ १९ लगाम बिना २० उस दिन २१ रुधिर और जल २२ गली गली में ॥ ६८ ॥ २३ गढ को भूख से पीड़ित २४ मनुष्यों का बलिदान २५ भर गये २६ मार्ग २७ मांस और चरबी ॥ ६९ ॥

घनैं दिन भुग्गि बियोगज भार, कियो जनु सोनितै रंग सिंगार ७०
दलेल लखी तपकी तरवारि, धुज्यो छत दुग्ग पलायन धारि ॥
सुन्यौं यह जैपुर जामिप भार, कियो निज मंत्रिय भ्रात तयार ७१

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ पूर्वनालीयन्त्रयुद्धकरणातदनुगोपुराऽऽररबिदारणाबुन्दीप्रवेशनतुमुलरणारचनदलेलसिंहतारादुर्गाऽऽरोहणातदुदन्तजैपुरश्रवणं दशमो १० मयूखः ॥ १० ॥ ॥ २९१ ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

जैपुर नृप ईस्वरं जबहि, सुनि यह बुंदिय सोर ॥
सजि दल दुद्धर मुक्कल्यो, दैन सहाय सजोर ॥ १ ॥
राजामलको इक अनुज, भ्रात नाम सिवदास ॥
सेनापति खत्री सु करि, पठयो समर प्रयासं ॥ २ ॥
राजामल निज अनुज सन, किय तब मंत्र इकत्त ॥
कहिय अग्ग जयसिंह नृप, मोसन भयउ बिरत्त ॥ ३ ॥
यह लखि मंद दलेल इहिं, मन्नैं हमहिं निकम्म ॥
अब्द लार देतो अयुत१००००, दिन्नैं ते नहिं दम्म ॥ ४ ॥
तीन३ बरस पाई तबहि, अप्पन बिपति अछेह ॥

१वियोग से उत्पन्न हुआ भार२लाल रंग का ॥७०॥३ गढ के होते हुए भागना विचार कर धूजा ४ बहिनोई पर ५ अपने मंत्रि राजामल के भाई को ॥ ७१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, प्रथम तोपों से युद्ध करने पीछे शहर के द्वार के कपाड़ तोड़ना १ बुंदी मे घुसकर भयकर युद्ध करना २ दलेलसिंह का तारागढ पर चढना ३ जयपुर में इस वृत्तान्त के सुनने का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ इक्कानवे २९१ मयूख हुए ॥

६ ईश्वरीसिंह ने ॥ १ ॥ ७ युद्ध के परिश्रम ॥ २ ॥ ८ मुझ से ९ प्रतिकूल (नाराज)॥ ३ ॥ १० प्रतिबर्ष (सालियाना) ११ रुपये ॥ ४ ॥

मगेहू दम्म न मिले, अपट्टु नट्यो सठ एह ॥ ५ ॥
यातैं अबहि दलेल कौं, दैन सहाय न अच्छ ॥
पहिलैं तुम बरवाड़ पुर, प्रविसहु मारि विपच्छ ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

सुनि खत्रिय सिवदास, अग्रज हिंतु निदेस यह ॥
आनि प्रथम जय आस, लरन लैन बरवाड लगि ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्गैं पुर बरवाड बीर इक भयउ महाबल ॥
रामसिंह रट्ठोर जाहि अक्खत जग रुट्टल ॥
ताके कुल सिवसिंह भयो रन दान धुरधर ॥
इह्न मुहुकमर्द्दरन सजिय तासन बहु सगर ॥
इन हनि अनेक रट्ठोर भट ग्राम च्यारि४ तस दब्बि लिय॥
यह लखि कवध सिवसिंह इहिं कलहं घोर मारभ किय।८

॥ दोहा ॥

जो मुहुकमसिंहोतको, ग्राम परैं हग तास ॥
ताहि प्रँजारत लुट्टितो, बहुनन बिगचि विनास ॥ ९ ॥

१ मूर्ख ॥ ५ ॥ २ शत्रुओं का ॥ ६ ॥ ३ राटला कहते हैं (इस रामसिंह के नियम था कि भोजन के समय नगारा बजवाता उसका शब्द सुनकर जितने दीन इकट्ठे होते तिनको भोजन कराये* पीछे आप भोजन करता इसी कारण से उसका नाम रामसिंह रोटला प्रसिद्ध होगया था और यह उदयपुर के महाराणा पद जगत्सिंह के समय मेवाड का सेनापति था)॥७॥मोकमसिंह के ४ वंशवालों ने ५ उस शिवसिंह से ६ युद्ध ॥ ८ ॥ ७ जलाकर ॥ ९ ॥

*रामसिंह के इस कार्य की प्रशंसा का एक दोहा राजपूताना में प्रसिद्ध है वह नीचे लिखा जाता है

रामैं भूनाई रची, मारूधर मेवाड ॥
रोट झटक्के तेणरज, पहो धूंधळा पहाड ॥ १ ॥

इसमें कवि उत्प्रेक्षा करता है कि राठोड रामसिंह ने मेवाड की भूमि में रसोई (रसोवडा) की रचना की जिसमें रोटियों के झाटकने से जो रजी उडी उसीसे मानों प्रभात के समय पर्वत धूंधले दीखते हैं ॥

हट्ठन तत्र मुहुकमहरन, अति साहस इहिं जानि ॥
बेटी अप्पेंहिं बैरमैं, मंत्र सबन यह मानि ॥ १० ॥
जाई जुग्गियगामकी, जड़ सालमकी जामि ॥
सिवसिंहहिं ब्याही सबन, दोऊ दिस हित धामि ॥ ११ ॥
नृप कूरम जयसिंह पुनि, अतुल कपट रचि आउ ॥
दियउ कहि सिवसिंह यह, लियउ छिन्नि बरवाड़ ॥ १२ ॥
जयसिंहहिं अब जानि मृत, इहिं सिवसिंह कबंध ॥
लिन्नौं पुर बरवाड़ लरि, बसि करि कुम्म प्रबंध ॥ १३ ॥
राजामल्ल यातैं अनुर्ज, रोक्यो बुंदिय जात ॥
पठयो इत सिवसिंह पर, बुल्ल्यो तँहँ यह बात ॥ १४ ॥
तुम सिवदास तयार हुव, बुंदिय दैन सहाय ॥
मगहि मध्य बरवाड़ पुर, जावहु ताहि छुराय ॥ १५ ॥
इहिं कारन सिवदास अब, सजि दल प्रबल सिपाह ॥
गो पहिलैं बरवाड़ गढ, दिन्नौं तोपन दाह ॥ १६ ॥
इत बुंदिय संगर अतुल, सज्ज्यो संभरवार ॥
नगर जित्ति लिन्ने निकट, प्रासादन प्राकार ॥ १७ ॥
दक्खिन दिस महलन निकट, भैरव नामक द्वार ॥
तासौं कछु पच्छिम तरफ, कोटा दल रखवार ॥ १८ ॥
द्विज नागर गोबिंद वह, लरत हुतो हठ लग्गि ॥
कनपट्टिय गोलिय लगिय, पर्यो स्वामि हित पग्गि ॥१९॥
मरत बिप्र खिजि नृप उभय, लंब निसैनिन लाय ॥
घटिय इक्क जावत रजनि, लिन्नैं महल छुराय ॥ २० ॥
अब इक तारागढ बच्यो, जँहँ दलेल भय जानि ॥

---

१ हठी २ देवैं ॥ १० ॥ ३ चाहिन ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ४ छोटे भाई को ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ५ युद्ध ६ चहुवाण उम्मेदसिंह ७ महलों का कोट ॥ १७ ॥ १८ ॥ ८ सेनापति ॥ १९ ॥ २० ॥

तिहिं सिर पुनि हल्ला त्वरित, पृथुल रच्यो असि पानि ॥२१॥

॥ षट्पात् ॥

लौलौ खेटक खग्ग कटक पव्वय पर हकिय ॥
नृप उमेद रहि मध्य समुख हनुमत जिम हकिय ॥
अधिरोहिनि दिय जाय भये कगुर कगुर भट ॥
सु लखि दलेल शृगाल भज्यो नारिन जुत लंपट ॥
नैनवा मग्ग आतुर लगिय खुल्लि द्वार पच्छिम अरर ॥
अधार मास सावन अमा झुकि पुनि लग्गिय मेघझर २२
जिन नारिन सतखंनन अक्क पिक्खन अकुलावत ॥
जिन नारिन जैव जोर पवन परसन नहिं पावत ॥
इक्क महल सन अन्य जात जिनकौं श्रम लग्गहिं ॥
कुचन ओट लचकान भार मानहुँ कटि भग्गहिं ॥
जिन पय प्रसून पखुरि गडत रस बिलास मृदुपन रजिग ॥
ते तिय दलेल नायक सहित झारन बिच फट्टत भजिग ॥२३॥

॥ दोहा ॥

मेझ मरितैं दूबलानपुर, जिम तिम लघि दलेल ॥
प्रात होत लहि नैनवा, मन्यों वपु जिय मेल ॥ २४ ॥
पतनी इक्क दलेलकी, दासी जन दस १० मान ॥
बन बिच भज्जत थकि रहिय, गय दूजे२दिन थान ॥ २५ ॥
दुज्जनसल्ल उमेद इत, बुद्दिय अमल बिथारि ॥
झंडे अप्पन गढ़ि दिय, विजय पताका धारि ॥ २६ ॥
कोटापति अब लोभ करि, अनुचित जो किय अत्थ ॥

१खड्ग ॥ २१ ॥ २ढालों ने ३बुर्जों ४कूदा ४ नीसनियें ५गीदड़ ६ कपाट ७ अमावास्या का अंधेरा ॥ २२ ॥ ८ सात खंड के महलों में ९ सूर्य भी १० देखने को ११पवन भी वेग से बल से स्पर्श नहीं करने पाता १२ कमर १३ फूलकी पांखड़ी १४ १४ कोमल पन १५ दलेलसिंह पति सहित १६ झाड़ों के कांटों में ॥ २३ ॥ १७ नदी ॥ २४ ॥ १८ स्त्री १९ प्रमाण ॥ २५ ॥ २० ध्वजा ॥ २६ ॥ २१ यहां

सो पिक्खहु नृप*राम सब, अधरम अनय अनत्थ ॥ २७ ॥
पहिलैं इहिं कोटापुरहिं, भूपतिसौं छल भिन्न ॥
मुल्ल दम्म दुवलक्ख२००००० के, कटक किलंगिय लिन्न।२८।
तैसीही अब तक्किकैं, अंगमि बुंदिय ऐंन ॥
नृप उमेद प्रति यह कहिय, तुमतैं राज दवैं न ॥ २९ ॥
पुर लोहितको परगनौं, इमकहि भूपहिं अप्पि ॥
अवर देस लिन्नौं अखिल, थानौं अप्पन थप्पि ॥ ३० ॥
केसव पुर पट्टनि परम, बहुरि बरुंधनि नाम ॥
ए दुव२ पुर ब्रजनाथ हित, करिय भेट छल काम ॥ ३१ ॥
बुद्ध नृपति किय पुराय ते, ग्रामादिक दिय नाँहिं ॥
इम बिसासघातक भयउ, कोटापति छल माँहिं ॥ ३२ ॥
लरन अंत लुट्टिय सहर, इक्क१ पहर धनवंत ॥
साहिपुरप उम्मेद लिय, दुव२ गज द्रव्य अनंत ॥ ३३ ॥
देवं सुवन सिवसिंह वह, बैरिसल्ल कुल जात ॥
लरि जिहिं पंच५ दलेलके, गज लुट्टे बडगात ॥ ३४ ॥
कोटापति सिवसिंहसौं, छिन्ने ते गज पंच५ ॥
आदर बिनु सठ सिक्ख दिय, रक्खी कानि न रंच ॥ ३५ ॥
साहिपुरप कोटेससौं, इक दिन अक्खिय एह ॥
तुम निलज्ज अनुचित तकत, नीति धरम तजि नेह ॥ ३६ ॥
इम जानी बुंदीस सिर, करहिं छत्र कोटेस ॥
इम बिचारि आये इहाँ यह जस सुनन असेस ॥ ३७ ॥

शुद्धब्रजदेशीयाभाषा ॥

---

*हे राजा रामसिंह सब १ अनीति और अनर्थ देखो ॥ २७ ॥ २हाथों में पहनने के कड़े और ३ मस्तक पर लगाने की किलंगी॥२८॥ ४बुंदी के स्थान को दबाकर ॥ २९ ॥ ५ उम्मेदसिंह को देकर ६ सब ॥ ३० ॥ ७ उत्कृष्ट (उत्तम) ८ छल करके ॥ ३१ ॥ ९ राजा बुधसिंह ने ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ १० देवसिंह के पुत्र ११ दलेलसिंह १२ बडे शरीरवाले ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ १३ संपूर्ण ॥ ३७ ॥

मनोहरम्–दोस निज तातेको उतारिबेकी बेर तुम,
लीनें मगि कटक किलगी यातें बालहो ॥
तिनहिं बिकाय फोज राखी सो तुमारी नाँहिं,
जातें जग जीति मन मानत निहाल हो ॥
प्रति उपकारक उमेद नृप जानों नेर,
कोटा निज खोवहु कहावत नृपालहो ॥
जो तुम कहेंहू स्वामि धर्म न धरोगे तो बे,
दुर्ज्जनके साल नाँहिं सज्जनके सालहो ॥ ३८ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा—सुनि यह कोटापति सचिव, चारन भूपतिराम ॥
बुल्ल्यो साहिंपुरेस सौं, केसैं करहु कुनाम ॥ ३९ ॥
सेनानी गोविंदसे, लग्गे बुदिय अत्थ ॥
खाच दम्म लक्खन परयो, क्यों तुम बदंत अकत्थ ॥४०॥
यह सुनि साहिपुरेस तब, गो निज नगर रिसाय ॥
कोटापति बुंदिय विभव, लुट्यो अखिल अघाय ॥ ४१ ॥
भट मोहनसिंहोत निज, नगर पलहायत नाह ॥
तारागढ रक्ख्यो तवहि, रूपसिंह हित राह ॥ ४२ ॥
पुनि किसोरसिंहोत भट, अनतापुर पैं अजीत ॥
ए दुव२ किल्लादार किय, पैंटु रन धरम प्रतीत ॥ ४३ ॥
अवरहु निज रक्खे सचिव, निबहन राज्य असेस ॥
अप्पुन लै बुंदिय विभव, कोटा गय कोटेस ॥ ४४ ॥

१दुर्जनसाल के पिता भीमसिंह ने मुर्दा छान की थी उस दोष को उतारने के समय २ कडे और किलगी मांग ली ३उम्मेदसिंह को पीछा उपकार करने वाला जानो ४जिस कोटा के कारण राजा कहलाते हो उस कोटे को मत खोओ ६ इस कहने पर भी ६ धर्म ॥ ३८ ॥ ७ शाहपुरा के पति से बोला ॥ ३९ ॥ ८ सेनापति ९ अर्थ १० झूठ बोलते हो अथवा नहीं कहने योग्य बातें कहते हो ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ॥ १२ ॥ १ पति १२ पुत्र चतुर ॥ ४१ ॥ ११ अपना बुंदी

दियउ कछ्छि रठ्ठोर वह, जैपुर अमल बिधाय ॥ ४५ ॥
इत खत्रिय सिवदास लिय, पुर बरवाड़ छुराय ॥

पज्झटिका ॥

बरवाड़ समर सिवदास ठानि, जैपुर नरेस यह उचित जानि ॥
धूलापुर पति कूरम दलेल, बुल्ल्यो राजाउत मंत्र मेल ॥ ४६ ॥
कहि उचित ताहि बुंदिय सहाय, पठयो दलेल ढिग समय पाय ॥
वह तबहि नैनवा नगर पत्त, भिंटयो दलेल हित बिबिध वत्त ॥४७॥
अक्खी पुनि ईस्वरिसिंह राज, दिल्लीपुर जावत कछ्छुक काज ॥
जवनेस हिंतु काम सु सुधारि, बुंदीपर ऐहैं दल बिथारि ॥ ४८॥
ठहैहैं तब अप्पन अमल तत्थ, हड्ड सु उमेद गहि करहिं हत्थ ॥
पै जोलौं आवैं न कछवाह, तोलौंन उचित अब समर चाह ॥ ४९॥
पूगैंन अबहि हम बीर होय, दुस्सह उमेद कोटेस दोय२ ॥
दोऊ दलेल यह मंत्र चाहि, बहु मास रहे पुर नैनवाहि ॥५०॥
इत जैपुर पति दिल्लिय प्रपत्त, सेयो सुरतान जु बिबिध वत्त ॥
बुंदिय पुर बिग्रह बहुरि अक्खि, लियसाह हुकम करि सबन संक्खि
इम रहत कुम्म दिल्लिय अभंग, सेवंत साह अवनिय उमंग ॥
इत अभयसिंह मरु देस राय, किय चिर निवास अजमेर आय ।५२।
मम जनक पुव्व यह नगर लिन्न, यह चिंति मरुप तहँ बास किन्न ॥
कूरम इत दिल्लिय कपट धारि, इक मंत्र साह छन्नैं बिचारि ॥५३॥
राजामल मंत्रिय निज सिखाय, दक्खिन दल लावन दिय पठाय ॥
यह तबहि पत्त दक्खिन अनीकें, किय साम बिरचि हितकथ कितीक

का बैभव लेकर १ जयपुर का अमल करके ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ २ दलेल
सिंह हाडा के पास ३ मिला ॥ ४७ ॥ ४ बादशाह से ॥ ४८ ॥ ५ परन्तु ॥४९॥
६ कछवाहा और हाडा दोनों दलेलसिंह ॥ ५० ॥ ७ जाकर ८ साथी
॥ ५१ ॥ ९ कछवाहा ईश्वरीसिंह १० भूमि के उत्साह से ११ मारवाड़ देश का
राजा १२ बहुत दिन तक ॥ ५२ ॥ १३ पहिले मेरे पिता ने ॥ ५३ ॥ १४ दक्षि-
ण (मरहठों) की सेना लाने को १५ सेना में ॥ ५४ ॥

लिय रामचव पडित मिलाय, सध्या राणाजिय पुनि सुभाय ॥
मरहठ्ठ उभय२ इम लियउ फोरि, करि नेह देन किय द्रम्म कोरि
१००००००० ॥ ५५ ॥
इत नृप उमेद बुदिय बिचारि, कोटेस लुब्ध अनुचित अकारि ॥
हमरेहि द्रव्य सन रचिय जुद्ध, लिय बहुरि भुम्मि रचि कपट लुद्ध ५६
तसमात उचित नहिं पर सहाय, लेंहैं व हमहिं भुजबल दिखाय ॥
उम्मेदनृपति यह मत्र लाय, अजमेर गयउ बुदिय बिहाय ॥ ५७ ॥
मरुधर नरेस सन किय मिलाप, महिपाल उभय रहि हित अमाप ॥
इत उदयनेर जगतेस रान, बुदी छुटी सु निरुपो निदान ॥ ५८ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ दलेलसिंहसहायार्थजेपुरपतिसचिवखत्र्युपटक्षराजामल्लाऽनुजशिवदाससज्जीकरणतदग्रजसम्मतिबरवाडपुरयोधनतात्रिदानकथनहड्डेन्द्रबुन्दीविजयकरणकोटेशसेनापतिमरणतारादुर्गाऽधिरोहणयारोपणपलायमानदलेलसिंहनयनपुरगमनकोटेशबुन्दीविभवलुण्ठनसर्वाधिकारस्वीकरणनृपार्थलोहितप्रान्तसमर्पणतत्प्रतिसाहिपुरेश्वररुशत्युपालम्भदानमहारावकोटागमनशिवदासबरवाडविजयनकूर्मराजधूताधि

---

१ श्रेष्टरीति स ॥५५॥ २ रुपये १ कोडी नेह४किया ५ सा न ॥५६॥ ६ इसकारण ७ अव ८ बुन्दी छोडकर ॥ ५७ ॥ ९ स १० कारण दखा ॥५८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, दलेलसिंह की सहाय के अर्थ जयपुर के पति (ईश्वरीसिंह) का अपन सचिव, खत्री उपटकथाके राजामल्ल के छोटे भाई शिवदास को तयार करना १ उसके बड़े भाई की सलाह से बरवाड़ युद्ध करने का कारण कहना २ हाडों के राजा का बुन्दी विजय करना और कोटा के पति के सेनापति का काम आना ३ तारागढ़ आदि पर नीसरनियें लगाना और दलेलसिंह का भागकर नेणवे जाना ४ कोटे के पति का बुन्दी का वैभव लूटकर सब पर अपना अधिकार करना ५ उम्मेदसिंह के अर्थ लोहितपुर का परगना देना ६ जिस के प्रति शाहपुरा के पति (उमेदसिंह) का खिजकर उपालम्भ (ओलमा) देना ७ महाराव का कोटे आना शिवदास का बरवाड़ को जीतना ८ कछवाहों के राजा (ईश्वरीसिंह) का धूर्त्ता

पतिदलेलसिंहनयनपुरप्रेषणमालम्याश्वासनजयसिंहदिल्लीगमनम रूपत्यजमेराऽऽगमनेश्वरीसिंहराजामलदक्षिणाप्रेषणरजतमुद्राकोटि निवेदनप्रतिज्ञानश्रीमन्तसचिवराणाजि १ रामचन्द्र २ मेलनहड्डेन्द्र- कोटासहायलज्जाप्रापणातद्बुन्दीत्यजनाजमेरगमनधन्वेशसमागम- नमेकादशो ११ मयूखः ॥ ११ ॥ ॥२९२॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभषा ॥

॥ दोहा ॥

उदयनैर जगतेस इत, जान्यौं समय नवीन ॥
बुंदिय हड्डन छिन्नि लिय, हे जैपुर बल हीन ॥ १ ॥
यातैं भुव उद्यम करन, उचित काल अब आय ॥
भागिनेयं हित दीजिये, ढुंढाहर वटवाय ॥ २ ॥
यह बिचारिं कोटेस प्रति, पुनि पठये लिखि पत्त ॥
जीतैं जैपुर जंग जुरि, अब हम तुम अनुरत्त ॥ ३ ॥
सोधी दुर्जनसल्ल तव, उनकें गाढ न रंच ॥
पहिलैंही फीके परे, परि परि रान प्रपंच ॥ ४ ॥
यह बिचारि पच्छी लिखिय, रचहु कुंच तुम रान ॥
पीछैंही हम आतहैं, जुरि जित्तहिं घमसान ॥ ५ ॥
यह दल वंचि विचारि तव, निज भट रान बुलाय ॥

के पति दलेलसिंह को नयावे भेजना सालमसिंह के पुत्र (दलेलसिंह) को आश्वासन देना (विसासना) ९ जयसिंह के पुत्र (ईश्वरीसिंह) का दिल्ली जाना १० मारवाड़ के पति का अजमेर आना और ईश्वरीसिंह का राजामल को दक्षिण में भेजना ११ क्रोड़ रुपये देने की प्रतिज्ञा का बोधकराना १२ श्रीम- न्त के सचिव राणांजी और रामचन्द्र को मिलाना २१ हाडा के इन्द्र (उम्मेद- सिंह) का कोटा की सहायता से लज्जा पाकर उसका बुंदी छोड़कर अजमेर जाकर मारवाड़ के पति से मिलने का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ बानवे २९२ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ समय २ भानजे (माधवसिंह) के अर्थ ॥ २ ॥ ३ पत्र ४ प्रीतियुक्त हो- कर ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ५ युद्ध ॥ ५ ॥ ६ पत्र बांचकर

मरहट्ठन ढिग मुक्कलन, दुव२ तयार किय *दाय ॥ ६ ॥
इक्क सलूमरि पुर अधिप, केसरि सुवन कुबेर ॥
बखतसिंह काका बहुरि, किय तयार हितकेर ॥ ७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हुलकर हित कग्गर लिखवाये, कोटि १०००००० द्रम्म तिहिं देन कहाये ॥
लिखिय मलार भरोस तिहारैं, अब हम जैपुर विजय निहारैं ॥ ८ ॥
रामचन्द पंडित इम फोरहु, राणाजी सन पुनि हित जोरहु ॥
कूरम तुमहिं देन जो करिहैं, तासौं द्विगुन द्रव्य हम भरिहैं ॥ ९ ॥
कग्गर इम लिखवाय दये कर, वखत१कुबेर१दोहु२पठये बर ॥
दोऊ२तब दक्खिन दल पत्ते, अवसर पाय मिले अनुरत्ते ॥ १० ॥
राणाजी सध्या सुत तत्थह, जया नाम सब रीति समत्थह ॥
बदलि पग्घ तासौं बखतेसह, मित्र भयो जिम धनद महेसह ॥११॥
यह सुनि रान सेन साजि दुद्धर, माधवें जुत हकिय जैपुर पर ॥
नागोर पैं बखतेस कबधह, अप्पनें पुत्रिय स्वसुर हुतो वह ॥ १२ ॥
बिजयसिंह वाँको सुत व्याहो, स्वीय सुता तातैं हित चाह्यो ॥
इहिं कारन जगतेस रान अब, सत्थ लेन नागोर कटकं सब ॥१३॥
कनकँ मुल्ल रुप्पय दुव२ लक्खन २०००००, पठयो बखतसिंह पँहँ हितपन ॥
अक्खिय खरच एह अवधारहु, एतनो निज मम मीर प्रचारहु॥१४॥
दुर्मति लुब्ध बखतेस बचि दल, पुंरट लयो रु नांहिं पठयो बल ॥

*रीति पूर्वक॥६॥१हित के लिये॥७॥२पत्र३रुपये४हे मल्लार॥८॥९॥५श्रेष्ठ६सेना म गये७अनुकूल ॥ १० ॥ ८ समर्थ [यहां स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है सो अन्य स्थानों में भी ऐसाही जानना] ९ कुबेर १० शिव से ॥११॥११माधवसिंह स हित १२ नागोर का पति बखतसिंह राठोड़ १३ महाराणा जगतसिंह की पु त्री का श्वशुर था॥१२॥१४बखतसिंह का पुत्र१५राणा जगतसिंह की पुत्री १६ सेनासहित॥१३॥१७सुवर्ण१८धारण करो१९अपनी सेना मेरी सहाय पर२०भेजो ॥१४॥२१खोटी बुद्धिवाला२२लोभी२३सुवर्ण तो लेलिया और२४सेना नहीं भेजी

रान पचीस सहँस २५००० दल रंज्जिय, सेन सहँस दस १०००० माधव सज्जिय ॥ १५ ॥

इम हजार पैंतीस ३५०००अनीकन, रान बहुरि माधव इच्छत रन
किय दरकुंच उदयपत्तन तजि, सब कूरम सीमा पहुँचे सजि ॥१६॥
टोडा नगर परग्गन अंतर, माधव रान मिलान दये वर ॥
हो दिल्लिय तबतैं कूरम पति, यातैं अवर सेन पठयो अति ॥१७॥
हेमराज१बखसी दलकंत सु, अरु झलायपति सुत जसवंत सुर ॥
नागरचाल ईस पुनि नारव, सुभट नाम सिरदार३ जोर जव ॥१८॥
इत्यादिक जैपुर भट आये, रान समुख सजि कपट रचाये ॥
जान्यौं कछु दिन अंतर पारैं, तो नृप ईस्वरिसिंह पधारैं ॥१९॥

॥ दोहा ॥

कग्गर पठयो कूरमन, रान निकट छल रक्खि ॥
महिपति तुम माधव अरथ, अवनि दिवावहु अक्खि ॥२०॥

॥ षट्पात् ॥

अग्गैं नृप जयसिंह राज मांधवहित अप्पिय ॥
अब नृप ईश्वरिसिंह ताहि मेटन मति थप्पिय ॥
यातैं नहिँ अनुकूल सुभट हम सब कूरम सैन ॥
अप्पहु आयस अप्प सोहि करिहैं प्रतीति पन ॥
बिनु खरच नाँहिं कारज बनैं देहु खरच सब स्वीय करि ॥
हम अब अधीन तुमरे हुकम गहि हैं ईस्वरिसिंह लरि॥२१॥
छल प्रपंच यह मंडि पत्र पठयो कछवाहन ॥
बंचि रान मतिमंद मन्नि लिय सत्य मुदित मन ॥

---

१ शोभित हुआ ॥ १५ ॥ २ सेनाओं से ३ कछवाहे की सीमा पर ॥ १६ ॥ ४ माधवसिंह ने और राणा ने मुकाम किया ५ अन्य ॥ १७ ॥ ६ सेनापति ७ उणियारा का पति नरूका ॥ १८ ॥ १९ ॥ ८ पत्र ९ भूमि ॥ २० ॥ १० माधवसिंह को दिया ११ ईश्वरीसिंह से १२ आज्ञा १३ सब को अपना बनावै ॥ २१ ॥

दम्मं अयुत१००००प्रतिदीह कुंम्म सेनहिं करि दिन्नें ॥
कपटी कूरम कटक लुब्भि दस १० दिन तक लिन्नै ॥
दिय पत्र बहुरि दिल्लियनगर बुल्लिय ईस्वरिसिंह द्रुत ॥
आमेर पट्ट जावत अवहि रानौ आयउ अनुज जुत ॥ २२ ॥
यह सुनि ईस्वरिसिंह साह सन सजव सिक्ख लहि ॥
करि आयउ दरकुच गुमर्र अति बल बिसेस गहि ॥
निज दल सम्मलि होय पत्र पठयो रानौ प्रति ॥
अग्गैं भो वह वचन कयों सु चुक्कत अब दुम्मति ॥
मन्त्रिय इतैं सु मरहट्ठ दल राजामल सब फोरि लिय ॥
इक्क न मलार फुट्टिय अतुल हुलकर राय उपाय हिय॥२३॥

पादाकुलकम् ॥

रान सुभट हुलकर मिलवाये, बैलि सख्या सुत मित्र बनाये ॥
रान सहाय करन तिन धारी, सो राजामल सबहि बिगारी ॥२४॥
रान सुभट दोहू२ निकसाये, मुहबिगारि निरखत भुंव आये ॥
पुनि खत्रिय ले सब मरहट्ठन, चलिय रान सिर कुंच कटठ्ठन।२५।
कोटा मुलक लुट्टतहि आये, दुजनसल्ल नहिं हत्य दिखाये ॥
इम द्रुत आय रान दल घेरयो, फनपति मानहु कुंडल फेरयो॥२६॥
षट्पात्–सक इक नभ वसु सोम१८०१माघ मेचँक पख अंतर॥
मरहट्ठन दिय मार रान विटिप रचि संगर ॥
धमि तोपन धमचक्क भुम्मि भोर्गन हगमग्गिय ॥
झडे अरुन प्रजारि झुड गोलन झगमग्गिय ॥

१ रुपये २ प्रतिदिन ३ कछवाहों की सेना को ४ लोभ करके ५ शीघ्र ६ तुम्हारे छोटे भाई (माधवसिंह) सहित ॥ २२ ॥ ७ बादशाह से शीघ्र ८ घमण्ड ६ दुर्मति १० राजामल ने इधर मरहठों की सेना को ॥२३॥ ११ राणा के उमरावों ने १२ फिर ॥ २४ ॥ १३ भूमि की तरफ नीचा देखते हुए ॥ २५ ॥ १४ शीघ्र आकर १५ राणा की सेना को १६ सर्पों के पति (शेषनाग) ने ॥२६॥ १७ षदि १८ शेष के फणों पर १९ उदयपुर के निशान का रंग लाल है

गज हय सिपाह उड्डिय गरद प्रबल अचानक भय परिग ॥
झंपत सिचान[1] खरकोन गति मेवारन[2] मद उत्तरिग ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

आय अचानक अरध निस, मरहट्ठन दिय मार ॥
भीत रान व्याकुल भयउ, बलि[3] किय साम विचार ॥ २८ ॥
यह उदंत मरहट्ठ सुनि, रुचि बस छंडिग रीस ॥
साम बिरचि किय रान सिर, दम्म[4] लक्ख बाईस२२००००० ॥ २९ ॥
नृप कूरम अरु रान पुनि, मरहट्ठन[5] मिलवाय ॥
कियउ साम दोऊरनके, रस हित कछुक रचाय ॥ ३० ॥
माधवहूके मिलनकी रामचंद्र किय बत्त ॥
सो हुलकर मन्नी नहीं, रक्ख्यो पृथक[6] बिरत्त ॥ ३१ ॥
माधवहु[7] यह सुनि कहिय, मैं ढुंढाहर राज[8] ॥
कैसैं ईश्वरिसिंहसौं, सद्धै मिलन समाज[9] ॥ ३२ ॥
माधव रान बिगारि मुंह[10], तदनु[11] उदैपुर पत्त ॥
मरहट्ठन जुत कुम्म[12] नृप, घल्ली बुंदिय घत्त ॥ ३३ ॥
सहर देस लै किय सकल, अमल दलेल अधीन ॥
तारागढ भो नहिं तबहि, बिंट्यो जाय बलीन ॥ ३४ ॥

॥ षट्पात् ॥

धमि तोपन धमचक्क कोट तारागढ कंपिग ॥
दुवरकोटा भट देखि जानि परबल्ल यह जंपिग[13] ॥
हम हड्ड बड बीर कढहिं फहरात फतूहेंन[14] ॥
भग्गे जिम निकसैं न प्रबल लग्गत कलंक पन ॥
जो जानदेहु संजुत रखैंत[15] तो कवि कीरति पढ्हिहैं ॥

१ तीतर पक्षियों की भांति २ मेवाड़वालों का ॥ २७ ॥ ३ पुनि ॥ २८ ॥ ४ रुपये ॥ २९ ॥ ५ मरहठों ने दोनों राजाओं को मिलाकर ॥ ३० ॥ ६ जुदा रक्खा ॥ ३१ ॥ ७ माधवसिंह ने भी ८ राजा ९ सभा में ॥ ३२ ॥ १० मुख ११ जिस पीछे १२ ईश्वरीसिंह ने ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ १३ कहा १४ ध्वजा उडाते हुए १५ सामग्री सहित

नाँतरि कढैं न इहे मरद अहे पजरें कढ़िहैं ॥ ३५ ॥
सुनि हुलकर दिय वचन रेखत सजुत तुम जावहु ॥
कछुदिन कूरम जोर नाँहिं बुंदिय तुम पावहु ॥
अजितसिंह अरु रूप तवहि कोटेस सुभट दुवर ॥
सजि बल खुल्लि निसान निकसि कोटा अध्वग हुव ॥
लुट्टिय दलेल बुंदिय सकल बुंद्दसुतहिं चाहत निरखि ॥
कूरम समेत दक्खिन कटक दिन दुवरक्खिय छुंद लखि३६
जुत दलेल कछवाह तँदनु लै दल मरहठन ॥
कोटा विंटिय जाय रुट्ठि लुट्टत मग रंठन ॥
ग्राम सगत पुर जाय अप्प उत्तरि चम्मलि तट ॥
लिय पत्तन गरदोय सेन संकुलि बट उब्बट ॥
वज्जिय निसान अवक विखम दुसह फेर तोपन दगिय ॥
अंदर अलाव मच्चिय मनहुँ लकापुर बदेर लगिय ॥ ३७ ॥

॥ हारकम् ॥

दक्खिन दल लै दुरूह कूरम हठ हेरयो ॥
कोटापुर जाय घोर घेत्तन घन घेरयो ॥
हेरवट दल बटि अप्प चम्मलि दिस तडयो ॥
अद्ध सु दल पुब्बओर जाय जोर मडयो ॥ ३८ ॥
तोपन धमचक्क कोट लोपन पुर लग्गयो ॥
गोलन गजबीन सोर संकुलि दंव दग्गयो ॥

---

१ शरीर पड़े पीछे ॥ ३५ ॥ २ सामग्री ३ रूपसिंह ४ मार्ग ५ उम्मेदसिंह को देखना चाहते थे ६ लोभ देखकर ॥ ३६ ॥ ७ जिस पीछे ८ मार्ग के बुरी और कोटा के दोनों राष्ट्रों (राज्यों) को ९ पुर को घेर लिया १० मार्ग और बिना मार्ग में सेना भरकर ११ अग्नि १२ हनुमान की लगाई हुई ॥३७॥ १३ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसी सेना लेकर १४ घातों से १५ गर्जना की ॥३८॥ तोपों के १६ युद्ध में कोट और पुर का लोप होने लगा १७ गजब करनेवाले गोलों ने १८ बारूद भरी हुई १९ अग्नि लगाई

कच्छप फटि पिट्टी नाग रीढक बररक्कयो ॥
दंतुलि तुटि कोलं झोल झंझट झुकि झक्कयो ॥ ३९ ॥
अतल रु बितलादि लोक ओदंकि भय भग्गये ॥
दिग्गज डगमग्गि सोच मोचन मद लग्गये ॥
फोजन घन फेर भुम्मि जोजन दुवर ढंकई ॥
ओजन भट भीर जंग मोजन हठि हंकई ॥ ४० ॥
टोलन पँबि पात डोलं गोलन गढ बिग्गरैं ॥
गज्जनं पुर सोधं गोख छज्जन छटके परैं ॥
मंडप फटि के लदाव खंभन गन उच्छटैं ॥
थंभन थहराय ओक ओकन अति उप्पटैं ॥ ४१ ॥
उड्डत गढ खंड फेर गोलन लगि बिक्खरैं ॥
बज्रन कटि पँच्छजानि पब्बय फटि के परैं ॥
कोट रु कपिसीसं ओट उड्डत छबि गैनमैं ॥
चोटन पर चोट लोट लग्गत पुर लैनमैं ॥ ४२ ॥
गोपुर परिकूट अट्ट पट्टन परि बट्ट के ॥
कापथ अतिपंथ होत चम्मलि तट घट्टके ॥

१ शेषनाग की पीठ (सांकल की हड्डी) तूटी २ वराह की दंतुली तूटकर ३ वह उस झग ड़े (युद्ध) के झालों से झुककर ४ गिरा (बैठगया) ॥ ३९ ॥ ५ भय से डरकर भागे ६ शौच (विष्ठा, लाद) और मद छोडने लगे, फौजों के अधिक फैलाव से आठ कोस भूमि ढक गई और वीरों की भीड़ पराक्रम के साथ युद्ध की लहरों में हठ करके चली ॥ ४० ॥ पर्वतों पर ७ वज्र पड़ने की ८ तरह गोलों से गढ बिगड़ने लगा उन तोपों की ९ गर्जना से नगर के १० महल, झरोखे और छाजे तूटकर पड़ते हैं कितने ही लदाव के गुंमज फटकर खंभों का समूह उछटता है और ११ घर घर में थंभे धूज धूज कर उपटते हैं ॥ ४१ ॥ फिर गोलों से गढ के टुकड़े हो कर उडते और बिखरते हैं सो मानों वज्र से १२ पांखें कटकर पर्वत फटकर गिर ते हैं कोट और १३ कांगरों की आड उडकर १४ आकाश में शोभायमान कर उडते हैं ॥ ४२ ॥ १५ नगर के द्वार के आगे का कोट (पड़कोटा अथवा धू घस) और १६ बुरजें गिरकर कितने ही १७ मार्ग होते हैं २० चामल नदी के किनारों के घाटों में १८ पगडंडियें (छोटे मार्ग) और १९ बडे मार्ग होते

द्विपंथ रु त्रिक श्रो चतुष्क रीति सु सब लुप्पई ॥
कुट्टिमं ढिग छत्ति आनि छत्तिंन मिलि उंप्पई ॥ ४३ ॥
अगन घर अंग्गि सोर सगर अति उच्छरैं ॥
जगन अतिजोर वोर दंगन गढ बिग्गरैं ॥
अंदर अकवक्कि लोक वदर भय ज्यों दुरे ॥
मादिरं पुर तूटि आनि चम्मलि जल के धुरे ॥ ४४ ॥
डवर उडि खेह अंक अवर सव लुक्कये ॥
ध्यान सु सिव छुट्टि तान अच्छरि गन चुक्कये ॥
चम्मलि जल छिज्जि मीन सम्मलि घन अंवटे ॥
डुगर डगमग्गि पक्क उंवंर गति के फटे ॥ ४५ ॥
सागर जल सेतुं छोरि लोपन भुव लग्गये ॥
कोपन इम कुंम्म सेन तोपन दव दग्गये ॥
सगर दुव॰ मास मडि कूरम इम अंकुरयो ॥
सत्थहि मरहट्ठ पिक्खि दुज्जनसल सकुंरयो ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

रायाजी सध्या सुंवन, जया नाम अति जोर ॥

नगर में १ दो मार्ग, तिरपटा और चौहटे (चौपड़ के बजार) की सब रीतियें मिटगईं ३ ऊपर की छत नीचे की छत से मिलकर २ नींव (बुनियाद) में मिलकर ४ शोभित हुई ॥ ४३ ॥ ५ बारूद की वह अग्नि उस युद्ध में घरों के चौकों में अत्यन्त उछली और उस बलवान् युद्ध के फैलाव में ६ आश्चर्य युक्त गढ बिगड़ने लगा, भीतर के लोक घबराकर जिसप्रकार लंका में हनुमान् के भय से छिपे थे तिसप्रकार छिपने लगे ७ कितने ही मकान टूटकर चामल के जल में ८ घुळ (मिल) गये ॥ ४४ ॥ खेह के उड़कर ९ छाजाने से आकाश में १० सूर्य छिपगया अथवा सूर्य और आकाश सब छिपगये, शिव की समाधि छूटकर अप्सराओं का समूह तान चूकगया, चामल का जल छीज कर मच्छियों के साथ बहुत जीव ११ बचले १२ पर्वत हिलकर पके हुए ऊमर वृक्ष के फल के समान फटे ॥ ४५ ॥ १३ मर्यादा छोड़कर १४ कोप के साथ कछवाहे की सेना ने इसप्रकार अग्नि जलाई १५ ऐसा हुआ १६ दुर्जनसाल सकुचा ॥ ४६ ॥ रायाजी नामक सिंधिये का १७ पुत्र

ताकैं इक१ गुटिका[1] लगिय, घन रन मंडत घोर ॥ ४७ ॥
यह लखि कुम्म दलेल सौं, चवि दक्खिन हितचाहि ॥
पंच५ ग्राम जुत कापरनि, द्रंग दिवायउ तांहि[2] ॥ ४८ ॥
दक्खिन जोर दलेल लखि, दियउ कापरनिद्रंग[3] ॥
पुर पट्टनि पुनि सौंकमैं, थप्पिय राज्य उमंग ॥ ४६ ॥
तब पट्टनि लिय दक्खिननिन, किय त्रि३भाग बनि कंत[5] ॥
इक१इक१ हुलकर संधिया, इक१बिभाग श्रियमंत ॥५०॥
संवत दुव नभ धृति समय १८०२, मेचक[6] माधव मास ॥
पट्टनि यम कोटा प्रधन, गिल्यो गिनीमन ग्रास ॥ ५१ ॥
ग्वाल[8] सुरभि गजपाल[9] गज, चक्कि[11] रंजक पर चेल[10] ॥
जमी देत कर्षुक[12] जिमहि, दिय यह द्रंग[13] दलेल ॥ ५२ ॥
मरिग[14] याहि रनके समय, चुंडाउति नृप[15] मात ॥
कोटा मध्यहिं दाह किय, पर[16] भय जानि प्रपात ॥ ५३ ॥
मृतक कर्म निज मातको, किन्नौं लघु सुत दीप[17] ॥
हो पुष्कर मरुभूप[18] सह, मिलि उम्मेद महीप ॥ ५४ ॥
दीपकुमरि अरु दीप दुव२, सोदर भगिनी भ्रात ॥
सह झालिय रानी सह्यो, पुर कोटा दुख पात ॥ ५५ ॥
कोटा इम कूरम दई, मरहट्ठन जुत मार ॥
महाराव सठ भीत मन, सम्मुह भो नहिं स्यार[19] ॥ ५६ ॥
रुप्पय सोलह लक्ख१६०००००लिय, मरहट्ठ रु कछवाह ॥

[1] गोळी॥४७॥ [2] उस जया को ॥ ४८ ॥ [3] नगर॥४९॥ [4] पति बनकर उस के [5] तीन बंट किये ॥ ५० ॥ [6] वैशाख वदि ७ कोटा के युद्ध में ॥ ५१ ॥ जिसप्रकार [8] गउ का ग्वाल [9] हाथी को महावत [11] पराये वस्त्र को [10] धोबी [12] भूमि का कर्सा, भूलकर और को और की देदेवै तिसप्रकार यह [13] नगर दलेलसिंह ने दिया ॥ ५२ ॥ [14] मरी [15] उम्मेदसिंह की माता [16] शत्रुओं के भय का पड़ना जनाकर ॥ ५३ ॥ [17] दीपसिंह ने [18] मारवाड़ के राजा के साथ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ [19] गीदड़ ॥ ५६ ॥

च्यारि४०००००लक्ख पुनि बरस प्रति, लै नैं किय दैम राह॥
इम कोटा करिंराजको, मद दिय कुंम्भ उतारि ॥
किय उ कुच्च निज निज घरन, दुव२दल विजय बिचारि ।५८।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ समाधवसिंहराणाजगत्सिंहजयपुरविजयार्थनिस्सरणदिल्लीतईश्वरीसिंहाऽऽगमनसराजामल्लदक्षिणसैन्यराणावेष्टनदण्डद०पनयनकूर्मराजबुन्दीविजयकरणकोटेश्वरसुभटनिष्कासनाऽनन्तरकोटायुद्धकरणराणाजिपुत्रजयाऽभिधानगुटिकाघ्नतप्रापणतच्छुल्कीभूतपट्टनिपुरप्रभृतिनिवसथनिवेदनहक्ष्इन्द्रमातृमरणकोटातो दमद्रव्यग्रहणातच्चतुर्थांशहायनिकरस्थापन द्वादशो १२ मयूखः ॥ २९३ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत पुक्खर उम्मेद नृप, माता मरन उदंत ॥
सुनि सब सक्किय वेदविधि, मन्नि धरम दृढ मंत ॥ १ ॥
खरच भीर नृपकैं बहुत, विपति सकैं न निबाहि ॥
प्रभु सँभर तउ धरम पटु, करैं सु अनुचित काहि ॥ २ ॥
मिलैं जबहि सब संत्थकों, अप्प प्रसन तब लेत ॥

---

१ दंड के मार्ग से ॥ ४७ ॥ २ मद हाथी का ३ ईश्वरीसिंह ॥ ४८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में माधवसिंह सहित राणा जगत्सिंह का जयपुर को विजय करने के अर्थ निकलना १ दिल्ली से ईश्वरीसिंह का आना २ राजामल्ल सहित दक्षिण की सेना का राणा को घेरकर दंड के रुपये लेना ३ ईश्वरीसिंह का बुन्दी विजय करके कोटा के पति के उमरावों को निकालने पीछे कोटा में युद्ध करना ४ जया नामक राणजी के पुत्र के गोली लगना और उसके सूंक (रिसवत) में पाटणपुर आदि ग्राम देना ५ उम्मेदसिंह की माता का मरना ६ कोटा से दंड के रुपये लिये जिसके चतुर्थांश का वार्षिक कर (खिराज) स्थापन करने का बारहवां १२ मयूख सम्पूर्ण हुआ और आदि से दोसौ तिरानवें २९३ मयूख हुए ॥

४पुष्कर में ५वृत्तान्त॥१॥६संगी (सफाई)७उम्मेदसिंह॥२॥८सब साथ को ९भोजन

दुवर दुवरदिन लंघन बनैं, डुल्लैं तदपि न चेत ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

असन बेर सह सत्थ पंति चोसर परिजावत ॥
जो व्यंजन सब अत्थ सोहि निज अत्थ लगावत ॥
मोहत सुभटन चित्त वित्त अप्पत हित जोरत ॥
स्मेर सुमहिं जिम भृंग सुभट इम नृपहिं न छोरत ॥
सब रतन फुट्टि घन घात जिम सूचीमुख कछु उव्वरिय ॥
ते भट उमेद भूपहिं अतुल रहत भिंटि सहि१०हि धरिय॥४॥
भट पयाग अरु तोक बहुरि कल्यान भ्रात त्रय३ ॥
बीर भवानीसिंह तिमहिं मजबूत धरम मय ॥
सूर धीर सिवसिंह वैरिसल्लोत महाबल ॥
इत्यादिक बड बीर नृपहिं सेवत मन उज्जल ॥
सब धन निवेदिं सहत हुकम बातजात जिम राम तट ॥
पिक्खै न हानि अप्पन प्रथित रक्खैं हिय पतिकाम रट॥५॥

॥ दोहा ॥

ऐसे भट नृप ढिग रहिय, अवर न विपति प्रपात ॥
तदपि भूप धीरज अतुल, सूर धरम सरसात॥ ६ ॥
पर सहाय अनुचित परखि, तजि बुंदिय चहुवान ॥
सूर निकसि ऐसे समय, वंधत लोन विधान ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

मरुपतिहू अजमेर भिंटि भूपहिं करि आदर ॥

---

१ तोभी मन नहीं डुलता ॥ ३ ॥ २ भोजन के समय ३ सब के अर्थ ४ धन देता है ५ सुगंधि के कारण पुष्प को भ्रमर नहीं छोड़ै जैसे उमराव राजा को नहीं छोड़ते हैं ६ हीरा घण की चोट से बच जाता है जैसे कुछ सुभट राजा के पास बचरहे ॥ ४ ॥ ७ भेट करके ८ जैसे हनुमान रामचन्द्र के पास ९ प्रसिद्ध १० स्वामी के काम का ही स्मरण है ॥ ५ ॥ ११ आपदा पड़ने से अन्य नहीं रहे, तोभी ॥ ६ ॥ ७ ॥ १२ मिलकर

समुख जाय सनमान बिरचि आन्यो डेरन बेर ॥
सहँ भोजन सह वास विदित रचि हेत बढायउ ॥
उभय२ मिलन आनद पुराय जस जगत पढायउ ॥
वय अप्प जदपि सोलह१६वरस अक्खि तदपि छोरन अलस॥
सिखयो चुहान खुरलीं सु घर रठौरहिं मृगयादिरस ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

मरुपतिकैं उमराव इक, ऊदाउत रठौर ॥
वखतरिं है रन पट्ट विदित, रासि नगर सिर मोर ॥ ९ ॥
अक्खी तिहिं मरुईस सौं, कन्या सुभ मम गेह ॥
बुंदीसहिं व्याहन उचित, अप्प करहु हित एह ॥ १० ॥
अभयसिंह अक्खिय सुनत, तनयाँ बुल्लहु अत्थ ॥
बुंदीसहिं हम व्याहि हैं, सुभ मुहूर्त हित सत्थ॥ ११ ॥
वखतसिंह सुनि बुल्लई, तनया अप्पन तत्थ ॥
परिनाई कहि धन्वपति, सभर नृपहिं समत्थ ॥ १२ ॥
संवत दृग नभ धृति१८०२समा, राध तीज३ अवदात ॥
इम रानिय कुंदनकुमरि, व्याह्यो नृप बिख्यात ॥ १३ ॥
इत दलेल कूरम उभय४, दे मरहट्ठन सिक्ख ॥
गुम्मर जोर जैपुर गये, तोर विजय रन तिक्ख ॥ १४ ॥
सुत खत्रिय सिवदासको, नंदराम अभिधान ॥
बीरन जुत मेटन बिघन, रक्ख्यो बुंदिय थान ॥ १५ ॥
इत सभैर यह व्याह करि, आयो नगर भनाय ॥
माता सन हित जुत मिल्यो, करन जोरि नत काय ॥१६॥

---

१ श्रेष्ठ २ साथ ३ उचित ४ पवित्र यश ५ उसने घर म था उस सुघर (चतुर) ने शस्त्र विद्या सीखी थी सो ६ शिकार में राठोड़ को दिखलाई॥८॥९॥१०॥७पुत्री को यहां बुलाओ ॥ ११ ॥ ८ मारवाड़ के पति ने ॥ १२ ॥ ९ विक्रम के शक में १० वैशाख सुदि तीज के दिन ॥ १३ ॥ १४ ॥ ११ नाम॥१५॥ १२ उम्मेदसिंह॥ १६ ॥

सस्सू यह जयसिंहकी, नृप बुधसिंह कलत्र ॥
पलटी जो नय[2] तजि प्रथम, तिहिं मंड्यो[3] हित तत्र ॥ १७ ॥
दुलहनि दुल्लह अँग्घ[4] अति, लिन्नैं निलय[5] वधाय[6] ॥
कछुदिन रक्खे मोद करि, मेटन वह अघ माय[7] ॥ १८ ॥
तदनुँ मात सन सिक्ख किय, बुंदिय सिर नृप सज्जि ॥
दुलहनि रक्खिय तत्थही, रस उज्जल[9] हित-रज्जि ॥ १९ ॥
कोटाधीस सहाय सन, पहिलैं बुंदिय पाय ॥
यातैं नृप बिक्रम अतुल, सज्ज्यो पृथक[11] रिसाय ॥ २० ॥
हिंडोली दरकुंच करि, दिन्नैं आनि मिलान[12] ॥
मैंना बारह१२खेटके[13], आनि मिले छक आन ॥ २१ ॥
दुव२जीवाँ धनुही करन, दुव२दुव२पिट्ठि निखंग[15] ॥
कटि[16] कटार बँलि[17] बंसुरिय, सिर धवपत्त[18] किलंग ॥ २२ ॥
बायुहिं[19] वा अरु किमहिं का, अंकहिं[20] बुल्लत आँक ॥
भजत लरत लरि पुनि भजत, लौंफि[21] उडि चित्रक लाँक[22] २३
संगाके अरु सल्लहके, गुंगाके बल गात ।
दामाँके अरु देवके, जग्गूके कुल जात[23] ॥ २४ ॥
मैंनाँ कुल इत्यादि मिलि, इम हुव हाजरि आनि ॥
पहुमी सिर सज्ज्यो नृपति, मन रन उच्छव मानि ॥ २५ ॥

---

१ स्त्री २ नीति छोडकर ३ किया ॥ १७ ॥ ४ आघ (आदर) ५ घर में ६ बुधसिंह से बदल गई थी वह पाप मेटने के लिये ॥ १८ ॥ ७ जिस पीछे ८ माता से ९ शृंगार रस से शोभायमान दुलहन को वहीं छोडी. अथवा दुलहन को वहां छोडकर शृंगार रस की तर्जना की ॥ १९ ॥ १० बुन्दी पाई थी ११ जुदा ॥ २० ॥ १२ मुकाम १३ बारह खेड़ों के मैने ॥ २१ ॥ १४ हाथों में दो प्रत्यंचा के धनुष (धुर्णी) १५ भाथे (तरकस) १६ कमर में कटारी १७ और बंसी १८ एवं मस्तक पर धोकड़ा (वृक्ष विशेष) के पत्तों की किलंगी ॥ २२ ॥ १९ पवन को २० आक के वृक्ष को २१ नीचे झुक कर उडते हैं २२ चीते के समान कमरवाले ॥ २३ ॥ २३ ऊपर कहे हुए पुरुषों के कुल में उत्पन्न ॥ २४ ॥ २५ ॥

हिंडोली पुरकी प्रजा, जुगलं स्वामि सिर जोप ॥
सैनप दम्म सोलह सहँस१६०००, नजरि किन्न नंत होय२६
नयपट्ट सबन बिसासि नृप, किय बुंदिय सिर कुच्च ॥
बाजि सिंधुत्र डाहल विसम, इम इंकिय मन उच्च ॥२७॥
नंदराम इततैं निकसि, सहँस पच ५००० सिख सग ॥
पट्टमी वब्बत पक्खरन, अब्भं घसत उतंमग ॥२८॥
बिपरदल आवत बीचडी, मिलिग आनि ताजि मोह ॥
गज्जरके घरियार गति, लग्यो बज्जन लोह ॥२९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ भूभृदुम्मेदसिंहश्रीपुष्करद्वितीयो २ द्वाहकरणादलेलसिंहसहितकूर्मराजजयपुरगमनखत्रिशिवदाससुतनन्दरामबुंदीस्थापनहइन्द्रमणायनगराऽऽगमनसपत्नजनन्यभिवादनतत्रैवराज्ञीनिवासनस्वपबुन्दीविजयार्थसज्जीभवनहिंडोलीनगरसेनाप्रपतनद्वादश १२ खेटमीणासार्थस्वामिचरणपतनविजयार्थप्रस्थानबीचडीग्रामसीमाशत्रुसैन्यमिलन त्रयोदशो १३ मयूख ॥ १३ ॥   ॥२९४॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

१माथे पर दलेलसिंह और उम्मेदसिंह दो स्वामी देखकर २नीति सहित कपट ३ कूकशर ॥ २६ ॥ २७ ॥ ४ आकाश को ५ मस्तक से घिसता हुआ अर्थात् जिसका मस्तक आकाश से लगा हुआ ॥ २८ ॥ ६ ग्राम का नाम है ॥ २९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, भूपति उम्मेदसिंह का पुष्कर में दूसरा विवाह करना १ दलेलसिंह सहित ईश्वरीसिंह का जयपुर आना २ शिवदास खत्री के पुत्र नन्दराम को बुन्दी में रखना ३ उम्मेदसिंह का मणाय नगर में आकर अपनी सौतेली माता को नमस्कार करना ४ वहां राणी को रख कर अपनी बुन्दी को विजय करने को सज्ज होना ५ हिंडोली में सेना का पड़ाव होकर बारह खेड़ों के मीणों का स्वामी के चरणों में गिरना ६ विजय के अर्थ गमन करके बीचड़ी नामक ग्राम में शत्रु सेना से मिलने का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ चौरानवें २९४ मयूख हुए ॥

॥ चटकप्लुत ॥

दुव२ सेन बग्ग लीनी, *कलि कोप अंख कीनी ॥
फन सेसनाग फुट्टे, †दिगदंति दंत तुट्टे ॥ १ ॥
बरकी बराह दट्टा, गिलि अंग कुम्म ठट्टा ॥
दिगपाल कंप लग्गे, पुट इन्द्र१४ भीति भग्गे ॥ २ ॥
सब सिंधु[2] सेतु लुप्पे, कलि[3] जानि वीर कुप्पे ॥
सिवकी समाधि जग्गी, नवमौल आस लग्गी ॥ ३ ॥
कइलास छोरि काली, चढि सिंह संग चाली ॥
चउसट्ठि६४ चौंकि आई, घन मंडि नच्च घाई ॥ ४ ॥
दुवपंच५२ बीर दोरे, जव[5] डाकिनीन जोरे ॥
कलिकार[6] मोद पग्गे, महती बजान लग्गे ॥ ५ ॥
गुन अच्छरीन गाये, अति मोद झुंड आये ॥
नभ[8] गिद्धनीन छायो, रवि रेनुमैं लुकायो ॥ ६ ॥
चहुवान बाजि[9] नक्खे, लखि आखु[10] जानि तक्खे[11] ॥
किलकार बीर बज्जी, समसेर मार सज्जी ॥ ७ ॥
कटि टोप जात झोंके[12], जिम पत्र जोगनीके ॥
तरवारि धार धप्पैं, अरि केन[13] स्वर्ग अप्पैं ॥ ८ ॥
कर धूंप[14] भूप धायो, इत नंदराम आयो ॥
बिथुरी कजाक[15] बानी, मिलि बीर धीर मानी ॥ ९ ॥
बिबि[16] २ ओर तीर बज्जे, लखि भीरु नीर लज्जे ॥

---

* युद्ध में † दिशाओं के हाथियों के ॥ १ ॥ १ भूमि के चौदह पुट (लोक) डर कर भागे ॥ २ ॥ २ समुद्रों ने मर्यादा छोड़ी ३ युद्ध जानकर वीर कोपे ४ नवीन मुंडमाला की आशा लगी ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ वेग ६ युद्ध करानेवाला (नारद) हर्षित हुआ और ७ वीणा वजाने लगा ॥ ५ ॥ ८ आकाश ॥ ६ ॥ ९ घोड़े डाले (उठाये) १० चूहे को देख कर ११ तक्षक नाग ॥ ७ ॥ १२ ठोके जाते हैं (निरन्तर प्रहार को डिंगल भाषा में झोकना कहते हैं) १३ कितने ही शत्रुओं को ॥ ८ ॥ १४ खड्ग विशेष हाथ में लेकर १५ युद्ध की वाणी (डिंगल भाषा में युद्ध का नाम कजिया है जिस संबंधी) ॥ ९ ॥ १६ दोनों ओर

बरछीन वेध लग्गैं, परि सूर *मुत्ति पग्गैं ॥ १० ॥
घट के कटार कढ्ढैं, मुख सूर नूर बढ्ढैं ॥
फवि सेल पार फुट्टैं, छक लोह मान छुट्टैं ॥ ११ ॥
फटि घाय छिंछि हल्लैं, †जलजन्त्र जानि चल्लैं ॥
सिख नदरामके जे, लखि ‡ओदकैं कलेजे ॥ १२ ॥
फटि §कोच गात फट्टैं, जिम केलि ¶गब्भ कट्टैं ॥
गहि +कुत नाभि गेरैं, धमनीन मूल हेरैं ॥ १३ ॥
उललत सादि आली, हय होत केक खाली ॥
मग ओर खेह हुल्ले, जम स्वर्ग बट्ट खुल्ले ॥ १४ ॥
गजमत्य फेट फुट्टैं, जिम गोत्र कूट तुट्टैं ॥
परि भीरु सोक कूई, परभोग ज्यो असूई ॥ १५ ॥
गति हीन केक फीके, मन जानि सजंमीके ॥
तजि प्रान जात मच्छी, तरु ठुंड जानि पच्छी ॥ १६ ॥
सुधि भुल्लि केक वक्कैं, जड जानि सीधु छक्कैं ॥
कटि जात अत हीसौं, जिम पाप जैन्हवीसौं ॥ १७ ॥
तरवारि भौं चलक्कैं, जिम सपिका सलक्कैं ॥
हुव रत्त रत्त अगे, रँजतत्व जानि रगे ॥ १८ ॥
दविजात केक श्रेनी, नैर अस्व ती कि ऐंनी ॥

---

*मुक्ति पाते हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ †फुँहारा ‡डरे ॥ १२ ॥ §कवच फटकर शरीर फटते हैं मानों ¶ केल वृक्ष का गर्भ कटता है + भाला लेकर नाभि में घुसेडते हैं सो १ मानों नाडियों (नसों) का मूल हेरते हैं कि कहां से निकली हैं ॥ १३ ॥ १ सवारों की पंक्ति ३ यमराज ने स्वर्ग का मार्ग खोल दिया ॥ १४ ॥ ४ पर्वतों के शिखर ५ कूप (कुए) में ६ जैसे दूसरे के ऐश्वर्य भोगने से असूया करनेवाला पडे तैसे ॥ १५ ॥ ७ इन्द्रियों को रोकनेवाले का सच्छी (घृणा के साथ) अर्थात् शरीर की घृणा करके प्राण जाते हैं ८ ठूंठ (बिना पत्तों के वृक्षमूल) को पक्षी छोडे जैसे ॥ १६ ॥ जड मनुष्य ९ मद्य में छके जैसे १० हृदय से ११ गंगा से ॥ १७ ॥ १२ कान्ति १३ विद्युत (बिजुली) १४ रंगरेज ने अथवा रजोगुण में रंगे हैं ॥ १८ ॥ १५ अश्व जाति के पुरुष से १६ मृगी जाति की स्त्री

मिलि प्रेत डाकिनीसोँ, हिय मीँडि गाढ हीसोँ ॥ १९ ॥
कुच तिक्ख तास गहेँ, जिम विद्धकैँ सु वेहँ ॥
कति जोगिनीन छीकैँ, बढि जीत लोभ हीकैँ ॥२० ॥
सुहि पुव्व भिंटनेमैँ, जनु देत पुष्टि प्रेमैँ ॥
कति लौरु संढ लेटैँ, प्रतिसज्ज जानि भेटैँ ॥ २१ ॥
उदघृर्ष केक सज्जैँ, कति पीड़िते न रज्जैँ ॥
इम मत्त प्रेत सोहैँ, मिलि च्यारि४भाँति मोहैँ ॥ २२ ॥
भुव गाम बीचड़ीकी, हुव रत्त रत्त हीकी ॥
भिरि नंदराम भज्ज्यो, लखि खत्रि नीर लज्ज्यो ॥ २३ ॥
सिख तास सम्मुहाये, सलभा कि दीप धाये ॥
तिन्ह तक्कि भूप नीरे, परि बीच खग्ग पीरे ॥ २४ ॥
हठ लग्गि हड्ड मारैँ, दुव हत्थ खग्ग झारैँ ॥
कटि बग्ग बाजि फेरैँ, हठि नंदराम हेरैँ ॥ २५ ॥
भजिकैँ छिप्यो सु खत्री, जिम सेन लाव पत्री ॥
सिख हड्ड दोहु सज्जे, बिकराल बाढ बज्जे ॥ २६ ॥
अति जंग संकुल्यो ठ्हाँ, अवमर्द दोन रक्यो ठ्हाँ ॥
तरवारि केक तुट्टैँ, घरियारि जानि फुट्टैँ ॥ २७ ॥

दब जावे (जैसे काम शास्त्र में शश, मृग, अश्व इन तीन प्रकार के पुरुष और मृगी, बड़वा, हस्तिनी ये तीन प्राकर की स्त्रियें लिखी हैं जिन की व्याख्या दूजी और तीजी राशि में विस्तार पूर्वक करदी गई है) १ मसल (कुचल) कर ॥ १९ ॥ २ उस डाकिनी के ३ यहां बेधन करते हैं ४ केवल लोभ करके अथवा हृदय में जीतका लोभ करके ॥ २० ॥ ५ प्रथम मिलाप में ६ नपुंसक ७ शय्या पर ॥ २१ ॥ ८ घर्षण (रगड़ना) ६ पीड़ा देतेहुए तृप्त नहीं होते इन उदघृष्ट और पीड़ित आदि का विषय तीजी राशि में लिख आये हैं अश्लीलता के कारण अधिक लिखना नहीं चाहते ॥ २२ ॥ २३ ॥ १० सन्मुख हुए ११ मानों दीपकपर पतंग दौड़े १२ समीप १३ तरवार से पीड़ित किये ॥२४॥ ॥ २५ ॥ १४ शिकरे से लवा पक्षी ॥२६॥ दोनों ने १५ अवकाश रहित, पीड़ाकारि

निकसत नैंन गोटे, फदकैं कि भेक छोटे ॥
कति चाप ऐंचि झारैं, जिम काल डाच फारैं ॥ २८ ॥
बिच तास भाल ठड्डा, सुहि जानि तिक्ख दड्ढा ॥
फटि पेट अंत दीसी, पलटी कि पन्नगीसी ॥ २९ ॥
चउ ४ फार हीय मन्ने, जिम कंज च्यारि ४ पन्ने ॥
फटि कालखंज खुल्ले, कवि ज्यों पलास फुल्ले ॥ ३० ॥
सर लीन तुंद कूपी, बिल जानि नाग रूपी ॥
इम भूप जंग मड्यो, सिख व्रात खग्ग खड्यो ॥ ३१ ॥
अवसिष्ट केक लज्जे, मुख अग्ग भीत भज्जे ॥
तिन पिट्ठि हड्ड धाये, न्रप ३कोसलौं भजाये ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

राजामल सोदर्य सुवन, नदराम गय भज्जि ॥
सिख कितेक सम्मुह मरे, नट्ठे कति जैंल लज्जि ॥ ३३ ॥
सानुकूल नृपकी नियति, लग्गे लोह न अग ॥
अरि आहव भज्जे अरकि, जिम लखि बाज कुलंग ॥३४॥
नागर द्विज नृप भृत्य इक, नदराय अभिधान ॥
सोहु सूर सम्मुह भयो, किन्नौं हद घमसान ॥ ३५ ॥
मारे सिख विक्रम अमित, जुरयो विविध जैयकार ॥
लग्गे वभन वीरकैं, सत्त७कृपान संभार ॥ ३६ ॥

युद्ध किया ॥ २७ ॥ १ मैंडक २ धनुष को ३ खैंचकर जैसे ४ यमराज ५ मुख फाड़ता है ॥ २८ ॥ ६ उस धनुष के बीच में तीर लगा है सोही मानों यमराज की तीखी दाढ है ॥ २९ ॥ ७ कमल है ८ कलेजा ॥ ३० ॥ ९ पेट की नाभी में बाण घुसते हैं सो मानों बिल में सर्प घुसता है १० सिक्खों के समूह को काटा ॥ ३१ ॥ ११ अवशिष्ट (बाकी के) ॥ ३२ ॥ १२ राजामल के भाई का पुत्र १३ नाठे (भागे) १४ पराक्रम को लजाकर ॥ ३३ ॥ १५ भाग्य १६ युद्ध से १७ धमक कर १८ सिचाण को देखकर कुलंग पक्षी भगे जैसे ॥ ३४ ॥ १९ युद्ध ॥ ३५ ॥ २० जय करनेवाला २१ तरवार २२ मार (प्रहार) सहित ॥ ३६ ॥

सोधि[1] खेत नृप घायलन, लये नृजानन डारि ॥
बुंदिय आप रु भटन जुत, प्रबिस्यो अररन[2] फारि ॥ ३७ ॥
उदयराम पकरयो बनिक, लये अयुत[3] दम्म दम्म ॥
बैठो नृप बुंदिय तखत, करि निज हत्थन कम्म[4]॥३८॥
संबत दुव नभ धृति१८०२समय, सावन तीज३ बलच्छ[5] ॥
असिबर[6] बल किन्नौं अमल, अधिपति बुंदिय अच्छ ॥ ३९ ॥
सुनि कछवाह दलेलसौं, अक्खी मम दल[7] संग ॥
मारहु जाय उमेदकौं, जुरहु बडे बल जंग ॥ ४० ॥
सटि दलेल सुनतहि नटयो, किन्न अरज करजोरि ॥
मंडहु तुम अप्पर्न[8] अमल, मैं बुंदिय दिय छोरि ॥ ४१ ॥
ताके[9] कर लिखवाय तब, कग्गर[10] कूरम[11] लीन ॥
नैनवा रु करउरनगर, रक्खे तास अधीन[12]॥ ४२ ॥
अवर देस अप्पन करन, गिलन[13] अजीरन ग्रास ॥
बुंदिपर पिछ्छिय[14] बिकट, पृतना[15] सहँस पचास५००००॥४३॥
नाम नरायनदास इक, खत्री रन हमगीर ॥
राजामल सिवदासको, भ्रात सज्यो बरवीर ॥ ४४ ॥
तिहिं करि कूरम सेनपति, पठयो बुंदिय लैन ॥
संग दये उमराव सब, उद्धत जे रन अनैन[16] ॥ ४५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ हड्डेन्द्र

---

१ डोलियों में २ कवाड़ तोडकर ॥ ३७ ॥ ३ दड के दश हजार रुपये ४ अपने हाथों से कार्य करके ॥ ३८ ॥ ५ शुक्ल पक्ष की ६ श्रेष्ठ तरवार के बल से॥३९॥ ७ मेरी सेना साथ लेकर ॥ ४० ॥ ८ अपना अधिकार ॥ ४१ ॥ ९ दलेलसिंह के हाथ से १० पत्र लिखाकर ११ कछवाहे ईश्वरीसिंह ने लिया १२ दलेलसिंह के आधीन रक्खे ॥ ४२ ॥ १३ अजीर्ण के ऊपर ग्रास (निवाला) गिटने के लिये भयंकर १५ सेना १४ भेजी ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १६ युद्ध के स्थान में अनम्र ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, हाडा क्षत्रियों

सपत्नसैन्यपीचडीयुद्धकरणखत्रिनन्दरामपलायनविजयिरावराट्स्वपुरप्रवेशनदलेलसिंहबुन्दीत्यजनपुन कूर्मराजपृतनाप्रेपणा चतुर्द्दशो १४ मयूख ॥ १४ ॥　　॥२९५॥

मायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

सज्यो अत्र कूरम भूपति सैन, लगे भट घुम्मन बुदिय लैन ॥
बन्यो समयो यह दुस्सह आय, जहाँ फटि बाल तजैं निज माय ।१।
पिता सुतकों पतिकों निज नारि, तजैं वह वेत्त वनी भैंयकारि॥
जनैं जननी जु गिनैं सग ठीक, वहै नर आँहि न मध्य १००००००००८०००००००० अनीक ॥ २ ॥
वहै नर आतम संविंद धन्न्य, वहै नर जो न ततो मृग वन्न्य ॥
वहै नरही गुन तीनन३ ईस, वहै अवनीसनको अवनीस ॥ ३ ॥
वहै जिम कूट तथा इक सार, वहै सब ओर न शुद्ध अपार ॥
वहै नर तीन३ अवस्थन एक, वहै सँवधा सित धारन तेक ॥४॥

के इन्द्र का शत्रु सेना से पीचडी नामक ग्राम मे युद्ध करना १ नन्दराम का भागना २ जय पाये हुए रावराजा का अपने नगर में प्रवेश करना ३ दलेलसिंह का बुन्दी छोडना ४ फिर कछवाहों के राजा का सेना भेजने का चौदहवा मयूख १४ समाप्त हुआ ग्रादि से दोसौ पिचानवें २९५ मयूख हुए ॥
१ सेना २ अपनी माता को ॥ १ ॥ ३ वार्ता४भयंकर, माता के जन्म दिये हुए सभी मनुष्यों की गणना कीजावे तो यह ठीक मूल में लिखी हुई संख्या होती है (पुराणों के मत से इस संसार के सम्पूर्ण मनुष्यों की यह संख्या है) सो तो सभी इस सेना में नहीं ५ है (यदि उक्त संख्या के सभी मनुष्य एकत्र होते तो यह ब्रह्मज्ञानी पुरुष भी मिल जाता) ॥ २ ॥ ६ यह आत्मज्ञानी पुरुष धन्य है और जो वह आत्मज्ञानी पुरुष नहीं है तो उसके विना अन्य पुरुष तो ७ वन के पशु हैं ८ यही आत्मज्ञानी पुरुष सत, रज, तम तीनों गुणों का पति है ९ यह राजाओं का राजा है ॥ ३ ॥ १० इस माया की रचना मे ११ सार (तत्व, स्थिर अंश) रूप यही है १२ यह सब ओर व्याप्त है १३ भूत, वर्तमान, भविष्यत्, तीनों अवस्थाओं में यह एक रूप है १४ यह सब ओर श्वेत धारा का १५ चक्र है ॥ ४ ॥

वहै नरही सब कृत्रिम साक्खि, वहै यह मोघ रच्यो विच रक्खि ॥
वहैहि वहै गुनको नहिँ जोग, वहै बिखई यह अन्य सु भोग॥५॥
वहै अज इष्ट अनादि अनंत, गुनत्रय नारियको वह कंत ॥
वहै नहितो भव नाहक पाय, बिगारत बालिस जुव्वन माय ॥ ६ ॥
वहै इक१ रुंधंत नाहक नारि, वहै सठ अन्नहिको खयकारि ॥
वहै पय मात बिगारनहार, वहै रहि व्यर्थ करैं भुव भार ॥ ७ ॥
भयो नर नारि न लच्छन एह, नहीं कुच मुच्छन सुंदर देह ॥
हुते नहिँ याबिधि के भट हाय, बडे मरनीक तथापि बलाय ॥८॥
कह्यो हम ह्यां कछु बोधं बिचार, सुयों वह बीर गिनैं सब सार ॥
कहा मरनों अरु जीवन तास, कहा सुख दुक्ख सबै इक१ मास ९
वहै हि गिनैं निजही सब वत्त, यहै रन तो भल होवहु अंत ॥
परंतु न हे इम कूरम बीर, गिने सुख अच्छरि स्वर्ग सरीर ॥ १०॥

यही मनुष्य१इस जगत् का साक्षि रूप है यही इस नाशवान् (झूंठे) संसार को रच रहा है३वह ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्मस्वरूप आप ही आप (स्वयंज्योति) है, उनमें किसी गुण का योग नहीं है४वह भोग करनेवाला है और यह अन्य जगत् उसका भोग है॥५॥५ अजन्मा [जिसका कभी जन्म नहीं होता है] ६ तीन गुण रूपी स्त्रियों का वह ७ पति है ८ वैसा ब्रह्मज्ञानी नहीं है तो यह संसार वृथा पाकर ९वह मूर्ख माता का यौवन वृथा बिगाड़ता है ॥ ६ ॥ वह मूर्ख वृथा एक स्त्री को १० रोकता है ११ वह मूर्ख अन्न का नाश करनेवाला है१२वह मूर्ख माता के दूध को बिगाड़नेवाला है१३भूमि पर व्यर्थ भार करता है ॥ ७ ॥ यह नर होगया है१४स्त्री का चिन्ह नहीं है, नहीं तो स्त्री ही है, इसके कुच नहीं हैं१५ मूंछों से देह सुन्दर है परन्तु पुरुष नहीं है खेद की बात है कि१६इस सेना में इसप्रकार के आत्मज्ञानी वीर नहीं थे१७तोभी बडे मरनेवाले१८बलाय थे (वन पशु विशेष जिसका अत्यन्त क्रोधी होना प्रसिद्ध है और राजपूताने में उसको बूट और बागड़ भी कहते हैं और फारसी में आफत (आपदा)का नाम बलाय है)॥ ८ ॥१९ज्ञान२०सब में सार रूप २१ उस आत्मज्ञानी के मरना जीना क्या है २२ एक सरीखे हैं ॥ ९ ॥ २३ वह सब बात को अपनी ही जानता है तो यह युद्ध भी २४ यहां भले ही होवै २५ कछवाहा ईश्वरीसिंह के वीर इसप्रकार के नहीं थे २६ अप्सराओं के साथ स्वर्ग में शरीर का सुख

रु एहहि केवल सूरन धर्म, सुही तिन्ह रक्खि कसे दृढ बर्म ॥
सजे भट कूरम मानज सूर, खँगारज नाथज पानिप पूर ॥ ११ ॥
कल्यानज पूनमल्ल कुलीन, द्वितीय रहु कुंभज आजि अदीन ॥
जथा बनवीर चतुर्भुज जात, घने सिव ब्रह्मज इष्टमघात ॥ १२ ॥
सजे बलिभद्रज सेखज सत्थ, घने सुरतानज संघ समत्थ ॥
नरूज रु कुंभज अच्छरि नाह, कढे इन्ह आदि बडे कछवाह ॥१३॥
सज्यो दलईस नरायनदास, लये सब संग जग्यो बल जास ॥
चल्यो दल जैपुरकों तजि तंत्त, बढी रन जित्तहिं जित्तहिं बत्त।१४।
खुली गजपिट्ठि धुजा पचरंग, चले हय मप्पत छोनि मलंग॥
भई सह आलिन कालिय गैल, वडे हित उंम्र चढे चलि बैल।१५।
चल्यो महती गहि नारद लार, चले गन बावन भैरव प्यार ॥
चली चउसट्ठि६४मलगत चाल, चल्यो गहि खप्पर खित्तरपाल १६
चले गन डाकिनि जैच्छ चुरेल, पिसाच रु रक्खस गुह्यक गैल ॥
चले कति डंकत इक्कहिं पाय, चले कति दोउन भू धमकाय॥१७॥
चले कति मंडत नट्ट कुलट्ट, चले कति चौंकि हसे अटअट्ट ॥
चले गन गिद्धनि चिल्हनि घोर, शृगाल रु कंक महा रन सोर ॥१८॥
गहक्किय सेन सिवा किय गोन, चल्यो दल कुम्म मरुद्धत पोन ॥

माननेवाले थे ॥ १० ॥ अरु १ वीरों का केवल यही धर्म है, सो ही उनने रख कर दृढ २ कवच कसे ३ कछवाहे वीर ४ मानसिंहोत (राजावत) ७ पूर्ण पराक्रमवाले ५ खंगारोत ६ नाथावत ॥ ११ ॥ ८ कल्याणोत ९ पूर्णमल्लोत १० दूसरे कुंभावत ११ युद्ध में दीनता रहित १२ चतुर्भुजोत १३ कितने ही शिव ब्रह्म पोते जिनको युद्ध ही इष्ट है वे उस युद्ध में सजे ॥ १२ ॥ १४ बलिभद्र के वंश के बलिभद्रोत १५ सेखावत १६ सुरताणोत १७ समर्थ समूह १८ नरूके १९ कुंभावत २० अप्सराओं के पति ॥ १३ ॥ २१ सेनापति २२ राहा ॥ १४ ॥ २३ जयपुर की ध्वजा पाच रंग की है २४ भूमि को २५ सखियों सहित कालिका साथ हुई २६ शिव॥१५॥२७ महती नामक वीणा को २८ भैरव के प्यार से ॥१६॥२९ यक्ष ३० एक पैर से कूदतेहुए ३१ दोनों पैरों से॥१७॥ ३२ कुलांट ॥ १८ ॥३३ प्रसन्नता की बोली बोल कर ३४ स्यालनियें ३५ पवन को रोकती

अटैं कति मंडि बरच्छिन वार, करैं कति लच्छ्यन बेध कटार१९
किते खुरलीपटु[२] सद्दत खग्ग, मिलैं रचि कोक तुपक्कन मग्ग ॥
बनैं कमनैतन पच्छिन बेध, सजैं कति कुंतन[३] केलि सुमेध[४] ॥२०॥
दिपैं रसबीर गिनैं तृन देह, छुहे[५] निज साहस देत न छेह ॥
छलैं छक हूर चहै कति छैल[६], चलैं द्रुत मंडित कुंकुम चैल ॥२१॥
मलप्पत बाजिन के मचकाय, धरातल दब्बत बेग धुजाय ॥
चल्यो दल दुद्धर यों दरकुच्च, उठावत दुग्गनको छक उच्च ॥ २२ ॥
लग्यो भर भोग[९] पंलट्टन[१०] सेस, भयो गिलिअंग[११]दरी कमठेस ॥
तुटी लखि दड्ढ दयो किरि[१२] तुंड, झरैं रद[१३] कंपिग दिग्गजझुंड॥२३॥
उडे खुलि केतन[१४] कुंभिन[१५] कंध, डिगे डर डंकन भीरुन[१६] बंध ॥
छिप्यो निस चंद रु बासर[१७] अक्क, चहैं निस घूक तथा दिन चक्क[१८]२४
सुपै सुधि नाँ निस बासर संधि, बन्यौं तम तोम[२०] प्रभा[२१] घन बंधि ॥
चले इत सद्दल[२२] मद्दल[२३] चाँस[२४], मिले इत बद्दल भद्दल[२५] मास ॥ २५ ॥
छल्यो इत पानिप[२६] ओ उत नीर, सहायक त्यों रसबीर समीर[२७] ॥
घुरैं इत नोबति ओ उत गज्ज[२८], इतैं भुव पाय उतैं नभ सज्ज॥२६॥

हुई कछवाहों की सेना चली १ निशानों (चिन्हों) को ॥ १९ ॥ २ शस्त्राभ्यास में चतुर ३ भालों से क्रीड़ा करते हैं ४ श्रेष्ठ बुद्धिवाले ॥ २० ॥ ५ क्रोध में आये हुए ६ रसिक ७ केसरिया वस्त्र ॥ २१ ॥ ८ कितनेही घोड़ों को उडाते हैं ॥ २२ ॥ ९ भार से शेषनाग फणों को १० पलटने लगा ११ कमठ अपने अंगों को गिट (समेट) कर कंदरा रूप होगया १२ बराह ने १३ दन्त तूट कर दिग्गज धूजे ॥ २३ ॥१५हाथियों के ऊपर१४ध्वजा खुल कर उडी१६ भय से१७कायरों के बंध डिग कर डरे, रात्रि में चंद्रमा और १८ दिन में सूर्य छिपा, घूघू (उलूक) रात्रि को और १९ चकवा दिन को चाहने लगे ॥ २४ ॥परंतु दिन और रात्रि की संधि (संध्या) की सुधि नहीं रही इसप्रकार २० अंधेरे का समूह२१मेघ की कांति बांध कर रही२२इधर तो शब्दायमान होकर २३ मर्दल (वाद्य विशेष) २४ युद्ध की खबर देकर चले और इधर २५ भाद्रपद मास के बद्दल मिले ॥ २५ ॥ २६ सेना रूपी घटा में पराक्रम और मेघ की घटा में पानी बढा और इनके सहायक सेना में बीर रस और मेघ में २७ पवन हुआ इधर नोबत का शब्द और उधर २८ गर्जना हुई और सज्जित होने को इधर

इन्हैं न चहैं रु उन्हैं जग आस, बनैं इत शस्त्र उतैं जलबास ॥
इतैं बहुरंग उतैं सित स्याम, लसैं इत ओ उत वेग ललाम।२७।
लसैं इत अग्र उतैं लहरून, दिपैं मुद सूर मयूरन दून ॥
इतैं गजदंत उतैं बक पाँत, इतैं उत दौरत अग्र दिखात ॥ २८ ॥
इतै उत पक्खर दद्दुर बुल्लि, इतैं उत गिद्ध रु चातक फुल्लि ॥
इतैं उत खग्ग रु बिज्जुन ओघ, इतैं उत होत धरा नभ मोघ।२९।
इतैं उत ओज इरम्मद भास, रजोगुन बूँदनि भ्रात बिलास ॥
झरैं सर यों उत ऊँसर जुत्त, इतैं उत भूपन भर्भन पुत्त ॥ ३० ॥
कहैं इत लौन मही कछवाह, कहैं उत पिक्खिँ हमैं वह चाह ॥
कहै यह नीति बिथारनँ कत्थ, कहैं वह अन्न प्रचारन अत्थ।३१।

भूमि प्राप्त हुई और उधर आकाश प्राप्त हुआ ॥ २६ ॥ १ इस सेना को कोई नहीं चाहता था और मेघ की आशा संसार करता था, इधर शस्त्रों का और उधर जल का २ निवास है अथवा जल ही वस्त्र है सेना में अनेक रंग हैं और उधर ३ श्वेत और काला रंग है और इधर उधर दोनों ओर ४ सुन्दर वेग शोभायमान है ॥ २७ ॥ इधर सेना का ५ अग्र भाग और उधर लहरें शोभित हैं, सेना में वीरों को और मेघ में मयूरों को ६ इन दोनों को हर्ष शोभा देता है अथवा इन को दुगुना हर्ष शोभा देता है, सेना में हाथियों के दंत और मेघ में बक (बुगला) पक्षियों का ७ समूह है जो दोनों ओर आगे दौड़ते दीखते हैं ॥ २८ ॥८इधर पाखर और उधर दादर (मैंडक) बोलते हैं और इधर गीध और उधर चातक फूलते हैं९इधर तरवारों का और उधर बिजुलियों का समूह है, इधर सेना से ढक कर पृथ्वी नहीं दीखती और उधर मेघ से ढक कर आकाश नहीं दीखता ॥२९॥ इधर१०पराक्रम और उधर ११ मेघज्योति का प्रकाश होता है और इधर १२ रजोगुण (रजोगुण का रंग लाल है) और उधर १३ बीरबहूटी (सावण की डोकरी) का विलास है इधर बाणों की वर्षा होती है और उधर१४ऊसर भूमि में बरसता है१५इधर राजाओं के पुत्र हैं और उधर १६ ब्रह्मा का पुत्र (इन्द्र) है ॥ ३० ॥ इधर कछवाहा भूमि लेने को कहता है और उधर इन्द्र पृथ्वी १७ देखने की चाह कहता है अथवा हम को देखते ही यह भूमि चाहना करती है, यह (कछवाहा) तो नीति १८ फैलाने की वार्ता कहता है और वह (मेघ) अन्न का प्रचार करने के १९ अर्थ कहता है ॥ ३१ ॥ इधर तो भूमि को ये अपनी कहते हैं और उधर बहुत घुमड़ कर

कहैं इत हैं सब अप्पन भुम्मि, कहैं उत अप्पन है घन घुम्मि ॥
कहैं इतहैं रवि ढंकन हार, कहैं उत बद्दल ज्यों न बिथार ॥३२॥
कहैं इत चाप[२] चढावन बत्त, कहैं उत सज्जित आयत[३] अत्त ॥
इतैं रज अद्रि[४] उडावन बाद, कहैं उत रक्खहिं संवर[५] सांद ॥ ३३ ॥
कहैं इत मंडहिं गोलिन गान, कहैं उत मूक करैं करकान[६]॥
कहैं इत बानन छावन देस, कहैं उत बुंदनतैं न बिसेस ॥ ३४ ॥
कहैं इत आयुध बुट्ठि अनल्प[७], कहैं उत बुट्ठि करैं हम कल्प[८] ॥
इतैं प्रभु[९] कुम्भ उतैं[१०] सुरईस, इतैं उत सज्जित छोनिय[११] सीस । ३५ ।
बढे दल[१२] बद्दल यों रचि बाद, सु सोनित संवर मंडन सांद[१३] ॥
दिपे[१४] प्रविसे इत बुंदियदेस, अरे बिथुरे[१५] उत भुम्मि असेस ॥ ३६ ॥
बन्यों इम कूरम सेन प्रयान, सुन्यों नृप बुंदिय धर्म सयान ॥
उयो[१६] रनपैं जिम व्याह उछाह, सजे मनवंछित जानि सनाह[१७]। ३७ ।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बु-

मेघ अपनी कहता है सेना कहती है कि मैं खेह से सूर्य को ढकनेवाली और मेघ कहता है कि तुमारा १ विस्तार बादलों के समान नहीं है ॥ ३२ ॥ इधर २ धनुष चढाने की बात कहते हैं और उधर मेघ कहता है कि यहां हमारा धनुष ३ लंबा है, इधर तो ४ पर्वतों की रजी करके उडाने का बाद (हठ) करते हैं और उधर ५ जल का कीचड करके उनकी (पर्वतों की) रक्षा करना कहते हैं ॥ ३३ ॥ सेनावाले कहते हैं कि गोलियों का गान करेंगे और मेघ कहता है कि ६ गड़ों (ओलों) से बधिर कर देवेंगे, इधर देश को बाणों से छादित करना कहते हैं और उधर मेघ कहता है कि वे बाण बुंदों से विशेष नहीं हैं ॥ ३४ ॥ इधर ७ बहुत शस्त्रों की वर्षा करना कहते हैं और उधर वृष्टि करके ८ प्रलय करदेना कहता है, इधर तो ९ कछवाहा (ईश्वरीसिंह) स्वामी है और इधर १० इन्द्र स्वामी है, इधर उधर दोनों ११ पृथ्वी पर सज्जित होते हैं ॥ ३५ ॥ इसप्रकार १२ सेना और बादल दोनों बाद करके रुधिर और पानी का १३ कीचड़ करने को चढे १४ सेना तो बुंदी के देश में प्रवेश करके शोभित हुई और मेघ हठ करके संपूर्ण भूमि पर १५ फैल गया ॥ ३६ ॥ १६ युद्ध पर उदय हुआ (उठा) १७ कवच ॥ ३७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के सप्तम राशि में, बुन्दी विजय करने

न्द्रो विजयार्थकूर्मराजकटकनिस्सरणस्तनयित्नुसहाऽऽधिक्याभी-मननतद्बुंदीशश्रवणोत्साहवर्द्धन पञ्चदशो १५ मयूख ॥१५॥२९६॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लौ बुंदिय नृप प्रसभ लगि, खमगं पताकन खुल्लि ॥
अबलाजुत अनुजा अनुज, कोटा सन लिय बुल्लि ॥ १ ॥
दीपकुमरि अरु दीपहरि, तव बुल्ले छक तोर ॥
रानी म्हल्लिय सह रुचिर, जय रन जुव्वन जोर ॥ २ ॥
कोटापति नृप वित्त लौ, दूनों गरब दिखाय ॥
मन अरि उप्पर मित्र बनि, लिय बुंदिय छक लाय ॥ ३ ॥
सो लखि नृप कृतघन समुझि, उदासीन रहि अत्थ ॥
भुजदंडन लिय अप्प भुव, सजि असु त्याग समत्थ ॥ ४ ॥
गजव कार कोटेस गनि, भयकारक अब भूप ॥
सिर उठाय मूढ न सकत, रद तोरे अहि रूप ॥ ५ ॥
अतंहपुर सजुत अनुज, बुल्ले नृप इहिं बेर ॥
कोटापति कछुहु न कह्यो, सकित मन गिनि सेर[12] ॥ ६ ॥
तिनहु आय भिंट्यो त्वरित, निज प्रभु भ्रात निसंक ॥
रुचि उपेत भूपति रह्यो, आतपत्र धरि अंक ॥ ७ ॥
अंह सोलह १६ भुग्ग्यो अधिप, रहि सूरन गति राज ॥

के अर्थ कछवाहों के राजा की सेना का निकलना १ उसका मेघ के साथ अधिकता का अभिमान २ उस को बुन्दी में सुनने से उत्साह बढने का पन्द्रहवां १५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ छिनवे २९६ मयूख हुए ॥
१हठ लग कर२आकाश मार्ग में३स्त्री सहित४छोटी बहिन और छोटे भाई ॥ १ ॥
५ दीपसिंह के ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ धन ७ प्राण छोडने को ॥ ४ ॥ ८ गजब करनेवाला ९ दन्त तूटेहुए सर्प के सदृश ॥ ५ ॥ १० जनाना सहित ११ बुलाये १२ सिंह रूप जानकर ॥ ६ ॥ १३ मिला १४ रुचि सहित १५ छत्र सहित १६ भाई को गोद में लिया ॥ ७ ॥ उस राजा ने वीरों की गति से रह कर १७ सोलह

सबल सज्यो दिन सत्रहम१७, सत्रुन विसम समाज ॥ ८ ॥
असित भद्द पंचमि५ दिवस, चल्ल्यो अरि चतुरंग ॥
सत्तमि७ दिन भूपति सुन्यों, जामिनि सुत्तैं जंग ॥ ९ ॥
रहसि निवेदिय नाजरन, दासिन जुत द्रुत दाय ॥
जगि पहिलैं रानिय जंप्यो, जग्गे अदिन लाय ॥ १० ॥
सिंहनि अक्खिय सिंहसों, कित सोवहु अब कंत ॥
जिन हत्थिन कुंभन जलज, ते आवत घुमडंत ॥ ११ ॥
जिनहित लंघन लंघिकैं, खद्यो ओर न मंस ॥
सहजैं ते आवत सुनैं, वेगन भद्दन वंस ॥ १२ ॥
लंबी हत्थल लंकें तनु, उंछट परक्खहु आज ॥
भूख न कछहु भावते, रोसिल्ले मृगराज ॥ १३ ॥
जिन कुंभन नख नाहके, बनैं घटा जिम बीज ॥
हम कौतुक वह पिक्खिहैं, खुल्लहु रंचैक खीज ॥ १४ ॥
इतर मृगन अपराधपैं, नयन उघारत नाहिं ॥
त्योंही जो यह तक्किहो, योंही तो नह आंहिं ॥ १५ ॥
भूख निकासहु भोनतें, गंजि गंजन वल गट्ठ ॥

दिन तक राज्य भोगा और सत्रहवें दिन शत्रुओं के विषम समूह पर सजा ॥ ८ ॥ १ सेना २ रात्रि में सोते हुए ने ॥ ९ ॥ ३ एकान्त में ४ शीघ्र. रीति पूर्वक ५ रानी ने कहा ॥ १० ॥ ६ रानी रूपी सिंहनी ने राजा रूपी सिंह से कहा ७ हे पति ८ जिन हाथियों के कुंभस्थलों में मोती हैं वे घुमंड कर आते हैं ॥ ११ ॥ जिन भद्र जाति के हाथियों के कारण उपवास करके अन्य ९ मांस नहीं खाया है वे भद्र जाति के १० हाथी सहज में आते सुने हैं ॥ १२ ॥ लंबी हाथल और पतली ११ कमर की १२ फुरती और दान की आज परीक्षा करनी है सो १३ हे प्यारे क्रोधवाले सिंह अब भूखे मत रहो ॥ १३ जिन हस्तियों के कुंभस्थलों में पति के नख घटा में विद्युत् के समान बनते हैं वह खेल हम १४ देखेंगी सो १५ कुछ क्रोध करो ॥ १४ ॥ जिसप्रकार तुम १६ अन्य मृगों के अपराध पर नेत्र नहीं खोलते हो उसीप्रकार जो इनको १७ देखोगे तो ये वैसे ही तो नहीं १८ हैं ॥ १५ ॥ बड़े बलवान् २० हाथियों को मार कर १९ घर से भूखे को निकालो.

कुंभ सान तिक्खी करहु, देंद्वारे घसि दह्व ॥ १६ ॥
वृकं तरच्छु चित्रक बहुल, इत सिंव स्वान अधप्प ॥
सरभं भरोसैं जियत सब, अब हग खुल्लहु अप्प ॥ १७ ॥
रमनीके सुनि बंच रुचिर, ऐंड गुमर अलसात ॥
सिंह कह्यो जगि सिंहनी, होवन देहु प्रभात ॥ १८ ॥
होत होत यह बत्त हुव, कुकवाकुन ध्वनि कान ॥
उठ्यो तजि गलबाँह अब, चढ सैरभ चहुवान ॥ १६ ॥
इत रानिय वज्जत सुनें, गेरुत गिद्धनिन गैनें ॥
बुल्ली अब देर न बहिनि, चित तुम रक्खहु चैन ॥ २० ॥
देनहार गज कालिकन, गूंद पलन अब गीह ॥
तिहिं मम कतहिं नैंक तुम, सज्जन देहु सनाह ॥ २१ ॥
वीरनके बहुविधि बंपा, लाभ जथारुचि लेहु ॥
असिमुट्ठि रु हयपिट्ठि अब, पतिकों पावन देहु ॥ २२ ॥

और १हे सिंह १कुंभस्थल रूपी साण पर दाढों को घिस कर तीखी करो॥१६॥बहुत ३ भेड़िये(स्याळी) ४अदबेसरे(बघेरे)अर्थात् छोटे सिंह५चीते६गीदड़, कुत्ते भूखे हैं और ये सब७केसरीसिंह (बबरी नाहर) के भरोसे पर जीवित रहते हैं इसकारण अब ८ आप नेत्र खोलो ॥ १७ ॥ ९ प्यारी (स्त्री) के ऐसे रुचिकारक १० वचन सुनकर ११ ऐंड और घमंड में आलस्य करते हुए (यहां ऐंड और गुमर ये दोनों घमंड वाची पर्याय शब्द हैं जो अत्यन्त घमंड दिखाने को एकार्थ वाची दो शब्दों का प्रयोग किया है जो काव्यों की चोखी है कि जिसकी अधिकता दिखानी होवे वहां एकार्थवाची दो शब्द देते हैं और व्याकरण का भी यही मत है कि 'वीप्सायां द्वे' वीप्सा में एकार्थवाची दो शब्द होते हैं यथा

॥ श्लोक ॥

शैले शैले न माणिक्यं, मौक्तिकं न गजे गजे॥
देशे देशे न विद्वांसश्चन्दनं न वने वने ॥ १ ॥)

सिंह ने कहा कि हे सिंहनी प्रभात होने दे ॥ १८ ॥ १२ मुर्गों के बोलने का १३ शब्द हुआ १४ चहुवाण (उम्मेदसिंह) रूपी भयंकर सिंह उठा ॥ १६ ॥ रानी ने १५ आकाश में पक्षिनियों के १६ पंख बजते हुए सुने १७ बरछी (भींछी) और मांस को १८ मयंकर भोजन के अर्थ कालिकाओं को हाथी देनेवाले मेरे पति को कवच पहनने दे ॥ २१ ॥ १९ बरछी का ॥ २२ ॥

इम रानिय इत गिद्धनिन, अक्ख्यो विहित[1] विसास ॥
इत कर अँची मुच्छ नृप, पंगि[2] रसबीर प्रकास ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

गहत मुच्छ चहुवान फाँक दारिम भुव फट्टहिँ ॥
भुव फट्टत अति भार अतल वितलादि उलट्टहिँ ॥
अतल आदि उलटंत पानँ कच्छप अहि छोरहिँ ॥
पान तजत पाताल बाँरि उच्छलि जग बोरहिँ[6] ॥
जल तलँ उफान बुड्डत जगत भग्गहिँ लोक प्रपंच भुव ॥
प्रकटहिँ कटाह भग्गत प्रलय मगहि मुच्छ बुधसिंह सुव२४

॥ निश्शाणी ॥

कान भनक तबतैं परी चढि कुंम्म[10] चलाया ॥
तबतैं संभर[11] तंडि[12] कैं सिर अंभ[13] लगाया ॥
लाह[14] जरूरी लग्गिकैं संध्या क्रम लाया ॥
सांवित्री[15] जप इक सहँस१००० रस भक्ति रचाया ॥ २५ ॥
नित्य निवेरयो प्रातको धन बिप्र[16] धपाया ॥
सेनासौं रन सज्जकों आदेस[17] लगाया ॥
सोर नकीबौं संकुले[18] चहुँओर चलाया ॥
फट्टे[19] कग्गर देसमैं फिरि दूत फिराया[20] ॥ २६ ॥

---

१ उचित विश्वास २ वीर रस में प्राप्त हो (भीज) कर ॥ २३ ॥ अब यहां कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि उम्मेदसिंह के मूंछ ग्रहण करते ही दाड़िम की फांक के समान ३ भूमि फटेगी और भूमि के फटने से ४ अतल वितल आदि नीचे के लोक उलटेंगे उनके उलटने से शेषनाग और कमठ पराक्रम छोड़ेंगे जिससे पाताल से ५ जल उछल कर ६ संसार को डुबोवेगा ७ नीचे का जल बढ़ने से संसार डूबकर ८ भूमि की लोक रचना मिटजावेगी ६ ब्रह्मांड के नाश होते ही प्रलय होवेगा इस कारण हे बुधसिंह के पुत्र मूंछ को मत पकड़ो ॥ २४ ॥ १० कछवाहा ११ उम्मेदसिंह ने १२ गर्जना करके १३ आकाश में मस्तक लगाया १४ लाभ १५ गायत्री के ॥ २५ ॥ १६ ब्राह्मणों को १७ हुकम दिया १८ शब्द भरा १६ पत्र बंटे २० दूतों ने फिरकर उन पत्रों को फिराये ॥ २६ ॥

झंडे बाहिर गड्डिकैं धुजदंड *झुकाया ॥
†फूल झराया सानपैं असि बाढ चिराया ॥
सिल्लहखानाँ खुल्लिकैं बर हेति बढाया
टोप बकत्तर ओप के दसतान दिपाया ॥ २७ ॥
‡केतों §छादन कुंकुमी रन मोद रँगाया ॥
केतों अच्छरि चाहिकैं सिर मोर बनाया ॥
त्रंबं त्रहके ‖कल्लरे वर बंब बजाया ॥
सहनाइन लग्गी ललक सिंधू सुनवाया ॥ २८ ॥
हड्डोती हाजरि भई कटिबंधं कसाया ॥
हूरों सूरों सत्थही बेर साज बनाया ॥
यों जावक लग्गेचरन यों लंगर लाया ॥
यों नेउर पग अंकुरे यों मक्कुन आया ॥ २९ ॥
यों अद्धोरुक उल्लसे यों दंस दिपाया ॥
यों आहूत विमान के यों बाजि मँगाया ॥
यों रागन पाया प्रमुद यों सिंधुन छाया ॥
यों कोनन लाया करन यों मुंठि मिलाया ॥ ३० ॥

*खड़े किये (डिंगल भाषा में अधिक ऊँचे करने को झुकाना कहते हैं) †तरवार के धार धीरते समय अग्निकण उड़े उसको फूल कहते हैं। सिलहखाने खोलकर श्रेष्ठ शस्त्र बांटे ॥ २७ ॥ ‡कितनों के §केसर के रंग के वस्त्र ‖युद्ध के तासे बजे। वीर रस को बढानेवाला सिंधवी राग सुनाया ॥ २८ ॥ २यहां अजहत् स्वार्था लक्षणा से हाडोती के वीर जानना चाहिये ३ कमरबंधा बांधा ४ अप्सराओं और वीरों ने साथ ही ५ श्रेष्ठ साज बनाये (यहाँ 'यों' शब्द से इधर अर्थ जानो) ६ इधर हूरों के चरणों में जावक लगाया और इधर वीरों ने पैरों में युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा के लंगर पहिने इधर अप्सराओं के पैरों में नेवर ७लगे (बजे) और इधर वीरों के ८ जघात्राण लगा (यहां प्रथम अप्सरा और पीछे वीरों का सजना यथाक्रम से जानना चाहिये) ॥ २९ ॥ इधर ६ लहँगा (घागरा) और इधर १० कवच शोभित हुए ११ इधर विमान मंगवाये और इधर १२ घोड़े मंगवाये १३ रागों से १४ हर्ष पाया १५ सिंधवी राग (बड़ा राग) १६ हाथों में सितार बजाने की नखिलपं (मजराफ) लगाई १७ खड्ग की मूंठ ॥ ३० ॥

यौं बीशा गन अग्गहे[1] यौं तेग तुलाया ॥
यौं रैसना[2] आरोप यौं कटिबंध कसाया ॥
यौं कुंकुम कुच लग्गि[3] यौं दृढ छत्तिन[4] छाया ॥
यौं कंचुक मंडे कुचन[5] यौं बच्छ बनाया ॥ ३१ ॥
यौं वलयावलि[6] हत्थ यौं दसतान दिपाया ॥
यौं मंद्दल[7] भुजबंधसौं सय सज्ज सुहाया[8] ॥
हार दवाली[9] दोउं उरघौं[10] उर अंतर आया ॥
यौं मुख बीरी आप यौं गंगोदं[11] अचाया ॥ ३२ ॥
यौं मंडे नथ नैक्क[12] यौं धक्कि कोप धमाया ॥
यौं दृग रेखा अंजनी[13] रैंजगुन[14] यौं छाया ॥
पिंजूसन[15] तौटंक यौं यौं कुंडल पाया ॥
सोभा सिर सीमंत[17] यौं यौं टोप लगाया ॥ ३३ ॥
यौं कैबरीन[18] प्रसून यौं तुररेन झुकाया ॥
यौं लग्गे मन मोहैं[19] यौं मन मोहैं[20] बिहाया ॥
नेउर पक्खर नाद त्यौं बिबि[21] २ ओर बढाया ॥
तिक्खै कैडच्छा[22] सज्ज यौं सितं[23] भल्ल सजाया ॥ ३४ ॥

---

१ आग्रहे (ग्रहण किये) २ कटिमेखला (करधनी) लगाई ३ कुचों पर केसर लगाई ४ छातियों पर कवच छाये ५ अप्सराओं ने कुचों पर कंचुकी (कांचली) रची और इधर वीरों ने वक्ष (छाती) का बनाव किया ॥३१॥ ६ चूड़ियों (कंकणों) की पंक्ति ७ मादलिया (स्त्रियों के भुजों का भूषण विशेष) ८ हाथों में भुजबंध सुहाये (यहां सामान्य हाथ शब्द के कहने में भुजबंध के योग से भुज जानो) ९ पदलड़ा १० दोनों ओर छाती पर आये अर्थात् अप्सराओं की छाती पर पहने लगे ११ गंगाजल पिया ॥ ३२ ॥ १२ नासिका में, इधर वीरों ने क्रोध युक्त होकर श्वास प्रश्वास सेना के फुलाये १३ काजल की १४ रजोगुन १५ टो-टोर्यादा ... माथा गुथ... ये दोनों स्त्रियों के कानों में भूषण हैं इधर वीरों ने कुंडल पहने १७ माथा ... ॥ ३३ ॥ १८ (केशपाश कराकर) शिर शोभा लगाई और वीरों ने टोप लगाये ... केसपाश में फूल लगाके १९ इधर अप्सराओं ने वीरों को वरने का मन में ... २० और इधर वीरों ने घर से स्नेह छोड़ा २१ दोनों ओर ... (स्नेह) लगाया ... तीखे कटाक्ष २३ तीखे भाले ॥ ३४ ॥

यों खोडस१६ शृंगार यों *उपचार विधाया ॥
यों मन छाया मैंन यों रनपैं ‡उफनाया ॥
यों छक पाया उरबसी यों नृप उमगाया ॥
यों रंभा हुलसी इतैं बल्ल पित्थल पाया ॥ ३५ ॥
यों मन फुल्ली मैंनका यों अमरं उम्हाया ॥
यों सु घृताची यों प्रयाग सुराग रचाया ॥
एत्थ सुकेसी सज्ज यों मेरजाद मुदाया ॥
यों बरघोसा नच्चि यों खग तोक तुकाया ॥ ३६ ॥
यों हरखादल अच्छरिन बल भूप बनाया ॥
गज बैंठे इभपाल गन बिरुदार मिलाया ॥
अंग गरद्दी मजिकैं रन रंग लगाया ॥
थप्पे कुंभ सुबोल दे कुंरुबिंद चढाया ॥ ३७ ॥
मढि कलम जगालकी हरिताल मिलाया ॥
जग हवद्द डारिकैं गुंड साज सजाया ॥
बंधि बरत्तों सिर सिरी धरि धूप धुंमाया ॥
मोदक गज मिलायकैं जल देगन पाया ॥ ३८ ॥
इभ चाकर मांकर ठच्छट उढि आसन आया ॥
बोरी बाहिर लैनकों आलान छुराया ॥
करि अग्गैं करिनीनिकों रचि हौक डगाया ॥

---

*सोलह प्रकार से देवपूजन किया। इधर अप्सराओं के मन में कामदेव छाया और ‡ इधर वीर युद्ध पर पढे १उम्मेदसिंह २ पृथ्वीसिंह ॥ ३५ ॥ ३ अमरसिंह ४श्रेष्ठ प्रीति ५ मुरजादसिंह ६ हर्षित हुआ ७ तोकसिंह ने ॥ ३६ ॥ ८ हर्षित (प्रसन्न) ९ सेना १०महावतों के समूह ने ११स्तुति करके १२ श्रेष्ठ वचन कहकर हिंगुलू लगाया ॥ ३७ ॥ १३ हाथी की पाखर १४ रस्सों से १५मस्तक का भूषण बांधकर १६ धूप देकर धूम युक्त किया १७ लड्डुओं के ॥ ३८ ॥ १८ हाथियों के चाकर बदरा की भांति कूदकर १९ ठाण के बाहर लेने को २० खंभों से खोले २१ हथनियों को आगे करके २२ छोटे भालों से क्रोध दिखा कर डिगाये

यों[1] बुंदीस अनीकमैं[2] गजराज चलाया ॥ ३९ ॥
मिलि हयपालक[3] मंदुरन[4] तिम हयन तुकाया ॥
खेह गरद्दी कड्ढिकैं दुति देह दिपाया ॥
कबिका[5] देत कुरंग[6] गति छबिका[7] छक छाया ॥
रविका[8] मन रिझवायकैं पबिका[9] जव पाया ॥ ४० ॥
मीनन पलट मिटायकैं जर जीनन भाया ॥
खीनं[10] न गति पीन न पैंसम[11] जंव[12] हीन न जाया ॥
पक्खर अंग पसारिकैं क्रम तंग कसाया ॥
राह पंखोंके[13] लाहकों गजगाह[14] झुकाया ॥ ४१ ॥
वाह चहूं घाँ[15] उच्चरी गति थाह न गाया ॥
दीप कनोती चांप[16] दुति खंधों बलखाया ॥
काल ब्याल[17] गति जालके लटिपाल लगाया ॥
कट्टोरे खुर तारके[18] खुरतारे[19] सुहाया ॥ ४२ ॥
दसमी१० के द्विजराजतैं[20] जिम राहु जुराया ॥
हाटकके गल हल्लरे झल्लरि झहनाया ॥
छोरि दुबग्गों मोरिकैं करडोरि झिलाया ॥
नक्खी पायन नेउरी मग सोर मचाया ॥ ४३ ॥
बाजी ए नृप बंटिकैं सब बीर सजाया ॥
अप्प चढे हय हंजपैं[21] करकंज[22] तुकाया ॥

१इसप्रकार २सेना में ॥३९॥ ३घोड़ों के चाकरों ने ४हयशालाओं में ५लगाम देते ही ६ हरिण की भांति ७शोभा के ८सूर्य का मन प्रसन्न करके ९वज्र का वेग ॥ ४० ॥ १०जिन की गति क्षीण नहीं है ११शरीर के बाल मोटे नहीं हैं १२जिसका वेग हीन नहीं है ऐसे (पवन) के पुत्र १३पंखों का लाभ लेने के राह से १४ गजगाव लगाये ॥ ४१ ॥ १५चौतरफ दीपक के समान कनोती और १६ धनुष की टेढ के समान झुका हुआ कंधा १७काले सर्पों के समान अयाल १८ कटोरे के समान खुरों पर चांदी के १९खुरताल शोभित हुए ॥ ४२ ॥ २०चन्द्रमा से ॥ ४३ ॥ २१ हंज नामक घोड़े पर उम्मेदसिंह चढे २२ कमल रूपी हाथों में ॥ ४४ ॥

नायाउत पित्थल अरथ मृगडान मिलाया ॥
अमरसिंह रट्ठोरको नटराज चढाया ॥ ४४ ॥
सूर भवानीसिंहको दिलपार दिवाया ॥
प्रहरनकाज प्रयागको खगराज खुलाया ॥
तोक महासिंहोतको झपटैत झिलाया ॥
गुहुकमहर मग्गजादको जयनाद दिखाया ॥ ४५ ॥
इत्यादिक हय घटिकैं नृप वीर चढाया ॥
सोदरजुत सुंडातको कोटा पहुँचाया ॥
ढुंढारे दल ढाहिवे बल अप्प बनाया ॥
बेंवेंतुग्गस बंधिकैं कमनैत कसाया ॥ ४६ ॥
बेंनेंर खग्ग बलग्ग कसि कर धूप घुनाया ॥
बेंनर चाप बजायकैं सिर अंभ लगाया ॥
केक तुपक्को धारिकैं अगु मारि उडाया ॥
सेल बरच्छी साजिकैं अच्छी गति आया ॥ ४७ ॥
अच्छे बाँजि उडायकैं मन आँजि मिलाया ॥
बेंडागग अलापिया अँडा छक छाया ॥
बंदीजन रसवीरमें भट छाक छकाया ॥
ज्यों गिरिनागी गानपैं सिर नाग उठाया ॥ ४८ ॥
कैं लुब्बन बय रूपाहपैं नायक हरखाया ॥
जानि मितपैच रककों नवएही निधि पाया ॥
अंक उदैगिरि आत कें बाँरिज बिकसाया ॥
पिक्खि मतगज थूलों कैं सद्दल चलाया ॥ ४९ ॥

---

१ प्रहार करने (शत्रुओं का मारने) के अर्थ ॥ ४५ ॥ २ जनाने को ३ तरकस (भाथे) ॥ ४६ ॥ ४ सुन्दर अथवा टेढे खड्ग कसकर ५ हाथ में खड्ग लिया ६ आकाश में मस्तक लगाया ॥ ४७ ॥ ७ घोडे ८ युद्ध में फालसाराग (सिंधूराराग) १० भाट लोगों ने ॥ ४८ ॥ ११ कृपण दरिद्री को १२ सूर्य का उदय होने पर माना १३ कमल फूले १४ मानों हाथियों

उत्तरके पवमान[1]तैं घन जानि घुराया ॥
जानि दिवाकर[2] जेठमैं बहु ओज[3] बढाया ॥
इक्खत जिम हिमकर[4] उदै अंबुधि[5] उफनाया ॥
सोलह१६ बेर कि सुक्र[6]मैं तपनीय[7] तपाया ॥ ५० ॥
पावक[8] मारुत[9] पायकैं हेतिन[10] हुलसाया ॥
कामंदक[11] मग लग्गिकैं बल भूप बढाया ॥
ज्यों करिणी[12]के जालपैं सुंडाल सुहाया ॥
अंधक[13] अग्गैं आनिकैं सिव जानि सजाया ॥ ५१ ॥
गोवर्द्धन[14] कर लैनकों जिम कैंह्न[15] कसाया ॥
जानि जटासुर जंगपैं भुज भीम[16] बजाया ॥
कै गजकेतन[17] कदनकों कपिकेतु[18] कुपाया ॥
ज्यों लंघन जलरासि[19]कों हणुमा[20] हुलसाया ॥ ५२ ॥
कै रावन बध काजपैं रघुराज रिसाया ॥
कै बाहर[21] प्रह्लादकी नरनाहर[22] आया ॥
जिम[23] एका१इक१ बिंदुतैं दस १० गुन दरसाया ॥
बढि असैं रसबीरमैं चढि भूप चलाया ॥ ५३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ संभर

का समूह देखकर सिंह चला॥४९॥ १ उत्तर दिशा के पवन से २ सूर्य ने ३ प्रताप ४ चन्द्रमा को उदय हुआ देखकर ५ समुद्र बढा ६ अग्नि में ७ सुवर्ण को (सुवर्ण को सौलह बार तपाने से कुंदन होता है) ॥ ५० ॥ ८ अग्नि ९ पवन को पाकर १० ज्वालाओं से प्रसन्न हुआ ११ कामंदक मुनि की कीहुई नीति के मार्ग लगकर राजा ने सेना बढाई १२ हथनियों के समूह पर हाथी शोभित हुआ १३ अंधक नाम असुर को आगे लेकर ॥ ५१ ॥ १४ गो पर्वत को हाथ में लेने के लिये १५ कृष्ण साज्जित हुए १६ भीमसेन ने १७ क का नाश करने को १८ अर्जुन क्रोधित हुआ १९ समुद्र का उल्लंघन करने को २० हनुमान उत्साहित हुआ॥५२॥ २१ सहाय २२ नृसिंह २३ जिस प्रकार के अंक पर एक बिंदी लगने से दश गुना होजाता है ऐसे ॥ ५३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, चहुवाणों के

नरेशसज्जीभवनजादिनीवीरवाजिवारणावर्णन षोडशो १६ मयूख ॥ १६ ॥ ॥ २९७ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कुंम्म कटक[1] जबही सुन्यो, हठि इकत हमगीर ॥
अरि तबही पित्थल अमर, भट आये नृप भीर ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

जब कूरम जयसिंह दई बुंदिय दलेल कँहँ ॥
तबहि नगर निम्मान छोरि पित्थल रानौं पँहँ ॥
उदयनेर अति धर्म गयो निज बल नाथाउत ॥
सुपहु रान सग्राम जाहि रक्ख्यो सनेह जुत ॥
उमराव रवीय पद्रह १५ अधर पालसोलि उप्पर प्रथित ॥
बैठारि उच्च आदर बिरचि हरख्यो नृप चालुक्य हित ॥ २ ॥
इक्क समय चालुक्य निडर पित्थल नाथाउत ॥
रहत सभाविच रान जप्यो बुंदहिं अधर्म जुत ॥
रंव प्रभु निंदा सुनन भीम उठ्यो पित्थल भट ॥
पटा सहँस पचास ५०००० छोरि हक्यो बछित बट ॥
हुँन रान पहुँचि नैंति जुत कहिय माफ करहु अपराध मम ।
मन्नी न तदपि पित्थल सुमति अक्खी तुम अकुसल अधम ३

का सज्जित होना सेना के बीर और घोड़े और हाथियों के वर्णन का सौलहवा १६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सित्यानवे २९७ मयूख हुए ॥

१ कछवाह की सेना २ शीघ्र ३ उम्मेदसिंह की सहाय ॥ १ ॥ ४ राणा के पास (उदयपुर) ५ अत्यन्त धर्मवाला ६ अपने पन्द्रह उमरावों के नीचे और पारसोली के ऊपर (इस समय सब से नीचे की बैठक आसींद के रावत की है परन्तु उस समय आसींद का ठिकाना नहीं बन्धा था तब से नीचे की बैठक पारसोली के रावकी थी) ७ प्रसिद्ध ८ सोलखी को हित सहित रक्खा ॥ २ ॥ ९ बुंदसिंह को १० अपने स्वामी के ११ चाहे हुए मार्ग से चला १२ शीघ्र १३ नम्रता

*दुजनसल्ल कोटेस सुनत यह सचिव पठायो ॥
लिखि कग्गर अति ललित बहुत सतकार बढायो ॥
लिखी नगर निम्मान नाह इतही तुमरो घर ॥
आवहु गिलहिँ सु अन्न वंटि खैहैं वीरनवर ॥
पित्थल सु बंचि उत्तर लिख्यो क्यों तुम हठ मंडत घनें ॥
मम जनक हन्यों आटोनि रन वलि बुंदिय वैरिय वनें ॥४॥
अग्ग नगर आटोनि भीम सालम जब जुट्टिय ॥
चालुक देवीसिंह तबहि असि धारन तुट्टिय ॥
कोटापति पुनि कितव वैर बुंदिय पर लायउ ॥
दुवर कारन दल बीच मंडि पित्थल पहुँचायउ ॥
सुनि दुजनसल्ल उत्तर लिखिय जानहु नहिँ मम दोस जिय॥
मम जनक हन्यों तुमरो जनक बुंदियसन पुनि वैर किय ॥५॥

॥ दोहा ॥

नहिँ रुचि तो आवहु नहिन, परिखद विच मम पास ॥
रहिये घर लहिये रुचिर, पटा सहँस पंचास ५०००० ॥ ६ ॥
इत्यादिक उत्तर लिखि रु, दुजनसल्लहित दिट्ठि ॥
सचिव भेजि निज साम करि, बुल्ल्यो पित्थल निट्ठि ॥ ७ ॥
अमरसिंह रट्ठोर इत, रुट्टल राम कुलीन ॥
कछवाहन वरवाड़ लिय, निकस्यो तब छिति छीन ॥ ८ ॥
निज सुत पंचक५जुत निडर, स्त्रीजन अनुग समेत ॥

सहित ॥ ३ ॥ * कोटा के पति दुर्जनशाल ने † मनोहर ‡ हे निम्माण के पति १ मेरे पिता को आटोंण ग्राम के युद्ध में मारा था और बूंदी से वैर किया था ॥ ४ ॥ २ कोटा का महाराव भीमसिंह और सालमसिंह ३ छली ४ पत्र में ५ मेरे पिता ने तुह्मारे पिता को मारा था और बुंदी से भी वैर उन्होंने किया था ॥ ५ ॥ ६ सभा में ॥ ६ ॥ ७ स्नेह दिखाकर अथवा स्नेह की दृष्टि से ८ पृथ्वीसिंह को बुलाया ॥ ७ ॥ ९ रामसिंह रोटला के कुल वाला १० भूमि छिनजाने से ॥ ८ ॥ ११ सेवकों सहित ॥ ९ ॥

सहि बिपत्ति कोटा सहर, आयो नीति *उपेत ॥ ९ ॥
पटा सहँस पैंतीस३५००० मित, करि हित दिय कोटेस ॥
इम रक्खे पित्थल अमर, दुवर छल तिमिर †दिनेस ॥१०॥
ते भट दुवर बुंदीसपर, कूरम ‡दल सुनि आत ॥
तजि कोटापतिके पटा, आये रन उमडात ॥ ११ ॥
जोधपुर पें गजसिंह सुव¹, कुमर² अमर³ रट्ठोर ॥
मरन आगरा मंडयो, तोरि साहको तोर⁴ ॥ १२ ॥
अमर भीरें⁵ आये तबहि, बल्लू रु भाऊ² वीर ॥
पातसाहके तजि पटा, हठि जुज्झन हमगीर ॥ १३ ॥
तिमहि रान अमरेस सुत, करन⁶ अनुज भट भीम⁷ ॥
रक्खि खुरम मरनैं⁸ रच्यो, सगर कासी सीम ॥ १४ ॥
सगताउत मान⁹ सु सुनत, छिप्र¹⁰ उदैपुर छोरि ॥
पहुँच्यो कासी भीमें पँहँ¹¹, मरयो साह दल मोरि ॥ १५ ॥
इमहिं वीर पित्थल अमर, कोटा सैंन¹² करि कुच्च ॥
सैंमर¹³ वेर बुंदीससों, आनि मिले छक उच्च ॥ १६ ॥
अमरसिंह रट्ठोरकी, पतनीके गैंद¹⁴ पूर ॥
दुक्ख हुतो वहु दिननतैं, सक्यो तैंदपि¹⁵ न सूर ॥ १७ ॥
उतरत चम्मलि आपगा¹⁶, प्रिया भई गतप्रान ॥
सोहु अमर रट्ठोर सुनि, न मुरयो जग निदान¹⁷ ॥ १८ ॥
अभयसिंह जेठो तनय, पच्छो गेह पठाय ॥
अप्प च्यारि सुत जुत अइर, अमर स बुंदिय आय ॥ १९ ॥
मुहुकमहर त्योंही मरन, मेटन अघ¹⁸ मरजाद ॥

*नीति सहित॥९॥ †छल रूपी अन्धेरे के सूर्य॥१०॥ ‡सेना॥११॥ १ पति २ गजसिंह का पुत्र ३ अमरसिंह ४ पादशाह के प्रताप को तोड़कर ॥ १२ ॥ ५ सहाय॥ १३ ॥ ६ करणसिंह का छोटा भाई ७ भीमसिंह ८ युद्ध ॥ १४ ॥ ९ मानसिंह १० शीघ्र ११ भीमसिंह के पास ॥ १५ ॥ १२ से १३ युद्ध के समय ॥ १६ ॥ १४ रोग १५ तोभी ॥ १७ ॥ १६ नदी १७ युद्ध के कारण ॥ १८ ॥ १९ ॥ १८ पाप

सूर तुपक्क सजि पंचसत५००, आयो *नद्दत नाद ॥ २० ॥
सब भट हिय लाये सुपहु, बहु अद्दरि बुंदीस ॥
सहित प्रीत बंटी सिलह, सज्ज्यो जैपुर सीस ॥ २१ ॥
नाथाउत पित्थल निडर, सज्यो न वपु †सन्नाह ॥
अक्खी इच्छहु जो ‡जियन, लेहु बहे यह लाह ॥२२ ॥
सत बारह१२००इम सेन सजि, सादी[1] पद्दग[2] समेत ॥
उडहनि[3]के तट अमरपुर, खर्जि[4] चिंत्यो रन खेत ॥ २३ ॥
सजि बुंदिय उत्तर तरफ, हंक्यो नृप हुसियार ॥
पहुमी छाई पक्खरन, सेलन[5] गगन प्रसार ॥ २४ ॥
कोस तीन३ उप्पर कटक[6], मिले उभयद रन मोद ॥
उत्तर दक्खिनके अरे, पाउस[7] जानि पयोद[8] ॥ २५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ बुन्दीन्द्रसहायार्थचालुक्यपृथ्वीसिंहकबंधाऽमरसिंहहड्डमर्य्यादसिंहाऽऽगमनसेनाऽभिनिर्याणं सप्तदशो १७ मयूखः ॥ १७ ॥ ॥२९८॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

उंयो[9] रसबीर छयो नृप अंग, चल्यो अब सम्मुह लै चतुरंग ॥
चल्यो भट पित्थल[10] संकित सेस, चल्यो सुत च्यारि४नतैं अमरेस[11] ॥१॥
चल्यो मैरजाद[12] नमावत नाग, चले भट सोदर तोग१ प्रयाग२ ॥

---

* गर्जना करता हुआ ॥ २० ॥ २१ ॥ † शरीर में कवच नहीं पहना ‡ जो जीना चाहो सो कवच पहनने का लाभ लो ॥ २२ ॥ १ सवार २ पैदलों सहित ३ नदी का नाम है ४ क्रोध करके ॥ २३ ॥ ५ भालों के फैलाव से आकाश छाया ॥ २४ ॥ ६ सेना ७ वर्षा समय में ८ मेघ ॥ २५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, बुन्दी के इन्द्र की सहाय के अर्थ सोलंखी पृथ्वीसिंह, राठोड़ अमरसिंह और हाडा मरजादसिंह का आना और सेना के सम्मुख जाने का सत्रहवां १७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठानवे २९८ मयूख हुए ॥

९ वीर रस उदय होकर १० पृथ्वीसिंह ११ अमरसिंह ॥ १ ॥ १२ मरजादसिंह

भवानियसिंह चल्यो भट भूप, खुमान[1] चल्यो रन रावन रूप ॥२॥
चल्यो हरदाउत देविमृगेस, चल्यो सगताउत त्यों अचलेस ॥
चले भट भारत अर्जुन चंड, उदेहरि चालुक ओज अखंड ॥ ३ ॥
चल्यो नर नाहर नाहर वीर, चल्यो नवलेस हठी हमगीर ॥
चल्यो भट कर्ण महारन चाहि, अजीत चल्यो कछवाह उमाहि ४
चले इन्ह आदि बडे वर वीर, धपावन सत्रुन खग्गन धीर ॥
चल्यो इम बुंदिय भूपति चक्क, वितडन पिट्ठि खुली वैहरक्क ॥ ५ ॥
अहवर भो रज अंबर ओघ, मच्यो वडि ध्वांत वन्यों रवि मोघ ॥
भयो निसिचारन आनँद भुल्लि, डरे डिगि चक्किय चक्कहु डुल्लि ॥६॥
चले इत बारहसै १२०० रन रीस, पिले उत गज्जि हजार पचीस
२५००० ॥
तज्यो भव मोह भँज्यो कर तेग, उठे भट राजिय वाजिय वेग ।७॥
धमधमि भुम्मि धुजी हय धार, घमघमि घुग्घर पक्खर भार ॥
डमडमि डाहल डिंडिम डक्क, ठमठमि सिंधुर घट ठमक्क ॥ ८ ॥
नरायन पिक्खिय बुंदिय नाह, कह्यो जुर पाहि गहो कछवाह ॥
इती कहतै दुहुँघाँ उमराव, मिले तिम मिले पय सक्कर भाव॥ ९॥

१राजा का उमराव २खुमाणसिंह॥२॥ ३ देवीसिंह ४ अचयसिंह ॥ ३ ॥५ मनुष्यों म सिंह रूप, नाहरसिंह ६ चक्र (सेना) ७ हाथियों की पीठ पर ८ ध्वजा खुली ॥ ५ ॥ ९ आकाश म १०रज का समूह छागया जिससे ११ अंधेरा होकर सूर्य१२ ढकगया और उस अंधेरे से भूलकर१३निशाचरों को आनंद हुआ १४ चकवा चकवी भूलकर डरे और पास पासके हटगये ॥ ६ ॥ १५ ईश्वरीसिंह ने मजे १६ संसार स मोह छोडा और हाथों में१७खड्ग लिये १८ वीरों की और घोडों की पक्तियें वेग के साथ उठीं ॥ ७ ॥ १९ घोडों की गति से भूमि धूजा, डाहल आदि वैताल और योगिनिय आदि के वाद्य बजे२०हस्तियों पर घंट बजे यहां ठमठमि घमघमि आदि अनुकरण के शब्द हैं जिनकी व्याख्या करना अनावश्यक है किन्तु ये शब्द ही व्याख्या है) ॥ ८ ॥ २१ नारायणदास खत्री ने२२ बुंदी के पति (उम्मेदसिंह) को देखते ही कहा कि २३ वे दोनों ओर के उमराव जैसे २४ दूध और सक्कर मिले तिस रीति से मिलगये ॥ ९ ॥

बज्यो असि हड्डन अड्डन बाढ, गज्यो भय भीरुन बीरन गाढ ॥
दपट्टत लक्खन भक्खन दाय, झपट्टत तक्खनकों झमकाय ।१०।
लकक्कि छुट्टिय बान बिथार, धकक्कि घायन सोनित धार ॥
झगज्झगि आयुध भौं झगमग्गि, धगद्धगि उट्ठिय खग्गन अग्गि ११
कटक्कटि कंकट बंकट बाढ, खटक्खटि खावन डाकिनि डाढ ॥
चटच्चटि उच्छटि हड्डन संधि, गटग्गटि गिद्ध बपा चय बंधि ।१२।
खनक्खनि टोपनपैं खुरतार, भनब्भनि गोलिन ध्वान भयार ॥
झपज्झपि सेनन पच्छैति झुंड, लपल्लपि लुट्टत सिंधुर सुंड ॥१३॥
झमंझमि मार दुधारन झाट, धमंधमि सेलन ठेलन घाट ॥
लसैं असि कुंभन फाँक चलाव, बढै रद सव्बुवें तति बनाव ।१४।
भुजांतर होत कटारन भिन्न, खिचैं परि पंजर खंजर खिन्न ॥
कढैं खर तोमर दस्सन दारि, फबै पृथुरोम कि जालिय फारि ।१५।
चलैं चमकैं असि ओज अपार, छपाकर बाल कला छबिदार ॥
लटक्कहिं लुत्थिनपैं लगि लुत्थि, उछट्टहिं कट्टहिं लुत्थिन बुत्थि १६

हड्डियों के ऊपर तरवारों का आडा बाढ बजा और कायरों पर भय और वीरों पर गाढ ने गर्जना की, खाने के लिये लाखों दौड़ते हैं और घोड़ों को झमका कर दौड़ाते हैं ॥ १० ॥ ३ कांपते हुए बाणों का फैलाव छूटा और घावों से धक धक रुधिर बहने लगा. ४ शस्त्रों की कान्ति चमकने लगी और तरवारों की ६ अग्नि प्रज्वलित होकर उठी ७ तरवारों के घाव से ६ कवच कटकट करने लगे, खाने के लिये डाकनियों की डाढें खटकने लगीं और हड्डियों की जोड़ें खुलने लगीं ८ चरबी का समूह जोड़कर गीधनियें खाने लगीं ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ गोलियों का भयंकर शब्द होने लगा १० सेन (सिचाण) पक्षियों के ११ पंखों के समूह झप झप करने लगे और हाथियों की सूंडें लप लप करने लगीं ॥१३॥ दुधार खड्गों की मार मची और भालों के धकेलने से घाव हुए १२ हाथियों के कुंभस्थलों की चीरें करती तरवारों का चलना शोभा देता है और तांत से १४ साबुन कटे जैसे १३ दांत कटते हैं ॥१४॥ कटारों से १५ छातियें फटती हैं और खंजरों से पीला हुए अस्थिपंजर खिचते हैं १६ तीखे भाले १७ कवचों को फोड़कर निकलते हैं सो मानों जाल को चीरकर १८ मच्छी शोभा देती है ॥१५॥ १९ द्वितीया के चन्द्रमा की कला को विदारण करनेवाले खड्गों का ओज चमकता है ॥१६॥

उत्तहिं घोरनतैं भट आय, खेमैं मुंह जानि कबूतर खाय ॥
छुत्तकहिं छिछि छबक्कहिं घाय, छुटैं जलजंत्र कि जावक छाय ॥१७॥
चलैं टिकि जानुन के पयभिन्न, स्तनधंय केलि कि आंगन किन्न ॥
किते भुव लुट्ठत जात अचेत, खिचैं जनु कोटिंस हेलन खेत ॥१८॥
परे कति ऊरध हत्थ पसारि, किधौं हरि मंदिर बंदन कारि ॥
बबक्कत के गिरि बैंकर बेस, मनों नमि गीत रिझात महेस ॥१९॥
अटक्कत पाय रकाबन इंद्द, लटक्कत जानि अधोमुख सिद्ध ॥
कटैं सिर अंभ फिरैं भ्रमकारि, कुलालँ कि चक्कहिं भंड उतारि २०
थरत्थर कातर कंप कुढार, बिना तिय ज्यों नर पास तुसार ॥
उड़ै फटि पेट फदक्कत अंत, करंडनतैं कि भुजंग कढंत ॥ २१ ॥
बनैं बटके भट के रन बाद, सु ज्यों अंटके जगदीस प्रसाद ॥
रचैं दुव २ हत्थनके असि वार, किधौं कर ग्वत्तियें कंठ कुठार २२

१आकाश में कबूतर २कुलांट खाते हैं ३जैसे ३जावक का फुँहारा चले जैसे॥१७॥कितने ही कटे हुए ४चरणोंवाले ५घुटनों के बल चलते हैं सो मानों घर के चौक में ६दूध पीनेवाला बालक क्रीड़ा करता है, कितने ही अचेत होकर भूमि पर लोटते जाते हैं सो मानों खेत के ८कंकणा (ढेला) पर ७चावर (लोष्टमर्दन) खिंचती है॥१८॥कितने ही ९ ऊंचे हाथ करके पड़े हैं सो मानों विष्णु भगवान् के मंदिर में १० नमस्कार करते हैं ११ बकरे की भांति कितने ही गिरकर बबाक्क शब्द बोलते हैं सो मानों १२ नमस्कार करके शिव को प्रसन्न करते हैं (यज्ञ विध्वंस करके दक्ष के धड़ पर बकरे का मस्तक रखकर फिर जीवित किया तब दक्ष प्रजापति ने बकरे के मुख से शिव की स्तुति करके शिव को प्रसन्न किया था इस कारण अब भी लौकिक में बकरे की बोली से शिव की स्तुति करते हैं) ॥ १९ ॥ १३ नीचे लटकते हैं सो मानों १४ नीचा मुख करके सिद्ध लटकते हैं कटे हुए मस्तक १५ आकाश में १६ चक्र के आकार फिरते हैं सो मानों १८ चाक के ऊपर से १७ कुम्हार भांडा (मिट्टी का पात्र) उतारता है ॥ २० ॥ बुरी भांति कायर ऐसे कांपते हैं जैसे बिना स्त्रीवाला पुरुष पौष मास की १९ ठंड में कांपता है, पेट फटकर आंत उछलती हैं सो मानों २० टिपारों से सर्प निकलते हैं ॥ २१ ॥ युद्ध में हट करके टुकड़े टुकड़े होते हैं सो मानों जगदीश के प्रसाद का २१कलश फटता है, कितने ही दोनों हाथों से तरवार का वार करते हैं सो मानों दोनों हाथों से २२खाती २३काष्ट पर कुठार चलाता है ॥ २२ ॥

सेरैं[1] छतजात[2] छिदे उर सैंकि, नँमात[3] रजोगुनकी लहरैं कि ॥
गुटी[4] दृग ओर कढैं दृग लै रु, किधौं[5] अलि कामल[6] कोरक[7] लै रु २
धसैं कढि के दृग सोनित धार, बनैं पृथुरोमन[8] वारि बिहार ॥
सिंचानक[9] अंतहि लै नभ जात, अचानक गोत गुडी सम खात२
दिसा बिदिसान निसानन[10] नद्द, भरैं जनु घोर बलाहक[11] भद्द ॥
तुटी लगि टोप बजैं तरवारि, मनौं हरि मंदिर झल्लरि झारि ।२५
भई हलमल्ल[12] चलच्चल[13] भुम्मि, घटयो बल नाग निसासन घुम्मि ॥
रचैं धनु सिंजिनि[15] बेग बिसाल, किधौं रन थंभत जंभत[16] काल२
मचैं घन लोहित फुट्टत मत्थ, हसैं लखि जुग्गिनि खप्पर हत्थ ॥
समप्पत[17] हेरि सबै गन सीस, अपूरब हार बनावत ईस ॥ २७ ॥
थेइत्थेइ घुम्मत डाकिनि मत्त, तमासन प्रेत मलंगत तत्त ॥
किते रस[18] पान पिसाच करंत, रमैं कति लोहित तुंद[19] भरंत ॥२८
करैं कति आमिखनैं[20] अनुराग[21], बनावत के मुख मेद[22] बिभाग ॥

बरछी से छाती छिद कर २ रुधिर १ चलता है सो मानों शरीर में रजोगुण लहरें नहीं ३ समाने के कारण बाहर निकलती हैं ४ गोली नेत्रों में लगकर नेत्र निकालती है सो मानों ५ भ्रमर ६ कमल की ७ कली को लेकर निकलता है ॥ २३ ॥ नेत्र फटकर रुधिर की धार में ऐसे घुसते हैं जैसे ८ मच्छी विहार जल में होवे ६ बाज पक्षी आंत लेकर आकाश में जाता है और पतंग (कनकौवा) के समान अचानक गोत खाता है ॥ २४ ॥ दिशा दिशाओं में १० नगारों का शब्द होता है सो मानों भादवा के महीने में ११ मेघ का भयंकर शब्द होता है, टोप के ऊपर लगकर तूटी हुई तरवार बजती है सो मानों विष्णु भगवान् के मंदिर में झालर बजती है ॥ २५ ॥ १२ अत्यन्त भय से अथवा बहुत लोगों के मिलकर चलने से भूमि १३ चलायमान होगई और निश्वासों से घूमकर १४ शेष नाग का बल घट गया, धनुष से खिचकर १५ प्रत्यंचा बडा वेग रचती है सो मानों यमराज युद्ध में खड़ा होकर १६ उबासी (जमुहाई) लेता है ॥ २७ ॥ मस्तक फूटकर अत्यंत लोहू मचता है जिस को देखकर डाकिनियें हसती हैं और शिव के सब गण मस्तक हेरकर शिव को १७ देते हैं ॥ २७ ॥ कितने ही प्रेत १८ स्वाद लेकर रुधिर पीते हैं और कितने रुधिर से १९ पेट भरकर खेलते हैं ॥ २८ ॥ कितने ही २० मांस से २१ प्यार करते और कितने ही २२ चरबी आदिका बंट करते हैं,

करैं मृदु*कीकस जिम्मन केक, भ्रहारत†कोशिक मास अनेक २९
खरे कति ‡घस्मर शुक्रहिं खात, भये रन दुर्लभ सत्त७हि धातु ॥
रचैं सिव हास नचैं भयकार, जचैं जिय बुद्धियको जयकार ॥३०॥
अहत्रह ततिन सिंधुव सद्द, मच्यो रन भ्रगन यों भ्रवमद्द ॥
गद्दकहिं चक्खहिं गिद्धनि गोद, वपा लहि मडत कक विनोद ।३१।
निकासत चिल्हनि चचुन नैन, गहैं हिय सेन गहक्कत गैन ॥
किलोलहिं स्यार सिवा किलकारि, चखैं पल मडल मडलं चारि ३२
उठी रन भ्रगन खग्गन भ्रग्गि, लसी भ्रटवी नव ज्यों दव लग्गि॥
जरैं गजढालन तालन जूह, जरैं गजसुडि तमालन जूह ॥ ३३ ॥
कटे पय कुभिं न तिंदुव तत्त, जरैं गज उन्नत पव्वय जत्त ॥
वरैं हय वालधि तेजन तवें, लगैं लटिपाल कि दर्भ कदव ।३४।
सिंखा वलि सूरनकी तृन गुच्छ, मलीमस कास सुडल्लिय मुच्छ ॥

---

*कितने ही कोमल हड्डियों का भोजन करते हैं †अनेक घूघू निशाखे खाते हैं ॥२९॥ कितने ही ‡ भक्षण शील (बहुत खाने वाले) खड़े खड़े ही १ वीर्य ही खाते हैं उस युद्ध में उन घस्मरों को सातों ही धातु दुर्लभ होगई, वैद्यक के मत से ये धातु ये हैं "रसाच्च रजश्च नारीणां काले भवति गच्छति ॥ शुक्रमासभव स्नेहो य सा सकीर्त्यते वसा ॥ स्वेदो दन्तास्तथा केशास्तथैवोजश्च सप्तमम् ॥" २ भयकर रीति से नाचते हैं और जीव से बुद्धि का जय होना ३ मांगते हैं ॥ ३० ॥ ४ इसप्रकार का पीडाकारी युद्ध भया॥३१॥५गीदड़ और गीदड़ियें किल्लोलें करती हैं ६ कुत्ते ७ चारों ओर फिरकर मांस खाते हैं ॥ ३२ ॥ युद्ध के चौकमें तरवारों से अग्नि लगी सो वन में लाय लगने के समान शोभायमान हुई जहां ८ हाथियों के झंडे जलते हैं सोही ताड़ वृक्षों का समूह जलता है और हाथियों की सुंड जलती है सोही ९ तमाल वृक्षों का समूह जलता है ॥ ३३ ॥ १० हाथियों के कटे हुए पग जलते हैं सोही ११ तींदू वृक्ष हैं १२ ऊंचे हाथी जलते हैं सोही जलनेवाले पर्वत हैं १३ घोड़ों का वालधा जलता है सोही १४ घांस का १५ घटा (समूह) है और घोड़ों की यालें (केसवालियें) जलती हैं सोही १६ डाभका समूह जलता है ॥३४॥ १७ वीरों की चोटिये जलती हैं सो १८ घासके पूले हैं, हाथी मूँछ जलती हैं सोही २० कास (तृणविशेष) का १९ कचरा जलता है

जरैं छंगशावलि खेटक जाल, बरैं असिकोस पृथग्विध व्याल ३७
दहैं दु सृदुच्छद छल्लि दुकूल, किरैं चिनगी सुहि पान कुकूल ॥
जरैं तहँ तोमर ते त्वचिसार, तचैं गवलावलि रूप तुखार ॥ ३६ ॥
प्रजारिय भूपति यागति अग्गि, झिली रँनरंग मिली झगमग्गि ।
अपूरब फैलिय ज्वाल अलात, बचैं तृनके जलके जरिजात ।३७
अनूरुहिँ आतुर अक्खिय अंक्क, चढे रन बुंदिय जेपुर चंक्क ॥
तुरंगम रुक्कहु खंचि खलीनँ, कुतूहल पिक्खहु वीर बलीन ॥३८।
दिसा बिदिसान कृसानु दिखाँहिँ, मच्यो दव ग्रीखम मद्दव माँहिँ ।
निहारहु होत अनीकन नास, तपैं भुव तक्कहु चक्क तमास ॥ ३९ ।

॥ प्रतिलोमाऽनुलोमार्द्धम् ॥

तुदे नर रीस रवीसम लाल, तुले हय जेम हले सु कराल ॥
लराक सु लेह सजे यह लेतु, ललाम स वीग सर्गन देतु ॥ ४० ।

२ ढालें जलती हैं सोही जलने वाले १ छायाओं (बडों) की पंक्ति है ३ तरवारों के म्यान जलते हैं सोही ४ नाना प्रकार के सर्प जलते हैं ॥ ३५ ॥ ७ वस्त्र जलते हैं सोही मानों ६ भोज.पत्र के ५ वृक्ष का जलना है और पवन से अग्निकण ८ गिरते हैं सोही ९ तुप की अग्नि उड़ती है १० यहां भाले जलते हैं सोही मानों ११ वांस जलते हैं और वन की अग्नि में जलनेवाली १३ रोजों की पंक्ति के समान १४ घोडे १२ जलते हैं ॥ ३६ ॥ राजा उम्मेदसिंह ने इस प्रकार की अग्नि लगाई सो १५ उस रणरंग में चमकती हुई आनंद पूर्वक ठहरी अपूर्व रीति से उस ज्वाला के १६ अगा फैले जिनसे १७ तृण (मुख में तृण लेने) वाले बचते हैं और १८ जल (पराक्रम) वाले जलते हैं ॥ ३७ ॥ १९ सूर्य के सारथि अनूरु से २० सूर्य ने कहा कि २१ सेना २२ लगाम खैंच कर घोड़ों को रोक, बलवान् वीरों का तमासा २३ देखेंगे ॥ ३८ ॥ दिशा दिशाओं में २४ अग्नि दीखती है सो २५ ग्रीष्मऋतु के समान भादवा के महीने में अग्नि लगी २६ सेनाओं का नाश होता है सो देखो और भूमि तपती है जिसका और सेना का तमासा देखो ॥ ३९ ।

(आधे छंद को सीधा पढकर उसीको उलटा पढने से पूर्ण छन्द होजाता है और उसका अर्थ बदल जाता है सो आगे बताते हैं) मनुष्य २७ पीड़ा युक्त होकर क्रोध में २८ सूर्य के समान लाल हुए और जैसे २९ घोड़े उठाये तैसे ही भयंकर चले ३१ सो (वे) ३० लड़नेवाले ३२ स्वाद लेकर यह आनंद लेते हैं और वे ३३ सुन्दर ३४ शरीरों को देते हैं इस छन्द में "तुद व्यथने" इस धातु से

अस्मत्सजातीयेष्वेव प्रसिद्ध गीतनामक मरुदेशीय छंदोनाम्ना त्रिकूटबद्धम् ॥

उम्मेद भूपति अगमैं रसवीर सकुंलि रगमैं बरबीर बारहसै१२०० प्रवीरन चंक्क लैं चहुवान ॥

जयनैर सम्मुह जोरसौं भिलिं खग्ग झारिय भोरसौं बर गुमर असिवर संमर लागि झर कुनर छरेतर हुनैर हत कर जबर खैंग सर गर्जैग जय धर अडर भैर भिलि कचरधैन कर अमरपुर मचि दैंवर दरवैर उदर पर मिलि भुखर पलचर खैचर चय अैर खपर खरभर पहर इक वजि टकर धरपर घोर इम धैंमसान ॥

कैर वाम तोक प्रयागठै अमरेस दक्खिन भाग ठै मरजाद पित्थल अैग्ग मडिय वीच अैप्पन बाजि ॥

विरुदालि वदिनैं वित्थरे अतिवेग सम्मुह उप्परे वजि कैटक

तुदा शब्द बना है जिसका अर्थ पीडित होना है और "लिह आस्वादने" इस धातु से लेह शब्द बना जिसका अर्थ स्वाद लेना है ॥ ४० ॥ "ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि यह हमारी (चारण) जाति ही में प्रसिद्ध ऐसा मरुभाषा का गीत नामक त्रिकूटबद्ध छंद है" राजा उम्मेदसिंह अपने शरीर में १ वीर रस २ भरकर ३ युद्ध में बारह सौ वीरों की ४ सेना लेकर उस चहुवाण ने ५ जयपुरवालों के सम्मुख ६ भिड़कर ७ प्रभात से तरवार चलाई जहां ८ श्रेष्ठ घमंड के साथ ९ युद्ध में १० कष्ट लगकर खोटे मनुष्यों के ११ अत्यन्त छल को १२ हुनर (इल्म) से मिटाकर १३ बड़े तीक्ष्ण बाणों के १४ निरंतर प्रहार से जय को धारण करके निर्भय १५ वीरों से भिलकर १६ शत्रुओं का कवच धारण किया १७ अमरपुरा के युद्ध में १८ दबदबा (शीघ्रदौड़) मचकर और उदर के ऊपर १९ शब्द करते हुए मांस खानेवाले मिलकर २० आकाश में विचरने वालों का समूह २१ अंडा और दधी के खप्परों की खलभल होकर भूमि पर एक पहर टक्कर बजकर इस प्रकार का २२ युद्ध हुआ राजा के २३ वाम हाथ को तोकसिंह और प्रयागसिंह हुए और अमरसिंह २४ दाहिनी ओर रहा, इसीप्रकार मरजादसिंह और पृथ्वीसिंह २५ आगे रहकर बीच में २६ अपना (उम्मेदसिंह का) घोड़ा रहा २७ भाटों की बिरुदावली फैली और गर्व से सम्मुख उठ २८ सेना को दबाने देनवाली रपक (टक्कर) हुई

दमनक रचक [1]धमचक्क [2]अटक दैक तक मुलक अकबक अछक छक्क भट ललक अति [3]धक्क तुपक चलि हक्क [4]सलक्क इक्क टक्क [5]गरक्क रँग झक्क फरक्क [6]बहरक चमक्क खुर [7]सुचि झमक्क चक्कमक्क किलक्क डक्क लागि [9]अजक्क चउ४ [10]चक्क पुलक्क सक्क कर घम्मक्क प-खरक्क अरक्क रज ढक्क [11]आजि ॥

अतिमोद जुग्गिनि [12]उल्लसैं हर देवि नारद त्यों हसैं डरदेत लेत डकार डाकिनि प्रेत हेत [13]पसार ॥

[14]क्रमनैंत तीरन तानिकैं [15]पखरैत बेधत [16]पानिकैं [17]बुधतैंनय हित जय प्रापि नय बय [18]छप्पय [19]रनसुम अभय [20]अतिसैय बिजय [21]चैय भुत्र [22]बलैय बिसमय प्रलय मय भय समय निरदय उदय रवि नयनि-[23]लैय [24]अतिरैय अजय [25]खैयकर [26]अखयजय [27]अँय उभय [28]सैय पय हृद-य [29]अपचय कटय भट [30]रैमय निचय हय गय मार हीन सुमार ॥

---

१ युद्ध में २ अटक नदी के जल पर्यंत का देश घबराकर अर्थात् बादशाही देश तक घब-राहट पहुँचकर, और आर्य्यावर्त की सीमा भी अटक ही है अछक छकेहुए वीरों ने ललकार करके ३ अत्यन्त क्रोध से बढ़कर ४ बंदूकों की निरन्तर सलक की (बहुत बंदूकों के एक साथ चलाने को सलक कहते हैं) ५ गहरे रंग में डूबी हुई ६ ध्वजायें उड़ीं और ८ चमक के समान घोड़ों के खुरों से ७ अग्नि च-मकी और कालिकाओं की किलकारी होकर उनके वाद्य बजे, प्रसन्नता में संदेह करके अथवा प्रलय का संदेह करके रोमांच होकर १० चारों दिशाओं में ९ अचैन फैला और घोड़ों की पाखरें बजकर ११ युद्ध की रज से सूर्य ढक गया, योगिनियें अत्यन्त हर्ष से १२ फूलती हैं इसीप्रकार महादेव, पार्वती और नारद मुनि हसते हैं, डाकनियें भय देनेवाली डकारें लेती हैं और प्रेतों से स्नेह १३ फैलाती हैं १४ बाण चलानेवाले तीरों को खैंचकर १६ पराक्रम करके १५ पाखरोंवालों को बेधन करते हैं १७ बुधसिंह के पुत्र (उम्मेदसिंह) को विजय प्राप्ति कराने के अर्थ नीति के वचन कहते हैं और १६ युद्ध रूपी पुष्प के १८ भ्रमर २० अत्यन्त निर्भय होकर २१ देशों के समूहवाले २२ भूमि मंडल पर प्रलयमई निर्दय समय का संदेह कराकर सूर्य के समान उदय हुए वे वीर २३ नीति के घर २४ बड़े वेगवान् २५ पराजय का नाश करनेवाले और २७ आगे आनेवाले शुभ भाग्य से २६ अक्षय विजय करनेवालों ने २८ दो-नों हाथ, पग और हृदय की २९ हानि (नाश) करके वीरों के ३० समूहों को

तुंगी रचैं कति तेहरी किंमु श्रद्रि लंघित केहरी फटि मत्थ भेजन जुत्थ फैलत नूतन कि नवनीतं ॥

छिकि टोप बाँहुल उच्छटैं कटिकालिं कंकटकी कटैं भट गरट मिलि थट पुरट छट पट कुघट घट परि श्रवट कट कैंट कपट तट अति झपट रन श्रंट उबट वट रट बिकट रैंहचट पलट नट गति उलट झँटपट उछट खँगझट निपँट अघ दट दा ट दिय भिलि निकट प्रतिभट रपट मचि रन प्रकट रजबंट जुरत चाहत जीत ॥ ४१ ॥

॥ अन्त्यानुप्रासिनी रोला ॥

बुंदी जैपुर उलटि वीर आप तिं अखारैं ॥
गायक सिंधू तोर ग्राम आलाप उचारैं ॥
भुम्मि मचक्कै कटक भार फन नाग पसारैं ॥

काटे और हाथी घोड़ों के समूह तो बिना गिनती (बेशुमार) मारे १ कितने ही घोड़ तीन तीन मलग लेते हैं सो २ मानों ३ पर्वत को उल्लंघन करता हुआ सिंह मलग (छलांगें) भरता है और मस्तक फटकर भेजों (मस्तिष्क) का समूह फैलता है सो मानो नवीन ४ मक्खन फैलता है, टोप फटकर ५ दस्ताने (बाहुत्राण) उड़ते हैं ७ कवच की ६ कड़ियों की पंक्ति कटती है ८ वीरों के अत्यन्त समूह मिलकर (यहां अधिकता दिखाने के कारण गरट और थट्ट दोनों एकार्थ वाची शब्दों का प्रयोग किया है) अथवा समूह की भीड़ मिलकर ९ सुवर्ण की कान्तिवाले (केसरिया) वस्त्र शरीर पर बुरे घाट से पड़े हैं ११ हाथियों के कुंभस्थल कटकर १० खड्डा में गिरते हैं और कपट के किनारे से अत्यन्त झपटकर अर्थात् कपट से दूर भागकर युद्ध में मार्ग और बिना मार्ग निरंतर १२ फिरते हैं १३ भयकर दौड़ से नट की भांति पलटकर और उछलकर १४ शीघ्र दौड़ से १५ तरवार की झाट से १६बहुत पाप को दबानेवाली रपट देकर वे वीर समीप लेकर शीघ्रदौड़ मचाकर युद्ध में१७रजोगुण के मार्ग को प्रकट करके विजय को चाहते हुए जुड़ते हैं ॥ ४१ ॥१८ते (वे) युद्ध के अखाड़े पर आये १९ गानेवाले सिंधवी रागनी के ग्राम में उच्च स्वर से आलाप लेते हैं "संगीत में स्वरों के समूह को ग्राम कहते हैं वे तीन हैं। यथा ॥षड्जग्रामो भवेदादौ, मध्यमग्राम एव च ॥ गान्धारग्राम इत्येतत्, ग्रामत्रयमुदाहृतम् ॥१॥

ऐरावततैं सुप्रतीकि लग चीह चिकारैं ॥ ४२ ॥
दहकि दहकि दौलेय राज किरिराज पुकारैं ॥
लवणोदकसौं सुद्धनीर लग बढन बिथारैं ॥
बल सूदनसौं बामदेव लग अजक उसारैं ॥
बड़वामुखसौं ब्रह्मलोक लग सोक सम्हारैं ॥ ४३ ॥
इम हड्ड कूरम अभंग बल जंग बिथारैं ॥
बज्जैं आयुध निसित बाढ अरि गाढ उतारैं ॥
फूटैं सिर तरबूज फाँक कटि लाँक कुढारैं ॥
हत्थिन मत्थैं चन्द्रहास दुव२ हत्थन भारैं ॥ ४४ ॥
सुंडादंडन खंड खेरि अहि रूप उतारैं ॥
के उद्धत संग्रहि कलापं हठि दंत निकारैं ॥
सेकिम मालाकार सोभ अति जोर उपारैं ॥
आधोरन घुम्मैं अचेत कपि ज्यों द्रुम कारैं ॥ ४५ ॥
कुंभनतैं गजभद्र केक मुत्ताहल ढारैं ॥
मानों मेचक बारिबाह डिगि सीकर डारैं ॥
चउसट्ठी ६४ मारैं मतंग बावन ५२ बबकारैं ॥
हाक हकारैं केक जानि गज मार गँलारैं ॥ ४६ ॥

---

१ पूर्व दिशा के दिग्गज (दिशा को धारण करनेवाले हाथी। से लेकर २ ईशान दिशा के दिग्गज तक (क्रम से, ऐरावत १ पुंडरीक २ वामन ३ कुमुद४ अञ्जन ५ पुष्पदंत ६ सार्वभौम ७ सुप्रतीक ८ दिग्गजों के नाम हैं) ॥ ४२ ॥ ३ जल जल कर कमठ ४ बराह ५ लवणोद से लेकर, शुद्धजल के समुद्र पर्यन्त समुद्र के सात भेद (लवणोद, चीरोद, दधिमंडोद, घृतोद, शुद्धोद, इक्षुरसोद, स्वादु उद अर्थात् शुद्धोद) हैं ६ पूर्व दिशा के स्वामी इन्द्र से लेकर ७ ईशान दिशा के स्वामी शिवतक [पूर्व दिशा से क्रम पूर्वक ईशान दिशा तक के स्वामियों के नाम [इन्द्र, अग्नि, यम, नैर्ऋत, वरुण, वायु, कुबेर और शिव हैं)८ पाताल से ॥ ४३ ॥ ९ तीक्ष्ण १० लंक [कमर] ११ खड्ग ॥ ४४ ॥ १२ हाथी का कलावा पकड़कर १३ मूळ को १४ माली की भाँति १५ महावत १६ काले वृक्ष से बंदर गिरे तैसे॥४५॥१७मोती१८श्याम१९मेघ२०जलकण (बुंद २१गर्जना॥४६॥

फुट्टैं बक्तर *सिंगिफेट बपु बेधि बिहारैं ॥
टक्करनतैं नागोद टोप बेल खगन बिदारैं ॥
रुक्के पाय रकाब जोर सादी सिसकारैं ॥
सच्चे कच्चे लखन सूर अति परख उघारैं ॥४७॥
कर तुट्टैं जैसैं एंदाकु फन पच उफारैं ॥
अत्रावलि उरमैं कटार जनु वडिसें बिसारैं ॥
छुरिका छत्तिन छेदि छेदि मस्कर छविमारैं ॥
॥ ४८ ॥
बुंदी जैपुर लाज बाद परि उभय२ महारैं ॥
अमरपुरेकी सीम अंत नर कुणाप निहारैं ॥
लोहित लवी छछक छूटि मेतन जेक पारैं ॥
सायक भय दायक दुसार घायकैं घट सारैं ॥ ४९ ॥
सरिता भो वह सपेराय जल सोनितें धारैं ॥
बुंदी जैपुर तट विलद घट विकट किनारैं ॥
फुल्लि कुसेसय हृदय फाँक छवि अतुल अपारैं ॥
उतपल गन लोचन अनूप हुव विकच हजारैं ॥ ५० ॥
इंदिंदिरैं उप्पर अनेक गुटिका गुजारैं ॥

---

* सींगवाले पशुओं की फेट से (यहां सिंगि की जगह सांग पाठ होतो बरछी स पखनर के फूटने का सबब अच्छा होता है)१पेट का कवच (पेटी) २ तरवारों के बल से ३ घोड़ों के सवार ॥ ४७ ॥ ४ सर्प५मच्छी पकड़ने का कांटा ६ पास की शोभा को ॥ ४८ ॥ ७ मुरदे ८ रुधिर की९चैन (आराम) भय देनेवाले १० बाण ११ दोना ओर फूटकर १२ घाव करनेवाले होकर शरीर को बेधन करते हैं ॥ ४९ ॥ १३ वह युद्ध नदीरूप हुआ जिस में १४ रुधिर है सोही जल हुआ जहां बुंदी और जयपुर ही जिसके १५ किनारे (ढाबे) हैं और वे किनारे ही भयकर १६ घाट हैं अथवा कटे हुए शरीर हैं सोही भयकर घाट हैं और हृदय की चीरें हैं सोही १८ तुलना रहित अपार फूले हुए १७ शत पत्र कमल हैं, कटे हुए नेत्र हैं सोही २० उपमा रहित २१ फूले हुए हजारों १९ नील कमल हैं (कितनों ही के मत से सामान्य कमल का नाम भी उत्पल है) ॥ ५० ॥ उन कमलों के ऊपर २२ भ्रमरों रूपी अनेक २३ गोलिय शब्द

गजन दंत कटि कटि गिरैं सु [1]करहाट कितारैं ॥
[2]तंबेरम्म कुंभीर[3] तुल्लय बलवान बिहारैं ॥
बाजी गन [4]अवहार बेस मिलि तास मझारैं ॥ ५१ ॥
सुंडि पतित [5]अंकुस समेत बनि [6]बडिस बिसारैं ॥
जिँहह गिरी [7]आनाय जानि पल [8]कद्दम [9]पारैं ॥
कटि कटि उड्डत [10]कालखंज सुहि कमठ सिधारैं ॥
[11]लुक्का चय दद्दुर बिं[12]डलि बहु फद्दक बिथारैं ॥ ५२ ॥
अंत्रावलि [13]अलगद्द रूप संचर्प[14] संचारैं ॥
जलनीली[15] निभ सिंचय[16] जाल इत तिरत अपारैं ॥
जत्थ जलोका[17] जूहकी सु धमनी[18] छवि धारैं ॥
गंडक[19] संचय अंगुलीन बनि चपल बिहारैं ॥ ५३ ॥
हत्थ निहाका[20] निकर होय करि चलत कितारैं[21] ॥
कट तिलक बिचरैं कुलीरैं[22] श्रुति[23] सीप सुढारैं ॥
संख नख रु संबूक[24] संख कीकस[25] अनुकारैं[26] ॥

करती हैं और हाथियों के दंत कट कट कर गिरते हैं सोही १ कमल के जड़ों की पंक्तियां हैं २ हाथी हैं सोही बलवान् ३ मकरों के रूप से विहार करते हैं और घोड़े हैं सोही ४ घड़ियाल (मगर विशेष) के रूप से हैं ॥ ५१ ॥ अंकुश सहित ५ पड़ी हुई हाथियों की सुंडें हैं सोही ६ मच्छी पकड़ने के कांटे को भुलाती हैं ७ कवच हैं सो ही ८ मच्छी पकड़ने की जाल और मांस ही ९ कीचड़ है १० कलेजे कट कट कर उडते हैं सो ही कच्छप चलते हैं ११ लूकों (मुड़दों) का समूह ही मैंडकों का १२ भ्रम कर (छलांग, फैलाते हैं ॥५२॥ आंतों की पंक्ति है सोही १३ जल सर्पों का १४ समूह चलता हैं, यहां १६ वस्त्रों के अपार समूह तिरते हैं सोही १५ शैवाल (कांजी) के सदृश हैं १८ मरेहुए पुरुषों की नाड़ियें (नसें) तिरती हैं सोही १७ जलौकाओं (जोकों) की शोभा धारण करती हैं, कटी हुई अंगुलियों के समूह ही १९ छोटी मच्छियें चपल बन कर चलती हैं ॥ ५३ ॥ कटे हुए हाथों के समूह ही २१ पंक्तियें करके २० गोह (गोहीली) के समान चलते हैं और कटीहुई तिल्लियें (उदरस्थ मांस पिंड) ही मानों २२ केकड़े फिरते हैं २३ कटेहुए कान तिरते हैं सोही सीपें हैं, उस युद्ध में नख हैं सो ही २४ सांखूलया और २५ हड्डियें हैं सोही शंख के २६ सदृश हैं

अंतिय चूर सिकता अनूप नर सूर निहारैं ॥ ५४ ॥
आवरयांक आवर्त्त रूप अटि चक्र उघारै ॥
धूम लहरि उठैं अनेक अति वात इसारैं ॥
कुंभ करीके चक्रांक ध्रुव पीतन धारैं ॥
छेदी गिरत हयच्छटा सु सारस सचारैं ॥ ५५ ॥
चामर बनि चक्रांग रूप बक टोप बिहारैं ॥
घन कारंडव गंजन घट गिरि गिरि गुजारैं ॥
उच्चूल सु आटी कपाल मग्गू किलकारैं ॥
गज अंगुलि कटि कटि गिरी सु सिखरी व सुढारैं ॥ ५६ ॥
कातर वीरंण तत्र केक कढि लगि किनारैं ॥
शृंगाटके करसूके सघ विच देत बिहारै ॥
ऊरु पतित सिंसुमार आभ गैल उंद अपारै ॥
घुटक घन सालूक सोभ धर पातितैं धारै ॥ ५७ ॥

अथवा छोटे शंख, शम्बूकया और शंखों का अनुकरण हड्डियें करती हैं "क्षुद्रशंखा . शंखनखा" इत्यमर ॥ वीर पुरुष हैं वे १ हड्डियों के चूरे को ही उपमा रहित २ रेत निहारते हैं ॥ ५४ ॥ ३ रुधिर में तिरती हुई ढालें ४ चक्राकार (गोल) फिरकर भ्रमि पटकती हैं, ५ यहां धूम (धुवा) है सो ही ६ पवन के इसारे से लहरें उठती हैं ७ हरताल से रंगेहुए हाथियों के कुंभस्थल हैं सो ही निश्चय ही पीलेपनको धारण करनेवाले ८ चकवे हैं, इस युद्ध में कटीहुई ९ घोड़ों की गरदनें गिरती हैं सो ही सारस १० चलते हैं ॥ ५५ ॥ चमर हैं सोही ११ हंस बनते हैं और १२ बुगलों के रूप से टोप विहार करते हैं १३ हाथियों की घटा गिर गिर कर गजती है सोही मानों १३ पतक (जलजन्तु विशेष) बोलते हैं १५ ध्वजाओं के वस्त्र हैं सोही १६ आटी नामक पक्षि विशेष हैं और कटे हुए कपाल हैं सोही १७ जलमुर्ग बोलते हैं कटीहुई हाथियों की अंगुलियें गिरी हैं सोही श्रेष्ठ रीति के १८ काकड़े के अंक हैं ॥ ५६ ॥ कितने ही कायर १९ कास (तृण विशेष) के समूह के समान इस युद्ध रूपी नदी से निकल कर किनारे लगते हैं २० सिंघाड़ों के समान २१ मस्तों का समूह २२ शोभा देता है २३ पड़ीहुई जंघा है सोही २४ सूंस (मगर विशेष की शोभा देती है २५ और कटेहुए गले (कंठ) ही अपार २६ जलमानस (जल मानुसिया) है पृथ्वी पर २६ पड़ेहुए २७ घुटने २८ कमल के मूल (कंद) की शोभा धरते हैं ॥ ५७ ॥

निडर पराक्रम पृथुल नाव नय मंग निहारैं ॥
लंबे केतन बरदवान पवमान पसारैं ॥
प्यारे दुल्लभ प्रान रूप आतर कर डारैं ॥
बीर नियामक रस बिसेस सुहि पार उतारैं ॥ ५८ ॥
उट्ठें घायल लँपन झग्ग बुदबुद अनुकारैं ॥
मज्जा मेदं अनेक ओघ डिंडीर दिकारैं ॥
अैसी दुस्तर आपगा सु हुव स्रोत हजारैं ॥
बुंदी जैपुर उभयर बीर तिहिं तिरन बिचारैं ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

अैसी दुस्तर आपगा, बढे तिरन बर बीर ॥
इत उतके आहव अडर, धाराधर कर धीर ॥ ६० ॥

॥ षट्पात् ॥

इत पित्थल चालुक्य असह कूरम प्रताप उत ॥
इत कबंध अमरेस उत सु जद्दव दलेल द्रुत ॥
इत प्रयाग चहुवान सुरत उत कुम्म सुमंतह ॥
इत मरजाद असंक उत सु कूरम जसवंतह ॥
इत तोक बिजय कछवाह उत इत उत कुम्म अजीत दुवर

इस युद्ध रूपी नदी के तिरनेको निर्भय पराक्रम है वही १ बडी नाव है और नीति है सोही उस नाव का २ मस्तक है ३ सेना में लंबी ध्वजा है सोही उस नावका बरदवान (मस्तूल) है जिसको ४ पवन फैलाता है अत्यन्त प्यारे प्राण हैं सोही उस नदी की उतराई के५ कर में डालते हैं "आतरस्तरपण्यंस्या" दित्यमरः॥ वीर रस ही उस६नाव का खेवटिया है सोही उस नदी के पार लगाता है॥५८॥घायलों के७*मुख से झाग उठते हैं सोही उस नदी में बुदबुदों के ८ अनुकरण करनेवाले हैं९अस्थिगत धातु और (मींजी, सार)१०चरबी का समूह ही११फेन (झाग) दीखते हैं ऐसी दुस्तर१२नदी की हजारों १३ धाराए हुईं ॥ ५९ ॥१४खड्ग हाथों में लिये ॥ ६० ॥१५सुरतसिंह१६श्रेष्ठ. बुद्धिमान्॥६१॥

* क्रिया आकर फिर विशेषण दिया जावे उसको समाप्तपुनरात्त दोष कहते हैं परन्तु क्रिया के पीछे फिर अनेक विशेषण व अनेक उपमा दी जावे वहां यह दोष मिटजाता है सोही यहा जानना चाहिये.

इत देव हड्ड हम्मीर उत हरखि कुम्म हमगीर हुव ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

हड्ड भवानीसिंह इत, उत माधव कछवाह ॥
इत सगताउत अचल उत, सकर कुम्म सिपाह ॥ ६२ ॥
च्यारि *अमर रट्ठोर सुत, अब तिनके †अभिधान ॥
इत भैरव अगद अचल, उत कछवाह अमान ॥ ६३ ॥
इत कवध नवलेस उत, भट कूरम भूपाल ॥
इत ‡सन मान कवध उत, अर्ज्जुन कुम्म अचाल ॥६४॥
अडर सिवाईसिंह इत, रनपडित रट्ठोर ॥
अभयसिंह कछवाह उत, मिले उभय१ भट §मोर ॥ ६५ ॥
इत सु भट्ट बुदीसको, जुद्ध निपुन जगराम ॥
उदयसिंह परमार उत, कुपित भिरयो जय काम ॥ ६६ ॥
उभय उभय इत्यादि जुरि, अनी अमर उमराव ॥
किन्नों रन रविमल्ल कवि, वरनैं विरुद वढाव ॥ ६७ ॥

॥ पज्झटिका ॥

चालुक्क वर पित्थल जग चाह, नाथाउत पुर निम्मान नाह ।
पैंसठि६५पैदाति सादी पचीस२५,साजि चलिय कुम्म परताप सीस६८
उततै प्रताप हय सत१००उपेतं, खिजि आयो सम्मुह बीर खेत ॥
पित्थल उर मारिय बान पच५, रन वीर यहहु सक्यो न रच।६९।
मारकें सिर झारिय मंडलग्ग, कटि टोप कछुक सिर खगिय खग्ग
तस सुभट इहाँ इक वार किन्न, कर सव्य सागद सु करिय भिन्न७०
दे जात चलिय पित्थल कृपान, सिर भिन्न होय अरि भुव सेयान

॥ ६२ ॥ * अमरसिंह राठोड़ के चार पुत्र † नाम ॥ ६३ ॥ ‡ इधर से ॥ ६४ ॥ §मोड़ (मुकुट)॥६५॥६६॥ १ सूर्यमल्ल कवि स्तुति को बढाकर वर्णन करते हैं ॥ ६७ ॥ २ पैदल ३ सवार ॥ ६८ ॥ सौ घोड़ों ४ सहित यहां (अजहत्स्वार्था लक्षणा से घोड़ों के सौ सवार जानना चाहिये) ॥ ६९ ॥ ५ मारनेवाले पर ६ खड्ग चलाया ७ घुसा ८ भुजबंध सहित वाम हाथ काट डाला ॥ ७० ॥ ९सोया

पुनि हनि प्रतापके सुभट सत्त७, आयो उडाय हय इत उमत्त॥७१॥
हयखंध लेग झारिय प्रताप, हय गिरत भयो पयचार आप॥
हय हीन तिमहि कर सैंन्य हीन, पुनि हनिय कुम्भ भट नव प्रवीन॥७२॥

इहिं बिच प्रताप झारिय कृपान, पिथल कटयो सु तिल्ल तिल प्रमान
सन्नाह लयो नहि प्रथम सूर, पानिय दिखाय गेसोहि पूर॥७३॥
सत्तह१७अरी तेरह१३स्वभट सत्थ, सजि इष्टलोक पहुँच्यो समत्थ
रट्ठोर अमर जद्दव दलेल, खिजि खिजि इत गंड्यो वीर खेल॥७४॥
तेतीस३३ पैदग इत कृति२० तुरंग, उत सत १०० क साठि६० अनुक्रमें अभंग॥

लखि कहिय परस्पर वाह वाह, बाहहु तुम वाहहु नैंव सिपाह॥७५॥
भिरि प्रथम रचिय खेलन भचक्क, रंमि दाव धावें कावन रचक्क॥
इम फिरत बाजि दोउनर उडानि, कुवर भंड दंडभ्रूनें चक्र जानि॥७६॥
नलुं कै दिनेसँ अरु जामिनीस, गरदाय फिरत हाटक गिरीस॥
आवर्त्त उँदधि जिम दुवर जिहाज, वलि किंधु कपोत पर उभय२ बाज॥७७॥

दुवर पत्र बाँतचक्र कि घिरंत, कन्न्या कि उभय कुंदियँ फिरंत॥
दुवर लँटुव जानि नट सिर दिखाय, इम फिरिय वीर वाजिन उडाय॥७८॥
अमरेस झुकि तोमर अभंग, जद्दव हय वेध्यो निडर जंग॥

॥७१॥ १ घोड़े के कंधे पर २ पैदल ३ बाम हाथ से ॥७२॥ ४ कवच ५ पराक्रम ॥७३॥ ६ अपने वीरों के साथ ७ चाहता था उस लोक में ८ समर्थ ॥७४॥ ९ पैदल १० यहां लक्षणा से सवार जानो ११ सौ पैदल और साठ सवार इस अनुक्रम से १२ नवीन ॥७५॥ १३ दाव खेल कर १४ दौड़ १५ कुम्हार के चाक पर दो मटके होवें इस तरह ॥७६॥ १६ अथवा निश्चय ही मानों १७ सूर्य और १८ चन्द्रमा १९ सुमेरु पर्वत को घेरकर फिरते हैं २० समुद्र के भ्रमि [चक्कर] में दो जहाज २१ मानों एक कबूतर पर दो बाज हैं ॥७७॥ २२ पवन के गोट में दो पत्ते घिरे २३ नृत्य विशेष २४ गैंद ॥७८॥ २५ भाला

हय गिरत अंपर आरुहि दलेल, मार्यो कवध उर सुंभर सेल ७९
सहि सेल अमर हनि सत्रु सत्त७, मार्यो दलेल श्रेंसिवर उमत्त ॥
जद्दवहिं मारि अग्गैं जगाम, भिट्यो भटेंस सीसोद स्याम ॥८० ॥
दोउन२ कृपान झारिय दुरहत्थ, मुंडमाल मध्य गय उभय२मत्थ॥
अरि नवँ९पचीस२५निज भट उपेत, रहोर गयो निर्ज्जर निकेत८१
इत भट प्रयाग इक्क१ हि अभग, सुरतेस उत सु हय सट्ठि६० सग॥
मिलि उभय२जग मंडिय अमान,वदि वाह वाह सिव किय बखान।८२।
पट्टु प्रथम तुपक झारिय प्रयाग, अरि दोय२हनिय तिम आखु नाग।
इकगेय वाजि पुनि तुपक डारि, कढि हिंतु कालनी।गिनि निकारि ८३
सुरतेस निकट पहुँच्यो प्रयाग, फिरि मंडल खेल्यो हेतिं फाग ॥
जेजे भट पिंछे सुरत जत्थ, तेते प्रयाग सब हनिय तत्थ ॥ ८४ ॥
इम फिरत हट्ठ हेवर उताल, जिम अनिलैं अग्गि तृन बिपिन जाल
तिय मृगियँ सुरत जिम नर तुरग, इम सुरंत हट्ठ दव्यो अभग८५
आघात खग्ग दद अनूप, किय बहुत कुम्म श्रेंलक्त कूप ॥
खट६ सुभट सुरत पिछ्ले खिसाय, पैंत्ते प्रयाग पर रन रिसाय।८६।
अभिमन्यु लर्यो खट रथिन आजि, विफुर्यो प्रयाग इम दपटि बाजि।
दुव २ मारि च्यारि ४ घायल गिराय, खट६ असि प्रहार तिनकेहु
खाय ॥ ८७ ॥

सुरतेस सीस हंकिय सजोर, मानहु लखि जिह्मग मत्त मोर ॥

---

१ दूसरे घोड़े पर चढ़कर २ सुभट ने ॥ ७९ ॥ १ श्रेष्ठ तरवार से उन्मत्त होकर ४ चला ५ धीरा का पति सीसोदिया श्यामसिंह से मिला ॥ ८० ॥ ६ शिव की मुंडमाला में ७ स्वर्ग में गया ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८ चतुर ९ चूहे को सर्प मारे तैसे १० घोड़े को ललकार कर ११ तरवार ॥ ८३ ॥ १२शस्त्रों का फाग सुरतसिंह ने १३भेजे ॥ ८४ ॥ १४ पवन से तृणों के वन में अग्नि फिरे तैसे १५मृगी जाति की स्त्री अश्व जाति के पुरुष से जैसे दबजाती है तैसे १६सुरतसिंह को हाड़ा ने दबाया ॥ ८५ ॥ १७अलते के कूप कर दिये अलते का रंग लाल होता है १८ खिटाकर १९ पूगे ॥ ८६ ॥ २० युद्ध में॥८७॥२१सर्प

इक१ जवन आनि इहिँ बिच उमाहि, वेध्यो प्रयाग सित सँगि वाहि ८८
इहिँ संगि सहित घोट२क उडाय, कट्ट्यो सु म्लिच्छ पुनि पिहुल३ काय
यँहँ सुरतासिंह किय खग्ग वार, मारयो प्रयाग मृड४ जानि मार॥८९
ढुंढत जिहिँ हारे कंक५ ढैंक, नहिँ मिलिय लुत्थि पलचरन६ नैंक ॥
अवसिँठ७ रहिय नहिँ लैन अग्गि, लुत्थि सु प्रयाग गय असिन८ लग्गि९०
हनि पंच५ च्यारि४ घायल बिधाय, पत्तो प्रयाग निर्जर निकाय॥
मरजाद सु मुहुकम अन्ववाँय, सतपंच५००पैंदग सौंदी सजाय ।९१।
इत चलिय पिक्खि जसवंत बीर, धुर धर झलायपति कुमर धीर ॥
वहहू सजि खट सय ६०० अश्ववार, हमगीर पैंदिक त्योंही हजार
१००० ॥ ९२ ॥

मरजाद सीस धारत मरोर, आयो राजाउत रचत रोर ॥
मरजाद मत्थ तकि तीर तीन३, दपटाय बाँजि कछवाह दीन ॥९३॥
मरजाद सुभट इक नाम मान, कूरम हय मारयो दै कृपान ॥
जसवंत अपर हय चढि जरूर, समसेर हन्यौं वह मान सूर ॥ ९४ ॥
कूरम निज जहव सुभट दोय२, हड्डा सिर हूंले कृपित होय॥
दै चक्क दुहुँन२ मरजाद बिंटि, भालन प्रहार किय भिंटि भिंटि ।९५।
द्रुत हड्ड दुहुँन२ तोमर बिदारि, जहवन गयो मरजाद जारि ॥
रठोर बहुरि पिल्ल्यो रिसाय, खग झारि हड्ड लिय सोहु खाय ।९६।
पठये इम कूरम दस१० सिपाह, लिन्ने ति मारि लागि बिजय लाह।
हड्डा सुमेरु पठयो बहोरि, दिन्नौं कृपान तिहिँ खंध दोरि ॥ ९७ ॥

को देखकर १ तीक्ष्ण बरछी चलाकर ॥ ८८ ॥ २ घोडों ३ बडे शरीर वाले को ४ शिव ने कामदेव को मारा जैसे ॥ ८९ ॥ ५ दोनों मांसाहारी पक्षि विशेष हैं ६ मांस खानेवालों को ७ जलाने को अवशिष्ट [बाकी] नहीं रहा ८ तरवारों के लग गया ॥ ९० ॥९करके१०देवताओं के११स्थान [स्वर्ग] में गया१२हुकमसिंह के बश में१३पैंदल १४ सवार ॥ ९१ ॥ १५ पैदल ॥ ९२ ॥ १६ १७ घोड़ा दौड़ाकर ॥ ९३ ॥ १८ मानसिंह ने १९ दूसरे घोड़े पर ॥ ९४ ॥ २० चढाये वा भेजे ॥ ९५ ॥ २१ हजम करगया ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

उपवीत उतरि मरजाद *मस, बैठो†तनुत्र भिदि‡पृष्ठिवस॥
इहिं घाय भयो §सभर अचेत, खिन धरिय मोह ढरि परिय खेत ९८
तजि मोह बहुरि बिनुही तुरंग, जसवंत हिंतु किय उट्ठि जंग ॥
पुनि मारि अष्ठ८ कूरम प्रवीर, सुत्तो संतल्प संगर सधीर ॥ ६८ ॥
इम खाय सत्रु एकोनवीस१९,बेलि करिय चेत घायल्ल बतीस३२
विंटिय तव अच्छरि डारि बाँहि, मरजाद पत्त इम नाकमाँहि १००
चोरासी८४निजभट रहिय खेत, सतदोय२००भये घायल्ल सु चेत॥
इत तोकसिंह मिलि छोंह अग, उत विजयसिंह कूरम अभंग१०१
दुव२दपटि वीतिं रीतिन दिखाय, दुव२करत वार असि घाय दाय
रन चत्वर दुव२ जयखभ रूप, दुव२ स्वामि धर्मधर भटन भूप१०२
दुव२ द्विरद इक धेनुक दिखात, दुव२ सिंह जानि इक वस्त आत
तहँ तोक चड असिवर चलाय, गति वज्ज विजैय दिन्नौं गिराय१०३
इत अजित अजित कछवाह दोय२, हथिपार मार मिलि मत्त होय
गोलिन लगि दोउन२ हय गिरत, व्है पदिकँ जुरे बलवत हर्त १०४
आर्तोपि उभय२ जिम जुरत जुद्ध, कैधों चरनायुध उरझि क्रुद्ध ॥
जिम ओटिं नखर खैरकोन जग, दैत्ताय्प कक जैंनु अतुल दग१०५
भिरि इम प्रवीर वनि छिन्न भिन्न, करि कित्ति दुहुँन२दिवैं वास किन्न
इत देवसिंह हड्डा उदार, हरदाउत सत्रुन गिलनहार ॥ १०६ ॥
हम्मीर कुम्भ सिर विरचि हाक, जग कतल करत आयो कजाकँ

* कथे में †कवच पट कट कर ‡पीठ की हड्डी में §वहुधापा १मूर्छा॥ ६८ ॥ २ बिना घोड़े ३ से ४ रणशय्या ॥ ९९ ॥ ५ पुनि [फिर] ६ गया ७ स्वर्ग में गया ॥१००॥ ८ क्रोध ॥ १०१ ॥ ९ घोड़ों को १० युद्ध के चौक में ११ उमरावों या वीरों के राजा ॥ १०२ ॥ १२ दो हाथी एक १३हथनी पर १४ एक बकरे पर१५विजयसिंह को ॥ १०३ ॥ १६ दोनों अजितसिंह १७ पैदल १८ खेद है (घोड़े मरजाने से खेद के वचन कहे हैं) ॥ १०४ ॥ १९ चीलह पक्षी २०कुक्कुट (मुरगे)२१वघू और नखों से २२ तीतर पक्षी लड़े जैसे २३ भीच २४ मानों ॥ १०५ ॥ २५ स्वर्ग में ॥१०६॥ २६ युद्ध में

मिलि उभय[1]भाद्रपद सुदिरै मान, आसार[2] हेतिं बरखत अमान१०७
हम्मीर इहाँ करि असि प्रहार, वह देव न राख्यो[3] अश्ववार ॥
तब पदिक होय रचि नट मलंग,सॉरसन[4] झटकि ऐंच्यो सुसंग१०८
पयचार[5] उभय२ इम बनि प्रबीर, हठ पुव्व जुरिग देव रु हमीर ॥
हलकारि खग्ग झारत दुरहत्थ, ललकारि होत पुनि लुत्थि बत्थ१०९
तुट्टिय लागि दोउन२ असि तनंकि, कट्टार तबहि झारिय झनंकि ॥
छमं[6] मल्ल जुद्ध पुनि रचि अछेह, दुव२ बीर गिरे इम छोरि देह ११०

॥ षट्पात् ॥

सुभर भवानीसिंह महासिंहोत उमँडि इत ॥
उत माधव कछवाह हलिय, निज स्वामि विजय हित ॥
खुरन अग्ग भुव खुंदि मुंदि पँन्नग[7] सहस्र मुख ॥
तुमुल झारि तरवारि रारि मंडिय रावन रुख ॥
मिटि गुमर[9] पिट्ठि कच्छप मुरकि हुरकि निट्ठि[10] सूकर ढविग
भीरुन भटेस धिक्करि[11] भिरत दिक्करि[12] गन चिक्करि[13] दबिग १११
जिम आखंडल[14] जंभ सव्यसाची[15] राधासुत[16] ॥
स्वामी[17] तारक[18] सूर भीम कीचक बल अद्भुत ॥
पुनि हलहेति[19] प्रलंब सूनसॉयर[20] अरु संबर[21] ॥
अंजनिनंदन[22] अच्छ[23] बज्जतुंड[24] रु काकोदर[25] ॥
मैनाकस्वसा[26] जित सुरमहिष[27] आजगवी[28] अंधक अरन ॥

१भादों के मेघ के समान २शस्त्रों रूपी पानी॥१०७॥३घोड़े को मार डाला ४काटमेखला(कर्धनी अथवा कमरबंधा)॥१०८॥ ५पैदल ॥१०९॥६समर्थ॥११०॥७शेषनाग के८ रावण की भांति९घमंड मिटकर १० पराह ठहरा ११कायरों को धिक्कार देकर १२ दिशाओं के हाथियों के समूह १३ चीत्कार शब्द करके दबगये ॥ १११ ॥ १४ इंद्र और जंभासुर १५ अर्जुन और १६ कर्ण १७ स्वामिकार्तिक और १८ तारकासुर भीम और कीचक १९ बलदेव और प्रलंबासुर २० समुद्र का पुत्र कामदेव और२१शंबरासुर२२हनुमान और२३अक्षयकुमार २४गरुड़ और२५सर्प २६पार्वती (देवी) और२७महिषासुर, जैसे २८ शिव और अंधक असुर अडे

इहिँ रीति झपटि आहव अजिर बीतिँ दपटि लग्गे लरन॥११२॥
कूरमको करवाल इह्न झिल्ल्यो तोमर पर ॥
कटत कुते असि कट्ठि अनखि झारिय इहिँ अवसर ॥
कूरमको सिर कट्टि निडर किय रुद्द निवेदन ॥
इम अंच्छत रहि अप्प अरिन मंडिय उच्छेदन ॥
वर वाजि नाव खेपक बलिय कुच्छेपक दिय वलि करट॥
जय धारि फिरिग जानिय जगत भिरिग भवानियसिंह भट११३
इत सगताउत अचलसिंह कूरम उत संकर ॥
इत प्रवीर लवअस उत सु कुस बंस भयंकर ॥
इत बुंदिय धर अरर उत सु ढुंढाहर तालक ॥
उदयनेर इत ओप उत सु जैपुर उज्जालक ॥
इत इक१उत सु दस१०हय अधिप इत सिव रत्तक विष्णु उत ॥
कर्णिकार फुरे हिय सुम विकासि निकसि जुरे कर्णिकार नुत॥११४॥

॥ दोहा ॥

दस१० दस१० झेलि प्रहार दुव२, रहे ति घायल रंग ॥
आयु भयो बलवान यँहँ, मेटी त्रिदिव उमंग ॥ ११५ ॥
इत भैरव अमरेस सुत, रनकोबिद रट्ठोर ॥
औरं अमान कछवाह उत, जैवी जुरिग अतिजोर ॥ ११६ ॥
कूरम खग्ग कबंधकैं, दिन्नों तमकि मदंध ॥
कटि बाहुलैं कर अद्ध कटि, बैठो लगि मरिबंध ॥ ११७ ॥

ऐसे १ युद्ध के आंगन (चौक) में २ घोड़े दौड़ाकर लड़ने लगे ॥ ११२ ॥ ३ खड्ग ४ भाले पर ५ भाले कटते ही ६ शिव के भेट किया ७ आप (खुद) घाव रहित शत्रुओं को ८ काटना शुरू किया ९ कौंचवक (खड्ग) से १० बलि दान (भोजन) दिया ११ काक पक्षियों को ॥ ११३ ॥ १२ लव के वंश में (सीसोदिया क्षत्रिय) १३ कुश के वंशवाला (कछवाहा क्षत्रिय) १४ कपाट १५ ताला १६ कर्णिका के आकार से हृदय फूलकर १७ पुष्प होगय १८ युद्ध करनेवाले नारद से १९ स्तुतियोग्य ॥ ११४ ॥ २० स्वर्ग की ॥ ११५ ॥ २१ युद्ध चतुर २२ शीघ्र अथवा सब (लघु) करके २३ बलवान जुड़े २४ अतिबल से ॥ ११६ ॥ २५ दस्ताना २६ पौंचे तक ॥ ११७ ॥

ऐसैंही इक अंस[1] पर, खाय उभयर तस खग्ग ॥
मार्‌यो कुम्भ अमानकौं, इम रट्ठोर उदग्ग ॥ ११८ ॥
पुनि कूरम भगवंत प्रति, जुर्‌यो मलंगत मत्त ॥
दोउनर असिबर छाक छकि, तजे कलेवर[2] तत्त ॥ ११९ ॥
इत कबंध नवलेस उत, भट कूरम भूपाल ॥
अरँ[3] इच्छन[4] जोरे उभयर, कर तिच्छन करवाल ॥ १२० ॥
मानौं भद्दव मेघमैं, चपला जुगर चमकाय ॥
झटके इम झमकाय दुवर, हुव बटके घन घाय ॥ १२१ ॥
इमहि बीर सनमान इत, उत अर्ज्जुन कछवाह ॥
तिल तिल कटि पहुंचे तंविप, लै दुवर अच्छरि लाह ।१२२।
अडर सिवाईसिंह इत, सूर अभय उत सज्जि ॥
परे खेत घायल उभयर, रुहिरँ छक्कत रज्जि ॥ १२३ ॥
इत भट्ट सु बुन्दीसको, जयगाहक जगराम ॥
उदयसिंह परमार सिर, धर्‌यो प्रसारत धाम ॥ १२४ ॥
कुंत इक परमारको, खाय प्रहारिय खग्ग ॥
किन्नौं प्रबल करोढियाँ, अरि सिर खंध अलग्ग ॥ १२५ ॥
उदयसिंहकौं मारि इम, बिंटयो जद्दव बग्घ ॥
देह छोरि दिय पत्त दुव, अच्छरिं मंडिय अग्घ ॥ १२६ ॥
ज्यौं संगर कनउज्जके, चंद लर्‌यो असि चंड ॥
इम जुट्टयो जगराम पँहँ, खंडन करि बपु खंड ॥ १२७ ॥
इत्यादिक इत उत लरत, बुंदी सुभट बिसेस ॥

---

१ कंधे पर ॥ ११८ ॥ २ शरीर ॥ ११९ ॥ ३ शीघ्र ४ नेत्र मिलाये ॥ १२० ॥ ५ तरवारें (यहां लक्षणा से तरवार का ग्रहण है, नहीं तो एक वार में दो टुकड़े होजाने को डिंगळभाषा में झटका कहते हैं) ॥ १२१ ॥ ६ स्वर्ग लं ॥ १२२ ॥ ७ रुधिर की छक्कों से शोभित होकर ॥ १२३ ॥ ८ तेज तथा अपना स्वरूप ॥ १२४ ॥ ९ भाला १० भाटों की एक जाति ॥ १२५ ॥ ॥ १२६ ॥ ॥ १२७ ॥

निज असि झारत युद्ध रुंध, दुपहर चढ दिनेस ॥ १२८ ॥

॥ मुक्तादाम ॥

चल्यो इत भूपति झारत खग्ग, झरैं अरि घायल डारत झग्ग ॥
इतैंउत घोर मचै अत्रमर्द, इतैउत आवहिं आवहिं नर्द ॥ १२९ ॥
इतैउत मुंडन छादित भुम्मि, इतैउत डोलत घायल घुम्मि ॥
इतैउत संकुलि लुत्थिन लुत्थि, इतैंउत बाढ बिखेरत बुत्थि ॥१३०॥
इतैउत खजर होत हुसार, इतैउत फुट्टत पट्टिस पार ॥
इतैउत होत तुपक्कन मग्ग, इतैउत बेधत सेल्लन अग्ग ॥ १३१ ॥
इतैंउत तीरन ढक्कन गैन, इतैंउत उक्कत सगितसैन ॥
इतैउत उग्र रचैं रन रोर, इतैउत पात गदा अति जोर ॥ १३२ ॥
इतैंउत चाप चटक्कत चक्क, इतैउत धूपनकी धमचक्क ॥

॥ तचक्क[1]मचक्क[2]अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥

इतैउत पा गति आयुध छुट्टि, इतैउत मुट्ठिनि मारत मुट्ठि ॥ १३३ ॥
इतैंउत भोंहन चुनत मुच्छ, इतैंउत उड्डत गोदैंन गुच्छ ॥
इतैंउत अंत्रन लग्गत लोह, इतैउत कातर कच्छरि जोह ॥१३४॥
इतैंउत तुट्टत मक्कुलि सीस, इतैउत सूर रिझावत ईस ॥
इतैंउत डाकिनि खाजत खेत, इतैंउत पानि पसारत प्रेत ॥ १३५ ॥
इतैंउत डोलत अत्रन व्याल, इतैंउत फुट्टत कठ कपाल ॥
इतैंउत धावत सोनित धार, इतैंउत कीकस वृंद अपार ॥ १३६ ॥
इतैंउत नैंन उछट्टत कड्ढि, इतैंउत बाहु फरक्कत बड्ढि ॥
इतैंउत टोप बकत्तर टूक, इतैंउत हूंरव हूरव हूक ॥ १३७ ॥

१युधसिंह का युद्ध॥१२८॥२पीड़ाकारी युद्ध॥१२९॥३भरगई॥१३०॥४कटारी५भालों के अग्र भाग से॥१३१॥६आकाश को७परछियों से सेना ८ भय ९ प्रहार ॥ १३२ ॥ १० पग (सेना) ११ तरवारों की १२ मुक्कों से अथवा खड्ग की मूठा पर मुट्ठी मारते हैं॥ १३३ ॥ १३ मस्तिष्क (भेजों) के समूह १४ घोड़ों की पीठ ॥ १३४ ॥ १५ भयकारक शाकिनी १६ हाथ फैलाते हैं ॥१३५॥ १७आंतों के सर्प १८हड्डियों के समूह ॥ १३६ ॥१९ हू, शब्द अथवा हूरों (अप्सराओं) का शब्द

इतैंउत बावन गावनहार[1], इतैंउत जच्छ जपैं जयकार ॥
इतैंउत नारद अक्खत बाह, इतैंउत साकिनि देत सिराह ॥ १३८ ॥
इतैंउत चौंकि फिरैं चउसट्ठि६४, इतैंउत सूरन सज्ज समट्ठि[2] ॥
इतैंउत तंडवं[3] मंडत रुंड, इतैंउत झुक्कत झुंडन झुंड ॥ १३९ ॥
इतैंउत बाहहु बाहहु बुल्लि, इतैंउत तेगन झारत तुल्लि ॥
इतैंउत बाजिन बग्ग तमाम, इतैंउत कुद्दत गैंवर[4] ग्राम ॥ १४० ॥
इतैंउत पक्खर घंटन घोर, इतैंउत आगि[5] सिलग्गत सोर ॥
इतैंउत बद्दलके अनुंकार[6], इतैंउत लोहितँ[7] बुट्ठत वार ॥ १४१ ॥
इतैंउत चाप सु बासँव चाप[8], इतैंउत गज्ज सु गज्ज अमाप ॥
इतैंउत सीकर[9] गोलिन गोट, इतैंउत दंतिन दंत[10] बकोट ॥ १४२ ॥
इतैंउत ओज[11] इरम्मद धारि, इतैंउत त्यौं तड़ितौं[12] तरवारि ॥
इतैंउत ठ्है[13] लहरू हरवल्ल, इतैंउत घुग्घर दद्दुर[14] गल्ल ॥ १४३ ॥
इतैंउत बीर सु उत्तर बात[15], इतैंउत सूर मयूर सुहात ॥
इतैंउत चातक घंटन आलि[16], इतैंउत अत्थि[17] किरैं करकालि[18]॥१४४॥
इतैंउत कातर भोलि[19] उदास, इतैंउत हूर कृषीवल आस[20] ॥
इतैंउत जीगनँ[21] ठ्है चिनगीन, इतैंउत स्याम घटा करटीनँ[22] ॥ १४५ ॥
रच्यो नृप यौं रन पाउँसरूप[23], धपावत सत्रुनतैं निज धूँप[24] ॥
लग्यो ढिग जाय नरायनदास, प्रहारन मार रची चहुँपास ॥१४६॥

॥ १३७ ॥ १ गान करनेवाले बावन भैरव ॥ १३८ ॥ २ समष्टि (समूह) ३ नृत्य ॥ १३९ ॥ ४ हाथियों के समूह ॥१४०॥ ५ अग्नि ६ सदृश ७ रुधिर बरसता है सोही पानी है ॥ १४१ ॥ ८ इन्द्र धनुष, गोळे और गोळियां चलती हैं सोही ९ जलकण हैं १० हाथियों के दन्त हैं सोही बगुले हैं ॥ १४२ ॥ ११ पराक्रम है सोही मेघज्योति है१२तरवारें ही बिजुली है१३ सेना का अग्रभाग है सोही लहरें हैं १४ घुघरे हैं सोही मेंडकों का शब्द है ॥ १४३ ॥ १५ वीर हैं सोही उत्तर का पवन है१६घटाओं की पंक्ति ही चातक है१७अस्थि (हाड) बिखरते हैं सोही१८ओलों की पंक्ति है ॥ १४४ ॥१९ऊँठों रूपी कायर उदास हैं २० अप्सराओं रूपी खेती की आशा है२१अग्नि कण ही जुगनूँ है २२ हाथी हैं सो ही काली घटा है ॥१४५॥२३वर्षा रूपी युद्ध रचा २४ तरवार को ॥ १४६ ॥

मरे भट भूपतिके सत तीन ३००, भये सत पचक५००घायनखीन॥
भज्यो गज खत्रिपको लखि भार, भयो तब कुद्दि रु है असवार॥
इते बिच कूरम बिक्रम आय, दई तरवारि घनें करि दाय ॥१४७॥
भयो तिहिं हंजक है पय भिन्न, तऊ झपटाय हनें अरि तिन्न ३ ॥
भिर्यो वह बिक्रम आनि बहोरि, लयो नृप कूरमको सिर तोरि १४८
यहै लखि कूरम भैरव आनि, जुर्यो नृपतें दल मारत जानि ॥
महीपति उप्पर खग्ग मुमोच, खँग्यो कछु पक्खरिपें कटि कोर्च१४९
करी पुनि हंज हयच्छट चोट, कढ्यो कछु पे न रुक्यो नृप घोट ॥
चली नृपकी तपकी तरवारि, लयो वह भैरव मारत मारि॥१५०॥
इतेबिच कुम्म मिल्यो महताप, दये सर च्यारि४चटक्कत चाप ॥
लगे नृपके दुव२ दारित दंस, लगे हयके दुव२ दाहिन अंस ॥१५१॥
रुक्यो नहिं रंच तऊ नृप ओज, चल्यो अरि मारत फारत फोज ॥
तहाँ पुरपीलँपती चहुवान, भिरे दुव२ थाँन१ तथा सुरतान२ ॥१५२॥
नरूहर त्यों हरनाथ३ तृतीय, इन्हैं नृप रुक्किय गाढ गरीयँ ॥
उभैर२ चहुवानन झारिय खग्ग, करे तिनके सिर भूप अलग्ग१५३
तथा सहि नंदिरवकी तरवारि, लयो हरनाथहुको हय मारि ॥
घनी इम जैपुर वीरन नारि, करी नृप जोगिनि ककन झारि १५४
जहाँ हरदाउत हू नगराज, लर्यो नृपको भट छुबिय लाज॥
कहार हठी१ हु रह्यो नृप पास, लर्यो सँहं दोलतराम खवास१५५

१घावे पर चढ़ा २विक्रमसिंह ने ३दाय (पेच)॥१४७॥ ४हंज नामक घोड़े का पैर कटगया५उम्मेदसिंह ने (इस चरित्र में जहां जहां केवल नृप, भूप, पहु, समर, चहुँवाण शब्द आवे तहां तहां बुंदी के राजा उम्मेदसिंह को जानना चाहिये) ॥१४८॥६छोड़ा (खड्ग का प्रहार किया)७घुसा (पैठा)८कवच कट कर ॥ १४९ ॥ ९ हंज नामक घोड़े के कंधे पर १० राजा का घोड़ा ११ मारते हुए को मार दिया ॥ १५० ॥ १२ कवच फोड़कर १३ दाहिने कंधे पर ॥ १५१ ॥१४पुर का नाम है१५थानसिंह ॥ १५२॥ १६ नरू के वंशवाला१७भारी हठता से ॥ १५३ ॥ १८ नरूके की १९विधवा ॥ १५४॥ २० राजा का उमराव २१ साथ ॥ १५५ ॥

तथा सठ भीरु भजे सतच्यारि४००, रची इम जैपुरत न्नृप रारि।१५६।
तथा सतच्यारि४००मरे अरि तत्त, परे पुनि घायल व्है सतसत्त७००
नरायन खेत खरो अघ धोय, घनों दल क्यों न तहाँ जय होय १५७
कह्यो न्नृप बुंदियपैं धक धारि, मरैं तब कोन करैं पुनि रारि ॥
इतैं कछवाहन खोजिय खेत, लख्यो रन अंगन चित्र*उपेत।१५८।
कहीं तरफैं भट तुट्टत स्वास, लरैं कहुँ लुत्थि करैं कहुँ हास ॥
बकैं कहुँ घायल व्है सुधि हीन, †जकैं कहुँ जानुन झुक्कत झीन १५९
डरे कहुँ अंत्रन डारत ग्रीव, फिरैं कहुँ नैंन चलैं कढि जीव ॥
करैं कहुँ सुंडिनके [1]उपधान, रटैं हरिकों रन तल्प [2]सयान ॥१६०॥
लरैं कहुँ मत्त [3]परासुन ओट, दुरैं कहुँ लेत कबूतर लोट ॥
भरैं कहुँ बायु करैं उनमत्त, धरैं कहुँ सीस कलेजन छत्त ॥१६१॥
गिरैं कहुँ पाय पटक्कन भुम्मि, रहे कहुँ रुट्ठि रकावन झुम्मि ॥
लरैं कहुँ भूतनतैं भरि बत्थ, झरैं कहुँ जावक [4]जंत्रव मत्थ ॥१६२॥
परे कहुँ बीर अधोमुख भूरि, दुरे कहुँ गाफिल चट्टत धूरि ॥
दबे कहुँ कुक्कत हत्थिन हेठ, जरे कहुँ पब्बय ज्यों दव [5]जेठ ॥१६३॥
रहे कहुँ कुंजर [6]कुंभन लग्गि, मनों जुवतीन [7]अनन्[8]पर्ज [9]जग्गि ॥
तिरैं कहुँ सोनित व्याकुल [10]व्रात, भिरैं कहुँ भेदत गिद्धन गात १६४
करैं कहुँ दंतनतैं कटकट्ट, जरैं कहुँ जुग्गिनिपैं रँहपट्ट ॥
पढैं कहुँ कृष्ण कह्यो वह [11]ज्ञान, भनैं कहुँ [12]सांख्य बनैं भगवान१६५
चखैं कहुँ लोहित [13]ओठन चब्बि, दुरैं कहुँ कंकन पंखन दब्बि ॥
अटैं कहुँ आतुर इक्कहि पाय, हटैं कहुँ पीड़ित जंपत हाय ॥१६६॥

॥ १५६ ॥ १५७ ॥ * आश्चर्य सहित ॥ १५८ ॥ † गिरैं ॥ १५९ ॥ १ तकिया २ रणशय्या पर सोते हुए ॥ १६० ॥ ३ मृतक शरीरों की ओट में ॥१६१॥ ४ जाचक के फुँहारे के समान॥१६२॥ ५ ज्येष्ठ मासमें पर्वतों में अग्नि जलै जैसे ॥१६३॥ ६ हाथियों के कुंभस्थलों से लगकर ७ स्त्रियों से ८ कामदेव के जगने से ९ समूह ॥ १६४ ॥ १० धप्पड़ ११ गीता का ज्ञान १२ सांख्यशास्त्र के मत को कह कर स्वयं ब्रह्म बनते हैं ॥ १६५ ॥ १३ होठों को चबाकर लोहू चखते हैं ॥ १६६ ॥

कहैं कहुँ बैद्य बुलावन बत्त, चहैं कहुँ अच्छरिकौं रसरत्त ॥
झुलैं कहुँ घोरनपैं मृत झुंड, रुलैं कहुँ*तंडव मंडत रुंड ॥१६७॥
खिजैं कहुँ चिल्हनिपैं†पलखात, लसैं कहुँ‡फेरुन मारत लात ॥
गहै कहुँ§स्वानन तोरत गूद, बनैं कहुँ साकिनिके छित¶सूंद ॥१६८॥
नटैं कहुँ श्रतक दूतन भीत, गिनैं कहुँ गेमत डाकिनि गीत ॥
मिलैं कहुँ प्रान अपानन मेल, सिटैं कहुँ प्रोत निहारत सेल १६९
लखै कहुँ नाक जुरावन बिक्ख, कढैं कहुँ कायन तोमर [2]तिक्ख॥
नये कहुँ दुल्लह चिंतत नारि, कहैं कहुँ पुत्रहि पुत्र पुकारि ॥१७०॥
ठिगैं कहुँ निठ्ठि गहैं हय पुच्छ, मिलैं कहुँ उठ्ठि मरोरत मुच्छ ॥
जकैं कहुँ बाजि गलक्कत जीन, ढलैं कहुँ हत्थिय सुंडि बिहीन१७१
ढुरैं कहुँ श्रानक दुंदुभि फुट्टि, ढरैं कहुँ केतन[3] तेगन तुट्टि ॥
गिरे कहुँ पट्टिस खग्ग कमान, गिरे कहुँ खेटक[4] तोमर बान ।१७२।
गिरे कहुँ बाहुल कंकट टोप, गिरे कहुँ कोस उरंगम श्रोप ॥
गिरे कहुँ गज क्रमेलक खंड, ढरे बनिजारनके जनु टंड ॥१७३॥
गिरे कहुँ पक्खर बग्ग खलीन, गिरे कहुँ तुंग खरे खग खीन ॥
गिरे कहुँ गुच्छ बनैं गजगाह, गिरे कहुँ प्रोथं बजावत बांह॥१७४॥
गिरे कहुँ गैंवर मोहि श्रमाप, गिरे कहुँ श्रंकुस घट कलाप ॥
गिरे कहुँ पुंष्कर श्रासन कान, गिरे कहुँ पेचक श्रो मतिमान ॥ १७५ ॥
गिरे कहुँ कुंतल मुच्छ कुघाट, गिरे कहुँ मुंड रु तुंड ललाट ॥
गिरे कहुँ नेत्र रदच्छद लाल, गिरे कहुँ नक्र ध्वनिग्रंह गल्ल ॥१७६॥

*नृत्य रचते हुए ॥ १६७ ॥ †मांस खाने से ‡ गीदड़ों का लात मारते शोभा देते हैं§ कुत्तों को ¶ साकिनियों के लिये रसोईदार (बवर्ची) बनते हैं ॥ १६८ ॥ यमराज के दूतों को डरकर नटते हैं कि हम को मत लेजाओ १ भालों का श रीरों में घुसते हुए देखकर ॥ १६९ ॥ २ शरीरों से तीखे भाले ॥ १७० ॥ ॥१७१॥ ३ ध्वजा, तरवारों से कट कर पड़ा है ४ कटार ५ ढाल ॥ १७२ ॥ ६ दस्ताने ७ कवच ८ तरवारों के म्यान ९ सर्पों की शोभा से १० ऊँटों के टुकड़े ॥१७३॥ ११ लगामें १२ फुरणे बजाते हुए १३ घोड़े ॥ १७४ ॥ १४ पोगर (सुंड का अ- ग्रभाग) १५ हाथियों के पूँछ का मूलभाग १६ हाथियों के दांतों के बीच का भाग ॥ १७५ ॥ १७ मूँछों के केस १८ मुख १९ लाल होठ २० नाक, कान और

गिरे कहुँ*काकुद जिब्भन जूह, गिरे कहुँ मल्लक दल्ल समूह ॥
गिरे कहुँ†बीतन त्यौं‡कृक्क फाटि, गिरे कहुँ काकल कंठ कृकाटि १७७
गिरे कहुँ कूर्प्पर खंडिक कंध, गिरे कहुँ जत्रु भुजा मणिबंध ॥
गिरे कहुँ अंगुल अंगुलि टूक, गिरे कहुँ ज्यौं कर त्यौं करसूक ।१७८।
गिरे कहुँ पंसुलि रीढक तोम, गिरे कहुँ पुप्फस कालिक क्लोम
गिरे कहुँ नाभि पुरीतति गंज, गिरे कहुँ फुल्लि फबे हिय कंज ॥ १७९ ॥
गिरे कहुँ त्यौं त्रिक सत्थिन संघ, गिरे कहुँ जानु जुदे जुग२ जंघ
गिरे कहुँ पिंडिय गोहिरि फुट्टि, गिरे कहुँ एडिय घुंटक तुट्टि ।१८०।
लख्यो कछवाहन यौं रन थान, धरे सब घायल खोजि नृजान ॥
निकारिय सल्ल जथा सुखकार, चिकित्सक बुल्लि रच्यो उपचार ।१८१।
मरे तिनके बिधिसौं किय दाह, बनैं तिम प्रेतक्रिया निरवाह ॥
दिवावत यौं जय दुंदुभि डक्क, चल्यो अब बुंदिय जैपुर चक्क ॥ १८२ ॥
बिथारत बट्टन अप्पन आन, उठावत सत्रुन सीम अमान ॥
जयो नृप कूरम अक्खत जोध, कथंचित भो जु समावत क्रोध ॥ १८३ ॥
महाबल जो जयके छक मत्त, प्रसारत ओदक बुंदिय पत्त ॥
पुरी पुनि झंड रुपे पचरंग, दिसा बिदिसान सुन्यौं यह दंग ।१८४।
भयो मन मोदित कूरम नाह, स्वसेनहिं अप्पिय वाह सिराह ॥

गला ॥ १७६ ॥ * तालुआ और जीभों का समूह † दन्त और दाढों का समूह ‡ गले के दोनों पसवाड़े § गला १ कंठमणि २ गरदन का ऊंचा भाग ॥ १७७ ॥ ३ हाथ की कुहनी ४ गले की संधि (हसली की हड्डी) ५ पूंचा ६ अंगूठा ७ नख ॥ १७८ ॥ ८ समूह ९ फेफरा १० कलेजा ११ तिल्ली १२ आंतों के समूह ॥ १७९ ॥ १३ माकड़ी का हाड और साथलों का १४ समूह (घुटनों के ऊपर के भाग को साथल और साथल के ऊपर के भाग को जांघ कहते हैं) १५ पिंडुलियों और पादग्रन्थि (गिरिये) १६ घुटने ॥ १८० ॥ १७ वैद्यों को बुलाकर १८ इलाज ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १९ मार्गों में २० ईश्वरीसिंह की जय हुई (जय शब्द पुल्लिंग है जिसको यहां लोक रूढी से स्त्री लिंग लिखा है) २१ अत्यन्त प्रयत्न से हुआ उस क्रोध को मिटाते हैं ॥ १८३ ॥ २२ भय फैलाते हुए बुन्दी में गये २३ युद्ध ॥ १८४ ॥ २४ कछवाहों का पति (ईश्वरीसिंह २५ अपनी सेन

करे गज बाजि पटा बखसीस, गिन्यों*जयसिंहज अप्पहिं ईस१८५
दये सब भूपनकों जयपत्र, लिखी वह हड्ड भज्यो तजि छत्र ॥
सु आवहिं जो तुमरी भुव माँहिं, ततो टेत कछ्छहु रक्खहु नाँहिं१८६
लई इम बुंदिप कुम्म बहोरि, जिला गढ कोट सजे बलजोरि ॥
फिर्यो सब देस नरायनदास, लग्यो कर लैन ससैन हुलास१८७
इतैं अब जो हुव भूप चरित्र, सुनौं नृप राम रचौं वह चित्रँ ॥
पचास सहस्र ५०००० नमैं असि झारि, कढ्यो नृप पूरब फोजनि फारि ॥ १८८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बुन्दीन्द्रकूर्मकटककलहकरणाकूर्मप्रतापसिंहीयसप्तदश १७ स्वकीयत्रयोदश १३ सुभटसहितचालुक्यपृथ्वीसिंह १ शूरसप्तक ७ सहितयादवदलेलसिंह १ मारकस्वसुतत्रय ३ सुभटपञ्चविंश २५ त्युपेतकबन्धाऽमरसिंह २ सयवनशत्रुपञ्चक ५ सहितहड्डप्रयागसिंह ३ स्वचतुरशीति ८४ झलायपुरीयैकोनविंशति १९ सुभटयुतहड्डमर्यादसिंह ४ तोकसिंहप्रहतकूर्म्मविजयसिंह ३ स्वनामसजातीय ४ सयुतकूर्म्माऽजितसिंह ५ सकूर्महम्मीर ४ हड्डदेवसिंह ६ सम्भरभवानीसिंहाऽऽक्रान्तकूर्ममाधवसिंह ५ कबन्धत्रिकाक्रान्तकूर्म्माऽमान

को * जयसिंह के पुत्र ने अपने को बुन्दी का पति जाना ॥ १८५ ॥ १ शीघ्र ॥ १८६ ॥ २ हासिल ३ सेना सहित ४ प्रसन्न होकर ॥ १८७ ॥ ५ उम्मेदसिंह का ६ राजा रामसिंह ७ उसका चित्राम रचता हूँ सो सुनो ॥ १८८ ॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के इन्द्र का कछवाहे की सेना से युद्ध करना, कछवाहे प्रतापसिंह के सत्रह और अपने तेरह सहित सोलखी पृथ्वीसिंह का, और सात वीरों सहित यादव दलेलसिंह को मारने वाले अपने तीन पुत्र और पच्चीस वीरों सहित राठोड़ अमरसिंह का, यवन सहित पांच शत्रुओं के साथ हाडा प्रयागसिंह का, अपने चौरासी और झलाय नगर के उन्नीस वीरों सहित हाडा मर्यादसिंह का, कछवाहे विजयसिंह को मारकर तोकसिंह का अपने ही नामवाले और अपनी जातिवाले अजितसिंह का, कछवाहा हम्मीरसिंह सहित हाडा देवसिंह का, कछवाहा माधवसिंह को मारने वाले चहु-

सिंह ६ भगवत्सिंह ७ भूपालसिंह ८ ऽर्जुनसिंह ९ प्रमारोदयसिंह १० यादवव्याघ्रसिंह ११ सहितभट्टजगराम ७ बुन्दीशाक्रान्तकूर्म्म विक्रम १२ भैरव १३ चाहुवाणस्थान १४ सुरतानाऽऽदिसप्तशत ७०० सुभटमरणद्वादशशत १२०० सुभटक्षतप्रापणहंजहयचरणकर्त्तना ऽनन्तररावराजनिस्सरणकूर्म्मकटकविजयीभवनबुन्दीप्रविशनमष्टा दशो १८ मयूखः ॥ १८ ॥ २९९ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नर समुद्र तरि नृप कढिय, अलप सत्थ रहि संग ॥
कोस तीन३ पहुँचत क्रमिय, तजि असु हंज तुरंग ॥ १ ॥
असि तुपकन वपु भिन्न अति, वलि इक१चरन विहीन ॥
नृप अप३ कोस निबाहयो, कठिन हंज हय कीन ॥ २ ॥
भूपहु अंग बिसल्य करि, सहिय अग्गि उपचार ॥
सस पल भोजी रत्ति रहि, किंचिय प्रात बिहार ॥ ३ ॥
गिरिन संधि अंतर कियउ, पूरब ओर पयान ॥
ढँबिय इंद्रगढ नगर ढिग, जित्त निडर चहुवान ॥ ४ ॥
इंद्रगढाधिप देव प्रति, कहि पठई नरनाह ॥

दाद्या भवानीसिंह का, कछवाहा अमानसिंह, भगवत्सिंह, अर्जुनसिंह के मारनेवाले राठोड़ अमरसिंह के तीन पुत्रों का, पँवार उदयसिंह और याद व बाघसिंह को मारने वाले भाट जगराम का, तथा बुन्दीश के मारे हुए कछ वाहे विक्रमसिंह, भैरवसिंह, चहुवाण थानसिंह और सुरताणसिंह आदि सा त सौ वीरों का मरना, और बारह सौ सुभटों का घायल होना, हंज नामक घोड़े का पैर कटे पीछे रावराजा (उम्मेदसिंह) का निकलना, कछवाहे की सेन का विजयी होकर बुंदी में प्रवेश करने का अठारहवां मयूख समाप्त हुआ औ आदि से दोसौ नन्यानवे २९९ मयूख हुए ॥

१ हंज नामक घोड़े ने प्राण छोडा ॥ १ ॥ २ पुनि ॥ २ ॥ ३ साल निकाल कर अग्नि से सेकने (तपाने) का इलाज किया ५ रात्रि में खरगोस का मांस खा कर रहा ॥ ३ ॥ ६ पर्वतों की संधि में ७ ठहरा ॥ ४ ॥ ८ उम्मेदसिंह ने ॥ १ ॥

हय हमरो गतप्रान हुव, हो जिहिं लरन उछाह ॥ ५ ॥
तातैं पठवहु देव तुम, खासा हय इक खुल्लि ॥
अवर न चाहैं हमहु *इन, भुजन कुमाई भुल्लि ॥६॥
सुनि यह दव रिसाय सठ, †त्रसिन चुरायउ चेत ॥
यहै न जानी हम ‡अनुग, तउ इक१ अश्वहि लेत ॥ ७ ॥
इम अधर्म अहरि अधम, जैपुर गिनि बरजोर ॥
पच्छी यों कहि मुक्कलिय, मूढ तजहु भुव मोर ॥ ८ ॥
जिम तुम खोई निज पहुमि, बिनु मति दर्प बढाय ॥
तिम हमरी खोवन तकत, अश्व लेन यहँ आय ॥ ९ ॥
निठुर बैन सुनि साहि नृपति, लिखी अब न कछु लँहि ॥
जो तुम यह खायो जहर, देहैं लहर कबैहिं ॥ १० ॥
इम कहाय नृप बर करिय, कोटा सीम प्रयान ॥
चम्मलि लंघि मुकाम किय, ग्राम रानपुर थान ॥ ११ ॥

॥ पज्झटिका ॥

रन सिन्धु तरिग चहुवानराय, कछवाह भटन असिवर चखाय ॥
गिरि पारियात्र द्रोनिन विहारि, उपनंद्धि घाय वपु सल्लय टारि ॥१२॥
इम होय इंद्रगढ पुर समीप, देवहिं नटाय नृप वंसदीप ॥
उल्लंघि सरित चम्मलि अमान, कोटाग रानपुर दिय मिलान ॥१३॥
अरु सुभट अल्प नृप संग आय, रन दुसह कौन असु तजि रहाय ॥
अब मिलिय आनि सब अनुग अत्थ, अवरहु अनेक सुनि रन समत्थ१४
उत कुम्म भटन लहि विजय जंग, बुंदिय प्रवेस किय अति उमंग ॥

* राजा तथा तुम्हारे पति है तोभी ॥ ६ ॥ † डर कर ‡ सेवक हैं तोभी ॥७॥८॥ १घमंड पकड़ा कर॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ २ जिस पर्वत के चारों ओर यात्रा (परिक्रमा) की जावे उसको पारियात्र कहते हैं [इसी कारण चित्रकूट को पारियात्र कहते हैं] ३ पर्वतों की संधि जिनको राजपूताने में खाडेव खोहल कहते हैं ४ पाटा बांधने आदि घावों का इलाज ॥ १२ ॥ ५ कोटा के पर्वत में ॥ १३ ॥ ६ प्राण छोड़ने को कौन रहै ७ सेवक ८ युद्ध में समर्थ सुनकर ॥१४॥

जिन रचिय*अग्घ थिर नृपहिँ थप्पि,†आयत्त बिरचि तिन ‡दमन अप्पि
कोटेस §हिंतु पुनि यह कहाय, तुम चतुर नीति अद्दरि ¶हितार्थ ॥
बुधसिंह सूनु हित करुन लैहिं, सत दोय २०० दम्म हम नित्य
देहिं ॥ १६ ॥
मध्यस्थ होय तुम साम लाय, तिहिं देहु कुम्भ नृप पय लगाय ॥
कोटेस लुब्ध सुनि पाप प्रीत, मंजार पाय पय होत सीत ॥ १७ ॥
स्वीकारि यहैहु जड़ छन्न साम, दिनप्रति लिय मासन हिसत २००दाम
नृप अंतिक पठये तेहु नाँहिं, उलटी खिल बंचन बुद्धि आँहिं ॥१८॥
कोटेस बहुरि किय यह कुकर्म, इम कोन कोन अक्खहिं अधर्म ॥
इत सुनिय रान जगतेस बत्त, बुंदीस सूर रन रचिय रत्त ॥ १९ ॥
दुव२ बेर कूरमन फोज फारि, बरछी गति प्रविस्यो बहु बिदारि ॥
करवालि झारि हद रारि कीन, वलि काढिय जानि हय पय बिहीन२०
अब ग्राम रानपुर धाम आँहिं, छत छाम तदपि नैंति नाम नाँहिं ॥
हय हंज जो किं पय भिन्न ठहै न, छोरैं न हनत तो सत्रु सैन॥२१॥
मन मित्र बाजि बिनु अब नरेस, बांछत कछु दुर्म्मन हय बिसेस ॥
यह सुनत रान हिय मोद आय, भूपहिं सिराहिं बीरत्व भाय ॥ २२ ॥
हय खास नाम जिहिं होनहार, साखति चामीकर सजि सुढार ॥
सिरुपाव उच्च इक१ रुचिर रंग, तरवारि खास इक१ तास संग।२३।
उम्मेद नृपति हित दिय पठाय, स्वीकरिय नृपहु गिनि हित सुनाय
इम होत सरदरितु मज्झ आय, दक गगन उभय२ निर्मल दिखाय२४

* आघ, उन उम्मेदसिंह के आघ करनेवालों को † अपने आधीन किये ‡ दंड देकर ॥ १५ ॥ § से ¶ हितार्थ १ बुधसिंह के पुत्र के अर्थ २ करुणा करके ३ रुपये ॥ १६ ॥ ४ ईश्वरीसिंह के पैरों लगादो ५ लोभी ६ बिल्ली को ७ दूध ठंढा होता मिला ॥ १७ ॥ ८ मंजूर करके उम्मेदसिंह के ९ पास १० ठगने की बुद्धि है ॥ १८ ॥ १९ ॥ ११ तरवार चलाकर १२ घोड़े को बिना पैर जानकर ॥ २० ॥ १३ है १४ घावों से दुर्बल है तोभी १५नाम मात्र भी नम्रता नहीं है १६ याद ॥ २१ ॥ १७ घोड़े बिना ॥ २२ ॥ १८ जिसका नाम आगे होने वाला है १९ सुवर्ण की ॥ २३ ॥ २०स्वीकार किये २१जल और आकाश ॥२४॥

॥ षट्पात् ॥

गरजि मेघ उग्घरिय भरिय नेन नीरै निवानन ॥
पितरन कव्य पंजोय विरचि नृप निगम विधानन ॥
पुनि कुलदेविय पूजि सद्धि कत्तिय व्रत सजम ॥
अब आगम हेमंत किन्न अगहन मृंगया क्रम ॥
आखेट थान कोटेसके कति मृगराज विहीन किय ॥
रुद्धिय परक्खि आयुध सकल रानपुर सु इम नृप रहिय ।२५।

॥ दोहा ॥

इंडग्पिा उपटक्क इत, रामसिंह रट्ठोर ॥
हो जो तब पुर बनहडा, सुनि नृप बिक्रम सोर ॥ २६ ॥
ताकैं ही इक१ पुत्रिका, वखतकुमरि अभिधान ॥
ताको रचि सगपन त्वरित, सभर हितुं संयान ॥ २७ ॥
पठयो डोला रानपुर, सचिव सुभट दे संग ॥
उपयंम करन उमेदसों, जानि वीर वर जंग ॥ २८ ॥
सचिव भटन तब प्रीति सह, अंरहि रानपुर आय ॥
कन्या वह बुंदीस कँहँ, प्रथितँ दई परिनाय ॥ २९ ॥
कन्याके काकाहुकी, बिर सुता रूप बिसाल ॥
रान१ रु माधव२ एहु दुव२, व्याहे पूरब काल ॥ ३० ॥
संग उचित यातैं समुझि, परनि नृपहु मुद पात ॥
सक गुन नभ धृति१८०३लगन सुभ, दोजिरसंहा अवदात ।३१
रग्यो नहिं शृंगार रस, अवहि वीर अनुसारि ॥
वहुरि बढ्यो मन बप्पकी, धरनी पर धक धारि ॥ ३२ ॥

---

१ नवीन २ पानी ३ श्राद्ध का अन्न ४ पहुँचा कर ५ वेद विधि ६ कार्तिक मास में, इन्द्रियों के रोकने का व्रत ७ शिकार ८ शिकार के स्थान ९ सिंहों के बिना ॥२५॥ ॥ २६ ॥ १० नाम ११ चहुयाण से १२ बुद्धिमान् ॥ २७ ॥ १३ विवाह ॥ २८ ॥ १४ शीघ्र ही १५ प्रसिद्ध ॥ २९ ॥ ३० ॥ १६ मृगसिर १७ सुदि ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

दुलहनि कोटा मुक्कलिय, जत्थ अनुज[1] तिय[2] जामि[3] ॥
अप्पन मन रन उम्महयो, इच्छत जय आगामि ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदियपुर बुधसिंह सुतहिं सुनि बहुरि चलावत ॥
कोटापति लगि लोभ कहिय इम मुम्मि न आवत ॥
हम उद्यम यह करत हेत मरहट्ठन सम्मलि ॥
बिनु बल जैहो लाल[3] निठि लैहो यह चम्मलि[4] ॥
दे इष्ट सौंह इम अक्खि इत बुंदीसहिं रक्ख्यो बराजि ॥
सतदोय२००द्रम्म[5] कछवाह सन भेट[6] होत यह लोभ भाजि ।३४।

॥ दोहा ॥

बंधु बर्ग उमराव निज, अजबसिंह अभिधान ॥
कोइलपुर पति भेजि करि, अटक्यो नृप[7] प्रस्थान ॥ ३५ ।

॥ षट्पात् ॥

माधानी अजबेस आय भूपहिं इम अक्खिय ॥
गिनत अप्प रन सुगम चंड[8] असि बर नहिं चक्खिय ॥
अप्पन परिकर[9] अलप दुसह जैपुर वह दाहत ॥
सिंहन आगस[10] संसहिं[11] चिन्ह अनुचित अंसु[12] चाहत ॥
याते न तुमहिं जावन उचित कोटापति यह हित धरत ॥
दृढ मंत्र बुज्झि दक्खिन दलन[13] जतन लैन बुंदिय करत ।३६
सुनत एह गिनि सत्य भूप कोटेस भरोसैं ॥
जान्यों काका करत महत[14] उद्यम यह मोसैं ॥
तो इनकी अब देखि बहुरि बनिहै सु बिचारहिं ॥

---

१ जहां बाहिन थी २ आगे आनेवाली जय की इच्छा करता हुआ ॥ ३३ ॥ ३ हे लाल ४ भगकर यह चामल नदी कठिनाई से लोगे ५ रुपये ६ से ॥ ३४ ॥ ७ उम्मेदसिंह के गमन को रोका ॥ ३५ ॥ ८ भयंकर खड्ग ९ परगह १० सिंहों क अपराध करके ११ खरगोस १२ जीना चाहै सो अनुचित है १३ सेनाओं क ॥ ३६ ॥ १४ मुझ से बडा उद्यम

सुमिरी यह न सपान कुहक निज काम निकारहिं ॥
नृप रहिय होत उद्योग लखि मास सत्त७बिनु भुव जतन ॥
मृगया मैंसक्त कोटा मुलक गजत सिंह वराह गन ॥३७॥

॥ दोहा ॥

मधुकरदुर्ग मुकाम किय, ग्रीखम अंत नरेस ॥
महडू चारन दान तहँ, वरनी किंत्ति बिसेस ॥ ३८ ॥
अमरपुराके जगको, काव्य जथामति ठानि ॥
गीत छंद मरु वानि गत, नृपहिं सुनायो आनि ॥ ३९ ॥
सुनत भूप बखसीस किय, रीझि तरल हयराय ॥
खास जरिय पोसाक पुनि, कुंडल कटक सुभाय ॥ ४० ॥
सनमान्यों कविराज कहिं, डेरा तास पधारि ॥
भयो वहुरि हत्थिय हुकम, नूतन काव्य निहारि ॥ ४१ ॥
सो गज वुंदिय तखत जब, अप्प बिराजे आनि ॥
तब दिन्नों यह अत्थ हम, भावी लिखिय बखानि ॥ ४२ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक वेद ख वसु सोम१८०४ मास सावन तदनंतर ॥
मैंसरोरगढ सीम रमिग आखेट भूप बर ॥
पुनि भद्दव सित पच्छ आय वेधम एकादसि११ ॥
भयो जानि दुरभिच्छ बिपति चिंतत दिन दुव२बसि ॥
दरियाव नाम गजराज निज उदयनेर बिक्रैय करन ॥
सुकल्पो पुरोहित रवीय तब दयाराम द्विज धर्मधन ॥ ४३॥

॥ दोहा ॥

जाय पुरोहित उदयपुर, गज बिक्रय तहँ ठानि ॥

१उलो (डग)२शिकार में आसक्त॥३७॥३मधुकर गढ ४ चारणों की एक शाखा का नाम है ५ उस चारण का नाम है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ६ चपल घोडा ७ मोती ८ कड़े अच्छी रीति से दिये ॥ ४० ॥ ९ नवीन ॥ ४१ ॥ १० यहां ॥ ४२ ॥ ११ जिस पीछे १२ वेचने को १३ धर्म ही है धन जिसका ॥४३॥

दम्म सहँस दुव२०००मुक्लके, पठये समय प्रमानि ॥ ४४ ॥
जिन सुत सोलह१६ बरसतें, सुकतें आपति भार ॥
अब अलुंठि कति दिन टिकहिँ, दम्म तिं दाम हजार २००० ॥

॥ षट्पात् ॥

सावन सूको गयउ वेर दुव१अल्प वृष्टि घन ॥
ज्यौँही भद्दव जात घोर हाकार उट्ठि घन ॥
हड्डोतिय मेवार तंग ओदन३ दुव देसन ॥
वनिय आनि इहिँ वेर निट्ठि निरवाह नरेसन ॥
नृप तबहि चिंति आपति धरम ग्वाय भटन गञ्जुन साजय ॥
मन ओर पैठि बुंदिय मुलक गैनोलीपुर लुट्ठि लिय ॥४६॥

॥ दोहा ॥

गैनोली वसु लुट्टि इम, अति बिपत्ति चहुवान ॥
तदनुँ दुग्ग रनथंभकी, सीमा करिय प्रयान ॥ ४७ ॥
नगर नाम खंडारि ढिग, कछुदिन बिरचि मुकाम ॥
कोटापतिको लोभ सुनि, ठग मन्न्यौं अघ ठाँम ॥ ४८ ॥
उत सु पुरोहित उदयपुर, दयाराम अभिधान ॥
पुब्बहि रान अधीनहो, लैनिदेस चहुवान ॥ ४९ ॥
आत जात नृप ढिग रह्यो, स्वामि धरम भनि भाव॥
तातैं बेचन संग तस, दयो हुतो दरियाव ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ बुन्दीन्द्रहयमरणात्मृदुचरणाविचरणाक्रदिन्द्रगढाऽऽगमनाऽश्वयाचनदेव-

॥ ४४ ॥ १ अनावृष्टि (दुर्भिक्ष) में २ दो (थे) ॥ ४५ ॥ ३ अन्न बिना ॥ ४६ ॥ ४ धन ५ जिस पीछे ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ६ पहिले से ही ७ उम्मेदसिंह की आज्ञा लेकर ॥ ४९ ॥ ८ दरियाव नामक हाथी ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के पति का घोड़ा मरने से कोमल चरणों से चलकर इन्द्र गढ आना१घोड़ा मांगना और देवसिंह

सिंहनेतिकथनहड्डेन्द्रराणपुरनिवसनतदनुकूलबुन्दीजनकूर्म्मकर्तृक नियमनबुन्दीन्द्रनिमित्तमुद्राशतद्वय२००महारावप्रापणरावराजाऽर्थ-राणाहय १ पट २ खड्ग ३ प्रेषणघनाऽत्यय १ हेमन्तर्त्वागमनभूभृ-त्तृतीयो ३ द्वहनकोटेशनृपोद्यमवारसम्भरमधुकरदुर्गकालक्षेपणास म्भदाऽऽकविदानचारणदानप्रभुभैंसरोडदुर्गप्रान्ताऽऽखेटक्रीडनतद्बेघ मपुराऽऽगमनदुर्भिक्षपतनविक्रयाऽर्थदरियावगजोदयपुरप्रेषणाविपद्ध-र्म्मधरधरेशगैणोलीपुरलुण्ठनरणस्तम्भदुर्गप्रान्तखण्डारिपुरकिञ्चि न्निवसनकोटेशकौहक्यविबोधनमेकोनविंशो मयूखः ॥ १९ ॥३००॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

दयाराम द्विज सहित राने इकदिन रहस्य किय ॥
साहिपुर पें सीसोद वीर उम्मेदहु बुल्लिय ॥
स्वीयें सुभट पुनि च्यारि४ प्रथम भारत१ सेनापति ॥
दुरग अग्ग देवलिय हठन जिहिं किय सालम हंति ॥
देवगढ अधिप जसवंत२ पुनि सगाउत चौंडा जनन ॥

का हटना २ हाडा के राजा का राणपुर में निवास करना ३ उम्मेदसिंह के अनुकूल बुंदी के लोगों को कछवाहों का कैद करना ४ उम्मेदसिंह के कारण दोसौ रुपये रोज कोटा के महाराव का पाना ५ रावराजा के अर्थ महाराणा का घोडा, वस्त्र और खड्ग भेजना ६ मेघों के मिटे पीछे हेमन्तऋतु के आगम में भूपति का तीसरा विवाह करना ७ कोटेश के उद्यम के समय में चहुवाण (उम्मेदसिंह का मधुगढ में समय बिताना ८ दान नामक चारण को दान देकर राजा का भैंसरोड़ गढ के प्रान्त में शिकार खेलकर वहां से बेघमपुर आना ९ दुर्भिक्ष पड़ने से दरियाव नामी हाथी को बेचने के अर्थ उदयपुर भेजना १० आपद्धर्म को धारण करके भूपति का गैणोलीपुर को लूटना ११ रणस्थंभ गढ के प्रान्त में खंडारपुर में कुछ ठहरना १२ कोटा के पति का ठगपन जनाने का उन्नीसवां १९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ मयूख ३०० हुए ॥

१महाराणा जगतसिंह ने २ एकान्त सलाह की ३ पति ४ उम्मेदसिंह को भी बुलाया ५ अपने उमराव ६ नाश ७ यश में

पतिदेलवाड़ झल्ला *प्रथित राघवदेव३ निसंक रन ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

रायसिंह४ झल्ला बहुरि, नगर सादड़ी नाह ॥
इन जुत रान रक्खय किय, चित जैपुर जय चाह ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

कहिन रान कोटेस कितव१ दुवरबेर बदलि गय ॥
अब पुनि इक्कत होन चवहि२ पठवाय दूत चय३ ॥
वंचककों४ विसवास करन काको चित चाहत ॥
दयाराम सुनि कहिय अरज करजोरि उमाहत ॥
प्रतिअब्द५ आत श्रियद्वार वह अन्नकूट सद्दन समय ॥
तब चलन तत्थ अप्पन उचित माधव६ सहित निहारि नग ३
हरि प्रतिमाके७ अग्ग तबहिँ कोटेसहिँ अक्खहिँ ॥
तुम वंचक चलबुद्धि मित्र भावहि इन रक्खहिँ ॥
जो अब इक्कत होत ततो हरि इष्ट सपथ८ करि ॥
सदा साख लिखि देहु अब न डरपहु कूरम अरि ॥
छद९ इम लिखाय कोटेसको पुनि प्रसन्न मरहट्ठ करि ॥
खंडुव मलार हुलकर तनय जुल्लहु समर सहाय वरि१० ।४।

॥ दोहा ॥

दयाराम इम अरज करि, थप्पो यह दृढ मंत्र ॥
सुपहु रान सुनि स्वीकरिय, सुभटन सहित स्वतंत्र ॥ ५ ॥

॥ सोरठा ॥

तदनंतर नृप रान, देवकरन कहँ दूर करि ॥
पंचोली सु प्रधान, नाम भवानीदास किय ॥ ६ ॥

---

*प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ ॥ १ ठग २ कहता है ३ दूतों का समूह भेजकर ४ उस ठग का ५ प्रतिवर्ष ६ माधवसिंह सहित ॥ ३ ॥ ७ मूर्ति के आगे ८ सौगन (शपथ) ९ पत्र १० आना करके ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत जैपुर पहिलैंहि मरिग खत्रिय राजामल्ल ॥
*कोबिद केसवदास हुतो सुत तास मत्र वल्ल ॥
तब नृप ईश्वरिसिंह किन्न वह सचिव सिरोमनि ॥
पिसुन नरन तिहिं पिट्ठि भूप प्रति इम चुगली भनि ॥
हेनृप अमात्य केसव कितव मन्नैं तुमहिं न मत्र मद ॥
याके उमेद माधव अरथ छन्नैं आवत जात छंद ॥ ७ ॥
सुनि यह ईस्वरिसिंह मूढ तत्व न पहिचानिय ॥
काकन कथित विधाय हस मारन मत मानिय ॥
खत झूटे लिखि खलन नृपहिं दिन इक बताये ॥
मूरख सच्चे मन्नि गढे औगुन बहु गाये ॥
केसव सु मंत्रि बुलवायकैं कुनृप तास अपहास करि ॥
अक्खी कुमन्नि ए दल लखहु सुनि केसव लिय नैंन भरि ।८।

॥ दोहा ॥

अक्खी केसव अबहि नृप, निश्चय करहु निदान ॥
जो ए दल मेरे लिखे, लेहु ततो मम प्रान ॥ ९ ॥
कूरम तब निश्चय करिय, निकसे पत्र असत्य ॥
विनु आगस जो मारतो, होतो ससचिव हत्य ॥ १० ॥
तदपि कुंम्म लिय सचिवपन, केसव करिय वकील ॥
पठयो दक्खिन नन्द पँहँ, सिखई मन्नि कुसील ॥ ११ ॥
नैंट्टानी उपटक इक, हरगोविंद स नाम ॥
किपउ मुसाहब वनिक वह, कूरम नृप हित काम ॥ १२ ॥

---

* चतुर १ उम्मेदसिंह और माधवसिंह के छिपे २ पत्र ॥ ७ ॥ ३ कहना करके ४ दुष्टों ने ५ ये पत्र ॥ ८ ॥ ६ इनका कारण ॥ ९ ॥ ७ विना अपराध ८ सचिव सहित मारा जाता ॥ १० ॥ ९ स्वामी ईश्वरीसिंह ने १० सिखाई हुई बात मानकर ११ खोटे स्वभाववाले ने ॥ ११ ॥ १२ नाटाणी उपटक (पदवी) वाला वैश्य ॥ १२ ॥

॥ षट्पात् ॥

पुत्ती[1] इक२ तिहिँ गेह रूप जुब्बन गुन मत्ती[2] ॥
बत्ती[3] बय छबि तास पास कूरम नृप पत्ती[4] ॥
कत्ती[5] सम सुनि कढिग छेकि पंच५ हि सर[6] छत्ती ॥
दुत्ती[7] दासिय भेजि प्रेमपासिय गर[8] घत्ती ॥
लंपटहिँ[9] काम जुत्ती लगत रत[10] उत्ती चिर चंढ रेय[11] ॥
सुत्ती समीप चाही सुनक[12] कुत्ती जिम कत्ती[13] समय ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

मगन पुब्ब अनुराग[14]मैं, लगन मिलन द्रुत लग्गि ॥
कुम्म पुरंदर[15]के किरी[16], अंदर बम्महँ[17] अग्गि[18] ॥ १४ ॥
दूतीजन पठवाय द्रुत, साम[19] उपाय प्रसारि ॥
आनी नृप ढिग अंगना[20], बानी बिनय[21] बिथारि ॥ १५ ॥
राजकाज भुल्ल्यो रसिक, छई मदन सिर छाँह ॥

---

१ उस हरगोविंद के घर में उसकी पुत्री रूप, यौवन और गुणों में २ मस्त थी उस की अवस्था और शोभा की ३ वार्ता कछवाहों के राजा (ईश्वरीसिंह) के पास ४ प्राप्त हुई (पुगी) ५ वह वार्ता सुनते ही तरवार के समान कामदेव के पांचों ६ बाण [यथा "द्रवणं शोषणं बाणं तापनं मोहनाभिधम्॥ उन्मादनं च कामस्य बाणाः पंच प्रकीर्तिताः"] छाती को छेदकर निकल गये ७ दूती दासी का भेजकर प्रेम की पासी गले में ८ घाली इस लंपट के ९ कामदेव की जूती लगते ही १० रत क्रीड़ा में उस चिर वेग (बहुत समय तक स्खलित नहीं होनेवाला) और ११ भयंकर वेगवाले ने जैसे १२ कुत्ता, कुत्ती को १३ कार्तिक मास के समय में चाहै तैसे उस हरगोविंद की पुत्री को समीप सुलानी चाही॥ १३ ॥ १४ पूर्वानुराग (मिलने से पहिले की प्रीति) में मग्न होकर १५ कछवाहों के इन्द्र के १६ गिरी १७ जैसे अहल्या के कारण इन्द्र और ब्राह्मण (गौतम ऋषि) में गिरी थी तैसे अथवा अहल्या के कारण इन्द्र के और सरस्वती के कारण ब्रह्मा के श्राप की अग्नि पड़ी थी वोही अग्नि ईश्वरीसिंह के पड़ी अर्थात् उक्त दोनों स्त्रियों से व्यभिचार करने के कारण दोनों देवों को श्राप से खिन्न होना पड़ा था तैसे ही ईश्वरीसिंह को भी इसी कारण प्राण देना पड़ा १८ अग्नि ॥ १४ ॥ १९ मिलने का २० उस स्त्री को २१ विशेष नम्रता की वाणी फैलाकर ॥ १५ ॥

कूरम डारी कठ अब, बनिक सुताके बाँह ॥ १६ ॥
रत्ति[1] जु तिय नृपढिग रहत, मात जात निज गेह ॥
दिन बिच तिहिं देखैं विनाँ, दुमनें[2] रहैं थकि देह ॥ १७ ॥
प्यारीकों दिन बिच प्रकट, जो बुल्लैं निज पास ॥
जनक[3] तास तो जानिकैं, बिरचै राज्य बिनास ॥ १८ ॥
बिनु देखैं निमिख न बनैं, देखन दुल्लभ दीह[4] ॥
यातैं बिरचि उपाय इक१, लोपी लज्जा लीह[5] ॥ १९ ॥
जैपुर पिक्खन[6] ओपाज करि, प्यारी पिक्खन काज ॥
बनवाई महलन बुरज तुगनकी[7] सिरताज ॥ २० ॥
जातैं सब जैपुर नगर, दिट्ठि परत अध[8] आय ॥
तक्कैं प्यारिय जाय तँह, छन्न मदन इम छाय ॥ २१ ॥

॥ षट्पात ॥

सक कृत नभ बसु सोम१८०४ बिसद बाहुल पड़िवा१पर[9] ॥
दरसन हित कोटेस गयउ श्रियंद्वार[10] उमँगि अर[11] ॥
करन रान अनुकूल पत्त[12] लिखि भेजि उदेपुर ॥
झुल्लिय[13] माधव सहित धरा सगर थमन धुर ॥
सुनि पत्त[14] रान माधव सहित मुदित होय आयहु मिलन ॥
गुन३ कोस एह सम्मुह गयउ मिलिय प्रीति अनुकूल मन२२

॥ दोहा ॥

तीन३हि नृप नयँरीति[15] तकि, रचि मिलाप पटु प्यार ॥
हरिमदिर एकत्तैं[16] हुव, करन मंत्र श्रीद्वार ॥ २३ ॥
कहिय रान कोटेस प्रति, बचन तुमारो मोघँ[17] ॥

॥ १६ ॥ १ रात्रि में वह स्त्री २ उदास ॥ १७ ॥ ३ उस स्त्री का पिता ॥ १८ ॥ ४ दिन में ५ सीमा ॥ १९ ॥ ६ मिस ७ ऊँचापन की ॥ २० ॥ ८ नीचे ॥ २१ ॥ ९ कार्तिक सुदि एकम १० नाथद्वारे ११ शीघ्र १२ पत्र १३ युद्ध करके १४ पत्र ॥ २२ ॥ १५ नीति की रीति को देखकर १६ इकट्ठे ॥ २३ ॥ १७ झूठा

बदलै पुब्बंहि इक्क बनि, अद्दरिकैं अघ[2] ओघ ॥ २४ ॥
यातैं अबलग रावरो, बनैं न मन बिस्वास ॥
कोटापति यह सुनि कहिय, हुव पलटैं अपहास ॥ २५ ॥
अब गोवर्द्धननाथ यह, इष्ट साखि धर आँहि ॥
कबहु न बदलैं सपँथ करि, अैसैं कहिय उमाहि ॥ २६ ॥
सपथ अक्खि इम रान कर, बचन दैन लगि हड्ड ॥
अटॅकि रान तब हड्ड कहँ, अक्खिय दै असि अड्ड ॥ २७ ॥
तुमरी छुंदिय आत कैं, कै इनकौं जयनैर ॥
तातैं लेहु रु देहु तुम, बचन दोहु२ तजि बैर ॥ २८ ॥
मैं परमारथ तक्कि मन, करत दुहुँन२ उपकार ॥
यातैं लैन न उचित अरु, दैनहिं बचन उदार ॥ २९ ॥
यह कहि दोउन२ हत्थ गहि, दयो बचन निज रान ॥
सुनि माधव१ कोटेस२ मिथं, दिय लिय बचन निदान ॥३०॥
रान बचन तिनको नलिय, तिनकौं दिय गहि तेग ॥
तिम भट सचिवनकोहु तँहँ, बचन दिवायउ बेग ॥ ३१ ॥
किय रहस्य श्रियद्वार इम, अधिपन मन धन अप्पि ॥
मरहट्ठन चिंतिय मिलन, जैपुर सँन रन थप्पि ॥ ३२ ॥
रान वकील खुमान१ तब, रानाउत किय त्यार ॥
मरहट्ठन ढिग मुक्कलन, उभय२ भुम्मि उपकार ॥ ३३ ॥
माधवहू तस संग दिय, निज वकील नरनाँह ॥
गोगाउत हम्मीर कुल, प्रेमसिंह कछवाह ॥ ३४ ॥
माधव दम्म हिलक्खर००००० दिय, हुलकर हित तस संग ॥

१पहिले भी२पापका समूह॥२४॥२५॥३साक्षीभर है४सौगन शपथ करके॥ २६ ॥ ५कोटा के महाराव को रोककर ६ तरवार बीच में दी॥२७॥ ७माधवसिंह को ॥ २८ ॥ २९ ॥ ८ परस्पर (दोनों ने) ९ कारण सहित ॥ ३० ॥ ३१ ॥ १० सं ॥३२॥ ११खुमाणसिंह॥३३॥१२हे राजा रामसिंह वा नरनाथ (माधवसिंह)ने॥३४॥

उभयर वकीलन भेजि इम, आये निज निज द्रंग ॥ ३५ ॥

॥ षट्पात् ॥

रान वकील खुमान१ प्रेम१ माधव वकील दुव२ ॥
नगर कालपी जाय सेन दक्खिन सम्मलि हुव ॥
दुवहि लक्ख २००००० दै दम्म तुष्ट हुलकर मलार किय ॥
जैपुर समर सहाय तनय खडुव तस मंगिय ॥
सुनि यह मलार सुत सज्ज करि रन सहाय लगि मुक्कलन
राणजि रामचद२ सु तवहि अक्खिय उचित सहाय नैंन३६
रामचन्द इम कहिय धरहु श्रुति कथ मलार ध्रुव ॥
अप्पन पति श्रीमत अग्ग जयसिंह मित्र हुव ॥
जैपुर सन हित करन वचन तिन दिय कूरम कर ॥
वह तुम मेटत अज्ज धनिप कृत भुल्लि लोभ धर ॥
ईस्वरीसिंह सम्मलि सबहि हैं पति किंकर तुम रु हम ॥
समुझाय रान माधव सबन दब्बहु अरिन प्रचंड दंम॥ ३७ ॥
धकि हुलकर यह सुनत मुट्ठि असिवर कर मडिग ॥
अधर कंप अंकुरिग तानि मुच्छन घन तडिगें ॥
कहिय अग्ग जयसिंह लिखित हत्थनें करि अप्पिय ॥
रानाउति भवें पुत्त थिर सु जैपुर पति थप्पिय ॥
जयसिंह वचन यह रक्खि हम माधव सिर छत्रहिं धरत ॥
लग्गत यहै न अच्छो तुमहिं कुटिल लुब्धि अनुचित करत३८
राजामल कर कवलों बहुत चक्खिय तुम स्वाननें ॥
जातैं अटकन जंग विरचि नय हीन विधाँनन ॥

१ अपने अपने नगरों में ॥ ३५ ॥ २ रुपये देकर ३ प्रसन्न ४ सहाय देना उचित नहीं है ॥ ३६ ॥ ५ कहना सुनो ६ अपना ७ स्वामी के कार्य को भूल कर ८ भयंकर दंड से ॥३७॥ ९ क्रोधित होकर १० होठ में कंप होनेलगा ११ गर्जना की १२ अपने हाथों का किया लेख १३ राणावति से उपजा हुआ पुत्र १४ लोभी ॥ ३८ ॥ १५ ग्रास (निवाला) १६ कुत्तों ने १७ नहीं करने योग्य कार्य करके

तुम जावहु तिन संग हम सु माधव सहाय हुव ॥
कहि इम अक्खिय कुच्च धमकि आनक[1] निसान धुव ॥
दल सुभट पंच५ मरहट्ठ मिलि दुहुँ२ दिस रिस मोचन[2] करिय
परगनाँ पंच५ माधव अरथ दैन अक्खि हित अनुसरिय ।३९।
रामचंद्र प्रति कहिय बहुरि हुलकर मल्लारहु ॥
बंटि दिवावत अवनि[3] कछुक माधव हितकारहु ॥
तिम बुंदिय रहि है न लगि संभर[4] हित लैहैं ॥
अब बरजहु जो एस देस तिलमत्त[5] न दैहैं ॥
यह मन्नि सबन पठये तबहि निज वकील जैपुर संजव[6] ॥
साँहस[7] मिटाय सामहिं करन समुझावन कूरम कितव[8]४०॥

॥ दोहा ॥

रामराय१ धुनसी निज सु, रामचंद्र पठवाय ॥
निम्मराज२कटकया यह सु, पठयो हुलकर राय ॥ ४१ ॥
तिन जाय रु कूरम नृपहिं, बुंदिय छोरन अक्खि ॥
पंच५ परगनाँ अनुज हित, बंटिदैन रस रक्खि ॥ ४२ ॥
इत हुलकर अप्पन तनय[9], खंडू नामक बीर ॥
पठयो माधव राँन[10] प्रति, हित सहाय हमगीर ॥ ४३ ॥

॥ षट्पात् ॥

सजि अनीकैं[11] दरकुंच चलिय खंडुव मलार सुव[12] ॥
बजि आनक बंबीलैं[13] भचकि बिखरिय दरार भुव ॥
काकोदर[14] फन फटिय कोल दंतुलि बग्गक्किय ॥
पुरक्किय बपु कमठ चोट रीढक्क[15] चरक्किय ॥

---

१ नगारे बजाकर २ दोनों ओर का क्रोध छुडाया ॥ ३९ ॥ ३ भूमि ४ चहुवाण (उम्मेदसिंह) के ५ तिल मात्र ६ शीघ्र ७ हठ छुडाकर मेल करने के लिये ८ ईश्वरीसिंह ठग को समझाने को ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ९ अपने पुत्र को १० माधवसिंह और राणा जगत्सिंह के पास ॥४३॥ ११ सेना १२ मलार का पुत्र १३ धंर्घा (नगारे) १४ शेषनाग के १५ पीठ

गढ़गढ़न बत्त फुट्टिय सहज बढ़ि बिचार भूपन बिदित ॥
मल्लार सुवन जावत लरन माधव रान सहाय हित ॥ ४४ ॥
इम खड्डुव दरकुच्च आय कोटा मिलान दिय ॥
महाराव लखि समय जाय सम्मुह बधाय लिय ॥
चारन भूपतिराम मुख्य निज सचिव संग करि ॥
दिय अनीक तिन सत्थ धीर सुभटन हरोल धरि ॥
पुनि मिलिय आय नृप रान पँहँ बुंदीसहु तँहँ बुल्लि लिय ॥
सजि सेन लरन माधव सहित तजि मेवार पयान किय ४५

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बुन्दीशपुरोहितदयारामसहितराणाचतुर्म ४ न्त्रिमन्त्रणसचिवदेवकर्णा १ भवानीदास १ परिवर्त्तनजयपुरसचिवमरणपैशून्यप्रेरितप्रभुप्रज्ञाकेशवदासगौणाऽधिकारप्रापणनट्टाणयुपटङ्किवणिग्घरगोविन्दमुख्यसचिवीभवनतत्पुत्री१श्वरीसिंह२मतङ्गमिथुनपरस्त्रीपुरुषसङ्गदोषगर्त्तपतनधर्मनिगडत्रोटनराणा१माधवसिंह२कोटेश३श्रीद्वारसमागमननारायणनिलयशपथशासनमहाराष्ट्रसाधनसाधकजगत्सिंह १ माधवसिंहा २ऽधिकारिगमनतन्महाराष्ट्रसम्मिलनराणाज्ञि १ रामचन्द्र २ मल्लार

॥४४॥ [1] मुकाम २ सेना ३ बुला लिया ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, बुंदी के राजा के पुरोहित दयाराम सहित महाराणा का चार मन्त्रियों से सलाह करना और देवकरण को दूर करके भवानीदास को प्रधान बनाना १ जयपुर के सचिव (राजामल) का मरना और चुगली करने वाला की प्रेरणा की बुद्धि से स्वामी का केशवदास को छोटा अधिकार देना और नाटाणी पदवी वाले बनिये हरगोविन्द का सचिव होना २ उस हरगोविन्द की पुत्री और हाथी रूपी ईश्वरीसिंह इन दोनों का, परस्त्री से पुरुष के और पर पुरुष से स्त्री के संग के दोष से, धर्म रूपी जंजीर को तोड़ कर खड्डे में गिरना ३ राणा जगत्सिंह, कछवाहा माधवसिंह और कोटा के पति का नाथद्वार में मिलना और ईश्वर के मंदिर में सौगन करना ४ मरहठा के साधन के अर्थ राणा जगत्सिंह और माधवसिंह के अधिकारियों का जाना और उन का मरहठों से मिलना ५

३ वाक्यविसरीकरणपुनस्सम्मिलनपत्रद्वय २ दूतजयपुरप्रेषणहुल्ल-
करपुत्रखण्डूराणासहायगमनकोटासैन्यसहितबुंदीन्द्रतरसम्मिलनं
विंशो २० मयूखः ॥ २० ॥३०१॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

सक कृत नभ बसु सोम१८०४ मास फग्गुन पख उज्जल॥
नृप माधव उम्मेद सहित खंडुव चढि २सब्बल ॥
रान कटक सब संग लहि रु दरकुच्च चलायउ ॥
अति गरूर जनु गैरुर अहिन उप्पर उफनायउ ॥
उततैँहु सुनत कछवाहको चंड कटक सम्मुह चलिय ॥
दिस दिसन बत्त फुट्टिय दुसह खंड चउद्दह१४खलभलिय॥१॥

॥ दोहा ॥

नट्टानी उपपद बनिक, हरगोबिंद चमूप ॥
चउ४ अवयव दल लै चल्यो, भिरन उदैपुर भूप ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

दगि तोपन लगि लाय मचिग दुवर दल मिलि संगर ॥
इत मेवारन मुकुट इत सु ढंकन ढुंढाहर ॥
राजमहल पुर सीम भीम प्रति७भट भट भिंटन ॥
हय उठाय हरवल्ल बढिग दुवर दिस आरि भिंटन ॥

राणाजी, रामचन्द्र और मल्लार के वाक्यों का परस्पर भेद करना और पि
सामिल होकर मरहठों के दोनों पक्षों का अपने वकीलों को जयपुर भेजना
हुल्लकर के पुत्र खंडू का राणा की सहाय पर जाना और कोटा की से
सहित बुन्दी के पति के सामिल होने का बीसवां २० मयूख समाप्त हु
और आदिसे तीनसौ एक ३०१ मयूख हुए ॥
१ सेना सहित २ मानों गरुड़ ३ भयंकर सेना ॥ १ ॥ ४ सेनापति ५ हा
घोड़े, रथ, पैदल, इस चार अंगोंवाली सेना को लेकर चला ॥ २ ॥ ६
७ भयंकर शत्रुओं के ८ वीर मिलने को

जिम विप्र निमंत्रन सुनि चलत इमहि अग्गि जाठर जगिय॥
साकिनी प्रेत खेचर सकति लाभ असन आवन लगिय ॥३॥
खेत्रपाल खिलखिलिय मिलिय नारद महती रेंव ॥
काली गन किलकिलिय भिलिय बनि संदृस आनि भेव॥
पिलिय अग्र दुवर दलन झिलिय असिं बाढ बाढ झरि ॥
गिलिय गीद गिद्धनिन खिलिय खुबिय हिय अच्छरि ॥
वढि अंधकार छादित विंयत ऊंपवहित विरचि पतंग पहु ॥
लुट्टिय हरोल हुलकर भटन कूरम कटक बहीर बहु ॥ ४ ॥
हय उठाय हुलकर समेत हक्कनपति हंकिय ॥
अतिबल तेग उताल झरत टोपन झननंकिय ॥
कतिक मारि भुव छाय ढारि ढड्ढर ढुढारन ॥
पोखे नृप पलचरन बहुल पल मेद बिथारन ॥
असि बाढ चक्खि इक वेर अरि लग्गे प्रतिभग नीर लजि॥
मिलि मिलि सिचान आवत मनहु पारावत गन भरकि भजि ५
जिम पारद मिलि अग्गि पिक्खि निज कटक होत इम ॥
सेनापति गज सहित बनिक मड्यो अगद तिम ॥
झुल्ल्यो रे निरलज्ज भजत मुच्छन मुंह धारत ॥
बनिक बैन यह सुनत फिरे कूरम अति आरत ॥
लिय सभन बिटि पुनि बनिक गज पै न लगत अग्गै चरन
जोगिंद चित्त सविकल्पं जिम रहिय रुक्कि पिक्खत मरन ।६।

१जठराग्नि॥३॥२महती नामक वीणा का शब्द करके ३ इन कहे हुआ के तुल्य (बराबर) ४शिव ५मरधारा के धार पर भरधारें ६प्रफुल्लित हुए ७आकाश में ८सूर्य प्रभु को ९छुपादिया॥४॥१०अस्थिपंजर (हाड़ों के पिंजर) ११मांस खानेवालों का १२ बहुत १३ मांस और चर्बी फैलाकर १४ उकट मार्ग १५कपोतों का समूह ॥ ५ ॥ १६ अग्नि म पारा उड़े जैसे १७मुख पर १८पीठ दिये १९परन्तु २०योग शास्त्र मे दो प्रकार की समाधि लिखी है जिन म एक तो सविकल्प समाधि है जिस मे अद्वैत का भान होने पर भी द्वैत भासता है, जैसे किसी विष्णु, शिव आदि देव का अधिष्ठान करके समाधि लगाई जाती है वस योगी का चित्त वस

तिमिर घोर तत[1] मध्य पार अप्पन भट भान न ॥
माधव[2] के दलमाँहिं पिक्खि पचरंग निसानन ॥
जैपुरके तिन्ह जानि रान दल[3] भजिग भीत अति ॥
कोटा दल पुनि भजिग सहित चारन सेनापति ॥
तहँ भयउ सोर कोटा भजिग सुनि पित्थल बुल्ल्यो सु चहि
हम भुजन[6] आहि कोटा अखिल तिन ठहैं भग्गो न कहि ७
कोकिलपुर[7] पति कुमर भटन पित्थल चूड़ामनि ॥
महाराव उमराव विदित बुल्ल्यो अंगद बनि ॥
चारन मग्गनहार भज्यो कारज अचिज्ज नहिं ॥
पै हम हट्टन पयन आडडुंगर अवलंबहिं ॥
यह अक्खि सेन भज्जत मुरयो जिम अनिमिष[9] उलटे उदक[10]
झपटाय बाजि पंबि[11] जिम परयो ढुंढाहर सिर धारि धक ।८।
भजत सेन लखि सजव पिट्ठि लग्गिय जैपुर दल ॥
मुरि पित्थल तिम मध्य खग्ग झारिय रचि मंडल[12] ॥
जिम बिरेक[13] औषधिय उदर इम मथिय सत्रु सब ॥
कतिक कंपि लकतकत[14] कतिक छक्कत बक्कत बंब ॥
[16]सव्यापसव्य करि श्राद्ध बिच जजमानहिं जिम करत द्विज ॥
तिम किय अनेक परबस कुमर समर बिथारिय नाम निज९
जिम नर तिम सैंलोट गिरत हैवर तिम गैवर ॥

देव को छोड़ कर आगे नहीं बढता, और दूसरी निर्विकल्प समाधि है जो चैतन्य स्वरूप पर ब्रह्म में लगाई जाती है सोही मोक्ष का साधन है ॥ ६ ॥ १ विस्तार के २ माधवसिंह कछवाहे की सेना में ३ राणा की सेना ४ कोटा की सेना भगी ५ पृथ्वीसिंह ६ सब कोटा हमारे भुजों पर है ॥ ७ ॥ ७ कोयलापुर के पति का ८ आडावळा नामक पर्वत लटकता है ९ मच्छी १० उलटे पानी में ११ वज्र के समान ॥ ८ ॥ १२ चक्र (गोलकुंडा) १३ दस्त लाने वाली दवाई पेट को मथै जैसे १४ धूजकर देखते हैं १५ अवाच्य शब्द (कलराने का शब्द) १६ सव्य और अपसव्य ॥ ९ ॥

जिम तोमर तिम खग्ग बिहासि झारत कुमार वर ॥
लटकत उरझि रकाय कतिक भटकत प्रमत्त गति ॥
खटकत हड्डन बाढ मनहुँ चटकत गुलाब तति ॥
घुम्मत अचेत घायन कतिक कतिक आय पायन परिय ॥
कछवाह कटक सब अजय सुव गजवँसिंह गड्डरि करिय॥१०॥
तुट्टि तुट्टि सिर उडत कढत सेर फुट्टि बकत्तर ॥
रुहिरं छिछि नभ चढत वढत कलकल धर अंबर ॥
काली खप्पर भरत फिरत सिन नच्च बिसारद ॥
महती तुंबा सिर लगाय घुम्मत इत नारद ॥
पित्थल अनीक फारत वढिग मरद उतारत गजन मद ॥
डाकिनि डरात फारत वदन किलकारत भैरव भयद ॥११॥
घनैं रिपुन रैंमनीन झारि ककन कुबेसँ किय ॥
घनैं रिपुन रैंमनीन बिंब बटन पखान दिय ॥
घनैं हयन घन घाय कियउ मँहगे सोदागर ॥
घनैं गजन सिर फारि रंग मुत्तिन किय आगर ॥
भुजदड भीरि बासुकि उरग मर्दर असि गहि उच्च मन ॥
पित्थल कुमार नागर कियउ डुंढाहर सागर मथन ॥१२॥
पहर इक्क इम कुमर लरिग धारन धपाय धक्क ॥
फट्टिग सिर चोफार वदन चोफार लोह छक्क ॥
मनहुँ बीर विधि परखि हरखि अद्वैत२ छाप दिय ॥

१ घायल होकर फिरने हैं २ पंक्ति ३ अजयसिंह के पुत्र ४ गजय करने वाले सिंह ने ॥ १० ॥ ५ पाण ६ रुधिर की ७ कोलाहल ८ नृत्य में निपुण ९ महती नामक नारद की वीणा का १० मुख ११ भयंकर ॥ ११ ॥ १२ स्त्रिया के १३ खोटा (विधवापन का) वेस १४ बहुत शत्रुओं की स्त्रिया को घावों पर बांधने के अर्थ भीख बांटने को हाथों मे १५ पत्थर दिये युद्ध में १६ मोतियों के १७ ढेर (समूह) १८ मदराचल रूपी तरवार को लेकर १९ विष्णु ने ॥ १२ ॥ २० ब्रह्मा ने परीक्षा करके २१ ऐसा दूसरा वीर नहीं है ऐसी छाप दी

इम सोभित छकि कुमर पर्यो पलचार दान प्रिय ॥
आयुहि समत्थ असु[1] थिर रहिय बीरनिंद वपु[2] बिप्फुरिय ॥
अच्छरि उमाहि आइय बरन चउमुख[3] लखि लज्जित मुरिय १३
इम हुलकर१ बुंदीस १ उभय२ कूरम दल[4] अंतर ॥
झारत खग्गन झपटि दपटि[5] बिथुरात दिगंतर॥
इत पहिलैं दल भजिग ताहि सुनिकैं[6] जैपुरपति ॥
करि आयउ दरकुंच गजब डारत सबेग गति ॥
इत बहुरि हड्ड१हुलकर१ असिन[5] दल सत्रुन पुनि ठिल्लि[6] दिय ॥
तहँ परिय रत्ति बिसतारि तम[7] दुव२दिस मुरि[8] मिल्लान दिय ॥१४॥

॥ दोहा ॥

खेत खोजि बुंदीस नृप, हेरिय पित्थल जाय ॥
सिविका धरि आनिय सिविरैं[9], वैद्यन[10] कथित विधाय ॥१५॥
हुलकर हड्डु दुहून२ पुनि, कियउ मंत्र मिलि रत्ति[11] ॥
अप्पन जीत भजंत अरि, प्रभु अनुकोसैं[12] संपत्ति[13] ॥ १६ ॥
अब आवत जैपुर नृपति, साजि पुनि कटकैं[14] ममारि ॥
यातैं नहिं रहनौं उचित, मुरि चल्लहु मेवार ॥ १७ ॥
कहि यह प्रातहि कुंच करि, चलि हुलकर१ चहुवान[15]२ ॥
सब भोजन जुत साहिपुर, दिन्नैं आनि मिलान[16] ॥ १८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पके उत्तरायणे सप्तम ७राशौ हड्ड-
उम्मेदसिंह १ कूर्म्ममाधवसिंह २ हुलकरखराडू ३ कोटो ४ दयपुर

१ प्राण २ शरीर पर वीरानिद्रा (मूर्छा) बढ़ी ३ चार मुखवाला (ब्रह्मा) जानकर पीछी फिर गई [ब्रह्मा सब का पिता है इस कारण]॥ १३ ॥ ४ सेना ५तरवारों से६शत्रुओं की सेना को हटा दी७अंधेरा फैलाकर८मुकाम किये॥१४॥ ९ डेरे में१०वैद्यों का कहना करके॥१५॥११रात्रि में१२यह ईश्वर की दया से१३ जय प्राप्त हुई है॥१६॥१४सेना का विस्तार॥१७॥१५उम्मेदसिंह१६मुकाम ॥१८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, हाडा उम्मेदसिंह, कछवाहा माधवसिंह, हुलकर खंडू और कोटा व उदयपुर की सेना का दुंदा-

५ कटकहुरड़ाहडगमनकूर्म्मसैन्यसहितसचिवहरगोविन्दाऽभिमुख्य प्रपतनवाशिष्ठीसरिदुपकण्ठराजमहलपुरसीमासङ्गरभवनबुंदीन्द्र १ हुलकर २ प्रहरणापरपलायनाऽनन्तरगोनर्दीयोक्तचित्तद्वितीय२ वृत्ति प्रथम१ वृत्तिनिष्ठकोटो १ दयपुर २ पृतनाकान्दिशीकीभवनमहाराववन्धुकुमारमत्पटनप्रचुरशस्त्रपुद्गलपूतीकरणाऽनन्तरकूर्म्मराजाऽऽगमनतत्समस्तपरपक्षमेवपाटसाहिपुराऽऽगमनमेकविंशो २१ मयूख ॥ २१ ॥ ३०२ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

यह उदन्त श्रिपद्वार सब, सुनिय रान जगतेस ॥
पठयो कटक सहाय पुनि, बल निज निकट निसेस ॥ १॥
तखत १ रान जयसिंह सुव, बावा निज पटु बीर ॥
पुनि कुसाल १ भिंडरपुर प, सगताउत धुर धीर ॥ २ ॥

हट्ट में जाना १ कछवाहे की सेना सहित सचिव हरगोविन्द का सम्मुख आना २ बनास नदी के समीप राजमहल की सीमा में युद्ध होना १ बुन्दी के राजा और हुलकर के शस्त्रों से शत्रुओं के भागने के पीछे पतंजलि मुनि की पातंजल योग सूत्र में) कही हुई द्वितीय चित्त वृत्ति के समान उदयपुर की सेना का और प्रथम वृत्ति के समान कोटा की सेना का भागना (पतंजलि मुनि ने योगसूत्र में चित्त की पांच वृत्तियां कही हैं जिन में द्वितीय वृत्ति का नाम 'विपर्यय' है इस का अभिप्राय मिथ्या ज्ञान होना है और प्रथम वृत्ति का नाम 'प्रमाण' है जिस का अभिप्राय प्रत्यक्ष ज्ञान होना है) अर्थात् उदयपुर की सेना तो माधवसिंह का पाण्ड रंग का निशान देखकर जयपुर के निशान की भ्रांति से भागी और उदयपुर की सेना को भागती हुई देखकर कोटा की सेना प्रत्यक्ष ज्ञान होने से भागी, महाराव के भाइयों के कुमर का फिर फर बहुत शस्त्रों से शरीर का पवित्र करने पीछे कछवाहों के राजा (ईश्वरीसिंह) का आना और उस के सब शत्रुओं का मेवाड़ में शाहपुरा नगर में जाने का इकीसवा २१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ दो ३०२ मयूख हुए ॥
१ वृत्तान्त ॥ १॥ १ राणा जयसिंह के पुत्र तख्तसिंह को १ भींडपुर का पति ॥२॥

रायसिंह ३ झल्ला बहुरि, नगर सादड़ी नाह ॥
पुनि बुंदीस पुरोहित सु, दयाराम४ चित चाह ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम चपारि४न कारि मुख्य रान*पृतना पुनि पिल्लिय ॥
†सजव साहिपुर आय मुदित निज दल सह मिल्लिय॥
उततैं ईस्वरिसिंह पिट्ठि दब्बत द्रुत आयउ ॥
भिल्लहड़ा पुर लुट्टि कहर मेवार मचायउ ॥
धनवंत बनिक [1]कारा पटकि कुप्पि नगर [2]श्रीहत करिय
[3]बाटिका मनहुँ [4]अहिबल्लरिन चपल [5]आनि बस्तन चरिय ।४
मेवारन किय मंत्र सुनत यह बत्त नीति सह ॥
कटक प्रचुर कछवाह अल्प अप्पन [6]अनीक यह ॥
हुलकर१ कोटा २ एहु उभय२ [7]बिस्तर बिनु आये ॥
[8]बित्त रहित बुंदीस [9]अवनि हित प्रसभ [10]अमाये॥
यातैं न [11]संपरायहि उचित रहिहै अवनि [12]लरैं न तिल॥
सकुटुंब सकल [13]नृप जुत करहिं कुंभिलमेरु [14]नियास किल।५
तखतसिंह यह सोधि जान लग्गो [15]कूरम प्रति ॥
सुनि यह खंडुव साम [16]अनखि कुप्प्यो हुलकर अति ॥
बुल्ल्यो पुनि भुज ठोकि सजव आये [17]संगर भ्रम ॥
अब जो साम उपाय ततो तुम माँहिं नाँहिं हम ॥
सुनि तखतसिंह हुलकर कथित दयाराम तँहँ मुक्कलिय ॥
आक्खिय वहै न [18]नय [19]समयपटु समुझावहु कहि [20]प्रचुर प्रिय ।६

॥ ३ ॥ * फिर सेना भेजी † शीघ्र १ कैद में २ लक्ष्मी हीन ३ बा[ग]
(बगीची) में ४ नागरबेल को ५ बकरों ने चरी ॥ ४ ॥ ६ अपनी सेना ७ वि[ना]
विस्तार के ८ धन रहित ९ भूमि के अर्थ १० नहीं समावै ऐसा हठ किया १[१]
युद्ध १२ लड़ने से भूमि तिलमात्र नहीं रहैगी १३ महाराणा सहित १४ नि[श्च]
य ही गहन प्रदेश कुंभलगढ में जाकर बसेंगे ॥ ५ ॥ १५ ईश्वरीसिंह के पा[स]
१६ क्रोध करके १७ युद्ध के भ्रम से १९ हे समयचतुर यह (युद्ध करने की)
१८ नीति नहीं है २० बहुत प्यारी बातें कह कर ॥ ६ ॥

तवहि जाय *भूदेव कहिय झुंदीस पुरोहित ॥
तुम दिल्लिय †तिय जार कुमर खडुव चिंतहु चित ॥
अवसर कोप इहाँ न ‡स्वामि साहुव कुल रानाँ ॥
तुरकनतेँ तिन वेर खुट्टि सव गयउ खजानाँ ॥
सज्जहिं जु अज्ज रन§कुम्मसह तो तुम ढिगहु अनीक¶मित॥
कछुदिन बिहाय देल इक करि वहुरि सत्रु जित्तहि बिदित७

॥ दोहा ॥

बिरुदावत इम फुल्लि सठ, सुनि दिल्लिय तिय नाम ॥
बुल्ल्यो हमहिं तटस्थ करि, करहु विप्र सव काम ॥ ८॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि संत्वर यह विप्र आनि अक्खिय तखतेसहिं ॥
हुलकर सम्मत आहि मिलहु तुम कुम्म नरेसहिं ॥
तवहि जाय तखतेस अरज कूरम प्रति अक्खिय ॥
मरहट्ठन आदेस कहहुँ इहिं दिन किहिं नक्खिय ॥
तस्मात धारि खडुव कथित तुम भुव हम पत्ते लरन ॥
तिहिं हेतु आहि यह दोस तैंस नृप लुट्टहु मेवार नन ॥ ९ ॥
नंति पूरव यह सुनत कुम्म अनुकंपै बिहसि किय ॥
भिल्लहडापुर वनिकै धनिक पकरे ति छोरि दिय ॥
उपालंभे लिखवाय पत्र पठयो रानाँ प्रति ॥
किय पच्छो दरकुच गग्द रवि ढकि मुदिरै गति ॥
सुंचि पक्ख चैत विक्रम संकग पच गगन वसु चद१८०५मित

*ब्राह्मण ने †दिल्ली रूपी स्त्री के उपपति ‡तुम्हारे पति के कुल वाले राणा थे §कछवाहे के साथ ¶सेना थोड़ी है १सेना एकत्र करके॥७॥२किनारे (अलग) रखकर ॥८॥३शीघ्र ४है ५ ईश्वरीसिंह से ६ हुक्म ७ किसने डाला है ८इस कारण ९ लूट न करना करके १० तुम्हारी भूमि में हम लड़ने को प्राप्त हुए ११ यह दोष उन्हू का है ॥ ९ ॥ १२ नम्रता पूर्वक १३ दया १४ धनवान् वनियों को पकड़े थे ते छोड़दिये १५ ओळमा १६ मेघ के समान १७ शुक्ल पक्ष १८विक्रम के शाक

नृप किय प्रवेस जैपुरनगर मेवारन आक्रमि मुदित ॥ १० ॥

॥ रोला ॥

जगतसिंह इत रान खास इक रूपमल्ल१ हय ॥
साखति पुरट[२] समेत रुचिर कुल जात मनोरय[३] ॥
इक खासा तरवारि१ भूप संभर हित भेजिय ॥
रान सचिव भट लै रु पहुँचि बुंदिय अनीक[५] प्रिय ॥ ११ ॥
भिंडरपुर प[६] खुसाल१ तखत[७] जयसिंहरान सुत२ ॥
नगर सादड़ीनाह रायसिंह३हु बिचार जुत ॥
दयाराम४ पुनि द्विजनि[८] छुछुन्दीस पुरोहित ॥
आये ए नृपअग्ग[९] सचिव च्यारि४हु नय सोहित[१०] ॥ १२ ॥
इन हय१ असि १करि नजरि बीरपन बिरुद बिथारिय ॥
प्रीति सहित सुनि बचन लैन भूपति अवधारिय[११] ॥
स्वीकरि पुनि निज सुभट बीर बुंदिय दिस पिल्लिय[१२] ॥
तिन आय रु निज बिखय[१३] ठोकि कूरम चर[१४] ठिल्लिय ॥ १३ ॥
हो हाकिम यहँ बनिक सचिव जैपुर कुल[१५] बंधव ॥
थानसिंह थू[१६] उचित लैन पटु[१७] दैनपटु न लव[१८] ॥
सो निकस्यो कर[१९] लैन नियति बल[२०] नृपदल[२१] पिक्ख्यो ॥
छिन्नों पकरि निलज्ज सपथ[२२] वंदन तब सिक्ख्यो ॥ १४ ॥
कारा सहि कति काल दम्म पुनि तीस सहँस३००००दिय ॥
तब छोर्‌यो वह असित जानि दुल्लभ मन्नत जिय ॥

मे प्राप्त अर्थात् वैक्रमीय १ घेरने से प्रसन्न होकर ॥ १० ॥ २ सुवर्ण की ३ सुंदर कुल में उत्पन्न, मन के वेगवाला ४ उम्मेदसिंह के अर्थ ५ बुन्दी की सेना में ॥ ११ ॥ ६ भींडर का पति कुशालसिंह ७ तखतसिंह ८ द्विजन्मा (ब्राह्मण) ९उम्मेदसिंह के आगे १०शोभित११॥१२॥विचार किया१२भेजे१३ अपने देश में१४नौकरों को ॥ १३ ॥१५जयपुर के सचिव के कुल का भाई १६ थूकने के (धिक्कार के) उचित १७ लेने में चतुर १८ देने में लेश मात्र भी चतुर नहीं था १९ हासिल लेने को २० भाग्य के बल से २१ उम्मेदसिंह की सेना ने देखा २२ सौगन करना और नमस्कार करना ॥ १४ ॥

बिन बुंदिय सब बिखप अमल बसु८ मास भगेह्यो ॥
नृप भट बहुरि निकासि मुलक कूरम दल मोह्यो ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

इत पुनि रान बिचारि, गोवरधन गोस्वामि प्रति ॥
मुदित मंडि मनुहारि, पठये दलं श्रियद्वार पहुं ॥ १६ ॥
तुम वल्लभ कुल दीप, बुल्लहु येँहँ कोटेस अब॥
मिलि हम उभय२ महीप, स्वमत धर्म मग सचंरहिं ॥१७॥
गोस्वामिय लिखि पंत्त, बुल्ल्यो तव कोटेस द्रुत ॥
आयो निठिन अंत्त, जानि रान सम्मत विफल ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

रान कहाई मिलनकी, नट्यो तवहि कोटेस ॥
कहिय बदलि तुम सार्म किय, सह्वि कुम्म नरेस॥ १९ ॥
मिलनमैंहु रस नहिं तुमहु, करत अल्प सतकार ॥
अरथी विनु आदर रहित, मिलत कोन मतिदार ॥ २० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ शीर्षोद तखतसिंह१कुसालसिंह२झल्लारायसिंह३द्विजदयाराम ४सचिवचतुष्टय४सहितराणासैन्यसहाया ऽर्थसाहिपुराऽऽगमनकूर्मराजमेदपाटप्रविशनमिल्लहडापुरलुण्टनतद्भयविद्रुतोदयपुरसचिवसामविचारणाकुपितहुलकरखण्डानुनयनजापसिंहिकुच्छामनतत्स्वपुरप्रतिप्रविशनद्व

¹देश में॥ १५॥ २पत्र३राजा ने ॥ १६ ॥ ४आप के धर्म के मार्ग मे५चलेंगे ॥१७॥ ६ पत्र ७ यत्न ॥ १८ ॥ ८ मेल करके ॥ १९ ॥ ९ धन की याचना करने वाले के बिना न्यून आदर से कौन १० बुद्धिमान् मिलता है ॥ २० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, शीषोदिया तखतसिंह कुशालसिंह, झाला रायसिंह, ब्राह्मण दयाराम, इन चारों सचिवों के सहित, राणा की सेना की सहायता के अर्थ शाहपुरा में आना १ कछवाहों के राजा का मेवाड में प्रवेश करके भीलहडा पुर को लूटना २ उस के सेना से डर कर उदयपुर के सचिव का साम उपाय करने से कोपे हुए खण्डू की प्रार्थना करना और जयसिंह के पुत्र के क्रोध को मिटाना और उस का कूच

न्द्रोपायनीभूताऽश्वरूपमल्ल१कान्तकृपाण२पुरस्सरराणाचतु४स्सचिवबुन्दीशशिबिराऽऽगमनगृहीतनिवेदितोपायनसम्भरस्वभटबुन्दीविषयप्रेषणानट्टाणि स्थानसिंहनिग्रहणातद्दण्डद्रव्यग्रहणबुन्दीमात्ररहितदेशस्वीकरणराणाऽनुनीतश्रीद्वारगोस्वामिगोवर्द्धनमहारावाऽऽह्वयनकोटेशतन्मिलनाऽल्पसत्कारसूचनं द्वात्रिंशो२२मयूखः॥२२॥३०३॥

॥ प्रायोब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ हरिगीतम् ॥

*तसमात अब तुम †रान ‡बुंदिय तुल्य अद्दर जो करो ॥
तबही मिलै रु बहोरि जो नहि साम कूरमसौं धरो ॥
पहिलौंहि दै हरि अग्ग बचन रु फुट्टि जैपुरमैं मिले ॥
तसमात नाँहिं बिसासहै तुम इष्टसौंहै सबै गिले ॥ १ ॥
सुनि रान तब कछु घट्टि बुंदिय तुल्लय अद्दर स्वीकस्यो ॥
अब अप्प सम्मुह इक्क१ गद्दिय बैठिहो१ यह उच्चस्यो ॥
हम मत्थ हत्थ लगायहैं२ लघु खास कग्गर मंडिहैं३ ॥
अबतैं सनेह बढै जु अप्पन सो कदापि न खंडिहैं ॥ २ ॥
कोटेस तब सुनि एह रानहिं मेल स्वीकरि बुल्लये ॥

करके अपने पुर में प्रवेश करना ३ हाडा की भेट करने को रूपमल्ल नामक घोड़ा, सुन्दर तरवार, आदि सहित राणा के चार सचिवों का बुन्दीश के डेरे पर आना और नजर किये हुए नजराने को लेकर उम्मेदसिंह का अपने वीरों को बुन्दी के देश में भेजना ४ नाटाणी थानसिंह को पकड़ कर उस से दंड के रुपये लेना और एक बुन्दी को छोड़ कर देश को अपना करना ५ राणा की प्रार्थना से नाथद्वारे में गुसांई गोवर्धनलाल का कोटा के महाराव को बुलाना और राणा से मिलने में अल्प सत्कार होने की कोटा के पति की सूचना करने का बाईसवां २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ तीन ३०३ मयूख हुए ॥

* इस कारण से † हे राणा ‡ बुन्दी की बराबर आदर करो तो १ इस कारण से २ इष्टदेव के सौगन ॥ १ ॥ ३ बुन्दी से कुछ घटकर ४ आदर स्वीकार किया ५ आप ६ मस्तक के हाथ लगाकर मुजरा करेंगे ७ खास रुक्के में अपने को छोटा लिखेंगे ८ कभी नहीं टूटेगा ॥ २ ॥ ९ मिलना स्वीकार करके बुलाये

तब रान पुनि श्रिपहार आय मिले रु मत्रहु खुल्लये ॥
रु सदैव सम्मलि होनके पुनि पत्र दोउन२ मढये ॥
चढि गाम ढिकोला दुहून२ रेकाब जाय रु छड्डये ॥ ३ ॥
तब ही जु साहिपुरा चमू सु समस्त जाय मिली तहाँ ॥
बुंदीस डेरन रान१ खडुव२ भीमनंद३ गये जहाँ ॥
तब इन्द्रगढ१ खत्तोलि२ बलवनि३ आदि तीन३ मिलायकैं ॥
पुनि रानसों मिलि भूप बैठिय इक्क१ गद्दिय आयकैं ॥ ४ ॥
घटिका उभै२ हि सभा रही मनुहारि मोदमई भई ॥
पुनि पान गंध निवेदि सर्बन सिक्ख डेरनकों दई ॥
खडु१ रु माधव२ तत्यही पलटाय पग्घ सखाभये ॥
पुनि तत्थतैं चढि सर्बही गुलगाम पाँरहलों गये ॥ ५ ॥
खारी नदी तट दैं मिलान सबैं घने दिन व्हाँ रहे ॥
तब कुम्म वीरहु सज्जव्है दरकुंच सम्मुह उम्महे ॥
त्रय३ कोस अंतर दै मिलान पहै कहाइय रानपैं ॥
क्यों बैन चुक्की करारके पुनि सज्जहुव घमसानपैं ॥ ६ ॥
तुम भ्रात नाथ पटा जु पावत सोहि माधवकों मिलैं ॥
घर रीति चूकि रु अप्प क्यों अब कोल बैन कहे गिलैं ॥
तब रान अक्खिय अप्प जानत रीति घरघर भिन्नहै ॥
तुमरे पिता जयसिंह राज्य सबैहि याकँहँ दिन्नहै ॥७॥
हम किद्ध नाथ प्रसन्न ज्यों तुम त्योंहिं माधवकों करो ॥
निज तात मंडित पत्र अक्खर लुप्पि लोभ न आदरो ॥
इहिं रीति होत जवाब जानि रु कुप्पि खड्डुव उच्चरी ॥
रन काज मोहि बुलायकैं अब सामकी तुम जो धरी ॥ ८ ॥

---

१ घोडों से उतरे अर्थात् मुकाम किया ॥ ३ ॥ २ सेना ३ भीमसिंह का पुत्र महाराव दुर्जनशाल ॥ ४ ॥ ४ दो घडी ५ इत्र ६ पगडी बदल कर ७ ग्रामका नाम है ॥ ५ ॥ ८ मुकाम ॥ ६ ॥ ७ ॥ ९ नाथसिंह को हमने प्रसन्न किया वैसे तुम माधवसिंह को प्रसन्न करो १० तुमारे पिता जयसिंह के लिखे हुए

तुमतैँहिँ संगर सज्जि तो हम प्रीति रीति बिगारिहैँ ॥
कछवाह *हिंतु नतो लरो हरवल्ल हम असि झारिहैँ ॥
तँहँ रान बत्त †कुबेर१ ओ तखतेस२ तैँ यह अक्खई ॥
अब अप्प साम करो न ह्याँ रन बुद्धि खंडुवकी भई ॥ ९ ॥
तब रान आदि समस्त फोजन सज्ज जुज्झनकी करी ॥
रननंकि तंतिन सिंधवी झननंकि पक्खर घुग्घुरी ॥
सुनि कुम्म सत्रुन सज्ज होत बिचारि खंडुव भीरकोँ ॥
जय जानि संसय मुक्कल्यो हरनाथ ‡नारव वीरकोँ ॥ १० ॥
कहि मास कत्तिय१ §मग्गर२ वा हमहू उदैपुर आयहैँ ॥
अरु अप्प माधव१ ओ उमेद२हुहून२लाय मिलायहैँ ॥
तँहँ नम्रताजुत पिक्खि बुंदिय हड्ड भूपहिँ अप्पिहैँ ॥
इसलक्ख १०००००० रुप्पय देस माधव अत्थ दै थिर थप्पिहैं ॥११॥
यह बत्त नारव[२] आयकैँ नृप रान आदिनतैँ कही ॥
कोटेरा ताहि सिराहि बुंदिय स्वीय[३] हाकिमकी चही ॥
सुनि एह दुज्जनसल्लकोँ तब वीर खंडुव निंदयो ॥
इहिँ रीति दोउनकैँ२ बिरोध बिसेस बैँनन ह्वै भयो ॥१२॥
दुरभिच्छ कारन सेनमैँ मन१ घास रुप्पय१को बिकैँ ॥
अरु अन्नकीहु महर्घताकरि लोक निट्ठिनकैँ टिकैँ ॥
बलि नित्य दम्म हजार बारह१२००० रानकै ६व्ययमैँ लगैँ॥
पुनि होत साम जबाब जो निमटैँहि जावनको थँगैँ ॥ १३ ॥
कोटेसके दलकेर्न तत्थ अनीति मंडि मरोरतैँ ॥
तृन सकँट जाय रु रानके दल माँहिँ लुट्टिय जोरतैँ ॥
तब कुम्म बैन कहे जु मन्त्रि रु रान अक्खिय है भलैँ ॥

॥ ८ ॥*सो †कुबेरसिंह ॥ ९ ॥ ‡ नरूका ॥ १० ॥ § मार्गशिर सं १ माधवसिंह के अर्थ ॥ ११ ॥२ नरूके ने ३ अपना हाकिम रहने की ४ वचनों का ॥ १२ ॥ ५ महँगाई से ६खरच में ७ठहरे ॥१३॥ ८सेना वालों ने९घमंड से १० घास के गाडे

तब देहु पैं अबतैंहि हाकिम तत्थ*मामक मुक्कवैं ॥ १४ ॥
यह वत्त कूरम स्वीकरी तब रान †आयस त्यौं दयो ॥
नगरी बसी पति चौंडवसिय ‡मेघ१ बुंदिय भेजयो ॥
टोंडा महाजन टेकचंद२ पठाय रान खुसीभयो ॥
यह जानि माधव१ मित्र खडुव१ कुच दोउन२को ठयो ॥१५॥
करि कुम्म §दुम्मन रानतैं निज धाम रामपुरा लयो ॥
कति दीह खडुव तत्थ रहि पुनि वप्पके ढिग पुग्गयो ॥
इत कुच ईस्वरिसिंह हू निज धाम जैपुर त्यौं किये ॥
कोटेस भेजि वकील आखिय मोहि बुंदिय दीजिये ॥ १६ ॥
तब लै वकीलहिं संग कूरम रवीयं पत्तन सचरयो ॥
रु कही तजो अब रान संगत तो करैं तुम उच्चरयो ॥
नहितो वं कत्तिय मासमैं तुमतैंहु सगर जोरिहैं ॥
पहिलै करी जिम धूमि तोपन नेर चम्मलि बोरिहैं ॥ १७ ॥
कोटेस१ रान१ रु भूप१ ए३ इत उप्परे गुलगामतैं ॥
पुर धुधरी तट दै मिलान रहे निसा सुख सामतैं ॥
तँह जा पुरोहित रानके ढिग हो सु सभरं मंगयो ॥
तब दयाराम जु विप्र रानहु भूपकों हिततैं दयो ॥ १८ ॥
निज विप्र लै दुव२ इड्ड भूपति नदगाँम गये तबैं ॥
बुदीस चम्मलि वारही रहि सगतपुर गढमैं जबै ॥
तँहँ सचिव हरजन इड्डकों सिविका समप्पिय संभरी ॥
अरु देसमैं तहसील कारन सिक्ख ताहि दई खरी ॥ १९ ॥
अचलेस१ माधानी सहित तब देस हरजन१ सचरयो ॥
सीलोरपुर ढिग कुम्म सुभटन जाय रन तिनसौं करयो ॥

---

* हमारे ॥ १४ ॥ † हुक्म ‡ मेघसिंह को ॥ १५ ॥ कछवाहे जयसिंह ने राणा सग्रामसिंह को § उदास करके १ पाप (पिता) के पास ॥ १६ ॥ २ अपने पुर में गया ३ राणा का साथ छोड दो तो ४ अप ॥ १७ ॥ ५ उम्मेदसिंह ६ उम्मेदसिंह ने पुरोहित दयाराम को मांगा ॥ १८ ॥ ७ कोटे का उपनाम है ८ उमेदसिंह ने पालखी दी ॥ १९ ॥ ६ माधवसिंहोत हाडा

अचलेसके *गुटिका लगी पर दोहु२ सत्रुन †नाँजये ॥
पुनि फोज जैपुरतैं चली तब छोरि भूपतिपैं गये ॥ २० ॥
सक बेद नभ बसु सोम१८०४ भद्दव कृष्णअष्टमि८ जंगभो॥
पुनि भूप आन उठाय जैपुर सैन बुंदिय संगभो ॥
रन काज भूप बहोरि बीर दलेल१ नाहर मुक्कले ॥
रन आय बुंदिय किन्न पै बपु घाय दोउन२ कैं छले ।२१
तबही सगतपुर बुल्लिकैं उपनाह दोउन२ कैं कियो ॥
आसोजमैं सुत ईडरेचिय कैं भयो सु नहीं जियो ॥
इत ज्येष्ट सालमनंद दिल्लिय छोरि जैपुर पुग्गयो ॥
भट ताहि कूरम रक्खि बुंदिय सीम माँहिं पटा दयो ॥२२।
पुनि मग्गमैं[2] नृप कुम्म[3] बुंदिय आय दीह घने रह्यो ॥
कोटेसकेर वकीलतैं यह बैन परिखदमैं[4] कह्यो ॥
हम संग दुरजनसल्ल होय रु भ्रात माधवपैं[5] चलो ॥
यह नाँहिं तो रन सज्ज होय रु लैन[6] हम कँहँ मुक्कलो ।२३
कोटेस यह सुनि इक्कठो निज सेन पत्तनमैं करयो ॥
लगवाय बाहिर मोरचे गढ जाल तोपनको जरयो ॥
उत एह माधवहू सुनी तब छोरि रामपुरा सँरयो ॥
दल संग लै निज भीत ठहै काढि नैर कररावन परयो ।२४
इत कुम्म बुंदिय दोहु२ भ्रातन माँहिं हित बिसतारयो ॥
परताप१ कौं रु दलेल१ कौं इक१ थाल भोजन कारयो
सु दलेल ठीक गिनी न छोरिय अन्न आमय ठ्याजतैं ॥
पुनि कुंच दुंदुभि बज्जयो नृप कुम्मको रन साजतैं॥ २५

*गोली लगी परंतु † नहीं जीते ॥ २० ॥ २१ ॥ १ इलाज ॥ २२ ॥ मृगशिर मास में ३ ईश्वरीसिंह ४ सभा में ५ हमारे भाई माधवसिंह ६ हम को युद्ध के अर्थ कोटे बुलाने को किसी को भेजो (इसकी नां करने पर युद्ध करने को हम कोटे आवेंगे) ॥ २३ ॥ ७ चला ८ पुर का ना है ॥ २४ ॥ ९ कराया १० रोग के मिस से ॥ २५ ॥

सुनि ताहि फोज वहीरसों सब *नंदगाम दिसा चली ॥
अरु कुम्मह किय बिष्णु पूजन अप्पि †पुप्फन अंजली ॥
तिहिंबेर दिल्लिय साहके फरमान लग्गिय बेगही ॥
तुम कुम्म आवहु छिप्र ह्यां लरनो इराननतैं सही ॥ २६ ॥
इक साह अहमद है पठान जु साहनादर मारिकैं ॥
ईरानपति बनि लघि अटक रु प्रात इत धक धारिकैं ॥
तसमात आवहु प्रातही रनथंभ दुग्गहि पायहो ॥
अरु जित्ति अहमदसाहकों दिल्लीस तोर बढायहो ॥ २७ ॥
तजि नंदगामहिं वाचि जो हुत कुम्म दिल्लिय त्यों चढ्यो ॥
परताप१ ओर दलेल१ सोदर दोहु२ संगहि जो बढ्यो ॥
मथुरा गये तब रोगको मिस कैं दलेल तहां रह्यो ॥
पहिलैंहि अन्न तज्यो हुतो अब पान छोरनही चह्यो। २८।
गंगोदं मिट्टिय पान कैं रु यिंभूति बिप्रन देदई ॥
भल रीति देह दलेलनैं तजि तत्यही गति सो लई ॥
परताप अग्रज तास जुत कछवाह दिल्लिय पुग्गयो ॥
अरजी निवेदि रु तत्थ इठ रनथंभ आवनको लयो ॥ २९ ॥
तब साह देहिं नदेहिं यों कछुहू न कुंम्महिं उच्चर्यो ॥
तँहँ कुम्म अक्खि वजीरसों हठ सोहि पावनको धर्यो ॥
सुनि कुंम्महितु वजीर अक्खिय नाँहिं अप्प भरोसहैं ॥
चलिहो न जो तुम तो कहा यह साहके सिर दोसहैं ।३०।
यह अक्खि अहमदसाह साहतनूज सग वजीरऽहै ॥
किय कुच्च कुम्महि छोरि जोरि अनीकैं जुज्झन वीरऽहै ॥

---

*कोटे का तर्फ †पुष्पांजलि देकर अर्थात् पुष्प चढाकर १शीघ्र॥२६॥२नादरशाह को मारकर ३ इस कारण ४ प्रताप ॥ २७ ॥ ५ शीघ्र ६ करके ॥ २८ ॥ ७ गंगाजल ८ ऐश्वर्य ९ दलेलसिंह के बडे भाई सहित ॥ २९ ॥ १० ईश्वरीसिंह से कुछ नहीं कहा ११ ईश्वरीसिंह से कहा कि युद्ध आप के ही भरोसे पर नहीं है ॥ ३० ॥ १२ दिल्ली के पादशाह के पुत्र अहमदशाह के साथ १३ सेना

तब कुम्भ *रवीय अमात्य सों कथ गेह चालनकी कही ॥
सुनि मंत्रि अक्खिय संग चल्लहु गेहकी न अबै सही ॥३१॥
तब कुम्भ संगहि कुच्चकैं दल[2] पिट्ठि जावन अहरयो ॥
दरकुंच हंकि मुकाम यों सतलंजके तटपैं परयो ॥
तँहँ कुम्भ हिंतु[3] वजीर चिंतिय आदितैं मम वैरहै ॥
गहि याहि दंडहिं वेगही अब नाँहिं यँहँ जयनेरहै ॥ ३२ ॥
सुहि कुम्भ भीरु निसीथमैं[4] सुनि छोरि डरनकों भज्यो ॥
दरकुंच रत्ति रु दीह कैं जयनैर लै रु दुरयो तज्यो ॥
परताप सालमनंद संगहि आय जैपुरमैं मरयो ॥
अरु जो नरायनदास खत्रिय लै हलाहल सो मरयो ॥३३॥
यह बीर खत्रिय अग्गही दुवबीस२२ संगर जित्तयो ॥
संधा[6] न भाजनकी हुती पर स्वामि संग भज्यो गयो ॥
तस लाज लै बिख खातही तिहिं बीर विग्रह[7] छोरयो ॥
सुनि कुम्भ सोच घनों लयो पर काकतैं वल ना ठयो॥३४॥
सुतसाह[8] अहमदसाह साहडरानतैं इत संजुरयो[9] ॥
यह जानि दिल्लिप ईसनैं निज हत्थ कग्गर[10] अंकुरयो ॥
सुनि पत्र दक्खिन देसमैं श्रियमंत अंतिकै[11] मुकल्यो ॥
तुम भीर[12] आवहु ह्यां इरानिन देस दिल्लियको दल्यो ॥३५॥
श्रेयमंत नन्ह जु बंचिकैं इक लक्ख१००००० वाँहिनि[13] लै चढ्यो ॥
बजि बंब आनक त्यों अचानक घोरसैं कोसनलों बढ्यो ॥
हयकै चलाचल लौ तरारन व्योममैं[15] धारनकों[16] धरैं ॥
घुमडी घटा अनुकार[17] वारन[18] गज्ज डारन विथ्थरैं ॥ ३६ ॥

*अपने१सचिव से ॥ ३१ ॥ २ सेना के पीछे ३ से ॥३२॥४आधी रात्रि में५दिखाकर ॥ ३३ ॥६इस के युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा थी परन्तु यहां स्वा[मी] के साथ भगा ७ शरीर को छोडा ॥ ३४ ॥८बादशाह का पुत्र ९जुड़ा (युद्ध किया) १० पत्र लिखा ११ श्रीमंत के पास भेजा १२ सहाय ॥ ३५ ॥ १३ सेना [१४] शब्द १५ आकाश १६ घोड़ों की गति को१७सदृश १८ हाथी ॥ ३६ ॥

उडि धूलि धोरनि अंक धूंधरि चक्कचक्किय बिच्छुरे ॥
लगि अद्रि घुम्मन भुम्मिके गज जानि मैंगल अंकुरे ॥
चढि संग गायकवाल१ ओ परमार२ सज्जित सधिया ३
हठदार हुल्लकर४ घुसल्पा५ मतिवार कन्नैलकी क्रिया।३७
तजि नैर पुण्याम सज्जि यों श्रिपमत उत्तर हकयो ॥
भुव भीर पक्खर छाय सेलन ओघ अंबर ढकयो ॥
दरकुच उत्तरि नर्म्मदा तिमही अवंतियं लघये ॥
अरु है जु रामपुराहि माधव बुल्लि संगहि ते लये ॥ ३८
असवार पचहजार५०००सों तब कुम्भ सम्मलि यों भयो
तँहँ कुम्भ डेरनपैं मलार मधान नन्दहिं लै गयो ॥
जयसिंह मंडित पत्रकी समुझाय वत्त निवेदई ॥
पुनि नैर बुंदिय लैनकी तिहिं बुद्धि दुद्धरके दई ॥ ३९ ॥
गज१ वाजि२ माधव भेट किन्न सु लै रु संगरपैं छल्यो ॥
इत कुम्भ केसवदास खत्रिय नन्ह सम्मुह मुक्कल्यो ॥
तिहिं साम ईस्वरिसिंहसों श्रिपमत स्वीकृत कारयो ॥
दरकुच कैं पुनि लघि चम्मलि सेन अग्ग प्रचारयो ॥ ४०
इम जाय जैपुर सीममैं नगरी निवाइय उत्तरे ॥
रु वकील बुंदियभूपके ढिग है तिन्हैं चलतेकरे ॥
लिखि पत्र संग दये रु भूपहिं बेग आनहु यों कह्यो ॥
तब छिप्रैं चारन दान आय मधान भूपतिको चह्यो, ॥४१॥
दलैं नन्हके रु मलारके सब पुंब्ब प्रीति निवेदये ॥
तब चाहि भूप सिराहि चारनकों रु चालनकों भये ॥

---

१ सूर्य २ दिग्गज ३ गायकवाड़ (मरहठों की जाति विशेष) ४ युद्ध की क्रिया से चतुर ॥३७॥ ५ भालों के समूह से आकाश ढकगया ६ उज्जैन ॥ ३८ ॥३९ ॥ ७ बड़ा मेल स्वीकार ९ कराया ॥ ४० ॥ १० विदा किये ११ उम्मेदसिंह को १२ शीघ्र १३ दान नामक चारण ने ॥ ४१ ॥ १४ पत्र १५ प्रीति पूर्वक

सक पंच अंबर अठ इक्क१८०५ रु चैत उज्जल द्वादसी१२ ॥
रविबार नाडिय पिंगला१ जलतत्त्वपैं जब उल्लसी ॥ ४२ ॥
क्रम पंच दक्खिन अंघ्रिकें तब दै रु भूपति हैं चढ्यो ॥
तजि नैर मधुकरदुग्गकों धक्क धारि बुंदियपैं बढ्यो ॥
तहँ पोदकी१ तजि बाम दक्खिन ओर सुब्बहि उत्तरी ॥
करि उंद्व सुंडि रु कन्नपैं धरि गज्जि सम्मुह भो करी२४३
दिस सांत बुल्लिय फिक्करी३ अनुकूल्ल पिंगलिका४ भई ॥
इम सौंन बुंदिय लैनके बनि प्रीति भूपतिकों दई ॥
तब लंघि चम्मलि संभरी दरकुंच उत्तर हंकये ॥
सुनि आत तात मलार१ खंडुव ुल१ सम्मुह ह्वै२गये। ४४।
त्रय३कोस पैं मिलि जाय प्रीति बढाय सम्मलि लै मुरे ॥
श्रिपमंतहू मिलिकैं प्रबोधियें बंब जित्तनके घुरे ॥
सुत साह अहमदसाहनैं इत जंग सत्रुनतैं रच्यो ॥
हरिमंथ भ्राष्ट्रक रौव त्यौं तरकाव तोपनको मच्यो ॥ ४५ ॥
अतलादि भू पुट धुज्जिकैं फनमाल पन्नग चंपयो ॥
अति चंड गोलन तापतैं ब्रह्मंड भ्कोलन कंपयो ॥
रु बजीर संगर होत माँहिं निमाज कारन उत्तर्‍यो ॥
मनसूर तोपन स्वामिनैं इँहँ स्वामिद्रोहँ रजू कर्‍यो ॥ ४६ ॥

॥४२॥१दाहिने चरण के२घोड़े पर३शकुनचिड़ी (रूपारेल)४सुंड को ऊंची करके कान पर धरकर५हाथी गर्जना करके सामने हुआ॥४३॥६शान्त दिशा में७फेकरी (स्यालनी) बोली (इसके बोलने के शकुनों का यह क्रम है कि जिस वार में बोले उस वार को पूर्व दिशा में रखकर दिशा दिशा प्रति उलटे क्रमवार से रखते जावैं अर्थात् पूर्व से आग्नि, दक्षिण आदि सो जिस वार में जिस दिशा में बोले वहां क्रूर वार का क्रूर फल और शान्त वार का शान्त फल मानते हैं ८ कोचर पक्षी ९ शकुन १० उम्मेदसिंह ११ पिता मल्लार और पुत्र खंडू ॥ ४४ ॥ १२ समझाया १३ बादशाह का पुत्र १४ घनों का १५ भाड़ में तड़कने का १६ शब्द होवै तैसे तोपों का शब्द हुआ ॥ ४५ ॥ १७ युद्ध होते समय १८ मनसूरअली १९तोपों के पति (दरोगे) ने ॥४६॥

बल तोप रवीय वजीरकौं हनि अप्प तैत्थ वजीरभो ॥
सुतसाह अहमदसाह यह लखि कौल चिंत रु धीरभो ॥
कहि माफ आगंसहै परतु अबैं इरानिनकौं हनौं ॥
सुनि यौं सहादत पुत्तहू मनसूर जग रच्यो घनौं ॥ ४७ ॥
बहु बार तोपन मार दे रु इरानको दल जित्तयो ॥
इतही महानद लघि अहमदसाह भीरु भज्यो गयो ॥
सुतसाह अहमदसाह तब जयपाय दिल्लिय संचरयो ॥
मनसूरकौंहि वजीर दिल्लिय ईसह तबही करयो ॥ ४८ ॥
पुनि साह चिंतिय जे भयो मरहट्ठ क्यौं अब वुल्लनैं ॥
पठवाय कग्गर मडि अक्खिय नाँ वे आवहु ह्यौं घनैं ॥
मिलनौंहि होय हजूर तो दल तुच्छ लै यहँ आवनौं ॥
नहितो लगे तुमरे ति दम्महि लै रु दक्खिन जावनौं ॥ ४९ ॥
श्रियमत कग्गर बंचि जो दल तुच्छकी नहिं स्वीकरी ॥
रुपय सेन दम्म लगे ति लै करि देस जावन अहरी ॥
तब साहनैं दुववीस लक्ख२२०००००लगे ति रुप्पय मुक्कले॥
दलमांहिं नन्ह निदेसहू तब देस चालनके चले ॥ ५० ॥
तहँ नन्ह हिंतु मलार अक्खिय वत्त बुदिय भुल्लई ॥
अरु भुल्लि माधवकौं कहा तुम सौंक जेपुरतैं लई ॥
सुनतेहि ईस्वरिसिंहपैं तब नन्ह कैंग्गर मुक्कल्यो ॥
तुमनैं कहा सिसु जानि पुव्व कुमार खहुवकौं छल्यो ॥५१ ॥
सुनि पेत्त ईश्वरिसिंह धुज्जि रु पुव्व वत्त सु स्वीकरी ॥
रु लिखी भई पहिलै सुही तपतैंहि है मम अहरी ॥

---

१ तोपों के बल से अपने वजीर को मारकर २ तहां आप वजीर होगया समय ३ विचार कर ४ अपराध ५ सहादतखां का पुत्र ॥ ४७ ॥ ६ पक्षी नदी को ७ गया ॥ ४८ ॥ ८ पत्र ९ अय १० जितने रुपये लगे हों वे लेकर ॥ ४९ ॥ ११ ते (वे) १२ आज्ञा ॥ ५० ॥ १३ से १४ पत्र १५ बालक जान कर पहिले ॥ ५१ ॥ १६ पत्र

जु उमेद[1] माधव[1]सौं कही सु सही भलें तुम लीजिये ॥
हरि सौंह[1] है मुहि अप्प मन्नि रु कुंच दक्खिन कीजिये ॥
सुनतैंहि यह तव नन्ह आयस कुंच दुंदुभिको दयो ॥
रु कही नरेसहिं हंकि मंडहु आन देस मिल्यो गयो ॥
सु कही मलारहु भूप संगर भुम्मि चालतही लहो ॥
यह ठहैं न तो हमसंगहैं जयनैर जित्तन उम्महो ॥ ५३ ॥
सुहि मन्नि मंत्र उमेद १ माधव १नन्ह सम्नालिहिं चढे ॥
दल भार ओकन ओक[3] ओकन लोक सोकनमें बढे ॥
कुसलेसनाम भलायके पति खास हे[4] पठयो तबै ॥
पति जानि माधवकों रु अक्खिय अप्पके वसहैं सबै ॥ ५४ ॥
सु लयो रु सत्थहि सर्व हंकिय लंघि जैपुर गाम के ॥
लखि लक्ख १००००० दक्खिन सेनकों अरि ओदके ढिग धामके ॥
दलके पयान अमान हत्थिन दान पद्धति सिंचई ॥
बढि फेन गेलन भीति सैलन रीति कँदुककी लई ॥ ५५ ॥
दल भेट मारुत फेटलै प्रतिमग्ग हारुत भग्गयो ॥
बन जंतु घोरन ओर ओरन प्रान छोरन लग्गयो ॥
करि यों पयान मिलान आनि वनासके तटपैं करयो ॥
तह भूप डेरन आय हुलकर नेह नूतन[11] विस्तर्यो ॥ ५६ ॥
सिरुपाव दोय महर्घ[12] अो हय खास दोपर निवेदये ॥
पुनि भूप परिकर[13] सर्वकों सिरुपाव उच्च दये नये ॥
रु कही चलो हम सत्य संध[14] स्वदेस आनि बिथारिहैं ॥
न बनैं जु तोहु समर्थहैं ततकाल जैपुर मारिहैं ॥ ५७ ॥
पुनि कुंचकैं कढि नैर[15] वाविपैं सीम बुंदिय संचरे ॥

१ईश्वर के सौगन॥५२॥२उम्मेदसिंह से कहा॥५३॥३घर घर में४घोड़ा॥५४॥५ म... हाथियों के डाण से मार्ग सींचे गये६पर्वतों ने ७गेंद की॥५५॥सेना की फेट से... पवन ९ हाहाकार शब्द करके भगा १० मुकाम ११ नवीन ॥ ५६ ॥ १२ मह... (बहुमूल्य) १३ सब परगह को१४सत्य प्रतिज्ञा वाले हैं सो ॥ ५७ ॥ १५ नगर

मरहट्ठ लुट्टन इद्दगढ लखि श्रील पूरब त्यों टरे ॥
दरसाल दम्म हजार सोलह१६००० बजधरगढपैं करे ॥
ति चढे हि हायनें पच५तैं नहिं देवें दक्खिनके भरे ॥ ५८ ॥
तसमात बाँसवदुग्गकों मरहट्ठ लुट्टन उम्महे ॥
सु उमेद१ माधव१ जानि द्वैं२ तिन्ह अट्ठ आनि खरेरहे ॥
श्रियमत आन दई रु अक्खिय कोल दम्म दिवायहैं ॥
अरु नाँहिं स्वीकृत एह तो हनिकैं हमैं दल जायहैं ॥ ५९ ॥
इम रोकि सर्वन दोहु२ सत्थहि आनि डेरन पुग्गये ॥
तँहँ दम्म बासवदुग्गके दसही हजार१०००० चढे दये ॥
रु कराय माफ हजार सत्तरि७०००० भूप ताहि बचायकैं ॥
लक्खेरिका पुर सीम किन्न मुकाम सर्बन आयकैं ॥६० ॥
तबही तहाँ सन बाघ सतुव स्वीय वीर मलारनैं ॥
पठयो वहे पुर लैन भूपति आन फेरन कारनैं ॥
तँहँ कुम्म हाकिम हे तिन्हैं जुरि जग संतुवतैं करयो ॥
मुरि बाघ सतुव जो उदत मलारतैं सब उच्चरयो ॥ ६१ ॥
सुनतहि हुलकर खिजि बुदिय भूपतें कहि मुक्ली ॥
नहिं सिक्ख सुभटन देहु तुम हम सैन जैपुरपैं हली ॥
यह अक्खिकैं श्रियमतसों हुल सिक्ख सगरकों लई ॥
सुनि निंदि कुम्महिं नन्हहू खिजि सिक्ख जैपुरपैं दई।६२।
अरु दैन सत्य बिसास नन्ह उमेद डेरनपैं गयो ॥
बिसवास भूपहि प्रीति पुग्ग बैन मजुंल बुल्लयो ॥
बैंल बीर बीस हजार२००००तै तुम संग एह मलारहे ॥

ाम है १ धनवान लोग पूर्व दिशा को चलेगये २प्रतिवर्ष ३ इन्द्रगढ पर ४पा
वर्ष से ५ देवसिंह ने ॥ ५८ ॥ ६ इस कारण ७ इन्द्रगढ को ८ रुपये ९ सेना
मको मारकर जावेगी ॥ ५९ ॥ १० वृत्तान्त (हाल) ॥ ६० ॥ ६१ ॥
१ ईश्वरीसिंह की निन्दा करके ॥ ६२ ॥ १२ मनोहर १३ सेना

सुहि लै रु अप्पैहिँ भुम्मि[1] अप्पैहिँ कुम्म[2] कंठ कुठारहै ।६३।
यह अक्खि दे गज बाजि भूपहिँ नन्ह इंकनकों भयो ॥
रु मलारहू तिय गोतमा[3] जुत पुत्र दक्खिन भेजयो ॥
यह गोतमा मरहट्ठ पुंगव[4] भोजराज सुता हुती ॥
जामातकों[5] सुत हीन जिहिँ सब द्रव्य दै रु रची नुती[6] ॥६४॥
तब गोतमा सु मलार व्याहिय जो पतिव्रतमैं रही ॥
तिहिँ तास चूरिय चूनरी बल तैं इती प्रभुता लही ॥
सु पतिव्रता१ अरु पुत्र खंडुव१ नन्ह संगहि मुक्कले ॥
पुनि लै हजार असी८००००चमू चढि नन्ह दक्खिनकों चले॥६५॥
तब तीन३ हड्ड१ मलार१ माधव१ नन्हके पहुँचानकों ॥
हुव संग पट्टनि चम्मली तट दिन्न आनि मिलानकों ॥
तँहँ नन्ह केसवदास खत्रिय[7] बुल्लि कुम्म अमात्यकों ॥
तस हत्थ हुलकर हत्थ दै कहि याहि ठिल्लि न व्रात्यकों[8]।६६।
यह सूद्र[9] पै इहिं बुद्धि बिप्रन[10] बुद्धि दैन समत्थहै[11] ॥
अरु तूहु[12] पज्ज ततोपि[13] यासन[14] प्रीतिलायक अत्थहै ॥
सुनि यों मलारहु अक्खई हम स्वामि उक्त[15] सचेतहैं ॥
इहिं भूप[16] पै तिहिँ कुम्म[17] दैन कही सु मूढ न देतहैं ॥ ६७ ॥
तसमात[18] तास अमात्य जो यह कुम्म सम्मति भिन्नहै ॥
अबही ततो पतिके कहैं हम लाय छत्तिय लिन्नहै ॥
पर[19] पत्र यासन[20] लेखि देहु समस्त बुंदिय छोरिवे ॥

१आपको भूमि देवेगा२यह मलार कछवाहे रूपी काष्ठ पर कुठार है॥६३॥३मलार की स्त्री का नाम है ४उत्तम मरहठे ५जमाई को, जिस भोज पुत्रहीन ने ६स्तुति ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ७ कछवाहे ईश्वरीसिंह के सचिव को बुलाकर ८इ-स संस्कार हीन (शूद्र) को ठेलना (हटाना) मत अर्थात् दूर मत करना ॥ ६६ ॥९यह (केशवदास खत्री) शूद्र है परन्तु यह१०ब्राह्मणों को बुद्धि देने में११समर्थ है१२तू भी शूद्र है१३इस कारण भी१४इससे १५स्वामी के कहने में १६ परंतु इसका राजा १७ईश्वरीसिंह ने॥६७॥ १८इस कारण १९परंतु २०इससे

सुनि एह केसवदास लिखि दिय नेह नूतन जोरिवे ॥ ६८ ॥
सु मलार भूपहिं दिन्न ओ सब नन्हकों पहुँचायकैं ॥
लक्खेरि पत्तनही बहोरि मुकाम मंडिय आयकैं ॥
लिखि दल उदैपुर१ जोधपुर२ कोटा३हु हुलकर प्रेषये ॥
सब सेन भेजहु अत्थ छिन्नहिं श्रील जैपुर देसये ॥ ६९ ॥
लक्खेरिका बिच रक्खि निज भट आन भूपति मंडई ॥
करि यों चढे सब कुच कैं खुरघात छोनियँ खंडई ॥
मग माँहिं बुदिय ग्राम आपउ तेहु भूपतिके करे ॥
दरकुच सज्जित सेन कैं जयनेर सम्मुह उप्परे ॥ ७० ॥
कइलासलों पह बत्तव्है सिवहू जरद्दवं आरुहे ॥
डमरूकं डाकिनि लो भजी सुनि प्रेत हकिय सामुहे ॥
कलिकार मोदित व्है हसे किलकारि जुग्गिनि उच्छली ॥
गहकाय गिद्धनि गोदकों चहकाय चिल्हनिहू चली ॥ ७१ ॥
डगमग्गि सैलन सानुतें वनजतु गैलन बिक्खरैं ॥
फनमाल पैन्नग पट्टरी सन नच्चि भू नट उच्छरैं॥
लहरैं हिंडोरन झोक निंदत नीर सिंधुन सेतु भै[12] ॥
बिथुरैं मवासन आसपासन बास नासन हेतु भै॥ ७२ ॥
रु कबध रक्खस नारि सन्निभ नारि कच्छपकी धसी ॥
कलिका अगत्थियकी फटैं तिम दंतुली किरिकी नसी ॥

॥ ६८ ॥ १ पत्र २ भेजे ३ धनधान् ॥ ६९ ॥ ४ भूमि खुदी ॥ ७० ॥ ५ बैल पर चढे ६ वाद्य विशेष ७ युद्ध करानेवाला (नारद) ८ प्रसन्नता की बोली बोलकर ॥ ७१ ॥ ९ हिलतेहुए पर्वतों के शिखरों से बनजतु१०मार्गों में बिखरते हैं११शेषनाग की फणमाला रूपी नट नाचकर उछलता है, हिंडोरे के झोकों की निन्दा करती हुई समुद्र की लहरें किनारों को१२भय करती है, आसपास के मवासों (चोर और लुटेरों के घरों) में वा-म के नाश करने का भय होता है ॥ ७२ ॥ और जैसे रामचन्द्र के युद्ध में कब-ध नामक१३राक्षस की गरदन शरीर में धुस गई थी तिसके १४ सदृश कमठ की [illegible] रदन शरीर मे धुसगई१५अगस्त्य पुष्प की कली फटै तैसे १६ वराह की

भय बग्ग कंपित छाग[2] ज्यौं दिगनाग त्यौं मद मोचये ॥
भटभर्ग भासत आतमभू[3] झट सर्गनास[4]त सोचये ॥ ७३ ॥
खुर धूलि धुंधरि नाँहिं प्राचिय[5] त्यौं अवाचिय[6] सुज्झई ॥
तिमही प्रतीचियँ[7] ओ उदीचिय[8] भान बीचियं[9] उज्झई ॥
पवमान[10] थक्किय[11] अंक ढक्किय चक्क[12] चक्कियँ बिच्छुरे ॥
पहुमी सुरक्किय सत्त७ खंड फिराव चक्किय[13] त्यौं फुरे ॥ ७४ ॥
सुरलोक कुक्किय रास[14] रुक्किय तान चुक्किय अच्छरी ॥
जिय भीरु[15] मुक्किय क्यौं बचैं सब नीर सुक्किय मच्छरी[16] ॥
इम सेन हंकत सत्रु संकत केस कंकत[17]के भये ॥
प्रतिभा[18] झमंकत बाजि डंकत भुम्मि ढंकत हल्लये ॥ ७५ ॥
भट कुंकुमी[19] करि चैल[20]के प्रभु गैल जित्तन उम्महैं ॥
कति बाजि[21]राजन झारि ताजन[22] भाजि आजि[23]नकों चहैं ॥
कति उच्चरैं सिर कुम्मको[24] धनु[25] खेत्र लोष्ट[26] बिधा[27]पहैं ॥

दंतुली फटी, जैसे १ सिंह के भय से २ बकरी कंपै तैसे दिशाओं के हस्ती धुजकर मद छोडने लगे और वीरों का तेज देखकर ३ ब्रह्मा ४ संसार के नाश का शीघ्र सोच (चिन्ता) करने लगे ॥ ७३ ॥ घोड़ों के खुरों की धूल से धुंध होकर ५ पूर्व ६ दक्षिण ७ पश्चिम और ८ उत्तर दिशा नहीं दीखी और इन दिशाओं ने सूर्य की ९ किरणों को छोड दी तथा सूर्य की किरणों ने इन दिशाओं को छोड दी १० पवन थककर ११ सूर्य छिप गया और १२ चकवा चकवी बिछड़ गये, भूमि के सातों खंड मुड़कर १३ घरटी के समान फिरने लगे ॥ ७४ ॥ स्वर्ग लोक में कूक होकर १४ नृत्य रुक गया और अप्सराएं गाना भूल गईं, जिसप्रकार सम्पूर्ण जल सूख जाने पर १६ मच्छी नहीं बच सकती इसप्रकार १५ कायरों ने जीव छोडे, इसप्रकार सेना के चलने से शत्रु डरकर जैसे १७ कांगसी (कंघी) में केस होवैं तैसे होगये, उस सेना के वीर १८ बुद्धि को चमकाते हुए, घोडों को कुदाते हुए और भूमि को ढकते हुए चले ॥ ७५ ॥ कितने ही वीर १९ केसरिया २० वस्त्र करके स्वामी के साथ शत्रुओं को जीतने को उत्साह युक्त हुए, कितने ही २१ घोड़ों को २२ चाबक मारकर दौडकर २३ युद्ध चाहते हैं, कितने ही कहते हैं कि युद्ध क्षेत्र में २४ कछवाहे (ईश्वरीसिंह) के मस्तक को २५ धनुष से २६ ढकल (मिट्टी के ढेले) के समान २७ करेंगे और कितने ही कहते हैं कि युद्ध रूपी भ्रमर (अग्नि) में जय-

कति यों कह रन मोरमैं जयनेर नाव भ्रमायहैं ॥ ७६ ॥
कहुँ उच्चरैं मम बैल ईश्वरिसिंह पिट्ठि अरोहिहै ॥
कहुँ सिंहको न कहंत ओगुन चित्रकारनकोहि हैं ॥
कहुँ सिंहनी जयसिंहकीहु भज्यो तरच्छुहि यों बदैं ॥
कहुँ यों पलायन मासदे बलं जंत्र रुक्कहिं दुर्मदैं ॥ ७७ ॥
इम बीर बुल्लत बीर खुल्लत सेन पिल्लत संचरे ॥
उनियार नागरचारमैं गलवे नदीतट उत्तरे ॥
दखिनीन तँहँ सेन जे नरूकन गाम ते सब लुट्टये ॥
तिनमाँहिं फूलहता बच्यो नृपके प्रताप न ह्वाँ गये ॥ ७८ ॥
परिन्यों नरेस अमात्य हरजन इक्क पुत्त दलेलह्वाँ ॥
तसमात फूलहता बच्यो नृप कानि रक्खिय मेलह्वाँ ॥
बनहटा जाय मुकाम किय पुनि कुच करि उनियारतैं ॥
राजाउतनके ग्राम लुट्टत बीर हंकि बिथारितैं ॥ ७९ ॥
कति दंडि छुट्टत मान खंडत आन मंडत अप्पनी ॥
टोडा१ रु मालपुरा२रु टौंक३ छुराय माधव कियो धनी ॥
यह जानि ईश्वरिसिंह अक्खिय जे दये ति दये सबै ॥
सुनि यों मलार कहाय पच्छिय नाँ बिसास रह्यो अबै ८०

पुर रूपी नाव को भ्रमायेंगे ॥ ७६ ॥ कोई कहता है कि ईश्वरीसिंह को मेरे बैल की पीठ पर १ चढाऊंगा, कहीं पर कहते हैं चित्राम का सिंह कुछ पराक्रम नहीं करता यह सिंह का दोष नहीं किन्तु यह दोष २ चितेरे का ही है अर्थात् ईश्वरीसिंह केवल चित्राम का सिंह है, कहीं पर कहते हैं कि जयसिंह की सिंहनी ने ३ बघेरे (दोगले) सिंह का ही सेवन किया है, कहीं पर कहते हैं कि ४ मांसभोजियों को मांस देकर ५ सेना रूपी यन्त्र से उस (ईश्वरीसिंह) के दुर्मद को रोकेंगे ॥ ७७ ॥ इसप्रकार बोलते हुए और ६ वीर रस को खोलते हुए सेना को चढाकर वीर ७चले ८ नागरचाल देश में उणियारा नामक नगर में ९ तहां से दक्षिणिया ना॥७८॥१० उम्मेदसिंह की मदद से ॥७९॥ ११ माधवसिंह को वहां का स्वामी (मालिक) किया १२ चार परगने माधवसिंह को और बूंदी का राज्य उम्मेदसिंह को पहिले दिये थे वे अब भी दिये

तब कुम्म *कग्गर मुक्कत्ते चहुवान भूपहिँ फोरिबे ॥
ति उमेद बंचि रु नाँ मुरयो पट्ट जंग दुद्धर जोरिबे ॥
पुनि कुंच मंडि रु पिप्पलूपुर जाय बाहिनि उत्तरी ॥
उमराव तीन३न आयकैं तँहँ भीर माधव की करी ॥८१॥
जगतेस१ लंबपुरेस ज्ञानं२ तथा सिवापुरको धनी ॥
पुनि त्यौंहि जालम२ डोडरीपति उल्लस्यो बढती अनी ॥
खँगार बंसिय कुम्मके उमराव बंधव तीन३ये ॥
असवार पंद्रहसै१५०० लियैं मिलि तत्थ माधवके भये ।८२।
पुनि पिप्पलू सन कुच्चकैं बढि सैन जैपुर त्यौं सरी ॥
तँहँ बोधिपादपके तरैं इक घात संभरतैं टरी ॥
तस छिन्न कल्प हुती जु साख सु तुट्टि भूपतिपैं चली ॥
लखि ताहि हड्डनको सिरोमनि बाजि फैंकि कढयोबली ८३
द्विज दान भोजन ता निमित्त अनेक आदरतैं करे ॥
सब सेन सम्मलि हंकिकैं पुनि जाय फागिय उत्तरे ॥
चलिकैं तहाँ सन दूसरेदिन दब्बि जैपुरकी मही ॥
पुर नाम लावलदान जाय मुकाम मंडिय वेगही ॥ ८४ ॥
रहतैं घनैं दिन बित्तये तँहँ मंत्र जित्तनको भयो ॥
दल भीर च्यारि हजार४००० तत्थहि रानको द्रुत पुग्गयो ॥
तिहिँ माँहिं सालम रानबांसिय संभु१ भारत भ्रातहो ॥
रु भवानिदास प्रधान पुत्र गुलाब२ कायथ जातहो ॥ ८५ ॥
पुनि मेघ३ बेघम नाह भूप उमेद४ साहिपुरा पती ॥
जसवंत५ देवगढेस त्यौं बिथुरात आहव उन्नती ॥
इम आदि लै दल रानके भट भीर हुल्लकरकी भये ॥
पुनि द्वैहजार२००० कबंधके भट आनि तत्थहि पुग्गये ॥८६॥

---

* पत्र ॥ ८१ ॥ १ लांबा नामक पुर का पति २ ज्ञानसिंह ३ खंगारोत ४ ईश्वरीसिंह के ॥ ८२ ॥ ५ पीपल के वृक्ष नीचे ६ तूटी हुई ७ घोड़ा दौड़ाकर ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८ मेघसिंह ९ युद्ध में १० जोधपुर के राजा

तिनमांहिं मालिक दूदहर भर सेर१ मेरतिया जथा॥
मनरूप२सचिव रु ऊदहर कल्यान१ सेर४ उमे२ तथा।
तँहँ अप्प अप्प बिचारि आयस ढारि ढेरन उत्तरे॥
इम पिक्खि सूरन आनि हूरन पुव्वही मनतें वरे॥ ८७॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ राणाबुन्दीसत्कारदेश्यकोटासत्कारोररीकरणपुन श्रीद्वारमहारावसहितमिलनाऽनन्तरजगत्सिंह १ दुर्जनशल्य २ ढिङ्गोलानिवसथशिविरन्यसनखण्डू १ पेतभूपद्वय २।३ रावराट्शिविराऽऽगमनतदनुखण्डू १ माधव १ मैत्रीविधानाऽखिलसैन्यनिर्याणखारीनदीतटप्रपतनतदभिमुखकूर्म्मराजागमनश्रुतसामखण्डूकोपकाङ्क्षणतत्सम्मतिसर्वसन्नद्धीभवनकूर्म्मराजाऽऽगामिकार्तिकसानुजविभाग १ बुन्दीरत्यजनलिखितहुलकरकरदापनानिन्दितमहारावशीर्षोदसेनाऽन्तरातृणशकटलुण्टनराणाचुण्डाउत्तमेघसिंह १ वणिक्टेकचन्द २ बुन्दी १ टोडा २ प्रेषणरुष्टखण्डू १ माधवसिंह २ रामपुरप्रतिगमनज्येष्ठजापसिंहि

॥ ८६ ॥ १ भट (उमराव) २सेरसिंह ३ अपना ४हुक्म देकर ५इसप्रकार वीरों को देखकर युद्ध होने से पहिले ही अप्सराओं ने आकर मन से उन को वरे ॥ ८७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, राणा का बुन्दी के सत्कार के बराबर कोटा का सत्कार स्वीकार करना, जिस पीछे नाथद्वारे में महाराव से मिलने के अनन्तर राणा जगत्सिंह और महाराव दुर्जनशाल का ढींकोला नामक ग्राम में डेरा करना १ खंडू सहित दोनों राजाओं का रावराजा के डेरे पर आना और जिस पीछे खंडू और माधवसिंह का मित्र होना २ सब सेना का वहां से निकलकर खारी नदी के किनारे मुकाम करना और उसके सम्मुख कछवाहों के राजा का आना ३मिलाप होना सुनकर कोप की इच्छावाले खंडू की सलाह से सब का सज्जित होना४राजा ईश्वरीसिंह का आगे आनेवाले कार्तिक मास में अपने छोटे भाई का पट और बुन्दी छोड़ने का लिखित (तहरीर) हुलकर के हाथ में देना ५ निन्दा युक्त महाराव का उदयपुर की सेना के भीतर घास के गाड़े लूटना ६ राणा का चूंडावत मेघसिंह और वैश्य टेकचंद को बुन्दी और टोडे भेजना ७ क्रोधित खंडू और

जयपुरप्रविशनतन्महारावबुन्दीमार्गणराणाभूपत्रय३धुंधरीग्रामाऽऽ
गमनहड्डेन्द्रपुरोधीदयारामाऽऽनयनग्रामसगतपुरसम्भरेशसचिवह-
रजनोपयोगिनीशिविकासमर्पणतत्स्वामिदेशरणकरणरावराड्द्वि-
तीय २ राज्ञ्याऽऽत्मजोद्गमनसुभटीकृतसालमिप्रतापसिंहकूर्म्मराजबु
न्द्यागमनकोटा १ रामपुर २ जयविचारणप्रताप १ दलेल २ सो
दार्द्दकरणतदनुजान्नत्यजनप्राप्तयवनेंद्रपत्रेश्वरीसिंहदिल्लीगमनदलेल
सिंहमथुरादेहत्यजनकूर्म्मेशरणस्तंभदुर्ग्गप्रार्थनतदनङ्गीभवनेरानोप
मानप्रत्यन्तेन्द्राऽहमदशाहयुयुत्सुसपरिकरदिल्लीशकुमाराऽहमदशाहक
रतोयाऽभिमुखनिर्याणसरिच्छतद्रुशिविरसंस्थापनयवनसचिवकूर्म्म
बन्धनविचारणतद्भयत्यक्तवाहिनीवैभवसहड्डप्रताप १ खत्रिनाराय-
णदास २प्रद्रुतेश्वरीसिंहस्वपुरसमाविशनप्राप्तदिल्लीशदोर्लिपिपत्रसि
तारेश्वरसचिवराजनन्होत्तरदिगाऽऽगमनमाधवसिंहतत्सङ्गसाधनजय

माधवसिंह का रामपुरे पीछा जाना और जयसिंह के बड़े पुत्र (ईश्वरीसिंह
का जयपुर में प्रवेश करना ८ उससे महाराव का बुंदी मांगना और राणा
सहित तीनों राजाओं का धुंधरी नामक ग्राम में आना ६ उम्मेदसिंह के पुरो
हित दयाराम को लाना और सगतपुर नामक ग्राम में उम्मेदसिंह का सचिव
हरजन के उपयोगी पालखी देना और उसका स्वामी के देश में युद्ध करना
१० रावराजा की दूसरी राणी के पुत्र होना ११ सालमसिंह के पुत्र प्रतापसिंह
को उमराव बनाकर राजा ईश्वरीसिंह का बुन्दी आना और कोटा व रामपुरे
को जीतने का विचार करना १२ प्रतापसिंह और दलेलसिंह दोनों भाइयों
में मित्रता करना और दलेलसिंह का अन्न छोडना १३ जिसपीछे दिल्ली के
बादशाह का पत्र आने से ईश्वरीसिंह का दिल्ली जाना दलेलसिंह का मथुरा में
शरीर छोडना और ईश्वरीसिंह का रणथंभ नामक गढ मांगना और उसका
अस्वीकार होना १४ ईरान [म्लेच्छ देश] के पति अहमदशाह से युद्ध करने
की इच्छावाले उसके उपमान परगह सहित दिल्ली के पति के पुत्र अहमदशाह
का निकलकर शतद्रू नदी के पास डेरे करना और दिल्ली के वजीर का
कछवाहे ईश्वरीसिंह को कैद करने का विचार करना १५ उसके भय से सेना
को और वैभव को छोड़कर हाडा प्रतापसिंह और खत्री नारायणदास सहित
भागेहुए ईश्वरीसिंह का जयपुर में घुसना १६ दिल्ली के बादशाह के हाथ का
लिखा हुआ पत्र पाकर सितारे के पति के सचिव नन्ह का उत्तर दिशा में

पुरजनपदनिवाईनगरदक्षिणपृतनाप्रपतनंनन्द १ मल्लार २ वर्णाहूत
हूतबुन्दीन्द्राऽऽगमनयवनद्वय२ शतद्रुयुद्धभवननालीयत्राध्यक्षमनसूर
स्वसचिवमारणपरसैन्यपलायनयवनेशमहाराष्ट्रागमवारणाऽव्ययद्रव्य
व्रम्मद्वाविंशति २२ लक्षमेषणतिरस्कृतकूर्म्मराजनन्दप्रस्थानतत्परि-
करेन्द्रगढलुण्टनाविचरणकुपितोम्मेदसिंह १ माधव १ दाक्षिणात्य
वारणनृपदेशाध्यक्षशत्रुरणकरणतन्नन्दबुन्दीन्द्रशिविराऽऽगमनतत्स
हायमल्लारप्रतिप्रेषणस्वयंदक्षिणागमनोम्मेदसिंह १ माधवसिंह २
सहायीभूतहुलकरोदयपुर १ योधपुर २ कोटा ३ सैन्यसमाऽऽह्वयन
कूर्मजपनदलुण्टनटोडा १ मालपुर २ टोंक ३ नयनसमाहूतसैन्यत्र
य ३ समिलनं त्रयोविंशो २३ मयूख ॥ २३ ॥ ३०४ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नगर लदानौंही सुन्यौं, साह मुहुम्मद नास ॥
सक सर नम वसु ससि१८०५समा, मेचक सावन मास ।१।

आना १७ उसके साथ माधवसिंह का आना और जयपुर के देश निवाई नाम नगर में दक्षिण की सेना का मुकाम करना और नन्द और मल्लार के पत्र से बुलाये हुए बुन्दी के पति का आना १८ दोनों यवनों का शतद्रू नदी पर युद्ध होना और तोपों के अफसर मनसूरअली का अपने वजीर को मारना और शत्रु सेना का भागना १९ पादशाह का मरहठों की सेना का आना रोककर लगेहुए खरच के बाईस लाख रुपये भेजना २० ईश्वरीसिंह का तिरस्कार करके नन्द का गमन करना और उसकी परगह का इन्द्रगढ को लूटने को जाना और क्रोध युक्त उम्मेदसिंह और माधवसिंह का दक्षिणियों को रोकना २१ उम्मेदसिंह के देश के अधिकारियों से शत्रु के युद्ध करने के कारण नन्द का बुन्दी के पति के डेरे पर आना और उसकी सहाय पर मल्लार को भेजना २२ नन्द का दक्षिण में जाना और उम्मेदसिंह माधवसिंह की सहाय पर हुलकर का उदयपुर, जोधपुर, कोटा की सेना को बुलाना २३ कछवाहे के देश को लूटना और टोडा, मालपुरा और टोंक को प्राप्त करके बुलाई हुई तीनों सेनाओं के शामिल होने का तेईसवां २३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ चार ३०४ मयूख हुए ॥

१ दिल्ली के पादशाह मुहम्मद का मरना २ कृष्ण पक्ष ॥ १ ॥

ताको सुत बैठो तखत, अहमदसाह अनूप ॥
वह मनसूरअली सचिव, रक्ख्यो पुनि अघ[1]रूप ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

तिनहि मुकामनतैं मलार निज भट गंगाधर ॥
सहँस अट्ठ८०००दल संग दै रु पठयो जैपुर पर ॥
तिहिं जाय रु जयनैर द्वार अररन[2] तोमर हनि ॥
बुलवाये प्रतिबीरैं[3] भीरूं[4] अब समुख होहु भनि ॥
कोटके निकट मालिन कुटिय बाटिन[5] सहित प्रजारि दिय ॥
कूरमहु तुंग[6] प्रासाद चढि यह चरित्र आतुर[7] लखिय ॥ ३ ॥
तब नृप ईश्वरिसिंह कटक पिल्ल्यो तिन उप्पर ॥
सेखाउत सिवसिंह बिदित निकस्यो बीरनवर ॥
यह कूरम निज असन[8] बेर दुंदुभि[9] बजवावैं ॥
लक्खन रंक जिमाय प्रीत ओदन[10] तब पावैं ॥
तिहिं खुल्लि अररर[11] जयनैरके सजव[12] बाजि सम्मुह कियउ ॥
मरहट्ठ भटन जयकारैं[13] मिलि दुसह मार खग्गनदियउ ॥ ४ ॥
सीकरपतिको लोह कटक दक्खिन सिर बज्ज्यो ॥
घरिय दोयर घमसान[14] भुकति गंगाधर भज्ज्यो ॥
पंच५ कोस पहुँचाय मुर्‌यो प्रतिमग[15] सेखाउत ॥
जाय निवेदिय बिजय नृपहिं बंदीनैं[16] बिरुद सुनत ॥
अरु कहिय जो न आपुन चढहु तो सत्रुन सैन[17] हारिहैं ॥
नृप कहिय जट्ट[18] अप्पन मिल्त रु संगर बहुरि सुधारिहैं ॥५॥

१पापी को॥२॥२दरवाजे के किवाड़ों पर भाले मारकर३शत्रुओं को४हे कायरो ५(ब)गीचियों सहित मालियों की झूँपड़ियें जला दीं६ऊंचे महल पर७पीड़ित होकर॥३॥ ८ अपने भोजन करते समय ९ नगारा १० अन्न ११ कपाट खोलकर १२ शीघ्र १३जय करनेवाला॥ ४ ॥ १४ युद्ध १५ उलटे मार्ग (पीछा) आकर ईश्वरीसिंह को विजय निवेदन किया १६ भाट लोगों से स्तुति को सुनता हुआ १७ से १८ भरतपुर के जाट ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पठये यह कहि भरतपुर, कग्गर जट्ट समीप ॥
आयहु सूरजमल्ल इत, महत जुद्ध महीप ॥ ६ ॥
गहिय ढिग लै बैठिहैं, तुमहिं बीर प्रति आघ ॥
हिम दक्खिन सिर होहु अब, दुपहर जेठ निदाघ ॥ ७ ॥
इम कग्गर द्रुत बचिकैं, चाढिग जट्ट रविमल्ल ॥
जयपत्तन दरकुंच जैव, आयो कटक उमल्ल ॥ ८ ॥
नगर लदानौतैं कियउ, इत सब दलन प्रयान ॥
सावन उज्ज्वल भूत१४ सक, मिलि सर नभ धृति १८०५ मान॥ ९ ॥
छठ पूरब हुलकर रचे, बगरू नगर मुकाम ॥
तँहँ सन लियउ मलार तब, दसहजार१०००० दमदाम ॥ १० ॥
रानकँटक अतर गयउ, पुनि दक्खिन दलराय ॥
भिन्न भिन्न सब भट किये, मोदित डेरन जाय ॥
साहिपुरेसहिं आदिदै, सबहि रान उमराव ॥
इक्क१ इक्क१ हय नजरि करि, बुल्ले लरन बढाव ॥१२॥
तेदनतर मरुधर कटक, पहुँच्यो हुलकर नाथ ॥
अभयसिंह भट वर अखिल, सबोधे हित साथ ॥ १३ ॥
खासा दुव२ हय दुव२ हयी, साखति पुरट समान ॥
चारु करभ सु विनीत चउ४, पीन रु रंजत पलान ॥ १४ ॥
त्योंहि क्रमेलक दिग्घ तनु, भारवाह पंचास५० ॥

॥ ६ ॥ दक्खिनियों रूपी १ बरफ के ऊपर २ ताप (घाम) अथवा ग्रीष्म ऋतुका ॥ ७ ॥ ३ सूर्यमल्ल ४ शीघ्र ॥ ८ ॥ ५ शुक्ल पक्ष ॥ ९ ॥ ६ दाम के रुपये ॥ १० ॥ ७ राणा की सेना के भीतर गया देशी प्राकृत के मतानुसार 'ए' और 'ई' को 'इय' और 'ओ' और 'व' को 'उव' होता है सो छन्द रचना में उपयोगी होने के कारण ग्रहण किया है ८ सेनापति मल्हार ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ जिसपीछे १० सबको ११ निमन्त्रित किये ॥ १३ ॥ १२ घोड़िया १३ सुवर्ण की १४ सुन्दर ऊँट १५ श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए १६ पुष्ट १७ चांदी के ॥ १४ ॥ १८ बड़े शरीरवाले ऊँट १९ भारबरदारी के

मरुपंति एते५८ मुक्कले, प्रिय सखै१ हुलकर पास ॥१५॥
ते सब अत्थ२ निवेदये, सेरसिंह१ मनरूप२ ॥
इक१ इक्क हय पुनि अप्पनैं, अप्पे मे[illegible] [illegible] ॥ १६ ॥
तिनहि मुकामन पंचसत५००, कोटाके [illegible]असवार ॥
आये सम्मलि३ आहुरन, चिंतत बिजय [illegible]चार ॥ १७ ॥
अखयराम१ कायत्थ अरु, नगर नागद[illegible] नाथ ॥
माधानी४ मोहन कुलज, जोध२ मुक्ख दल साथ ॥ १८ ॥
तिनहूको सनमान किय, हुलकर डेरन जाय ॥
इक१ इक्क घोटक५ अप्पये, प्रचुर६ प्रीति उन पाय ॥ १९ ॥

॥ रुचिरा ॥

तहँ माधव इक्क कपट बिथारिय अग्रज७ परिकर फोरनकौं ॥
कन्ह१ वकील बहुरि गोगाउत२ मिलि८ कूरम मन मोरनकौं ॥
प्रतिउत्तर समुझै तिम९ कंग्गर जैपुर सचिवन नाम रचे ॥
दे चर१२ हत्थ कहिय अग्रज चर इनहिं लखैं तब मोदमचे ॥ २० ॥
यहसुनि चर दल लहि जैपुर गत१३ जानि परायन१४ हत्थ पर्यो ॥
ईश्वरिसिंह हु लखि तिन पत्रन व्है अति आकुल सोक कर्यो ॥
जिन अभिधान१५ लिखे उन पत्रन तिन प्रति अक्खिय तुम्हहु पढो ॥
हरगोविंद प्रमुख१६ सुनि बुल्लिय उन छल किय तुम लरन चढो ॥ २१ ॥
ईश्वरिसिंह सु सुनि गहि मोन रु जट्ट सहित दल१७ लरन सजे ॥

१सखा (मित्र)॥१५॥२यहां निजर किये॥१६॥३युद्ध करने को॥१७॥४माधोसिंघोत लाडा॥ १८ ॥ ५ घोड़ा ६ बहुत प्रीति पाकर ॥ १९॥७बड़े भाई (ईश्वरीसिंह की) परगह को फोड़ने के लिये माधवसिंह ने एक कपट रचा ८ कछवाहों का मन मोड़ने के लिये ९ उनके पहिले के भेजे हुए पत्रों के उत्तर समझे जावैं ऐसे जयपुर के सचिवों के नाम१०पत्र रचे ११ हलकारे के हाथ १२ ईश्वरीसिंह का नौकर देख लेवे तब हर्ष होवे ॥ २० ॥ १३ गया १४ पैलों के हाथ में १५ जिन के नाम १६ आदि ॥ २१ ॥ भरतपुर के जाट सहित लड़ने को १७ सेना सजी

हेंस हयन वारन गन ब्रुंहित बंबक त्रंबक बहुल बजें ॥
इत बगरुव बुधसिंह सुवन नृप संमुद कवंधन सिविर गयो ॥
मारन मुदित मिले नति पूरब घोटक इक१इक१ भेट भयो ॥२२॥
इत पठित पहुँच्यो गंगाधर पुनि पुर अँररन सेल हनें ॥
पुरजन पकरि सहर वहिरागत विदित विडारिय मुंडि घनें ॥
ईश्वरिसिंह सु सुनि सज्जित करि तीस सहँस ३०००० निज क-
टक चल्यो ॥
संगहि जट्ट अधिप रविमल्लहु वाहिनि गाहिनि हकि वल्यो ॥२३॥
सक सर नभ वसु ससि १८०५ सम्मित सेम भद्द असित गत दो-
१७४७ जि२ दिनाँ ॥
किरि रेंद तुट्टि छुट्टि सत्व रु नृप वेसुमति कुट्टिय समय विनाँ ॥
हाक प्रचुर दिस दिस प्रतिहारन हयन हजारन जूहजुरे ॥
असह अचानक अनउपमानक घन रव आनक निकर घुरे ॥२४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ सदानापुरसम्विहितशिविरसमस्तसैन्यदिल्लीशशाहमुहम्मदमरणशमनशूरसचिवतत्कुमाराऽहमदशाहयवनेन्द्रीभवनमल्लाराष्टसहस्र८०००सैन्यसहितसेनापतिगङ्गाधरजयपुरप्रेषणतत्तोरणाऽररतोमरप्रहारणाबाक्षाऽऽर,

---

१घोड़ों का हींसना २हाथियों के समूह की गर्जना ३ नगारे और ४ तासे बहुत बजे ५ हर्ष सहित ६ राठोड़ों के डेरे गया ॥ २२ ॥ ७ किंवाड़ों पर भाले मारे ८ शहर से बाहिर आयेहुए पुर के मनुष्यों को पकड़ कर प्रसिद्ध मुंडन कराके निकाल दिये ९ सूर्यमल्ल १० शत्रुओं को मर्दन करनेवाली सेना को लेकर ॥२३॥ ११समा (वर्ष) पराक्रम छूटकर १२वराह के दंत टूटे १३भूमि द्वारपालों की १४ बहुत हाक १५ हजारों घोड़ों के समूह जुड़े नहीं सहाजावे ऐसा १६उपमान रहित अचानक १७मेघ की गर्जना के समान नगारों का १८समूह बजा ॥ २४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, सदाना नगर में सब सेना का डेरा करके दिल्ली के बादशाह मुहम्मद का मरना सुनना और शूर व सचिवों का उस के कुमर अहमदशाह को बादशाह करना १ मल्लार का आठ हजार सेना सहित सेनापति गंगाधर को जयपुर भेजना और उस का

मादिप्रज्वालनजायसिंहितत्सहायाऽर्थस्ववंशीयसेखाउतशिवसिंहनि
स्सारणातत्तुमुलरणागङ्गाधरपलायनसेखाउत्तप्रतिगमनस्वयंनिष्क्रस-
नौचितनिगदनकूर्म्मराजभरतपुरपत्रप्रेषणातदधीशजट्टेन्द्रसूर्यमल्ला-
ऽऽनयनगद्दिकास्पृष्टकूतदुपवेशनस्वीकरणविदितवर्णदूतसूर्यमल्लजय
पुरागमनसचमूमल्लार १ बुन्दीन्द्र २ माधवो ३ दयपुर १ योधपुर २
कोटा ३ सैन्यबगरूपुरप्रपतनतद्दण्डद्रव्योद्धरणहुल्लकरसर्वसार्थसै-
न्यमुख्यसम्माननमित्रमरुराजप्रेषितहयकरभादिद्रव्यमल्लागङ्गीकर-
णाभूतसिद्धभविष्यस्वागतोचितकोटाकटकाऽऽगमनमाधवसिंहप्रति-
वचनव्यंजककौहक्यपत्रजयपुटप्रेषणातत्सहूतपरप्रत्यक्षीभव-
ज्जायसिंहिवञ्चकविवेचनमोहनहरगोविन्दादिपारवाञ्चक्यप्रकटीकरण
समानकालाऽधिकरणहट्टेन्द्र १ गङ्गाधरसंगतमरुसैन्यशिविर २ जय
पुरा२ऽग्राऽगमहयोपायनपुरकवाटध्वंसननागरमुण्डनाक्रन्दन३प्रहण

नगर के द्वार के कपाटों पर भाला मारना २ बाहर के बाग आदि को जलाना
और जयसिंह के पुत्र का उनकी सहाय के अर्थ अपने वंशवाले सेखावत शिव-
सिंह को भेजना ३ उसके भयंकर युद्ध से गंगाधर का भागना और सेखावत
का पीछा आकर ईश्वरीसिंह के बाहर निकलने की उचित वार्ता कहना ४
ईश्वरीसिंह का भरतपुर पत्र भेजना और वहां के पति जाटों के राजा सूर्य-
मल्ल को बुलाना ५ गादी को छूतेहुए बैठने के स्वीकार के पत्र को जानकर
सूर्यमल्ल का जयपुर आना ६ सेना सहित मल्लार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह और
उदयपुर, जोधपुर, कोटा की सेना का बगरू पुर में मुकाम करना और वहां
से दंड के रुपये लेना ७ हुल्लकर का सब के साथ सेना के मुख्य सरदारों का
सन्मान करना और मल्लार का अपने मित्र मारवाड़ के पति के भेजेहुए
घोड़े, ऊँट आदि द्रव्य को स्वीकार करना और आगे आये हुओं का आदर
सिद्ध करके आगे के उचित सत्कार के लिये कोटा की सेना में आना ८ मा-
धवसिंह का, प्रति उत्तर जाना जावै ऐसा छल का पत्र जयपुर भेजना और
वो उसके दूत से प्रत्यक्ष होकर जयसिंह के पुत्र (ईश्वरीसिंह) का उस ठग के
विचार से मोहित होना और हरगोविंद आदि का शत्रु का छल प्रकट करना,
९ एक ही समय में हाडाओं के राजा (उम्मेदसिंह) और गंगाधर के साथ
मारवाड़ की सेना के डेरों में और जयपुर के आगे आना, हाडा के तो घोडा
नजर होना और गंगाधर का पुर का कॅवाड़ों को तोड़ना १० नगर के लोगों

अथवा ४ जट्टसूर्यमल्लाऽनूनेश्वरीसिंहाऽरातिपनीकाऽभिमुखनिस्सरणचतुर्विंशो २४ मयूख ॥ २४ ॥ आदित ॥३०५॥

॥ शुद्धव्रजदेशीयापाकृतभाषा ॥

॥ मनोहरम् ॥

बावन५२ बरनतैं सरस्वतीको सरवस,
द्रौपदीको बस्त्रज्यों दुसासनके करतैं ॥
छंद छप्पईतैं ज्यों प्रपंचित प्रसर पुंज,
बीज बसुधातैं बेरे बुंदे बारिधरतैं ॥
बारिधितैं बीचें मारतंडतैं मरीचि मित ॥
तरल तरंगा स्रोत गंगा गिरिवरतैं,
गोतमतैं न्याय रोजराजतैं ज्यों राय ऐसैं
कूरम कटक कढ्यो जैपुर नगरतैं ॥ १ ॥
आनतही पंडित प्रधान तते गंगाधर,
फारसे चखाय लोह मुरयो तजि खेतुहैं ॥
लागो पीठि कूरम विनाश्रम विजय जानि,

का युद्ध करना, उनका रोना और पकवना सुनकर जाट सूर्यमल्ल के साथ ईश्वरीसिंह का शत्रु सेना के सन्मुख निकलने का चोवीसवां २४ मयूख हुआ और आदि से तीनसौ पांच ३०५ मयूख हुए ॥

अब आगे छोटी वस्तु से बड़ी वस्तु के निकलने की उपमा देते हैं कि बावन वर्णों (अक्षरों) से सरस्वती का सर्वस्व (संसार भर की सम्पूर्ण विद्या निकली जैसे और दुश्शासन के हाथ से १ द्रौपदी का वस्त्र निकला जैसे और छप्पय छंद से २ रचाहुआ ३प्रस्तार का समूह निकला जैसे "छप्पय छन्द का प्रस्तार बहुत बड़ा होता है" ४ पृथ्वी से सम्पूर्ण वस्तु का बीज निकला जैसे मेघ से ५ शरीर और जलकण निकले "जैसे मेघ से मच्छी मेंडक आदि बसकर जीवों की वृष्टि होती है" समुद्र से ६ लहरें निकलैं जैसे और सूर्य से ७ किरणें निकलैं जैसे, हिमालय पर्वत से ८ चपल तरंगवाली गंगा की धारा निकली जैसे, गौतम मुनि से न्याय (न्यायशास्त्र) और जैसे, ९कुबेर से१०धन निकला तैसे जयपुर नगर से कछवाहे ईश्वरीसिंह की सेना निकली ॥ १ ॥ विना ही श्रम विजय मिलना जानकर ११ कछवाहा ईश्वरीसिंह पीठ लगा

*जट्टन समेतु सज्ज संगर सचेतुहैं ॥
†बड़िस बपाके लोभ लीन ‡महामीन जैसें,
डोरि ऐंचिबेतैं नीर तीर आनि लेतुहैं ॥
जैपुरनरेस आनि डारयो यों मलारपै ज्यों,
डाकिनिके डेरा डावरेकों डारि देतुहैं ॥ २ ॥
आवत सुनत ढुंढाहरको कटक इत,
अपर अनीक हिय पंकज खिलतुहैं ॥
बुंदीपति १ माधव २ मलार३ असवार होत,
सिसकतु सेस अंग कच्छप गिलतुहैं ॥
सिंधू राग लागैं खैंचि खागैं अनुरागैं आनि,
हाडे तानि बागैं बढि आगैंकों भिलतुहैं ॥
नयन गुलाबी आबी छत्रनैं छाबी भूमि,
एडिनकी दाबी नाँ अँगूठन मिलतुहैं ॥ ३ ॥
बान नभ अष्ट भू १८०५ समान सक बिक्रमके,
मद्दव चउत्थी४ स्याम भालन भिलनकों ॥
नैर बगरूके खेत पंचों५ सेन सज्ज करि,
मंडयो मगरूर हंकि सम्मुह मिलनकों ॥
आसिक अलीके बींद अच्छरि बनीके फन,
फोरत फनीके धार धारन झिलनकों ॥
हाडा छत्रधार १ और माधव२ मलार३ लागे ॥

---

*जाटों सहित युद्ध पर सचेत होकर सजा सो † कांटे (कटिये) में लगाई हुई चरबी के लोभ से लगनेवाला ‡ बड़ा मच्छ खैंचने से जैसे जल के किनारे आजाता है तैसे गंगाधर रूपी कटिये ने जयपुर के राजा को मल्लारके पास ऐसे ला डाला जैसे डाकिनी के डेरे पर बच्चे को ला डाल देते हैं ॥ २ ॥ १शत्रु की सेना के २ प्रीति करके गुलाब से (लाल) नेत्रों की ३शोभा ४ छाईहुई ५ जिस भूमि को एडी से दबाई वह अंगूठे को नहीं मिलती अर्थात् पीछे पगनहीं लगते ॥ ३ ॥ ६ कृष्णपक्ष ७ घमंड ८ शेषनाग के ९ छत्र धारण करनेवाला

राहुह्वैकैं कूरम कलानिधि गिलनकौं ॥ ४ ॥
चढत चमूकै चौंकि चंडी चहकाय गन,
गिद्धि गहकाय खगे खेत्रपाल खिल्लीपैं ॥
तरल तुखार सार पक्खर अपार नाद,
प्रचुर प्रसार जो न भ्रतकार भ्रिल्लीपैं ॥
घुमडि घटाले ढल्ल हुलकरवाले बीर,
भ्राले भुज भाले चाले दीठि मन मिल्लीपैं ॥
कूदत कैलावा नागपेच लपटावा देत,
कूरमपैं कावा देत दावा देत दिल्लीपैं ॥ ५ ॥
प्रथम मिलाप रचि तोपनको ताप,
कपिलेसैं कैसो साप बाप कालको बिथारयो त्यौं ॥
करकि कराल सोरझाल बिकराल फैलि,
फैलन बिसाल ज्वालमाल जग जारयो त्यौं ॥
गोलनके गोन पीलुं मत्ते पोन पैंत्ते करि,
तीनौं भौंन तत्ते करि प्रलय प्रसारयो त्यौं ॥
नालिनको नाद यौं निहारयो बगरूके जग,
मदरको मारयो ज्यौं पयोनिधि पुकारयो त्यौं ॥ ६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

परत पलीते घोर जाम जुग२ बीते छूटि,
फैरनपैं फैर नर हैवर मरत जात ॥
सिलगत सोर और और जातवेदं जोरि,

(राजा) १ कछवाहे रूपी चन्द्रमा को ॥ ४ ॥ २ फुलकर (प्रसन्न होकर) ३ चपल घोड़े ४ तरवार ५ हाथियों के कंधों पर हो हो कर कूदते हैं ६ गोल कूंडा ॥ ५ ॥ ७ कपिलदेव के श्राप के समान ८ काल का भी पिता "अधिकता बताने में बाप को बताने की लोकोक्ति है" ९ भयंकर १० रूपी छलांगों से ११ मस्त हाथियों को पवन के १२ पत्ते के समान करके १३ तोपों का शब्द १४ मंद-राचल का मारा हुआ १५ समुद्र ॥ ६ ॥ १६ दो प्रहर १७ घोड़े १८ अग्नि के

जिल्लह जेलूमी जंबूदीपकी जरत जात ॥
जंग बगरूके घोसँ कोसन पहुंच्चि रुंधि,
धूम धीरनीकी धुंधि धूसर परत जात ॥
सँक्खी करि सूर जेसमक्खी तोपलक्खी गज,
मक्खीपर लैलै काल चक्खीसी करतजात ॥७॥
गान नँव गोले घमसानिन उडानन लै,
धानन किसानन त्यौं प्रानन लुनतँ जात ॥
दाहन दुसह अवगाहन विजय वेद,
चंड कछवाहन सिपाहन चुनत जात ॥
दगि दगि दौंव ताव अतुल अँलाव लागि,
झगि इकतौर झार भाररी भुनत जात ॥
तौकैं तिन तोपन अवाजन सुनत त्यौंही,
तोपनके ताकैंहूँ अवाजन सुनत जात ॥ ८ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

रची बगरू इम तोपन रारि, झगे अँय गोलक पावक झारि ॥
भये कँचमाल मई सब भोन, गिरैं बहु वारन गोलन गोन ॥ ९ ॥
उडैं वर हैवँर त्यौं असवार, बढैं जम मग्ग कि नैर बजार ॥

बल से १ घोखा २ शोभा की सामग्री (सजावट) ३ शब्द ४ सूरज को साक्षी करके ५ सन्मुख (संमुख) ६ लाखों रुपयों के हाथियों को अथवा काले हाथियों को "तोप, बंदूक का निशाना काले रंग का ही करते है" ॥ ७ ॥ ७नवीन८युद्ध में९करसे लोक धान को काटें जैसे१० प्राणों को काटती है ११ अधिकता से विजय का थाह लेती हुई१२अग्नि१३तुलना रहित अग्नि का समूह १४ निरन्तर१५उन तोपों को देखते हैं सो१६उन तोपों की ताक (सिस्त) में आये हुओं की अवाज (शब्द) मात्र ही सुनते हैं कि वह भी थे॥८॥ १७लोहे के गोले १८सब घर कचनार मय (लाल) होगये (कचनार का रंग लाल होता है अथवा मरनेवाले मनुष्यों की अधिकता से सब भूमि केशों की मालामई होगई) गोलों के चलने से बहुत१९ हाथी गिरते हैं ॥ ९ ॥ इसी प्रकार श्रेष्ट२०घोडे और घोडों

उड्डैं लगि गोर झलाझल अब्भ, गिरैं सुनि गज्जत गब्भिनि गब्भ॥१०
हलैं भुव पन्नग सीस हजार, मचैं किरि तुंड मचक्कन मार॥
नचैं जिम मारुत वारिधि नाव, भयो इम छोनिय नच्चव भाव॥११॥
भये जड जोगिय छुट्टि समाधि, वढ्यो सब ओर प्रजागर व्याधि॥
भन्यों विधि लोक वनावन भार, करी हरिसों द्रुत जाय पुकार १२
लगैं अय गोलक मंडत लोप, उडै ध्वजदंड मयूरन ओप॥
थरत्थर भू जिम पोमिनि नीर, सरैं जिम ग्रीखम तप्त समीर॥१३॥
उडैं हय अंब्भ भ्रमैं गति चक्र, मनों इन्द्र पच्छन कट्टिय संक्र॥
रचैं बहु खेल मलग्गत रुंड, वनैं चँतुरी परि मुंडन मुंड॥१४॥
छिकैं गज मत्त चिकारिन मारि, दरी गिरि सन्निभ होत दरारि॥
उड्डैं वहु सूर गरूर अघाय, विना श्रम हूरन लुब्बत जाय॥१५॥
कढैं जित गोलक वेग विथार, वनैं तित आयत पंथ वजार॥

फ सवार उडते हैं, जिस का मार्ग पड़ता है सो मानो नगर का बजार पड़ता है, बारूद झलाझल करके १ आकाश में चढ़ता है सो गर्जना सुनकर २ गर्भिणियों के ३ गर्भ गिरते हैं॥१०॥ शेष के मस्तक के हजारे पर भूमि हिलती है और ४ वाराह की तुंडा पर मचका की मार लगती है, जिस प्रकार ५ पवन से ६ समुद्र में नाव नचै तिस प्रकार ७ भूमि के नचने का भाव हुआ॥११॥ समाधि छूटकर योगी मूर्ख होगये (ज्ञान शक्ति नहीं रही) चारों ओर ८ जागरण का राग यथा "चिंता के कारण निद्रा नहीं आवे उसका नाम प्रजागर है" ब्रह्मा ने ९ लोक बनाने का भार कहा और १० शीघ्र जाकर विष्णु से पुकार करी॥१२॥ ११ लोहे के गोले लगकर नाश करते हैं और मयूरों की शोभा से ध्वजा दंड उड़ते हैं, जैसे पानी में १२पद्मिनी (कुमुदिनी) धूजे तैसे भूमि धूजती है और ग्रीष्म में १३ चले ऐसा १४ गरम पवन चलता है॥१३॥ घोड़े उछलकर १५ आकाश में गोलाकार फिरते हैं सो मानों १६ इन्द्र ने इनकी पाखें काटडाली हैं "इन्द्र ने घोड़ों की पाखें काटीं सो कथा पुराणों में सविस्तर है" कंध कूद कर कई खेल करते हैं और मस्तक पर मस्तक पड़कर १७ चबूतरियें (चूँतरियें) बनती हैं॥१४॥ मस्त हाथी१८चीस मार मार कर छिदते हैं और१९पर्वत की गुफा के२०सदृश दरारें होती हैं, अपार घमंड वाले बहुत वीर उड़ते हैं और विना ही परिश्रम अप्सराओं के जा लुमते हैं॥१५॥२१गोले जिधर वेग फैलाकर निकलते हैं उधर ही२२चौड़े लंबे बजार बन-

गडैं भुव तोप चरक्खन *चक्क, लगैं कढि गोलक देत ललक्क ॥१६॥
जगैं कति पुंज पताकन ज्वाल, रुगैं जिम †मारुत होरिय भाल ॥
मच्यो वगरूर ‡उल्मुक मेह, गिरैं बहु §सौध ¶अट्टालक गेह॥१७।
ह्सैं नचि थेइन ×पन्नगहार, डरावत डाकिनि लेत डकार ॥
अनंतेहिं नागिनियाँ उचरंत, कहो किम सेस घमंकत कंत॥ १८ ॥
नही परिरंभन स्पृष्टक आदि८, नही उपगूहन और अनादि ॥
ललाटक आदिक चुंबन८ नाँहिं, नवीन बनैं रसना रन नाँहिं।१९।
॥ बननाँहि१रननाँहि२अन्त्यानुप्रासः१॥
नकक्खंहिं लै८नख अप्पत नाह,उठैं नहिं क्यों रति केलि उछाह
न गूढक आदि८ बनैं रदनोंद, सनैं किम नाथ घनी तिय मोद।२०।
न०हे परिरंभन आदिहि च्यारि४, नक्यों तब दुक्ख लहैं हम नारि
कही यह नागिनि सेसहि कत्थ,बच्यो तब नागँ प्रिया भरि बत्थ२१
इतैं भुव बुंदिपको अधिराज१, उतैं हठ जैपुर भूपति१ आज ॥
लरैं दुव२ सज्ज चमू रचि लाम, धुजैं इहिं कारन अप्पन धाम२२
सुन्यौं इमनागिनि संगर सोर, रही चुप रुक्किय मोहँन गोर ॥
कहैं रसना जिम दोय हजार२०००, परैं तिम नागिनिकों दुख प्यार

जाते हैं; तोपों के चरखों के*पहिये भूमि में गडते हैं और ललकार करते हुए गोले निकलते हैं ॥ १६ ॥ कितने ही ध्वजाओं के समूह जलते हैं सो मानों †पवन से होली की झाल जगती है, बगरू पुर में ‡ अंगीरों (निर्धूम अग्नि) की वर्षा हुई जिससे§बहुत महल ¶ छतें और घर गिरे ॥ १७ ॥ × शिव नाचते हैं १ शेषनाग से सर्पिणियाँ कहती हैं ॥ १८ ॥ २ आलिङ्गन ३ वात्स्यायन कृत काम सूत्र में स्पृष्टक आदि आठ प्रकार के आलिंगन लिखे हैं जिन का वर्णन अश्लील होने के कारण हमने छोडदिया है ४ चुंबन भी वहीं पर आठ प्रकार के लिखे हैं५कटिमेखला का पजना अथवा लहँग का नाड़ा खोलने का युद्ध ॥ १९ ॥६नखक्षत भी काम शास्त्र में आठ प्रकार का लिखा है सो हे पति काम में लेकर नखक्षत क्यों नहीं देते७ वहीं पर गूढक आदि आठ प्रकार के दन्त क्षत हैं८ हे पति आपकी बहुत स्त्रियें मोद कैसे मानैं ॥ २० ॥ ९ भुजों में भीडना ये परिरंभ भी काम सूत्र में चार प्रकार के लिखे हैं १०शेषनाग ने कहा ॥ २१ ॥ ११ पंक्ति रच कर ॥ २२ ॥ १२ मैथुन का भय (अन्यसंभोगिता का दुःख) मिटा अथवा मूर्छा का भय मिटा १३ प्यार के कारण ॥ २३ ॥

राहहिं *सूकरिका इत घुल्लि डिगे किम दंतुलि टारत डुल्लि ॥
कह्यो तब तुंड टिकैं नहिं कोल, बद्यो सुहि †कुम्म ‡दुली प्रति बोल॥
भये अधलोकहु यों §भर भीत, बनैं ब्रह्मंड मनों विपरीत ॥
अरे इम द्वैर दल खग्गन खेरि, लयो मरहट्ठन कूरम घेरि ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

दगत छई दुहुँ२ओर तोप पट ¶मदन वितानन ॥
आतपै हुव तपि ४अर्क चर्क हुव स्वेदित आननँ ॥
इहिं अतर आसारँ मुदिर उज्झलि अति मंडिय ॥
वहि सुख सीतल-वात खेद आतपँ भव खंडिय ॥
दुव२ घटिय होय दाता जलदं गाढ कृपनपन पुनि गहिय ॥
पहु राम तदिन बगरू पहुमि वाहि रुहिर सम्मलि बहिय॥२६

॥ दोहा ॥

मरहट्ठे रुकत मुंदिर, जुरे बहुरि जुज्झार ॥
इक ऊँचे थल पर चढे, माधव३ हड्ड२ मलार३ ॥ २७ ॥
तोप तहाँ सन त्रिगुन खट ६।१८, माधवकी चलवाय ॥
कूरमपतिके गज निकट, गोले लग्गिय जाय ॥ २८ ॥
गो इतनें रवि चरमगिरि, साँझ समय विधाय ॥
भीमनिसाँ आगम भयो, दिस दिस तिमिर दिखाय ॥ २९ ॥

*वराह की स्त्री †कमठने भी ‡उसकी स्त्री (कमठी) से यही वचन कहा ॥ २४ ॥ §भार से ॥ २५॥ ¶मोम के १पड़ा के तने हुए डेरों में १सूर्य तपकर २घाम (गरमी) हुई जिससे ४सेना के ५मुख पर पसीना होगया इसी बीच में मेघ ने उमड़ कर ६ बहुत मेघ धारा बरसाई जिस से शीतल पवन चलकर ७ताप से उत्पन्न हुए दुःख को मिटाया ८ उस मेघ ने दो घड़ी तक दातापन करके फिर कृपणता करी (बंध होगया) ९ हे प्रभु रामसिंह उस दिन बगरू की भूमि में पानी और १० रुधिर सामिल ही बहा ॥ २६ ॥ ११ मेघ के रुकते ही ॥ २७ ॥ १२ अठारह (छै को तीन से गुणा करने से १८ होते हैं) ॥ २७॥ २८ ॥ १३ सूर्य अस्ताचल पर गया १४ संध्या समय १५ करके १६ भयकर रात्रि का ॥ २९ ॥

फिर नकीब तब दुव२ दलन, अकिखय रोकहु जंग ॥
मन सूरन सो सुनि मुरे, आयासित लखि अंग ॥ ३० ॥
बुड्डि तिमिर२ करि सबन नहिं, लद्धो हेरन राह ॥
लरत हुते तत्थहि३ रहे, तजि तजि तुरंग४ सिपाह ॥ ३१ ॥
तीन३ तीन३ दिनको असन५, रकख्यो कतिन६ लगाय ॥
तिहिं करि भूखे तृप्त हुव, सूर१ सप्ति७२ समुदाय ॥ ३२ ॥
बग्गडोरि बाजीनकी, गहि गहि करन८ कराल ॥
सज्जहि रहि बैठे सबन, कट्टयो जामिनि काल९ ॥ ३३ ॥
माधवहू इक ग्राममैं, रहि कंर्पुक गृह रत्ति ॥
बदलि नाम तापैं बचे, बितई१० निंद विपत्ति ॥ ३४ ॥
कवच१सेझ११उपधान२कर१२, पहुमि३पृथुल१२ पल्लयंक३ ॥
सुत्तो तहँ जयसिंह सुव१३, असि४ कामिनि१४धारि अंक ॥३५॥
सोवन१ न्हावन१ असन१की, कहाँ केरिणिका तीन३ ॥
बुंदीसहु इक खेत बिच, खिनंदा१५ कीनी खीन१६ ॥ ३६ ॥
हुलकरके पहुँची हठन, इक्क१रावटी आनि ॥
बित्ती कठिन विभावरी१७, चटकन हुव चहकानि ॥ ३७ ॥
नित्य नियम मंड्यो नृपति, उट्ठि सबन सन अग्ग ॥
एते बिच पिक्ख्यो अडर, माधव आवत मग्ग ॥ ३८ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक गुन नभ धृति१८०३समय मित्र माधव खंडुव हुव ॥
बदली दोउन पग्घ धरि सु रक्खी डब्बन धुव१८ ॥

१परिश्रम सहित ॥ ३० ॥ २वर्षा के अंधेरे से ३तहां ही ४घोड़ों से उतर कर ॥ ३१ ॥ ५भोजन ६कितने ही लोगों ने ७घोड़ों के समूह ॥ ३२ ॥ ८हाथों में ९रात्रि का समय ॥ ३३ ॥ १०फरसे के घर में रात बिताई ॥ ३४ ॥ ११हाथ है सो ही तकिया हुआ १२भूमि ही बड़ा पलंग (सेझ) १३सुत १४खड्ग रूपी स्त्री को अंक में लेकर ॥ ३५ ॥ १५डेरा (तंबू) १६रात्रि बिताई ॥ ३६ ॥ १७रात्रि ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ १८निश्चय

इहिंदिन यह उष्णीस कुंम्भ आयउ धारन करि ॥
जपि नृप हिंतु जुहार इक्क तरु तर गय उत्तरि ॥
द्विज दयाराम पठयो नृपति पुच्छन कछु कछवाह पँहँ ॥
तिंहिं जाय लखिय जयसिंह सुव चव्वत दर्द्द मउठ्ठ तँहँ॥ ३९॥

॥ दोहा ॥

औसोहू आवत समय, घोर मचत घमसान ॥
भूपति हू निज मूखकोँ, देत मोठ बलिदान ॥ ४० ॥
इतहु इह्न नृप नित्य करि, वैश्वदेव करवाय ॥
जथालाभ लै अन्न अरु, सज्ज्यो कवच सुभाय ॥ ४१ ॥
इहिं अतर जेपुर अधिप, चढयो चमूजुत चंड ॥
अंभ्रमुपति पर इंद्र सम, वैठो सजि वेतंड ॥ ४२ ॥
इत उमेद१ माधव२ अरहि, हय चढि सम्मलि होय ॥
हुलकर ढिग आये हुलसि, दलहिं प्रचारत दोय२ ॥ ४३ ॥
नृप मलार हरवल्ल व्है, जयपुर सम्मुह जंग ॥
कुंत अमात अंसव्य कर, फेरत तरल तुरंग ॥ ४४ ॥
परे पलीते तोप परि, अतुल दगी अरराय ॥
बौसव कैधौं बज्ज लै, घल्लैं अद्रिन धाय ॥ ४५ ॥

॥षट्पात् ॥

तोपन लग्गत अग्गि व्याल रीढक बररक्किय ॥
दररक्किय किरि दढ्ढ कमठ खुप्परि कररक्किय ॥
पृतना बिचकरि पंथ कढत गोले सक सक करि ॥
मनहुँ संघ मँयूर धसत कानेंन केंकाधरि ॥

---

१ पगड़ी २ माधवसिंह उम्मेदसिंह ३ से जुहार करके ४ भुने हुए मोठ चाबता था ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ जैसा मिला तैसा ॥ ४१ ॥ ६ ऐरावत पर इन्द्र बैठे तैसे ७ हाथी पर बैठा ॥ ४२ ॥ ८शीघ्र ही ९ सेना को ॥४३॥ १०भाला ११दाहिने हाथ में ॥ ४४ ॥ १२मानों १३इन्द्र ने वज्र लेकर पर्वतों पर१४ चोट लगाई ॥ ४५ ॥१५शेषनाग की पीठ१६वराह की दाढ१७सेना में१८मयूरों का समूह १९ वन में २० केका नामक वाणी को धारण करके

सल्लार पिठ्ठि कोटा चमुप हो मोहनसिंहोत भट ॥
यह जोध नागदहपुर अधिप गोला लगि गय बिहित[1] वट ।४६।
अैसे कठिन अनेह[2] कहिय माधव मलार कँहँ ॥
हम किहिंठोर रहैं सु त्वरित सुनि दिय उत्तर तँहँ ॥
देखहु वह कुंदीस वीर किहिं ठोर बिहारत ॥
ललितं[3] सेफ्फ नहिं लाल इहाँ निकसत अँसु आरत ॥
मेरेहि कहँ रहनों जु मत आनि रहहु तो मम उंदर ॥
सुनि यह सिटाय माधव सलज हुव प्रदोष पंकज कँदर ॥४७।

॥ दोहा ॥

इत तंते गंगाधर सु, दूजीर आनिय बनाय ॥
पैलीघाँ सन उडि परिय, जैपुर दल बिच जाय ॥ ४८ ।

॥ षट्पात् ॥

गंगाधर हय गरक्क करे कूरम दल अंतर ॥
रिठ्ठिनं बज्जिग रिठ्ठ भीमं गज्जिग रज्जिंग भर ॥
फट्टत टोप चोपफार कट्टत करिकी तरबूजन ॥
खरं[12] खुरतारन खुदत धरनि धारनं लगि धूजन ॥
भयकार मुंड मुंडन भिरत रुंड फिरत्त वन वँन्हि रुख ॥
भ्रामरी[15] दसा भीरुन भई सिद्धा सूरन समर सुख ॥ ४९ ॥
तंतेकी तरवारि बिखम जैपुर दल बग्गी ॥

---

१ उचित मार्ग (स्वर्ग) को गया ॥ ४६ ॥ २ समय में ३ सुंदर ४ पीड़ित होकर मा: निकलते हैं ५ मेरे पेट में ७ सन्ध्या समय के जुलम से ८ कमल होवैं ते: ॥ ४७ ॥ ८ परली तरफ से ॥ ४८ ॥ ९ निरन्तर प्रहारों पर प्रहार १० भयंक गर्जना करके धीर ११ शोभायमान वा रजो गुण युक्त हुए १२ तीखी खुरता से खुद कर १३ घोड़ों की दौड़ से भूमि धूजनेलगी १४ बन में अग्नि फिरे ति प्रकार रुंड फिरते हैं १५ ज्योतिष में भ्रामरी दशा दुखदाई मनीजाती है र कायरों की हुई और १६ सिद्धा दशा सुखदाई मानते हैं सो युद्ध में वीरों व

तडिते जानि अति तेज मुदिर१ भद्दव२ झगमग्गी ॥
घेरयो रचि घमसान तुमुल दुव २ पहर कहर३ तप ॥
नैंक डिगन नन दियउ ईश्वरीसिंह अनेकप४ ॥
कूरमन तबहि यह छल करिय दल नकीब मुकलि द्रुतहि५ ॥
झडे रुपाय दीरघ दये करहु मुकाम मुकाम कहि ॥ ५० ॥

तहि१ कहि२ अन्त्यानुप्रास ॥

॥ दोहा ॥

यह लखि हुलकर कटक भव, जानी कुम्भ न जाय ॥
सउचादिक वपु कर्म६ सब, भट सु निबेरहु भाँय७ ॥ ५१ ॥
तब तनाय इक१ रावटी, तजि कटिबंध मलार८ ॥
नित्य नियम वपु कर्म निज, बिरचन लगि तिहिं बार ॥५२॥
पौरानिक९ द्विज बुल्लि पुनि, इन्द्रदत्त अभिधान१० ॥
व्यासासन बैठारि तिहिं, सुनत भागवत गान ॥ ५३ ॥
अपर भटन११ उतरन समय, अक्खिय दूतन आय ॥
उतरयो नहिं कूरम अधिप, जानैं हम भजिजाय ॥ ५४ ॥
हुलकर तब सुभटन कहिय, उतरहु कोउ न अज्ज ॥
कूरम हम जान्यौं कितव१२, लेस न धुल्लत लज्ज ॥ ५५ ॥
ततेकों१३ मुकलि तबहि, रोक्यो जैपुर राह ॥
इतनैं दुदुभि बज्जि अरु, कढि चल्लिय कछवाह ॥ ५६ ॥
सुनत एह हुलकर सु पहु, द्रुतहि उघारे देह ॥
तुरग चढयो पटगेह१४ तजि, मंडत आयुध मेह ॥ ५७ ॥

सुखदाता हुई ॥ ४९ ॥ १ बिजुली २ भादवा के मेघ में ३ जुलम वा क्रोध से तप कर के ४ ईश्वरीसिंह की सवारी के हाथी को ५ शीघ्र ॥ ५० ॥ ६ शरीर के कार्य ७ रीति पूर्वक ॥ ५१ ॥ ८ कमरबंधा खोलकर ॥ ५२ ॥ ९ पुराण बांचने वाले इन्द्रदत्त १० नाम के ब्राह्मण को बुलाकर ॥ ५३ ॥ ११ अन्य वीरों के ॥ ५४ ॥ १२ छली ॥ ५५ ॥ १३ शीघ्र ॥ ५६ ॥ १४ डेरा छोडकर ॥ ५७ ॥

॥ नराच: ॥

चढ्यो मलार लै तुखार नोहजार९००० नच्चते ॥
धंपे प्रवीर तानि तीर जंग धीर जच्चते ॥
बजे निसान स्वान जे दिसा दिसान वित्थरे ॥
चमंकि पारि चिक्करी डिगे रु दिक्करी डरे ॥ ५८ ॥
हजार पंच५००० सेन देस क्लेस काज मुक्कली ॥
रुमापुरी समीपलौं गये ति लूटते बली ॥
हजार अंक ९००० हे लियें मलार उप्परयो इतैं ॥
जितैं जितैं चलात खात खग्गतैं तितैं तितैं ॥ ५६ ॥
बुलैं नकीब इक्कसै१०० हुलैं हराल हक्कदै ॥
तुलैं तुरंग तक्खरे धरा धुजात धक्कदै ॥
उमेद१ माधवेस२हू सजे दुरूह सत्थव्है ॥
करिध्वजाभ कुंम्मपैं पिले प्रचारि पत्थव्है ॥ ६० ॥
करीनके कलाप के कलाप केतुके खुले ॥
चले समग्ग खूब खग्ग सेन अग्ग संकुले ॥
खिचैं कमान बीच बान दंढितुंड दंतव्है ॥

नौ हजार नाचते हुए घोड़े लेकर मल्लार चढ़ा और धैर्य के साथ युद्ध में जचे (ठहरे) हुए वीर दौड़े वहां नगारों के २शब्द बजकर दिशा दिशाओं में फैलगये जिससे ३ दिग्गज डरकर चीख मार अपने स्थान से हट गये ॥ ५८ ॥ पांच हजार सेना ढुंढाहड़ देश में क्लेश फैलाने को भेजी गई जिसके वीर लूटते हुए ४ सांभर पुर तक पहुंच गये और इधर मल्लार भी नौ हजार ५घोड़े लेकर उठा सो जिधर जिधर वह गया उधर उधर तरवार से शत्रुओं को भक्षण ही करता गया ॥ ५६ ॥ ललकार के साथ६अगली सेना को बढ़ाते हुए सौ नकीब बोले और ७ ताते (चपल) घोड़ों को उठाकर भूमि को धक्के देकर धुजाने लगे जहां उम्मेदसिंह और माधवसिंह भी ८ कठिनाई से तर्कना में आवे इस प्रकार सज कर मल्लार की साथ हुए सो मानों १० ईश्वरीसिंह रूपी ६ कर्ण पर ११ अर्जुन के समान ललकारते हुए बढ़े ॥ ६० ॥ १२ कितने ही हाथियों के समूह पर १३ ध्वजाओं के समूह खुले १४ सभी खड्ग खूब चले और सेना के अग्रभाग में भरगये जहां १५ यमराज के मुख के दंत होकर कमानों के

करैं कटार केक पार *देवदार कत्तऽहैं ॥ ६१ ॥
झरैं तुरंग फेट भंग पच५ रंग झड़के ॥
खिरैं †खलीन खग्ग खीन दुंदुभीन खंडके ॥
कटैं कपाल भिन्न भाल अखि लाल उच्छटैं ॥
वटैं बिसाल ग्रीव गाल जत्रु जाल त्यों फटैं ॥ ६२ ॥
कुकैं हुकैं फुकैं कलेज कुम्भ के रुकैं लुकैं ॥
सुकैं करीन दान तान गान अच्छरी चुकैं ॥
छिकैं चिकैं किरीट केक ओट घोटकी टिकैं ॥
थकैं जकैं हकैं कितेक बाढ वन्हिकैं सिकैं ॥ ६३ ॥
जगैं प्रकोप अर्क ओप केक तोप त्यों दगैं ॥
झगैं बिसाल सोर झाल दीपमालसी लगैं ॥
जचैं सु मल्ल जंग के तुरग तापमैं तँचैं ॥
रचैं बकारि रारि के हकारि डाकिनी नचैं ॥ ६४ ॥
गजैं गरूर पूर सूर कूर नूर के तजैं ॥

बीच में बाण खिंचते हैं और कितने ही बीर * अप्सराओं के पति होकर कटार पार करते हैं ॥ ६१ ॥ जयपुर के कई पचरंगे उड़े घोड़ों की फेट से टूट कर गिरते हैं और खड्गों से कटकर कई † लगामों और कई नगारों के टुकड़े गिरते हैं, कपाल कटते और ललाट से भिन्न होकर लाल नेत्र उछलते हैं और लंबी गर्दनों के टुकड़े होते हैं और इसी प्रकार गाल और १ हंसुली की हड्डियें कटती हैं ॥ ६२ ॥ २ कई कछवाहे कूकते कई हूकते कई कलेजों को फूंकते और कई छुपते हैं इस जगह ३ हाथियों के दान सूख कर अप्सरायें गाने में तान चूकती हैं कई मुकुट छिद कर मस्तक से डिगते हैं और ४ घोड़ों की आड़ में टिकते हैं कितने ही थककर गिरते हैं और कई आगे बढ़कर ५ तरवार की धार रूपी अग्नि में सिकते हैं ॥ ६३ ॥ ६ सूर्य की उपमा के समान बीर लोग कोप में जलते हैं त्योंही तोपें चलती हैं तहां बारूद की बड़ी ज्वाला प्रज्वलित होती है सो दीपमाला के समान दीखती है कई मल्ल युद्ध की याचना करते हैं सो घोड़ों की ताप में ७ जलते हैं अर्थात् पैदल होकर मल्ल युद्ध करते समय घोड़ो की टाप से मारे जाते हैं अथवा ताप में घोड़े जलते हैं कई बीर ललकार कर युद्ध करते हैं और डाकिनियां हकार लेकर नाचती

सजैं रजैं भजैं न नीरके अनीरके भजैं ॥
तनैं प्रहार लुत्थि लार मार मार के मनैं ॥
घनैं घुमाय घोर घाय बायमत्तसे बनैं ॥ ६५ ॥
थपैं प्रयान प्रान केक ज्ञान कानपैं जपैं ॥
बिसार ज्यौं अपार बेग धार सम्मुहैं धपैं ॥
छवैं छलंगि छोनि हैं दुसार संगि गैं दवैं ॥
फवैं अगोट चंड चोट ढाल ओट के ढवैं ॥ ६६ ॥
सनंकि चौंकि चिल्हनी भनंकि गिद्धनी भ्रमैं ॥
खमैं घटाग खाग भोगिभाग नागके नमैं ॥
करैं अनेक दाव केक पाव अग्गही परैं ॥
झरैं प्रसून भूरि भीर बीर अच्छरी बरैं ॥ ६७ ॥
मिलैं अभीत जंपि जीत पीलु बीतें दे पिलैं ॥
खिलैं सपान खेचरी भयान भूचरी भिलैं ॥

हैं ॥ ६४ ॥ कई वीर पूर्ण घमंड से गर्जना करते हैं तहां कायर लोग दूर छोडते हैं कई वीर सजेहुए १ शोभित होते हैं और २ पराक्रम वाले नहीं भगते किंतु पराक्रम हीन भगते हैं प्रहारों को ३ फैलाकर लोथों के साथ कई मुंड मार मार करते हैं [यहां लोथ के साथ मुंड का ऊपर से अध्याहार होना है] बहुतेरे घोर घावों से घूमकर ४ बायटे (बादी में आनेवाले, पवन लगकर शीत में आनेवाले) के समान धकते हैं ॥ ६५ ॥ कितने ही प्राणों का प्रयाण होते समय उनके ५ कानों में गीता शास्त्रोक्त ज्ञान सुनाते हैं इसी प्रकार तरवारों के अपार वेग को भूलकर उन (तरवारों की ६ धाराओं के सन्मुख ७ दौड़ते हैं. ८ घोड़े मलंग लगाकर भूमि को छाते हैं और बर्छियों से दोनों बाजू फूट कर ९ हाथी दपते हैं. आगे की भयंकर चोट से शोभित होकर कई ढालों की आड से ठहरते हैं ॥ ६६ ॥ चीलहें चौंक कर उडती हैं और गिद्धनियें पंखों को बजा कर भ्रमती हैं. घटा की अग्नि (बिजुली) रूपी तरवारें १० चमकती हैं और शेषनाग के ११ फणों का भाग झुकता है. कई वीर अनेक दाव करते हैं और उनके पैर आगे ही पड़ते हैं १२ फूलों की बहुत भीड़ (बहुत फूल) बरसती है और अप्सराएं वीरों को बरती हैं॥६७॥कई वीर विजय होना कहकर निर्भय होकर मिलते हैं तहां १३हाथियों को १४ हूलकर

स्वसैं नसैं अनेक सूर केक हुल्लसैं हसैं ॥
घिसैं कितेक नाक केक नाक जायकैं बसैं ॥ ६८ ॥
थरत्थरी थिराहु पिक्खि तेगकी तरत्तरी ॥
बरब्बरी लगै न जास फग्गकी चरच्चरी ॥
छुगच्छुगी छछक्क डह्ड कोलकी डगड्डगी ॥
झगज्झगी दवग्गि दग्गि नाकलौं टगट्टगी ॥ ६९ ॥
खरीखरी अघाय खाय के परे करी करी ॥
घरीघरी घुमाय जाय डाकिनी डरीडरी ॥
लजेलजे लुकैं लुमाय भीरु के भजे भजे ॥
सजेसजे सिपाह लेत मारदे मजे मजे ॥ ७० ॥
बटेबटे पिसाच बुक्क फिप्फरे फटे फटे ॥
कटेकटे गहैं कलेज नाँ गहैं नटेनटे ॥
सचीसची भिरैं सम्हारि बाहिनी बचीबची ॥
नचीनची फिरैं निहारि जुग्गिनी जचीजची ॥ ७१ ॥

बहाते हैं सोते हुओं पर खेपरिया (देवी की मांस खानेवाली दासियां) प्रसन्न होती हैं और भूचारिया (देवी की दासियां विशेष) भयानक होकर मिलती हैं अनेक शूर सिमकते और मरते हैं और कई प्रसन्न होकर हसते हैं कितने ही भूमि पर नासिका को घिसते और कितने ही १ स्वर्ग में जाकर बसते हैं ॥ ६८ ॥ तरवारों की तड़ातड़ को देखकर २भूमि धूजने लगी जिस (तड़ातड़ की बराबर फाग की ३ डहेहर (गेहर) भी नहीं लगती रुधिर की पिचकारियां छिड़कने लगीं और४वराह की दाढ़ हिलने लगी ५दावाग्नि लग कर झगझगाहट करने लगी जिसको देखने को ६स्वर्ग पर्यंत ७टगटगी लगगई अर्थात् अनिमेष होकर देखने लगे ॥ ६९ ॥ योगिनियें खरी खरी गिरे हुए ९ बहुत हाथियों को खाकर ८ तृप्त होने लगीं घड़ी घड़ी में घूमकर मारे जाने के भय से डाकिनियें डरी डरी जाने लगीं कितने ही कायर जीने के लोभी होकर भगने लगे और कई लज्जित होकर छुपने लगे सजेहुए सिपाही मार देकर मजा लेने लगे ॥ ७० ॥ फटेहुए फेफरों और१०चूकों (गुरदों) को पिशाच चाटने लगे और कटेहुए (वीरों के) कलेजों को लेने लगे किंतु देने में इनकार करनेवालों (कायरों) के कलेजे नहीं लेते १२ बची हुई सेना ११ इकठी होकर

धकेधके लरात लोह छोहमैं छकेछके ॥
थकेथके गिरैं कुथाल ढालतैं ढकेढके ॥
कढे कढे किरंत क्लोमि बक्त्र के बढेबढे ॥
गढेगढे गडंत गिद्ध लुत्थिपैं चढेचढे ॥ ७२ ॥
मिचीमिची अनेक अंखि सोनमैं सिचीसिची ॥
भिचीभिची भुजा भ्रमंत अंतरी इचीइची ॥
कुपेकुपे जुरैं कितेक रंगमैं रुपेरुपे ॥
लुपेलुपे लखात पाप धारतैं धुपेधुपे ॥ ७३ ॥
अनीअनी अरैं घटा कि घुम्मरी घनीघनी ॥
जनीजनी लुभात आत अच्छरी बनी बनी ॥
भईभई भनैं बिभिन्न के करैं दईदई ॥
नईनई रचंत रारि जोध जे जईजई ॥ ७४ ॥
मुरेमुरे मरैं कुमोति देखिवे दुरेदुरे ॥
धुरेधुरे बजंत बंब ढोलके ढुरेढुरे ॥
हिलेमिले बढैं कितेक खीजमैं खिलेखिले ॥
झिलेझिले झुकैं अनेक संगितैं सिलेसिले ॥ ७५ ॥

सम्हल कर भिड़ने लगी तहां याचना करती हुई योगिनियां नाचती हुई फि
ने लगीं॥७१॥ १क्रोध में उफनेहुए वीर बढ बढ कर शस्त्र लड़ाने लगे और थ
हुए वीर ढालों से ढकेहुए २ बुरी तरह से गिरने लगे निकसी हुई ३तिल्लिय
और कटेहुए४मुख विखरने लगे और लोथों पर चढेहुए गिद्ध गाढे गडने लगे॥७२
मिचेहुए अनेक नेत्र५रुधिर में सिचने लगे भिची हुई भुजाओं में भ्रमती हुई६आं
७खिचने लगीं कई वीर युद्ध में रुपकर कोप करके जुड़नेलगे तहां तरवारों व
धाराओं से धुप कर पाप लुपेहुए दीखनेलगे ॥ ७३ ॥ सेना की अणी से अण
(अग्रभाग) अड़ती है सो मानों ८ घुमडी हुई घटाएं जोर से भिड़ती हैं अने
क अप्सरा९दुलहिन बन बन कर आती है सो विवाह की वार्ता होचुकी ऐस
कहती है और १० कई कटे हुए दैव दैव पुकारते हैं विजय पानेवाले वी
नया नया युद्ध रचते हैं ॥ ७४ ॥ पीछे मुड़नेवाले कई ११ छुप छुप क
देखने के लिये बुरी तरह से मरते हैं १२ लुढकतेहुए ढोल और नगारे बुरे बु
बजते हैं, कितने ही क्रोध में१३फूले हुए वीर हिल मिल कर बढते हैं और १
बर्छियों से बिधे हुए कई वीर ठहरते ठहरते झुकते हैं ॥ ७५ ॥ मल्हार रूप

त्रसेत्रसे फिरें मलार राहुके ग्रसेग्रसे ॥
लसेलसे लखें तमास धुज्जटी हसेहसे ॥
कढेकढे जुरें कितेक चंडिका चढेचढे ॥
बढेबढे फिरें वपा सु गिद्धनी गढेगढे ॥ ७६ ॥
झटक्कि इक्क इक्कको पटक्कि वज्रलों परें ॥
खटक्कि खग्ग खुप्परी अटक्कि पग्ग उत्तरें ॥
दरक्कि छत्ति देखि यों भरक्कि जैपुरे भजें ॥
करक्कि संधि कंकटी तरक्कि धार के बजें ॥ ७७ ॥
लचक्कि सेस संकुली मचक्कि भुम्मि विक्खरें ॥
मचक्कि पिट्ठि कामठी गचक्कि पंकमें गिरें ॥
सिलग्गि सोरकी सिखा फुलिंगे फैलते वमें ॥
मनोज्ञ मुंड मालिका रचें रु कालिका रमें ॥ ७८ ॥
खिरंत दंत कंत के करत हंत दिग्गजी ॥
गिरंत शृंग मेरु की भरत स्वास भाभजी ॥
कुपीर्ट खीन के धुनीन कोपके कृसानुव्है ॥

राहु के ग्रसेहुए कई पुरुष १डरेहुए फिरते हैं २ उल्लास युक्त होकर ३ शिव हसते हुए तमाशा देखते हैं चंडी के चाहे हुए ऊपर कढ़ेहुए कई वीर जुड़ते हैं गिद्धनियों से गढ़ीहुई ४ मज्जा बढ़ी बढ़ी फिरती है ॥ ७६ ॥ एक दूसरे को झटका देकर वज्र के समान पटते हैं खोपरी पर ५तरवार खटक कर उसके अटकने से ६ पगड़ी उतरती है इस प्रकार देखने से छाती फटकर जैपुरवाले चमक कर भगते हैं ७ कवच की संधि कटक कर तरवार की धारा के बजने से टूटती है ॥ ७७ ॥ शेषनाग के पीठ की ८ हड्डी लचक कर मचक लगने से भूमि बिखरती है ९ कमठ की पीठ चमक कर १० कीचड़ में गिरती है बारूद की ज्वाला सिलग कर फैलते हुए ११ अग्नि कणों को १२ उगलती है १३ शिव के अर्थ सुंदर मुंडमाला रचकर काली क्रीड़ा करती है ॥ ७८ ॥ १४ पतियों के दंत खिरने से १६ दिशाओं की हथनियां १५ खेद करती हैं श्वास भर कर गिरते हुए वीरों ने मेरु पर्वत के शिखरों के गिरने की१७कांति धारण की अथवा सुमेरु के शिखर गिरने से उस सुमेरु की सभा (देवसभा) भगी उस युद्ध में लगी हुई २० अग्नि के कोप से कई १९ नदियां १८पानी से क्षीण

दुरयो बितान धुंधि भानु दीह सीतभानुं है ॥ ७९ ॥
रजोमई तमोमई भटालि भीर भू भई ॥
बिमान जाल देवतान ताल रीझिकैं दई ॥
धसैं छुरी दुसार बीर पार नीर धारसी ॥
स्त्रसैं उतंग के परे मतंग भुल्लि सारसी ॥ ८० ॥
समुद्र सत्त७ लै हिलोर ओरओर उप्फनैं ॥
भनैं सिराह चंद्रभाल काल कल्पको बनैं ॥
अनंत माँहिं अंत लै उडंत चिल्ह चंग हैं ॥
हनंत हत्थ अंग के भनंत मत्थ भंग हैं ॥ ८१ ॥
बितंड[11] बाटिकान[12] दंत[13] हस्तिदंत उप्परैं ॥
किरे सु कुंभ[14] कोहलै पैलांडु[15] घंट निक्करैं ॥
कटंत सुंडि कक्करी[16] प्रवृत्ति पाँथ पीनके ॥
किलासनास ईषिका रु आलु अंखि कीनके ॥

होगई. धुंधि, के १ फैलने से सूर्य छुपकर दिन के २ चंद्रमा के समान होगया ॥ ७९ ॥ ३ वीरों की पंक्ति की भीड़ से भूमि पर धूल और अंधेरा छागया. विमानों के ४ समूहों में से देवताओं ने प्रसन्न होकर ताली बजाई वीरों की छुरियां जल की धारा के समान दोनों तरफ पार होजाते हैं कितने ही पड़े हुए ऊंचे ५(*) हाथी ६ प्रसन्नता की(†)बोली भूलकर सिसकते हैं ॥ ८० ॥ सातों समुद्र हिलोरे लेकर चारों दिशाओं में उफनते हैं ७ शिव प्रशंसा करते हैं और ८ प्रलय का समय बनता है ९ आकाश में आंतें लेकर चीलहें १० पतंग (गुढी) होकर उडती हैं. हाथ अंगों को काटते हैं अथवा कितने ही कायर छाती कूटते हैं और कई मस्तक कटहुए भी बोलते हैं॥ ८१ ॥ ११ हाथियों रूपी १२ बगीचों में हाथियों के दन्त उखड़ते हैं सोही १३ मूले होकर उखडते हैं १४ कुंभस्थल गिरते हैं सोही कूष्मांड (कोळे) हैं १५ घंटा हैं सो ही कांदे हैं, सुंडें कटती हैं सोही १७ पानी की पिलाई हुई पुष्ट १६ काकडियों हैं १८ कंकोड़ों

(*) लीलावती में गणेश को मतंगानन लिखा है और शारदी नाममाला में हाथी का नाम मतंग लिखा है यथा—'मतङ्ग. कुंजर' करी'॥

(†) डिंगल भाषा में हाथी की प्रसन्नता की बोली का नाम सारसी है और मतांतर से सुंड के इधर उधर पलेटा लगाने को भी सारसी कहते हैं.

कटिल्ले कर्णिकावली भटा इंदावली भये ॥
अंरिष्ठके अपष्ठ वृंद ल्लोमें कद उन्नये ॥
बनैं भरी पलास कान अंदु नागबल्लरी ॥
कलेज पीलुपर्णिका कसेर तोरई करी ॥ ८३ ॥
बनात यौं अनेक मेत साक व्यंजनावली ॥
कृपान या प्रकार मारकी मलारकी चली ॥
कहैं कितेक हाय माय गाय काय के गहैं ॥
लहैं कैंषाय लाय के घुमाय घाय के सहैं ॥ ८४ ॥
चहैं वे आय जैपुरेस गेपुरेसैं साँकरैं ॥
मलार भीमसेनकी गलार गाजि को लरैं ॥
इतैं मैंबुद्ध रामभूप क्रुद्ध जुद्ध यौं मच्यो ॥
सुनौं समस्त प्रीति कैं उतैं जु रीतिकैं रच्यो ॥ ८५ ॥

(फलविशेष) के समान हाथियों के नेत्रों के गोलों का नाश होता है और आंख की पुतलियां ही आलू हैं ॥ ८२ ॥ १ मुंड के अग्र भागों की पंक्ति ही करेलों की पंक्ति है २ हृदयों की पंक्ति है सोही बैंगन हैं ३ लहसुन के समान ४ अंकुश का अग्रभाग है ५ तिल्ली ही जमीकन्द है ६ हाथियों के कान ही अरुइ (अरवी) के पत्ते हैं ७ अजीरें ही नागरबेलें हैं ८ कलेजे ही पीलुपर्णी (घास की बेल) हैं और हाथी की पीठ की लंबी हड्डी (रीढ या बांस का हाड) ही तोरही (तुरइ, तोरमी या तोरों) है ॥ ८३ ॥ इस प्रकार कई प्रेत ९ भोजन के पदार्थों की पंक्तियां बनाते हैं मल्लार का १० खड्ग इस प्रकार की मार के साथ चला तहां कितने ही 'हायमाता' और कितने ही 'मैं तेरी गऊ हूं' ऐसा कहते हैं और कई वीर शरीरों को पकड़ते हैं और कई वीर अग्नि के ११ कडुएपन को सहते हैं और कितने ही घाव सहते हैं ॥ ८४ ॥ ११ हस्तिनापुर के पति (दुर्योधन) रूपी जयपुर के पति को १२ भय सकड़ाई में लिया तब वहां भीमसेन रूपी मल्लार की गर्जना को दबाकर कौन लड़े अर्थात् कोई नहीं लड़ सका १४ हे बुद्धिमान् राजा रामसिंह इधर तो क्रुद्ध होकर इस प्रकार का युद्ध मचा और उधर (दूसरी ओर) जिस प्रकार युद्ध मचा सो प्रीति पूर्वक सुना (इन छंदों में प्राय' 'खरीखरी गरीगरी, धके धके, थके थके' आदि एकार्थ वाची दो दो शब्द आये हैं सो अपने अपने विषय की अधिकता बताने के लिये वीप्सा के अर्थ में हैं) ॥ ८५ ॥

॥ षट्पात् ॥

उत जैपुर मग रुक्कि त्वरित तंते गंगाधर ॥
उद्धत बग्गन ऐंचि हंकि सम्मुह दिय *हैवर ॥
†मंडलग्ग झारि मार लुत्थि पर लुत्थि बिलग्गिय ॥
मित्र मित्र मनु मिलिय बहुत सहि सहि ‡बिरहग्गिय ॥
तरवारि लरक्कि बज्जत §तुमुल भरक्कि मुंड भेजा कढत ॥
भीरुन अनार कन जिम ¶उदक उतरि उतरि बीरन चढत ॥८६॥
पुनि पुनि कंपत पहुमि[३] बाढ पुनि पुनि रन बज्जत ॥
पुनि पुनि छुट्टत प्रान गिरत पुनि पुनि भट गज्जत ॥
पुनि पुनि भिरत पटैत किरत पुनि पुनि झारि कंकट ॥
निज जय पुनि पुनि भनत बनत पुनि पुनि बट उब्बट[२] ॥
पुनि पुनि कपाल फुट्टत पिहुल[३] भरं[४] आलुक[५] पुनि पुनि भयउ ॥
आमैरनृपति अंधक[६] उपम गंगाधर[७] गंजन गयउ ॥ ८७ ॥
सीकरपति सिवसिंह तमकि[८] आयउ हरोल तब ॥
मध्य जट्ट रविमल्ल[९] ओट चंदोल कुंम्म[१०] अब ॥
सेखाउत सिर प्रथम धार झारिय गंगाधर ॥
अतुल तुमुल उल्लासिय हसिय[११] नारद हर हरहरं ॥
फुल्लिंग[१२] कुपित आंखिन फुरत जुरत मत्त दुवर सिंह जिम ॥
असि झारि रचिय सेखाउतहु पुरुखारथ पारथ प्रतिम[१३] ॥८८॥

॥ दोहा ॥

---

* घोड़े † मण्डलाग्र (खड्ग) ‡ विरहाग्नि § भयंकर ¶ दाड़िम के कणों के समान कायरों का पानी उतर कर वीरों को चढता है ॥ ८६ ॥ १कवच गिरते हैं २मार्ग और बिना मार्ग ३ बहुत कपाल ४ भार ५सर्प (शेष) को ६ अंधक राक्षस रूपी आमेर के राजा ईश्वरीसिंह को मारने के लिये ७ शिव रूपी तात्या गंगाधर गया ॥ ८७ ॥ ८क्रोध करके ९ सूर्यमल्ल जाट बीच में होकर १० ईश्वरीसिंह इन की आड में चंदोल में (पीछे) हुआ ११ अट्टाट्टहास्य करके १२ अग्निकण १३ अर्जुन के सदृश ॥ ८८ ॥

लग्गी सीकर नाहकौं, तीन३ कठिन तरवारि ॥
सुभर गिरे घायल त्रिसय३००, मरे सट्ठि६० बहु मारि॥८९॥
न लखिसक्यो घन अंतरित, अक्कहु पहुँच्यो अस्त ॥
तब मुरि मुरि भट उत्तरे, सिविरन निजन समस्त ॥ ९० ॥
कमलपत्र लगि सकुचन, धूकन मंडिय घोर ॥
सायकृत्य बिधान सब, रचन लगे दुहुँ ओर ॥ ९१ ॥
हुलकर१ माधव२ हड्ड३हू, करि कालोचित कर्म ॥
उट्ठि बहुरि बोलै अंसन, मिले कहन रन मर्म ॥ ९२ ॥
कति मरहट्ठ प्रसारकों, विचरे पुब्बहि वीर ॥
मग जैपुर तिन कौं मिली, आवत रसति अधीर ॥ ९३ ॥
ताकी संग जु हे तिनहिं, आनें गहि दल अंत ॥
हुलकर सन अक्ख्यो हुलसि, आपन रसति उदंत ॥ ९४ ॥
जब हुल[illegible] जे रसति जन, आनें अंननि उतारि ॥
श्रवन१ नक्क२ तिनके सरिसें, बट्ठि रु दिन्न बिडारि ॥ ९५ ॥
करन बध मग रसति क्रम, इत मलार किय एह ॥
पंच सहँस५००० दल उत पिल्यो, खुरनें अिंथारत खेह ॥९६॥
सभरपुर लग तिहिं सजव, ढुंढाहर लिय लुट्टि ॥
इम जैपुर जनपद असह, फोजन हैंरव फुट्टि ॥ ९७ ॥
इत वगरू निसैं आगमन, हुलकर पैंर छल हेरि ॥
कूँरम नहिं कढिजानकौं, दियउ छर्गीना फेरि ॥ ९८ ॥

॥ ८९ ॥ १ मेघ से छायाहुआ २ सूर्य भी उस युद्ध को नहीं देख सका और अस्ताचल को पहुंचा ३ डेरों में ४ अपने सब लोगों सहित ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ५ समय के उचित कार्य ६ भोजन ॥ ९२ ॥ ७ तृण काष्ठ (घास लकड़ी) आदि लाने को ८ पहिले ही गये थे ॥ ९३ ॥ ९ वृत्तान्त ॥९४॥ १० रसद लानेवाले लोकों को गाड़ियों से उतार कर लाये ११ क्रोध सहित कान और नाक काट कर निकाल दिये ॥९५॥ सेना १२ भेजी ॥९६॥ १३ देश में १४ हाहाकार शब्द ॥ ९७ ॥ १५ रात्रि के आने पर १६ शत्रु का छल देख कर १७ ईश्वरीसिंह नहीं भागजावै इस कारण ॥ ९८ ॥

जामिक जन जागत रहे, सेन इतर रहि सोय ।
इहिँ अंतर अँभून उफनि, तूटन लग्गे तोय ॥ ९९ ॥
पार्नी बुट्ठल उँदयपुर, आनि चमक्किय अँक्क ॥
कालोदित उठि कृत्य करि, चढे बहुरि हुव चक्क ॥१००॥

॥ षट्पात् ॥

हुलकर इत हय चढिय व्यूढ कंकट करि निज बल ॥
उत जैपुर अधिराज चढिग गजराज चलाचल ॥
ए उत्तर मुख अडर वे सु दक्खिन मुख ओपत ॥
खुंदि धरनि खर खुरन उरन आयुध आरोपत ॥
झरि बाढ बाढ दव गाढ झगि छिति उँल्मुक लगि उच्छलन
गांडिव बजाए डारिय गजब जँनु पांडव खांडव ज्वलन।१०१

॥ दोहा ॥

तंलेकौं करि मुख्य तँहँ, समर ...ईस ॥ १०२ ॥
इक्क अनी चंदोलँ पर, ...रिव कछवाह ॥
जैपुरपति चंदोल गँरजि, मच्चिस्यो प्रँचुर सिपाह ॥१०३॥

॥ षट्पात् ॥

गंगाधर धसि गघड काटि चंदोल नरूकन ॥
किन्नँ टूकन टूक कुंत असि सर बंदूकन ।
कतिक बचे भजि कढिय उँदधि कूरम दल अंतर ॥
सकर अग्ग जिम मीनँ त्रासित तिम लखत दिगंतर ॥

१ पहरायत २ अन्य ३ मेघ बड़ कर ४ जल गिरने लगा ॥ ९९ ॥ ५ उदयाचल पर ६ अर्क (सूर्य) ७ उदय समय के कार्य ८ चक्र (सेना ॥ १०० ॥ ९ व्यूह रचना करके १० कवच युक्त की ११ चलते हुए पर्वत के समान हाथी पर १२ अंगारे (निर्धूम अग्नि) १३ मानों अर्जुन ने खांडव वन में १४ अग्नि डाली ॥ १०१ ॥ १५ पीछे की सेना पर ॥ १०२ ॥ १६ नरूका १७ बहुत सिपाहों से ॥ १०३ ॥ १८ कछवाहे के समुद्र रूपी सेना में मगर (घड़ियाल) से १९ मच्छी डर कर जावै तैसे.

कूरम हरोल केतनें द्विरद जिहिं अग्गें कटिगय सजवें ॥
तते तुरग तते तमकि भयो अरिन बिच मलय भर्व॥१०४॥

॥ दोहा ॥

सेना अंतर व्यूह बिच, लुट्टे सकट सलील ॥
मारे तोपन कानमैं, कठिन अयोमय कील ॥ १०५॥
मथ्यो कटक तते मरद, मनु गोपी दधि मट्ट ॥
कूरम लखि बुँल्ल्यो चकित, जब हरोल सन जट्ट ॥१०६॥

॥ षट्पात् ॥

तबहि जट्ट रविमल्ल पलटि आयो सहाय पर ॥
जिम गज संकट जानि चपल पन आनि चक्रधर ॥
अडर भरतपुर ईस तिमहि हक्यो रन तंहंत ॥
मडत आयुध मेह खूब खडन अरि खडत ॥
अति जोर हरत मरहठ्ठ असु रोरें करत खगराज रेंय ॥
विहंनन महार लघु तूंल विधि गंगाधर सु पलाय गय ॥१०७॥

॥ दोहा ॥

सह्यो भलेंही जट्टनी, जाय अंरिष्ट अरिष्ट ॥
जिहिं जाठर रविमल्ल हुव, आमेरनको इष्ट ॥ १०८ ॥

॥ षट्पात् ॥

सूरजमल्ल सजोर मुररि मारे मरहठ्ठे ॥
मिलत बंधु फन मेटि नाग आतुर गति नठ्ठे ॥

१ आगे की सेना में निशान के हाथी थे जिन से भी आगे बढ गये २ शीघ्र ३ गंगाधर तते के ताते घोडों को खींचकर ४ विष ॥ १०४ ॥ ५ लीला (खेल) सहित ६ लो- हे की कील ॥ १०५ ॥ ईश्वरीसिंह ने चकित होकर सूर्यमल्ल जाट को हरावल से ७ बुलाया ॥ १०६ ॥ ८ विष्णु भगवान् ९ गर्जना करता हुआ १० माथा ११ मद १२ गरुड के वेग से १३ पाखण्ड के प्रहार से तुच्छ १४ रूई की भांति १५ भागगया ॥ १०७ ॥ हे जाटनी तू ने १६ सूतिकागृह (जापे के घर) में आकर भले ही १७ दुःख सहा कि जिस के १८ उदर में १९ सूर्यमल्ल २० आमेरवालों का इष्ट हुआ ॥ १०८ ॥ २१ जैसे फणों के साथ विष्णु भगवान् की भेट होते ही २२ काली नाग

परे कुगाप पंचास५० अष्ठ उत्तर सत१०८ घायल ॥
दीनौं दक्खिन ठेलि तुमुल कीनौं रिस तायल ॥
भय टारि नरूकन थप्पि थिर पुनि कूरम चदोल पर ।
हरवल्ल अप्प आयउ हुलसि मिहिरमल्ल गहि जय गुमर॥१०९॥

॥ दोहा ॥

बहुरि जट्ट मल्लार सन, लरन लग्यो हरवल्ल ॥
अंगद ह्वै हुलकर अर्‍यो, मिहिरमल्ल प्रतिमल्ल ॥ ११० ॥
रदन मध्य रसना रहत, इम संकट कछवाह ॥
अंतर चाहत साम अब, लेत न रन जय लाह ॥ १११ ॥

॥ षट्पात् ॥

धरनि फटि धसमसत कंपि कसमसत कुलाचल ॥
दिस दिस लोहित लिपत छिपत जुज्झत दोऊ२दल ॥
इहिं अंतर आसार प्रचुर पुनि रचिय पयोदन ॥
चहलपहल चतुरंग दहल पानिय चहुँ४कोदन ॥
बुल्ल्यो मलार तहँ दुव२ नृपन पर अप्पन नहिं सुधि परत॥
तुम अलप सत्थ मर्म ढिग रहहु भटन भिन्न रक्खहु लरत ।११२

॥ दोहा ॥

बुंदियपति१ यह सुनि बचन, सत१०० सादिय लिय संग ॥
हरजन२ इतर अनीकलै, रह्यो भिन्न रुपि रंग ॥ ११३ ॥
हयसत१०० रक्खे माधवरहु, लै इतरन जय लीन ॥

आतुर होकर भागा तैसे भगे १ मुरदे २ भयंकर युद्ध ३ क्रोध में तपाहुआ ४ सूर्यमल्ल विजय का ५ घमंड करके ॥ १०९ ॥ ६ सूर्यमल्ल से प्रतिमल्ल के समान लड़ने लगा ॥११०॥ ७ दांतों के घेरे में जीभ रहै तैसे ईश्वरीसिंह सेना के घेरे में रहा ८ मन में ९ साम उपाय (मिलाप) ॥ १११ ॥ १० पुराणों के मत से जिस पर्वत का पृथ्वी के चारों ओर घेरा है उस का नाम कुलाचल है ११ रुधिर से पोती हुई दीखती है १२ बहुत मेघ धारा १३ मेघों ने १४ सेना पानी से भीग कर तर होगई१५पानी का भय १६ चारों दिशाओं में हुआ॥११२॥१७ सवार १८ अन्य सेना को लेकर ॥ ११३ ॥

सिवाई२हु सिवब्रह्महर, कुम्म पृथक रन कीन ॥ ११४ ॥
जैव१ सिवा१ अरु टोडरी१, अधिप मिले त्रय३ आनि ॥
तिन्ह गोगाउत प्रेम३ जो, पृथक जुरयो असि पानि॥११५॥
एक१ हड्ड कूरम उभय२, अनुक्रम वटि अनीक ॥
स्वामिन हुलकर सग करि, मढ्यो पृथक समीक ॥ ११६ ॥
ज्योंहिं उदेपुर२ जोधपुर१, कोटा३ के दल३ क्रुद्ध ॥
भिन्न भिन्न रहिकैं भिरे, जेपुरपति सन जुद्ध ॥ ११७ ॥
हुलकरढिग दुव२ भूप रहि, तुमुल रच्यो गहि तेग ॥
पानी आयुध पैंजे करि, जुट्टन लग्गे वेग ॥ ११८ ॥
भीजी पग्घ सु दूर करि, दै आयिक पट टोप ॥
हुक्का पीवत हुलकरहु, कलह खरो अति कोप ॥ ११९ ॥

॥ मत्तमृगेन्द ॥

खेल सतरजकी सारि अनुकारँ मल्लार१ निज बीर अग्गैं बढावैं ॥
हड्ड१ मतिमंल्ल हरवल्ल रचि हल्ल हमगीर बरनीर बुंदी चढावैं ॥
हड्ड सामंतहर नाम हरजन२ सु नृप सचिव लै सेन इक ओरजुज्झैं॥
मेघ आसार भैंगकार अंधार मिलि अप्पन रु पार नहि नैंक सुज्झैं१२०
सिवाईसिंह१ कछवाह सिवब्रह्महर मेंाधवामात्य इक ओर जुट्टै ॥

१शिवब्रह्म के वंश वाला ॥११४॥२लांवा और सेवा ये दोनों नगरा के नाम हैं ३प्रेमसिंह ॥ ११५ ॥ जुदा ४ युद्ध रचा ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ५होड (प्रतिज्ञा) करके ॥ ११८ ॥ ६ जल वस्त्र का ॥ ११९ ॥ जैसे सतरज के खेल मे एक प्यादी के दूसरी का जोर बना रहता है तब वह आगे बढती है (जोर बना रहने से अगली प्यादी मारी नहीं जाती) इसीके ७ सदृश मल्लार ने अपने वीरों को आगे बढाये हाडा उमेदसिंह ८ उन्नत मल्ल होकर हरोल में (आगे) हिम्मत के साथ हल्ला करके बुंदी को श्रेष्ठ नीर चढाता है और सामंतसिंह के वंश वाला हरजन नामक हाडा उमेदसिंह का सचिव सेना लेकर एक ओर लडने लगा ९ मेघ धारा से १० भयकर अंधेरा होकर अपना और पराया कुछ नहीं दीखा ॥ १२० ॥ ११ माधवसिंह का मंत्री शिवब्रह्मपोता सवाईसिंह कछवाहा भी

तीन ३ कछवाह खंगारह लैरु इत गोगेहर प्रेम२ करवालं कुट्टैं ॥
रान जगतेस कँटकेस इत संभु१ अरु साहिपुर भूप उम्मेद२ रुप्पे
सचिवि गुलाब३ अरु देवगढ कंत जसवंत४ पुनि बेघम पँ मेघ५
कुप्पे ॥ १२१ ॥

जोधपुर सेनपति सेर१ अरु सेर२ मनरूप३ कल्यान४समसेर झार।
यौं अखैराम१ कोटेस कटकेस रन मेंस मन सेस फन पेसि डार ॥
कुंत असि हत्थ मिलि बत्थ कौंति सत्थ गति पैत्थ तंति मत्थ सि-
व अत्थ अप्पैं ॥
भीम अनुकौंरि गज पारि धक धारि कति मारि तरवारि थिर
रारि थप्पैं ॥ १२२ ॥

नीर अरु छीर निभं धीर कति बीर हमगीर मिलि तीरकारि भीरटारैं
काल बिकराल कति ज्वाल दृग लाल अरि साल भरि फाल ग-
जढाल ढारैं ॥
भीरु भय देत गिलि गोदं पल लेत अति हेत करि खेत बिच प्रेतनछैं

एक बार लड़नेलगा तीन १ खंगारोत कछवाहों को लेकर २ इधर गोगावत प्रेमसिंह ३ तरवार मारनेलगा राणा जगत्सिंह के ४ सेनापति शंभुसिंह और शाहपुरा का राजा ५ उमेदसिंह ये दोनों इधर खड़े हुए ६ राणा के सचिव का पुत्र गुलाबसिंह और देवगढ का पति जसवंतसिंह ७ बेघम का पति मेघसिंह ये सब क्रोधित हुए ॥ १२१ ॥ जोधपुर की सेना का पति शेरसिंह दूसरा मनरूप और कल्याणसिंह ये सब तरवार मारने लगे इसी प्रकार कोटा के पति का सेनापति अखैराम युद्ध में ८ मैंढे के समान होकर अपने मन से शेषनाग के फणों को ९ पीसने लगा १० भाले और तरवारें हाथों में लेकर ११ कितने ही बाथों के साथ मिलकर १२ अर्जुन की भांति १३ माथों की पंक्ति १४ शिव के अर्थ देते हैं और कितने ही भीमसेन १५ सदृश हाथियों को गिराकर क्रोध करके तरवार मार कर स्थिर युद्ध को स्थापन करते हैं ॥ १२२ ॥ कितने ही वीर हमगीर होकर पानी और दूध के १६ सदृश मिलते हैं और १७ बाणों से भीड़ को हटाते हैं कितने ही भयंकर काल के और अग्नि के समान लाल नेत्र करके शत्रुओं के साल होकर १८ मलंग लगाकर १९ हाथियों की ध्वजाओं को गिराते हैं अत्यंत स्नेह करके २० मज्जा और मांस लेकर प्रेत युद्धभूम

त्रास तजि भास जिय स्वास हिय वास करि खास रन रास न-
र नास मच्चें ॥ १२३ ॥

घोर चहुँ४ओर अति घोर बरजोर रचि सोर तंचि दोर भटमोर सज्जैं
रोहं घलि द्रोह झलि कोह कैंलि छोह छलि जोहं संदोहं बहु
लोह बज्जैं ॥

इह कहुं गिद्ध बलि सिद्ध लगि लिद्ध बिनु सक पल पंक बिच
कंक कुद्दैं ॥

सेन दुव२ लैनें जय लैन मुरें न रन औनें कति वेन थकि नैन मुंदैं १२४

एह बिच लोहं करि सेहं भुव नेह पुनि मेहं बिच मेह बिनु छेह बुठ्यो
बंधि घन पाज गुरु गाज खप काज ब्रजराजपर जानि सुरराजें रुठ्यो
लोहु श्रुति धारि नृपरामं दुरितेंारि अति वांरि करि रारि तरवारिरुक्की
प्रोष्ठपद मास इम बारिद बिलास पैंललास नव ग्रास मप आस
मुंक्की ॥ १२५॥

॥ दोहा ॥

झरमैं यों तँहँ प्रचुर झर, परयो अचानक आय ॥

में नाचते हैं त्रास को छोड कर जीव की आशा से हृदय के भीतर श्वास १
नृत्य करता है और युद्ध के खास नृत्य में मनुष्यों का नाश होता है ॥ १२३ ॥
भयंकर बल पूर्वक २ चारों दिशाओं में ,भय रच कर ३ बारूद में जलकर
वीरों के मुकुट दौड सजते हैं ४ घेरा घाल कर द्रोह को झेल कर ५ युद्ध में
कोलाहल करके, क्रोध में चमक कर ६ जोधों (वीरों) के ७ समूह बहुत
शस्त्र बजाते हैं ८ बहुत गिद्ध तैयार हुए ९ बलिदान को हैं और १० मांस
के कीचड में निडर कंक पक्षी कूदते हैं दोनों सेना की ११ पंक्ति जय लेने के
अर्थ युद्ध से नहीं मुडती और कितने ही वीर १२ मार्ग में वचन थक कर नेत्रों
को बंद करते हैं ॥ १२४ ॥ इतने में १३स्वाद लेकर १४भूमि की सेज पर १५शस्त्रों
की वर्षा में अछेद मेह बरसा सो मानों मेघ की पाज बांध कर १६बड़ी गर्जना
से नाश करने को ब्रजराज पर १७इंद्र ने क्रोध किया सो है १८ पाप के शत्रु
राजा १९रामसिंह, सुनो कि अत्यंत २०पानी से तरवारों की लडाई रुक गई इस
प्रकार २१ भादवे में मेघ के विलास से २२ मांस की आशावालों ने नवीन
ग्रास के समय आशा २३ छोडी ॥ १२५ ॥

सूरन सेप[1] अरु हयन पय, भये चलत जड़ भाय ॥ १२६ ॥
रोकि रेटक[2] तब दुव कटक, पत्ते[3] सिविरन[4] निट्ठि ॥
अमित भटन छोरी सजवँ[4], आसि मुट्ठि रु हय पिट्ठि ॥१२७॥
छट्ठी[6] दिवस बिताइ इम, बहुरि बिताई रत्ति ॥
दक्खिन दल सप्तमि[7] दिवस, सजन लगे पुनि सत्ति॥१२८॥
एह सुनत आमेरपति, व्याकुल किन्न बिचार ॥
मरहट्ठन रोकी रसति, मंड्यो[6] प्रसभ मलार ॥ १२९ ॥
जनक लई सँधा करि जु, देय सु बुंदी नाँहिं ॥
गंगाधरकौं सुल्क[9] दै, मोरहु ध्यप्पन माँहिं ॥ १३० ॥
कूरमपति यह मंत्र करि, खत्री केसवदास ॥
दम्म बहुत तस संग दै, पठयो तंते पास ॥ १३१ ॥
राजामलसुत जाय तँहँ, गंगाधर लिय फोरि ॥
दई सौंक छन्नैं दुलभ, माया करि मन मोरि ॥ १३२ ॥
अरु अवखी तुमरे लगे, फोज खरच जे दम्म ॥
दैहैं नृपतिनतैं द्विरगुन, करहु साम हित कैंम्म ॥ १३३ ॥
बुंदीकी बत्त न बदहु, भरि धन सकटैं[11] सुभाय ॥
कुंच करावहु कटकके, हुलकर पति समुझाय ॥ १३४ ॥
गंगाधर यह सुनि गयो, खर जेर[12] जूती खाय ॥
कह्यो मलारहिं कुम्म पति, बहु धन देत सिटाय ॥ १३५ ॥
अब न सुनहु उम्मेदकी, लेहु अतुल बसु[13] लाह ॥
जग कहिहैं हुलकर जबर, दंड्यो जैपुर नाह ॥ १३६ ॥
हुलक्करकी यह सुनत हुव, बिगरि बुद्धि बिपरीत ॥

---

१ हाथ ॥ १२६ ॥ २ युद्ध करना ३ डेरों में कठिनाई से प्राप्त हुए ४ शीघ्र॥१२७
५ लगि (घोड़े) ॥ १२८ ॥ ६ छठ ॥ १२९ ॥ पिता (जयसिंह) ने ७ प्रतिज्ञा करके
ली वह बुन्दी ८ देने योग्य नहीं है ९ रिसवत देकर ॥ १३० ॥ १३१ ॥१३२॥ १
हितकार्य ॥ १३३ ॥ ११ श्रेष्ठ रीति से छकड़े भर कर ॥ १३४ ॥ १२ धन के
जूती खाकर वह गधा गया ॥ १३५ ॥ १३धन का लाभ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥

धरन लग्यो गनिका धरम, जानी अप्पन जीत ॥ १३७ ॥
सो सुनि हैसत२०० सुभट पति, बालकृष्ण द्विज बीर ॥
हुलकर सयन निकाये को, जामिके जपै धीर ॥१३८॥
पुण्याके दलबिच प्रकट, करि करि गुमर मलार ॥
किम कहि आपे नन्हतैं, लोभी कितव मलार ॥ १३९ ॥
कैसी सँधा करि चलिय, कैसो मन्त्र विधाय ॥
संधाकौं तुमकौं सँतत, है धिक हुलकर राय ॥ १४० ॥
क्यौं घन लक्खन करज किय, रचि दस बीस हजार२०००॥
क्यौं माधव उम्मेदकौं, भुल्ले बिबुद्धि विचार ॥ १४१ ॥
चलि दक्खिन प्रभु नन्हसौं, नीचे करिहो नैन ॥
तातें बभन सठ तुमहिं, लोभ देत कछु लैन ॥ १४२ ॥
कातरपन ताको कह्यो, धारहु मन धरि धीर ॥
वह पुरबिया यह कहत, बलहि सिराह्यो बीर ॥ १४३ ॥
मन गो पलटि मल्लारको, लग्गत बचन प्रतोद ॥
ततेकौं बुल्लि रु त्वरित, बुल्ल्यो लरन बिनोद ॥ १४४ ॥
सुनि गंगाधर वह कितव, तजिहैं बुंदिय देस ॥
च्यारि४ अनुज हित परगनैं, देहैं कुम्म नरेस ॥ १४५ ॥
बुंदीसहिं बुलवाय पुनि, ताके डेरन जाय ॥
इक१ तखत दुव२ बैठिहैं३, सँम सतकार बिधाय ॥ १४६ ॥
टीका उचित निवेदिहैं४, कहि कहि नृप उपटंक ॥
तो अप्पन दल कुंचहैं, नहि तो जग निसंक ॥ १४७ ॥
सच्ची अखि निहारि तब, तंते प्रसित बिसेस ॥

---

१ बाम्हन के घर का २ पहरायत योद्धा ॥ १३८ ॥ ३ धर्मध्वज ॥ १३९ ॥ ४ प्रतिज्ञा ५ सलाह करते हो ६ प्रतिज्ञा को ७ निरंतर ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ ८ कायरपन ९ सेना में उस की प्रशंसा की ॥ १४३ ॥ वचन रूपी १० चाबुक लगने से ११ बुलाकर ॥ १४४ ॥ १२ हे ठग १३ माधवसिंह के अर्थ ॥ १४५ ॥ १४ बराबर का १५ करके ॥ १४६ ॥ १४७ ॥

अक्खी केसवदाससौं, करहु मलार निदेस ॥ १४८ ॥
सुनि खत्री निज स्वामिकौं, जबहि सुनाई जाय ॥
हित माधव१ उम्मेद२को, करनौंही अब न्याय ॥ १४६ ॥
कोपत हुलकर पिनु करैं, अंखिन धकतैं[2] अलाव ॥
रसति बंध पहिलैं करी, अब प्रानन पर दाव ॥ १५० ॥
ईश्वरिसिंह सिटाय सुनि, भयो अमा[3]ससि भाय ॥
गंधनकुल[4] को ग्रास करि, उरग[5] जानि अकुलाय ॥ १५१ ॥
सबहि बत्त स्वीकृत करिय, जैपुरपति भय जानि ॥
संधि बिधाय[6] मलार सन, मिलन बिचार प्रमानि ॥ १५२ ॥
अक्खी केसवदाससौं, सब उनकी स्वीकार ॥
अब कछु अक्खौ अप्पनी, मानहु बत्त मलार ॥ १५३ ॥
हुलकर१ अरु हमर२ लोभकी, बत्त समक्ख करैंन१ ॥
जो कहनी सु वकील जन, बदैं परोक्खहि बैन ॥ १५४ ॥

॥ षट्पात् ॥

अपनैं डेरन प्रथम हहु१ हुलकर१ दुव२ आवैं ॥
पलटि पग्घ मल्लार हमहिं बड मित्र बनावैं३ ॥
कुंच करनके काल बंबं[10] पहिलैं तिन्ह बज्जैं४ ॥
पिच्छैं हमहि चढाय चढहु इम वेहु न लज्जैं[11] ॥
सुनि केसवदास मलार सन कहिय आनि कूरम कथितं[12]॥
हुलकर समस्त स्वीकार करि चाह्यो मिलन प्रसन्न चित ।१५५।

॥ १४८ ॥ १४६ ॥ माधवसिंह और उम्मेदसिंह का हित १ नहीं करने से हुलकर क्रोध करता है २ नेत्रों में अग्नि जलती है ॥ १५० ॥ ३ अमावास्या के चन्द्रमा के समान ४ छछुंदरी को पकड़ कर ५ सर्प घबरावै तैसे (छछुंदरी को पकड़ कर छोड़ देने से सर्प अंधा होजाता है और खाने से मरजाता है) ॥ १५१ ॥ ६ करके ॥ १५२ ॥ ७ हमारी कही हुई ॥ १५३ ॥ ८ रोबरू ६ पीठ पीछे कहै ॥ १५४ ॥ उनका १० नगारा पहिले बजै ११ लाजित नहीं होवैं १२ ईश्वरीसिंह का कहा हुआ ॥ १५५ ॥

सप्तमि७ अष्टमि८ नवमि९ दसमि१० एकादसि११ वित्ती ॥
द्वादसि१२के दिन मिलन थप्पो हुलकर करि कित्ती ॥
दल सन तबू दूर तवहि इक१ कुम्भ तनायो ॥
मत्र केिग्गाको२ पृथक मढि अप्पहु तँहँ आयो ॥
दे पिट्ठि इक१ तकिया दरित पृथुल दिलीचा रुचिर पर॥
परिखव बनाय जयसिंह सुव बैठो लैं ढिग सुभट वर ॥१५६॥

॥ दोहा ॥

इत ढड्ढ६ रु हुलकर२ उभय२, सुपहु भीरि संन्नाह ॥
भिटन जैपुर भूपकों, विदित चले चढि बाँह ॥ १५७ ॥
लये उदैपुर१ जोधपुर३, कोटा३के भट सग ॥
उभय हत्थमैं हत्थदैं, जीति पधारे जग ॥ १५८ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

तत्ते गगाधर१ सेटू खड़राड२ सतू बाउला१ तीनों३ही हुलकरके उमराव हरोल भये ॥
अरु विजयके मदमत्त चोतरफ आतक डारत तमासगीर लोकनकों हटात गये ॥
प्रथमतो उदैपुर१ जोधपुर१ कोटा१की सेनाके सिरदार दोय२ दोय२ मल्हारनैं मिलिबेकौं अनुक्रमतैं पठाये ॥
तब साहिपुराधीस रानाउत उम्मेदसिंह१ देवगढनाथ चुंडाउत राउत जसवतसिंह२ बेघमपति चुंडाउत राउत मेघसिंह३ सनवाड पति सेनानी भारतसिंहको कनिष्ट सोदर रानाउत सभूसिंह ४ प्रधान भवानीदासको पुत्र गुलाबसिंह५ त्योंही रय्पां पति दूदाउत्त मेरतिया रट्ठोर सेरसिंह१ उदाउत्त रट्ठोर सेरसिंह२ कल्याणसिंह ३

---

१ ईश्वरीसिंह ने २ सलाह करने का डेरा जुदा रचा ३ केवल ईश्वरीसिंह की पीठ से दबाहुआ एक तकिया लगा कर ४ बड़े सुन्दर दलीचे पर ५ सभा ॥ १५६ ॥ ६ कवच कस कर ७ घोड़ों पर चढ़कर ॥ १५७ ॥ ८ मल्हार और उम्मेदसिंह दोनों हाथ में हाथ देकर॥ १५८ ॥ ६ भय १० छोटा सगाभाई

भंडारी मनरूप४ तथा बखसी कायस्थ अखैराम१ इत्यादिक ईश्वरीसिंहतैं सत्कारसहित मिलि आये ॥ १५९ ॥

दोहा— तदनंतर नृप हड्ड१ अरु, हुलकर२ करि हथजोरि ॥
प्रविसे प्रतिसीरा बलज, तरल तुरंगन छोरि ॥ १६० ॥
जुरत दिट्ठि जै नृपतिहू, हुलसि उट्यो करि हेत ॥
सम्मुह पायंदाज तक, आयो बिनैय उपेत ॥ १६१ ॥
मत्थैं हत्थ लगाय मिलि, मोद परस्पर मानि ॥
इक्क दिलीचा ऊपरहि, इम बैठे त्रय३ आनि ॥ १६२ ॥
ईश्वरिसिंह१ प्रतीचि मुख, प्राची मुख ए दोय२ ॥
कछुक काल संलाप करि उठे डोह सब धोय ॥ १६३ ॥
मंत्र कोंणिका मांहि पुनि, प्रविसे त्रय३ द्वय२ पास ॥
हुलकर१ कूरम२ हड्ड३ अरु, तंते१ केसवदास२ ॥ १६४ ॥
बुंदीपति प्रति उच्चरिय,जैपुर भूपति जत्थ ॥
दूर रहो कछु कालतो, मंत्र रचैं इम अत्थ ॥ १६५ ॥
तब नृप बुल्ल्यो करत तुम, मरहट्ठी संलापं ॥
मैं अबोध अनधीत मैं, निर्धारक मंत्रहु आप ॥ १६६ ॥
अक्खि यहैं रु तत्थहि रह्यो, संभरराज स्वतंत्र ॥
केसव१ कुम्म१ मलार१ किय, मरहट्ठी बिच मंत्र ॥१६७॥
तदनुं पग्घ निज कुंकुमी, लैकैं हुलकर ईस ॥
हीरनके सिरपेच जुत, धरी कुम्म नृप सीस ॥ १६८ ॥

॥ १५९ ॥ १ कनात के २ कोट में घुसे ३ चपल घोड़ों को छोड़कर ॥ १६० ॥ ४ नम्रता सहित ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ ५ पश्चिम दिशा में मुख करके रहा और ये दोनों पूर्व दिशा में मुख करके साम्हने बैठे ६वार्तालाप ॥ १६३ ॥ ७ मंत्र करने के डेरे में ८ तीन राजा और दो पासवान (पास रहने वाले) ॥ १६४ ॥ ९ यहां ॥ १६५ ॥ १० मरहठी भाषा में वार्ता करते हो जिस में ११ नहीं समझता १२ और इस भाषा को नहीं पढा १३ निर्णय सलाह करो ॥ १६६ ॥ १६७ ॥१४जिस पीछे१५केसर के रंग की ॥ १६८ ॥

हुल्लकर सिर अपनी धरी, त्यौंही कूरम राय ॥
घरिय रक्खि दोउन दई, हब्बन माँहिं धराय ॥ १६९ ॥
मराय१ धराय२ अन्त्यानुप्रास ॥१॥
इतर कुसुभी१ कुम्म२ धरि, विसद१ पग्ग मझार ॥
मंत्र निलय बिच मित्र हुव, इम दुव२ मुदित अपार ॥ १७० ॥
च्यारि४ परग्गन माधवहिं, बुंदी नृपहिं दिवाय ॥
हुल्लकर कूरम हत्थको, लिन्नों पत्र लिखाय ॥ १७१ ॥
बहुरि चल्ले उठि सिक्ख करि, हुल्लकर१ अरु चहुवान२ ॥
कूरम पायदाज तक, चल्यो तबहु पहुँचान ॥ १७२ ॥
इम प्रविसे दोऊ२ अडर, निज निज डेरन आय ॥
कहि पठई दूजे२ दिवस, कुम्महिं हुल्लकर राय ॥ १७३ ॥
अब बुंदीपतिके, अरथ, भेजहु टीका भूप ॥
सुनि यह लिय जयसिंह सुव, पुनि अभिमान अनूप ॥ १७४ ॥
पादाकुलकम् ॥
कूरम पच्छी एह कहाई, मिटन तुम आवे यँहँ भाई ॥
तबतो वे आये तुम पिच्छैं अब उमेद आवन हम इच्छैं ॥१७५॥
सुनि हह१रु हुल्लकर२हठ साह्यो, बेर इक१आवन निरबाह्यो
तुमहिं उचित आवन अब तातैं, दिवस भयो इक१राह दिखातैं ॥
यह साहस दुहुँओर बढ्यो अति, पृथक तनाय थूल बुन्दीपति ॥
रह्यो तहाँ कूरम मग हेरत, टरत जात दिन टेरंत टेरत ॥१७७॥
बीच भयो तते बिसटाली, घरबिधि बत्त कुम्म श्रुति घाली ॥
कुम्म कही सुनिये गंगाधर, अब जो तुम आनहु यँहँ सभर १७८
तब भवदीय हितूपन जानैं, मझारहु उचितहि जो मानैं ॥

॥१६९॥ईश्वरीसिंह ने तो१कसूमल (कसूबे के रंग की दूसरी पगड़ी बाँधी) २श्वेत
३ सलाह के स्थान में ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३॥ १७४॥ ४हे भाई॥१७५॥
॥ १७६ ॥५हठ जुदा६डेरा तनवा कर७बुलाते बुलाते ॥ १७७ ॥८आपका

गंगाधर दुहुँ[1]ओर खिसानौं, इत उतके संकुच अकुलानौं ॥ १७९ ॥
अंबुज[2] मनहुँ तरनि अर्द्धोदय[3], अरध कपाट खुल्यो जिम आलय[4] ॥
सोवत कछु कछु जगत स्वप्न सम, बानिक[5] बयससंधि[6] वनितोपम[7] ॥
तंते रह्यो पंच५ दिन ऐसैं, कहैं तोरि हित इत उत कैसैं ॥
गंगाधर कर जोरि छठे६ दिन, अक्खी नृपहिं सुनहु संभर इन[8] ॥१८१॥
सेवक अरज मन्नि हित सत्थैं, इक आसान करहु मम मत्थैं ॥
जैपुरपति केवल हठ जानैं, प्रीति रीति नहिं जड़ पहिचानैं ॥१८२॥
बहुरि तुम्हैं निज सिविरैं[9] बुलावत, उत्तर ताको मोहि न आवत ॥
अक्खी नृपति जाय हम आये, लुप्पि ताहि क्यों पुनि हठ लाये१८३
उचित नाँहि पुनि पुनि जीवन अब, बरजत हुलकर आदि सुमति[10] सब
यह सुनि विप्र नयन जल आयो, द्यूत ठग्यो सो दीन दिखायो१८४
निगरनतैं[11] श्रुति[12] स्वपच[13] निकासी, परयो कि हरिन किरातन[14] पासी
तंतेकों इम देखि दुखित तब, अधिपति हृदय सदयतर[15] भो अब१८५
दयाराम१ निज बुद्धि पुरोहित, चारन महडू दान१ ज्ञान चित ॥
भेजे दुव२ हुलकर ढिग भूपति, अक्खी द्विज तंते सकुचत अति १८६
पुनि कूरम ढिग हमहि पठावत, यह द्विज नम्र दुखित अकुलावत ॥
कूरम हठ लखि हम हठ साहैं, दुक्खित द्विज लखि जीवन चाहैं१८७
कहिय रुचत तुमहीं अब कैसी, तंते तकरा दीनता ऐसी ॥
सुनि हुलकर उत्तर तब दिन्नौं, जावहु जो कितवन[16] हठ किन्नौं१८८

---

१ सकोच से ॥ १७९ ॥ ३ आधा सूर्य उदय होते समय २ कमल होवै तैसे ४ घर ५ बनाव ६ बालपन के जाने और यौवन के आने की सांधे में अर्थात् बय संधि के बनने पर ७ स्त्री के समान ॥ १८० ॥ ८ हे चहुवाणों के पति ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ ९ अपने डेरे पर ॥१८३॥१० श्रेष्ठ बुद्धिवाले ॥ १८४ ॥ ११ गले से १२ वेद को १३ चांडाल ने निकाला अर्थात् जैसे चांडाल अपने गले से वेद का उच्चारण करके (अधिकारी नहीं होने के कारण) अथवा छन्दरत्नावली में होम के धूम को निगरण लिखा है सो चांडाल होम करके संकट में पड़े तैसे १४ भीलों की पास में १५ अत्यन्त दयावान् ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ ॥१८७॥ १६ ठगों ने ॥१८८॥

यह सुनि द्विज१चारन१जुग२आयो, नृपकों हुलाकर *कथित सुनायो
सुनि चहुवान सेन निज साजी, करि कटिबध चल्यो चढ़ि
बाजी ॥ १८९ ॥
सग भये हुलकर भट सारे, †वाडव पर दल सिंधु बिहारे ॥
डुढारे पिक्खन जन आये, धन्न्य धन्न्य कहि बिरुद बढाये ॥१९०॥
इम कूरम डेरन तोरन गय, प्रबिसन लग्गे तत्थ चढे हय॥
तबहि द्वारपालन कर जोरे, अक्खी अरज जात नहिं घोरे ॥१९१॥
यह तोरन डोढी करि मानहु, अग्ग बहुरि डोढी नहिं जानहु ॥
पाउसं१रन२ कारन दुव२पाये, पतिं रक्खत पुखत नहिं लाये ।१९२।
अग्ग ईश्वरिसिंह बिराजत, जवनी ओट बीच नहि राजत ॥
बिराजत१ हिराजत२ अन्त्यानुप्रास १ ॥
जावत तुरग चढें दृग जुरिहैं, तो सकोच परस्पर घुरिहैं ॥१९३॥
अंतर द्वार गिनहु इहिं पातें, त्यागहु महाराज हय तातें ॥
सुनि नृप रीति निपुन तजि बाजी, प्रबिस्यो द्वार लिये भट राजी१९४
जैपुरपति भट अलप सत्थ जहँ, तक्क्यो नृप सम्मुह परिखद तहँ॥
इक१ज सवंत१मलायपति कुमर, अरु दलेल२धूलापुर ईश्वर १९५
मर१श्वर१अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥
तिम हरनाथ३ नरूका राउत, अजितसिंह४ कूरम सेखाउत ॥
सुभट निकट इत्यादि छसातहि, जैपुरपति उठ्यो नृप जातहि१९६
पायदाज अवधि सम्मुह सेरि, रीति उचित दुव२ हत्थ मत्थ धरि
सभा प्रबिसि अप्रतिहत सासन, बैठे उभय२ एकही आसन।१९७।

* कहना ॥ १८९ ॥ † शत्रु का सेना रूपी समुद्र पर बडवाग्नि रूप से चला ॥१९० ॥ १ बाहर के द्वार पर २ घोड़े पर चढा हुआ जाने लगा ॥ १९१ ॥ ३ इस द्वार को ४ वर्षा के और युद्ध के कारण ५ पुष्ट सामग्री ॥ १९२ ॥ ६ कनात की आड बीच में नहीं दीखती है ॥ १९३ ॥ ७ भीतर की डोढी ८ बीरा की पंक्ति ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ ९ चल कर १० नहीं रुकनेवाले हुकम से ॥ १९७ ॥

पान१ रु अतर२ निवेदि परस्पर, किय संलाप घटी इक१ हितकर
उठि करि सिक्ख भूप पुनि आयो, पहिलैं जिम कूरम पहुँचायो ११८
तंते तदनु पठायो हुल्लकर, कूरम प्रति अक्खी तिहिं दरबर ॥
अब टीँका नृप कुम्भर पठावहु, पुनि बुंदीपति डेरन आवहु ॥१९९॥
सुनि टीँका पठयो तब कूरम, इक्क१महामृग इक्क१ तुरंगम ॥
इक१ सिरुपाव इक्क१मनि भूखन, पठये दै इम संग सचिव जन २००
तिन टीँका नृप अत्थ निवेदिय, संभर नाथ विहसि स्वीकृत किय॥
दैन लगे बसु कूरम दासन, सो न लयो रु गये जिम सासन ॥२०१॥
दूजे२ दिन कूरम भूम बाँधन, संभर सिविर गयो हित साधन ॥
अग्गैं रीति मिलनकी अक्खी, पद्धति सोहि अत्थ मिलि रक्खी २०२
दुव२ सिरुपाव दोय२ हय दिन्नैं, इक१ इकही जैपुरपति लिन्नैं ॥
मानिकराम ठ्यारा नृपको तब, हुल्ल्यो हित अर्पित रक्खहु सब२०३
तोहु न हत्थ द्वितीयन२ घल्ल्यो, अतर१ पान२ लहि कूरम चल्ल्यो ॥
हुलकर डेरन जाय मिल्यो पुनि, सुनत मत्त बुंदीन विरुद धुनि ॥२०४॥
हितपूरब बैठे इक्क१ आसन, सुख सह होन लग्यो संभासन ॥
कूरम तत्थ करार न राख्यो, लोभ उदंतै समक्षहि भाख्यो ॥२०५॥

॥ दोहा ॥

कूरम नाम मलूक१ इक, पंचायणा कुल जात ॥
आमेर पैं अरध्यो वहै, बखसि गाम वसु ब्रात ॥ २०६ ॥
बुंदीपुर आयत्त पुर, गैनोली अभिधान ॥
सहित परग्गन सो दयो, थिर कूरम तिहिं थान ॥ २०७ ॥

॥ १९८ ॥ १ जिस पीछे २ दड़बड़ (शीघ्र) ॥ १९९ ॥ ३ हाथी ॥ २०० ॥ ४ धन ५ कछवाहे के सेवकों को ६ ईश्वरीसिंह की आज्ञानुसार कुछ न लेकर पीछे गये ॥ २०१ ॥ ७ मिटानेवाला ॥ २०२ ॥ ८ स्नेह के साथ नजर किये हुए ॥२०३॥ ॥ २०४ ॥ ९ स्नेह पूर्वक १० लोभ की वार्ता सम्मुख नहीं करने का करार किया था सो नहीं रक्खा लोभ का ११ वृत्तान्त १२ रूबरू ही कहा ॥ २०५॥ १३ आमेर के पति ने १४ धन का समूह ॥ २०६ ॥ १५ बुन्दी नगर के अधीन पुर ॥२०७॥

ताकी बत्त मलार सन, कूरम कहिय बहोरि ॥
रक्खी सोहि मलूक हित, अवनि आर दिय छोरि ॥२०८॥
सुनि मलार अक्खी कुपित, किन्नों तुमहिं करार ॥
बत्त समत्तंहि लोभकी, क्यों न करत छलकार ॥ २०९ ॥
बसुमंति बुदिय देसकी, लेसहु तुमहिं मिलैंन ॥
कोयिंद रहत करारमैं, ठेले इह ठिलैंन ॥ २१० ॥
अतर१ पान२ यह अक्खि दै, कूरमकों दिय सिक्ख ॥
सुनहु राम नृप यों रही, प्रपितामहकी तिक्ख ॥ २११ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ उम्मेदसिंहचरित्रे सजट्टसूर्यमल्लकूर्मराजपरसैन्याऽभिमुखनिस्सरणकृतपलायनव्यासगंगाधरतत्कुलकरनिकटाऽऽनयनमहारणरचनमेघाऽऽसाराऽन्तराऽपिनालीयन्त्रचलनतद्दिन ४ निर्याणयथास्थितसर्वकालक्षपणमाधवाऽऽदियथाप्राप्तमकुष्ठाद्यशनद्वितीय २ दिनयुद्धभवनकोटाभटपोषसिंह १ मरणगंगाधरयोधनप्रकटीकृतप्रयाणमिषकूर्मराजनिस्सरणविदिततद्वृत्तमल्लारो १ म्मेद२ माधव ३ सज्जीभवनेश्वरीसिंहाऽवरोधनगंगाधरजेपुरमार्गाऽवरोधनतद्देशलुण्टनाऽऽर्थपञ्चसहस्र ५००० सैन्यप्रेषणभटप्रतिभटद्वन्द्वसमिद्विरचनतन्ते १ सेखाउत १

॥ २०८ ॥ १ लोभ की वार्ता अब सम्मुख क्यों करते हो ॥ २०९ ॥ १ भूमि २ चतुर ॥ २१० ॥ २११ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में, जाट सूर्यमल्ल और ईश्वरीसिंह का शत्रु की सेना के सम्मुख निकलना १ व्यास गंगाधर का भागकर उनको कुलकर के समीप लेजाना २ महा युद्ध की रचना और मेघ धारा में भी तोपों का चलाना ३ उस दिन घोड़ों की डोरें लिये यथास्थित समय बिताना ४ माधवसिंह आदि का मिला गया जैसा मोठ आदि को भोजन करना ५ दूसरे दिन युद्ध होकर कोटा के भट पोषसिंह का मरना और गंगाधर के युद्ध प्रकट करने से मुकाम करने के मिष से ईश्वरीसिंह का निकलना ६ इस के विदित होने पर मल्लार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह का सज्ज होकर ईश्वरीसिंह को रोकना ७ गंगाधर का जयपुर के मार्ग को रोकना और ईश्वरीसिंह के देश लूटने के अर्थ पांच हजार सेना को भेजना ८ भट

सजातीकरणाद्द्वितीय २ दिनसमापनपुनःषष्ठी ६ दिनयोधननिगृहीतजयपुरप्रसारजननासाऽऽदिकर्त्तनतदऽनोऽन्नाद्यशनवस्तुलुण्टनप्रेषितपृतनासम्भरपुरपर्य्यन्तजयपुरजनपदनिर्द्धनीकरणगंगाधरनारवमारणनालीयन्त्राऽवरुद्धीकरणतत्सहायजट्टसूर्य्यमल्लयोधनतन्तेपलायनतृतीय ३ दिनसमापनत्रस्तकूर्म्मराजहुल्लकरकथितस्वीकरणजयसिंहप्रस्तबुन्दीत्यजनमाधवाऽर्थदेशचतुष्टय ४ विसर्ज्जनाऽन्योऽन्यशिविराऽऽगमनहुल्लकर १ कूर्म्म २ मैत्रीमण्डनबुन्दीश १ जयपुरेश-२ यथामर्य्यादोपायनमिथोनिवेदनप्रहणमल्लारपुनर्लुब्धजायसिंहिभर्त्सनं पञ्चविंशो २५ मयूखः ॥ २५ ॥ ॥ २०६ ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

दूजे दिन बजि प्रथम कुंच दुंदुभि हुलकर दल ॥
बजि जैपुर बल बीच हुव सु बादन कोलाहल ॥
पहिलैं चढि कछवाह लग्यो निज पत्तन पद्धति ॥

और प्रतिभटों का बड़ा युद्ध करके तंते गंगाधर का सेखावत (सीकर के राव राजा) को घायल करना और द्वितीय दिन का समाप्त होना ९ फिर छठे के दिन युद्ध होकर जयपुर की रसद लानेवाले लोगों को पकड़ कर नाक आदि काट कर उनके छकड़ों से अन्न आदि भोजन की वस्तु को लूटना १० भेजी हुई सेना का सांभर नगर तक जयपुर के राज्य को निर्धन करना ११ गंगाधर का नरूकों को मारकर तोपों में कीलें लगाना और उनकी सहाय पर सूर्यमल्ल का युद्ध करके गंगाधर के भागने पर तीसरे दिन का समाप्त होना १२ डर कर कछवाहों के राजा का हुलकर का कहना स्वीकार करना १३ जयसिंह की लीहुई बुन्दी को छोड़ना, माधवसिंह के अर्थ च्यार देश देना और ईश्वरीसिंह, मल्हार और उम्मेदसिंह का परस्पर डेरों में आना १४ हुलकर और ईश्वरीसिंह का मित्र होना और बुन्दी के पति व जयपुर के पति दोनों का मर्यादा पूर्वक भेट देना लेना १५ फिर लोभ करनेवाले जयसिंह के पुत्र (ईश्वरीसिंह) को मल्हार के धमकाने का पचीसवां २५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ ३०६ मयूख हुए ॥

१ वाद्यों (बाजों) का २ अपने पुर के मार्ग

मनि जिम उरग गुमाय नम्यो न करैं फन उन्नति ॥
खट वसु तुरग ससि १७८६ सक गिल्यो जयसिंह सु बुंदिय जहर ॥
ईश्वरीसिंह तस सुत असह लई, घुम्मि ताकी लहर ॥ १ ॥

दोहा—दुवारे इम दुदि रन, गजे प्रसभ गलार॥
सत्य कियो संकल्प निज, माधव१ हहृ२ मलार ३ ॥ २ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

या रीति जनक जयसिंहनैं सधा करि स्वीय करी अचला ईश्व-
रीसिंह आतंकतें छोरि आयो ॥

अर बुंदीके दुर्ग तारागढमैं नरूके कछवाह सिपाह रक्षक र-
क्खेहे तिनकों कढायवेकों तिनके स्वामि नैरव लदानौं नगर ना-
थ कुमार१ तथा हरनाथसिंह२ इनके उभय२कों अग्गैं करि लेजा-
यबेको उदंत हुलकरसों कहायो ॥

तव जैपुरपतिके प्रस्थानके समय ए दोऊ२ नरूके कछवाह
लार लेवेकों मल्लारनैं बुलाये ॥

अरु वे आदेस अधीन होय न आये तव सत्तसय ७०० सादी
स्वकीय सेनाके संगर्डा पानिप करि मेरिवेकों पठाये ॥ ३ ॥

जहाँ मरहठनकों जोरदार जयो जानि जैपुरको जोध जुग२सा-
हमी सूबेदारको संग भयो ॥

जव जयके मदमत्त महिमंडल मंडन उम्मेदसिंह१ माधव२मल्ला
र३ कुच करि देवगाम बघेरा आनि मुकाम दयो॥

तहाँतैं सेना रैंखत रसालेकों तो टोडानगरकी राह चलायो ॥
अरु इन तीन३नके अभयसिंह धैन्वधराधीस तीर्थगुरु पुष्कर
राज हो तासों मिलिवेको उत्साह आयो ॥४॥

॥ १ ॥ २ ॥ १ पिता २ प्रतिज्ञा करके ३ भूमि ४ अरु ५ नरूका ६ वृत्तान्त ७ हुकम के आधीन ८ सवार ९ बलात्कार से ॥ ३ ॥ १० देवगाम और बघेरा दोनों जुदे जुदे गांव हैं परन्तु दोनों एक ही स्वामी के अधिकार में होने के कारण दोनों का नाम शामिल लेते हैं ११ सामग्री (सामान) १२ मारवाड का पति

॥ दोहा ॥

हुलकर१ कूरम२ हड्ड नृप३, सेन अलप लै संग ॥
पत्ते पुक्खर[2] तित्थगुरु[3], मरुपति मिलन उमंग ॥ ५ ॥
अभयसिंह चिर[4]कालतैं, हो पतनी जुत तत्थ ॥
मिलि तासौं बगरू बिजय, अक्खयो सबन समत्थ ॥ ६ ॥
सुता नृपति जयसिंहकी, नाम विचित्रकुमारि ॥
लये परगनाँ अनुज[5] तस, किय मंगल हित कारि ॥ ७ ॥
महिमानी करि मुदित मन, रट्ठोरन अधिराँज[7] ॥
हुलकर१ सालक[8]१ हड्डनृप१, बुल्ले३ जिम्मन काज ॥ ८ ॥
राजगढेस किसोर१निज, भ्रात सहित मरुपाल१ ॥
माधव१ संभर१ च्यारि४ मिलि, किय भोजन इक१थाल९ ॥
हुलकर१मरुपति१के हु हो, पग्ग[9] सखापन अग्ग ॥
सोहु जिमायो रक्खि ढिग, सम्मद[10] पूरि समग्ग[11] ॥ १० ॥
बि[12]नस्यो बाजेराय तब, मद्य तजो मल्लार ॥
अभयसिंह पायो इहाँ, प्र[13]सभ मंडि अति प्यार ॥ ११ ॥
इक१इक१गज दुव२दुव२अ[14]रब, इक१इक१ बर[15] सिरुपाव ॥
इक१ इक१भूखन नगजटित, दिय तीन३न करि चाव ॥१२॥
लै तिन तीन३हि मरुप जुत, आये पुनि अजमेर ॥
अभयसिंह निंदा इहाँ, किन्नी सोदर[16] केर ॥ १३ ॥
बखतसिंह मामक[17] अनुज, पहिलैं दिल्लिय पत्त ॥
जवनन[18] दल हमसन लरन, आनत सुनियत अत्त ॥ १४ ॥

---

२ पुष्कर १ गये ३ तीर्थगुरु ॥ ५ ॥ ४ बहुत समय से ५ स्त्री सहित ॥ ६ ॥ ६ उसके छोटे भाई माधवसिंह के परगने ॥ ७ ॥ ७ राठोड़ों का पति ८ अपने साले माधवसिंह ॥ ८ ॥ ९ ॥ ९ पाघ बदल भाई पन १० हर्ष से पूरित होकर ११ समग्र अथवा मार्ग सहित (रीति पूर्वक) ॥ १० ॥ १२ बाजेराव मरा तब १३ अत्यंत स्नेह से हठ करके ॥ ११ ॥ १४ घोड़े १५ श्रेष्ठ ॥ १२ ॥ १६ सहोदर (सगेभाई) की ॥ १३ ॥ १७ मेरा छोटा भाई १८ यवनों की सेना ॥ १४॥

बनैं जग तो वेगही, हुलकर करहु सहाय ॥
सुनि मलार स्वीकार किय, बहु सतकार बढाय ॥ १५ ॥
तदनु तीन३ अजमेर तजि, लग्गे बुंदिय राह ॥
बिचतैं पलटि भनायपुर, गो सभर नरनाह ॥ १६ ॥
ही सपत्न जननी१ तहाँ, अरु ऊदाउति नारि२ ॥
मिलि तिनसौं पच्छो मुरयो, बुंदी विलसन धारि ॥ १७ ॥
मिलि माधव१ मल्लार २ सन, पुनि किय सैजव प्रयान ॥
तीन३न सरित बनास तट, दिन्नैं आनि मिलान ॥ १८ ॥
उज्ज्वल पख ईसमास तँहँ, बुट्ठे जलद कराल ॥
चढी सरितकी ओट करि, पलटे पच्छे खाल ॥ १९ ॥
दल विच जल गलवघ्ने बढि, थिथरयो डेरन बोय ॥
पानी१पवन२ तुपार३ करि, मरे मनुज सत दोय२००॥२०॥
दूजे२दिन आवाँ नगर, पत्ते जल भय पाय ॥
टोडा त्यों पठयो जु दल, मिल्यो सु तत्थहि आय ॥ २१ ॥
सुखतैं रहि नवरत्त९ सब, तीन३न बितये तत्थ ॥
अष्टमि८ दिन मल्लार इक१, मगायो महमत्त ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

दूतन दिस दिस दोरि हठन हेरयो इक१ कासर ॥
तीन३ तीन३ बल वक्र पेंटल गति सग पिट्ठिपर ॥
अरुन अंखि अतिकोप दिपत उल्मुक चमकावत ॥
स्वास नैंस सननकि धरनितल पयन घुमावत ॥

॥ १५ ॥ १ जिस पीछे ॥ १६ ॥ १७ ॥ २ स्त्री ॥ १८ ॥ ३ आश्विन मास भयंकर ४ मेह बरसा ५ नदी के पानी की रोक से नाले पीछे मुडे ॥ १९ ॥ ६गले पर्यंत ७ ठंड से ॥ २० ॥ २१ ॥ ८ मदमस्त ॥ २२ ॥ ९ महिष (भैंसा) १० पीठ पर छापे हुए तीन तीन बलवाले टढे सींग ११ अंगीरे के समान आंखें चमकाता हुआ १२ नाकों से श्वास बजाकर

नहि सहन महन ओरन नेदन गवल जानि उद्धत अरिय ॥
मानहु विहाय कालहिँ कुपित संजमनी सन उत्तरिय॥२३॥

॥ दोहा ॥

आन्यौ अडर लुलाय वह, देवी हित बलिदैन ॥
झारी असि हुलकर झपटि, लगी जैनमत लैन ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

सिंगन लगि समसेर तरकि तुट्टी हुलकर कर ॥
तब जरंत गुन तोरि चल्यो दारुन छुटि दुद्धर ॥
देखत यह हय दपटि झपटि संभर असि झारिय ॥
सिंगन जुगल समेत वंस सह पिट्ठि विदारिय॥
अरराय मैंह सु इम खाय असि पाय उलटि कटि खुलि पर्‍यो ॥
छुव लखि अचिज्ज मरहट्ठ दल इत देखिय बलि अद्दर्‍यो २५.

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे प्रस्थापितकूर्म्मराजमल्लारो १ म्मेद २ माधव ३ पुष्करा ऽऽगमनमरुराजाऽभयसिंहमिलनाऽनन्तरत्रय३ प्रत्यागमनदृष्टभखाय पुरबुंदीन्द्र १ सहितहुलकर २ कूर्म्म ३ वाशिष्ठीतटमपतनाऽकाला-ऽऽसारवर्षणाशिविरसंप्लवनमितमानवमरणासर्वसैन्याऽऽत्रापुरनिवस-

१ अपने से बडे किसी अन्य का नाद सहन नहीं करता इसी कारण मानों २ दोनों सींग ऊपर अडे हैं ३ यमराज को छोड़कर क्रोधित हो ४ यमराज की पुरी से उतरा है ॥ २३ ॥ ५ भैंसा ६ जैनियों के मत (अहिंसा धर्म) को लेने लगी अर्थात् उस भैंसे का कथा नहीं कटा ॥ २४ ॥ ७ वह भैंसा रस्सी तुड़ा कर ८ दोनों सींगों सहित ६ पांसे के हाड सहित १० महिष ॥ २५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में ईश्वरीसिंह का प्रस्थान कराकर मल्लार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह का पुष्कर आना १ अभयसिंह से मिले पीछे तीनों का पीछा आकर भखायपुर को देख कर बुन्दी के पति सहित हुलकर और कछवाहे (माधवसिंह) का वनास नदी के किनारे मुकाम करना २ विना समय मेघ धारा के वर्षने से डेरों में जल भर कर थोड़े मनुष्यों का मरना और सब सेना का आंवां नामक नगर में

नाऽऽश्विनोत्तरनव ९ रात्रपूज्यपूजनविधानबुन्दीन्द्रतिरस्कृतमल्लारमरडलाग्रमहामहिषनिपातनविश्वेश्वरीबलिनिवेदन षड्विंशो २६ मयूख ॥ २ ॥ ॥३०७॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

किन्नों बुंदिय तजनको, कत्तिय विसेद करार ॥
यों बहु दिन आवाँ रहे, माधव१ इडु२मल्लार३ ॥ १ ॥

॥ षट्पात ॥

कन्या६ कों रवि भुग्गि अस तुल७के लिय पद्दह१५ ॥
प्रतिदिन सीत प्रगल्भ होत बालन विनु दुस्सह ॥
आवाँपुर इहिं काल हडु१हुलकर२ अरु माधव३ ॥
दीपं अमा१० करि दान अन्नकूटक किय उच्छव ॥
धव१ छव२ अन्त्यानुप्रास १ ॥
मिलि तत्थ विप्र गंगाधर१ सु खत्री केसवदास२जुत ॥
करि मंत्र आनि भूपहिं कहिय सुनहु वत्तबुध सिंह सुत॥२॥

पादाकुलकम् ॥

कासी विच सुरजन नृप संभर, रचिय राजमंदिर निकाय वर॥
सो पंडित सूरजनारायन, मगत रहन काम द्विज नुति मन॥३॥
यन१ मन२ अन्त्यानुप्रास १ ॥
वह आलयं निज काम न आवे, पुराय बढें जो वह द्विज पावें॥

निवास करना १ आश्विन के शुक्ल पक्ष में नवरात्रि में पूजन योग्य (देवी) पूजन के उचित बुन्दी के पति का मल्लार के खड्ग का तिरस्कार करनेवाले महिष को मारना और देवी के बलि देने का छब्बीसवां २६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ सात ३०७ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक सुदि पक्ष में २ इस कारण ॥ १ ॥ सूर्य ने १ कन्या संक्रांति को भोगकर ४ प्रयत्न ५ स्त्रियों के बिना ७ दीवाली की अमावास्या का दीपदान करके ॥ २ ॥ ७ बहुवाच ८ श्रेष्ठ मंदिर (मकान) ६ स्तुति के मन से ॥ ३ ॥ १० स्थान

सुनि नृप कहिय पुराय तीरथ थल, है नहिं *देय बिचारि लखहु भल ॥ ४ ॥

सूरजनारायन द्विज †उद्भट, अद्वितीय तिन दिनन हुतो पट ॥
खट ६ नास्तिक ‡प्रतिभट बनि खंडैं, मत खट ६ आस्तिक दृढ करि मंडैं ॥ ५ ॥

सौत्रांतिकन१ समूल उखारैं, बैभाषिकन२ सजोर बिढारैं ॥
योगाचारन३ लखत उडावैं, माध्यमिकन४ मिलि गरब गुमावैं ६
जैनन५ जाल राहु गति ग्रासैं, लोकायतिकन६ मुंडि निकासैं ॥
व्यास१ अ र२ बेदांत बिचारन, गोनर्दीय२ योग अवधारन ॥७॥
दूजो कपिल३ सांख्य बिच सोहैं, मीमांसा जैमिनि४ मति मोहैं
द्विज पर अपर न्याय बिच गोतम ५, वैशेषिक वादी कणाद६ सम ॥ ८ ॥

कासी बिच पंडित पट ऐसो, करैं बाद जासौं बुध कैसो ॥
अगैं पट तंते गंगाधर, गो न्हावन कासी तीरथ बर ॥ ९ ॥
जवनन जानि गहन दल प्रेर्यो, पंच५कोसि अंतर तिन हेर्यो
तंते तब सूरजनारायन, रक्ख्यो सरन छिपाय प्रीति पन ॥१०॥
पुनि छन्नैं दक्खिन पहुँचायो, पट उपकृत तंते उर आयो ॥
पुनि राजामल मित्र सु पंडित, अग्र रह्यो हित दुहुँन२अखंडित।११।
जब जयसिंह नगर बुंदिय लिय, सालमसूनु अंत्थ पुनि अप्पिय
तबहिं राजमंदिर तीरथ थल, मित्र द्विजहिं दिन्नैं राजामल।१२।

---

* देने योग्य नहीं है ॥ ४ ॥ † ब्राह्मण के कुल में जन्म लेनेवाला ‡ छःहों नास्तिकों का शत्रु होकर खण्डन करता था, इन छहों नास्तिकों के नाम छठे छन्द में बताते हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ १ दिगंबर, २चार्वाक ये छहों भेद नास्तिकों के हैं, अब आगे छः आस्तिक बताते हैं १ वेदान्त के विचारने में दूसरा वेदव्यास ४ पतंजलि के समान योग का धारण करता है ॥ ७ ॥ ८ ॥ ५ पंडित ॥ ९ ॥ ६पकड़ने को सेना भेजी ७काशी की पुण्य भूमि की सीमा पांच कोस की है ॥ १० ॥ ८ उपकार ९ वह पंडित राजामल का मित्र था ॥ ११ ॥ १० साल-

तबतैं रही विप्रकै वह भुव, अब उम्मेद लई बुंदिप ध्रुव ॥
केसव१ अरु गंगाधर२ यातैं, बुल्ले नृपहिं विवावन बातैं ॥१३॥
पच्छपात इनको नृप जान्यौं, पुनि वह तीरथ थान प्रमान्यौं ॥
द्विज वह पात्र कह्यो बुंदीपति, पै किम होय *अदेय देन मति१४
तब दोउन२हुलकर प्रति अक्खी, रहैं टेक यह प्रभु तव रक्खी
सुनि मल्लार_बुल्ल्यो जिनकी भुव, तिनके दयैं बिनाँ न मिलैं
ध्रुव ॥ १५ ॥
तब दोउन२ छन्नैं छल किन्नौं, हुलकर नाम पत्र लिखि लिन्नौं
ताहीकी मुद्रा मुद्रित करि, पठयो दलें पंडित हित अनुसरि॥१६॥
तिहिं बुध लखि हुलकर दल आयो, बहुरि राजमंदिर अपनायो
नृप यह कथ चिरकाल माँहिं सुनि, जब जानी तब छिन्निबयो
पुनि ॥ १७ ॥
भट सेटूखड़राड़ सु हुलकर, बुंदिपपुर अग्गहि पठयो बर ॥
तिहिं करार अवसेस न धारयो, कूरम झंडा तोरि बिडारयो ।१८।
सांभर बहरकं मंडि सुहाई, फेरी पुर उम्मेद दुहाई ॥
जैपुर सचिव तत्यहो जाकैं, धूगत संतत परी उर धाकैं॥१९॥
॥ सचरणगद्यम् ॥
झंडा तूटतही जैपुरके सूरबीर बुन्दी हे तिननैं अपनी चढी तलब को लैबो विचार्यो ॥
अरु बनिक जादूदास नाटानीको भानेज आमेर अधीस ईश्वरीसिंह उहाँ अमात्य रक्ख्योहो तापैं त्रास डार्यो ॥
तब वह बनिक घरके सूरनतैं घबराय बंनिताके बस्त्र धरि छन्नैं

मसिंह के पुत्र दलेलसिंह के अर्थ ॥ १२ ॥ १३ ॥ * नहीं देने योग्य में देने की बुद्धि कैसे होती है ॥ १४ ॥ १५ ॥ १ हुलकर की छाप लगाकर १ पत्र ॥ १६ ॥ उम्मेदसिंह ने यह १कथा २बहुत समय पीछे सुनी ॥ १७ ॥ १करार के दिन बाकी हैं सो नहीं मोचा ॥ १८ ॥ १बहुराय की २डराओ ३निरन्तर ४भय ॥ १९ ॥ ६ स्त्री के

कढि आवाँनगर गयो ॥
अरु खत्री केसवदाससौं अपनी आपत्तिको उदंत कहत भयो ।२०।
कही सेटूखइराड़ करारके दिन अठ्ठ८ *अवसेसहै †तथापि आमेर ईसको झंडा तोरिडारयो ॥
अरु यह जानि अपनैं सूरबीरन चढ्यो हक लैबेकौं मोमैं त्रास पारयो

यह सुनतही खत्री केसवदास मलारतैं रूठि चल्यो ॥

तब नीठिनीठि पच्छो मनाय हुलकरनैं सुतर सवार तत्कालही बुन्दी मुक्कल्यो ॥ २१ ॥

तानैं जाय नगरमैं बहोरि कछवाहनको केतन[1] रुपायो ॥

यह देखि चोतरफके लोकनके बुंदी आपबेमैं संदेह आयो ॥

तदनंतर करारके दिन पूरे होत आवाँ नगरतैं पृतना[2]को प्रयान भयो ॥

अरु ऊँज्ज[3] अहर्ग्गनके अवर्दात अर्द्धकी अष्टमी ८ के अह दंग दुबलान मिलानं[6] दयो ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

दूजे दिन दुबलानतैं, किन्नौं सवन प्रयान ॥
संभरकौं हुव सकुन सुभ, थिर रक्खन निज थान ॥ २३ ॥
बाम दिसा रहि राजसुक१, बुल्ल्यो मोदित बानि ॥
लावक१ क्क्कर२ चकोर३ ए, अग्रेसर हुव आनि ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

ताम्रचूड़[9]२ हुव बाम बाम बुल्लिय प्रसन्न खर३ ॥
गंधनकुल[10]४ पुनि खैनक[11]५ बाम हुव भोलि[12] ६ मधुर स्वर ॥
गहकि बाम गोमायु[13] ७ बाम सारस ८ बैंलि[14] बुल्लिय ॥

॥ २० ॥ *बाकी है †तोभी ॥ २१ ॥ १ झंडा २ सेना का ३ कार्तिक मास की ४ आधे शुक्ल पक्ष की ५ दिन ६ मुकाम ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ७ राजसुआ नामक पक्षि विशेष ८ लावा और तीतर आगे को बोले ॥ २४ ॥ ९ मुरगा १० छछुन्दरी ११ चूहा १२ ऊंट १३ शृगाल (गीदड़) १४ पुनि

सवली९ टिट्टिभ१० सुखद वाम मुल्लि रु हित खुल्लिय ॥
गोवेंतस११पुंछपसूची१२ वहुरि एह्न पच्छिं दुव२ वाम हुव ॥
दिस सव्प भयो पारावत१३ह्न देन भूपहितधाम धुव॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

वायस१४ खुल्लिय वाम पुनि, खुल्लिय वाम तुरग१५ ॥
वाम वग्घ१६ मृगराँज१७वलि, हुव तरच्छु१८ हित सग॥२६॥

॥ षट्पात् ॥

फेट१ विहंग अपसव्य भयउ अपसव्य कपिंजर२॥
पिंगलिका३ अपसव्य भैरद्वाज४ह्न विहग बर ॥
दक्खिन हुव पुनि दहिकें५ भौंस६ दक्खिन रैंव भासत॥
सलिल पूर अंपसव्य कलस७ अतिलाभ प्रकासत ॥
दिस वाम हिंतुं दक्खिन सरल तारा उत्तरि पोदकिंय१ ॥
सुभ सकुन होत इत्यादि सब चाहुवान भूपति चलिय॥२७॥

॥ दोहा ॥

हुलकर१ माधव२ हक्क नृप३, इकें संत्वर तत्त ॥
पुर खुदिय प्राकारके, वाहिर डेरन पत्त ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

नृप तद्दिन भोजन निर्म्मायें, खुदिय विप्र सबहि जिम्माये ॥

---

१ टीटोडी २ पक्षि विशेष ३ पक्षि विशेष ४ पक्षी ५ कपोत भी वाम दिशा में हुआ ॥ २५ ॥ १ बाघ (सिंह विशेष बघेरा) ७ सिंह और चीता बाया हुआ ॥ २६ ॥ ८ फट नामक पक्षी ९ दाहिना हुआ १० चातक (पपीहा) ११कोचर पक्षी दाहिना हुआ१२भरदुल (पक्षि विशेष १३अग्नि (लाग) १४गीध १५शब्द से शोभित हुए१६दाहिनी ओर जल पूरित घड़ा१७वाम दिशा से दक्षिण दिशा में१८काली चिड़ी सीधी उतरी और१९शकुनचिड़ी (रूपारेल) भी दाहिनी उतरी तारा और पोदकी आदि जितने शकुन यहां लिखे हैं इनका वर्णन 'वसन्तराज' नामक शकुन शास्त्र में बड़े विस्तार से लिखा है उतना यहां नहीं लिखा जासक्ता इस कारण पाठक लोग वहां देखें वह सटीक छपगया है ॥ २७ ॥ २० शीघ्र २१ डेरों में पहुंचे ॥ २८ ॥ २२निर्मापे (बनवाये)

हुलकर पुनि नारव हरनाथहिं, कहि कछहु किल्ला सन साथहिं २९

॥ दोहा ॥

नारव हिय चाही नहीं, भट कछुनकी बत्त ॥
बाहिर प्रीति दिखाय वलि, पठयो अनुचर तत्त ॥ ३० ॥
ताकी संगहि बाउला, संतू दिय मल्लार ॥
ताशगढ पर जाय ते, खुल्ले कठन बिचार ॥ ३१ ॥
किल्लाके सुभटन कहिय, हम निकसन जय छेंहिं ॥
नारव हरनाथहिं लखहिं, बहुरि चढ्यो ठक लेंहि ॥ ३२ ॥
तब संतू पच्छो मुरयो, कहिय मल्लारहिं आय ॥
नारव यह वंचक निपट, भटनन कहत जाय ॥ ३३ ॥
दिन्नी संतुव संग तब, हुलकर तुपक हजार१००० ॥
इन जाय रु हरनाथ वह, लिन्नों पकरि लवार ॥ ३४ ॥
तिनकी संगहि कैद तब, नारव किल्ला जाय ॥
भीतरके कहे सुभट, खल परतंत्र खिसाय ॥ ३५ ॥
माँहिं बीर उम्मेदके, रक्खे बिजय बिथारि ॥
आयो संतुव पुनि अधर, संभर आन प्रसारि ॥ ३६ ॥
सित कत्तिय द्वादसि१२ दिवस, कढ्यो कूरम सत्थ ॥
रक्खे इहु नरेसके, सबठाँ सुभर समत्थ ॥ ३७ ॥
झंडे संभरके गडे, पर केतन करि पात ॥
आन फिरी उम्मेदकी, दिस दिस बिजय दिखात ॥ ३८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

तेरसि१३ दिन अभिषेक मुहूरत, मन्न्यों सबन श्रेय गणकन मत
बेणीराम भट्ट कोटा सन, आयो करन बेद बिधि सासन ॥३९॥

---

१ नरूके हरनाथसिंह को ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ २ चढी हुई तनखा ॥ ३२ ॥ ३ बहुत ठग है ॥ ३३ ॥ ४ लबाळी (बहुत झूठ बकनेवाला) ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ नीचे ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ६ शत्रु की ध्वजा को गिराकर ॥ ३८ ॥ ७ ज्योतिषियों के मत से

रहित अथर्व त्रयी३के पाठक, आनें संग विप्र बुध आठक८ ॥
सम्मुह जाय भूप वदन किय, उन सिराहि मंगल्ल आसिख दिय॥४०॥

॥ दोहा ॥

ले गुरु डेरन आय नृप, वासरि रत्ति विताय ॥
प्रात चढत रवि इक१ पहर, प्रविस्यो नगर सुभाय ॥ ४१ ॥
हुलकर१ माधव२ संग हुव, जैपुर सचिव समेत ॥
चहुवानन पति इम चल्यो, निज अभिषेक निकेत ॥ ४२ ॥
मड्यो वनिकन नगर मनि१, वसन२ कनक३ विसतार ॥
विरह टारि धृति१८ बरसको, किय बुंदिय शृंगार ॥ ४३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे आरापुरसर्वनिवसनकांत्तिकव्यत्ययनगंगाधर १ केशवदास २ शास्त्रिगिरीमणिसूर्यनारायणराजमन्दिरदापनकथनतद्बुन्दीन्द्राऽनूरीकरणानन्त १ खत्रिरक्षोद्धकपतदर्पणमल्लारसेटूबुंदीमेषणातदकालकूर्मकेतनत्रोटनबुन्दीन्द्रध्वजाऽऽरोपणपत्नाइतनष्टाणिभागिनेयोक्तकुपितकेशवदासनिरसरणहुलकरतदनुसरणपुन पुरजयपुरपताकीकरणासमयान्तमर्वप्रस्थानदृष्टशुभशकुनबुन्द्याऽऽगमन

॥ ३९ ॥ १ तीनों वेदों के ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ अपने अभिषेक के स्थान में ॥ ४२ ॥
१ वनियों ने २ वस्त्रों और ३ सुवर्ण को फैला कर ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्र में सबका आरा नगर में ठहर कर कान्ती पिलाना और गंगाधर व केशवदास का शास्त्रि शिरोमणि सूर्य नारायण के अर्थ राज मन्दिर देने को कहना और बुन्दीपति के अस्वीकार करने पर उनके गंगाधर और खत्री केशवदास का उस को छल से देना १ मल्लार का अपने उमराव सेटू फैराला को बुन्दी भेजना और उसका विना समय कछवाहे की ध्वजा तोड़ कर बुन्दी के पति की ध्वजा रोपना २ भागे हुए नाहराणी के भानजे के कहने पर क्रोध करके निकले हुए केशवदास का हुलकर का पीछा जाना और बुन्दी नगर को फिर जयपुर की ध्वजा युक्त करना ३ करार के समय के अन्त पर सब के गमन समय शुभ शकुनों को देखकर बुन्दी आना ४ मल्लार का यत्न पूर्वक मरूके को गढ से

मल्लारबलात्कारदुर्ग्गनारवनिस्सारणसूच्चूलसम्भरविजयकेतुस्थापनसंप्रदायगुर्वागमनकार्त्तिकशुक्लत्रयोदशी १३ दिनद्वितीय २ प्रहरमुखसाहित्यसहितप्रभुपुरप्रविशनं सप्तविंशो मयूखः ॥ २७ ॥३०८॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इम उमेद अधिपति लखत, निज पुर रुचिर निकेत ॥
पहुँच्यो अग्ग प्रजानकौं, दिट्ठि प्रसादहिँ देत ॥ १ ॥
जहाँ समरखंधी हन्यौं, नृप नारायनदास ॥
वहै थान अभिसेककौ, राजमहल आवास ॥ २ ॥
तिहिँ मंदिर नृप जायकैं, निज कटिबंध निवारि ॥
किय बिधान बिप्रन कथित, बेद निकेत बिचारि ॥ ३ ॥

अथसंक्षिप्तोऽभिषेचनविधिः ॥

तिल सरिसव संभारतैं, पहिलैं नृपहिँ न्हवाय ॥
अधिपति जय उच्चार किय, गणक१ पुरोहित राय२ ॥ ४ ॥
तदनंतर द्विजवर उभय२, जीवन१ऋतुवराम१ ॥
इतरासन बैठे नृपहिँ, स्वजन दिखाये ताम ॥ ५ ॥
नृप तिन जनन बिसासि अरु, बंधन सुरभी छोरि ॥
संभरपति बुल्ल्यो अभय, बिप्रन उचित बहोरि ॥ ६ ॥

निकाल कर चहुवाण की ऊंची ध्वजा को स्थापन करना२ संप्रदाय के गुरु के आगमन से कार्तिक शुदि तेरस के दिन दोपहर के आदि में सब सामग्री सहित राजा के पुर में प्रवेश करने का सत्ताईसवां२७मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ आठ ३०८ मयूख हुए ॥

१ दृष्टि से प्रसन्नता देता हुआ ॥ १ ॥ जहां पर बुन्दी के राजा नारायणदास ने २ समरखंधी नामक यवन को पहिले समय में मारा था ॥ २ ॥ ३ वेद का स्थान ॥ ३ ॥ अब संक्षेप से अभिषेक की विधि कहते हैं ४ सरसों (धान्य विशेष) ५ समूह से ॥ ४ ॥ ६ दूसरे आसन पर ७ तहां अपने लोकों को दिखाये ॥ ५ ॥ ८ गौ का बंधन छोड कर ९ चहुवाणों का राजा उम्मेदसिंह ॥६॥

पुनि तँहँ सांक्री साति किय, पुरोहित स उपवास ॥
बिसद माल उपबीत इहिं, भूखन सोभित भास ॥ ७ ॥
उचित मत करि बेदि लिखि, बिधिवत होम विधाय ॥
पढँ पंच५ गन नाम तिन्ह, सुनहु राम नरराय ॥ ८ ॥
शर्मवर्म१ अरु स्वस्त्ययन२, आयुष्य३ अभय४ नाम ॥
स्वापराजित५ जु पंचम सु, ए पंच५हि प्रभु राम ॥ ९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कलस बहुरि संपातवान किय, पुरट मय रु सुदर दरसन प्रिय ॥
नृप सितभूखन लेप माल्य लहि, तदनु वन्हि सन दक्खिन दिस रहि ॥ १० ॥
देख्यो वन्हि निमित्त बिचारन, उठ्यो प्रसन्न सिंखा करि धारन ॥
स्नानसाल पुनि नृपहिं आनि द्विज, सौरभ तैलँ न्हवायो नृप निज ११

॥ दोहा ॥

सोध्यो पर्वत अग्रकी, मिट्टीतैं नृप मत्थ ॥
नाकु अग्रकी मृत्तिका, लाई श्रवनन तत्थ ॥ १२ ॥
हरिमंदिरकी मृत्तिका३, नृप उमेद मुख लाय ॥
इंद्रध्वज थल मृत्तिका४, ग्रीवाँ दिन्न लगाय ॥ १३ ॥
राजअजिरकी मृत्तिका५, हिय लाई करि खंड ॥
गजरद उद्धृति मृत्तिका६ सोधे दुवर भुज दंड ॥ १४ ॥

---

१ इन्द्र की शान्ति की ॥ ७ ॥ २ करके ३ हे राजा रामसिंह सुनो ॥ ८ ॥ ९ ॥ ४ सोने ५ घड़े को धारा युक्त किया (अर्थात् घड़े से राजा पर जल डाला) ६ सोने का ६ हीरों का आभूषण ७ जिस पीछे ८ अग्नि से ॥ १० ॥ ९ अग्नि का शकुन देखा १० ज्वाला धारण करके उठा ११ स्नान करने के महल में १२ सुगंधिवाले तैल (इत्र) से ॥ ११ ॥ १३ राजा के मस्तक को १४ उदेई के थाम स की मिट्टी १५ कानों के लगाई ॥ १२ ॥ १६ वर्षा ऋतु में इन्द्रधनु उदय होवे उस स्थल की अथवा वर्षा के निमित्त यज्ञ किया होवे उस स्थल की मिट्टी १७ गरदन के लगाई ॥ १३ ॥ १८ राज्य के आगन (चौक) की १९ हाथी के दांत से

मिट्टी७ आनि तड़ागकी, सोधी पिट्ठि समस्त ॥
नदि संगमकी मृत्तिका८, लाई उदर प्रसस्त ॥ १५ ॥
नदी कूल दुवर मृत्तिका९ पंसुलीन दुहुँ ओर ॥
मिट्टी१० गनिका द्वारकी, लाई कटि नृप मोर ॥ १६ ॥
गजसालाकी मृत्तिका११, ऊरू उभय सुधराय ॥
गोसालाकी मृत्तिका १२, दुवर नलकालीन लाय ॥ १७ ॥
आनि अंकुरा मृत्तिका१३, पिंडी जुगल पखारि ॥
रथ अरिउद्धृत मृत्तिका १४, लै दुवर चरन सुधारि ॥ १८ ॥
सर्व अंग पुनि सर्व ए१४, मिश्रित करि लिपटाय ॥
पंच५ गंव्य घटतैं बहुरि, कीनों स्नान कराय ॥ १९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

भद्रासन बैठो पुनि भूपति, लगे पढ़न द्विज वेद महामति ॥
च्यारि ४ वरन ज सचिव च्यारि ४ जहँ, करन लगे अभिसिक्त भूपकहँ ॥ २० ॥
पूरब१ दिस रहि दयाराम द्विज, घृत कनक घट१ सिंच्यो नृप निज॥
हरवाउत नाहर २ दक्खिन २ रहि, सिंच्यो रजत दुग्ध कलस २ गहि ॥ २१ ॥
षट्टु गोविंद३ वनिक रहि पच्छिम३, सिंच्यो दधि ताम्र घट३ जे तिस॥
रहि उत्तर ४ हरजन ४ दासी सुत, सिंच्यो लै मिट्टी घट ४ जल जुत ॥ २२ ॥

उठी हुई ॥ १४ ॥ १ तलाब की ॥ १५ ॥ २ नदी के किनारों (ढावों) की कमर के ३ लगाई ॥ १६ ॥ ४ जंघाओं के ५ पैरों की नलियों के लगाई ॥ १७ ॥ ६ हय शाला की ७ दोनों पींडियों के ८ रथ के पहिये से उठी हुई ॥ १८ ॥ ९ मिला कर १० घृत, दूध, दही, खांड और सहत (मधु) इन के सामिल का नाम पंचगव्य है ॥ १९ ॥ ११ सिंहासन पर १२ ब्राह्मणादि चार वर्ण से उत्पन्न १३ अभिषेक युक्त ॥ २० ॥ १४ घृत से भरेहुए सुवर्ण के घड़े से १५ नाहरसिंह दूध से भरेहुए १६ चांदी के कलश से ॥२१॥ १७ दही से युक्त तांबे के घड़े से

रक्खहु*बन्हि †सिदस्यन उच्चरि, पुनि द्विज घट‡सपातवान करि॥
राजसूय अभिसेक मन्त्र कहि, सिंच्यो नृपहिं पुरोहित हित चहि २३
पुनि व्है वेदीमूल पुरोहित, आप नृपति ढिग सुभ मति सोहित॥
सत१०० छिद्रक सपातवान घट, लै पुनि सिंचिय नृपहिं विहित बेट॥ २४॥
सर्वौषधि१जल पुनि सिर सिंचिय, गंध उदक२अभिसेक बहुरिकिय॥
तदनतर बीजा३भिसेक हुव, पुष्पन४ सिंच फलन५सिंच्यो धुव२५
रत्नन६ पुनि कुसजलन७ सिंचि द्विज, वहुरि कुसन मार्जित किय नृप निज॥
ऋग१वेदी पुनि विप्र मुदित मन, नृप सिर कंठ लगायो रोचन २६
च्यारि४ वरन जल बहुरि रीति करि, सरित१ तड़ाग२ कूप३ जल ४ घटभरि॥
कल्पित ठानि च्यरि४सागर जल, सिंच्यो नृपहिं निगम मारग भल
गंगा१अरु जमुना२गिरि निर्भर३, इत्यादिक जल पूरि कलस बर
सिंच्यो नृपहिं समोद समस्तन, दास भाव पुनि करन लगे जन२८
काहू सचिव छत्र१ गहि लिन्नौं, काहू चमर२ मोरछल३ किन्नौं॥
वेत्र लौकुट४ कतिकन कर धारे, बंदिन[१२] नाना बिरुद बियारे।२९।
भई सख नउचत्ति गान ध्वनि, द्विजन सिराह्यो नृपहिं वेद भनि॥
कनक कलस पुनि गैंणक धारि कर, सिंच्यो भूपहिं अक्खि मन्त्र बर॥ ३०॥

॥ २२॥ †यज्ञ करने वाले ऋत्विजा ने कहा कि * अग्नि रक्षा करो यह कहकर फिर ब्राह्मण ने ‡ घड़े को धारा युक्त किया॥ २३॥ १ उचित मार्ग से ॥२४॥ २ सब औषधियों से युक्त ३ सुगंधि के जल से ४ बीजों का अभिषेक ॥ २५ ॥ ५ डाभ के जल से ६ अभिषेक ७ गोरोचन ॥ २६ ॥ ८ चारों समुद्रों के जल की कल्पना करके ९ वेदमार्ग से ॥ २७ ॥ १० पर्वत के झरने का ॥ २८ ॥ ११ बेत की छकड़ी (छड़ी) १२ भाटों ने ॥ २९ ॥ १३ ज्योतिषी ने ॥ ३० ॥

प्रायःसंस्कृतशब्दमात्रामिश्रितभाषा ॥

ते कछु वृत्तन बिबिध बनाये, सुनहु राम नृप नृपन सुहाये ॥
सिंचहु सब सुर तोहि नरेश्वर, ब्रह्मा बिष्णु२ तथैव महेश्वर ॥ ३१॥

रेश्वर१हेश्वर२ अन्त्यानुप्रासः१ ॥

वासुदेव१ अरु संकर्षण२ पहु, प्रद्युम्न ३ रु अनिरुद्ध ४हु सिंचहु ॥
इंद्र१ अग्नि२ यम३ निर्ऋति४ पासी५, पवन ६ धनद ७ कैलासबि-
लासी८ ॥ ३२ ॥

ब्रह्मा९सेस१०दस१०हि दिकपालक, रक्खहु तोहि भूप अरिसालक॥
रुद्र१ धर्म२ मनु३ दक्ष४ रु रुचि५ सुनि, श्रद्धा६ भृगु७ अत्रि ८ रु
वशिष्ठ९ मुनि ॥ ३३ ॥

सनक१० सनंदन११ सनतकुमार १२हु, पुलह१३ पुलस्त्य१४ मरी-
चि१५ तथा पहु ॥
कश्यप१६अरु अंगिरा१७प्रजापति, ए सिंचहु नृप तोहि महामति ३४
अग्निष्वात्त१ प्रभाकर२ ज्यौंही, पुनि क०याद३ बर्हिषद४ त्यौंही ॥
राज्यप५रु उपहूत६सु काली७, अग्नि पितर सिंचहु मणिमाली३५
लक्ष्मी१ बेदी२ सची३ ख्याति४ पुनि, अनसूया५ स्मृति६ संभूति७
हु सुनि ॥
क्षमा८ प्रीति९ सन्नति१० स्वाहा११ तिम, स्वधा१२ एहु मातर सिं-
चहु इम ॥ ३६ ॥
लक्ष्मी१ क्रिया२ कीर्ति३ धृति४ पुष्टि५हु, मेधा६ बुद्धि७ सांति८ ब-
पु९ तुष्टि१०हु ॥
लज्जा११ सिद्धि१२ तथा बसु१३ यामी १४, अरुंधती१५ लंबा १६
नृप नामी ॥३७ ॥
भानु१७मुहूर्त्ता१८विश्वा१९साध्या२०,मरुत्वती२१हु बहुरि आराध्या

---

१ कुछ छन्दों में २ देवता ३ इसी प्रकार ॥ ३१ ॥ ४ वरुण ५ कुबेर ॥ ३२ ॥
॥ ३३ ॥ ६ प्रभु ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ७ आराधन की हुई

सकलपा२२इत्यादि*धर्मतिय, सिंचहु सभर तोहि सुजसप्रिय ।३८।
दिति१ दनु२ अदिति३ अरिष्टा४ अरु मुनि ५, कद्रू ६ क्रोधवशा ७ माधा८ सुनि ॥
विनता९ सुरभि१० रु कपिला११ काला१२, इतिमुख सिंचहु कश्यप बाला ॥ ३९ ॥
पुनि बहुपुत्र सुपुत्रा भामा१, करहु विजय तव बहुरि सयामा१ ॥
विजय कृशाश्व वधू१ निरचहु उत, सुप्रभा१जया२प्रदर्शना३जुत ।४०।
तिनको पुत्र१हु विजय बढावहु, सिंचहु भूप तोहि हित लावहु ॥
भानुमती१रु विशाला२त्यों पुनि, मनोरमा३रु बाहुदा४रूपा४सुनि४१
सिंचहु इती अरिष्टनेमि तिय, पार्थिव तोहि बढावहु हित हिय ॥
बहुला१ त्योंहि रोहिणी२ राधा३, अनुराधा४ऐंद्री५हतबाधा ॥४२॥
मूल६ रु दुव२आषाढा८ ज्योंही, अभिजित९ श्रवण १० धनिष्ठा ११ त्योंही ॥
वरुण तारका१२ भाद्रपदा१४ दुव२, रेवती १५ रु दस्रभ १६ भरणी१७ ध्रुव ॥४३॥
विजय विथारन काज तोहि पहु, सुधामयूख प्रिया ए सिंचहु ॥
मृगी१हरि२रु मृगचर्मा३सुरभा४, पूता५कपिला६दंष्ट्रा७सुलभा८ ।४४।
स्वेतभद्रचरिका१ पुलस्त्य तिय, इती सोहि सिंचहु पुहवीपिय ॥
श्येनी१अरु भासी२क्रौंची३तिम, धृतराष्ट्री४पचमी सुकी५तिम।४५।
दिनकर सूत अरुनकी ए तिय, सिंचहु इह तोहि करि हित हिय॥
आपति१निपति२रात्रि३निद्रा पहु४, सब संस्थान हेतु ए सिंचहु।४६।
सेना१उमा२सची३रु बनस्पति४, धूमोर्णा५ गौरी६ शिवा७निरति८
ज्योत्स्ना९ बुद्धि १० नंदिनी११मलया १२, आनृक्या१३हु तेरहीं १३

*धर्म की स्त्रिया ॥ ३८ ॥ १ इत्यादि २ कश्यप की स्त्रियां ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ३ हे राजा ४ पीड़ा मिटानेवाली ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ५ चंद्रमा की स्त्रिय ॥ ४४ ॥ ॥४५ ॥ ६ सूर्य के सारथि ७ स्थिति के कारण ॥ ४६ ॥

सवैया ॥ ४७ ॥

इतो कालके अवयव जानहु, ते तव सिर अभिसेचन तानहु ॥
अत्रि१ ससि२ कुज ३ बुध ४ गुरु५ कवि६ सनि ७ तमै८, सिंचहु ए
ग्रह नव६ आहिक९ सम ॥ ४८ ॥

स्वायंभुव१ स्वारोचिष२ औत्तम३, तामस४ रैवत ५ चाक्षुष ६ छम
वैवस्वत७ सावर्णि८ दक्षसुत९, ब्रह्मसुत१० रु मनु धर्म सुत ११हु
नुत ॥ ४९ ॥

रुद्रपुत्र१२ पुनि रौच१३भौत्य१४पहु, ए मनु तोहि चतुर्दश१४सिंचहु॥
विश्वभुक१ रु विश्वप२ चित्र३हु सुनि, बहुरि सुशांत४ सुमुख विभु
५ त्यों पुनि ॥ ५० ॥

मनोजव ६ रु ओजस्वी७ बलि८ जुत, एकतम९ रु अंतिक१०पुनि
वृष११ नुत ॥
कृतिधामा१२ रु दिविस्पृक१३ सुचि१४ पहु, देवपाल ए चउदह १४
सिंचहु ॥ ५१ ॥

अरु रेवंत१ कुमार२ रु वर्चा३, वीरभद्र४ नंदी५ हु सुवर्चा ॥
स्वर्चा१सुवर्चा२अन्त्यानुप्रासः १ ॥
पुरोजवाख्य६ विश्वकर्मा७पहु, सुरन मुख्य तोकों ए सिंचहु॥५२॥
आतमा१ रु असुमान२ दक्ष३हु जिम, हविप४ गविष्ठ५प्राण६पटु ७
ऋत८ तिम ॥
सत्य९रु आह्य१०नरेसँ सुद्धजस, सिंचहु देव अंगिरस ए दस१०॥५३॥
क्रतु१ रु दक्ष२ बसु३ सत्य४ काल ५ मुनि ६, रोचमान७ धृतिमा-
न८ मनुज९ पुनि ॥
विश्वेदेव काम१०जुत दस१०मित, इह नृपति सिंचहु ए करि हित॥५४॥
मृगव्याध१ रु सर्प२ रु निर्ऋति३ जिम, अजैकपात४ रु अहिर्बुध्न्य५

॥४७॥ १ सञ्जय. क. २ राहु ३ केतु ॥४८॥ ४ समर्थ ५ स्तुति योग्य ॥४९॥ ५० ॥
६ देवों की रक्षा करनेवाले ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ७ शुद्ध यशवाले राजा ॥५३॥ ५४ ॥

तिम ॥
पुष्पकेतु ६ ध्रुव ७ भरत८ मृत्यु ९ पहु, किंकिणि १० स्याणु ११
रूद्र ए सिंचहु ॥ ५५ ॥
भावन१— —२सुजन३तुजन४जिम, पाजरु ५यसुत६सुवर्णावर्ण७तिम
प्रमन८दन९मान१०ऋतु११ए पहु, भृगु अभिधान देवता सिंचहु।५६॥
मन१ मरु२ माया३ अपान४ हम५ हय६, नारायण ७रु जगद्धित
८ रन६ नय१० ॥
दिविश्रष्ट११विभुचिति१२तोऊँ पहु, इते साध्य संज्ञक सुर सिंचहु५७
धाता१मित्र२अर्यमा३दृगजग, पूषा४शक्र५अंश६वरुण ७रु भग८ ॥
त्वष्टा ९ विवस्वान १०, सविता ११ पहु, विष्णु१२ बहुरि बारह १२
रवि सिंचहु ॥ ५८ ॥
एकज्ज्योति१द्विज्ज्योति२जथा, त्रिज्ज्योति३चतुर्ज्योति४पुनितथा ॥
पंचज्ज्योति५ एकशक्र६हुभल, द्विशक्र७द्विशक्र८त्रिशक्र९ महाबल ।५९।
प्रतिसकृत १० रु मित ११ सम्मित १२ अमित१३ हु, ऋतजित १४ स-
त्यजित१५रु सुषेण १६पहु ॥
श्येनजित१७रु अतिमित्र १८ मित्र१९ जिम, पुरुजित २० धाता २१
अपराजित२२ तिम ॥ ६० ॥
ऋत२३ऋतवान २४ विधृत २५ ध्रुव२६ज्यौंहीं, वरुण २७ विदारण
२८ इदृश २९ त्यौंहीं ॥
अन्यादृश३० एतादृश३१ जानहु, क्रीडन३२ मुनि३३ अमिताशन ३४
मानहु ॥ ६१ ॥
शक्ति३५ महातेजा३६ हु सरभ३७ जुत, महायशा३८ क्षिप३९ धा-
तुरूप४० नुतं ॥
भीम ४१ सहद्युति ४२ अतिउक्त ४३ सुनयें, अनाधृष्य४४ वपु४५

॥ ५१ ॥ १ नाम ॥ ५६ ॥ २ हे प्रभु ३ साध्य नामवाले ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ४ स्तुतियोग्य ५ श्रेष्ठ नीतिवाले ॥ ६२ ॥

लास४६ काम४७ जय४८ ॥ ६२ ॥
पुनि बिराट४९ए इंद मित्र पहु, नव जलधि४९मित मरुतगन सिंचहु
चित्रांगद१ रु चित्ररथ२ जैसैं, चित्रसेन ३ वीर्यवान तैसैं ॥ ६३ ॥
ऊर्णायु४ अनघ५ उग्रसेन६ पुनि, सोम७ सूर्यवर्चा८ तृणप९सुनि
दिविशिचत्र१० धृतराष्ट्र११ कीर्ति १२ जिम, कलि १३ अंगिरा १४
दुराघ१५ हंस१६ तिम ॥ ६४ ॥
वृषपर्वा१७ नारद१८ पर्ज्जन्य१९ हु, हाहा२० हूहू२१ विश्वावसु२२
पहु ॥
ताम्रक२३ सुरुचि२४ हु गंधर्व्वन गैन, ए नृप सिंचहु तोहि मोद
मन ॥ ६५ ॥
आहूती१ रु शोभयंती२ जिम, वेगवती३ अरु आप्नुवती४ तिम ॥
ऊर्क५ रु वेकरि६ बभ्रु७ अमृतरुचि८, भू९ रूट१० भीरु ११शोचयं-
ती१२ सुचि ॥ ६६ ॥
भिन्न जाति एते अच्छरि गन, सिंचहु तोहि नरेस कितिधन ॥
अनुत्तमा१ रंभा२ बिश्वाची३, मनोवती४ मेनका५ घृताची६ ॥६७॥
सहजन्या७ रु स्वरूपा८ जैसैं, सुकेसी९ रु पर्णाशा१० तैसैं ॥
ऋतुस्थला११ पुंजिकस्थला१२पुनि, प्रम्लोचा १३ रु पूर्वचित्ती १४
सुनि ॥ ६८ ॥
सामवती१५ सु पंचचूडारुपा१६, अरु उर्वशी१७ अनुम्लोचारुपा १
चित्रलेखिका१९ विद्युत्पर्णा२०, तिलोत्तमा२१ रु सुगंधि २२ सुव-
र्णा ॥ ६९ ॥
सुत्रपु२३ अदृश्यलक्ष्मणा२४ हेमा२५, मिश्रकेशि२६ अमिता २७
आहेमा२८ ॥
आहेमा१ आहेमा२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

१उनचास की गिनती वाले ॥६३॥६४॥ २गन्धर्वों का समूह ॥ ६५ ॥६९॥ ३कीर्ति
ही है धन जिस के ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ४ श्रेष्ठ वर्ण (रंग) वाली ॥ ६९, ॥ ७० ॥

रुचिका२९ सुव्रता३० सुबाहु३१ जैसैं, सरस्वती३२ रु सुबोधा३३ तैसैं ॥ ७० ॥
बहुरि पुंडरीका३४ रु मुदारा३५, सुगंधा३६ रु सुरसा३७हु धुता ।
कामला३८रु सूनृतालया३९ज्यों, वासौली४० रु सपादी४१त्यों॥७१॥
सुमुखा४२ रतीलालसा४३ इति पहु, अच्छी तोहि अच्छरी सिंचहु
दैत्यराज प्रल्हाद१ विरोचन२, धन्वी बाण३तथा कीरतिधन॥७२॥
इत्यादिक जौ दैत्य वि०प जल, सिंचहु तोहि इहभूपति भल ॥
विप्रचित्ति१ आदिक सब दानव, सिंचहु तोहि मत्रजित मानव॥७३॥
हत्प१ प्रहस२ ०पास३ पुरुषादन४, पौरुषेय५ शैलेंद्र६वध७ रसन८
विद्युत९ सूर्प१० सुकेशी११ मखहा१२, सिंचहु ए आद्यराक्षस तहा॥ ७४ ॥
बलि सुसिद्ध१ मणिभद्र२ सुमन३ जिम, नंदन४ अरु कडूति५ शख६ तिम ॥
मणिमान७ रु बसुमान८ मदरस९, पिंगाक्ष १० रु प्रद्योत ११ महाजस ॥ ७५ ॥
चतुर१२ भीम१३सर्वानुभूति१४यम, पद्मवद्र१५अरु मेघवर्ण१६सम॥
भूतिमान१७ केतुमान१८ त्यों बर, श्वेत१९ बिपुल२० त्यों भ०प२१ प्रभाकर२२॥ ७६ ॥
मौलिमान२३ प्रद्युम्न२४ अपावह, कुमुद२५ बलाहक२६ पक्ष २७ पक्ष सह ॥
बिजपाकृति२८ बलाहक२९सु बीर३०हु, पद्मनाभ३१ शतजिह्व३२ सुगंध३३ हु ॥ ७७ ॥
रहु१ धहु२ अन्त्यानुप्रास १ ॥
हिरण्याक्ष ३४ पहु पौर्णमास, सम सिंचहु राजवृन्द ए सत्तम ॥
शंख१ रु पद्म२ मकर३ कच्छप४जिम, कुंद५मुकुंद६ रु महापद्म७

१श्रेष्ठ नखोंवाली ॥ ७१ ॥२ उत्तम ॥ ७१ ॥३मनुष्यों को सब्बाइ में जीतनवाला ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

७ तिम ॥ ७८ ॥

नील८खर्व९ए आय महानिधि, सिंचहु नव९हि बिचारि बेदबिधि
एकवक्त्र१सूचीमुख२ज्योंही, छगल३बिपाद४ उलूखल५ त्योंही ७९
दुष्पूरण६ ज्वलनांगारक७ पुनि, कुंभमात्र८ उपवीर९ पांसु१० पुनि
चक्रखध११ रु अकर्ण१२ महाभग, पात्रपाणि१३ बिपुलक१४ औ रक्तद्न१५॥८०॥

बहुरि बितुंड१६ प्रतुंड१७ इती पहु, तोहि पिसाच जातीहू सिंचहु ॥
पुनि नाना मुख बाहु सिरोधर, दांत बिलुध अट्टाल सून्यघर ॥८१॥
तेहु चतुष्पद्द पर शिवके गन१, सिंचहु तोहु हहु धरनीधन ॥
महाकाल१ नरसिंह२ अग्ग करि, सब मातर३ सिंचहु सुभ जल भरि ॥ ८२ ॥

ग्रहस्कंद१ नामक शिशाख२ सह, नैगमेय३ ए सिंचहु गुहग्रह ॥
डाकिनि१योगिनि१खेचर१ भूचर१, सिंचहु तोहि समस्त नरेश्वर ८३
गंधकुमार१ बिष्णु२ अरु अरुड़३ हु, अरुणि४ महाखग्ग बिनत ५ गरुड़६हु ॥
संपाती७ जुत ए सुपर्ण सब, सिंचहु नृप उम्मेद तोहि अब ॥८४॥
शेष१ अनंत२ बासुकि३ रु बामन४, कुंभ५ अंजनोत्तम६तक्षक७गन
सुपर्णारि८ ऐरावत९औहिबर, महापद्म१०कंबल११रु अश्वतर१२॥८५॥
महानील१३ धृतराष्ट्र१४ बलाहक१५, एलापत्र१६ खड्ग१७ कर्कोटक१८ ॥
महाकर्ण१९ गंधर्व२० सनस्विक२१, पुष्पदंत२२ नहुष२३ रु पद्म २४ कुलिक२५ ॥८६॥
खररोमा२६ रु कुमार२७ धनंजय२८, शंखपाल२९ अरु पाणि३० गरल३ मय ॥

॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ १ राजा ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ २ श्रेष्ठ सर्प ॥ ८५ ॥ ८६ ॥
३ विष ॥ ८७ ॥

इत्यादिक सब आप नाग बर, सिंचहु तोहिं महीप धर्मधर ॥८७॥
ऐरावत१ अरु कुमुद२ पद्म३ जिम, पुष्पदंत ४ बामन ५ अंजन ६ तिम ॥
सुप्रतीक७ अरु नील८ इते पहु, सुभठौ तोहि महागज रक्खहु ८८
विधिहंस१ रु गिरिवृषभ२ प्रीति धरि, उच्चैश्रवा३ हय रु धन्वतरि१
कौस्तुभ१ शंख१ चक्र१ त्रिशिखाख्य२ हु, वज्र३ रु नंदक४ अस्त्र२ समाख्यहु ॥ ८९ ॥
अवनिप तोहिं सचिक्कें ए सब, विजय विथारहु तावकीन अब ॥
वृद्धगाथा १ तप १ यम १ दम १, सत्य १ दान १मख १ब्रह्मचर्य१ शम१॥ ९० ॥
आयु१ रु चित्रगुप्त१ ए जेते, सिंचहु तोहि कहे श्रुति तेते ॥
दंड१ रु पिंगल२ मृत्यु३ काल४ पहु, अतक ५ बालखिल्य ६ जय मंडहु ॥ ९१ ॥
दिग्गो च्यारि४ सुरभि१पुनि ज्योंही, सब गायन जुत सिंचहु त्योंही॥
व्यास१ नाकुभंव२ शमन३ पराशर४, देवल५ पर्वत६ भार्गव७ तप पर ॥ ९२ ॥
जाबालि८ जमदग्नि९ योगेश्वर१०, कण्व११ कुशारणि१२ वेदवाहु १३ बर ॥
शुचिश्रवा१४ गाधेय१५ रु कर्दन १६, शूलकच्छप १७ अत्रि १८ रु कात्यायन१९ ॥ ९३ ॥
विदूरथ२० रु एकत२१ बलाक२२ द्वित२३, गौतम२४ भरद्वाज२५ कुटिमृड२६ त्रित२७ ॥
शांडिल्य२८ रु मौद्गल्य२९ रु गालव३०, वृहदश्व३१ रु इभसुत ३२ सारगव ३३ ॥९४ ॥

॥ ८८ ॥ १ नामवाले ॥ ८९ ॥ १ तुम्हारी ॥ ९० ॥ ९१ ॥ १ वाल्मीकि ॥ ९२ ॥ ४ पाक्षस्पर्श ॥ ९३ ॥ ९४ ॥

यवक्रीत३४ जयजानु३५ घटोदर३६ रैभ्य३७ आत्मधामा३८ जैमि-
निं३६ बर ॥
कुंभज४० दुंदु४१ रु मृदु४२ शुचि४३ तपमय, इध्मबाहु४४ मृप ४५
बहुरि महोदय४६ ॥ ९५ ॥
एते मुनि अभिसेक रक्खि रति, सिंचहु तोहि उमेद महीपति ॥
पृथु१ दिलीप२ दुक्खंत३ भरत४ अथ, मुन५ ककुत्स्थ६ युवनाश्व७
जयद्रथ८ ॥ ९६ ॥
अनेना९ रु मांधाता१० ज्यौंही, शत्रुजित११रु मुचकुंद१२ हु त्यौंही
पुरूरवा१३ इक्ष्वाकु १४ रु यदु १५ पुनि, अंबरीष १६ नाभाग तथा
सुनि ॥ ९७ ॥
भूरिश्रवा१७ महाहनु१८ पुरु१९ जिम, बृहदश्व२० रु सुद्युम्न२१ भू-
प तिम ॥
भूरिद्युम्न२२ तथा प्रद्युम्न२३हु, संजय२४ पुनि इतिमुख नृप सिं-
चहु ॥ ९८ ॥
परजन्यादि मेघ१ नाना तरु२, ओषधि३ रत्न४ अनेक बीज५ बरु॥
पुरुष आश्रमेषांग१ भूत सर५, भू१ जल२ तेज३ अनिल४ अरु अं-
बर५ ॥ ९९॥
मन१ बुद्धि२ रु अव्यक्तात्मा१ यहु, एहु तोहि इहुन पति सिंचहु ॥
रुक्मभौम १ अरु शिलाभौम २ जिम, पातालाख्य ३ नीलवृत्तिक-
४ तिम ॥ १०० ॥
पीत५ रक्त६ सित७ असित८ भौम सब, अभिसिंचहु इत्यादि तो-
हि अब ॥
जंबू१ शाक२ क्रौंच३ कुश ४ पुष्कर५, प्लक्ष ६ शाल्मली ७ देहु
स्वाम्य बर ॥१०१ ॥

१ अगस्त्य ॥ ९५ ॥ २ दुष्यन्त ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ १ इत्यादि ॥९८॥ ४ (श्रेष्ठ)॥ ९९ ॥
॥ १०० ॥ १०१ ॥

उत्तर कुरु१ ऐरावत२ अघर्हत, केतुमाल३ भद्राश्व४ इलावृत५ ॥
त्यौं हारवर्ष६किंपुरुष७भारत८, रम्य९खंड सिंचहु हित धारत१०२
इंद्रद्वीप१ कसेरु२ तथा पुनि, ताम्रवर्ण३ रु गभस्तिमान४ सुनि ॥
नागद्वीप५ सौम्य६ गंधर्व७हु, वरुण८ अभय९ ए द्वीपहु सिंचहु१०३
हेमकूट१ हिमवान२निषध३गिरि, नील४श्वेत५अरु शृंगवान६फिरि
मेरु७ गंधमादन८ महेंद्र ९ जिम, माल्यवान १० अरु मलय११ स-
ह्य१२ तिम ॥ १०४ ॥
शुक्तिवान१३गिरि ऋक्षवान१४सुनि, विंध्याचल१५गिरि पारियात्र
१६ पुनि ॥
इत्यादिक सब पुण्य महीधर, सिंचहु तोहि महीपति सभर॥१०५॥
ऋक१ यजुर२ साम३ अथर्व४ च्यारि४ श्रुति, सिंचहु तोहि प्रसन्न
पाप नुति ॥
इतिहास१ धनुर्वेद२ आयु३ पहु, पुनि गंधर्व४शिल्प५ उपवेदहु १०६
शिक्षा१ कल्प२ व्याकरण३ ज्योंही, ज्योतिष४ छंद५निरुक्त६हि
त्योंही ॥
सिंचहु अंग वेदके ए खट६, तोहि भूप उम्मेद विदित वट ॥ १०७॥
ए खट६ अंग रु वेद च्यारि४।१० पुनि, मीमांसा११ स्मृति१२ न्याय
१३ तथा सुनि ॥
अरु पुराण१४विद्याहु चतुर्दस१४,सिंचहु ए नृप तोहि महाजस१०८
पांचरात्र१ अरु वेद पाशुपत, कृतांत पंचक५ सांख्य४ योग५मत ॥
विविध शास्त्र इत्यादि नरेश्वर, सिंचहु तोहि दिव्य जल घट कर
गायत्री१ गंगा२ गांधारी३, जय बुल्लहु महाशिवा४ नारी५ ॥
सुर१ दानव२ गंधर्व३ यक्ष४ पुनि, राक्षस५ पन्नग६ मुनि७ मनु८
गो९ सुनि ॥ ११० ॥

---

१ पाप को हरनेवाला ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ २ पर्वत ॥ १०५ ॥ ३ स्तुति
॥ १०६ ॥ १०६ ॥ ४ उचित मार्ग से ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥

देवनकी माता१० पुनि ज्यौंही, देवनकी पतनी११ सब त्यौंही ॥
द्रुम१२रु नाग१३ दैत्य१४ रु अच्छरि गन१५, अस्त्र१६ शस्त्र१७ रा-
जा१८ अरु बाहन१९ ॥१११॥
ओषध२० रत्न२१ काल२२अवयव२३जिम, स्थानक२४पुराप आ-
यतन२५ सब तिम ॥
जीमूत२६रु जीमूतबिकार२७हु, उक्त अनुक्त बिसय बिसतारहु११२
लवणोद१ रु दुग्धोद२ घृतोदक३, दधिमंडोद४ तथा मद्योदक५ ॥
त्योदक१ द्योदक२ अन्त्यानुप्रासः१॥
इक्षुरसोद६ रु सुद्धोदक७ बर, गर्भोदक८ सिंचहु ए सागर ॥११३॥
बहुरि च्यारि१सागर निज जल करि, सिंचहु तोहि कनक मय
घट भरि ॥
प्रयाग१नैमिष२प्रभास३पुष्कर४, उत्तरमानस५तथा ब्रह्मसर६ ।११४।
नंदकुंड७ गयशीर्ष८ पंचनद९, कालोदक१० रु स्वर्गमार्गप्रद११ ॥
त्यौंहि अमरकंटक१२ भृगुतीरथ१३, कलिकालाश्रम१४ अग्नितीर्थ१५ अथ॥ ११५ ॥
गोतीर्थ१६रु तृणबिंदुकृताश्रम१७, जंबूमार्ग१८रु तंडुलिकाश्रम१९
स्वर्ग२० कपिल२१ तीरथ अरु वातिक२२, त्यौं आगस्त्य२३महा-
सर२४ खंडिक२५ ॥ ११६॥
अंगद्वार२६ कुमारीतीरथ२७, कुशावर्त्त२८विल्वक२९ अघहरकथ
नील१ रैवत२ रु अर्बुद३ पर्वत३०, शाकंभरी३१ सुगंधी३२ मुनि
मत ॥ ११७॥
कुब्जाम्रक३३ भृगुतुंग३४ रु कनखल३५, धारा३६ कुंभा३७ क-
पिलाश्रम३८ भल ॥
अज्ञतुंग३९ अरु चमसोद्भेदन४०, अश्वगंध४१ कालंजर४२ विन-
शन४३॥११८॥

१देवताओं की २स्त्रियां ३वृक्ष॥१११॥११२॥॥११३॥११४॥११५॥११६॥११७॥११८॥

रुद्रक४४ अग्नि४५ केदार४६ मोच४७ जिम,महालय४८रुबदरीआ-
श्रम४९ तिम ॥
नंदा५० ससितीरथ५१ रवितीरथ५२, वासवतीरथ५३ नासत्यक
५४ अथ ॥ ११९ ॥
वरुण५५ वायु५६ वैश्रवण५७ तीर्थ पुनि, द्रुहिण५८ईश५९ यम६०
अनल६१ तीर्थ सुनि ॥
विरूपाक्षतीरथ६२पवित्र जिम,धर्मतीर्थ६३अप्सरितीर्थ६४हुतिम१२०
॥ रुचिरा ॥
ऋषि६५ वसु६६ साध्य६७ मरुत६८ आदित्यक६९ रुद्र७० अंगिरस
७१ तीर्थ जिते ॥
विश्वेदेवतीर्थ७२ भृगुतीर्थ७३ रु प्लक्षप्रस्रवण७४ सकल तिते ॥
मानससर७५ वाराहसगेवर७६ सालिग्राम हरोवर७७हू ॥
कामाश्रम७८ रु सपूर्व७९सुपुत्र८०र्पोहित्रिकूट८१ महावरहू।१२१।
चित्रकूट८२क्रतुसार८३ विष्णुपद८४ कापिल८५ वासुकि८६ तीर्थ
महा ॥
सिंधूत्तम८७ सूर्पारक८८ कुंभक८९ पुंडरीक९० अविमुक्त९१ तहा
तपोद्वार९२ सिंधूदधिसगम९३ गगासागरसगम९४हू ॥
अच्छोदक९५ रु बिंदुसर९६ मानस९७ फल्गुतीर्थ९८सु मनोरमहू॥
लौहित्यक९९ कुभावसुंद१०० पुनि धर्मारण्यक१०१ पुनि नमने॥
वस्त्रापथ१०२ रु छागलेपक१०३ तिम बदरीपावन१०४ मळपमने
वन्हितीर्थ१०५ अरु मेषतीर्थ१०६ नृप दक्ष सप्तऋषितीर्थ१०७जुपै॥
पुष्पन्यास१०८ कार्णाश्व१०९ हसपद११० अश्वतीर्थ १११मणिमय
११२सुपै ॥ १२२ ॥

॥ हीरकम् ॥

दिविका ११३ अरु इंद्रमार्ग११४ स्वर्णबिंदु११५ सिष्टजो ॥

॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥

आह्लक११६ ऐरावत११७ करवीर११८हु इष्ट जो ॥
ओगपश११९ वणिक१२० नागम१२१ केशमोचनकाख्य१२२हू ॥
पापमोचनिक१२३ उद्वेजन१२४ संपूज्याख्य१२५हू ॥ १२४ ॥
काख्यहू१ ज्याख्यहू२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
देवब्रह्मसर१२६ घृतसर१२७ दधिसरवर१२८ नाम जे ॥
सिंचहु इत्यादि सकल तीरथ सुख धाम जे ॥
खंडहु जय ए नरेस मेटहु अघसर्वकों ॥
तावकं बिघराय तेज खंडहु अरि वर्गकों ॥ १२५ ॥

॥ हरिगीतम् ॥

गंगा१ रु ऱ्हादिनी२ ऱ्हादिनी३ सीता४ रु चक्षु५ नदी जथा ॥
तिम कांचनाक्षी६ सुप्रभा७ रेवा८ रु सिंधु९ ऱ्हदा१० तथा ॥
अघओघ अंकुस पावनी११ विमलोदका१२ पुनि जानिये ॥
क्षिप्रा१३ रु शोणा१४ रु तर्पा१५ सरयू१६ चंद्रभागा१७ मानिये ।१२६।
धूमा१८ सरस्वति१९ ओघनादा२० गंडकी२१ रु इरावती२२ ॥
पीता२३ बिशाला२४ मानसी२५ रंभा२६हु सुद्ध सुद्धावती ॥
केशा२७ सुवेशा२८ देविका२९ रु सिवा३० विभागा३१ पावनी ॥
यमुना३२ देवऱ्हदा३३ वितरता३४ कौशिकी३५गुनि मुनि मनी१२७
चर्मणवती३६ रु विदर्भिका३७ कुंती३८ रु अच्छोदा३९ धुनी ॥
तपती४० रु निर्विंध्या४१ तृतीया४२ वंदना४३ श्रुतिमैं सुनी ॥
सुरसा४४ रु इक्षुमती४५ अवंती४६ धूतपापा४७ गोमती४८ ॥
पुनि शोणा४९ इक्षुकि५० वेदमाता५१बाहुदारु५२लसरस्वती५३॥१२८॥
श्येनी५४ रु पर्णाशा५५ कुमुद्वति५६ वेदघुर्घुरदा५७ तथा ॥
पुनि सदानीरा५८ त्योंहिं वेणुमती५९ रु देवस्मृति६० तथा ॥
मंदाकिनी६१ रु पलाशिनी६२ रु पिसाचिका६३ पुनि पिप्पली६४॥
तृपिका६५ दशार्णा६६ सिंधुरेखा६७त्योंहिं करतोया६८भली ।१२९।

१ नामक ॥ १२४ ॥ २ तेरा ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ ३ नदी ॥ १२८ ॥ १२९ ॥

दूजी२ कुमुद्वतिका६९ शिनीवाली७० कुहू७१ पुनि मञ्जुला७२ ॥
चित्रोपला७३ अरु चित्रवर्णा७४ शुक्ति७५ मौला७६ वाकुला७७॥
तापी७८ कपु ७९ अमला८० पयोष्णी८१ मदगा८२ निपधावती८३
वेणा८४ सिता८५ दूजीरु निर्विंध्या८६ रु भीमा८७दुर्गती८८॥१३०॥
तोया८९ रु वैतरणी९० महागौरी९१ रु गोदा९२ मगला९३॥
नृममा९४ रु भीमरथी९५ रु जम्बू९६ कृष्णावर्णा९७ सजला ॥
पुनि तुगभद्रा९८हु तरगिनि मदगा९९ रु भयकरा १०० ॥
वात्या१०१रु कावरी१०२ रु कृतमाला१०३हु सुक्तिद सवरा ॥१३१॥
पुनि ताम्रपर्णी१०४ पुष्पभद्रा१०५ उत्पलावति१०६ मद्रनी १०७
त्रिदिवालया १०८ अरु वशधारा १०९ लागुली११० सुभगा घनी,
सुकुलावती१११ कपिका११२ रु ऋपिकुल्या११३ रु वरवेगा ११४
त्यया ११५ ॥
दूजी २ पयोष्णी ११६ मदवाहिनि ११७ कालवाहिनि ११८ त्यौं
दया ११९ ॥ १३२ ॥
व्योमा १२० रु देवी १२१ त्यौं २ विशाला १२२ कपला १२३ रु
सुवाहिनी१२४ ॥
दूजी२हु करतोया१२५ रु वेत्रवती१२६ सुभद्रा१२७हू गिनी ॥
ताम्रा १२८ रु अरुणा १२९ सुमकारा १३० अद्रिका १३१ रु हिर-
ण्मई१३२ ॥
पुनि२सुप[illegible] दूसरी इपमा१३४रु अश्ववती१३५नई ॥१३३॥
आव्हे[illegible] आपगा१३७भासी१३८रु सध्या१३९भूप जे ॥
[illegible]मालिका१४२वलयावती १४३हु अनूपजे
[illegible]४५ दूजी२रु नीलोद्धतकरा१४६ ॥
[illegible]नदा१४९सुनदा१५० अघहरा॥१३४॥
[illegible]दि सब येहैं आपकें ॥

१४ ॥

।बुन्दीप्रविष्टइन्द्रेन्दाऽभिषेकविधिवर्णानमष्टाविंशोमयूख ॥
मादित ॥ ३०६ ॥
प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥
॥ दोहा ॥
त्र गगन धृति १८०५ सकसमय, बाहुर्ल पक्ख बेलच्छ ॥
तेपंति तिथि१३ नृपकौं भयो, अभिसेचन इम अच्छ ॥१॥
ने किन्नों जिन जिन तिलक, अभिसेचनके अंत ॥
म सन तिन नामन कहौं, सुनहु राम छितिकंत ॥ २ ॥
थम पुरोहित निज तिलक, किन्नों भितुव१ नाम ॥
नंतर उपदेस गुरु, विरच्योऽकें१ इक१६७॥ ३ ॥
तिलक मल्लार३ कि दोहा ॥ कछवाह ॥
... गादि, सहित, सबको इम सतकारि ॥ ४ ॥
... करि विविध, किय प्रसन्न मल्लार ॥ २५ ॥
॥ सचरणगद्यम् ॥
... कुल दीक्षा ही सोतो गोस्वामि गोपीनाथनैं मंत्र
मिटाई ॥
... ज दीक्षा लै रु रनपडित महाराजा उम्मेदसिंह
रतैं बुंदी कहाई ॥
... ही देस १ मैं जपश्रीरंगनाथ कहिवेकों हुकम

महुरछापन ३ मैं प्रीतिपूर्वक श्रीरंगनाथ नामधेयँ
२६ ॥
गैं अपनैं पिता पितामहादिकनकी दान करी पृथ्वी

हाथी ॥ २२ ॥ २ छापन करके ३ घोडा ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

समस्त संप्रदानन[1]कौं खोजि खोजि बुलाय दीनी ॥

अरु अपनी आपत्तिमैं सूरबीर सुभटादिक समस्त स्वामिधर्मी सेवामैं रजू रहे तिनकौं ग्राम १ गज २ वस्त्र ३ बाजि४नकी बखसीस कीनी ॥

उनके अभिधाने[2] रावराजेंद्र रामसिंह सुनिबेकौं सावधानी करिये ॥

अरु प्रपितामहके बितरण[3] बारिधि[4]कौं बिद्वज्जन बानीके तरंड[1] करि तरिये ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

हड्डा हरजन१ सचिव हित, दै सिबिका गज दास ॥
हिंडोली पुरसौं दयो, पटा सहँस पंचास ५००००॥ २८
देव[6] नत्ति सिवसिंह सुत, भारत२ हित बुंदीस ॥
पत्तन१खेड़ा२सौं पटा, दयो सहँस च[illegible] ४३ [illegible]
अमरसिंह रट्ठोर सुत, अभय३सिंह हित [illegible]तिस।
पटा सहँस छत्तीसको ३०००, पुर अलोद [illegible] रीति
नाथाउत पित्थल तनय, जयसिंहहि४ चहुव[illegible] भयो
पटा हजार पचीस२५०००जुत, नगर द[illegible] नयो ॥ ४
बंधु भवानीसिंह५ भट, महासिंह हर हे[illegible]
बीसहजार२०००० पटा दयो, धोवड़२[illegible] समे[illegible] ॥ ३
सेरसिंह६ सामंतहर, हड्डा अरथ अनूप ॥
पटा सहँस धृति१८००० जुत दयो, भजनेरी६पुर [illegible] ३
हरदाउत हिंदू सुतज, नाहर७कौं हित संग ॥
पटा सहँस पंदह१५०००सहित, दियउ पगारा[7] ढंग ॥ ३
तोक८ महासिंहहि[illegible] हित, प्रथित दिखावत प्यार ॥

१ दान लेनेवालों को २ नाम ३ दान रूपी ४ समुद्र को बिद्वान् लोगों वाणी रूपी १ नाव से ॥ २७ ॥ २८ ॥ ६ देवसिंह का पोता ७ पुर ॥ २ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ८ विदित

द्रग जैतगढ८सों दयो, पटासु पति१०हजार १०००० ॥३५॥
दसरथसिंह९ मयाग सुत, महासिंह सु कुलीन ॥
अष्ठ सहँस८०००को तिहिं पटा, सुहरनि९पुर समदीन ॥३६॥
मुहुकमहर मरजाद सुत, भट नगराजन अत्य१० ॥
पच सहँस५०००को दिय पटा, नगर मोठसम१० सत्य ॥३७॥
बुल्लि सिवाईसिंह११ भट, अमर कबधज ताहि ॥
पचसहँस ५००० को दिय पटा, चंद्रवाट११पुर चाहि ॥ ३८॥
पचोली माथुर प्रथम, मयाराम१२ कायत्थ ॥
दियउ गाम वहु द्रव्य जुत, सह सिरुपाव समत्थ ॥ ३९ ॥
पटा रयाम धात्रेय१३ हित, दै मिति तीन हजार३००० ॥
तारागढ निज दुग्गको, किन्न सु किल्लादार ॥ ४० ॥
महडू चारन दान१४ हित, संभर मीति मकासि ॥
सहँस पंच५०००के ग्राम दिय, ठीकरिया१बरवासि२ ॥४१॥
स्वीय भट्ट जगराम सुत, बुल्लि भवानी१५राम ॥
मुद्रा दोय हजार२००० मित, दयो सहँमपुर गाम ॥ ४२ ॥
इत्यादिक सब सेवकन, दै धन धाम उदार ॥
करन विदा मल्लारकों, बलि किय चित्त विचार ॥ ४३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे पुरोधः १ सम्प्रदायगुरु २ मल्लार ३ माधव ४ प्रादिरावराणामाङ्गल्यतिलकाऽऽदिकरणहह्लेन्द्रहरि १ कुलदेवी २ पूजनपूर्वकविहितप्रासादप्रवेशनहुलकर १ कूर्म्म २ प्रभृतिग[illegible] ७ भूषण ३ वस्त्र ४ ऽऽदिनिवेदनतत्स्वस्वाशिविरऐ [illegible] १ ह[illegible] [illegible]मपणसर्वसम्भोजन

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥४२[illegible] ४२ ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तराय[illegible] के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में पुरोहित और संप्रदाय गुरु [illegible] मल्हार, माधवसिंह आदि का रावराजा के मांगलिक तिलक आदि [illegible] करना १ इन्द्रेन्द्र का विष्णु और कुलदेवी का पूजन आदि करके [illegible] महल में जाकर हुलकर और माधवसिंह कछवाहा आदि

गज १ हय २ भूषण ३ वस्त्रा ४ ऽऽदिससैन्यमल्लारसत्करणसमा-
रामानुजसम्प्रदायव्यवहारमुद्राऽऽदिश्रीरंगाऽभिख्योल्लेखनपूर्वपुरुषद-
त्तसमर्पणस्वपरिकरसुभट १ सुसचिव २ सुभृत्या ३ ऽऽदिमेदिनीमुद्र-
वितरणतन्मननमेकोनत्रिंशो २९ मयूखः ॥ २९ ॥ ॥ ३१० ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इहिँ अंतर मरुपति[1] अनुज, बखतसिंह छक छाय ॥
दिल्ली सन[2] लहि जवन दल, अग्रज[3] दब्बन आय ॥ १ ॥
अभयसिंह आतुर तबहिँ, पठये बुंदिय पत्र ॥
संभर[4] सहित सहायकोँ, आवहु हुलकर अत्र ॥ २ ॥
हुलकर हड्ड नरेस प्रति, आक्खिय पत्र उदंत[5] ॥
सुनि बुंदिय धव[6] सज्ज हुव, सह मलार हुलसंत ॥ ३ ॥
जननिन १ रानिन २ हू तिहिँत, दिन्नैँ कटक पठाय ॥
गंगराड़ १ कोटानगर २, बंसवहाल ३ भनाय ४ ॥ ४ ॥
सज्जि अप्प हुलकर सहित, किय बुंदिय सन कुच ॥
मरुपतिसोँ सत्वर मिले, उभय २ करन जय उच्च ॥ ५ ॥
रामपुर सु माधव गयो, बुंदिपतैँ इहिँ बेर ॥
ए दुव २ मरुपति भीर इम, आये पुर अजमेर ॥ ६ ॥

का हाथी, घोड़े, आभूषण, वस्त्र आदि नजर करना २ उनको अपने अपने डेरों में भेजकर सबको भोजन कराना ३ हाथी, घोड़े, भूषण, वस्त्र आदि से सेना सहित मल्लार का सत्कार करना ४ रामानुज संप्रदाय को ग्रहण करके व्यवहार की [illegible] का नाम लिखाना ५ अपने पुरुषाओं के दान को देकर अपनी [illegible] छाप में आर[illegible] १ श्रेष्ठ कामदार, श्रेष्ठ सेवक आदि को भूमि आदि देने के परगह के उमराव [illegible] २९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ स्मरण कराने का उनतीसवाँ दश ३१० मयूख हुए ॥

१ मारवाड़ के पति (अभयसिंह) का छोटा भाई २ दिल्ली से ३ बड़े भाई को दबाने आया ॥ १ ॥ ४ चहुवाण उम्मेदसिंह सहित ॥ २ ॥ ५ पत्र का वृत्तान्त कहा ६ पति ॥ ३ ॥ ७ उनको बुलाने को सेना भेजी ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

बखतसिंह सम्मुह बहुरि, तीनइन किन्न पयान ॥
रक्खि निकट पर दल दयो, सभर नगर मिलान ॥ ७ ॥
तँहँ हुलकर कछु रीति कहि, रट्ठोरन समुझाय ॥
अग्रज१कैं अरु अनुज२कैं, दिन्नों साम कराय ॥ ८ ॥
दूजे३ दिन इक्क बत्त हुव, छुदिय कटकसिर्हान ॥
सुपहु राम दिज्जे श्रवन, नय मति धर्म निधान ॥ ९ ॥

॥ पादाकुलकम्

अग्गैं इक्क५ सकरगढ स्वामी, छुविय भट रानाउत नामी ॥
तिहि सिवसिंह मंडि रन राउत, वक्कर पुर पै हन्यों कन्हाउत ॥१०॥
सो सिवसिंह हुतो नृप सत्थहि, अरिसुत राजसिंह गय तत्थहि ॥
करत प्रात सध्या छुदिपपति, सिवसिंह सु निजनाथ रक्खि रत्ति ॥११॥
डेगसन सँभर ढिग आवत, राजसिंह वह मिल्यो रिसावत ॥
हनि सिवसिंहहिं तुपक्क झारि खल, गो भजि राजसिंह मारवदल ॥१२॥
साहिपुराधिप अनुज सहोदर, हो सिरदारसिंह मरुपति भर ॥
कन्हाउत तस सरन गह्यो तब, यह उदंत छुदीस सुन्यौं अब ॥१३॥

॥ दोहा ॥

उट्ठि उघारे देह नृप, सध्या तजि गहि सगि ॥
हय अरोहि हन्यो भनहु, अँग पग इद्द उमगि ॥ १४ ॥
चलन लगे भट सग निज, तिनकों सपथ दिवाय ॥
अप्प पटी दे अश्वकों, लिय कन्हाउत जाय ॥ १५ ॥
सत्थ सहित पिक्खतरह्यो, रानाउत सिरदार ॥
राजसिंह कन्हाउत सु, मार्‍यो सभरवार ॥ १६ ॥

---

१ शत्रु की सेना को समीप रख कर २ साभर में मुकाम किया ॥ ७ ॥ ३ मिलाप ॥ ८ ॥ ४ प्रभात समय ॥ ९ ॥ ५ पाकरों नामक पुर के पति ६ कान्हावत शाखा के शीशोदिया क्षत्रिय को ॥ १० ॥ ११ ॥ ७ उम्मेदसिंह के पास ८ मारवाड की सेना म ॥ १२ ॥ ९ शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह का छोटा सगा भाई १० मारवाड के पति का उमराव ॥ १३ ॥ ११ पर्वत पर ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

इम रिपु हनि बग्छी चुवत, आयो पुनि निज अैन ॥
रह्यो लखत रट्ठोरको, चित्र लिख्योसो सैन ॥ १७॥

॥ षट्पात् ॥

मह्द कराल उद्घोष१ उठ्यो पृतना त्रय३ अंतर ॥
दुव२ दिस दुंदुभि बज्जि भीरु गय भज्जि दिगंतर ॥
हड्ड१ कबंध२न हयन जंग पक्खर जब डारिय ॥
सुनि हुलकर यह सोर भयो उपदेसक भारिय ॥
नृप अभयसिंह१ उम्मेद १ नृप समुझाये दुव२नीति सन ॥
कहि देसकाल आगम कलित किंयउ साम करि हित कथन१८

॥ दोहा ॥

तदनंतर दक्खिन गयउ, रचि दरकुंच मलार ॥
निज पत्तन बुंदिय तरफ, आयउ संभरवार४ ॥ १९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हरदाउत नाहर मग अंतर, महिमानी मंडिय बिधिसौं बर ॥
नगर पग्गराँ थंभि नृपति तब, जिम्मि गोठि आयउ बुंदिय अब २०
माघ बलच्छ५ पच्छ जय मत्तो, दक्खिन द्वार होय पुर पत्तो ॥
घर घर मंगल गान भयो घन, लग्गे लोग बधाई बंटन ॥ २१ ॥
पिच्छैं सन जननी दुव२ आई, पतनी तीन३ सुहाग सुहाई ॥
यह रानिन पतिकी हित आवरि६, किन्नी बिधिजुत नजरि निछावरि२२
अब उमेद नृप नीति जमाई, गई प्रजा सु बुलाय बसाई ॥
मैनन तेंं उपद्रव७ मेटिय, बारह१२ खेट८ दबाय स्वबस किय ॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥१७॥ १भयंकर हाक२तीनों सेनाओं में३विदित ॥१८॥ ४ चहुवाण (उम्मेदसिंह) "हम ऊपर लिख आये हैं कि प्राचीन समय में सांभर नगर में राज्य करने के कारण चहुवाणों को संभर, संभरी, संभरीक, संभरेश, संभरिया, संभरवार, संभरवाल आदि कहते हैं" ॥ १९ ॥ २० ॥ ५ शुक्लपक्ष ॥ २१ ॥ ६ स्नेह की पंक्ति से ॥ २२ ॥ ७ मैनों का चोरी करने का उपद्रव ८ खेड़े (ग्राम) ॥ २३ ॥

बुंदिय नागर विप्र इक१, सरबेश्वर अभिधान ॥
चोरे चोरन दम्म तस, सहँस सत्त ७००० परिमान ॥ २४ ॥
कुतवाल सु वसु चोर जुत, खोज्यो भूपतिराम ॥
छन्नैं नृपहिं निवेद्यो, छत्रमहल सुख धाम ॥ २५ ॥
सो धन सभर ख्यात करि, सरबेश्वर हित दीन ॥
श्रीलि सेठ यह नीति लखि, लगे बसन हित लीन ॥ २६ ॥
चोरन१ जारन दुसह दुख, धर्म धग्न१ सुख पूर ॥
राज्य बिगारे किंतव जन१, कपन लग्गे कूर ॥ २७ ॥
जब बुंदिप जयसिंह जिप, कति सठ सेवक तत्थ ॥
रसना रत पासहिं रहिय, न हुव बुद्ध नृप सत्थ ॥ २८ ॥
ते अब दुद्दर नृपहिं तकि, लूम अंराल हलात ॥
भीतैं आय हाजरि भये, बुंदी मंडल ब्रात ॥ २९ ॥
मोरैं वृद्ध प्रपितामहहु, मिलि आये तिन माँहिं ॥
कहत सकुचि रविमल्ल कवि, इम सागस हम आँहिं ।३०।

॥ पादाकुलकम् ॥

सुनहु राम महिपाल धर्मधन, स्मृति जाकों बरजत अग्गैं सन ॥
पुरुखनकों अनुचित पद मैं दिय, करहु माफ अपराध यहेंकिय ३१
हाजरि सब इम बसीभूत हुव, धामचढ उम्मेद तपत ध्रुव ॥
फग्गुन असित माँहिं तदनंतर, कोटा गय उम्मेद धैरावर ॥ ३२ ॥

१नाम ब्राह्मणों ने उसके रुपये चोर लिये ॥ २४ ॥ ३ चोर सहित धन को ४ ऐसे राजा रामसिंह ५ राजा की नजर किया ॥ २५ ॥ ६ धनवान् सेठ ॥ २६ ॥ ७ दुराचारी मनुष्य ॥ २७ ॥ ८ तहां कितने ही मूर्ख सेवक ९ जिव्हा में ग्रास की प्रीति करक १० राजा बुधसिंह की साथ नहीं हुए ॥ २८ ॥ ११ पाकी (टेढी) पूँछ को हिलाते हुए १२ भय से १३ कुत्तों के समूह बुन्दी में आकर हाजर हुए ॥ २९ ॥ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि १४ मेरे १५ सूर्यमल्ल कवि कहते शरमाता है १६ इस कारण हम अपराध युक्त१७ हैं ॥ ३० ॥ १८ हे राजा रामसिंह १९ धर्मधुरन्धर ॥ ३१ ॥ २० सूर्य २१ भूपति ॥ ३२ ॥

महाराव सन मिलि हित किन्नौं, बहुरि आप बुंदिय रस लिन्नौं ॥
दुज्जनसल्ल सु कुहक असूई, बुंदिय लेत पर्यो दुख कूंई ॥ ३३ ॥
जानी इन अक्खी सुहि किन्नी, जैपुर दक्खि पह्मि निज छिन्नी॥
अब उमेद बुंदिय भुग्गैं नन, ऐसे मंत्र रचहि मिलि अप्पन ॥३४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशावुम्मेदसिंहचरित्रेसहायीकृतदिल्लीसैन्यज्यायोजयनिनीषुकबन्धवखतसिंहाऽऽगमनतन्निरोधाऽर्थधन्वेशाऽभयसिंहाऽऽहूतहल्ल १ हुलकरारगमनमल्लारवखतसिंहनिवारणशातितसम्भगेशसुभटशंकरगढस्वामिशीपोदशिवसिंहवप्तृवैरोज्जिहीर्पुत्वर्कर्पतिकन्हाउत्तराजसिंहधन्वध्वजिनीशरणसम्पादश्रुतशात्रवसमात्तशक्त्येकाकिबुन्दीन्द्रतन्मारणशमितैतद्वाहिनीद्वय २ विरोधहुलकरदाक्षिणागमनरावराजपुरप्रविशनचौराद्युपद्रवाऽपाकरणप्ररिथतप्रजाप्रत्यागमनमिलितमहारावपुनःप्रभुबुन्दीप्रविशनकोटेशकौहक्यकलनं त्रिंशो ३० मयूखः ॥ ३० ॥ आदितः ॥ ३११ ॥

१ठग २ असूया करनेवाला "गुणेन दोषारोपोऽसूया" अथवा "परगुणेषु दोषाविष्कारे" दूसरे के किये गुण में दोष लगाने को असूया कहते हैं १ दुःख के कुए में गिरा ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्रमें दिल्ली की सेना को सहायक करके बड़े भाई को जीतने की इच्छावाले राठोड़ बखतसिंह का आना १ उस को रोकने के अर्थ मारवाड़ के पति अभयसिंह के बुलाने से हाड़ा (उम्मेदसिंह) और हुलकर का अजमेर जाना और मल्लार का बखतसिंह को मना करना २ चहुवाणों के पति के उमराव शंकरगढ के स्वामी शीशोदिया शिवसिंह को पिता के वैर की इच्छा से मारनेवाले बाकर के पति कान्हावत राजसिंह का मारवाड की सेना की शरण लेना सुनकर शत्रु को वश में करके बरछी से अकेले बुन्दीश का उसको मारना ३ इन दोनों सेनाओं के विरोध को मिटा कर हुलकर का दक्षिण में जाना ४ रावराजा का अपने पुर में प्रवेश करके चोरों के उपद्रव को मिटाना और गईहुई प्रजा का पीछा आना ५ महाराव से मिलकर फिर प्रभु (उम्मेदसिंह) का बुन्दी में आना और कोटा के पति की इन्द्रजाल की गणना का तीसवां ३० मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ ग्यारह ३११ मयूख हुए ॥

॥ गीर्व्वाणभाषा ॥ इन्द्रवंशा ॥

एवं समालोच्य सधीसखैस्समं कोटेश्वर सज्जनशल्यभूपति ॥
दाजेलिकृष्णं प्रति नैनवास्थित प्रीतिच्छदम्प्रेषितवान्स्वदोर्लिपिम्॥१॥
तस्मिन्नुदन्तन्नधमेन लेखित कूर्म्मादयोऽनूनरहस्यकोविदा ॥
भो रावराजेन्द्र तवाऽभिषेचनं कर्त्तुं समुद्युक्तधियो वय स्थिता ॥२॥
श्रीमन्तनन्दाह्वकुमारिकेश्वर घोराभिसम्पातरथाङ्गधूर्वहम् ॥
कार्य्ये पुरस्कृत्य कृपाणपाणय श्रेयो गमिष्याम उपायपद्धता॥३॥
सन्नह्य सेना मदवन्मतङ्गजामुत्फुल्लसत्प्रोथलसत्तुरङ्गमाम् ॥
राणोजिजसैन्धिसुतदण्डनायका धूल्युत्करातर्हितकञ्जबान्धवाम्४
आकर्णमाकर्षितकाण्डकार्मुकाटंकारसन्त्रस्तसपत्नसञ्चयाम्५
आनद्धकान्तायसवर्मबाहुलां चाकचक्यवच्चन्द्रकचन्द्रकाञ्चलाम् ॥
सन्देशहारोक्तिगृहीतनिश्चया विख्यातयानाऽऽसन २सन्धि३विग्र
हाम्४ ॥

इस प्रकार मन्त्रियों के साथ विचार करके कोटा के पति सज्जनों के शाल्य रूप राजा ने "कोटा के महाराव का नाम दुर्जनशाल था परन्तु उम्मेदसिंह के विरुद्ध कार्य करने से कवि ने सज्जनशल्य लिखा है" नैणवा नगर में स्थित दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह को अपने हाथ का लिखा प्रीति पत्र भेजा ॥ १ ॥ उस अधम ने उस में वृत्तान्त लिखा कि हे रावराजेन्द्र तुम्हारे अभिषेक करने में कछवाहा आदि सब पूर्ण गुप्त भेद जाननेवाले हम, अच्छे प्रकार से दत्तचित्त होकर स्थित हैं॥२॥ कन्याकुमारिका क्षेत्र के पति नन्द नामवाले श्रीमन्तको, कि जो भयंकर प्रहारावाले युद्ध रूप रथ की धुराको धारण करनेवाला है कार्य में आगे करके, हाथ में तरवार धारण करके उपाय से कल्याण को प्राप्त होवेंगे ॥ ३ ॥ मस्त हाथियोंवाली और फूलेहुए फुरनों (नासिका) वाले उत्तम घोड़ों वाली सेना को सजकर, कि जिसमें सिंधिया का पुत्र राणोजि सेनापति हैं और जिसने धूलि के समूह से सूर्य को ढकदिया है ॥ ४ ॥ धनुष का कान तक खींचकर टंकार करने से भयभीत किया है शत्रुओं के समूह को जिसने फौलाद के कवच और दस्ताना वाले सुवर्ण के चकाचौंधी देनेवाले चन्द्रमा युक्त ढालोंवाली ॥ ५ ॥ हलकारों के कथन से निश्चय करनेवाली प्रसिद्ध यान, आसन, सन्धि, विग्रह, द्वैध और आश्रय इन नीति के छहों गुणों के विग्राह

द्वैधा५ऽऽश्रयो५ल्लासविलासवैभवां सङ्ग्रामवित्तत्दि१. निपादि २
सौभगाम् ॥६.॥
शौराडीर्यसन्दानितशूरशात्रवां प्राप्तापडत्तीणाविविक्तमन्त्रगाम् ॥
प्रेंखोलदुच्चूलितवैजयन्तिकां धारारयोद्धूतसमस्तसागराम् ॥ ७ ॥
शाक्तीक१याष्टीक२विनोदबन्धुरां नैस्त्रिंशिक ३ प्रासिक४धन्वि५दु-
द्धराम् ॥
प्रोद्दराडदुस्फोट१कुठार२पट्टिशां३जेष्याम उम्मेद१मलार२यामलाम्
॥ ८॥ इतिकुलकम् ॥
तूर्णं व्यतीत्येषदहर्गणान्त्रयं निर्जित्य संख्ये बुधसिंहजाऽन्वयम् ॥
दास्याम उन्मार्जितसर्वकराटकं बुन्द्याऽऽधिपत्यं भवते निरंकुशम्॥९॥
ईर्ष्यापरः सालमनप्तरि च्छदं क्षिप्रं लिखित्वेति सभीमनन्दनः ॥
श्रीमन्तमन्त्रिण्यथ रामचन्द्रकेऽलेखीद्द्वितीयं२दलमात्तकिल्बिषः१०
॥ अनुष्टुब्युग्मविपुला ॥
पुणपेशाऽमात्ययोर्बाढं रामचन्द्र१मलार२योः ॥

वैभववाली और युद्ध को जाननेवाले घोड़ों के सवार और हाथियों के सवारों के ऐश्वर्यवाली ॥ ६ ॥ पराक्रम से वीर शत्रुओं के समूह का बांधनेवाली तीसरे के कान में सलाह को नहीं जाने देनेवाली कंपित वस्त्र की ध्वजावाली (विजय करनेवाली सेना का झंडा ही खुला रहता है) और अपने प्रवाह के वेग से समुद्रों को कंपायमान करनेवाली ॥ ७ ॥ बरछी और लाठी से लड़नेवालों से सुंदर, तरवार, भाला और धनुष धारण करनेवालों से दुस्तर और उग्र घाव करनेवाले कुठार और कटारियोंवाली, ऐसी सेना से उम्मेदसिंह और मल्लार दोनों को जीतेंगे ॥ ८ ॥थोड़े मास बिताकर शीघ्र युद्ध में बुधसिंह के वंश और इनकी उपासना करनेवालों (सम्बन्धियों) को जीतकर सब कांटे उखेड़ कर अंकुश रहित बुन्दी का स्वामीपन आपको देवेंगे ॥ ९ ॥ ईर्षा में तत्पर होकर सालमसिंह के पोते को ऐसा पत्र शीघ्र लिखकर उस पाप को ग्रहण करनेवाले भीमसिंह के पुत्र ने इसके आगे श्रीमन्त के मन्त्री रामचन्द्र को दूसरा पत्र लिखा ॥ १० ॥ पूना के स्वामी के मन्त्रि रामचन्द्र और मलार में जैसे एक हथनी पर दो हाथियों के विरोध होवै तैसे पहिले इन दोनों

अजायत पुरा वैरं करेणवामिभप्रोर्यथा ॥ ११ ॥
तदालोच्य महाराव पूर्वस्मिन्नलिखद्दलम् ॥
निन्द्यं कृतं मलारेणार्पितोम्मेदाय बुन्दिका ॥ १२ ॥
भवेद्यदि मदायत्ता तदायत्ता वय तव ॥
कूर्माद्यखिलराजान स्यामाऽऽज्ञाकारिणो वयम् ॥१३॥
एतच्छ्रुत्वा दलोदन्त कोटाऽधीश्वरलेखितम् ॥
लिलेख नन्हमन्त्रीत्थ रामचन्द्रस्तदुत्तरम् ॥ १४ ॥
आत्मनोऽय स्वतन्त्रत्व पज्ज रूपापयितु ननु ॥
अयुक्तमकरोन्नीचैर्मलारो मातृशासित ॥ १५ ॥
न भोक्तुमुचितो बुन्द्या स्कन्धवारम्मनोरमम् ॥
देवानांप्रिय उम्मेदसिंहानाम्भोग्यमस्थिभुक् ॥ १६ ॥
उदयद्द्रपृथ्वीभुग्जगत्सिंहमत विना ॥
कार्येऽस्मिन्नाऽस्मदादीना श्रीमतोऽनुसरेद्वच ॥ १७ ॥
राणेश्वरविभित्सुस्त्व नन्हे लेखय तद्दलम् ॥
बुन्द्या कोटेडधीनायां प्रीता स्म इति सत्वरम् ॥ १८ ॥

में हुआ ॥ ११ ॥ इस बात को विचार कर महाराव ने पहिले (रामचन्द्र) का पत्र लिखा कि उम्मेदसिंह को बुन्दी देने का कार्य मल्लार ने निन्दा के योग्य किया है ॥ १२ ॥ वह बुन्दी जो मेरे आधीन होवे तो कछवाहे आदि हम सब राजा निश्चय ही तुम्हारे आज्ञाकारी होकर तुम्हारे आधीन होवें ॥१३ ॥ कोटा के पति के लिखेहुए इस पत्र के वृत्तान्त को सुनकर नन्ह के मन्त्रि रामचन्द्र ने उस का उत्तर इसप्रकार लिखा ॥ १४ ॥ उस नीच मूर्ख और शूद्र मल्लार ने अपनी स्वतन्त्रता प्रसिद्ध करने को निश्चय ही यह कार्य अयोग्य किया है ॥१५॥ जैसे सिंहों के भोगने योग्य को कुत्ता भोगने योग्य नहीं होता तैसे रमणीय राजधानी बुन्दी को भोगने योग्य मूर्ख उम्मेदसिंह नहीं है ॥ १६ ॥ उदयपुर की पृथ्वी को भोगनेवाले राणा जगत्सिंह की सलाह के बिना इस कार्य में हम लोगों के वचन श्रीमन्त (नन्ह) नहीं मानेगा ॥ १७ ॥ महाराणा को भेदने (फोड़न) की इच्छावाले तुम वह पत्र नन्ह के नाम लिखाओ कि यह बुन्दी कोटा के पति के शीघ्र आधीन होने में हम प्रसन्न हैं ॥ १८ ॥ शीघोद के पत्र से और

शीर्षोद्वत्र्माद्भुतेनाऽप्यस्माकं सम्मतेन च ॥
कारिष्यत्येव पुण्येशो बुन्दीन्दौर्जनशल्लिपकीम ॥ १९ ॥
वर्णाद्भुतं विदित्वैवं रामचंद्रेण चालितम् ॥
राणादीन् सम्मते नेतुं तच्चक्रे भैमिरुद्यमम् ॥ २० ॥

॥ उपजातिः ॥

इतस्स बुन्दीपतिरात्तधर्मा चाणक्य१कामन्दक२वाक्यवर्मा ॥
शर्माऽऽश्रयोऽर्थिव्रजदत्तभर्मा स्वाध्यायसाध्याऽयमहापकर्मा । २१ ।
वृद्धश्रवाः१ सन्बलगोत्रपालस्तथा तपस्तच्चतयाऽनुपेतः ॥
अशीर्णपादो ह्यपि धर्मराजो२ राजा३पि दोषाकरताविहीनः । २२ ।
श्रीदोऽप्यखर्वः सबलो५ऽपि सौम्यः शिवो६ऽविरूपाक्षपुराऽध्वगत्रः ॥

हमारी सलाह से पूना के स्वामी बुन्दी का निश्चय ही दुर्जनशाल की (तुम्हारी) करेंगे ॥ १६ ॥ ऐसे रामचन्द्र के भेजेहुए पत्र को जानकर भीमसिंह के पुत्र ने महाराणा आदि को अपने पक्ष में लाने का वह उद्यम किया ॥ २० ॥ इधर वह बुन्दी का पति (उम्मेदसिंह) धर्म को ग्रहण करनेवाला, चाणक्य और कामन्दक के वचन रूपी कवच वाला, ब्राह्मणों के आश्रयवाला और याचकों के समूह को सुवर्ण देनेवाला, वेद और पुराणों के पठन पाठन से सिद्ध होनेवाली शुभदायी विधि की सहायता से कर्म करनेवाला ॥ २१ ॥ और वृद्धों की सुनने वाला (इन्द्र) होने पर भी बल और गोत्र का पालन करनेवाला था. यहां बल और गोत्र शब्दों में श्लेष है, अर्थात् इन्द्र पक्ष में बल (दैत्य) और गोत्र (पर्वत) इन का वह भेदन करनेवाला है और बुन्दीन्द्र के पक्ष में बल (सेना) और गोत्र (कुटुंब अथवा जाति समूह) जिनकी यह पालना करनेवाला है और इसीप्रकार तप को काटने से अनुपेत [युक्त नहीं] है, अर्थात् तप करनेवाला है और वह इन्द्र तपस्वियों के तप को काटनेवाला है. अशीर्णपाद होकर भी धर्म राज है अर्थात् धर्म के चरण तो युग युग प्रति क्षय होते जाते हैं और इनके चरण अक्षय हैं और राजा होने पर भी दोषाकर अर्थात् दोषों की खान नहीं है. राजा नाम चन्द्रमा का है सो दोषाकर अर्थात् रात्रि को करनेवाला है ॥२२॥ कुबेर होने पर भी निधि रहितहै अर्थात् कुबेर तो लक्ष्मी का संचय करनेवाला है और यह उडानेवाला है कुबेर पक्ष में खर्व निधि और राजा पक्ष में खर्व छोटे मनवाला अर्थात् कृपण. बलवान् होने पर भी सौम्य है, शिव होकर भी

अभीष्टमेनो७ऽपि निरस्तजाड्यो दरन्न भेजे पुरुपोत्तमोऽपि॥ २३ ॥
अनूनबाणाः कमनोऽपि साङ्गः सत्यप्रियो भास्वदलीकशाली १०॥
यद्यप्युदारो दृढमुष्टिदण्डो११ विरोचनो१२ऽप्यश्वदनन्तमस्ति ॥ २४ ॥
अनेकदस्योऽपि सपर्शुपाणिः सत्स्वर्णकायो१४ऽपि न चक्रिशत्रुः ॥
अनाश्रयाश शुचि१५रेव साक्षादजिह्मगो भूमिभुजङ्गभोगी१६॥२५॥
प्रचण्डदण्डजितारिपक्ष पाड्गुण्यषट्शक्तित्रय३तत्वदक्ष ॥

विरूपाक्ष [क्रूर दृष्टिवाला] नहीं है तीन नेत्र होने से शिव का नाम विरूपाक्ष है और पुर तथा यज्ञ की रक्षा करनेवाला है [शिव त्रिपुर के और दक्ष के यज्ञ के नाश करनेवाले हैं] अभीष्टेन होने पर भी मूर्खता नहीं है अर्थात् इच्छानुसार माननेवाला मूर्ख होता है और यह इष्ट का माननेवाला बुद्धिमान् है पुरुषोत्तम होने पर भी दर का सेवन नहीं करता है "पुरुषोत्तम" श्रीकृष्ण के पक्ष में दर [शंख] और पुरुषों में उत्तम उम्मेदसिंह के पक्ष में दर [भय] वाची है ॥ २३ ॥ कामदेव होकर भी अनून [बहुत] बाणोंवाला और अङ्ग सहित है [कामदेव पंच बाणवाला और अङ्ग रहित है सत्यप्रिय होकर भी भासनशील [श्रेष्ट वक्ता] है और उधर युधिष्ठिर सत्यप्रिय होने पर भी अश्वत्थामा के वध के अर्थ झूठ बोलनेवाला था अथवा अप्रिय वक्ता था उदार होने पर भी दंड देने में दृढमुष्टि (कृपण) है सूर्य होकर भी उत्तम अनेक घोड़ों वाला है (सूर्य केवल सात घोड़ोंवाला ही है) ॥ २४॥ पर्शुपाणि होकर भी अनेक क्षत्रधारियों (क्षत्रियों) वाला है पर्शुपाणि अर्थात् परशुराम तो क्षत्रियों का नाश करनेवाला था और यह परसी (शस्त्र विशेष) हाथ में रखनेवाला होकर भी क्षत्रियों को रखनेवाला है स्वर्णकाय होकर भी चक्री का शत्रु नहीं है अर्थात् स्वर्णकाय गरुड] तो चक्री [सर्प] का शत्रु है और उम्मेदसिंह स्वर्ण सदृश शरीरवाला होकर चक्री [विष्णु] का शत्रु नहीं है शुचि होकर भी आश्रय का नाश करनेवाला नहीं है अर्थात् शुचि [अग्नि] तो आश्रय का नाश करता है और यह शुचि [पवित्र] आश्रय की रक्षा करता है भोगी होने पर भी अजिह्म (सरल) है अर्थात् सर्प भूमि का पति नहीं होने पर भी वक्रगति [टेढा चलनेवाला है और यह सीधा होने पर भी भूमि रूपी वेश्या को भोगनेवाला पति है [वेश्या के पति का नाम भुजंग है] ॥ २५ ॥ शास्त्र विहित उचित भयकर दंड से शत्रु पक्ष को जीतने वाला सन्धि विग्रहादि छहों गुण और प्रभुशक्ति, मंत्र शक्ति, उत्साह शक्ति इन तीनों शक्तियों के मर्म में निपुण, अपराध करनेवाले दुष्टों

कृतापराधान्विनियम्य दुष्टान् राज्यं चकारापरकार्त्तवीर्यः ॥ २६ ॥
व्यतीत्य वीरः शिशिरं१ वसंतं२ तथैव चोष्णोपगमं३ गुणज्ञः ॥
प्राप्तासु वर्षासु४ परोपकारी व्यधत्त बुन्द्यां विविधान्विनोदान् ॥ २७ ॥
अनोकुहैरंकुरितैस्तृणौघैस्तत्राऽडशैलो रुचिरो बभूव ॥
जाताः समस्ता हरिता हरित्काः शृंगारशालिन्यवनी रराज ॥ २८ ॥
अलंकृतोदग्दिगुदारधारा कादम्बिनीकालहरित्कडारा ॥
ववर्ष वातोच्छलदम्बुवारानल्पकल्पप्रकटप्रसारा ॥ २९ ॥
चिरायभूभूविरहोपघाती पानीयपानीयपुरःप्रपाती ॥
तापं तडित्वांस्तपनस्य तर्जन्नप्लावयद्भूमिमतीव गर्जन् ॥ ३० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे सहायीभूतमहारावनयनपुरबुंद्युद्ग्रहणपत्रप्रेषणादालेलिकृष्णाऽनुनयनतदनुमल्लारस्पर्द्धिरामचंद्रोपयोगिकरणप्राप्ततत्पत्ररा-णाऽऽदिसम्मेलनोद्यमनबुंदींद्रवर्षर्तुविनोदविहरणमेकत्रिंशो मयूखः

को विशेषता से दमन करके मानों दूसरे कार्तवीर्य ने राज्य किया ॥ २६ ॥ उस वीर ने शिशिर, वसन्त और उसीप्रकार निश्चय ही ग्रीष्म को विताकर परोपकारी वर्षा के प्राप्त होने पर गुणों को जाननेवाले उस [उम्मेदसिंह] ने बुन्दी में नाना प्रकार के विलास किये ॥ २७ ॥ तहां वृक्षों के अंकुरों से और तृणों के समूहों से आडाबला नामक पर्वत मनोहर हुआ सब दिशा हरी होकर शृंगार युक्त भूमि शोभायमान हुई ॥ २८ ॥ जिसने उत्तरदिशा को भूषित की है ऐसी काले, हरे और पीले रंग की और पवन से उछलते हुए जल के समूहवाली प्रलय के समान अधिक है प्रत्यक्ष विस्तार जिसका ऐसी उदार धारावाली मेघमाला वर्षी ॥ २९ ॥ बहुत समय से पृथ्वी पर उत्पन्न होनेवाले विरह का नाश करनेवाले आगे आगे अत्यन्त पानी गिरानेवाले, ग्रीष्म के संताप को डरानेवाले मेघ ने बहुत गर्जना करके भूमि को डुबाई ॥ ३० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में महाराव का सहायक होकर नैणवापुर में बुन्दी दिलाने का पत्र भेज कर दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह से प्रार्थना करना १ जिसपीछे मल्लार की बराबरी करनेवाले रामचन्द्र को उपयोगी करना और उसका पत्र पाकर राणा आदि को मिलाने का उपाय करना २ बुन्दीन्द्र का वर्षा ऋतु में विनोद पूर्वक

॥ ३१ ॥ आदित ॥ ३१२ ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इम पाउस आगम उदित, अतुल अब्भ आसार ॥
अंकूरन भुव अच्छदियँ, किय पूरन कासार ॥ १ ॥
यँहँ अग्गैं गुनगोरि दिन, होतो उच्छव पूर ॥
बुद्द सहोदर जोधके, बूडत वह हुव दूर ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अब सावन अवदात तीज दिन, उच्छव किय विख्यात इक्ष इँन ॥
रानीजनन सुघाट सुहाई, पारवती प्रतिमा बनवाई ॥ ३ ॥
वहुविधि भूखन बसन बनाये, प्रीति उपेत ताहि पहिराये ॥
दै पटु सग अलंकृत दासी, नाम तीज वह प्रकट निकासी ॥ ४ ॥
गई जैतसागर तडाग तट, भूपहु पत्त तत्त सब लै भट ॥
इक ओर देवी ससंद जँहँ, भूप सभा इक ओर बनी तँहँ ॥ ५ ॥
वारसुंदरिन नटन वनायो, अतुल मेघ आलाप उठायो ॥
वेंलि तँहँ घटिका दोयर बिताई, पुनि देवी महलन पधराई ॥ ६ ॥
तदनु नरेस सेवकन हित हिय, मादकँ वस्तु मद्य बिनु वटिय ॥
त्योंहीं कुसुमन हार किलंगी, सोभित अतर पान तिन सगी ॥ ७ ॥
दै इम सबन चढ्यो बुंदीपति, आयो महलन मन प्रसन्न अति ॥

विहार करने का इकतीसवां ३१ मयूख समाप्त हुआ और आदिसे तीनसौ बारह ३१२ मयूख हुए ॥

१ मेघधारा से २ भूमि को छाई ३ तलाव ॥ १ ॥ ४ बुधसिंह के सगे छोटे ५ जोधसिंह के डूबने से गुनगोरि का उत्सव मिटगया ॥ २ ॥ ६ शुक्लपक्ष की ७ छाबा क्षत्रियों के पति ने ८ श्रेष्ठ डौळ (आकृति) की ॥ ३ ॥ ९ सहित १० भूषणों से युक्त ॥ ४ ॥ ११ तलाव के किनारे १२ तहां प्राप्त हुआ १३ देवी की सभा ॥ ५ ॥ १४ वेश्याओं ने नृत्य किया १५ तुलना रहित मेघराग का १६ पुनि ॥ ६ ॥ १७ नशे की वस्तु १८ विना मद्य (दारू) के बुन्दी के राजाओं में वर्तमान महाराव रघुवीरसिंह के सिवाय केवल बुधसिंह ने ही मद्य पिया था १९ फूलों के ॥ ७ ॥

दूजे दिनहु यहै विधि ठानी, पच्छे चढत परयो धन पानी॥ ८ ॥
पहुँच्यो निठि निजालय संभर, फुट्टि तड़ाग चल्यो इहिं अंतर ॥
बिक्रम सक खट नभ वसु वसुमति१८०६, अतुल्ल बिर्गव अचानक भो अति ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

सावन बिसद चउत्थि४ तिथि, रत्ति घटिप दुव२ जात ॥
जल न जैतसागर झिल्यो, उडिप सेतु अररात ॥ १० ॥

॥ षट्पात् ॥

अति जंव फुट्टिय सेतु मनहुँ तोपन गन छुट्टिय ॥
कै लग्गत सतकोटि कूट पव्वय जनु तुट्टिय ॥
बुरजन भंज उडाय फोरि कोसन फटकारे ॥
मगबिच बिटप मिले सु हीनवल्कल करि डारे ॥
निम्नहु निवान मुंदिय सकल विकल नक्र रुकि रुकि रहैं॥
प्राकार पृथुल अटकैं न जल तो पत्तन वहु जन वहैं ।११।

॥ दोहा ॥

इम फुट्टत सर सेतुको, सुन्यौ अचानक रवान ॥
कछुक काल अचिरज रह्यो, पुनि किय सवन प्रमान ।१२।
प्रात ताल ऐसो लख्यो, हुव सब वैभव हानि ॥
मानहुँ बनिक धनाढ्य घर, लुट्ट्यो रंकन आनि ॥ १३ ॥
जोधसिंह जिहिं मध्य थित, बूड्यो अग्ग प्रमत्त ॥
जो सब अंग उपांग जुत, कढ्यो तरंडक तत्त ॥ १४ ॥

---

१ मेघ का तथा अत्यन्त ॥ ८ ॥ २ अपने महल में ३ तालाव फूटा ४ शब्द ॥ ९ ॥ ५ अरड़ाट शब्द करके पाळ लूटी ॥ १० ॥ ६ अत्यन्त वेग से ७ पाळ ८ मानों वज्र लगने से पर्वतों के शिखर लूटे ९ समूह १० मार्ग में जो वृक्ष आये उन्हें त्वचा ११ (छाल) हीन करदिये सब १२ गहरे जलाशयों को १३ मगर १४ बडे कोट से १५ नगर के ॥ ११॥ १६शब्द ॥ १२ ॥१७मानों धनवान वनिये के घर को ॥ १३ ॥१८नाव ॥ १४ ॥

लिन्नी बुदिय जानि इत, उदयनैर जगतेस ॥
पठये पत्र उमेद प्रति, लिखि हित बिहितें बिसेस ॥ १५ ॥
अक्खी हमहु प्रसन्न अति, अब इहन अधिराज ॥
अरेंहि इहाँ सन आपहैं, टीकाके सब साज ॥ १६ ॥
कोऊ कोबिदं सचिव निज, भेजहु सत्वरँ अत्थ ॥
हिय उपज्यो कछु पुच्छि हम, ससय तजहिं ममत्थ ॥ १७ ॥
नृपति पुरोहित सुकल्यो, दयाराम सुनि एह ॥
पहुँचि बिप्र तब दुवर नृपन, सध्यो सरस सनेह ॥१८॥
अभयसिंह मरुभूपको, इत आयउ अवसान ॥
निज भट सब बुल्ले निकट, होत कलेवर हान ॥ ॥ १९ ॥
अक्खी अब मम जात अँसु, इत सोदर बखतेस ॥
मोछतही होवन लग्यो, अग्गैं धन्व नरेस ॥ २० ॥
सो सठ अब मेरे मरत, नागोरहिं रक्खैं न ॥
मारि बिडारहिं मम सुतहिं, लहहिं जोधपुर ऐंन ॥ २१ ॥
रामसिंह मम पुत्र यह, है कुपुत्र मति हीन ॥
यासौं तुम सब पलटिहो, रहिहो नाहिं अधीन ॥ २२ ॥
कुल कुठार कटक यहे, पापी खल पहिचानि ॥
तुमहु कहाँतक रक्खिहो, कूर नृपहिं मम कानि ॥ २३ ॥
तातैं जो अवरहि तकहु, तो पहिलैं कहि देहु ॥
याहि दिवावहु ईंतर कछु, वाँहि जोधपुर एहु ॥ २४ ॥
नहिं तो जो अब इँहिं मिलैं, पिच्छैं सोहु मिलैं न ॥
पुच्छन यह बुल्ले तुमहिं, अब मुहि बढत अचैन ॥ २५ ॥

१वचित॥ १५॥ २शीघ्र ही॥ १६॥ ३चतुर ४शीघ्र॥ १७॥ १८॥ ५अन्त ६शरीर का नाश होते समय॥ १९ ॥ ७ प्राण ८ सगाभाई ९ मेरे होते ही आगे मारवाड़ का पति होने लगा था ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ १०मूर्ख राजा को ११मेरी अदब से ॥ २३ ॥ १२ इस को कोई अन्य परगना दिला दो १३बखतसिंह को ॥ २४ ॥ १४रामसिंह को इस समय मिलता है सो भी पीछे नहीं मिलेगा १५ बुलाये हैं ॥ २५ ॥

सेरतिया उपटंकि इक्क, दूदाउत रट्ठोर ॥
क्कुल्ल्यो सुनि रयपाँपुरप[1], सेरसिंह भट मोर[2] ॥ २६ ॥
हम हत्थिन ठिल्लैं भुजन, घल्लैं अग्गिन वत्थ ॥
खंडैं दक्खिन खग्ग बल, मंडैं रन बिनु मत्थ ॥ २७ ॥
तिन जीवत कातर[3] बचन, नन अक्खहु नरनाह ॥
कुलकुठार भवदीय[4] सुत, तदपि करहि निरबाह ॥ २८ ॥
अधम तऊ यह कुमर पै[5], जो यह कन्या होय ॥
सोंपैं भुग्गहिं जोधपुर, हम छत त्रास न होय ॥ २९ ॥
यह सुनि नृप क्कुल्ल्यो बहुरि, इत्तर[6] भटन सन एस ॥
कैसी भासत[7] सबनकौं, अक्खहु मोहि असेस ॥ ३० ॥
चंपाउत रट्ठोर तहँ, नगर आउवा ईस ॥
कुसलसिंह क्कुल्ल्यो, सुनहु, इक्क मरु धन्व अधीस[8] ॥ ३१ ॥
ऐसी भासत कुमरकौ, करिहैं नीचन संग ॥
उचितनको आदर घटैं, रंगैं अनुचित रंग ॥ ३२ ॥
सोतो हम सहिहैं सबहि, पै डेरन परवाय ॥
दुर्दुकारि रु कढ्ढैं[9] हमहिं, ततो रह्यो नहिं जाय ॥ ३३ ॥
यह उदंत हुव जोधपुर, सुनहु भूप चहुवान ॥
अभयसिंह तजि तनु तदनु[10], कियउ महाप्रस्थान[11] ॥ ३४ ॥
रामसिंह बैठो तखत, कुलहिं कलंकित कार[12] ॥
जानतहे ताकौं जगत, वहहि लयो आचार ॥ ३५ ॥
इक ढढ्ढी[13] अंत्यज अधम, असी नाम अघरूप ॥
वह बाँदक[14] कंडोलको, मित्र कियउ मरुभूप[15] ॥ ३६ ॥

---

१ रियांपुर का पति २ मौड़ (मुकुट) ॥ २६ ॥ २७ ॥ ३ कायर वचन ४ आप का पुत्र ॥ २८ ॥ ५ परन्तु ॥ २९ ॥ ६ दूसरे उमरावों से ७ कैसी दीखती है ॥ ३० ॥ ८ हे मारवाड के पति ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ९ धिक्कार देकर निकालदेवें तो ॥ ३३ ॥ १० जिस पीछे शरीर छोडकर ११ स्वर्ग गया ॥ ३४ ॥ १२ करनेवाला ॥ ३५ ॥ १३ ढाढि विशेष १४ ढोली १५ मारवाड़ के पति ने ॥ ३६ ॥

भगिनी ताकी भाँवँती, नाम सुरूपाँ नारि ॥
रानिन पर पटरांगिनी, करि रक्खी गृह हारि ॥ ३७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

दिन विपरीत जोधपुर केरे, तातैं विधि ऐसे नृप हेरे ॥
सूरिनको सतकार न रक्खैं, सूरन सैन अनुचित जड़ अक्खैं ॥३८॥
नहिं सचिवन दासन सनमानैं, अरु चालिस नीचन हित आनैं ॥
मरुपति मित्र मृत्यु जब पायो, सुनि टीँका मल्लार पठायो ॥ ३९ ॥
गो तिहिं सग मत्त इक वारनँ, परिघात प्रबल श्रवत मद धारन ॥
अभयसिंह सुत कौतुक आयो, सो गज निज गज सग लरायो ४०
हुलकरके इभतैं निज हारयो, तब सठ मारन ताहि बिचारयो ॥
तोप दगाय हनहु इहिं अक्ख्यो, जग्गू बिप्र निहि कहि रक्ख्यो ॥४१॥
बखतसिंह नागोर धराधन, निज धात्री पठई कछु कारन ॥
बुल्लि रु तास बसन उतराये, बुंलि धरि सेकिंम छैगल चराये ॥४२॥
चपाउत वह कुसल इक्क दिन, आयउ सभा जानि रामहिं ईन ॥
तास पिछि इक दास पठायो, अधोवैस्त्र करि सैन कढायो ॥४३॥
तू वपु खर्व कह्यो पुनि तासौं, बढँ न तव विक्रम लघु स्वासौं ॥
सो पै दुस्सह कुसलैं रह्यो सहि, अभयसिंह आदेसं चित्तचहि ॥४४॥
बहु अनुचित इम अधम बनावैं, कवि लोलौहु कहत अलसावैं ॥
सुनहु राम सभर असुँस्वामी, बियरी इम मरुपति बदनामी ॥४५॥
बखतसिंह सुनि मोद बढावैं, लैन जोधपुर दाव लगावैं ॥

---

१ उसकी बहिन २ रुचिकारक (रूपवती) ३ पटरानी ॥३७॥ ४ पण्डितों का वीरों ५ से ॥३८॥ ६ मूर्ख ॥३९॥ ७ हाथी ८ तिरछी घात करनेवाला अथवा पकीहुई उमर का ॥ ४० ॥ ९ अपना हाथी ॥ ४१ ॥ १० नागोर का राजा ११ अपनी धाय को १२ योनि में १३ मूला धरकर १४ उस मूले के पत्ते बकरे को चराये ॥ ४२ ॥ १५ रामसिंह को स्वामी जानकर कुशलसिंह सभा में आया १६ धोवती ॥ ४३ ॥ १७ तू छोटे लिंगवाला है १८ कुत्ते से भी छोटा १९ कुशलसिंह २० अभयसिंह का हुकम ॥ ४४ ॥ २१ कवि की जिह्वा भी २२ प्राणनाथ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे पितृव्यकल्पवनगतगुणगौरीमहोबुन्दीन्द्रश्रावणश्रामशुक्लप्रथमशिवादिनोऽत्सवस्थापनतदपरदिवसराद्दृष्टयात्राऽनन्तरजैतसागरमहातडागजलसेतुत्रोटनराणाजगत्सिंहविहितवर्णदूतबुन्द्याऽऽगमनाऽवगतदत्तोदन्तरावराट्पुरोहितदयाराममोदयपुरप्रेषणाधन्वधरेशाऽभयसिंहमहापरिणामरुगाधिवर्द्धनस्वकुपुत्रसमयसामन्तस्वीकरणाऽकरणनिश्चयनसेरसिंहसर्वसहनाऽङ्गीकरणकुशलसिंहोचिताऽनुचितनिवेदनकावन्धराजकायत्यजनतत्तनुजरामसिंहपट्टपापणातदुचिताऽनादरणांत्यजनसहचरीभवनपरिभावकपीलुमारणविचारपितृव्यकधात्रेयीविवस्त्रीकरणकुशलसिंहाऽधोवस्त्रकर्त्तनपतिपुरुपतन्निन्दाप्रसरणं द्वात्रिंशो ३२ मयूखः ॥ ३२ ॥ ३१३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में, काका के मरने से गयेहुए गुणगौर के उत्सव को बुन्दी के पति का सावन मास की शुक्लपक्ष की तीज के दिन उत्सवस्थापन करना १ उसके दूसरे दिन समूह के गये पीछे बडे तलाव जैतसागर के जल का पाल को तोड़ना २ राणा जगत्सिंह के उचित पत्र का बुन्दी में आना जानकर पत्र के उत्तर में रावराजा का पुरोहित दयाराम को उदयपुर भेजना ३ मारवाड़ के पति अभयसिंह को कालरोग के बढने पर अपने कुपुत्र के समय (राजापन के समय) का स्वीकार, न करने के विचार से अपने उमरावों को बुलाकर निश्चय करना ४ शेरसिंह का सब सहन करने को स्वीकार करना और कुशलसिंह का उचित अनुचित निवेदन करना ५ राठोड़ों के राजा का शरीर छोडना और उस पुत्र रामसिंह का पाट पाना ६ उसका उचित लोगों के अनादर का करना और अन्त्यज लोगों का साथ करना ७ अनादर करनेवाले हाथी को मारने का विचार और काका की धाय को नग्न करना ८ कुशलसिंह की धोती (धोवती) काटने से मनुष्य २ प्रति उस की निन्दा फैलने का बत्तीसवां ३२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ तेरह ३१३ मयूख हुए ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत बुन्दीस मल्ल इक धाग्यो, सहर सितारा गमन बिचारयो ॥
सग लयो निज दीप१सहोदर, भजनेरीपति सेर२सुभट बर ॥ १ ॥
हड्डा पुनि नाहर३ हरदाउत, अरु दलेल ४ हरजन अमात्य सुत ॥
इत्यादिकन सहित नृप हक्किय, सुनि प्रधान दिस दिस अरि सक्किय२
नृपहिं चलत कोटेस निवारयो, तउ न रुक्यो छल तास निहारयो॥
सक खट नभ धृति १८०६ भद्द बिसद्द तँहँ, बुदिय रक्खि सचिव हरजन कँहँ ॥ ३ ॥
पति सभर चल्ल्यो दक्खिन प्रति, रहि बेघम इक१रत्ति महामति ॥
दरकुचन इम पत्त अवतिप, श्राद्ध अपरपच्छग तत्थहि किय ॥४॥
हके पुनि लग्गत नवरत्ते९, अष्टमि ८ दिन रेवा तट पत्ते ॥
तँहँ दक्खिन पति चोकीदारन, मग्यो कर वह सरित उतारन ॥५॥
सुनि नृप कहिय हम न कर देहैं, जब उन अक्खिय पार न जैहैं
तब तिन्ह भूप पिटाय बिडारे, पोतन करि निजतन्त्रे पधारे ॥ ६ ॥
श्रीओंकार१ ईस दरसन करि, माधाता२ जुत पुजि पयन परि ॥
रेवा नदि पुनि लघि बडे रैय, पत्त नगर बुरहानपुराह्वय ॥ ७ ॥
जोतिर्लिंग सिव१अरचन महिय, विश्वकर्म प्रतिमा२दरसन किय॥
पुर अवरंगाबाद गये पुनि, गोदावरी बहुरि न्हाये धुनि ॥ ८ ॥
श्राद्ध१वैंपन२उपवास३विहित सब, बिरचि अग्ग बुन्दीस चलिय तब
उज्जैं असित इम गय धरि नैंय धुर, बापगाँव नामक हुलकरपुर१
पुण्यापुर मल्लार हुतो तब, खड्डू नृप सतकार कियो सब ॥

---

१ दीपसिंह ॥ १ ॥ २ कामदार का पुत्र ॥ २ ॥ ३ मना किया ४ सुदि ॥ ३ ॥ ५ बुद्धिमान् ६ दूसरे पक्ष में गयेहुए "ज्योतिष में शुक्लपक्ष को द्वितीय मानते हैं" ॥ ४ ॥ ७ नर्मदा के किनारे ८ नदी उतारने का ॥ ५ ॥ ९ निकाल दिये १० नावों का ११ अपने आधीन करके॥६॥१२ वेग से १३ बुरहानपुर नाम का॥ ७ ॥ १४ नदी में ॥८॥ १५ मुंडन १६ कार्तिक वदि में १७ नीति के धुरको धारण करके ॥९॥ १८ पूना में

सम्मुह जाय बधाय रु लिन्नैं, हय सिरुपाव निवेदन किन्नैं ॥१०॥
मुदित रची दिन प्रति महिमानी, दुर्लभ सिकार अनेक दिखानी॥
अहं कति रहत मलारहु आयो, बिबिध हेत मिलि दुहुँन२ बढायो ११
बुंदियें खबरि गई नृपपैं तब, सचिवन अग्गैं दुखित प्रजा सब ॥
हरजन धन छिन्नत नन हारैं, बनिकन दे अभिसाप बिगारैं ॥१२॥
चोरनतैं मिलि द्रव्य चुरावैं, खोसि खोसि सबको बसु खावैं ॥
सुनि उद्घोसें कियो नृप निश्चय, निकस्यो सत्य तबहि मंड्यो नय
भजनेरीपति सेरसिंह भट, हरजनकौं पकरन पठयो झट ॥
तिहिं आय रु माटुंदा पत्तन, हल्ला घेरिलयो वह हरजन ॥ १४ ॥
कोटसहिं तिहिं तबहि कहाई, भजनेरी पँ गहत सुहिं भाई ॥
अप्पहि दये संग इनके हम, करहु सहाय स्वदासन है छम ॥१५॥
कोटापति सुनि करि त्वरिताई, पृतनाँ देन सहाय पठाई ॥
जो पहुँचै न इते बिच करि जय, गहि हरजनहिं सेर बुंदिय गय १६
तारागढ [11] कारागृह डार्यो, बंधन लहि तब दर्प बिसार्यो ॥
बापगाँवँ मल्लार जुहागित, निज कन्या [12] उपयम मंडिय इत ॥१७॥
बुन्दीसह बहुधन खरच्यो जहँ, आगमकाल इक बत्त सुनी तहँ ॥
अगहन मास बिसद [13] अंह, तज्यो छत्रपति साहू बिग्रह १८
हुलकर घर अति सोक तास हुव, सुता बिवाहि चलन चिंत्यो ध्रुव
अनुज [15] बापगाँवहि नृप रक्खिय, हरजन पुत्र अरज वह अक्खिय १९
द्वैरदिन सिक्ख मोहि नृप दीजै, त्वरित [16] आनि मिलिहौं दिन तीजै२
द्वैरद्दिन सिक्ख ताहि तब दिन्नौं, कछु न संक भजिजावन किन्नौं२०
इत हड्ड१ रु हुलकर२ प्रीनुरत्ते [17], पहिलैं दुव२ पुरपार्पुर [18] पत्ते ॥

॥ १० ॥ १ कितने दिन ॥ ११ ॥ २ बुन्दी की ३ झूठा दोष ॥ १२ ॥ ४ धन ५ डाका ॥ १३ ॥ १४ ॥ ६ कोटा के पति को ७ भजनेरा का पति ८ हे समर्थ ॥ १५ ॥ ९ शीघ्रता १० सेना ॥ १६ ॥ ११ कैद में १२ बिवाह ॥ १७ ॥ १३ दिन १४ शरीर ॥ १८ ॥ उमेदसिंह ने अपने १५ छोटे भाई दीपसिंह को बापगांव में ही छोडा ॥ १९ ॥ १६ शीघ्र ॥ २० ॥ १७ प्रीति सहित १८ पूनामें

होतहँ सचिव सदासिव हितमय, नन्ह पितृव्य१ क सीमा जित नय२१
संभरपति सम्मुह वह आयो, दिन दस१० रक्खि सनेह दिखायो ॥
इन हरजन सुत बापगाँव रहि, जनकहिं सुनि पकरयो बिरोध चहि२२
नृप अनुजहिं फोरन किय दुर्नय, फुट्टयो नहिं तब भजि कोटा गय ॥
इत संभर१ हुल्लकर१ पुराया सन, पत्ते उभय२ सितारा पत्तन॥२३॥
इहहिं प्रात सुनत हरखायो, सम्मुह नन्ह कोस इक१ आयो ॥
डेरा काफरखोह दिवाये, पुनि महिमानी साज पठाये ॥ २४ ॥
साहू भूप मरयो विनु संतति, ऍंथुल राज्य किम रहैं बिनाँ पति॥
साहू पितामही तारा तँहँ, अरु प्रधान श्रीमत नन्ह जँहँ ॥ २५ ॥
मंत्र विचारि पनालागढ सन, राम बुलायउ संभा नंदन ॥
अग्गैं नृप सिवराज कर्या निंभ, भूखन कविहिं दये बावन५१ इभ२६
संभा हुव ताको लघु सोदर, दिन्नों जाहि पनालागढ बर॥
ताके सुत यह रामनाम हुव, सो अब कियउ सितारापति धुव २७
राजाराम१ बहुरि संभरपति१, मिलिवाये दुव२ नन्ह महामति ॥
बेठे दुव२ इक१ तखत बरब्बर, चले दु२ओर मोरछल१ चामर२८
डोले त्रय३ पुनि नन्ह मँगाये, राजाराम बिवाह रचाये ॥
साहू पट्ट राम इम बेठो, इत इक लरन घूँसल्या पेठो ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

कहि अग्गैं श्रीमत द्विज, बाजेराय प्रधान ॥
रघू नाम भट घुसल्या, पठयो हिंदुसथान ॥ ३० ॥
तिहिं जनपद गुडवान१ अरु, खानदेस२ लिय जित्ति ॥
हाकिम पंडित भासकर, रक्खयो तँहँ करि कित्ति ॥ ३१ ॥
पच्छो पुनि दक्खिन गयो, मृत सुनि बाजेराय ॥

१काका २ नीति से ॥ २१ ॥ ३ राजा के छोटे भाई सेरसिंह को ॥ २२ ॥ २३ ॥
॥ २४ ॥ ४ पन्ना ॥२५॥ साहू की ५ दादी संभा का ६ पुत्र ७ सहश ८ हाथी
॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ९ देश ॥ ३१ ॥

सोव रह्यो श्रीमंत सुत, नन्न्ह न जानैं न्याय ॥ ३२ ॥
नन्न्ह हुकम लै छन्न तब, कातिक पिसुन भट ओर ॥
खानदेस गुड़वानमैं, आये बनि बरजोर ॥ ३३ ॥
तत्थ रघू भट भासकर, मार्‌यो इन करि जंग ॥
अप्पन थानाँ रक्खि तँहँ, पार्‌यो देस प्रसंग ॥ ३४ ॥
बत्त यहै सुनि घुंसल्या, तबतैं धरत बिरोध ॥
अब आयउ श्रीमंतसों, जुद्ध रचन सजि जोध ॥ ३५ ॥
हुलकर पति तँहँ बीच परि, दोउरन बैर मिटाय ॥
आनि रघू[1] श्रीमंतकैं, दिन्नों पयन लगाय ॥ ३६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करेमहाचम्पूकेउत्तरायणोसप्तमराशावुम्मेदसिंहच-रित्रेबुन्दीन्द्रासितारापु:प्रस्थानतिरस्कृतमहाराष्ट्रमहिममेकलजोल्लङ्घनप्रतितीर्थस्नानप्रत्यर्चाऽर्चनविहितविधेयसम्भेरेशमल्लाराऽधिष्ठानबापग्रामप्रविशनखण्डूसन्मुखाऽऽगमनाऽऽदितत्सत्करणश्रुततद्वुदन्तहुलकराऽऽगमनहड्डेन्द्रहरजनाऽमात्यदेशदु:खश्रवणप्रेषिततत्सनाभिसेरसिंहवश्यवेष्टनहरजनाऽऽहूतकोटाकटकपूर्वभजनगरीभर्तृनिगृहीतबुंदीपुटभेदनतारादुर्गप्राकारप्रवेशनोम्मेदसिंहहुलकरसुताविवाहबहुवसुवितरणातत्त्यम्लेच्छमण्डलमहैकशीर्षोद्दसितारास्वामिसाहूश्म-

1 बालक ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में बुन्दीन्द्र का सितारा नगर को प्रस्थान करना, मरहटों की महिमा का तिरस्कार करके नर्मदा को उल्लंघन करना, करने योग्य हरेक तीर्थ में स्नान और हरेक मूर्ति का पूजन करके रावराजा का मल्लार के स्थान बापगांव में प्रवेश करना, खंडू का सन्मुख आने आदि से उसका सत्कार करना, राजा के समाचार सुनकर हुलकर का आना, हड्डेन्द्र का हरजन के दिये देश के दु:ख को अमात्यों से सुनकर अपने भाई सेरसिंह को भेजकर हरजन को पकड़ने के लिये प्रेरना, हरजन की बुलाई कोटा की सेना के आने से पहिले भजनेरी के पति (सेरसिंह) से पकड़ेहुए (हरजन) को बुन्दी नगर के तारागढ के किले में कैद करना, उम्मेदसिंह का हुलकर की बेटी के विवाह में

शानसदनसमासादनश्रवणापेक्षणोऽपपकरणोऽपाजनीताऽवसरहार जनिकोटाऽऽगमनमहष्टपुणपापुरसदाशिवसत्कृतमल्लारोम्मेदश्सिता रासम्प्रापणश्रीमन्तसन्मुखाऽऽगमनपनालापतिरामराजाऽधिपत्याऽ भिषेचनतद्बुन्दीन्द्रसम्मिलनतदेकाऽऽसनसन्निविशननन्हरामराव- त्रिवाहनमहाराष्ट्रमण्डनासितारेशसुभटखाररसिकरघूपूर्वाऽपमानसूच नतत्कुपिततद्योधनाऽऽगमनमल्लारतद्विग्रहपरासनरघूश्रीमन्तचरणपा तन त्रपस्त्रिंशो३३मयूख ॥ ३३ ॥ आदित ॥३१४॥

॥ मायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—हरजन पुत्त दलेल इत, कोटा जाय प्रमत्त ॥
　　पठये लिखि नृप अनुज प्रति, बापगाँव इम पत्त ॥ १ ॥
　　अप्प रहहु मम संग अरु, कोटा आवहु दीप ॥
　　लो बुंदिय पुर तख्त धरि, मत्रैं तुमहिं महीप ॥ २ ॥
　　दीपसिंह ए पत्र हुतें, पठये अग्रज पास ॥
　　लखि तिन्ह मद दलेलको, सुपहु तज्यो विसवास ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

　　नगर सितारा नीच इक्क नाहर हरदाउत ॥
　　निज नृप सम्मति विनुहिं जानि अप्पहिं सु बुद्ध जुत ॥

पट्टन ग्रन्थ देना, धाराके मुसल्मानों के महल को मारनेवाले सीसोदिया सि- तारा के स्वामी साहूका मरघट में घर करना (मरना) सुनना, पिता के ऋण को दूर करने के मिस से अवसर पाकर हरजन के पुत्र का कोटे आना, सदा शिव से सत्कार किये हुए मल्हार और उम्मेदसिंह का पूना देखकर सिता रे जाना, श्रीमन्त का सन्मुख आना, पनाला के पति रामराजा का राज्या- भिषेक होना, उससे बुन्दी के राजा का मिलना, मरहटों के मंडन सितारा के स्वामी के सुभट रखारसिक रघूके पूर्व अपमान को सूचित करना, उसका कु पित होकर युद्ध करने को आना, मल्हार का उसके वैरको मिटाना, रघूको श्रीमन्त के चरणों में गिराने का तेतीसवां मयूख समाप्त हुआ ।३३। और आदि से तीन सौ चौदह मयूख समाप्त हुए ॥३१४॥

॥ १ ॥ १ दे दीपसिंह ॥ २ ॥ २ शीघ्र ॥ ३ ॥

हुलक्कर प्रति किय अरज अग्ग नभ वसु सत्रह१७८०सक्क ॥
टोडा लिय जयसिंह डारि मिच्छन पर ओदक्क ॥
आवाँ१ पुरी रु दुन्नी१ उभय२ थान लये हमरेहु तव ॥
टोडा सु दिन्न तुम माधवहिं तो बखसहु मम भुवहु अव ॥४॥

॥ दोहा ॥

कुप्प्यो हुलकर सुनत यह, सोर रह्यो पुर छाय ॥
अक्खी नृप कहते हमहिं, तो बनतोहु उपाय ॥५॥
हम सन भिन्न प्रबुद्ध२है, बिगराई निज वत्त ॥
भनि इम नाहरतैं भयो, बुंदियभूप विरत्त३ ॥६॥
अग्गैं नन्न्ह अमात्य इत, रामचंद्र अघरत्त ॥
रानहि सम्मलि लैनकौं, पठये कोटा पॅत्त४ ॥७॥
द्रुत विश्वेश्वरनाम द्विज, निज वकील कोटेस ॥
उदयनैर पठयो तबहि, फोरन रान नरेस ॥८॥
तानैं मिलि जगतेसको, लिन्नौं मन पलटाय ॥
दक्खिन देस प्रधानपैं, दिय इम पत्र लिखाय ॥९॥
दै बुंदिय उम्मेद हित, अनुचित हुलकर कीन ॥
करहु कथित५ कोटेसको, तो हम सर्व अधीन ॥१०॥
जोलौं ए दल६ दूत लै, निकसैं नैर बिहाय ॥
तोलौं अक्खिय रान प्रति, दयाराम द्विजराय ॥११॥
कोटेसहिं जानहु कुहक७, मिल्यो सु जैपुर माँहिं ॥
सुनिहो रंचक दिननमैं८, है तुमतैं हित नाँहिं ॥१२॥
सु सुनि रान चलमति कहिय, कछु दिन परख विधाय९ ॥
दक्खिन पत्र पठायहैं, तोलग देहु धराय ॥१३॥
भैंसरोर पति स्वसुरहो, चुंडाउत भट लाल ॥

---

१ भय ॥ ४ ॥ ५ ॥ २समझदार होकर ३विरक्त ॥६॥४पहुंचा ॥७॥८॥९॥५ कहना ॥ १० ॥ ६ पत्र ॥ ११ ॥ ७ कपटी ८ थोड़े दिनों में ॥ १२ ॥ ९ करके ॥ १३ ॥

ता पँहँ कृष्ण दलेल सुत, इत दिय पत्र उँताल ॥ १४ ॥
पत्र रावराजोपपद, रानीको लिखवाय ॥
सो ममढिग भेजहु स्वसुर, प्यारे अवसर पाय ॥ १५ ॥
इम लिखि पठयो उदयपुर, अप्पन बनिक बकील ॥
सोहु मिलायो रान सन, करि हट लाल कुसील ॥ १६ ॥
लघुमति पत्र लिखाय दिय, कृष्ण कथित परिमान ॥
जल कुल्ल्या जिम रान मन, फेरयो फिरत अजान ॥ ॥१७॥
बखतसिंह नागोर पति, इत सठ मडि मरोर ॥
दिल्ली दल बुल्ल्यो बहुरि, देन जोधपुर जोर ॥१८॥
अरजी अहमदसाह सुनि, पुनि पठयो बल पूर ॥
जवन सलावतखान जहँ, सेनानी करि सूर ॥ १९ ॥
कूरम ईश्वरिसिंहकी, तनयाँ सन बिख्यात ॥
रामसिंह मरुराजको, पहिलैं सगपन जात ॥ २० ॥
यातैं आवत जोधपुर, सुनि दिल्लिय दल सोर ॥
कुम्महिँ मरुपति भीरकों, बुल्ल्यो गिनि बरजोर ॥ २१ ॥
तब कूरम आमेर पति, उत्तर पठयो एह ॥
फोज खरच भेजहु ततो, आवहिँ भीर सनेह ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्गैं नृप करते सहाय सुनि बिपति परस्पर ॥
फौजखरच लेते न जदपि होतो भर सगर ॥
जामातां सन कुम्म मेटि रीति सु धन मागिय ॥
तब मरुभूप सनेमें लक्ख१५००००दम्मन भरनौं दिय ॥

१ कृष्णसिंह २ शीघ्र ॥ १४ ॥ १५ ॥ ४ बुरे स्वभाववाला ॥ १६ ॥ ५ तुच्छ बुद्धिवाले (बदमाश) ने ५ नहर ॥ १७ ॥ ६ सेना ७ बुलाई ॥ १८ ॥ ८ सेना ९ सेनापति ॥ १९ ॥ १० बेटी से ११ हुआ था ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ २२ ॥ १२ युद्ध का भार १३ जमाई से १४ मांगे सहित एक लाख अर्थात् डेढ लाख

सजि तब अनीक जयसिंह सुव कोटा भेजिय कग्गरहिँ[1] ॥
हम संग होय जवनन हनहु तो बुंदिय तुम बस करहिँ २३
यह कहाय करि कुंच चल्यो मरुपति सहाय पर ॥
मरुपतिसौं अति मोद मिल्यो तीरथगुरु पुक्खर[2] ॥
नगर मेरता तदनु[3] जाय दोउन रमिलान दिय ॥
इत दिल्ली दल ईस उदयपत्तन दल[4] भेजिय ॥
हम संग होहु जगतेस नृप सह माधव सेवानुरत[5] ॥
अग्रजहिँ[6] मारि अप्पहिँ हमहु तो अनुजहिँ[7] जैपुर तखत ।२४।
यह सुनि सज्जिय रान होन दिल्लिप दल सम्मलि ॥
इत कोटा अधिराज कुम्म कग्गर बंचिय बलि ॥
हुव तयार तव हड्ड करन कूरम किंकर[8] पन ॥
बुंदिय लोभ बिधाय[9] रचन दिल्लिप दलतैं रन ॥
पुरजन कितेक कछु काम तहँ कोटाके गय उदयपुर ॥
तिन कहिय जात कोटेस सजि जैपुर सम्मलि दल प्रचुर[10] २५
दयाराम द्विज तबहिं रान यह सुनत सिराह्यो ॥
अक्खिय हम सन हेत नाँहि कोटेस निबाह्यो ॥
यह सुनाय वे पत्र लिखे दक्खिन पहुँचावन ॥
दिन्नैं ते द्विज हत्थ प्रीति बुंदियपर लावन ॥
द्विज दयाराम ते दल सकल[11] सहर सितारा मुक्कलिय ॥
तब उभय हड्ड हुलकर तमकि[12] कग्गर[13] बंचत कोप किय ।२६।

॥ दोहा ॥

पुनि मलार खिजि नन्ह पर, रुठि चल्ल्यो निज देस ॥
सुनत नन्ह अड्डो फिरयो, बुल्ल्यो बिनय बिसेस ॥२७॥

---

१ पत्र ॥ २३ ॥ २ पुष्कर में ३ जिसपीछे ४ पत्र भेजा ५ सेवा में प्रीति करके ६ ईश्वरीसिंह को ७ माधवसिंह का ॥ २४ ॥ ८ पति ९ बुन्दी का लोभ करके १० बहुत सेना ॥२५॥ ११ सब पत्र १२ खिजकर १३ पत्र वाचते ही ॥२६॥२७॥

छमहु कोप मल्लार छमें, सुनहु वत्त मम एक ॥
सचिव अष्ठ८ पद मुख्यहे, अग्गैं बिहित बिबेक ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

श्रीपतिराव१ हुते सबमैं इनें, प्रतिनिधिंको उपपद पायो जिन ॥
तिन मुख अग्गैं मम प्रपितामह, विश्वनाथ१ बितये अनेक ग्रह २९
बाला २ हुव पुनि विश्वनाथ सुत, तेहु रहे मुख अग्ग बिनय जुत ॥
श्रीपति सग पेसें रहिबे सन, तिनहिं पेसवा कहन लगे जन ॥३०॥
बाजेराय३ भये बालासुत, मांमक जनक पेसवा नय जुत ॥
श्रीपतिराव मरे प्रतिनिधि जब, तुम पचन हमरो जस किय तब ३१
श्रीपतिकी तब मुख्य सचिव गति, बाजेरायहिं दई छत्रपति ॥
अंक छाप जिम खनितँ उघारे, सो तुम सुनहु गंद्यकरि सारे ॥३२॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

श्रीसाहूराजाछत्रपति हर्षनिधान बाजेराय बालाजी पंडितप्रधान ए अंक छापमैं खुदाय हमारे पिता पेसवा बाजेराय छत्रपतिनैं मुख्य प्रधान कीनैं ॥

अरु उनके देहांतके अनंतर श्रीसाहूराजाछत्रपति हर्षनिधान नन्हांजीबाजेराय पंडितप्रधान ए अंक सितारेश्वरनें छापमैं खुदाय दीनैं ॥

तदनंतर जब छत्रपति साहू परलोक गये ॥
तब पनालागढसों पितृव्यक सभाके पुत्र राजाराम आपकैं सितारके अधीस भये ॥ ३३ ॥
अब वेही अंक नईछापमैं राजारामके नाम सहित खनाये ॥
सो सब इत्यादिक अभ्युदयके फल तुम पचननैं प्रससापूर्वक

---

१ समर्थ ॥ २८ ॥ २ पति ३ कायम मुकाम का ४ दिन ॥ २९ ॥ ५ प्राचीन रहने से ॥ ३० ॥ ६ मेरे पिता ॥ ३१ ॥ ७ खुदवाकर ८ आगेवाले गद्य छन्द से ॥ ३२ ॥ ९ पीछे १० जिसपीछे ११ काका ॥ ३३ ॥ १२ खुदाये १३ ऐश्वर्य

मिलाये ॥

तुमहीनैं हैदराबादके नवाब निजामनमुलककों जेर करि रुप-रुपेमैं सिक्का अपने अंकको खुदाय जागीरी पटामें हैदराबादही पच्छो उनकों दिवाय वंदगी सितारेकी कराई ॥

अरु गुजरातको मालिक दामा गायग्वाल साठिहजार६०००० सेनाको सिरदार फिराऊ भयो ताकों कैदकरि दंडलै रु गुजरात कों अपनैं अधीन वनाई ॥ ३४ ॥

तुमारे प्रतापतैं इत्यादिक अभ्युदय देखि सवननैं सितारेकों कुमारिकेश्वर कह्यो ॥

तिनके रूठि गयें रामराजाके राज्यमें स्वामिधर्मी सचिव कोन रह्यो ॥

ऐसो आदेस श्रीमंतको सुनि हुलकरनैं दयाराम द्विजके पठाये दल दिखाये ॥

अरु कही कोटादिक कूर बुंदीससों वैर करैं सो पापिष्ठ पंडित रामचंद्रके सिखाये ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

सुनत पत्र श्रीमंत करि, रामचंद्र पर रीस॥
सज्जित हिंदुसथानपर, किन्नों हुलकर ईस ॥ ३६ ॥
कछुदिन पहिलैं नन्न्हसों, रामचंद्र कहि वत्त ॥
संध्याको अधिकार सब, छिन्न्यों पिशुन प्रमत्त ॥ ३७ ॥
निंदा बहुरि मलारकी, कहि कहि कितव कुढार ॥
अप्पहिं हिंदुसथानपर, हुव मालिक हुसियार ॥ ३८ ॥

---

१ इस शब्द का अपभ्रंश गायकवाड़ हुआ है अर्थात् ये लोग पहिले गवओं के चराने से गायकवाले कहाते थे ॥ ३४ ॥ २ जिस देश में वर्ण व्यवस्था है उसका नाम कुमारिका है ३ पत्र ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ४ चुगल ॥ ३७ ॥ ५ बुरी भांति ॥ ३८ ॥

अब ताको यह कपट लखि, नन्ह दयो सु निवारि ॥
किय तयार मल्लार कँहँ, बलि बिस्वास वधारि ॥३९॥
राजोरा सटवा १ तबहि, हुलकर निज उमराव ॥
दस हजार १०००० दल सगदै, पठयो अग्ग सचाव ॥ ४० ॥
अक्खी तुम पहिलैं चलहु, दब्बहु हिंदुसथान ॥
चातुरमास विताय हम, आवहिं कटक अमान ॥ ४१ ॥
तव सटवा दरकुच करि, लघि नगर उज्जैन ॥
आयो सुनि दिस दिस उठिय, ओंदक भूपन ऐन ॥ ४२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे कोटागतहारजनिदलेलसिंहबुन्दीन्द्रसोदरदीपसिंहभेदनपत्रलिखनं १ऽनुजप्रेषितपत्रसितारासंस्थितरावराडमात्यविश्वासत्यजननिजपुराऽऽत्रा १ दूणयु २ द्धरणाहरदाउत्तनाहरसिंहमल्लारविज्ञापनकोपतत्तदनूरीकरणश्रुतेन्द्र इङ्केन्द्रस्वभटकुत्सनसमवगतश्रीमन्ताऽमात्यपण्डितरामचन्द्रराणाभेदनपत्रकोटेशविप्रविश्वेश्वरोदयपुरप्रेषणात्रिभित्सुमायामूढराणाबुन्दीदुर्जनशल्यदापनपत्रलिखनप्रस्थिततद्द्विजदयारामनिवारणदालेलिश्वशुरचुंडाउत्तलालसिंहजामातृ—

१ पुनि ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ भय से राजाओं के घरों में ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में, कोटा में गये हुए हरजन के पुत्र दलेलसिंह का बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह को फोडने का पत्र लिखना १ छोटे भाई के भेजे हुए उसके पत्र को देखकर सितारा में ठहरे हुए रावराजा का अमात्य का विश्वास छोडना २ अपने पुर आँवाँ और दूणी के निकालने की हरदाउत नाहरसिंह का मल्लार से अरज करना और उसका क्रोध सहित अस्वीकार करना सुन कर इङ्केन्द्र का अपने उस उमराव की निन्दा करना ३ श्रीमन्त के अमात्य रामचन्द्र का राणा को फोडने का पत्र प्राप्त करके कोटा के पति का ब्राह्मण विश्वेश्वर को उदयपुर भेजना और उसकी माया में मूर्ख राणा का दुर्जनशाल को बुन्दी देने की सम्मति का पत्र लिखकर भेजने में ब्राह्मण दयाराम का रोकना ४ दलेलसिंह के श्वशुर चूंडा लालसिंह का जमाई के अर्थ राणा से रावराजा

इनको बीज रहैं छिति जोलौं, रचक चैंन हमे नहिं तोलौं ॥२॥
दिस दिस यह कोलाहल अद्भुत, बुदिय इम विंटिय दलेल सुत ॥
नहिं नृप*तदपि कढ्यो अंतर दल,चालुक१कायथ२हत्थ चंलाचल

॥ षट्पात् ॥

सोलंखो समामसिंह १ जोराउर नंदन ॥
कायथ मोजीराम २ कढे अरि करन निकंदन ॥
मारे के रन अपर झारि निर्भर समसेरन ॥
देर न किय दालेलि भज्यो भीरुक तजि डेरन ॥
नैनवा मग्ग लिय रुक्कि इन तव सु जाय कोटा रहिय ॥
कोटेस हितु दे हुत कटक करहु भीर अव इम कहिय॥४॥

॥ दोहा ॥

गो बुंदिय तुमरे कहें, आयो रंखत लुटाय ॥
बल विनु वेर न वाहुरत, सँत्वर देहु सहाय ॥ ५ ॥
दुजनसल्ल उत्तर दयो, दिवस भीरके एन ॥
कछुक काल छन्नें रहहु, सटवा आत ससेंन ॥ ६ ॥
राजोरा दरकुच रचि, कोटा सन लहि दंड ॥
द्रुत पहुँच्यो अजमेर दिस, मंडत अमल अखंड॥ ७ ॥
खत्री केसवदासकें, पठये सटवा पत्र ॥
वखतसिंह सन वैर तुम, अनुचित करहु न अत्र ॥ ८ ॥
कूरम प्रति केसव कहिय, वरजत तुमहिं मलार ॥
जो चहिहैं अब जंग तो, ढहिहैं सब ढुंढार ॥ ९ ॥
बरज्यो इत वखतेसहू, मरहट्टन भय मानि ॥
लै बहु धन मरुपालसौं, बुल्ल्यो न लरन बानि ॥ १० ॥

॥ २ ॥ * उम्मेदसिंह नहीं था तोभी १ भीतर की सेना निकली २ चपल ॥ ३ ॥ ३ नाश ४ निर्भर (बहुत) ५ दलेलसिंह के पुत्र ने ॥ ४ ॥ ६सामग्री ७ शीघ्र ॥ ५ ॥ ८ सेना सहित ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ९ मारवाड के राजा से

सुनि तब ईश्वरिसिंहहू, खटवा नीति सुनाय ॥
क्यों पुनि पुनि दिल्लिय कटक, बोलिस लेत बुलाय ॥११॥
हुलकरको यह सुनि हुकम, तब नबाव डरि तत्त ॥
सय्यद खान सलावतहु, पच्छो दिल्लिय पत्त ॥ १२ ॥
कुम्महिँ जानि सहाय कर, रामसिंह मरुराय ॥
केसव हठि रोक्यो कलह, इहिँ कारन अकुलाय ॥ १३ ॥
सम्मति हरगोविंदकी, ले कवंध नृप राम ॥
कुम्महिँ अक्खिय केसवहु, है यह स्वामि हराम ॥ १४ ॥
माधव[1] अरु उम्मेद[2] सों, याकै प्रीति अजस्र[3] ॥
छन्नैं आवत जात छदं, पत्रैं गये इम घस्र ॥ १५ ॥
कोउक पत्र फरेब करि, लिपि ताकी लिखवाय ॥
तैसोही लिखि कुम्मको, दिन्नों विदित दिखाय ॥ १६ ॥
सु लखि पत्र जयसिंह सुव[6], मन्नी सतपहि मुद्ध[7] ॥
बुल्लि[8] सभा अंतर बन्यों, केसव उप्पर क्रुद्ध ॥ १७ ॥
केसव अक्खिय जोरि कर, इतरनको छल एह ॥
असु[9] कीजै तनु अंतरित, निकसैं जो मम लेहँ[10] ॥ १८ ॥
मन्नी तदपि न मातृसुख[11], सुनहु राम नृप हाय ॥
करि हठ दिन्नों केसवहिँ, पापी गरल[12] पिवाय ॥ १९ ॥
बुल्लयो तहँ जयसिंह सुव, हे पाँमर[13] मतिहीन ॥
मिलि तैंही मल्लारसैं, खर जैपुर किय खीन ॥ २० ॥
च्यारि[4] परग्गन सोदरहिँ, हड्ड[2] हिँ बुंदिय देस ॥
कितव[14] दिवाये प्रसभ[15] करि, वाको फल सहि एस ॥ २१ ॥

॥ १० ॥ १ मल्लार के उमराव खटवाने बख्तसिंह को मना किया २ मूर्ख ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ३ निरन्तर ४ पत्र ५ दिन ॥ १५ ॥ १६ ॥ ६ सुत ७मूर्ख ने ८ बुलाकर ॥१७॥ शरीर से ९ प्राण दूर करे १० लेख ॥१८॥ ११तोभी उस मूर्ख ने नहीं मानी १२जहर पिलादिया॥१९॥१३नीच॥२०॥१४हे ठग१५हठ करके

कहाँ सहायक तव कुमति, मूरख वह मल्लार ॥
वाहि बचावन मान अब, बुल्लहु क्यों न लवार ॥ २२ ॥
सुनि अक्खिय केसव सुमति, स्वामि इनैं जब दास ॥
त्रोता कोन द्वितीय२ तँहँ, गिलत सिंह गज मास ॥ २३ ॥
केसव केसव ध्यान करि, पुनि पुनि बिरचि प्रनाम ॥
गहि भंजन पिन्नों गरल, रटि अच्युत हरि राम ॥ २४ ॥
लेत जहर आवत लहर, नील नँहर यह भाखि ॥
विनु आगस जो देत विख, सो पावत श्रुति साखि ॥ २५ ॥
इम कहि इक१घटिका अवधि, केसव छोरयो काय ॥
बहुलँ छिन्नि ताको विभव, लाई कूरम लाय ॥ २६ ॥
आयो जैपुर कुम्म इम, मंत्री पट्टु निज मारि ॥
सटवा यह वदनीति सुनि, विविध लिखिय विसतारि ॥२७॥
सुनि हुलकर श्रीमतसों, अकरयो यह अपराध ॥
हठ पूरव लिन्नों हुकम, विरचन जैपुर बाध ॥ २८ ॥
हुलकर१ हड्ड २ रु नन्न्ह ३ पुनि, तजिग सितारा तत्त ॥
सक हय नभ धृति १८०७ चैत्र सित, पुण्यपापत्तन पत्त ।२९॥
तनय स्वीय उपवीत तँहँ, वलि निज अनुज विवाह ॥
पुण्या किय श्रीमत प्रभु, भति हित उभय उछाह ॥ ३० ॥
महिमानी उम्मेदकी, बहु श्रीमंत बनाय ॥
प्रीति सहित अनुकूल पन, दिन दिन अधिक दिखाय ॥३१॥
रामचदके कथित करि, सध्याको अधिकार ॥

॥ २२ ॥ १ रक्षा करनेवाला ॥ २३ ॥ केशवदास ने २ श्रीकृष्ण का ध्यान करके ३ पात्र लेकर विष पीगया ॥ २४ ॥ ४ उस नीले नखोंवाले ने यह कहा 'जहर खानेवाले के नख नीले होजाते हैं" ५ अपराध ६वही पीछा पाता है यह वेद की साची है ॥ २५ ॥ ७ बहुत ८ कछवाहे ने लाय लगाई ॥२६॥२७॥ ॥ २८ ॥ ९ पूना नगर में प्राप्त हुए ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

भयो खालसै किन्न अब, ताकी अरज मलार ॥ ३२ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनहु नन्न्ह हम अग्ग लियउ मालव जवनन सन ॥
तब पत्तन उज्जैन महाकालेस निकेतन[1] ॥
परमार सु आनंद१ मैंर२ रु संध्या राणोजिय३॥
तीनन३ तजि हिय गंठि सत्य इहिं रीति सपथ[2] किय ॥
इक१चित्त स्वामि कारिज करहिं अरु जो होवहिं काल बसि ॥
तो तास सुतन जीवैं सु जन हिय लगाय पालहिं हुलासि॥३३॥

॥ दोहा ॥

यह करार[3] जो भुल्लि अरु, चलिहै कुमति कुचाल ॥
ताहि महाकालेश्वरहु, प्रगट करहिं पैमाल ॥ ३४ ॥
हमरे हुव संधा यह सु, जानत तुमहु अजेय ॥
रामचंदके कथित करि, संध्या नहिं अपमेय[4] ॥३५॥
रुप्पय पैंसठि लक्ख ६५००००० तब, दै मलार बिच्च राक्खि ।
संध्या सन श्रीमंत लिय, सेनापति तिहिं रक्खि ॥ ३६ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हुलकरको श्रीमंत कथित[5] किय, संध्या जया[6] लगावन निज हिय।
नाम चमारगोंद तस पत्तन[7], आयउ ताहि मनावन अप्पन ॥ ३७ ।
लै तिहिं संग गये पुराया जब, रचिय मंत्र हुलकर १ संध्या२ तब ॥
हिन्दुसथान माँहिं अप्पन दुव२, स्वामी नन्न्ह तयार करे हुव॥३८॥
रह्यो परंतु उहाँको बहुतर[8], वित्त हार्यनिक[9] रामचंदकर ॥
जो न रहैं अप्पन बस यह धन, तो करैंहि वह दुष्ट दुष्टपन ॥ ३९॥

---

१ मंदिर में २ सोगन किये थे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३ प्रतिज्ञा ४ अपमान (अनादर करने योग्य ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ५ कहना ६ जया नामक सिन्धिया का ७ सिन्धि के पुर का नाम चमारगोंदा था ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ अत्यन्त ९ वार्षिक (... धन ॥ ३९ ॥

यह तव दुहुँन२ नन्हपति अक्खिय, आन्दिक कर अपनैं कर[2] रक्खिय ॥
श्रीमतहु यह अरज मन्नि लिय, हिंदुसथान अधीन दुहुँन२किय४०

॥ दोहा ॥

तवतैं हिंदुसथानकौ, खरनीको कर सर्व ॥
हुलकर सध्याऽधींन हुव, आन्दिक वित्त अखर्व ॥ ४१ ॥
सिक्खदैन श्रीमत पुनि, सभर डेरन आय ॥
तरल निवेदे दस १० तुरग, करटी दुव२ अतिकाय ॥
भूखन मनिन अनर्घ दुव२, दस १० सिरुपाव उदार ॥
दिन्नी वुदिय सिक्ख इम, करि समर सतकार ॥ ४३ ॥
सक मुनि नभ वसु इदु १८०७ सम, सावन पचमिश्याम॥
वुदिय आयो कग्गि विजय, धरनीपति निज धाम ॥ ४४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेद सिंहचरित्रे कोटेशप्रेरिरतदालेलिकृष्णसिंहबुन्दीवेष्टनरावराट्सुभटसोलखिसंग्राम १ कायस्थमोजीराम २ तदभिभवनकृष्णसिंहकोटासहायप्रार्थनदुर्ज्जनशल्यतदनङ्गीकरणराजोरासटवाबखतसिंहे २ श्वरीसिंह २ युद्धवारणश्रुतपैशून्यकूर्म्मराजखलिकेशवगरलदापनजा

१ सालाना खिराज २ अपने हाथ में ॥ ४० ॥ ३ आधीन ४ बहुत धन ॥४१॥ ५ हाथी ॥ ४२ ॥ ६ अमूल्य ॥ ४३ ॥ ७ विक्रम के शाक का सम्वत् ॥ ४४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्र में कोटा के पति की प्रेरणा से दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह का बुन्दी घेरना और ावराजा के भट सोलखी संग्रामसिंह और कायस्थ मोजीराम का उस े सम्मुख होना १ कृष्णसिंह का सहाय के अर्थ कोटा के पति की प्रार्थ- ा करना और उसका अस्वीकार करना २ राजोरा सटवा का बखतसिंह और ईश्वरीसिंह का युद्ध रोकना और चुगली सुनकर कछवाहों के राजाका शवदास को जहर देना १ यह वृत्तान्त जानकर हुलकर का जयपुर को

ततद्बुन्दतहुल्लकरजयपुरध्वंसिनीनन्हाऽऽज्ञानयनतदनुश्रीमन्त १ इह २ हुल्लकर ३ पुण्यापुराऽऽगमनकृततनयोपवीता १ऽनुजविवाहो २ रसवनन्हमल्लारवचनाऽनुकूलसन्ध्याजयासेनाऽधिकाराऽर्पणमल्लार१ जया २ हिंदुस्थानप्रेषणोरीकरणनन्हबुन्दीन्द्रशिविरागमनतुरगदश क १० करटियुग २ मणिभूषणाद्युपा २ ऽऽदिनिवेदनरावराटूबुन्द्या ऽऽगमनं पञ्चत्रिंशो ३५ मयूखः ॥ आदितः ॥ ३१६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कोटापति संकल्प सब, करे नियति प्रतिकूल ॥
रामचंद्र सन हित रच्यो, मोघ भयो सु समूल ॥ १ ॥
पलटायो जगतेस पुनि, सावधान हुव सोहि ॥
बुंदी पठयो कृष्ण बलि, भजि सु पराजित मोहि ॥ २ ॥
जैपुर सम्मलि पुनि जुरन, लग्गो करन प्रयान ॥
बरज्यो सटवा कुम्म तब, थकि बैठो निज थान ॥
ऐसो अनुचित्त ईरखा, किन्नौं जड़ कोटेस ॥
न फल्यो उद्यम नीचको, सोक रह्यो अवसेस ॥ ४ ॥
उदयनैर सन रान इत, दयाराम द्विज संग ॥
पठयो टीका उपकरन, अनुसारि प्रीति उमंग ॥ ५ ॥

नाश करने की नन्हकी आज्ञा लेना और जिसपीछे श्रीमन्त, उम्मेदसिंह और हुलकर का पूना नगर में आना ४ पुत्र की जनेऊ और छोटे भाई का विवाह करके नन्ह का मल्लार के वचनों के अनुकूल सिन्धिया को जया नामक सेना का अधिकार देना और मल्लार व जया को हिन्दुस्थान में भेजना मंजूर करना ५ नन्ह का बुन्दी के राजा के डेरे आना और दश घोड़े, दो हाथी, जड़ाऊ भूषण आदि भेट करना और रावराजा का बुन्दी आने का पैंतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३५ ॥ और आदि से तीन सौ सोलह मयूख हुए ॥ ३१६

१ भाग्य ने उलटे कर दिये २ निरर्थक ॥ १ ॥ ३ कृष्णसिंह को ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ बाकी ॥ ४ ॥ ५ सामग्री ॥ ५ ॥ ३

ईटक साखति उभय२ हय, मैंदकल इक१ मातंग ॥
सूचीमुखं सिरपेच इक१, दुव२ सिरुपाव सुरंग ॥ ६ ॥
टीकाको यह साज दिय, दयाराम द्विज सत्थ ॥
परपरा दसतूर पुनि, सुनिये राम समत्थ ॥ ७ ॥
अग्गैं सुपहु सुभाड सुत, नृप नारायनदास ॥
रन रानौं सग्रामकी, टारी दुस्सह त्रास ॥ ८ ॥
महूपुरप नवावको, इक्का भट लिय मारि ॥
सभरको सीसोद तब, बहु आसान बिचारि ॥ ९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रथम रान सग्राम भीर करि, बाबरको बहु कटक हन्यों लरि ॥
च्यारि अग्ग चालीस४४घाय सहि, बिजय कियो बुंदीस धर्म वहि१०
इक्का मुगल यहै पुनि मारयो, अपनें सिर उपकार बिचारयो ॥
भटन सहित यह मंत्र रान किय, बिनई पुनि बुंदीसहिं बुल्लिय ११
तुम हमतैं कछु भेट अब्द प्रति, इच्छत लेहु रक्खि निज उन्नति॥
रचि तब नर्म कह्यो सभर पहु, पट्टिस१खग्ग१ कोसं दुव२पेसहु१२
बैर तीन३ हायन बिच लैहैं, तब तुम पर हड्डन हित ह्वैहैं ॥
भेजहु प्रथम बिजयदसमी१० दिन१, पुनि गुनगोरि३ दिवस२ आ-
हुँठ इन ॥ १३ ॥
बरसगांठि दिन३ बहुरि पठावहु, तो हमहेत गिनैं तुमरो बहु ॥
यह नृप नर्म रान स्वीकृत किय, अवरहु प्रीति रीति इम वधिय१४
हाटकं साज उपेतं इक१ हय, इक१ तरवारि मुठि तिहिं मनिमय॥
इक१ निखग इक१ बिसिखासन, चीरा इक१ मूल मिति जास न१५

१ सुवर्ण की २ मस्त हाथी ३ हीरों का ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ४ धर्म धारण करके ॥ १० ॥ ११ ॥ ५ हसी करके ६ कटार और खड्ग के दो म्यान भेजो ॥ १२ ॥ ७ हे आहड नगर के पति अथवा महाराणा क्षत्रियों के पति "आहड पुर में राज्य रहने के कारण शीशोदिया क्षत्रियों को महाराणा तथा आहड़ा कहते हैं"॥१३॥१४॥ ८ सुवर्ण के साज ९ सहित १० धनुष ॥१५॥

असि१ पट्टिस१ के कोसर२ सहित चहि, इक१ सिरुपेच इते८ भेजन कहि ॥
तबतैं चली रीति वह आई, सो रानहिँ नहिँ मिटत सुहाई ॥१६॥
दयाराम द्विज तत्थ रान अब, टीँका संग ए८हु पठये सब ॥
बुंदिय रान सचिव१ द्विज २ लाये, बिजयदसमि १० दिन नजरि कराये ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

उँज्ज अमावसि निस तदनु, चोकीदारन फोरि ॥
तारागढ सन कढि गयउ, हरजन वह छल जोरि ॥ १८ ॥
इत दक्खिन अब वे उभय२, सुनि नभ धृति१८०७इसमास३॥
हुलकर संध्या सज्ज हुव, लागि दिगबिजय हुलास ॥ १९ ॥

॥ षट्पात् ॥

बिजयदसमि१० दिन बीर सेन हंकिय सागर सम ॥
संध्या तँहँ हुलकरहिँ कहिय कछु काम गेह मम ॥
मैं चम्मारगौंदा प्रवेसि वह करि द्रुत आवत ॥
अप्प चलहु इत अग्ग अवनिँ सत्रुन अपनावत ॥
यह कहि जया सु गय निज नगर इत मलार हंकिय कटक
दिस बिदिस बल फुट्टिय दुसह रचहिँ कोन दक्खिन रटक२०
हुलकर सुत जुत हंकि लंघि चम्मलि इत आयउ ॥
वृत्त सुनत बुंदीस जाय सन्मुह गृह लायउ ॥
अरु हय नभ धृति१८०७अब्द मास अगहन पख उज्जल ॥
दुहुँन२नैनवा जाय बिंटि तोपन किय कंदल ॥
तब सठ दलेल सुत कृष्ण वह अंतहपुर तजि भज्जि गय ॥
हड्ड१ रु मलार२ ताकी तियन पठई पीहर बिरचि नय ।२१।

।१६।१७।१कार्तिक मास की२जिसपीछे ॥१८॥३आश्विन मास में ॥१९॥४सिन्धिया के पुर का नाम है ५भूमि ॥२०॥६वृत्तान्त७युद्ध किया८जनाने को छोडकर।२१।

॥ दोहा ॥

नगर समीधी¹ नैनवा², करउर³ ए सब लिन्न ॥
तिनमें नृप बुन्दीस तब, अमल अप्पनों किन्न ॥ २२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे कोटेशयत्ननिष्फलीभवनराणातिलकोपहारबुन्दीप्रषणहरजनकारानिष्कसनमल्लारहिंदुस्थानाऽऽगमननयनपुरयुद्धकरणदलेलिपलायनबुन्दीन्द्रतद्भूम्युद्धरणं षट्त्रिंशो मयूख ॥ ३६ ॥ आदितः ॥ ३१७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ निशाणी ॥

इम सुत भीरु दलेलका तजि तियन पलाया ॥
ताके देस असेसमैं नृप अमल विधाया ॥
पुनि हुलकर सभर सहित अमरख उफनाया ॥
खत्री केसव वैरपैं जयनैर चलाया ॥
फट्टी पन्नग सकुली फन पलटि फिराया ॥
खुल्ले नैंन महेसके नर्व माल लुभाया ॥
लग्गा बावन५२ संगही रन कौतुक आया ॥

॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में, कोटा के पति का यत्न निष्फल होना १ राणा का तिलक की सामग्री बुन्दी भेजना २ हरजन का कैद से निकलना ३ मल्लार का हिन्दुस्थान में आना "सामान्य रीति से सभी भारत वर्ष का नाम हिन्दुस्थान है परन्तु विशेष करके भारत वर्ष के पूर्वी प्रान्त को हिन्दुस्थान कहते हैं" नैणवा पुर में युद्ध करना और दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह का भागना तथा बुन्दी के पति का उसकी भूमि लेने का छत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ ।३६। और आदि से तीन सौ सत्रह ३१७ मयूख हुए ॥

१ भागा २ किया ॥ १ ॥ ३ शेषनाग की सांकल (पीठ की लंबी हड्डी) फटी ४नवीन मुण्डमाला का लोभ लगने से शिव के नेत्र खुले युद्ध का खेल देखने

जाल बनाया जुग्गिनी कर ताल बजाया ॥ २ ॥
गिद्धनि चिल्हनि गैनमैं गन के गहकाया ॥
धूरि बिलग्गी भासुकैं सब भानु छिपाया ॥
शृंग मचक्के मेरुके धर खंड धुजाया॥
हाक नकीबनकी मची दल डाक लगाया ॥
सुनि आवत दक्खिन कटक कूरम अकुलाया ॥
दुत कग्गर बुंदीसपैं लिखवाय पठाया ॥
छंडी छोनिय रावरी हम साम बनाया ॥
हुलकर सम्मलि होय क्यों अब दंड उपाया ॥ ४ ॥
किन्नौं प्रथम करार जो नहिं नैंक मिटाया ॥
अब कैसे अपराधपैं मल्लार कुपाया ॥
केसव आयस नाँ किया इम झारि गिराया ॥
दास तदपि आमेरका इनका न नसाया ॥ ५ ॥
अग्गैं रंचक दोसपैं अतिदंड न गाया ॥
समुझावहु तुम संभरी हुलकर हठ आया ॥
एकाकी अब अप्पका अवलंब बनाया ॥
ए कग्गर आमेरका मुनसीन सुनाया ॥ ६ ॥
बिनय भरे सुनि बैन ए संभर सकुचाया ॥
मंत्र बिरचि मल्लारतैं हिय गूढ खुलाया ॥
हुलकर अक्खी भूपतैं नहिं बैर सिवाया ॥
दक्खिन निंदा अहरी बलि दर्प बढाया ॥ ७ ॥
मारत केसवदासकों उन बैन लगाया ॥

को बावन वीर संग हुए योगिनियों ने समूह बनाकर हाथ की ताली बजाई।२ गिद्धनियों और चीलहों के समूह १ आकाश में २ प्रसन्नता की बोली बोले ३ लगी ४ सूर्य की किरणों के धूलि लगकर सब ५ सूर्य को छिपा दिया ६ सेना को क्रोध दिलाया ॥ ३ ॥ ७ पत्र ८ भूमि ॥ ४ ॥ ९ केशवदास ने हुकम नहीं माना इस कारण ॥ ५ ॥ १० अकेले आपका ॥ ६ ॥ ७ ॥

जिहिँ वल्लतैं बुंदी बहुरि चउ४ देस गुमाया ॥
सो हुलकर तेरो कहाँ अब अंतक आया ॥
ऐसैं कहि अपराध बिनु पट्टु सचिव नसाया ॥ ८ ॥
ताहिके दृढ वेसपै इत मैं चलि आया ॥
मारनका नहि मत्र पैं अति दर्प छकाया ॥
यातैं रुप्पय दंडका लैहैं मनभाया ॥
बुंदीपति सुनि वैन ए प्रतिवैन लिखाया ॥ ९ ॥
कूरम हम तुमरें कहें हुलकर समुझाया ॥
पै पिंसुननकी मन्त्रिकैं तुम दर्प दिखाया ॥
यातैं आयस नन्हका लहि कटक चलाया ॥
केसवदास बिनासका इन ओगुन गाया ॥ १० ॥
मारनका नहिँ मत्र पै धन लैन धकाया ॥
प्रत्यागत इच्छैं नहीं एहू हठ आया ॥
यातैं अप्पहु अप्पहू देम दम्म सिवाया ॥
लै तिनकों टरिजाहिंगे दल खरच दुखाया ॥ ११ ॥
ए कग्गर कूरम सुनत इत मत्र उपाया ॥
देनों दम्म न उचित करि लरनौं चित लाया ।
अक्खी हरगोविंदसौं रनही मन भाया ॥
बीरन बुल्लहु बेगही दल सजवं सुहाया ॥ १२ ॥
कूरम याकी कन्यका रक्खी करि जाया ॥
यातैं हरगोविंदहू अवसर यह पाया ॥
बुल्ल्यो मेरी जेबमैं दल लक्ख १००००० सजाया ॥
जब चाहैं तब लीजिये भट सगर भाया ॥ १३ ॥

१काल ॥ ८ ॥ २वस्तार ॥ ९ ॥ ३मुगलों की ४घमंड ५नन्ह का हुकम लेकर ॥ १० ॥ ६पीछा जाना नहीं चाहता ८ आपभी ९ दंड के रूपये ७ दो ॥ ११ ॥ १०शीघ्र ॥ १२ ॥ ११ हरगोविन्द नाटानी की कन्या को १२की ॥ १३ ॥

मरहट्ठे मन भीरु[1]है जब बाजि उठाया ॥
तबही पायन लग्गिहै ओदक अकुलाया ॥
तुम आमैर अधीसव्है सिर छत्र धराया ॥
वे अनुचर द्विज दीनकी इत आत सिखाया ॥ १४ ॥
भिच्छा[2] मंगनहारका जिन ओदन[3] खाया ॥
ते प्रभुकों पहुँचै नहीं असि त्रास डराया ॥
कहाँ जेठ दिनँकर[4] कहाँ खद्योत[5] खिसाया ॥
कहाँ सिंह गजरिपु कहाँ किंखि[6] दुब्बल काया ॥ १५ ॥
कहि कहि हरगोबिंद इम कूरम बहिकाया ॥
हरिनारायन पुत्र निज पख[7] पुब्ब सिखाया ॥
सब जैपुर पतिके सुभट सुत संग दिवाया ॥
सेखावाटी मुलकमैं पहिलैंहि पठाया ॥ १६ ॥
अच्छे तोप तुरंग गन सब तत्थ चलाया ॥
कूरम जब मंग्यो कटक मंडी तब माया[9] ॥
मो ढिग लक्ख १००००० अनीक[8] है यह छंद्म[10] रचाया ॥
दक्खिनका उत पत्रदै बल[11] बेग बुलाया ॥ १७ ॥
आवैं जितनैं अंतरँग[12] इम दिवस गुमाया ॥
इततैं हुलकर हड्ड नृप दरकुंच चलाया ॥
जैपुरतैं त्रय३ कोसपैं निज दल्ल उतराया ॥
झिलि[13] झलाँनाँ[14] कुंडपैं झंडाल झुकाया[15] ॥ १८ ॥
नट्टानी[16] तब सचिव निज कछ्वाह बुलाया ॥

१भय से ॥१४॥ जिसने२भिक्षा मांगनेवाले(ब्राह्मण)का३अन्न खाया४ज्येष्ठ मास का सूर्य५जुगुनू (आगिया). दुर्बल शरीरवाला ६बन्दर ॥१५॥७एक पक्ष पहिले ही ॥ १६ ॥ ८ सेना ९ इन्द्रजाल १०छल ११सेना ॥ १७ ॥ १२बीच में १३ ठहर कर (प्रसन्नता पूर्वक ठहरनेको डिंगल भाषा में झिलना कहते हैं) १४झलाना नामक कुंड पर१५झंडे खड़े किये(डिंगल भाषा में अत्यन्त ऊंचा करने को अथवा खड़ा करने को झुकाना कहते हैं) ॥ १८ ॥ १६ नाटानी जाति का वैश्य

बुल्ल्यो तैं तव जेवमैं दस लक्ख १००००० बताया ॥
वाकों कहहु पार अब अरि अंतिक आया ॥
बिनु उद्यम तेरे कहै दिन बीस बिताया ॥१९॥
बुल्ल्यो हरगोविंद तब तुम आखु लगाया ॥
तिन कट्टी मम जेव रु बल सब बिखराया ॥
नट्टानी यह जंपिकैं निज गेह पलाया ॥
इत आमेर अधीसकों अब त्रास दबाया ॥ २० ॥
हय अंबर धृति १८०७ पोस बदि नवमी९ दिन पाया ॥
तास निसाके जाम जुग२ नृप निट्ठि गुमाया ॥
जानी बनिक बिरोधकैं भावी बिगराया ॥ २१ ॥
छन्नैं गरल अमत्र इक मतिमंद मँगाया॥
सुत्तो ताको पान करि द्रुव२ नैंन मिचाया ॥
काहू नहिं जानी यहै नृपनैं विख खाया ॥
खात समैं इक पत्रमैं इम अंक लगाया ॥ २२ ॥
सुनिये सभर मात जे अनुचरन उठाया ॥
ईश्वर लेहैं मिटैं नहीं जुग जुग जे गाया ॥
प्याला केसवदासकों पीया सुद्धि पाया ॥
ऐसैं लिखि आमेरपति इम बेर बिहाया ॥ २३ ॥
जानी सचिवन प्रात जब पुर द्वार लगाया ॥
इत खडू हुल्लकर तनय नृप डेरन आया ॥
अक्खी चढि अप्पन चलैं भट जो मन भाया ॥
बाहिरतैं लखि आयहै पुर सुनत सुहाया ॥ २४ ॥

---

१ समीप ॥ १९ ॥ २ चूहे ३ भगा ॥ २० ॥ ४ उस दिन की रात्रि के दो पहर कठिनाई से बिताये ॥ २१ ॥ ५ जहर का ६ पात्र ७ मूर्ख ने ॥ २२ ॥ ८ हे षड्भाण रामसिंह सुनो ९ सेवकों ने १० लेख ११ जो विष का प्याला केशव दास को पिलाया सो ही पीछा १२ मिला १३ शरीर छोड़ा ॥ २३ ॥ २४ ॥

सह खंडू नृप संभरी चढि तबहि चलाया॥
संग लये भट तीन सत३०० निज परख गिनाया ॥
जैपुरके प्राकार[1] ढिग रहि तुरग बिहाया ॥
इक्क अटा[2] चढिकैं सकल पुर त्यों दृग लाया ॥ २५ ॥
जैसैं जैपुर सिल्पमत जयसिंह बसाया ॥
भेदी कोउक अंग[3] ते कहि भिन्न बताया ॥
यह कूरम सचिवन सुनी दुव२ देखन आया ॥
तब पुर दक्खिन द्वारका द्रुत अरर[4] खुलाया ॥ २६ ॥
सिबिका[5] हरगोबिंद१ चढि बाहिर कढि धाया ॥
बिद्याधर१ त्योंही बहुरि दुव२ सम्मुख चलाया ॥
आय निकट बुंदीससों सब वृत्त कहाया ॥
जैसी बिधि गर[6] रत्तिमैं नृप गरल चढाया ॥ २७ ॥
दोहू२ सचिवनकों सुनत इन सँपथ[7] कराया ॥
तब सब्बी गिनि सेनमैं यह वृत्त[8] पठाया ॥
सो सुनि हुलकर सैन लै जैपुर ढिग आया ॥
करि मुकाम प्राकार तट निज थूंल[9] तनाया ॥ २८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे हुलकर१ हड्डेन्द्र२जयपुरप्रस्थानप्राप्तकूर्मराजपत्ररावराजप्रार्थनाऽनुनयनकथितकेशवदासवैरहुलकरजैपुरगमनमंत्रिहरगो-

---

१कोट के पास रहकर घोड़ों से उतरे २ छत पर चढकर सब नगर देखा ॥२५॥ ३ नगर के उन अंगों को ४कपाट ॥ २६ ॥ ५ पालखी पर१राजा ने विष खाया ॥ २७ ॥ ७ सौगन कराये ८ वृत्तान्त ९ डेरा ॥ २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्र में, हुलकर और हाडा क्षत्रियों के इन्द्र का जयपुर पर गमन करना १ कछवाहों के राजा का पत्र पाकर रावराजा का हुलकर से विनय करना २ कहे हुए केशवदास के वैर पर हुलकर का जयपुर जाना ३ मंत्री हरगोविन्द का पीठ पीछे सेना को निकाल कर जयसिंह के पुत्र को विश्वास देना ४ शत्रु

विन्दपरोक्तसैन्यनिष्कासनजायसिंहविश्वसनज्ञातशत्रुसामीप्यसैन्य रहितपीतगरलकूर्मराजदेहत्यजनबोधसिंहि १ मल्लारि २ जयपुर वहिर्दर्शनजयपुरसचिवतत्सम्मिलनहुलकराऽऽह्वानप्राकाराऽध पृतनापातन सप्तत्रिंशो ३७ मयूख' ॥ ३७ ॥ आदित ॥ ३१८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पोस असित दसमी१० दिवस, इम जयपत्तन आय॥
पुनि प्रवध अपनों करन, लिय बुदीस बुलाय ॥ १ ॥
अक्खी तुम जावहु नृपति, लखि पुर राजनिकाय ॥
अतहपुर जुत अप्पनौं, जामिक देहु जमाय ॥ २ ॥
तब पुर अतर जाय नृप, धरि चोकी सब ठाम ॥
कहिय आय मल्लार प्रति, भये नृपहिं खट६ जाम ॥ ३ ॥
उचित दाह कछवाहको, अब न विलब विधेय ॥
इते काल रक न रहैं, श्रुति अक्खत सुहि श्रेय ॥ ४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सुनि हुलकर कछु सोक सहित हुव, जैपुर सचिव बुलाये वे दुव२॥
हरगोविंद१ वहुरि विद्याधर१, तिनहिं कह्यो दाहहु नृप सत्वर५
तब तिन अरज मलारहिं किन्नौं, चोकी तुम अप्पन धरि दिन्नौं॥
कोस सबहि नहिं हत्थ हमारैं, किहिं ठौं सन उपकरन निकारैं६

को समीप जानकर सेना रहित कछवाहे राजा का जहर पीकर शरीर छोड़-ना ५ बुधसिंह के पुत्र और मल्लार के पुत्र का जयपुर को बाहर से देखना ६ जयपुर सचिवों का उनसे मिलना और हुलकर को बुलाना और कोट के नीचे सेना का पड़ाव करने का सैंतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३७॥ और आदि से तीन सौ अठारह ३१८ मयूख हुए ॥

१ वदि ॥ १ ॥ २ राजमन्दिर (महल) ३ जनाना सहित ४ अपने पहरायत ॥ २ ॥ ५ राजा को मरे छः पहर होगये हैं ॥ ३ ॥ ६ वेद कहता है सो ही श्रेष्ठ है ॥ ४ ॥ ७ शीघ्र ॥ ५ ॥ ८ खजाने ९ किस जगह से १० सामग्री ॥ ६ ॥

इन अक्खय हम सन लै जावहु, नहिं *निदेस किम कोस खुलावहु ॥
यह सुनाय निज कोसनतैं तब, सामग्री हुल्लकर पठई सब ॥७॥
ताहि संग बनिक[1] रु बिद्याधर[1], लै तब उभय[2] गये पुर अंदर ॥
राज्य बडो कछु काम न आयो, हुल्लकरतैं खंपन[1] नृप पायो ॥८॥

॥ दोहा ॥

महलन बिच निष्कुट[2] रुचिर, जयनिवास अभिधान[3] ॥
किन्न दाह कछवाहको, तिहिं ढिग विहित विधान[4] ॥ ९ ॥
बिगरी ईश्वरिसिंह मति, बरस इक्क[1] पहिलैंहि ॥
सुपहु राम सोपै सुनहु, नर कच्छ इम व्है हैं हि ॥ १० ॥
मत्त भयो जयसिंह सुव, जैपुर गद्दिय पाय ॥
खान[1] नाम इभपाल[5] इक, किन्नौं सचिव बढाय॥ ११ ॥
जवन वहै उनमत्त भो, नृपको हेत निहारि ॥
अति अनीति लग्गो करन, पर नारिन घर डारि ॥ १२ ॥
कूरम आसव[6] पान करि, इकदिन बुल्ल्यो[7] वाहि ॥
मंदिर श्रीगोविंदके, चित कछु मंत्रन चाहि[8] ॥ १३ ॥
बरज्यो इतरनैं तदपि[9] तँहँ, किन्नों कुम्भ अजान ॥
आधोरनके[10] हत्थतैं, पानकरस[11] को पान ॥ १४ ॥
पुनि वासौं गलबाँह करि, फिरयो निरंकुस होय ॥
जब आसव मद उत्तरयो, सोच्यो तब सठ रोय ॥ १५ ॥
दिवाकीर्ति[12] इक दैधिषैव[13], बारी संभुवर[2] नाम ॥
सोहु बढायो सचिव करि, दै सिविका गज गाम ॥ १६ ॥

---

*हुकम ॥ ७ ॥ १ मुरदे को ओढाने (ढकने) का वस्त्र ॥ ८ ॥ २ गृहवाटिका (घर का बगीचा) ३ नाम ४ उचित विधि से ॥ ९ ॥ १० ॥ ५ महावत को ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ६ मद्य पीकर ७ उस महावतको बुलाया ८ सलाह करने की इच्छा से ॥ १३ ॥ ९ अन्य लोगों ने मना किया तोभी १० हाथी के महावत के हाथ से उस मंदिर में ११ मद्य पान किया ॥ १४ ॥ १२ नाई १३ अविवाहिता (नातेवाली)

अत्यज लोक अनेक इम, रक्खे ढिग पट्ट जानि ॥
मरयो सु कूरम लै गरल, यँहँ दक्खिन भय आनि ॥ १७
*बारनारि इक रूप बसु, मन्नी तिय करि मेल ॥
सोहु जरी रचि सहगमन, जयनिवास गृहवेल ॥ १८ ॥
दूजेदिन हुलकर तनय, किन्नीं खड्डव वत्त ॥
कूरम गृह सुदर सुनत, पातुरि बहु गुन रत्त ॥ १९ ॥
लखि अच्छी तिनमाँहिसों, चुनि चुनि कल्हि मँगाय ॥
घर हम सुग्गन रक्खिहैं, गिनत समर्थ न न्याय ॥ २० ॥
यह उदंत अवरोध गत, सुनि पातुरि भय पग्गि ॥
एकादसि वासर जरी, एकादस ११ लहि अग्गि ॥ २१ ॥
रानिनहू यह भय सुनत, इक गृह सोर बिछाय ॥
सबन विचारी उडनकी, करन मान बिनु काय॥ २२ ॥
तब आतुर नाजर जनन, अक्खी बाहिर आय ॥
जो न बनैं सँत्वर जतन, रानी जन उडि जाय ॥ २३ ॥
आये हुलकर सग यँहँ, माधवकेहु वकील ॥
बनिक कन्ह कोविदं बहुरि, कूरम प्रेम कुसील ॥ २४ ॥
तिन यह सुनि ब्रुदीस प्रति, अक्ख्यो अनुचित कर्म ॥
भूप सुनत अति कोप भरि, धरयो लरन भट धर्म ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

अंसनायित हरि अग मनहुँ बिच्छिय अल मारिय ॥
सँगर सापन असह आखि जनु कपिल उघारिय ॥

स्त्री का पुत्र ॥ १६ ॥ १७ ॥ *वेश्या रूप ही है १ धन जिसके २ घर (महलों) के बाग में ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ३वृत्तान्त ४जनाने में गया ५ एकादशी के दिन ॥ २१ ॥ ६ शरीर को विना प्राण करने के लिये ॥ २२ ॥ ७शीघ्र उपाय नहीं होवेगा तो ॥ २३ ॥ ८ चतुर ९ खोटे स्वभाववाला ॥ २४ ॥ २५ ॥ मानों १० भूखे सिंह के शरीर में ११ बीछू ने १२डंक मारा किंवा १३ सगर के पुत्रों को श्राप देने को १४ कपिलदेव ने नेत्र खोले, मानों कालिका ने शुभ असुर के ऊपर

काली मनहुँ कराल सुंभ उप्पर त्रिसूल लिय ॥
दलन जंभ दंभोलि पकरि पलट्यो कि सचीप्रिय ॥
श्रीवत्सधर कि सिसुपालके अंतिम आगसँ उज्झलिय ॥
इम भूप सुनत खंडुव अनय कारखि मुच्छ लुञ्छिय बलिय २६
सुनहु बत्त मल्लार सब्ब मिच्छन उर अप्पन ॥
पठये तुम पुराधेस धर्म हिंदुन दृढ थप्पन ॥
अनय अज्ज इक सुनिय तनय भवदीय कहत यह ॥
नृप जैपुर पति नारि गेह डारहिं करि अंगगह ॥
सब ठाम लज्ज एकहि समुझि अब खंडुव वरजन उचित॥
उनमाँहिं हमहु नहिंतो अवहि हड्डन हिय तुमतेँ न हित ॥२७॥

॥ दोहा ॥

हैं हमरी बेटी बहिनि. उनके आलय माँहिं ॥
त्योंहि समझहु चतुर तुम, उनकी हम घर आँहिं ॥ २८ ॥
अज्ज बिपत्ति जु एक बिच, सो दूजे बिच सोहि ॥
मनुजनको तब जब मरन, तो वैर अवसर कोहि ॥ २९ ॥
हम सिर तुम आसान किय, इन पर डारि चपेट ॥
जो समुझहु कृतघन हमहिं, तो बुंदिय वह भेट ॥ ३० ॥
यह अनीति जो नीति करि, मन्नैं हमहु प्रमत्त ॥

भयंकर त्रिसूल लिया, किंवा जंभासुर को मारने के लिये १ वज्र पकड़ कर २ इन्द्र पलटा, किधूं ३ श्रीकृष्ण शिशुपाल के अंतिम ४ अपराध पर चढे "श्रीकृष्ण ने शिशुपाल की माता को वरदान दियाथा" कि शिशुपाल हमारे सौ अपराध करेगा तबतक हम उसको नहीं मारेंगे सो युधिष्ठिर के यज्ञ में एक सौ एक अपराध करने पर उसको मारा था इस प्रकार बुंदी का राजा (उम्मेदसिंह) खंडू की अनीति को सुनकर मूंछ ५ खैंचकर वह बलवान् बोला ॥ २६ ॥ ६ अपन यवनों के उर में साल हैं ७ पूना के पति ने ८ आज एक अनीति सुनी है ९ आप का १० आग्रह ॥ २७ ॥ ११ घर में. हमारे घर में १२हैं ॥ २८ ॥ १३ मनुष्यों को. अवसर का मरना ही १४श्रेष्ठ है ॥ २९ ॥ ३० ॥

अखिल दिखावैं अगुलिन, विकंन्न[1] विकन्न कहि वत्त ॥ ३१ ॥
धरम चलावत नयधरन[2], तुम सहाय भुव लीन ॥
अधरम करि लेवो उचित, पाक[3] दमन[4] पदवी न ॥ ३२ ॥
सोदरतैंहु[5] सखा अधिक, सो कूरम १ तुम १ सूर ॥
यातैं खडुव मात वे, तिनकों तकत कूर ॥ ३३ ॥
नृपति अखि सच्ची निरखि, जानी यह मरिजाय ॥
हित करि हुलकर हडुकों, लिन्नों हृदय लगाय ॥ ३४ ॥
काल देस आलोच[7] करि, चित्त धरम दृढ चाहि ॥
तरज्यो[8] अप्पन पुत्रकों, संभर नृपहि सिराहि ॥ ३५ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे कूर्म्मराजमरणज्ञानानन्तरहड्डेन्द्रपूर्वकमहाराष्ट्रजामिकजयपुरदत्तणादत्तस्वोपहारहुलकरकूर्म्मराजदाहनतत्पूर्वाऽनाचारकथनैकवारस्त्रीतत्सहगमनमल्लारिकूर्म्माऽन्त पुरलुट्टनमननश्रुततदुदन्तैकादश ११ भुजिष्याज्वलननिवसनसर्वराज्ञीजनवन्हिविशनविचारणज्ञाततद्वृत्तान्तहड्डेन्द्ररोपाऽरुणीभवनमल्लारशिक्षादानवाक्प्रतोदप्र

१ नकटा नकटा कहकर ॥३१॥ धर्मको चलाने और २ नीतिको धारण करने को बुदी की भूमि पीछी ली है ३ बुढापा ४ बिगाड़ने की पदवी लेना उचित नहीं है।३२। ५ सगे भाई से भी मित्र अधिक होता है सो ईश्वरीसिंह और तुम पाघ ,पदल कर सखा हुए हो ६ इस कारण ॥ ३३॥३४॥ ७ विचार कर ८ धमकाया ॥ ३५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में, कछवाहों के राजा के मरने का ज्ञान हुए पीछे हड्डेन्द्र आदि का, मरहठों के पहरायत रखना १ हुलकर का सामग्री देने से कूर्मराज का दाह होना और उसके पहिले के दुराचारों का कहना २ उसके साथ एक वेश्या का सती होना ३ मल्हार के पुत्र का कछवाहे के जनाने को लूटने का विचार करने का वृत्तान्त सुनकर ग्यारह पासवान स्त्रियों का अग्नि में प्रवेश करना और सब राणियों का अग्नि में प्रवेश करने का विचार करना ४ यह वृत्तान्त, जानकर हड्डेन्द्र का क्रोध मे लाल होना और मल्हार को शिक्षा देने रूपी वचनों के चाबुक से समझाये हुए हुलकर का हड्डेन्द्र को हृदय लगाना ५ अपने पुत्र खंडू को

हो।धितहुल्लकरहड्डेन्द्रहृदयाऽऽश्लेषसारवपुत्रखराडूतर्जनमष्टत्रिंशो मयूखः ॥ ३८ ॥ आदितः ॥३१९॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि अकिखय मल्लार प्रबिसि जैपुर बुंदियपति ॥
कूरम सचिवन कहहु मोद रक्खहु त्रासहु मति ॥
प्रकट जाय [2]प्रच्छन्न कुम्म नृप तियन कहावहु ॥
धन्य सती तुम धरम सोहु हम तियन सिखावहु ॥
कछु बोधहीन खंडुव कहिय [3]आगसं बखसहु मोहि यह ॥
निजनाथ मित्र मम सिर निडर सासन करहु सखीन सह॥१॥

॥ दोहा ॥

सुनि इम हड्ड नरेस तब, बिरवासे सब जाय ॥
अक्खी डरहु न नैक अब, हम तुम संग सहाय ॥ २ ॥
तबहि पाय बिस्वास तिन, प्रतिउत्तर दिय एह ॥
उपकारहि अपकार पर, नृप तुम किन्न सनेह ॥ ३ ॥
रवा[6]पतेय अब दंडको, मंगहिं यह मल्लार ॥
कछुक घटावहु जतन करि, सोपै संभरवार ॥ ४ ॥
कोटि पंच५००००००० हुल्लकर कहे, लेन दम्म हठ लाय ॥
बुल्ल्यो तँहँ नृप करि बिनय, जुलम सह्यो किम जाय।५।
बहुत बेर दक्खिन दलनँ, कूरम दंडित कीन ॥
लखि श्रद्धा बसु लीजिये, इन्ह गिनि निवल अधीन ॥ ६ ॥

धमकाने का अड़तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३८॥ और आदि से तीन सौ उन्नीस ३१९ मयूख हुए ॥

१ डरो मत २ जनानी ड्योढी पर ३ विना विचार से ४ अपराध ५ मैं तुम्हारे पति का मित्र हूं सो निर्भय होकर मेरे मस्तक पर आज्ञा करो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ धन ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ सेना ने ८ धन ॥ ६ ॥

कारिजं पर खरचत कलाँ, मूलहिं रक्खि समग्गं ॥
अरथं घटुनकी रीति यह, अक्खी वृद्धन अग्ग ॥
कला बढत पुनि मूलकरि, मूल मिटें सु मिटाय॥
जैसें रंजका मूल जुत, लयो न पुनि लहरायं ॥ ८ ॥
जातैं पुनि धन उप्पजहिं, ऐसो रक्खि उपाय ॥
अक्खहु दम श्रद्धा उचित, हठ तजि हुलकर राय ॥ ९ ॥
हम मन्नहिं आसान यह, देखहु सक्ति उदार ॥
कुँल्लया जल होय न कबहु, पूरन पारावार॥ १० ॥
तब निहारि भूपति बिनय, काल१ देस१अरु काज१ ॥
दम्म कोटि इक१०००००००दहके, रक्खे हुलकर राज ॥११॥
तीन३ अस श्रीमंतके, चोथो४ निज करि चित्त ॥
ऐसे क्रम आमेर सन, बंटन मग्गो बित्त ॥ १२ ॥
कतिक दंम्म मनि गन कतिक, भूखन कतिक नवीन ॥
करि किम्मति गज हय कतिक, दंड माँहिं तब दीन ॥१३॥
बारी सभुव१ खान२ बंलि, पीलुँपाल पकराय ॥
दम्म घटे तिनमें दये, हरगोबिंद कहाय ॥ १४ ॥
कीलितें तब दोऊन२ करि, लै लक्खन हठ लग्गि॥
कोटि अक१०००००००पूरन किपउ, प्रकट लोभ बस पग्गि
इत माधव कछु अध्वभव, खेद उदेपुर टारि ॥
पत्तो पत्तन रामपुर, पाय परग्गन च्यारि४॥ १६ ॥
निज पतनी रट्ठोरि लिय, दोहँद लच्छन धारि ॥

१कार्य पर१०ब्याज(सूद)खरच करते हैं३समग्र४धन में चतुर लोकों की ॥७॥ मूल रहने से ही ब्याज बढता है और मूल के मिटने से ब्याज (सूद) उसके साथ ही इस तरह मिटजाता है जैसे ५ रजके (घास विशेष) को मूल सहित ले लेने से फिर ६ हरा नहीं होता ॥ ८ ॥ ६ ॥ ७ नहर के पानी से ८ समुद्र नहीं भरता॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ कितनेक तो रुपये ॥ १३ ॥ १० पुनि ११ महावत को ॥ १४ ॥ १२ कैद करके ॥ १५ ॥ १३ मार्ग से पैदा हुआ ॥ १६ ॥ १४ गर्भ

कूर्म उछ्छव तास किय, अष्टम८ मास उतारि ॥ १७ ॥
याँतें हुलकर संग इत, आयो नहिं कछवाह ॥
कन्ह१ रु प्रेम१ वकील हुव२, लखनं पठाये लाह ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

ईश्वरिसिंह निपात सुनत हुलकर दल्ल सुकल्लि ॥
बुल्लिय माधव वेग वंचि पत्र सु आयो चल्लि ॥
संगानेर समीप रह्यो कति दिन मुकाम करि ॥
बारह१२ दिवस बिताय गयो जयनेर गर्व भरि ॥
सुनि आत कटक जयपुर सहित बुंदियपति१हुलकर२चल्लिय
जद्दव नरेस३ खंडुव४ सजव हत्थिन चढि सम्मुह हल्लिय॥१९॥

॥ दोहा ॥

जद्दव नृप गोपाल जँहँ, नगर करोली नाह ॥
मंत्र करन मल्लार सन, आयो मिलन उछाह ॥ २० ॥
बह१ अरु खंडुव इक्क१ इभँ, वैठि चले तिहिं वेर ॥
प्रथम कहे ते२ रहि पृथक, फैलत फोजन फेर ॥ २१ ॥
मिले परसपर मन मुदित, सबै विहित सतकार ॥
इक्क१ अनेकंप आरुहे, माधव१ अरु मल्लार२ ॥ २२ ॥
कुम्भ कह्यो न मुहूर्त्त अब, पविसैं नहिं पुर पोरि ॥
अब पविसहु हुलकर कहिय, सँध्या आत वहोरि ॥ २३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इम कहि नगर प्रवेस करायो, निज महलन माधव नृप आयो ॥
पहुँचावन मल्लार आदि सब, गये जलेवचोक लगि ए तव ॥२४॥
चढे गजन डेरन पुनि आये, बलि उत्तरि कटिबंध बिहाये ॥

१उत्सव ॥१७॥२लाभ देखने को ॥ १८ ॥ ३ पत्र भेज कर ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ एक हाथी पर ॥ २१ ॥५ उचित ६एक हाथी पर माधवसिंह और मल्लार चढे ॥२२॥ ७ फिर जया नामक सिंधिया आता है ॥ २३ ॥ २४ ॥ ८ कमरबंध खोले

हुलकर निज बुल्ले जोमिक जन, माधव अमल कियो जयपत्तन२५

दोहा—सध्या पुनि राणाजि सुत, साजि दुद्धर बहु सैन ॥
जयपत्तन आयो जया, अति जव छेकत अैन ॥ २६ ॥

॥ गीतिका ॥

सुनिकैं जया जयनैर आवत हह्व १ कूरम २ हू चले ॥
दलमैं नकीबन दोरि आरव जान सम्मुहके पले ॥
सह भूप जह्व १ पुत्र खडुव २ लै मलार १ हु सक्रम्यौं ॥
इम च्यारि ४ चक्कन चालतैं भय च्यारि ४ चक्कनमैं भ्रम्यौं२७
मुदपाय मुत्तियडुगरी तक जाय सम्मुह ए मिले ॥
सब पुच्छि मंगल मोहि माँहिं बहोरि पत्तन त्यौं पिले ॥
अरु चदपोगि मुकाम अप्पन दै जया तँहँ उत्तरयो ॥
पुनि मंत मित्त मलारतैं दंम बित्त बटनको करयो ॥ २८ ॥
तवही मलार पचीस लक्ख२५०००००लये ति[१२]वोउरन बंटये
श्रियमतके पुनि पचसप्रति लक्ख७५००००० दक्खिन मेरये ॥
अरु जैपुरेस दुहून २ सौं महिमानि जिम्मनकी कही ॥
सुनिये महीपति राम जो इक१ हाँ चही इक१ नाँ चही ॥२९॥

दोहा—हुलकर १ बत्त सु अघरिय, पै संध्या १ किय नाँहिं ॥
बुल्ल्यो जैपुर देत बिख, मिंठी कहि खिनमाँहिं ॥ ३० ॥
देखि रीत खुदीसकी, आरंभत तुम एह ॥
पै हहे अकपट प्रथितैं, गाढ कुहेक यह गेह ॥ ३१ ॥

हुलकर ने जयपुर के खजानों पर अपने १ पहरायत रक्खे थे सो बुलालिये ॥ जयपुर में ॥२५॥ ३मार्ग को ॥ २६ ॥ ५ सम्मुख जाने के ४ शब्द पढे ६ चला चतुरंगिणी सेना के चलने से ८ चारों दिशाओं में भय फैला ॥ २७ ॥ ९ अपने १० मित्र मलार से जया ने ११ दंड के धन को बांट लेने के लिये कहा ॥ २८ ॥ १२ते (वे) ॥ २९ ॥ १३ मीठी बातें कहकर ॥ ३० ॥ १४ कपट रहित प्रसिद्ध हैं १५ जयपुर का घर बडा छली है ॥ ३१ ॥

॥ षट्पात् ॥

सोदर १ कहँ जयसिंह अग्ग हालाहल अप्पिय ॥
मारे पुत्त २ रु मात ३ तदपि पप्पिय नन तप्पियं ॥
मानं हनिय मारूफ १ जलधि बिस्वास निमँज्जत ॥
ढुंढाहरके ढोल बिदित याही गति बज्जत ॥
तातैं न हमहि निश्चय तुलत स्वागत हम मन्न्यों सकल ॥
कछु बित्त तुरग पुनि भेट करि कुंच करावहु छोरि छल।३२।
तदनंतर मरहट्ट द्रंग अंतर दूजे दिन ॥
क्रंय बिक्रय कछु करन बहुत प्रबिसे संका बिन ॥
तिनकी बंधन तोरि इक्क १ वड़वाँ पुर आई ॥
सो सेखाउत सठन छन्न गृह बंधि छपाई ॥
लखि ताहि खुल्लि लावन लगे उन तब झारिय खग्ग औंर।
यह हक्क मचिग पत्तन अखिल अरु द्वारन लग्गे अँरर ॥३३॥
सुनत सोर गहि सजव लोक पत्थर असि लट्ठन ॥
पुरके मिलि मिलि प्रचुर लगे मारन मरहट्ठन ॥
द्वे जन च्यारि हजारि ४००० च्यारि तिनके बिभाग करि ॥
अंस तीन ३ असुहीन भये लवं इक्क १ घाय भरि ॥
बाहिर गये ति पुरजन बहुत भजत द्रनँ दक्खिन भटन ॥
बुंदीस कटक आय रु बचे करि कितेक अतिजव अटन।३४

॥ दोहा ॥

आनत बाँमी अप्पनी, दक्खिन लोक अदोस ॥

१सगे भाई विजयसिंह को२जहर दिया था ३तोभी पापी४तृप्त नहीं हुआ ५मान सिंह ने ६ विश्वास रूपी समुद्र में ७डूबते हुए को ॥३२॥८जिस पीछे ९नगर मे १०लेन देन को ११घोड़ी बंधन तुड़ाकर शहर में चली आई १२ शीघ्र तरवार चलाई १३दरवाजों के किवाड़ लगगये ॥ ३३ ॥१४तीन पांती के मारेगये १५एक पांती के घायल हुए १६ शीघ्रता से भगकर ॥ ३४ ॥ १७ अपनी घोड़ी लाने मे

अपराधी जैपुर जनन, रच्यो *अलीकहि रोस ॥ ३५ ॥
मनुज समर्थनके मरत, तक्क्यो माधव त्रास ॥
भावी निज चिंतत भयो, सततं डारि निसास ॥ ३६ ॥
हुलकरराज समीपहो, कुम्भें सचिव इहिं काल ॥
प्रान बचन पायन परयो, वनिक सु कन्ह बिशाल ॥ ३७ ॥
देखि ताहि हुलकर सदयं, क्षुदिय सचिव बुलाय ॥
अक्खी समर पास इहिं, धरहु जिवावन जाय ॥ ३८ ॥
दक्खिन जन नहिंतो दुमन, अब आयसं इच्छे न ॥
ढुंढत जन ढुंढारके, हनत फिरत रुकिहै न ॥ ३९ ॥
मयाराम१ कायत्थ तब, दयाराम२ द्विजराज ॥
पत्ते लै बुंदीस प्रति, कन्ह जिवावन काज ॥ ४० ॥
संध्या कुंप्पित एह सुनि, बिरचन जैपुर बाध ॥
बहु माधव थप्पिय बिनय, अप्पिय तव अपराध ॥ ४१ ॥
प्रचुरं वित्त लिय दंड पुनि, अरु पठई कहि एह ॥
यँहँ भेजहु घायल अखिल, दाह करहु मृत देह ॥ ४२ ॥
जन हजार१००० घायल जबहि, दर्ल पठाय सब दिन्न ॥
तिन्न सहँसँ३०००कुशार्पन त्वरित,कर्म उचित बिधि किन्न४३
गढके गोलंदाज इक१, दिन्नी तोप दगाय ॥
निज रुचिसों कि निदेससों, जानी सो नहिं जाय ॥ ४४ ॥
फुरत बँन्हि पेर फोजमैं, लग्ग्यो गोलक लोलं ॥
बहुरि तास बिग्रह बढ्यो, कूरम चुक्यो कोल ॥ ४५ ॥
कुच तबहि दुव२ सेन करि, सध्या१ हुलकर१ सत्थ ॥

---

* झूठा क्रोध रचा ॥३५॥ १निरंतर ॥३६॥ २माधवसिंह का कामदार॥३७॥ ३ दया सहित ॥ ३८ ॥ ४ हुकम नहीं चाहते ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ सिंधिया कोपित हुआ ६नाश करने को ॥ ४१ ॥ ७फिर दंड का बहुत धन लिया ॥ ४२ ॥८सेना में भेज दिये ९ मुरदों का ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १० अग्नि लगते ही ११ पराई (मरहठों की) सेना में १२ चपल गोला लगा ॥ ४५ ॥ ४१ ॥

भंकरोर जाय रु भये, संगर रचन समत्थ ॥ ४६ ॥
धुज्जि तबहि जयनैर धँव, संध्या१ हुल्लकर१ पास ॥
गोलंदाजहिँ लै गयो, आतुर नम्र उदास ॥ ४७ ॥
बुल्ल्यो इहिँ किय हुकम बिनु, ³मम दास यहै न ॥
दोऊ२ तुम सागस दमन, नमनैं किये हित नैन ॥ ४८ ॥
बिनय पिक्खि दोउ२न बहुरि, दुव लक्ख२०००००हि लिय दम्म ॥
आगसैं किन्नों माफ वह, कारिय कुंच जय कम्मँ ॥ ४९ ॥
आयो तब करि सिक्ख इत, निजपुर संभर नाह ॥
टीँका जैपुर मुक्कलिय, रक्खि सनातन राह ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रेबुन्दीशकूर्म्मशुद्धान्तत्रासध्वंसनकोटि १०००००० द्रम्मकूर्म्मदण्डदापनरामपुरेशमाधवसिंहपत्नीराष्ट्रोडिदोहदलक्षणसीमन्तोत्सवकरणप्राप्तमल्लारपत्रतज्जयपुराऽऽगमनराज्यप्रापणाऽनन्तरसन्ध्याजयाऽऽगमनकूर्म्मगृहभोजनानङ्गीकरणवड्वानिमित्तवहुलमहाराष्ट्रजनमरणातत्क्रुद्धहुल्लकर १ सन्ध्या२ पुनर्दण्डनयनकूर्म्मनिजनालीयन्त्रप्रेरकतन्निवेदनपुनर्नीतलक्षद्वय २००००० द्रम्मदक्षिणसैन्य

१जयपुर का प्रांत ॥४७॥तुम दोनों २ अपराधी को दंड देनेवाले हो ³ हित ३ नेत्रों से मैंने नमस्कार किया है ॥ ४८ ॥ ४ अपराध ५ जय करने को ॥४९॥५०

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में बुन्दी के पति का कछवाहे के जनाने के त्रास को मिटाना और कछवाहे का दंड के क्रोड़ रुपये देना १ रामपुरा के पति माधवसिंह की स्त्री राठोड़ी का गर्भ के आठ मास का उत्सव करना २ मल्लार का पत्र पाकर उस (जयसिंह) का जयपुर आना और राज्य पाये पीछे जया नामक सिंधिया का आना ३ कछवाहे के घर में भोजन करने का अस्वीकार करना और घोड़ी के कारण बहुत मरहठों का मरना, उस क्रोध से हुलकर और सिंधिया का दंड लेना ४ कछवाहे का अपनी तोप को चलानेवाले को नजर करना, फिर लाख रुपये लेकर दक्षिण की सेना का गमन और रावराजा का बुन्दी आकर टीकाकी सामग्री जयपुर भेजने का उनचालीसवां मयूख समाप्त हुआ॥३९

प्रस्थानरावराड्बुन्द्याऽऽगमनातिलकोपहारजयपुरप्रेषणामेकोनचत्वारिंशो ३९ मयूख ॥ ३९ ॥ आदित ॥३२०॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत मनसूरअली अभिधानक, अहमदसाह बजीर अचानक ॥
पठयो कटक रचन घमसानन, हनन फुरक्काबाद पठानन ॥ १ ॥
नवलराय कायथ सेनानी, तिंहिं द्रुत जाय रारि तब तानी ॥
बगस खानमुहुम्मद बीबी, गज्जैं उतहु धरैं न गरीबी ॥ २ ॥
अवलोपन नहिं नैंक उघारैं, राज्य फुरक्काबाद सम्हारैं ॥
नवलराय तिंहिं सन किन्नों रन, नारि सबल बस तदपि भई नन।३।
कायथ तब करि सपथ संधि किय, दै बिसास दल तास लुट्टि लिय
बीबी तिहिं दुव२मास टारि बलि, किन्नों आनि बजीर हिंतु कलि४
नवलराय कायत्थ हन्यों तब,सहँस पचास५००००कटक लुट्ट्यो सब
लखि यह भीरु बजीर पँलायो, अति आतुर दिल्लिय पर आयो ॥५॥
कछु रुप्पय तिहिं दैन कहाये, बलि सहाय मरहट्ठ बुलाये ॥
राजा जुगलकिसोर१ भट्ट जन, बहुरि दिवान रामनारायन१ ॥६॥
ए दुवँ२ लैन दक्खिनिन आये, सन्ध्या१ हुलकर१ सग सिधाये ॥
भूंति अवेरि जानि बीबी भय, प्रविसी जाय कमाऊ पब्बय ॥ ७ ॥
लहि वजीर सेन खरच एहु तब, बीबी बिंटन उतहिं गये सब ॥
रामसिंह इत धन्वधरापति, इकदिन कहिय लैन सिर आपति ।८।
भट रट्ठोर सभा जब आवत, तिनके लोचन मोहि डरावत ॥
लगत बुरे मोकौं सठ सारे, कैसी बिधि अब जाय निकारे ॥९॥

और आदि से तीन सौ बीस ३२० मयूख हुए ॥

१नामवाला२युद्ध करने को सेना भेजी ॥१॥२॥ ३खोलना ४लोभी ॥३॥ ५ सौगन करके ६ वजीर से युद्ध किया ॥ ४ ॥ ७ भागा ॥ ५ ॥ ६ ॥ ८ ऐश्वर्य अवेर कर कमाऊ का पर्वत ॥ ७ ॥ ९ वजीर से १० मारवाड़ का पति ॥ ८ ॥ ९ ॥

ढह्री अमिय कह्यो बनि संक्खी, तुमरे जनकें यहै इन्ह अक्खी ॥
चैंपाउत कुसलेस कह्यो तब, यह सुत अधम भयो तोहू अब १०
जब डेरन परवाय हमारे, दुदुकारहिं तब कढहिं निकारे ॥
सुहि इनको करि बेग बिडारहु, ह्वै विलंब तो इन करि हारहु ।११।
अनुग पठाय अनय सुहि धारयो, डेरन पारि कुसल दुदुकारयो ॥
अँर चढि तब नागोर गयो यह, मन्न्यौं सुनि बखतेस महामह ॥१२॥
सम्मुह पठयो बिजयसिंह सुत,जिहिं लिय कुसल बधाय विनय जुत
कथन यहै बखतेस कहायो, आये तुम सु जोधपुर आयो ॥१३॥
बढ्यो तबहि दोरहू दिस विग्रह, चाहैं करन परस्पर निग्रह ॥
रामसिंह सन सबहि रिसाये, इतर भटहु निज निज घर आये ॥१४॥
इक१ बदल्यो न सेर१ दूदाउत, रह्यो अनादरहू सहि राउत ॥
सेना बहुरि उभय२ दिस सज्जिय,बंब पँणाव आनक रन बज्जिय१५
चलत बेर मृंत सेर तुरंगम, किय सब अरज दैन हय नृप सँम ॥
बुल्ल्यो मँरुप उचित तुमरे हय, हेरहु रँजक कुलालन आलय ।१६
भीखँम धुर धोरी अँचत भर, सेर सुपे सहि भो अग्रेसँर ॥
जान्यौं नृप मतिमंद न जानैं, पै हम स्वामिधर्म पहिचानैं ॥१७॥
चले उभय पुनि कटक खेत चढि, पटके वाजि भटन हरि हरि प
हल्लिय आँलुक भोग हजारा, धुज्जिय पहुमि तुरंगम धाँरा ॥१

१साक्षी बनाकर२तुम्हारे पिता ने ॥१०॥ ३ निकालो ॥११॥४नौकर को भेजक
५बड़ी अनीति की६कुशलसिंह को धिक्कार दिया "डिंगल भाषा में धिक्कार देक
अनादर पूर्वक निकालने को दुदुकारना कहते हैं" ७ शीघ्र चढकर बखतसिंह
८ बड़ा उत्सव माना अथवा बड़ा उत्सव करके इसका मान किया ॥ १२
॥ १३ ॥ ९कैद ॥ १४ ॥१०नगारे, मर्दल और ढोल बजे ॥ १५ ॥११चलते सम
सेरसिंह का घोड़ा मरगया तब १२ राजा रामसिंह से घोड़ा देने की अर्ज क
इस पर १३ मारवाड़ का राजा बोला कि तुमारे उचित घोड़ा तो १४ धोब
और कुम्हारों के घर में हेरो ॥ १६ ॥ १५ भीष्म की धुर को धारण करनेवाल
(खैंचनेवाला) धोरी, वीर शेरसिंह उसको भी सहकर १६ आगे हुआ ॥ १७
१७ शेषनाग के फणों का हजारा हिला अर्थात् हजार फण हिले १८ घोड़ों व

दसन लगे तुट्टन दिगदंतिन, तुमुल राग सिंधुव हुव तंतिन ॥
कंकट फटत वाढ करवालन, मुंडन खोजि रचत हर मालन ॥१९॥
रुंड नचत कति रविहिं रिझावत, आयुध तजि बत्थन कति आवत
कतिकन फट्टत हृदय कलेजे, भिदत मत्थ कढ्ढत कहुँ भेजे ॥ २० ॥
अखि तिरत सोनित कहुँ अच्छी, मनहु श्रोत विच रोहित मच्छी।
सायक कहुँ लगि नाभि सुहावत, पिहुल लट्ठि कल्हुव छवि पा-
वत ॥ २१ ॥
एडी कटि कटि कहुँक उछट्टत, फाँक नागरंगक जनु फट्टत ॥
ओठ कहुँक कटि कटि भुव आवैं, बिंब मनहु असि घन बरसावैं २२
कहुँक दंत गिरि रोचि प्रकासैं, भूमि मनहु हीरन गन भासैं ॥
नयन गडी कहुँ मुच्छ निहारैं, मीन वदन वनसी छवि मारैं ॥२३॥
इत कहुँ रीढंक भिन्न उलट्टत, कँदली छदन दंड जनु कट्टत ॥
कहुँक भरत करतैं करभनैं कुल, महिला जनन ऊरु जनु मंजुल २४

दोष से भूमि घूर्जी ॥ १८ ॥ दिग्गजों के दांत टूटने लगे, तांतों में भयकर सिंधवी रागिणी हुई २ तरवारों की धाराओं से १ कवच फटे, महादेव मुंडों को खोज कर माला बनाने लगे ॥ १९ ॥ कई रुंड नचकर सूर्य को प्रसन्न करते हैं और कई वीर शस्त्र त्याग कर बाहुयुद्ध करते हैं और कितनों ही के हृदय और कलेजे फटते हैं एवं कइयों ही के मस्तक फूट कर भेजे निकलते हैं ॥ २० ॥ कितने ही सुंदर नेत्र ३ रुधिर में तिरते हैं सो मानों जल के प्रवाह में ४लाल मच्छी तिरती है कहीं पर नाभि में तीर लगकर शोभा देता है सो मानों ६कोपड़ू (धाणी) में ५ मोटी लाठ शोभा देती है ॥ २१ ॥ कहीं पर एड़ियां कट कर उछलती हैं सो मानों ७नारंगी की फांकें फटती हैं, कहीं पर होठ कट२ कर भूमि पर गिरते हैं सो मानो ८ तरवार रूपी मेघ ९मूंगे बरसाता है ॥२२॥ कहीं पर दन्त गिरकर १०प्रकाश करते हैं सो मानों भूमि पर ११हीरे दीखते हैं नेत्रों में गड़ीहुई मूछें दीखती हैं सो मानों मच्छी के१२मुख में कांटा शोभा देता है ॥ २३ ॥ कहीं पर कई वीर १३ पीठ कट कर उलटते हैं सो मानों १४ केल के दंड पर से पत्र फटते हैं, कहीं पर हाथों से१५पुट्ठे कटते हैं "मणिबंधा-द्याकनिष्ठं करस्य करभो बहिः" इत्यमर॥ सो मानों १६स्त्रियों की सुंदर जघायें

लोला कहुँक पुरीतति[2] लोहित, सलिल अरुन अलगर्द[3] कि सोहित
अवनि लसैं धमनीगन[4] ऐसे, कुवलय[5] नाल घनात्यय[6] कैसे ॥२५॥
आंखि कातिक भुव लसत गिरी इम, रुचिर कोकनद[7]की पखुरी जिम।
बिच तारा[8]चल असित बिराजत, लखत मरंद[10] मत्त अलि लाजत२६
भुव कहुँ क्लोम१ कलेजा२ भासत, पाँउस[12] जनु छत्राक प्रकासत॥
लोटत सिर कहुँ छत्र बिलाये, ढबतनें[13] जनु नारेल ढुराये ॥२७॥
उरझी कहुँक सिखा कटि ऐसैं, जालअसित[14] रेसम भव जैसैं ॥
भिरि कहुँ टोप बजत असि भारी, झल्लरि हरिमंदिर जनु झारी॥२८॥
संचर छुरिका[15] धसत सुहानी, पिचकारिन छुट्टत जनु पानी ॥
लोहित फलक[16] तिरत कहुँ डोलत, कमठ बिसेस कि सलिल कि-
लोलत ॥ २९ ॥
पार निकसि पट्टिस[17] छबि पावत, दड्ढ मनुहुँ जम लंपन[18] दिखावत॥

हैं ॥ २४ ॥ कहीं पर रुधिर में १ चपलता युक्त २ आंतें पड़ी हैं सो मानों लाल पानी में ३ जल के सांप शोभा देते हैं अथवा कटी हुई जीभें और आंतें ही जल सर्प हैं भूमि पर ४ नाड़ियां ऐसी शोभा देती हैं मानों ६ शरद ऋतु में ५ श्वेत कमल (गडूल, नीलोफर) की नालियां हैं ॥ २५ ॥ कटेहुए फई नेत्र भूमि पर ऐसे शोभित होते हैं मानों सुंदर७कमलकी पंखुडियें हैं उन कटे हुए नेत्रों में ६ श्याम रंग की चपल ८ नेत्रों की पुतलियां विशेष शोभती हैं जिनको देखकर १० पुष्परस से मस्त भँवरे लज्जित होते हैं ॥ २६ ॥ पृथ्वी पर कहीं ११तिल्ली और कलेजे पडे हुए दीखते हैं सो मानों १२ छत्रोटे(वर्षा ऋतु में उगनेवाली ढालें, छत्राक) दीखते हैं. कहीं पर छत्रों का नाश होकर मस्तक लुढकते हैं सो मानों लुढकाये हुए नारियल १३ नहीं ठहरते हैं ॥ २७ ॥ कहीं पर शिखाएं (चोटियां) कट कर ऐसी उलझी हैं मानों १४ काले रेशम की बनी हुई जाली है. कहीं पर टोप से भिड़ कर तलवार ऐसी बजती है जैसे विष्णु के मंदिर में झालर बजे ॥२८॥१५छुरी चलकर घुस कर ऐसी शोभती है मानों पिचकारी से पानी छूटता है, कहीं पर लोहू में तैरती हुई १६ ढालें फिरती हैं मानों जल में कछुए आदि क्रीड़ा करते हैं ॥ २९ ॥१७कटारी पार निकल कर ऐसी शोभा देती है मानों यमराज१८अपने मुख में दाढ़ दिखाता है कहीं

सरपूरन कहुँ गिरत सेराश्रय, उडत कि पिच्छ छोरि सिखि आश्र-
य ॥ ३० ॥
खग्ग कहुँक इड्डन खटकावैं, बढई तरु कि कुठार बजावैं ॥
दंसन अटकत तेग दुधारी, कट्टै बन जनु कूर कपारी ॥ ३१ ॥
कहुँक देत सिरसौं सिर टक्कर, दुवर उद्दत जनु भिरत पृथूदर ॥
कहुँ गुटिका गन धसत कपालन, जनु सिरघा प्रबिसत मधुजा-
लन ॥ ३२ ॥
दमकत इलौ तनुत्र बिदारैं, मृगपंति बाल कला छबि मारैं ॥
तोमर धसत कुंजरन तिक्खे, सैलन बेध बेणु जनु सिक्खे ॥३३॥
जुट्टे इम नागोर जोधपुर, धोरी कुसल सेरैं अंचत धुर ॥
खोजन चपाउतहिं खिजायो, अरिदल मध्य सेर धसि आयो ।३४।
इक १ जबूर लग्गो याके उर, फारि कढ्यो सु दुसह रीढ़ंक १
फुर २ ॥
इहिं छंत मोह लहत दूदाउत, आयउ कढि उततैं चंपाउत ॥३५॥

तीरों से भरेहुए १भाथे ऐसे गिरते हैं मानों मयूर अपने आश्रय से १पूंछ छोड़ कर उड़ते हैं ॥ ३० ॥ कहीं हड्डियों पर तलवारें खटकती हैं सो मानों खाती वृक्ष पर कुठार बजाता है, २ कवचों में दुधारे खड्ग अटकते हैं सो मानों घर छाने के काष्ठों के बेचनेवाला मूर्ख बन काटता है ॥ ३१ ॥ कहीं पर मस्तक से मस्तक टक्कर मारते हैं सो मानों दो निरंकुश ४ भींढे भिड़ते हैं कहीं गोलियों के समूह कपालों म धसते हैं सो मानों ५ मधुमक्खियां ६ छत्ते में घुसती हैं ॥ ३२ ॥ कवच फाड़कर ७ तरवार चमकती है सो मानों द्वितीया का ८ चन्द्रमा शोभा देता है ९ हाथियों के शरीरों में तीखे भाले घुसते हैं सो मानों १० बांस के वृक्ष पर्वतों को फोड़ना सीखते हैं ॥ ३३ ॥ इस प्रकार नागोर और जोधपुरवाले लड़े जिनमें धुर को खैंचनेवाले धोरी कुशलसिंह और ११ सेरसिंह थे जिनमें शेरसिंह क्रोध करके चांपावत कुचामणसिंह को हेरने के लिये शत्रु की सेना में घुस आया ॥३४॥ जिसकी छाती में नहीं सहने योग्य एक जबूर का गोला लगा सो १२ पीठ और १३ हाड़ को फोड़कर निकलगया १४ इस घाव से दूदावत शेरसिंह मूर्छा को प्राप्त होगया उस समय उधर से निकलकर चांपावत कुशलसिंह आया ॥३५॥

दाउत १ पाउत २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

*सुज्जमल्ल तब सेर सहोदर, बुल्ल्यो †कुसलहु आत भ्रात बर ॥
सावधान हुव सेर यहै सुनि, पकरि खग्ग सम्मुह हंक्यो पुनि।३६।
दुहुँन२ धीरता मिलत दिखाई, नागफेन¹ मनुहारि² बनाई ॥
तदनु³ सेर बुल्ल्यो रन तंडत, पुच्छ कँचन⁴ उद्धत कर मंडत ॥३७॥
अब इत आवहु कुसल अखारैं, जहर जरैं न तुमहिं वह जारैं ॥
बीज दुसह अग्गैं तुम बाये, अब चक्खहु तिनकैं फल आये॥३८॥
झपटिसेरैं इम कहि असि झारिय, फारि टोप मरतक सव फारिय
छोहितैं कुसल सँगि इत छुट्टिय, फवत सेर छत्तिय लगि फुट्टिय३९
बेर दुहुँन २ तिहिं बेरैं बिहाये, पुंण्यलोक इच्छित तिन पाये ॥
सुभट मरे दुहुँओर पंचसत५००, घायल परे अट्ठसत८००घुम्मत४०
सेरकहिय अग्गैं मरुपति रन, प्रबिस्यो त्रिदिवैं निवाहि वह पन॥
कैलि¹² इम बखतसिंह जय किन्नौं, लगि हठ आनि जोधपुर लिन्नौं४१
बैठि तखत जय पैंटह¹³ बजाये, साज बहुरि रनकाज सजाये ॥
हुव यह रन नव नभ धृति १८०९ हायन¹⁴, पाप रॅम किय हारि प-
लायन¹⁶ ॥ ४२ ॥
जिहिं ढिग इक्क पुरोहित जग्गुव १, हठी द्वितीय २ खीमसर पति१
हुव ॥
मरहट्ठन सन नृपहिं मिलावन, अव किय दुहुँन२ कमाऊँ आवन४३

तब शेरसिंह के छोटे भाई * सूर्यमल्ल ने कहा कि हे श्रेष्ठ भाई † कुशल सिंह आता है यह सुनकर शेरसिंह सावधान हुआ और खड्ग लेकर सन्मुख चला ॥ ३६ ॥ १ अमल की २ जिसपीछे ३ युद्ध में गर्जना करता हुआ ४ मूछों के केसों को हाथ से ऊंचे करता हुआ शेरसिंह बोला ॥३७॥३८॥ यह कहकर ५ शेरसिंह ने दौड़कर तरवार चलाई ६ क्रोधित कुशलसिंह की ७बरछी ॥३९॥ ६ उसी समय ८ दोनों ने शरीर छोड़े १० स्वर्ग ॥ ४० ॥ ११ स्वर्ग में गया १२ युद्ध में ॥ ४१ ॥ १३ विजय के ढोल १४ संवत में २१ पापी रामसिंह १६ भागा ॥ ४२ ॥ १७ पर्वत का नाम है ॥ ४३ ॥

जया१ मल्लार२ गये सम्मुह जब, आन्यौं*सिविर रामसिंहहिं अब
सध्याकों तँहँ कुमति सुहाई, लूठ †मरुपसन किय मित्राई ॥४४॥
पग्घ पलटि कहि तव सुस पैहैं, ‡द्रुत जब तुमहि जोधपुर दैहैं ॥
इत जगतेस रानके[1] आमय, लह्यो अतीव असाध्य जैरावय[2] ॥४५॥
कुमर प्रताप हुतो कारा[3] तब, इहिं पहँके[4] भट च्यारि ४ मिले अब
नाथ१ रान जगतेस सहोदैर[5], झल्ला राघवदेव२ पापपर[6] ॥ ४६ ॥
भारतसिंह३ रान दँल स्वामी[7], देवगढप जसवत४ हरामी ॥
छुल्लिय चउ४ अब मन्त्र विचारहिं, किय अप्पन तव कैद कुमारहिं
कारामैंहि[8] प्रतापकेहु सुत[9], राजसिंह अभिधान[10] कुमर हुव ॥
आयो रानकोहि[11] अवसान न, पै सराय अपनैंहु प्रानन ॥ ४८ ॥
सो नृप होय बैर अनुसरिहै, कुलजुत कैदन[12] अप्पनों करिहै ॥
वाँहि कुमर[13] पातै निज अप्पहु, थिर यह नाँथ[14] भूप करि थप्पहु॥४९॥
बैर विचारि यहै च्यारिन४ बखि, साहिपुरप५ पचम५ लिय सम्मखि
सोवि रान जगतेस यहै सुनि, पठयो हुकम विचारि नीति पुनि५०
जो तुम स्वामिधम्म हित जानत, पंच५हि भट मम हुकम प्रमानत
जोजुत तो चढि चढि घर जावहु[15], रहि[16] नहि ऐत्य विरोध रचावहु५१
कढुन[17] तिन पठयो दँल यह कहि, चढि चढि घरन गये तब पच५हि
तदनु[18] वसु ख धृति १८०८ शाक विक्रम कृत, मास जेठ जगतेस
रान मृत ॥ ५२ ॥

---

* डेरे में † मारवाड़ के पाने से ॥ ४४ ॥ ‡ शीघ्र १ रोग २ वृद्धावस्था से ॥ ४५ ॥ ३ कैद में ४ पहिले कुमर प्रतापसिंह को पकड़ा था वे ५ राणा जगत्सिंह का सगा भाई नाथसिंह ६ परम पापी ॥ ४६ ॥ ७ सेनापति ॥ ४७ ॥ ८ कैद में ही ९ सुत १० नाम ११ केवल राणा का ही मन्त्र नहीं आया है परन्तु अपने प्राणों का भी सन्देह है ॥ ४८ ॥ १२ नाश १३ कुमर प्रतापसिंह को १४ नाथसिंह को ॥ ४९ ॥ ५० ॥ १५ जल्दी से १६ यहां ॥ ५१ ॥ इनको निकालने को १७ सेना भेजी १८ जिसपीछे ॥ ५२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करेमहाचम्पूकेउत्तरायणेसप्तम७राशावुम्मेदसिंह चरित्रे दिल्लीशसचिवप्रेषितससैन्यसेनानिकायस्थनवलरायफुरक्काबाद पतिवङ्गसयवनमुहम्मदखानबीबीयुद्धकरणकृतसमकायस्थतद्विभव लुण्टनदत्तमासद्वया न्तरबीबीनवलरायमारणहारितरणविभवपवने न्द्रसचिवमनसूरअलीपलायनदत्तवाहिनीव्ययवसुदिल्लीशहुलकर१सं- ध्या२ऽऽह्वानप्रद्रुतबीबीकमाऊपर्वतप्रविशनदक्षिणसैन्यतद्वेष्टनमरुपति रामसिंहस्वभटचम्पाउत्तकुशलसिंहनिष्कासनतन्नागोरेशबखतसिंह सम्मिलनभ्रातृज१पितृव्यक२महारणभवनसोढस्वामितिरस्कृतिसेर सिंह१कुकृत्यकुपितकुशलसिंह२मरणविजितबखतसिंहयोधपुरप्रभूभ वनपलायितरामसिंहकमाऊकुण्डनजया१मल्लार२प्रार्थनकृतमैत्रीभा वसंध्यामरुपसहायाऽङ्गीकरणनिष्कासितदुष्टभटमहाराणराणाजग त्सिंहमरणं चत्वारिंशो मयूखः ॥ ४० ॥ आदितः॥३२१॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, दिल्ली के वजीर के भेजे हुए सेना सहित सेनापति कायथ नवलराय का फुरक्काबाद की मालिक बंगस यवन मुहम्मदखान बीबी से युद्ध करना और मिलाप करके कायस्थ का उसका वैभव लूटना १ दो मासवीचमें देकर बीबी का नवलराय को मारना, युद्ध का वैभव छोडकर बादशाह के वजीर मनसूरअली का भागना २ सेना के खरच का धन देकर बादशाह का हुलकर और सिन्धिया को बुलाना और बीबी का भागकर कमाऊँ पर्वत में जाना ३ दक्षिण की सेना का उसको घेरना ४ मारवाड़ के पति रामसिंह के उमराव चाँपावत कुशलसिंह को निकालना और उसका नागोर के पति बखतसिंह से मिलना ५ भतीजे और काका के बडा युद्ध होना और स्वामी के तिरस्कार को क्षमा करनेवाले शेरसिंह और कुकृत्य से कोपेहुए कुशलसिंह का मरना ६ विजय किये हुए बखतसिंह का जोधपुर का पति होना और भागे हुए रामसिंह का कमाऊँ पर्वत को घेरनेवाले जया और मल्लार से प्रार्थना करना ७ सिन्धिया का मित्रता करके मारवाड़ के पति की सहाय स्वीकार करना ८ दुष्ट उमरावों को निकालनेवाले राणा जगत्सिंह का मरने का चालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४० ॥ और आदि से तीन सौ इकीस ३२१ मयूख हुए॥

॥ पादाकुलकम् ॥

यह सुनि बुंदिय सोक उपज्जिय, जामें च्यारि४नउबत्ति न बज्जिय॥
इत भट सलूमरिप चुंडाउत, राना करन कुमारहिं राउत ॥ १ ॥
कारा जाय प्रतापहिं कढ्ढिय, बहु भय सुनत ग्राहकन बढ्ढिय ॥
सो अब रान उदेपुर स्वामी, नेय जुत भयो छत्रधरि नामी ॥ २ ॥
जेर कियो परताप जनकं जब, ताको खान पान सद्धन तब ॥
अमरचन्द पुरबिया इक९ द्विज, निकट वहै रक्ख्यो सेवक निज॥३॥
सेवा जिहिं तनमन धन सद्धी, अंतर किंन्न घरी नहिं अद्धी ॥
अब नृप होय प्रताप बिप्र वह, सचिव मुख्य किय अतुल प्रीति सह४
सिविका१ गज२ ताजीम३ समप्पिय, थिर सु बिप्र ठाकुरकहि थप्पिय
मन्नत बंदि निलय सेवन मति, अमरचन्द बसि रान भयो अति ॥५॥
बलि वे ग्राहकं च्यारि४ बुलाये, लेस खिज्यो नहिं हृदय लगाये ॥
इकदिन अंभ्र अंभ्र घुमडे अति, कहिय प्रताप तबहिं काकौं प्रति६
सुनहु जनकं सासन अनुसारी, मचक जॉनु जिहिं दिन तुम मारी॥
सो रीढक सधिग अब सल्लत, घन जब होत तबहिं दुख घल्लत॥७॥
यह नृप सहज सरलपन अक्खी, रिस गिनि नाथ हृदय धरि रक्खी
आतुर सठ नाहक अकुलायो, स्वीयं नगर बग्घोर सिधायो ॥ ८ ॥
सक नव नभ धृति १८०९ समय होत सठ, हिय भय धारि बिरचि
अनुचित हठ ॥
पुत्र भीम जुत नाथ पॅलायो, अतिजव नगर सावडी आयो॥९॥

१ पहर २ कुमर प्रतापसिंह को राणा करने के लिये ॥ १ ॥ ३ कैद में जाकर ४ कुमर को पकडनेवालों को ५ नीति युक्त ॥२॥ ६ प्रतापसिंह के पिता को कैद किया तब ७ ब्राह्मण ॥ ३ ॥ ४ ॥ ८कैद घर (जेलखाने) में सेवा की जिसको मानकर ॥ ५ ॥ ९ पकडनेवालों को १०आकाश में ११मेघ १२ नाथसिंह ॥६॥ १३हे पिता की आज्ञा के साथ चलनेवाले १४घुटने की १५ पीठकी सन्धि में गई हुई ॥७॥ १६सीधेपन से कही १७शीघ्र १८अपने नगर बागोर गया ॥ ८ ॥ १९ भागा ॥ ९ ॥

तँहँ टिक्यो न करि पुनि त्वरिताई[1], देवलिया पहुँच्यो गरदाई[2] ॥
उम्मट घेर तदनंतर आयो, व्याहन सगपन तत्थ विधायो[3] ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

उम्मटकी कन्या उभय, परनि पिता१ अरु पुत्र२ ॥
बुंदी पुर आये बहुरि, तक्कत नृपहिँ तनुत्र[4] ॥ ११ ॥

॥ षट्पात् ॥

संक नव नभ धृति १८०९ समय श्राममें आवन यँहँ आये[5] ॥
देवपुरा लग सम्मुख जाय बुंदीस बधाये ॥
चलन दम्म[6] सत चारि ४०० दये संभर नृप दिनप्रति[7] ॥
बारह१२ बासर रक्खि बिदा किय बक्खसि बाजि कति ॥
तब नाथ१ भीम२ जनक रु तनय आये दुव२ बुंदार इत ॥
माधव१ नरेस बखतेस२ जँहँ हे सम्मलि कछु काज हित ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

बखतसिंह१ मरुईस अरु, माधव१ जैपुर ईस ॥
मरहट्ठन मेटन अमल, उभय२ मिले अवनीस ॥ १३ ॥
मालपुरा सन इक१ मिजल, भूपोलाव तड़ाग[8] ॥
पँहु[9] कछवाह१ कबंधपति२, जत्थ मिले जय लाग ॥ १४ ॥

॥ षट्पात् ॥

सूनु सहित[10] सीसोद नाथ तिन प्रति प्रयान किय ॥
सुनि माधव१ बखतेस२ जाय सम्मुह बधाय लिय ॥
तदनु मरुप बखतेस छली तत्थँहि[11] बपु छोरयो ॥
न्याय रहित सठ नाथ मिलत माधवँ[12] मन मोरयो ॥

---

१ शीघ्रता २ कुमर प्रतापसिंह को जहर देने की इच्छावाला ३ नरसिंहगढ ॥ १० ॥ ४ उम्मेदसिंह को रक्षक देखकर ॥ ११ ॥ ५ श्रावण मास में ६ बुन्दी की चलन के ७ दिन ॥ १२ ॥ १३ ॥ ८ तलाव ९ प्रभु ॥ १४ ॥ १० पुत्र सहित ११ मारवाड़ के राजा छली बख्तसिंह ने वहीं पर शरीर छोड़ा नाथसिंह ने १२ माधवसिंह के मनको मोड़ दिया

कछवाह कहिय सीसोद मन करहिं तुमहिं मेवारपति ॥
परताप नाँहिं नृपता उचित गहहु ताहि तुम पुब्बगति॥१५॥
अग्ग रान जगतेस अति, कूरम पाधव काज ॥
कोटि१०००००००दम्म निज खरच किय, रोकन जैपुर राज१६
ऊरुजे हरगोविंदके, कहैं सु उपकृत गल्लि ॥
कूरम नृप कृतघन भयो, लैन उदैपुर खुल्लि ॥ १७ ॥
बरज्यो जदपि झलाय पति, कुसलसिंह कछवाह ॥
मन्नी तदपि न मदमति, अघ हिय धारि उथाह ॥ १८ ॥
नाथ भीर कूरम नृपहिं, सुनि भारत जसवं२ ॥
राघवदेव३ उमेद४ ए, मिले आनि दृढ मन ॥ १९ ॥
कनक५ छत्र धरि नाथ सिर, चामर विसदा दु[illegible] ॥
मिलि इतनें गनाँ मुलक, लूटन लगे आप [illegible]० ॥
बखतसिंहके मरत इत, विजयसिंह अवनीसँ ॥
तखतजोधपुरको लह्यो, सुभग छत्र धरि सीस ॥ [illegible] ॥
याही बरस उमेद नृप, रवीय सहोदर दीप ॥
परिनायो सावर नगर, मडि उछाह महीप ॥ २२ ॥
सगताउत सगतेसकी, कन्या अनुप कुमारि ॥
दुलहनि दीप बिबाहि तब, आयो निलय पधारि ॥ २३
इत बुदीस उमेदकी, संतत सुहागिनि नारि ॥
ऊदाउति रानिय लयो, दोईदलच्छन धारि ॥ २४ ॥
ताके अष्टम८ मासको, उच्छव मंडि अनत ॥
समरसिंह नृप कुल सकल, किय इक्कत मतिमत ॥२५॥
तदनंतर नव ख धृति१८०९ सक, माघ त्रयोदसि१३ सेतें ॥

१ जैसे पहिले पकड़ा था तैसे फिर पकड़ लो ॥ १५ ॥ १६ ॥ २ वैश्य ३उपकार भूलकर ॥ १७ ॥ १८ ॥ ४ भारतसिंह और जसवतसिंह ॥ १९ ॥ ५ सुवर्ण का ६ स्वेत चमर ॥ २० ॥ ७ भूपति ॥ २१ ॥ ८ दीपसिंह को ॥ २२ ॥ ९ अपने घर ॥ २३ ॥ १० निरन्तर ११ गर्भ ॥ २४ ॥ २५ ॥ १२शुक्ल पक्ष की

अजितसिंह नृपकै कुमर [illegible], ध्रुव सुभ अंक उपेत ॥ २६ ॥
जातकरम तब तास [illegible] रूप, निगम उक्त रचि न्याय ॥
नांदीमुख मुख श्राद्ध [illegible] कारि, लक्खन दिन्न लुटाय ॥ २७ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे म[illegible]हाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे-दसिंहचरित्रे कुमारप्र[illegible]तापसिंहराणापट्टप्रापणनिजसेवकविप्राऽमरच न्द्रसचिवीकरणस्त्र[illegible]ग्राहकसुभटचतुष्क ४ समाऽऽश्वासनराणाक र्तृकमृत्युभ्रान्तपल[illegible]ायितससुतपितृव्यकनाथसिंहबुन्दयाऽऽगमनबुन्दी शसत्कृतनाथसिं[illegible]जयपुरजनपदरथकूर्म्मराजमाधवसिंह २ कबन्ध-राजबख्तसिंह[illegible]म्मिलनकृतकुकृत्यमरुपाऽजितसिंहिमरणजयसिं [illegible]कृतघ्नीभव[illegible]न[illegible]सिंहसहायार्थोदयपुरदापनाऽभ्युपगमनश्रुतेतद्भार तसिंहाऽऽदि[illegible]चतुष्टय[illegible] नाथसिंहसहायीभवनच्छत्रचामराऽऽदितदर्पण राणाराष्ट्र[illegible]मेदपाटलुण्टनबाखतसिंहिविजयसिंहयोधपुरगद्दिकोपविश नबुन्दी[illegible]न्द्राऽनुजदीपसिंहसावरपुरेशशीशोदिशक्तिसिंहकन्योद्वहनरावराज

[illegible] उम्मेदसिंह के ॥ २६ ॥ २ आदि ॥ २७ ॥

१ राज[illegible] वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, कुमर प्रतापसिंह का राणा के पाट को पाना और अपने सेवक ब्राह्मण [illegible]मरचन्द को सचिव करना १ अपने पकड़नेवाले चारों उमरावों को विश्वा सना और राणा से मृत्यु का सन्देह करनेवाले काका नाथसिंह का पुत्र सहित भागकर बुन्दी आना २ बुन्दी के पति से सत्कार किये हुए नाथसिंह [illegible] जयपुर के देश में स्थित कछवाहे राजा माधवसिंह और राठोड़ [illegible] बखतसिंह से मिलना ३ पाप करनेवाले मारवाड़ के पति अजीतसिंह के पुत्र (बखतसिंह) का मरना ४ जयसिंह के पुत्र (माधवसिंह) का कृतघ्नी होकर नाथसिंह की सहाय के अर्थ उदयपुर देने का स्वीकार सुनकर भारत सिंह आदि चारों का नाथसिंह की सहाय होना और उसको छत्र चमर आदि देकर राणा के राज्य मेवाड़ को लूटना ५ बखतसिंह के पुत्र विजयसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बैठना और बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह का सावरपुर के पति शीशोदिया शक्तिसिंह की पुत्री से विवाह करना६ रावराजा की राणी कदावति का गर्भ धारण करना और उनके आठ मास (आगरणी) का महोत्सव किये पीछे उसके राज कुमार अजीतसिंह के जन्म का इकताली

राइयूदाउत्तिदोहदलत्तणाधरणातत्सीमन्तमहोत्सवाऽनुष्ठानसमयान्त तद्राजकुमाराऽजितसिंहोद्गमनमेकचत्वारिंशो ४१ मयूख ॥ ४१ ॥ आदित ॥३२२॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तदनंतर[1] सक ख ससि धृति १८१०, बिसद चतुर्दसि राधं[2] ॥
सोदर दीप सिकार गय, बिरचि भ्रात हित बांध[3] ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

मृगया[4] मिस प्रच्छन्न प्रात कढि दीप[5] सहोदर॥
कोटा गय चल बुद्ध अप्प१ इक१ हय ... ८ अनुचर ॥
कोटापति सुनि सचिव झल्ल मदनेस[6] पठायो ॥
लैबेकों नटि दीप नगर तबतो नहिं आयो ॥
कायस्थ अखैराम सु बहुरि आप याहि पुर लैगयउ॥
पुनि जाहि कुमर पदवी महल दुजन सल्ल रक्खत भयउ॥२॥
इत यह सुनि बुंदीस लैन निज सचिव पठाये ॥
तबहु दीप नटि तिनहिं तरजिं[7] पच्छे पहुँचाये ॥
गागरनीपुर अभयसिंह रठोर सुता[8] सुनि ॥
परनि ताहि द्रुत जाय दीप आयउ कोटा पुनि ॥
बुंदीस हिंतु[9] नाहक बिमन कछु दिन तत्थ अतीत करि ॥
गो पुनि संवाम पुर इंद्रगढ देव कथितैं दृढ चित्त धरि ॥३॥

॥ दोहा ॥

अभयसिंह रठोरको, देवसिंह हो भौंम ॥

सर्वा मयूख समाप्त हुआ ॥४१॥ और आदि से तीन सौ बाईस३२२मयूख हुए॥
१ जिस पीछे २ वैशाख सुदि ३ भाई से विरोध करके ॥ १ ॥ ४ शिकार के मिस से ५ दीपसिंह ६ झाला मदनसिंह को भेजा ॥ २ ॥ ७ धमकाकर ८ पुत्री ९ से १०उदास११पिताकर१२स्त्री सहित१३देवसिंह का कहना ॥३॥१४पहिनोई

पतनीके परतंत्र तिहिं, किन्नौं अनुचित काम ॥ ४ ॥
पत्तन कोटा दीप प्रति, पठये यागति पत्र ॥
तुमकों बुंदिय हौंस जो, आवहु तो द्रुत अत्र ॥ ५ ॥
तुमरे उप्पर तनकहू, अग्रज अनुकंपा न ॥
मंत्र करन हमसौं मिलहु, थप्पहिं ज्यों नृप थान ॥ ६ ॥
ए कग्गर सुनि इंद्रगढ, पहुँच्यो दीप प्रमत्त ॥
अग्रज हिंतु बिरोध इम, तक्क्यो बालिसँ तंत्त ॥ ७ ॥
करि अनिष्ट बुंदीसको, देवसिंह धरि द्वेस ॥
पठयो जैपुर दीपकों, बिग्रह रचन बिसेस ॥ ८ ॥
सुनि माधव जैपुर सुपहु, आवत हद्द उमाहि ॥
पठयो सम्मुह दीपके, सचिव मुख्य हरसाहि ॥ ९ ॥
कूरम गद्दिय कोन पर, बैठारयो सविनोद ॥
पटा हजार पचास५०००० को, दयो नगर उकड़ोद ॥ १० ॥
आवत अंतरद्वारँतक, चामर तास चलाय ॥
इम बुंदीपतिको अनुज, रक्ख्यो जैपुर राय ॥ ११ ॥

॥ षट्पात् ॥

तदनंतर नभ चंद्र अष्ठ अचला १८१० मित हायन ॥
माधवँ दिल्लिय ढंग पत्त बनि प्रीति परायन ॥
सासन अहमदसाह दयो करि सोहि दिखायो ॥
कछु बासरं तँहँ काढि सिक्ख लहि आलय आयो ॥
रघुनाथराय श्रीमंत सुत नन्ह अनुज जँवनेस जुत ॥
मग माँहिं मिलत सम्मति रचिय हैरगोविंदहिं गहन द्रुत॥१२

---

१ स्त्री पराधीन ॥ ४ ॥ २ बुन्दी की चाहना है तो ॥ ५ ॥ ३ कृपा नहीं है ॥६॥ ४ मूर्ख ने ५ तहां ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ६ भीतर की ड्योढी तक ॥११॥ ७ माधवसिंह ८ प्राप्त हुआ ९ दिन १० बादशाह सहित ११ जयपुर के सचिव हरगोबिन्द को शीघ्र पकड़ने के लिये ॥ १२ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

दिल्लिय गमन कुम्भ जब किन्नों, बुदिपपुर कग्गर¹ तब दिन्नों ॥
कोऊ भट मम संग पठावहु, हितमें नृप अंतर जिन लावहु ॥१३॥
तब भगवतसिंह माधानी, पठयो भूपति प्रीति प्रमानी ॥
तहँ दिल्लिय माधव घर आयो, रक्ख्यो सचिव² लोभ कछु छायो॥१४

॥ दोहा ॥

सिद्ध भयो नहिं लोभ सो, सिक्खदई खिजि साह ॥
हरगोविंद अमात्यहु, लग्गो जैपुर राह ॥ १५ ॥
रक्षक ताकी संगहो, माधानी भगवंत ॥
नन्ह अनुज मगमैं मिलत, अमरख³ किन्न अनंत ॥ १६ ॥
पकरन हरगोविंदकों, विंटयो कटक⁴ बियारि ॥
भूप सुनहु भगवंत भट, तहँ झारी तरवारि ॥ १७ ॥
मारि बहुत मरहट्ठ भट, जिस्यो दुब्बर जंग ॥
कुम्भ सचिव गहन न दयो, आन्यों जैपुर दंग ॥ १८ ॥
इत सध्या¹ हुलकर¹ उभय², अचल⁵ कुमाऊ छोरि ॥
जट्टनके कुभेरगढ, लग्गे लरन बहोरि ॥ १९ ॥
खडू हुलकर पुत्रके, गोली लग्गिय मत्थ⁶ ॥
ततकालहि अकुलाय निंहिं, तज्यो कलेवर⁷ तत्थ ॥ २० ॥
लै तब ताके वैरमें, कोटि इक्क दर्म⁸ दम्म ॥
दिल्लीपर दोऊ² चढे, करन नन्ह जय कम्म⁹ ॥ २१ ॥
जवनईस¹¹ सत्वर¹² जबहि, सुनि यह अहमदसाह ॥
मरहट्ठन सम्मुह चल्यो, सजि निज कटक सिपाह ॥ २२ ॥

---

१ पत्र ॥ १३ ॥ २ भागोसिंहोत हाडा ने हरगोविन्द को वहीं रक्खा ॥१४॥ ॥ १५ ॥ ४ क्रोध ॥ १६ ॥ ५ सेना का विस्तार ॥ १७ ॥ १८ ॥ ६ पर्वत ॥ १९ ॥ ७ मस्तक में ८ शरीर ॥ २० ॥ ९ दश के रुपये १० नन्ह के विजय की कामना से ॥ २१ ॥ ११ पादशाह १२ शीघ्र ॥ ५२ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक नभ ससि धृति१८१० समय प्रचुर[1] लै दल दिल्लियपति॥
सन्ध्या हुलकर समुख अनखि हंक्यो सत्वर गति ॥
मिलत सेन दुवर मचिग कलह दारुन करवालन[2] ॥
लुत्थिन लुत्थि बिलग्गि ढंकि छोनिय गज ढालन[3] ॥
चलि चउँ४प्रकार आयुध चपल बज्र अचल[5] जिम रीठ बजि॥
दक्खिन अनीक जित्यो दुसह भीरु गयउ जवनेस भजि[6]२३

॥ दोहा ॥

अहमदसाह पलाय इम, पच्छो दिल्लिय पत्त ॥
खानकलीज हराम खल, पकर्‌यो स्वाँमि[7] प्रमत्त ॥ २४ ॥
नयन फोरि जवनेसके, कारा[8] पटक्यो क्रूर ॥
आलमगीर स नाम इक१, साह कियो वनि सूर ॥ २५ ॥
अग्गहि खानकलीज इहिं, लिन्नौं नादर बुल्लि ॥
अंध बंध अहमद कियो, खल बिरोध अब खुल्लि ॥ २६ ॥
मरहट्ठे दब्बत मुलक, दिल्लिय पत्ते दोरि ॥
कछु दम दम्म कलीज दै, किन्नों साम वहोरि ॥ २७ ॥
अंबर ससि धृति१८१०अब्द इम, कितव[9] कलीज कुचाल ॥
गद्दी आलमगीरकों, बैठार्‌यो मति बाँल[10] ॥ २८ ॥
कछु सिवाय धन भेट करि, निलज कलीज नवाब ॥
मरहट्ठे दुवर मुक्कले, जेर करन पंजाब ॥ २९ ॥
मारक[11] नादरसाहको, अहमदखान पठान ॥

---

१ बहुत सेना लेकर २ तरवारों से ३ हाथियों के निशानों से अथवा हाथियों के गिरने से भूमि ढकगई ४ मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त, और यन्त्रमुक्त, ये चारों प्रकार के चंचल आयुध चल कर ५ पर्वत पर ॥ २३ ॥ ६ भगकर ७ अपने स्वामी (बादशाह) को ॥ २४ ॥ ८ कैद में ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ ९ छली १० बुद्धि में बालक ॥ २८ ॥ २९ ॥ ११ नादरशाह को मारनेवाला

उतर्तैं वह उत्तारि अटक, आयो कटक अमान ॥ ३० ॥
जिहिं जनपद पंजाबमैं, लिन्नों अमल जमाय ॥
हाकिम निज धरि बाहुरयो, इतको अमल उठाय ॥ ३१ ॥
तिनसों मरहट्ठन तबहि, रची जाय द्रुत रारि ॥
उत किन्नों दिल्लिय अमल, थानौं अपर बिडारि ॥ ३२ ॥
कतिक नगर पजाबके, लुट्टि सहित लाहोर ॥
मरहट्ठे जय मत्त मन, आये जैपुर ओर ॥ ३३ ॥
मिलन काज मल्लारसों, नप पट्ट हड्ड नरेस ॥
बुंदीसन करि कुछ बलि, पत्तो जैपुर देस॥ ३४॥
माधव१ हड्ड२मलार३ अरु, सध्पा४विहिंत बिवेक ॥
मिलि च्यारिन४ सम्मलि रहत, कहे दिवस कितेक ॥३५॥
हरजन पुत्त दलेल तँहँ, हो जैपुरपति तत्थ ॥
लाय हृदय नृप१ ताहि लौं, आयो निंलय समत्थ ॥ ३६ ॥
नृप माधव२ गो जयनगर, हुलकर३ दक्खिन देस ॥
रट्ठोरन उप्पर चल्यो, सप्पा४ कुपित बिसेस ॥ ३७ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ [illegible]
चरित्रे बुन्दीन्द्राऽनुजदीपसिंहनिष्कसनतत्कोटागमनगागरणिशरट्ठे
डाऽभयं [illegible]
थासत्कृतहड्डेन्द्राऽनुजदिल्लीगतकूर्म्मराजमाधवसिंहप्रत्यागमनाऽन

॥ ३० ॥ १ देश मे ॥ ३१ ॥ २ अन्य थाने निकाल कर ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४
३उचित ॥ ३५ ॥ ४ बुन्दी ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह ५
में, बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह का निकल कर कोटे जाना और
गागर्णी के पति राठोड़ अभयसिंह की पुत्री से विवाह करना १ इन्द्रगढ के
देवसिंह का फोड़े हुए चित्त से दीपसिंह को जयपुर भेजना और हाडों के
के छोटे भाई का सत्कार करके दिल्ली गये हुए कछवाहे राजा
का पीछा आना २ इस के पीछे आनेवाले सचिव हरगोविन्द को पकड़ने

न्तराऽऽगच्छत्सचिवहरगोबिन्दनिग्रहणानिमित्तश्रीमन्तनन्हानुजरघुनाथराययुद्धकरणाजितयुद्धमाधाणिहड्डभगवन्तसिंहहरगोविन्दजयपुरानयनत्यक्तकमाऊगिरिहुल्लकर १ संध्या २ जट्टदुर्गकुम्भेरवेष्टनतत्समरमल्लारपुत्रखण्डूमरणानीतकोटिद्रम्म १०००००० तद्वैरोद्वर्तृजया १ मल्लार २ दिल्लीशाऽहमदशाहविजयकलीजखानस्फोटितनयनयवनेशकाराक्षेपणातद्गद्दिकाऽऽलमगीरोपवेशनदत्तद्रमद्रव्यदाक्षिणासैन्यपञ्जावप्रेषणापरास्तीकृतनादरघ्नदिल्लीशाऽधीनीकृतपञ्जाबहुलकर १ संध्या २ जयपुरजनपदाऽऽगमनहड्डेन्द्र १ कूर्म्मेन्द्र २ तत्सम्मिलननीतिहारजनिदलेलसिंहरावराड्बुन्द्याऽऽगमनमाधवसिंहजयपुरप्रविशनमल्लार १ दक्षिणागमनस्वमित्ररामसिंहसहायीभूतसंध्याजया २ तज्जोधपुरदापनार्थसज्जीभवनं द्विचत्वारिंशो ४२ मयूखः ॥ ४२ ॥ आदितः ॥३२३॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ षट्पात् ॥

फारण श्रीमंत नन्ह के छोटे भाई रघुनाथराय का युद्ध करना और युद्ध जीतनेवाले माधोसिंहोत हाडा भगवंतसिंह का हरगोविंद को जयपुर लाना ३ कमाऊँ पर्वत को छोड़कर हुलकर और सिंन्धिया का जाट के कुंभेर गढ को घेरना और उस युद्ध में मल्लार के पुत्र खंडू का मरना ४ उस के वैर में क्रोड़ रुपये लेकर जया और मल्लार का दिल्ली के पति अहमदशाह को विजय करना ५ कलीजखां का बादशाह के नेत्र फोड़कर कैद करना और उसकी गद्दी पर आलमशाह को बिठाना ६ दंड का धन देकर दक्षिण की सेना का पंजाब में भेजना और नादरशाहके मारनेवाले को हराकर पंजाब को दिल्लीश के अधीन करके हुलकर और सिन्धिया का जयपुर के देश में आना ७हाडों के इन्द्र और कछवाहों के इन्द्र का उनसे मिलना और हरजन के पुत्र दलेल सिंह को लेकर रावराजा का बुन्दी आना और माधवसिंह का जयपुर प्रवेश करना ८ मल्लार का दक्षिण में जाना और अपने मित्र रामसिंह का सहायक होकर जया नामक सिन्धिया का उसको जोधपुर देने के अर्थ सज्जित होने का बयालीसवां मयूख समाप्त हुआ ।४२। और आदि से तीन सौ तेईस मयूख हुए॥

रूपनगर नृप राजसिंह जब देह त्याग किय ॥
सूनु ज्येष्ठ सामतसिंह तब तास तखत लिय ॥
अनुज बहादुर बहुरि भ्रात सामत निकारयो ॥
लिन्नी गद्दिय छिन्नि छत्र अप्पन सिर धारयो ॥
सिरदारसिंह निज सुत सहित नृप सामत बिपत्ति सहि ॥
लिय तबहि आय सध्या सरन रोम मरुप जिम दीन रहि॥१॥

॥ दोहा ॥

सक नभ ससि धृति १८१० समयही, उदयनैर इत एह ॥
रान प्रतापहु रोगवस, तजत भयो निज देह ॥ २ ॥
तब जो कारामांहिं हुव, राजसिंह सुत तास ॥
सो नृप भो दस१० बरस वय, पै नहि नीति प्रकास ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

रूपनगर नृप ससुत सग सामतसिंह १ अब ॥
त्योंही मरुपति रामसिंह१ दोउन२ इम लै तब ॥
सध्या सेनहिं सज्जि चल्यो इनके अरि मारन ॥
दोउन२ निज भुव देन विदित निज किति बिथारन ॥
सुनि एह बहादुरसिंह इत विजयसिंह सम्मिलि गयउ ॥
मेरता नगर हुव२ दल मिलत सक सिव धृति संगर भयउ॥४॥

॥ दोहा ॥

विजय बहादुर१ उभय२ उत, इत सामत१ रु राम ॥
संध्या३ दुहुँन२ सहाय कर, कलि मंड्यो जय काम॥ ५ ॥

॥ सारङ्ग ॥

संध्या जया औ बिजैसिंह रट्ठोर, यों मेरता खेत जुट्टे वडे जोर ॥

---

१ बडा पुत्र २छोटे भाई बहादुरसिंह ने ३ मारवाड के पति रामसिंह की भांति ॥ १ ॥ २॥ ४ कैद में ॥ ३ ॥ ५ पुत्र सहित ६ युद्ध हुआ ॥ ४ ॥ ७ युद्ध रचा ॥ ५ ॥ जया नामक सिंधिया और जोधपुर के राजा विजयसिंह राठोड ने

ारी मच्यो सेसके सीसपै भार, भो*कुंडली सो†फटा डारि फुंकार६
बाराहकी दड्ढमैं पीरव्है पूर, होनैं लग्यो‡कामठी पिट्ठिको चूर ॥
कंपे सबैं §दिक्करी ×चिक्करी पारि, धुज्जी ¶धरित्रीहु भै कल्पको धारि७
आदित्य आभा गई धूलितैं ढंकि, लोकेस अट्ठों परे सोकमैं संकि॥
धाँवाँ बढ्यो धूमकी धार अंधार, उलंघिबे सेतु लग्गे अकूपार।८।
यों सस्त्र संबाहिनी बाहिनी बेग, दोऊ मिली ओ चली उज्जली तेग ॥
आकर्न्न ऐंचे करैं चाप टंकार, सन्नद्ध संधा करैं जुट्टि जुज्झार ९
फट्टैं गिरैं तुंड मूर्द्धा अलीकाऽऽलि, कट्टैं कढैं नेत्र ओ उच्छटैं पालि
भ्रूपक्ष्म ओ कूर्प बुट्टैं मनों मेह, लोला करैं के कटी नासिका लेहैं
छोनी छबैं गल्ल ओ संखके तोम, सोहैं गिरे रत्तमैं मांसुरी लोम ॥
तुट्टैं उड़ैं तालु त्यों दड्ढ ओ दंस, कट्टैं कृकाटी कहों कंधरा अंस ११

मेड़ताके खेत में इस प्रकार बड़े बल से युद्ध किया और शेष के मस्तक पर बड़ा भार मचा. वह * सर्प † फणों को धारण करनेवाला. वाराह की दाढ में पूर्ण पीड़ा होकर ‡कमठ की पीठ का चूर्ण होने लगा और §दिशा के सब हाथी ×चीख मारकर धूजे, ¶ पृथ्वी भी १ प्रलय का भय करके धूजी ॥ ७ ॥ २ सूर्य की कांति धूलि से ढकगई, आठों लोकपाल भय भीत होकर शोक में पड़े धुएं की धारा से ३ दिशा दिशाओं में अंधेरा बढगया और ४ समुद्र भी सीमा लांघने लगा ॥ ८ ॥ इस प्रकार ५ शस्त्रों से अंगों को मर्दन करनेवाली दोनों सेना ६ घटा के वेग से चली जहां उजली तरवार चलने लगी ७ कान तक खैंचे हुए धनुष टंकार करते हैं और सज्जित हुए वीर युद्ध करके नहीं भगने की वा विजय की ८ प्रतिज्ञा करते हैं ॥ ९ ॥ मुख ९ मस्तक १० ललाटों की पंक्तियां फट कर गिरती हैं, नेत्र कट कर निकलते हैं और ११ कानों के अग्र भाग उछटते हैं १२ भौंहें और १३ कुहनियां मेघ के समान बरसती हैं, कितनी ही कटीहुई १४ जिव्हाएं नासिका को १५ चाटती हैं ॥ १० ॥ १६ गाल और १७ ग्रीवा के १८ समूह से भूमि ढकती है और रुधिर में गिरेहुए १९ मूछों के केश शोभा देते हैं इसी प्रकार तालुआ, दाढ और २० दांत तूटकर उड़ते हैं, कहीं पर २१ गले का मणिया (घांटी) गर्दन और २२ कंधे कटते हैं ॥ ११ ॥

केते चिरैं कंकटी खग्गकी धार, जुज्झार केते करैं पार कट्टार ॥
कढ्ढैं कहां वीर मातंगके दंत, फट्टैं कहां पेट औ उच्छटैं अंत ।१२।
नच्चैं कहाँ विप्फुरे घुम्मि के रुंड, जच्चैं कहाँ धुंज्जटी मालकों मुंड॥
डोलैं कहाँ डाकिनी रत्तसों मत्त, मींडैं कहां जुग्गिनी गत्तसों गत्त१३
जुट्टैं कहां जोध के मल्ल संग्राम, फुट्टैं कहाँ फीलमैं कुंत उद्दाम ॥
कुक्कैं कहां भीरुठ्ठे सेस कंकाल, हुक्कैं कहां हायकैं घाय बेहाल१४
दग्गैं कहां तोपकों तोप बदूक, लग्गैं कहाँ उच्छलैं फाल मंडूक॥
चक्खैं कहां गीद गिद्धी बडी चाह, अक्खैं कहाँ साकिनी वाह वाह ॥ १५ ॥
कुद्दैं कहां एकही पायतैं रुंड, मुद्दैं कहाँ नैन के भू गिरे मुंड ॥
वज्जैं कहां माधुरी नारदी बीन, पुज्जैं कहाँ कालिका लै बपा पीन ॥ १६ ॥
फेरैं कहां भूप हे" छत्रकी छाँह, गेरैं कहाँ अच्छरी कठमैं बाँह ॥

कितने ही १ कवच धारण करनेवाले खड्ग की धारा से चिरते हैं और कई योधा कटारों को पार करते हैं, कहीं पर वीर लोग२हाथियों के दंत निकालते हैं और कहीं पर पेट फटकर आतें उछलती हैं ॥ १२ ॥ कितने ही कोपित रुंड घूम कर नचते हैं और कहीं पर मुंडमाला बनाने को ३ शिव मस्तक मांगते हैं कहीं पर डाकिनिया रक्त से मस्त होकर फिरती हैं और कहीं पर योगिनियां ४ शरीर से शरीर को रगड़ती हैं ॥ १३ ॥ कितने ही वीर कहीं पर मल्लयुद्ध करते हैं, कहीं पर ५ हाथियों में ६ रुकावट रहित भाले फूटते हैं, कितने ही कायर ७ अस्थि पंजर बाकी रह कर झूकते हैं और कहीं पर हाय हाय कहके व्याकुल होकर कूकते हैं ॥ १४ ॥ कहीं नाश करने को बंदूकें और तोपें चलती हैं जिनके लगने से कहीं पर ८ मेंडक की छलांग के समान उछलते हैं कहीं पर गिद्धनिया पक्षी चाह से मांस खाती हैं और कहीं पर शाकिनिया प्रशंसा करती हैं ॥ १५ ॥ कहीं पर रुंड एक पैर से कूदते हैं, कितने ही मुंड ९ भूमि पर गिरतेहुए नेत्र बंद करते हैं, कहीं पर १० नारद की मधुर वीणा बजती है और कहीं पर पुष्ट मज्जा लेकर वीर लोग काली को पूजते हैं ॥१६॥ कहीं पर राजा छत्र की छाह में ११ घोड़े फेरते हैं, कहीं पर अप्सराएं वीरों के कंठ में भुज डालती हैं, कहीं पर वीर आगे बढ़कर तलवार मारते हैं और कहीं पर

मारैं कहाँ अग्गठ्हे खग्ग सामंत, हारैं कहाँ उच्चरैं हंत हाहंत ।१७।
झूमैं कहाँ कुंभिके कंठसौं जाय, घुम्मैं कहाँ वीर के तीरके घाय
रंगैं कहाँ जोध के रत्तमैं मुच्छ, मंगैं कहाँ प्रेतनी मेदके गुच्छ ।१८।
गैमत्थ चोफार फट्टैं कहाँ तत्त, मानो जगन्नाथके भत्तके पत्त ॥
वज्जैं कहाँ वृत्त सारँग बिरफार, उड्डैं कहाँ सोरके जोर अंगार ।१९।
खज्जूरिसे तुट्टि झंडे झुकैं लोल, जंगी बजे गोमुखा भेरिका ढोल॥
हुल्ले फिरैं निठ्ठिकैं भिन्न वेतंड, फुल्ले फिरैं फेरवी कोकके फरंड ॥२०॥
बानैत केते भरैं भूतको वत्थ, सोहैं घनैं मारते संकुल्ल सत्थ ॥
कट्टैं कहाँ उच्छटैं चौंर औ छत्र, पापी छकैं भैरवी लोहिताऽमत्र२१
यौं मेरता खेत मंड्यो महाजुद्ध, जुट्टे भले दक्खिनी कालसे क्रुद्ध ॥
संध्या जँया भ्रात यौं दत्त गो दोरि, नवखाँ विजैसिंहकी फोज झ-
झोरि ॥ २२ ॥
दै मार रट्ठौर डारे घनैं कुट्टि, औ तोपखाँना खजाना लये लुट्टि ॥
संध्या यहै जंग जित्ते बडे जोर, भज्ज्यो बिजैसिंह गो दुग्ग नागोर२३

हारेहुए १ खेद से हाहाकार करते हैं ॥ १७ ॥ कहीं पर वीर लोग २हाथियों के कंठ से जा लगते हैं, कहीं पर बाणों के घावों से घूमजाते हैं, कहीं पर ३ रुधिर से मूछें रंगते हैं और कहीं प्रेतनियां ४ चरबी के समूह मांगती हैं ॥ १८ ॥ उस युद्ध में कहीं पर ५ हाथियों के मस्तक चार फांक होकर फटते हैं सो मानो जगन्नाथ के भात के ६ पात्र फूटते हैं, कहीं पर गोलाकार हुए ७ धनुष का ८ शब्द होता है और कहीं पर बारूद के बल से अंगारे उड़ते हैं ॥ १९ ॥ कहीं पर खजूर के समान ९चपल झंडे टूटते हैं और कहीं युद्ध संबंधी १० गोमुखे (वाद्यविशेष) ११ नौबत और ढोल बजते हैं १२कटेहुए हाथी हलने से नीठ फिरते हैं और १३ गीदड़नियां (स्यालनियां) १४ वृक (भेड़िये) और १५गीदड़ फूलेहुए फिरते हैं ॥ २० ॥ कितने ही बानाबंध (युद्ध से नहीं भगने की प्रतिज्ञा का चिन्ह रखनेवाले) भूतों को बाथों में भिरते हैं और १६ भरेहुए (अवकाश रहित)बहुत साथ को मारतेहुए शोभा पाते हैं, कहीं पर चँवर और छत्र कटकर गिरते हैं और देवी १७लोहू से भराहुआ पात्र पीकर तृप्त होती है ॥ २१ ॥ १८ दत्ता नामक जया सिन्धिया का भाई मारता हुआ गया ॥ २२ ॥ १९ बिजयसिंह नागोर के गढ में भागगया ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

विजयसिंह मरुभूप भजि, गयो नगर नागोर ॥
जाय बहादुरहू दुरयो, रूपनगर रट्ठोर ॥ २४ ॥
प्रथम विजयसिंहहिं दमन, जया तवहि बरजोर ॥
तोपन जाल कराल रचि, गढ विंट्यो नागोर ॥ २५ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशावुम्मेदसिंह चरित्रे रूपनगराऽधिराजसामतसिंहस्वाऽनुजबहादुरसिंहशंविग्रहविस्त रणाकलुपिकुहककनिष्ठनिष्कासितससूनुवग्रजसन्ध्याजयाशरणाऽऽ सादनमेदपाटनराणाप्रतापसिंहमरणातत्सुतराजसिंहोदयपुरपट्टप्राप णासरामसिंह १ सामन्तसिंह २ जया ३ योधपुर १ रूपनगरो २ द्धर णाऽर्थप्रस्थानश्रुतेतत्सबहादुरसिंह १ मरुपविजयसिंह २ सन्मुखाऽऽ गमनमेरतानगरमहाऽऽयोधनविरचनलुण्टितवैरिविभवजयाजयाऽनु ष्ठानपलायितविजयनागोरदुर्गप्रविशनम्लानमुखबहादुरसिंहरूपनग राऽऽगमनप्रस्थितयाऽऽग्रापीडनजयानागोरकोट्टाऽऽवरणाभवनं त्रिच त्वारिंशो ४३ मयूख ॥ ४३ ॥ आदितः ॥३२४॥

॥ २४ ॥ १ दृष्ट देनेको ॥ २५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि मे, उम्मेदसिंह के चरित्र मे, रूपनगर के पति सामन्तसिंह और छोटे भाई बहादुरसिंह का विग्रह बढ़ना और पापी छली छोटेभाईके निकालेपुत्र सहित बड़े भाईका सिन्धिया जया की शरण लेना १ मेवाड़ के पति राणा प्रतापसिंह का मरना और उसके पुत्र राजसिंह का उदयपुर का पाट पाना २ रामसिंह और सामन्तसिंह सहित जया का जोधपुर और रूपनगर के निकालने के अर्थ गमन सुन कर बहादुर सिंह सहित मारवाड के पति विजयसिंह का सम्मुख आना ३ मेड़ता नगर म बड़ा युद्ध करना और शत्रु के वैभव को लूटकर जया के जय करने से भागकर विजयसिंह का नागोर के गढ में प्रवेश करना और मलीन हुए बहादुरसिंह का रूपनगर में आना ४ एड़ी दबाते हुए जया का गमन करके नागोर को घेरने का तियालीसवा मयूख समाप्त हुआ ॥ ४३ ॥ और आदि से तीन सौ चौईस ३२४ मयूख हुए॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—बुंदी नृप उम्मेद इत, रामानुज मत धारि
देस बिथारी रीति दृढ, संप्रदाय अनुसारि ॥ १ ॥
प्रतिमा इक१ श्रीरंगकी, दक्खिन हिंतु मँगाय ॥
सिव धृति१८११मित सक्क सुक्र³बदि, एकादसि११तिथि पाय२
मंदिर महलनमाँहिं रचि, सिल्प बिबिध मत सक्त ॥
बिरचि प्रतिष्ठा निगम बिधि, वह थप्पी अति भक्त ॥ ३
तबतैं यह श्रीरंगको, अतुल पट्ट उच्छाह ॥
जेठ असित एकादसी११, होत राम नरनाह ॥ ४ ॥
याहि बरस १८११ को उर्ज्ज[६] सित, छट्ठी६[७]बासर पाय ॥
भूप भुजि[८]याहू जन्यो, सुत गुमानजुत राय ॥ ५ ॥
नाम तास सिवसिंह दिय, जातक[१०] द्विजन बिचारि ॥
तदनंतर जो वृत्त हुव, सुनहु भूप हित धारि ॥ ६ ॥
सक्क जगती धृति१८१२माघ सित, सुक्र[११] बार स्मर[१२] दीह१३
ऊदाउति रानिय जन्यौ, कुमर बहादुरसीह ॥ ७ ॥
अजितसिंह१ अरु यह कुमर, सोदर दुव२ सु कुमार ॥
बाल छपाकर[१३] जिम बढत, दिन दिन अधिक उदार ॥ ८
बिजयसिंह मरुपाल इत, रुंध[१४] नगर नागोर ॥
संध्याको संकट सहत, कछु न जनावत जोर ॥ ९ ॥
बरस इक्क१ घेरा रह्यो, तोपन लग्गो ताप ॥
संध्या नहिं जावत सह्यो, दुपहर जेठ दिवाप[१५] ॥ १० ॥
व्याकुल तब बखतेस सुत, चूक बिचारिय चित्त ॥

॥ १ ॥ १ से २ प्रमाणवाले सम्वत् में ३ ज्येष्ठ बदि ॥ २ ॥ ४ नाना प्रकार समर्थ मतों से ॥ ३ ॥ ५ बदि ॥ ४ ॥ ६ कार्तिक सुदि ७ दिन ८ राजा की सवान स्त्री ९ गुमानराय ॥ ५ ॥ १० जन्म ॥ ६ ॥ ११ज्येष्ठ मास १२ कामदेव दिन (तेरस के दिन) को ॥ ७ ॥ १३ द्वितीया के चन्द्रमा के समान ॥ ८ ॥ नागोर में घिरकर ॥ ९ ॥ १५ सूर्य ॥ १० ॥

दुवर् *इंदे पडिहार हुत, बुल्लै दे बहु †वित्त॥ ११ ॥
अग्गैं सन इंदे रहत, मरु ‡जनपदके माँहिं ॥
चूक करनमें जे चतुर, न करैं मरतहु नाँहिं ॥१२॥
पावैं मरुपतिके पटा, विनु सेवा रहि गेह ॥
काम परैं जब चूकको, अप्पैं तब निज देह ॥ १३ ॥
करैं यहहि सेवा कठिन, जब तब सभव होय ॥
§इतर काल कहुँ धरन, खिजे देत असु खोय ॥ १४ ॥
अग्गै जिन सुमियानगढ, विजड जवन लिय मारि ॥
मरत टरे नहिं नैंक मन, विरच्यो चूक विचारि ॥ १५ ॥
अभयसिंह मरुईसको, पुनि निज आयस पाय ॥
पील्[१] लखपति[१] दक्खिनी, दुवर् दिय मारि गिराय ॥१६॥
कोलों हम या गति कहैं, इंदनको आचार ॥
जे रचि बाजी जीवकी, खेल्हे अजब खिल्हार ॥ १७ ॥
तिहिं कुलके दुवर् धीर तब, इंदे बुल्लिय अत्थं ॥
कह्यो हनहु संध्या कुटिल, तिन प्रति धन्वपं तत्थ ॥ १८ ॥
सुनत जयाकी सेनमें, उभय[२] वनिक वनि आय ॥
वनिज वियारयो वचकनँ, विपणि बजार बनाय ॥ १९ ॥
दुवर् हि लरे पुनि इक्क दिन, समुझत क्रीत हिसाब ॥
कल्पित कछु अपराध करि, खिजि खिजि होत खराब ।२०।
वकत परस्पर जैन वानि, उभय[२] तित्थगर आन ॥
पलटत पायन धौतपट, होत पदत्रैन दान ॥ २१ ॥
सिथिलैं पैंग्घ सिरतैं सरकि, उरझी कठन आय ॥

* इंदा शाखा के पडिहार क्षत्रिय † धन ॥ ११ ॥ ‡ मारवाड देश में ॥ १२ ॥
॥ १३ ॥ § अन्य समय १ प्राण ॥ १४ ॥ २ सुमियाणा में ॥ १५ ॥ ३ हुकम
॥ १६ ॥ १७ ॥ ४ यहां बुलाये ५ मारवाड के पति ने ६ तहां ॥१८॥ ७ ठगों
ने ८ दुकान ॥ १९ ॥ ९ क्रय करने (मोललेने) का हिसाब समझने को ॥२०॥
१० धोवती ११ जूतियों का दान (महार) ॥ २१ ॥ १२ ढीली १३ पघडी

कलम गई गिरि कानतैं, मुख गल स्वास न माय ॥ २२ ॥
इक्क कहैं कहिहौं अबहि, गिनि रक्खी मैं गूढ ॥
*मोदक खावत मात तब, मारयो †उंदुरु मूढ ॥ २३ ॥
जपैं ‡इतर तेरे जनक, छल्लौ §जिनोदित छोरि॥
मक्खी दस१० घृत माँहितैं, नक्खी जियत निचोरि ॥ २४ ॥
गहत इक्क पत्थर गड्यो, दैबेकौं करि दाव ॥
खैंचत बिटप१न इक्क खिजि, घल्लत गालिन घाव ॥ २५ ॥
जिम तिम बिरचत करि जतन, अधोबात२ उतसर्ग ॥
लखि इत उत बिहसन लगे, बल३ दक्खिन भट बर्ग ॥ २६ ॥
इक मारत मुट्ठी उछारि, खिजि इक दंतन खात ॥
संध्याकी डोढी गये, लरत प्रहारत लात ॥ २७ ॥
धोत४बसन अंतर दुहुँन२, कछि कछि दृढ कोपीन ॥
दुव२ असिधेनु५ दुराय६ तँहँ, लरन भये इम लीन ॥ २८ ॥
लरत बनिक कौतुक लखत, उलट्यो कटक अपार॥
प्रहसन७ रूपक जिम प्रचुर, प्रकट्यो हास्य प्रचार ॥ २९ ॥
स्मित१कति जन कति जन हसित२,बिहसित३कतिक बनात

॥ २२ ॥ * लड्डू खाते समय † चूहे को ॥ २३ ॥ ‡ दूसरा कहता है कि तेरे पिता ने § जिन (अर्हन्त) के कहने को छोडकर अर्थात् अर्हन्तों के कहेहुए अहिंसा धर्म को त्यागकर ॥ २४ ॥ १ वृत्तों को ॥ २५ ॥ २अपशब्द (गुदा के पवन) का निकालना ३ दक्षिण की सेनाके ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ४धोती के भीतर ५ छुरियें ६ छुपाकर ॥ २८ ॥ ७ हास्य के नाटक के समान बहुत ॥ २९ ॥ रसतरंगिणी में हास्य रस के बारह भेद लिखे हैं सो हम भी रसतरंगिणी के सातवें तरंग के अनुसार लिखते हैं कि हास्य रस दो प्रकार का है जिन में एक तो स्वनिष्ठ (अपने आप हसना) और दूसरा परनिष्ठ (दूसरे का हसना) जो उत्तम मध्यम अधम पुरुषों में रहकर छः प्रकार का है। जिनमें छ. प्रकार का स्वनिष्ठ और छः प्रकार का परनिष्ठ मिलकर बारह भेद हुए हैं। उत्तम पुरुषों में स्वनिष्ठ और परनिष्ठ दोनों में स्मित और हसित होता है। और मध्यम पुरुषों में स्वनिष्ठ, परनिष्ठ, बिहसित और उपहसित होता है।

कतिक करत वक्रोष्टिका४, कति अतिहास५जनात ।३०।
अट्टहास६ कतिकन उदित, आच्छुरितक७ कति अग ॥
कतिकन अवहसित८ रु कतिन, पगि उपहसित९प्रसग ।३१।
कहुँ दृग बिकसन सकुचन, श्रोठ फुरकनहु उप्पि ॥
वढ्यो प्रमथदेवत विसद, रस सध्या दल रुप्पि ॥
करत दतधावन करम, जया पटालय जत्थ ॥
कोतुक यह अकरयो कतिन, तासों जाय रु तत्थ ॥ ३३ ॥
वनिक लरत देखे वहुत, मुष्टी मल्लक मार ॥
पै इक रारि अपुव्व प्रभु, दरसनीय निज द्वार ॥ ३४ ॥
देखत जन पकरत उदर, दुरसह हसन दुखात ॥
कोतूहल यह लखनको, जुरे छुरे नहिं जात ॥ ३५ ॥
सध्याके सिर यह सुनत, अतक छायो आय ॥
बुल्ल्यो तव बुल्लहु वनिक, निरखि निवेरैं न्याय ॥ ३६ ॥
इम भाखत सँहसन अनुर्ग, दभिन लाये दोरि ॥

तथा अधम पुरुषों में स्वनिष्ठ और परनिष्ठ, अपहसित और अतिहसित होता है इनमे थोड़े से कपोल फूलने, दन्त नहीं दीखने और नेत्रों के प्रान्त से अच्छी तरह देखने को स्मित कहते हैं कपोलों का फूलना और थोड़े स दातों का दीखना, इस हास्यको हसित कहते हैं। समय के अनुसार जिस हास्य म उत्तम शब्द होवें, मुख का सुकड़ना और मुख पर लाली दीखे, उसको विहसित कहते हैं नासिका फूलना, टेढी दृष्टि होना गरदन का सुकड़ना और स्पष्ट शब्द होना इसको उपहसित कहत हैं। उद्धत होवे, नेत्रों से अश्रुओं का उदय होवे, मस्तक हिलता होवे, अत्यन्त स्पष्ट शब्द होवे, उसको अपहसित कहते हैं। अत्यन्त उद्धत, बहुत आसु आवे, बहुत अत्यन्त शब्द होता होवे पासमें होवे उसको पकड़लेवे, हाथ से ताल बजावे जिसको अतिहसित कहते हैं ॥३०॥३१॥यहा कहीं तो लक्ष्य से हास्य को बताया है और कहीं लक्षणसे बताया है सो पाठक लोग जान लेवें १ शिव है देवता जिसका और २ श्वेत है रग जिसका ऐसा हास्य सिन्धिया की सेना में सना हुआ ॥ ३२ ॥ ३ दातण (दतून) करता था ४ डेरे मे ॥ ३३ ॥ ५ दन्त मारकर ६ देखने योग्य ॥ ३४ ॥ ३५ । ७ काल ॥ ३६ ॥८नौकर ॥ ३७ ॥

झुकत गये झंझोरि ॥ ३७ ॥
लातन नख दंतन लरत, झुकत गये झंझोरि ॥
अति समीप जावत अटक, प्रतिहारन[1] किय पूर ॥
रारि तदपि[2] अदभुत रचत, दंभी न रहे दूर ॥ ३८ ॥
कहत इक्क अपराध करि, मारत यह पुनि मोहि ॥
इतर[3] कहत संध्या अधिप, करत न्याय सबकोंहि ॥ ३९ ॥
तू सठ तोलत छद्म[4] तकि, लुट्टि पजानन[5] लेत ॥
घटिकादिक मनके धरत, दानन ऊनितं[6] देत ॥ ४० ॥
पुनि कहि इम दंतन पयन, लरे नखन रिस लाय ॥
तालिन दै संध्या तकै, गालिन देत गिनाय ॥ ४१ ॥
कढ्ढि छुरिन जावत निकट, दई जया उर दोरिं[7] ॥
गटकत हिय कालिंक[8] गई, फोरी पंजर फोरि ॥ ४२ ॥
देत समय बुल्ले दुवरहि, होत अचानक हाक ॥
कहिये संध्या न्याय करि, को हममाँहिं कजाक ॥ ४३ ॥
भाखि यह रु सत्वर[9] भजत, मार्यो इक१ असि मार ॥
कढ़िगो इक१ रोवत कुहक[10], इक्खहु यह अंधार ॥ ४४ ॥

॥ षट्पात् ॥

कोलाहल्ल हुव कटक मरत संध्या कुल इनके ॥
भये रूदनके राग छिप्र[11] दुंदुभि छत्तिनके ॥
बिजैसिंह मरुईस सुनत किय मोद सिवायो ॥
अभयसिंह सुत अधम पिहुल[12] आतुर दुख पायो ॥
सक दुव मृगांक बसु इक१८१२समय धिठ्ठन इम छल बेस धरि ॥
मरुपाल[13] साल संध्यामय सु कढ्यो इंदन[14] जतन करि ॥४५॥

१ द्वारपालों ने निकट जाने से बहुत रोका २ तोभी ॥ ३८ ॥ ३ अन्य ॥ ३९ ॥ ४ छल ५ पंचसेरी आदि ६ कमती ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ७ हृदय और कलेजे को निगल कर शरीर को हलकेपन से फोड़कर गई ॥ ४२ ॥ ८ युद्ध करनेवाला छली हममें कौन है ॥ ४३ ॥ ९ शीघ्र १० छली ॥ ४४ ॥ ११ शीघ्र १२ बहुत
१३ मारवाड़ के पति को १४ ईंदा क्षत्रियों ने ॥४५॥

॥ दोहा ॥

जया तनय जनकू जवहि, पट्ट जनकको पाय ॥
घिंटि रह्यो नागोर वलि, तोपन रारि, रचाय ॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे बुन्दीश्वरनिजाऽऽलयरचितसुमन्दिरश्रीरङ्गप्रतिष्ठापननिजराज्ञ्यूदाउरूयौरसराजकुमारबहादुरसिंहोद्गमनकुमारशिवसिंहभुजिष्याजठरजन्मप्रापणनागोरदुर्गस्थराठोडविजयसिंहव्याकुलीभवनतत्प्रेषितकृतवाणिग्वेशेन्द्रोपटाद्विप्रतिहारद्वय २ जयामारणप्राप्तजनकाऽधिकारतत्पुत्रजनकूनागोररणरचनं चतुश्चत्वारिंशो ४४ मयूख. ॥ ४४ ॥ आदित ॥३२५॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ रोला ॥

विजयसिंहकों घिंटि कलह जनकू व्याकुल किय ॥
करि तब संधि कबंध दम्म दसलक्ख१०००००० दइ दिय ॥
जनक लयो अजमेर अब सु पच्छो डरि भण्यो ॥
वलि सभरपुर पट थान दायादहिं थप्प्यो ॥ १ ॥
निलय जयाके नाम विविध मंजुल बनवाये ॥
मेरता१ रु नागोर२ लरजि बहु दम्म लगाये ॥

---

१ फिर नागोर को घेरा ॥ ४६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, बुन्दी के पति का अपने महलों में बनाये हुए श्रेष्ठ मंदिर में, श्रीरंग की प्रतिष्ठा करना और अपनी राणी ऊदावति के उदर से राजकुमार बहादुरसिंह का जन्म होना १ कुमर शिवसिंह का दासी के पेट से जन्म पाना ६ नागोर के गढ में स्थित राठोड़ विजयसिंह का व्याकुल होना और उस के भेजे बनियों के वेषवाले ईदा पदवीवाले दो पड़िहारों का जया को मारना ३ पिता का अधिकार पाकर उसके पुत्र जनकू का नागोर में युद्ध रचने का चमालीसवा मयूख समाप्त हुआ॥४४॥ और आदि से तीन सौ पचीस ३२५ मयूख हुए ॥

२युद्ध में ३भाई(दायभाग पानेवाले) रामसिंह को ॥१॥४मकान ५सुन्दर ६धूअकर

करि जनकू अब कुंच अनखि पच्छो मुरि आयो ॥
रूपनगर सन रारि बिरचि रट्ठोर दबायो ॥ २ ॥
सकुचि बहादुरसिंह[1] मञ्जि अतिबल मरहट्ठन ॥
आनि मिल्यो डर आनि प्रकट दिखराय नम्रपन ॥
रूपनगर खाली कराय सामंतहिं दिन्नौं ॥
योंहि कृष्णगढ अप्पि कुंच जनकू पुनि किन्नौं ॥ ३ ॥
काका दत्ता संग बहुरि समसेरबहादुर ॥
सुत बाजेरायसौं एह जनरूयौं[2] जवनीउर ॥
इन दोउनर[3] जुत उलटि धँप्यो जनकू दक्खिन धर ॥
बुंदिय आवत भूप जाय सम्मुह लायो घर ॥ ४ ॥
सबको करि सतकार मंडि मंजुल[4] महिमानी ॥
संभर दिय पुनि सिक्ख बिहित हित मय कहि बानी ॥
कोटापति इत कुमति अधिक चक्खी आकूती ॥
बाजीकरन[5] बिनोद आनि मंडन रत ऊती[6] ॥५॥
तास नसा करि तबहि खेदहुव देह खपावन ॥
अतिजगती धृति १८१३ अब्द श्रामँ[7] बरखा ऋतु श्रावन ॥
बेलर्क कृष्णबिलास[8] व्याधि करि देह बिहायो ॥
सचिव झल्ल मदनेस बेग तब अजितें[9] बुलायो ॥ ६ ॥
द्विज इक दानतिराय ढंग अनता पठयो द्रुत ॥
बिष्णुसिंह नाँती[10] सु अजित बुल्ल्यो पिथ्थल[11] सुत ॥
याकौं तब द्विज एह लँघुहि[12] अनता सन लायो ॥
अब्द पचास५० अवस्थ वृद्ध गद्दिय बैठायो ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ २ ॥ १ बहादुरसिंह को ॥ ३ ॥ २ मुसलमानों के उदर से ३दौड़ा (शीघ्रता से गया) ॥ ४ ॥ ४ सुन्दर ५ घोड़े के समान मैथुन करने को वैद्यक में बाजी करण कहते हैं ६ क्रीड़ा ॥ ५ ॥ ७ श्रावण मास ८ कृष्णविलास नामक बाग में ९ अजितसिंह को ॥ ६ ॥ १० पोता ११ पृथ्वीसिंह का पुत्र १२शीघ्र ही ॥७॥

इत सन्ध्या उज्जैनतैं, यह सुनि दत्ता आय ॥
कोटा विंटिय अनख करि, सेना अयुत१००००सजाय॥ ८ ॥
छुल्ल्यो हमरे हुकम बिनु, अजितसिंह ह्वै ईस ॥
अप्पहु यातैं दंड अब, श्रीमतहि गिनि सीस ॥ ९ ॥
मुद्रा बारह लक्ख १२०००० मित, दिन्नी तब सहि दंड ॥
दक्खिनको फैल्यो दुसह, ऐसो तेहर अखंड ॥ १० ॥
आयो इत उत्तरि अटक, उद्धत कटक अमानं ॥
मारक नादरसाहको, अहमदसाह पठान ॥ ११ ॥
सक अतिजगती धृति १८१२ समा, व्यापत समय बसंत ॥
किन्नों जिहिं मथुरा कतल, हत्या पर सठ हंत ॥ १२ ॥
आतप कातर पुनि गयउ, ग्रीखम लग्गत गेह ॥
मनुज हजारन मारिकैं, औतु सुननं जुत एह ॥ १३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

पुर मकसूदाबाद१ जलामक, सुहि मुरसिदाबाद१ जुग२ नामक ॥
बंगदेस अंतर तद्वासकं, जवन सिराजुद्दौला सासकं ॥ १४ ॥
जिहिं इंग्रेज जमत इत जानैं, पुनि करि अमल बढत पहिचानैं ॥
सचिव कोहु तस पुर ढाका सन, धुत्त अछुत्त लै भज्यो बहु धन१५
सुपै रह्यो अंग्रेजन सरनैं, बल जिनको सब सिर जग बरनैं ॥
इत्यादिक हेतुन नब्बाव यह, सजि पैठो कलकत्ता सग्रह ॥ १६ ॥
जित्ति पुर सु सहसन सेनाजुत, दुर्ग फोर्टविलियम१ लिन्नों द्रुत ॥
पुर जिहिं रस चउ ससि१४६मित पाये, जे अंग्रेज मवलपकराये१७
अति संकट कारा ते अटके, पै माये न तदपि तँहँ पटके ॥

॥ ८ ॥ ९ ॥ १ प्रताप ॥ १० ॥ २ अमाप ॥ ११ ॥ ३ परम हिंसा ४ दुष्ट ॥ १२ ॥ ५ गरमी (धूप) से कायर ६ दिल्ली ७ कुत्तों सहित ॥ १३ ॥ ८ यहाँ का रहनेवाला ९ हाकिम ॥ १४ ॥ १० उसका कोई सचिव ११ वह धूर्त अछूता धन लेकर भगा ॥ १५ ॥ १२ आग्रह सहित ॥१६॥ १३ कलकत्ते के किले नाम है ॥ १७ ॥ १४ पकड़े सकड़े (नग) कैद घर में डाले, परन्तु उसमें नहीं

इहिँ*संकट कैदी व्याकुल अति, गुन रवि १२३ मित दबि मरे कीटगति ॥ १८ ॥

जियत बचे तेईस२३ प्रात जिम, मंदराज यहँ सुद्धि सुनी इम ॥
तब कर्नैल क्लैब१साहब तह, सज्जि लरन नवसत१०९गोरनसह१९
सत पंदह१५००मित अवर सिपाइन, द्रुत आयो अहितन हियदाहन
आश्रम ससि बसु ससि १८१४ सक आगम, समर रच्यो सुचि गिम्ह२ समागम ॥ २० ॥

कलकत्ता जित्ति सु अरि काढे, वलि नवाब उत्तर दल बाढे ॥
सत्त अयुत७००००बल सह अग्रेसर,सज्यो नवाब पलासी संगर२१
भिरत भज्यो सु कौल तोपन करि,लह्यो बिजय अंग्रेज अतुल लरि
अमल कंपनीको तादिनँ उत,देस बंग बिच कछुक जम्यो द्रुत२२

॥ दोहा ॥

इंद्रगढाधिप देव इत, पाप कुमाय प्रमत्त ।
नृपके सोदर दीप पँहँ, पठये जैपुर पत्त ॥ २३ ॥
यह उदंत तिनमैं लिख्यो, अब डरि भूप उमेद ॥
अप्पहि लैन अमात्यकौं, भेजहि लखि द्रुत भेद ॥ २४ ॥
मनहु मनायें मति सुमति, रक्खहु धीरज रंच ॥
बिन्नति हम दक्खिन बिखैय, पठई नीति प्रपंच ॥ २५ ॥
कछु बसु नजरि निवेदिकैं, लै श्रीमंत निदेस ॥
अप्पहिं हम करिहैं अरहि, बुंदीनगर नरेस ॥ २६ ॥

माये तो भी उसमें जबरी से डाले * इस लकड़ाई में १एक सौ तेईस अंगरेज कीड़ों की तरह दबकर मरगये ॥ १८ ॥ २ प्रभात समय ३ खबर॥१९॥ ४ शत्रुओं के हृदय जलाने को ५ आषाढ ६कृष्णपक्ष, यह मरुभाषा के ग्रेम से गिम्ह हुआ है जिसका अर्थ पाप है और पाप का रंग श्याम है ॥ २० ॥ ७ सेना उत्तर दिशा में बढाई ८ आगे होकर ९ पलासी नामक नगर में ॥ २१ ॥१०काल रूपी तोपों से ११ उस दिन १२ बंगाले में ॥२२॥२३॥१३ वृत्तान्त १४ आपको ॥२४॥ १५ हे बुद्धिमान् १६ देश में ॥ २५ ॥ १७ धन १८ शीघ्र ही ॥ २६ ॥

भावी वसि ए भूपके, पाये दूतन पत्र ॥
नृप उमेद देवहिं गिन्यों, ए सुनि पाप *अमत्र ॥

॥ गीतिका ॥

इत सकरी धृति १८१४ अब्द लग्गत सेन दक्खिनतैं चली ॥
रघुनाथ१ मालिक नन्द सोदर श्रो मलार२ बडे बली ॥
दल श्रात बुंदियके समीप नरेस सम्मुह जातभो ॥
महिमानि दे इक१ रत्ति रक्खि रु देव पत्र दिखातभो ॥ २८ ॥
रघुनाथ पक्ष मलार संजुत बंचिकैं नृपके कह्यो ॥
तुम ईस मारहु देवसिंहहि पाप पापिय ज्यों चह्यो ॥
करि कुच यों कहि दक्खिनी जयनैर छोनिय सचरे ॥
गढ भोम नामक घिरि कोपन जाल तोपनके जरे ॥ २९ ॥
कछवाहके भट ते भजे सब भोमदुग्गहिं छोरिकैं ॥
इन आन मंडिय अप्पनी ततकाल जो गढ तोरिकैं ॥
पुनि टोंक पत्तन घेरि घत्तन देस जैपुरको दल्यो ॥
कछवाह माधव भूप सो सुनि आंजिकों नहिं उज्झल्यो ॥३०॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे जयावैरनिमित्तजनकूदण्डितविजयसिंहदमद्रम्मलक्षदशक १०००००० सहिताऽजमेरदङ्गमहाराष्ट्रनिवेदनसम्भरपुरविभाग रामसिंहाऽर्पणामेरता १ नागोर २ सन्ध्यासद्मनिर्मापनप्रास्थितजनकूरूपनगरभारक्षेपणातत्पुरसामन्तसिंहीयकरणबहादुरसिंहाऽर्थकृष्णा

*पाप का पात्र ॥ ५७ ॥ २८ ॥ १ माखिक हो सो २ जयपुर की भूमि में गये ॥ २९ ॥ ३ युद्ध को ४ नहीं पडा ॥३०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, जया के वैर के कारण विजयसिंह को दण्ड देकर जनकू का दशके दश लाख रुपयों सहित अजमेर नगर मरहठों को भेट करना और रामसिंह को बट में साम्भर पुर देना १ मेड़ता और नागोर में सिंधिया के मकान बनाकर गमन कर के जनकू का रूपनगर पर भार डालना और उस पुर को सामन्तसिंह का

गढदापनबुन्दीदक्षिणायियासुससैन्यसन्धपाभोजनकोटेशदुर्जनशल्य
मातुलानीमत्तमृत्युपापणसचिवाऽऽदितत्पट्टाऽनतेशाऽजितसिंहबन्धन
तन्निमित्तसन्धपादत्तद्वादशलक्ष १२००००० कोटादण्डदम्मसमुद्धर
णलङ्घितकरतोयानादरशाहमारकपठानाऽहमदपाहकुमारिकागमन
मथुरामहापुरीप्राणिमात्रप्राणवियोजनसोदरदीपसिंहसम्बन्धिदेवसिं
हविरचितवर्णदूतबुन्दीन्द्रदर्शनसमल्लारनन्हाऽनुजरघुनाथरायोदगाग
मनदर्शितदेवसिंहदलसम्भरेशतत्सन्मननीतभौमदुर्गमहाराष्ट्रजयपु
रदेशदलनं पंचचत्वारिंशो ४५ मयूखः ॥ ४५ ॥ आदितः ॥३२६॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नृप उमेद करउर नगर, इत गय अवसर पाय ॥
देव१ रु दोलतसिंह१ दुवर, इहाँ जंनक सुत आय ॥ १ ॥
नेति जुत लग्गे नृपति पय, बैठे मिसल बिचारि ॥
कह्यो भूप तुम हित करत, स्वामि धरम अनुसारि ॥ २ ॥
इंद्रगढेश्वर देव इह, बुल्ल्यो अँनृत बनाय ॥

करके बहादुरसिंह को कृष्णगढ देना २ दक्षिण की इच्छावाले सिन्धिया का सेना सहित बुन्दी में भोजन करना और कोटा के पति दुर्जनसाल का भांग (माजुम) में मस्त होकर मरना ३ सचिव आदि का उसका पट्ट (सिरपेच) "प्राचीन काल में पांच आमली के सरपेच को राज्य चिन्ह मानते थे"३ सचिव आदि का उसका पट्ट अणता नगर के पति अजितसिंह के बांधना और उसके कारण सिन्धिया के दिये दंड के बारह लाख रुपये कोटा से लेना ४ अटक नदी लांघ कर नादरशाह के मारनेवाले पठान अहमदशाह का आर्यावर्त में आकर मथुरा में प्राणि मात्र के प्राणों का वियोग करना (मारना) ५ छोटे सगे भाई दीपसिंहके सम्बन्धी देवसिंह के रचेहुए पत्रों को बुन्दी के पति का देखना और मल्लार व नन्ह के छोटे भाई रघुनाथराव का उत्तर दिशा में आना १ देवसिंह के पत्र दिखाकर चहुवाणों के पति का उनका सन्मान करना और भोमगढ को लेकर मरहठों की सेना का जयपुर के देश को पीसने का पैंतालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥४५॥ और आदि से तीन सौ छाईस ३२६ मयूख हुए ॥

१ पिता और पुत्र ॥ १ ॥ २ नम्रता सहित ॥ २ ॥ ३ झूठ बोला

सेवक हम प्रभुके सकल, करैं हुकम मन काय ॥ ३ ॥

॥ मनहंस ॥

सुनिकैं इतेक नरेस वे देल खुल्लिकैं,
उनकों दये उनके लिखे सब खुल्लिकैं ॥
तिन्ह बाचि देव सिटाय नैं कछु भुल्लयो ॥
तब भूप कुप्पि निदेस मारनको दयो ॥ ४ ॥
रु कही दयो हय नाँहिं सो हम भुल्लये ॥
तुमनैं तथापि विरोध बीज इते बये ॥
कहि यों हन्यों वह देव सोक मँम्हारतैं ॥
पकरयो सु दोलतसिंह खग्ग निकारतैं ॥ ५ ॥
करि कैद बुंदिय दुग्ग ताकँहँ प्रेसयो ॥
अरु अप्प इंद्रगढाख्य पत्तनमैं गयो ॥
निज आन मंडिय रक्खि हाकिम व्हाँ भले ॥
उनके वधूजन नैनवा सब मुक्कले ॥ ६ ॥

॥ भ्रमरावली ॥

नृपनैं इम पत्तन इंद्रगढाख्य लयो, रहिकैं कछु बासर केतन गड्डि दयो ॥
पुनि लैन परग्गनकों पृतना पठई, भट ता बिच सुख्य सु तोक भयो बिजई ॥ ७ ॥
ध्वजिनी यह बुंदिय आन रचत फिरैं, भट कोउ न तासन सत्रु दकालि भिरैं ॥
सुनिकैं यह खत्तउली पति आतभयो, नृपके दलपैं सहसा रतिवा ह दयो ॥ ८ ॥
वजि इक्क ललक्क बडी धमचक्क मची, निसमैं चउसट्ठि६४ अचानक

॥३॥ १पत्र मंगाकर २हुकम ॥४॥ पहिले ३ घोडा नहीं दिया था सो तो ४तोभी ५शोक करते हुए को ॥ ५ ॥ ६ इन्द्रगढ नामक पुर में ७ स्त्रीजन ॥ ६ ॥ ८ कुछ दिन रहकर ९ ध्वजा रोप दी १० सेना ॥ ७ ॥ ११ सेना १२ अचानक ॥ ८ ॥

आय नची ॥

तजि निंद रु तोकहु लै समसेर चल्यो, सु मनों बड़वानल सागरपैं उच्छल्यो ॥ ९ ॥

उमड्यो जनु कन्ह[1] कुसस्थलके रनपैं, पटक्यो वपु[2] सत्रुनकी सम सेरनपैं ॥

हनुमंत किलंकहिँ लैन मलंगि बढ्यो, कपिलेश्वरके मुखतैं जनु साप कढ्यो ॥ १० ॥

इम तोक रजोगुनमैं छकि रंग रुप्यो, लखिकैं तिहिं खत्तवली दल जात लुप्यो ॥

बखतावर त्यौं मुहुकम्म कुलीनँ बली, भट सम्मुह जाय रची धम चक्क भली ॥ ११ ॥

बिनु घोटक दोउनर की तरवारि बही, कबलौं सु कही नृप राम न जात कही ॥

तरकैं समसेर बिदारि बकत्तरकौं, उछटैं सिर तुट्टि निरंतर अंबरकौं

फटि टोप गिरे बिखरे दसतान दिपैं, लगि लोहित छुट्टि छछक्कन छोनि छिपैं ॥

बरछीन कितेक महाबल बेध करैं, कमनैत कितेक कलंबन प्रान हरैं ॥ १३ ॥

तरवारि तनुत्रनमाँहिं दुरैं दमकैं, सुभि भद्द बलाहकैं[12] ज्यों ह्लादिनी चमकैं ॥

उछटैं गल गाल रु भाल कपाल कटैं, बिनु मस्तक केक कबंध कराल अटैं ॥ १४ ॥

भिरिकैं इम संहरि सत्रुनके भट के, बखतावर[1] तोक[2] बनैं बटके बटके ॥

॥९॥ १कन्नोज के २ शरीर को शत्रुओं की तरवारों पर पटका ॥१०॥ ३ युद्ध में ४ क्षत्रियों की सेना ५ कुलवाले ॥११॥ ६ विना घोड़ों के ७ आकाश में ॥१२॥ ८रुधिर की ९भूमि १०बाणों से ॥१३॥ ११कवचों में १२भाद्रपद के मेघ में १३बिजुली

गिरितैं इवर बुंदियकी पृतनां बिगरी, पहुँची भजि सभर भूपति पैं सिगरी ॥ १५ ॥

पुनि इड्डनके पति सेन घनी पठई, द्रुतही तिहिं बुंदिय भ्रान फिराय दई ॥

कर लैन लगे फिरि हाकिम बुंदियके, हठ मोघ भये सब सत्त्रुनके हियके ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

अनघोरा१ अरु ढीपरी२, लै रु अमल निज कीन ॥
ग्राम इन्द्रगढके सकल, किय इत्यादि अधीन ॥ १७ ॥
ग्राम ढीपरी माँहिं गढ१, बध्यो नृप रन बट्ट ॥
त्यौंहिं इन्द्रगढ अद्रिपर, रच्यो दुर्ग चतुर्अट्ट२ ॥ १८ ॥
कृत्रिम इक१ आयत कियउ, महलन मध्य निवान ॥
बलि विंध्यासनि देविगिरि, सुभग रचे सोपान४ ॥ १९ ॥
संदानित पुनि देव सुत, दोलतसिंह जु कीन ॥
तारागढ तँहँ अंसु तजे, आमयं कछुक अधीन ॥ २० ॥
नृपति पठाई नैनवा, याकी मात रु नारि ॥
याकै तहँ हुव पुत्र इक१, सोहु मरयो गंद धारि॥ २१ ॥
द्रुत नृप बुल्ल्यो देवको, भक्तराम तब भ्रात ॥
दयो कृपाकरि इन्द्रगढ, जाहि अब्द त्रय जात ॥ २२ ॥
कछु यह हम भावी कह्यो, बलि क्रमतैं अब वत्त ॥
इम नृप लीनौं इन्द्रगढ, घल्लि घत्त पर घत्त ॥ २३ ॥
वेद इंदु धृति१८१४ अब्द बिच, मैंधव माधवैं मास॥
खत्तोली पतिहू दयो, इम नृप दैल सिर त्रास ॥ २४ ॥

---

१ सेना ॥ १५ ॥ २ छपथ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ३ पर्वत पर ४ चौ बुरजा (चार बुरजवाला) ॥ १८ ॥ ५ बनाया हुआ मोटा ६ पगथिये (सीढियें) ॥ १९ ॥ ७ कैद ८ भाग ९ रोग के अधीन ॥ २० ॥ १० रोग ॥ २१ ॥ ११ शीघ्र बुलाया ॥ २२ ॥ १२ घात पर घात ॥ २३ ॥ १३ बसन्त ऋतु १४ वैशाख मास में १५ सेना पर ॥ २४ ॥

तोक महासिंहोत तँहँ, जैतगढाधिप[1] जोध ॥
तिल तिल तेगन तुट्टयो, रचि बहु सत्रुन रोध ॥ २५ ॥
अपराधीकौं मारि इम, नृप आयो निज नैर ॥
जैपुर पर मल्लार इत, बंध्यो दुद्धर बैर ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे बुन्दीशकरउरद्रंगगमनसमाहूतदर्शिततत्पत्रेन्द्रगढेशदेवसिंहमारणतदीयतनुजदौलतसिंहदुर्गकाराक्षेपणतत्स्त्रीजननयनपुरप्रेषणरावराजेन्द्रगढगमनतद्भूमिशासनाऽर्थससैन्यतोकसिंहप्रेषणखतोलीशतत्सौप्तिकरचनतोकसिंहबख्तावरसिंहमरणबुन्दीपृतनापलायनपुनःप्रेषितभटदेवसिंहदेशस्वीकरणढीपरी १ न्द्रगढ २ चतुरट्टदुर्गनिपानाऽऽदिविन्ध्यवासिनीगिरिसोपानादिसमनुष्ठानसन्दानितदौलतसिंहकाराकलेवरहानजाततत्पुत्रनयनपुरमरणरावराड्बुन्द्याऽऽगमनमल्लारजयपुरवैरबन्धनं षट्चत्वारिंशो ४६ मयूखः ॥४६॥ आदितः ॥ ३२७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

---

१ जैतगढ का पति ॥ २५ ॥ २६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में बुन्दी के पति का करवर नगर में जाना, मंगायेहुए उसके पत्र दिखाकर इन्द्रगढ के पति देवसिंह को मारना १ उसके पुत्र दौलतसिंह को गढ में कैद करना और उसकी स्त्रियों को नैणवा पुर में भेजना २ रावराजा का इन्द्रगढ जाना और उसकी भूमि को आधीन करने के अर्थ अपनी सेना सहित तोकसिंह को भेजना २ खातोली के पति का उस पर रातिवाह देना और तोकसिंह व बखतावरसिंह का मरना ३ बुन्दी की सेना का भागना और फिर भेजेहुए वीरों का देवसिंह के देश को लेना, ढीपरी और इन्द्रगढ में चार बुरजोंवाला गढ, जलाशय, विन्ध्यवासिनी के पर्वत पर सीढियें आदि करना ४ कैद कियेहुए दौलतसिंह का कैद में मरना और उसके जन्मेहुए पुत्र का नैणवानगर में मरना ५ रावराजा का बुन्दी आना और मल्लार का जयपुर से वैर करने का छियालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४६ ॥ और आदि से तीन सौ सत्ताईस मयूख हुए ॥३२७॥

॥ षट्पात् ॥

अक्खी माधव अग्ग हमहु जैपुरपति व्हैहैं ॥
तबहि रामपुर तुमहिं दुवै२ हि हुलकरपति दैहैं ॥
बरस सत्त७ गय बित्ति द्रग२ कूरम नहि दिन्नैं ॥
यातैं हुलकर सज्ज कटक जैपुर पर किन्नैं ॥
माधव नरेस सुनि भीत मन दम्म लक्ख ग्यारह११०००००दये
धनि नम्र परग्गन जुत बहुरि ए दुव२ पत्तन अप्पये ॥

॥ दोहा ॥

पत्तन चन्द्राउतनको, रामपुरा१ सह देस ॥
जो लिन्नों जयसिंह सो, किन्नों हुलकर पेस ॥ २ ॥
टोंक नगरके प्रात ढिग, दूजो२ रामपुरा१ सु ॥
कहियत रायवसतको, वह दिन्नों डरि आसु ॥ ३ ॥
दुव२ पुर जनपद सहित दै, तब मेट्यो इम त्रास ॥
दक्खिनको दल टारि दिय, माधवँ माधवँ मास ॥४॥

॥ हरिगीतम् ॥

सक बान चन्द्र भुजग भू१८१५जयनेर यों जनकू बढ्यो ॥
सन्ध्या जया सुत सेन सज्जि रु देस दक्खिनतैं चढ्यो ॥
गोदावरी नदि लंघि त्यों अवरंग पत्तन लंघयो ॥
बुरहान पत्तन लंघि बेग मिलान मेकलजा दयो ॥ ५ ॥
ओंकार ईसहिं पुज्जि यों जनकू अवंतिय उत्तरयो ॥
गढ भैंसरोर मुकाम दै दरकुच हकत जो परयो ॥
सुनि एह बुंदिय भूप तत्थहि जायकैं हित मंड्यो ॥
महिमानि जिम्मत जाहु यों कहि नेर लावनकों भयो ॥६॥
तँहँ इन्द्रगढपति देवकी तिय पत्र बिन्नति मुक्कली ॥

१ दोनों रामपुरे ॥ १ ॥ २ ॥ २ शीघ्र ॥ ३ ॥ ३ देश सहित ४ माधवसिंह ने
५ वैशाख मास में॥४॥ ६ इधर ७ अवरंगाबाद ८ नर्मदा नदी पर ॥ ५ ॥ ६ ॥

अरु यौं लिखी तुम अद्ध छोनिय१ लेहु पिक्खहु जो भली ॥
तिँहिं बंचिकैं जनकू कहे कटुबैन बुंदिय भूपसौं ॥
हमरो सहाय बनायकैं तुम निक्खसे दुख कूपसौं ॥ ७ ॥
हमरो निदेस लयैं बिनाँ तुम इष्ट३ अप्पन नाँ करो ॥
उनकौं ब अप्पहु इंद्रगढ निज राज्य प्रभुपन४ जो धरो ॥
सुनि हड्ड बुल्लिय पेसवा तुमरे जु प्रानन ईसहै ॥
तिनकौं सुनाय करी कही सुनि रावरी इत रीसहै ॥ ८ ॥
करनौं तुम्हैं हितमाँहिं अहितहि तो ब हम घर जायहैं ॥
तुम सज्जि आवहु जंगकौं अब हड्ड हत्थ दिखायहैं ॥
आयो यहै कहि भूप बुंदिय साज संगरके भये ॥
सुनि यौं मलार१ रु नन्द भ्रात२ निवारि दोउनरकौं दये ९
जनकू जया सुत कुंच कैं तब पत्त जैपुर बेगही ॥
कछु दम्म माधव दंड दै डरि नम्रता गति के गही ॥
पुनि मुक्तालन जीवखाँ सन जायकैं जनकू लरयो ॥
नहिं तत्थ मिच्छ रुहिल्लसौं मरहट्ठ भार सह्यो परयो ॥ १० ॥
लय३ अब्दसौं रनथंभ गिरि इत फौज दक्खिनकी लरैं ॥
लिच साहके भट सज्ज ते नहिं दुग्ग छोरन अहरैं ॥
लरैं परंतु छत्तीस३६ मास बिताय व्याकुल वे भये ॥
खंडारि जैपुर दुग्ग ही ढिग तत्थ कॅग्गर प्रेसये५ ॥ ११ ॥
कछ्वाह सेवक साहको६ इम ताहि हम गढ अप्पिहैं ॥
मरिजाहिं पै मरहट्ठकौं रनथंभमैं नहिं थप्पिहैं ॥
तुम छन्न आवहु७ रत्तिमैं हम दुग्गतैं कढि जायहैं ॥
पचरंग केतनं८ कुम्भ भूपतिकोहि अत्थ रुपायहैं ॥ १२ ॥

१ आधी भूमि २ अच्छी देखो सो लो ॥७॥ ३ अपना चाहा हुआ (भला) ४ अपने राज्य का स्वामीपना चाहते हो तो ॥८॥९॥१०॥ ५ पत्र भेजा ॥११॥ ६ कछवाहा बादशाह का सेवक है इस कारण ७ रात्रि में छुप कर आओ ८ ध्वजा ॥१२॥

खड्डारि मुरूप अनोपसिंह हुतो पचेवरिको धनी ॥
खगार बसिंप बांचि जो दल राखि गो सजिकैं अनी ॥
लखि साह सेवक ताहि तब रनथंभ अंतर लैगये ॥
तिहिं झारि खग्गन नन्ह बीर भजाय बाहिरके दये ॥१३॥
कढि साहके भट धर्म दिल्लिय जाय वृत्त निवेदयो ॥
इम बान भू धृति१८१५ पोस सित रनथंभ कूरमकै गयो ॥
सभारं खान१ रु पान२के तँहँ कुम्भ सचित के करे ॥
बारूद१ सीसक२ वित्त३ रक्खि तड़ाग जीरण उद्धरे ॥१४॥

॥ दोहा ॥

बहुरि दुग्ग रनथंभ ढिग, जयपुर छवि अनुसार ॥
निज नामक माधव नगर, रच्यो बिबिध बिसतार ॥ १५ ॥
हुलकर पँहँ पठयो हुकम, सुनत एह श्रीमन ॥
दुर्ग लेहु रनथंभ द्रुत, अब करि जैपुर अंत ॥ १६ ॥
तते वह पठयो तबहि, दै हुलकर दल संग ॥
गंगाधर दरकुच गति, जित्तन आयो जंग ॥ १७ ॥
जनपद नागरचाल जिहिं, कैमि पत्तन कक्कोर ॥
कीनों जैपुर कटकसों, जुद्ध तुमुल बरजोर ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

अतिजव हयन उठाय धरयो पैरदल गंगाधर ॥
मढ्यो आयुध मेह दुरयो बढि खेह दिवाकर ॥
खुदि पहुमि हय खुरन ढुरन लग्गे सागर जल ॥
लग्गे पैव्वय गुरन मुरन अतलादि महीतल ॥
काहुको भयो नहिं जय कलहँ पै बहु भट कटि कटि ।(

१खगारोत २पत्र ३सेना सजकर ४भीतर ॥१३॥ ५यह वृत्तान्त (हाल) अरज किया ६सामग्री ॥ १४ ॥ ७ सदृश ॥ १५ ॥ ८ शीघ्र ॥ १६ ॥ ९ सेना ॥१७॥ १० देश ११ पाकर ॥ १८ ॥ १२ शत्रु की सेना में १३ सूर्य १४ पर्वत १५ युद्ध में

इम पहुमि लुत्थि छादित मनहु बनिज[1]कार टंडा ढरिग ॥१९॥

॥ दोहा ॥

सुभट मरे रन पंचसत५००, इत उतके अनुरत्त[2] ॥
घाय दुसह लग्गे घनैं, गंगाधरके गत्त[3] ॥ २० ॥
जैपुर बड उमराव जुग२, परे भिन्न तजि प्रान ॥
सत्यासी८७ तिनके सुभट, मरे इतर[4] छकि मान[5] ॥ २१ ॥
जोधसिंह१ अभिधान[6] इक१ नाथाउत कछवाह ॥
मिसल दाहिनीको मुकुट, चोमू पत्तन नाह ॥ २२ ॥
बगरूपति दूजो२ बहुरि, कूरम चतुरभुजोत ॥
रन गुलाबसिंहहु रह्यो, बाम मिसल उद्योत ॥ २३ ॥
ए२ उमरावन अग्रणी, जैपुरके गिरि जात ॥
भये न सम्मुह इतर भट, दुर्म्मन[7] भाव दिखात ॥ २४ ॥
इत तंते गंगाधरहु, घन खग्गन सहि घाय ॥
तब मुरर्‍यो दक्खिन तरफ, करन अनार्मय[8] काय ॥ २५ ॥
समा[9] अष्टि धृति१८१६ प्रमित अंक[10], लग्गत ऋतु हेमंत ॥
अगहनमैं ए कुम्म दुव२, हुव गतप्रान लरंत ॥ २६ ॥
इत गंगारधको मुर्‍यो, सुनि हुलकर मल्लार ॥
जैपुर पर हंक्यो जबहि, पहु[11] रचि कटक प्रसार ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

दक्खिनधरको थंभ चढ्यो हुलकर जैपुरपर ॥
दरकुंचन करि दोर अवनि[12] दब्बत डारत डर ॥
जनपद[13] नागरचाल प्रथम बिंट्यो उनियारा ॥
भयो चकित भोगीस[14] धरनि फुट्टत हय धारा[15] ॥

मानों१बनजारों की बादल पड़ी है ॥१९॥२प्रीति युक्त ३शरीर में ॥२०॥ ४अन्य ५ इज्जत में छक कर ॥ २१ ॥ ६ नाम ॥ २२ ॥ २३ ॥ ७ उदासीनता ॥ २४ ॥ ८ शरीर को नैरोग्य करने को ॥ २५ ॥ ९ सम्वत १० विक्रम के शक का ॥ २६ ॥ ११प्रभु ॥२७॥ १२भूमि १३नागरचाल देश में १४ शेषनाग १५घोड़ों की दौड़से

सिरदारसिंह *नारव नमित †सयन जोरि लग्गो पयन॥
तिहिं दडि गमन अग्गैं कियउ हुलकर लगि जैपुर अयन२८
कुसथल मृत फतमल्ल तास हुव रतनसिंह सुत ॥
ताको इक लघुपुत्र नाम विक्रम साहस जुत ॥
जगतसिंह रट्ठोर हिंतु सहसा रचि सगर ॥
छिन्नि नगर बरवाड भयो पति अप्प बधि घर ॥
इहिंहेतु आय मल्लार इत तोपन ताप चलायकैं ॥
रट्ठोर अमल पच्छो रचिय गो कछवाह पलायकैं ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

दक्खिन१ जैपुर२ वैर सुनि, जगतसिंह अभिधान॥
सुत कवध सिवसिंहको, वैठो लै निज थान ॥ ३० ॥
तब कूरम रतनेस सुत, राजाउत करि रारि ॥
छिन्नि नगर बरवाड लिय, दिय रट्ठोर निकारि ॥ ३१ ॥
यातैं हुलकर भीर करि, वह कछवाह भजाय ॥
जगतसिंह बरवाड पुर, बहुरि दयो बैठाय ॥ ३२ ॥
सक रस ससि बसु ससि१८१६ बरस, श्रांम बलच्छ सहर्स्प॥
हुलकर सन बुंदीसहू, गो कछु करन रहस्प ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशावुम्मेद सिंहचरित्रे माधवसिंहपूर्वप्रतिजातरामपुरद्वय २ मल्लारोपायनीकरण सन्ध्याजनकूदग्दिग्गमनसम्मुखप्रस्थितरावराट्तन्मिलनप्राप्तदेवसिं-हपत्नीविज्ञप्तिपत्रसन्ध्याहक्षेन्दकुत्सनतत्कुद्धबुन्द्यागतबुन्दीशसमिदीह

* नरुका † हाथ जोड कर १ मार्ग ॥ २८ ॥ २ से ३ इस कारण ४ भागगया ॥ २९ ॥ ५ नाम ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ६ मास ७ सुदि ८ पोप ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, माधवसिंह का पहिले के दियेहुए दोनों रामपुरों को मल्लार की भेट करना और जनकू नामक सिंधिया का उत्तर दिशा में आना १ सम्मुख जाकर राव राजा का उस से मिलना और देवसिंह की स्त्री की अरजी पाकर सिंधिया का

नश्रुतैतद्रघुनाथराय १ मल्लार २ युयुत्सुद्वय २ निवारणानीतजयपुरद
मद्रम्म जनकूशुक्रतालयुद्धविजयनरुहिल्लनजीवखानपलायनदिल्लीश
दुर्गेशदुर्गरक्षस्थम्भकूर्म्मराजनिवेदनजयपुरदक्षिणविरोधवर्धनश्रीम
न्तशासितहुल्लकरगङ्गाधराऽऽदिपुरतःप्रेषणातज्जैपुरसैन्यसमायोधन-
माधवसिंहमुख्यसुभटनाथाउतयोधासिंह १ चतुर्भुजोतगुलाबसिंहा २
ऽदिमरणात्क्षतगंगाधरदक्षिणाऽऽदिगमनश्रुतैतद्धुल्लकराऽऽगमनत
न्नारुत्रसरदारसिंहदमनराजाउत्तविक्रमोद्भूतबरवाड़पुरराठोड़जगत्सिंहा
ऽऽर्पणसम्मतमल्लारमन्त्रणबुंदीन्द्रबरवाड़पूर्गमनं सप्तचत्वारिंशो४७
मयूखः ॥ ४७ ॥ आदितः॥३२८॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पज्झटिका ॥

लिय अजितसिंह१ पट्टप कुमार, लघु पुत्र बहादुर२ बहुरि लार ॥
बुंदीस मिल्यो बरवाड़ जाय, सम्मुह मलार आयो सुभाय ॥१॥
करि उभयर२ रहे दिन दुवरसुकाम, तँहँ सुनिय सुद्धि पंजाब धाम॥

हाडों के पति को धमकाना १ उससे क्रुद्ध होकर बुन्दी में आये बुन्दी के पति को युद्ध की इच्छावाला सुनकर रघुनाथराव और मल्लार का युद्ध की इच्छा वाले उन दोनों को रोकना ३ जयपुर से दंड के रुपये लेकर जनकू का शुक्रताल के युद्ध में विजय करना और रुहिल्ला नजीबखान का भागना ४ दिल्ली के बादशाह के गढ के पति का रणतभँवर को कछवाहे राजा (माधवसिंह) को देना और जयपुर और दक्षिण का विरोध बढना ५ श्रीमन्त के हुकम पाये हुए मल्लार का गंगाधर आदि को आगे भेजना और उसका जयपुर की सेना से युद्ध करना ६ माधवसिंह के मुख्य सुभट (उमराव) नाथाउत योधासिंह और चतुर्भुजोत गुलाबसिंह आदि का मरना और घावों से क्षीण गंगाधर का दक्षिण आदि में जाना ७ यह सुनकर हुल्कर का आना और उसका नरूके सरदारसिंह को दंड देना८ राजाउत विक्रमसिंहके लिये बरवाड़ पुर को राठोड़ जगत्सिंह को देने और मल्लार से सलाह करने को बुन्दीन्द्र का बरवाड़ जाने का सैंतालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥४७॥ और आदि से तीन सौ अट्ठाईस मयूख हुए ॥ ३२८॥

१ श्रेष्ठ रीति से ॥ १ ॥ २ खबर

सजि सेन खानअहमद पठान, उल्लंघि अटक आया *अमान॥२॥
पंजाब अमल अप्पन जमाय, दक्खिनके हाकिम दिय उठाय ॥
यह सुनत किन्न हुलकर पयान, चढि संग भयो नृप चाहुवान॥३॥
†सिसु जानि सिखावन सुतन नीति, लायो सु दिखावन राजनीति
वय सप्त७ बरस जेठो कुमार, लघु पुत्र अब्द चउ४ बेस धार॥४॥
तिनकों पुनि बुदिय सिक्ख दिन्न, मल्लार संग नृप गमन किन्न ॥
मल्लार चट्टसू आदि नेर, लुट्टे जैपुरके बिरचि बैर ॥ ५ ॥
पंजाब अमल महत पठान, जयनेर[1] छोरि किय उत पयान ॥
इक बंधु[2] महासिंहोत तत्थ, किय तुपक भारि निस बिच अनत्थ॥६॥
सुहरनिपति दसरथसिंह सुप्त[4], किन्नों पयागसुत[5] प्रान लुप्त ॥
खोज्यो वह मारक सुनत भूप, सु मिल्यो न भज्यो परि त्रासकूप७
करि तदनु हह१ हुलकर२ पयान, पुर कोटपुत्तली दिय मिलान ॥
किय सेन पठानन सीस सज्ज, श्रीमत बिजय रन करन कज्ज ॥८॥
गाजुद्दीखाँ इत व्है हराम, मारयो प्रभु आलमगीर नाम ॥
यह सुनत मुलक पंजाब छोरि, इत नादरघ्न आयो सु दौरि ॥ ९ ॥
तब त्रास निजामनमुलक पाय, मरहट्ठ सकल बुल्ले सहाय ॥
जित तित हुतो सु दक्खिन अनीक,सब दिल्लिय आयो चहिसमीक
उततैं सु खानअहमद पठान, आयो सबेग दिल्लिय अमान ॥
सुनि हुलकर अक्खिय नृपहिं एह,भुव करत रंग तुम जाहु गेह११
गो बुंदिय तब समर नृपाल, आयो मलार दिल्लिय उताल ॥
संकरदा पत्तन लूट ठानि, सज्ज्यो पठान सन जंग जानि ॥ १२ ॥

* प्रमाण रहित ॥ २ ॥ ३ ॥ † बालक जानकर अपने पुत्रों को नीति सिखाने के लिये ॥४॥ ५ ॥ १ जयपुर को छोड़कर २ भाई १ अनर्थ ॥ ६ ॥ ४ सोतेहुए को ५ मारनेवाले को ॥ ७ ॥ ६ जिसपीछे ७ मुकाम किये ॥ ८ ॥ ८ नादरशाह को मारनेवाला ॥ ९ ॥ ९ यह पदवी है १० सेना ११ युद्ध ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

जनकू३ हु जयासुत सुनत आय, दत्ता३ हु सेन आयो सजाय ॥
संभासुत४ आयो बहुरि सूर, *जव मंडि लरन सध्या जरूर॥ १३ ॥
अरु सउ [१]कलीज निज धर्म हीन, आलीगोहर दिल्लीस कीन॥
दै पुनि मरहट्टन कोटि १०००००००[२] द्रम्म, किय तिन सहाय निज
विजय [३]कम्म ॥ १४ ॥
दिल्ली दल१दक्खिन दल२दुरंत[४], मिलि इक्क१ सज्यो अव बिरचि मंत[५]
बज्जिग निसान जितातित बिसेस, सज्जिग प्रबीर दल दक्खि देस१५
हुव बिबिध तोप सज्जित हरोल, लहरात धुजा फहरात लोल ॥
[७]मृगराजमुखी कति लंब[९]मान, बाराहमुखी कति वर विधान ॥१६॥
बिखधारमुखी[१०] कति तंति[११] बिसाल, करिराज[१२] मुखी कति अति
कराल ॥
सिंदूर[१३] लेपन लोहित सुहात, दगि प्रलय काल ततखिन दिखात१७
कति कांत[१४] लोहमय पृथुलकाय[१५], सुभ रीति सुल्वमय[१६] कति सुहाय
किय सबल धातुमय सज्ज केक, इम पुनि गुबार[१७] संचय अनेक१८
आरूढ निठुर[१८] चरखन असेस, बिकराल ज्वाल जनु[१९] काल वेस ॥
अंगार बमत खिन खिन अपार, हुव सज्ज छार गढ करनहार॥१९॥
मिलि दगत दिसा दैवंत[२०] मिटाय, सतकोटि[२१] नाद सज्जित सिटाय ॥
दुवसत २०० हरोल जिन्ह बेलदार, कुद्दाल हत्थ मग सुद्धकार[२२]२०
सत दुव२०० कुठारधारक सु अग्ग, मेटत तरु रोधक[२३] रचत मग्ग॥

*वेग रचकर।१३। [१]मूर्ख कलीजखां १दिल्ली का पति किया २रुपये ३काम ।१४। ४दूर है अन्त जिसका ५मंत्र देनगारे ॥१५॥ ७चपल ८सिंहमुखी ९लंबे प्रमाणवाली ॥ १६ ॥ १० सर्पमुखी ११ लंबी पंक्तिवाली १२हस्ती के मुखवाली १३सिंदूर से शोभायमान लाल मुखवाली ॥ १७ ॥ १४ सुन्दर लोहे की १५ वडे शरीरवाली १६ तांबे की १७ तोप विशेष (गुबारा) ॥ १८ ॥ १८ कठोर चरखों पर १९ मानों ॥१९॥ २०दिक्पालों सहित दिशाओं को मिटाती है; अथवा दिशाओं की मूर्ति को मिटाती है २१ वज्र का शब्द २२ मार्ग साफ करनेवाले ॥ २० ॥ २३ रोकने

ते तोप खिनहु अटकन न देत, लैजात *अद्रिसिर †मलप लेत॥२१॥
भुव धसत चक्र चरखन ‡भयार, त्रिसती३०० इम तोपन हुव तयार
दुवर दलन लक्ख १००००० घोटक दुरूह, सत्वर फिराक भँति भँति समूह ॥ २२ ॥
जरजाल³ सज्ज पँखराल जीन, नखराल चाल रँय फाल लीन ॥
नतगोधिं चपल चपलाँ समान, केतक कलीन उपमान कान॥२३॥
खुर रजतपत्त कृत नटन खेल, मनु ससि कलंक खुरतार मेल ॥
प्रतिक्रमन खेह उठ्ठत अनूप, धरनी कि रच्छक¹¹न देत धूप ॥ २४ ॥
जे वैद्य पैराजय रोग जाल, अरु विजय सिद्धि साधन उताल ॥
अैरि पवन पिक्खि जित्यो असेस, वैँयालहु जिन सेवत यालवेस॥२५॥
धुँनि सीस लखत जिन फाँद धाप, माकार रचन छोरत धँराप ॥
लखि जिन मलग तिरछी लजत, कुलटा कटाच्छ डारन तजत॥२६॥

वाले वृक्षों को * पर्वत के ऊपर † कूदते हुए ॥ २१ ॥ ‡ भयङ्कर दोनों सेनाओं में १ कठिनाई से तर्कना में आवें ऐसे लाख घोड़े तयार हुए जिन घोड़ों के समूह शीघ्रता के साथ २ भांति भांति से फिरते हैं ॥ २२ ॥ ३ जरी की जालियों और ४ पाखरोंवाले जीनों से सजे हुए नखरावाली चाल में और ५ वेग के साथ फादने में लीन ६ झुके हुए ललाटवाले और ७ बिजली के समान चपल और केतकी की कली के समान कानवाले ॥ २३ ॥ ८ चांदी के पत्रोंवाले खुरों से नाचने का खेल करते हुए और जिनके खुरों से खुरताल का मेल है सो मानों ९चन्द्रमा से कलंक का अथवा राहु का मेल है १०उन घोड़ों के चलने से उपमा रहित खेह उठती है सो मानों भूमि अपने ११ रक्षकों (घोड़ों) को धूप देती है ॥ २४ ॥ जे (घोड़े) १२ पराजय (हार) रूपी रोग समूह के वैद्य और विजय रूपी सिद्धि के शीघ्र साधनेवाले १३ शत्रु देखकर सम्पूर्ण पवन को जिन्होंने विजय किया है १४ सर्प भी याल (केसवाली) के वेस में जिन की सेवा करते हैं ॥२५॥ १५ मस्तक धुनकर जिसको देखते हैं उसीको दौड़कर फाद जाते हैं १७ वे भूमि के पति (घोड़े) १६ कोट की रचना को छोड़कर कूद जाते हैं जिनकी मलग देखकर कुलटा स्त्री तिरछी कटाक्ष डालने में लज्जित होकर छोड़ती है अर्थात् तिरछी कटाक्ष की शीघ्रता छोड़ती है ॥ २६ ॥

छेकत दयाल उड्डान आनि, जावत सह्यो न भुव कंप जानि ॥
कसि कसि अराल कोदंड कंध, व्यर्थी करंत ज्या जेरबंध ॥२७॥
बिच ग्रीव हेम शृंखल बिराजि, सोहत मुठि तरतक छबिहि साजि
मिलि पालन जूरा लंबमान, बहु भल्ल अजब सुहि इक्क बान॥२८
गुनँ होत सिथिल ज्यों गति गहीर, त्यौंत्यौंहि खिचत यह जानि तीर ॥
हद छबि कलाप पृथु बालहंत, सोहत हय धन्वी इम समरत॥२९
बर नेत्रछादिनी दिय बखानि, जवनी जजि सालिग्राम जानि ॥
बजि प्रोथन प्रबिसत गंधवाह, दुरिजात पराजित जनु सदाह॥३०॥
स्वचरनँ समेटि मलपत सुहात, जनु टारि मेदिनी मर्मजात ॥
आवर्त फिरत कति अति उताल,जलनिधि अनीकँ सुहि भ्रमन जाल

१भूमि का कंप(धूजना)सहन नहीं होने के कारण मानों दया करके उड़ने जाते हैं, धनुष रूपी २ टेढे कंधे को खींच खींच कर जेरबंध रूपी ३ प्रत्यंचा को व्यर्थ करते हैं ॥ २७ ॥ गरदन के बीच में ४ सुवर्ण की सांकल शोभा देती है सोही उस धनुष की ५ मूठ शोभायमान है और याल का लंबा ६ जूड़ा (केसपास) है सो बहुत भालोंवाला अपूर्व बाण है ॥ २८ ॥ गंभीरगति में ज्यों ज्यों ७ प्रत्यंचा ढीली होती जाती है त्यों त्यों ही ८ मानों वह तीर खिच ता है ९ बडा बालछा (पूंछ) है सो ही उस धनुष का पूर्ण शोभावाला १० भाथा है ११ इस प्रकार के धनुषवाले सब वे घोड़े शोभायमान हैं ॥ २९ ॥ प्रशंसा करके श्रेष्ठ१२उजाली (नेत्रों के ऊपर का वस्त्र) "यथार्थमें इस का नाम अंधारी है परन्तु विरुद्ध लक्षणासे लौकिक में उजाली कहते हैं" लगाई है सो मानों सालिग्राम की पुजा में १३ कनात लगाई है, उन घोड़ों के १४ फुरणों (नासिकाओं) में घुसकर १५ पवन बजता है सो मानों वह पवन पराजित हो कर १६दाह युक्त छिपता है "यहां बजने के कारण सदाह लिखा है अर्थात् कूकता हुआ छिपता है" ॥३०॥ १७ अपने चरणों को सिमेटकर छलांग लेते हुए ऐसे शोभा देते हैं मानों १८ भूमि के मर्म स्थानों को बचाकर जाते हैं कि कहीं इस के चोट नहीं लगजावै कितने ही घोड़े शीघ्रता पूर्वक १९ गोलकुंडा (चक्रा कार) फिरते हैं सो ही २० सेना रूपी समुद्र में भ्रमियों का समूह है ॥ ३१ ॥

पलटत दराज गति बाज पूर, जम जनक दर्प दारक जरूर ॥
आवृत्त वपु रोमन छवि अखर्व, सेवत कि चित्त रय पढन सर्व ।३२।
दिल्ली१रु सितारा२मिलि दुरूहं, जिन किय तयार इम बाजि जूह
सतदोय२००द्विरद किय सज्ज सग, अंदुक मलव अंचत अभग ३३
वारिधि जिहाज जिम लगत वात, हके इम पयपय भुव हलात ॥
गतिमद झरत मद अवर गात, विजयाऽभिसिक्त कटकाहिबनात
पृथुकुंभ सिरी करि पिहितं पीन, कंचुकि उरोज जनु थगितं कीन
रन नगर उच्च अट्टाल रूप, अतिसय बिसाल उच्छ्रय अनूप ॥३५॥
दुव२कुभ कुभ सिखरक दिपत, मंजुलध्वज लवित केतुमत ॥
जिन रक्खि वाम दक्खिन जरूर, सूंतहि सिखाय टरिजात सूर ३६
घुम्मत घुमडि घन सघन घोर, जावत मिटात पवमान जोर ॥
सुंडा फटकारत नभ सुहात, जिहिं त्रास सकि सिसुमार जात ३७
भननकि भ्रमर कुभन भ्रमत, किय पत्रभगि तिय कुच कि कत ॥

पूर्ण लपी गति से घाड़े पलटते हैं सो अवश्य १ यमराज के पिता का घमंड मिटाते हैं २शरीर के केशों की भ्रमरियों की ३बड़ी शोभा है सो मानों सब के कथन म वे चित्त के वेग को धारण करती है अर्थात् चित्त का वेग घोड़ से आगे नहीं बढता इसीकारण भ्रमरी रूप से उसी शरीर में गोलाकार फिरता है ॥ ३२ ॥ ४ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसे ५ घोड़ों का समूह ६ हाथी ७ लपी जंजीरें ॥ ३३ ॥ पवन लगने से ८ जैसे समुद्र म जहाज हिले तैसे पग पग प्रति भूमि को हिलाते हुए चले ६ अधम अथवा पिछले शरीर से मद मद मद् (जल) झरता है सो मानों सेना का १० विजय होने का अभिषेक करता है ॥ ३४ ॥ ११ बड़े और पुष्ट कुंभस्थलों को सिरी (मस्तक भूषण) से १२ ढके हैं सो मानों कांचली से कुचोंको१३ढके हैं युद्ध रूपी नगरकी१४बुरजें अत्यन्त लपी और उपमा रहित१५ऊंची हैं ॥३५॥ दोनों कुंभ कलश हैं सो तो सुमेरु पर्वतके शिखर हैं और सुंदर१६ध्वजा है सो ही उसके ऊपर का केतुमान नाम क जल विशेष है१७सारथिको सिखाकर१८सूर्य बाया दहिना रखकर टलजाता है॥३६॥१९पवनका ॥३७॥२०मानों पति ने स्त्री के कुचों पर कस्तूरी आदि लेपन

पच्छिन हटात बमथून पूर, गज्जत गुसैल मंडत गरूर ॥ ३८ ॥
आटोप[3] रचत अंगुलि उठाय, काकोदर[4] भोग कि काल काय ॥
भासत कलाप[5] ग्रीवा प्रभान, मंदरगिरि[6] बासुकि घेर मान ॥ ३९ ॥
दोलायमान[7] श्रवनन[8] दिखात, गिद्ध कि जटायु पच्छन हलात ॥
अंदुक[9] प्रलंब जो ह्वै न अंग, मारैं भलंगि बाजिन[10] मलंग ॥४०॥
जंजीर जबर जिनके सुहात, पद्धति हल पद्धति[11] रचत जात ॥
साजि डाकदार[12] हुव बिंटि संग, मारत बहु वेशाक[13] रचि मलंग ।४१।
दुति स्याम मुक्त कच[14] दरस देत, पब्बय रहे कि गरदाय[15] प्रेत ॥
बारूद बिहित[16] चरखी बिसाल, जे करत डरत मग चित्र[17] जाल ।४२।
मग मत्त चरन डारत मरोर, अदभुत दिखात गति ओर ओर ॥
बारूद पूर्ण[18] जिम चलत बान, इम चलत स्वैर[19] जिततित अमान४३
इक१निमिख निवर्त्तन[20] अंतराय, दुंजो२न[21] बनत निकटहि दिखाय॥
पच्छिम सन पूरब पलटि जाय, ह्वै बायु[22] लेत नैर्ऋत निराय[23] ॥४४॥
सत दुव २०० इम जंगम अद्रि सज्जि, बैल[24] हुव तयार रनतूर बज्जि

की रचना की है १ सुंड के जल कणों से २ गुस्से (क्रोध) में होकर ॥ ३८ ॥
३ सुंड के अग्रभाग को उठाकर मस्तक पर टोप वा छत्र करते हैं सो मानों
४ काले शरीरवाला सर्प फण करता है ५ गरदन पर कलावा दीखता है सो
६ मंदर नामक पर्वत के बासुकि सर्प के घेरे के समान है ॥ ३९ ॥ ७
हिलते हुए ८ कान दीखते हैं सो मानों जटायु पच्च हिलाता है जिन के शरीर
पर लंबी ९ जंजीर नहीं होवे तो मलंग लगाकर १०घोड़ों की मलंग को दबादे-
वैं ॥ ४० ॥ जिनके बडे जंजीर, हल (लांगल) के मार्ग के समान ११मार्ग करते
जाते शोभा देते हैं १२सांटमार सज्जित होकर उनको घेर कर साथ हुए सो
मलंग लगाकर १३भाले मारते चले ॥ ४१ ॥ उन सांटमारों की १४केश रहित
काली कांति दीखती है सो मानों पर्वत को प्रेत १५घेर रहे हैं १६बारूद की
बनी बड़ी चरखियों से डरकर मार्ग में १७आश्चर्य करते हैं ॥ ४२ ॥ जैसे बारूद
का १८ भरा हुआ बाण स्वतंत्र होकर जाता है तैसे १९ स्वतंत्र होकर इधर
उधर जाते हैं॥ ४३ ॥२०पलटने में वे हाथी एक निमेष से२१दूसरा निमेष(क्षण)
नहीं होने देते और समीपही दीखते हैं २२ बायु दिशा में होकर नैर्ऋत दिशा
को २३समीप लेते हैं ॥ ४४ ॥ २४ सेना में तयार हुए ॥४५॥

जवनन कुरान पढि किय निमाज, जुरिहकिय आरुहि बाजिराज
रव वजीर निजामनमुलक सत्थ, सब साह सेन सज्जिगं समत्थ॥
इत हुव मलार१दत्ता२तयार, सभा३सुत जनकू४ रन सिंगार ।४६।
जल गंग न्हाय करि दान जत्थ, पढि बिष्णुकवच दस नाम पैत्थ॥
साजि यों बनि दिल्लिय दल सहाय, लहि काल चले कर मुच्छ लाय ॥ ४७ ॥
इततें दरकुचन भरि उडान, पहुँच्योहि आय दिल्लिय पठान॥
दलकों पुर बाहिर कढत देर, नहिं मिलत भई दल अपर नेर ।४८।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशावुम्मेदसिंहचरित्रे स्वसुतद्वय २ सन्धि १ यान २ विग्रहा ३ ऽऽदिशिशिक्षयिषुबुन्दीन्दवरवाडपुरगमनसम्मुखसमागतमल्लारसम्मिलनश्रुतपठानअहमदपाहप्राप्तपंजाबप्रास्थितहुलकरसम्मतपरस्पप्रेषितपुत्ररावराट्सहप्रयाणान्यक्कृतजयपुरजनपदलुण्टनहुलकरसहायीहहुेशसुप्तशिविरस्थसुभटसुहरणाशदशरथसिंहसनाभिशस्त्रमरणाकोटपुत्तलीसैन्यशिविरस्थापननबाबगाजुद्दीखानस्वामिदिल्लीशाऽऽलमगीरमारण

१ सजी ॥ ४६ ॥ २ अर्जुन के दश नाम ॥ ४७ ॥ सेना को नगर से कढते देर लगी परन्तु ३ सेना रूपी दूसरे नगर में मिलते देर नहीं लगी ॥ ४८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, अपने दोनों पुत्रों को सन्धि, यान, विग्रह आदि सिखाने की इच्छावाले बुन्दीन्द्र का वरवाड़ पुर में जाना और सामने आये हुए मल्लार से मिलना १ अहमदशाह पठान को पंजाब में आया हुआ सुनकर, हुलकर की सलाह से पुत्रों को घर भेजकर रावराजा का हुलकर के साथ जाना और जयपुर देश का अनादर करके लूटना २ हुलकर के सहाई हड्डेन्द्र के डेरे में सोते हुए अपने उमराव सुहरणवाले दशरथसिंहका अपने सापिंडभाईके शस्त्रसे मरना और कोटपूतलीमें सेना का डेरा होने पर नवाब गाजुद्दीखांका दिल्ली के स्वामी बादशाह आलमगीर को मारने की खबर सुनना ३ इस कारण से पंजाब को छोड़कर अहमदशाह का दिल्ली के मार्ग को लेना ४ बुन्दी के पति को बुन्दी भेजकर

समाकर्णितैतत्त्यक्तपञ्जाबाऽहमदपाहदिल्लीसरणिसमासरणबु-
न्दीप्रेषितबुन्दीन्द्रलुण्टितसङ्करदापुरमल्लार १ जनकू २ दत्ता ३ ऽऽ
दिदिल्लीसहायीभवननिवेदितमहाराष्ट्रोपायनीभूतदण्डद्रम्मकोटिगाजु
द्दीखाना ऽऽलीगोहरदिल्लीगद्दिकोपविशनसज्जितसकलपुरप्राकार
पिस्पर्शयिषुपठानपृतनाप्रश्लेषणामष्टचत्वारिंशो ४८ मयूखः ॥ ४८ ॥
आदितः ॥३२९॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लहलहमजनूँको ललित, तकिया बाहिर तत्थ ॥
मंडि मरन दुव दल मिले, सज्जन झारि समत्थ ॥ १ ॥
सक रस ससि बसु ससि१८१६सिसिर, आगम उदित अनेह
संकर२पँहँ पठयो समर, न्यूँता नूतन नेह ॥ २ ॥
पृतना इम मिलतैं प्रथम, लग्गी तोपन लाय ॥
रसना इक१ सततीन३०००रव, जे किम बरने जाय ॥ ३ ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

दग्यो तोप संदोह छोनी दरारी, बढ्यो धूम आवाज घाँघाँ बिथारी ॥
फबैं लोल गोला करी कुंभ फुट्टैं, पताकानके पुंज टुट्टैं बिछुट्टैं ॥४॥

और संकरदा पुर लूटकर मल्लार, जनकू, दत्ता आदि का दिल्ली का सहाय होना, मरहठों की भेट के दंड के क्रोड़ रुपये नजर करके गाज़ुद्दीखां का आली गोहर को दिल्ली की गादी पर बिठाना ५ सब का सज कर पुर के कोट से पठानकी सेना को पीसने की इच्छावालोंका सेनासे मिलने का अड़तालीसवां मयूख समाप्त हुआ॥४८॥ और आदि से तीन सौ उनतीस३२९ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ समय २ शिव के पास ३ युद्ध का ४ नवीन स्नेह से ॥ २ ॥ ५ सेना. ग्रंथकर्ता कहते हैं कि मेरी एक ६जिव्हा से ७ तीन सौ तोपों के शब्द क्योंकर कहेजावैं ॥ ३ ॥ तोपों के ८ समूह के चलने से भूमि फटी और उन तोपों का धुआं बढ कर ९ दिशा दिशाओं में आवाज फैली शोभायमान चपल गोलों से१०हाथियों के कुंभस्थल फूटते हैं और ध्वजाओं के समूह टूटकर गिरते हैं।४।

बनैं फैरपैं फैर ज्यों वाक्यवादी, गिरैं चोटसैं लोट सादी निसादी ॥
उडैंबाजि आयास धारा विसारैं, बिमानावली बीच आयास डारैं ।५।
जगैं घोर अंधारमै सोर ज्वाला, मनों भद्दके अंद्रमें बिज्जुमाला ॥
हलैं सेसको ज्यों फँटाको हजारा १०००, सिं दैं त्यों मही कान्त कल्पाभिसारा ॥ ६ ॥
लगैं चोटपैं चोट मातगें लोटैं, उडैं पंत्ति जोटैं बचैं कोन ओटैं॥
घनैं घुम्मि घोंघां झुकै हत्थि घोरे, बनैं ज्वालमाला अंकूपार बोरे७
कछू काल दे तोप यों रारि किन्नी, लरे फेरि लै खग्ग है बग्ग लिन्नी॥
धमकी धरा वाढकैं वाढ बज्ज्यो,बढ्यो वीरको भीरुको नीर लज्ज्यो८
मिले दुग्ध पानीय ज्यों जोध मत्ते, कला ऐंदंवीसे चले काल कत्ते॥
कटैं कुंभें बाहित्थ सुंडा कलावा, कहां रुड घुम्मैं अटैं देत कावा९

१ शास्त्रार्थ करनेवाले के वा नैयायिक के वचनों के समान तोपों के फैर होते हैं जिनकी चोट से २ घोड़ों के सवार और ३ हाथियों के सवार लुढ़कते हुए गिरते हैं घोड़े अपनी पांचों धाराओं (गतियों) को भूलकर ४ आकाश में उड़ते हैं सो ५ विमानों की पंक्ति में भ्रम पटकते हैं ॥ ५ ॥ उस भयंकर अंधारे में बारूद की झाल जलती है सो मानों भादों (भाद्रपदे) के ६ सजल मेघ में बिजुली का समूह चमकता है "यहां सामान्य तथा आर्द्र शब्द के कहने पर भी बिजुली के संबंध से मेघ का ग्रहण है" ज्यों शेषनाग के ७ फणों का हजारा (हजार फण) हिलता है त्यों भूमि ८ भीजती है और १० प्रलय के समान ९ लोह (शस्त्र)चलता है अर्थात् शस्त्र चलते हैं ॥ ६ ॥ चोट पर चोट लगने से ११ हाथी लोटते हैं और १२ पैदलों के जोड़े उड़ते हैं सो किसकी आड में बचें बहुत घूम कर ठाम ठाम हाथी घोड़े झुकते हैं और १३ अग्नि रूपी समुद्र में डुबोए हुए बनते हैं अर्थात् जलते हैं ॥ ७ ॥ कुछ समय तोपों से इस प्रकार युद्ध करके फिर तरवारें लेकर वीरों ने घोड़ों की बागें उठाई जिससे भूमि धुजनेलगी और धार पर धार बजनेलगा वहां वीरों का पराक्रम बढ़नेलगा और कायर लज्जित होनेलगे ॥ ८ ॥ मस्त वीर पानी और दूध के समान मिलगये और १४इन्द्र संबंधी (वज्र वा बिजुली) की भांति काल रूपी खड्ग चले अथवा द्वितीया के चन्द्रमा की कलावाले (उज्वल और टेढे) काल के समान खड्ग चले हाथियों के १५ कुंभस्थल, ललाट के अधोभाग सूंड और कलावे कटते हैं और कहीं पर रुंड घूमते और फिर कर गोलकुंडा लगाते

छिकैं *कंधरा जीन वाजीन छुट्टैं, फबैं लीन जालीनमैं †संगि फुट्टैं॥
उडैं अस्थि ‡संघात के ओर ओ रं, छले मेघ मानों घनैं§ग्राव छोरें१०
कटैं उच्छटैं टोप जाली करक्कैं, फटैं पेट नागोद फैलैं फरक्कैं ॥
कढैं नैन छोरैं न लग्गी कनीनी, लसैं षट्पदी फूल ज्यों संगलीनी११
बरक्कैं भरैं कंधरा अंस बाहा, उडैं मूर्द्ध मज्जा दहीसार आहा ॥
दिपैं बीर सुंडिज्ज जुज्झैं दिखावैं, परैं सस्त्रमैं सस्त्र छेटी न पावैं१२
व्यवच्छेद धन्वीनके दंस बेधैं, नमंती जुरैं कोटि द्वैधार निसेधैं ॥
तकैं सूरहू दूरवेधी तमासा, उडैं बाज के बाजके मान आसा॥१३॥
गिनैं लस्तकैं सत्रु ठहे दूर गंठ्या, लहैं आंचि नीरैं सुपैं मन्नि लंठ्या
निहारो यहै चापमैं रीति नेठ्या, सुनैंही बनैं भीरु संठ्याऽपसंठ्या१४
वजैं पत्रणा सोक त्यों भै बिथारैं, मैंहातूणकी पूर्णता दीप्ति मारैं

हैं ॥ ६ ॥ * घोड़ों के कंधे कटकर जीन खुलते हैं और कवचों में लीन होकर फूटीहुई † बर्छियां शोभती हैं. कितने ही ‡ हड्डियों के समूह चारों ओर उड़ते हैं सो मानों मेघ बढकर बहुत § पत्थर (ओले) बरसाता है ॥ १० ॥ टोप कट कर उछलते हैं और कवच कड़कते हैं, १ पेट का कवच (पेटी) फटकर पेट फैलता और फुरकता है. नेत्र की पुतली को नहीं २ छोड़कर नेत्र निकलते हैं सो फूल के साथ में ३ भ्रमर की शोभा लेती है ॥ ११ ॥ ४ गरदन ५ कंधा और बाहू कटकर गिरते हैं ६मस्तक का भेजा उड़ता है सो ही ८प्रशंसा योग्य ७मक्खन है वीर लोग ९ पराक्रम को युद्ध करके दिखाते और प्रकाशित होते हैं और छेटी नहीं पाकर शस्त्र पर शस्त्र पड़ते हैं ॥ १२ ॥ १० धनुषधारियों के छोड़ेहुए बाण ११ कवचों को काटते हैं और धनुष की दोनों कोटियां (नोकें) नम कर मिलती हैं जो१२दो होने (जुदायगी) का निषेध करती हैं शूर लोक१३ दूर से बेधन करने का तमाशा देखते हैं और १४ कितने ही घोड़े १५ सिकरे (पक्षी विशेष) के बलकी आशासे उड़ते हैं ॥ १३ ॥ १६ धनुष की मूठ तो शत्रु को दूर मानती है और १७ प्रत्यंचा उनको खैंच कर १८ छेदन करने के योग्य मानकर समीप लेती है. धनुष में यह १९ नवीन रीति देखो कि२०सुनते ही कायर बायें दाहिने होजाते हैं अर्थात् सन्मुख नहीं ठहर सकते॥ १४ ॥ ज्यों २१बाणों की सनसनाहट बजती हैं त्यों भय फैलता है और २२ बड़े भाथे की

हसैं कत्तरी सिंजकों श्रानि ज्योंज्यों, तितिच्छूटरैंदुष्टतैंसाधु त्योंत्यों
नछोरैं तऊ तामसी वृत्ति धारैं, उपक्का कुप्पि ताकों तबैं दूर डारैं॥
परैं हीन सपाह के चर्म पती, भली जो बिनाँ अंघ्रि दौलेप भंती१६
बहैं सूल१ छूरी२ इली३ त्यों बरच्छी४, छबैं सालभी पति ज्यों
तीर५ पच्छी॥
दिपैं भू खेंलूरी बनी कोस द्वेद्वे, इलैं मत्त घाँघाँ खरैं रुड ठेहठेहे१७
मह्रा तोरमैं प्रेत आलाप मारैं, नचैं जोगिनी लोंन भैरों उतारैं॥
हसैं डाकिनी साकिनी घुम्मि हल्लैं, घनी रासमैं घुम्मरी घेर घल्लैं१८
जगी ज्वाल ज्यों कंतके दंत जारैं, मरी यों डरी दिग्गजी चीह मारैं
अमाँ इंदुको रूप आदित्य धारयो, चिके चैंक्क चक्कीन हाहा
उचारयो॥ १९॥
फबैं खग्ग लग्गे बजे टोप फोरैं, घरयारी मनों प्रातकी घात घोरैं॥

पूर्णता प्रकाश करती है ज्यों ज्यों १तरवारें आकर २मत्यषा को काटती हैं त्यों त्यों दुष्ट से ३ क्षमाशील साधु टले इस प्रकार वे धनुषवाले तरवारवालों से टलते हैं॥ १५॥ तोभी ४ तमोगुणी वृत्ति को धारण करके वे तरवारोंवाले धनुषवालों को नहीं छोडते तब ५मत्यषा साधु के समान क्रोध करके उनको दूर डाल देती हैं मूठ से हीन होकर ६ढालों की पंक्तिया पड़ी हैं सो मानों बिना ७ पैरोंवाले सुंदर ८ कछुओं की तरह हैं जिस प्रकार शूल, छुरा, तरवार और बर्छी चलती है तैसी प्रकार ९टिड्डियों की पंक्ति के समान बाण रूपी पक्षी चलते हैं यह भूमि दो दो कोस तक१०शस्त्राभ्यासकी भूमि(सलाह।) बनकर शोभती हैं जहा पर दिशा दिशाओं में मस्त होकर खड़े हुए रुंड चलते हैं॥ १७॥ प्रेत ११ बड़े उच्च स्वर से गाते हैं, योगिनियां नाचती हैं और भैरव उन पर नोन (निमक) उतारते हैं डाकिनियां और शाकिनियां घूमकर हसी के साथ चलती हैं और नृत्य में बहुतेरी घूमर का घेर घालती हैं ॥१८॥ जली हुई ज्वाला ज्यों ज्यों १२ पतियों के दंतों को जलाती है त्यों त्यों डरी हुई दिशा की हथनियां मरी मरी कहकर चीखें मारती हैं सूर्य ने १३ अमावास्या के चंद्रमा का रूप धारण किया अर्थात् सूर्य नहीं दीखा जिससे चूक (भूल) कर १४ चकवा चकवियों ने हाहाकार किया ॥१९॥ तरवारें लगने से फटे हुए टोप बजकर ऐसे शोभा देते हैं मानों घड़ियाल बजानेवाला प्रभातकी

मचे कोप१उच्छाह२थायी न मावैं,तथाहास३बीभच्छ४सोभावतावैं२०
बिधाता२ बढी सृष्टितैं ३दर्प छंड्यो, मनों मौति विक्रेय४ बाजार मंड्यो
कुहू५ रत्तिमैं झंपि गिद्धी किलोलैं, डुबे सिंधु अंधार जे भोर६ डोलैं२१
घनें बान जोधानके उद्ध७ चारैं, मनों पूजिबे अच्छरी फूल डारैं ॥
बढैं मारपैं मार बिस्फार८ बानी, भयंकार आचार मंडैं भवानी॥२२॥
बनैं बावरी९कुंभ बानैत बुल्लैं, सतीकेरं नारेर १०ह्वै खीज खुल्लैं ॥
अनी प्रान के जानके होत सूनी, पुकारैं बढो रे बढो यों चमूनी११२३
मरे रे मरे भीरु कुक्कैं१२ पलावैं, खरे रे खरे बीर अक्खैं टिकावैं॥
अरैं संगि१३ के संगितैं अग्र ऐसैं, जुरे वैदुर्षी कोटि द्वै१४तिक्ख जैसैं२४
घनें बीर सुत्तेनकों भीरु घावैं, बकैं जीत भोरे बनीमैं बनावैं ॥
बिंदू१५ दारि दंतीन१६ बेधैं बरच्छी, अधो१७ह्वै चलैं अस्त्रकी१८ रेल अच्छी२५

घड़ियाल बजाता है. वीर रस मचकर उसका स्थायी उत्साह नहीं समाता इसी प्रकार हास्य और १बीभत्स रस भी शोभा दिखाते हैं ॥ २० ॥२ब्रह्मा ने बढी हुई सृष्टि का ३ घमंड छोड़ा और मृत्यु के ४ बेचने का बाजार रचा ५नष्टचंद्रा अमावास्या की रात्रि में झंप लेकर गिद्धनियां किलोलें करती हैं और ६ अंधेरे रूपी समुद्र में डुलकर भ्रमि रूप फिरती हैं ॥ २१ ॥ बहुत से वीरों के बाण ७ ऊपर चलते हैं सो मानों उन वीरों का पूजन करने को अप्सराएं फूल डालती हैं, मार पर मार होकर ८ धनुष के शब्द की वाणी बढती है अर्थात् धनुष का शब्द होता है और देवी रक्त पीने का भयंकर आचार रचती है ॥ २२ ॥ बानावंध ९ पागल स्त्री के घड़े के समान होकर बोलते हैं और १० सती के हाथ के नारियल रूप होकर क्रोध करते हैं "पागल स्त्री मटका और सती का नारियल ये दोनों शीघ्र नष्ट होजाते हैं" सेना के प्राण जाने से वह सूनी होती जाती है और ११सेनापति 'बढो बढो' पुकारते हैं ॥२३॥ कायर 'मरे मरे' कहकर १२भगते हैं और वीर लोग 'खड़े रहो खड़े रहो' कहकर उन्हें टिकाते हैं. १३ एक बरछी का अग्रभाग दूसरी के अग्रभाग से ऐसे मिलता है जैसे शास्त्रार्थ करनेवाले तीव्र १४ पंडितों की दो कोटि जुड़ै ॥ २४ ॥ कई सोते (कटे) हुए वीरों को भगनेवाले कायर ढूंढते हैं और अपनी बनी हुई आपसि में भोले स्वभाववाले बककर जीत बनाते हैं १५ हाथियों के १६ पीतवानों (कुंभस्थलों के मध्यभागों) को विदारण करके बरछियां बेधती हैं सो १७ नीचे को १८रुधिर की उत्तम धार बहती है ॥ २५ ॥

सुही नारि वक्षोज द्वे२ मैं बिसाला, मनों बित्थरी लंब मानिक्य
माला ॥
लगे सुंडिपैं स्याह के सेल हल्लैं, किधों कन्ह कालीयपैं घूमं घल्लैं२६
भये रंग१ कुल्हू२ भये लोहि२ भाले२, बलीबर्द३ भो बीर३ जी ४
इच्छु४ जाले ॥
किते पंत्ति घोरेनकों मुंड मारैं, मनों धेनु ऊधन्य बच्छा अहारैं२७
कहों अच्छरी सूरकों मंडि माली, बनावैं गरैं बाँह गावै बिसाली॥
कहों भिन्न कुंभीन लोही छुछक्कैं, किधों तिंदुतै फाल फुल्लिंग
तक्कैं ॥ २८ ॥
मनंकार भैकार ¹²भेरी बिथारैं, घटा भद्दकी जानि निर्घोस डारैं ॥
कहों टोपकों खंडि खंडा खटक्कैं, गुलाबी कली प्रात मानों च
टक्कैं ॥ २९ ॥
छिदे केक कुंभीनतैं कैराण छुट्टैं, ति ज्यों बाततैं तालतैं पत्राणं तुट्टैं॥
कहों क्रुद्ध बुक्केनकों मींडि तोरैं, मनों सूपमैं सूद निंबू निचोरैं३०

सो ही स्त्री के१कुचों के भीतर मानों मानिककी लंबीमाला फैली है हाथी की सुंड पर कितने ही काले रंग के२भाले हिलते हैं सो मानों कालीनाग पर श्रीकृष्णजी ३ घूमर लगाते हैं ॥२६॥ यह ४ युद्ध ही कोल्हू (घाणी) हुआ जिसमें भाले तो ५लाठ हैं और वीर रस इस कोल्हू मे चलनेवाला ६ बैल और ७जीव ही ८इक्षु (गन्नों) के समूह हुए८कितने ही पैदल घोड़ों के मस्तक की टक्कर मारते हैं सो मानों९गौ के स्तनों को बछड़ा पीता है॥२७॥ कहीं पर शूरों को अप्सराए माला युक्त बनाकर गलबाहीं डाल कर ऊंचे स्वर से गाती हैं और कहीं कटेहुए १० हाथियों से लोहू की पिचकारियां छूटती हैं सो मानों ११ तींदू वृक्ष से अग्निकण उड़ते हुए दीखते हैं ॥ २८ ॥ १२ नौबत भणकारी शब्द फैलाती है सो मानों भादों की घटा गाजती है कहीं पर टोप को काट कर १३ खांडा(सीधी तलवार) खटकता है सो मानों प्रभात समय में १४ गुलाब की कली चटकती है॥ २९ ॥ कई हाथियों से कटेहुए १५कान छूटते हैं सो मानों पवन से तालवृक्ष के १६पत्ते टूटते हैं कहीं पर क्रोधित हुए वीर बुकों गुरदों को तोड़कर १७ मसलते हैं सो मानों १८ दाल में १९ रसोईदार नींबू निचोड़ता है ॥ ३० ॥ कहीं पर बैठेहुए वीर बहुत घावों से घूमरहे हैं और कहीं पर दौड़ कर क्रोध से क्रोध लगती है

कहौं बीर बैठे घनें घाय घुम्मैं, झपट्टैं कहौं लुत्थितैं लुत्थि झुम्मैं
अहारैं कहौं ऐंचि गोमायु अंतौ, महारैं मनों पन्नगी मार पंती ।३१।
कढैं डाकिनी लिप्त लोहां कलेजो, रँगे पट्ट ज्यों मट्टतैं रंगरेजी ॥
हबक्कैं कहौं घाय बुल्लैं हजारैं, मनों तेगके ताप आक्रंद मारैं ३२
बिनोदैं कहौं कंक बुल्लैं बनावैं, मनों बंदि ईरानको जै मनावैं
तमंके इतै संग दिल्ली सितारे, उमंगे उतैं मिच्छ ईरानवारे ॥३३॥
दुहूँ ओर यों हत्थ अच्छे दिखाये, घने हत्थि त्यों सत्ति औ पत्ति घाये
सितारा रु दिल्ली थके दैव सारैं, मची आन ईरानकी भाँन मारैं३४
छक्यो लोह संभा तनैं १ देह छुट्टयो, तथा बीर दत्ता २ पर्यो तेग
तुट्टयो ॥
जयानंद३कै जोरकै घाय लग्गे,भिदे दक्खिनी ए३घने हारिभग्गे३५
अछूती अनी इक्क मल्लार१ कढ्यो, बली देस ईरानको जोर बढ्यो
दुर्यो भज्जिकैंखान गाजुद्दि दिल्ली,पराजै भयो जुद्धकी हौंसपिल्ली

॥ दोहा ॥

पुनि तजि खान कनौज तजि, आलीगोहर साह॥
हुव सरनागत जट्टको, लग्गि भरतपुर राह ॥ ३७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

मिले अवर दिल्लीपतिके तब, सत्रुनमाँहिं नबाब सुभट सब ॥
इक हाफिज रहमुत्तुल्ला१ सठ, बिरचि हराम सुजाद्दोला२ हठ ॥३८॥

कहीं पर १गीदड़ आंत को खैंचकर खाते हैं सो मानों मयूर २ सर्पों की पंक्ति को मारता है ॥ ३१ ॥ कहीं डाकिनियां लोहू से लिपे हुए कलेजे ऐसे निकाल ती हैं जैसे रंगरेज रंगेहुए वस्त्रों को माट से निकालता है कहीं पर हजारों घाव 'हबक हबक' बोलरहे हैं सो मानों तरवार के ताप से ३ कूकते हैं॥ ३२ ॥ कहीं ४ विलास करते हुए कंक पक्षी बोलते हैं सो मानों ५ भाट लोग ईरान का जय मनाते हैं इधर दिल्ली और सितारा के ६ साथियों ने क्रोध किया और ७धर ईरान के यवन उत्साह युक्त हुए ॥ ३३ ॥ ७ सत्ति घोड़े ८ पैदल ९ भाग्य के आधीन होकर१०कांति ॥ ३४ ॥ ११संभा का पुत्र ॥३५॥३६॥३७॥३८॥

बहुरि नजीमुद्दोला३ वालिस, पुनि साहुल्लाखान४ मिलन मिस ॥
अहमदखान पठान माँहिं इम, जुलमी मिलि सब भये दास जिम३९

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेद सिंहचरित्रेऽहमदषाहरणविजयनसम्भासुत १ दत्ता २ वीरशय्याशयनजनकू ३ ततप्रापणसपरिकरमल्लार ४ निष्कसनकान्दिशीककलीजखानभरतपुरजट्टशरणामहराहाफिजरहमुत्तुल्ला १ नवाबसुजाउद्दोला २ नजीमुद्दोला ३ साहुल्ला४ऽऽदिदिल्लीशपरिकरसपत्नपठानषाहभेदोपायविषयीभवनमेकोनपचाशत्तमो ४९ मयूखः ॥ ४९ ॥ आदित. ॥३३०॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

दत्त बिगरयो दिल्लीसको, मरहट्ठन गत मान ॥
बच्यो इक१ हुलकर बली, जित्यो अहमदखान ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

जित्यो अहमदखान साह नादरको मारकें ॥
दिल्ली दक्खिन दंहि बढ्यो निज जय बिसतारक ॥
अंतरवेदी आदि बिखय मडल अप्पन बस ॥
प्रविस्यो पूरबमाँहिं रचत स्वाधीन हुकम रस ॥
गगा रु जमुन विच गयउ जब कलह विजय कोतुक करत॥

---

१ मूर्ख ॥ ३९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में अहमदशाह का युद्ध में विजय होना और सभा के पुत्र दत्ता का मारा जाना १ जनकूका घायल होना और परगह सहित मल्लार का निकलना २ कलीजखाँ का भाग कर भरतपुर में जाट का शरण लेना३ हाफिज रहमुत्तुल्ला, नवाब सुजाउद्दोला, नजीमुद्दोला, साहुल्ला आदि दिल्ली के पति की परगह का शत्रु पठान अहमदशाह के भेद उपाय से उसके वश में होने का उनचासवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥४९॥ और आदि से तीन सौ तीस ३३० मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ मारनेवाला २ देश

भूपाल प्राच्य हाजिरि भये सब अधीन हित अनुसरत॥२॥

॥ दोहा ॥

आलीगोहर साह इत, तुरकन पति हत तोर ॥
आहवे जय ईरानको, जानि भयो गत जोर ॥ ३ ॥
संध्याकों संग्रामतैं, इत मल्लार उठाय ॥
भिसंकनको आचरि भनित, दिन्नें धाय दबाय ॥ ४ ॥
पठयो कग्गरं नन्द प्रति, द्रुतं लिखि दक्खिन देस ॥
इहाँ पराजय अप्पनौं, सबविधि भयउ असेस ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनत तमकि श्रीमंतसेन पठयो बहोरि सजि ॥
सेनानी निज सूनु रच्यो बिश्वासराव१ रर्जि ॥
निज काका पुनि निडर धीर चीमा१ अभिधानक ॥
भट दोउन२ सिर भीर अरपि दिय हुकम अचानक ॥
अंर जाहु पुत्र काका उभय२ दलहु जंग ईरान दल ॥
सत्तरि हजार ७०००० तुम संग भट खंडहु गाढ असेस खल ६
सुनि चीमा१ बिश्वासराव१ दुव२ लै दल दुद्धर ॥
मुदित चले मरहट्ठ अवनि मिच्छन भेर उद्धर ॥
नाना रंग निसान उदित बज्जिग ध्वनि आयत ॥
कुंभिन नाना केतु खुल्लि हंकिय खेटायत ॥
पक्खर प्रसार छादित पहुमि प्रचुर कुंत अंबर पिहितं ॥
आवाज मुलक फुट्टिय असह बढत सेन संगर बिहितं ॥७॥
नागराज फन फटत कमठ हढ पिट्ठि करक्कत ॥
गिरत भार तजि गह्ह दह्ह बाराह बरक्कत ॥

१पूर्वदिशा के राजा ।२।३।२युद्ध में ३वैद्यों का कहा करके ।४।४पत्र ५शीघ्र ॥५॥६सेना पति७अपने पुत्र को किया८प्रीति करके९चीमा नामवाला१०शीघ्र ।३।११यवनोंके भार से भूमि का उद्धार करने के लिये१२खेटा (युद्ध) करनेवाले१३बहुत भालों से १४आकाश को ढका१५युद्ध करने को॥७॥ शेषनाग के फण फटकर कमठकी दृढ

हरि दिग्गज डगमगत लगत वेपथु लोकेसन ॥
छुट्टिग छितिपन महल्ल दहल्ल फट्टिग सब देसन॥
मेवास त्रास संकित दुमद हेरत सब आलोचि हिय॥
चतुरंग प्रचुर दक्खिन चढत किहिं सिर कोप कृतांत किय८
गिरिन चूर मिलि आँव धूरि अंबर संकुलि थट॥
मिटि दुग्गम मेवास बनत पद्धर बट उब्बट॥
अति अलात झरि अग्गिं लग्गि फैलत हय नालन॥
तरु तालन तुंगत्व ढह्यो जावत गज ढालन॥
बजि मेंडु१ बंब२ प्रतिवादका३पटह४विजय मर्दल५पैणव६॥
रस वीर बढत सिंधुव रुचिर राग अतुल आलाप रव ॥९॥
फोजन लगि लगि फेट सुरत प्रतिहत रय मारुत॥
मिच्छन थर थर मुलक होत घरघर डर हारुत॥
वन्य सत्व दल बीच रहत थकि थकि हत रहंस॥
मेंहुरे सलिल मिलाप तकत चदोल पंके तस॥

पीठ टूटी, भार पड़ने से गाढ छोडकर वाराह की दाढ टूटी, दिशा के हाथी डरकर हिलने लगे, लोकपालों को १ कंप होने लगा २राजाओं से महल छूटने लगे, दशों दिशाओं में ३ भय फैलगया, इस सेना की त्रास से शंका होकर ४लुटेरों के घरों में उदासीनता हुई और अपने हृदय में सब लोग यह५विचारने लगे कि दक्षिण की बहुत सेना चढती है सो ६ यमराज ने किस पर कोप किया है ॥ ८ ॥ पर्वतों का चूर्ण होकर ७ पत्थर पिसकर उनकी धूलि के समूह से आकाश ८ भरगया, चारों ओर लुटेरों के ९ दुर्गम घरों का नाश होकर मार्ग और अमार्ग सीधे होगये, घोडों की नालें लगकर अत्यंत १० अग्नि झडी, तालवृक्षों की ११ उंचाई के समान १२हाथियों के झंडे गिरनेलगे १३वाद्य विशेष, नगारे, १४ मांगलिक बाजे, पटह नामक बाजे, मर्दल और १५ ढोल बजकर वीर रस बढा और सुंदर सैंधवी रागिनी के बड़े आलाप का १६ शब्द हुआ ॥ ९ ॥ फौजों की फेट लगने से १७ पवन का वेग रुकने लगा, म्लेच्छों का मुलक धूजकर भय से घर घर में १८ हाहाकार शब्द हुआ वन के १९ जीव २० हतवेग होकर थक थक कर सेना के बीच में रहनेलगे जिस २१ सेना के आगेवालों को पानी मिलता है उसी के पीछेवालों को २२कीचड़

सं¹तनुतनूज रन तल्प सम नभ सुहात तोमर निकर² ॥
कै नभ निखं³ग रक्खिय कुपितश्रीमंतहिं रन करन सर॥१०॥

॥ दोहा ॥

मरहट्ठन दल इम अमित, मत्थ घसत ब्रह्मंड ॥
हिंदुसथान प्रबिष्ट हुव, अरिगन हनन अ⁴खंड ॥ ११ ॥
अहमदखान पठान इत, बढिगो अंतरवेद ॥
दिल्लिय पहुँचे दक्खिनी, खलन प्रसारन खेद ॥ १२ ॥
दिल्लियपुर प्रबिसि हुसह, मरहट्ठे छक मत्त ॥
आलीगोहरकों अटकि⁵, छि⁶तिप भये धरि छत्त ॥ १३ ॥
नन्ह पि⁷तृव्यक⁸सूनुरसन, मिल्यो आनि मल्लार ॥
अक्खिय दिल्लिय करहु अब, सुद्ध धरम अनुसार ॥ १४ ॥
मुगलनके तब सब महल्ल, धीरन लिन्न धुपाय ॥
गं⁹व्यपंच जल गंग करि, दिय दिल्लिय छिरकाय ॥ १५ ॥
वा¹⁰स्तुकर्म अरु हु¹¹वन बलि, सु¹²रपूजन करि सूर ॥
धारि नि¹³गम हिंदुन धरम, प्रेर्यो दिल्लिय पूर॥ १६ ॥
ग्रीखम ऋतु मुनि सासि धृति१८१७म, इम बनि दिल्लिय ईस॥
दल सज्जित किय दक्खिनिन, रचि सत्रुन सिर रीस ॥१७॥
अहमदखान पठान उत, बहुदिन अंतरवेद ॥
रह्यो अमल अप्पन रचत, भूपन डारत भेद ॥ १८ ॥
दिल्लीपति इत दक्खिनी, हुव सो सुनि हुसियार ॥

मिलता है १ भीष्म की शरशय्या के समान भालों के २समूह से आकाश शोभित होता है किधौं वह आकाश भालों से ऐसा दीखता है कि मानों श्रीमन्त ने क्रोध करके आकाश को ३ भाथा बनाकर उस में भाले रूपी बाण रक्खे हैं ॥ १० ॥ ४ सब ॥ ११ ॥ १२ ॥ आलीगोहर नामक बादशाह को ५ रोककर ६ आप दिल्ली के राजा हुए ॥ १३ ॥ नन्ह के ७काका के ८ पुत्र से ॥ १४ ॥ ९ पंचगव्य से ॥ १५ ॥ १० नांगल (वास करने का मुहूर्त) ११ होम १२ देवपूजन १३ वेद के अनुसार ॥१६॥१७॥१८॥

पलटयो अहमदखान पुनि, कुल हिंदुन खय कार ॥ १९ ॥
सप्त चंद धृति१८१७ मान सक, माघ सिसिर लहि मेल ॥
मकर चरोहित अहिमकर, आये तुरुक अठेल ॥ २० ॥
पतनाखक्ख१००००० पठानकी,दिल्लीकी दुव२००००० लक्ख
जाय मिली सब इकजुर३०००००,तमकि उठावन तक्ख२१

॥ पादाकुलकम् ॥

बढि इततैं बिस्वासराव१ बलि, चीमा२ अरु जनकू३ मलार४चलि॥
नैन मिलत आसिबर करि नग्गे, लरन खान अहमद सन लग्गे।२२।

॥ प्लवङ्गमम् ॥

मिलि इततैं मरहट्ठ व्रातं रन वित्थरयो, उततैं अहमदखान नक्खि हय उप्परयो ॥
वादी प्रतिवादी कि व्याकरन१ न्याय२ के, कल्पक रचि रचि कोटि भिरे पटु भायके ॥ २३ ॥

॥ चञ्चला ॥

यौं इरान१ दक्खिनी१ मिले चलाय द्वै२ अनीकि ॥
सस्त्रके प्रहार घोर बित्थरे मच्यो समीकि ॥
उँत्तमंग उच्छटैं कटैं कपाल भूरि भाल ॥
केक भिन्न व्है गिरैं सिपाह के भिरैं कराल॥२४॥
अच्छरीनके छपे बितान रूप लैं बिमान ॥

॥ १९ ॥ १ मकर संक्रान्ति पर चढा २ टस नहीं करनेवाला (सूर्य) ॥२०॥ ३ ताखे (घोड़े) उठाते हुए ॥ २१ ॥ २२ ॥ इधर से मरहठों के ४ समूह ने मिल कर युद्ध फैलाया और उधर से अहमदखां घोड़े उठाकर चला सो मानों ५ व्याकरण और ६ न्याय के वादी और प्रतिवादी ७ कल्पना की हुई कोटि रचरच कर ८ चतुरता की रीति से भिड़े ॥ २३ ॥ इस प्रकार ईरानी और दक्षिणी दोनों सेनाओं को चलाकर मिले शस्त्रों के घोर प्रहार फैलकर ९ युद्ध हुआ जिसमें १० मस्तक उछटनेलगे कपाल और ११ बहुत ललाट कटनेलगे कितने कट कर गिरने लगे और कई सिपाही भयंकर युद्ध करनेलगे ॥ २४ ॥ अप्सराओं के विमान १२ चंदुए की तरह छागये चीलहें, गिद्ध और सिचान

चायसौँ रहे किलोलि चिल्ह[1] गिद्ध[2] र्‌यौँ सिचान[3] ॥
जुग्गिनीनकी जमाति आनिकैं नची जरूर ॥
साकिनीनके समूह उल्लसे सिराहि सूर ॥ २५ ॥
सिंहकौं अरोहि कालिका रु बैलकौं महेस ॥
आय संगही खरे बनैं तमासगीर बेस ॥
दान सुक्कि दिक्करी करंत चिक्करी पुकारि ॥
सेस औ बराह कुम्म होसकौं रहे बिसारि ॥ २६ ॥
र[3]त्तमैं भरे कबंध[4] मत्त के फिरैं उताल ॥
भूमिके तनूज[5] जानि आनि ए नचैं बिसाल ॥
काचकी चुरी समान होत खंड खंड केक ॥
उल्लटैं प्रहार[6] भीरु ही फटैं हटैं अनेक ॥ २७ ॥
कालखंज[1] उच्छटे कटे गिरंत प्लीह[2]क्लोम[3] ॥
होत खग्ग[10] आगिमैं सुमार हीन प्रान होम ॥
जो[12] तजैं अनेक भीरु भज्जिबो बिचारि जंग ॥
ज्यौं निमग्न[13] बारि प्रान त्रानकौं गहैं तरंग[14] ॥ २८ ॥

पक्षी उत्साह से किलोलें करने लगे. योगिनियों की जमात निश्चय ही ना[चने] लगी और शाकिनियों के समूह वीरों की प्रशंसा करके हर्ष युक्त हुए ॥ [२५ ॥] कालिका सिंह पर और महादेव बैल पर १ चढकर आये और साथ ही [अ]धिक तमासबीन बनकर खड़े रहे २ दिशाओं के हाथी मद सूखकर [चि]ंघार कर पुकारने लगे. शेषनाग, बाराह और कच्छप चेत भूलगये ॥ २[६ ॥] [३] रुधिर में भरेहुए कई मस्त ४ कबंध (विना माथे के क्रियावान् धड़) शी[घ्रता] से फिरनेलगे सो मानों कई ५ पृथ्वी के पुत्र (मंगल) आकर नाच करते हैं कई वीर काच की चूड़ी के समान टूक टूक होते हैं और ६ कई कायर [प्रहा]रों से उलटाते हैं और हृदय फट कर हटजाते हैं ॥ २७ ॥ ७ कलेजे उछटे और कटेहुए ८ तिल्ली ९ और ९ फेफरे गिरते हैं १० खड्ग रूपी अग्नि में [११] गणना रहित प्राणों का होम होता है अनेक कायर युद्ध से भगना विचार १२ जीव छोड़ते हैं जैसे १३ पानी में डूबता हुआ प्राण की रक्षा के लिये उसी पानी की लहर को पकड़ता है ॥ २८ ॥

*प्रोथ१ त्यों इय †च्छटा२ कटैं ‡निगाल३ §कश्य४ पीनें ॥
होत अंग हीन ह्वै गिरैं ¶बिभंग तग१ जीन२ ॥
खग्गघात द्वार ह्वै चलैं अनेक रत्त खाल ॥
वप्प माय उच्चरैं फिरैं अनेक भै विहाल ॥ २९ ॥
मंद केक भीरु भज्जि यों टरैं सहै न मार ॥
ज्यों कपीस मालकोसमैं ऋकार१ ओ पंकार२ ॥
केक वीर हत्थकों भले दिखात खग्ग आनि॥
षड्ज अंत्य मूर्च्छना बिलावली बनात जानि ॥ ३० ॥
टंकैरैं अमाप चाप बानको बनैं बितान ॥
कालको निदान लैन ज्यां लगै प्रवीर कान॥
के चलै कृपान१ सगि२ कुंत३ त्यों छुरी४ कटार५ ॥
कंकटी कराल सूर छिन्नह्वै गिरैं कुढार ॥ ३१ ॥
हत्थदै महीं कितेक घुम्मिकैं उठै हकंत ॥
छाक कापिसायनी मनों गमार लै छकंत ॥
कालसे कराल खात के फिरैं छुटे कलंब ॥
बंक बिंब चक्र के चलैं मनों कि सक्र सब ॥ ३२ ॥

---

*फुरने †गरदन ‡कंठ और §पुष्ट कमर, इन अंगों से हीन होकर कटेहुए घोड़े और ¶विशेष भंगहुए तंग और जीन गिरते हैं तरवारों के घावों के द्वारा रुधिर के अनेक नाले चलते हैं तथा भय से अनेक लोग बेहाल होकर 'बाप' 'मा' ऐसे उचारते फिरते हैं ॥२९॥ इस प्रकार कई १मूर्ख और कायर भगकर ऐसे टलजाते और मार नहीं सहते हैं जैसे २हनुमान के मत के मालकोष राग में ३ ऋ और ४पंचम स्वर टलजाते हैं कई वीर तरवार के अच्छे हाथ ऐसे दिखाते हैं मानों ५षड्ज स्वर की अंतिम मूर्छना ६बिलावल रागिनी को बनाती है ॥३०॥ प्रमाण रहित धनुषों की ७ टंकार होकर बाणों का ८ वितान बनाता है और ९समय का कारण पूछने को १० प्रत्यंचा वीरों के कानों से लगती है कितने ही तलवार, बरछी, भाला, छुरी और कटार चलते हैं जिनसे ११कवच धारण करनेवाले भयंकर वीर कटकर १२ कुरी भांति गिरते हैं ॥ ३१ ॥ कितने ही १३ भूमि पर हाथ देकर घूमते हुए उठकर चलते हैं सो मानों १४मद्य की छककर गवार छकते हैं कई १५बाण छूटकर काल के समान भयंकर होकर फिरते हैं और कई १६टेढे बिंबवाले चक्र चलते हैं सो मानों इंद्र का १७वज्र है॥३२॥

उत्तमंग१ कंधरा२ गिरैं अतीव बाहु३ अंस४ ॥
बंसपिट्ठि पंसुली लगी मनौं कि पत्र५ बंस ॥
तेगके प्रहार केक रत्तके६ रचंत ताल ॥
सीस७है सरोज८ तत्थ कुंतलावली सिवाल ॥ ३३ ॥
धीर के करीनतैं मलंग झंप यों धरंत ॥
कूटतैं कि केहरी नदी कि तेहरी करंत ॥
बस्त्रहीन है किते दुरैं करीनें पाय बीच ॥
नाथ श्रावकानिके मनौं कि थंभ भौन नीच ॥ ३४ ॥
व्यंजनावली पिसाच सूंद के करैं बिसाल ॥
पाहुनी बुलात न्यौति जुग्गिनीन खेत्रपाल ॥
छुट्टिजात केनके गुमान बान पौन छैहि ॥
लब्धबर्ण अग्ग ज्यौं कुकाव्य छिन्न भिन्न हैहि ॥ ३५ ॥
होत सूर सोगुनैं उछाहमाँहिं दै प्रहार ॥
दैन लैन भिन्न पैं बढै कि वावनावतार ॥
होत अंग हानि पै कितेनके रुकै न पौंनि ॥

बहुत १ मस्तक २ गरदन, भुज और ३ कंधे गिरते हैं और ४ पीठ की हड्डी के लगीहुई पांसुली गिरती है सो मानों ५ बांस के लगा हुआ पत्ता गिरता है तलवार के प्रहार से कई ६ रुधिर के तालाब बनते हैं जिन में मस्तक तो ७ कमल और ८ केशों की पंक्ति शैवाल (सिंवाल) है ॥ ३३ ॥ कई धीर लोग ९ हाथियों से ऐसे कूदते हैं जैसे १० पर्वत से सिंह और तीन छलांग मारती हुई नदी कूदती है कई वस्त्र हीन होकर ११ हाथियों के पैरों में छुपते हैं सो मानों १२ जैनियों के देवता १३ मकानों के थंभों के नीचे स्थित होरहे हैं ॥ ३४ ॥ १५ रसोई पकानेवाले कई पिशाच १४ भोजन के पदार्थों की बडी पंक्ति बनाते हैं क्षेत्रपाल न्योता देकर योगिनियों को पाहुनी बुलाते हैं बाणों के पवन को १७ छूते ही १६ कइयों के घमंड ऐसे छूट जाते हैं जैसे १८ पंडित के आगे १९ खोटा काव्य छिन्न भिन्न होजाता है ॥ ३५ ॥ प्रहार देने में वीर लोग सौगुने उछाहवाले होजाते हैं जैसे देने और लेने में बावन अवतार के २० पैर बढते हैं अंग की हानि होने पर भी कितनों ही के २१ हाथ ऐसे नहीं रुकते जैसे द्यूत (जुए) के खिलाड़ी हारने में भी मिठास जानकर

जानि हारिमैं मिठास द्यूतके खिल्हार जानि॥ ३६ ॥
अद्धफार ह्वै गिरैं किते तुखार खग्ग ऊंति ॥
बंटि लेत भ्रात है२ मनों कि बप्पकी बिभूति ॥
केतु रत्त लिप्त के करीनपैं करै प्रकास ॥
लालरंग भास राधमासमैं मनों पलास ॥ ३७ ॥
डाकिनी कितीक बीर अन्त्र लेत कंठ डारि ॥
मालिनी बिडारि ज्यौं प्रमत्त लेत माल धारि ॥
के प्रबीर धीर कट्टि सत्रुकों नये प्रकार ॥
चित्रकार बुद्धिमैं करैं ति चित्र चित्रकार ॥ ३८ ॥
प्रकार१ अकार२ अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥
के गदा प्रहारकैं हनैं सकोप मत्थ इट्ठ ॥
लोहकार कूटपैं मचैं मनों कि लोह रिट्ठ ॥
प्रेत के प्रतप्त गोदकौं सिरात बॅक्र पोन ॥
लेत के प्रबीर व्याहि अच्छरी उतारि लोन ॥ ३९ ॥
रंगमांहिं बंदि के अनंदि बंदि देत रंग ॥
पिक्खि जंग जो रह्यो अनूरु रुक्किकैं पतंग ॥

खेलने सेनहीं रुकते ॥ ३६ ॥ १ कितने ही घोड़े तलवार की २ क्रीड़ा में ऐसे आधे कटकर गिरते हैं जैसे पिता के३ऐश्वर्य को दो भाई बांट लेते हैं कई हाथियों पर ४ रुधिर से पुती हुई ध्वजाएं प्रकाश करती हैं सो मानों ५वैशाखमास में लालरंग से ढाक प्रकाशित होता है ॥ ३७ ॥ कितनी ही डाकिनियां वीरों की आंतें कंठ में ऐसे डालतेती हैं जैसे मस्त मालनियां फूलों की माला ६ निकाल कर धारण करलेती हैं कई धीर वीर शत्रु को नवीन रीति से काटते हैं सो ७ चितेरे की बुद्धि में ८चित्राम करने का आश्चर्य कराते हैं ॥ ३८ ॥ कितने ही गदा का प्रहार ६ इच्छानुसार मस्तक पर करते हैं सो मानों १० लुहार की ११ ऐरन पर १२ लोह मुद्गरों का निरंतर प्रहार होता है कई प्रेत १३ तपे हुए मांस को १४ मुख के पवन से ठंढा करते हैं और कई वीरों को अप्सराएं नौन (निमक) उतार कर व्याह लेती हैं ॥ ३९ ॥ १५ युद्ध में कई १६भाट प्रसन्न होकर १७ नमस्कार करके शाबासी देते हैं अर्थात् प्रशंसा करते हैं, जिस युद्ध को१९सूर्य१८अरुण नामक सारथि को रोक कर देख रहा है कई तरवारु

केक तंग मारदै हरैं करीन उत्तमंग ॥
तोरि शृंग मेरुके चलैं मनौं कि धारगंग ॥
के प्रसन्न गूंदतैं अघाय होत गिद्ध कंक ॥
त्यौं प्रछन्नद्वारके प्रवेस खर्ब व्है निसंक ॥
हत्थि घाय फारमैं दुरैं कितेक भीरु दंत ॥
ब्रध्नको उगान जानि चोर ज्यौं दरी वसंत ॥ ४१ ॥
कुब्ज१ अंध२ खंज३ व्है नचैं पिसाच हास काज ॥
साकिनी बढाय दंत के करैं बिरूप साज ॥
ईसके हिये गयेहु सीस के कहैं उतारि ॥
नाथ लेहु धारि नैंक जुद्धदंतकौं निहारि ॥ ४२ ॥
सैंद्य स्वीय रत्त डारि टोपमैं कितेक सूर ॥
होय नम्रगात आत मात कालिका हजूर ॥
होत सत्व छोरि एकवारके किते महीप ॥
दीपिका करैं न तैलहीन ज्यौं दसा प्रदीप ॥ ४३ ॥
दोय२ प्रेत अंतलै फिरैं कहौंक घेर देत ॥

मारकर हाथियों के मस्तक काटते हैं सो मानों सुमेरु का १ मस्तक तोड़ कर गंगा की धारा चलती है ॥ ४० ॥ कितने ही गिद्ध और कंक २ मांस से तृप्त होकर प्रसन्न होते हैं जैसे ३खिड़की के द्वार में ४ छोटे शरीर वाला शंका रहित प्रवेश करता है तैसे ये मांसभोजीपची मृतक हाथी आदि के शरीरों में प्रवेश करते हैं कई कायर घायल हाथियों के५घावों में ऐसे छुपते हैं जैसे६सूर्य का उदय होना जानकर चोर ७ गुफाओं में घुसते हैं ॥ ४१ ॥ कई पिशाच हास्य करने को ८कुबड़े, अंधे और ९ खोड़े होकर नाचते हैं कितनी ही शाकिनियां दांत बढाकर कुरूप साज बनाती हैं, १०शिव के हृदय पर (मुंडमाला में) गयेहुए भी कई मस्तक कहते हैं कि ११ हे नाथ हमको उतार कर कुछ१२दांतों का युद्ध भी देख लो "क्योंकि खाली मस्तक केवल दांतों का ही युद्ध करसकता है" ॥ ४२ ॥ कई वीर अपना १३तुर्त का रुधिर टोप में डालकर १४ झुककर कालिका माता के सामने आते हैं. कई राजा एक ही वार में १५पराक्रम छोड़ देते हैं जैसे तैल से हीन १६दीपक में १७ बत्ती प्रकाश नहीं करती ॥ ४३ ॥

खेतकारें लट्टिबे लगैं जरीब जानि खेत ॥
जगमैं मलंग केक मल्ल व्है लगात जोध ॥
रंग माँहिं रंग लै करैं कितेक जोध रोध ॥ ४४ ॥
सत्रुकंठ दंत दे पिवंत रक्त केक सूर ॥
गड्डरी पछारि सारदूल ज्यों घनें गरूर ॥
मेघव्है मिले अनीक द्वै२ प्रकोप वातें मेल ॥
खग्ग त्यों कटार२ कुंत३ सांगि४ बान५ बुंद खेल ॥ ४५ ॥
के करीन अग लीन सस्त्रके करें प्रकास ॥
भानु अंधकारमें करें अनेक जानि भास ॥
सोरकी सिखा सिलग्गि जोरकी सु गज्जि जात ॥
औरकी कहौं कितीक घोरकी घटा दबात ॥ ४६ ॥
होत जंग यों लही समस्त दक्खिनीन हारि ॥
उद्यमी कहा करैं न देव भद्र आनुसारि ॥
वित्थरे घुमंडिकैं इरान मिच्छ जे बनाय ॥
खीजमैं भये गये घनैं अरीन प्रान खाय ॥ ४७ ॥

कुण्डलिका

कहीं पर आत लेकर दो पैल घेरा देते फिरते हैं सो मानों १ खेती करनेवाले छांटने के लिये खेत में जरीब लगाते हैं कई युद्ध में मस्त होकर कूदते हैं और २युद्ध में ३ प्रशंसा पाकर कई वीर दूसरों को रोकते हैं ॥ ४४ ॥ कई वीर शत्रु के कंठ में दांत लगाकर ऐसे रक्त पीते हैं जैसे ४ सिंह बडे घमंड से भेड़ को पछाड़ कर रक्त पीता है क्रोध रूपी ५ पवन के मिलने से मेघ रूप होकर जैसे दोनों ५ सेना मिली तैसे ही तलवार, कटार, भाला, बरछी और बाणों की ७बूंदों से खेलहे ॥ ४५ ॥ कितने ही ८ हाथियों के अगों में लीन हुए शस्त्र प्रकाश करते हैं सो मानों अंधकार में अनेक ९ सूर्य १० प्रकाश करते हैं बारूदसे अग्नि लगकर जोरकी गर्जना करती है सो और की क्या कहूं११मेघ कर घटा की गर्जना को दबाती है॥४६॥ इसप्रकार होते हुए युद्ध में दक्षिणियों की हार हुई सो१२भाग्य शुभ नहीं हो तो उद्यमी क्या करे१४ईरान के म्लेच्छ जीतकर घुमड कर१३फैले और क्रोध में होकर बहुत शत्रुओं के प्राण खा॰

पानिप करि जुज्झे प्रबल, इम दक्खिन ईरान ॥
करन अजय दूरीकरन, करन बिजय मतिमान ॥
करन बिजय मतिमान, रँग कुरुखेत जंग रुचि ॥
रुचिधर अहमदखान, जयो हुत अरि कृपान सुंचि ॥
न सुचि भजे मरहठ्ठ, न सुचि भज्जे स्पानिप करि ॥
निपें करि लये बधाय, गये अच्छरि पानि पकरि ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

चीमाके सिरकी चटकें, खोजि कँटक रन खेत ॥
हारयो करि आयास हर, हारयो तदपि न हेत ॥ ४९ ॥
जया तनय संध्या जिमहिं, जनकू अमरख जग्गि ॥
न मिल्यो रंचक पँलचरन, गो तरवारिन लग्गि ॥ ५० ॥

॥ षट्पात् ॥

तनय नन्हके तिमहि बीर बिस्वासराव बढि ॥
नक्खे तुरग निसंक पानि पकरहु पठान बढि ॥

---

*ऊपर कहीहुई रीति से १पराक्रम करके२हाथों से पराजय को ३दूर करने औ ४विजयकरने को दक्षिणी और ईरानी दोनों बुद्धिमान प्रबलता पूर्वक ऐसे ल जैसे बुद्धिमान् ५कर्ण और६अर्जुन ने कुरुक्षेत्र के७युद्ध क्षेत्र में ८रुचि पूर्वक यु किया था ९ कान्ति को धारण करनेवाले अमदखान ने तरवार रूपी १०अग्नि में शत्रुओं को होम करके जय किया, इधर मरहठों ने भी ११ शृंगार रस सेवन नहीं किया और१२बुद्धिमानी करके१३मृत्यु से नहीं भगे "माघ काव्य टीकाकार ने शुचि शब्द का अर्थ मृत्यु लिखा है" जिनको स्वर्ग में १४ फल बंधाकर देवताओं ने वधा लिये और वे मरहठे अप्सराओं के १५हाथ पकड़ गये ॥ ४८ ॥ चीमा के मस्तक के १६ टुकड़े को १७ सेना के युद्धक्षेत्र में हेरक शिव १८ परिश्रम करके थक गये १९ तोभी उस (मस्तक के टुकड़े) से स्नेह हीं छोडा अर्थात् उसके नहीं मिलने पर भी हेरते ही रहे ॥ ४९ ॥ २० मां खानेवालों को कुछ नहीं मिला ॥ ५० ॥ २१घोड़े डाले अर्थात् शत्रु की सेना घोड़े उठाये, यहां विरुद्ध लक्षणासे घोड़े उठाये ऐसा अर्थ होता है"२२हाथों

---

*ग्रन्थकर्त्ता (सूर्यमल्ल) के मत से कुण्डलिया छन्द में दोहे के अन्तिम चरण को पलटाने में अर्थ नहीं होवे तो उसको पुनरुक्ति मानते हैं जिसका ही उदाहरण यह कुण्डलिया है ॥४८॥

होरी जेम हुरियार निडर भारी अँसि नागिनि ॥
करी बहुत लरि कुमर दुंजन तिय दुसह दुहागिनि ॥
सुरलोक सँप्प अच्छरि सहित गधर्वन गीत सु गयो ॥
श्रीमत सुवन हारि न समुझि तरवारिन तिल तिल भयो ५१

॥ दोहा ॥

गमराव१ नारुव२ रघुव३, वाला४ त्र्यंवक५ बीर ॥
रामचद६ अचा७ रतन८, सखाराम९ हमगीर ॥ ५२ ॥
इत्यादिक उमराव सब, दक्खिनके तजि देह ॥
नाक गये बधन नवल, नाक कँलत्रन नेह ॥ ५३ ॥

इतिश्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रेलब्धजया ऽहमदखानसमस्थलीसांविशनानिवारितजनकूक्षतमल्लारपराजयपत्रदक्षिणप्रेषणश्रीमन्तनन्हसुतविश्वासराव१ पितृव्यकचीमा २ मुख्यसप्ततिसहस्र ७०००० सैन्यप्रेषणतदालीगोहरनिग्रहणदिल्लीशुद्धसंस्करणश्रुतेतदहमदखानाऽऽगमनदिल्ली १ रान २ सैनैक्यमहाराष्ट्रसैन्यमहारणभवनससामन्तविश्वासराव १ चीमा २ जनकू ३ मरणयवनजयसवर्द्धन पञ्चाशत्तमो ५० मयूखः ॥५०॥
आदित ॥ ३३१ ॥

पठानों को पकड़ा ऐसा कहकर १ होली के दिनों में फाग (गेहर) खेलै जैसे २ नागणी रूपी तरवार ३ शत्रुओं की स्त्रियों को ४ अप्सरा को पाई तरफ लेकर ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५ स्वर्ग में ६ नवीन ७ स्वर्ग की स्त्रियों से ॥ ५३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में जय पाकर अहमदशाह का अन्तरवेद में जाना और जनकू के घाव बिठाकर मल्लार का हारने का पत्र दक्षिण में भेजना १ श्रीमन्त नन्ह का पुत्र विश्वासराव और काका चीमा को मुख्य करके सत्तर हजार सेना को भेजना और उसका आलीगोहर को पकड़कर दिल्ली को शुद्ध करना सुनकर अहमदखां का आना २ दिल्ली और ईरान की सेना का एक होकर मरहटा की सेना से बड़ा युद्ध करना और उमरावों सहित विश्वासराव, चीमा, जनकू का मरना ३ यवनों की जय होने का पचासवां मयूख समाप्त हुआ ॥५०॥ और आदि से तीन

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पहिलैं जिम हुलकर प्रथित[1], बच्यो आयु बल एक ॥
जाय भरतपुर जट्टकैं, क्विन्नों धायन सेक ॥ १ ॥
छोरि कलीजहु भरतपुर, सुनि मल्लारहिं आत ॥
गयो हैदराबाद भजि, आलयँ[2] निज अकुलात ॥ २ ॥
किय स्वागत मल्लारको, मुदित जट्ट रविमल्ल[3] ॥
रखतँ[4] द्रव्य सब नजरि करि, ढय्यो दक्खिन[5] ढल्ल ॥ ३
तब हुलकर कछु दिवस तहँ, रहि रचि कटक नवीन॥
भंडअटेरपुरादि सब, लूटि भदावर लीन ॥ ४ ॥
पुनि मगके गुरु[6] लघु नृपन, दंडत बिजय दिखाय ॥
गागरनी अभमल्ल गढ, जव करि बिंट्यो जाय ॥ ५ ॥
कछुक रारि रट्ठोर करि, दयो उचित पुनि दंड ॥
परि पायन मल्लारके, सह्यो हुकम अखंड ॥ ६ ॥
हुलकर बहुरि प्रयान करि, कोटा जनपद[7] आय ॥
दिन कछु घाँट[8] मुकुंददर, रह्यो मुकाम रचाय ॥ ७ ॥
अहमदखान पठान इत, दक्खिन जित्ति दुरंत ॥
आलीगोहर साह पुनि, किय दिल्लिय तिय कंत[9] ॥ ८ ॥
मुख्य वजीर नबाब करि, लखनेऊ नगरेसँ[10] ॥
मुगलन राज्य जमाय गो, लंघि अटक निज देस ॥ ९ ॥
इत दक्खिन श्रीमंत सुनि, स्वीय पराजय सोर ॥
चढि सत्वर अप्पुन चल्यो, जवननँ[11] डारन जोर ॥ १० ॥

सौ इकतीस ३३१ मयूख हुए ॥

१ प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ अपने घर ॥ २ ॥ ३ सूर्यमल्ल जाट ने ४ सामग्री ५ दक्षिण की ढाल को रक्खा ॥ ३ ॥ ४ ॥ ६ बडे छोटे ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ कोटा के देश में ८ मुकुंदरा के घाटे में ॥ ७ ॥ ९ दिल्ली रूपी स्त्री का पति ॥ ८ ॥ १० लखनऊ नगर का पति ॥ ९ ॥ ११ यवनों पर ॥ १० ॥

पट्पात् ॥

संध्या जनकू पट्ट दयो कदारराव १ कँहँ ॥
अरु दत्ताके पट्ट धरयो माहजि२ मवीर तँहँ ॥
क्रम सन नाती१ पुत्र२ अडर राघाजीके ये ॥
दासी औरेस दुव२ हि सचिव धन मन कारि सेये ॥
लजि सग सुभट इत्यादि सब क्रम मपच जित्तन करयो ॥
श्रीमन्त नन्द विरचन बिजय दिल्लिय उप्पर उप्परयो ॥११॥

॥ दोहा ॥

दक्खिनके विपरीत दिन, हुकम बिगारन हार ॥
दइव इगरेजन उदित, करत अवहि करतार ॥ १२ ॥
करत मिजल श्रीमत कछु, वढि वपु रोग बिसेस ॥
मानन तजि परलोक गत, साहू सुत सचिवेस ॥ १३ ॥
तब मरहट्ठन मुरि तखत, निज प्रभुके सिर नाय ॥
सुत जेठो श्रीमतको रक्ख्यो माधवराय ॥ १४ ॥

॥ रुचिरा ॥

बुल्ल्यो इत बुदीस नृपति निज दीप अनुज जयनेर रह्यो ॥
अपकृत तास सकल बिस्मृत करि होय सदय भति हेत चह्यो ॥
रुप्पय लक्ख१००००० पटा जुत रेनरस रसिक कापरानि नगर दयो
परिखंद विरचि बुलाय वचन पट्ट अप्पि अभय हिय लाय लयो॥१५॥

॥ हीरकम् ॥

जैपुर नृप माधव इत वारितें कर जानिकैं ॥
नौरव सिरदारसिंह बिंटिप द्रुत आनिकैं ॥

---

१ पोता २ पहला तो दासी (पासवान) का और दूसरा विवाहिता स्त्री का पुत्र ॥ ११ ॥ ३ भाग्य ॥ १२ ॥ ४ सचिवों का पति ॥ १३ ॥ १४ ॥ ५ बुलाया ६ दीपसिंह को ७ अपकार सब ८ भूलकर ९ युद्ध के रसका रसिक १० सभा करके ११ हृदय से लगा लिया ॥१५॥ १२खिराज नहीं देना जानकर १३नरू का

कारन[1] रनथंभ अग्ग दक्खिन जयनैर ए ॥
हमरो हमरो उचारि कुप्पिग रचि बैर ए ॥१६॥
जैपुर उमरावन सन[2] माधव तब यों कही ॥
दक्खिन सन मेल कोउ मम भट न करो सही ॥
नारव सिरदार तदपि[3] हुल्लकर पति भिंटयो ॥
सम्मुह कर जोरि गो रु रक्खन निज भू नयो[4] ॥ १७ ॥
मन्नि सु अपराध कुप्पि कूरम अब आयकैं ॥
बिंटिय उनियार[5] मार तोप मचकायकैं ॥
संबत धृति अष्ट अवनि१८१८ पाउस गत कालमैं ॥
बिव्हल हुव नारव इम संगर बिकरालमैं ॥ १८ ॥
रन करि कछु काल बहुरि नारव भय संधिकैं ॥
माधव महिपालके पय लग्गिय सय[6] बंधिकैं ॥
दै कछु दम दम्म[7] स्वामि आयस[8] सिर रक्खयो ॥
हो तुम असुनाथ[9] दास हैं हम इम अक्खयो ॥ १९ ॥

॥ चुलिआला ॥

उदयनैर नृप रान रान इत, राजसिंह दिय छोरि कलेवर ॥
सह अंतहपुर पुर सकल, तँहँ सहसा[10] हुव त्रास घोरतर[11] २०
सोलह आदिक तब सुभट[12], अंतहपुर प्रच्छन्नद्वार[13] गत ॥
रानिन प्रति बिन्नति रचिय, मंडि उचित व्यवहार धर्म मत २१
अक्खिय नृप परतापको, अन्वय[14] किय ईकालिंग[15] नष्ट अब ॥
पुच्छत हम यातैं प्रकट, सोलह१६ अरु बत्तीस३२ प्रमुख[16] सब २२

१ रणथंभ (रणतभँवर) के कारण ॥ १६ ॥ २ से ३ तोभी ४ अपनी भूमि रखने को नमा ॥ १७ ॥ ५ उणियारा को घेरा ॥१८॥ ६ हाथ बांधकर ७ दंड के रुपये ८ आज्ञा ९ प्राणनाथ ॥ १९ ॥ १० अचानक ११ अत्यन्त घोर ॥ २० ॥ १२ उमराव १३ जनानी ड्योढी पर जाकर ॥ २१ ॥ १४ वंश १५ मेवाड़ के राणा के इष्टदेव का नाम एकलिंग महादेव है १६ आदि "मेवाड़ में बडे दरजे के उमरावों की गणना सोलह और दूसरे दरजे के उमरावों की गणना बत्तीस है" ॥२२॥

जो रानिय आधीन जुत, हो कोउक तो काल निहारहिं ॥
यह नहि तो अरिसिंहकों, बैठारन इम पट्ट बिचारहिं ।२३।
उत्तर तब अवरोध सन, प्रकट सुनि रानीन पठायउ ॥
नहि दोहदलच्छन छिपत, क्यों तुम यह सदिग्ध कहायउ२४
सुभटन यह उत्तर सुनत, रान प्रताप कनिष्ठ भ्रात तब ॥
गद्दिय पति अरिसिंह किय, परिपाटी व्यवहार सहि सब२५
अरिसिंहहु तब अरज यँहँ, पठई नृप परताप तियन प्रति ॥
तुम धारत आधान तो, रचक नहिं मम राज्य माँहिं रति२६
राज्यसिंह सतति रहत, मोहि मात सब दासहि जानहु ॥
नृपता यह मम जोग्य नहिं, पटु अंप्पहु नहिं छद्म प्रमानहु२७
पठई रानिन अक्खि पुनि, अब तुम नृप अरिसिंह उदयपुर॥
करहु नाँहिं सदेह कछु, धरहु राज्य अधिकार भार धुर २८
इत माधव जयपुर अधिप गिनि बिगरे मरहट्ठ लोभ गहि ॥
उनको हो निज ढिग अमल,किय सु देस स्वाधीन उचित कहि२९
सैंत्वर यह कँटु बच सुनि, जयपुर सिर मरहट्ठ सजे जब ॥
पठयो बुंदिय पत्त लिखि, त्वरित दँरित कछवाह भूप तब ३०
करन भीर यह कालहे, पृतना निज मम पास पठावहु ॥
मरहट्ठन सन मत्र रचि, वा उनको यह कोप उठावहु ॥३१॥
संभर पति इम पत्र सुनि, अजितसिंह निज पुत्र भेजिदिय॥
सहँसपच५०००दल सग करि,कुम्मै कथित स्वीकारसकल किय३२
सक बिक्रम धृति१८१८समय, कुमर अजित इम बीर सिलह कारि ॥

---

१ गर्भ सहित २ समय देखे ॥२३॥ ३जनाने से ४ गर्भ छिपा नहीं रहता५सदेह युक्त ॥ २४ ॥ ६ राणा प्रतापसिंह का छोटा भाई ७ परस्पर का ॥२५॥ ८ प्रीति ॥ २६ ॥ ९ हे माताओं १० आप भी चतुर हो सो ११ छल मत जानो ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ १२ शीघ्र १३ कड़ुई बात सुनकर १४ डरकर ॥ ३० ॥ १५ सु मय है ॥ ३१ ॥ १६ कछवाहे (माधवसिंह) का कहना ॥ ३२ ॥

१ हायन बप बिच निडर, भीर गयो जयनेर हरख भरि ॥ ३३ ॥
नि माधव अति जव सम्मुख, अग्ग रीति सब लंघि रु आयउ ॥
ि य डुंगरि वार मिलि, बिबिध सद्धि सतकार बधायउ ॥ ३४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशावुम्मेद सहचरित्रे आयुर्बलाऽवशिष्टमल्लारभरतपुराऽऽगमनतद्भीतकल्लीज खानहैदराबादपलायनस्वीकृतजट्टोपायनलुण्ठितभदावराऽऽदिदेशद-ण्डितगागरणीशाऽभयसिंहहुलकरकोटाजनपदमुकन्ददरघट्टप्रपतनप ठानाऽहमदखानाऽलीगोहर्दिल्लयर्पणसुजाउद्दोलावजीरीभवनाऽहमद खानेरानगमनश्रुतस्वपराजयजनकू१ दत्ता ९ स्थानाऽऽपन्नकेदारराव१ माहजि २ सहितदिल्लीविजयाऽर्थप्रस्थितश्रीमन्तमरणतत्सुतमा धवरायपितृपट्टप्रापणबुन्दीन्द्रसमाहूतसोदरदीपसिंहाऽर्थकापरणिनग रदानकूर्मराजमाधवसिंहमल्लारमिलनसाऽऽगसनारवसरदारसिंहनग रोणियारावेष्टनतच्चरणपतनदण्डद्रव्यनिवेदनशीर्षोद्दराजोदपुरेशराणा राजसिंहमरणपितृव्यकाऽरिसिंहतद्गद्दीनिविशनज्ञातनिर्बलमहाराष्ट्र-

१ वर्ष ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशिमें उम्मेदसिंह के चरित्र में आयुर्बल के बाकी होने से मल्लार का भरतपुर आना और उसके भय से कल्लीजखां का हैदराबाद भागना १ जाट की दी हुई भेट को स्वीकार करके भदावर आदि लूटकर गागरनी के पति अभयसिंह का दंड देकर हुलकर का कोटा के देश, मुकन्दरा के घाट में मुकाम करना ७ पठान अहमदखां का आलीगोहर को दिल्ली देना और सुजाउद्दोला का वजीर होना २ अहमदखान का ईरान में जाना और अपना पराजय सुनकर जनकू और दत्ता के स्थानापन्न केदार राव और माहजी सहित दिल्ली को विजय करने के अर्थ प्रस्थान किये हुए श्रीमंतका मरना और उसके पुत्र माधवराव का पिता का पाट पाना ४ बुन्दीश के बुलाये हुए सगे भाई दीपसिंह के अर्थ कापरण नगर का देना और कछवाहे राजा माधवसिंह का हुलकर से मिलने के अपराध से नरूके सरदारसिंहके नगर उणियारा को घेरना और उसके चरणों में पड़कर दंड का धन नजर करना ५ शीषोदियों के राजा उदयपुर के पति राणा राजसिंह का मरना और उसके काका अरिसिंह का गद्दी बैठना ९ मरहठों को निर्बल जानकर जयपुर के पति

जयपुरेशतद्देशस्वीकरणश्रुतेतत्सज्जदक्षिणसेना ऽऽगममाधवसिंहबुन्दी सहायप्रार्थनरावराजामहाराजकुमाराऽजितसिंहजयपुरप्रेषणसमुखा ऽऽगतजायसिंहितत्सन्मननमेकपञ्चाशत्तमो ५१ मयूख॥ ५१ ॥ आदित ॥ ३३२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अजितसिंह मिलि कुमर इम, माधव सन सह मोद ॥
पहुँच्यो डेरन आनि पहु, विरचत लरन विनोद ॥ १ ॥
किय अपुव्वं माधव कहिय, बुंदिय पति यह वत्त ॥
सुनि रन पट्टय रंगीयं सुत, यँहँ पठयो अनुरत्त ॥ २ ॥
कारन पाय विसेस कछु, दक्खिन दल किय देर ॥
माधव सुनि रक्ख्यो मुदित, कुमर हड्ड नृप केर ॥ ३ ॥
क्रीडा वहु आखेर्ट क्रम, दिन दिन सहल दिखाय ॥
सम्मुह रक्खो तखत सिर, पुनि महलन पधराय ॥ ४ ॥
दयाराम तँहँ हड्ड द्विज, किय विन्नति करजोरि ॥
जैपहरि लिय लिखवाय जव, नृप सन लिखित निहोरि ॥५॥
सुत व्हेहँ जु समप्पिहैं, हम तुमकों कछवाह ॥
धरहिं अर्क दायाद ध्रुव, चिंति रावरी चाह ॥ ६ ॥
लयो जनक तुमरे लिखित, उचित दैन अब एह ॥
नृप सभर अनुकूल गिनि, सक्कहु विहितं सनेह ॥ ७ ॥

का उनका देश लेना यह सुनकर सजकर दक्षिण की सेना का आना ७ माधवसिंह का बुन्दी से सहाय की प्रार्थना करना और रावराजा का राजकुमार अजितसिंह को जयपुर भेजना ८ जयसिंह के पुत्र का उसके सन्मुख आकर सन्मान करने का इकावनवां ५१ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५१ ॥ और आदि से तीनसौ बत्तीस३३२ मयुख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अपूर्व २ अपने पाटवी पुत्र को ३ प्रीति करके भेजे ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ शिकार ५ तखत के ऊपर सम्मुख ॥ ४ ॥ ६ जयसिंह ने ७ राजा बुधसिंह से ॥५॥ ८ किसी भाई को गोद रख लेवेंगे ॥ ६ ॥ ९ तुम्हारे पिता ने १० उचित ॥ ७ ॥

हो मुहुकमसिंहोत तँहँ, निडर दह्व नगराज ॥
आश्रित कूरम ईसके, करन स्वामि जय काज ॥ ८ ॥
बुल्ल्यो सोहु बिलंब अब, न करहु हित पहिचानि ॥
जैपुरपति यह सुनि सजेव, अप्प्यो लिखित सु आनि ॥ ९ ॥
दक्खिन कटक बिलंब लखि, जानि सबन बिनु जोर ॥
राजकुमारहिँ सिक्ख दिय, माधव कूरम ओर ॥ १० ॥
जाय पटालय² जनक³ जिग, किय कुमार सतकार ॥
अक्खिय हित बिच अंतर न, इत उत गिनहु उदार ॥ ११ ॥
इम कहि इक१ गज दुव२ अरब⁴, दुव२ सिरुपाव सु साज ॥
नग भूखन इक१ रुचिर नव, किन्न नजरि हित काज ॥१२॥
अरु दलेल उमराव निज, धूलापुरप समत्थ ॥
लछमन ताको पुत्र लघु, पहुँचावनि दिय सत्थ ॥ १३ ॥
दयाराम तँहँ अरज किय, कूरम प्रति पटु प्यार ॥
किय तुम भेट कुमारको, संभरपति⁵ सतकार ॥ १४ ॥
नियम गिन्यौं हित माँहिँ नहिँ, यातैं यह दुव एह ॥
पै अब संभर भूपतैं, अर्द्ध लिखावहु लेह⁶ ॥ १५ ॥
जयपुरके दफतर जबहि, लिय माधव लिखवाय ॥
सुनहु राम छितिपाल सो, सुनिबे योग्य सुभाय ॥ १६ ॥

॥ रोला ॥

संभरपतिके सम्मुह कोस इक१ आवहिँ कूरम ॥
कुमर सम्मुख अधकोस सु पुनि आवहिँ सनेह सम ॥
कूरम डेरन हुड जात तोरन⁷ लग आवहिँ ॥
कुमरहि पायंदाज⁸ अंत रहि मिलि लै जावहिँ ॥ १७ ॥
नृपति परस्पर द्वैरहि मिलत मस्तक कर आनैं ॥

॥ ८ ॥ १ शीघ्र ॥ ९ ॥ १० ॥ २ डेरे जाकर ३ पिता के जैसे ॥ ११ ॥ ४ घोड़े ॥ १२ ॥ १३ ॥ ५ बुन्दी के राजा को देने का सत्कार कुमर को दिया ॥ १४ ॥ ६ लेख में, राजा से कुमर के आधा लिखाओ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ७ से ८ द्वार तक ॥ १७ ॥

कुमर होय अति नम्र पइहि आचारै प्रमानैं ॥
जानु जोरि नृप जुगल२ रहैं इक१ तखत बरब्बर ॥
बैठे सनमुख कुमर इक१ तखतहि हित तत्पर ॥ १८ ॥
चमर मोरछल होय उभय२ भूपन ऊपर जँहँ ॥
कुमर दास कर रक्खि रहै तस पिट्ठि खरो तँहँ ॥
पानदान सन पान भूप निजहत्थ उठावहिं ॥
कुमरहिं अप्पहिं नृप सु झेलि दुव२ हत्थन पावहिं ॥१९॥
अग लगावहिं अतर उभय२ नृप उभय२ करन करि ॥
कुमर अग कर इक१ अतर लावहिं हित अनुसरि ॥
पायदाज प्रदेस अवधि भूपहिं पहुँचावहिं ॥
कुमरहिं गहिय छोरि सिक्खदे सिविरैं पठावहिं ॥ २० ॥
इक१ गज दुव२ सिरुपाव अरब दुव२भूपहिं अप्पहिं ॥
कुमरहिं दुव२सिरुपाव अस्व दुव२ दे हित थप्पहिं ॥
इक भूखन जिहिं अग्घ अप्पि भूपहिं हित धारहिं ॥
कुमरहिं ता सन अद्ध अग्घ दे मोद बिथारहिं ॥ २१ ॥
कूरम इनके सिविर आत इम एहु करैं सब ॥
लीनी यह लिखवाय रवीय दफतर माधव तब ॥
संवत धृति धृति१८१८ समय माघ पांडुर पंचमि५ दिन ॥
इम बुंदिय निज नेर आय प्रविस्यो कुमरन इन॥ २२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे
दसिंहचरित्रे हड्डराजकुमारजयपुरसुखनिवसनमाधवसिंहजयसिंहलो

१ ऊपर लिखाहुआ आचार (दोनों हाथ मस्तक के लगाना)। २ घुटने मिलाकर ॥ १८ ॥ ३ कुमर का नौकर हाथ में रखकर ४ अपने हाथ से ॥ १९ ॥ ५ दोनों हाथों से ६ डेरे भेजेंगे ॥ २० ॥ ७ जिसका मूल्य (कीमत) देवेंगे और उससे आधा कुमर को देकर ॥२१॥ ८सुदि ९कुमरों का पति ॥२२।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, हाडों के राजकुमार का जयपुर में सुख से निवास करना और माधवसिं ह का जयसिंह के लिखाये बुधसिंह के लेख को पीछा देना। बुन्दी के पति के

खितबुधसिंहलेखमत्यर्पणाबुन्दीन्द्रसत्काराऽर्द्धरीतिराजकुमारसत्कारलेखजयपुरलेखमन्दिरलेखनप्रीतिपूर्वककृतरवसुभटसार्धाऽजितसिंहबुन्दीप्रतिप्रस्थापनं द्विपञ्चाशत्तमो५२मयूखः ॥ ५२ ॥ आदितः३३३

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

संबत नव ससि धृति १८१९ समय, माधव कोउक काज॥
आयो गढ रनथंभ तँहँ, बुल्ल्यो संभरराज ॥
सचिव तास आये समुझि, गो बुंदियपति तत्थ ॥
पुर खंडारि समीप हुव२, सुपहु मिले हित सत्थ ॥ २ ॥
संभरनृपके कुम्म सन, सुभट मिले इकसट्ठि ६१ ॥
उभय२ मिलत नृप अरिनको, नूर गयो सब नट्ठि ॥ ३ ॥
दिय लिय गज तुरगादि सब, किय कछु दीह मुकाम ॥
इत बुंदिय नृप अंगना, मुख्य गई सुरधाम ॥ ४ ॥
पहिलैं सक खट ख धृति १८०६ पर, लहि प्रतिपद१ बैसाख॥
ईडरपतिजा भोगिनी, मरी सु मेचक पाख ॥ ५ ॥
पुनि सत्रह धृति १८१७ साल पर, अगहन मेचक पाय ॥
ऊदाउति गतअसुँ भई, छट्ठी६ दिन गद छाय ॥ ६ ॥
अब बसु ससि धृति १८१८ अब्दके, पुण्णिम१५ चैत अनेह ।
मैंहिषी हड्ड महीपकी, दिय झल्लिय तजि देह ॥ ७ ॥
खबरि तास खंडारिही, पहुँची संभर पास ॥
नृप हुव लखि अनुचित नियंति, अंतर कछुक उदास ॥८॥

सत्कार से आधी रीति राजकुमार के सत्कार की जयपुर के दफतर में लिखवाना २ प्रीति पूर्वक अपने उमराव को साथ करके, बुन्दी के कुमर अजितसिंह को पीछा बुंदी भेजने का बावनवां ५२ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५२ ॥ और आदि से तीन सौ तेतीस ३३३ मयूख हुए ॥

१ माधवसिंह २ बुलाया ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ३स्त्री ॥ ४ ॥ ४ ईडर के पति की पुत्री ५ छोटी रानी ॥ ५ ॥ ६ कृष्णपक्ष ७ गतप्राण ८ रोग छाकर ॥ ६ ॥ ९ समय १० पाटवी राणी ॥ ७ ॥ ११ भाग्य के ॥ ८ ॥

सुपहु दुहुँन२ तत्थहिं सुन्यौं, अब दक्खिन दल आत ॥
केदार१ रु माहजि२ कैमिग, घल्लन सध्या घात ॥ ९ ॥
सुनि माधव जयपुर गयउ, आयउ स्वपुर उमेद ॥
दिस दिस मचि दक्खिन दहल, भूपन सिखवत भेद ॥१०॥

॥ रोला ॥

इत सध्या उज्जैन आय मालव निज वस किय ॥
अपन दोय२ रहि तत्थ दाव मरुधर जित्तन दिय ॥
चिंति जयाको बैर चड सजि कटक चलाये ॥
यँहँ सब नृपन वकील ईए सद्दन द्रुत आये ॥ ११ ॥
इम सवेग अजमेर पत्त रन खुल्लि पैताकन ॥
बिजयसिंह सन बिजय लैन किय मत्र कैजाकन ॥
यह सुनि मरुधर ईम भीरु बुंदिय पुर भूपति ॥
बुल्ल्यो दै दल विहित महि मन्नन जुज्झन मति ॥ १२ ॥
इत अति धृति धृति१८१९अब्द, असित सुचि छट्ठि८अरक जुत
भूप बुलिय्यों बहुरि जनिंग सयामसिंह सुत ॥
वलि मरुपति दल बीच हङ्क हकिय सहाय हित॥
सम्मुह आयउ बिजयसिंह चाहत प्रमोद चित ॥ १३ ॥
दिय डेग बुंदीस सूरसागर तडागँ तट ॥
दक्खिन दलकी देर भनत भूपाल तिमहि भट ॥
यँहँ वकील अजमेर भेजि मरुराज साम सन ॥
अट्ठलक्ख दै दम्म द्रोह मिट्यो मरहट्ठन ॥ १४ ॥
तव दब्बन ढुंढार चल्यो दक्खिन दैंल सत्वर ॥
लुट्टिय पुर मोजाद चारु आपनैं धन चैत्वर ॥

---

१ सेना २ चले ॥९॥१०॥ ३ वाञ्छित साधने के लिये ॥११॥ ४ युद्ध की पताका खोलकर ५ युद्ध करनेवालों ने ६ पत्र देकर बुलाया ॥ १२ ॥ ७ आषाढ़ वदि ८ अर्दासवार सहित ९ दासी (पासवान स्त्री) १० जना ११ पुनि ॥ १३ ॥ १२ तलाव के किनारे ॥१४॥ ११ सेना शीघ्रचली १४ चिर्की का मजार १५ चौहटा

स्वीय पितृव्यक सुता बुल्लि[1] इंडरपुर सन यँहँ ॥
उदयकुमरि अभिधान[2] मरुप[3] व्याहन संभर कँहँ ॥ १५ ॥
अतिधृति धृति १८१६ आषाढ नवमि९ अवदातां[4] लग्न पर ॥
बुंदीसहिँ सविनोद दई दुलहनि बिबाहि बर ॥
रक्ख्यो निज आवास[5] नृपहिँ सनमानि पक्ख त्रय३ ॥
हुव प्रतिदिन मुद दुहुँन२ दोजिर[6] सितपक्ख चँद्रोदय ॥१६॥
पुटभेदन[7] मोजाद इत सु कोटेस सचिव गय ॥
अखैराम कायत्थ मिलन मरहट्टन अघ मय ॥
संध्या माहजि श्रवन पिसुन[8] पूरे अवसर लहि ॥
संभर मरुप सहाय होन कारन अनेक कहि ॥ १७ ॥
दै कछु छन्नैं दम्म मोरि जित तित माहजि मन ॥
बुंदिय उप्पर बेग प्रथित[9] आन्यौँ कराय पन ॥
कटक अचानक मुररि चाहि हल्लन दंडन चित ॥
अनी बिबिध उम्मह्यि मुंदिर[10] भद्दव लहरू मित ॥ १८ ॥
द्रंग आत दक्खिनिन सुनत मरुधर तजि संभर ॥
आयो बुंदिय अरहि[11] सज्यो दुद्धर चहि संगर ॥
पुटभेदन[12] प्राकार सजिज चाहत अरि आगम ॥
मानहु चातक मत्त सघन घन भद्द समागम ॥ १९ ॥
चित माहजि लहि चाह दौरि इत बपु[13] दक्खिन दल ॥
बुंदिय सहसा[14] बिंटि कियउ तोपन कलकलकल[15] ॥
अखैराम दल[16] अप्पि सजव बुल्ल्यो कोटसहिँ ॥

१ अपने काका की पुत्री को बुलाकर २ नाम ३ मारवाड़ के राजा ने ॥ १५ ॥
४ सुदि ५ अपने महलों में ६ शुक्लपक्ष की द्वितीया के चन्द्रमा के उदय के समान ॥ १६ ॥ ७ मोजाद नामक पुर में ८ उस चुगल ने माहजी सिंधिया के कान भरे ॥ १७ ॥ ९ विदित १० भादवे के मेघ की लहरों के समान ॥ १८ ॥
११ शीघ्र १२ नगर के कोट को ॥ १९ ॥ १३ दक्षिण की सेना रूपी शरीर से दौड़कर १४ अचानक १५ अत्यन्त कोलाहल १६ पत्र देकर कोटा के पति को

सत्रुसल्ल देल सुनत चल्यो दव्वत द्रुत देसहिं ॥ २० ॥
अनतापुरपति अजित प्रथम जो हुवकोटापति ॥
पट्ट तास यह पाय आप वुदिय रन किय अति ॥
संध्याके भरि श्रवन वन्यौं जयकार तास बल ॥
जिह्मग लहि दुंदुभ जानि आखु मारत मारत अल ॥ २१ ॥
इम माधवजि अपनाय वेढि माधवहेर बुंदिय ॥
संध्याकौं सावाते सोरकौ कूंल ज्वलन किय॥
दक्खिन२ पूरव२ दुवरहि तरफ तापन मचि तोपन॥
कुल गोलन धौंकार लगे कोपन रेंय लोपन ॥२२॥
थाल सलिलें गति थरक्कि मही डुगर डगमग्गत ॥
अतल वितल वसवानैं लाजि सुंतलप पय लग्गत ॥
वनि वनि प्रानन पिसुन वीररस वाढत नारद ॥
धमि धमि तोपन धूम सहज छावत घन सारद॥ २३ ॥
तुट्टत निज सिर त्वरित सूर न चहैं रु चहैं सिव ॥
इत मारन अरि अतुल उत सु हिंसन अनिच्छ इव॥

शीघ्र बुलाया १ [illegible]त्र सुनते ही ॥ २० ॥ २ अजितसिंह ३ इस (शत्रुशाल) ने उस (अजितसिंह) का पाट पाकर उस सिन्धिया के बल से ४ जय करनेवाला हुआ ५ मानों सर्प को चूहे को पकड़ा हुआ जानकर ६ बिच्छू ७डंक मारता है सर्प के मुख में चूहा होने के कारण अपने मरने का भय छोड़कर बिच्छू उस सर्प के डंक मारता है" ॥ २१ ॥ ८ माधवसिंह हाडा के बशवाला बुन्दी को घेर कर ९ सिन्धिया रूपी बारूद के १० किनारे में आग लगाई "यहां सिन्धिया की अति प्रबलता दिखाने को बीप्सार्थ में सावात और सोर दोनों एकार्थवाची शब्दों का प्रयोग किया है" गोलों के समूह ११ कोट का १२ क्रोध के वेग से लोप करने लगे ॥ २ ॥ थाल में भरेहुए १३जल की भांति १४बास करनेवाले लज्जित होकर १५ सुतल के पाति के पैरों लगते हैं १६ प्राणों की चुगली करके १७ शरद ऋतु के बद्दल ॥ २३ ॥ १८ शीघ्र टूटे हुए अपने मस्तकों को वीर नहीं चाहते और मुक्तमाल करने को शिव चाहते हैं, इधर (बुन्दीवाले) शत्रुओं को मारने में तुलना रहित हैं और उधर हिंसा करने में १९ इच्छा रहित की भांति हैं

काली खप्पर कतिन गोद[1] गत तदपि नटन[2] गहि ॥
पीवनदेत न पलल करहु उपवास पचन कहि ॥ २४ ॥
सुरभि[3] पराग समान खेह रवि मधुप[4] हगन खिरि॥
अंधी करत अनूरु[5] सहित कर्दम[6] बिधाय[7] किरि॥
तारागढ सिर तोप लौन[8] कचमाल उतारत॥
बंदी[9] गिहनि बुल्लि सूर गति गिरिहिं[10] सिंगारत॥ २५॥
अंक[11] गलिन जिम अटत तिमिर[12] फारत गोले तिम॥
तोप अदितिके तनुज[13] करहिं संख्या पावन[14] किम।
देत निसैनिन दोरि सूर आरोहत कपिसिर[15]॥
इतके असि आघात[16] बहि डारत तिन्ह बाहिर॥ २६॥
तकि तकि छिद्दन तोपदार बेधत अगु गोलन॥
पब्बय[17] तिनके पात[18] झुकत घुम्मत झकझोलन॥
धमकि खनंकत धूजि थुंथुल[19] बलभिन पर खप्पर॥
बिथुरत जरि बाजार छार टप्पर कठछप्पर॥ २७॥
भीरुन[20] मुख छबि भाँति नटत जल ढंग निवानन॥

---

१ कालिका के खप्पर में गया हुआ वीरों का मांस २ नृत्य करके उसको रुधिर नहीं पीने देता है सो मानों उससे कहता है कि यह रुधिर पाचन (हजम) नहीं होवेगा सो उपवास कर ॥ २४ ॥ ३ वसन्तऋतु के पुष्प रज के समान धूलि सूर्य रूपी ४ भ्रमर के नेत्रों में खिरकर ५सूर्य के सारथिको अंधा करती है और रुधिर है सो वराह को ६ कीचड़ सहित ७ करता है ८ केसों की माला को काटती है "लुञ् छेदने" इस धातु से, लोन का अर्थ काटना है" ९ ग्रीवां रूपी भाटों को बुलाकर १० बुन्दी के पर्वत तक वीरों की तरह शृंगार कराता है ॥२५॥ ११जैसे सूर्य १२अन्धेरे को फाड़ता है तैसे गोले गलियों में फिरते हैं १३ तोप रूपी अदिती के पुत्र (देवों रूपी गोलों) की संख्याको कैसे १४पासक्ते हैं अर्थात् जैसे देवताओंकी गणना नहीं होसक्ती तैसे ही गोलों की गणना भी नहीं होसक्ती १५कंगुरों पर चढते हैं १६तरवारों के प्रहारों से ॥ २६ ॥ १७पर्वत १८उन गोलों के पड़ने से १९बडी मियाणों (घरके छाने के वक्र काष्ठ) पर ॥ २७ ॥ २०कायरों के मुख की शोभा नष्ट होवे तैसे नगर के निवाणों का जल नष्ट होता है

सोदागर रसवीर रच्यो विक्रय इम प्रानन ॥
विरहिनिके उर विविध भये तपि तपि भुवमंडल ॥
के जिम मनि रविकांत फरस ग्रीखम दाहक फल ॥ २८ ॥
अट्ट रु गोपुर उडत थंभ मंडप थहरावत ॥
गगन गिद्ध गति ग्राव लोल चढत रु लहरावत ॥
माघ त्रयोदसि१३असित अक ससि धृति१८१९सक अंतर॥
माहजिको मिलवाय सज्यो बुंदिय इम सभर ॥ २९ ॥
सुनि यह दैन सहाय कटक पठयो कूरमपति ॥
कहयो हड्ड जय करहु देतिबल करहु सत्रु हति ॥
पामँडहेडापुरप होय कूरम सेनानी ॥
राजाउत द्वारकादास आयो अभिमानी ॥ ३० ॥
साहिपुरप उम्मेद त्योंहिं पठयो सहाय दल ॥
सुत लघु मालिमसिंह विरचि सेनेसं महाबल ॥
विजयसिंह मरुराज जदपि बुंदिय ग्न जान्यों ॥
भेजी-तदपि न भीर मूढ कृतघन पन मान्यों ॥ ३१ ॥
[illegible]र इत हड्ड भूप कटिवध न खोलत ॥
पल[illegible] विच प्राकारैं भटन ललकारत डोलत ॥
सुत हुव पृथ्वीसिंह भूप जैपुरपतिके जँहँ ॥
तास वधाई जग होत आई बुंदिय तँहँ ॥ ३२ ॥
उच्छत्र ताको अतुल सुनत सभर नरेस किय ॥
मरन मंडि रन तुमुल बहुत दिन किय निसंक हिय ॥

---

१ वीर रस रूपी सौदागर ने इसप्रकार प्राणों का २ व्यापार रचा ३ विरहिणी स्त्रियों के हृदय के समान भांति भांति से ४ अथवा जैसे ग्रीष्मऋतुमें सूर्यकान्त मणि का फल फर्श (बिछौना) दाहनेवाला होवे तैसे ॥ २८ ॥ ५ बुरजें और शहर के दरवाजे ६ आकाश में गीधों की भांति चपल पत्थर चढकर लहराते हैं ७ कृष्ण पक्ष ॥ २९ ॥ ८ जयपुर के राजा माधवसिंह ने ९ शत्रुओं के बल से ॥३०॥ १० उम्मेदसिंह ने ११ सेनापति करके ॥३१॥ १२ कोट पर ॥३२॥ १३ भयंकर

जान्यौं तुट्टत नाँहिं नैर बुंदिय माहजि जब ॥
अहरि साम उपाय पत्र पठयो नृप प्रति तब ॥ ३३ ॥
कोटापतिको कथित[1] मन्नि संगर यँहँ मंड्यो ॥
अप्प मिलहु अब आय छुद्र[2] साँहस हम छंड्यो ॥
सुनि नृप अरि कृत[3] साम चिंति नय मिलन बिचारिय ॥
माधानी भगवंत दुग्ग रक्ख्यो रखवारिय ॥ ३४ ॥
अक्खिय हमकौं मारि नगर अरि लैन बिचारहिं ॥
तो भाई मरि तुमहु देहु पुनि सूबेदारहिं ॥
माहजि हितु मिलाप कियैं नृप निकसि यहै कहि ॥
आयउ तौरन[4] अवधि समुख संध्याहु[5] तोर सहि ॥ ३५ ॥
हथजोरी करि हुलसि जाय बैठे परिखद[6] दुव२ ॥
साँपराध[7] संध्या[8] समेत हह्वन बिनोद हुव ॥
करन जोरि तब कहिय नम्र माहजि आगस[9] निज ॥
सुनि हित जुत संभरहु बिकंच[10] किन्नैं दग बारिज[11] ॥ ३६ ॥
अक्खिय तुम कोटेस कुटिलको क्यौं न इष्ट[12] किय ॥
सुनि जोरे तस सयँन[13] पिक्खि पुनि नृप बुल्लिय प्रिय ॥
खरनीके कछु दम्म चढे आदिक गिनि दिन्ने ॥
हित अन्योन्य[14] बढाय बिदा मरहट्ठन किन्ने ॥ ३७ ॥
याहि बरस १८११ बुंदीसकेर सिरदारसिंह सुव ॥
ईडरपति[15]जा उदयकुमरि रानी औरस[16] हुव ॥
चैत्रमास सुख आसित[17] पक्ख संगत अष्टमि दिन ॥
उच्छव तिहिं दिन अतुल[18] बहुरि बिरचिय हड्डन ईन[19] ॥ ३८ ॥

युद्ध ॥३३॥ १कहना मानकर २तुच्छ हठको ३शत्रु के कियेहुए मिलाप को नीति से विचारकर ॥३४॥ ४द्वार पर्यन्त ५प्रताप को सहकर ॥३५॥ ६सभा में ७अपराधी ८सिन्धिया सहित ९अपना अपराध १०प्रफुल्लित किये ११नेत्र कमल ॥३६॥ १२अनुकूलता (चाहाहुआ) अर्थात् भलाई १३दोनों हाथ जोड़े १४परस्पर ॥३७॥ १५ईडर के पति की पुत्री के १६उदर से १७कृष्ण पक्ष १८बहुत १९हाडाओं के पति ने ॥३८॥

कोटेसहु आननं विगारि अतिसय सिटाय हिय ॥
अखेराम सठ सचिव सहित कोटा प्रवेस किय ॥
विजयसिंह मरु ईस वुल्लि इत हड्ड महीपति ॥
दीपकुमरि निज वहिनि ताहि व्याहिय मंजुल मति ॥३९॥
सक कृति धृति१८२०मित समा राध अवदात दसमि१० दिन
अति हित करि उच्छाह लगन सद्धिय कबंध इन ॥
साल प्रकृति धृति १८२१ समय तीज३ फग्गुन सुदि वासर ॥
ईडरपति लघु सुता दीप सोदर व्याह्यो वर ॥ ४० ॥
जोधपुरहि यह विजयसिंह मरुपाल व्याह किय ॥
नाम भवानकुमरि वहिनि उच्छव करि व्याहिय ॥
याहि बरस १८२२ श्रीमत माधवहु देह विहायो ॥
पट्ट नरायनराव अनुज ताको तव पायो ॥ ४१ ॥
तिहिं काका रघुनाथराव पर वैर विथारिय ॥
तानै भजि तव सरन इगरेजन द्रुत धारिय ॥
सक इभ्भि१८२१ कथित समीप साह आलम ४९।१दिल्ली पति
दिय ईजन अर्थ तीन३ सूवा सहाय मति ॥ ४२ ॥
बंगाला१ रु विहार२ तथा उड्डीसा३ ए त्रय३ ॥
इनमैं तव अंग्रेज भये हाकिम जमात जय ॥
सूवा त्रय३ सिर साह रुद्ध निज गति जव जानी ॥
इस्तमरारी आकि दई इनकौं दीवानी ॥ ४३ ॥
प्रथम रुहेला सचिव नजीवुद्दोलाके भय ॥
दिल्लीतैं भजि साह वंग अंतर वचिवे गय ॥
कछु हायन तँहँ कट्टि मरयो सुनि कथितैं रुहेला ॥

१ मुख बिगाड़कर २ अठ बुद्धिवाली ॥ ३९ ॥ ३ सम्वत् ४ बैशाख सुदि ५ राठौड़ों के पति ने ६ दिन ७ उम्मेदसिंह का सगा भाई दीपसिंह ॥४०॥४१॥ ८ इस रहेहुए सम्वत् के समीप ॥४२॥९ अपनी गति रुकीहुई जानी; जब ॥४३॥ १० बंगाले में ११ कुछ वर्ष १२ नजीबुद्दोला रुहेला को मरा सुनकर

लहि मरहट्ठ सहाय बिस्यो दिल्लिय लखि वेला ॥ ४४ ॥
नजफखान जिहिँ नाम जवन सो किय वजीर जब ॥
सक लिपि अंतर ननहु अधिक प्रभु राम२०३।४ इहाँ अब ॥
सिवप्रसाद मुनसी जु आहि अधुना अंग्रेजन ॥
जिहिँ दुव२ ग्रंथ बनाइ बिदित किन्ने छापा सन ॥ ४५ ॥
जिनमैं इक भूगोल आदि हस्तामल१ जानहु ॥
तहँ इन्ह सूबा तीन३ मिलन सूचित १८२१ सक मानहु ॥
ताहीनैं इतिहासतिमिरनासक२ प्रबंध किय ॥
तामैं पावन पट्ट साह आलम ३९।४को सक लिय ॥ ४६ ॥
सो हय दुव बसु सोम १८२७ कितो अंतर अब इक्खहु ॥
ओरनमैं इहिँ रीति परत अंतर प्रभु पिक्खहु ॥
मुद्रित किय इक१ ग्रंथ बिदित पंडित बंसीधर ॥
सो भारतवर्षीय आदि इतिहास३ नाम पर ॥ ४७ ॥
तामैं बैठन तखत साल आलम ४९।१ स[illegible] ॥
सो हय दुव बसु सोम १८२७ प्रमित जानहु [illegible] ॥
बढि१ घटि२ अंतर बिबिध लेखकारहि [illegible] ॥
है तँस दोस न हमहिँ लेख अनुसार लिखावत ॥ ४८ ॥
परि इम वत्त प्रसंग अन्यठामहु कहि आये ॥
वर्त्तमान अब वृत्त सुनहु प्रभु सबन सुहाये ॥
जट्ट जवाहिरमल्ल याहि हायनैं १८२१ प्रकुप्पि अब ॥
लुट्टी दिल्लिय जाय साह धन कोस सहित सब ॥ ४९ ॥
अग्ग जनक रविमल्ल मरयो दिल्लिय रन अंतर ॥

प्रवेश हुआ २ समय देखकर ॥४४॥३ सम्वतों के लेख का अन्तर सुनो ४ है इस समय में अंगरेजों का ॥४५॥१भूगोल है आदि में जिसके ऐसा हस्तामल [अ]र्थात् भूगोलहस्तामल ७ ग्रन्थ ॥४६॥८देखो ॥४७॥९हे भूपति १० लिखनेवाले १ इसका दोष हमको नहीं है क्योंकि हम लिखेहुए के अनुसार लिखते हैं ४८ ॥ १२ वृत्तान्त१३ इसी वर्ष में॥ ४९ ॥ १४इसका पिता सूर्यमल्ल१५युद्ध में

ताको वैर विधार्थ करिय यह जट्ट जवाहर ॥
इत मेवारे भटन सठन तसकरपन धारयो ॥
बुंदिय जनपद बीच विविध वसु हरन विचारयो ॥५०॥
कुप्पि तबहि बुंदीस सेन सज्जिय तिन उप्पर ॥
जये पकरि सीसोद भारि असिवर निज तसकर ॥
निवसथ टहला१ मगटला२ टिटहरा३के पति ॥
कन्हाउत ए कैद किये अवरहु सागस कति ॥ ५१ ॥
मुडित हठ्ठी मुच्छ करि रु डारे काराघर ॥
परयो पयन सगताउत स्यामपुरेस जोरि कर ॥
सु सुनि रान अरिसिंह सचिव पठयो निज बुंदिय ॥
कन्हाउतन छुरान काज उपाय सन तिन किय ॥ ५२ ॥
सुनि नृप तिनकी अरज चोर कारा बाहिर किय ॥
अव्दामित सचसौंहि दम्म दमके अलुब्ध लिय ॥
तानै भा[illegible] [illegible]रेसिंह कथित करि दुष्कर कीनी ॥
[illegible]क इ[illegible] नहिं लोभ धर्म रीतिहि चित चीनी ॥ ५३ ॥
भ[illegible]१ बीखरनि२ नैर बंकरपुरादि सब ॥
सद्दन लग्गे सभरेस आदेस नमू तब ॥
इम सभर उम्मेद मुलक तसकर सब मेटिय ॥
कलिजुग बिच नैंय धर्म कर्म पांडव नृप ज्यों किय ॥ ५४ ॥
दोहा—अमरगढप १ बक्करपुरप२, कन्हाउत इन्ह आदि ॥
सगताउत पुरवीखरनि१, भ्रमोला२ऽऽदि प्रमादि ॥ ५५ ॥
तदनतर खइराडके, मैनैन किय अति मान ॥
लुट्टन बुंदिय देस लगि, थिर उज्जरैं किय थान ॥ ५६ ॥

---

१ वैर करके २ चोरपन ३ बुन्दी के देश में ४ धन ॥ ५० ॥ ५ अपने चोरों को ६ ग्राम ७ अपराधी ॥ ५१ ॥ ८ कैद में ॥५२॥ ९ कैद से १० दव्व के रुपये ११ लोभ रहित ॥ ५३ ॥ १२ चाकरों १३ नीति १४ युधिष्ठिर के समान ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ १५ खैराड़ प्रदेश के मीणों ने १६ ऊजड़ (शून्य) ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

ट्द्वारकादाससाहिपुरेशोम्मेदसिंहस्वकनिष्टसुतमालिमसिंहबुन्दीसहा
यार्थप्रेषणाकृतघ्नमरुपतिकिमप्यप्रेषणायुध्यद्रावराड्जयपुरेशपुत्रपृथ्वी
सिंहोद्भवश्रवणाज्ञातदुर्गदुर्गत्वमाहाजिसमाहूतबुन्दीन्द्रसम्मिलननीता
ऽऽव्दिकदण्डपतत्पस्थानहड्डेन्द्रभोगिन्यौरसकुमारसरदारसिंहोद्भवनस
म्भरराजस्वभगिनीदीपकुमारीराठोडराजाविजयसिंहविवाहनसम्भर-
दीपसिंहस्वाऽग्रजराज्ञ्यनुजाभवानकुमारीयोधपुरोद्वहनश्रीमन्तमाधव
रायमरणातदनुजनारायणरावश्रीमन्तीभवनपितृव्यकरघुनाथरावनि
ष्कासनतदिंगरेजशरणाभरतपुरेशजट्टजवाहरमल्लदिल्लीलुण्टनसी
मासमीपस्थराणासामन्तवुन्दीदेशविरोधनरावराट्तत्सर्वनिग्रहणारा-
णाऽरिसिंहप्रार्थनामुक्तदुष्टस्वाधीनीकरणमैणागणबुन्दीदेशलुण्टन
हिंडोलीशहम्मीरवंशीहड्डचैनसिंहमारणं त्रिपञ्चाशत्तमो५३ मयूख॥

आनाऽ७ लायेहुए कोटा के पति शत्रुशाल सहित सिन्धिया के पति और हाड्डों के पति का संग्राम के सुख को अनुभव करना ८ कछवाहों के राजा का अपने उमराव द्वारकादास, और शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह का अपने छोटे पुत्र मालमसिंह को बुन्दी की सहाय में भेजना और किये उपकार को भूलनेवाले मारवाड़ के पति का कुछ नहीं भेजना ८ उस युद्ध में रावराजा का जयपुर के पति के पुत्र पृथ्वीसिंह के जन्म को सुनना और गढ का नहीं मिलना जानकर माहजी का बुन्दी के पति को बुलाकर मिलना ६ सालाना खिराज लेकर उस का जाना और बुन्दीन्द्र की छोटी राणी के उदर से कुमार सरदारसिंह का जन्म होना १० चहुवाणों के राजा का अपनी बहिन दीपकुमरि को राठौड़ों के राजा विजयसिंह को ब्याहना और चहुवाण दीपसिंह का अपने बड़े भाई की राणी की छोटी बहिन भवानकुमारी से जोधपुर में विवाह करना ११ श्रीमन्त माधवराव का मरना और उस के छोटे भाई नारायणराव का श्रीमन्त होना, काका रघुनाथराव को निकालना और उसका अंगरेजों की शरण लेना १२ भरतपुर के पति जाट जवाहरमल्ल का दिल्ली लूटना और सीमा के समीप रहनेवाले राणा के उमरावों का बुन्दी के देश में विरोध करना, रावराजा का उन सबको पकड़ना और राणा अरिसिंह की प्रार्थना से उन दुष्टों को छोड़कर स्वाधीन करना १३ मैणा के समूह का बुन्दी के देश को लूटना और हिंडोली के पति हम्मीरसिंह के वंशवाले चैनसिंह को मारने का तिरपनवां ५३ मयूख समाप्त हुआ॥ ५३॥

। ५३ ॥ आदितः ॥३३४॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ रोला ॥

तब संभर नृप तमकि सेन मैंनन सिर सज्जिय ॥
बैरिन झारन बाढ गाढ [1]रेय पत्राव गरज्जिय ॥
हरिश्रा [2]निजकवि ग्राम लंघि घेरयो द्रुत ऊमर ॥
मैंने द्वैसत २०० मारि थान किन्नों तरऊपर ॥ १ ॥
पुनि खेड़ा लिय घेरि दुष्ट तँहँ हनिय इक्कसत१०० ॥
बहुरि लुहारी बिंटि अडर लुट्टी रन उद्धत ॥
[3]सजव कुप्पि च्यारिसत ४०० मारि मैंनँ जय मंडिय ॥
[4]गढ्ढोली पुनि ग्राम खुंदि खग्गन सब खंडिय ॥ २ ॥
दारिम रंग [5]दुकूल मत्थ धवपत्त [6]किलंगिय ॥
दुवर गठ्यॉ कोदंड जुरत [8]ढुडु कारि जंगि[?]५॥
बंसुरि भयद [9]बजात पिठि द्धद्दर धरत [10]निखंगन ॥
डारत फोजन फारि मारि कट्टार [11]तुरंगन ॥ ३ ॥
इम मैंनँ रन करत हनिय द्वै सत२०० गड्डों[?] ॥
आयो बुंदिय बिजय मंडि [12]बंदिय जस बोलिय ॥
मैंननके सिर [13]मैंनिनके सिर दये [14]करंडन ॥
बधाई गवावत लायो पुरलग तिन [15]रंडन ॥ ४ ॥

और आदि से तीन सौ चौतीस मयूख ३३४ हुए ॥

१ बडे शब्द से ढोल बजा २ आप के कवि (सूर्यमल्ल) का ग्राम ॥ १ ॥ ३ शीघ्र ४गाढोली ॥ २ ॥ ५ दाड़िम के रंग के वस्त्र ६ मस्तक पर धोकड़ा वृक्ष के पत्तों की किलंगी ७ दो प्रत्यंचा के धनुष ८ मैणों के लड़ाई करने का साङ्केतिक शब्द है ९ भयंकर १० भाथे ११ घोड़ों को कटारियों से मारकर ॥ ३ ॥ १२ भाटों की यश की बोली करवाकर उन मैणों के मस्तकों को १३ मैंणियों के मस्तकों पर१४टोकरों (छवलियों) में भरवाकर१५उनकी रांडों को बुंदी लाया॥४॥

कारडन१ नरडन२ अन्त्यानुप्रास' १ ॥

सक आकृति धृति समय१८२२ भयो यह रन *सरदागम।
सेनन सब मीमार लगे रचि सनंति समागम ॥
याहि बरस१८२२के माघ मास द्वादसि१२मैंचक्र जुत ॥
दीपसिंहके भयो नाम सुरतागसिंह सुत ॥ ५ ॥
करि अग्गं कोटेस कथित माहजि यह रन किय ॥
नायाउत उद्योतसिंह तब अरिन मिलन किय ॥

रनकिय१ लनकिय२ अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥

नगर पगारौं छोरि रवामि मन्नं मरहट्टन ॥
सट्ट द्रोय किय समर जूटि लीनें कछु रंठन ॥ ६ ॥
याको काका बखतसिंह मन्न्यौं तब भूपति ॥
दयो पगारौं ताहि मडि सनमान महामति ॥
अब सु भिकृति धृति१८२३ अब्द माँहिं उद्योत सु अ
नगर पंगारौं लैन भूप मति कथन कहायो ॥ ७ ॥ १८॥
बुंदीपति तब कुप्पि सुभट पठये तिहिं मारन ॥
मारले आनि बजार मध्य कहि तिन अघ कारन ॥
याहि विकृति धृति१८२३ अब्द माँहिं हुलकर बपु छो
तब तस नाती मालराव इंदोर तखत लिय ॥ ८ ॥
सुनि यह टींका साज भूप पठयो तह हित घन ॥
हुव२ हय हुव२ सिरुपाव इक१ गज इक१ मनि भूख
सकृति धृति१८२४ मित साल मालरावहु हुलकर मृत
तब ताको दायाद नाम तक्कू गद्दिय धृत ॥ ९ ॥
रूप्पय प्रातिकृति लक्ख२५०००००दये श्रीमत अरथद्रुत ॥

* शरद ऋतु के आने पर १ नम्रता सहित सुख से आना २ कृष्णपक्ष सहित ॥ ५ ॥ ३ राष्ट्रों (देशों) को ॥ ६ ॥ ७ ॥ ४ पाप करनेवाला ५ उसके पोते ॥ ८ ॥ ६ पुत्र ॥ ९ ॥

इम गद्दिय इंदोर लही तक्कुव सु मंत्र जुत ॥
रूपनगरपुर सुता भूप सामंतसिंह घर ॥
नाम किसोरकुमारि इत सु ब्याह्यो नृप सोदर ॥ १० ॥
संकृति धृति१८२४मित साक बिरचि उच्छव बहु दिन तक
ब्याह बहादुरसिंह कियउ यह दुलहि पितृव्यक ॥
याहि साल१८२४ बिच नृप सपत्न जननी कछु गद लहि ॥
बंसबहाला पतिजा बपु दिय छोरि व्याधि सहि ॥ ११ ॥
बुंदीपति मोसुरि बिहीन बनि प्रेत करम किय ॥
द्विजन सु भोजन दान दै रु निगमोक्त सद्धि लिय ॥
संकृति धृति मित याहि साल इत जट्ट जवाहर ॥
जैपुर ऊपर जोर दैन मंड्यो डाँरन डर ॥ १२ ॥
याको भ्रात सु अग्ग नाम नाहर कछु कारन ॥
आयो जैपुर सरन नारि निज बिपति निवारन ॥
ताकै ही इक१ युवति रूप गुन अधिक अपूर्ब ॥
ताहि जवाहर जट्ट लैन तक्क्यो कामुक जब ॥
ताहिँ तब जैपुर आय सरन कूरम पतिको लिय ॥
माधव नगर निवाई को परगनाँ ताहि दिय ॥
नाहरसिंह बिताय काल कछु तत्थ गयो मरि ॥
तबहि जवाहर कहिय लैन ताकी वह सुंदरि ॥ १४ ॥
सो सुनि माधव ताहि भरतपुर लग्यो पठावन ॥
बुल्ली तब जट्टनिय उचित है नहिँ मम जावन ॥
मोकोँ वह गृह डारि कूर रक्खहिँ बनिता करि ॥

१ जा का सगा भाई दीपसिंह ॥ १० ॥ २ दुलहन के काका ने ३ रोग ४ [..]ा के पति की पुत्री ॥ ११ ॥ ५ डाढी मूछों के बालों विना (चौर) होकर [..] का कहाहुआ ७ भय डालने को ॥ १२ ॥ ८ अपनी स्त्री की ९ यौवन [..] स्त्री १० कामी ॥ १३ ॥ ११ माधवसिंह ने ॥ १४ ॥ १२ स्त्री करके रक्खेगा

यातें भेजहु नाँहिं सती जानहु हित अनुसारि ॥ १५ ॥
तबहि भरतपुर मंडि पत्र माधव पठवायो॥
याकों आवन उहाँ इष्ट नहिं नैंक सुहायो ॥
जट्ट जवाहरमल्ल सु सुनि पठयो प्रतिउत्तर ॥
मम वधव मैंहिलाहिं तुम सु चाहत रक्खन घर ॥ १६ ॥
यह सुनि जैपुर ईस मन्नि अभिसाप असह मति ॥
निकसाई वह नारि गई विख खाय उचित गति॥
इहिं कारन अब अतुल्ल वैर गहि जट्ट जवाहर ॥
जैपुर उप्पर जोर दैंन सज्जे दल दुद्धर ॥ १७ ॥
विजयसिंह यह जानि जट्ट जैपुर चढि आवन ॥
आयो पुष्कर अरहिं मिलन अरु मंत्र बनावन ॥
उदयपु[illegible] आमेर ज्योंहिं क्षुदिय महँजिम ॥
[illegible]नि सतकार रँवकर लिखि दल्ल पठयेइम ॥ १८॥
[illegible]हरमल्ल अडर अति बल्ल हो तुम जब ॥
[illegible]आगरा१ छिन्नि दब्बि दिल्लिय प्रदेस२ सब ॥
अब [illegible]मसों तुम आय मिलहु पुष्कर विधाय वल्ल ॥
इक्क तखत वैठिहें जेर करिहैं अरि मडल्ल ॥ १९ ॥
इम सकृति धृति १८२४ अब्द बचि दल जट्ट जवाहर ॥
ऊर्ज्ज पुणिमा१५ दिवस मिलन आयो द्रुत पुष्कर ॥
मरुपति ताके सिविर प्रथम पहुँच्यो लहि सासन ॥
सिर कर धरि समकोल उभयर बैठ एकासैंन ॥ २० ॥
चमर मोरछल छत्र लगे होवन दोउन२ पर ॥
पुनि मरुपतिके सिविर जट्ट दैंप्पित गय दुद्धर ॥

॥१५॥ १प्रिय २स्त्री को ॥१६॥ ३झूठा दोष ॥१७॥४जाट का ५शीघ्र६पराक्रम ७अपने हाथ से ८पत्र ॥१८॥९सेना रखकर ॥१९॥ १०कार्तिक की पूर्णिमा को११ एक समय में दोनों माथे के हाथ लगाकर१२एक गद्दी पर बैठे ॥२०॥१३घमंड

*समताको सतकार किंपउ १पूरब जिम मरुपति ॥
पलटि पग्ग रहोर जट्ट हुव २सुहृद कुसंगति ॥ २१ ॥
तदनु जोधपुर नाह पत्र पठये जयपत्तन ॥
मित्र याहि गिनि तुमहु मिलहु बैठहु इक आसन ॥
तब कूरमपति तमकि एह पठयो प्रतिउत्तर ॥
मित्र होय किम मुह जट्ट जैपुरको किंकर ॥ २२ ॥
सेवन आत सदैव पिक्खि हमरे परवानाँ ॥
मम समताके मित्र रावराजा१ तुम२ रानाँ३ ॥
सु सुनि जट्ट दिय पत्र ओलिँ जैपुर लिखि ३आडी ॥
दोय२ परगना देहु हमहिँ खोहरी१ पहाडी२ ॥ २३ ॥
रचहु न तो अब रारि तुमहिँ दंडन हम तक्कत ॥
सुनि पठयो निज सेन कुम्भ अर्ककहिँ र[illegible] उक्कत ॥
तब माउंडा खेत मिले जट्ट रु जैपुर दल [illegible]॥
फैलिय हेतिनँ फाग राग सिँधुन कोलाहल[illegible] ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्त[illegible] .शावुम्मेसंहचरित्रे बुन्दीन्द्रमैणाविजयप्रस्थानतद्ग्रामोमर[illegible] खेडा २ लुरी ३ गड्डोल्या ४ऽऽदिविध्वंसनहतनवशत ९०० मैणागणापुनःरवा ऽऽविशनसोदरदीपसिंहकुमारसुरताणसिंहोद्भवनसंभरराजचालुनाथाउत्तोद्योतसिंहमारणातत्पितृ०पक्कबखतसिंहपगारौपुरा ऽर्पणा

राघर का पहिले के माफिक१मित्र२खोटी संगति से अर्थात् क्षत्रियों से जा के मित्र होने की संगति नहीं है ॥२१॥२२॥३आडी ओली (पत्रकी आयुदी) ॥२३॥ ४सूर्य को ५ सेना ६ शस्त्रों का फाग ७सिंधवी (वडा) राग का ॥२४॥

ऺवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंह के चरित्र में दी के पति का मैनों को विजय करने को गमन करके उन के गाम ऊमर, ा, लुहारी, गाड्डोली, आदि का नाश करना और नो सौ मैनों के समूह मारकर अपने पुर में प्रवेश करना १ सगे भाई दीपसिंह के कुमर सुरताण ह का जन्म होना और चहुवाण राजा का सोलंखी नाथावत उद्योतसिंह

हुलकरमल्लाररावदेहत्यजननप्तृमालरावतदधिकारप्रापणबुन्दीन्द्र-टीकोपाख्यतत्सत्कारप्रेषणमालरावमरणाऽनतरदत्ताऽतिकृतिलक्ष २५०००००० द्रम्मतद्वापादहुलकरतक्कूहोलकरपुरेन्दोरगादिकोपविशन बुन्दीन्द्राऽनुजदीपसिंहरूपनगराऽधिराजराठोडसामन्तसिंहसुताकिशोरकुमारीविवाहनरावराट्सपत्नजननीमरणतत्प्रेतक्रियाऽनुष्ठानपूर्वोदन्तविरूढवैरजट्टेन्द्रजवाहरमल्लजयपुरजिगीषुभवनपुष्करक्षेत्राऽऽगत मरुपतिविजयसिंह १ समाहूतजवाहरमल्लसजातीयनृपसमससत्कारसम्मिलनकृतजट्टतिरस्कारजयपुरसैन्य १ जट्टसैन्य २ माउण्डाग्रामरङ्गसम्मिलनं चतुःपञ्चाशत्तमो ५४ मयूख ॥५४॥ आदित ३३५॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कटक ईश[1] कछवाहको, वूलापुर पै दलेल[1] ॥
लघु सुत लछमन[2] जुत लग्यो, खडन मडव खेल ॥ १ ॥
दल वखसी गुरुसाहि[1] हुत, सचिव बीर हरसाहि २ ॥

का मारेना २ उस के काका पत्तसिंह को पगारा पुर देना, हुलकर मल्लारराव का मरना और पीछे मालराव का उस का अधिकार पाना ३ बुन्दीन्द्रका उस को टीका नामक सत्कार भेजना और मालरावके मरे पीछे पच्चीस लाख रुपये देकर उसके पुत्र तक्कू का हुलकर के पुर इदोर कीगद्दी पर बैठना४ बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह का रूपनगर के पति राठोड़ सामन्तसिंह की पुत्री किशोरकुमारी से विवाह करना और रावराजा की सौतेली माता का मरना, उस की विधि पूर्वक क्रिया करना४ पहिले वृत्तान्त के कारण वैर बध कर जाटों के पति जवाहरमल्ल का जयपुर को जीतने की इच्छावाला होना और पुष्कर क्षेत्र में आये हुए मारवाड़ के पति विजयसिंह का जवाहरमल्ल को बुलाकर अपनी जाति के राजाओं के बराबर सत्कार करके मिलना ६ जाट का तिरस्कार करके जयपुर की और जाट की सेनाओं का माउण्डा ५. के युद्ध क्षेत्र में मिलने का चौपनवां मयूख समाप्त हुआ ॥५४॥ और आदि तीन सौ पैंतीस ३३५ मयूख हुए ॥

१ सेनापति २ पति ॥ १ ॥ ३ फौजबक्शी

एहु खरे खत्री उभय२, चंड करन रन चाहि॥२॥
इततैं जट्टहु उप्परयो, तोपन बिरचत ताप॥
भट फिरंगि डारत भयो, समरू कापिलि साप॥३॥

॥ भ्रमरावली ॥

करकि करकि कोप तरकि तरकि तोप,
लरकि लरकि लोप करनलगी॥
करखिं करखि कत्ति परखि परखि पंत्ति,
हरखि हरखि सत्ति हरन लगी॥
समर लखन आय अमर गगन छाय,
भ्रमर सुमन भाय निकर जुरे॥
सरजि सरजि सोक लरजि लरजि लोक,
बरजि बरजि ओक दिगन दुरे॥४॥
बढिग त्वरित बीर पढिग दरित पीर,
चढिग सरित सीर रुहिर रची॥
सिलत उरन सेल मिलत फुरन मेल,
ठिलत खुरन ठेल मलप मची॥
पिलत धुरन पेल भिलत छुरन भेल,
खिलत सुरन खेल लखन लगे॥

१भयंकर युद्ध करने की चाह से॥२॥ २कपिलदेव का श्राप॥३॥ कोप सहित गर्जना कर करके तोपें चल चल कर ३गिरा गिरा करलोप करनेलगीं ४तलवारें खैंच खैंच कर ५ पैदलों की परीक्षा कर करके प्रसन्न हो हो कर ६ शक्ति हरने लगी ८ देवता ७ युद्ध देखने को आ आ कर और आकाश में छा छा कर ९ पुष्पों पर भ्रमरों की भांति उनके १०समूह जुड़गये १२ लोग धूज धूज कर ११ शोक उत्पन्न कर करके १३ घर छोड़ छोड़ कर दिशाओं में घुस गये॥४॥ वीर शीघ्र बढे और १५डरनेवाले पीड़ा के वचन बोले१६चढीहुई नदी के समान १७रुधिरकी धारा चली भाले छातियोंको फोड़ते हैं१८घोड़ोंके फुरने मिलते हैं और खुरों की टक्करों से हटाते हुए मलंग लेते हैं १९आगे (धुर) वालों को मत पर भेजते हैं और२०छुरियों से भिलजाते हैं सो प्रसन्न होकर २१देवता

हरखि हरखि हूर परखि परखि पूर,
करखि करखि सूर रखन लगे ॥ ५ ॥
गहत गँवरि गैल बहत गिरिस बैल,
सहत भरन सैल कहत फटैं ॥
चहत भटन चैल दहत मनु कि तैल,
महत फवत फैल अगनि अटैं ॥
त्रिश्रकसि त्रिश्रकसि तेग विकसि विकसि बेग,
निकसि निकसि नेग असुन लहैं ॥
रपटि रपटि रांजि झपटि झपटि आजि,
दपटि दपटि बाजि गजन गहैं ॥ ६ ॥
सरत जहर सूक टरत अहर टूक,
करत कहर कूक ककुप करी ॥
खिसकि खिसकि हत्थ चिसकि चिसकि मत्थ,
सिसकि सिसकि सत्थ दुरत दरी॥
छलत विसिख छाय घलत त्रिसिख घाय,
गहि ॥
१२॥

लख देखते हैं "देवता शब्द स्त्री लिंग है परन्तु लोक रूढि से पुल्लिंग लिखाजाता है" अप्सराएं प्रसन्न हो हो कर १ पूर्ण परीक्षा कर करके वीरों को खैंच खैंच कर रखनेलगीं ॥ ५ ॥ २ पार्वती को साथ में लेकर ३ महादेव बैल पर चढते हैं जो वीरों के ४भाले सहते हैं और अपना फटना कहते हैं फिर मरे हुए वीरों ५ वस्त्र तैल के समान जलते हैं और बडे फैलाव से ६ शोभित होकर अग्नि फिरती है ८ तीन तीन तलवारें कस कर ९ प्रफुल्लित हो हो १० भाले शीघ्र पार निकल निकल कर प्राण लेते हैं वीरों की ११प.रे घसे दौड़ कर ११ युद्ध में शीघ्र शीघ्र १३ घोड़े दौड़ा दौड़ा कर हाथियों को ॥ हैं ॥ ६ ॥ १४ शेषनाग चलायमान होकर टलता है और १५ अधमरों १६ चाटस को काटता है १६ इस जुल्म से १७दिशाओं के हाथी कूक मारते हैं नोंई (अर्जुन) सब फिसल कर, माथे दूख दूख कर साथवाले कई सिसक स ॥ १० ॥ ६वैताल गुफाओं मे घुसते हैं कई१९घावों को खाकर पड़ते हैं औ १२ ॥ १३ जोड़ा (पति ले नामक रानी १६ निरन्तर

कलत निसिख काय भटनकिते ॥
पकरि पकरि पाय जकरि जकरि काय,
नंकरि नकरि हाय जपत जिते ॥ ७ ॥
भचकि भचकि मुंड लचकि लचकि सुंड,
मचकि मचकि रुंड उछटि कटैं ॥
भरकि भरकि भेट खरकि खरकि खेटैं,
धरकि धरकि पेट फलक फटैं ॥
खटकि खटकि खग्ग चटकि चटकि अग्गँ,
लटकि लटकि झग्ग मुखन झरैं ॥
अटकि अटकि इद्ध गटकि गटकि गिद्ध,
छटकि छटकि बिद्ध बिसिख धरैं ॥ ८ ॥
भटकि भटकि घुम्मि झटकि झटकि झुम्मि,
पटकि पटकि भुम्मि घुंटन घसैं ॥
बटकि बटकि गुंडैं मटकि मटकि तुंडैं,
रटकि रटकि झुंडैं हुलसि हसैं ॥
बिरंचि बिरचि बान मिरचि मिरचि मान,

...लते हैं जो १ तीखे त्रिशूल कई वीरों के शरीरों में घुसते हैं तहां कई वी... औरों के पैरों को पकड़ पकड़ कर और २ शरीरों को बांध बांध कर ह... हीं करके बोलते हैं ॥ ७ ॥ मस्तकों की टक्कर लगा लगा कर, हाथियों ...डों को नमा नमा कर रुंड मचक मचक उछलते फिरते हैं मिलने से ...लों पर कड़के (शब्द) होकर पेट में धकधकी लगकर ५ ढालें व ...ता है ६तरवारों के खटके हो हो कर और ७अग्रभागों के टुक... ८भाग लटक लटक कर मुखों से झड़ते हैं गिद्ध ९बहुत अटक अ... ...१०बेधेहुए कई गिर गिर कर भी ११बाणों को धारण करते हैं ॥८॥ ... फिर फिर कर कई बहुतों को खैंच खैंच कर लगते हैं और ... पटक पटक कर १२घुटनों से रगड़ते हैं १३तरवार आदि के स्थान ...ो मटका मटका कर दौड़ दौड़ कर वा टक्करें लगा लगा ...रों के कई १५समूह हँसते हैं १६बाणों को रचरच (चला... के १७ समान कानों के टुकड़े टुकड़े गिराने लगे वा

किरचि किरचि कान किरन लगे ॥
ललकि ललकि लाल झलकि झलकि ढाल,
खलकि खलकि खालें फिरन लगे ॥ ९ ॥
झनकि झनकि झौंर सनकि सुरभि सौंर,
भनकि गुटिनँ भौंर भ्रमन लगे ॥
तरस खंपद खेत परस रंपद प्रेत,
दरस भंपद देत दमन लगे ॥

॥

॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

जयपुर दल अरु जट्ट दल, रचि कछु तोपन रारि ॥
ऐंचि मिले पुनि असिन इम, झुकि झुकि धारन झारि।

॥ मरहट्ठा ॥

सचिव मुख्य खत्री हरसाहि, गरु बखसी गुरुसाहिउँमाहि ॥
मिलि अधिवीरे जट्ट बहुमारि, तूटि गिरे झारत तरवारि ॥१२॥

॥ षट्पात् ॥

धूँलापुरप दलेल सुपहु कूरम सेनानी ॥
अति अँव हयन उठाय मिल्यो जट्टन बिच मानी ॥
सिविका दट्ट समान करे बहु अरि नारिन कर ॥

१ गिरनेलगे और २ क्रोध में लाल हुए ललकार कर करके ३ पर्वत (युद्ध में) पद पद कर ४ नाते पद्रा पद्दा कर धा पद पद कर कार्य ॥ लगे ॥ ९ ॥ ६ गुच्छों पर झनकार कर करके १ बसंत ऋतु में भ्रमरों ३ बादल वान्य होवे तैसे ७ गाली रूपी भ्रमर भ्रमने लगे और युद्ध केस्मोई (अर्जुन) को देनेवाले प्रेत स्पर्श करने रू घुजा घुजा कर ९ बेग के सा ॥ १० ॥ ९वैताल देकर दण्ड देनेलगे ॥ १० ॥ ११ तलवारों को खैंचकर ॥ १२ ॥ १३ ओहदा (पति १३ वीरों के पति ॥ १२ ॥१४ धूला पुर का पति दलेनामक रानी १६ निरन्तर वेग से १७ पालखी के टाखे के समान (भूखियों

सिर ताको लहि सुभग हुलासि किन्नों भूखन हर ॥
संक्रमि निसंक तोपन सम्मुख कातर[3] बंच रंच न कह्यो ॥
भल भल दलेल जयनैर भट रन बिच बनि तिल तिल रह्यो[1]

॥ दोहा ॥

लछमन[4] याको पुत्र लघु, राजाउत रचि रीस ॥
अधिक उथप्पिय अरिन असु, सिवहिं समप्पिय सीस ॥१

॥ पादाकुलकम् ॥

साँवलदास बंसि सेखाउत, नाम गुमान[5] बंदि बिरुदन नुत ॥
सो बढि नगर पचाहर स्वामी, निडर लरयो मस्तक बिनु नामी१
सीकरपति सिवको कनिष्ठ सुत, जुरयो तिनहिं बुधसिंह[6] हरख
उर दुंदुभि करि बहु अरि नारिन, तृन गिनि वपु लग्गो तरवारिन
सेखाउत झुंझनु पत्तन पति, नवलसिंह[7] भज्यो दिखात नति।
सेखाउत सिवदाससिंह[8] पुनि, धानुंती पति परयो खग्ग धुनि १
सेखाउत मुंडरा गाम इन, रघुनाथ[9] हु तुट्टयो तरवारिन ॥
इंटावा पति तिम नाथाउत, नाहरसिंह[10] परयो रन राउत ॥१८॥
महासिंह[11] कलमंडा नायक, सुरतानोत परयो घन घायक ॥
जयपुरके इत्यादि सुभट बहु, परे बिहाय देह संगर पहु[11] ॥ १९ ॥
खग्गन अमित जट्ट भट खाये, भीरू बचे तिन्ह मारि भजाये ॥
छिज्जत कटक्क जट्ट पय छुट्ट, तेगन[12] पिक्खि सिपाहन तुट्ट॥ २०
समरू[13] रह्यो फिरंगी सम्मुह, तोप तड़ितें[14] झारत अरि भूरुह[15] ॥

व ने प्रसन्न होकर २चलकर ३कायर वचन ॥१३॥१४॥ ४ भाटों के ... ५
... योग्य ॥१५॥ ५शिवसिंह का ६छातियों रूपी नगारे ७शरीर को ॥१६॥
... खाकर ॥ १७ ॥ ९ पति ॥ १८ ॥ १० बहुतों को मारनेवाला ११
... ॥ १२ तरवारों से सिपाहों को टूटे हुए देखकर जाट
... ने सामान्य रीति से फिरंगी लिखा है नहीं तो यह फरासी
... नली से १५ शत्रुओं रूपी वृक्षों को गिराकर

गोजन कूरम कटक गिरायो, प्रभुहिं भरतपत्तन पहुँचायो ॥२१॥

॥ षट्पात् ॥

तखत१ छत्र२ अरु तोप३ कोस४ लुट्टे कछवाहन ॥
भरतनैर गय भज्जि जट्ट मरवाय सिपाहन ॥
जित्ते कूरम जोध नाग जट्टन गिनि नाहर ॥
समरू ठहे न जु संग जाय पकरैहिं जवाहर ॥
संक्रांति भुजग ससि १८२४ मान सक हेमंतक पह जगहुव
जयनैर विजय जट्टन भजन भई विदित आवाज भुव॥२७॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७राशावुम्मेदसिंहचरित्रे जयपुरसैन्य १ जट्टजवाहरमल्ल २माउण्डामालाऽभिसम्पाताऽनुष्ठानमाधवसिंहसेनानीसपुत्रदलेल १ सचिवखत्रिहरसाहि २ गुरुसाहि ३ सुभटसेखाउतगुमानसिंह ४ बुधसिंहा ५ऽऽदिमरणजट्टेन्द्रपलायनहतश्रीसामन्तफिरङ्गिसमरूसमायोधनकूर्म्मराजविजयवर्द्धनच्छत्रकोशाऽऽदिजट्टवैभवलुण्टन पञ्चपञ्चाशत्तमो५५ मयूख ॥ ५५ ॥ आदित ॥३३६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा

१कछवाहे की सेना को गिराकर अपने स्वामी को भरतपुर पुगाया॥ २१ ॥
१ खजाना ३ भरतपुर ४ जाट को हाथी जानकर, सिंह रूपी कछवाहे खड़े ५
हेमन्त ऋतु म ॥ २७॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के
म मे जयपुर की सेना और जाट जवाहरमल्लका माउण्डा के खेत में युद्ध।
माधवसिंह के सेनापति पुत्र सहित दलेलसिंह, सचिव खत्री हरसहाय २ बाटखू
गुरुसाहि, सुभट सेखावत गुमानसिंह, बुधसिंह आदि का मरनोई (मर्दन)
के पति का हतश्री होकर भागना फिरंगी समरू का युद्ध [illegible] ॥ १० ॥ ६वैशाख
राजा का विजई होना और छत्र, खजाना आदि लूट १२ ॥ १३ जोड़ा (पति
पचपनवाँ मयूख समाप्त हुआ॥५५॥ और आदि से तीन नामक रानी १६ निरन्तर

इहिँ रन देन सहाय इत, वडो तनय बुंदीस ॥
पठयो जैपुर *पुन्नही, मारन जद्द महीस ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

राजकुमर रनमाँहिँ नाँहिँ माधव जावन दिय ॥
जाग भई पुनि जानि काल अवसर उच्छव किय ॥
[2]नाहरगढ आमैर आदि निज दुर्ग दिखाये ॥
नाना सहल सिकार निरचि अति लाड बढाये ॥
पुनि साथ लिये पंच[5] दिवस सहि[6]०गजन आरुहि सँभट
बुंदीस कुमर जुत फाग विधि मंडिय डारि गुलाल थट ॥२॥
कूरम नृप पुनि कहिय सुनि बुंदीस पुरोहित ॥
राजकुमारहिँ रुचिर चहत व्याहन मेरो चित ॥
अंक[7] कलाय अधीस सुता लैलगन दिखावहिँ ॥
बनि हम स्वसुर बिबाहि चतुर कुमरहिँ पहुँचावहिँ ॥
द्विज दयाराम सुनि किय अरज है अतुलित भवदीय हित ॥
पै इम न होय उपयम प्रथम बुंदिय सन व्याहन उचित ॥३॥

॥ दोहा ॥

रहि तदनंतर सिसिर ऋतु, फग्गुन खेलत फाग ॥
कूरमपति संभर कुमर, अति मंडिय अनुराग[10] ॥ ४ ॥
[11]बलि [12]मधु मास बसंत बिच, बहुबिध हरख बिधाय[13] ॥
कुमरहिँ लाड अनेक करि, रक्ख्यो कूरम राय ॥ ५ ॥
प्रतिकृति धृति१८२५ हायन[14] लगत, पुरिशाम१५चैत्रिक[15] पाय॥

टी ॥ १ ॥ १ समय "यहां समयवाची दो शब्द वीप्सा अर्थ में है,
पै पर वा बहुत बेर उत्सव किया है" २जयपुर के गढ का
...कर ५ उमरावों सहित ॥ २ ॥ ६ गोद लेकर ७ आप का
... ९ से ॥ ३ ॥ १० प्रीति ॥ ४ ॥ ११ पुनि १२ चैत्र १३
...च मास की

कूरमपति लहि राग कछु, *विग्रह दिन्न बिहाय ॥ ६ ॥
ताको सुत जेठो तबहि, पित्थल बैठो पट्ट ॥
अजितसिंह हित सिक्ख अब, दिन्नी तिहिं विधि बट्ट ॥ ७ ॥
इक१ नग भूषन हिंद इक, हुव२ हय दुव२ सिरुपाव ॥
करि इम नजरि कुमारकी, मेन्यों गिनहु हित भाव ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

अजितसिंह बुंदीसकुमर इम चलिय सिक्खकरि ॥
सगानर निक्कार खिल्लि हकिय रहसं धरि ॥
रहिय चक्कसुंध रत्ति बहुरि दरकुच विरचि द्रुत ॥
बुंदी आपउ वीर समर पडित भट सजुत ॥
परि जनकं पयन मडिय प्रनति कुसल पुच्छि आसिख कहिय
अभिमन्यु लखत हरिभाम इम गुरु प्रमोद भूपहु गहिय ९

॥ दोहा ॥

तदनुं कुमर उपयंम उचित, लखि नृप लगन लखाय ॥
पठयो व्याहन कृष्णगढ, बहुल वरात बनाय ॥ १० ॥
अतिकृति धृति१८२५ सक आगमन, सद्धो लगन सुढार॥
तीज३ राध अवदात तिथि, उदित वार अगारं ॥ ११ ॥
सुपहु बहादुरसिंहकी, कन्या सुज्जकुंमारि ॥
अजितसिंह बुंदीस सुत, नैवल बिब्राहिय नारि ॥ १२ ॥

॥ षट्पात् ॥

दंपंति नल१ दमयति२ पुंत्र१ पाँटलि२ नितांत प्रिय ॥

---

*शरीर छोड़ दिया ॥ ६ ॥ ७ ॥ १कड़ा ॥ ८ ॥ २ वेग (शीघ्रता) से ३ चाटसू म रात को रहा ४ पिता के पैरों में पड़कर ५ श्रीकृष्ण के बहिनोई (अर्जुन) की भाँति ॥ ९ ॥ ६ जिस पीछे ७ विवाह के उचित ८ बहुत ॥ १० ॥ ९वैशाख सुदि १० मंगलवार ॥ ११ ॥ ११सूर्यकुमारी १२ नवीन ॥ १२ ॥ १३ जोड़ा (पति और स्त्री) १४ जैसे पुत्र नामक राजा १५ पाटली नामक रानी १६ निरन्तर

मनहु सची२ [1]मघवान१ [2]कन्ह१रुक्मिनि२ मिलाप किय ॥
बासवदत्ता२ [3]बच्छराज१ गिरिजा२ [4]गंगाधर१॥
अ[5]वनिसुता२ [6]रघुइंद१दुल्लहि संज्ञा२ रु दि[7]वाँकर१ ॥
रोहिनि२ [8]सुधागु१पंचे[9]षु१रति१पिलि[10]प्पिल्ला२बैकुं[11]ठपति१ ॥
रट्ठोरि२ हड्ड२ रमनि[12]यँ [13]मन इम मंडिय अनु[14]राँग अति ।१३।

॥ दोहा ॥

भ्रात भुँ[15]जिष्या जठर भव, स्वीय नाम संग्राम ॥
सोहु सुता सिरदारकी, व्याह्यो संगहि वाम॥ १४ ॥
अभयकुमरि अभि[16]धान यह, जननि भुजिष्या जात॥
इम बिबाहि आये उभय२, बुंदिय विदित बरात ॥ १५ ॥

॥ पट्पात् ॥

याहि१८२५ बरस इत सुक्रँ[17] मास सरूपति जेठो सुत ॥
फतेसिंह अभिधान गयो व्याहन कोटा द्रुत ॥
महाराव तनया सु रान जगपति तनयाँ[18]जा ॥
हड्डी दुलहनि हत्थ रुचिर गहि दुल्लह[19]राजा ॥
आयो सु तदनु बुंदिय नगर नृप रक्खिय अति लाड कारि॥
बासर बिताय पंद्रह१५प्रमित बिदा [illegible]रिय हित अमित धरि१६
याहि बरस१८२५ आसाढ सि[20]तंद अष्टमि८ रविबासर[21] ॥
सुपहु भुजिष्या [22]सूनु नाम सिवसिंह बीरबर ॥

---

१ इन्द्र और इन्द्राणी २श्रीकृष्ण और रुक्मिणी ३ राजा वत्सराज और उसकी राणी वासवदत्ता ४ शिव और पार्वती ५ सीता और ६ रामचन्द्र ७ सूर्य और सूर्य की स्त्री संज्ञा ८ चन्द्रमा और रोहिणी ९ पांच बाणोंवाला (कामदेव) और रति ११ श्रीविष्णु भगवान् और १० लक्ष्मी का मिलाप हुआ तैसे राठोड़ी और हाडा १२दुलहन १३ दुलहे की १४ प्रीति रची ॥ १३ ॥ १५ पासवान के उदर से जन्म पानेवाला ॥ १४ ॥ १६ नाम ॥ १५ ॥ १७ ज्येष्ठ मास में १८ राणा जगतसिंह की पुत्री की पुत्री १९ बींद राजा ॥ १६ ॥ २० शुक्लपक्ष की २१ आदित्यवार २२ राजा की पासवान का पुत्र

मरुपति विजय खवासि सुता आह्वय पद्मावति ॥
जाय नगर जोधपुर परनि आयो जिम रतिपति॥
मेवार मुलक इत दंद मचिल्लैन दुरित फल समय लहि॥
अरिसिंह रान सेन भेट अखिल फुट्टे कछुक फेरव कहि १७

॥ दोहा ॥

उद्धत गिनि अरिसिंहकों, मिलि सुभटन किय मंत्र॥
काहूको इक१ आनि सिसु, सो किय रान स्वतन्त्र॥
रानी झल्लियके उदर, राजसिंह सन जात ॥
रतनसिंह अभिधान यह, किन्नों इम विख्यात ॥ १९ ॥
झल्ला भट जसवत१ निज, गोघुदा पुर नाह ॥
तनयां व्याहिय अंग्ग तस, राजसिंह हित राह ॥ २० ॥
सुत ताको यह थप्पि सिसु, रतनसिंह रचि नाम ॥
मातामह जसवत१ हुव, करन मूढ अघं काम ॥ २१ ॥

॥ षट्पात् ॥

गोघुदापति झल्ल मिल्यो जसवत१ मदमति ॥
सगताउतन समेत पाप मुहुकम२ भिंडर पति ॥
देवगढप जसवत३ सूनुं राघवं१ निज सजुत ॥

१ नाम २ कामदेव ३ उपद्रव ४ पाप का फल ५ राणा अरिसिंह से ६ सब उमराव ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ राणा राजसिंह से हुआ ८ (*) नाम ॥ १९ ॥ ९ पुत्री ॥२०॥१०नाना ११पाप का कार्य ॥ २१ ॥ १२मूर्ख १३सगतावतों सहित १४ पुत्र १५ राघवदेव सहित

(*)मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में लिखा है कि राणा राजसिंह का देहान्त हुआ तब राणी झाली को गर्भ था परन्तु अरिसिंह के भय से उसने गर्भ होने से नांहीं करदी, जिसपीछे रत्नसिंह का जन्म हुआ तब उसको गुप्त रखकर रत्नसिंह का नाना गोघूंद का राना जसवन्तसिंह गोघूंदे लेगया और मेवाड़ के कई उमराव सरदार उन में मिलगये, यहां तक उन सर्दारोंका कोई अधम नहीं था परन्तु वह रत्नसिंह बालपन में ही मरगया तब उन सरदारों ने अरीसिंह की क्रूरता के कारण किसीके बालक को लाकर रत्नसिंह के नाम से रखदिया और रत्नसिंह का मरना प्रसिद्ध नहीं किया यह मेवाड़ के उन सरदारों का अधर्म हुआ॥

फतेसिंह चहुवान४ दंग कुट्ठार ईस हुव ॥
बेघम पुरेस भट मेघ५ वलि अंग्रमर ए पंच५ हुव ॥
वप वाल जाय किन्नो अधिप धरि गढ कुंभिलमेरु ध्रुव

॥ दोहा ॥

देवपुरा हो तहँ वनिक, किल्लादार वसंत१ ॥
सोहु मिल्यो सिसु माँहिं सठ, हानि धरम करि हंत ॥२
समरसिंह रावल नृपति, दिल्लिय जाय उदग्ग ॥
भँगिनी पृथ्वियराजकी, पृथा विवाह्यो अग्ग ॥ २४ ॥
तब ताके दायज दिये, एहु वनिक चहुवान ॥
रहे हुकम अनुगत सदा, अब पलटे अघवान ॥ २५ ॥
जहँ रानाँ अरिसिंहनैं, धरे दम्म कृति लक्ख२०००००० ॥
तेहु न दिन्नँ द्रोह तकि, प्रबल बंधि परपक्ख ॥ २६ ॥
रायसिंह१ झल्ला सुभट, नगर सादड़ी नाह ॥
देलवाड़ पति झल्ल पुनि, राघवदेव२ सचाह ॥ २७ ॥
पत्रन सन ए दुव२ मिले, भट लहिं कछु लिंहुं भेट ॥
उभय२ रहे अरिसिंहमैं, सलूंबरि१ रु आमेट२ ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

उदासीन भट इतर रहे प्रकटन अनिमिख लसि ॥
कपटजाल ले संग सुभट उतके आयुध कसि ॥

१ कोठारिया नगर का पति ॥ २२ ॥ २उस वैश्य की जाति है देखेद है ॥२३॥ ४ (*)पृथ्वीराज की बहिन ॥ २४ ॥ ५ हुकम के आधीन ६पापी ॥ २५ ॥ ७अनु का पत्त ॥ २६ ॥ ८ स्वामी ॥ २७ ॥ ९ पत्रों से १० रत्नसिंह से भेट (नजराना अर्थात् फौज खरच) ॥ २८ ॥ ११अन्य उमराव तटस्थ रहे १२समय के वश होकर अथवा निरंतर देखने रहकर

(*) हम ऊपर लिख आये हैं कि रावल समरसिंह और पृथ्वीराज चौहाण के समय मे सौ वर्ष का अन्तर है इसकारण समरसिंह का पृथा से विवाह करना सर्वथा मिथ्या है. यह मिथ्या कथा कपोलकल्पित नवीन रचित पृथ्वीराजरासा के कारण प्रसिद्ध हुई है॥

उदपनेर दिय आनि घेर तोपन कराल घन ॥
फेरन पर रचि फेर ज्वाल व्याकुल किय पुरजन ॥
तुट्टत निपान फुट्टत निलय गढन गाढ छुट्टत गहन ॥
प्राचीनबर्हि पुत्रन मनहु तजिय वेन्हि विटपन दहन ॥२९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे जट्टरणकूर्म्मविजयसहायार्थबुन्दीन्द्रपूर्वप्रेषितराजकुमाराऽजितसिंहजैपुरनिवसनयुयुत्सुतन्माधवसिंहाऽवरोधनजट्टजयाऽनन्तरनानाविलासविलसन द्विजदयारामकुमारवर्यश्वशुरीभवितुकामजायसिंहिसम्बोधनसमनन्तरतच्चैत्रपूर्णिमा१५ माधवसिंहमरणपृथ्वीसिंहजयपुरगद्दिकोपविशनविहितव्यवहारोम्मेदसिंहिबुन्द्यागमनराधाऽवदाततृतीया३ सदासेविभ्रातृसग्रामसिंहमहाराजकुमाराऽजितसिंहकृष्णगढविवाहनशुक्रमासलग्नमरुराजविजयसिंहकुमारफतेसिंहको

१अग्नि से २ उपजलाशय (झीली आदि निवान) ३ मकान ४प्रचेताओं ने मानों वृक्षों को जलाने को अग्नि छोड़ी (यह कथा भागवत में इस प्रकार है कि प्राचीनबर्हि के पुत्र प्रचेता तप करने को गये थे तब पीछे से नारद के उपदेश से प्राचीनबर्हि भी वन में तप करने को चलागया इस कारण देश में अराजकता होकर संपूर्ण पृथ्वी को वृक्षों ने ढक ली, तदनंतर प्रचेता जब तप करके पीछे आये तब अग्नि फैलाकर वन वृक्षों को जलाया)॥२९॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में, जाट के युद्ध में सहाय देने के अर्थ बुन्दी के पति के पहिले भेजे हुए राजकुमार अजितसिंह का जयपुर में रहना और उस युद्ध की इच्छावाले को माधवसिंह का रोकना१ जाट से विजय हुए पीछे अनेक प्रकार के विलास करना और ब्राह्मण दयाराम का कुमर के श्वशुर होने की कामनावाले जयसिंह के पुत्र (माधवसिंह) को समझाना२ उस सम्वत् के पूर्ण हुए पीछे चैत्र मासकी पूर्णिमा को माधवसिंह का मरना और पृथ्वीसिंह का जयपुर की गद्दी पर बैठना१ उचित व्यवहार के साथ उम्मेदसिंह के पुत्र का बुन्दी आना और वैशाख सुदि तीज को सदैव सेवा करनेवाले भाई सग्रामसिंह और महाराज कुमार अजितसिंह का कृष्णगढ विवाह करना ४ ज्येष्ठ मास के लग्न पर मारवाड़के राजा विजयसिंह के कुमर फतहसिंह का कोटा के पति की पुत्री से

टेशसुताविवाहनभोजिष्येयबुंदीन्द्रकुमारशिवसिंहभोजिष्येयीधन्वेश
बखतसिंहसुतोद्वहनमेदपाटदेशस्वामिसामंतविग्रहवर्द्धनराणाराज
सिंहव्याजपुत्ररत्नसिंहकुम्भिलमेरुदुर्गप्रकटीभवनगोघुन्देशझल्लाजस
वंतसिंह १ स्वकुलसहितभिंडरेशसगताउत्तमुहुःकर्म्मसिंह२ सपुत्र
देवगढेशचुंडाउत्तजसवन्तसिंह३ कुठारेशचाहुवाणफतेसिंह ४ वेघ
मेशचुंडाउत्तमेघसिंह ५ दुर्गाऽध्यक्षवणिग्वसन्तरामा ६ ऽऽदिच्छद्म-
शिशुप्राकट्यसेवनसादड़ीशझल्लारायसिंह१ देलवाड़ेशझल्लाराघवदे
व२ प्रच्छन्नशिशुस्वामित्वस्वीकरणोदयपुरचमूवेष्टनतत्तोपरणाराणा
रिसिंहव्याकुलीभवनं षट्पञ्चाशत्तमो ५६ मयूखः ॥ ५६ ॥
आदितः ॥ ३३८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत हुलकर तक्कू अडर, आयो हिंदुसथान ॥
आगम पख फग्गुन असित, सक अतिकृति घृति१८२५मान॥१॥
तक्कू पँहँ बुंदीस तब, सज्ज टीका बिधि साजि ॥

विवाह करना और बुन्दी के पति के दासीसुत शिवसिंह का मारवाड़के पति बखतसिंह के पुत्र (विजयसिंह) की पासवान की पुत्री को विवाहना४ मेवाड़ देशमें स्वामी और उमरावोंमें विरोध बढना, राणा राजसिंहके झूठे पुत्र रत्न-सिंह का कुंभलमेर के किले में प्रसिद्ध होना६ गोघुंदा के पति झाला जसव-न्तसिंह, अपने कुल सहित भींडर पुर के पति सगतावत मुहुकमसिंह, पुत्र सहित देवगढ के पति चुंडावत जसवन्तसिंह, कोठारिया के पति चहुवाण फतहसिंह, वेघम के पति चुडावत मेघसिंह, और किलेदार बनिया वसन्तरा-म आदि का छलवाले बालक को प्रकट करना ७ सेवा करने को सादड़ी के पति झाला रायसिंह, देलवाड़े के पति झाला राघवदेव का छिपेहुए बालक का स्वामीपन स्वीकार करना ८ सेना से उदयपुर को घेरना और उस तोप युद्ध से अरिसिंह के व्याकुल होने का छप्पनवां ५६ मयूख समाप्त हुआ ॥५६॥ और आदि से तीन सौ सैंतीस ३३७ मयूख हुए ॥

१ फागण वदि ॥ १ ॥

पठई कुल पहिरावनी, *बलि भूखन१ गज२ वाजि३॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

याहि बरस१८२५ बिच अजितसिंह बुन्दीस कुमारहु ॥
सुनि जनपद निज सोर वित्त लुट्टन मैनन बहु॥
चढ्यो कुपित चहुवान जनक आदेस पाय जहँ ॥
बारह १२ खेटन बिंटि ताप दिय अतुल उग्र तहँ ॥
करि कैद अखिल तसकर कुमति कारा बिच डारिय कुमर
जय द्विरद बधि आलान भुज धन्य धन्य हुव सकल धर३

॥ दोहा ॥

इद्रकुमरि१ अरु व्रजकुमरि२, जननि भुजिष्या जात॥
दुहिता निज बुन्दीस हुव२, व्याहिय इत विख्यात॥ ४ ॥
अजितसिंह मरु ईसको, सुत लघु हो जु किसोर ॥
सुभमति तास खवासि सुत, जैतसिंह१ रन जोर ॥ ५ ॥
बुझि राजगढसन बिदित, वाहि अतुल उच्छाह ॥
दुहिता व्रजकुमरि सु दई, रचि बिबाह हित राह ॥ ६ ॥
नगर करोली नृप तनय, कुसलसिंह दासेय ॥
सुत ताको जयसिंह२ सो, पुनि बुल्ल्यो प्रभु प्रेय ॥ ७ ॥
इद्रकुमरि ताकहँ दई, अखिल सिद्धि अवधान ॥
दायज द्रव्य अनेक दिय, चित्त उदधि चहुवान ॥ ८ ॥
बहुरि बहादुरसिंह१ अरु, स्वीय कुमर सिरदार२ ॥
गग्गरौंढ व्याहे उभय२, लगन रीति इक१ लार ॥ ९ ॥

---

*पुनि ॥ २ ॥१ अपने देश में २ मैनों के बहुत धन लेने का ३ पिता के हुकम से ४ खेटों को घेरकर ५ चोरों को ६ कैद में ७ जय रूपी हाथी का ८ भुजाें रूपी हाथी बांधने के खंभे से बांधकर ९ सब भूमि में ॥ ३ ॥ पासवान माता से १० उत्पन्न ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ पुत्री ॥ ६ ॥ १२ दासी का पुत्र १३ स्वामी का प्यारा ॥ ७ ॥ १४ सब मनोवांछ्य (वांछित) साधकर ॥ ८ ॥ १५ गगराट ॥ ९ ॥

पृथ्वीसिंह३ मदन झल्ला सुत, सत्रुसल्ल मन्न्यो सु मोद जुत ॥
सत्रुसल्ल विनु सुत वपु तजि दिय, तव तस अनुज१ गुमान पट्ट लिय ॥ २६ ॥
पृथ्वीसिंह झल्ल सुत जालम४, यह ह्वैहैं जाहिर अब आलम२ ॥
ताकैं कछु कोटापतिसौं तव, अनख भई सु रह्यो न तत्थ अब २७
छोरि गुमानसिंह कोटा पति, उदयनेर आयो प्रपंच मति ॥
सु अरिसिंह रानहु सनमान्यों, अति हित जाय ससुख पुर आन्यों२८
तखतसिंह जयसिंह रान सुव, ताके सुत अज्ञात३ नाम हुव ॥
ताकी सुता व्याहि जालम कहँ, इम सनमानि रान रक्खिय तहँ२९
दयो राज्य उपटंक मुदित मन, पुनि पर चित्ताखेड़ परग्गन ॥
सो जालम यहँ रान सहायक, लै मरहट्ठ कटक रन लायक॥३०॥
छोरि अवंति स्वामि हित छायो, अगरचंद महता जुत आयो ॥
अगरचंदको जनक अग्ग जव, बीकानेर नृपहिं विख दै तव ॥३१॥
मांडिलगढ तिय जुत भजि आयो, ताको सुन यह रान वधायो ॥
इत रानहु रन हित कटि वंधी, रक्खे जवन सहँस खट६००० संधी

॥ दोहा ॥

आये दल उज्जैनतैं, सुनि मरहट्ठ सहाय ॥
पुरतैं रानहु पिल्लयो, दल निज जित्तन दाय ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे हुल्लकरतक्कूदगागमनबुन्दीन्द्रतत्सत्करणमहाराजकुमाराऽजितसिंह १ मैणागणविध्वंसनरावराड्भौजिष्येयीसुताद्वय २ भौ-

१छोटा भाई ॥२६॥२संसार में॥२७॥२८॥३जिसका नाम मालूम नहीं हुआ॥२६॥ ४राज की पदवी ५ श्रेष्ठ ॥ ३० ॥ ६ पिता ७ जहर ॥ ३१ ॥ ८ मांडलगढ में ९कमर बांधी १० सिन्ध देश के यवन ॥ ३२ ॥ ११ सेना १२ सेना भेजी ॥३३॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशि मे, उम्मेदसिंह के चरित्र में, हुलकर तक्कू का उत्तर दिशा में आना और बुन्दी के पति का उसका सत्कार करना १ महाराज कुमार अजितसिंह का युद्ध में मैनों को मारना

ष्येपरठोड़जैतसिंह १ यादवजयसिंह २ विवाहनराजकुमारबहा
रसिंह १ शरदारसिंह २ गर्गराटोद्वाहनाऽनन्तरकुमारद्वय २ दाय
भाजनव्यासमाणिक्यरामपरस्परभित्तुकपञ्चक ४ समानसन्मन
च्छलवालसेनावेष्टनव्याकुलराणाऽरिसिंहश्रीमन्तसहायप्रार्थनम्क
ालाजालमसिंह १ वणिगगरचन्द २ प्रेषणाज्ञाततद्विज्ञप्तिपत्रश्रीमन्त
सहाराघ्रराघव १ यवनदोला २ ऽरिसिंहसहायप्रस्थापनमल्लाजाल
मसिंहप्रपितामहाऽऽगमाऽऽदिपूर्वोदन्तवर्णनवणिगगरचन्दजनकम-
हापापत्वसूचनसमाप्तश्रीमन्तसहायराणाऽरिसिंहस्वसैन्यप्रेषणा सप्त-
पञ्चाशत्तमो ५७ मयूख ॥ ५७ ॥ आदित ॥३३८॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ हरिगीतम् ॥

पुर सलूमरि पति भीम भ्रात पैहाड१ लै दल निक्खस्यो ॥
अरु फतेसिंह२ हु चोडहर आमेटपुर पति उल्लस्यो ॥
घाणोर पति रट्ठोर वीरमदेव३ सगहि सज्जयो ॥
रट्ठोर अक्खयसिंह ४ तिम वधनोर पुर पति गज्जयो ॥१॥

और रावराजा की यो पासवान की पुत्रिया को पासवानिये राठोड जैतसिंह और जादव जयसिंह को विवाहना २ राजकुमार बहादुरसिंह और सरदारसिंह को गर्गराट पुर में विवाह करने पीछे माईवंट देना और व्यास माणिकराम को परस्पर पांच यावकों में बराबर मानना ३ झूठे (फरेबी) बालक की सेना से घिर कर राणा अरिसिंह का श्रीमन्त से सहाय के अर्थ प्रार्थना करना और झाला जालमसिंह और महता अगरचंद को भेजना ४ इन की अरजी जानकर श्रीमंत का मर हठा रघू और दोलामियां को अरिसिंह की सहाय में भेजना५ झाला जालमसिंहके प्रपितामह के आने आदि पहिले वृत्तान्त का कहना और बनिये अगरचन्द के पिता के महापाप की सूचना करना ७ श्रीमन्त की सहाय पाकर राणा अरिसिंह का अपनी सेना भेजने का सत्तावनवां ५७ मयूख समाप्त हुआ॥५७॥ और आदि से तीन सौ अड़तीस३३८ मयूख हुए ॥

१ पहाड़सिंह ॥ १ ॥

वनहड़ापति नृपरायसिंहहु५ रानवंसिय उज्झलयो ॥
उम्मेदद६ साहिपुरेस भूप सुजानवंसिय उज्जलयो ॥
विंझोलि पति सुभकर्ण७ त्यों परमार असिंवर संग्रह्यो ॥
वलि चौंडवंसिय भैंसरोर पुरेस मानहु८ उम्मह्यो ॥२॥
इत्यादि सूर सिपाह संधिन लै उदैपुरतें कढे ॥
सह झल्ल जालमसिंह दक्खिन वीर वे उततें वढे ॥
दुहुँ ओर आत अनीक१ लखि सिसुंकों सहायक लै भजे ।
चित्तोरकों कछु भेद सों लहि दुग्गमें दृढ व्है सजे ॥ ३ ॥
दोला मियाँ१ मरहट्ठ राघव२ ए उदैपुरमैं रहे ॥
छलबालके प्रतिपाल जे तिनके [illegible] नक भये चहे ॥
इहिं बीच माह[illegible] संधिया पहुँच्यो अवंतियं आनिकैं ॥
तिहिं जानि[illegible]कैं सिसु पँच्छके भट भीरं लैन प्रमानिकैं ॥४॥
चित्तोर [illegible] र उरुज सुरतसिंहहि दे रु लै सिसुंकों चले ॥
सुनि आय सम्मुह संधिया इन्ह लैगयो सु चहे फले ॥
तिन बाल माहजि अंकमैं धरि द्वो सराय यहै कही ॥
सुनि यों उदैपुर देनकों इहिं बत्त माहजिहू चही ॥ ५ ॥
दोला१ रु राघव१ हे उदैपुर व्हाँ यहै तिनमैं सुनी ॥
सिसुपक्ख लग्गिय संधिया अव सेन सज्जहु सोगुनी ॥
हम जायकैं छल मंत्रमैं तिहिं लै रु सत्वर मारिहैं ॥
गहि बाल जो अरि रावरो तिहिं कैद आलय डारिहैं ॥६॥
इह मंत्र राघव१ रान२ कै इत यों उदैपुरमैं भयो ॥

---

१ श्रेष्ठ तरवार पकड़ी २ मानसिंह भी ॥ २ ॥ ३ सेना ४ रत्नसिंह को ॥३॥ छल से बनाये हुए बालक रत्नसिंह की ५ पालना करनेवाले ६ उज्जैन में ७ रत्नसिंह के पच्छ के उमराव ८ सहायता ॥ ४ ॥ ९ वैश्य १०रत्नसिंह को ११ गोद में रखकर ॥ ५ ॥ १२ बालक (रत्नसिंह) के पच्छ पर १३ माधजी को शीघ्र मारेंगे ॥ ६ ॥

सब दच्छ१ दूतन भेजिकैं यह जानि माहजिहू लयो ॥
दोला१ रु राघव२ के कुटुंब हुते अवंतियमें जहाँ ॥
करि कैद पुत्र कलत्र कोपित संधिपाहु सज्यो तहाँ ॥७॥
यह जानि ये अरिसिंहको दल लै उदैपुरतैं चले ॥
खुरतार वाजिन मार मत्थ हजार आलुकेके हले ॥
फहरात लोहित रंग केतन मत्त हत्थिनपैं धरे ॥
वट१ अंब२ जंबु३ कदंब४ ज्यों कुमुदादि अद्रिनपैं खरे।८।
डगमग्गि सैलन शृंग त्यौं भैर भंग तुट्टन के लगे ॥
सब ओर सकत सैन हकत नैन सकरके जगे ॥
चढि सिंह कालिय संग चालिय गैन गिद्धनि वित्थरी ॥
पहुँची अवंतिय यों चमू अरु हल्ल कित्तनकौं करी ॥ ९ ॥
उततैंहु माहजि सज्ज ह्वै सिंधुपच्छके भट लै चढ्यो ॥
जिम जेठ सूरज ताव यौं तरकाव तोपनको वढ्यो ॥
दुहुँ ओरके रन वाजि कुंजर अंभमैं उडनैं लगे॥
खिंल सोक गोलन तोकँ घायल घुम्म लैन घनैं लगे १०
डनैंलगे१ घनैंलगे२ अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥
अतलादि भू पुट ह्वै थरत्थर नीर सिंधुनतैं छल्यो ॥
दिगधेनुं च्यारि४हु ऐंनलौं चिकि फेन आननमैं फल्यो ॥

१ दक्ष (चतुर) २ उज्जैन में ३स्त्रियों को ॥७॥४ये (राघु और दोला) दोनों अरिसिंह की सेना लेकर ५सर्प (हजार फणों के सम्बन्ध से यहां शेषनाग जानना चाहिये) ६ लाल रंग की ७ ध्वजायें ८ जैसे ये चारों वृक्ष सुमेरु के शिखर ९ कुमुद आदि पर खड़े हैं तैसे ॥ ८ ॥ १० पर्वतों के शिखर ११ भार से १२स्थान ॥ ९ ॥ १३ रत्नसिंह के पक्ष के उमरावों को लेकर १४ हाथी १५ आकाश में १६बाकी के गोळों की झोक से १७बालक (रत्नसिंह) के बहुत घायल या घायलों के समूह घूमने लगे ॥ १० ॥ १८ दिशा की हथनियें (दिग्गजों की स्त्रियें) "यह युद्ध दक्षिण में हुआ इससे चार दिशाकी हथनियों को कष्ट होना लिखा और उत्तर आदि चार दिशा की हथनियें इस कष्ट से बाहर रहीं" १९ हरिण

चउसट्ठि६४ जुग्गिनि जंग चत्वर रास मंडत रंगमैं ॥
महती बजावनहारहू कलिकार घुम्मत संगमैं ॥ ११ ॥
आखाढ मारुत खेह सम्मित धूम छादित लोक भो ॥
तम थोक रोकन ओक ओकन कोक कोकिन सोकभो ॥
जल बीत पोमिनि पात ज्यौं भुव सेसके सिरपैं नचैं ॥
कालीय पन्नग भोगपैं जदुनाथ तंडव ज्यौं रचैं ॥ १२ ॥
हनुमान पावक लंक ज्यौं दिय ज्वाल ज्यौं नभ वित्थरैं ॥
नगरी अवंतियमैं हु मानव जूह रक्खस ज्यौं जरैं ॥
सिप्रा नदी लगि तोय तुट्टन नक्र झख गन आवटे ॥
जिम लोह कप्पर तैलमैं गन पूपके खग लावटे ॥१३॥
इम होत लोलन जंग गोलन सेन माहजिकी लँची ॥
छलबालकी तब फोज होय हरोल रारि भली रची ॥
कछुकाल तोपन ज्वाल यौं रचि वग्ग बाजिनकी लई ॥
दुहुँ२ ओर धीर प्रबीर मिलि भट भीर सन्नकी भई ॥१४॥

के समान चकित होकर, सुख में स्नान होने लगे, चौसठ ही योगिनियों ने १उस युद्ध के२चौक (क्षेत्र) में युद्ध में आकर ३नृत्य रचा महती नामक वीणा को ४बजानेवाला और५युद्ध करानेवाला नारद मुनि उसके साथ में घूमने लगा ॥ ११ ॥ आषाढ के ६ पवन से रज उड़ी जिसके ७ सदृश धूम से लोक छागया ८ उस अंधेरे के समूह ने ९घर घर को रोकदिया जिससे १० चकवा चकवियों को शोक हुआ जैसे पानी में ११ पवन लगने से १२ पद्मिनी (कुमोदनी) हिले तैसे शेष के मस्तक पर भूमि नची अथवा कालीनाग के १३फणों पर १४श्रीकृष्ण ने नृत्य किया त्यों नची ॥ १२ ॥ जिसप्रकार हनुमान ने लंका में १५ अग्नि लगाई तिसप्रकार आकाश में अग्नि फैली उस अग्नि से उज्जैन में राक्षसों के समान मनुष्यों का १६ समूह जलने लगा और १७सफरा नदी का पानी तूटकर मगर मच्छ ऐसे उबले जैसे तेल से भरे लोहे के १८ कड़ाह में १९ पुवों का समूह अथवा २० लावा पक्षी उबलें ॥ १३ ॥ इसप्रकार २१ चपल गोलों से युद्ध होते माहजी (माधोराव) सिंधिया की सेना २२ भागी तब २३ रतनसिंह की सेना ने आगे होकर अच्छा युद्ध किया २४ घोड़ों की बागें

छलवाहको दल साधिया लहि वीच सत्रुनकों भयो ॥
वरमाल लै ततकाल अंबर जाल अच्छरिको छयो ॥
कटि मुंड१ तुंड२ कलाप३ कंठ४ ललाट५ के किरने लगे ॥
वलि मत्त पीवन रत्त फेरव६ फेरवी७ फिरनें लगे॥ १५ ॥
भट खेंचि कानन देत वानन लेत मानन सोधिकें ॥
अति कोप छुट्टत गोप८ फुट्टत टोप सजुत गोधिकें९ ॥
तरवारि वाहुन१० लग्गि होत उपेंद्र११ मंदिर झल्लरी ॥
नस जाल लुबत देह दारितें जानि अबर वल्लरी ॥ १६ ॥
उलटे तुरंग महारुतें असवार उलटे ॥
फरके कलेज रु फिप्फ फैलत हार छत्तिनके फटें ॥
घंटके वने वटकें लगे झटके उड़े भट के नये ॥
लटके पर अटके रकावन रूप के नटके भये ॥ १७ ॥
कटि धार मारन भद्र वारन मत्थ मुत्तिय उच्छलें ॥
घन कंपके धारका महा उरका मनौं करकौं चलें ॥

चढाई ॥ १४ ॥ १ रतनसिंह की सेना का लेकर सिन्धिया शत्रुओं के बीच में हुआ उस समय तुरत वरमाला लेकर अप्सराओं का समूह २ आकाश में छागया वहां कितने ही मस्तक ३ मुख, हाथियों का कलावा, कंठ, ललाट ४ गिरने लगे ५ फिर मस्त होकर रुधिर पीने को ६ शृगाल (गीदड़) ७शृगालिनिया (गीदड़ानिया)फिरने लगीं ॥१५॥ वीर लोग कान तक खेंचकर बाण छोड़तेहैं सो वैर पर प्राणों को देखते हुए अत्यन्त कोप से छूटे हुए ८ बाणों से टोप सहित ९ ललाट फूटते हैं१०हस्तानों पर लगकर तरवार ११विष्णु के मंदिर की झाल र के समान बजती है १३कटे हुए शरीरों से १४ आकाश की बेल के समान१२ नसों का समूह लटकता है ॥१६॥ प्रहार होने से१५घोड़े उलटते हैं और सवार १६ऊपर उलटते हैं छाती के कपाट फट कर कलेजे और फेफरे फैलते हैं कितने ही वीरों के १८ शस्त्र लगकर १७ शरीरों के टुकड़े होते हैं रकाबों में लटक कर कई वीर नट के रूप के समान होते हैं ॥ १७ ॥ तलवारों की मार से भद्र १९ जातिवाले हाथियों के मस्तक फट कर मोती उछलते हैं सो मानों २० प्रलय के मेघ के घर से मोटी झड़ी के २१ ओले गिरते हैं मोतियों के

भहनात गोलिन[1] व्रात[2] के ऋतुराजमैं[3] अलिराज ज्यों ॥
असि केक मारत झुंड झारत दब्बि तित्तिर बाज ज्यों ॥१८॥
छिकि पार तोमर[4] लार लोहित धार हत्थिनतैं परैं ॥
अरुनोदका[5] रसकी नदी जनु मंदराचलतैं ढरैं ॥
ध्वजदंड खंड उडैं अनेक मयूर सावन मास ज्यों ॥
हय जीन ज्वालनमैं जरैं दव[6] जेठ पव्वय[7] घास ज्यों ॥ १९ ॥
फटि घाय सोनित[8] गैंनमैं[9] चढि जात जावक[10] जंत्र ज्यों ॥
भखि प्रेत वीरनके बँसा[11] गल आँचि डारत अंत्र ज्यों ॥
अति जोरतैं दुरहुँ ओर घोर कटार कंकटपैं[12] बजैं ॥
हमगीर धीरनको बढैं तँहँ नीर भीरुनको लजैं॥ २० ॥
असवार केक उडाय अव्वनैं[13] हत्थि होदनपैं अरे ॥
पवमानके[14] रय[15] भानके हय मानसोत्तर ज्यों खरे॥
प्रसरैं फुलिंग[16] झरैं सु पावक हेति[17] हेतिनसों घसैं ॥
लगि अंत लुंबत पंसुली जनु नाग[18] चंदनपैं लसैं ॥ २१ ॥

१समूह२वसंत ऋतु में३भ्रमरों की भांति चलते हैं और कई तलवार मारकर समूहों को गिराते हैं और बाज पची तीतर को दबावै तैसे दबाते हैं ॥ १८ ॥ ४ भाले पार फूट कर हाथियों से रुधिर की धारा गिरती है सो मानों मंदराचल से ५ अमरस की नदी चलती है. कई ध्वजा दंड कटकर श्रावण मास के मयूरों के समान उड़ते हैं और ६ ज्येष्ठ मास की अग्नि में जैसे ७ पर्वत का घास जलै तैसे घोड़ों के जीन अग्नि में जलते हैं ॥ १९ ॥ घाव फटकर १० जावक के फुहारे के समान ९ आकाश में ८ रुधिर उछलता है, वीरों की ११ चरबी खाकर भूत गले में आंतें डालते हैं दोनों ओर से बडे बल से भयंकर कटार १२ कवचों पर बजते हैं जहां हमगीर और धीरों का पराक्रम बढता और कायरों का लज्जित होता है ॥ २० ॥ कई सवार १३ घोड़ों को उड़ाकर हाथियों के होदों पर अड़ते हैं सो मानों पवन के १४ वेगवाले १५सूर्यके घोड़े सुमेरु पर्वत पर खड़े हैं१७शस्त्रों से शस्त्र घिस कर अग्नि गिरकर१६अग्निकण फैलते हैं आंत पंसुलि के लगकर ऐसी लटकती है जैसे चंदन पर १८ सर्प शोभते हैं ॥ २१ ॥

गिरि ढाल लोहितै ताल चक्क कुलालके निभ के भ्रमैं ॥
तिनपैं परैं फटि तुंड के कटि मुंड जे कुट ज्यों जमैं ॥
निकसैं अलोहित सान लीढंक लव रीढक तोरिकैं ॥
मनु फारि सैवल मजरी सैफरी उडैं जल छोरिकैं ॥ २२ ॥
भट सत्थ के दुवहत्थलों अरि मत्थ यों पटकैं गदा ॥
सुं मकी निकारन लट्ठ मारनकी गँवारनकी अदा ॥
भट प्रान छुट्टत स्वास तुट्टत के गिरै हिचकीभरैं ॥
तुतरात बेन फिरात नैन किरातनैं मृग ज्यों करैं ॥ २३ ॥
कति भारि कात्तिनैंकों निरोय भिराय छत्तिनकों भिलैं ॥
मनु मित्र हर्ष हवाल के चिरकालके बिछुरे मिलैं ॥
गुटिका१ रु गोलक२ सिल्प कोबिद केक मडत चातुरी ॥
बिसिखा बजार बनायकैं बिधिसों बसावत जैपुरी ॥ २४ ॥
बिडरात गात डगात दतन हूंत भूत हमे परैं ॥

ढाल से गिरकर १ रुधिर के तलाव में २ कुम्हार के चाक के ३ स-दृश भ्रमती हैं जिन पर कई फटेहुए ४ मुख और फटेहुए ५ मस्तक गिरते हैं सो ६ घड़ों के समान जमते हैं ८ सान से चाटी हुई तरवारें ९ लघी पीठ को तोड़कर ७ बिना लोहू लगे साफ निकलती हैं सो मानों १० शैवाल की मजरी को फाड़ कर जल को छोड़कर ११ मच्छी उड़ती है ॥ २२ ॥ कई वी-रा के समूह दोनों हाथोंसे शत्रुओंके मस्तकों पर गदा पटकते हैं १२ सो ग्रामीण लोगों के मकी (धान्य विशेष) निकालने में लट्ठ मार ने की १३ तरह दीखते हैं वीर लोग श्वास टूटकर प्राण छूटते समय गिरकर हिचकियां लेते हैं और तुतलाते हुए वचन बोलकर १४ शिकारी के आगे मृग के समान नेत्र फेरते हैं ॥ २३ ॥ कितने ही १५ तलवारें चलाकर १६ समीप लेकर छातियां भिड़ाकर मिलते हैं सो मानों १७ मिलने के हर्षके अथवा वियोग के खेद के १८ वृत्तान्त से १९ बहुत समय के बिछड़े हुए मित्र मिलते हैं कई गोलियां और गोले शिल्प विद्या के २० पंडित होकर चतुराई रचते हैं और २१ गलिया और बाजार बनाकर २२ विधि पूर्वक विजय की पुरी बसाते हैं अथवा जयपुर के समान पुरी बसाते हैं ॥ २४ ॥ २३ डरावने शरीरों से और दांतों से डराकर २४ भुकाये

पटु स्वाद हेरत क्षेत्रपालक नेत्र जे निकसे परैं ॥
उडिजात के बिनु पग्घ मस्तक लंब *मान सिखा धरैं ॥
खनि[1] मालिनी जनु गैंद खेल सपत्र[2] सूरनके[3] करैं ॥ २५ ॥
सर[4] ईतिकारक[5] सालभी[6] तति रूप अंबर उल्लसैं ॥
भर[7] भीतिकारक[8] कालभी[9] तति जंग गोलनकों ग्रसैं ॥
कति बेध्य[10] जानन पुंख[11] बानन बात काननतैं करैं ॥
अपसव्य[12] हत्थ सगव्यकों[13] तहँ सव्य[14] कातर उच्चरैं ॥ २६ ॥
गज गात[15] ठेलन संगि[16] सेलन ब्रात[17] पैठत यों लसैं ॥
जनु बज्र संगहि बीजुरी धकि स्याम बद्दलमैं धसैं ॥
अरिसिंह१ माहजि२ के उभैर दल यों अवंतिय[18] आहुरे ॥
बल जानि सत्रुनको उदैपुरके लजे अब बाहुरे[19] ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

चम उदैपुरकी चली, जीवनतैं हित जानि ॥
संग लगे माहजि सुभट, प्रबल दिखावत पानि[20] ॥ २८ ॥
मेवारे दल माँहिसौं, तुरग खुरे तहँ नोऽन ॥

हुए वा हू हू करके भूत हंसते हैं चतुर क्षेत्रपाल स्वाद हेरते फिरते हैं जिनके नेत्र निकले पड़ते हैं कई मस्तक लम्बे * साप की (लंबी) चोटीको धारण किये हुए पगड़ी विना होकर उड़ते हैं सो मानों मालिन २ पत्रों सहित ३ सूरण [कन्द विशेष] को १ खोदकर गैंद खेलती है ॥ २५ ॥ ५ ईति करनेवाली ६टीडियों की पंक्ति के रूप से आकाश में ४ बाण उड़ते हैं ७ वीरों को ८ भय देनेवाले ९ काल की पंक्ति के समान गोले युद्ध में उन्हें ग्रसते हैं कई १० मारने योग्य जानने के लिये बाणों के ११पंख कानों से बात करते हैं और १३प्रत्यंचा सहित १२ दाहिने हाथ को १४ बायां हाथ [बांये हाथ] पीछे रहने के कारण कायर कहता है ॥ २६ ॥ हाथियों के १५ शरीर को ठेलने के लिये १६ बरछियों और भालों के १७ समूह घुसते हुए ऐसे शोभा देते हैं कि मानों वज्र के साथ बिजुली चलकर काले बद्दलमें घुसती है १८उज्जैन में इसकारण माहजी और अरिसिंह की सेना खड़ी तहां उदयपुर की सेना लज्जित होकर १९ भागी ॥ २७ ॥ २० हाथ ॥ २८ ॥ मेवाड़ की भगी हुई सेना में से

जिम भचक्र पच्छिम चलत, ग्रह गन पूरब गोन ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

इक राघव१ मरहट्ठ जवन दोला२ द्वितीय जँहँ ॥
झल्ला जालमसिंह३ चौंड वसिय पहाड़४ तँहँ ॥
साहिपुरप उम्मेद५ मान६ भट भैंसरोर पति ॥
अक्खैय७ वीरमदेव८ उभय२ रट्ठोर मरन मति ॥
परमार सुभट सुभकर्ण९ पुनि ए मुररे दल भजत सन ॥
नव९सफर जानि अतिबल निडर गहर७ओत किय प्रतिगमन३०
साहिपुरप उम्मेदसिंह१ असिवर हद झारिय ॥
खूब बिरचि रन खेल प्रचुर मरहट्ठ प्रहारिय ॥
करि उज्जल सीसोद कुलहिं तिल तिल मित तुट्टिग ॥
रविमंडल बिच होय लाह सुरपुर सुख लुट्टिग ॥
तिमही पहाड़२ भट चौंड हर ईसहिं दैन न अहरिय ॥
बल फारि मारि मरहट्ठ बहु कैंलह सीस रज रज करिय ३१

॥ दोहा ॥

दोला१ राघव२ एहु दुव२, सत्रु बहुत सहारि ॥
ऐंथुल रारि बिच कटि परे, अतुल मारि तरवारि ॥ ३२ ॥
इक१ परमार कवध उभर२, टरे कछुक छतवान ॥
मरहट्ठन लिन्ने पकरि, जालमसिंह रु मान ॥ ३३ ॥

जो (*)घोड़े इस तरह पीछे मुड़े जैसे१नपूर्ण तारा मण्डल तो पश्चिम को जाता है और उनमें से (‡)नो ग्रह पीछे पूर्व को जाते हैं ॥ २९ ॥ १ पहाड़सिंह३उम्मेदसिंह ४मानसिंह ५अक्षयसिंह ६ मन्द ७ गहरे ओते में ८ उलटे चले ॥ ३० ॥ ९ बहुत१०तिल तिल माफिक११स्वर्ग का१२शिव को मस्तक देना स्वीकार नहीं किया१३युद्ध में ॥ ३१ ॥ १४घड़ युद्ध में ॥ ३२ ॥१५घायल१६मानसिंह को ॥३३॥

(*)यहां अनहद्दस्मार्या लक्षणा से घोड़ों के सवार जानने चाहिये ॥

(‡ नो ग्रहों की सामान्य गति तो सपूर्ण तारा मण्डल के साथ पश्चिम में जाने की है परतु विशेष गति से नो ही ग्रह प्रतिदिन पूरब की ओर हटते जाते हैं ॥

विगरयो दल अरिसिंहको, जित्यो माहजि जंग ॥
सिसु पॅक्खी हरखे सुभट, आवन राज्य उमंग ॥ ३४ ॥
दॅम्म लक्ख१०००००अरु बीस२०गज, तोप छतीस३६नवीन
लूटमाँहिं माहजि लये, तुरग सहँस पुनि तीन ३००० ।३५।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे ज्ञातससहायसमागताऽरिसिंहसैन्यछलबालसहिततत्पक्षसुभटभेदोपायचित्तोड़दुर्गप्रविशनमाहजयवन्त्यागमनश्रुतैतच्छलपक्षसन्धपाशरणग्रहणमाहजिदोला १ राघव २ पुत्रकलत्राऽऽद्विनिग्रहणातत्सहायराणाऽरिसिंहसैन्य १ सन्धपासहायच्छलशिशुसैन्य २ शिप्रातटमहारणकरणसाहिपुराऽधिराडुम्मेदसिंह १ सलूम्बरीशभीमाऽनुजपहाड़सिंह २ यवनदोला ३ महाराष्ट्रराघव ४ मरणपरमार १ कबन्ध २।३ सक्षतीभवनझल्लाजालमसिंह १ चुंडावतमानसिंह २ काराग्रसनराणासैन्यपलायनच्छलपक्षसहायीभूतमाहजिविजय

१ रत्नसिंह के पक्षवाले ॥ ३४ ॥ २ रुपये ॥ ३५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंहके चरित्र में सहाय पर आईहुई और अरिसिंह की सेना को जानकर छलवाले बालक सहित उसके पक्ष के उमरावों का भेद उपाय से चितौड़ के गढ में घुसना १ माहजी का उज्जैन आना सुनकर उन छल पक्षवालों का उसकी शरण लेना२ माहजीका दोला और रघु के पुत्र और स्त्रियों आदि को कैद करना और उनकी सहाय पर राणा अरिसिंह की सेना और सिंधियाकी सहायता से रत्नसिंह की सेना का शफरा नदी के किनारे महा युद्ध करना ३ शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह, सलूमर के पति भीमसिंह के छोटे भाई(*)पहाड़सिंह, यवन दोला और मरहटा राघव का मरना और पॅवार और राठोड़ का घायल होना, झाला जालमसिंह और चुंडावत मानसिंह का पकड़ा जाना, राणा की सेना का भागना ४ छलपक्ष की सहाय करनेवाले माहजी का विजय पाना और शत्रु के डेरों का वैभव लूटने का अठावनवां मयूख समाप्त हुआ ॥५८॥ और आदि से

(*)सलूमर के रावत भीमसिंह को महाराणा अरिसिंह ने जहर देकर नाहरमगरे में मार डाला तब उसका छोटा भाई पहाड़सिंह भीमसिंह के पाट बैठ गये। इसकारण इस समय वह सलूमर का ही रावत था यहां सलूमर के पति भीमसिंह का छोटा भाई लिखा सो अनुचित है ॥

प्रापयापरशिविरवैभवलुण्टनमष्टपञ्चाशत्तमो ५८ मयूख ॥ ५८ ॥
आदित ॥३३९॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—ग्रदलैं जालमसिंहकैं, सठि सहँस ६०००० दै दम्म ॥
मित्र इक्क मरहठनैं, टारयो कैद कुकम्म ॥ १ ॥
चुडाउत छुट्टयो न वह, भैंसरोर पति मान ॥
छलसिसु जान्यों छिप्रही, रहिहों व्है अब रान ॥ २ ॥
दोला१ राघव१ दुहुँश्नके, लीनें सीस कटाय ॥
रोपे नगर अवंति बिच, सेलन अग्र चिपाय ॥ ३ ॥
उदयनैर उप्पर बहुरि, सज्जिय माहजि सेन ॥
उतकृति धृति १८२६ आखाढ बिच, लग्गयो पत्तन लेन ॥४॥
रसना जिम संकट रँदन, जरि इम तोपन जाल ॥
संध्या खिजि बिंटिप शहर, करि रन दँमन कराल ॥ ५ ॥
भैंसरोर पति मान तँहँ, बिधि कछु कैद बिहाय ॥
जामिकं दिठि बचायकैं, दुरयो उदेपुर जाय ॥ ६ ॥
बहुत काल घेरा रह्यो, भयो उदयपुर त्रस्त ॥
सद्यपाको घन बुंठि करि, बिगरयो बिभव समस्त ॥ ७ ॥
सेन खरच छलबालसों, मग्यो माहजि तत्थ ॥
देहु उदयपुर उन कहिय, लेहु उचित तुम अत्थ ॥ ८ ॥
सुनिय रान अरिसिंह यह, अनख परस्पर होत ॥
कथित दड स्वीकारि कहिय, पकरि लेह छलपोत ॥ ९ ॥

तीन सौ उनचालीस ३३९ मयूख हुए ॥

१ रुपये २ कुकर्म ॥ १ ॥ ३ शीघ्र ही ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥४ दाँतों के घेरे में ५दुख देने को ॥ ५ ॥ ६ पहरायतों की नजर बचाकर ॥ ६ ॥ ७ मेघ की वृष्टि से ॥ ७ ॥ ८ रत्नसिंह से ९ अर्थ (धन) ॥ ८ ॥ १० सिंधिया ने कहा जितना ११ छलबाल (रत्नसिंह) को ॥ ९ ॥

जब माहजि पकरन जतन, किय सो सुनि तत्काल ॥
किल्ला कुंभिलमेरु गय, सह परिकर[1] वह बाल ॥ १० ॥
दंड रान अरिसिंह दिय, भूखन दम्म तुरंग ॥
अवसेसन[2] हित ओलि दिय, झल्ला जालम संग ॥ ११ ॥
जालमकों माहजि जबहि, आयउ लै उज्जैन ॥
बरस याहि१८२६ऋतु सरद बिच, सज्जिस अतुलित सैन१२
महाराव कोटा पुरप, नृप गुमान यह जानि ॥
मोच्यो[3] जालम दम्मदै, परिकर[4] स्वीय प्रमानि ॥ १३ ॥
इत रक्खे अरिसिंहनैं, संधी जवन सिपाह ॥
च्यारि लक्ख४०००००तिनके चढे,[5] हैक[6] रुप्पय नय राह१४
फोरे कुंभिल्लमेरु[7] के, फुट्टे संधिय नाँहिं ॥
पै इक मंगन दंद[8] किय, मुलक उदैपुर मांहिं ॥ १५ ॥
दम्म भये नहिं दैनकों, तब अरिसिंह सिटाय ॥
आयो व्याहन रीति कछु, संधिनकौं समुझाय ॥ १६ ॥
सुता बहादुरसिंहकी, परनि कृष्णगढ ढंग ॥
रान संकि[9] तत्थहि रह्यो, संधिन दंद प्रसंग ॥ १७ ॥
तदनंतर[10] मुनि नेत्र धृति१८२७, बुंदिय नगर नरेस ॥
भयो उदास प्रवृत्ति[11] सन, बढि बैराग्य बिसेस ॥ १८ ॥
राध[12] बिसद द्वादसि१२ रुचिर, रविबासर सुभ रूप ॥
अजितसिंह जेठो कुमर, किन्नौं बुंदिय भूप ॥ १९ ॥
प्रथम पुरोहित किय तिलक, निज कर झितुवराम ॥

---

१ परगह सहित ॥ १० ॥ २ बाकी रहे जिनमें जालमसिंह को ओल (रुपयों के एवज की कैद) में दिया ॥ ११ ॥ १२ ॥ ३ छुड़ाया ४अपनी परगह वाला जान कर ॥ १३ ॥ ५तनखाह के ६ नीति के मार्ग से ॥१४॥७यहां लक्षणा से कुंभिल मेरुवालों को जानना चाहिये ८ उपद्रव ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ९ डरकर ॥ १७ ॥ १० जिसपीछे ११ कर्म मार्ग से ॥ १८ ॥ १२ वैशाख सुदि ॥ १९ ॥

बहुरि व्यास आसिख विहित, रचि किय मानिकराम॥२०॥
निज कटिको असिवर नृपति, बधायउ निज हत्थ ॥
नृपता दै निज पुत्रकों, हुव बिरत्त मन तत्थ ॥ २१ ॥
रक्ख्यो नगर वडोदिया, निज परिकर व्यय काज ॥
श्रीजित पद अप्पुनं गहिय, तजिदिय पद नरराज ॥ २२ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जाके काज विपति बिताई बहु कष्ट सहि,
द्वैर द्वैर दिन मांहिं मेटि जाठर दुसह दाह ॥
मरन विचारि मारि मारि तरवारि झारि,
झडे पचरंग जग मडे चहुवान नाह ॥
जैपुरकों जीति नीति दुलभ दिखाई सब,
भूपन दिखाई भूप आदि रजपूती राह ॥
श्रीजित सहर बुरी अष्टमं८ उमेद मनु,
कासी जानि लीनी तंनुकासी जानि लीनीं वाह ॥ २३ ॥

दोहा—इन्दगढप उमराव तँहँ, भक्तराम१ अभिधान ॥
पुनि खत्तोली नगर पति, रतनसिंह चहुवान ॥ २४ ॥
बलवनपति मालम३ बहुरि, बेरिसल्ल भव बस ॥
ज्योंही भरतसिंह४ जँहँ, खेडानगर वतस ॥२५॥
दुर्गसिंह५ मुहुकम कुलज, अतरदा नगरेस ॥
महासिंह गजसिंह६ जिहिं, पुर जज्जाउर पेसं ॥ २६ ॥
तिमहि भवानीसिंह ७ तँहँ, धोवड पत्तन नाह ॥

॥ २० ॥ १ अपनी कमर का २ राजापन देकर ३ विरक्त ॥ २१ ॥
४ खर्च के लिये ५ अपना पद श्रीजित रक्खा ६राजा का पद छोडदिया ॥२२॥
७ पेट की ८ उम्मेदसिंह रूपी आठवे मनु ने ९ पुत्री को ही काशी जान ली
और राज्य छोडने में उस पुत्री को१०तृण के समान जान ली सो प्रशंसा है
॥ २३ ॥ २४ ॥ २० ॥ ११ आधीन ॥ २१ ॥

भगवंत८ सु सीलोर पति, माधानी हित चाह ॥ २७ ॥
सेरसिंह९ सामंत हर, भजनैरी पुर भान ॥
महासिंह हर वीर पुनि, थानाँ पुर प खुमान१० ॥ २८ ॥
तिम समुद्रसिंह११हु सुभट, सुहरानि पति वरवीर ॥
नगर जैतगढ नाह पुनि, बाघसिंह१२ रन वीर ॥ २९ ॥
भट खुसाल१३ सामंत हर, नगर नादनाँ ईस ॥
मिसल दाहिनीके मिले, भट इत्यादि बत्तीस ॥ ३० ॥
बाम मिसल उमराव बलि, सोलंखी जयसीह१ ॥
नाथाउत निम्मान पति, पित्थल सुत नय लीह ॥ ३१ ॥
नाथाउत बखतेस२ बलि, नगर पगाराँ मोर ॥
अभयसिंह३ अमरेस सुत, पति अलोद रट्ठोर ॥ ३२ ॥
इत्यादिक सुभटन[2] नजरि, किन्नँ हय सिरुपाव ॥
पठये टीँका नृपन पुनि, सुनि यह वत्त सचाव ॥ ३३ ॥
उदयनैर अरिसिंह१ नृप, पित्थल२ जयपुर ईस ॥
बिजयसिंह३ रट्ठोर बलि, जनपद धन्वँ[3] अधीस ॥ ३४ ॥
कोटापुर प गुमान४ नृप, छन्न कितव छल जाल ॥
इमहि करोली पुर अधिप, जद्दव मानिकपाल५ ॥ ३५ ॥
बीकानैर अधीस बलि, सुरतसिंह६ नरनाह ॥
रामसिंह७ नैषध[4] अधिप, नरउरपति कछवाह ॥ ३६ ॥
भूप बहादुरसिंह८ तिम, कृष्णगढप रट्ठोर ॥
गोरवंस अवतंस पुनि, सोपुर नृपति किसोर९ ॥ ३७ ॥
इत्यादिक सब नृपनके, टीँका गज१ हयराज२ ॥
मनिभूखन३ सिरुपाव४ मिलि, सह आये सुभ साज ॥३८॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ १ नीति के मार्ग में ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ २ उमरावों ने ॥ ३३ ॥ ३ मारवाड़ देश का पति ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ४ निषध देश का ५ ॥ ३६ ॥ ५ मुकुट ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

सुनि टींका श्रीमतहू, दयो नरायनराव१ ॥
हुलकर तक्कू१ सधिया, माहजिरहू भल भाव ॥ ३९ ॥
इम श्रीजित उम्मेद यँहँ, किय नृप ज्येष्ठ कुमार ॥
जयो महाराजोपेपद, बहादुर१ रु सिरदार ॥ ४० ॥
रक्खे कछु निज ढिग सुभट, नाम सुनहु जिन नाह ॥
इक१ थाँनाँपतिको अनुजं, विक्रम१ सुमनं सिपाह ॥४१॥
वैरिसल्ल कुल उद्धरन, सुभट नाम सोभाग२ ॥
भट किसोर३ नाथाउत सु, अति जिहिं रन अनुरांग ॥४२॥
दयानाथ४ रासू५ दुवरहु, महासिंह कुल जात ॥
वीर खुसाल६ निहाल७ वर, हर सामत सुहात ॥ ४३ ॥
झल्ला वीर दलेल सुत, चद्रसिंह८ जयं चोर ॥
वीर सियाईसिंह९ वलि, अमरचद रट्ठोर ॥ ४४ ॥
इह खजूरीको बहुरि, दोलतसिंह१० स नाम ॥
ए निज ढिग रक्खे सुभट, श्रीजित विहितं विरामँ ॥ ४५ ॥
धुदिपतें ईसान दिस, कोस इक्क१ मतिमान ॥
सिव केदार निकेत तँहँ, रहन विचार्यो थान ॥ ४६ ॥
महलनमें उम्मेद २०० नृप, मदिर उभय२ वनाइ ॥
श्रीरग१ रु आनदघन२, प्रभु दिन्नें पधराइ ॥ ४७ ॥
तिनके ढिग उत्तर४।७ तरफ, नाना मुकुर निकेत ॥
रुचिर चित्रसाला३ रची, सब सुभ चित्र समेत ॥ ४८ ॥
प्राची१ दिस तम दिट्ठ पुनि, नाना द्रुमन निवास ॥

॥३९॥१महाराजकी पदवी बहादुरसिंह और सरदारसिंह ने की॥४०॥१छोटा भाई २श्रेष्ठ मनवाला ॥ ४१ ॥ जिसको युद्ध से बहुत ४प्रीति थी॥४२॥४३॥५विजय को चाहनेवाला ॥ ४४ ॥ ६वाचित ७ महलों के उपराम में ॥ ४५ ॥ ८ केदार नामक शिव का मदिर ॥ ४६ ॥ १७ ॥ ९कांचमहल ॥ ४८ ॥ १०उस के नीचे ११नाना भांति के वृक्षों का

क्रीड़ा उपवन[1] नाम करि, बिरच्यो रंगबिलास४ ॥ ४९ ॥
ताके उत्तर४।७ प्रांत पर, तीन३ निलय[2] किय तत्थ ॥
अच्छवाट१।५अरु असनघर२।६, मुकुर[3] महल३।७तिन मत्थ५०
तारागढ बिच हरि सदन१।८, आयत[4] कोस२।९ निवान ३१०।
बिष्णुसिंह२०।२।२ नृप चरित बिच, रचित कहे त्रय३थान५१
कृत गनेसघंटा[5]१।४।११कहिय, चोथी४ ताहि चरित्र ॥
नव्य[6] अँधो[7] महलन निलय, बरनत सुनहु बिचित्र ॥ ५२ ॥
राजमहल प्रासाद सन, दक्खिन२।३ दिस थिर थान ॥
तीन बनाये भूप तिन्ह, अब जानहु अभिधान[8] ॥ ५३ ॥
रुचिर निबकोराउला१।१२। इक बहु महल उपेत ॥
तस दक्खिन२।३ दूजो२ अतुल, जँहँ कुलदेवि निकेत[9]२।१३ ॥५४॥
कहत राउला कूपको३।१४, तासों दक्खिन२।३ तत्थ ॥
तीन३नमें प्रासाद तँति[10], सब अति उन्नति[11] सत्थ ॥ ५५ ॥
तिन्ह तोरन[12] बाहिर तहाँ, गोल्हाबापिय पास ॥
तीराथिया हयकी रची, प्रतिमा१।१५ अट्ट[13] प्रकास ॥ ५६ ॥
सिव केदार समीप किय, तीजे३ आश्रम[14] बास ॥
तँहँ बिरच्यो उत्तर ४।८ तरफ, उपवन[15] देवबिलास।१।१६।५७।
तास ढिगहि सिखिकोन[16]२ तँहँ, रचित कुंड२।१७ अभिराम ॥
तासों लागि आवाचँय[17]२।३ तट, धवल तुंग[18] निज धाम ॥ ५८ ॥
जो सिकारबुरज३।१८हि बजत, आलय प्रचुर[19] उपेत ॥

१ बगीचा ॥ ४९ ॥ २ मकान ३ काचमहल इन के ऊपर है ॥ ५० ॥ ४ मोटा ॥ ५१ ॥ ५ गणेशघाटी ६ नवीन ७ नीचे के महलों में ॥ ५२ ॥ ८ उन के नाम ॥ ५३ ॥ ९ मंदिर ॥ ५४ ॥ १० महलों की पंक्ति ११ ऊंचेपन सहित॥ ५५ ॥ १२ उनके दरवाजे के बाहर १३ बुरज पर चौड़े ॥५६॥ १४वानप्रस्थ १५बाग ॥५७॥ १६ अग्नि कोण में १७ दक्षिण के किनारे १८ श्वेत रंग का ऊंचा अपना महल ॥५८॥ १९ बहुत मकानों सहित

आमति१ जीवन२ अप्प इह, निवस्यो रुचिर निकेत ॥५९॥
तँहँ गुलावबाटी१।१९ तिमहिँ, मारुति छत्री२।२० मंजु ॥
कुल्या३।२१पावन जटित किय, कुंड मिलित चित कंजु६०
बहुरि मंदुर४।२२आदि बहु, थप्पे कति लघु थान ॥
वैखानस३तँहँ वास करि, विलस्यो निगम बिधान ॥ ६१ ॥
जो खवासि नृपके निपुन, कही रूपरसराय ॥
तस नामहु इक१ बाग तँहँ, चतुर रच्यो जस चाय ॥ ६२ ॥
सिव केदार समीप सो, बज्जहिँ रूपबिलास१।२३ ॥
नदी बानगंगा निकट, इत दक्खिन२।३ तट आस ॥ ६३ ॥
वेधम नृप बुधसिंह१९९को, चौरा१।२४ रुचिर रचाइ ॥
किन्नौं जस उच्छव अतुल करि, मेह१सह दान२मचाइ ।६४।
बुदीतैं चहुँ४घाँ विदित, मृगया बुरज महीप ॥
बिरची तिनमैं सुभ बुरज१।२५, दिस पाची सच दीप ॥ ६५ ॥
बहुरी२।२६ कोठा३।२७ आदि इम, बहु पुर निकट१बनाइ ॥
दूर२हु भीमलता२।२८ दि भुव, पटु मृगया रस पाइ ॥ ६६ ॥
सत्रुसल्ल१९६।१ तजिकैं सुपहु, उच्छय ऐसी कारि बित्त ॥
काहूनैं न रचे निलय, इम उदार चहि चित्त ॥ ६७ ॥

<u>इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे</u>

१ बुद्धि पर्यन्त और जीवन पर्यन्त आप यहां २ सुन्दर मकान में (*) रहा ॥ ५९ ॥ ३ गुलाबबाड़ी ४ पत्थरों की जड़ी हुई नहर, ५ बहते हुए जलवाली ॥ ६० ॥ ६ हयशाला ७ उस वानप्रस्थ ने ८ वेद विधि से विलास किया ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ९ हुआ ॥ ६३ ॥ १० उत्सव सहित ॥ ६४ ॥ ११ शिकार की १२ पूर्व दिशा में सब को प्रकाश करनेवाली है ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ १३ धन खरच करके १४ मकान ॥ ६७ ॥

<u>श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशि में, उम्मेदसिंहके चरित्र</u>

(*)रावराजा उम्मेदसिंह अंत समय में केदारेश्वर में ही मूर्छित होगये थे जिस के बाद उनको महलों में लेगये परन्तु जब तक बुद्धि(होश)रही तब तक वे केदारेश्वर में ही रहे इसी कारण यहां आमति जीवन कहा है

दसिंहचरित्रे मित्रमहाराष्ट्रझल्लाजालमसिंहकारामोक्षणमाहजिबाहिन्युदयपुरवेष्टनचुण्डाउत्तमानसिंहकौहकपान्तःपुरप्रविशनज्ञातलुलुप्सारुष्टमाहजिसपक्षच्छलडिम्भकुंभिलमेरुदुर्गगमनराणाऽरिसिंहमाहजिदण्डद्रम्म। ऽर्पणाखिलद्रम्माऽवधिझल्लाजालमसिंहसार्थीकरणादत्तद्रम्मकोटेशगुमानसिंहतन्मोक्षणसंधिभृत्यादव्यशङ्किताऽरिसिंहबहादुरसिंहसुतोद्वाहनिमित्तकृष्णगढनिवसनरावराडुम्मेदसिंहमहाराजकुमाराऽजितसिंहाऽर्थराज्याऽर्पणस्वयंश्रीजिदुपटङ्कधारणसर्वभूभृट्टीकोपाख्यव्यवहारप्रेषणास्वल्पसार्थसहितश्रीजित्केदारेश्वरस्थाननिवसनमेकोनपञ्चाशत्तमो ५९ मयूखः ॥ ५९ ॥
आदितः ॥ ३४० ॥

इतिश्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलिंदमुखरितचरणचिन्हिताऽऽरातिचूडबुन्दीपूर्विलासिनीविलासिचाहुवाणचूडामणिभारतीभागधेयहड्डोपटङ्किमहाराजाऽधिराजमहारावराजे

में, मरहठे मित्र का झाला जालमसिंह को कैद से छुड़ाना और माहजी का सेना से उदयपुर को घेरना १ चुंडाउत मानसिंह का छल से पुर के भीतर जाना और लोभ से माहजी को क्रुद्ध जानकर पक्ष सहित छलबालक का कुंभलमेरु के गढ में जाना २ राणा अरिसिंह का माहजी को दंड के रुपये देना और बाकी के रुपयों की अवधि पर्यन्त झाला जालमसिंह को साथ देना ३ कोटा के पति गुमानसिंह का रुपये देकर जालमसिंह को छुडाना ४ सिन्धियों की तनखाह के द्रव्य से डरकर अरिसिंह का बहादुरसिंह की पुत्री के विवाह के कारण से कृष्णगढ में निवास करना ५ रावराजा उम्मेदसिंह का महाराजकुमार अजितसिंह के अर्थ राज्य देना और अपना श्रीजित् की पदवी धारण करना ६ सब राजाओं का टीका नामक व्यवहार भेजना और थोड़े साथ सहित श्रीजित् के केदारेश्वर स्थान में निवास करने का उनसठवां ५९ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५९ ॥ और आदि से तीन सौ चालीस ३४० मयूख हुए ॥

श्रीमान् सब राजाओं के मुकटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प संबंधी मकरंद (पुष्प रस) रूप मद्य से मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण से चिन्ह युक्त किये हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने, बुन्दी पुरी रूपी स्त्री के विलासी, चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले

न्द्रश्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञप्तगीर्वाणगीरादिषट् ६ भाषावेशसुभूभुजङ्ग-काव्याऽकूपारकर्णधारवीरमूर्त्तिचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचमत्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानात्मजमिश्रणसुकविसूर्य्यमल्ल विहितवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे रावराडुम्मेदसिंहचरित्र समयसमानाधिकरणकोदन्तवर्णने सप्तमो ७ राशिस्समाप्त ॥ ७ ॥

इतिश्री नीतिनिपुण–बुद्धिविशारद–सज्जनशिरोमणि–हरिभक्तिपरायण–धर्ममूर्ति–वीर–वदान्य–सोदावारहठ–चारणकुलावतंस शाहपुराधिपतोळिपात्र–सुयोग्यपितुरवनाडसिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्या शृङ्गारनामजनन्या प्राप्तप्रसवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराज्ञाकारिभिरात्मजैः केसरीसिंह–किशोरसिंह–जोरावरसिंहैः-विगत–भाव्याधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासाऽऽप्त–काव्यशिक्षेण, सन्तोषाऽऽदिसद्गुणसम्पन्न-विद्वच्छिरोमणि-परमवै

अर्थात् पूर्ण विद्वान् हाथा पदवीवाले, महाराजाधिराज महारावराजेन्द्र श्री–रामसिंहदेव की आज्ञा से, संस्कृत भाषा आदि छ भाषा रूपी गणिकाओं के पति, काव्य रूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिया) वीरमूर्ति, विष्णु भगवान् के चरणारविन्द के भ्रमर, मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले, चारण गण के सूर्य, चण्डी दान के पुत्र, मिश्रण (मीशण) शाखा के श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के रचे हुए वंशभास्कर नामक महाचम्पू के उत्तरायण में रावराजा उम्मेदसिंह के चरित्रके समय के बराबर है अधिकार जिनका ऐसे वृत्तान्तों के वर्णन का सातवां राशि समाप्त हुआ ॥ ७ ॥

श्रीयुतनीतिनिपुण–बुद्धिविशारद–सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्म मूर्ति वीर उदार सोदावारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पोळ पात्र (शाहपुरा के राज द्वार पर नेग 'दस्तूर' लेनेवालों में पात्र) सुयोग्य पिता ओनाड़ (अनन्द्र) सिंह के पुत्र ने, पण्डिता शृंगार बाई नामक माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केशरिसिंह, किशोरसिंह, जोरावरसिंह से मिटगई है आनेवाले समय में होनेवाली मानसिक चिन्ता जिसकी, पण्डित कवि अपने मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्य शिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त

ष्णव-रामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽह्वयगुरोरासा दितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणोत्त-शाहपुराधिप-राजाधिराजोपटंकिनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरोरत्न-रघुवंशीयगुहिलोत्त मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीश-सज्जनतादिसद् गुणसम्पन्न-महाराणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारि महाराणा-फतहसिंहवर्म्म, भानुवंशभूषण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप जोधपुरेश-राजराजेश्वर-महाराज-यशवन्तसिंहवर्म्मभ्यो लब्धाऽतीव दान-मान-स्वर्णरचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथा तदुत्तराधिकारि-तत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्मा-श्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रै-र्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवर-बारहठ-कृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां सप्तमो राशिः समाप्तः ॥७॥

विद्वानोंके शिरोमणि परमवैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम गुरु से प्राप्त की है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदाहुए रघुवंशीय राणा उत्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंहवर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों की समृद्धिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजाधिराज जशवन्तसिंह वर्मा से पाया है दान, बड़प्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढ़ी हुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की रची हुई उदधिमन्थनी नामक टीका में सप्तम राशि समाप्त हुआ ॥७॥

॥ श्रीगणेशायनम ॥

॥ अथाऽष्टमराशिप्रारम्भ ॥

॥ शुद्धाऽपभ्रंशभाषा ॥

॥ गीतिः ॥

जयइ गणेसु गणाणणु१ वाणि२ हिमकुंदचंदिमाधवला ॥
एइ करावहिं कव्व ताह असरिसु थवणु हउ करउ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

रणसूरा मणउज्जला जणवल्लहु अणमाणु ॥
अम्हारा णमउं जण गुढकरिकव्वनिहाणु ॥ २ ॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

(अनुष्टुब्युग्मान्विपुला)

तुरीया४ य सदाऽपश्यज्जाग्रत्स्वप्न२सुषुप्तिषु ॥
आत्माराम स्वरूपार चण्डीदानं नमाम्यहम् ॥ ३ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

॥ संस्कृतअनुवाद ॥

जयति गणेशो गजाननो वाणी हिमकुन्दचन्द्रिकाधवला ॥
एते कारयत काव्य तयोरसदृशं स्तवनमहं करोमि॥ १ ॥
रणशूरा मनस्युज्ज्वला जनवल्लभा अप्रमाणा' ॥
वय नमामो ये गुढाकृतिकाव्यनिधाना ॥ २ ॥

गज के मुखवाले गणेश और बरफ, मोगरा और चन्द्रिका के समान उज्ज्वल सरस्वती का जय होवै (सर्वोत्कर्षेण वर्त्तताम्) ये ही काव्य कराते हैं जिनकी मैं समानता रहित स्तुति करता हूं ॥ १ ॥ युद्ध में वीर, मन के उज्ज्वल, जनों के प्यारे और प्रमाण रहित, उनको मैं नमस्कार करता हूं जो गूढरचना के काव्यों के खजाने हैं ॥२॥ जो सदा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं से तुर्यावस्था को देखते थे अर्थात् समाधि दशा में रहते थे उन ब्रह्मानन्द स्वरूप चण्डीदान नामक मेरे पिता को नमस्कार करता हूं ॥ ३ ॥

मुनिदृगधृति१८२७मितसकसमय,अजितसिंह१,९९।२नरनाह
छत्र धरयो निज जनक छंत, लहि भद्रासन लाह ॥ ४ ॥
भ्रातन संजुत भूपके, ब्याह१ प्रजा१दिक वत्त ॥
कतिक भूत भावी कतिक, पीढिन क्रम जिम पत्त ॥ ५ ॥

घनाक्षरी–उपयम च्यारि४ कीनें भूपति अजितसिंह१,९९।२,
तिनमैं लहैं द्वै२ सुत नियति उदर्क ताम ॥
कृष्णगढ जाइ ब्याही पहिलैं१ बहादुरकी,
कन्या रठ्ठउरि रानी सूरजकुमरि १९९।१ नाम ॥
राजाउत कित्तिसिंह दुहिता द्वितीय२ ब्याही,
सो शृंगारकुमरि ११९।२ सतीमनि स्फत्ताय धाम ॥
तीजी३ ताहि निर्गममैं परनी भनायपुर,
सो अमानकुमरि १९९।३ दलेल सुता अभिराम ॥ ६ ॥
विष्णुसिंह राउलकी कन्या बंसबांटपुर,
बखतकुमारि१९९।४ नाम चोथी४ परन्यों बिदित ॥
भूपतिकै रानी पहिली१मैं सुत जेठो१ भयो,
सो प्रताप२००।१ सिसुहि मरयो जो पाइ आयु मित ॥
सीसोदिनी आहाडी चतुर्थ४ रानी जंपी जास,
बिष्णुसिंह२००।२ दूजो२ चिरंजीव भयो पुराय चित ॥
एक१ चंद्रशोभा१ ही खवासि जानें स्वांमी अंत,
राजाउति रानी २।१ संग होम्यों अंग हेरि हित ॥ ७ ॥
ब्याह तीन३ कीनैं भूप अनुज बहादुर१९९।३नैं,

---

१ पिता के होते ही छत्र धारण किया २ सिंहासन का लाभ लेकर ॥ ४ ॥ सन्तान आदि की ४पहिले हुई और कितनी ही आगे होनेवाली ५प्राप्त ॥ ५ ॥ ६ आनेवाले समय के भाग्यफल से ७ उसी मार्ग में ॥ ६ ॥ ८ बांसवाड़ा पु (बांसबहाला) ९थोड़ी आयु पाकर १०पति (अजितसिंह) के मरने पर ॥ ७ ॥

पाये सुत पंच५ रु सुता दुव२ जस प्रकास ॥
झल्ला बखतेसकी सुता सो गर्गराटपुर,
पत्नी वडी१०पाही चंदकुमरि१६९।१ अभिरूपा तास ॥
राठउरि दूजी२ राजकुमरि१९६।२ विवाह्यो वीर,
बीकानेर भूप गजसिंहकी सुता जो आस ॥
सूरजकुमरि१९९।३ तीजी३ जादवी अमरदुर्ग,
१भैरवादिचंद सुता परन्यो सवय१ भास२ ॥ ८ ॥
ताही जादवीके रामसिंह२००।१ बलवंत२००।२ बलि,
दलपतिसिंह२००।३ चोथो४ सामंतादिसिंह२००।४ सुत ॥
ताहीको द्वितीय२ नाम जीवन२००।४ बखानैं जग,
जानों पंच५ पंचम५ कनिष्ट सेरसिंह२००।५ जुत ॥
ताहीके सुताहे २ तँहँ———कुमरि१ जेठी१,
———कुमार दूजी२ जे न परनी प्रेनुत ॥
भ्राता बलवंत२००।२ समं थान हेरि हारयो हत,
इंद्र१कों के देतो ब्याहि चंद्र२कों कै जाइ उत ॥ ९ ॥
भूपति अजां१९९।२के भ्रात तजि३ सरदार१९९।३ ब्याह,
च्यारि४ करि पाये सुत तीन३ सुता इक१ सह ॥
झल्ली नानतेकी वडी१ पतनी विवाह्यो एह,
जोरावर कन्या अभेकुमरि१६९।१ स नाम सह ॥
बीकानेरपुरकी विवाह्यो वर दूजे२ ब्याह,
नाम इंद्रकुमरि१९९।२ अनंद सुता महि मह ॥

१नाम२थी३भैरव है आदि में जिसके ऐसा चन्द्र अर्थात् भैरवचन्द्र॥८॥ ४साम
न्तसिंह५विशेष स्तुति योग्य६भाई बलवन्तसिंह उनका विवाह करने को बराबर
का स्थान हेरकर थकगया सो खेद की बात है कि यह इन्द्र को विवाहना चाहता
था कि चन्द्रको विवाहना चाहता था॥९॥७अजितसिंह के८झाली९उत्सव रचकर

तीजी३ उनियारेकी नरूकी सरदार सुता,
बखतकुमारि१९९।३ नाम व्याही बिद उक्त प्रेह ॥ १० ॥
बाधनवारेकी बहुरि, उदयभानुकुलधारि ॥

दोहा

अखयसिंह तनया बरी, चोथी४ सुबय कुमारि१९९।४ ॥११॥
जेठो१ सुत जेठी१ जन्यौं, ईश्वरिसिंह२००।१ सनाम ॥
दूजी२ दुव२ सुत इक१ सुता, तितय३ जन्यौं विधि ताम१२
क्रमकरि इह दूजो२ कुमर, देवीसिंह२००।२ उदार ॥
तीजो३ पृथ्वीसिंह२००।३ यह, भो व्यसु सिसु गद भार १३
याहीकें इक१ अंगजा, जेठी१ सब३ तें जोहि ॥
खूबकुमरि१ निज जनक खिंन, सोपुर व्याही सोहि ॥१४॥
गोर राधिकादास नृप, जो परन्यौं जस जुत्त ॥
इक१ खवासि सरदार१९९।४कैं, हुव ताकैं दुव२ पुत्त ॥१५॥
नाम पहार१ सुरूप२ जे, जेठो१ अज्जहु आहि ॥
पहु अप्पहुं काका कहत, जथा कुलक्रम जाहि ॥ १६ ॥
दीप१९८।६ तनय सुरतान१९९।६ हुव, नगर कापरनि नाह ॥
बधू उभय२ तानैं बरी, लह्यो प्रजा चउ४ लाह ॥ १७ ॥
प्रथम१ कूरमी१ रामपुर, राजाउत्ति२ द्वितीय२ ॥
नाम गुलाबकुमारि१ तस, हुव जेठी१इक१धीयं ॥ १८ ॥
सो व्याही नरउर नृपहिं, ताके सोदर तीन३ ॥
औरस राजाउत्ति२ कैं, प्रकटे सुनहु प्रबीन ॥ १९ ॥
सुत जेठो१ सामंत२००।१हुव, दूजो२सगत२००।२ स नाम ॥

१कहेहुए दिन ॥१०॥२राठोड़कुल("कर्मध्वज" इति पाठान्तरम्)॥११॥३बड़ी स्त्री ने ४तहां॥ १२ ॥ ५ रोग के भार से बालक ही मरगया ॥ १३ ॥ ६ पुत्री ७ अपने पिता के समय ॥ १४ ॥ १५ ॥ ८ आज भी है ९ हे प्रभु (रामसिंह) आप भी उस को काका कहते हो ॥ १६ ॥ १७ ॥ १० कछवाही ११ पुत्री ॥१८॥१९॥

तिनको अनुज प्रयाग२००।३दुव२,अनुज अंसुत मृत ताम२०
नृपके भ्रात खवासि भव, जिहिं सिवसिंह१ सुभाइ ॥
बिजैप सुता पद्मावती१, वरी जोधपुर जाइ ॥ २१ ॥
तास अनुज सग्राम २ बर, बरी कृष्णगढ दग ॥
अभयकुमरि १।२ सरदारजा, निज अग्रज नृप संग ॥२२॥
अनुजन जुत अजमल्ल१९९।२ के, पहु इम ५पाइ१प्रजा२दि ॥
गॅदित मूत१ भावी३ गिनहु, अब वत्तन२ क्रम आदि ॥२३॥
सूचित१८२७ सक अजमल्ल १९९।२ इम, पायो ७बुविय पट्ट ॥
पद श्रीजित उम्मेद११८।४ पहु, वहयो पुरातन बट्ट ॥ २४ ॥
तदनतर सूचित १८२७ सकहि, श्रीजित सावन मास ॥
पतनी जुत पुष्कर गयो, न्हावन प्रीति प्रकास ॥ २५ ॥
नगर कृष्णगढ पति गयो, श्रीजितकों तहँ लेन ॥
आयो तब चहुवान इत, अधिप वहादुर अैंन ॥ २६ ॥
महिमानी अति रचि मुदित, सनमानिय सह सत्थ ॥
मिल्यो रान अरिसिंहहू, हुतो सकुचित तत्थ ॥ २७ ॥

॥चर्चरिका ॥

सिक्खकैँ चहुवान श्रीजित मग्ग बुवियको लयो,
होय जैपुर सीम आनि मिलान नासरदा दयो ॥
राजसिंह हमीरदेव कुलीन नासरदा पुरी,
कुम्भको कैंटकेस हो सु मिल्यो रची हित चातुरी ॥ २८ ॥
अहरी महिमानि ओ रहि रत्ति सभर हंकयो,

---

१ बिना पुत्र मरा ॥ २० ॥ २ विजयसिंह की पुत्री ॥ २१ ॥ ३ सरदारसिंह की पुत्री ४ अपने बड़े भाई अजितसिंह के साथ ॥ २२ ॥ ५ कहा हुआ ६ अब आदि से क्रम पूर्वक वर्तमान वार्ता है ॥ २३ ॥ ७ प्राचीन मार्ग में चला ॥ २४ ॥ ८ स्त्री सहित ॥ २५ ॥ ९ घर ॥ २६ ॥ १० सिन्धी पठानों की तनखाह देने के संकोच युक्त ॥ २७ ॥ ११ मुकाम १२ कछवाहे का सेनापति ॥ २८ ॥

मोदसौं दरकुंच मंडत आनि आश्रममैं ठयो ॥
यौं उदैपुर देसमैं अति दंद संधिननैं कस्यो,
दै जरीब समस्त ग्रामनमैं चढ्यो हक जो भस्यो ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

इत सक मुनि दृग धृति १८२७ प्रमित, सप्तमि७ पोस मिलाप॥
अजितसिंह नृपकै भयो, पहिलौं कुमर प्रताप ॥ ३० ॥
सकुचि रान अरिसिंह इत, रह्यो कृष्णगढ जानि ॥
आये संधी उदयपुर, हक निज लैन प्रमानि ॥ ३१ ॥
बडो रान अरिसिंहको, सुत हम्मीर कुमार ॥
सो गहि आन्यौं निज निलय, बिरचि अनीति अपार ॥ ३२ ॥
तदपि न हक रुप्पय मिले, संधी तब कारि मंत्र ॥
दै जरीब कर देसतैं, लग्गे लैन स्वतंत्र ॥ ३३ ॥
अजितसिंह बुंदीस इत, पुनि सुनि सैंनन दोर ॥
सेना निज चतुरंग सजि, चढ्यो बिडारन चोर ॥ ३४ ॥
सक मुनि लोचन धृति १८२७ समय, सित पख फग्गुन श्राम॥
नगर टौंकड़ा जाय निज, क्रिन्नैं कटक मुकाम ॥ ३५ ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

तहाँतैं चढ्यो संभरी पट्ट ताँजी, बढी सेन भेरीनपैं रीठ बाजी॥
भयो भारतें जंत्रको इच्छु भोगी,बन्यों खीन ठैंपालीनतैं बिप्रयोगी॥३६

१ बुन्दी में केदारेश्वर के मन्दिर पर जहां अपना आश्रम था इधर उदयपुर के देश में सिंधी यवनों ने २ उपद्रव किया ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३ अपनी तनखाह को ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ४ तोभी तनखाह के रुपये नहीं मिले ५ देश से हासिल लेने लगे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ६ फाल्गुन सुदि ॥ ३५ ॥ वहां से चहुवाण (अजितसिंह) ७ पाटवी घोड़े पर चढा तहां सेना बढकर ८ नौबतों पर निरंतर प्रहार हुए और भार पड़ने से १० शेषनाग ९ चरखी (घांणी) के सांठे (गन्ने) के समान होगया और चीण होकर ११ सर्पिणियों से १२ वियोगी होगया ॥ ३६ ॥

छटा मेलसौं सेल आकास छाये, मनौं संत्रमें दम्भ ठट्टे न माये॥
रचैं चाप टकार सका रचावैं, मनौं पिंजनी तूल फ़ुफ़ु मचावैं।३७।
चमकै जुरी टोप सन्नाह आली, किधौं संग कादंबिनी रंग काली
रजै यौं ध्वजा मत्त हाथीन राखी,सरूके खरे सखपैं जानि साखी३८
विजैकौं नकीबावली अग्ग बोलैं, हिये हेत फुल्लैं रु हुल्लैं हरोलैं॥
लगे संग द्रम्मामि सिंधू लगावैं,जथा कोप उच्छाह थाई जगावैं३९
कुसामैं तुले जात यौं बाजि कंधे,बहैं चाप चिल्लान ज्यौं ऐंन बंधे॥
उहै ओम्फके छाँह उँच्चेष्ट होती, करैं कैंतरी होड हल्लैं कनोती।४०।
जगैं मोंत्रपैं नाल फुल्लिंग ज्वाला, मनौं गोचँरी होत खद्योत माला॥
फबै मोथ फुल्लेनमैं स्वास फुक्कैं, किधौं ग्राम्पहुक्कौं तैंपेहीन कुक्कैं४१
एँदाक तथा गैरक्र हत्थ पोयो, परयो बैलकें नासमें नैत्थ पोयो॥

आकाश में छायेहुए भाले एसी शोभा देनेलगे मानों १ यज्ञ में खड़े किये हुए डाभ (दर्भ) नहीं समाये, धनुष की टंकार करके भय रचाते हैं सो मानों २रूई म पिंजण ३ झणकार करती है ॥ ३७ ॥ टोप और कवचों की जुड़ी ४ पंक्ति चमकती है सो मानों सेना के साथ काले रंगवाली ५ घटा चली है और मस्त हाथियों पर ध्वजा एसी शोभा देती है मानो पर्वतों पर सरूके ६ वृक्ष खड़े हैं ॥ ३८ ॥ विजय करने को ७ छड़ीदारों की पंक्ति आगे बोलती है जिनके हृदय स्नेह से फूलकर हरोल को ८ आगे चलाते हैं ९ दमामी (ढोली) साथ लगकर बड़े राग के दोहे लगाते हैं और प्रशंसा के योग्य रौद्र रस के स्थायी क्रोध और वीर रस के स्थायी उत्साह को जगाते हैं ॥३९॥ १० लगामों से तुले हुए ११घोड़ो के कंधे ऐसे जाते हैं मानों१२धनुष की प्रत्यंचा में बंधे हुए १३ हरिण जाते हैं अथवा धनुष की प्रत्यंचा में हरिणों को बांधने जाते हैं १४ऊंची होती हुई छाया को देखकर चमक कर उछलते हैं और हिलते हुए कान १५ कतरणी की बराबरी करते हैं ॥४०॥ १६पत्थरों पर खुरतालों लगकर अग्नि कणों की ज्वाला उछली है सो मानों जुगनुओं (आगियों) की पंक्ति उछली १७ दीखती है फूले हुए फुरणों में श्वास चलता हुआ शोभा देता है सो मानों १९बिना टिकड़ी (सुलफे) का १८ ग्रामीण लोगों का हुक्का फूकता है ॥ ४१ ॥ अथवा जैसे २१कालबेलिये के हाथ में पकड़ा हुआ २० सर्प फुंकार करे तैसे तथा जैसे वृषभ (बैल) की २२ नासिका में २३ नाथ (नाककी रस्सी) पोई होवे

उदै अंक्कको[1] चक्क[2] यौं सज्जि आयो लये बिंटि[3] मैनाँ मनों
मेघ छायो ॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥

मैंननके सब खेट[3] इम, बिंटिलये नृप जाय ॥
सुनत वेहु सज्जित भये, बल खल अतुल बढाय ॥ ३३ ॥

॥ षट्पदी ॥

कर मक्खर[4] कोदंड उभयर मक्खर[5] गुन ओपित ॥
उपासंग[6] दृढ उभयर पिट्ठि पूरन आरोपित ॥
कटि अय[8] कठिन कटार बसन[9] दारिमं[10] मसि रंगिय ॥
सिखिचंद्रक[11] धवपत्र कलित[12] सिर ललित किलंकिय ॥
अपिहित[13] कपाल फैंटा गरद कहिकहि डुडुव[14] लरन किल[15] ॥
बंसिय बजात अपसव्य[16] कर किलकारत आये कुटिल ४४
स्योस्यो[17] करि सिव सुमिरि भये सम्मुह मैंनन[18] गन ॥
इततैं संभर भटन बाजि पटकिय मिलाय मन ॥
उततैं तीरन[19] ओघ सांगि[20] इततैं घट सारत ॥
हनन सेन उत हक्क इत सु पकरन उच्चारत ॥

और वो फुंकार करे तैसे करते हैं १ सूर्य के उदय होते ही इसप्रकार की २ सेना सजकर आया और जैसे मेघ छावे तैसे छाकर मैनों(मीणों) को घेरलिया ॥ ४२ ॥ ३ सब खेड़ों को घेरलिये ॥ ४३ ॥ उन मैंनों के हाथ में ४ मस्कर [बांस] के धनुष और ५ बांस की ही दो दो प्रत्यंचा शोभायमान हैं ७ बाणों से भरे हुए पीठ पर दो दृढ ६ भाथे लगेहुए ८ कमर में कठिन लोहे का कटार और १० दाड़िम की स्याही में रंगे हुए ९ वस्त्र, मस्तक पर ११ मयूर के पंखों और धोकड़ा के वृक्षों के पत्तों की अथवा धावड़ा नामक वृक्षों के पत्तों की १२ लगाईहुई सुंदर किलंगियें १३कपाल नहीं ढकैं ऐसे गोलाकार बंधेहुए मस्तक पर फैंटे जो१५निश्चय ही१४डूडू शब्द कहकर लड़नेवाले (खैराड़ के मीणों का युद्ध प्रारंभ करने का यह सांकेतिक शब्द है १६ दहिने हाथ से वंशी बजाते हुए वे कुटिल किलकारी करके आये ॥ ४४ ॥ १७ स्योस्यो नाम से शिव का स्मरण करके १८ मीणों का समूह १९ उधर से तीरों का समूह २० इधर से बरछियें

कटि रुंड मुंड सेय पय किरत गिरत चाप जाँघा जटित ॥
खननकि वाढ आयुध खिरत फिरत तून जित तित फटित ४५
उलटिजात असवार पलटि तुक्खार प्रवीरन ॥
ए खडत तिन्ह अनखि जुलम मडत वे तीरन ॥
जाम जुगल२ इम जुज्झि निबल अत्र खल सिर नावत ॥
परे आनि नृप पयन सयन जोरत अकुलावत ॥
पहु अजितसिंह पह रन प्रथम करि इम मैंनन जेर किय ॥
लुटवाय खेट बारह१२लये बरस अढारह१८ वय बलिय ४६

॥ दोहा ॥

चोरी गोवध आदिके, मैंनन लिखित कराय ॥
सबके सत्र गिरागकैं, दिय कृपिकर्म लगाय ॥ ४७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम८राशावजितसिंहचरित्रे सपत्नीकश्रीजिदुम्मेदासिंहपुष्करस्नानभूपबहादुरसिंहतत्कृष्णगढाऽऽनयनश्रीजि १ द्राणा २ ऽरिसिंह२ सम्मिलननासरदामार्गनिजाऽऽश्रमाऽऽगमनबुन्दीन्द्रप्रथम १ महाराजकुमारप्रतापसिंहोद्भवनज्ञातकृष्णगढराणाऽतिवासरुद्धतत्पट्टपुत्रहम्मीरसिंहसन्ध्युपारुणयवनगोपहिभूमिभागधेयानिग्रहस्वभृत्यास्वापतेयाऽऽदानरावराडजित—

शरीरा का पेयनी है १ हाथ पग गिरते हैं २ प्रत्यचा मे जड़ेहुए ३ फटेहुए भाथे गिरते हैं ॥ ४५ ॥ ४वीरों के घोड़े पलटकर ॥ ३८ ॥ ५दो पहर पर्यन्त इस प्रकार लड़ कर ६ मस्तक झुकाकर ७ हाथ जोड़ कर ८ बारह लखे लुटवालिये ॥ ४६ ॥ ९ खेती के काम में लगादिये ॥ ४७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्र में, स्त्री सहित श्रीजित् का पुष्कर स्नान करना और कृष्णगढ के राजा बहादुरसिंह का उसको कृष्णगढ लाना १ श्रीजित् का राणा अरिसिंह से मिलना और नासरदा के मार्ग से अपने आश्रम को आना २ बुन्दीपति के प्रथम राजकुमार प्रतापसिंह का होना और राणा का कृष्णगढ में अत्यन्त रहना जानकर उसके पाटवी पुत्र हम्मीरसिंह को रोककर सिंधी नामक यवनों का भीपोदियों की भूमि का हासिल ले अपनी तनखा का धन लेना ३

सिंहपुनमैंणागणाविध्वंसनशस्त्रन्यासपूर्वकस्तेय १ गोवधा२ऽऽदिरो
धतल्लेखलेखनं प्रथमो १ मयूखः ॥ १ ॥ आदितः ॥ ३४१ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अग्गैं बिलु अपराध जोरजुत, ग्राम सुहाके इक सगताउत ॥
इन्यौं इहु तस बैर चिंति यँहँ, तमकि भूप अब दल हंक्यि तँहँ ॥१॥
मानपुरा१ रु सुहा१ निबसथ दुव२, मारि बिडारि बिजय लिन्नौं ध्रुव
बहु सीसोद पकरि करि बिलु मद,आपउपुर थानौं निज जनपद॥२॥
तँहँ नरेस किय यह बिचार मन, इततैं नाँहिं रुकत मैंनेंजन ॥
यातैं कहुँक बिहित गढ बंधैं, इत तातैं चोरन चित रंधैं ॥ ३ ॥
बिल्लहटा१ मेवार ग्राम जँहँ, पिक्रुयो उचित बनायो गढ तँहँ ॥
रानाँ सन यह बत्त कहाई, इततैं रुक्कत न तेय उपाई ॥ ४ ॥
यातैं यह तुमरो निंबसथ लिय, हम तँहँ दुष्ट दमन गढ बंधिय॥
अपर लेहु हमसौं तुम या सम, करहिं रुद्द यातैं तसक्रक्रम ॥ ५ ॥
बिल्लहटा इम गढ बंधायउ, गढपति रक्खि रु बुंदिय आयउ ॥
बसु लोचन धृति १८२८ सक तदनंतरँ, एकादसि ११ ससि राध चि
सद पर ॥ ६ ॥
गो नृप वंसबहाला व्याहन, सुहृद जन्न्य सजि अतुल उछाहन ॥
राउल पृथ्वीसिंह सुता प्रिय, बखतकुमारि अभिधान व्याहि लिय

रावराजा अजितसिंह का फिर मैनों के समूह को नाश करना और शस्त्रों के प्रहारों से नाश करके चोरी और गोवध आदि रोकने का उनका लेख लिखाने का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ ॥१॥ और आदि से तीनसौ इकतालीस ३४१ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ ग्राम २ अपने देश में ॥ २ ॥ ३ ॥ ३ चोरी करनेवाले ॥ ४ ॥ ४ ग्राम ५ दूसरा ६ चोरों का चलना ॥ ५ ॥ ७ जिसपीछे ८ वैशाख सुदि ॥ ६ ॥ ९ मित्रों को बराती (जनेती) सजकर १० नाम ॥ ७ ॥

लगन दिवस बिल्लइटा सिर द्रुत, चढे जाजपुरके रानाउत॥
सुनि श्रीजित चितिय बिचारचित, बुदिय भूप गयो ब्याहन हित॥८॥
इत सु जैन बिल्लइटा आये, रानाउतन बिरोध रचाये॥
नृप सधां बिगरें सु न अच्छी, श्रीजित सोचि चढ्यो तब कच्छी॥९॥
श्रीजित सग चढी खिजि सेना, मानहु सत्थ हिमालय मेना॥
परे जाय रानाउत दल पर, कतल मची जनु काल प्रलयकर॥१०॥
चलन लगे सर सगि तुपक असि, लगे फिरन गोमायु गिद्ध लसि॥
भेजा भचकि उडत आकासहिं, लोलं रचत कदुक जनु लासहिं॥११॥
ओपित धनुख बान संधित इम, उत्तरकुरु बिच अमरनदी जिम॥
ब्रह्मपुरी जिम पुख बिराजत, सैलन पर संपर्व सर साजत॥१२॥
भल्ल उदधिसगम गति भासैं, ताहि लखत भीरुन गन त्रासैं॥
तुपकें चलाय भरत हठि हेरत, गोरीं बिच कि बीज कृखि गेरत॥१३॥
परत मरत कति मात पुकारत अकुलावत कुकत अति औरत॥

१बिल्लइटा ग्राम पर॥८॥२ राजा की प्रतिज्ञा३घोड़े पर चढा॥९॥ अजितसिंह की बरात मे गय पीछे४बाकी बची जो सेना श्रीजित् (उम्मेदसिंह)के साथ चढी सो मानों हिमालय के साथ मेना नामक उसकी स्त्री हुई ॥१०॥ तीर, बरछी, बंदूक और तरवारें चलनेलगीं ५ गीदड शोभित होकर फूलने लगे, मस्तकों की टक्कर होकर आकाश में उडते हैं सो मानों ६ चपल गेंद ७ नाच करते हैं ॥ ११ ॥ धनुष मे सधान किया हुआ बाण ऐसा शोभा देता है जैसे ८ उत्तरकुरु देश में ९ गगा नदी शोभा देती है "उत्तरकुरु धनुष के आकार टेढा है" १० काशी पुरी के समान उस (गगा रूपी) बाण के पख शोभा देते हैं अर्थात् पख तो काशी पुरी है और गगा के मार्ग में आनेवाले पर्वतों के समान ११ गाठों सहित बाण शोभा देता है अर्थात् तीर की गाठें ही पर्वत है ॥ १२॥ १२ तीर की भाल (फळ) है सो ही गगा का और समुद्र का सगम दीखता है जिमको देखते ही पाप के समान १३ कायरों का समूह डरता है "यहां गगा के योग से पाप की तर्जना ऊपर से की जाती है" १४ बंदूक को चलाकर हठ पूर्वक पीछी भरते हैं सो मानों १५ ओरे (बीज डालने की बांस की नळी)में खेती का बीज डालते हैं ॥ १३ ॥ गिरते हुए और मरतेहुए कितने ही लोग माता माता पुकारते हैं और अत्यन्त १६ पीडित होकर कूकते हैं प्रेत नेत्रों रूपी

चक्खत प्रेत नयन *शृंगाटक, निधरक रचत अछक्कछक्क नाटक१४
फटिफटि निकसि†क्लोम फहरावत, ‡दर्पी मह रसना कि दिखावत॥
ऊरध होत बहत §असि असैं, जान्हवि धार मेरु सिर जैसैं ॥१५॥
प्रभु श्रीजित अरि बहु इम पारे, बनिजारन टंडा जनु१ डारे ॥
मैननसहित अधुत रानाउत, देखि हत्थ तजि रैखत भजे द्रुत ।१६।

॥ दोहा ॥

बहु सीसैक बारूद बलि, तुपक नालि जंबूर॥
इत्यादिक सत्रुन सिविर, सकल छिन्निलिय सूर॥ १७ ॥
बिल्लहटाके दुर्ग बिच, रखत वहै सब रक्खि ॥
पहुँच्यो आश्रम गढपतिहि, अप्पहु मरि यह आक्खि॥
करि उँपयम दुलहनि सहित, अजितसिंह इत भूप ॥
भैंसरोरगढ कुंचकरि, आयो रूच्य अनूप॥ १९ ॥
जो माहजि उज्जैन रन, गह्यो चौंडहर मान ॥
तिहिं महिमानीं प्रेंसभ करि, रक्खयो तँहँ चहुवान ॥ २० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अग्ग रान जगतेस चौंडहर, सलूमरीस कुबेर सहोदर ॥
लाल नाम सोलह१६सम थप्प्यो, अरु तिहिं भैंसरोरगढ अप्प्यो२१
भो नृप जब अरिसिंह छत्र धरि, तब वह लाल बुलायो अहरि ॥

* सिंघाड़े चलते हैं और पूर्ण तृप्त होकर निर्भयता से नाटक करते हैं ॥१४॥ पेट फटफट कर † तिल्ली बाहर निकलती है सो मानों ‡ कामी महिष (भैंसा) जीभ दिखाता है "कामी भैंसा भैंस के मूत्र स्थान को सूंघकर जीभ निकाला करता है" § तरवारें ऊंची होकर ऐसी बहती हैं मानों सुमेरु के शिखर से गंगा की धारा चढ़ती है ॥ १५ ॥ श्रीजित् ने इस प्रकार बहुत शत्रु मारे सो मानों बनजारों ने पालथ डाली है १ दश हजार २ सामग्री छोड़कर ॥ १६ ॥ ३ शीशा ४ तोपें ॥ १७ ॥ ५ बीलहटा के किलेदार से कहा कि ६ ये सामान मर कर देना ॥ १८ ॥ ७ विवाह ८ दुलह ॥ १९ ॥ ९चूंडाउत मानसिंह १०हठ करके ॥ २० ॥ ११ आगे १२ लालसिंह को सोलह उमरावों के समान ॥ २१ ॥

अक्खी पुर बग्घोरे पधारहु, मं।मक नाथ पितृ०पक मारहु ।२२।
पुरबग्घोर सुनत गो पार्पा, थिरकरि द्रोह भिल्लनकी थापी॥
नाथ कह्यि तुमरो विस्वास न,पठवहु कढि आवहु मम पास न२३
सिव इकलिंग लाल तब विच दिय, कपटी पुनि अदर प्रवेस किय॥
नाथे करत सिव पूजन पायो, लाल तास सिर तोरि गिरायो २४
ताको सुत यह भैंसरोरपति, मानसिंह अभिधान भोरै मति ॥
इहिं कारि हठ रक्ख्यो नृप आवत, पुनि सु डरयो गढविच पधरावत

॥ दोहा ॥

सामग्री तब गोठिकी, दिल्ली सिबिर पठाय ॥
गृह न दिखायो वहँम वस, जिन इनके गढ जाय ॥ २६ ॥
सरिता चम्मलि वम्मनी, दोउन२ सगम तत्थ ॥
अष्टोत्तरसत १०८ धेनु दिय, सभर नाह समत्थ ॥ २७ ॥
चढि प्रातहि दरकुच रचि, रनपट्ट सभर राय ॥
सक वसु दृग धृति १८२८ सुक्रमैं, प्रविस्यो बुदिय आय।२८।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशावजितसिंहचरिते स्मृतपुरातनबन्धुवैररावराजमानपुरा १ मुहा २ ग्रामेशाऽऽदिशीपोहनिग्रहणस्वराष्ट्रथाणापुराऽऽगमनराणग्रामामाविल्लहटास्वदुर्गबन्धनतत्स्पर्द्धिग्रामानिविधिदिघुराणाऽनुनयनबुन्द्यागतप्रस्थितरावराहृत्वशवहालापुरेशशीपोहराउलपृथ्वीसिंहदुहितोद्वहनपश्चाद्राणउत्तसैन्य

१थागोर में जाकर २ मेरे काका नाथसिंह का मारो ॥ २० ॥ २३ ॥ ३ लालसिंह मे ४ नाथसिंह ॥ २४ ॥ ५ कायर ॥ २५ ॥ ६ डेरों म भेज दी ७ स-देह से ८ यह गढ कहीं इनके न चलाजावे ॥ २६ ॥ ९ चामल और चामणी नदी के संगम पर ॥ २७ ॥ १० ज्येष्ट मास म २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि मे, अजितसिंह के चरित्रमें, पहिले का भाई का वैर याद करके रावराजा का मानपुरा और मडुवा के पति शीशोदियों को पकडना और अपने देश थाणापुर में आना १ राणा के ग्राम बीलहटा में अपना गढ बांधना और उसकी बराबर का ग्राम निश्चय

विल्लहटावेष्टनश्रुतशात्रवश्रीजित्तत्समायोधनकृतविजयस्वाश्रमा ऽऽ मनस्वीकृतचुण्डाउत्तमानसिंहसत्कारसम्भरेशरवपुरप्रविशनं द्वितीयो २ मयूखः ॥ २ ॥

आदितः ॥ ३४२ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

ऋतु पाउस अंतर *तदनु, नृपकै कुमर प्रताप ॥
कृष्णगढप दौहित्र वह, गत हुव रोग अमाप ॥ १ ॥
तदनंतर याही बरस १८२८, सित दसमी१० इसमास ॥
पतनीजुत श्रीजित चल्यो, प्राची तीरथ आस ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रथम गयो केसवपुरपट्टनि, न्हान१ दान२ किय तत्थ उचित भनि॥
इसके अंत ग्रहन ससिके पर, सुबरन१ भूमि२ दये पुनि संभर।३।
इंद्रगढाधिप भक्तराम जँहँ, आयो मिलन लैन संभर कँहँ ॥
प्रसभपुब्ब करजोरि अरज करि, स्वीय निलय लैगो हित अनुसरि ॥ ४ ॥
तँहँ श्रीजित दुवर रत्ति बिताई, पुनि ब्रजभूमि हंकि द्रुत पाई ॥
गिरि गोवर्द्धन दीपमाल दिन, न्हान२दान३किय कथित हड्डइन॥५॥

ही छेले ने को राणा का विनय करना २ बुन्दी आकर प्रस्थान करके रावराजा का पांसवाड़ा पुर के पति शीशोदिया रावल पृथ्वीसिंह की पुत्री से विवाह करना और पीछे से राणावतों की सेना का पीलहटा को घेरना सुनकर उन शत्रुओं से श्रीजित् का युद्ध करना और विजय करके अपने आश्रम में आना३ चुंडावत मानसिंह का सत्कार स्वीकार करके रावराजा का अपने पुर(बुन्दी) में आने का दूसरा २ मयूख समाप्त हुआ ॥२॥ और आदि से तीन सौ बियालीस ३४२ मयूख हुए ॥

*जिसपीछे॥१॥१आश्विन मास में२पूर्वदिशा के तीर्थों की आशा से ॥२॥३आसोज सुदि पूर्णिमा को ॥३॥४हठ पूर्वक५अपने घर॥४॥६हाडाओं के पति ने ॥५॥

पुनि मथुरा करि उचित रीति सब, अतुल दान वृंदावन किय अब
पुनि दरकुच कडामानिकपुर, सुरतटिनी[1] न्हायो सभग धुर ॥ ६ ॥
करि उपवास१ दान२ बिधि मंजुत, दरकुचन पहुँच्यो प्रयाग द्रुत॥
बपन१ न्हान२ उपवास३ दान४ बिधि, करि अरु कृपन लयो का-
सी निधि ॥ ७ ॥
चेतसिंह कासीपुर भूपति, लेगो सम्मुह आप महामति ॥
तँहँ निज धाम राजमंदिर रहि, चतुर समस्त उचित साह्यि चहि।८।
अजितसिंह बुंदीस भूप इत, आयो नगर इंद्रगढ धरिहित ॥
तब सम्मुह कल्लयानखेट तक, भक्तराम पहुँच्यो भट नायक॥९॥
लेगो नृपहिं बधाय निजालय, रक्ख्यो अति सतकारि निपुन नय॥
तँहँ जेठो भट भक्तराम सुत, कुमर नाम सनमान बिनय जुत।१०।
ताहि बुलाय भूप इंद्रन पति, अभ्युत्थान दयो आदरि अति ॥
पट्ट नवीन किन्नों नृप आदर, आयो रहि दिन पच निज नगर।११।
उदयनेर इत सधी जवनन, हँक लिय चुकि मेवार मुलक सन ॥
छर्लमिसुमैं न मिले करि मानहिं, लेन गयो ति कृष्णागढ रानहिं१२
कछुदिन रान बिसास न किन्नों, पुनि सधिनको आसय लिन्नों॥
तब अरिसिंह चल्यो निज देसहिं, स्वसुरहु गो पहुँचान नरेसहिं१३
निज जनपद रानहिं प्रविसायो, तब रठोर कृष्णागढ आयो ॥
इत जसवत देवगढ स्वामी, हुव छलबाल सहाय हरामी ॥ १४ ॥
पृथ्वीसिंह भूप कूरमपति, निज दौहित्र जानि रचि विन्नति ॥
सुत लघु सहित जाय जैपुर सठ, अरिसिंहहिं मारन मंड्यो हठ१५
राजसिंह हम्मीरदेव हर, सेनापति फोरयो तँहँ सत्वर ॥
जट्टनकों तजि कछुक अनख लहि, समरू हुतो फिरंगी तत्थहि१६

[1] गंगा नदी २ देय ॥ ६ ॥ ३ मुंडन ४ उस कृपण ने काशी रूपी निधि को लो ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ५ अपने घर ॥ १० ॥ ६ ताजीम ॥ ११ ॥ ७ तनख्वाह ८ रत्न-सिंह में ॥ १२ ॥ १३ ॥ ९ अपने देश में १० रत्नसिंह की सहाय ॥१४॥१५॥१६॥

सो पठयो अरिसिंहहिं मारन, कुप्पि चल्यो समरू रन कारन ॥
दै कछु दम्म मिलाय ताहि लिय, रान१६ समरू२भये मित्रप्रिय१
रान साम पंडेर ग्राम करि, भरतपुरहि पुनि गो सु गर्व भरि॥
इत अरिसिंह उदैपुर आयो, संधिनजुत निज अमल जमायो ॥१८
भीम सलूमरि नाह हुकम लहि, चुंडाउत आयो किल्ला चहि ॥
कछु छलकरि सिंधु सचिव डरायो, खाली गढ चित्तोर करायो१
तदनु रान पठयो बुद्दिय दल, बिल्लहटा तुम लयो अप्प बल ॥
रक्खन ताहि चित्त जो लावहु, तो यँहँ सेवन अनुज पठावहु॥२०
रुप्पय लक्ख१०००००पटा तिहिं देहैं, बिल्लहटाहु दत्त गिनि लैहैं
यह सुनि नृप निज अनुज बहादुर, पठयो दै भट संग उदयपुर२
काका अर्ज्जुनसिंह रान तँहँ, पठयो सम्मुह सुनत इहु यँहँ ॥
दै तिहिं पटा सुभट निज थप्प्यो, बिल्लहटासु तदपि नहिं अप्पो२

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजि सिंहचरित्रे बुन्दीन्द्रमहाराजकुमारप्रतापसिंहदेहत्यजनश्रीजित्प्राच तीर्थयात्राप्रस्थानहड्डेन्द्रेन्द्रगढगमनभक्तरामकुमरसन्मानसिंहाऽ भ्युत्थानाऽर्पणानीतभृत्याद्रम्मसन्धिपवनकृष्णगढगमनराणा १ हमेदपाटाऽऽनयनजयपुरगतसपुत्रदेवगढेशचुण्डाउत्तजसवन्तसिंह णानिपातविचारणाफिरङ्गिसमरूमेदपाटप्रेषणातदरिसिंहमैत्रीकरण

॥ १७ ॥ १८ ॥ १ सलूमर का पति भीमसिंह २ रत्नसिंह के सचिव ॥ १६ ॥ ३ जिसपीछे ४ पत्र ५ छोटे भाई को नौकरी करने भेजो ॥ २० ६ दियाहुआ गिन लेवेंगे ॥ २१ ॥ ७तो भी बीलहटा नहीं दिया ॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टम राशिमें, अजितसिंहके चरि में, बुन्दीपति के कुमर प्रतापसिंह का मरना और श्रीजित का पूर्व दिशा तीर्थों को जाना १ हाडाओं के पति का इन्द्रगढ जाना और भक्तराम के कु मर सन्मानसिंहको ताजीम देना२ तनखाह के रुपये ग्रहण करके सिन्धी यव का कृष्णगढ जाना और राणा अरिसिंह को उदयपुर लाना ३ पुत्र सहि जयपुर गये हुए देवगढ के पति चुंडावत जशवंतसिंह का राणा को मा

सलूम्मरीशचुण्डाउत्तभीमसिंहचित्रकूटस्थछलपत्त्रनिष्कासनराणा
बिल्लहटाऽर्थबुन्दीवर्णादूतप्रेषणरावराट्स्वोदरबहादुरसिंहोदयपुरप्र-
स्थापनतद्बिल्लहटावर्जितपटोपटङ्ग्रामादिप्रापणा तृतीयो३ मयूख ॥
॥ ३ ॥ आदित ॥३४३॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत बुंदीस भूप रानिनजुत, इक दिन समक सिकार गयो द्रुत ॥
तोल जोधसागर उपवन जँहँ, ससग्राहक हो प्रावबाट तँहँ ॥ १ ॥
बनवाई वग्गुरि ताके मुख, सह अवरोध रह्यो तहँ मह सुख ॥
घेरयो दासिन विपिन पिछि सन, उठि उठि आन लगे तब ससगन२
कछुक काल कौतुक इम किन्नौं, अवरोधहिं आयस पुनि दिन्नौं
उपवन तत्र आये वनिताजन, अप्प चल्यो पुनि इक्क अडर मन ३
वल्लभदास१ अनोपराम दुव२, नाजर सग इतर कोउ न हुव ॥
खर्व तुरग आरूढ नरेश्वर, उपवनँ ओर चल्यो इकत अर ॥ ४ ॥
इक१ गहिलोत गुलाब नाम सठ, लाल अनुज तँहँ किय अपुव्व हठ
जामिकँ दिठ्ठि बचाय रु आयो, धँसँ अतर राहि त्रिसिख चलायो॥५॥
फुट्टो वह कर वाम कलाई चहुवानहु तब संगि चलाई॥

का विचार करना और सलूम्बर के पति चुण्डावत भीमसिंह का चीतोड़ में स्थित छलयात्र के पत्र को निकालना ५ राणा का बीलहटा के अर्थ बुन्दी पत्र भेजना और रावराजा का अपने सगे भाई बहादुरसिंह को उदयपुर भेजना उसको बिल्लहटा के बिना, पट्टा उपटक ग्राम आदि मिलने का तीसरा३मयूख समाप्त हुआ॥३॥ और आदि से तीनसौ तितालीस ३४३ मयूख हुए ॥

१ खरगोशों की २ तलाश ३ बाग ४ खरगोशा को पकड़ने का ५ पत्थरों का कोट ॥ १ ॥ ६ बागर (फंदा) ७ जनाना सहित ८ वनको ॥ २ ॥ ९ जनाने को आज्ञा दी ॥ ३ ॥ १० छोटे घोड़े पर चढ़कर ११ बाग की तरफ शीघ्र चला ॥ ४ ॥ १२ लालसिंह के छोटे भाई ने १३ पहरायतों की नजर बचाकर १४ वोकड़ों के वृक्षों के भीतर रहकर १५ बाण चलाया ॥ ५ ॥

अरिकै भजत लगी सु पिट्ठि पर, रीढक*[1]पटि धसी तिरछी धर[2] ६
परि पुनि उट्ठि त्वराकरि[3] लज्ज्यो, बाट सु ऊरुदघ्न[4] चढि भज्ज्यो ॥
नृप हय खर्ब[5] रुक्यो सु कोट करि, पिट्ठि लग्यो तब कूदि सक्तभरि ७
सजव गयो अरि दै तरु अंतर, उपजन त्यौं गुरग्यो तब संभर ॥
याको भ्रात लाल[6] अभिधानक, हो काखिक[7] मृगयास्पद थानक ॥८॥
ताको नृप कोउक हेलन[8] पर, कटवायो अग्गैं दक्खिन कर ॥
तास अनुज यहँ वैर बिचारिय, तमसि[9] तीर संभर कर सारिय ॥९॥
बिक्रम सक बसुदग धृति१८२८आयन, अजित नाथ बिन छत्रउपायन
सीसोदक गहिलोत गुलाबनु, अकिय प्रद्योतकोन[10] निसि बन पर १०
बालसिं नारि भूप कर बानहिं, तिमिर[11] सहाय गयो निज थानहिं ॥
तदनु[12] झलाय अनाय नगर हुव, २ हड्ड नृपति संवत विदित हुव ११
जनक[13] पितृव्यक जोध सुता जहँ, धूहनि रन व्याही कूरम[14] कहँ ॥
ताकी धाइ पुत्रसुत[15] मति वर, पटु सुखराम नाम नय तत्पर ॥१२॥
नृप किय सुकरूप सचिव गुज्जरवह, इम दुर्दिन बितावत सुख यह
पुनि लग्गत नव दग धृति १८२९ संवत, आरवार एकादसि ११
संगत ॥ १३ ॥
राधमास[18] अवदात पक्ख पर, पुर झलाय व्याहन गो संभर ॥
अनुज बहादुर उदयनेर सन, औसु बुलाय संग लिय अप्पन ॥१४॥
इम दुल्लह सज्जित बरात जुत, पुर झलाय अनुदिन पहुँच्यो हुत ॥
चढि राजाउत सुतन चलाये, उभय २ कोस सन्मुह सब आये १५

*बांसे की हड्डी पर फिसल कर १भूमि में ॥६॥ २शीघ्रता करके ३जघा पर्यन्त ऊंचे मार्ग पर चढकर ४राजा का घोड़ा छोटा था इस कारण ॥७॥ ५ वाग को ६लालसिंह नामक ७शिकार के सब स्थानों का ॥८॥ ८ अपराध पर ॥ ९ ॥ ९ सन्ध्या समय ॥ १० ॥ १० सूर्य ने ११ अंधेरे की सहाय से १२जिस पीछे ॥११॥ १३पिता (उम्मेदसिंह) के काका जोधसिंह की पुत्री १४राजा जयसिंह को १५उसकी धाय का पुत्र, श्रेष्ठ बुद्धिवाला ॥ १२ ॥ १६ दिन १७ मंगल वार ॥ १३ ॥ १८ वैशाख सुदि १९ शीघ्र बुलाकर ॥ १४ ॥ १५ ॥

कीरतिसिंह झलायपनाथ सुत, बखतावर १ अभिधान प्रीति जुत॥
अभयसिंह २ ईसरदा स्वामी, भैरवसिंह ३ सुह्राडप नामी॥ १६ ॥
नृपहिं वधाय लेगये पत्तन, घरघर उच्छव अतुल भये घन ॥
अध स्वसुर समुख न इमं आयो, पुनि दुल्लह तोरन पधरायो ।१७।
नीराजन आदिक तदनंतर, विधि करि ब्याह लाई दुलहनि घर ॥
अध स्वसुर पद्धति बड पावन, करी अरज इलकाब बढावन ।१८।
अग्गैं लिखत राजश्री ठाकुर, धाम नाम पुनि तदनु काम धुर ॥
तुम जामात अरज चित लावहु, महाराजपद पत्र लिखावहु ॥१९॥
लखि तँहँ नृपहु स्वसुर नति प्रति प्रिय, महाराज श्रीठाकुर पद दिय
इम शृंगारकुमरि अभिधान सु, चल्यो व्याहि बुंदिय चहुवान सु२०
स्वसुर पुरोहित कृपाराम कँह, बहुधन१ कुंडल २ कटक३दये तँहँ॥
पुनि दरकुच चल्यो छेकत पथ, सरित बनास बनहटा निवेसथा२१।
अर्बुदजा इम लघि जुद्ध जय, प्रनिरयो नागरचाल बडे रय ॥
सुनि पुर नगर आत सभार पहु, सम्मुह गो नारवं सिरदारहु ।२२।
छि २ सिरुपाव दुव २ हय इक १ भूखन, नृपकी नजरि निवहि
मुदित मन ॥
निस इक१ रकिव दई महिमानी, उनियारेसं प्रीति पहिचानी।२३।
पुनि वदि जेठ चउत्थि४ चलायो, अतिजव दुर्ग नयनपुर आयो ॥

॥ १६ ॥ १ श्वशुर अन्धा था इस कारण ॥ १७ ॥ २ आरती ३ पक्की पद्धति पाने के लिय ॥ १८ ॥ ४ जिसपीछे मुख्य काम की वार्ता ५ तुम जमाई हो इस कारण ॥ १९ ॥ ६ नम्रता ॥ २० ॥ ७ कानों म पहनने के मोती ८ कडे ९ग्राम से॥२१॥ १०(*) बनास नदी ११ लडका ॥२२॥ १२ उनियारा के पति ने ॥ २३ ॥ १३नैणवा

(*) हम ऊपर लिख आये हैं कि अर्बुद (आबू) पर्वत से निकलनेवाली बनास नदी पश्चिमवाहिनी होकर पश्चिम के समुद्र में अन्य नदियों में होकर मिलती है और यह बनास नदी कुंभलगढ के पास ऊनायद ग्राम के पास से निकल कर पूर्ववाहिनी होकर चामल नदी में और फिर जमुना, गंगा में होकर पूर्व समुद्र में मिली है ॥

दुलहनि [1]स्वपुर तहाँसन भेजिय, ब्याहन अप्प भनाय गमन किय।२४।
उदयभान सम्मुह तब आयो, पुनि लहि कोल निलय पधरायो ॥
नव दुव[2] धृति १८२९ सक जेठ दसमि १० दिन, असित पक्ख
बुध वार हढ्ढ इन[3] ॥ २५ ॥
भूप दलेल सुता हुलसित हिय, बखतकुमरि अभिधान ब्याहि लिय॥
पुनि पुष्कर आयो संभरपति, महादान किय न्हाय महामति ।२६।
करि पुनि कुंच कृष्णगढ आयो, पै निज स्वसुर तत्थ नहिं पायो॥
बिरदसिंह [4]सालक सम्मुह गय, अति प्रवीन विद्या गुन आलय ।२७।
रहि कछु दिवस भाम पुनि हंकिय, दरकुंचन आयो पुर बुंदिय ॥
पुर बाहिर राजाउति रानी, तवलग रही प्रीति पहिचानी ॥ २८ ॥
अब दुलहनि दुव[5] सहित नरेस्वर, किय प्रवेस बुंदियपुर अंदर ॥
याहि बरस१८२९ कोटेस गुमानहु, ब्याहन गो बेघम लंदलवहु।२९।
मेघ[6] तनूज प्रतापकुमारी, कोटा परनि गयो छलकारी ॥
कासी सन श्रीजित इत हंकिय, गयो जाय पितरन सद्गति दिय।३०।
पुनि किय वैजनाथ सिव दरसन, बरदवान पहुँच्यो प्रसन्न मन ॥
ताके नृप मंडी महिमानी, श्रीजित कीरति सवन सुहानी॥ ३१ ॥
पहुँच्यो पुनि बालेसुरबंदर, तँहँ मरहट्ठ भटन मंग्यो[7] कर ॥
बढ्यो कलह तब सत्थ प्रहारे, सत्रु सिपाह अट्ठ८ मित मारे ।३२।
पुनि द्रुत होय जिहाजपुर चल्लिय, वलि वेतरनी न्हाँन१ दान२ किय॥
नाभिगया पुनि पितर तृप्त करि, कटक होय गय जगदीस नगरि३३
प्रथम [8]मारकंडेयाश्रम जँहँ, इंद्रद्युम्न श्राद्धपुनि किय तँहँ ॥
बहुरि महोदधि न्हाय श्राद्ध करि, पुरुसोत्तम परसे पुनि श्रीहरि ।३४।

१ वहांसे दुलहन को बुन्दी भेजा ॥ २४ ॥ २ समय पाकर घर में पधराया ३ हाडाओं के पति ने ॥ २५ ॥ २६ ॥ ४ साला ॥ २७ ॥ ५ बहिनोई ॥ २८ ॥ ॥२९ ॥ ६ मेघसिंह के पुत्र प्रतापसिंह की कन्या ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ७ हासिल मांगा ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ८ मार्कंडेय के आश्रम ॥ ३४ ॥

दिन दुव२ वेर नयन सुख लिन्नों, पुनि प्रयान कछुदिन रहि किन्नों ॥
न्हाय स्वेतगगा अघ जालन, अतिजव होय अढारह१८नालन।३५।
आपो तेदनु रामगढ पत्तन, मिल्यो भूप ताकोहु मुदित मन ॥
वहुरि होय कासी वैखानस, मुरस्यो विंध्यवासिनी मानसं ॥ ३६ ॥
पुष्पदत जँहँ साप मुक्त हुव, किन्नों तँहँ देवी दरसन धुव ॥
तीर्थराज होय पुनि सत्वर, चित्रकूट सेवन करि सभर ॥ ३७ ॥
होय ओढछा झाँसी आयउ, नरउर वहुरि मिलान लगायउ ॥
रामसिंह कूरम नरउरपति, मिल्यो आय सम्मुह मजुल मति।३८।
श्रीजित नजरि तुपक इक१किन्नी, महिमानीहु उचित बिधि दिन्नी॥
पुनि केसवपट्टनि मिलान दिय, कथित रीति तँहँ न्हान१दान२किय३९
एकादसि ११ नव दुव धृति १८२९ सक मित, आश्रम निज आयो भद्दव सित ॥
थाहुलं गो वेधम पुनि तपवंल, मातामही न्हवाय गगजल ॥ ४० ॥
वलि पुष्कर हित गमन विधायउं, अतिजव ह्वै कि कृष्णगढ आयउ॥
महिमानी रठोर भूप दिय, मज्जि ताहि पुष्कर मजनं किय ॥४१॥
ह्वै अजमेरु स्वीय आश्रम वलि, अगहनमैं आयो अतिजव चालि ॥
सुत बुंदीपतिके तदनतर, विष्णुसिंह अभिधान भयो वर ॥ ४२ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजितसिंहचरित्रे भ्रातृकरच्छेदवैरोज्जिहीर्पुशीर्पोदिगुलावसिंहबुन्दीन्द्रबाहुबाणवेधनतदन्धकारसहायपलायनसचिवीकृतगुर्ज्जरसुखरामराव

॥ ३५ ॥ १ जिसपीछे २ वानप्रस्थ (उम्मेदसिंह) ३ मन ॥ ३६ ॥ ४प्रयाग ॥ ३७ ॥
५ मुकाम ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ६ कार्तिक मास में ७तपस्वी ८ नानी को ॥ ४० ॥
९ गमन किया १० स्नान किया ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के च
रित्रम, भाई के हाथ कटाने के वैर को लेने की इच्छावाले शीशोदिया गुलाबसिंह
का बुन्दी के पति के भुज को बाण से वेधना और उसका अन्धेरे म भागना
१ गूजर सुखराम को सचिव करके रावराजा का भजाप के पति राजावत

राड्झलायपुरेशराजाउत्तकूर्मकीर्तिसिंहसुताविवहनवर्ज्जितश्वशुरस
त्काररवीकृतनारवशरदारसिंहस्वागतबुन्दीप्रेषितनवोढपरिसांत —
भणायपुरभपरठोड़दलेलसिंहदुहितृकपुष्करस्नातगृहीतशालाविरु -
दसिंहस्वागतद्व्यूढराधराड्बुन्दीप्रविशनकोटेशगुमानसिंहवेघमपुरप -
तिचुण्डाउत्तशीपोदसिवाईमेघपौत्रीपरिणयनजगदीशाऽवधिप्रेषित —
प्राचीतीर्थश्रीजित्वाऽऽश्रमाऽऽगमनाऽनन्तरगङ्गोदकस्नानापर्याप्तमा -
नकृष्णगढमार्गाऽनुष्ठितपुष्करस्नानपुनराश्रमाऽऽगमनरावराजकु
मारविष्णुसिंहोद्भवनं चतुर्थो ४ मयूखः ॥ ४ ॥

आदितः ॥ ३४४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक नव दुव धृति१८२९ पोस वदि, द्वादसि१२ मंगल वार ॥
विष्णुसिंह बुंदीसके, प्रकट्यो राजकुमार ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

यह दौहित्र उदार, वंसवहालाधीसको ॥
अमर¹ अंस अवतार, अजितसिंह नृपके भयो ॥ २ ॥
श्रीजित तदनु सप्रीति, गंगाजल उच्छव किगउ ॥

कछवाहे कीर्तिसिंह की पुत्री से विवाह करना और श्वशुर का सत्कार वर्जकर नरू के सरदारसिंह के स्वागत को स्वीकार करके, दुलहन को बुन्दी भेजकर भणाय के राठोड़ दलेलसिंह की पुत्री को विवाह कर, पुष्कर का स्नान करके साले विरुदसिंहका स्वागत ग्रहण करके दो रानियें व्याहकर रावराजा का बुन्दी में आना २ कोटा के पति गुमानसिंह का वेघम के पति चुंडावत सिवाई मेघसिंह की पोती परनना ३ जगदीश पर्यन्त के पूर्व के तीर्थ करके श्रीजित् का अपने आश्रम में आना, जिसपीछे नांनी को गंगाजल से स्नान कराना और कृष्णगढ के मार्ग से पुष्कर स्नान करके फिर आश्रम पर आना ४ रावराजा के राजकुमार विष्णुसिंह के होने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ और आदि से तीन सौ चवालीस ३४४ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ देव अंश ॥ २ ॥ २ जिस पीछे

निज कुटुंब रचि नीति, कोटादिक एकत्र किय ॥ ३ ॥
दोहा—अस्थिपालको जैनन सब, बुंदिय लिन्न बुलाय ॥
पठये करि पहिरावनी, पुनि गंगोदक पाय ॥ ४ ॥
तदनंतर फग्गुन असित, सक नव दुव धृति१८२९ मान ॥
देस सम्हारन काज इत, किय अरिसिंह पयान ॥५॥
बुन्दी जैनपदके निकट, पुर सकरगढ नाम ॥
आय तत्थ अरिसिंह नृप, किन्नौं कटक मुकाम ॥ ६ ॥
श्रीजितपँहँ पठई अरज, लिखि निजकर नृप रान ॥
तुम अनिच्छहो राजऋषि, बिहित योग बिज्ञान ॥ ७ ॥
हम सेवक दरसन चहत, अधिक रहत जिय आस ॥
सुनि श्रीजित गो हिय हुलसि, सजव रान नृप पास ॥८॥
आय समुख अरिसिंहहू, लैगो सिविर बधाय ॥
त्यागी नहिँ बैठो तखत, श्रीजित बिधि समुझाय ॥ ९ ॥
चोकाउप्पर भिन्न रहि, किय सँलाप सनेहु ॥
अक्खिय तँहँ अरिसिंह इम, बिल्लहटा तजि देहु ॥ १० ॥
ताहि सटि बुंदीससौं, लेहु इतर तुम ग्राम ॥
अथवा रुप्पय आयमित, श्रीजित कहिय सुधाम ॥ ११ ॥
तदनु सिक्ख करि समरी, अप्पन आश्रम आय ॥
अक्खिय इम बुंदीससौं, मिलहु रानसौं जाय ॥ १२ ॥
स्वीय सचिव इत रानहू, अमरचंद्र अभिधान ॥
बभन बुंदिय मुक्कल्यो, पधरायन चहुवान ॥ १३ ॥

॥ ३ ॥ १ अस्थिपाल के पत्ता (सम्पूर्ण हाडाओं) को ॥ ४ ॥ ५ ॥ २ देश के समीप ॥ ६ ॥ ३ हे राजऋषि तुम इच्छा रहित हो सो ॥ ७ ॥ ८ ॥ ४ डेरे में ५ गादी पर नहीं बैठा ॥ ९ ॥ ६ आसन पर जुदा रहकर ७ स्नेह से बात की ॥ १० ॥ ८ बदले में ९ अन्य १० आमदनी के माफिक ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

अग्गैं कुमर प्रताप ढिग, कारामैं[1] जगतेस ॥
सेवन रक्ख्यो बिप्र सो, इक्यो दव्वत देस ॥१४॥
अमरचंद कहि मुक्कलिय, अनैय[2] दुरथपुर आय ॥
मेरे सम्मुह दर्प तजि, आवहु संभरराय ॥ १५ ॥
दयो सुनत बारूदमैं, मानहु खदिर[3] दरंग ॥
सजि तनुत्र निर्मोक[4] सम, भो नृप कुपित भुजंग ॥ १६ ॥
हुकम पठायो विप्रपैं, रे कातर बिपरीत ॥
सिंहनकी समता करत, फेरव[5] होत फजीत ॥ १७ ॥
सु सुनि बिप्र खिजि तब कहिय, है दर्पित[6] वुंदीस ॥
पहिलैं पिक्खहिं जाय तिंहिं, बहुरि दिखावहिं रीस ॥ १८ ॥
इम विचारि आयो सु द्विज, व्है सिविका[8] आरूढ ॥
कोउन सम्मुह मुक्कल्यो, मन्नि भूप तिंहिं मूढ॥ १९ ॥

॥ षट्पदी ॥

संधी[9] भट लिय संग वड कमनैत बहादुर ॥
तोड़े सिलगत तुपक पकरि प्रविसे वुंदिय पुर ॥
बर्म[10]१ टोप२ दाहुलं[11]३न जटित सव अमरचंद जुत ॥
चिंतत रन मन चंड रुके गजपारि[12] आय द्रुत ॥
संधी तथापि[13] संतपंच५००लै हठ करि द्विज परिखद[14] गयउ ॥
अभिमन्यु तनय[15] जनु कलि कुमति तच्छक पर तडत भयउ२०

॥ दोहा ॥

अमरचंद आसिख दयो, रक्खि बडो मगरूर ॥

---

१ कैद में ॥ १४ ॥ २ अनीति ॥ १५ ॥ ३ खैर वृत्त की आग्नि (यह आग्नि तेज बहुत होती है) ४ सर्प की कांचली के समान कवच सज कर वह राजा सर्प के समान कुपित हुआ ॥ १६ ॥ ५ गीदड़ ॥ १७ ॥ ६ घमंडी है ७ जिसको पहिले जाकर देखोगे ॥ १८ ॥ ८ पालखी पर चढकर ॥ १९ ॥ ९ सिंधी यवनों को १०कवच ११ दस्ताना १२ हाथी पोल पर रोके १३ तोभी १४सभा में गया १५ मानों कलियुग की कुमति से परीक्षित ने तक्षक नाग पर गर्जना की ॥२०॥

उद्यो नहिं भूपति मनखि, सु लखि महाबल सूर ॥ २१ ॥
सचिवन सुभटन निद्दिकारि, विन्नति सेनति सुनाय ॥
कलह घटावन प्रसभक्रम, दिन्नों नृपहिं उठाय ॥ २२ ॥
तदपि मिसल मरजाद तजि, बैठन लग्गो विप्र ॥
डोढीरच्छक ओर तब, छाहि लख्यो नृप छिप्र ॥ २३ ॥
सैन समुझि बुंदीसकी, तानैं द्विज ढिग आय ॥
दै करं बगल उठाय द्रुत, दयो मिसल बैठाय ॥ २४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजितसिंहचरित्रे रावराजकुमारविष्णुसिंहोद्भवनश्रीजिद्गङ्गोदकोत्सवकरणराणाऽरिसिंहस्वदेशाऽटनतच्छ्रीजित्सम्मिलनशीर्षोदस्वसचिवामरचन्द्रबुन्दीप्रेषणतद्रुतुद्विप्रकटुप्रजल्पन पञ्चमो ५ मयूख ॥५॥
आदित ॥३४५॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥ स्वागता ॥

तत्समीक्ष्य कुपितोऽमरचन्द्र कोपयन्निव नरेन्द्रमवोचत् ॥
ग्राममर्पयतु निछहटाख्य सन्धिमेत्य भजतादरिसिंहम् ॥१॥
अन्यथा सपदि सन्ध्युपटङ्कै शास्त्रसूरियवनैस्तववर्मोभि ॥

॥ २१ ॥ १ नम्रता पूर्वक २ हठ के क्रम से ॥२२॥ ३ द्वारपाल की ओर क्रोध करके देखा ॥ २३ ॥ ४ बगल में हाथ देकर ॥२४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्र में, रावराजा के राजकुमार विष्णुसिंह का होना और श्रीजित का गंगाजल का उत्सव करना १ राणा अरिसिंह का देशाटन करना और श्रीजित का उनसे मिलना २ शीशोद का अपने सचिव अमरचन्द को बुन्दी भेजना और उस ब्राह्मण का मर्म वेधनेवाले वचनों का कहने का वर्णन ५ मयूख समाप्त हुआ ॥५॥ और आदि से तीन सौ पैंतालीस ३४५ मयूख हुए ॥

उस बात को देखकर क्रोध में आया हुआ अमरचन्द, राजा को क्रोध करानेवाले वचन बोला कि निछहटा नामक ग्राम देओ और सन्धि (मिलाप) करके अरिसिंह (अड़सी) की सेवा करो ॥ १ ॥ नहीं तो ये सिन्धी पदवीवाले यवन शस्त्रविद्या में पण्डित, केश पकड़ कर मीषा मुण्ड करके तुम्हारे राजापन को

न्यङ्कनमग्य सकचग्रहमास्थं नीयते तत्र नृपत्वमपास्य ॥२॥
एवमादिभिररुन्तुदवाक्यैः क्रुच्छरासनविसृष्टकलम्बैः ॥
बुन्द्यधीशहृदयं परिभिद्य प्रस्थितस्सहसाऽमरचन्द्रः ॥ ३ ॥
कोपितस्तदनु संभरराजः पन्नगेश्वर इवाङ्घ्र्युपगूढः ॥
विप्रवाक्यकरणो ह्यरिसिंहः कारकं प्रथममेवममंस्त ॥४॥
तत्र शूरसचिवैर्नृपवर्यो बोधितः समयवेल्लनविद्भिः ॥
सन्धनीय उदयादिपुरेशो रावराडनुदिनं भवतेति ॥ ५ ॥
विप्र एव कुटिलो बलशंसी विग्रहं विरचयंस्तदवादीत् ॥
स्वामिशासनमृतेऽनयमूर्त्ती राज्यभारकलितोद्धतदर्प्पः ॥६॥
गम्यतामवनिराडरिसिंहं सज्जनो ह्यनुचितं स न कर्त्ता ॥
सन्निशम्य सचिवोक्तमवाच्यं तर्जयिष्यति तमेव सरोपम् ॥७॥
एवमादिवचनैरवनीशश्चालितः सचिवपोढृभिरार्य्यैः ॥
कम्पयन्स दिगिभार्णवभूमिं लुम्पयन्नवटकापथशैलान् ॥८॥

दूर कर, शीघ्र लेजावेंगे ॥ २ ॥ इत्यादि क्रोध रूपी धनुष से छोड़े हुए बाणों के समान मर्म वेधन करनेवाले वचनों से, बुन्दीपति के हृदय को घायल करके वह अमरचन्द यकायक (अचानक) उठचला ॥३ ॥ जिमपीके जैसे पैर से दबाया हुआ सर्प कुपित होवे तैसे चहुवाण राजा कुपित हुआ और वह अरिसिंह ब्राह्मण (अमरचन्द) का कहा करनेवाला, प्रथम कहनेवाले का करनेवाला अर्थात् जो पहिले कहै उसी को माननेवाला हुआ ॥ ४ ॥ तब समय की उलटा पलटी को जाननेवाले उमराव और कामदारों (अहलकारों) ने श्रेष्ट राजा को समझाया कि हे रावराजा आपको उदयपुर के स्वामी से सदैव सन्धि (मिलाप) करना उचित है ॥ ५ ॥ राज्य के भार से (सचिव होने से) आया है बड़ा घमण्ड जिसको, अपने पराक्रम को जनानेवाला, अनीति की मूर्ति, ऐसे कुटिल ब्राह्मण ने ही, बिना स्वामी की आज्ञा के लड़ाई को रचकर ऐसे वचन कहे हैं ॥ ६ ॥ हे महाराज आप अरिसिंह के समीप चलिये, वह सज्जन है सो अनुचित नहीं करेंगे, किन्तु अमात्य के कहेहुए कुवचनों को सुनकर क्रोध से उस (अमरचन्द) को ही धमकावेंगे ॥७॥ अमात्यों के कहेहुए इत्यादि वचनों से, राजा चलायमान होकर, दिग्गज और समुद्रों के साथ पृथ्वी को कंपाता हुआ, खड्डे, कुमार्ग और पर्वतों का नाश करता हुआ ॥ ८ ॥ ऊपर को उड़ीहुई

छादयन् रविमुदग्ररजोभि सादयन्हयखुरैरतलादीन्॥
ल्हादयन्नतुलसैन्धवरागैर्नादयन्निजभटान्हरिगर्जम् ॥९॥
पेषयन्नुपलपादपगुल्मान्प्रेषयन्स्वपृतना युधि जेतुम् ॥
श्लेषयन्भरमहीन्द्रफणाभि प्रेषयन्नखिलादिक्ष्वतिभीतिम् १०
स्पन्दयन्नधरकच्छपपृष्ठ स्पन्दयन्गिरिषु खानिजधातून् ॥
नन्दयन्स हितबान्धववर्गान्क्रन्दयन्नहिततस्करदुष्टान्॥११॥
जम्भयन्धनुरुदारकरेण स्तम्भयन्विशिखविद्धविहङ्गान् ॥
दारयन्नवनिदारकदंष्ट्रा कारयन्पलभुजा मुदमुच्चै ॥१२॥
घोषयन्समरवादनवर्यान्पोषयन्पथि समागतदीनान् ॥
मोषयन्नसिरुचाऽचिरभाभा शोषयन् गमनधूलिभिरब्धीन्१३
साधयन्स्वजनसङ्गरवृत्तिं बाधयन्परजनाननकान्तिम् ॥
सोऽरिसिंहशिविरं तरसेत्थ रावराडजितसिंह इयाय ॥ १४ ॥

धूलि से सूर्य को ढकता हुआ, घोड़ों के खुरों से अतल आदि लोकों को दुःखी करता हुआ, अत्यन्त सिन्धवी रागों (षड्रागों) से हर्ष कराताहुआ, सिंहगर्जना से अपने वीरों को नाद कराता हुआ ॥ ९ ॥ पत्थर, वृक्ष और लताओं को पीसता हुआ, युद्ध जीतने के अर्थ अपनी सेना को चलाता हुआ शेषनाग के फणा से भार को मिलाता हुआ, सब दिशाओं में भारको भेजता हुआ ॥ १० ॥ भूमि से कच्छप की पीठ को रगड़ता हुआ, पर्वतों की खानों में उत्पन्न होनेवाली धातुओं को बहाता हुआ, हित के साथ बान्धव वर्ग (सम्बन्धियों के समूह) का आनन्द देता हुआ, शत्रु, चोर और दुष्टों को रुलाता हुआ ॥ ११ ॥ दहिने हाथ से धनुष को खैंचता हुआ अथवा बह उदार, हाथ से धनुष को खैंचता हुआ, बाणों से छिदे हुए पक्षियों को स्तंभन करता हुआ सूअरा की दाढों को तोड़ता हुआ अथवा बराह की दाढा को तोड़ता हुआ, मांसाहारियों को बड़ा हर्ष कराताहुआ ॥ १२ ॥ युद्ध के श्रेष्ठ बाजों को बजवाता हुआ, मार्ग में आएहुए दीनों का पोषण करता हुआ, तरवार की सुन्दर और चञ्चल कान्ति को छुड़ाताहुआ, चलने की धूलि से समुद्र को सुखाता हुआ ॥ १३ अपने लोगों की युद्धवृत्ति को साधता हुआ, शत्रुओं के मुख की कान्ति को मिटाता हुआ, इसप्रकार बह रावराजा अजितसिंह अरिसिंह के डेरे को चला ॥ १४ ॥

॥ मन्दाक्रान्ता ॥

आगच्छन्तं शिविरमधुना बुन्द्यधीशं निशम्य,
द्रागभ्यागात्सभटसचिवः सोऽपि राणोऽरिसिंहः ॥
आनन्दोत्कं सुमिलनमभोभोद्भूपोर्भूमिभर्ती-
र्वीरांश्चान्यानुभयत इतान्मेलयाञ्चक्रतुस्तौ ॥ १५ ॥

॥ द्रुतविलम्बितम् ॥

प्रथममिन्द्रगढाधिपतेः सुतो रणपटुः सनमानसमाह्वयः१॥
तदनु माधववंशमहार्णवोद्भवशशी भगवंत२इति स्फुटः ॥ १६ ॥
अथ च धोवडपत्तनपात्मजः समिति भैरवभैरवभैरव.३ ॥
इतिमुखा अरिसिंहमहीभृताप्यजितसिंहभटा मिलिताः सुखम्।१७।

॥ उपजातिः ॥

अथाऽपरे तत्र सलूम्बरीशश्चुण्डाउतोभीम१उपेत्य पूर्वम्॥
आमेटनाथश्च ततो द्वितीयो वीरः फतैसिंह२उदारभावः।१८।
बिञ्झोलिशास्ता परमारजातिर्नीतिप्रपञ्ची शुभकर्णनामा३॥
इत्यादयः सम्भविनः पृथक् तेऽरिसिंहवीरा मिलिता नृपेण१९

॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

बुन्दी के पति का अपने डेरे आना हुआ सुनकर उमराव और मन्त्रियों सहित वह राणा अरिसिंह भी शीघ्र सन्मुख आया, उन दोनों राजाओं का सुन्दर मिलाप आनन्द को बढानेवाला हुआ और उन दोनों राजाओं ने दोनों ओर के वीरों को परस्पर मिलाये ॥ १५ ॥ प्रथम तो इन्द्रगढ के पति का पुत्र, युद्ध में चतुर सन्मानसिंह, पीछे माधवसिंह के वंश रूपी समुद्र से उत्पन्न हुआ चन्द्रमा के समान भगवन्तसिंह, जिसपीछे धोवड़ा नगर के पति का पुत्र युद्ध में भैरव के समान स्पष्ट भयङ्कर भैरवसिंह ॥ १६ ॥ इत्यादि अजितसिंह के उमराव आनन्द पूर्वक महाराणा अरिसिंह से मिले ॥ १७ ॥ अब दूसरी ओर के, सलूंबर का स्वामी चुण्डावत भीमसिंह, दूसरा आमेट का पति बडा पराक्रमी वीर फतहसिंह ॥ १८ ॥ और तीसरा बीझोल्यां का पति पँवार जातिवाला नीति में चतुर शुभकर्ण, इत्यादि महाराणा अरिसिंह के मिलने योग्य उमराव अजितसिंह से पृथक् पृथक् मिले ॥ १९ ॥ इस प्रकार जीतने में नहीं आवै ऐसा

बुन्दीशोऽजितसिंह१ एवमजितो भूपोऽरिसिंह२स्तथा,
राणोट्टङ्कितो मिथोऽमिलदिह श्रीचाहुवाणेश्वर ॥
स्मृत्वा तत्सचिवोक्तवाक्यकुलिशं नोपायनं चाप्यदा
न्नाङ्घ्रिस्पर्शमपि ह्यधान्नवयमाऽब्धीन्दु१८२९ममाणे शके२०
पञ्चम्या ५ सहितेऽवलक्षशकले श्रामे तपस्याऽऽह्वये,
सम्मिल्येत्थमुभा२वयो विविशतु स्वं स्वं निचोलालयम् ॥
मुदा कृष्णगढाऽधिपस्य सुतया शीर्षोदराइपाऽनुजा
भर्त्रे बुन्द्यधिपाय पञ्चशतकं ५०० खाद्यैः समं प्रेषिता ।२१।
राणाऽपि द्रविणा खखेन्द्रिय ५०० मिता मुद्रास्तथा प्रेषिता,
पश्चात्फाल्गुनशुद्धषष्ठदिवसे चातुर्भुजो रावराट् ॥
सुत्रामेव बलाऽऽलयं पटगृहं प्राप्तोऽरिसिंहस्य सो-
भ्युत्थानादिविधेयरीतिरचनैः सत्कारितः स्वागतैः ॥ २२ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

पश्चादहोमन्त्रणदूष्यमागाद्राणा१सनाढ्याऽमरचन्द्र१युक्तः ॥
शम्भू३सनाम्ना सनवाहभर्त्रा राणाउतेनाऽपि तथा समेतः ॥२३॥

बुन्दी का पति अजितसिंह और तैसे ही शत्रुओं पर सिंह रूप राणा पदवी को धारण करनेवाला अरिसिंह (चतुर्थी) दोनों परस्पर मिले, इस मिलाप में चहुवाणों के ईश्वर रावराजा अजितसिंह ने उस अमात्य (अमरचन्द) के वज्र रूपी वचनों को स्मरण करके न तो राणा का नजराना किया और न चरण स्पर्श किया यह मिलाप सम्वत् अठारह सौ उनतीस१८२९ फाल्गुन सुदि पञ्च मी को हुआ, इस प्रकार दोनों मिलकर अपने अपने डेरों में गये और कृष्ण गढ़ के अधिपति की पुत्री जो सीसोदिणी (अरिसिंह) की राणी थी, उसने अपनी छोटी बहिन के पति बुन्दी के पति अजितसिंह के अर्थ मिठाई के साथ पांच सौ रुपये भेजे ॥ २० ॥ २१ ॥ तैसे ही राणा ने भी पांच सौ रुपये भेजे जिसपीछे फाल्गुन सुदि छठ के दिन चतुर्भुज रावराजा जैसे इन्द्र, बलिराजा के स्थान पर प्राप्त होवे तैसे राणा अरिसिंहके डेरे पर प्राप्त हुआ और ताजीम आदि उचित स्वागत से सत्कार पाया ॥ २२ ॥ तिसपीछे एकान्त में सलाह करने के निमित्त, सनाढ्य जाति के प्रधान अमरचंद, सनवाड़ के पति राणा वत शम्भूसिंह के साथ राणा अरिसिंह जुदे डेरे में गये ॥ २३ ॥

बुन्दीपुरीन्द्रो२ भगवंतसिंहं१ माधाणिहड्डं समिदुग्रवीर्यम् ॥
सीलोरसञ्ज्ञपतिं सुनीतिं सत्कोकिलग्रामपुरानिवासम् ॥ २४ ॥
वीरं द्वितीयं२ सनमानसिंह२ हड्डेन्द्रसल्लोतपदोपटङ्कयम् ॥
श्रीभक्तरामस्य कुमारवर्यं संयोधिनं चन्द्रगढाऽधिपस्य ॥ २५ ॥
दाधीचवंशध्वजमार्यवन्द्यं व्यासं तृतीयं३द्विजमुच्चमन्त्रम् ॥
गोपालरामाभिध३माप्तताईं सैतत्त्रयं३ मंत्रगृहे निनाय ॥ २६ ॥
तत्र स्थितानां घटिका१ व्यतीता राणाऽरिसिंहेन सुगन्धतैलम् १॥
स्वर्णाभपर्णोत्तमवीटका२श्च स्तम्बेरमः१ स्वोच्छ्रयशङ्कितार्कः॥२७॥

॥ उपजातिः॥

निरस्तमूल्ये परिधानपूर्णो लोके स्फुटे ये सिरुपाव२वाच्ये२॥
तुरङ्गमौ२ द्वौ२ जितवातवेगौ मण्यादिभिः सञ्जटिता च भूषा१॥२८॥
इत्याद्यथाऽर्हाऽर्हणमुच्चमानैर्निवेदितं भूपतयेऽजिताय ॥
सत्कारितः सोऽजितसिंहवर्म्मा स्थूले स्वकीयं समुपाजगाम ॥ २९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजित–

तहां पर बुन्दीपति अजितसिंह ने युद्ध में उग्र प्रतापी सीलोर नगर के पति को जो पहिले कोकिल (कोइला) ग्राम में रहता था उस माधोसिंहोत हाडे भगवन्तसिंह और ॥ २४ ॥ दूसरे वीर इंद्रगढ के पति श्रीभक्तराम के पुत्र योद्धा इन्द्रसल्लोत्त पदवीवाले सन्मानसिंह को ॥ २५ ॥ और तीसरे प्रामाणिक आर्यों के पूज्य बडी सलाह देनेवाले दाधीचवंश की ध्वजा व्यास गोपालराम इन तीनों को उस सलाह करने के डेरे में लिये ॥ २६ ॥ वहां पर एक घड़ी भर समय व्यतीत हुआ जिसपीछे राणा अरिसिंह ने, इत्र (अंतर) सुवर्ण के बरक लगे पान बीड़े, अपनी उंचाई से सूर्य को शङ्कित करनेवाला (इसकी उंचाई की आड से अंधेरा नहीं होजावे ऐसी शंका करानेवाला) एक हाथी अमूल्य वस्त्रों से पूरित लोक में सिरुपाव के नाम से प्रसिद्ध दो सिरुपाव, वायुके वेग को जीतनेवाले दो घोड़े, और मणियों का जड़ाहुआ एक भूषण ॥ २७॥ २८॥ इत्यादि, बडे मान के साथ राजा अजितसिंह के भेट किये इसप्रकार सत्कार पाकर वह अजितसिंह अपने डेरे आया ॥ २९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टम राशि में, अजितसिंह के

सिंहचरित्रेऽमरचन्द्रविल्लहटानिमित्तकटुतरभाषणाभविष्यत्सिन्धियव
नत्रासोद्देशनकोपितरावराट्तत्पत्यागमनसचिवसुभटोक्तबुन्दीन्द्रराणा
सैन्यसाधेयशङ्करगढगमनसम्मुखाऽगताऽरिसिंहसम्मिलनसुभटा
दिमिथोमेलनचरणाऽपिस्पर्शत्सम्भरोपायनाऽढौकनस्वस्वशिविर
विशनसपत्नीकशीर्षोद्दहद्देशाऽर्थमुद्रापञ्चशती ५०० प्रमुखस्वागतव
स्तुप्रेषणारावराड्द्वितीय २ दिनराणापटाऽऽलयगमनसत्रय ३ सद्वय
२ भूपद्वय २ मन्त्रणाराणासुगन्ध १ पर्ण २ गज ३ वाजि ४ वस्त्र
५ भूषण ६ द्दडेन्द्रनिवेदनतत्स्वसिविरागमन षष्ठो ६ मयूख ॥६॥
आदित ॥३४६॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥इन्द्रवज्रा ॥

राणाऽरिसिंहोऽपि दिने द्वितीये२ बुन्दीन्द्रदोकूलनिवासमागात्॥
सत्कारितोऽनेन च सर्वभावैस्तद्वत्समुत्थानसुभापणाद्यै ॥ १ ॥

॥ उपजाति ॥

चरित्र में, अमरचन्द का पीलहटा ग्राम के कारण अत्यन्त कटुए वचन कहना और आगे आनेवाले समय में सिन्धी यवनों का भय देना १ रावराजा को क्रोध करा कर उसका पीछा जाना और बुन्दी के पति का उमरावों और मन्त्रियों के कहने से राणा की सेना से घिरेहुए शंकरगढ में जाना२ सन्मुख आये हुए अरिसिंह से मिलना और उमराव आदि को परस्पर मिलाना ३ पहुंचाणा का राणा के चरणों का स्पर्श नहीं करके नजराना नहीं करना और दोनों का अपने डेरों में जाना ४ स्त्री सहित राणा का हाडाओं के पति के अर्थ पांच सौ रुपये आदि स्वागत(महमानी)के पदार्थों का भेजना५ रावराजा का दूसरे दिन राणा के डेरे जाना और बुन्दी के तीन और उदयपुर के दो जनों सहित दोनों राजाओं का सलाह करना६ राणा का इत्र, पान, हाथी, घोड़े, वस्त्र, भूषण, हड्डेन्द्र को देना और उसके अपने डेरे में आने का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ ॥६॥ और आदि से तीन सौ छियालीस ३४६ मयूख हुए ॥

दूसरे दिन राणा अरिसिंह भी बुन्दीपति के डेरे आये और अजितसिंह ने भी उसी रीति से ताजीम, सुन्दर सभाषण आदि से सब प्रकार से सत्कार किया ॥ १ ॥ और प्रीति बढाने के अर्थ बुन्दी के पति अजितसिंह ने एक बात

प्रीत्येधनायाऽकुरुताऽन्यदेकं बुन्दीश्वरो हस्तयुगे२ वसूनाम् ॥
थैलीतिशब्दस्फुटबुद्ध्यमानद्वयं२ गृहीत्वा ह्यरिसिंहदेहात् ॥ २ ॥
उत्तार्य तस्यैव च सेवकेभ्यो ददद्यथेन्द्रः कृतसत्रकायः ॥
द्रव्यं सुखं घ्रेय१ मथाऽपि चर्व्यं ताम्बूल२ मिद्धं पुरटप्रकाशम ॥३॥
निवेदयामास गजं१ सुदन्तद्वयं२ वियद्दर्शनघूर्णनेन ॥
संकेतयन्तं समरेऽसुहानेर्मुष्णान्तु नाकीयसुखं यथेच्छम् ॥ ४ ॥

॥ इंद्रवज्रा ॥

मद्दन्तकीलद्वय२सेवनेन तिष्ठन्तु वा क्षेपयितास्मि नाके ॥
सञ्चालयंतं श्रवणौ विशालौ दाक्षाय्यसम्पातिरिवाऽऽत्मपक्षौ ॥५॥

उपजातिः ॥

अश्वौ२तथा क्षिप्रगतौ हि वायोः पृष्ठस्थितत्वादिव निर्बलत्वम् ॥
संसूचयंतौ खरहेषणेन प्रसन्नवस्त्राणि३ तथा नवानि ॥ ६ ॥
हीराद्यमूल्योत्तमरत्नभूषा४ मित्यादि संगृह्य च सम्भरेशात्॥
अथाऽऽज्ञया सैन्ययुतोऽरिसिंहः स्वयं निचोलालयमेष आयात् ॥७॥

यह की कि अपने दोनों हाथों में धन (रुपयों) की थैली जिसका स्पष्ट नाम है लेकर अरिसिंह के शरीर पर ॥ २ ॥ उतार (नोछावर) कर, राणा अरिसिंह के ही सेवकों को, जैसे इन्द्र यज्ञ समाप्त करके देवै तैसे दी, तिस पीछे सुख पूर्वक गन्ध लेने योग्य इत्र, चबाने योग्य सुवर्ण के वरक लगे हुए पान बीड़े ॥ ३ ॥ और श्रेष्ठ दो दांतोंवाला एक हाथी दिया, वह हाथी आकाश की ओर देखकर मस्तक घुमाता था सो मानों यह संकेत [इसारा] करता था कि युद्ध में मरकर स्वर्ग का यथेच्छ सुख भोगो ॥ ४ ॥ मेरे इन दोनों दांतों रूपी कीलों के सेवन से ठहरो तुमको मैं अभी स्वर्ग में फैंक देता हूं और यह संकेत करके अपने दोनों बडे कानों को ग्रीध पक्षी संपाति की भांति दिखाता था ॥ ५ ॥ तैसे ही वायु के समान शीघ्र चलनेवाले और अपने से पीछे रहजाने के कारण वायु की निर्बलता को अपने तीखे हींसने से सूचना करनेवाले दो घोड़े और सुन्दर नवीन वस्त्र ॥ ६ ॥ हीरा आदि रत्नों से जड़ाहुआ उत्तम मूल्य का भूषण (सिरपेच) इत्यादि बहुवाण (अजितसिंह) से लेकर, सीख लेकर सेना सहित अरिसिंह अपने डेरे गया ॥ ७ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

आगत्य च प्रेषितवान् स्वकीय दूत स यत्राऽजितसिंहभूप ॥
सदेशहारेण तदा यदुक्त तच्छ्रूयता रामधराऽधिनाथ ॥ ८ ॥

॥ उपजाति ॥

चुण्डाउतो वेघमपुर्यधीश समाख्यया नाम सिवाइमेघ १ ॥
अन्यस्तथा शक्करदुर्गनाथो२ राणाउत स्वामिविरोधचञ्चु ॥ ९ ॥
कन्हाउतो रामपुरश्च कोजू३स्तथा तृतीयोऽमरदुर्गभर्त्ता ॥
राणाउतश्चापि जलिंधरीशो४द्वेषानुग साहसिकश्चतुर्थ ४ ॥ १० ॥
चत्वार४एते भवदीयपक्षान्निरस्तशङ्का गणयन्ति नो नो ॥
वशेऽस्मदीये विनियोजनीया धूर्त्ता खलास्ते भवता नियम्य ॥११॥
श्रुत्वेति दूतोक्तमुदारसत्त्व श्रीरावराडाविरचीकथत्तम् ॥
चुण्डाउतैर्वेघमपत्तनेशै कृतोऽस्मदीयो बहुधोपकार ॥ १२ ॥
विस्मृत्य युष्माभिरतस्तदाग सम्मेलनीय स सिवाइमेघ ॥
वय हि मध्यस्थपद दधानास्तमानयेम प्रसभ पुरस्तात् ॥ १३ ॥
राणाउत शक्करदुर्गनाथ १ कन्हाउतश्चाऽमरदुर्गदुर्गी२ ॥

घेरे जाकर राजा अजितसिंह के पास अपना दूत भेजा, उस दूत ने जो आकर कहा सो हे भूपति रामसिंह सुनो ॥ ८ ॥ वेघम का पति चुण्डावत सिवाई मेघसिंह, दूसरा शकरगढ़ का पति राणावत, स्वामी से विरोध करना ही है धन जिसके "व्याकरण में चञ्चु और चणप् प्रत्यय धन अर्थ में होते हैं" ॥ ९ ॥ तीसरा अमरगढ़ का पति, राम शब्द से पहिले है फोजू जिसके अर्थात् फोजूराम कान्हावत, चौथा द्वेष के साथ रहनेवाला हठी राणावत जलिंधरी का पति ॥ १० ॥ ये चारों आपके पक्ष से निडर होकर हमको नहीं मानते हैं इस कारण आप इन दुष्ट धूर्तों को पकड़कर हमारे वश में करो ॥ ११ ॥ दूत के कहे हुए ये वचन सुनकर बड़े पराक्रमी श्रीरावराजा ने स्पष्ट कहा कि वेघूं के पति चुंडावतों ने हमारे पर बहुत उपकार किये हैं ॥ १२ इस कारण आप भी उसके अपराध को भूलकर सिवाई मेघसिंह के साथ मिलाप करलो, हम बीच में पड़कर उसको बलात्कार (जबरीसे) आप के सामने ले आवेंगे ॥ १३ ॥ और शकरगढ़ के पति राणावत और अमरगढ़ के गढ़वाला [पति] कान्हावत, ये

उभावेमू नः शरणागतौ तद्वयं न तद्विप्रियमाचरामः ॥ १४ ॥
अन्हाय यूयं कुरुत प्रकामं तौ जेतुमाजौ प्रततं प्रयत्नम् ॥
जलंधरीशं यमने यदीच्छा चमू प्रयच्छंतु न मेत्र पत्तः ॥ १५ ॥
मत्कोट्टपालोऽपि गमिष्यतीतः सार्द्धं तया केशवरामनामा ॥
विजित्य तत्रत्यजनान् सलीलं निस्सारयिष्यत्युत नात्र चित्रम् ॥१६
श्रुत्वेति राणाः परिपंथिभावं गतोऽप्यऽमात्यं त्वमरादिचंद्रम् ॥
सम्प्रेषयामास जलिंधरीशं चतुःसहस्रेण४०००बलेन युक्तम् ॥१७
सकोट्टपालोऽपि नियोजितः संजगाम वेगादरिसिंहसिद्ध्यै ॥
जलिंधरीदुर्गनिवासिनो नृन्निस्सारयामास ददौ च दुर्गम् ॥१८॥
राणाउताश्चाऽपि यथाप्रतिष्ठं प्रवेशिता बुन्द्यवनौ सकांताः ॥
पश्चादपृष्ट्वाऽजितसिंहभूपं राणा गतः शंकरदुर्गभूतः ॥ १९ ॥

॥ इंद्रवज्रा ॥

खैरूणसंज्ञं पुरमध्यसंस्थं दग्ध्वाऽगमत्सोऽमरदुर्गभूमिम् ॥
बुध्वेति बुंदीपतिमाप्तकोपं सर्वेऽवदन्यत्रगतस्स राणाः ॥ २० ॥

दोनों हमारे शरण आये हैं इसकारण हम दोनों का बुरा नहीं करेंगे ।१४॥ आप उन दोनों को युद्ध में जीतने का उपाय शीघ्र करो और जलिंधरी को [यहां अजहत्स्वार्था लक्षणा से जालिंधरी के पति का ग्रहण है] कैद करने की इच्छा है तो इसमें मेरा पक्ष नहीं है ॥ १५ ॥ केशवराम नामक मेरा कोतवाल भी उस सेना के साथ जावेगा सो वहां के लोकों को लीला (सहज) से जीत कर निकाल देवेगा इस में कोई आश्चर्य नहीं है॥१६॥ यह सुनकर राणा ने शत्रु भाव को प्राप्त होकर उस प्रधान अमरचन्द को चार हजार सेना के साथ जलिंधरी भेजा ॥ १७ ॥ अरिसिंह की कार्यसिद्धि के अर्थ भेजाहुआ वह कोतवाल भी शीघ्र गया और जलिंधरी के गढ में रहने वाले मनुष्यों को निकाल कर गढ देदिया ॥ १८ ॥ और राणाउतों को प्रतिष्ठा के साथ निकाल कर स्त्रियों सहित बुन्दी के देश में प्रवेश कराया पीछे राजा अजितसिंह से विना पूछे ही, राणा शंकरगढ की भूमि से गया ॥१९॥ फिर मार्ग में आये हुए खैरूणा नामक ग्राम को जलाकर वह राणा अमरगढ की भूमि में गया, इस बात को जानकर क्रोध में हुऐ बुन्दीपति को सब (उमराव और सचिवों) ने कहा कि जहां राणा गया है ॥ २० ॥ वहां हम लोगों

॥ उपजाति ॥

गतऽपमस्माभिरपीति वाक्य निराकृत भूपतिनाऽग्नु मेति ॥
न स्म कदैवाऽनुचरास्तदीया पृष्ठागत नापि कुतोऽनुसार ॥२१॥
योग्योस्मदीयो भवतीति वाच ब्रुवन्नपीपाय भृशोक्त एभि ॥
यातेन तत्राऽमरदुर्गभूमि स्थित समीपेऽमरचन्द्रनाम्न ॥ २२ ॥

इतिश्री वशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशावजित सिंहचरित्रे राणावुन्दीन्द्रशिविरागमनरावराट्तद्देहवसुधानीढयो २ त्तारणासुगध १ ताम्बूल २ गज १ वाजि २ वस्त्र३ भूषा४ऽऽदिनिवेदनप्राप्तस्वपरत्यप्रेषितदूतराणावेघम १ शाकरगढा २ऽमरगढजलिघरीशाऽऽदिनिमहणाऽर्थकथनहर्ड्डुन्द्रतदनूरीकरणाजालिघरीविध्वसनाऽवोधितबुन्दीशराणाऽमरगढगमनस्वसुभटसचिवनितातोक्तरावराट्तदनुकरणा सप्तमो मयूख ॥ ७ ॥

आदित. ॥३४७॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥ उपजाति ॥

को भी चलना चाहिए, इन वचनों का राजा अजीतसिंह ने निषेध किया कि हम उनके कभी अनुचर (नौकर) नहीं हैं जो वे तो बिना पूछे ही गये और हम उनके साथ लगे रहें ॥ २१ ॥ यह बात हमारे योग्य नहीं है, ऐसे वचन बोलता हुआ उन उमराव और सचिवों के अत्यन्त कहने से तहां अमरगढ की भूमि में अमरचन्द के पास ठहरा ॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्र में, राणा का बुन्दीपति के डेरे आना और रावराजा का [राणा] के शरीर पर से धन की थैलियों का नोछावर करना१ इत्र, पान, हाथी, घोड़े, वस्त्र, भूषण आदि नजर करना और राणा का अपने डेरे आकर अपना दूत भेजकर बेघम, शाकरगढ, अमरगढ, जलिघरी के पति आदि को पकड़ने के अर्थ कहलाना और हाडा के पति का उसको अस्वीकार करना २ जलिघरी का नाश करके बुन्दी के पति को बिना जताये राणा का अमरगढ जाना३ अपने उमराव और साथियों के अत्यन्त कहने से उनके सदृश करने[अमरगढजाने]का सातवां मयूख समाप्त हुआ ॥७॥ और आदि से तीनसौ सैंतालीस३४७ मयूख हुए ॥

अत्रापि यातोऽमरचंद्रशर्मा पुरो नृपस्याऽस्य तथाप्यतुष्टः॥
दृष्ट्वैवमाशु प्रजगाद बुंदीपतिर्मया गम्यत अद्य बुंदी ॥ १ ॥
श्रुत्वेतिभूपोऽप्यमरेंदुना द्रागवीवदत्प्रेषित अद्य दूतः ॥
यदुच्यते तेन विधाय कार्यं तद्गम्यतां स्वं नगरं यथेच्छम् ॥२॥
ततो गतौ स्वस्वनिकेतनं तौ संप्रैषयद्दूतमथोऽरिसिंहः ॥
उक्तं च तेन स्फुटमेत्य भूपं निवेद्यतां विल्लहटाख्य आशु ॥ ३ ॥
ग्रामोऽस्मदीयस्तत एतु बुंदीं निशम्य धीरोऽजितसिंह इत्थम् ॥
अलीलपत्तत्र तु दुर्गमेकं कृतं मया चौरनिरोधनाय ॥ ४ ॥

॥ इंद्रवज्रा ॥

तत्प्रदेशे स्वशयान्मयाऽपि क्षिप्ता शिलाऽयासभृता प्रसह्य ॥
तस्मात्क्षमध्वं बलचौरसंघाद्देशे वयं वोऽवनमाचरामः ॥ ५ ॥
ग्रामोऽपरस्तद्द्विगुणो यथेच्छं संगृह्यतां वा नियमो विधेयः ॥
एतावतो वित्तसमुच्चयस्य प्रत्यब्दमस्ति ग्रहणेन तुष्टिः ॥ ६ ॥

॥ उपजातिः ॥

श्रुत्वेति न स्वीकृत एषु पक्षो राणाऽरिसिंहेन कदाऽपि कोऽपि॥

यहां अमरगढ में भी अमरचन्द शर्मा इस राजा अजितसिंह के सामने गया तोभी इसको देखते ही अप्रसन्न होकर बुन्दी के पति ने कहा कि मैं आज ही बुन्दी जाता हूं ॥ १ ॥ यह सुनकर महाराणा ने भी अमरचन्द्र द्वारा शीघ्र ही कहलाया कि आज दूत भेजा है सो वह जो कहे उस कार्य को करके पीछे यथेच्छ अपने नगर को जाओ ॥ २ ॥ तिसपीछे दोनों अपने डेरे में गये तब अरिसिंहने दूत भेजा उससे राजा ने स्पष्ट कहा कि हमारे बीलहटा नामक ग्राम शीघ्र नजर करो तब बुन्दी जाओ, यह सुनकर धीर अजितसिंह ने कहा कि वहां पर तो मैंने चोरों को रोकने के अर्थ किला बनवाया है ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ इस देश में दुष्ट चोरों का समूह होने के कारण मैंने इसके कोट की नीम में बडे परिश्रम और हठ के साथ अपने हाथ से पत्थर डाले हैं इस कारण से क्षमा करो हम आपकी प्रीति चाहनेवाले हैं ॥ ५ ॥ इस से द्विगुण[दुगना] दूसरा ग्राम आपकी इच्छा होवे सो लेवें वा कोई ऐसा नियम कर लेवें कि प्रतिवर्ष इतने रुपये लेने से आप प्रसन्न होवेंगे ॥ ६ ॥ यह सुनकर राणा अरि

उक्तं च नास्मत्कथनेन यदि प्रदीयते सन्धिभिरात्तशस्त्रैः ॥ ७ ॥
निवेद्यतां सवसथ स एवेत्येव वचो जातविवृद्धमन्युः ॥
श्रीरावराजाऽजितसिंहवर्मा तदा बभूव प्रलयाऽर्कचण्डः ॥ ८ ॥
ततश्च तद्वत्सर १८२९ एव चैत्राऽसिते दले पूर्व१दिनेऽवशिष्टे ॥
घटीत्रये३ घोटसुखाऽनुभूत्यै बहिर्जगामोद्धतदर्पराशिः ॥ ९ ॥
अर्वाधिरूढश्चहुवाणभूपोऽप्यगाच्च तत्रैव महेन्द्रकल्पः ॥
हत्वा शशौ द्वौ२ स्वबलेन युक्तौ तारागणेश्चन्द्रमसाविवान्यौ॥१०॥
सुरैः सुरेशाविव शुद्धसत्वौ समुद्यता आगमनाय सद्म ॥
तथाऽऽहवेच्छू श्रमलायताक्षौ यथाऽऽगतौ दिग्विजयाय सज्जौ ॥

॥ मालिनी ॥

हतदिनपतिकान्त्यो सङ्गमोऽसम्भविष्णु
स्तरणिज इव लोकेऽपूर्वजन्येकहेतु ॥
अपि च पदकृतोऽपि भ्रान्तिकृत्पण्डितानां

सिंह ने इनमें से एक भी बात को स्वीकार नहीं की और कहा कि यदि हमारे कहने से नहीं देते हो तो उस गाम को शस्त्रधारी सन्धियों से देना, इन व चनों से बढे क्रोध में आया हुआ रावराजा अजितसिंह प्रलय के प्रचण्ड सूर्य के समान हुआ ॥ ७ ॥ ८ ॥ जिस पीछे उसी सम्वत् १८२९ में चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के दिन दो पहर में (मध्यान्ह में) तीन घड़ी दिन बाकी रहे घोड़े के साथ राणा घुड़दौड़ करने को बाहर गये ॥ ९ ॥ घोड़े पर चढ़कर इन्द्र के समान रावराजा भी वहीं गया वहां दो खरगोशों को मारकर अपनी अपनी सेना के साथ जैसे तारागण के साथ चन्द्रमा होवे तैसे ॥ १० ॥ जैसे देवताओं के साथ इन्द्र होवे तैसे, निर्मल बडे नेत्रोंवाले, दिग्विजय के अर्थ तैयार होवे तैसे युद्ध की इच्छावाले दोनों राजा डेरे आने को तैयार थे ॥ ११ ॥ हत की है सूर्य की कान्ति जिन्होंने उन दोनों का सगम असमय वाला है, यमराज की भांति लोकों में अपूर्वता का एक कारण है, देखो पदों में सगम किया है सो भी पण्डितों को भ्रांति करनेवाला है, क्योंकि भू धातु से इष्णुच् प्रत्यय वेद में होता है सो यहां लोक में किया है यही भ्रांति करनेवाला है " कौमुदी के कर्ता भी इसके समाधान में 'निरङ्कुशाः कवयः' यही लिखते हैं " निश्चय ही

मृगपतिरपि सङ्गादत्र यातो मुधैकः ॥ १२ ॥
भवति विपुलताऽतो ह्यर्थसङ्कल्पनातो
विविधबुधमनस्सु प्रत्ययानां तथाहि ॥
तदुभय २ नृपतिभ्यां क्षिप्तदेशान्तरित्वे
ऽपवहृत इह बोध्ये द्वन्द्वलाभः प्रतिष्ठाम् ॥ १३ ॥
इतिमतिशतकारी तत्त्वबोधैकहारी
सुरपुरपटुनारीकामनासम्प्रचारी ॥
सकलसकलधारी स्वविहारोपकारी
समजनि जनिताऽरिव्रातनिःशेषकारी ॥ १४ ॥
अवददमलबुद्धिर्बुन्द्यधीशो महात्मा
भवितरि दिन एता बाभविष्याहं तु ॥
गमनमिह विधेयं तथ्यमाज्ञाप्य राज
न्निति विविधवचांसि प्रश्रुतान्यश्रुतानि ॥ १५ ॥
नरपतिररिसिंहः कारयामास नैवं

अजितसिंह रूपसिंह के साथ से अरिसिंह अकेला वृथा आया ॥१२॥ जैसे पण्डितों के मन में विविध अर्थ की कल्पना से प्रत्ययों की विपुलता होती है, वैसे ही इसके अर्थ की कल्पना से विपुलता होती है. बोध्य (जनाने योग्य)को व्यवहार में लाने से दोनों का लाभ और प्रतिष्ठा होती है, जिसको दोनों राजाओं ने दूसरे देश में फैंक दिया है॥ १३ ॥ इसप्रकार सैकड़ों मति (बुद्धि) करनेवाला, तत्त्वबोध (ज्ञान) का हरण करनेवाला, स्वर्ग की चतुर स्त्रियों की कामना का प्रचार करनेवाला, सम्पूर्ण रीति से, सगुण शिव को धारण करनेवाला, तथा सब कलाओं से युक्त सबको धारण करनेवाला, जो जन्म से ही शत्रु हैं उनके समूह को निरशेष (नाश) करनेवाला ॥ १४ ॥ निर्मल बुद्धिवाला महात्मा बुन्दी का पति बोला कि मैं तो आगामि दिन[कल] को जानेवाला हूं सो हे महाराज यहां पर ठीक आज्ञा देकर जाओ इत्यादि अनेक वचनों को सुने अनसुने किये और न दोनों नेत्रों से राजा अजितसिंह को देखा. तिस पीछे राणा के किसी सेवक चर्म्रा ने कठोर वचन कहा कि आगामि दिनमें तुम्हारा जाना कैसे होवेगा ॥ १५ ॥

न च नयनयुगेनाऽदर्शि भूपोऽपि तेन ॥
तदनु परुषवाच क्षत्रिय कश्चिदूचे,
कथमुत गमन स्पादागतोऽहि त्वदीयम् ॥ १६ ॥
उदयपुरनरेशो निर्बलो बुध्यते किं
तदनु च रणशीला सन्धिन किं न दृष्टा ॥
नयनपथमुपे तैर्दुस्सह भीरुदह्न
त्वयि सति यवनैस्तैरावृतेऽधोदुकूले ॥ १७ ॥
समलशमलमुक्ति चर्करिष्यस्यपि द्रा-
गिति कटुतरवाग्भिस्तर्जयन्त स्वकीयम् ॥
नहि नहि वचनाना पात्रमेषा धरारा-
डिति किमपि स नोचेऽद्धाऽरिसिंहश्च शृण्वन् ॥ १८ ॥
निजनिलयमुपेत मुक्तपन्थानमारा-
दुदयपुरनरेश प्राऽवदद्बुन्द्यधीश ॥
भवति जिगमिषाऽस्त श्रीमता मुक्तिमिच्छ-
स्थित इह पुर एवाऽस्मीति चाऽन्यच्चकार ॥ १९ ॥
यवननयप्रवृत्तो य शिर स्पर्शरूपो
मुजरविति करेण क्रीयतेऽकारि सोऽपि ॥

॥ १६ ॥ क्या उदयपुर के राजा को तुम निर्बल जानते हो, क्या इन के स्वामिधर्मी सेवक सिन्धियों को नहीं देखे हैं, जिनको देखने से ही भय लगे ऐसे उन यवनों से जब घिराजावेगा तब हे कायर डाला तू शीघ्र धोवती में मूत्र सहित विष्टा कर देवेगा, इत्यादि बहुत ही कटु वचनों से डरानेवाले अपने मनुष्य को, उस अरिसिंह ने साक्षात् सुन कर भी यह नहीं कहा कि यह राजा ऐसे वचनों का पात्र नहीं है ॥ १७ ॥ १८ ॥ अपने डेरे जाने के, अर्थ मार्ग को छोडनेवाले उदयपुर के राणा से बुन्दी के पति ने समीप होकर कहा कि मेरी जाने की इच्छा है इसी कारण श्रीमानों की आज्ञा चाहनेवाला मैं आगे को खडा हूं, यह कह कर दूसरा काम यह किया ॥ १९ ॥ जो यवनों की नीति से प्रवृत्त हुआ है और मस्तक के हाथ लगा कर किया जाता है जिसको मुजरा

तदुपरि नहि दृष्ट्याऽदर्शि पृष्ठिं विधाय
प्रचलितमतिवेगेनाऽरिसिंहेन मत्तम् ॥ २० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ अजितसिंहचरित्रे राणाग्रामप्रश्नपविलहटामार्गणरावराडूतद्विडवीतरणभूपद्वय २ विरोधीभावभजनबहिर्वाजिविनोदनसम्भरेशस्वप्रस्थाननिमित्तशिष्टाचारश्रावणराणास्वदृष्टिपरिवर्त्तनतदेकतमारुन्तुदाऽऽयुधिकभृत्यविप्रलपनश्रुततद्रावराट्क्रुद्धीभवनमष्टमो ८ मयूखः ॥८॥
आदितः॥३४८॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

ततः क्रोधसंज्वालिताक्षो महात्मा बभूवाऽजितो भूपतिर्भूतकम्पः ॥
यथा भीमसेनोऽभवद्धार्त्तराष्ट्रेनुवेन्द्रः प्रभुर्वृत्रदैतेय आदौ ॥ १ ॥
यथा यत्तपत्ते ध्रुवः पर्शुरामो यथा हैहयेन्द्रे लसदोस्सहस्रे ॥
यथा वासुदेवो हरिर्दामघोषौ यथा चण्डिका दैत्यसम्म्राजि शुम्भे॥२॥

कहते हैं, वह मुजरा भी किया जिस पर भी दृष्टि नहीं दी और वह अरिसिंह रावराजा को पीठ देकर मत्त के समान चला ॥ २० ॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्र में, राणा का हठ पूर्वक थीलहटा नामक ग्राम मांगना और रावराजा का उस के सदृश (बराबरी) दूसरा ग्राम देना स्वीकार करना १ दोनों राजाओं का विरोध भावको प्राप्त होना और बाहर घोड़ों की क्रीड़ा करना २ रावराजा का अपने घर (बुन्दी) जाने के निमित्त शिष्टाचार सुनाना और राजा का अपनी दृष्टि को फेरना ३ एक शस्त्रधारी नौकर का मर्म बेधन करनेवाले विरोध के वचन बोलना, और उनके सुनने से रावराजा के क्रोधित होने का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥८॥ और आदि से तीन सौ अड़तालीस ३४८ मयूख हुए ॥

तब तो क्रोध से प्रज्वलित नेत्रोंवाला महात्मा राजा अजितसिंह जीवों को कंपानेवाला हुआ, जैसे दुर्योधन पर भीमसेन, आदिदैत्य वृत्रासुर पर इन्द्र, सहस्रबाहु पर परशुराम, दमघोष के पुत्र (शिशुपाल) पर वसुदेव के पुत्र

तथाशक्तिहेति॰ पुरोऽश्व प्रसार्याऽरिसिंहाऽभिवक्त्रं चचालाथ वीर ॥
स्वय शक्तिघातेन युद्धप्रगल्भो भुवो पातयामास निष्प्राणराणाम ३
नराकारमेघाद्विवोद्दीप्तशम्पा ततश्चैव वा चण्डधाम्नो मरीचि ॥
यथा वन्हिकुण्डाच्च काली कराला तथा नि सृता शक्तिरुद्भिद्य राणा४
तत खड्गमाकृष्य बुन्दीनरेन्द्रे जिहिर्षौ शिरोऽरिप्रतीहार एक ॥
भुजे साङ्गदे प्राऽहरत्स्वर्णयष्ट्या कराभ्या बलात्कारतो रावराज ॥
तदाघातभङ्गस्पदोऽसिस्तदीयश्च्युताऽध्वाछिनन्नाऽरिसिंहोत्तमाङ्गम् ५
तथा वीक्ष्य तद्भाक्तरामि कुमारोऽहिनत्पात्यमान कृपाणेन राणाम्

॥ आर्या ॥

एव जाते राणाजयसिंहसुतप्रतापसिंहस्य ॥
पौत्रो दौलतसिंह१पुत्रो य श्यामसिंहस्य ॥ ७ ॥

॥ गीति ॥

(श्रीकृष्ण) और दैत्यराज शुभ पर चमिदका ॥२॥ तैसे शक्ति (बरछी) धारनवाला प्रचण्ड वीर युद्ध में निपुण राजा अजितसिंह राणा अरिसिंह के मुख के आगे घोड़े को बढ़ा कर अरिसिंह के सामने चला और बरछी की घात से प्राण रहित राणा को भूमि पर पटका ॥ ३ ॥ यह शक्ति (बरछी) जैसे मनुष्य के शरीर रूपी मेघ से बिजली, प्रचण्ड सूर्य से किरण और अग्निकुण्ड से कराल ज्वाला निकले तैसे राणा को छेद कर निकली ॥ ४ ॥ फिर खड्ग निकाल कर बुन्दी का राजा, राणा का मस्तक काटना चाहता था, इतने में राणा के एक द्वारपाल छड़ीदार ने दोनों हाथो से बल पूर्वक सोने की [सुवर्ण की] छड़ी रावराजा के भुजबन्ध सहित हाथ (*) पर मारी ॥ ५ ॥ उस छड़ी की चोट से तरवार हाथ से छूट गई और राणा का मस्तक नहीं कटा, यह देखकर भाक्तिराम के कुमर सन्मानसिंह ने पड़े हुए राणा पर तरवार मारी ॥ ६ ॥ ऐसा होने पर राणा जयसिंह के पुत्र प्रतापसिंह का पोता और श्यामसिंह का पुत्र महाराज पदवी

(*) मेवाड़ के इतिहास में लिखा है कि राणा अरिसिंह के बरछी मारकर रावराजा अजितसिंह पाछा फिरा उस समय महाराणा के छड़ीदार ने सोने की छड़ी रावराजा के ललाट पर मारी जिससे रावराजा अचेत होगया और घोड़े के हाने पर मस्तक लगगया उस मूर्छित दशा में रावराजा को घोड़ा ले भगा और इसी चोट के कारण थोड़े ही समय पीछे रावराजा का देहांत होगया

स महाराजोट्टङ्की तुमुलं युध्वाऽसिभिर्हभूत्तिलशः ॥
शम्भूसिंह२श्च तथा सनवाडेशोऽत्र भारताऽवरजः ॥८॥
एतौ२ नाकिनिकेतं प्राप्तौ राणाउतौ समं भर्त्रा ॥
वैश्यश्छोगालालो३ऽनुजजः सचिवस्य कृष्णगढभर्त्तुः ॥९॥
एतेषु हतेषु त्रिषु राणां त्यक्त्वा प्रदुद्रुवुश्चाऽन्ये ॥
राणाप्राणाऽपघ्नीं शक्तिं१ स्वामुज्जहार बुन्दीशः ॥ १० ॥
अर्व्वतं२ च तदीयं नीत्वाऽगच्छत्स्वकीयशिविरभुवम् ॥
श्रुत्वैतदमरचन्द्रो नेतुं कुणपानियाय सैन्ययुतः ॥११॥
बुन्दीपृज्जम्बूरैर्न्यवर्त्तत सपृत्सनाढ्यविप्रं तम् ॥
तन्मारणकृतबुद्धिः पुनर्जगामाऽजितोभिमुखमेषाम् ॥१२॥
द्वाभ्यां२ प्रसह्य रुद्धो दत्वा नृपभावसिंहशपथाऽऽदि ॥
सीलोर१धोवडेड्भ्यां२ भगवन्त१भवानिसिंह२ नामभ्याम्॥१३
प्रस्थापितश्च बुन्दीमेताभ्यां प्रसभमजितसिंहनृपः ॥
सम्प्राप्तः स निशीथे स्वपुरि ससैन्योऽरिसिंहमाहत्य॥ १४ ॥

को धारण करनेवाला दौलतसिंह खड्ग से घोर युद्ध करके तिल तिल प्रमाण कटा, तैसे ही भारतसिंह का छोटा भाई सनवाड़ का पति शम्भूसिंह भी कटा ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ये दोनों राणावत अपने स्वामी के साथ स्वर्ग स्थान को पहुँचे और कृष्णगढ के मन्त्रि के छोटे भाई का पुत्र वैश्य छोगालाल भी मारागया ॥ ९ ॥ इन तीनों के मारेजाने पर और सब राणा को छोड़कर भागगये, तब बुन्दी के पति ने राणा के प्राण लेनेवाली अपनी बरछी को निकाली ॥ १० ॥ और राणा के घोड़े को लेकर अपने डेरों की भूमि में गया, यह सुनकर अमर चन्द सेना सहित उन मृतक शरीरों को लेने को आया ॥ ११ ॥ तब बुन्दी की सेना के जम्बूरों से सेना सहित उस सनाढ्य ब्राह्मण को रोका और उसको मारने की बुद्धि करके अजितसिंह फिर सामने गया ॥ १२ ॥ जिसको सीलोर के पति भगवन्तसिंह और धोवड़ा के पति भवानीसिंह, इन दोनो ने राजा भावसिंह के सौगन आदि देकर हठ से रोका और इन्हीं दोनों ने बलात्कार पूर्वक उसे बुन्दी पहुँचाया, इसप्रकार वह राजा अजितसिंह राणा अरिसिंह को मारकर सेना सहित आधी रात्रि के समय बुन्दी प्राप्त हुआ

तौ२ बुन्दीश्वरसुभटौ स्थित्वा तत्रैव वैभव स्वीयम् ॥
नेय नेय नेय यातौ त्यक्त्वा पटालयाद्यन्यत् ॥१५॥
ते सन्धिनस्तु यवना गता क्वचित्तद्दिने समाजोत्का. ॥
सुभटाश्च पूर्वमेव च्छलवालकपक्षपातिनो भिन्ना ॥ १६ ॥
अतएवाऽमरचन्द्रो बुन्दीसैन्ये गते समेत्य निशि ॥
अरिसिंहवपुरधिष्ठाप्यनृयान स्वं रुदन् ययौ शिबिरम्॥१७॥
हट्टेश्वरशिविरार्द्धिं विलुण्ठ्य दूष्याऽऽदिका तदवशिष्टाम्॥
अरिसिंहतनुं तत्पटसदने संस्थाप्य शोकमारेभे ॥ १८ ॥
राणा सप्त७भुजिष्या सत्यो मनभावनाऽऽदयस्तत्र ॥
तौर्यविनोदनवत्योऽतिष्ठन् रात्रौ सजीवमिव परित ॥१९॥
प्रातश्चित्यारोहे कुणाप मनभावनेदमुक्तवती ॥
यदि निजकृतफलमेतत्तदस्तु यदि चान्यथा प्रभो तर्हि ।२०।
त्वा वयमिव विलपन्त्यो भस्मीभूता भवन्तु तत्नार्य. ॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ ये दोनो बुन्दीपति के उमराव वहीं ठहर कर, लेने योग्य अपना वैभव लेकर, डेरे आदि अन्य वस्तुओं को छोडकर आये ॥ १५ ॥ वे सिन्धी यवन तो उस दिन सभा से इष्टलाभ के लिये कालक्षेप करने को(नमाज पढने को) कहीं चले गये थे, और छलबाल (रत्नसिंह) के पक्ष के उमराव पहिले से ही फुटे थे ॥१६॥ इस कारण बुन्दी की सेना के चले जाने पर अमरचन्द रात्रि मे वहां आकर अरिसिंह के शरीर को पालखी में रखकर स्वय रोता हुआ डेरे में गया ॥ १७ ॥ और रावराजा की डेरे आदि समृद्धि का लूटकर अरिसिंह के शरीर को उस डेरे में रखकर शोक करन लगा ॥१८॥ वहां पर मनभावन को आदि लेकर राणा की सात पतिव्रता पासवान स्त्रियां, नाच गान करातीं हुई जैसे राणा जीता होवे तैसे रात्रि में उस राणा को चारों ओर से घेरकर बैठी रहीं ॥ १९ ॥ प्रात काल म राणा के शरीर को चिता पर रखते समय मनभावन ने कहा कि, हे स्वामी यदि अपनी ही करनी का यह फल है तब तो ठीक ही है, नहीं तो जैसे हम आप को रोतीं हैं तैसे ही हे प्राणनाथ! जिसने बिना अपराध आप की यह दशा की है उसकी स्त्रियां भी ऐसे हो

येनैवेदृगवस्था प्राणेश्वर ते ह्यनागसो विहिता ॥ २१ ॥
मनभावनेत्थमुक्त्वाऽऽरुरोह चितिकां षडाढ्ऽऽलिजनसहिता॥
सह जग्मुरनुप्रेष्ठं साध्व्यः साल्हादमुच्चगायन्त्यः ॥२२॥
नवनेत्रेभकु१८२९सङ्ख्ये शकवर्षे विक्रमाह्वराभर्त्तुः ॥
प्रतिपदि१ माधवशुक्ले मुहूर्त१शेषेऽन्हि हड्डपतिनैवम् ॥२३॥
शक्त्या हतोऽरिसिंहस्तदश्वमारुह्य बुन्दिकाऽगामि ॥
वैखानसेन पित्रा स भर्त्सितो नयविदाऽनुनीतश्च ॥ २४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशावजितसिंहचरित्रे रावराड्राणाऽरिसिंहनिपातनतद्द्वारस्थस्वबाहुयष्टिप्रहरणभाक्करामिखड्गराणाभेदनवैश्यदोलतसिंह१ शम्भूसिंह२ मरणभूशभटोक्तसमात्तराणाहयधृतस्वशक्तिसम्भरेशबुन्द्यागमनभगवन्तसिंह१ भवानीसिंह२ नेयवैभवानयनभीर्वमरचन्द्रकुणपस्वशिविरप्रापणभुजिष्यासप्तक ७ राणासहगमनं नवमो ९ मयूखः ॥ ९ ॥

विलाप करती हुई भस्म हाओ ॥२०॥२१॥ मनभावन इसप्रकार कहकर छहों सखियों के साथ चिता पर चढी. और वे सातों ही पतिव्रताए हर्ष के साथ उच्चस्वर से गाती हुई अपनेपति के साथ गई ॥ २२ ॥ इस प्रकार विक्रम राजा के सम्वत् अठारह सौ उनतीस १८२९ के चैत्र कृष्ण एकम के दिन दो घड़ी दिन बाकी रहे, इस प्रकार राणा को बरछी से मारकर, राणा के घोड़े पर चढकर हाडों का पति बुन्दी आया और उस रावराजा को नीति के जानने वाले वानप्रस्थ पिता(उम्मेदसिंह)ने धमकाया और नीचा दिखाया ॥२३।२४।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशिमें अजितसिंह के चरित्र में, रावराजा का राणा अरिसिंह को मारना और उनके द्वारपाल का अपने हाथ पर छड़ी की मारना १ भक्तराम के पुत्र का खड्ग से राणा को भेदन करना और एक वैश्य और दोलतसिंह व शम्भूसिंह को मारना २ उमरावों के बहुत कहने से राणा के घोड़े को लेकर, अपनी बरछीको निकालकर चहुवाणों के पति का बुन्दी आना ३ भगवन्तसिंह और भवानीसिंह का लाने योग्य वैभव को लाना ३ कायर अमरचन्द का मृतक शरीर को अपने डेरे में लाना और सात पासवानों का राणा के साथ सती होने का नवमां ९मयूख समाप्त

मादित ॥३४९॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥

॥ गीति ॥

सैन्ययुतोऽमरचन्द्रस्तार्तीयकर्म भूपते कृत्वा ॥
गत्वोदयपुरमनुचितमेतदिति श्रावयाश्चकाराऽसौ ॥१॥
कार्ष्णगढी तद्राज्ञयासन्नप्रसवा तु मण्डिले दुर्गे ॥
गत्वा सुतं प्रसुषुवे मासद्वयजीवितो मृतः सोपि ॥२॥
जननी तदाऽतिदुःखात्कृष्णगढं गतवती जनकवसतिम् ॥
द्वे राज्ञ्यावेकादश११सह जग्मुरुदयपुरेऽपि च भुजिष्याः ॥३
अन्या चैका१ महिषी पितृभवने श्रूयतां कथा तस्याः ॥
राजसमुद्रसमीपे मोह्याख्ये भट्टियादवग्रामे ॥ ४ ॥
आऽमरसिंहाद्राणाः परिणीताः सर्व एव भट्ट्याणीः ॥
ताः सर्वाः सह जग्मुर्निजपतिमङ्के निवेश्य परिघिज्य ॥ ५
तत्रत्यभट्टितनयामत एव विवाह्य सोऽरिसिंहोऽपि ॥
न्यस्याऽत्रैव नवोढामित आयातो हतोऽजितेनैवम् ॥ ६ ॥

हुआ ॥ ६ और आदि से तीन सौ उनचास ३४९ मयूख हुए ॥

अमरचन्द, राणा के तीसरे दिन का कृत्य करके सेना सहित उदयपुर गया और उसने यह अनुचित सुनाया ॥१॥ उस राणा अरिसिंह की कृष्णगढवाली राणी समीप ही बालक जननेवाली (पूर्णगर्भा) थी जिसने मांडलगढ में जाकर पुत्र जना सो दो मास का होकर मरगया ॥ २ ॥ तब अत्यन्त दुःख से उस बालक की माता अपने पिता के घर कृष्णगढ गई, और उदयपुर में भी दो राणियां और ग्यारह पासवान स्त्रियें सती हुईं ॥ ३ ॥ एक राणी पिता के घर में सती हुई जिसकी कथा सुनो कि राजसमुद्र के समीप मोही नामक ग्राम भाटी शाखा के यादव क्षत्रियों का है ॥ ४ ॥ वहां राणा अमरसिंह से लेकर सभी राणा वहांके भाटियों की पुत्रियें ब्याहे थे सो सभी अपने अपने पतियों के साथ सतियां हुईं ॥ ५ ॥ इसीकारण से उस गामवाले भाटी की पुत्री के साथ यह राणा अरिसिंह भी विवाहा था सो विवाह करके उस नई दुलहन को वहीं छोडकर आया था और इसप्रकार अजितसिंह से मारागया

सा सह जगाम मोहग्राममवगतपतिमृत्युयादवी साध्वी ॥
निजकुलपरम्परायाा न निरस्ता सा तया कुरङ्गदृशा ॥ ७ ॥

॥ मत्तमयूरम् ॥

आगत्येत्थं सम्भरराजः स्वनिकेतं यद्यन्नीतं येन जनेनाऽरिहरिवम्
चेतोवेगं तस्य विना पट्टतुरंगं तस्मै तस्मै तत्तददादुव्यदुदारः ॥ ८ ॥
भेदोपायैर्दानविमिश्रैरथ कोटाद्वाराऽध्यचान्क्ष्माऽमितलोभी परिभिद्य
युद्धप्राक्तद्देशजिगीषोः पुनरासीद्बुंदीभर्त्तू रोगविशेषो विस्फोटः ॥९॥
शान्तेऽप्यस्मिन्दैववशादायुरणिम्ना भागेऽतीते पञ्च५मुहूर्त्ते दिवसस्य
पूर्णा१५ऽऽस्यायां काव्य६तिथौ माधवमासि त्यक्त्वा देहं स्वर्गामि ॥
यायाऽजितसिंहः ॥ १० ॥
श्रुत्वा राज्ञी तत्त्वथ शृङ्गारकुमारी१ शृंगाराढ्या द्रंगझलायाऽधिपपुत्री
दौहित्री चोम्मेदहरेः साहिपुरेशस्याऽन्यातन्वीभूपभुजिष्याशशिशोभा

था ॥ ६ ॥ वह पतिव्रता यादवी अपने पति की मृत्यु सुनकर मोही नामक ग्राम में सती हुई ऐसे उस मृगनयनी ने अपने कुल की परम्परा को नहीं छोडी ॥ ७ ॥ इसप्रकार रावराजा ने अपने स्थान पर आकर, जिस जिस मनुष्य ने अरिसिंह का जो जो धन लिया था, उस उस मनुष्य को, मन के वेगवाले एक खासा घोड़े के सिवाय, वह वह द्रव्य उस उदार ने दे दिया॥ ८ ॥ तिस पीछे पृथ्वी लेने का बडा भारी लोभी, अजितसिंह दान और भेद दोनों मिले हुए उपायों से कोटा के द्वारपालों को अपने में मिलाकर उस देश को जीतना चाहता था कि युद्ध से पहिले बुन्दी के पति अजितसिंह को शीतला (चेचक) का रोग हुआ ॥ ९ ॥ वह रोग भी शान्त होगया था परन्तु प्रारब्ध वश छोटी अवस्था में ही वैशाख शुक्ल पूर्णिमा शुक्र वार के दिन दस घड़ी दिन चढे अजितसिंह शरीर को छोडकर (‡)स्वर्ग गया ॥ १० ॥ तिसको सुनकर झलाय के पति की पुत्री और शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह की दोहिती शृंगार

(‡)इसवंशभास्कर मे रावराजा की मृत्यु चेचक (शीतला) के रोग से होना लिखा है इसमें हम नहीं कह सकते कि किसका लिखना सत्य है क्योंकि मेवाड़ के इतिहासकर्ता कविराज श्यामलदास और वंशभास्कर के कर्त्ता सूर्यमल्ल दोनों ही पूर्ण सत्यवक्ता थे जिनमें मिथ्यात्व का दोष किसी पर नहीं लगा सकते परन्तु निश्चय नहीं कि इस बात का सत्य इतिहास किसको मिला है ॥

व्योमाऽग्निभेन्दु१८३० प्रमिते विक्रमशाके पूर्णा१५शौक्रे६ऽहन्यव
शिष्टेऽन्तिमयामे ॥
चित्यारूढे कीलकराले हविराशे हुत्वा देहं ते हि सहापान्निजभर्त्रा
अनुष्टुप्युग्मविपुला ॥

पद्भ्यां गत्वाऽर्द्ध½गव्यूतिं केदारेश्वरसन्निधौ ॥
करवीरं महाघोरं ते २ भर्त्रा सह जग्मतुः ॥१३॥
तयोस्तु सहगामिन्योर्हाहाकारो महानभूत् ॥
अकाण्डमरणे राज्ञो रुरुदुः स्थावरा अपि ॥ १४ ॥
श्रीजित्तत्र महासत्त्वः सर्वा आश्वासयत्तदा ॥
प्रकृती रावराजास्ता निर्नाथा बालभूभुजः ॥१५ ॥
मनागुत्साहमानीताः श्रीजिता सविदा स्वया ॥
अभिमन्यौ मृते सेना यथा स्वा धर्मभूभृता ॥ १६ ॥

एक शृंगारकुमारी नामक राणी और दूसरी चन्द्रशोभा नामक पासवान जिन दोनों अपने पति अजितसिंह के साथ, विक्रम के संवत् अठारह सौ तीस १८३० में वैशाख सुदि पूर्णिमा शुक्रवार के दिन एक पहर दिन बाकी रहे चिता पर चढ़के अग्नि की कराल ज्वाला में अपने शरीरों को होम करके सती हुईं ॥११॥ १२ ॥ ये दोनों बुन्दी से एक कोस पर केदारेश्वर के समीप घोर श्मशान तक पति के साथ पैदल गईं ॥ १३ ॥ इस प्रकार राजा अजितसिंह के अचानक और बिना अवसर के मरने से और उन दोनों के सती होने पर बड़ा भारी हाहाकार हुआ और स्थावर पदार्थ भी रोये ॥१४॥ तब वहां पर राज्य की सम्पूर्ण प्रकृति (राज्य के अंग) को बड़े पराक्रमी श्रीजित (उम्मेदसिंह) ने विश्वास दिया और उस बालक राजा (विष्णुसिंह) की उस अनाथ प्रकृति को अपने ज्ञान से थोड़ा सा उत्साह दिया जैसे अभिमन्यु के मरने पर अपनी सेना को युधिष्ठिर ने, वृषसेन के मरने पर कर्ण ने, लक्ष्मण के मरने पर कुरुपति (दुर्योधन) ने, इन्द्रजित् और कुम्भकर्ण के मरने पर रावण ने, त्रिशिरा के मरने पर त्वष्टा ने, विरोचन के मरने पर प्रल्हाद ने, चित्रांगद के मरने पर धनुषधारी भीष्म ने आश्वासन किया तैसे वानप्रस्थ धर्म साधनेवाले श्रीजित् ने सम्पूर्ण परिजनों का आश्वासन किया और ये सब लोग राजा विष्णुसिंह की वृद्धि की इच्छा करनेवाले नगर में आये ॥ १७ ॥ १८ ॥

कर्णेन वृषसेनेऽस्ते कुरुभर्त्रेव लक्ष्मणे ॥
दशास्येनेव वा रूपस्वोरिंद्रजित्कुम्भकर्णयोः ॥ १७ ॥
त्वष्ट्रा त्रिशिरसि प्रेते प्रल्हादेन विरोचने॥
चित्राङ्गदे तथा पाराड्डौ गाङ्गेयेनेव धन्विना ॥ १८ ॥
वैखानसेन विश्वस्ताः सर्वे परिजनाः पुरम् ॥
प्राविशन्विष्णुसिंहस्य क्ष्माभृतो वृद्धिमाप्सवः ॥ १९ ॥
एवं दैववशाद्राजन्स युष्माकं पितामहः ॥
एकविंशे२१ प्रविष्टेऽब्दे जन्मतो विग्रहं जहौ ॥२०॥

दिष्टायत्तत्वाद्धारणारयाप्यसूना-
मल्पायुष्कत्वादीशितुर्भुन्दिकायाः ॥
वोढुर्भूभारं सर्वमब्दद्वयाऽन्त-
र्नायुः स्थानादेर्निर्म्मितिः क्वापि जाता ॥ २१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टम ८ राशावजि-तसिंहचरित्रे कृततृतीया३ ऽहकर्माऽमरचंद्रोदयपुरगमनप्रसूतमृतपुत्रा राणाभोगिनीकृष्णगढगमनतदितरभोगिन्येकादशको ११ दयपुराऽनलप्रविशनतदन्याभट्टयाणी १ पितृगृहज्वलनभस्मीभवनविस्फोट--

---

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ हे राजा रामसिंह ! इसप्रकार प्रारब्ध के वश से उस आपके पितामह (दादे) ने जन्म से इक्कीसवां वर्ष लगते ही शरीर छोडा ॥ २० ॥ प्राणों का धारण करना दैव (भाग्य) के आधीन होने से और सब भूमि के भार को उठानेवाले (अजितसिंह) के अल्पायु होने से इन दो वर्षों में स्थान आदि नहीं बने अर्थात् राज्याधिकार मिलने से दो वर्ष ही आयु रही जिसमें स्थान आदि का निर्माण नहीं हुआ ॥ २१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, अजितसिंह के चरित्र में, तीसरे दिन का कार्य करके अमरचन्द्र का उदयपुर जाना१ मराहुआ पुत्रपैदा करनेवाली राणा अरिसिंह की छोटी राणी का कृष्णगढ जाना२ राणा अरिसिंह की अन्य ग्यारह स्त्रियों का उदयपुर में सती होना३ भटियानी का पिता के घर में सती होना ४ शीतला (चेचक) के रोग से रावराजा अजितसिंह का

कामपरावराडऽजितसिंहदेहत्यजनसभुजिष्याचन्द्रशोभाराजाउत्तिराज्ञीसहगमनश्रीजितसर्वसमाऽऽश्वासन दशमो १० मयूख ॥ १० ॥

आदित ॥ ३५० ॥

समाप्त चेदमजितसिंहचरित्रम् ॥

शरीर छोड़ना ८ पासवान चन्द्रशोभा सहित राजावती राणी का सती होना ९ श्रीजित का सब को आश्वासन करने का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ ॥१०॥ और अजितसिंह चरित्र समाप्त होकर आदि से तीन सौ पचास ३५० मयूख हुए ॥

इति अजितसिंहचरित्र समाप्तम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथविष्णुसिंह२००।२चरित्रम् ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृता मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अजितसिंह१९९।२ वपु तजत इम, हुव बुंदिय हाकार ॥
विजय प्रपंच सु हुव विफल, आयु नियति अनुसार ॥ १ ॥
जो कछु दिन पुनि जीवतो, पहु तो अवसर पाइ ॥
कोटादिक छिति निकटकी, लेतो रवभुज लगाइ ॥ २ ॥
सु नृप उदधि सूरत्वको, सगुन बर्द्धक सोक ॥
सुक्र ६ वार बैसाख २ सित, पुरिसम १५ गो परलोक॥३॥
अजितसिंह१९९।२के पट्ट अब, विष्णुसिंह२००।२वय बाल॥
बैठायो श्रीजित१९८।४ बिदित, भाँवित विधि भूपाल॥ ४ ॥
सक नभ गुन धृति१८३० सुक्रमैं, ससि२एकादसि११सीर ॥
विष्णुसिंह२००।२ नव९पत्त वय, बुंदी पहु हुव वीर ॥५॥
पंच ५ घटिय मध्यान्ह पर, अधिक जात अभिसेक ॥
सद्धिय निज कुलरीति१ सह, विधि२महसुमह३ विवेक॥६॥
प्रथम पुरोहित१व्यास२ गुरु३, इन्ह त्रिक३किय अभिसेक॥
बलि गुरु३।१किय उपदेस विधि, कुसलानंद३।१हि एक॥७॥
तिम इन तीन३न किय तिलक, श्रीजित१।४रवकर बहोरि
माधानी२२।२६भगवंत११९।१।२।५पुनि, किन्न तिलक विधि जोरि८
चारन१ भट्ट२न भेट किय, पहिलै१ हय१।२ सिरुपाव २।३।४
भेट बहुरि सद्धिय भटन, अनियत सो क्रम भाव ॥ ९ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

---

१ भाग्य के अनुसार है ॥ १ ॥ २ समीप की भूमि ॥ २ ॥ ३ वीरता का समुद्र ॥ ३ ॥ ४ संस्कार विधि से॥४॥ ५ ज्येष्ठ मास, सोमवार ६ साढे चार मास की अवस्था में ७ बुन्दी का राजा हुआ ॥ ५ ॥ ८ श्रेष्ठ उत्सव॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

घोरे१सिरुपाव२ करे उंपदा तवहि तत्थ,
पहिलैं पितृव्यक बहादुर१९६।३।३श्रो सरदार१९९।४।४॥
पीछैं सिवासिंह५ पीछैं सग्रामादिसिंह पीछैं,
माधव१९३।२पिनोती भगवत७रीति अनुसार॥
डूंगरगढ८ बलवनि९ जज्जाउर१० श्रौंतरदा११,
खेरा१२ धोवरा१३के भये नजर बिधेयँ वार॥
कोटापति१४ हूके द्वै२ तुरग सिरुपाव द्वै२ ही,
श्राये भये भेट पुनि श्रैहैं वहो उपहोर॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

किय उपदा सचिवादिकन, पुनि दम्म१ रु सिरुपाव२ ॥
श्रधसौधे१न इम सद्धि श्रँग, सौधर२न आन्यों सांव ॥११॥
व्याह१ मंजार२ नृप विष्णु२००।२ के, भावी सब क्रम भाइ॥
कहत इकट्ठे जे जुदे, ठाँठाँ समव ठाइ ॥ १२ ॥
तँहँ तिय१ श्रष्ठ८ खवासि२ त्रय३, सतति श्रष्ठ८सुहात ॥
पच५ रु सुत इक१ पुत्रिका, जँहँ ए रानिन जात ॥ १३ ॥

॥ षट्पात् ॥

नगरी बीकानेर भूप श्रानद श्रर्क भव ॥
सज्जौं करि गजसिंह१ धरत तँहँ छत्र धरार्धव ॥
सुता तास सिसु सैंबय पद्मकुमरी२००।१ स नाम पहु ॥
व्याह्यो प्रथम१ विवाह विसैरि, धन१ पट१ भूखन३ बहु ॥
बालहि भई सु१ पुनि कालबस, बलि दूजी२ जहाँनि बरि॥

१ नजर २ फाका ३ माधवसिंह के पाणाला ४ उचित समय ५ सामग्री ॥ १० ॥ ६ नीचे के महलों में ७ पर्वत ऊपर के महलों मे ८ बचे को ॥ ११ ॥ ९ सन्तान १० आगे आनेवाले समय में ॥ १२ ॥ ११ इनमे तो रानियों से हुए ॥ १३ ॥ १२ गोद छिपाहुआ १३ नाम से १४ भूपति १५ विष्णुसिंह के समान अवस्थावाली १६ देकर

रानी बिदग्ध आनी रमन कमन करोलिय किति करि१४

॥ रोला ॥

तुर समपाल तनूज पालमानिक्य आदिर पहु,
नगर करोलिय नाह ललित ताकी कन्या लहु ॥
अमृतकुमारि२००१२ अभिधान व्याह दूजेर नृप व्याहिय,
अतुल त्याग बसु अप्पि अतुल जस रस अवगाहिय ॥१५॥

॥ घनाक्षरी ॥

कोटापति मंत्री झल्ल जालमं सुता सु तीजी३,
नानता नगर व्याही अजब कुमारि२००१३ नाम ॥
सोपुर नगर गोर भूपति किसोर सुता,
सुरहि कुमारि२००१४ चोथी४ रानी बरी अभिराम ॥
रानी भटियानी लाडकुमरि२००१५ मँगाइ डोला,
पंचमी५ बिबाही बीर भोज सुता बपु बाम ॥
डोला आनि कन्याको प्रयाग सिंह रानाउत,
सूरजकुमारि२००१६ सो बिबाही छठे उपयाम ॥ १६ ॥

॥ चूडालदोहा ॥

व्याही सप्तम७ व्याह बलि, डगडोलीस गुमान आइ इत ॥
आश्रय पाइ अधीसको, बिनत ठानि संबंध हेरि हित ॥ १७ ॥
नंदकुमरि२००१७ तस नंदिनी, बिधि संजुत सीसोदनीहु बरि ॥
नृप रानी आनी निलय, सप्तमी७ सु कुंडीहि व्याह करि॥१८॥

॥ घनाक्षरी ॥

कृष्णागढ ढूंग भूप अष्टम८ बिबाह बरि,

१चतुर २ पति ने ३ सुन्दर कीर्ति करके ॥ १४ ॥४शीघ्र ५ माणिक्यपाल ६ लघु ७ नाम ॥ १५ ॥ ८ झाला जालमसिंह की पुत्री ९ सुन्दर १० वाम अंग ११ विवाह में ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

कीनी वाम अगज प्रताप नृपकी कुमारि ॥
स अमानकुमरि२००१८ स नाम प्रभु माता सती,
आनी वरि अष्टमी८हु रानी रीति अनुसारि ॥
कुंछि खनि जाकी रत्न दीपक प्रकास करैं,
आंपसे उदार अहो टोटो रूप तम टारि ॥
पात्र१के सनेह२के दसा३के परतन्त्रनपै,
भासकं सवन भासैं धर्म१ नीति२ जस धारि ॥ १९ ॥
अष्टम८ विवाह जिहिं लग्न नृप कीनों एह,
सोही लग्न साधि तव व्याह कीनों मर्म तात ॥
प्रभुकी सवित्री१ प्रभु कविकी सवित्री२ पुनि,
आई इक१ काल ऊढी पाइ किति अवदात ॥
सुद्धकुल आठ८ ए विवाह भये सभरके,
जिनमें छ७तोकें सुत पच५ सुता इक जात ॥
दूजी२ सुत जेठ१२ इन्द्रसिंह२०१११ रु अनुज२०११२ द्वैहो२,
बाल्यवैमें कुमर मरे ए विधिके विघात ॥ २० ॥

॥ चूडालदोहा ॥

इंद्रसिंह२०१११को जो अनुज, सूचित इह जहौनि२ जन्यौ सुत॥
नामहु तास न परि सक्यो, सिसुतम सो हुव देह हीन हुत २१
क्रम तीजो३ इम नृपतिकै, तनय भयो बलदेवसिंह२०११३ तह॥

१रामसिंह की माता २जिसकी ध्यान रूपी कुक्ष में ३आप (रामसिंह) जैसे दीपक रूपी रत्न ४ टोटा रूपी अन्धेरे को टालनेवाले, यह दीपक तो पात्र ५ तेल और ६ बाटी (बत्ती) के परतन्त्र है, परन्तु यह रामसिंह रूपी दीपक धर्म, नीति और यश को धारण करनेवाला सब को ७ प्रकाश करनेवाला स्वतन्त्र दीपता है "यहां परन्तु शब्द के योग से स्वतन्त्रता का ग्रहण है" ॥ १९ ॥ ८ मेरे (सूर्यमल्ल) के पिता न ९ रामसिंह की माता और १० कवि (सूर्यमल्ल) की माता ११ वियाही हुई एक ही समय में आई, उज्वल कीर्ति पाई १२ बालक ॥ २० ॥ १३ उत्पन्न बालक ही शीघ्र मरगया ॥ २१ ॥

जो चोथी४ रानी जनित, अनसु भयो सिसुभावमैंहि यह॥२२॥
पट्ट अष्टम८ रानी प्रसव, अप्प भयो प्रभु राम२०१४ बंसइन ॥
मितिक्रम अत्र चतुर्थ४मत, दीपित किय जिन नाम रत्ति दिन२३
पंचम५सुत सप्तमि७प्रसव, हुव गोपाल२०१५सु पथ्व पथिक हुव॥
समुझावन तिहिं प्रभु सु नय, धारी तँह प्रतिकूल बन्यौं ध्रुव२४
आसापूरनि अंबिका, मंदिर ढिग कर्णा१दि भटन मिलि ॥
दिढ्ढिकैंद तब तिहिं दयो, खग्गा१दिक सब छिन्नि नर्म खिलि२५
तास इवेली भेजि तिहिं, पुनि सूचिय अब लेहु बंस पथ ॥
कुंलपतनी आदर करहु, करहु न गनिका संग निंद्य कथ॥२६॥
दिय प्रबोध प्रभु इम दुलभ, तदपि मूढ प्रतिकूल भाव तकि ॥
करि मेहन छेदन कुमति, छीवें रह्यो अपकित्ति सुरा छकि ।२७।

॥ दोहा ॥

भई सुता इक१ भूपकै, तीजी३ औरस ताम ॥
सोहु मरी बिधिबस सिसुहि, न परि सक्यो तस नाम ।२८।

॥ षट्पात् ॥

सुंदरसोभा१ सुघररा़य२ —— क्रमसरंग३ सह ॥
कमन खवासिनकोहु अवनिपतिके हुव त्रिक३ यह ॥
तीजी३ बिधिकरि तत्थ लह्यो सुत बिनयसिंह१ लहु ॥
पातुरिगन तिम प्रथित बिबिध पट्ट हुव नृपके बहु ॥
जिनमाँहिं नयनसोभा१ जनित रूपकुमरि१।२ कन्या रुचिर
संतान अष्ट८ लहि इन सहित समह तप्यो नृप सबन सिर २९

१ प्राणरहित ॥ २२ ॥ २ आप (रामसिंह) ३ वंश का पति, इस क्रम से चौथा है ४रात्रि और दिनको प्रकाशित किया ॥ २३ ॥ ५बुरे मार्ग का चलनेवाला हुआ ६ आपने श्रेष्ठ नीति धारण की ॥ २४ ॥७कर्णसिंह आदिदनजरकैद९हसी करके प्रफुल्लित होकर ॥२५॥१०कुलस्त्री का॥२६॥११लिंग को काटकर अपकीर्ति रूप मद्य में छककर१२मस्त रहा॥२७॥१३तहां ॥२८॥१४सुन्दर१५ उत्सव सहित॥२९॥

काका नृपको कथित वीर अभिधान बहादुर१९९।३
तास तनय बलवंत२००।२ प्रथित थित थान गोठपुर ॥
ज्ञानकुमरि२००।१ अभिधान इक१ परन्यों भटयानिय ॥
अत्यहि होला भ्रात स्याम तनया जग जानिय ॥
तस प्रसव तीन३ प्रकटे सुतहि जे धौंकल२०१।१फतमल्ल२०१।२जह
तिन्ह अनुज भोम२०१।३तीजो३ तनय आयतिं होहि प्रमत्त यह।३०।

॥ दोहा ॥

भटियानी सालम सुता, दोलतकुमरि२००।१ सनाम ॥
बलवंता२००।१नुज एक१ इम, व्याह्यो दलपति२००।३वाम।३१।
सिंधु भयो सूरत्वको, इक१ नारीव्रत एह ॥
रन सहाय खिन्निन खिरयो, तिल तिल दलपति२००।३ देह।३२।
सेरसिंह२००।५ याके अनुज, लहि होला इक१ नारि ॥
सुता वरी खुसहालकी, जो आनदकुमारि२००।१ ॥ ३३ ॥
हुव ताके सुत दुव२ सहज, जे जय२०१।१ विजय२०१।२सनाम॥
जामिंज बीकानेरके, रठोरन प्रभु राम२०१।१ ॥ ३४ ॥
अनुज बहादुरसिंह१९९।३को, सूचित जो सरदार१९९।४ ॥
दग दुधारी थान तस, दुव० हुव कथित कुमार ॥३५॥
व्याही ईश्वरिसिंह२००।१ तँहँ, जेठे१ सुत चउ४ नारि ॥
अजब कवधज अगजाँ, प्रथम१ गुलावकुमारि२००।१ ॥ ३६ ॥
दूजी२ जादवमेघजा, फतेकुमरि२००।२ निज कीन ॥
तीजी३ ता२००।३ही नाम करि, चालुक नाथ कुलीन ॥३७॥
इनमैं ईश्वरिसिंह२००।१के, जानी भूत प्रजा न ॥

---

१ गाठड़ा पुर २ भविष्यत् काल (आगे आनेवाले समय) में ॥ ३० ॥ ३बख्तसिंह का छोटा भाई ॥३१॥४वीरता का समुद्र ॥३२॥३३॥ ५ साथ जन्मेहुए (जोड़ला) ६ भानेज ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ७अजयसिंह राठोड़ की पुत्री ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ८ सन्तान हुई नहीं जानी

जान्यौँ तनय खवासि जनु, इक१ लछमन१ अभिधान।३८।
ईश्वर२००।१ को भ्राता अनुजें, देवीसिंह२००।२ द्वितीय२ ॥
जो व्याह्यो इक१ जादवी, धरि मह सुंदर धीय ॥ ३९ ॥
बिष्णुकुमारि२००।१ नाम जु बिदित, जात प्रजा चउ४जास॥
संभू२०१।१अरु सिवदान२०१।२सुत,ए जेठ१।२दुव२ऑस ४०
कन्या गोवर्द्धनकुमरि१, क्रम गोविंदकुमारि२ ॥
मरी अनूढा ए उभय२, अप्पन बिधि अनुसारि ॥ ४१ ॥
इक१ खवासि भव अंगजा, इनकी अनुजा आहि ॥
परिनाई तुम राम२०१।४ प्रभु, दंग जोधपुर जाहि ॥ ४२ ॥
वृद्धिकुमरि१ अभिधान जो, सो परन्यौँ सरदार ॥
अत्थहि आय खवासि भव, नृप तखतेस कुमार ॥ ४३ ॥

॥ दोहा ॥

संभू२०१।१तैं जेठो सहज, नाम तास —— २०१।१ ॥
सोहु कुमर दुव२ बरस रहि, भयो कालके साथ ॥ ४४ ॥
पंचम५संकरसिंह२०१।५ पुनि, सो कनिष्ट सिवदान२०१।२॥
कछुक दिननके अंत करि, सोहु भयो अवसानँ ॥ ४५ ॥
लावक गाँम इलेसकी, सुहुक्मजा वह नारि ॥
परनी संभूसिंह२०१।१ प्रथ, मानहु चंद्रकुमारि१ ॥ ४६ ॥
सोलंखी रतनेसजा तखतकुमारि२ अभिधान ॥
बरि आनी संभू२०१।१ बहुरि, दूजी२ पुर दुबलान ॥ ४७ ॥
पुनि व्याही हम्मीरपुर, बिष्णुसिंह बपुजात ॥
आनंदादिकुमारि३ इम, सुरतानोत सुनात ॥ ४८ ॥

॥ ३८ ॥ १ छोटा भाई ॥ ३९ ॥ २ हुए ॥ ४० ॥ ३ बिना बिवाही ॥ ४१ ॥ ४२ ॥
॥४३ ॥ ४४ ॥ ४ अन्त ॥ ४५ ॥ ५ लावा ग्राम के भूपति की ६ प्रसिद्ध ॥ ४६ ॥
॥ ४७ ॥ ७ पुत्री ॥ ४८ ॥

भूप भ्रात पुर कापरनि, पति सामत२००१ प्रवीन ॥
ब्याह तीन३ विरचे विदित, तनय लहे तहँ तीन३ ॥ ४९ ॥
पतनी यह परन्यौं प्रथम१ रूपनगर रठोरि१ ॥
दूजी२ राजावत्ति२ इम, वहहु वरी पटजोरि ॥ ५० ॥
पुनि तीजी३ सिवराजपुर, पति कवध चदेल ॥
दुहिता तस परन्यौं दुलह, मजु सवय लहि मेल ॥ ५१ ॥
तीजी३के जेठो१ तनय, हुव वलदेव२०११ सनाम ॥
दूजी२के कृष्ण२०१२रु विरुद२०१३, तनय भये दुव३ताम
ब्याह१ प्रजा२ भावी विदित, सूचे इह क्रमसग ॥
वर्तमानमैं देहु वलि, अव अर्थ श्रवन उमग ॥ ५३ ॥
सूचित१८३० सक बुदी सुपहु, विष्णुसिंह२००१२ सिसुवेस॥
जनक छत्र धरि सीस जो, इम हुव भुव अखिलेस ॥ ५४ ॥
इत पहिलैं नृप अजित१९१२नैं, सीम अमरगढ माँहि ॥
अरिसिंहहिं परलोक दिय, विल्लहटा१ दिय नाँहिं ॥ ५५ ॥
सुत जेठे१ अरिसिंहके, ठहे अधिपति हम्मीर१ ॥
सधिया हँपँ पठये सचिव, बुदिय दव्वन वीर ॥ ५६ ॥
ज्योंही वेघम आदि जे, मिल्ले कँपटसिसु मध्य ॥
दक्खिनको भर देन चहि, वछे तिनकँहँ वेध्य ॥ ५७ ॥
भीम सलूमरि नाहको, भ्राता अर्जुन१ नाम ॥
अपर वनिक२ ए दुव२ गये, माहाजे कटक मुकाम ॥५८॥
सध्या माहजि तिंहिं समय, पूव करि वस प्राय ॥
आवतहो अजमेर इह, इत पिक्खन ठँपय१ आय२ ॥ ५९ ॥

॥४६॥५०॥ १ चन्द्रछा राठोड ॥ ५१ ॥ २ तहाँ ॥ ५२ ॥ ३ सुनने में कान दा ॥ ५३ ॥ ४ बुन्दी की सब भूमि का पति ॥ ५४ ॥ ५ बीलहटा ग्राम नहीं दिया ॥ ५५ ॥ ६ सिन्धिया के पास ॥ ५६ ॥ ७ रत्नसिंह मे ८ भार ९ मारनेयोग्य (मारनेपाहे) ॥ ५७ ॥ १० दूसरा ॥५८॥ ११ चरण और आमद देखने को ॥५९॥

तँहँ वकील ए रानके, पहुँचे विनय प्रसारि ॥
मोरयो इत कछु दम्म दे, वेग्रम मंडन रारि ॥६०॥
दरकुंचन तब नैनपुर, आयो माहजि तत्त ॥
सचिव मुख्य सुखराम पँहँ, पठये बुंदिय पत्त ॥ ६१ ॥
बिल्लहटा१ बुंदीस लिय, अनुचित करि अति गर्व ॥
मारयो पुनि अरिसिंहकों, यामैं ओगुन सर्व ॥ ६२ ॥
तुरगादिक अरिसिंहको, आयो बिभव१ जितोक ॥
बिल्लहटा२ जुत देहु अब उनको है वह ओक ॥ ६३ ॥
धाइभ्रात सुखराम तब, नैपयट्टु समय निहारि ॥
बिल्लहटा१ जुत रान हय२, दिन्नों विहित विचारि ॥ ६४ ॥
कोटापति तनु त्याग किय, इत गुमान२०४१२ लहिखेद ॥
पट्ट सु पायो तस तनय, उचितरीति उम्मेद२०५१ ॥ ६५ ॥
झल्ला जालमसिंह तिंहिं, मुख्य सचिव किय तत्थ ॥
राज्यकाज प्रकट१ रु पिहित२, सब सौंपे तस हत्थ ॥६६॥
असह रोग उपदंस जुत, पहिलैं इक१ पंननारि ॥
नंटन निपुन कोटानगर, आई लोभ विचारि ॥ ६७ ॥
नृप गुमान२०४१ अग्गैं नची, भाव१हाव२मह भास ॥
बिगरयो मन कोटेसको, न लखैं लोलुप नास ॥ ६८ ॥
मन्न्यौं नहिं गनिका सु मत, तदपि बुलाइ निकेत ॥
लागि कुकर्म उपदंसैं लाहि, इम हुव अब सु अचेत ॥ ६९ ॥
नृप गुमान२०४१को जो अनुज, सो तँहँ नाम सरूप२०४१३

॥ ६० ॥ १ नैणवा पुर में ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ २ घोडा आदि ३ स्थान ॥ ६३ ॥ ४ नीति चतुर ने ५ राणा का घोडा ॥ ६४ ॥ ६ शरीर छोड़ा ॥ ६५ ॥ प्रसिद्ध और ७ गुप्त ॥ ६६ ॥ ८ आतसक गरमी सहित ९ वेश्या १० नृत्य में ॥ ६७ ॥ ११अत्यन्त लोभी (काम का लोभी) ॥६८॥ १२ वेश्या ने राजा का वह मत स्वीकार नहीं किया १३ तोभी अपने स्थान पर बुलाकर १४ गरमी का रोग लिया

भेज्यो जालम फल्ल मानि, भूप होहु हनि भूप ॥ ७० ॥
तब नृप मारयो वधि तिहिं, नीच गरल उपनाइ ॥
भूरिमायु दमनक भयो, सचिव फल्ल सचाइ ॥ ७१ ॥
रानिनपँहँ पठई अग्ग्ज, इत जालम लिखि एस ॥
तुमरे देवर नृप हन्यौं, बन्यौं चहत वसुधेस ॥ ७२ ॥
सुनि रानिन किय सूचना, जसकर्णाहिं निज जानि ॥
तकि कछु विधि धायेय तुम, मारहु तिंहिं खल मानि॥७३॥
सचिव मुख्य जसकर्ण सुनि, इम रानिन ओएस ॥
उँपवन माँहिं सरूप२०४।२ वह, दुष्ट हन्यौं कहि द्वेस ॥७४॥
अब उम्मेद२०५।१ गुमान२०४।२, सुत कोटपपति हुव ताहि
इक१ दिवस इक्कत थौ, जालम कहिय सराहि ॥ ७५ ॥
अहो अखिल प्रभुके अनुग, अरु प्रभु मानन ईस ॥
पै अब इक१ अनुचित प्रबल, सचिव कुपित निज सीस७६
मोसों यह जसकर्ण मिलि, बदत गूढ तजि वेंट्ट ॥
मारैं नृप उम्मेद२०५।१कौं, अप्पैं अपरहिं पट्ट ॥ ७७ ॥
जिहिं सठ काका रावरे, मारे बिदित बकारि ॥

॥ ६९ ॥ १ राजा गुमानसिंह को मारकर तुम राजा होजाओ ॥ ७० ॥ २ मल्लमपट्टी में जहर देकर ३ यहाँ काला जालमसिंह दमनक नामक गीदड़ के समान हुआ "पञ्चतन्त्र और हितोपदेश के सुहृद्भेद में यह कथा है कि सञ्जीवक नामक बैल और पिंगलक नामक सिंह की बढ़ती हुई मित्रता को फाड़कर, दमनक नामक गीदड़ ने इनमें विरोध बढ़ाकर पिंगलक से सञ्जीवक को मरवाया, और इनके विरोध का आपने लाभ उठाया" ॥ ७१ ॥ ४ भूपति होना चाहता है ॥ ७२ ॥ ५ जसकरन नामक धायभाई को अपना जानकर कहा कि हे धायभाई ॥ ७३ ॥ ६ आदेश (आज्ञा) ७ बाग में उस [illegible] ८ को दुष्ट कहकर मारा ॥ ७४ ॥ ८ जालमसिंह ने कहा ॥ ७५ ॥ ९ सब के सेवक हैं परन्तु आश्चर्य है कि १० आप के ऊपर सचिव जसकरन [illegible] है ॥ ७६ ॥ स्वामिधर्म का ११ मार्ग छोड़कर १२ दूसरे को पाट देवें ॥ ७७ ॥

न गिनैं सो *उचितानुचित, तुल्लि रह्यो तरवारि ॥७८॥
बढ़त यहहि नृप मति बदलि, सजि भट कछुक स्वतंत्र ॥
कुजस करन त्यौं जसकरन, मारन मंडिप मंत्र ॥७९॥
तकि खिन जालम झल्ल तिम, ²ह्वै जसकरन सहाय ॥
कही तुमहिं मारन कुमति, यह नृप करत उपाय ॥८०॥
यातैं तुम निकसहु अबहि, पुनि हम ओसर पाइ ॥
नृपको कोप निवारिकैं, लैहैं बिदित बुलाइ ॥ ८१ ॥
इम संजीवक१ बैल यह२, निकसायो डर डारि ॥
भयो झल्ल१ दमनक भेरुज२, पिंगल१ नृपहिं निहारि॥८२॥
माहजि लोभ अधीन इत, सेना अतुल सजाइ ॥
रान वकीलनके कहैं, लग्गे बेघम जाइ ॥ ८३ ॥
सजाइ१ मजाइ२ अन्त्यानुप्रासः ॥
सक नभ गुन धृति१८३०मित ⁶समा, मलिन२प्रौष्ठपद१मास॥
बेघम संध्या बिंटिकैं, तोपन डारयो त्रास ॥ ८४ ॥
सुनि यह इत बुंदीसके, बहुत सज्ज करि बीर ॥
श्रीजित कहि सुखरामसौं, भेजे बेघम भीर ॥ ८५ ॥

॥ राजसवतिका ॥

पटु राउत देव करयो पहिलैं निज ⁹तातपैं जो उपकार नयो ॥
जन बुंदीके१ आप निबाहे जथा दृढ चित्त ¹⁰स्वकीय२न कष्ट दयो
अपनैं घर जासौं अहो पट¹¹१ अन्न२को ¹²भोगह अल्पहि अर्घ भयो॥

* उचित और अनुचित नहीं गिनता ॥ ७८ ॥ १ जसकरन को मारने का मंत्र रचा ॥ ७९ ॥ २ समय देखकर ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ३ संजीवक नामक बैल के अनुसार जसकरन को निकलाया ४ वह झाला जालमसिंह दमनक नामक गीदड़ हुआ ५ पिंगलक नामक-सिंह के समान राजा उम्मेदसिंह को देखकर ॥८२॥८३॥ ६ सम्वत् ७ भादवा वदि ॥८४॥८५॥ ८ चतुर राउत देवसिंह ने ९ अपने पिता बुधसिंह पर १० अपने लोगों को कष्ट दिया ११ वस्त्र १२ थोड़े मूल्य का

यह श्रीजित [1]हीहित चित्त इहाँ प्रतिकारी बरूथें उहाँ पठयो।८६।

॥ दोहा ॥

पाइ मेघ[1] बेघम पतिहु, भट इतके निज मीर ॥
सजि गढ पुत्र प्रताप[2] सह, बिरच्यो सगर बीर ॥ ८७ ॥
रन सकट बहुदिन रह्यो, खिरन लगे गढ खड ॥
जालम कोटा सचिव जम्र, दे बिच ओढ्यो दड ॥८८॥
दम्म लक्ख खट६००००० देन करि, हीन वित्त तँहँ होइ॥
गढ सिंगोली१ रत्नगढ२, दये परगनाँ दोउ६ ॥८९॥
सेध्याके अवलगं सुपे, रहत उभय२ प्रभु रामँ२०१४ ॥
बली अरिन दव्ये बहुरि, धाम न आये धाम ॥९०॥
पुर वेघम इम हीन परि, दे देम सूचित देस ॥
मेटि बिरोध रु किय मुदित, ब्रुदिय किति बिसेस ॥ ९१ ॥
श्रीजित इत ब्रुदीसके, वीरन सबन बुलाइ ॥
सूंधा है उंत्तानसय, प्रभु तुमगे विधिपाइ ॥ ९२ ॥
सुखरामहिं किय निज सचिव, अजितसिंघ१९९१ तुम ईस॥
तिहिं मन्नहु प्रभु तुल्य तुम, सासन निबहहु सीस ॥९३॥
धीर भवानीसिंघ१ बलि, माधानी२२।२६ भगवत२ ॥
दुव२ तुम याके पास दुव२, मगमैं चलहु सुमत ॥ ९४ ॥
रैनु बहादुरसिंघ१९९।२सौं, अक्खिय बहुरि उदग्ग ॥
राज पित्तृ०पक तुम रहहु, मगमैं याके अग्ग ॥९५॥

१सखा से हित चिन्तकर श्रीजित् ने २उपकार का पलटा देनेवाली सेना बेघम भेजी ॥ ८६ ॥ ३ सवाई मेघसिंह ॥ ८७ ॥ ४ दंड भेला (स्वीकार किया) ॥ ८८ ॥ ५ धनहीन ॥ ८९ ॥ ६ इस समय भी ७ हे स्वामी रामसिंह ८ स्थान पीछे बेघम के घर में नहीं आये ॥ ९० ॥ ९ इस में खुषमा किये हुए देश देकर ॥ ९१ ॥१०सीधा सोनेवाला (ऊंचे हाथ पैर करके सोनेवाला) अर्थात् अत्यन्त बालक ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ११ अपने पुत्र १२हे राजा के काका ॥९५॥

मिलत न जैसो मह्तपन, करत राज्यको काम ॥
तैसो लहि धात्रेय तिम, सचिव बढ्यो सुखराम ॥९६॥
प्रतिहित जालम झल्ल इत, बुंदीपतिहिं *लिखान ॥
माधानी२१२६ भगवंतकों, पुनि कोटा लैजान ॥ ९७ ॥
दुव२ सामंत रु सचिव दुव२, इक१ मरहट्ट अगाल ॥
कोटा रक्खिय माहजि जु, लैन अब्द कर लाल ॥ ९८ ॥
सो पंचम५ जालम सुहद, ए पठये कहि एह ॥
कोटा१ बुंदिय२ नृपनकै, संधहु परम सनेह ॥९९॥
नाथ१नाम गैंता नगर, ईसजु हिरदादत्त२०१२४ ॥
दूजो२ भटवारेस भट, संभूर इँदसलुत्त२५१२९ ॥१००॥
देवकरन१३ भूसुर सचिव, अरु कायत्थ निहाल२१४ ॥
इम पंचम ५ मरहट्ठ यह, सुहृद झल्लको लाल ॥ १०१ ॥
मिले सचिव सुखरामसौं, ए सब बुंदिय आइ ॥
पुनि लग्गे श्रीजित पयन, विनँत सनेह बढाइ ॥ १०२ ॥
करिये इत १ उत२ एक१ता, सूचत इम हित सोधि ॥
स्वीकृत किय श्रीजित सुन सु, पटु सुखराम प्रबोधि॥१०३॥
भगवंतहिं पुनि तिन भनिय, कोटा पठवन कज्ज ॥
सिक्खदैन तिहिं श्रीजितहु, सामग्री किय सज्ज ॥ १०४ ॥
दंती एक१ तुरंग दुव२, सिचय१ बिभूखन सत्थ ॥
दैन सिक्ख इत्यादि दै, ताहि विचारिय तत्थ ॥ १०५ ॥
सो कृतघ्न भगवंत सुनि, छन्नैं परिकर सज्जि ॥

॥ ९६ ॥ * दिखाने को ॥ ९७ ॥ १ डेढा २ लाला नामक मरहठे को सालाना खिराज लेने को कोटा में रक्खा ॥ ९८ ॥ ३ जालमसिंह के चार मित्र पहिले थे और पांचवां यह हुआ ॥ ९९ ॥ ४ भटवाड़ा का पति ५ इन्द्रसालोत ॥१००॥ ६ ब्राह्मण ॥ १०१ ॥ ७ विशेष नम्र ॥ १०२ ॥ ८ समझाकर ॥१०३॥१०४॥ ९ हाथी १० वस्त्र ॥ १०५ ॥ ११ किये उपकार को भूलनेवाला १२ परगह

हित दिखान कोटेसकौं, गयो पेरोचहि भज्जि ॥ १०६ ॥
श्रीजित सूचित क्यौं कितव, अनुचित किन्नी एह ॥
इहाँ विभव जो तस अखिल, गिनि भेजहु तस गेह ॥१०७॥
सस्यं फलित सांकोरके, करजुत तबहि प्रकास ॥
रह्यो विभव भगवतको, पठयो सब तिहिं पास ॥ १०८ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

आयो जबही तैं सही तैं सु गिनि मुख्य आप,
राख्यो भगवत पास श्रीजित सुहृद रीति ॥
काज निज राज्यके जनाइ सब ताकौं करे,
पायो काहुनैं न सो पटा दिय निपुन नीति ॥
साठ्यकरि बुन्दी१ कोटा२ एक१ता करन समैं,
गाइ कछु गूढ हाड बुंदी१की कुजस गति ॥
कोटा२ कौं दिखाइ निज पच्छको अहो कुटिल,
भजि भगवत गयो चोग्लौं भजत भीति ॥ १०९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ विष्णुसिंहचरित्रे विष्णुसिंहविवाहसन्ततिवर्णनसन्ध्याकथनविलहटाग्रामादिराणवैभवप्रत्यर्पणधात्रीभ्रातृजसकर्णघात्यस्वरूपसिंहाविपदानमृताग्रजकोटापतिगुमानसिंहात्मजोम्मेदसिंहपट्टासादनझालाजालमसिं

---

१ पीठ पीछे भगकर ॥ १०६ ॥ २ छली ॥ १०७ ॥ ३ पकी हुई खेती ॥ १०८ ॥
४ हृदय के साथ ५ मित्र की भांति ६ शठता (मूर्खता) ॥ १०९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके अष्टमराशिमें, विष्णुसिंह के चरित्र में, विष्णुसिंह के विवाह और सन्तान आदि का कथन १ सिन्धिया के कहने से बीलहटा ग्राम आदि राणा के वैभव को पीछा देना कोटा के पति गुमानसिंह का धायभाई जसकरण से मारेजाने वाले अपने छोटे भाई सरूपसिंह से अहर से माराजाकर उसके पुत्र उम्मेदसिंह का पाट बैठना ३ झाला जालमसिंह का कोटा के राजा और मन्त्री में दमनक नामा गीदड़ के समान भेद कराना ४ सिंधिया का राणा हम्मीरसिंह के कथन से बेघम से युद्धकरके बुंदमें

हकोटापतितन्मन्त्रिमध्यदमनकशृगालसमभेदकरणाराणाहम्मीर-सिंहकथनकृतबेघमयुद्धसन्ध्यान्तद्वयग्रहणकोटाबुन्दीपरस्परैक्यता भवनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥ आदितः ॥ ३५१ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

सुनिये इत पहिले समय, कोटा अधिप किसोर१९७५ ॥
जेठे दुवर सुत हारि जिन्हँ, राज्य१ न दिय दिय रोर२ ॥१॥
किय तीजो३सुत उचित कहि, राज्य विभागी राम१९८१३॥
तास अग्रजन संततिन, किय अब विग्रह काम ॥ २ ॥

॥ रोला ॥

अब माधानीर२१२६ देवसिंह१ रविमल्ल ज्येष्ठ१ सुत ॥
कुल किसोरसिंघुत्त५ जुरन रन धारि दर्प्प जुत ॥
कोटापति सन पलटि, रह्यो आटोनि नगर यह ॥
तापर जालम तमकि आजि जित्तन किय आग्रह ॥ ३ ॥
मूँसामदन१ स नाम रक्खि इक जोध फिरंगिय ॥
तीससहँस३००००मित ताहि द्रम्म मासिक ध्रुव करि दिय॥
याकहँ पुर आटोनि भेजि अक्खिय अरि भंजहु ॥
आइ सम्मुख अंकुरहिं गैल ते पर तिम गंजहु ॥ ४ ॥
जाइ फिरंगिय जत्थ तोप वल्लन पुर त्रासिय ॥
सह कुटुंब वह देवसिंह निस अद्ध निकासिय ॥
सक नभ गुन धृति१८३०समय आइ तिम तिहिं अनियारा॥
चिंतिय बिबिध प्रपंच दैन जालम उर आरा ॥५॥

दो परगने लेना और कोटा बुन्दी में परस्पर एकता होने का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ ॥ १ ॥ और आदि से तीन सौ इक्कावन ३५१ मयूख हुए ॥

१ भय दिया ॥ १ ॥ २ रामसिंह को ३ बड़े भाइयों की सन्तान ने ॥ २ ॥ ४युद्ध जीतने को हठ किया ॥ ३ ॥ ५ सन्मुख आकर खड़े होवे तो ॥४॥ ६करोत ॥५॥

जालम उरे वह जत्थ भयो पत्थर सम भासत ॥
भेदक आरा आदि कुंठ हुव विफल प्रकासत ॥
धात्रेय सु जसकर्ण प्रथम गय दुग जोधपुर ॥
तिहिं बुलाइ इहिं तत्थ अधम बंधिय जुग३ उद्धुर ॥ ६ ॥
जतन चल्यो नन जत्थ जाइ उभय२ हि तव जैपुर ॥
चुडाउत्तन चाहि रहे तिन्हँ वस धारक धुर ॥
तिन्ह प्रति अक्खिय तत्थ मेरि हमकौं हरोलपर ॥
करहु अप्प निज काम हनहु परपच्छे चुडहर ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

चुडाउत्तन पहहि चढि, पाइ दुवउ हि निज पच्छ ॥
चिंत्यो अब कूरम निचय, दलिहैं हम दंमदच्छ ॥ ८ ॥
सक ससि गुन वृति१८३१इत आसित२,भोग तीज३तिथि भद्द६
रठऊरि श्रीजित रमनि, छोरयो वपु गद छद्द ॥९॥
तदनतर बुन्दीसको, सचिव मुख्य सुखराम ॥
कतिप८ पुरिग्राम१५ दिन गयो, पट्टनि केसव धाम ॥१०॥
पट्टनि वट तीजो३ हुतो, सप्पाके तिहिं काल ॥
तातैं झल्ल सखाहु तहँ, हो मरहट्ठ सु लाल ॥ ११ ॥
सो सम्मुह सुखरामकैं, इक१ कोस लग आइ ॥
लेगो पट्टनि समय लहि, परम प्रमोद दिखाइ ॥ १२ ॥
असित२ मग्गसिर९ दोजि२, दिन तदनु मिलन हित तत्त ॥
जालम झल्लहु प्रीति जुत, पुर कोटा सन पत्त ॥ १३ ॥

---

१ हृदय २ भेदने (काटने) वाले करोत आदि मोठे (तीक्ष्णता रहित) होगये ३ दृढ जुग बांधा अथवा निर्भय होकर जुग बांधा ॥ ६ ॥ ४ धुर को धारण करनेवाले देवगढ के चुंडावत के वश में जाकर वह देवीसिंह रहा ५ शत्रुओं को ॥७॥ ६ युद्ध देने में चतुर कछवाहों के समूह से ॥८॥ ७ भादवा ८ श्रीजित की स्त्री ने ९ रोग होकर शरीर छोडा ॥ ९ ॥ १० ॥११॥१२॥१० मृगशिर वदि॥१३॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि सम्मुह सुखराम१ लाल मरहट्ट२उभय२ गय ॥
मिलि पुटभेदन प्रबिसि आइ केसव हरि आलय ॥
सपथ करन तँहँ सचिव दुव२ हि लै कर तुलसीदल ॥
लगे परसपर दैन वदत दोउ२ न इक१ मन१ वल२ ॥
तजि संक बैरिसल्लोत२६।३ तँहँ खेरापति भारत कहिय ॥
तुम भरुज फेरु दमनक तरह जुग२बंधहु तजि छल जिय॥१४॥

॥ दोहा ॥

रानि१नसौं रु सुरूप२०४।३।२सौं, जसकर्ण३ हु सों जेम ॥
मिलि मारे नृप४ सह निखिल, तुम न मिलहु इह तेम ॥१५॥
आक्खिय सुनि जालम अनखि, समुझि करत हम सौंह ॥
क्यों फुरकावत तुम कुटिल, भीरुनकी गति भौंह ॥१६॥
इम अगहन९ वदि२ दोजि२ दिन, दुव२सचिवन हित रक्खि ॥
करे सपथ एकत्व१ के, दें केसव विच सक्खि ॥१७॥

॥ षट्पात् ॥

गयो तदनु कोटेस सचिव जालम१कोटा चढि ॥
दूजे२ दिन सुखराम२ गयो तत्थहि विनोद वढि ॥
द्रुत उततैं भूदेव देव१ मरहट्ठ लाल२ दुव२ ॥
ग्राम दोसपुर अवधि आत सुनि समुह आतहुव ॥
सक इंदुअग्गि धृति१८३१गत समय तिथि चउत्थि४अगहन९असित२
डेरा दिवाइ उपवन निकट हुलासि दिखायउ परम हित॥१८॥

॥ दोहा ॥

बहु वर फल१ मिष्टान्न२ बहु, सतदुव२००रुप्पय३सत्थ ॥

---

१ पुर में प्रवेश करके २ विष्णु के मंदिर में ३ सौगन करने को ४ दमनक नाम गीदड़ की तरह ॥ १४ ॥ ५ सब ॥ १५ ॥ ६ सौगन ॥ १६ ॥ ७ एकता के ॥ १७ ॥ ८ बाग के पास ॥ १८ ॥

मुक्ख्य सचिवकी रीति मित, पठये डेरन तत्थ ॥ १९ ॥
*परिखद गो तिथि पचमिय५, सुखराम सु धात्रेय ॥
महाराव उम्मेद२०५।१सों, मिलन भयो हितमेय ॥२०॥
जे आदरके सुभट जँहँ, हे बुदिय सत्र सग ॥
तेहु मिले कोटेससों, अपिहित बिहित उमग ॥२१॥
छठी६ दिन परिखद बहुरि, गयो साचिव सुखराम ॥
जुद्ध गज१न मल्ल२न जहाँ, पिक्खे कौतुक काम ॥ २२ ॥
सुखरामहिं पुनि सिक्ख दिय, सप्तमि ७ दिन कोटेस ॥
सिरुपेच१ रु सिरुपाव२ सह, हय३ दिय खास सुदेस ॥ २३ ॥
बहुरि झल्ल१ मरहट्ठ२ के, आलय क्रम सन आइ ॥
दोउ२नतैं सिरुपाव१।२ हय३।४, प्रीति रीति मित पाइ ॥२४॥
पुनि सुखराम मुकाम किय, नगर नाँनता आनि ॥
तस सगहि पठयो तिलक, महाराव हित मानि ॥ २५ ॥
वहहि लाल१ मरहट्ठ अरु, पुर गैंतापति नाथ २ ॥
लैं टीका सुखरामसों, मिले चलन सब साथ ॥ २६ ॥
दुव२ तुरग सिरुपाव दुव२, इक१ गज भूखन एक१ ॥
बुन्दी आइ निवेदि यह, इन किय प्रनति अनेक ॥ २७ ॥
नाथ१ हिं लाल२हिं नाम प्रति, इक१इक१हय१।२सिरुपाय३।४
दे बुन्दियपति सिक्ख दिय, सचिवन कथन स्वभाव ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

याही सक इक गुन धृति१८३१अतर, परयो मार लखनेऊ ऊपर
टेक अमोघ रुहिल्लन टोला, दुखित करयो सु आसिफुद्दोला २९
तब नवाब समुचित लखि आयक, किय अग्रेजस्वकीय सहायक

॥१९॥*सभा में१स्नेह के साथ ॥२०॥ २ प्रसिद्ध और उचित उमंग से ॥२१॥२२॥ ३ श्रेष्ठ हींसनेवाला घोड़ा ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ४ जिन का हठ खाली नहीं जावै ऐसे रुहिल्लों के समूह ने ॥ २९ ॥ ५ उचित रक्षक देखकर

जब नवाब दिय मुख्य जिलाका, इनहिं बनारस नगर इलाका३०
लखनेऊ पति प्रथम दब्बि लिय, ढंग कासिका सो अब इम दिय
पट्टु कंपनी देस वह पायो, अमल बढत तबतें इत आयो ॥ ३१ ॥
इहि नवाब या१८३१ ही सकमैं इत, फैजाबाद रहनसौं ताजि हित
पुर लखनेऊ रहन समुझि प्रिय,करि थिति सोहि राजधानी किय३२
दोहा–चरन द्वारकाधीसके, इत परसन चहुवान ॥
याही सक अगहन१ असित२, श्रीजित किय प्रस्थान॥३३॥
दरकुंचन अजमेरु१ ठहे, अरु श्रीपुष्कर२ न्हाइ ॥
अग्ग चलत मरुईसके, सचिवन अटके आइ ॥ ३४ ॥
करी अरज रठोर नृप, रक्खत मिलन उमंग ॥
सुनि श्रीजित गो जोधपुर३, सत्थ अलप लै संग ॥ ३५ ॥
मरुप आइ सम्मुह मिलि रु, पुर लैगो पधराइ ॥
रहि कछु दिन पुनि सिक्ख लहि, पहुँच्यो सत्थहिं आइ ३६
तदनंतर इंकत सजव, दिय संचोर४मिलान ॥
धरनधिर५ दरसन कियउ, पुनि अविरत प्रस्थान ॥ ३७ ॥
॥ षट्पात् ॥
बावगाम६ अभिधान नगर पहुँचिय पुनि श्रीजित ॥
ताके नृप चहुवान नाम गजसिंघ ठानि हित ॥
महमानी बिधि मंडि मन्नि सम्मद्द सुचिमानस ॥
करे नजर हय दोइ२ ते न रक्खे वैखानस३॥
झंझाम७ होइ दरकुंच तिम झाडेस्वर८ विश्राम लिय ॥
बलिँ ईस जजर्न बरनाँ९बिरचि तीकड़१०जाइ मिलान दिय॥३८॥

१ अपने जिले का॥३०॥ २ काशी नगर ॥ ३१ ॥३२॥३३॥ ३ मारवाड़ के राजा के ॥३४॥३५॥३६॥ ४ निरन्तर गमन किया ॥ ३७ ॥ ५ उज्वल मन से हर्ष रचा ६ वानप्रस्थ (श्रीजित्) ने ७ फिर ८ महादेव का पूजन करने को ॥ ३८ ॥

तीकढ१० सन कारि कुच बढ्यो प्रातीच्यं मग्ग चलि ॥
नगर मोरवी ११ जात मिल्यो जद्दव सम्मुह चलि ॥
जाडेचा नृप वग्घसिंह रक्खन निस हठ किय ॥
तदपि रह्यो नहिं तत्थ जानि मग मिजल अल्प जिय ॥
कछु दूर वग्घ१ पहुँचाइकैं कति हय१ आयुध२ भेट किय
लै इक्क सत्ति तिनमाँहिसों जाइ टकार१२मिलान दिय।३९
चढि टकार१२ सन चलत इक जद्दव मग अतर ॥
राजकोट१३ पुर नाह वस जाडेच्च धुरधर ॥
नाम कुभ किय नजर आइ सम्मुह सु न रक्खिय ॥
तदनु वीरपुर१४जाइ सिंविर रचना हित अक्खिय ॥
रहि रत्ति वहुरि हकिय सजव इक१ मुकाम मग मध्य करि
रैवत१५गिरीस तीरथ रुचिर परसन पत्तो प्रीति धरि ॥४०॥

॥ दोहा ॥

जूनागढ१५ डेरा विरचि, अप्प चढयो गिरि आइ ॥
रैवत१५ के सब पुन्यथल, पिक्खे सम्मद पाइ ॥ ४१ ॥
हनुमतधारा१ होइ द्रुत, अवा२ दरसन कीन ॥
परसी ओघडपादुका३, पुनि गिरि चढत प्रवीन ॥ ४२ ॥
वहुरि दत्त आत्रेयके, कुंड४ आचंमि१ रु न्हाइ२ ॥
परसी ताकी पादुका५, अचर्ल शृग सिर जाइ ॥ ४३ ॥
पाडव छली ६ आइकैं, तँहँ धन गुप्त चढाइ ॥
न्हाइ अपरस्मृतिकुंड७ पुनि, पत्तो डेरन आइ ॥ ४४ ॥
जूनागढ१५ सन चढि सजव, दरकुचन चहुवान ॥
सरित गोमती१६ जाइ किय, माघ११ अमा३० दिन न्हान४१

१पश्चिम दिशा के मार्ग २मिजल छोटी जानकर ३परली ॥१६॥४डेरा करने के कक्षा ५ पर्वतों का पति (पर्वतराज) ॥ ४० ॥ १ हर्ष पाकर ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ आचमन करके ८ पर्वत के शिखर पर जाकर ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

श्राद्ध सहित उपवास करि, डेरा तत्थहि रक्खि ॥
ज्योतिर्लिंग शिव१ जजनं किय, अप्प जाइ हित अक्खि४६
सनि७ वासर जुत माघ११सित१, तिथि चउत्थि४वट तत्थ ॥
पूजि नागनाथेस२ पुनि, आयो डेरन अत्थ ॥ ४७ ॥
तिथि सप्तमि७ कुज३ दिन तदनु, रामहड़ा१७ पुर जाइ ॥
दूजे२दिन चढि पोत किय, सागर१८ गमन सुभाइ ॥४८॥
मज्जन संखुद्धार१९ करि, जात निसा इक१ जाम ॥
द्वारकेस हरि २० दरस किय, किय तँहँ च्यारि४मुक्काम ४९
रवि१जुत द्वादसि१२माघ११सित१, पुनि चढि नाव पधारि॥
गोपीपल्वल१ न्हान हित, पहुँच्यो विहित विचारि ॥ ५० ॥
डेरन दिस साँसि२दिन मुरयो, घटिय पंच५ निस जात ॥
काबाभिध तँहँ वन्य जन, घल्लत हुव मग घात ॥ ५१ ॥
गहन दुरपासन तुंगं गिरि, बिच कोंपथ अति घोर ॥
श्रीजित सन काबन सरिसें, रचिय तत्थ रन रोर ॥ ५२ ॥

॥ षट्पात् ॥

लरि इच्छित कर लैन बिसम मम मंतुंकार वनि ॥
काबनके अधिराज रचिय घमसान नगम्मानि१ ॥
अदिन चढि दुहुँ२ ओर तुपक१ तीर२ सु झुकि झारत ॥
हंकिय न गिनंत हड्ड६१ कलह सुभटन हलकारत ॥
गोलि१न दुरसार फुट्टत तुरग बान२बिसंत बिल उरग जिम ॥
चोटन सिपाह घोटन गिरत पारावंत लोटन प्रतिम ॥५३॥

१पूजन किया ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ २ मंगलवार ३ नाव में चढकर ॥ ४८ ॥ ४ स्नान ५पहर रात जाने पर ॥ ४९ ॥ ६ आदित्य वार सहित ॥ ५० ॥ ७ सोमवार के दिन ८ काबा नामक ९ वन मनुष्य ॥ ५१ ॥ १० दोनों ओर ऊचा पर्वत ११ बीच में बुरा मार्ग १२ क्रोध सहित १३ भयंकर युद्ध रचा ॥ ५२ ॥ १४ अपराध करनेवाला १५ नगम्मानि नामक काबों (लुटेरों) के पति ने १६ उनको नहीं गिनकर १७ घुसते हैं १८सर्प के समान १९घोड़े २०कबूतर लोटने के सदृश॥५३॥

अग्गैं श्रीजित अहर१ बहुरि सत्रुन रन रुक्कियर२ ॥
अग्गैं श्रावन५ श्राम१ झरन उत्तर४।७ घन झुक्कियर२ ॥
अग्गैं मारुति१ जाववान बहुरि सु बिरुदायउ२ ॥
अग्गैं वनपति सेरभ१ बहुरि अल घलिय लगायउ२ ॥
अग्गैं सुरेस बिक्रम अतुल१ कर दधीचिकीकस लयो२ ॥
इकल वराह सिंहन असह१ बलि कुंकुर गन घिंटयो२ ॥५४॥
जदपि क्रोध१ लोभा२दि तजे बुंदीपुर सगहि ॥
सहसा तदपि मिलाइ दयो जुज्झन बिधि जगहि ॥
कावन अनुचित कहिय पुरय जत्ता फल१ पावहु ॥
मत्तो२ द्वै सब हमहिं अदल तरु होइ पलावहु ॥
इहिं भैंसभ दुष्ट करि दुव२अनिय सैलन चढि दुहुँ२ओर सन
मग द्रोनि[11] चलत श्रीजित मुदित रन दुव२ दिस लग्गे करन॥५५॥
गिरि दंतक डगमगत टोल टोलन लगि टक्कर ॥
तुट्टत लघु तरु१ तंबेर२ रुड ढकत भरि डक्कर ॥
आनि मिलत कति अरिन बहुरि भज्जत चढि पब्बय ॥
पैंति लगत तिन्ह पिट्ठि जाइ मारत धारत जय ॥
उत्तरि दुर्ओर अद्रिन रुहिर द्रवित द्रोनि बट्ट सु बहत ॥
पाउस प्रभाव जनु वुट्ठि जल चलि खालन तालनैं चहत।५६।
अति साहस लखि अरिन तुपक श्रीजित अब झल्लिय ॥

आगे ही १ श्रावण मास था और फिर उत्तर दिशा का मेघ झुका आगे ही २ हनूमान था और फिर जांबवान ने बिरुदाया आगे ही ३केसरीसिंह था और ४फिर पिच्छे मे डंक लगाया पहिले ही अतुल पराक्रमवाला५इंद्र था और फिर ६ हाथ में वज्र लिया ७ आगे ही सिंहों को असह होनेवाला एकल सूवर था और फिर कुत्तों ने घेरा ॥ ५४ ॥ ८यात्रा के ९ मात्रा (धन) १० बिना पत्तों का वृक्ष (नग्न) होकर भागो ११ हठ १२पर्वतों पर १३ दोनों पर्वतों की छेरी (नके) के मार्ग में ॥ ५५ ॥ १४ पर्वत के दांतों रूपी उभरे हुए पत्थर १५ टूठ १६ तर वारों से १७ पैदल १८ रुधिर १९ तालावों में जाना चाहता है ॥ ५६ ॥

दै पञ्चय पर दिट्ठि[1] घात मालिक[2] सिर घल्लिय ॥
सेसैं[3] नगम्मनि१ आयु तास मित्रन गुटिका हुव ॥
भट तस ढिग हुव२ भेदि भक्खि कालिकं[4] प्रविसी भुव ॥
पहुँचे तिर दह्ह६१ हैवर पपन रप हत विमत निररतं रटि ॥
मनु मद्य मत्त आये उभय२ आधोरँन इभसन उलटि ॥५७॥

॥ दोहा ॥

इक्क१ ओर कावन अधिप, हुतो नगम्मनि१ तत्थ ॥
सो श्रीजित सय लखि सफल, भीरु भज्यो सह सत्थ॥५८॥
तास पितृव्यक२ अपर२ दिस, सज्ज हुतो रन सीर ॥
गोलिरन ओलरन गंव्य वह२, वरस्यो घन२ विधि वीर५९
भट चालुक खदिरोंट तँहँ, निज हय गिग्त निहारि ॥
कावन पति काका हन्यो, रचि दलेल अति रारि ॥ ६० ॥

॥ षट्पात् ॥

कावनपति काका सु हुतो गिरि सिर दक्खिन२।३ दिस ॥
ताकैं चालुक तुपक लगी नव९ घटिय जात निस ॥
आइ पर्यो सु अचेत उलटि अंधभुम्मि अधोमुख ॥
मनु पट्टी सन सलपि नटी उलटी रयकी रुख ॥
सिर तास कट्टि मारकं[15] सुभट कंदुंक[16] कौतुक करन लिय ॥
इम दह्ह६१माघ११सित१मदन अह१३कावन सन रन विजय कियद६

॥ गीतिः ॥

कावन पतिको काका१ मरतहि खिलँ मंद भीरु भज्जि गये ॥

१दृष्टि २ कावों के मालिक पर ३ उस नगम्मनि की आयु बाकी थी जिससे कलेजा खाकर ५ हाडा के घोड़े के पैरों में ६ मारे ऐसा कहकर ७ ... ॥ ५७ ॥ ८ हाथों को सफल देखकर ॥ ५८ ॥ ९ उसका काका १० ... और ११ प्रत्यञ्चा (यहां लक्षणा से बाण जानने चाहिये) ॥ ५९ ॥ १२ खैरा नामक देश सम्बन्धी (खैराड़ा) ॥ ६० ॥ १३ नीचे की भूमि पर १४ वेग १५मारनेवाले श्रेष्ठ वीर ने १६गैंद का खेल करने को ॥ ६१ ॥ १७बाकी के

श्रीजित जस रन एका, पूरन ससि बिस्तरी जय पताका ॥६२॥
*नृध दस१० †सागस मारे, करि घायल बीस२० पाकुल बिहारे
तिन ‡कुणपनके न्यारे, मस्तक लै सग डेरन पधारे ॥ ६३ ॥
हुलसि बिरचि रन हितको, ध्रमराभिध१ सिलहदार श्रीजितको
इक१ मरयो वह हतको, आहीर उदार समर समुचितको॥६४॥
बाकी लुत्थि२हु आनी, स्वतुरग कुसहालचद सोमानी ॥
श्रीजितको सो मानी, प्रधानहो किंत्ति यों तिहिं मतानी ॥६५॥
तीन३ मरे इत१के हप, चालुक्य दलेल१ सिवजि२ इनके है२।
तीजो३ तथा जथा रप, गगाधर१।३ अग्निहोत्रि भूसुरको ॥६६॥
सत्त७सुभट गोलि१नसौं, सायक२सौं इक्क१।८इक्क१।९असिबरसौं
ए९घायल हुव तिनसौं, श्रीजित लै सब सम्हारि सिबिर चल्यो६७
बीट नगर पति यह सुनि, भूप फतेसिंह कुसल पुच्छनकों ॥
दूत पठाइ रु पुनि पुनि, सूँचो लेजाहु मो भट सहाई ॥६८॥
सो नहि मन्नि रु श्रीजित, अक्खिय तुमरे कहाँ कहाँ रहिहैं ॥
तदनतर सत्थ सहित, रामहडा पुर मुकाम आइ परचो ॥६९॥
तँहँ बीटपुर नृपतिके, भट रामहडेस आइ रु इम भनी॥
मस्तक तस्कर तंतिकै, देहु व तुमरे न कामहे तासौं ॥७०॥
सुनि यह बिन्नति श्रीजित, दुष्टनके छिन्न सीस दस१० दिन्ने ॥
रामहडा१ पतिसौं हित, करि इम प्रतिपथ अब क्रम्यो प्राची ७१

॥ दोहा ॥

रामहडा१ पुर व्है चल्यो, इम निज आश्रम ओर ॥
कावन पुनि मग रन करत, रचिय अमगल गेरें ॥७२॥

॥ ६१ ॥ * युद्ध में † अपराधी ‡ मुरदों के ॥ ६३ ॥ १ अमरा नामका ॥ ६४ ॥ २ लोथ (मृतक शरीर) ३ आदर पाया हुआ ४ कैसाई ॥ ६५ ॥ ५ इसीप्रकार बेगवाला ६ ब्राह्मण का ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ७ कही ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ८ रामहडा के पति ने ९चोरों की पंक्ति के ॥ ७० ॥ १०पूर्व दिशा को चला ॥७१॥ ११भय।७२॥

दुव२ घायल्ल इत१के भये, इक१उतको धुर धाइ ॥
आर३ चउद्दसि१४ माघ११सित, रहिय गोमती२ आइ ॥७३॥
बुध४ पुरिणम१५ दूजे२ दिवस, रक्खिय तत्थ मिलान ॥
भयउ चंद्र उपराग तँहँ, दये उचित सब दान ॥७४॥
वह तत्थहि काबन अधिप, नम्र नगम्मनि१ आइ ॥
श्रीजित अग्गैं जोरि सय[2], परयो पाय खिनपाइ[3] ॥ ७५ ॥
अक्खी यह कुल पूरुखन, बिरचि अग्ग रन बाद ॥
अर्जुनसे लुट्टे इहाँ, तबतैं यह मरजाद ॥ ७६ ॥
अब सरनागत रावरे, इह सुनि उचित बिचारि ॥
सत१०० मुद्रा१ सिरुपाव २ सह, दिय श्रीजित हित धारि७७
नदी गोमती२ साँ नदनु, बाबाके मठ३ आइ ॥
क्रमि दामोदर दरस१ किय, रान४ मुकाम रचाइ ॥ ७८ ॥
श्राद्ध पिंड तारक५बिरचि, दान निगम बिधि दत्त ॥
जद्दव नृप जाड़ेचके, नयेनगर ६ पुनि पत्त ॥७९॥

पादाकुलकम् ॥

जाम जैनन जाड़ेचा जादव, नयेनगर६ जसकर्ण१ धराधव॥
सम्मुह नाइसक्यो सु बालबय, साचिव आइ इक १ कोस जोरि सँय ॥ ८० ॥
तनि आदर लैगो पुर वह तब, महारूप१ अभिधान मुसाहब॥
रत्ति१रहि सु मानी महमानी, मानी बहुरि न आग्रह मानी८१
महमानी१ ग्रहमानी२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥
जामि तत्थ जसकर्ण जनककी, साधन संजम रीति सनककी
पुब्ब समय याको हुव सगपन, सहग जोधपुर रामसिंह सन८२

१ मंगलवार ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ २ हाथ जोड़कर ३ समय पाकर ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ४ वंश ५ भूपति ६ नहीं आ सका ७ हाथ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८ बहिन ९ सनक मुनि के समान योग साधती थी ॥ ८२ ॥

मूढ बहुरि तिहिं राज्य गुमायो, पति और न यानैं तउ पायो ॥
निज भ्राता१ दिनैं जदपि निहोरिय, तउ न अन्य व्याहन मन मोरिय८३
तब गतदेस मूढ वह हो तँहँ, पठयो तस डोला हि राम पँहँ ॥
जुहि इहिं व्याहि तथा जड जान्यौं, पुनि लै मत यह धर्म प्रमान्यौं८४
पति अपमान इहाँ मन पावत, सोदर घर ईम हमहिं सुहावत ॥
यह कहि नयेनगर वह आई, पति संगति बहुरि न तिहिं पाई॥८५॥
तिहिं महमानी प्रसभ तनायो, मन्त्री नहिं पै दुख न मनायो ॥
कच्छी हय जसकर्ण भेट किय, रचत प्रसभ तिनमैं इक१रक्खिय८६
नयेनगर६ बल्लभकुल नामी, है नत्थेस नाम गोस्वामी ॥
करि तिन्ह दरसन१ भेट २ जथा क्रम, दूजे२ दिनहि चढयो सु
पर्रिक्रम ॥ ८७ ॥
वदि २ तँपरय १२ नवमी ९ जिहिं बासर, पहुँच्यो पुर मोरवी ७
धर्म पर ॥
तास अधिप सूच्यो सु वग्घ तँहँ, करत भयो हठ पुनि भोजन
कँहँ ॥ ८८ ॥
महमानी श्रीजित सु न मन्निय, लर्घामैं चउ४ काचपात्र लिय ॥
दरकुचन वदि२ त्रयोदसी१३दिन, आइ गह्यो मकाम८व्रतिन हेन८९

घनाक्षरी ॥

जातघेर याही पुर कीनोंही मुकाम जब,
चोरनैं चोर्‌यो पल्लीवाल बहुरेको बैल१ ॥
श्रीजित करायो सब रीति अब ताको सोध,
जनन जनाई गहि राख्यो तिहिं कूटगैल ॥

१मूर्ख २उस स्त्री के भाई आदि ने ॥८३॥३गये हुए देशवाले४रामसिंह के पास ८४ ॥ १ इस कारण भाई का घर सुहाता है ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ६ शत्रुओं को दब देनेवाला ॥८७॥७फाल्गुन ॥ ८८ ॥८भेट (नजराने) में ६ व्रत (नियम) वालों में सूर्य ॥ ८९ ॥ १० जाते समय ११ पर्वतों के संगम के मार्ग (नक्के) में

ऐसैं है वह अजहु चलाइ मन नामी चोर,
जामिक[1] जमाइ फ़ार[2] फेरहु परिधि फैल ॥
दाव रावरेमैं परिजाइजो असह दुष्ट,
खूटिजाइ तोतो धनिकनको इतहु खैल[3] ॥ ९० ॥
सिबिरके जामिक जमाये गूढ श्रीजितनैं,
चित्तहिं चलाइ पैठो रातिमैं वहहि चोर ॥
चालुक दलेला[4] खदिराट[5] गुटिका चलाइ,
मारि सुहि लीनौं महा चौरनको सिरमोर ॥
लीनौं सिर काटि सो दिखायो पुरलोकनकौं,
आइ तिन सूची यह सोही दुष्ट नहिं ओर ॥
पीछैं दरकुंच धरनीधर९ पधारि पंथ,
व्है संचोर१० सहर जरूर पहुँचे जालोर११ ॥ ९१ ॥
दूजे२दिन लागो मधु[6]१ मासको असित२ आदि१,
मानौं इम जालोर११हि होला१५।१फुल्लडोल१।२ मह ॥
जालउर११ तैं चढि द्वितीया२ दिन धारि ध्रुव,
अध्वनीन[7] पल्ली१२ पुर आये अप्रबुद्ध[8] अह ॥
भेजे तहँ पत्र जोधपुरतैं बिजय[9] भूप,
गेही[10] व्है पधारो गेह थानि इहाँ पानिग्रहें[11] ॥
मानी सो न मानी[12] दरकुंच मधु[13] मेचक२की,
एकादसी११ कीनीं आइ पुष्कर१३ समस्त सह ।९२।
दरसन१ न्हान२ दान३ तत्थ कारि ताही दिन,

१पहरायतों के २ समूह का घेरा ३ दुःख मिटजावै ॥ ९० ॥ ४ डेरे के पहरायत ५ खैराड़े सोलंखी ने गोली चलाकर ॥ ९१ ॥ ६ चैत मास के वदि पक्ष का प्रथम दिन ७ यह मार्ग चलनेवाला पालीपुर में ८ नहीं जानेहुए दिन में ९ राजा विजयसिंह ने १०वानप्रस्थ से गृहस्थी होकर ११ यहां विवाह ठान (कर) के घर जाओ १२ उस मानवाले ने यह बात नहीं मानी १३ चैत्र वदि ॥ ९२॥

मग्ग कछु लंघि मकड़ावली१४ करि मुकाम ॥
दतधृति१८३२ संवतके चैत१ सित१ आदि१ द्यौंस,
आये इम आपुनैं बरोदिया१५ नगर नाम ॥
रामनवमी ९ के दिन बुन्दी१६ आइ रच रहि,
धारी रहिबेकी ठानि केदारेस ढिग धाम ॥
बाग१ कुंड२ महल बड़े जवें बनाइबेकों,
दीनों आप सासन हजारन खरचि दाम ॥९३॥

आर्यागीति ॥

इहि विधि पच्छिम३१५वारी, जात्रा करि बानप्रस्थई पनमें जानैं ॥
वसुधातल विस्तारी, निर्मल निज कित्ति चंद्रिका इक१ न्यारी ९४

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ विष्णुसिंहचरित्रे भाटोणकोटाकटकपराजितकोटानिष्कासितकोटाबन्धुदेवीसिंहधात्रीभ्रातृजसकर्णसहितजयपुरगमनश्रीजिद्राज्ञीराष्ट्रकूटीतनुत्यजनकोटाबुन्दीमन्त्र्यैकमत्यकरणरुहिल्लभीतलखनऊपतिनव्वाबस्वसहायांगरेजकाशीपुरप्रदानत्यक्तफैजाबादलखनऊस्वराजधानीविधानकृतद्वारकाधीशदर्शनश्रीजित् (उम्मेदसिंह) बुन्दीप्रत्यागमन द्वितीयो मयूख ॥ २ ॥ आदित ॥ ३५२ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

---

१ शीघ्र ॥ ९३ ॥ ९४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में विष्णुसिंह के चरित्र में कोटा के राजधी, देवसिंह का भाटोंण में कोटा की सेना से हारकर, कोटा से निकालेहुए अधाकर्ण धायभाई सहित जयपुर जाना १ श्रीजित की स्त्री राठोड़ी का शरीर छोड़ना और कोटा व बुन्दी के मंत्रियों का एकता करना २ रुहेलों से घबराकर अपने सहायक अंगरेजों को लखनऊ के नवाब का, काशी पुर देना और फैजाबाद को छोड़कर लखनऊ को अपनी राजधानी करना ३ श्रीजित (उम्मेदसिंह) का द्वारकाधीश के दर्शन करके पीछे बुन्दी में आने का दूसरा २ मयूख समाप्त हुआ॥२॥ और आदि से तीनसौ बावन ३५२ मयूख हुए॥

॥ दोहा ॥

जत्ता[1] श्रीजित करन जब, पच्छिम३।५ किय प्रस्थान ॥
तब बुंदी पठयो तिलक, मरुपति विजय समान ॥१॥
इक१ मनि भूखन इक्क१ इभ, दुव२ हय दुव२ सिरुपाव ॥
इम टीका पठयो इहाँ, समतौ[2] रीति स्वभाव ॥२॥
तिलक निवेद्यो आइ तिन, विष्णुसिंह२००।२ नृप अग्ग ॥
दिन्नी हय१ सिरुपावदै, उनको सिक्ख उदग्ग ॥३॥
[3]भूत कथा कछु भाखियत, [4]पहु अब पाइ प्रसंग ॥
जिम उदंत मेवार हुव, सुनिये तिम हित संग ॥४॥

॥ राजसवत्तिका ॥

अग्गैं उदैपुर रान संग्रामकै धात्री तनै[5] नगराज मुसाहब ॥
केसरीसिंह सलूमरि सासक जो भन्यौ सो भट मुख्य हुतो जब
बिग्रह ता१के तथा नगराज२कै बोलनमैं बढतो परिगो तब ॥
मूँछनवारी सिवा[6] कहतो इम राउतकौं नगराज मर्यो अब।५।
राउतको करि कानि तथापि कह्यो तस मानि कर्यो हित रानतो
सोमरिबे लग्यो केसरीसिंह पटुत्व[8] न पुत्रनमैं पहिचानतो ॥
गो जसवंतहु देवगढेस जहाँ हित पुच्छन संभव जानतो ॥
केसरीसिंह कह्यो तब ताहि रह्यो अब रानकै तूही प्रधानतो६
पाटव[9] नाँ ममपुत्रनमैं तिन मूढनकी अब लाजहै तोकर[10] ॥
सो सुनिकै बिसवास बढाइ घरीक रह्यो जसवंत चल्यो घर ॥
पंथमैं भाख्यो नहै निज पूत भरोचित यौं अब देत हमैं भर[11] ॥

१ यात्रा ॥ १ ॥ २ बराबर की रीति से ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ हे राजा रामसिंह ३ अब कुछ कथा गयेहुए समय की कहता हूं ॥ ४ ॥ ५ धाय का पुत्र ६ मूंछोंवाली स्यालनी (गीदड़नी) ॥ ५ ॥ ७ अदब ८ पुत्रों में चतुर पना नहीं देखता था (अपने पुत्रों को चतुर नहीं जानता था) ॥ ६ ॥ ९ चतुरपन १० इन मूर्खों की लज्जा तुम्हारे हाथ में है ११ अपने पुत्रों का भरोसा नहीं है इस कारण हमको

सग०हे राउतके चेर सो सुनि दोरि कही निजस्वामिसों सत्वर॥७॥
मानित सेसहो राउन पै सुनि दर्प्पको बेन कह्यो जसवत सु॥
थंट्टसों ताकहँ पीछो बुलाइ धंय्यो नहिं तोवस मो सुत धी वसु ॥
जेठो१ कुबेर१ छमाजुत पैं लहुरो सबसों यह लाल अहो अँसु ॥
रावरे लौन विधां रचिहै पुनि धीजिहोतो अब छीजिहो ज्यों पसु॥८॥
राउत वेन ए राउतके सुनि आयो निगूढ़ बिरोध सम्हारिकैं ॥
राउत अत अनतर रान कुबेर गिन्यों तिहिठाँ सतकारिकैं ॥
भो अरिसिंह उहाँ जब भूप करयो जसवत सुमती बिचारिकैं॥
केहरि सूँनुनसों यों कह्यो तुम कट्टहु काल स्वगेह सिधारिकैं॥९॥
साँझ हवेली सलूमरिकी यह सासन राउत१ रान२को आवत॥
राति सो काटी दुखी रहिकैं कहिकैं खल सो नृपको वहिकावत॥
लैं सब भ्रातन प्रातही लाल महा ठिग ड्योढी गो सोक मचावत॥
थोसैं दई नृपकों अरजी क्रमिहै हम छुँ प्रभुके पय पावत ॥१०॥
सब्बके जीवनको नहि सोक पै जैहैं अहो प्रभुकों लखि जीवत ॥
बच्चसे ए सुनि लालके बेन वढयो सवके मन धोका चढयो बत॥
सोदर माँहि बुलाये सबे मिलबे लगी सीख तँहैं छलके मत॥
स्यालें सो मारिच चूरन लेस छुवाइकैं नैनन रोयो वृथा छत ॥११॥
पूँछें घनी हिचकी भरि पापं कह्यो अब दासतो जावत गेहकों ॥

मार देता है १ राउत केसरिसिंह के चाकर ॥ ७ ॥ २ केसरिसिंह के प्राण कुछ ही बाकी थे तोभी ३ मार्ग में से जसवन्तसिंह को ४ कहा ५ हे बुद्धिमान मेरे पुत्र तुम्हारे भरोसे पर नहीं हैं ६ परंतु यह छोटा पुत्र लालसिंह ७तुम्हारे प्राण लेने की आश्चर्य युक्त ८ विधि रचेगा ॥ ८ ॥ ९ जसवन्तसिंह, केसरिसिंह के ये वचन सुनकर निश्चय ही गुप्त वैर विचार कर आया १० केसरिसिंह के मरे पीछे ११ केसरिसिंह के पुत्र से ॥ ९ ॥ १२ जसवन्तसिंह और महाराणा का हुक्म १३ बड़ा ठग लालसिंह १४ स्वामी के चरण छू (स्पर्श) कर ॥ १० ॥ १५ घर जाने का १६ वह गीदड़ (ठग) मिरच का चूर्ण थोड़ा सा नेत्रों के लगा कर बिना घाव रोया ॥ ११ ॥ १७ बहुत पूछने पर १८ पापी ने

नैक *विविक्त मिलैंतो †निदान दिखाइ कढैं सुभ व्है प्रभु देहकों॥
भीत ‡मनोवस सो सुनि भूप निगूढलै पूछे जनावत नेहकों ॥
लंबे निसास कह्यो तब लाल महा ठिग छोरत अश्रुन मेहकों ।१२।
जो प्रभु मंत्री करयो जसवंत सो बालिस स्वामिसों द्रोह बिचारत॥
पुण्यसौं आपसो पाये प्रभू हम पाये सबै सुख यामें निहारत ॥
पापिनी जीभतो काटीपरैं पर पापी स्वघातपैं हाथपसारत ॥
नाथके आनि पितृव्यक नाथ धनी करिहै यों कढे हमैं धारत॥१३॥
पायो हुतो हम लेख प्रमानको वृष्टिमैं क्लिन्न सुतो बिगरयो गयो ॥
सत्यकरैं हम रावरे सौंह नतो स्रुतनाँ जो प्रबोध परयो गयो ।
हेरतहे पुनि पैबो प्रमान इतेबिच काढिही दैबो अरयो गयो ॥
पेखिबो यातैं चहयो प्रभुको रु कहयो प्रभुतो अब रूपात करयो गयो ॥ १४ ॥
यामैं प्रमान लखो वें यहै जसवंतसौं गूढ कहो तुम जाइकैं ॥
पापी पितृव्यक वग्घपुरेस निपातहु नाथ बिसास वढाइकैं ॥
जो तुम यौं न करो जब तो हमरे तुमनाँ यों गिनैं हम हाइकैं ॥
एह करैं जसवंत तो आप कृपान्वन देहु हमैं निकसाइकैं ॥१५॥
दासनकौं अथवा दै निदेस निहारहु नाथ पितृव्य निपातितैं ॥
चामर१ छत्र२न लैबे चल्यो मन जाको अहो अधमाधम सौम्मित ॥

* एकान्त † इस रोने का कारण दिखाकर ‡ मन में भय वस कर १ एकान्त में लेकर ॥ १२ ॥ २ वह मूर्ख ३ हमने इसीमें सब सुख पाये हैं ४ आप को मारने पर ५आप के काका नाथसिंह को स्वामि बनावेगा ६इसकारण हमको काढता है ॥ १३ ॥ ७ इसके प्रमाण का लेख (पत्र) पाया था सो तो वृष्टि में भीज कर बिगड़गया ८कानों में ९ प्रसिद्ध किया गया॥ १४ ॥ १० अब ११ गुप्त रीति से १२ पापी बागोर के पति हमारे काका १३ नाथसिंह को मारो १४ तुम हमारे नहीं हो ॥ १५ ॥ १५ चाकरों (हम) को हुकम देकर १६ नाथसिंह को मराहुआ देखो १७ नीच के सदृश

स्वामिको सासनही सिर लै हम मारैं पिताहुकौं धार नही हित ॥
भीम कुबेर तनैंहु भन्यौं यह काका कह्यो सुहि जान्यो असाकित१६
मनस्वी हुतो अरिसिंह तथापि सिख्यो सुहि केहरि नंतियकी सुनि॥
आसु हवेली पठाइ इन्हैं चलचेत न सोच्यो सुनी निहचै चुनि ॥
जो निज काका१ तथा जसवत परस्पर मित्रहे हेरी सुपे पुनि ॥
देवगढेस गिन्यों बदल्यो नृप नदसौं मल्लिपनाग जथा मुनि ॥१७॥
सो जसवत हुतो मन सुद्धहि चित्तहु स्वामिसौं द्रोह न चाहत ॥
एक सलूमरि पैं अनख्यो१ वहुरयौं हित नाथके साथ निबाहत२॥
लालके जालमैं यों उरझ्यो सकलो अरिसिंह भलो न समाहत
जालमं कोटा रच्यो निधि जो सु उदेपुर भो उलटी अवगाहत१८
जसवत निर्कि बुलाइ जहां अरिसिंह भन्यौं मम काका अहो ॥
प्रतिकूल रहैं रु चहैं प्रभुता तिनकों तुम गजि इनौं१ कि गहो२॥
जसवत कह्यो प्रभु आप जहाँ कछु द्रोह प्रतीति प्रमान कहो ॥
नहितो विपरीत पितृव्य नहे वहिके कहुँ क्यों गुरुहत्या बहो १९
अरिसिंह कह्यो बिनु मंतुहु एह कह्यो हमरो तुम ज्यौंत्यौं करो॥
प्रतिकूल तुम्हैं नहि जानिपरैं हम जानत यातैं कलेस हरो ॥
जसवत कह्यो हम मित्र जहाँ इम सामन मोहिकों क्यों दे अरो
यह ओरकों सौंपिकैं मेरो उहाँ धुव सूचन जानिकैं कारा धरो२०
सुनिकैं यह राउतको अरिसिंह स्वपच्छमैं जानि सलूमरिके ॥

१ कुबेरसिंह के पुत्र भीमसिंह ने भी कहा ॥१६॥ २ अरिसिंह वीर था तोभी ३ केसरीसिंह के पोते की बात सुनकर ४ पश्चात्ताप बिना महाराणा ने ५ नन्द नामक राजा से चाणक्य मुनि बदला था जिस प्रकार ॥ १७ ॥ ६ माधसिंह से स्नेह रखता था ७ जालमसिंह झाला ने कोटा में रची थी वह रीति ॥ १८ ॥ ८ जसवन्तसिंह को एकान्त में बुलाकर ९ आश्चर्य युक्त १० उदयपुर का स्वामीपन चाहता है ११ क्या पाप लेते हो ॥ १९ ॥ १२ बिना अपराध है तो भी १३ कैद करो ॥ २० ॥

जसवंतसौँ भाख्यो नमानौं जहाँ कारिहैं न रवपच्छमैं केहरिके ॥
तानि व्याज[2] बिसास यों सिक्ख दै ताकौं बलिष्ठ[3] सहायहुमैं वरिकें
बलि[4] वा ठिगकौं ढिग आप बुलाइ[5] कहयो अरि[5]मारि तथा अरिके २१
मत आपुनौं जो न चहै मनसौं सुहि सत्रुको पच्छ[6] समाहनौं[7]है ॥
बलि बग्घपुरेसके[7] संग[8] बली[8] हैं छरैं उतकौं[9] सुपै ढाहनौंहै ॥
यह देवगढेसहु छद्मी अमात्य बनीपैं बिगार निवाहनौंहै ॥
तुममांहिसौं जो फटि सूचैं तिन्हैं दुखदाता[10] सुपै दव दाहनौंहै २२
पहु रान बिसासके यौं चउ पंच दुधाँ[11] पटु लालके संग दये॥
जसवंतसौं छानैं[12] प्रबोधि यों जे पहु बग्घपुराधिप[13]पैं पठये ॥
वह धर्म्म बिचच्छनैं[14] नाथ अहो भयहीन हुतो तहँ सज्ज भये ॥
पठई कहि भूपतिके पठये[15] इह आये करैं कछु मंत्र अये ।२३।
वह बग्घपुराधिप नाथ उहाँ क्रम नित्यसमैं सिवपूजा करैं ॥
इहिं ताही समैं ढिग आवनकी पठई कहिनौंतो[16] बिलंबपरै ॥
इक१लालकौं आवनदेहु इहाँ हठ जानि यों नाथहु भाख्यो हरैं[17]
सठ जान्यौं मिल्यो यह ईंटसमैं[18] बहुमैं हम घातकक्यों उबरैं २४

१ केसरीसिंहवालों के पक्ष में तुमने निकाल देने की कही सो नहीं करेंगे २ झूठा विश्वास फैलाकर ३ बलवान ४ फिर उस ठग लालसिंह को पास बुलाकर ५ शत्रु (नाथसिंह) और उसके पक्षवालों को मारो ॥ २१ ॥ ६ शत्रु के पक्ष का कपड़ना है ७ बागोर के पति के साथ ८ छली ९ नाथसिंह को सूचना करदेवे तो १०दुःखदाई है जिसको भी अग्नि में जलाना है ॥ २२ ॥ ११ देवगढ के रावत जसवन्तसिंह और बागोर के महाराज नाथसिंह, इन दोनों ओर से चतुर अर्थात् उक्त दोनों ओरवालों को यह छल नहीं जतलाने वाले को जसवन्तसिंह के छाने १२ समझाकर १३ बागोर के पति के ऊपर १४ चतुर १५ महाराणा के भेजेहुए ॥ २३ ॥ १६ इस कहने में तो विलंब होता है परन्तु उसने शीघ्रता की, अथवा लालसिंह ने कहलाया कि आप से कहना है जिसमें विलंब होता है१७धीरे से कहा १८ अनुकूल(चाहाहुआ)समय ॥२४॥

खिनमें तँहँ जाइ महाखलकी बलकी मनसुद्धपैं तेग बही ॥
सिर चाहत सूरको मानि मनों सिरपैं सिवकी रुचि जाइ रही॥
सु महीप उमेद१९८।४प्रभुत्वं समैं क्रम प्रस्तुतठौं सब वत्त कही
अब जैपुर राज्य उदंत इहाँ चहि सूचन सो पुनरुक्त चही ॥२५॥
दोहा–काका घातक सोहि करि, लघु१ गुरु२ संगत लाल ॥
भैंसरोरगढ दे भये, कुद्रकें सु रान कृपाल ॥ २६ ॥
जिम चमके जसवतकों, निजखिन पाइ निकारि ॥
भय विरहित अरिसिंहभो, ध्रुव भीमहिं निज धारि ॥ २७ ॥
भाखी जिम पहिलैं भये, सहित रान संग्राम१ ॥
जगत२ पता३ अरु राजहिँर४, ते न बचे बिधि तामं॥ २८ ॥
पचम५ अब लहि पट्टकों, भो अरिसिंह भुआल ॥
सोपें जानहु प्रभु सुमति, क्रम समें भूतहि काल ॥ २९ ॥
॥ राजसवतिका ॥
केहरि१को सुत जेठो कुवेर२ नहो तँहँ भीम१सु हो तस नदन
ताको पितृव्य छली इम तत्थ महाखल लाल कहायो महामैंन
जैपुर व्याही सुता जसवत सुही अवलब विचारि क्रियौ सन ॥

१ रावराजा उम्मेदसिंह के राजापन के समय में क्रम पूर्वक २ प्रकरण के स्थान पर आगे की सब बात कही है ३ अब यहां जयपुर राज्य का वृत्तान्त चाह कर फिर इस बात को कहना चाहा है ॥ २५ ॥ ४ काका के मारनेवाले उस लालसिंह को छोटे से बड़ा बनाया अर्थात् छोटे उमरावों में था जिसको बड़े (सोलह) उमरावों में किया ५ उस ढंग पर राणा कृपालु हुआ ॥ २६ ॥ ६ भय से दूर हुआ, निश्चय ही सलूंबर के रावत भीमसिंह को अपना जानकर ॥ २७ ॥ ७ राजसिंह ८ यहां ये नहीं रहे ॥ २८ ॥ ९ क्रम से १० भूत काल (गत समय) ही जानो ॥ २९ ॥ केशरीसिंह का बड़ा पुत्र कुबेरसिंह उस समय नहीं था, उस का पुत्र भीमसिंह ही था, जिसका काका लालसिंह इस प्रकार ११ वीर कहलाया १२ उपाय से

भीम उहाँ पहुँच्यों भयतैं सुत राघवदासकों सौंपि धरा धन[1]॥३०॥
सूनुगुपाल पुरोगें[2] समेत घनैं भय सो जसवंत सुताघर[3] ॥
पुत्री[4] समेत उभै२सुत पुत्रीके[5] आपुनैं जानि प्रधान[6] वन्यों अर[7] ॥
यों अरिसिंह सलूमरि सासक भीम प्रधान करयो निज देअर॥
आपुनैं ओरँ गिन्यों नहि याहित पंच रु राना२ रंचे न परस्पर[8]॥३१॥
याहितैं पीछैं बिरोध उठयो सिसुपे प्रकटयो वह रत्नसनामक[9]॥
कुंभिलमेरु निवास करयो रु धरयो बटि अर्द्ध– धरा१धन२धामक३॥
ह्वैगयो नास हजारनको रन दक्खिन२।३तैं दुव२बेर बिरामक[10]॥
सो तिम पीछैं हन्यों अरिसिंह भयो नृप हंम्म[11] बढे भट भामक[12]॥३२॥
जैएरहो तबतैं जसवंत समाश्रय[13] पाइ सुता१रु सुतासुत२[14] ॥
रानीहू राखि पिताही[15] प्रधान अुजा तस राज्यको भार दयो द्रुत[16]॥
ओ इक१ बिप१ महावत२ इक१ उभै२ भुज१।२ ए रु रह्यो सिर
२।३ राउत ॥
राज्यको काज सिसुप्रजारानिप[17]१जो करैं सो सब या त्रिक३संजुत
ए कछवाहनके उरमैं नहिं मावत तीन३ जुते धुर नायक ॥
च्यारि४नकों इम कैद चहैं दु२बिधा[18] बटि द्वै२द्वै२जथा दुखदायक ॥

१ अपने पुत्र राघवदास को देवगढ का ठिकाना और धन देकर ॥३०॥२ पहिले गयेहुए अपने पुत्र गोपालसिंह सहित ३पुत्री के घर (जयपुर) गया ४अपनी पुत्री [माधवसिंह की राणी] और ५ पुत्री का पुत्र दोहिते पृथ्वीसिंह और प्रताप- सिंह सहित अपना जानकर ६ शीघ्र ७ दूसरे को अपना नहीं समझा ८ इसीकारण मेवाड़ के पंच सरदार और राणा अरिसिंह परस्पर नहीं राचे [रंगे] ॥ ३१ ॥ ९ कृत्रिम बालक रत्नसिंह भी पैदा हुआ १० नाश करनेवाला ११ हम्मीरसिंह राणा हुआ १२ धूर्त उमराव बढे ॥ ३२ ॥ १३ श्रेष्ठ आश्रय पाकर १४ बेटी और दोहितों का १५ पिता जशवंतसिंह को ही सचिव रखकर १६ शीघ्र १७ बालक सन्तानवाली रानी ॥ ३३ ॥ चारों का १८दो भाग करके यथासंख्या से दुःखदायक कैद किया चाहते हैं जिनमें राजा पृथ्वीसिंह की

न्यारे नरेस प्रसूं१रु नरेस२ ए भिन्न करैं हंगकैद प्रभापक ॥
बिप्र११३ रु मिच्छ१४ छली बलसों धरि कारा करैं निज कज्ज
बिधापक ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

दिठ्ठिकैद बिच ए दुरघाँ, रानी१ अरु नृप२ रक्खि ॥
द्विज१ रु मिच्छ२ कारा दुवरहि, सठ डारैंहिं सब सक्खि३५
नाँनाँ१ मंत्री नृपतिको, सुत२ जुत ताहि निकासि ॥
क्योंन अमल्ल अपनों करैं, तेंगन बल खल्ल त्रासि ॥ ३६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

राजाउत१ नाथाउत२ थंभ राज्यके जे थिर,
मीत बनि अर्थपें दिखाइ हठवारी मीति ॥
रानी१ अरु राजा२ भिन्न भिन्न दुव२ ठाम रोहि,
नाँनाँ१अरु माँमाँ२द्वै२निकासिवो समुझि नीति ॥
विप्र१रु महावत२कों भिन्न ठाँ निगडबंधि,
आपुनों सम्हारि राज्य टारहिं अरिनईति ॥
ऐसी सोचि कूरम बिचारैं निज दाव आयो,
जानैं भाव आयो मुख्य रहिहैं सबन जीति ॥ ३७ ॥
माधवमहीप लघुता१सों गुरुता२में लाइ,
आगेंखुसहालीराम१ सो द्विजें खँडेलवार ॥
मंत्री करि मान्यों पुनि रानीसों कह्यो मरत,

१माता और राजा को २नजर कैद जुदे करदेवें और खुशालीराम बोहरा और ३फीरोजखा महावत को ४कैद करके विधान पूर्वक अपना कार्य करैं ॥ ३४ ॥ ५ नजरकैद ६ कैद ॥ ३५ ॥ ७ राजा के नाना देवगढ के रावत जसवंतसिंह को पुत्र सहित निकाल कर ८ तरवारों के बल से ॥ ३६ ॥ ९ रोककर १०कैद करके ॥ ३७ ॥ ११ राजा माधवसिंह ने १२ खुशालीराम ब्राह्मण को छोटे से

याके बस दुर्ग१ रु खजानाँ२ नीति अनुसार ॥
दूरकरि या१कों नहिं और२ कों उचित देवो,
यातैं हुतो ताही के अधीन उक्त अधिकार ॥
त्यों फीरोज२ नाम सु महावत बढायो तानैं,
द्रव्य कर लावन हुतो सो तहसीलदार ॥ ३८ ॥
राजसिंह ३ नामक हमीरदेव कूरमके,
बंसमैं हुतो जो लघुपंतिबिच बारगीर ॥
नासरदानैर दै बढायो सोहु माधवनैं,
सेनानी बनायो स्वामिधर्म्मके समुझि सीर ॥
माधवके मरत उतारयो अधिकार याको,
पीछैं सब ओर लखी प्रसरी प्रजापैं पीर ॥
सेखाउत पीछो लै मनोहरपुरहिं सजे,
सोहि तब सेनानी बहोरि कीनौं गिनि बीर ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

स्वामिधर्मपन दर्प सठ, राखतहो यह राज ॥
राजकाज बिगरत रह्यो, लोपि वहहु वह लाज ॥४०॥
राजाउत वाहि न रुचत, देखि पट्ट दायाद ॥
वह३।१ न रुचत राजाउतन, बहुरा२ जुत नुत बाद ॥ ४१ ॥
कीरतिसिंह झलायको, ईस जु पुब्ब अनेहं ॥
बहुरी द्विज किय हीन बल, बैर बहत अब एह ॥ ४२ ॥

बडा बनाकर १ गढ २ हासिल का धन लाने को ३ अपना भार आप उठानेवाला छोटा नौकर था ४ सेनापति ॥ ३९ ॥ यह ६ सूर्ख ७ राजसिंह स्वामिधर्मिपन का ५घमंड रखता था ॥ ४० ॥ ८ जयपुर के पाट के दायभागी होने के कारण राजावत उसको नहीं रुचते थे ९ बहोरा खुशालीराम सहित १० स्तुति के वचनों से राजावतों को नहीं सुहाते थे ॥ ४१ ॥ ११ पहिले समय में १२ वह वैर रखता था ॥ ४२ ॥

पै अतिवृद्ध झलायपति, आयु बितावत ऐन ॥
बखतावर१ तस सुत तकत, लहि खिन बैर सु लैन ॥४३॥

॥ घनाक्षरी ॥

विप्र बहुरा जो खुसहालीराम१ मारूयो बुध,
आहित झलापको हुतो जिहिं प्रसभ आनि ॥
माधव महीपतिकों गेरि निज सम्मतिमें,
कीनों सत्रुसाल२ तुल्य सुभट बढाइ कानि ॥
काका बखतावर१ को हो यह सतार२ कुमति,
जानें तिय खींचि१३निपैं लाभ सु दुलभ जानि ॥
पतिके नियोग लैं झलाय उपमेयपन,
पाइ राखी राखी खुसहालीराम द्विज पानि ॥ ४४ ॥
पिप्पलदा १ यातैं राजधानीकों बितरि पुरी,
सत्रुसाल द्विजनैं करयो इम झलाय साल ॥
दाबि बलसों सो बलसों जो तिन दाब्यो देस,
कित्ति हरि कीनों बिधि बिधिसों तब बिहाल ॥
माधवके मरन अनंतर समय मत्त,
जैपुर प्रसारि बखतावर कुहक जाल ॥
ठानि बहुरेको पकराइबो स्वमति ठीक,
चिंतैं हनिडारिबो जथातथ अहित चाल ॥ ४५ ॥
राजाउत१ नाथाउत२ इनकै सदा बिरस,

१घर में ॥ ४३ ॥ २ चतुर ३ खोटी बुद्धिवाला शत्रुशाल ५ झलाय के पति की जिसको उपमा लगे ऐसे शत्रुशाल अपने पति की ४आज्ञा लेकर खींची जाति की स्त्री ने खुशालीराम ब्राह्मण के हाथ में ६ राखी रक्खी (राखी बांधी) ॥ ४४ ॥ इस कारण पीपलदा नाम राजधानी ७ देकर ८ खुशालीराम ने शत्रुशालको झलाय का शाल कर दिया, जिस देशको झलायवालोंने बल से दबा लिया था उसको इसने बल से दबाकर ९ कीर्तिसिंह को बिहाल किया १० बखतावरसिंह ने जयपुर में ठग जाल फैलाकर ॥ ४५ ॥

हो तिम फल्यो सु लखो दिष्ट फल हाइ हाइ ॥
ए उभैर कहुँक एक१ ओकहु[2] वनत अन्य२,
ऐसैं प्रभु[3] राज्यकों नसैबे लगे अनखाइ ॥
नाथाउत चोमूँपति पहिले सबै अनखि,
जैपुर बिहाइ[4] करयो जोधपुर बास जाइ ॥
चोमूँके ठिकानैं तब नारुख[5] प्रताप चहि,
बैठार्यो नरूका राजगढ[6] पुर वै बढाइ ॥४६॥
एक१ मुख्य बैठक दुर२ठाम भई वादिनतैं,
चोमूँपति पीछैं आइ आपुनैं वहहि चाहि ॥
बंछत भयो मन नरूकेको बिगार करि,
त्यौंही जयनैरतैं निकास्यो भ्रम डारि ताहि ॥
तुरगी कितेकनसौं जट्टके निवसि तानैं,
दिल्ली देखि बूडत समीपके सुहर्द दाहि ॥
लोलुपनैं[9] द्वै१हिधाँ[10] बिचारिशास्यो लहु लोभ,
जैपुरसौं जानैं त्यौं न जैपुरके जानैं जाहि ॥४७॥
जैसैं झल्ल जालम भो कोटामैं महाकुहक[11],
नारुख[12] प्रताप तैसैं जैपुरको चिंति नास ॥
अंतर१ मिलाइकैं भलापके कुमर१ आदिं,
बाहिर२ बढाइ मोघ[13] बहुतनकै बिसास ॥
भूपतिको बिद्यागुरु राजा जो बजत भट्ट,

१भाग्य के फल से २ एक घर में भी ३ अपने स्वामी के राज्य को ४ छोडकर ६ राजगढ के पति ५ नरूके प्रतापसिंह को बढाकर चोमूं की बैठक पर बिठा दिया ॥ ४६ ॥ ७ उस प्रतापसिंह ने कितने ही सवारों से जाट के भरतपुर में रहकर ८ नजीक के मित्रों को जलाकर उस ९ लोभी ने १० दोनों ओर ॥४७॥ जैसे कोटा में झाला जालमसिंह ११ महाछली हुआ तैसे १२ नरूके प्रतापसिंह ने जयपुर का नाश विचारा १३ झूठा

पेयो सो सदासिव मुसाहबी करन भास ॥
वाहीकों निमित्त राखि विप्र१ रु महावत२कों,
कैद करिवेको फंद डारयो पाइ अवकास ॥ ४८ ॥
बात न रहत बध तीजे३के श्रवन बिसी,
जानि सोही विप्र१ रु महावत२ हवेली जाइ ॥
अंतेउरडोढी जसवत३कों पिहिते आनि,
भूत१ भावी२ रानीको सुनायो सब समुझाइ ॥
भट१ अरु राजाउत्त२ नारव३ मिलि रु भये,
रोधक हमारे१ रहिहैं जे राज्य विगराइ ॥
जैपुरकी सीमामें न चुडाउत राखिहैं७ जे,
पुत्र१सों न तुम२कों मिलहैं३ कारा पटकाइ ॥ ४९ ॥
सोहि सुनि रानी हठ आनि इन्द संम्मतिसों,
नारव प्रताप१ सीख देकें पठयो निकेत ॥
राख्यो भट विद्यागुरु२ ताहीके निलय ईद,
संगी तास सचिव३ कितेक रोके समेवेत ॥
पथहीसों पीछो मुरि आयो सुनि सो प्रताप,
पैठन दयो न पुरमें तब अंघउपेत ॥
केते देस जैपुरके लूटि१ अपनाइ२ केते,
दुष्ट गो निजालय अनेकनकों दुखदेत ॥५०॥
जैपुरतें कटक प्रताप पर भेज्यो जब,
बाहिर१ तो सासनें दिखैवो छलसों विचारि ॥

१ मुसाहबी करना प्रकाश(प्रसिद्ध) करके २ कारण ॥४८॥ ३ तीसरे के कान में घुसीहुई ४जनानी ड्योढी पर रावत जसवंतसिंह को ५छाने जाकर ६हमारे कैद करनेवाले७कैद में डालकर ॥४९॥८इनकी सलाह से९इनरूके प्रतापसिंह को १० उसके घर भेजा ११उसीके घर में बंध रक्खा १२उसीके साथ रोके १३पाप सहित पापी को १४अपने घर गया ॥५०॥ १५प्रतापसिंह पर सेना भेजी १६प्रसिद्ध में तो

यलेस १ ललेस २ अन्त्यानुप्रास १॥
तब जैपुरतैं करि तिमहि, बुल्ल्यो नारव नीच ॥
चतुरा१ पठयो लैन बलि, बहु आदर२ मग बीच ॥ ५६ ॥
परयो बुलानों सब पेंडुन, नारव इम जयनैर ॥
पुनि तदिष्ट करनों परयो, वीसरि मंतु१२ वैर ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह चरित्रे सलूंबरेशकेसरिसिंहान्तिमसमयकुशलप्रश्नप्रयातदेवगढेशज सवतसिंहवाक्कलहवर्द्धनतन्निमित्तकृतकुहककेसरिसिंहपुत्रलालसिंह जसवन्तसिंहमेदपाटनिष्कासन १ जसवतसिंहजयपुरगमनराणारि सिंहादेशनिहतवग्घारपतिमहाराजनाथसिंहलालसिंहमहाभटपदप्रह णा २ स्वपक्षसमानीतस्वपुत्री (जयपुरेशमाधवसिंहराज्ञी) दौहित्र (जयपुरेशपृथ्वीसिंह) जसवन्तसिंहजयपुरसचिवीभवनकूर्मतद्विरोध वर्द्धन ३ जयपुरामात्यमिथोद्वयप्रभेकासनहेतुचोमूँराजगढविद्वेषराज गढेशनारवप्रतापसिंहजयपुरनिष्कासन ४ राजगढप्रयातजयपुरसैन्य

॥ ५६ ॥ १ चतुरों को २ बहुतप्रकार नरूका को जयपुर में बुलाना पड़ा ३उसका पाहुणा हुआ ४ अपराध और वैर भूलकर ॥ ५७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में विष्णुसिंह के चरित्र में, सलूंबर के पति केशरीसिंह के मरते समय आराम पूछने को गये हुए देवगढ के पति जशवंतसिंह में वचनों का विरोध बढ़ना और उसी कारण से केशरीसिंह के पुत्र लालसिंह का ठग विद्या करके जशवंतसिंह को मेवाड़ से निकलवाना १ जसवंतसिंह का जयपुर जाना और राणा अरिसिंह की आज्ञा से लालसिंह का घाणेराव के पति महाराज नाथसिंह को मारकर बड़े उमरावों की पदवी लेना २ राउत जशवंतसिंह का अपनी पुत्री (जयपुर के राजा माधवसिंह की राणी) और दौहित्र (जयपुर के राजा पृथ्वीसिंह) को अपने पक्ष में लेकर जयपुर का सचिव होना और कछवाहों से उसका विरोध बढ़ना ३ जयपुर के सचिवों का परस्पर द्वेष और सभा की एक बैठक होजाने के कारण चोंमूं और राजगढ में द्वेष होना और राजगढ के पति नरूके प्रतापसिंह का जयपुर से निकालाजाना ४ राजगढ पर गई हुई जयपुर की सेना के छलयुद्ध से नरूके प्रतापसिंह का बलवानपना प्रसिद्ध होकर उसको जयपुर में बुलाने

घनात्तरी–पायो पटा जैपुरको नारव प्रताप तासौं,
बहुरि बिसेस पाई नित्य मुद्रा पचसत५०० ॥
कित्तिसिंह कुमर झलायके प्रथम काल,
वेर अरिसिंहको मिटाइदैबो मढि मत ॥
जेपुरही मत्रमैं जो चुहाउत्त जसवत,
पत्र बुन्दी पठयो स्वसापति छितीस छत ॥
रानौ रत्नासिंहकौं विवाहो कुल कन्या जाम,
जाजपुरदेहैं लिखि प्रत्युत्तं ए व्है प्रनत ॥ ९ ॥
सालकको पत्र यह भूपति अजितसिंह,
बचिकैं पुरोहित पठायो दयाराम तस ॥
पीछैं नृप छोरयो देह यातैं मुरि मयाहीसौं,
आयो परेकूलतैं बनास लघि विप्र यह ॥
सोहि पुनि श्रीजित पठायो नीति समुझाई,
आयो अब जैपुर सुनायो तत्व प्रीति सह ॥
पै अब स्वसा१ जुत स्वसापति२ अभाव पाइ,
बदल्यो कुमार बखतावर बिरोध वह ॥ १० ॥
भूतहूमैं भूत यो विरोध वीज जानौं जब,
भूपतिनैं इद्रगढ ईस१ हन्यौं पुत्र२ जुत ॥
ताकी तिय जोधीनैं झलायपति भाइनेज,
बोमसौं बुलाइ ताहि देकैं अर्द९ भूमि हुत ॥
सध्याकहँ सेस इद्रगढकी अवनि अर्द्ध८,

१ रुपये २ बहिन का पति ३ बुंदी का राजा अजितसिंह था तब राणा अरिसिंह को मार डालने का वैर मिटादेना चाहा था ४ उलटे नम्र होकर जहाजपुर देवेंगे ॥ ९ ॥ ५ बनास नदी के परले किनारे से ६ परन्तु अब बहिन सहित बहिन के पति का नाश जानकर ॥ १० ॥ इस विरोध के बीज भूतकाल से भी भूतकाल में जानो कि ७ उम्मेदसिंह ने ८ भानेज को शीघ्र आधी भूमि दी १० बाकी की आधी भूमि सिन्धिया को देकर

अंतर२मैं हारे कछवाहन अरुचि आनि,
नारवसौं नेह कैं रची जिन कपट रारि ॥
चुंडाउत१ बिप्र२ रु महावत३ बिगारे चहि,
पापिनतैं लाख बीस २०००००० मुद्राको[2] खरच पारि ॥
आपनी१ पराई२ कछु न गिनी पकरि आँट,
धूमिडारी धरनि खिजे गजकी[3] धक धारि ॥ ५१ ॥
जैपुर सुभट ऐसैं राजगढदुर्ग जाइ,
बासर कितेक लरे मोर्घेहि[4] बिरचि व्पाजं[5] ॥
प्रत्युत[6] दिखाइकैं प्रतापको बलिष्टपन,
कूरमन कूँरन बिगारयो निज स्वामि काज ॥
हीसिबेलगी[8] पुर१ देस२के प्रजादिकन,
राखिहैं जो तीनों३ उक्त पहिले सचिव राज[9] ॥
नारवके सम्मत बिनाँ तो निबहैन नैंक,
ऐसे उपद्रवमें अधीसको बिभव आज ॥ ५२ ॥

दोहा–नारव जैपुर आनिबो, करिबो तस अनुकूल ॥
दुखटारिबो तव देसको, मान्यौं मंगल मूल ॥ ५३ ॥
सिसु समान हारे समुझि, रानी१ अरु नरराय२ ॥
ओंकारयो नारव इहाँ, दै दलैं[11] सबन सहाय ॥ ५४ ॥
नारव तब प्रतिभू[12] चहयो, सेखाउत नवलेस१ ॥
पुर झलायको कुमर२ पुनि, नृप लिपिकैं[13] दल लेस३॥५५॥

आज्ञा दिखाई १नरूके प्रतापसिंह से स्नेह करके २बीस लाख रुपयों का ३ खिजेहुए हाथी की धक को धारण करके ॥५१॥ ४छल करके कितनेक दिन ५झूठी लड़ाई लड़े ६उलटा प्रतापसिंह का बलवानपना दिखाकर ७मूर्ख अथवा झूठे कछवाहों ने ८अब पुर के और देश के प्रजा आदि को दीखने लगी कि ऊपर कहे हुए पहिले तीनों सचिवों को राखेंगे तो ९राज्य में नरूके (प्रतापसिंह)के विना ॥५२॥५३॥१० नरूके को बुलाया ११ पत्र देकर ॥ ५४ ॥ १२ जमानत देनेवाला जामिन चाहा १३ राजा का लिखाहुआ छोटा सा पत्र ॥ ५५ ॥

वलेस १ ललेस २ अन्त्यानुमास १॥

तब जैपुरतैं करि तिमहि, बुल्ल्यो नारव नीच ॥
चहुरा१ पठयो लैन वलि, बहु आदर२ मग बीच ॥ ५६ ॥
पस्यो बुलानों सब पेंडुन, नारव इम जयनेर ॥
पुनि तदिष्ट करनों परयो, वीसरि महु१रु वैर ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह चरित्रे सलूम्बरेशकेशरिसिंहान्तिमसमयकुशलप्रश्नप्रयातदेवगढेशज सवन्तसिंहवाक्कलहवर्द्धनतन्निमित्तकृतकुहककेसरिसिंहपुत्रलालसिंह जसवन्तसिंहमेदपाटनिष्कासन १ जसवंतसिंहजयपुरगमनराणारि सिंहादेशनिहतवग्घोरपतिमहाराजनाथसिंहलालसिंहमहाभटपदमह ण २ स्वपक्षसमानीतस्वपुत्री (जयपुरेशमाधवसिंहराज्ञी) दौहित्र (जयपुरेशपृथ्वीसिंह) जसवन्तसिंहजयपुरसाचिवीभवनकूर्मतद्विरोध वर्द्धन ३ जयपुरामात्यमिथोद्वेषसभैकासनहेतुचोमूँराजगढविद्वेषराज गढेशनारवप्रतापसिंहजयपुरनिष्कासन ४ राजगढप्रयातजयपुरसैन्य

॥ ५६ ॥ १ चतुरों को २ इसप्रकार नरूक को जयपुर में बुलाना पड़ा ३उसका चाहाहुआ ४ अपराध और वैर भूलकर ॥ ५७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में विष्णुसिंह के चरित्र में, सलूम्बर के पति केशरीसिंह के मरते समय आराम पूछने को गये हुए देवगढ के पति जशवन्तसिंह में वचनों का विरोध बढ़ना और उसी कारण से केशरीसिंह के पुत्र लालसिंह का छल किया करके जशवन्तसिंह को मेवाड़ से निकलवाना १ जसवन्तसिंह का जयपुर जाना और राणा अरिसिंह की आज्ञा से लालसिंह का बागोर के पति महाराज नाथसिंह को मारकर बड़े उमरावों की पदवी होना २ रावत जशवन्तसिंह का अपनी पुत्री (जयपुर के राजा माधवसिंह की राणी) और दौहित्र (जयपुर के राजा पृथ्वीसिंह) को अपने पक्ष में लेकर जयपुर का सचिव होना और कछवाहों से उसका विरोध बढ़ना ३ जयपुर के सचिवों का परस्पर द्वेष और सभा की एक बैठक होजाने के कारण चौमूँ और राजगढ में द्वेष होना और राजगढ के पति नरूके प्रतापसिंह का जयपुर से निकालाजाना ४ राजगढ पर गई हुई जयपुर की सेना के छलयुद्ध से नरूके प्रतापसिंह का बलवानपना प्रसिद्ध होकर उसको जयपुर में बुलाने

च्छलयुद्धनारवप्रतापसिंहबल्लवत्त्वप्रथनतज्जयपुराह्वानं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥ आदितः ॥ ३५३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—इम प्रताप नारव वहै, आयो जैपुर अत्थ ॥
ईष्ट[2] प्रसारयो आपुनों, तिम विन्नति लखि तत्थ ॥ १ ॥
याकी सम्मति पाइ इन, कैद महावत१ किन्न ॥
यातैं साहस दम्म[3] अर, लक्ख सप्त ७०००००भरि लिन्न ।२।
हे बहुरा२ को चहत हित, भट नाथाउत भीर१ ॥
अरु यह पटु[4]२ इम उव्बरयो, नाविक[5] जह दह नीर ॥ ३ ॥
कीरतिसिंह कुमार अरु, धूलापति रघुनाथ२ ॥
राजाउत दोउ२न, रच्यो सेस[6] विरोधिन साथ ॥ ४ ॥
चुंडाउत जसवंत इक१, राउत देवँगढेस ॥
राजगढेस प्रताप इत, आन्यो जैपुर एस ॥ ५ ॥
दोउ२न इन करवाइ दिय, मन इन दोउ२न मेल ॥
पै फुट्टे खप्पर प्रतिम, खलन मिलन मय खेल ॥ ६ ॥
करि नारव प्रमुखँन कथन, कारातैं खिल्ले काढि ॥
गेह जाइ विद्यागुरुहि, लायो नृप[12] ईभ चाढि ॥ ७ ॥
प्रथित[13] प्रताप प्रतापको[14]; वढिगो इम जिहिं वेर ॥
कोऊ कछुहु सकैन कहि, जिन सिंह[15]१हिं गज२ जेर ॥८॥

का तीसरा मयूख समाप्त हुआ।३। और आदि से तीनसौ तेपन३५३मयूख हुए॥

१ नरूका प्रतापसिंह २ अपना वांछित ॥ १ ॥ ३ दण्ड के रुपये शीघ्र ॥ २ ॥ ४ वह चतुर भी था इस कारण ५ जैसे नाववाला गहरे जल से बचै तैसे बच गया ॥ ३ ॥ ६ बाकी के विरोधियों का साथ किया॥ ४ ॥ ७ देवगढ के पति ने ८ राजगढ के पति प्रतापसिंह को ॥ ५ ॥ ९ फूटेहुए खप्पर के सदृश ॥ ६ ॥ १० नरूके आदि का कहना करके ११ बाकी की कैद से निकाल कर १२ हाथी पर चढाकर राजा लाया ॥ ७ ॥ १३ प्रसिद्ध १४ प्रतापसिंह का प्रताप १५बहुत वृद्धे सिंह को हाथी दबालेवै जैसे "जिनः,अतिवृद्धे॥ इति शब्दार्थचिन्तामणिः"

घनाक्षरी-पायो पटा जैपुरको नारव प्रताप तासौं,
बहुरि विसेस पाई नित्य मुद्रा पचसत५०० ॥
कित्तिसिंह कुमर झलायके प्रथम काल,
वैर अरिसिंहको मिटाइदेबो मंडि मत ॥
जैपुरही मत्रमैं लै चुंडाउत्त जसवंत,
पत्र बुन्दी पठयो स्वसापति छितीस छत ॥
रानौं रत्नसिंहकों विवाहो कुल कन्या जाम,
जाजपुरदैहैं लिखि मत्युतैं ए व्है प्रनत ॥ ९ ॥
सालकको पत्र यह भूपति अजितसिंह,
बचिकैं पुरोहित पठायो दयाराम तस ॥
पीछैं नृप छोरयो देह यातैं मुरि मग्राहीसौं,
आयो परकूलतैं बनास लंघि विप्र यह ॥
सोहि पुनि श्रीजित पठायो नीति समुझाई,
आयो अब जैपुर सुनायो तत्व प्रीति सह ॥
पै अब स्वसा१ जुत स्वसापति२ अभाव पाइ,
बदल्यो कुमार बखतावर बिरोध वह ॥ १० ॥
भूतहूमैं भूत यो विरोध बीज जानौं जब,
भूंपतिनैं इंद्रगढ ईस१ इन्यौं पुत्र२ जुत ॥
ताकी तिय जोधनैं झलायपति भाइनेंज,
बोमसौं बुलाइ ताहि देकैं अर्द्ध९ भूमि हुतें ॥
सध्याकहँ सेसं इंद्रगढकी अवनि अर्द्ध१०,

१ रुपये २ बहिन का पति ३ बुंदी का राजा अजितसिंह था तब राणा अरिसिंह को मार डालने का वैर मिटादेना चाहा था ४ उलटे नम्र हो कर जहाजपुर देवेंगे ॥ ९ ॥ ५ बनास नदी के परले किनारे से ६ परन्तु अब बहिन सहित बहिन के पति का नाश जानकर ॥ १० ॥ इस विरोध के बीज भूतकाल से भी भूतकाल में जानो कि ७ उम्मेदसिंह ने ८ भानेज को नीम आधी भूमि दी १० बाकी की आधी भूमि सिन्धिया को देकर

घनाक्षरी–पायो पटा जैपुरको नारव प्रताप तासौं,
बहुरि विसेस पाई नित्य मुद्रा पचसत५०० ॥
किर्त्तिसिंह कुमर झलायके प्रथम काल,
वैर अरिसिंहको मिटाइदैबो मडि मत ॥
जैपुरही मत्रमैं लै चुडाउत्त जसवंत,
पत्र बुन्दी पठयो स्वसापति छितीस छत ॥
रानौ रत्नसिंहकौं विवाहो कुल कन्या जाम,
जाजपुरदैहैं लिखि प्रत्युतैं ए व्है प्रनत ॥ ९ ॥
सालकको पत्र यह भूपति अजितसिंह,
वचिकैं पुरोहित पठायो दयाराम तस ॥
पीछैं नृप छोरयो देह यातैं मुरि मग्राहीसौं,
आयो परकूलतैं वनास लघि विप्र यह ॥
सोहि पुनि श्रीजित पठायो नीति समुझाई,
आयो अब जैपुर सुनायो तत्व प्रीति सह ॥
पै अब स्वसा१ जुत स्वसापति२ अभाव पाइ,
वदल्यो कुमार वखतावर विरोध वह ॥ १० ॥
भूतहूमैं भूत यो विरोध वीज जानौ जब,
भूँपतिनैं इन्द्रगढ ईस१ इन्यौं पुत्र२ जुत ॥
ताको तिय जोधीनैं झलायपति भाइनेंज,
लोभसौं बुलाइ ताहि देकैं अर्द्ध९ भूमि हुतं ॥
सध्याकहँ सेस इन्द्रगढकी अवनि अर्द्ध२,

१ रुपये २ बहिन का पति ३ बुंदी का राजा अजितसिंह या सब राणा अरिसिंह को मार डालने का वैर मिटादेना चाहा था ४ बलटे नम्र हो कर जहाजपुर देवेंगे ॥ ९ ॥ ५ बनास नदी के परले किनारे से ६ परन्तु अब बहिन सहित बहिन के पति का नाश जानकर ॥ १० ॥ इस विरोध के बीज भूतकाल से भी भूतकाल में जानो कि ७ उम्मेदसिंह ने ८ भानेज को नीम आधी भूमि दी १० बाकी की आधी भूमि सिन्धिया को देकर

जामाता१ सुता२ द्वे२ ठहरे न पीछैं दिष्ट जव,
पीछो प्रतिकूल भयो जो खल रुषाजरत ॥
इन्द्रगढ ईस देवसिंहको पिनाती इहिं,
दभसौं प्रकास्यो परलोकहुसौं नाँ डरत ॥ १६ ॥

पादाकुलकम् ॥

देवसिंह दोलतसिंह दुव२हि, बुंदीपति मारे विरोध वहि॥
दोलतसिंह वधूके मिसकरि, पीछैं सुत हुव इहिं साहस परि१७
इन्द्रगढेस देव तिय जन सव, काढे नयननगरतैं जव तव॥
जिम यह छद्म वनैं तिम बचक, राखि किमहु कहुँ पाप प्रपचक॥१८॥
अब झलाय यह ढँपाज वनायो, दोलतसिंह तनयंभव पायो ॥
पै हम करते प्रकट तबहि तो, याकह सुनि हनते अरि अहि तो१९
जुव्वन वय सत्रह१७ सम भो जव, इन्द्रगढेस रँपाल हुव यह अव ॥
रतनसिंह प्रकट्यो जिम रानौं, वह सोलह१६विच पाव१हि आनौं२०
तिम ऐंसहु झूठो प्रकटायो, वलि तिहिं कुहक झलाय बुलायो ॥
भूतहुमें४ पुनि भूरा प्रमानहु, जथा लेखें वत्त सु इम जानहु ॥ २१ ॥
भागनगर१ दक्खिन२१३ पुर भाख्यो, अब हैदराबाद२ अभिलाख्यो॥
जाको पति दिल्लीससचिव जो, सठ गाजुद्दीखान नामसो ॥२२॥
जिहिं इत नादरसाह बुलायो, पुलहु तास नाम सुहि पायो ॥
अपराधी दिल्लीको सो यह, जट्टन सरन रह्यो कछुदिन जह ॥ २३ ॥
वेचि वेचि भूखन१ मनि२ गन के, किय निर्वाह ठानि कनकनके ॥

१जमाई २ भाग्य से ३ क्रोध से जलता है ४ पोता को छल से प्रसिद्ध किया ॥ १६ ॥ ५ दोलतसिंह की स्त्री के छल से इस हठ पर पुत्र हुआ ॥ १७ ॥ ६ छल ॥ १८ ॥ ७ छल ८ दोलतसिंह के पुत्र ने जन्म पाया है ९ शत्रु रूपी सर्प ॥ १९ ॥ १० वर्ष का ११ इन्द्रगढ का पति प्रसिद्ध हुआ ॥ २० ॥ १२ इसको भी १३ व्यय पद गये समय में भी गये समय की बात जानो १४ जैसी लिखी हुई मिली तैसी ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ १५ एक एक विशेष कर ॥ २४ ॥

आलीगोहर तब दिल्लीपति, जट्टनपर आन्यों अमरख अति ॥२४॥
जब सु नबाब निकास्यो जट्टन, जैपुर आइ रह्यो सह निजजन ॥
खरच गंठि निज तत्थहु खायो,बहु मनि१ भूखन२*निचय बिकायो२५
जैपुरपर तिम साह खिज्यो जब, ताहि कूरमन सिक्ख दई तब ॥
वह नबाब दक्खिन२।३तब आयो, पुन्यापति जिहिँ स्वभट बनायो
पटा लक्खत्रय ३००००० दम्म प्रमानक, दिय बुंदेलखंड बिच थानक ॥
असनमात्रै सोंपै लिखवायो, बिनुचाकरी पटा इम पायो ॥२७॥
कछुदिन रहि कोटा अति आग्रह, आइ नवाब झलाय टिक्यो वह
कीरतिसिंह सोहु बहिकायो, बलि तँहँ तव सुं फितूर बुलायो २८
संग नबाब बंधु१ लै बल२ सह, मंडि झलाय ईस अतिसय मंह॥
आइ समुह बैठाइ ताहि इभँ, निज हठ मानि फितूर१ सत्य२ निभ२९
इम झलाय उच्छव जुत आन्यों, जदपि तास बिस्मय जग जान्यों
भ्रष्ट तदपि ताजुत करि भोजन, सज्ज कस्यो भुवलैन प्रसभ सन
कटक नबाबकोहु संगी किय, इंद्रगढेस बंधु बलि बुल्लिय ॥
रत्नसिंह खातोली२ पुरपति, कूँतक भीर भेजे निज भट कति ३१
अवरहु कति निमहोला२आदिक,मिले भीर तस खिलहु प्रमादिक
जाइ इंद्रगढके भट१परिजन२, मिले बहुत छल स्वामी चहि मन३२
कृष्ण१९९।१ दलेल१९८।२ पुत्र मुहुकम१९४।५ कुल, पुर करवर को लोभ दै बिपुल ॥
मतिहत सोहु बुलाइ मिलायो, बढते ग्राम लैन बहिकायो ॥३३॥
पहिलैं खल याकोहि पितामह,सालम१९७।१ रह्यो झलाय भीतिसह

*समूह ॥ २५ ॥ १ पूना के पति ने अपना उमराव बनाया ॥ २६ ॥ २रोटी खरच के लिये ॥ २७ ॥ ३ उस इन्द्रगढ के झूठे दावीदार को ॥ २८ ॥ ४ उत्साह (उत्सव) ५ हाथी पर ६ सत्य के सदृश ॥ २९ ॥ ३० ॥ ७उस करतबी की सहाय ॥ ३१ ॥ ८ बाकी के बावले ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

राजाउतन प्रीतिकरि रक्ख्यो, उपकार सु चिंतहु मन अक्ख्यो३४
कृष्ण१९१२ सु चिंति नैंन नीचे करि, सगो भयो कुहक मत अ-
नुसरि ॥
पहिलैं देवसिंह माधानी२२।२६, तजि आटोंनि कढ्यो अभिमानी३५
आइ सु प्रथम दग उनियारा, दुर्ग ककोर रक्खि सुत१ दारा२ ॥
उनियारा सासक सिरदारहु, विरचि प्रीति सतकारयो जिहिं बहु३६
पीछैं गो यह दग जोधपुर, धाभेयहिं मिलि धरत भयो धुर ॥
उदयकर्ण धात्रेय तनै वह, तह सूचित जसकर्ण हुतो तह ॥३७॥
ए दुव२ मिलि जैपुर पुनि आये, तँहँ प्रधान चुडाउत पाये ॥
तोलौं जैपुर ठहरिसके दुव२, पीछैं नॉरव कथन प्रबलहुव ॥३८॥
भट्ट सदासिव नृप बिद्यागुरु, फैल्यो तास प्रपच उहाँ उरु ॥
सम्मति चलन रुच्यो सीसोदन, देख्यो कहुँ और न अनुमोदन३९
देवसिंह१ जसकर्ण२ तवहि दुव२, हेरि उपाय फलाय आतहुव ॥
तँहँ फितूरं सगो हुव तेहू, रुटक लोक कुदके खिल केहू ॥४०॥
इम दससहँस १०००० बधि बल अप्पन, सज्ज फितूर भयो इत
सप्पन ॥
सुनि छुरैहु भेजि भट श्रीजित, इन्द्रगढेस सैंव हित किय इत४१
भकराम सासक तँहँ अतिभट, भिग्त सज्ज इच्छैं रन प्रतिभट ॥
देवसिंह१ जसकर्ण२ चह्यो मन, पहिलैं कोटा देस बिगारन॥४२॥
अरु नवाब कोटा जब आयो, पै तब आदर उचित न पायो ॥

॥ ३४ ॥ १ झूठे (ठग) के मत की साथ ॥ ३५ ॥ २ स्त्री ॥ ३६ ॥ ३ कोटा का धायभाई जोधपुर में था जिससे ॥ ३७ ॥ ४ नरूके प्रतापसिंह का ॥ ३८ ॥ ५ विशाल (बहुत) ६ अपनी पुष्टि करनेवाला ॥ ३९ ॥ ७ इन्द्रगढ के झूठे दावेदार की साथ ८ लुटक (लुटेरे) ९ पाकी के ठग ॥ ४० ॥ १० सर्पन (चलन) ११ वालक का हित किया ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

इहिं[1] तिहिं अनख मंडि अनुमोदन[2], कोटादेस चलो तिम तोदन[3] ४३
यह सुनि सज्जि महारावहु उत, जालम झल्ल सचिव निज संजुत
प्रबिस्यो सिविरं[4] सजव कढिपुरतें, यह बुंदिय सुनि हित अंकुरतें ४४
सुखराम जु धाभेय[5] मुसाहब, सजि गो भीर वाहिनी[6] लै सब ॥
एक १ निसाहि परयो बिच अंतर, प्रातहि जाइ मिल्यो हित तत्पर ४५
सुखराम सु कोटेस सराहयो, बुल्ल्यो हद एक १ त्व निबाहयो ॥
सचिवं[7] सचिव झल्लहु सतकारिय, बलि सत्रुन दिस चढन बिचारिय ॥ ४६ ॥

उततैं सज्जि फितूरहु आयो, वर्ग[8] नवाब बल मुख्य बनायो ॥
संग नवाब सचिव जिहिं बल जुत, आयो देसहिं करत उपद्रुत[9] ४७ ॥

कोटा दिष्ट[10] बलिष्ट बन्यौं जहँ, ठहरि सक्यो न नवाब बल सु तहँ
पुन्यापति सन छिति इहिं पाई, लक्खतीन ३०००० दम्मन[11] ठकुराई
जो बुंदेलखंड जनपदमैं[12], होनलगे बें[13] विघ्न तस हदमैं ॥४९॥
यह लहि सुद्धि[14] नवाब सचिव वड, सूचितें[15] देस गयो निज बल सह
अमल करयो जिहिं जबहि जाइ उत, मिटिगो तबहि देव १९८१ सुत छल्ल सुत[16] ॥ ५० ॥

मंगी[17] धाँरि बिगारि सबै मुख, रही न तब सु गई फटि रुखरुख[18] ॥
बलबिनु है अलि[19] बिनु जिम बिच्छिय, इम नवाब दल बिनु छल्लइ च्छिय ५१

१ इस कारण २ पुष्टना करके ३ व्यथन (दुःखी) करना चाहा ॥ ४३ ॥ ४ डेरों में ॥ ४४ ॥ ५ धायभाई ६ सब सेना लेकर ॥ ४५ ॥ ७ बुन्दी के सचिव का कोटा के सचिव झाला ने सत्कार किया ॥ ४६ ॥ ८ नवाब की सेना का बल ९ व्याकुल ॥ ४७ ॥ १० कोटा का भाग्य बलवान हुआ ॥ ४८ ॥ ११ रुपयों की १२ देश में १३ अब ॥ ४९ ॥ १४ खबर १५ सूचना कियेहुए देश में १६ देवसिंह के पुत्र दोलतसिंह का वह छली पुत्र मिटगया ॥ ५० ॥ १७ मांगीहुई धाड़ (लुटेरे) १८ जिधर मुख हुआ उधर १९ जैसे डंक बिना बिच्छू होवे तैसे नवाब की सेना बिना होकर ॥ ५१ ॥

अनालंब इम छोड अचानक, भज्यो फितूर चकित मितें मानक ॥
देवसिंह१ जसकर्णा२ दुमन दुव२, हुलकर तक्कू तंत्र जाइ हुव॥५२॥
नाथाकें नित्य दुहु२न कछु करि दिय, इक१ ग्रामहु खिचि१३न भू अप्पिय ॥
जुग३हिं राक्खि वनिता१ सुता२दि जँहँ, करत भये मालिक तक्कू कँहँ ॥ ५३ ॥
जडमति कृष्ण१९८१ दलेल१९७२ जु जायो, पुर सु करौली चकित पलायो ॥
नृप मानिकपाल रक्ख्यो नन, सुमुम्फि करन कुदिय धिंय सगपन५४
जैपुर आइ टिक्यो सु कृष्ण१९८१ जन, वह फितूर खातोली गय अथ ॥
रत्नसिंह खातोली सासक, आइ समुख छल स्वामि उपासक॥५५॥
कुल निज मुख्य मानि वह कृत्रिम, आन्यों करि उच्छव पुरमैं इम॥
भाजनं इक१दुहु२न किय भोजन, सिद्ध जतन तदपि न हुव सो जन५६
महाराव उम्मेद२०५१ मुदित मन, सनमान्यों सुखराम प्रीति सन
इक१ करेनु अरु स्याम तुरग इक१, तिम सिरुपाव इक१ इम दै त्रिक३ ॥ ५७ ॥
दिय मदमानी तदनु सिक्ख सह, आयो कुदिय पाइ सुजस यह ॥
संवत लगत दत धृति १८३२ सम्मित, यह उदंत हुव राध२ मास इत ॥ ५८ ॥
महिपति भून१ इहाँलग मानहु, जुरत वर्त्तमान२सु अब जानहु ॥

१बिना आधार१थोके योधबाला२आधीन ॥५२॥४रुपये ॥ ३॥५बुन्दी में बेटी का सम्बन्ध करना जानकर ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ६ एक पात्र में ॥ ५६ ॥ ७हाथी ॥ ५७ ॥ ८ वैशाख मास में ॥ ५८ ॥ ९ हे राजा यहाँ तक गयेहुए समय का वृत्तान्त

कुमर झलायको सु अब पातैं, बुंदी हित१ न चहैं२ रु*विघातैं२॥५९॥
नृप बुंदीस पुरोहित जो निज, पठयो जैपुर दयाराम द्विज ॥
सहित मिल्यो सु झलाय कुमर सन, मिलतहि नहि दीस्यो पहिलोमन,
करि बाहिर१ हित लोकलज्ज करि, अंतर२ भयो सछद्म नयो अरि॥
चुंडाउत जसवंतसौंहु तब, मिल्यो विप्र सूच्यो आसय सब ॥ ६१ ॥
राउत कह्यो रान रतनेसहिं, व्याहहु मेटहु बैर बिसेसहिं ॥
कह्यो विप्र बुंदिप नहि कन्या, व्याहहिं तदपि अंक३ लहि अन्या६२
पै तुम भुल्लि सबन भ्रम पारयो, विदित रानघर चलन बिसारयो॥
रानन रीति अबहु सब साहहु, व्याह इक्क १ अन्यत्र बिवाहहु ॥६३॥
कूरम६ नृप भवदीय सुतासुत, जामिन करहु७ रक्खि विच हितजुत॥
बिजयसिंह बलि मरुप८ मिलावहु, पंति असन फेला तुम पावहु६४
अग्ग बचन किय सोहु सुमिरि उर, प्रभु१ रु पंच२ लिखिदेहु जा-
जपुर५ ॥
अरु रतनेस पच्छपाती अब, सैंपथ हमहि लिखिदेहु तुमहु सब॥६५॥
सो इम रतनसिंह हम स्वामी, नरपति राजसिंह सुत नामी ॥
महिप प्रताप पुत्रसुत मानहु, जिम जगतेस प्रनत्तिय जानहु ॥६६॥
सुद्ध जैनन दुव२ पक्ख सुहावहिं, हम तिन्हँ फेलि तुम लखत पावहिं
यासैं होइ किमहु कछु अंतर, हम १ तुम२ बिच तो गंगा१ हरि २
हर३ ॥ ६७ ॥
उतके पंच देहु लिखि तुम यह६, राघवदास रावरे सुतसह॥

जानो, अब आगे वर्तमान वृत्तान्त जुड़ता है * विशेष घात करता है ॥ ५९ ॥
॥ ६० ॥ १ छल सहित ॥ ६१ ॥ २ राणा रत्नसिंह को व्याहकर ३ और कन्या
को गोद लेकर ॥ ६२ ॥ ४ राणाओं की रीति ५ एक व्याह दूसरी जगह करदो
॥ ६३ ॥ ६ जयपुर का राजा आपका दोहिता है ७ जमानत देनेवाला (प्रतिभू)
८ मारवाड़ के पति को ९ पंक्ति में रत्नसिंह का उच्छिष्ट भोजन करो ॥ ६४ ॥
१० सौगन लिखदो ॥६५॥ ११ पोता १२ प्रनाती (पड़पोता)॥६६॥ १३ वंश १४ उच्छिष्ट

ए खट६ बत्त प्रथम हम इच्छें, परिनावहिं रानहिं इन पिच्छें॥६८॥
तुम छिस्वर चालुक तव धरिधुर, पठयो बुद्धिय देन जाजपुर ॥
सुमिरन है कि वचन बिसरायो, अब सुहि सत्य करन खिन आयो६९
रावत कह्यो जोधपुर१ जैपुर२, पुनि बुन्दी३ अरु मुख्य उदैपुर ४॥
सो बुन्दी ३ सूचित तीन ३ न सम, छितिप उदैपुर ४ पच्छ करन
छमं ॥ ७० ॥

जैपुर१ दैपुर २ अन्त्यानुप्रास' १ ॥

तिन्ह सहाय हमरी सुधरै सब, ते किम अन्य सहाय चहैं तब ॥
पुनि जोलौं ससय जन पावैं, निजहु कोन तोलौं परिनावैं१ ॥७१॥
को इनकों ठिल्लै इत कूरम१, कोन कवध२धीर उत धूरम ॥
जो वसिष्ठ इनके जुग२ जानहु, तुम१ हम२ जुग२हु क्यौंन तिम
मानहु ॥ ७२ ॥

इन्ह२सहायसाहसइमउज्झहु२।३, वचि तुल्यरु तुल्यहिंक्योंबुज्झहु॥
आदिम कथित तजहु त्रय३ बातैं, विरचहि हम आतिम त्रय३बातैं७३
प्रभुकी फेलिं पतिविच पावहिं१, लेख जाजपुर दैन लिखावहिं२ ॥
सपथ लेख हम पच समप्पहिं३, यह त्रिक३सिद्ध दिखावैं अप्पहिं७४
सूचिय विप्र तबहि व्है ससय, भेद भेद प्रतिभेद तनै भय ॥
पै हम सिरहि भार जो पटकहु, इक१ तुम करहु तो न तहँ कट-
कहु ॥ ७५ ॥

झल्ल१प्रमार२कवध३रु सँमर४, चउ४कुल मुख्य भटनमैं नव९घर

॥ ६८ ॥ १ समय ॥ ६९ ॥ २ समर्थ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ३ धुर को धारण करनेवाला ॥ ७२ ॥ ४ इनकी सहायता लेने का हठ छोड़दो ५ ऊपर कही हुई छः बातों में से आदि की तीन छोड़दो, अन्त की तीन बातें हम करेंगे ॥ ७३ ॥ ६ स्वामी (रत्नसिंह) का उच्छिष्ट ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७ पशुघात ८ मेवाड़ के उमरावों में इन चार कुलों में नौ ठिकाने मुख्य हैं झालों में देलवाड़ा और गोगूँदा, पँवारों में बीजोल्या, राठोड़ोंमें बदनोर और घाणेराव,

रान सदा परिनैं१परिनावैं२, तुम पक्खी भट तेहु कहावैं ॥ ७६ ॥
त्यौं पुनि इक्क१ सलूमरिकौं तजि, सब तुम रत्न सहाय रहे सजि॥
कति तन१ सौं धन२ सौं मन३सौं कति, यहहि पक्ख चाहत मत उन्नति ॥ ७७ ॥
तो असगोत्र कहे नव१तिनमैं, व्याहहु प्रथम१।२पिसुन जिम बिनमैं
पीछैं करि स्वीकृत त्रय३प्रत्यय, भर हम भुजन देहु तोहु न न भय
इह नृप तुम दौहित्र१रु अर्भक२, तुमरो कथन तास जननी तक३
तोहुन तिन दोहु२न लै बिच तुम, सलिल मध्य रहि जिम सार स सुम ॥ ७९ ॥
इक१हमरेहि सहाय चहत यह, तदपि हष्ट६१भुज भर झेलैं तह॥
चउ४ प्रत्यर्य ए सुनि चुंडाउत, पठये लिखि रु देवगढ जव जुत८०
पितापत्र राघव यह पायो, पुनि इन कुंभिलमेरु पठायो ॥
भिंडरपति मुहुकम्म सुरूप तह, सगतावत्त हुतो परिकर सह ।८१।
दलतिंहिं संगी भटन दिखायो, इम कुहकन प्रतिपत्र लिखायो ॥
व्याह १ जाजपुर २ दुरवहि लिहाये, अमकर फेलि १ सपथ २ मनभाये ॥ ८२ ॥
दुव २ लिखि ठिगन बिधेय रक्खि दुव२, हित बहु लिखि इम छंद भेजत हुव ॥
कृष्ण१ प्रमार जु बेघमवासी, पठयो पुव्वहु दुरन्हिसु उपासी॥८ ॥

मछुवाणों मे वेदला, कोठारिया और पारसोली ये उमराव तुम्हारे (रत्नसिंह के) पक्षवाले हैं ॥ ७६ ॥ १ रत्नसिंह की ॥ ७७ ॥ २ जिस कारण से, चुगली करनेवाले ३ विशेष नसैं ४ आपके स्वीकार किये हुए सुबूत ॥ ७८ ॥ ५ यह जयपुर का राजा तुम्हारा दोहिता और बालक है ६उस बालक की माता तक ७ कमल का फूल ॥ ७९ ॥ ८ विश्वास ९ शीघ्र ॥ ८० ॥ १० परगह सहित ॥८१॥ ११ पत्र, साथ के उमरावों को दिखाया १२ ठगों ने, उत्तर में पत्र लिखाया १३ रत्नसिंह का उच्छिष्ट खाना और सौगन खाना ॥ ८२ ॥ १४ पत्र ॥ ८३ ॥

बुल्लि सो१हि पठयो तिन बुंदिय, पुनि मरपय हित मुख्य बधु प्रिय॥
सगताउत्त बिजेपुर सासन, चखतबधु सिवनाथ२मिलत मन ॥८४॥
जैत पउत्त रु अचल तनय जो, दयो प्रमार सग गतदय जो ॥
इतको बिप्र रह्यो जैपुर उत, दुव२ सूचिते आये बुंदिय द्रुत॥८५॥
दोउ२न सचिवहिं पत्र दिखायो, सुखराम सु पिक्खत छल पायो॥
जो विविक्त श्रीजित पुनि जान्यों, पुनि सम्मत सुभटन पहिचान्यों८६
कपट जानि रक्ख्यो समुचित कहि, सगताउत्त इहां सिवनाथहि ॥
कृष्ण१ प्रमार सग पठयो द्विज, नत्थूनाम बिसासपात्र निज ॥८७॥
कछुदिन रक्खि देवगढ तिनकँहँ, पठये कुभिलमेरु कृतक पँहँ ॥
भिडर आदि भटहु तब भोनन, हे रु नहे तँहँ इच्छितहा नन ॥ ८८ ॥
भूप कृतक भेजे दुव२ भिडर, किय मुहुकम्म सोहि मिस छल कर॥
तिंहिं निज पक्ख भटन मत लै तँहँ, करि सुहि लिपि पठये दोउ२
न कँहँ ॥ ८९ ॥
प्रथम१ विवाहन१ न इम जाजपुर२, कथित करन सुहि जुग२ अघ
अकुर ॥
व्याह जाजपुर रक्खि सेस चखि, छलिन पुब्ब जिम पठये पुनि छलि९०
ए उभय२हि बुन्दी जब आये, द्विज१ प्रमार२ मतिमुष्ट दिखाये ॥
श्रीजित प्रति सुखराम मुसाहब, अरज करि रु छल जानि प्रकट
अब ॥ ९१ ॥
पत्र पुरोहित दयाराम प्रति, सुहि जैपुर पठयो छल सम्मति ॥
अरु सूचिय निश्चय भो अब इम, रान रतन कुलवर्जित[१२] कृत्रिम९२

॥८४॥१निर्दय२सूचना कियेहुए ॥८५॥ ३एकान्त में ॥८६॥ ४ ठीक है यह कह कर ॥८७॥५ कृत्रिम (रत्नसिंह के पास ६ अपने घरों पर थे ॥ ८८ ॥ ७ छल ॥ ८९ ॥ ८ पाप पक्का होकर ९ मेवाड़ के उमरावों में रत्नसिंह का प्रथम विवाह कराना और जहाजपुर का देना बाकी रखकर (अस्वीकार करके)१०छल करके ॥९०॥ ११ठगाई हुई बुद्धिवाले दीखे ॥९१॥ १२कुल रहित और फरेबी है ॥९२॥

ओर न कोहु सुता जिहिं अप्पैं, इम अप्पन वंचन थिति थप्पैं ॥
प्रासैन फेलि१लिखन सत्यसपथ२, अंगीकरत एहि हुवरते अथ९३
पुनि नटिजाइ तहाँ को प्रत्यय४, कै खल करैं ओडि कुल अत्यय५
पापकरन अवधि न पापिनकै, अंत्यज फेलि६ त्याग नहि तिनकै९४
कूटँ सपथ बंचक क्यों न करैं, धी अपरन वंचन सपथ धरैं ॥
दल बंचत यातैं अब हे द्विज, न करहु तुम सगपन सम्मति निज९५
महाकितव मन्नहु मेवारन, कितवं भाव दृढ हुव बहु कारन ॥
यातैं स्वीकृत कछुहु न अक्खहु, राउत फंद टारि पय रक्खहु९६।
जो जैपुर पहिलो हित जानहु, तो इतसोंहु अधिक पुनि तानहु ॥
इम द्विज प्रति सुखराम कहाई, द्रुत मेवारन सिक्खि दिवाई ।९७।

॥ दोहा ॥

सगताउत सिवनाथ१सों, नगर बिजैपुर नाह ॥
कृष्णसिंह२ मामार कुल, पहिलैं कथितैं सिपाह ॥ ९८ ॥
हित बहिरादर इन दुहुरन, रुचिमित कछु दिन रक्खि ॥
बुंदीसन दिय सिक्ख बलि, उचित जथागमैं अक्खि ॥९९॥
दयाराम बुंदीस द्विज, जैपुर इत खिन जानि ॥
बुंदी पठवन तिलक बिधि, पुच्छिय उचित प्रमानि ॥१००॥
भेजैं अब अब इम भनत, कछवाहन चिरैं कीन ॥
बिच बिच पारे बिघ्न बहु, नियैति नवीन नवीन ॥१०१॥

---

१ ठगने को २ उच्छिष्ट भोजन करना और सौगन करना ३ स्वीकार करते हैं ॥ ९३ ॥ ४ क्या विश्वास है ५ कुल का नाश ६ अन्त्यज का उच्छिष्ट खाना ॥ ९४ ॥ ७ झूठे सौगन, ठगनेवाला क्यों नहीं करेगा ८ दूसरों की बुद्धि ठगने को ॥ ९५ ॥ ९ ठगपन ॥ ९६ ॥ १० फैलाना ॥ ९७ ॥ ११ पहिले कहे हुए ॥ ९८ ॥ १२ बाहर के आदर से १३ फिर आगा यह कहकर ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १४ विलंब १५ भाग्य ने ॥ १०१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंहचरित्रे नारवप्रतापसिंहपट्टातिरिक्तजयपुरराज्यप्रतिदिनपञ्चशतमुद्राग्रहणेन्द्रगढकृत्रिमपतिप्रादुर्भवन १ दिल्लीन्द्रयवनाप्रसत्तिनिष्कासितहैदराबादनव्वाबगाजुद्दीखाभरतपुरजयपुरनिवासाप्राप्तिहेतुप्राप्तबुन्देलखण्डपुण्यपत्तनपतिसुभटीभवन २ उक्तनव्वाबसहायससैन्यकृत्रिमदायादेन्द्रगढाक्रमणकोटाजनपदलुण्टन ३ प्राप्तबुन्दीसेनासहायकोटापतिशत्रुसम्मुखागमनश्रुतस्वदेशोपद्रवनव्वाबगमनहेतुकृत्रिमदायादपलायन ४ मेदपाटकृत्रिमराणारत्नसिंहबुन्दीविवाहहेतुमेदपाटसुभटयत्नकरणतत्कैतवप्रादुर्भावबुन्दीशास्वीकरणं चतुर्थो मयूख ॥ ४ ॥

आदित ॥ ३५४ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

उक्त रान हम्मीर सुत, भो जु उदैपुर भूप ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशिमें, विष्णुसिंह के चरित्र में, उसके प्रतापसिंह का पट्टा के सिवाय जयपुर के राज्य से पांचसौ रुपये नित्य लेना और इन्द्रगढ के कृत्रिम पति का प्रकट होना १ हैदराबाद के नवाब गाजुद्दीखां का दिल्ली के बादशाह की अप्रसन्नता से निकाला जाकर, भरतपुर और जयपुर में नहीं ठहरने देने के कारण बुन्देलखण्ड का प्रान्त पाकर पूना के पति का उमराव होना २ इस नवाब को सहायक करके फितुरी दावीदार का सेना लेकर इन्द्रगढ पर आना और कोटा का देश लूटना ३ कोटा के पति का बुन्दी की सहायक सेना पाकर शत्रुओं के सन्मुख निकलना और अपने देश में विघ्न सुनकर नवाब के चलेजाने के कारण छली दावीदार का भागना ४ मेवाड़ के कृत्रिम राणा रत्नसिंह का बुन्दी सम्बन्ध करनेका मेवाड़ के उमरावों का उपाय करना और उनका छल प्रकट होजाने के कारण बुन्दी से अस्वीकार करने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ ॥४॥ और आदि से तीन सौ चौपन ३५४ मयूख हुए ॥

वय सैसव सो भय बहैं, रहैं समय अनुरूप ॥१॥
कछु दूरहु पुरतैं निकसि, उपवन१ मृगया२ ऐन ॥
सह भोजन३ मह संक्रमन४, क्रीड़ा कछुहु करैंन ॥२॥
कृत्रिम रानाँ रत्न करि, सब पलटि सामंत ॥
तातैं रक्खत त्रास तिन्हँ, हास बिलासहु हंत५ ॥३॥
इक्क१ सलूमरि पुर अधिप, अपर२ कुरावड़ ईस ॥
भीम१ रु अर्जुन२ नाम भट, इच्छैं दुव२ सु अधीस ॥ ४ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सासक सलूमरिके केहरी मरत कह्यो,
देवगढ नाह जसवंतहिँ बलिँ बुलाइ ॥
मेरे सुत मूढ माने तिनमैं लघुहु लाल,
काढिदैहैं केतो खल तोकहँ७ कैं जैहैं खाइ ॥
छुहकसौं कुहक पिताजो कही सोही करि,
नाथहिँ निपाति अरिसिंह उर इष्ट आइ ॥
राउतके तनय अचानक यौं राउतकौं,
काढ्यो उत्तमर्ण१ अधमर्ण२ ज्यों सब बिकाइ ॥५॥
देवगढ दुर्ग सो पै ताकै रहतो न तहँ,
जेठे१ जसवंत सुत राघव प्रगल्भ जब ॥
देवगढदुर्गमैं रह्यो सो लरिवेकौं दच्छ,
सम्मत पिताको पाइ स्वीयभट सज्जि सब ॥

बालक अवस्था ॥ १ ॥ २ बाग और शिकार के स्थानों में ३ उत्सव में जा... ॥ २ ॥ ४ उमराव ५ हास्य विलास का नाश अथवा खेद है ॥ ३ ॥ ६ दूसरा... ४ ॥ ७ पीछा बुलाकर ८ छल से, छली के पिता ने ९ अनुकूल १० रावत केसरी... ...ह के पुत्र ने रावत जसवंतसिंह को ११ ऋण देनेवाला (बहोरा) १२ ऋण लेनेवाले... ...(रिये)को ॥५॥ १३ जसवंतसिंह का बडा पुत्र राघवदास बुद्धिमान १४ दक्ष (चतुर...

तापैं उदैपुरतैं अनीक भीम१ अर्जुन२नैं,
भेज्यो तँहँ केते भनैं तेहु आये भ्रात तब ॥
पैन जय पायो चक्र प्रत्युत पलायो मरिबो,
न भट मानैं न्हां क्रियाको फल होइ कब ॥ ६ ॥

॥ राजसवत्तिका ॥

सोलह१६ बीरनमैं अरिसिंहके पच्छमो एक१ सलूमरिको पति१।
अर्जुनसिंह कुरावड ईस२ बतीस३२नमैं रह्यो मुख्य महामति ॥
काज बडो इक१ यानैं करयो स्मृतिमैं न फुरयो सो कथा क्रम
समति ॥
है कथनीय सो जात कह्यो इम औरहु ठौं क्रम तूटी कथाकति७
बेढ्यो उदैपुरकौं बलतैं जब माहजि संध्या महाबल जाइकैं ॥
भो पुरमाँहिं महा दुरभिच्छ न्हां प्राभृत लीजे कह्यो भय पाइकैं
मद्यप सालक माहजिको बिलसैं परनारिन नित्य बुलाइकैं ॥
साहस बात बिगारिदे सो उत१की इत२ साईंस ऊपर आइकैं॥८॥
बाहिर माहजिके बलमैं लहि अर्जुन कोउक मित्र पटार्यंय ॥
औरहि आप अजस्रं उहां दमैं देषो कहैं सु चहैंनहि निर्दय ॥
रत्नके पच्छमैं राचिरह्यो वह सालक सप्याको आगम अैत्यय ॥
एक उपायन को न उपाय भयो जिहिं अग्ग बिसेस छपो भय ॥९॥

१ भीमसिंह और अर्जुनसिंह दोनों भाई २ सेना बलटी भागी ॥ ६ ॥ ३ इस समय यह ठिकाना सोलह उमरावों में है ४ कथा के क्रम के साथ याद नहीं आया ५ यह कहने योग्य है इस कारण कहा जाता है ६ इसप्रकार अन्य जगह भी कितनी ही कथा छूटगई है ॥ ७ ॥ ७ सेना से उदयपुर को घेरा जब ८ भेट ९ माधजी का साला १० दुष्ट की वार्ता ११ हठ करके ॥ ८ ॥ १२ सेना में १३ अर्जुनसिंह १४ किसी मित्र के घर भ१५निरन्तर१६दंड देना कहै सो १७ फितूरी राणा रत्नसिंह के १८ शत्रु का नाश करनेवाला तथा दुष्ट के आगम की १९ भेट (फौजखरच) देने का कोई उपाय नहीं हुआ ॥ ९ ॥

जानिकैं अर्जुन लंपट जाहि [1]निसागम नारिको बेस बनाइकैं ॥
पूगिबो सीखि छली पहिलैं जिम लज्जित त्यौं [2]तममैं तहँ जाइकैं ॥
ठानि प्रमादी महाठिगनैं नखरेसौं निरंतर प्याले पिवाइकैं ॥
संहरि ताहि [3]पटालय स्वीय [4]अतित्वर आइ परयो मिस पाइकैं ॥१०॥
लोटि कबूतर [5]लोटनलौं सु [6]पिचंडमैं व्याजके सूल पसारिकैं ॥
ज्यौं निज प्रान [7]पयानँ जनाइ रह्यो अति [8]आतुरह्वै छल रारिकैं॥
दीनौं [9]स्वकीयन दाँत्रनसौं [10]जठरांऽप तदीय [11]प्रतीकहि जारिकैं ॥
एक१ही दाहनको [12]उपचार बन्यौं दृढ [13]प्रत्यय सत्य उबारिकैं ॥११॥
आदिम जामिनि [14]जाम१ गये पहिलैं पहिलैं [15]पटुकृत्यँ सबै करि ॥
स्वोदर [16]दाहत स्वीय सखाहु लख्यो [17]बिधिसौं बिलख्यो बिधिसौं लरि ॥
हारिकैं दाह अनंतरहू जिम अंग थके तिम नैंन पलैं [18]जोरि ॥
रीति घटी खटद् [19]सेस रही तब निंद लही [20]छलसिंधु वहै तरि।१२।
[21]हारवँ भो अरुनोदय होतहि स्वामिको सालक काहू हन्यौं कहि॥
[22]स्वामिनी अन्न तज्यो सुनिकैं [23]व्रत मारनहारके मारनको बहि ॥
माहजि कोपि तहाँ तियतंत्र उठाइ [24]फैंटा जिम पुच्छ दव्यो अहि ॥

---

१ सन्ध्या समय स्त्री का वेश करके २ अन्धेरे में, लज्जित स्त्री के समान जाकर ३ उसीके डेरे में उसको मारकर ४ अपने डेरे में शीघ्र आकर ॥ १० ॥ ५ लोटन कबूतर के समान लोटकर ६ पेट में मिसकी पीड़ चलाकर ७ अपना प्राण जाना जनाकर ८ घबराकर ९ अपने सेवकों ने दांतुली से १० उसके पेट के ११ अवयव (हिस्से) को जलाया १२ एक जलाने का इलाज ही १३ सत्यता को बचाने का विश्वास हुआ ॥११॥१४ रात्रि की पहिली प्रहर जाने से पहिले १५ उस चतुर ने सब कार्य किया १६ उसका पेट जलाते समय उसके मित्र ने भी देखा १७विधि (रीति) से लड़कर विधि से रोया १८ नेत्रों की पलकें बन्द करके १९ बाकी २० उस छल के समुद्र को तिरकर ॥ १२ ॥ २१ सूर्य उदय होते ही हाहाकार शब्द हुआ २२ माहजी की स्त्री ने २३ नियम धारण किया २४ फण

उच्चरयो जंबुक१ ज्यों अरिसिंह मराइ मंयद२न मोगें कितीमहि१३

॥ घनाक्षरी ॥

रैनैपच्छी झाला देलवारापति राघोदेव१,
आदिक उहाँ हे किते तेहु सो सुनत आइ ॥
बोले धूर्त्त चुडाउत अंर्जुन जुवति वेस,
मारे होइ मोंघ तोकें लेहु हमरे कटाइ ॥
हो हंरि खिज्यो १ रु सिर ठोकर प्रहार पायो२,
लेनलागो सपथँ उदैपुरको अपनाइ ॥
तांके मित्र आइ तँहँ संध्याके सुमट सूचो,
होत प्रभु कोप क्यों अंनागसपैं हाइ हाइ ॥१४॥
साँझके अंतरही अर्जुन उदर सूल,
चालन लगे अति असाध्य न रुके बिचारि ॥
दानादिक कृत्य अंवसानके सब कराइ,
जठर तदीय हम दांत्रनसों राख्यो जारि ॥
जाम१हु गई न राति भोर सब ठौं निज बैं,
दाहिहु चुके तब मुंधा तो लेहु सिरदारि ॥
स्वांमिनीके सोदरतो सूतेसमै सभवत,
मध्यछाके कोऊ गो निसीथें पीछें खल मारि ॥ १५ ॥
हाकाभो जहाँलों सब तांके पास हे हमहु,
दासहीके डेराहे पर्यो सो कछु सेसदम्म ॥
भैंनबिनु लोटत रह्यो सो सबराति भुव,

१सिंहों को मराकर ॥१३॥२रत्नसिंह के पक्षवाले३अर्जुनसिंह ने स्त्री का वेस करके ४झूठ होवे तो ५ हमारे मस्तक कटवा लो ६ क्रोध किया हुआ सिंह या और ७ सौगन ८ अर्जुनसिंह के मित्र ने ९ दोष रहित पर ॥ १४ ॥ १० अन्त समय के ११ दातुन्नियों से १२ अग्नि १३ झूठ होवे तो मस्तक कटा लो १४ आपकी स्त्री के भाई को तो १५आधी रात पीछे ॥१५॥१६अर्जुनसिंह के पास १७ बिना चेत

भूलिहु न आनों नाथ हेलनमैं तास भ्रम ॥
रामर०१।४ प्रभु ऐसैं व्है निरागस वचिहु रह्यो,
संहरि सपत्नकों दिखानों उदासीन सम ॥
भार उपकारकेसों स्वामीकों नमाइ भयो,
बंचकता१ बीरता२मैं तैसो को पुरोगतम ॥ १६ ॥
ईस अरिसिंह सीस अबेदयो आगस न,
बित्त जो लयो सो दयो दंडमैं डरि बिसेस ॥
ऐसी ठानि अर्जुन कुरावड़के चुंडाउत्त,
पायो दाह दुख न गुमायो पै प्रभु प्रदेस ॥
राघव१ सु मार्‌यो जसवंत२ सु बिडार्‌यो रान,
आदर्‌यो सलूमरि१ कुरावड़२ जुग२हि एस ॥
पीछैं रान मार्‌यो सो अंजा१९।१२नैं यों उदैपुरमैं,
बर्त्तमानमैं है अब हम्मीराख्य बसुधेस ॥१७॥
ढंग इत जैपुर कही जो दयारामद्विज,
बनि न सकी सो जसवंतसौं उचित बात ॥
सो तजि उपाय तब भेजिबे तिलक साज,
सूची कूरम्मनसौं दुहुँ२घाँ हित दरसात ॥
जैपुरपैं दिष्टनैं प्रकोप करिराख्यो जब,
यातैं माँहिं माँहिं मचे पंचनमैं उतपात ॥
नारव प्रतापसे बिराजैं जहाँ बंचक तो,
क्यौं न परैं ताही ठाम घरघर घोर घात ॥

१ अपराध में २ हे प्रभु रामसिंह ३ अपराध रहित ४ शत्रु को मारकर ५ उपकार के भार से ६ अत्यन्त अग्रणी ॥ १६ ॥ ७ अपराध नहीं आने दिया ८ उस राघवदास को मारा ९ निकाला १० बुन्दी के पति अजितसिंह ने अरिसिंह को पीछे मारा ११ हम्मीरसिंह नामक राजा ॥१७॥ १२ भाग्य १३ ठग

सघन बिगारिबेकों राजगढवारो सोहि,
चोर१कों लगायें गृहस्वामि२कों जगावें चाहि ॥
अैसी कछु मोहिनी मचाई कुहकेस उहाँ,
जाहि वहिकावें सो स्वकीय करि मानें जाहि ॥
फोरि बहुरे१कों बखतावर२पें डारें फंद,
बाधि हित ता१सों बहुरे२को गहिबो निबाहि ॥
रानी१कों रुठाई नाथाउत्त२न निकारें नीच,
तिन१सों प्रतारें चुंडाउत्त२न मन मुधाहि ॥१९॥
मित्र बहुरे१सों जसवत२की मति मुराइ,
ताहि द्वार ता१सों नृपमाता२की मुराइ मति ॥
गूढलै निदेस ता१को विप्र२ गहिबेकों गढ,
माँहि रहिबेकों गाढ कूरम बुलाइ कति ॥
राजागार द्वार सब ओरके कराइ रुद्ध,
गोपुर जराइ सब पत्तनके गूढगति ॥
राजाउत्त तीन३हि जलेबचोक सज्ज राखि,
जपी कहि ज्यों न जाइ यों रहो प्रबुद्ध अति ॥ २० ॥
जिनमें प्रवीर धूलाधीसें रघुनाथ१ जानों,
नंदन दलेलको जो छलमनको अनुज ॥
सारसोप ईस दूजो२ विक्रमदिनेस२ सज्ज,
नीती फतमल्लको जो रत्नसिंहको तनुज ॥

१ ठगों के पति ने २ उसको अपना करके ३ खुशालीराम बहोरे को फोड़कर झलाय के कुमर बखतावरसिंह पर ४ अप्रसन्न करके ५ नाथावतों से चुंडावतों को मिथ्या ही अपने मन से ताड़ना कराता है ॥ १९ ६ गुप्त आज्ञा लेकर ७ राजा के महलों के सब ओर के द्वार ८ बन्द कराकर ९ नगर के द्वार १० सावधान ॥ २० ॥ ११ धूला नगर का पति १२ दलेलसिंह का पुत्र और लछमणसिंह का छोटा भाई १३ विक्रमादित्य

भूलिहु न आनों नाथ हेलनमैं तास भ्रम ॥
राम२०१४ प्रभु ऐसैं ऽहै निरागस बचिहु रह्यो,
संहरि सपत्नकों दिखानों उदासीन सम ॥
भार उपकारकेसों स्वामीकौं नमाइ भयो,
बंचकता१ बीरता२मैं तैसो को पुरोगतम ॥ १६ ॥
ईस अरिसिंह सीस अबेदयो आगस न,
बित्त जो लयो सो दयो दंडमैं डरि बिसेस ॥
ऐसी ठानि अर्जुन कुरावड़के चुंडाउत्त,
पायो दाह दुख न गुमायो पै प्रभु प्रदेस ॥
राघव१ सु मार्यो जसवंत२ सु बिडार्यो रान,
आदर्यो सलूमरि१ कुरावड़२ जुग२हि एस ॥
पीछैं रान मार्यो सो अंजा१०११२नैं यौं उदैपुरमैं,
बर्त्तमानमैं है अब हम्मीराख्य बसुधेस ॥१७॥
ढंग इत जैपुर कही जो दयारामद्विज,
बनि न सकी सो जसवंतसौं उचित बात ॥
सो तजि उपाय तब भेजिबे तिलक साज,
सूची कूरम्मनसौं दुहुँ२घाँ हित दरसात ॥
जैपुरपैं दिष्टनैं प्रकोप करिराख्यो जब,
यातैं माँहिं माँहिं मचे पंचनमैं उतपात ॥
नारव प्रतापसे बिराजैं जहाँ बंचक तो,
क्यौं न परैं ताही ठाम घरघर घोर घात ॥

१ अपराध में २ हे प्रभु रामसिंह ३ अपराध रहित ४ शत्रु को मारकर ५ उपकार के भार से ६ अत्यन्त अग्रणी ॥ १६ ॥ ७ अपराध नहीं आने दिया ८ उस राघवदास को मारा ९ निकाला १० बुन्दी के पति अजितसिंह ने अरिसिंह को पीछे मारा ११ हम्मीरसिंह नामक राजा ॥१७॥ १२ भाग्य १३ ठग

सघन बिगारिबेकों राजगढवारो सोहि,
चोर१कों लगावें गृहस्वामि२कों जगावें चाहि ॥
ऐसी कछु मोहिनी मचाई कुहकेस उहाँ,
जाहि बहिकावे सो स्वकीय करि मानें जाहि ॥
फोरि बंहुरे१कों बखतावर२पैं हारें फंद,
बधि हित ता१सों बहुरे२को गहिबो निबाहि ॥
रानी१कों रुठाई नाथाउत्त२न निकारें नीच,
तिन१सों प्रतारें चुंडाउत्त२न मन मुधाहि ॥१९॥
मित्र बहुरे१सों जसवंत२की मति मुराइ,
ताहि द्वार ता१सों नृपमाता२की मुराइ मति ॥
गूढलें निदेस ता१को विप्र२ गहिबेकों गढ,
माँहि रहिबेकों गाढ कूरम बुलाइ कति ॥
राजागार द्वार सब ओरके कराइ रुद्ध,
गोपुर जराइ सब पत्तनके गूढगति ॥
राजाउत्त तीन३हि जलेबचोक सज्ज राखि,
जपी कहि ज्यों न जाइ यों रहो प्रबुद्ध प्रति ॥ २० ॥
जिनमें प्रवीर धूलाधीसें रघुनाथ१ जानों,
नंदन दलेलको जो छलमनको अनुज ॥
सारसोप ईस दूजो२ विक्रमदिनेस२ सज्ज,
नाती फतमल्लको जो रत्नसिंहको तनुज ॥

---

१ ठगों के पति ने २ उसको अपना करके ३ खुशालीराम बहोरे को फोड़कर कछवाह के कुमर बखतावरसिंह पर ४ अप्रसन्न करके ५ नाथावतों से चुंडावतों को मिथ्या ही अपने मन से ताड़ना कराता है ॥ १९ ६ गुप्त आज्ञा लेकर ७ राजा के महलों के सब ओर के द्वार ८ बन्द कराकर ९ नगर के द्वार १० सावधान ॥ २० ॥ ११ धूला नगर का पति १२ दलेलसिंह का पुत्र और लछमणसिंह का छोटा भाई १३ विक्रमादित्य

तीजो३ बखतावर३ म्हलापको कुमर तत्थ,
मानों तय३ लैकैं सावधान अपनैं मनुज ॥
रुद्धकरि राहकों जलेबचोकमैं ए रहे,
दीसे घोर भूसुर१के रोकिबेकौं भूदनुज२ ॥२१॥
रीति सोही स्वीकरि प्रतापके पढाये रहे,
नाथाउत्त संसदके अंतर धवल धाम ॥
इनमैं पुरोगं रत्नसिंह१ पुर चोमूँ ईस,
दूजो२ पुर सामोदेस नाम सुरतान२ नाम ॥
भिन्न मत केते भनैं इनकों तटस्थ इहाँ,
कोऊ चुंडाउत्तन बुलायो सूचि इहिं काम ॥
बिद्यागुरु भट्ट१कों निर्मित्त राखि नारव२नैं,
रूठि पकरायो यों बहोरा कुसहालीराम ॥
पीपलदा काका सत्रुसालकों दयो लै पुब्ब,
चित्त सु बिरोध बखतावर कुमर चाहि ॥
मारिबे लग्यो ह्हाँ द्विजको सो छलघात मंडि,
दुर्बचन पावक प्रयोग पाती उर दाहि ॥
बिक्रमदिनेस तब कुमर निवार्‌यो बदि,
मंत्री सब जानैं मर्म अबहि नमारो याहि॥
मंत्र३।१ कोस४।२ दुर्ग५।३नको पासों सब पाइ मर्म,
मारिहैं सहज पीछैं कोउक बिधि समाहि ॥ २३ ॥
माधव महीप जब जाँटतैं समर जीत्यो,

---

१ ब्राह्मण के कैद करने को २ भूमि के दैत्य ॥ २१ ॥ ३ प्रतापसिंह के सिख ४सभा के भीतर महलों में रहे ५ अग्रणी ६ सामोद का पति ७ प्रति तथा क्रोधी तथा निद्रायुक्त ८ कारण ॥ २२ ॥ ९ खोटे वचनों रूपी अ से हृदय रूपी पत्री को जलाकर १० यह ब्राह्मण मंत्री सब मर्म जानता जिससे ॥ २३ ॥ ११ भरतपुर के जाट से

जैपुरके जोध परे धूलापति आदि जब ॥
राव१ रु बहादुर२ उभै२ पद मिलित राखि,
एह *उपटक पायो बिक्रम तरनि तब ॥
बिप्र कुसहालीराम तामैं भो निमित्त बुध,
यातैं वीर बिक्रम सो चिंति उपकार अब ॥
मृत्युमुख पैठो यौं निकास्यो द्विज मंत्री कुल१,
धर्म२ सुद्ध व्है जो भूलिजाइ उपकार कब ॥ २४ ॥
पीछैं राजकाज पूछिबेकी बात बंध करि ,
देवगढ बासिनकौं मंतु कछु दै दबाइ,
भाखी जो रहो तो लहो अपनैं पटाकौ भोग,
आहु न बुलायैं बिनु अंगजाकौं अपनाइ॥
रानीको पितासौं पूछिबोहू करि तस रुंद्ध,
भाख्यो खिड्किद्वार न बुलावहु जेनक१ भाइ२॥
सूनु दुव१ रावरे न राखहु निज समीप,
संसद रहन देहु पचनमैं पधराइ ॥ २५ ॥
ऐसो फंद डारिकैं नरूकौ रहि दूर आप,
राजकाज बाहिर जे भेदिक समस्त भट ॥
भाख्यो भूप माधव जो मंत्री निज कीनों मुख्य,
बिप्र कुसहालीराम साधैं काम नीति बट॥
राजाउत्त बचकनें भेदिकैं पिहित रानी,
मल्लिनाग मंत्रमैं जो हत पकरयो प्रकट ॥
यातैं अधकारमैं न रहिबो उचित अहो,
नगरतैं निकासि निवारैं द्विज भै निपट ॥२६॥

---

*राव बहादुरकी पदवी१ विक्रमादित्यने पाई२कारण॥२४॥३दोष४पुत्रीको५पूछना बंध करके६पिता को और भाई को खिड़की पर मत बुलाओ७सभामें॥२५॥८नरूका प्रतापसिंह९ठगों ने१०गुप्त११चाणक्य के मन्त्र में(नीति में)१२ब्राह्मणका भय ॥२६॥

राजाउत्त१ नाथाउत्त२ चुंडाउत्त३ महिँराखि,
सेसन सिखाइ यौँ खुलाइ पुरके अररं ॥
बाहिर निकसि स्वीयस्वीय घरतैं बुलाइ,
सेसेसेस सुभट प्रताप रहि अग्रसर॥
रानीसौँ कहायो राजाउत्त जे चहत राज्य,
तिनको भरोसा न करो ए गिनौं सच्चुतर ॥
बिप्र नयपंडित जो रावरो हितहि वंछैं,
ताहि निकसावहु नतो हैं हम पापपर ॥ २७ ॥
भेज्यो जो बिदग्ध मरहट्ट१न समुह भूप,
भेज्यो जोहि मिच्छ२नके सम्मुह दे भुजभार ॥
भेज्यो अंगरेज३नके सम्मुह उचित भाखि,
तूही यह राजपद राखिवे अति उदार ॥
राजा१ भट२ सचिव३ प्रजा४ कौं थिर राखिवेको,
जाकैं पन ताहि रोकैं जे जनैं पिहित जार ॥
यातैं बुधँ बिप्रकौं छुराइ करो मंत्री आप,
हाहा नहितो व प्रतिकूल भासैं होनहार ॥ २८ ॥
फीरोजाभिधान सु महावत बुलाइ फिरि,
मिच्छ राजाउत्तन रखायो राजकाज माँहि ॥
बिप्र पकरायो सो बिरोध बिसराइवेकौं,
आप टरिबैठे अब रानीतैं प्रनत आँहिं ॥
बंचक कहाइ द्विज कारातैं निकासिबेकी,
नारवं प्रताप इत कृत्यमैं रहत नाँहिं ॥

१ कपाट २ अपने अपने ३ यार्को के उपयोगी (उचित) सुभटों को बुलाकर [प्र]तापसिंह अग्रणी रहा ४ नीति चतुर ॥ २७ ॥ ५ चतुर ६ छिपेहुए जार से [उ]त्पन्न है ७ पंडित ब्राह्मण को ॥ २८ ॥ ८ फीरोजखां नामक ९ नम्र है.

लोभिनकौं मेरिकैं उपद्रव करन लागो,
जितमित जाके जोध लूटिबेकौं चढिजाँहिं ॥ २९ ॥
विप्र गहिवेकी पहिलैं जो लिखी वचकनैं,
रानीपास अरजी१ हुती सो वेग निकराइ ॥
एक१ लिखि पत्र निजनामको नवन उभै२,
पत्र कछुंपाज पुर बाहिर दये पठाइ ॥
यौं लिख्यो उदत तुमहीकौं वचि वचकनैं,
विप्र पकरायो लेहु प्रत्यय लिखित पाइ ॥
हेरि छित यातैं पुर पैठहु प्रताप हनि,
विप्रहिं कढाइदेहैं इत हम भद्रभाइ ॥ ३० ॥
सेखाउत्त१ खगारूत्त२ आदि कछवाह सूर,
बाहिर हुते जे पत्र ते दुम२ लखि विचारि॥
सेनानी हमीरदेव वसी राजसिंह१ सान२,
उत्तेजक सूर१ सस्त्र २ पैनें करे धक धारि ॥
बोल्यो करी कुहक प्रताप सो लखहु वीर,
डाकी कढिजैहैं अब राज्यपैं गजवपारि ॥
तातैं तुम संग हम अज्जहि अनेहताकिं,
मित्रन विरोधी महा अधमकौं डालैं मारि ॥ ३१ ॥
पत्र सु महावतकौं बाहिरके पचनमैं,
आतहि विचार्‌यो घात नारवपैं क्रुद्ध आति ॥
पत्र राजाउत्तन पठाइ इहिं अंतरमैं,

॥ २९ ॥ १ वृत्तान्त २ ठग ने ठग कर ३ इस लिखावट को लेकर विश्वास पोओ ४ राजगढ़ के नरूका प्रतापसिंह को मारकर ५ कच्छवाह की रीति से ॥ ३० ॥ ६ राजसिंह ने सान से प्रेरेहुए शूर और शस्त्रों को तीक्ष्ण किये ७ भक्षण करनेवाला (पापी) ८ गजप पटक कर ९ समय देखकर ॥ ३१ ॥

नौरवकौं[1] नीचन जनाइ दीनी गूढ गति ॥
दूर कछु भेजि यातैं आपुनैं पिहित दूत[2],
पीछे बुलवाये ख्यात दोरतजे आपप्रति ॥
आइ तिन भाखी राजगढकौं लगे आहित,
राखिहो मही तो इहाँ धरिहै नृपहु[3] रति ॥ ३२ ॥
सोहि सुनि लैकै मुख्य मुख्य उपहार[4] संग,
ओर प्रसरेही[5] राखि डेरन सहित एह ॥
कुंचकरि ताही निस चढिकैं प्रताप कढि,
छद्मघात[6] भीत छद्मी गो निज कथित गेह ॥
अयुत१०००० अनीकको अधीस राजसिंह १ अरु,
सेखाउत्त१।२ खंगारोत्त२।३ हे मिलि दृढ सनेह ॥
ताँकतेही[7] तदपि रहे छद्मघातक त्यौं,
पारदलौं[8] कढिगो प्रताप लै सु बिधि[9] लेह ॥ ३३ ॥
बाहिरके पंचन प्रताप कढिगो बिचारि,
सर्प१ हि गुमाइ लेखा[10]२ कूटिबेकौं सज्ज बनि ॥
मार१लूट२ घाँघाँ[11] तिन अधिक मचाई बिप्र,
सचिव निकासिबेकौं जोरकी मरोरैं[12] जानि ॥
आये पुर चाहैं तिन्ह राजाउत्त रोकि अध्व[13],
पैठन नदै ए प्रतिकूल पच्छभाव भनि ॥
रहै तदपि व्याकुल प्रजा सब पुकारी हाइ,
क्यों न द्विज काढहु रे तुम१ हम२ भद्रं[14] तनि ॥ ३४ ॥

---

१ प्रतापसिंह को २ छिपेहुए दूत ३ जयपुर का राजा भी प्रीति करेगा ॥ ३२ ॥ ४ सामग्री ५ फैलेहुए ६ छलघात के डर से राजगढ चलागया ७ देखते ही रहे ८ पारा के समान ९ ब्रह्मा के श्रेष्ठ लेख ॥ ३३ ॥ १०रेखा (लकीर) ११ दिशा दिशा (ठाम ठाम) १२ मरोड़ (घमंड) करके१३मार्ग १४तुम्हारा हमारा कल्याण फैलाकर ॥ ३४ ॥

हाहाकार सुनि सु पिताके मत बाहिर०हे,
हेरि अवकास भगिनीको गुढलै हुकम ॥
सूनु लहुरो जो जसवंतको गुपालसिंह,
लेगो निज आलयसो विमहिं छुराइ छम ॥
ताहि सतकारसौं कितेक दिन राखि तत्थ,
ताके गेह पीछैं पहुँचायो जाइ सूरितम ॥
विप्लव निवारयो तब बाहिरके पचनपे,
पुरमैं न पैठनदे राजाउत्त सत्रुसम ॥ ३५ ॥
अररं न खोलैं ए भलायके कुमर१ आदि,
अैबो चहैं नारव प्रतापको बहुरि अत्र ॥
जाइ घर नारव न आयो देस१ काल२ जानि,
पापिननैं जदपि बुलायो दै प्रचुर पत्र ॥
वेला तिहिं प्रत्युत प्रतापको प्रताप बढ्यो,
लेख जवनेसके लहे छिति१ चमर२ छत्र३ ॥
नालकी४ नृपत्वं५ त्रिहजारी३००० उपटक आदि,
अैसैं घर बैठैं भयो भूपति अघ अमत्र ॥ ३६ ॥
पहिले समय कोपि बीकानेर भूप पर,
जोर हारि माँगे साह सौंहसके दम्म जब ॥
रुप्पय कतिक लक्ख देकैं अवसेस रहे,
तिनमैं प्रमेयं दयो बदी इक१बधु तब ॥
देयं सेस बहुरि दये न कछु ज्यार्ज करि,
कोल टरिबेतें यो बलिष्ठ रुकिजात कब ॥

१ बाहिर का छाने हुक्म लेकर २ रावत जसवन्तसिंह का छोटा पुत्र ३ समर्थ ४ अत्यन्त चतुर ५ राज्य का उपद्रव ॥ ३५ ॥ ६किंवाड़ नहीं खोले ७बहुत पत्र देकर ८ उस समय उलटा प्रतापसिंह का प्रताप बढा और बादशाह की लिखा वट से ९ राजापन लिया १० पाप का पात्र ॥ ३६ ॥ ११ वध के रुपये १२प्रमाण (रुपयों के प्रमाण में) १३ देने योग्य बाकी के रुपये १४ मिस करके

नाम नहिँ जान्यौं पै *कबंध जो जवन करयो,
सो नजीब खान सुत मान्यौं सौंपि गेह सब ॥ ३७ ॥
बीकानेर नृपको [१]सनाभि जो तजि स्वबंस,
कष्ट लहि [२]कारामैं कबंध बजिबो बिहाइ ॥
कथित नजीबखान नामक नबाब करयो,
पुत्र जाकौं अंकथित साहको हुकम पाइ ॥
या समय ताको उहाँ चलन बढ्यो अधिक,
अयुत१०००० तुरंगनसौं [३]बाहिनींकौं अधिकाइ ॥
जैपुरके जीतिबेकौं साहको लै सासन सो,
[४]अज्जर्पन लज्ज छोरि सज्ज भयो अनखाइ ॥३८॥
केते कहैं सो सुत नजीबको नजब नाम,
सूचैं के नजीबसोही नाँ यह [५]जनकं नाम ॥
दाबे देस दिल्लीके छुराइबेकों सज्जि दल,
प्रस्थित भयो सो और जैपुर करन काम ॥
साहसौं लिखाइ दै कह्यो जो अधिकार सब,
नारव नरेसकों बुलाइ तानैं सह [६]साम ॥
दिल्ली [७]छितिं दाबी जाटसो तिंहिं अधिक दैकैं,
अमल [८]प्रतापको करायो तहाँ अभिराम ॥ ३९ ॥
संबतके एकऊन बीसम१९ सतक१०० समै,
कतिके गये१ रु भये२ देखो [९]नये२ राज्य कति ॥
पुरायापुर१ राघोगढ२ सोपुर३ नलपुरा४दि,

*जिसका नाम नहीं मालूम हुआ उस राठोड़ को यवन किया ॥३७॥ १सपिंडी (सात पीढी के भीतर का भाई) २कैद में राठोड़ बजना छोड़कर ३सेना को बढा कर ४आर्यपन की लज्जा छोडकर ॥३८॥ ५ पिता का यह नाम नहीं है ६मिलाप के साथ नरूके राजा प्रतापसिंह को बुलाकर ७ भूमि ८ प्रतापसिंह को ॥३९॥ ९ उन्नीस सौ के शतक में कितने ही राज्य चलेगये और कितने ही नये हो

ऐसैं वडे१ छोटे२ घनैं विगरे प्रमत्त अति ॥
लवपुर१ अलपुर२ ज्योंही टोंक३ जावरा४ रु,
पट्टनि५ पुरोग यों नये के भये भूमिपति ॥
उक्त काल नारव प्रताप इनहीमैं एह,
मिच्छनकों वंचिकैं महीप वन्यों छद्ममति ॥ ४० ॥
अल्प मास याकै पहिलें हो मैंचहेरी१ आदि,
तानें देस१ काल२ छल३ वल४के सहाय तव ॥
जोर लहि छोटे१ वडे२ वावन५२ गढन जीति,
स्वाँप कीनो दिल्ली सन दक्खिन२।३ प्रदेस सव ॥
अंलपुर१ राजगढ२ तिमहि तिजारा४ आदि,
याके वसवर्ती भये सहर अनेक अव ॥
कर्मध्वज मिच्छ वा प्रतापकों सुहृद कीनों,
जैपुरकी जीतिलैन नजव रुक्यो न जव ॥ ४१ ॥
दावे कछवाहन जितेक उत दिल्ली देस,
जीति तिन्ह जैपुर भू जीतिवो नियत जानि ॥
मित्र वहुरातैं भेदि सचिव महावतकों,
मित्र राजाउत्तन नयो जो लयो उर मानि ॥
सग तस दैकैं सव वैभव मुसाहवको,
तीनलाख३००००० मुद्रा दे उपायनकों नय तानि ॥
पठयो जवन सो प्रतारक जवन पास,
भाख्यो जाइ टारो भय ह्वैहैं नतो छिति हानि ॥ ४२ ॥
रानी१को निदेसलै सहाय जसवत२ राखि,

गये१लाहोर२अलपुर३झालरापाटन आदि४यवनों को ठगकर ॥ ४० ॥५ माचैडी ६अलपुर ७ आधीन ८ कमधज (राठोड) से यवन होनेवाला ९ मित्र बनाया ॥ ४१ ॥ १० जयपुर की भूमि निश्चय ही जीतना जानकर ११ नजर करने को, नीति फैलाकर१२माखना करनेवाले यवन के पास इसयवन महावतको भेजा॥४२॥

तब राजाउत्तन महावत यों भेज्यो ताम ॥
प्रीतिपत्र भेज्यो संग यों लिखि प्रतापप्रति,
करिये नरेस१को रु मित्रन२को यह काम ॥
जैबोहु न भावतो महावतके गेह जाको,
सो अब समुह आइ साधिबेकों छल साम ॥
मिलि उरलाइ एक१ गजपैं महावतसौं,
बाम२ अध३ बैठि लैगो मीन१ ज्यों बँडिस२ बाम ॥४३॥
बस्त्रालय५ आइ तास आसन अधर६ बैठि,
पीछैं जाइ संग लै जँवनकों जवन पास ॥
आन्यों उपहार८ उक्त भेट सु१ कराइ इभ२,
अस्व३न समेत रु दिखाइ आगमन आस ॥
पीछे आइ भाखी यों महावत प्रतापप्रति,
दाबे देस जैपुरके छोरहु जिम स्वदास ॥
लेहु नित्य मुद्रा सतपंद्रह १५०० नृपालयतैं९,
ठहैन जिम हे प्रबुद्ध आपुनें मिलत हास ॥४४॥
जोरि तँहँ बंचक प्रतापनैं कपट जाल,
घर बिधि ठानि घोर करन बिसासघात ॥
लोभी उक्त मानि ताकों आगरानगर लाइ,
पिहित११ उपाय कर्यो ताहीको पुनि निपात१२ ॥
तोप१ गज२ बाजि३ द्रव्य४ आदिक बिभव ताको,
दाबि सब राख्यो प्रतिकूलता दृढ दिखात ॥

---

१ तहां २ जयपुर के राजा का ३ नीचे बैठकर ४ कांटा मच्छी को उलट लेजावै जैसे ॥ ४३ ॥ ५ डेरे में ६ गादी के नीचे बैठकर ७ महावत को उ नवाब के पास लेगया ८ सामग्री लाया था सो ९ राजा के घर से, जिस हे चतुर अपने मिलने की हसी नहीं होवे ॥ ४४ ॥ १० ठग ने ११ छिपेहु उपाय से १२ उस महावत को मारडाला

ऐसेही प्रकार सेखाउत्तनके देस इत,
ओज फैल्यो तिनको मनोहरनगर आत ॥ ४५ ॥
तिनकों दबावन१ फबावन सचिवता२ रु,
राजाउत्त कुमर चबावन३ व्हे जमराज ॥
पत्रन मिलाइ निज मोचक सुहि गुपाल,
कीनों खुसहालीराम वहुरा लखहु काज ॥
रानीकों मनाइ बखतावर इनन रीति,
टाटीकोसो ओट सेखावाटीको बिरचि व्याज॥
बाहिरके वीर भेजिवेकों पुरमैं बुलाइ,
सीखदेन तिनकों सज्यो अब कपट साज ॥४६ ॥
नाथाउत्त१ निखिल समज्ज्यासद्म राखे सज्ज,
चक्रपति२ खगारोत३ ए थित जलेबचोक ॥
कुमरको काका४ वेग तबहि बुलायो वह,
घातक बिचारि इन्द पास राख्यो ताही ओक ॥
राजद्वार बाहिर बजारमैं सकल सेना५,
राखी करि मज्ज कढिजाइ तो रचन रोक ॥
सरदकोडोढी पथ राउत्त६ पठायो सद्म,
बैन बाँधिराखी दुहुँ२घौँ भारि प्रबल लोक ॥ ४७ ॥
पुरमें अवाई यों मनोहरपुर१ पुरोग,
पीछे लये थान सेखाउत्तन खिनाहिं पात॥
यातैं सेखावाटीपैं इहाँके भट१ ओ अनीकर२,

१प्रताप ॥४८॥२भूनाथ के कुमर के चबाने को३प्रबल ॥४६॥४सब नाथावतों को सभा के मकान में सज्जित रक्खे ५ सेनापति ६ उसी स्थान में ७ जयपुर के महलों की ड्योढी का नाम ६ इन्द्रावत जसवन्तसिंह को उसके घर भेजा ॥४७॥६ आदि १० समय पाते हीं ११ सेना, सेखावतों को विजय करने को सीखदेने

आये सीखलैन उहाँ जय करिबेकों जात ॥
जासमैं कुमार[1] व्है कुमारें[2] नृपकी हजूर,
सीखलै बिगत संक आपुनी हवेली आत ॥
संसदं[2] निकेत हुते तिनतैं बिधेयं[3] साधि,
सीमातैं नृजान बैठि निकस्यो अकसमात ॥ ४८ ॥
आवत जलेबचोक अंतर कुमर एह,
कटकंअधीस[4] राजसिंह यों दिय कहाइ ॥
आपतैं न छानी[5] हम जात अबही पे इहाँ,
रावरो रेहस्य कछु इच्छत करहु आइ ॥
कुमर कहाइ तुम क्रमहु[6] हवेली होइ,
एतेमैं हरोल ओकं[7] देख्यो लोक उफनाइ ॥
बाहिर बजारकीहु सुद्धि[8] पहुँची ह्याँ सुनौं,
कुसलापिनाती[9] आज कुसल न जान्यों जाइ ॥ ४९ ॥
बेनीतिक[10] आपुनौं मुराइ सो सुनत बेर,
बोल्यो टेरि आवत मैं मंत्रकरिहैं अबहि ॥
चोक[1] बिच चोकी[2]सिकेता[11]को कोट छाती सम,
लोक बहु ताके द्वार मारनकों सज्ज लहि ॥
कोटतैं नृजानेहिं[12] भिराइ यह पैठो कूदि,
औरनकों छोरि ढिग लीनो राजसिंह अहि[13] ॥
पूगे संग पंद्रह१५ लहीयें[14] भट ताही पंथ,

आई है॥१ जयपुर के बालक राजा से २ सभा के मकान में ३ उचित रीति साधकर ॥ ४८ ॥ ४ सेनापति राजसिंह ने ५ एकान्त चाहता हूं ६ हवेली होकर जाना ७ आगे के स्थान पर लोक बढ़ता हुआ देखा ८ खबर ९ आज कुशलसिंह के पोते (कुमर बख्तावरसिंह) का कुशल नहीं दीखता ॥४९॥ १० विना नीतिसे अपना पीछा फेरना सुनते ही "डिंगलभाषा में नीति को नीत कहते हैं" जिसके साथ स्वार्थ में 'क' प्रत्यय करने से नीतिक हुआ है ११ धूलकोट १२ पालखी को भिड़ाकर १३ राजसिंह रूपी सर्प को पास लिया १४ उस कुमरके वीर

कुमर सुनाई कटकेस अब देहु कहि ॥ ५० ॥
काका सत्रुसाल ढिग देखि पुछ्यो आपै कव,
भाख्यो तिहिं याहीवेर आयो हेत हेमतीज ॥
राजसिंह भाख्यो आप क्यों यह बिगारो राज्य,
वांग कव खात हाहा खेतमैं फलित बीज ॥
दिवस१ विभावरी२ घटावत चलन देखो,
सोतो रन रावरी खटावत खलन खीज ॥
परगनाँ दाबे आठ अयुत८००००प्रमेय धर-
नीसके निदेस बिनु को करैं यों हठ धीज ॥ ५१ ॥
बख्शनादि गाम१ तीन अयुत३००००को दाब्यो द्रग,
सोपें भाखि भोजनकों चाकरी बिनुबिचारि ॥
पिप्पलदा सटै पंच अयुत५०००० प्रदेस पुनि,
सांसन बिनांहि दाबे सासनसम सम्हारि ॥
कीलिं बहुराकौं१ दुष्ट नारव२कौं मित्र कीनौं,
मित्र कीनौं जानि सो महावत सचिव मारि ॥
वैभव धनीको दाविराख्यो स्वीय सम्मतिसों,
को फल लहोगे अहो पापिनमैं बट पारि ॥ ५२ ॥
वैन कटकेसको यहै सुनि कुमर बोल्यो,
अवहि सुधारो आप बिरच्यो हम बिगार ॥
काकाकी कटारी बडी पीठिपैं इतेक बिच,

---

१ हे सेनापति ॥ ५० ॥ २ शीघ्र ३ खेत के फलेहुए बीज को झाड़ कप खाती है, दिन ४ रात में राज्य को घटाने का आप का चलन देखो आपकी यह खीज दुष्टों पर युद्ध में खटाती है ५ अस्सी हजार के प्रमाण वाले परगने राजा की विना आज्ञा दबाये हैं ॥ ५१ ॥ ६ विना ही आज्ञा वक्फ के समान रख लिया है ७ बहोरा को कैद करके ८ नरूका प्रतापसिंह को ॥ ५२ ॥ ९ सेनापति का वचन

क्रोड़ बखतावरको भेद्यो सहसा दुरसार ॥
[2]द्रवत प्राननलै जैपुर चमूँप जब,
तीजे[3] पैंड पूगि ताकैं प्रहंत[3] कर्यो प्रहार॥
कुमर कटारी राजसिंह हिय भेदि कढी,
प्रमदाँ कटाच्छ जैसैं छैलनके उरपार ॥ ५३ ॥
क्रोड़ कटकेसको बिदारि पारि यौं कुमर,
बैठो चढि ऊपर निजासन[6] तिहिँ बनाइ ॥
रंगि सत्रुसोनितसौं मूछनकौं भाख्यो राज्य,
जात बिगर्‌यो जो यौं सुधार्‌यो भलो अपनाइ ॥
ऊरध१अधर२ ऐसैं दुहुँ[7]न विहाय असुँ,
[8]आयतिउदर्क जथा उद्यम जस जनाइ ॥
सत्रुसाल पारदलौं सिटक्कि सिटाइ स्यार,
मारि याकौं ताही[?]खिन गेह गो सुर[10] मनाइ ॥ ५४ ॥
त्यौं भट पचीस२५ इत१ उत२के परे तँहँ,
सपिंड१ असपिंड२ रु सगोत्र३ असगोत्र४ संग ॥
द्वि२गुन ५० समीप संख्य[11] घायल भये दुर२दिस,
आयुबल केते बचे तिनमैं अबस अंग ॥
बनिक धनिक राखि नाव धनकाज बोरि,
जियनचहैं ज्यौं मूढ नाविक पकरि संगैं[12] ॥
बिद्ध[13] बखतावर यौं पहुँचि पलावतकौं[14],

१भुजान्तर(छाती). जयपुरका सेनापति२प्राणलेकर भागा तब३नाश करनेवाला ४स्त्री के कटाच्छ५छैलों (रसिकों)के॥५३॥६राजसिंह को अपना आसन बनाकर ७इसप्रकार ऊपर नीचे दोनों ने प्राण छोडे८आनेवाले समय का फल ९ पारे के समान१०देवताओं को मनाकर "हम ऊपर लिखआये हैं कि संस्कृत में देवता शब्द स्त्रीलिंग है परन्तु लोकरूढि के कारण पुल्लिंग लिखते हैं" ॥५४॥ ११संख्या (गणना)१२नाव का मस्तक पकड़कर नावड़िया(खेवटिया)रहै तैसे१३वेधन किये हुए (घायल) झलाय के कुमेर बखतावरसिंह ने१४युद्ध में भागतेहुए राजसिंह को

रग१ राजसिंह२ राख्यो मूँछ१ न कुपित रग२ ॥ ५५ ॥
पीछें खगारुत्त१ न उपेत नाथाउत्त२ननें,
चुडाउत्त काढे अधिकार अपनों विचारि ॥
राख्यो मुख्यमन्त्री वहुरा सो खुसहालीराम,
धीधन जो जाके पच्छ सोही दच्छ हिग्र धारि ॥
रानीके प्रकोष्ट निज जामिक सुभट राखि,
रैन१ सुरतान२ सज्ज सस्त्र अपनें सम्हारि ॥
पित्थल१ नरेस सह सोदर प्रताप२ पोतं,
माँहिं१तें निकासि माँहिं२ राखे अन्य मद मारि ॥५६ ॥
पावें नाहिं मिलन प्रसूं१ सुत२ परस्पर ज्यों,
आपुनें भटन बीच भ्राता राखि यों उभय२ ॥
करनलगे ए विप्र सम्मतिसों राजकाज,
राजाउत्त काढे सेस वाजी जिम हीन रय ॥
तापैं इन नारव प्रतापकों मिलाइ तब,
द्योसा१ पुर लूट्यो दोरि अनयमें जानि अय ॥
नगर निवाई१।२जो भलायके भटन जाइ,
जेर निज कीनों ठानि ग्राम२।३न समेत जय ॥ ५७ ॥
कीर्तिसिंह सासक भलायको जरठ काय,
कुटिल हुतो जो अध तैसे महापाप करि ॥
सूनु वखतावरसो सोयो सूरसज्जा सुनि,
अधता वढाई अब रोहरोह वोधं आरि ॥
वेगहि मरयो सो लोभतें तिम कुल विगारि,

॥ ५५ ॥ १ बुद्धिमान २ डोढी पर अपने पहरायत ३ पालक भाई प्रतापसिंह सहित ॥ ५६ ॥ ४ माता और पुत्र ५ वेग रहित घोडा निकाला जावे जैसे ६ अनीति में अपना भाग्य जानकर ॥ ५७ ॥ ७वृद्ध शरीरवाला ८वखतावरसिंह जैसा पुत्र ९ ज्ञान का शत्रु

ताहूके पिनाती उनमत्त भयो पापपरि ॥
जाहि प्रभु जानौं मरयो आपुनें समयमाँहिं,
सासक झलायसो बहादुर भो नै बिसरि ॥ ५८ ॥
पीछैं कतिबर्ष खोइ हाथतैं झलायपुर,
आलंबनँ हीन लह्यो दीनलौं दुख अछेह ॥
ईरखातैं तबहु झलायपुरवारे द्विज,
दीन बहु मारे१ करिडारे बहु व्यंग देह२ ॥
केही भ्रष्ट पारे जवननतैं मुख थुकाइ३,
गेरी तिनकी तिय जनंगमं जनन गेह४ ॥
मनुजको मारिबो कुतूहल पतित मान्यौं,
ऐसो भयो प्रथित बहादुर कथित एह ॥ ५९ ॥
भावी१ सो उदंत बर्तमान२ अब भाख्योजात,
रुष्ट खुसहालीराम इनकौं बिगारि इम ॥
दाबे बखतावर जे दाबे पुनि दंग१ देस२,
बिद्यागुरु भट्ट१ बहुरा ए जुरे एक१ जिम ॥
दोउ२नके नामके चलाये व्यवहार दल,
कूरम कितेकनके न रुची तथा प्रतिम ॥
पत्ति१नमैं राखे हैर२ बहूर्थ दादूपंथि२नके,
सादि१नमैं राखे हुव२ दक्खिनी२ अनीक सिम ॥ ६०

१उसका पोता२हे प्रभु रामसिंह उसको अपने समय में मराहुआ जाना ३ व
झलाय का पति बहादुरसिंह नीति को भूलनेवाला (मूर्ख] हुआ ॥५८॥४वि
आधार५ हीननासिका नकटे करदिये६चांडाल मनुष्यों के घरों में७उस नीच
मनुष्यों का मारना खेल समझलिया था ८ यह बहादुरसिंह ऐसा प्रसि
हुआ ॥ ५९ ॥ ९ यह वृत्तान्त आगे होनेवाला है १० क्रुद्ध [क्रोधयुक्त] ११ ०
१२अपने सदृश होना नहीं रुचा१३पैदलों में१४सेना१५सवारों में१६समान॥६

इगलिया अवा१ सातसहँस७००० तुरगनतैं,
कीनों निज आश्रित फिरटन विजय काज ॥
दक्खिनी चालुक्य जसवतराव२ नाम दूजो,
वाउलावजत सोपे सैनिन इते७००० समाज ॥
सूचित पदाति१ सादी तत्र निज राखि तिन,
काढि राजाउत्तनकों जरि रु लुपाइ लाज ॥
गेरि भय पीछे लै निवाई१ भगवतगढ२,
जैपुरको अमल जमायो रामर२०१४ नरराज ॥ ६१ ॥
पिरथलनरेसहिं चढाइ ए सचिव पीछे,
विद्यागुरु भट्ट१ अरु वहुरा२ वेल वनाइ ॥
सग भट नाथाउत१ खगारोत२ आदि सजि,
जाल जरि विटयों मनोहरपुर१हिं जु जाइ ॥
पहिलैं मनोहरपुराधिप सगतसिंह१,
नाथ२ निज अंगज उपेत छोनि छक छाइ ॥
दर्प कछु कीनों ज्येष्टभावं कहि जैपुरतैं,
माधव महीप समैं दायाँदत्व दरिसाइ ॥ ६२ ॥
तवही सगतसिंह१ नाथ२ ए पिता१ तनय२,
माधवनरेस काढे दोउ२नको मदमारि ॥
अमरसर१ रु मनोहरपुर२ थान उभैं२,
सीमा सव सहित छुराये छर्म डर डारि ॥
वर्तमानमैं वलि उभै२ ए आइपैठे अव,
राजाकों चढाइ लाइ मत्रिननैं रचि रारि ॥

१ मरहठा जाति विशेष २ इतने ही घोडों के समूह से ३ हे राजा
[रा]मसिंह ॥ ६१ ॥ ४ सेना वनाकर ५ अपने पुत्र सहित ६ जयपुर से
[द]ायादपना होना कहकर ७ भाईपन दिखाकर ॥ ६२ ॥ ८ पहा भय डालकर

दै भय पिता१ सुत२ वे पीछे निकसाइ दये,
अमल जमायो पीछो आपुनों जस उबारि ॥ ६३ ॥
पित्थल नरेसकी सवित्री इत व्याधि पाइ,
जैपुर असाध्य भई ताकी सुद्धि जानतहि ॥
मंत्रीद्वै२हि तासों द्वै२हि पुत्रन मिलैबो मानि,
लाये मोरि भूपतिकों प्रत्यह३ प्रयान लहि ॥
अंतेउर आपुनों प्रबंध करि द्वै२ही पुत्र,
मातासों मिलाये कहि आये लाये जीति महि ॥
तीजे३ दिन तासों तज्यो चुंडाउति काय तिम,
साधारन रीति भयो कृत्य पिछलो सबहि ॥६४॥
जाट१ जवनन२कै मच्यो यों पुर डिग्घ जुद्ध,
पूर्यो व्है तटस्थ तँहँ नारव पती१ नृपहु ॥
जैपुरके तंत्र दक्खिनी जो जसवंत२राव,
बाउलासो चालुकहु गो तह सदर्प५ वहु ॥
मंत्र करि बिजन६ पता१ रु जसवंत२ मिलि,
करट७ कनीनिकालों द्वै२घाँ बनिसूचकहु ॥
मायापटु जट्ट१नतें पिहित२ मिलाइ मन,
मिच्छ१नतें प्रकट२ मिलेही रहे मंत्र मधु९ ॥ ६५ ॥
मंत्री बहुरानैं तब जाइ तँहँ मिच्छनसों,
कामाँपुर पीछो लयो मंग्यो बसु१० भेट करि ॥
बचन कलंबन११ प्रतापको हृदय बेधि,
आयो बिप्र जैपुर यों लै जस दबात अरि ॥

॥ ६३ ॥ १ राजा पृथ्वीसिंह की माता २ प्रतिदिन गमन करके ३ ज..
में ॥ ६४ ॥ अलवर का राजा ४ नरूका प्रतापसिंह ५ बहुत घमंड से ६ एका
में ७ काक पक्षी के नेत्रों की पुतली के समान ८ जाटों से छाने मन मिला
९ मधु[मीठे]मंत्र से ॥६५॥१० मांगा जितना धन देकर११वचनों रूपी बाणों

खीजि इत जुज्झत नबाव सु नजफखान,
डिग्घगढ पैठो जाइ भाजिगये जट्ट डरि ॥
सूनु लहुरो जो रविमल्ल१को नवलसिंह२।२,
जट्टराज सोतो पहिलैं गो काल ज्वाल जरि ॥ ६६ ॥
पाकपन केसरी३।१ तदीप सुत पायो पट्ट,
काका रनजीत२।३कों न भायो यह नीति क्रम॥
भावीकाल याहीतें भयो रन भरतपुर,
दूजी२ बेर दीनों जो छुराइ अंगरेज छम ॥
पीछो जयनेर इत नारव पता प्रबिसि,
रूझयो पुनि मायावी समस्तनकों सुद्ध सम ॥
वचककों भायो सो दुवायो पटा चिमननैं,
पित्र्यलसों भाख्यो स्वामि सेवक पता परम ॥ ६७ ॥
जासमें पताको भाग्य ऐसो अनुकूल जान्यों,
ठानें प्रतिलोम१ जोजो सोसो अनुलोम२ ठाइ ॥
प्रत्युतँ प्रमान दिल्ली१ जेपुर२ भरतपुर,
भूमि इन तीननकी लै सुहि सुहृद भाइ ॥
मान्यों सोहि दिल्लीको वकील द्विज मन्त्रिननैं,
जपी मिच्छ कामाँ पहिलैं ज्यों जिन पैठिजाइ ॥
साक दत धृति १८३२तैं सुपर्व धृति १८३३ सवतलों ॥
ऐसे मचे जैपुर अनेक उपद्रव आइ ॥ ६८ ॥
मन्त्री दुवर बहुरि चढाइकै महीपतिकों,
दाघी छिति लैन गये साकभरदगें दिस ॥

१ न्हाेया [छोटा] पुत्र ॥ ६६ ॥ २ वृद्धावस्था में ३ समर्थ प्रतापसिंह ने ४ प्रवेश करके ॥ ६७ ॥ ५ उलटी वार्ता कार्य करता था सो ६ सुलटी होती थी ७ उलटा ८ मित्र ९ कामा नगर में ॥६८॥ १० सांभर नगर की ओर

मानबंस खंगारोत कतिक रहे मुरारि,
बेढ तिन्हँ बिखम रचाइ रारि धारि रिस ॥
कूरम लरे न तहाँ प्रभुके बिजय काज,
नारव मिलाइबेकी ईरखा धरैं अनिसं ॥
यातैं भ्रम राखि मंत्री लै नृप निलय आये,
मान घटिबेकी जानि दोरहु ठानि कोहु मिस ॥ ६९ ॥
जैपुरको चाकर कह्यो जो जसवंतराव,
बंसमैं चालुक्य मरहट्ठ बाउला बजत॥
बिप्र दम्म लक्खन चढाइ ताके बेतनमैं,
लेखकरि मालपुरा१ टोडा२ द्वै२ दये लजत ॥
ग्राम हे भेंटनके जे दोउरनकी सीमगत,
राखितिनकै तै कह्यो टारि इनकौं रजतँ॥
सेस सब ग्रामनतैं लेहु कर सासकठहै,
भूपतिकौं राखि सिर स्वामिधर्मतैं भजत ॥ ७० ॥
जानी जसवंतराव साँसना यहै जदपि,
मानी इम मानी हम दिल्ली दायभागी मानि ॥
बापुरे ए करि न सकैं कछु अधिप बजे,
याहीतैं करैं ए ओट आश्रित हमहिं आनि ॥
मालपुरा१ टोडा२ ऐसे मंदसों सम्हारि सठ,
चालुकनके जेते हमारे यह पहिचानि ॥
अबहु अधीस कीनौं मैंहि इनरको अधिप,
करिहै मदीयं बस ग्रामनके मेरी कानि ॥ ७१ ॥

---

१ राजावत २ निरंतर ॥ ६९ ॥ ३ सोलंखी ४ तनख्वाह में ५ उमराओं ६ रूपा (हांसिल के रुपये) ॥ ७० ॥ ७ यह हुक्म है तो भी ८ दिल्ली के दावी दार [बपट] करानेवाले ९ गर्व से १० मेरे आधीन ॥ ७१ ॥

दर्प्पसह दक्खिनी विचार मन ऐसो बाँधि,
मालपुर१ टोडा२ बस जे हे तिन कूरमन ॥
निकट बुलाइ कह्यो मैंहि तुमरोतो नृप,
जेहो तुम टोडा१ मालपुर२के निवासिजन ॥
वत्त यह सुनत न भाई मन विपनके,
पकरन लागे याहि टारनको एक पन ॥
यातैं पुर टोडासौं प्रमत्त जसवत आइ,
सेम्मद वलित भाख्यो एह हमरो सदनं ॥ ७२ ॥
ग्रेनं चालुक्कनको सदासौं यह टोडा ऑहि,
ऐसी कहि ऑद्रिपै बनैवे लग्यो दुर्ग इक१ ॥
मालपुर१ टोडा२के प्रदेसवासी कूरमत,
अटकि सुनाइ भू हमारी तुम आधुनिक ॥
जैपुरतें चँक्कहु बुलायो जो प्रबल जानि,
करि तब सज्ज भेज्यो सग२ भट दे कतिक ॥
आयो चक्र यापर वसतको बिहर्वक व्है,
केतु१ सहकार२ पीलु१ पव्वय२ नकिव१ पिकं२॥७३॥
काढ्यो जसवतराव आतहि मैंघात करि,
वदन विगारि गयो लुट्टत सरैनि ग्राम ॥
वनिक्क१ विरोधी प्रतिमैंल्ल२हिं जिम विहाइ,
कोप बालकनपै करैं सफल कछु काम ॥

१रूप से घिरा हुआ २हमारा घर ॥७२॥ ३ सोलंखियों का घर ४है ५पर्वत के ऊपर ६ अभी के आये हुए हो ७ सेना ८ बसन्त ऋतु का भ्रम करानेवाली होकर ९ सेना मे ध्वजा है सोही आम्र वृक्ष है १० हाथी है सोही पर्वत है ११ नकीब है सोही कोयल है ॥ ७३ ॥ १२विशेष घात करके १३ मुख बिगाड़ कर मार्ग के ग्राम लूटता गया १४ जैसे, बनिया मुकाबला [सामना] करनेवाले को छोड़ कर बालकों पर अपने कोप को सफल करे तैसे

ऐसैं प्रतिबसथ झलाइ१पुर आदिनके,
इंद्रगढ२ कोटा३के रु सोपुर४के धन१ धाम२ ॥
लूटत गयो सो दुष्ट बुंदेलन देस लग,
तक्कूको भतीज बापू१ भेद्यो तहँ जाइ तामें२ ॥ ७४ ॥
ताहिसंग लैकैं आइ दोउ२न बहुरि तैसैं,
देस लूटि सोपुर१ करोली२के गढाइ दल ॥
दिल्लीकेर चाकर भए ए जाइ पीछैं द्वैरहि,
खीजे अब जैपुरपैं बिग्रह बिथारि खल ॥
बेद गुन अष्ट इंदु १८२४ संबतके सुचि३ बीच,
मिच्छन मिले रु पीछैं जैपुरपैं बंधि बल ॥
हिंडोनि१ रु ब्योसा२ खोहरी३के बनैं हाकिम ए,
छीनिलीनैं तीन३हि प्रदेस केही गेरि छल ॥ ७५ ॥
तीस धृति १८३० संबततैं हायन सअर्द्ध४ त्रय३,
जैपुरके देस रहे ऐसे बहु बिघ्न जब ॥
दयाराम याहीतैं पुरोहित इतेक दिन,
ताकत खिनहिं काढे जैपुर अतंत्र५ तब ॥
बिद्यागुरुभट्ट१ बहुरा२ इन उभै२ बुधन६,
उचित बिचारि आदिरीति व्यवहार अब ॥
भूसुरके७ संगहि पठायो मिथोहित८ भाखि,
सज्ज करि टीकाको बिधेय९ उपहार सब ॥ ७६ ॥
बेद गुन सिद्धि ससि १८३४ संबतके भाद्र६ बिच,
ऐसैं व्यवहारी जन जैपुर१तैं बुंदी२ आइ ॥

ग्राम २ तहां ॥७४॥ ३ आषाढ मास में ॥ ७५ ॥ ४ साढे तीन वर्ष तक ५ राज्य
र्य की चिन्ता से रहित होकर जयपुर में रहा अथवा किसी के आधीन
ों रहकर समय देखता रहा ६ पंडितों ने ७ ब्राह्मण दयाराम के साथ ही
परस्पर का हित कहकर ९ उचित सामग्री ॥ ७६ ॥

एक१ दंती एक१ मनिभूखन तुरग उभैं२,
लोनैं सिरुपाव उभैं२ ससदं३ निवेदे लाइ ॥
बालक नरेसकों दिखाइ ए कथित विप्र,
स्वीकृत कराये रीति सचिवकों समुझाइ ॥
आन्यों व्यवहार ताकों अर्व१ सिरुपाव२ अर्प्पि,
दीनी सीख जैपुर दुहूँ२घां प्रीति दरिसाइ ॥ ७७ ॥
विष्णुसिंह२००१२ भूप जब बुंदीके तखतबैठो,
तबतें पुरोहित गयोहो जयनैर तिम ॥
ऐसे बहु विघ्ननतें अबलों रह्यो सो उहाँ,
अविच्छिन्न४ बात यातें भाखी उतकोंहि इम ॥
प्रीतिको लिखाइ पत्र जैपुर महीपतितें,
जा द्विजनें लाइकें निवेद्यो टीका संग जिम ॥
पीछे जुर्‌यो नेह पहिलैं ज्यौं दुहुँ२ओर पुनि,
साधक सुबुद्धिनतें स्वामि हिय५ होत हिंम ॥ ७८ ॥

॥ दोहा ॥

दयाराम इम लाइ द्विज, सब टींकाको साज ॥
बुंदी१ जैपुर२ दुहुँ२न बिच, किय पीछो हित काज ॥ ७९ ॥
अति बिलंब हुव ताहि इम, सूच्यो कारन सोहु ॥
अब क्रमकारि सुनिये उचित, पंहु६ उदंत पहिलोहु ॥ ८० ॥
श्रीजित किय जात्रा सफल, ज्यौं बदरी बन जाइ१॥
प्रभुको७ प्रथम बिवाह पुनि, सुनिये कहत सहाइ ॥ ८१ ॥

---

१ सुन्दर २ सभा में नजर किये ३ टीका लानेवाले को एक घोड़ा ॥ ७७ ॥ ४ निरन्तर ५ हृदय ठंडा होता है ॥७८॥७९॥ ६ हे राजा अब क्रम से पहिला वृत्तान्त सुनो ॥ ८० ॥ ७ प्रभु (विष्णुसिंह) का ॥ ८१ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह चरित्रे गृहीतसैन्यमेदपाटसुभटसलूमरेशराउत्तकुरावड़ेशराउत्तदेवगढ गमनस्वपराजयप्रत्यागमन १ कुरावड़ेशार्जुनसिंहमाधजीसंध्याश्याल कच्छलघातहनन २ राजगढनारवप्रतापसिंहच्छद्मजयपुरखुशाली रामकारानिपातनखुशालीरामवधप्रवृत्तझलायेशकुमारबखतावरसिं हतत्पितृव्यशत्रुशल्यवारण ३ जयपुरनिष्कासितदेवगढेशजसवन्तसिं हनारवप्रतापसिंहभट्टविद्यागुरुकारामोक्षण ४ फीरोजखांनाधोरण द्वाराराज्ञीमेलितसेखाउतादिज्ञातच्छलघातनारवप्रतापसिंहप्रच्छन्नप लायन ५ आक्रान्तदिल्लीजयपुरभरतपुरप्रान्तच्छलितयवनप्राप्तराज पदनारवप्रतापसिंहालवरराज्यस्थापनतत्समयकतिपयराज्यध्वंसक तिपयनवीनराज्यस्थापनसूचन ६ नारवप्रतापसिंहजयपुरागतमन्त्रि हस्तिपकफीरोजखांछलघातमारणबहोराखुशालीरामझलायेशकु-

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके अष्टमराशि में, विष्णुसिंह के चरित्र में, मेवाड़ के उमराव सलूमर के रावत, व कुरावड़ के राउत का सेना लेकर देवगढ जाना और वहांसे हारकर पीछा आना १ कुरावड़के राउत अर्जुनसिंह का माधजी सिन्धिया के साले को छलघात से मारना २ राजगढ के नरूका प्रतापसिंह का जयपुर में ठग विद्या फैलाकर बहोरा खुशहालीराम को कैद करना और झलाय के कुमर बखतावरसिंह को खुसहालीराम के मारने से काका शत्रुसाल का रोकना ३ नरूके प्रतापसिंह का देवगढ के राउत जसवन्तसिंह को जयपुर से निकलवा कर भट्ट विद्यागुरु को कैद से छुडाना ४ फीरोजखां महावत द्वारा राणी के मिलाएहुए सेखावत आदि से छाने नरूका प्रतापसिंह का छलघात से बच कर राजगढ भागना ५ नरूका प्रतापसिंह का दिल्ली, जयपुर, भरतपुर के परगने दबाकर यवनों को छलकर अलवर का राज्य स्थापन करना और राजा का खिताब पाना, तथा इस समय कई राज्यों के नष्ट होने और कई नये राज्य स्थापन होने की सूचना करना ६ नरूके राजा प्रतापसिंह का जयपुर से आयेहुए मन्त्री महावत फीरोजखां को छलघात से मारना और बहोरा खुशालीराम का जयपुर में झलाय के कुमर बखतावरसिंह को छलघात से मरवाना ७ बहोरा खुशालीराम का जयपुर में दादूपं-

नखतामरसिंहजयपुरच्छलघातहनन ७ खुशालीरामजयपुरदाट्ट मरहट्टसेनासमहद्यासेखावाटीमनोहरपुरेशदमन ८ जयपुरेशपृ-सिंहमातृमरखाडीगजट्टयवनरणाकरणा ९ जसवन्तरावबाउलार्थ पुरभृत्पामालपुराटोडाप्रदानश्रुततदुर्गनिर्माणतन्निष्कासन ॥१० टितजयपुरप्रान्तजसवन्तरावबाउलाबापूमरहट्टप्रान्तत्रयग्रहणजय टीकाबुन्द्यागमनवर्णन पञ्चमो मयूख ॥५॥ आदित ॥३५५॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तातैं सक चोतीस३४ तक, बंदि जैपुरकी बात ॥
अब बत्तीसम ३२ अतमैं, जुंहि क्रम बरन्यो जात ॥ १ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

उक्त दुव२ कामनमैं एक१ करि विप आयो,
तोलों इकतार उतकोहि बरन्यो उदंत ॥
यातैं कह्यो जात मुरि पिछलो उदंत अब,
ऐसैं सार्क दंत धृति १८३२ हायनको होत अंत ॥
व्याधि तिहिंवेर सुखरामके कछुक बढ्यो,
सो मिटयो तहांलों रहि श्रीजित परम सत ॥

षिया की ओर मरहठों की सेना का मौकर रखना और सेखावाटी में मनोहर रवालों को दंड देना ८ जयपुर के राजा पृथ्वीसिंह की माता का और बीं- में जाटों और यवनों का युद्ध होना ९ जसवन्तराव बाउला को जयपुर की तरफ से तनखाह में मालपुरा और टोडा देना और उसको वहां गढ बनवाते देखकर निकालना १० जसवन्तराव बाउला और बापू मरहठे का जयपुर के राज्य को लूटकर तीन परगने दबाना और जयपुर से बुन्दी टीका आने के वर्णन का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ ॥५॥ और आदि से तीन सौ पचावन ३५५ मयूख हुए ॥

१ कह कर २ यहीं बुन्दी का इतिहास ॥ १ ॥ ३ वृत्तान्त ४ विक्रम के शाक के

चैत्र१ बदि छट्ठी६ दिन आश्रमतैं आप चढ्यो,
अच्युत बदरिकेस अर्चनकों मतिमंत ॥ २ ॥
जैपुर नगर जात तुल्यपन रीति जिम,
पित्थल नरेस आइ सम्मुह अवधि पर ॥
भोन निज लैगो तहाँ अजिनपैं बैठो भिन्न,
श्रीजित निहारेहू तपस्वीनसैं अग्रसर ॥
पच्छिम३।५ प्रयानमैं निबाही जैसें जोधपुर१,
अैसैं सब रीति इहाँ न्यारी साधि जैनगर२ ॥
कास तास साखापुर बदनपुरेमैं रह्यो,
पीलु१ हय आदिकन राख्यो उपदा प्रकर ॥ ३ ॥
केहबेर पित्थल१ प्रताप२ तैं मिलाप कीनों,
ओज अधिकार रह्यो वृत्ति राजसी रहित ॥
आपुनों पुरोहित हुतो ह्हाँ दयाराम वह,
आयो अरु ज्यों बन्यों सुनायो हित१ओ अहित२ ॥
संवत बिबुध धृति१८३३ सम्मित लगत समा,
सानुकूल राखि मन सबको कृपासहित ॥
चैत१ सित २ छट्ठी६ दिन बदनपुरा१ तैं चढि ॥
संर्बसथ कूकस२ मुकाम बिरच्यो सहित ॥ ४ ॥
बंस बलभद्रकेमैं कूरम जहां बिदित,
अबिदित नाम अचलोर३ ढंग अभिधान ॥
कीनैं तहँ श्रीजित मुकाम अरु कूरमकी,
भेटमैं कटारी एक१ राखी होत हठ भान ॥

॥ २ ॥ १ बराबर की २ मृगचर्म पर जुदा बैठा ३ नगर के बाहर का पुरा ४ हाथी ५ भेट का समूह ॥ ३ ॥ ६ रजोगुण की (राजाओं की) वृत्ति बिना ७ सम्वत् ८ ग्राम ॥ ४ ॥ ९ जिसका नाम नहीं मालूम है

सुद्धि तँहँ आई यौं रुहिल्लन निकर सज्जि,
मग्गमैं उपद्रव मचाइराख्यो मनमान ॥
पहिलैं नजीवदोला मन्त्री सुत वारे पच्छ,
पत्थरगढहिं लै तहां ए लरे अतिमान ॥ ५ ॥
भूतकालमैं तव रुहिल्लनसों साह भीत,
पुगया१ लखनेऊ२ कलकत्ता३को सहाय पाइ ॥
विरचि प्रघात अतिपात सत्र ब्रातनके,
जीत्यो साह आलमनें पत्थरगढ सु जाइ ॥
जावितै१खां नामक रुहिल्ला व्है पराजित जो,
उक्त गढ छोरि पर्‌यो साहके पयन आइ ॥
उक्तगढ १ आमिला२ वरेली ३ ए रुहिल्लनके,
लीनें लखनेऊपति साहसों मन मुराइ ॥ ६ ॥
पै जो लखनेऊ पति आमिला२ जवहि१जीत्यो,
कैद तस सासक रुहिल्लाको कुटुंब करि ॥
ताकै इक१ कन्या ही सु वलसौं पकरि तव,
डारि निज गेह परलोकतैं न नैंक डरि ॥
कन्यानैं मिलन काल राखि छुरिका कितहु,
धार खर१ जारकै धक्कोई वस्तिदेस धरि ॥
सोतो हनी तवहि रुहिल्लेकी सुता रु सठ,
मास तीन३ पीछैं सो नवाबहु गयोहि मरि ॥ ७ ॥
राम२०११४ प्रभु देखो कुलनारिनकी कैसी रीति,
जैसी अहो आधुनिक नरन न राखीजात ॥
जोवन गिन्यों न१ गिन्यों एक१ पतिमोन२जानै,

१ रुहिल्लओं का समूह सजकर ॥ ५ ॥ २ शत्रुओं के समूहों के ॥ ६ ॥ ३ पति (हाकिम) ४ तीक्ष्ण धारवाली ५ नलों (पेडू) में ॥ ७ ॥ ६ इस समय के

जीवन गिन्यो न३ ज्यों बिलासिबो बिभव ब्रात४ ॥
माता१ पिता२ दै जिहिं सुहि पति उचित मानि,
औरनकौं इंद्रलौं बिडारैं सील अधिकात ॥
वाह जवनीकौं फैजाबाद१ लखनेऊ२ ईस,
गांजि रु गिरायो पै न रंजिं रु भिरायो गात ॥ ८ ॥
बांधी लखनेऊ१ राजधानी तजि फैजाबाद२ ॥
नारीईंत कथित नबाबकेर सोहि सुत ॥
बैठो वा पिताके पाट पै न तैसो भाग्य बल,
जासौं नई दाबी सो गई भू१ छूटि कीर्ति२ जुत ॥
दाब्यो पहिलैं जो पुर कासिका१ प्रमुख देस,
आयो पहिलैं सो अंगरेज८नके हाथ उत ॥
यातैं पर्‌यो मंद लखनेऊको प्रताप अब,
लागो पुनि लुंटक शुहिल्लनको दाव हुत ॥ ९ ॥
जीवतहो नोलसिंह जट्टन अधीस जब,
खीजि तब साह मीरबखसी नजीबखान ॥
जूझि जिहिं मुगल स अंई२ समा३ जट्टनतैं,
पट्टन छुराइलयो आगरा बल प्रधान ॥
जट्ट नोलसिंह१ मर्‌यो भ्राता तब रनजीत२,
काका ब्रजेन्द्रादिकबहादुर३ गहि कृपान ॥
नोलसुत केसरी कुमार बय ठानि नृप,
हंकि पुर डिग्ग१आये कुंभेर२ को करि हान ॥ १०

१ समूह २ मुसलमानी राजधानी फैजाबाद और लखनेऊ के पति को[...] कर प्रीति से शरीर को नहीं भिड़ाया उसको वाह (प्रशंसा) है ॥ ८ ॥ [...] के मारनेवाले ४ काशी आदि देश ५ लुटेरे ॥ ९ ॥ ६ छेह वर्ष ७ पठान [...] ८ ब्रजेन्द्रबहादुर ॥ १० ॥

कुंभेर१हिं भेज्यो गढ डिग्घ २ सन पीछैं काढि,
पचननें जट्ट रनजीत जानि द्रोह पर ॥
तब हो रुहिल्ला१एक जट्टनके आश्रितहु,
ताको चढ्यो मासिक परयो सो बहु कोल तर ॥
जानि वहिकावत रुहिल्लानें पलटि जब,
निज वस कीनों जीति डिग्घ तिनको नगर ॥
एक तस दुर्गमैं सक्पोन करि सो अमल,
तामें हुते जट्ट जे रहे ते रुपि धीर धर ॥ ११ ॥
काढ्यो डिग्घतें१ जो रनजीत१ सोहो कुंभर१हि,
तासों मिल्यो बाउला जो नसवतराव२ तब ॥
वा खिन रुहिल्लापें अचानक दुहुरन आइ,
दीनों रतिवाह दल गेरि दलपें गजब ॥
दुर्गकेहु जट्टननें ताही खिन दाव देखि
आइ गढ वाहिर चलाये आसि वाढ अब ॥
भीत दुहुँ२घातें छांरि सकल रुहिल्ला भज्यो,
सगी भट तीनसैं३०० बचे जे भजे सग सब ॥ १२ ॥
लीनों जसवत जो रुहिल्लाको विभव लूटि,
पचदस१५ पीलु१ संभि२ अठतीस अग्ग सत ॥
सस्त्र३ वस्त्र४ भूखन५ खजानौ६ तोपखानौ७ सब,
जट्टन जहर जारि सो सही मतानुमत ॥
सो तिन विडारि दयो बाउला छलो समुझि,
आइ तब जैपुर रह्यो वह गरूर गत ॥

॥ ११ ॥ १२ ॥ १ हाथी २ एकसौ अडतीस घोडे ३ एक दूसरे की सलाह साथ अर्थात् अभिप्राय और अनुज्ञा लहकर ४ निकाल दिया ५ घमंड र

मालपुर१ टोडार२ ताहि बेतनमैं[1] पीछैं मिले,
बात इतनीसी रही पहिले प्रसंग बेत[2] ॥ १३ ॥
सो खिल कही अब रुहिल्लन प्रसंग संग,
इत सिख जट्ट बढे नानक मत अधीन ॥
आजि[3] तिन जीति लवपुर[4]१ मुलतान२ आदि,
कोटि रिपु कही पंज ५ आबमैं[5] अमल कीन ॥
जाबितखां जो कह्यो रुहिल्ला तानैं अब जाइ,
आनैं सिख जट्ट इत लूटनके लोभ लीन ॥
दिल्लीके समीपलग पच्छिम३।५ दिसाको देस ॥
निखिल दबाइ लयो तिननैं तब नवीन ॥ १४ ॥
जट्ट१ रु रुहिल्ला२ मार१ लूट२हिं मचाइ जब,
पंथ प्रसरावत उपद्रव खिनहिं पाइ ॥
क्रेता[6] रुकिबैठे ब्यवहारक बनिजकार,
क्रेंपलैकैं[7] कोहू जोर रहित सकैं न जाइ ॥
श्रीजितनैं सो सब उदंत[8] अचलोर ३ सुन्यौं ॥
ताके पति कुम्महु दयो यह सब जताइ ॥
जन अवरोधक[9] लै संग न उचित जैबो,
ऐनंनमैं[10] चैन न उपद्रवन अधिकाइ ॥ १५ ॥
श्रीजित कह्यो नाँ अवरोधजन सुरूप संग,
लाये कछु दासीजन तित्थन[11] समुझि लाह ॥
पीछो अब तिनको पठैबो व्है न लैलै पनैं[12],
चिंति जिन्हैं आइ तिन्हैं साधिबो धरत चाह ॥

---

१ तनखाह में २ पहिले प्रसंगवाली बातों में ॥ १३ ॥ ३ युद्ध ४ लाहौर ५ पंजाब में ॥ १४ ॥ ६ खरीददार ७ बेचने की वस्तु ८ वृत्तान्त ९ जनाने के लोग १० मार्गों में ॥ १५ ॥ ११ तीर्थों का लाभ १२ नियम ले लेकर

*उज्झीहै न वरन अहता तीजे३ आश्रममैं,
रोइ रन व्हैहैं सिर१ देह२नके दुव२ राह ॥
पीछैं पर सत्य इष्ट साधहु अभय पाइ,
अब तहँ कोन गोन करिहै सह उछाइ ॥ १६ ॥
अैसैं मधु१ मासकी वलच्छ१ दसमी१०के अंह,
श्रीजित प्रयान कीनौं उक्त अचलोर३ सन ॥
पथ दरकुचन मनोहरपुर४ पधारि,
भामरा५ प्रयागपुर६ लघत भो धीरधन ॥
कोटफूतली७ त्यौं साहजिहापुर८दै मुकाम,
राह रहि चोधारा९ रु रेवाडी१० प्रवीनपन ॥
राध२ वदि२ चोथी४ रविवार१ कौं रह्यो सो बहा-
दुरगढ११ जाइ लघि बीचको बिखम बन ॥ १७ ॥
मिलन बहादुरगढेस११ ताजमुहम्मद१।३,
एक१ कोस अवधि नवाव जो समुद आइ ॥
निष्कपटता१ सौं नम्रता२ सौं त्यौं निहोर३नसौं,
पहिलैं प्रसन्न लैगो स्वीय संम पधराइ ॥
भूति अनुरूप वस्तु विविध निवेदे भेट,
श्रीजित न राखे नृप राखैं यहै दरिसाइ ॥
ताहूनैं कह्यो तव उपद्रव निचिंत अैन,
दासीजन यातैं इहाँ राखहु हित दिखाइ ॥ १८ ॥
ईस अचलोर३ को कह्यो जो तिहिं कूरम२सौं,
पहिलैं कही सौं त्यौं इधा नवाब मित्र प्रकटि ॥

*पर्या(क्षत्रिय)पन का अहंकार नहीं छोड़ा है१वानप्रस्थपन में२मार्ग में युद्ध होगा तो मरेंगे ॥१६॥३चैत्र सुदि४दिन५वैशाख वदि ॥१७॥ ६अपने घर ७ अपने ऐश्वर्य के छदशा८राजा होवै सो रखते हैं अर्थात् हम वानप्रस्थ हैं९मार्ग में व्याप्त॥१८॥

वाला जट्ट के गढ१२ मुकाम पंचमी५ बिरचि,
अर्कजा खवाई१३ घट्ट छट्ठी६ रह्यो गम्य घाटि ॥
राध२ बदि२ सप्तमी७ कलिंदतनयाकों राति,
पारजात सहसा तपद्रुत तुसार पाटि ॥
अध्वसों डिगाई नाव बढिकैं सलिल ओघ,
एक१ कोस अवधि रुकी जो निट्टि निट्टि रटि ॥ १९ ॥
उच्च थल बालुकाको नाव अवरोध आरि,
श्रीजित बिताई रत्ति सकल उहांहि यह ॥
प्रात निज संगिनमैं पैलीतीर१४ पूगि रहे,
तद्दिन मुकाम कीनों अष्टमी८ अनेह तह ॥
करत प्रयान चढि प्रातहि नवमि९ काल,
जलद अकाल कीनी बुट्ठि करकानं जह ॥
यातैं सैड्ढकोसर्हि लुवारी१५ लौं पहुँचि आप,
ताही ग्राम रहे तब संगिन समाज सह ॥ २० ॥
दसमी१० दिवस व्हांतैं जाइरहे जाबदल१६,
एकादसी११ योस रहे सामलीसहर१७ आइ ॥
हीरासिंह नाम सिखको जह अमल हुतो,
पंथ मिलि तासों तह आदर उचित पाइ ॥
ज्वालापुर१८ होइ राध२ असित२ चउद्दसि१४ ज्यौं,
इंदुसुत४ वीर गये गंगाद्वार१९ उमगाइ ॥

१ जाने योग्य स्थानों में गमन करके २ जमुना नदी के परली तरफ जाते समय ३ धूप से बरफ पिघलकर पानी से नदी भरगई ४ मार्ग से ५ पानी का समूह बढकर ॥ १९ ॥ ६ रेत के ऊँचे स्थल पर ७ लग कर नाव रूपी ८ समय ९ मेघ ने बिना समय १० ओलों की वृष्टि की ११ डेढ कोस ॥ २० ॥ १२ वैशाख वदि १३ बुधवार

ठानि पंच५ वासर मुकाम तिहिं पुराय ठाम,
साधे न्हांन१ दान२ श्राद्ध३ आदिक विधि सुहाइ ॥२१॥
चंद्र२ सित१ राध२की चउत्थी४ दिन व्हाँ तैं चढि,
मग्गबिच तीर्थ भीम श्रोडारक२० नाम मानि ॥
साधि तँहँ न्हान१ दान२ थान तिहिंसों समीप,
उचित मुकाम दीनों करखडो२१ ग्राम आनि ॥
श्रीनगर भूपति प्रमार जो ललितसाहि,
ताको हो अमल तिहिं ठा वह मुकाम ठानि ॥
कुच करि व्हाँतैं रहे जाइ तिम हृषीकेस२२,
रथ१ हय२ आदि राखे जत्थहि उचित जानि ॥ २२ ॥
व्हाँते नैरजान नैठि तपोवन२३ तीर्थ होइ,
गंगा न्हान१ दान२ करि रहे शिवपुरी२४ ग्राम ॥
व्हे डुंगरगाढ२५ ग्राम२५ त्यों ब्रह्मनकोटी२६ होइ,
कीनें वदिपाकीकोइ२७ नाम ठाँ निज मुकाम ॥
आयो एक१ कोस सन संगमैं सलिल उहाँ,
छेटी करि व्हाँतैं जानि सैलन सरांनि छाम ॥
संगी जन यातैं दूरदूरलों चलाय सब,
श्वेत१ राध२ दसमी१० जहाँ दिन रहत जाम ॥ २३ ॥
मैद्योतन१ वार चढि अद्रि मनभग२८ पर,
कोस तीन३ अंतर मुकाम राजाखाल२९ किय ॥
पंद्रह१५ दिवस राखि तत्थहि मुकाम पुनि,
ज्येष्ठ वदि२ दसमी१० जहाँ तैं चंद्र२कों चलिय ॥
त्रिपथगा धारा३० एक१ झूला करि लंघि तिम,

---

१ दिन ॥ २१ ॥ २२ ॥ २ पालखी पींजस में ३ पर्वत लग रस्ते में ॥ २३ ॥ ४ र-
यिवार ५ गंगाकी

दूरकछुधारादुव२ संगम३१ मिलानें दिय ॥
सोही देवआदिक प्रयागनाम तित्थ सुभ,
सेयो दिन तीन३ रह्यो श्रीजित व्हाँ पुण्य प्रिय ॥२४॥
नाम दुव धारन भागीरथी१ अलकनंदा२,
ऐसें रहि दोउ२नके संगम३१पैं तीन३ अह ॥
मुंडन१ रु न्हान२ दान३ आदिक सविधि मंडि,
तित्थगुरु केसोराम कीनों धन पात्र४ तह ॥
पीछैं लंघि सुक्क३ बदि२ भूत१४ गुरु५ वार पर,
उक्त जो अलकनंदा३२ झूला करि व्हां असह ॥
रानीबाग३३ नाम ग्राम बिरचि मुकाम रहे,
श्रीनगर सासक सो जानी बात जान जह ॥२५॥
सो नृप ललितसाहि आवत समुख सुनि,
इततैं कहाइ आइहोतो हम मिलि हैं न ॥
तानैं तब आपुनों अमात्य जो परमपति१,
नित्यानंद२ सेनानी२ ए भेजे अभिमुख ऐन ॥
सेना द्वैहजार२००० उभे२ इम जु समुख आइ,
श्रीनगर३४ लेगये निहोरन सिविर सन ॥
श्रीजित कहाई इम श्रीनगर सासकसों,
तबहि मिलैं जो नृप मानि मिलो हमतैं न ॥ २६ ॥
अभ्यागमँ१ अभ्युत्थान२ आदि करिबो न कहि,
श्रीनगर भूप पहिलैंतो लई मानि सब ॥
श्रीजित पधारत नृजानकों तजत समै,
जत्थहि मिल्यो सो आइ भूपति प्रमार जब ॥

१ मुकाम २ देवप्रयाग ३ तीर्थ ॥ २४ ॥ ४ दिन ५ ज्येष्ठ ॥ २५ ॥ ६ मार्ग सन्मुख भेजे ॥ २६ ॥ ७ सन्मुख आना ८ ताजीम देना

सभदमैं जात एक१ आसन प्रसभ साह्यो,
तदपि न मानि भिन्न बैठो निज पीठ तब ॥
अधिप प्रमार पुनि श्रीजित सिविर आयो,
सोहि तव साधि रु उहाँतैं भयो कुच अब ॥ २७ ॥
सुक्र३ सुदि२ दूजी२ तिथि चाले श्रीनगर३४ सन,
सो३२ अलकनदा३५ आई बहुरि जैवी मालिल॥
ताकों लघि झूला करि पार गये खजिन तो,
ओलीतीर स्वीय सगी पुरुख रहे अखिल ॥
तिनकी हरोलवारे झूलापै चढे तबही,
तुटी इक१ घाँकी तंति नहिंन बचीन तिल ॥
पै जे लई पकरि समीपके नरन संघ,
यातैं जन आरोही कहे जे बचे उक्त किल ॥ २८ ॥
अध्वै वह छोरि और झूलातैं उदकें ओघ३५,
अन्य पथ उत्तरि दये मिलान भरदार३६ ॥
क्रमठ्ठे मलयकोटि३७ चद्रपुर३८ गुप्तकासी३९,
कुड४० तस न्हाइ१ दै२ रु ठ्ठे सिवदरस कार३ ॥
नारायनकोटि४१ रहि पुनि ठ्ठे गनेसकोटि४२,
सग भेजि झलमलपटना१ मग सुढार ॥
त्रियुगीनारायन४३के दरसन काज तह,
अल्प सत्थ आप जाइ पूजे उक्त उपचार ॥ २९ ॥
वृष्टि करकान कीनी जत्थहु जलदै वढि,

---

१ सभा म २ एक गद्दी पर बैठने का हठ किया ३ अपने आसन पर ॥ २७ ॥ ४ वेगवाले जल के ५ वरली तीर (इधर के किनारे) ६ पंक्ति (डोरी) ७ चमके की डोरी ८ मनुष्यों के समूह ने ९ झूला पर चढेहुए पुरुष १० निश्चय ॥ २८ ॥ ११ मार्ग १२ जल के समूह को ॥ २९ ॥ १३ मेघ ने

तातैं रहि तत्थहि त्रिलोक स्वामीके सरन ॥
प्रस्थित व्है प्रात झलमलपटना ४४पहुँचि,
लंघे प्रात झूलाकरि अन्य स्रोत४५ आवरन ॥
मुंडकट४६ नाम पूजि गनपति मग्गमैं रु,
सैल ढिग गोरीकुंड४७ जाइरहे स्वाचरन ॥
और संगी श्रीकेदार पूजिकैं बहुरि आये,
तोलौं रहे तत्थहि निबाहत सबै नरन ॥ ३० ॥
पीछैं बुधवार४ जुत ज्येष्ठ३ बदि२ तेरसि१३पैं,
मंडे भीमआडोरक४८ जाइ अपनैं मुकाम ॥
श्रीकेदारगंगा४९ बिच दूजे२ दिन१४ न्हान साधि,
लंघि स्रोत५० झूलाकरि अग्गहु क्रिया ललाम ॥
ताही दिन श्रीकेदार५१पहुँचि जथा बिधितैं,
धीरधी प्रनमि पूजे प्रभुकौं उचित धाम ॥
हो तँहँ बरफ रासि ढिगहि हिमालयको,
ताम मरे जाइ जन सत्रह१७ प्रमिति तामें ॥ ३१ ॥
भिन्न भिन्न तामैं जन पंद्रह१५ खपत भये,
बरजत सबके न मानी तिन नैंक बात ॥
पै इक१ उदैपुरके रानाको सगोत्र१ पुनि,
दूजो२ बुंदीसीमगत बंसीपुरको द्विजात२ ॥
जदपि निवारे इन दोउन२ तदपि जाइ,
पानि निज जोरि तँहँ कीनो सहँ देह पात ॥
जोलौं परे दीठि तोलौं जातहि लखाये जुग२,

१ झूला से ढके हुए प्रवाह को २ अपने आचार से अथवा अपने चरणों से (पैदल)चलकर ॥ ३० ॥ ३ धैर्य की बुद्धिवाला ४ बरफ का समूह ५ तहां ॥३१॥ ६ ब्राह्मण ७ साथ ही

केसी विधि जानैं कोन गारिकैं गिरत गात ॥ ३२ ॥
दोहा—इम तैंहँ श्रीजित ताहि अइ, कारि अर्चित केदार५१ ॥
पच्छो करिय मुकाम पुनि, आइ भीम ओढार१५२ ॥३३॥
गिरि टहरी१ गढवाल२को, श्रीकेदार५१ सु थान ॥
दिय पच्छो मुरि दाहिनैं, चलन अग्ग चहुवान ॥३४॥
आइ भीमओढार१५२तैं, पुनि झलमल पटना१५३सु॥
अग्ग झूला३१५४ ऊतरे, अखिल निवाहत आसु ॥३५॥
हित मग राजाकोटि५५ व्है, धामाँकोटि५६ सु धीर ॥
कल्पनादिककोटि५७ व्है, सगिन मग क्रम सीर ॥ ३६ ॥
पुराय गुप्तकासी५८ परसि, ओखीमठ५९ तिम आइ ॥
दरस१ आदि केदारको६०, विरचिय जजन२ बनाइ ॥३७॥
उहाँ भोग उपहारके, प्रथित द्रम्म पचास५० ॥
कारि अंजलि प्रभु भेट करि, अग्गैं प्रस्थित आसं ॥३८॥
हुलकर खड्गनारि हुत्र, निपुन अहल्या१ नाम ॥
तास धर्मसाला६१ तहाँ, कीने जाइ मुकाम ॥ ३९ ॥
धव पीछैं वह पुन्य धिपं, करतभर्ई सुभ काज ॥
विबुधालय१ ठाँठाँ बिदित, सहित सदाव्रत साज ॥४०॥
व्हाँ तैं मग तुगेस६२व्है, बिधि क्रम भेट बिधाइ ॥
ब्रह्मनकोटि६३ व्है बहुरि, अलकनंदिका६४ आइ ॥४१॥
तिहिं झूला करि उत्तरि रु, पित्थलकोटि६५ पधारि ॥
सनि७अष्टमि८सित१सुक्र३को, किय मुकाम सुखकारि ४२
नवमि९ गरुडगगा६६ नदी मज्जन करि तिहिं माग ॥

॥ ३२ ॥ १दस दिन ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ २ पूजन ॥ ३७ ॥ ३ हाथ जोड़ कर ४ गमन हुआ (किया) ॥ ३८ ॥ १६ ॥ ५ पति के पीछे ६रथिम्र मुद्धिवाली ७ मंदिर ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ८ ज्येष्ठ सुदि ॥ ४२ ॥

ह्वै जोसीमठ६७ जात हुव, प्रविदित विष्णुप्रयाग ॥४३॥
अलकनंदिका६८ उत्तरे, पुनि झूलाकरि पार ॥
अग्ग स्रोत लंघे उभय२, ध्रुव छुरिका१।६९ असिधार२।७०
सित१ तेरसि१३ गुरु५ शुक्र३ह्वै, कल्यानादिककोटि७० ॥
अलकनंदिका७१ उत्तरे, जँहँ पुनि झूलाजोटि ॥ ४५ ॥
वाहि१३ दिवस संध्या समय, बिक्खि१ रु जज्जि२ बदरीस॥
तँहँ किय पंच मुकाम तब, श्रीप्रभु धारत सीस ॥ ४६ ॥
आर३ द्वितीया२ सुचि४ असित, पच्छो करि प्रस्थान ॥
कल्यानादिक कोटि१।७२ किय, सुरतहु प्रथम१ मिलान४७
षट्पात्-असित१ तीज३ करि अप्प पंडकेश्वर२।७३ पूजादिक ॥
मग जोसीमठ३।७४ बलि गुलाबकोटी४।७५ सुभ बादिक ॥
ह्वै पीपलकोटि५।७६ हदगरुडगंगा६।७७ ह्वै संगत ॥
बैरागीकोटि७।७८ बलि होइ पद्धति अप्रतिहत ॥
रहि प्रात लंघि भागीरथिप८।७९करन प्रयाग९।८०हु न्हान करि॥
शिवकोटि१०।८१होइ लंघिय सहज श्रीजित राजा बाग सँरि॥४८॥
दोहा-देवीमहड़ा११।८२ गिरि दुगम, क्रम मग चढि चउ४कोस ॥
सुचि४ बदि२ चउदसि१४श्रीनगर१२।८३, आयो बहुरि अदोस४९
मिलि पहिलैं तस महिप सन, आये पुनि पँटअैन ॥
महमानी किन्नी महिप, दूजे२दिन सहसैन ॥ ५० ॥
सित प्रतिपद१ नृपनिज सदन, बिच आराम बुलाइ ॥
महमानी पुनि किय मुदित, अंह तीजे३ उमँगाइ ॥ ५१ ॥
चोथे४ अह ह्वाँतैं चढि रु, रानीबाग१३।८४ पधारि ॥

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ ज्येष्ठ सुदि ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ २मंगलवार ३ आषाढ बदि ॥ ४७ ॥ ४ मार्ग में ५ बिना रुकावट ६ चलकर ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ७ डेरों में ८ सेना सहित ॥ ५० ॥ ९ बाग में १० तीसरे दिन ॥ ५१ ॥

देवप्रयाग१४।८५ मुकाम दुव२, स्नान१ दान२ विधि सारि॥५२॥
रहिय बहुरि भागीरथि१५।८६य, उत्तरि झोला आप ॥
राजखाल१६।८७ विश्राम रचि, पचमि५ सित१ दिन पाप ॥५३॥
करि व्हाँतैं दरकुच क्रम, सुचि४ नवमी९ सित१ सत्थ ॥
हृषीकेश१७।८८ आये हुलसि, त्यक्त मिले सब सत्थ ॥५४॥
रच्छक जन१ हय२ रथ३ करभ४, जीवत रक्खे जत्थ ॥
तहाँ पहुँचि लै सग तिन्ह, महिय गमन समत्थ ॥ ५५ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुचि४ दसमी१० पक्ख सित१ कुच श्रीजित व्हाँतैं किय ॥
गगालक्करघाँट गैल पटगृह पठ्ठाविय ॥
गगाद्वार१८।८९हि गमन अप्प करि मुरि तँहँ आयउ ॥
बारसि१२ न्हाइ विधेय श्राद्ध कनखल१९।९० सद्धापउ ॥
कडखडीप२०।९१ग्राम विश्राम करि लक्कर घाँट२१।९२निवास लहि
सुचि मास विसद१चउदसि१४समय गगा२२।९३लघिय नावगहि५६
इक्क१ पोत उत्तरत उहाँ बारह१२ लग्गे अंह ॥
अधिक उपद्रव इक्खि तजिय पद्धति पहिली तह ॥
सित१ सावन५ सप्तमि७य सत्थ गगा२२।९३ उतारि सब ॥
आइ ग्राम आहार२३।९४ अप्प महिय मुकाम अब॥
दरकुच विसद१ एकादसि११य आइ गुडवारा२४।९५ अंपन ॥
उत्तरे स्रोत जमुना२५।९६ उचित जथा तरड निबाहि जन॥५७॥
करि व्हाँतैं दरकुच हाइ कामी२६।९७ बिसवा२७।९८हद ॥
धोसा२८।९९ नामक द्रग पाइ हातिमुख निवास पद ॥
सिनिवाई२९।१००नैरटौंक३०।१०१तिमसोनवाय३१।१०२टिकि

१२॥ १ शनिवार ॥५३॥२ छोड़ा हुआ साथ ॥ ५४ ॥३ऊंट ॥ ५५ ॥ ४ डेरा ६ ॥ ५ दिन ६ पहिला मार्ग छोड़दिया ७ नाव से ॥ ५७ ॥ ८ इत्यादिक

अष्टमिंद भद्दव६ असित२ चढिय व्हाँतैं न मग्ग चिकि ॥
सरदारसिंह नारव नगर३२।१०३ उनियारापति करि अरज॥
पटु कियउ रत्ति रक्खन प्रसभ गहि स्वगेह पावन गरज५८॥
घनैं हठन दुव२ घटिय अप्प रहि नंगर१३२।१०३नगर इम॥
उपदा२ बिच सस्त्र इक१ तुपक१रक्खि रु श्रीजित तिम ॥
महमानी न करन मनाइ व्हाँतैं इत हंकिय ॥
जात रत्ति इक१ जाम आइ हगपुर३३।१०४ रहि आंकिय॥
दरकुंच असित२नवमी९दिवस दुवलानाँ३४।१०५मग करि बिदित॥
आयउ स्वकीय आश्रम३५।१०६इहाँइम श्रीजित अतिपुरय इत५९

॥ दोहा ॥

या जात्रा बिच जे उदित, गिरि१ तीरथ२ पुर३ ग्राम४ ॥
समुझहु ते मर्ग चिन्ह सब, कहुँ कहुँ कथित मुकाम॥६०॥
इम सुर धृति१८३३ सक आगमन, जत्ता५ उत्तर४।७ जाइ ॥
बदरीसरहिं जजि६ भद्द६ बदि२, आश्रम पहुँचिय आइ ॥६१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमराशौ विष्णुसिंहचरित्रे मरहट्टाङ्गरेजसहायदिल्लीन्द्रालमशाहरुहिल्लाक्रान्तप्रस्तरदुर्गादिविजयनविजितामलाधीशलखनऊपतितदङ्गजासंग्रहणं १ नबाबकालच्छुरिकामहर्तृरुहिल्लसुताहननं २ भरतपुरजट्टयवनरणाकरण

॥५८॥ १ नगर नामक नगर में २ नजराने में ३ नैणवा नगर में ॥ ५९ ॥ ४ मार्ग के चिन्ह हैं अर्थात् ये सब मुकाम नहीं हैं; कहीं कहीं पर मुकाम कहे हैं ॥ ६० ॥ ५ यात्रा ६ पूजन करके ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशिमें, विष्णुसिंहके चरित्र में, मरहठे और अंगरेजों के बल से दिल्ली के बादशाह, शाहआलम का रुहिल्लों से पत्थरगढ आदि विजय करना और लखनेऊ के नबाब का आमिला के पति को जीतकर उसकी कन्या को लेना१ रतकाल में उस कन्या का नबाब के छुरी लगाना और नबाब का उस कन्या को मारना २ भरतपुर के जाट

जट्टाहृतडीघपुररुहिल्लरात्रिसगरपलायन ३ जयपुरागतजसवन्तराव-वाउलाभृत्यत्वहेतुदर्शननानकमतानुयायिसिक्खपञ्चनदजनपदग्रहणाजट्टरुहिल्लदिल्लीदेशलुण्टन ४ श्रीजिदुत्तरदिक्तीर्थयात्रानन्तरबुन्द्यागमन षष्ठो मयूख ॥ ६ ॥ आदित ॥ ३५६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीजित१९८ प्रस्थित जाहि सक, रुचि बदरीवन राह ॥
सुर धृति१८३३सम्मित ताहिसक, बन्पोप्रथम१नृप ब्याह॥१॥
प्रथम कृत्य श्रीजित१९८ प्रथित, सबविधि पुब्ब सधाइ ॥
चलिय अप्प बदरीस चहि, सबन उचित समुझाइ ॥ २ ॥
सुभट भवानीसिंह१ सह, सचिव मुख्य सुखराम२ ॥
पीछैं सन महिपालको, आरभिय उपयामैं ॥ ३ ॥
कोटा१दिक आतन कलित, हुव उपदा व्यवहार ॥
सिसु नृप सग वरात सजि, किय प्रयान मह कार ॥ ४ ॥
सजि पत्ते लै भट१ सचिव२, बीकानैर बरात ॥
ससिसुत४ तेरसि१३ सुक्र३ सित१, सद्दिय लग्न सुहात॥५॥

॥ घनाक्षरी ॥

वयमैं चतुर्थ४ अब्द अतर कुमार वर,

और यवना का युद्ध होना और रुहिल्ले का जाट से डीघपुर लेना और रतिवाए के युद्ध में रुहिल्ले का भागना ३ जसवन्तराव वाउला के जयपुर में आकर नौकर रहने का कारण दिखाना और नानकपथी सिक्खों का पंजाब लेना तथा रुहिल्ले और जाटों का दिल्ली के देश में लूट मार करना ४ श्रीजित् (उम्मेदसिंह) का उत्तर दिशा की तीर्थ यात्रा करके पीछे बुन्दी में आने का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ॥६॥ और आदि से तीन सौ छप्पन ३५६ मयूख हुए॥

१ बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का ॥ १ ॥ २ ॥ २ विवाह ॥ ३ ॥ ३ प्राप्त ४ उत्सव का कार्य ॥ ४ ॥ ५ बुधवार १ ज्येष्ठ सुदि ॥ ५ ॥

बीकानैर भूप गजसिंह सुता तुल्य बय ॥
नाम पन्नकुमरि२००१ बिबाही पट्टरानी१ नृप,
निपुन कुमार सुरतेसकी स्वसा सुनय ॥
देय बसु जात दैकैं कबिन प्रसन्न करि,
सुभट१ अमात्य२ नैं लै सुजस तथातिसय[3] ॥
ब्याहि यौं महामहसौं स्वामीकौं प्रथम ब्याह,
बाल महिपाल आन्यौं बुंदीपुरी बीत भय ॥ ६ ॥
बेद गुन अष्ठ इंदु १८३४ संबत लगत बेर,
मधु[4] सित१ अष्टमी८ प्रयान सुभता मिलाइ ॥
गम्य[5] गिनि रामेश्वर श्रीजित१९८ किपउ गौन,
दक्खिन२१३ के तीरथ समस्त सेव्य[6] दरिसाइ ॥
पट्टनि१ प्रथम१ पूजि केसव२ पँयपयोज[7],
पत्तन बिसाला[8]३ जाइ ईसको दरस पाइ ॥
सिप्रा५ न्हाइ गम्य भू परिक्रमि बिरचि श्राद्ध,
देय दैकैं द्विजन दयो वहु जस वढाइ ॥ ७ ॥
राखि डेरा दत्तके अखारे बिच आप रहे,
जात्रा होइ सफल जितेक दिन श्रद्धा जानि ॥
बैरागी हजार च्यारि४०००सायुध[9] इतेक बिच,
आत सुनि ह्वांके भीत संन्यासी पुकारे आनि ॥
बोले जे सदातँन हमारे१ उनकै२ है बैर,
मत्त जे प्रगल्भ हम थोरे यह छिद्र मानि ॥
आहव[11] रचैं तो आप करहु सहाय आज,

---

१ बाहिन २ धन समूह ३ अतिशय (अत्यन्त) ॥ ६ ॥ ४ चैत्र सुदि ५ जाने यो
६ सेवन ७ चरण कमल पूजकर ८ उज्जैन ॥ ७ ॥ ९ आयुध सहित १० स
११ युद्ध

दीनबंधु बिरुद पुरातन जो पहिचानि ॥ ८ ॥
सुनत पुकार सज्ज श्रीजित१९८। *स्वचक्र सह,
उनकों अभै दै रहे आपही लरन अग्ग॥
बैरागी यहै सुनि पराजय निज बिचारि,
मुरारि कढे जे बाम दक्खिन पकरि मग्ग ॥
फैल्यो जस जाको खंड भारत अमित्त फीत,
लसत हिमालय१ सों दक्खिन उदधि२ लग्ग ॥
ऐसी बिधि जाइ पूजे रामेस्वर नाम ईस१,
अतुल उदार दैदै बिप्रन वसु उदग्ग ॥ ९ ॥
जात्रा यह कीनी ताको प्रतिदिन अध्वक्रम,
लिखित न जान्यों यातैं बरन्यों समासं लाइ ॥
दक्खिन२।३ दिसाके इम तीरथ करि असेस,
आश्रमपैं आये मास तेरह१३ मैं पुण्य पाइ ॥
पृथ्वीसिंह१ भूप इत जैपुर तजत प्रान,
अनुज प्रताप२ कीनों भूपति भटन आइ ॥
बान गुन अष्ट इंदु१८३५ संवत तखत बैठो,
मास राध२ असित२ चउत्थि४ पैं मह मचाइ ॥ १० ॥
भूपति प्रताप यह जैपुर बिदित भयो,
गानमें रसिक राखि गायक गहिर गान ॥
याके नृप होत अवरोधतैं फितूर उठयो,
मान्यों जन्म लीनों पृथ्वीसिंहके कुँवर मानं ॥
साच१ झूँट२ ताकी निहचै न भई पैं सबन,
आदरयो न देखत प्रतापको जस उफान ॥

॥८॥*अपनी सेना सहित १ बहुत बिकसित[प्रफुल्लित]अथवा समूह ॥९॥२ मार्ग का ३ संक्षेप से ४ बैशाख बदि ॥ १० ॥ ५ कलावंत, गहरे गानेवाले ६ जनाने से ७ मानसिंह नामक

बृंदावन यातैं चिरकाल वह मान बस्यो,
प्रभुके प्रताप पेख्यो[1] जात्राके समय जान ॥ ११ ॥
जैपुर तखत बैठो भूपति प्रताप जोलौं,
अब्द[2] प्रति जान्यौं बुधसिंह१९७।१नृपतैं उदंत ॥
बान गुन अष्ट इंदु १८३५ संबत अगारी बात,
अब्द[3] प्रति लिखित न जानी या १९ सतक१०० अंत ॥
यातैं अब भाखीजात बिच बिच छोरि[4] अब्द,
भेकफाल[5] न्याय जो जनाई कथा भगवंत ॥
लेखालय सकल लिखायो प्रभु[6] आपलेख,
जैसैं पुब्ब लिखात न आये उँक्त[7] परजंत ॥ १२ ॥
नगर करौली नाह तुरसमपाल तनै,
मानिक्यादिपाल[8] अभिधान हुतो महिपाल ॥
ताकै ही तनूजा[9] नाम अमृतकुमारि २००।२तास,
बरं[10] बर मानि तास बुंदी अधिराज बाल ॥
हुन अधीस बय तेरहम१३ हायनमैं,
ब्याहन बुलायो गो बरात सजि सो बिसाल ॥
संबत नयन बेद बसु भू १८४२ असित२सहाँ[11],
कलित उछाह साध्यो बारसि१२को लग्नकाल ॥ १३ ॥

---

१ हे प्रभु रामसिंह आप के प्रताप से तीर्थयात्रा को गया तब मैंने भी उसको देखा था ॥ ११ ॥ बुन्दी के राजा बुधसिंह से लेकर जयपुर की गद्दी पर प्रतापसिंह बैठा वहां तक २ प्रतिवर्ष(हरसाल)का वृत्तान्त हमने जाना है परन्तु आगे की वार्त्ता ३ प्रतिवर्ष की इस उन्नीस सौ के शतक के अन्त तक की नहीं मिली इस कारण बीच बीच के ४ वर्ष छोड कर ५ मैंड्क के फदकने के न्याय से भगवन्तसिंह ने कही सो लिखी है ६ हे प्रभु रामसिंह, दफ्तर से सब लेख आपने ही लिखवाया है सो ७ कहे हुए समय पर्यन्त का लेख, पहिले के लेख समान नहीं आया ॥ १२ ॥ ८ माणिक्यपाल नामक ९ पुत्री १० अेष्ठवर ११ मृगशिर बदि में प्राप्त ॥ १३ ॥

श्रीजितके सम्मत बिवाह यह दूजो२ ब्याह,
आप१ घन१ पूरि *बसु१ बिदुरन कबिन ऐन ॥
बुंदी पुटभेदन स्वकीय बिधि काल बिस्यो,
देय सुख निखिल पितामह मुखनें देन ॥
सक गुन वेद अष्ठ भू १८४३ मित समा समय,
राजा गजसिंह मस्यो बीकानेर सिर रैन ॥
सूनु तस जेठे गजि तीसरो३ सुरतसिंह,
पीछैं भो महीपति बिसारि नय१ धर्म२ बैन ॥ १४ ॥
पहिलैं ऽगानको बन्यो स्वबल पातसाह
नादिर स नाम जान दिल्लीकों करी कतल ॥
ताको मारि ताहीके भरोसाके प्रधान भट,
खूब अपनायो राज्य अहमदसाह खल ॥
मथुरा कतल मंडि जानैं करि दिल्ली१ जेर,
मारे मरहट्ठ॰न बिडारे परि हीन बल ॥
साह आलीगोहर४९के जे भट मिले सभय,
ते जवन ताहीके अधीन कीनैं छोरि छल ॥ १५ ॥
सत्रह मतगज भू १८१७ संवत प्रथम समैं,
अहमदसाह रनजीति तब दिल्ली आइ ॥
दिल्लीपति मर्ला लखनेऊ ईस१ उक्त दूजो,
प्रबल रुहेला जो नजीबुद्दोला२ नाम पाइ ॥
दिल्ली काज तत्र इनकै करिगयो जो देस,
जाब्तिखाँ पुत्र भो नजीबुद्दोला गेह जाइ ॥
सूनु जा रुहेलाके भयो गुलामकादिर सो,

* आपने मेघ रूप होकर धन रूपी बुन्दों से १ कवियों के घरों का पूर्ण किये
१ पुर में २ प्रवेश हुआ ४ आदि को ५ रत्नसिंह का पुत्र ॥१४॥१५॥ १ प्राचीन

दिल्लीलूटिबेकौं आयो या समैं छल दुराई ॥ १६ ॥
पहिलैं ख बेद धृति १८४० संवत अनेह पर,
दिल्ली साहआलम५० नैं दुर्बलह्वै पाइ दुख ॥
माहजि सनाम तामैं संध्याकौं सबल मानि,
मंत्री निज कीनौं सो पटैल बज्यो लोकमुख ॥
वाके बल स्वैरस्थ बेद बेद धृति १८४४ साक अब,
सो गुलामकादिर चलायो लैन लूट सुख ॥
साह हत लाह ताहि राहमैं न रोकिसक्यो,
रोकि अब दिल्लीद्वार पैठिबेकी जानि रुख ॥ १७ ॥
जाकै द्वैहजार २००० जंगी कामके सिपाह जानि,
रोक्यो तस अैबो साह आलम५०१५प्रमत्त रहि ॥
अलैयार१ सुलैमान२नाजर३ प्रमुख इहाँ,
बोले करजोरि है रुहेला स्वीय धर्म बहि ॥
उज्झि भय भाखत भरोसाके जनन अैसैं,
सो गुलामकादिर बुलायो सह सेन सहि ॥
आइ तानैं साह दिय पट्टसौं उतारि अरु,
क्रुद्ध बनि मंगिय खजानौं मनि मुख्य कहि ॥ १८ ॥
क्रूर पछिताइ साह बापुरे नजर कीनौं,
मनि गन आदि बित्त ब्रातै जो हो ख्यात मन ॥
तदपि न तृप्तिह्वै बहोरि खिल मंग्यो तत्थ,
धूजि मुगलेस भाख्यो अैसो अब तो न धन ॥
साहकौं इतीक सुनि मारन लग्यो जो मूढ,

॥ १६ ॥ १ समय २ तहां ३ चिन्ता रहित होकर ४दिल्ली के द्वार बद किये ॥ १७ ॥ ५ आदि ६ भय छोडकर ॥ १८ ॥ ७ धन का समूह जो मन में प्रसिद्ध था ८ बाकी का धन मांगा

सोतो जिन आन्यो तिन रोक्यो नेतिभाव सन ॥
तोहू अति क्रुद्ध हाथ छुरिका निकासि तिहिँ,
पूरे खल दीनों साह आलम५० कों अधपन ॥ १९ ॥
केते अधिकारी मुगलेसके कतल करि,
ठानि कछु काल दिल्ली आपुनो अमल ठाम ॥
पीछैं मरहट्ठ सेना आइवेकी सक पागि,
हाथ जो लग्यो वसु सो लै भज्यो भजि हराम ॥
ताको पलटाहु दीनों दिष्टैने त्वरिततम,
वेर दुवर आयो पकर्‍यो यह वुंधन वाम ॥
पीछै कीलिरांख्यो घोर कष्ट सूलपजरमैं,
छेदि छेदि थोरो यों रुहेला हन्यों छल छाम ॥ २० ॥
माहजि वजीर इम जावितखां सूनु मारि,
आनि साहआलम५० ही वैठार्‍यो तखत अर्ध ॥
तथै निज कीनों सव मुलक परन्तु ताको,
वाहिनी वडी वल वसुधरा विरचि वध ॥
साक सर वेद इभ अवनि१८४५ अनेह इत,
भो पता अनर्घ्यं भूप कछ्वागढको कमध ॥
ता सुत कल्यान गुरुमानी पट्ट वैठो तास,
रांम२०१४ प्रभु मातुल जो रावगो सिथिल सधं ॥२१॥

१ नम्रता से २ हाथ से छुरी निकालकर ३ आधा कर दिया ॥ १९ ॥ ४ धन ५ भाग्य ने ६ अत्यन्त शीघ्र ७ उलटा चतुरों मे पकड़ा हुआ आया ८ कैद करके रक्खा ९ लोहे के कांटा के पींजरे में १० छल मे समर्थ छली को मारा ॥ २० ॥ ११जाविदखां के पुत्र को १२अपने(बादशाह के) आधीन १३पृथ्वी की बड़ी सेना से वधन किया १४राजा प्रतापसिंह आयु रहित हुआ १५बड़े घमंडवाला कल्याणसिंह १६ हे प्रभु रामसिंह यह आप का मामा १७ढीली प्रतिज्ञावाला अथवा प्रतिज्ञा मे ढीला हुआ ॥ २१ ॥

तर्क बेद अष्ट ससि१८४६ संबत समय तामैं,
ईस जयनैरको प्रताप नृप बुन्दी आइ ॥
आस ईस७ सुभ्र१ बुध४ पंचमी५ लगन साधि,
दीपसिंह१९८।६ तनया बिबाह्यो सुखमा[2] दिपाइ ॥
नामकरि दुलही बिचित्रकुमरी१६९।१ जो निज,
अनुज तनूजा[3] ब्याही श्रीजित मह[4] अघाइ,
पत्नी हीन आप यातैं दीपसिंह१९८।६पानि करि,
कन्यादान कीनौं बिधि गेहतैं खिल बनाइ ॥ २२ ॥
गढ१ तैं अवधि लैकैं बुन्दीपुर गोपुर[5]२लौं,
मनुज न माये जे जिमाये ते बजार बीच ॥
होत जन भोजन चली बहि तरंगिनी[6] ठहाँ,
सर्करा[7]सो सोर२ ही करि आज्य१ जल२ भक्त[9]१कीच ॥
अनुजकी तनूजा[10] प्रतापकौं बिबाहि ऐसैं,
॥
आची सीख जैपुर१ अलोर२कै भयउ ओंजि[11],
सीमापर संकुलि[12] मचावत मैरक[13] मीच ॥ २३ ॥
जाबदूके७।११ बंस बर सांवतका७।११।१ बार जानि,
श्रीजितनैं पहिलैं प्रतापकौं दयो सुभट ॥
सीम रनमैं सो अभिधा[14] करि बिनयसिंह१,
इहाँ काम आयो पायो अच्छरीन जो प्रकट ॥
मुहुकमसिंहउत्त२७।३१ जाके बोल देत मुरि,

१ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की २ अत्यन्त शोभा ३ अपने छोटे भाई की पुत्री को ४ उत्सव से तृप्त होकर ॥ २२ ॥ ५ नगर के द्वार तक ६ नदी ७ उस नदी में खांड [शक्कर] ही रेत ८ घृत ही पानी और ९ भात [चावल] का ही कीचड़ हुआ १० छोटे भाई की पुत्री जयपुर के राजा प्रतापसिंह को ११ युद्ध हुआ १२ भरकर (अवकाश रहित) १३ मरी रोग के समान मारकर ॥ २३ ॥ १४ नामवरी (यश) करके कछवाहे के पास

मगल२ स नाम वीर आयो काम वीरवट ॥
जैपुर विनय राख्यो श्रीजितनैं भाखि जैसो,
पूजि तैसो क्रमपै वादमैं रह्यो निपट ॥ २४ ॥
संवत तुरग वेद वारन अवनि १८४७ समैं,
पोकरनि वारैंनै विरोध वांध्यो छल पारि ॥
जोधपुर दुर्ग नाती भीमकों तखत जोरि,
याको तात तात भूप विजय दयो उतारि ॥
कोप वस चपाउत पहिलें कुसलसिंह,
कीनों बखतेस जोधपुर वैं अनयकारि ॥
ताकैं अत पाट वैठो विजय तनूज ताको,
मान्यो उपकार भार तापै जैत मदमारि ॥ २५ ॥
आउवा अधीस जैत१ कुसल तनूज अरु,
देवसिंह२ पोकरनिवारो चपाउत दो२हि ॥
केसरी तृतीय३ ईस आसोपको कुपाउत,
रासिपति ऊदावत केसरी४ सनाम सोहि ॥
चैांनि पहिलैं ए अपनें मत चलत च्यारि,
राज परिखदमैं इन्हें नृप विजय रोहि ॥
पकरि पठाइ कारा मारे दुख दैदै पूर,
वरस अनेक वीते जोपै रह्यो वैर जोहि ॥ २६ ॥
देवसिंह चपाउत कहतो असह दर्प,

१प्रशंसा में रहा ॥२४॥ पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह ने छल करके विरोध किया, जोधपुर के गढ पर २पोते भीमसिंह को बिठाकर पिता के पिता अर्थात् पितामह (दादा) ३विजयसिंह को उतार दिया ४ अनीति करके बखतसिंह को जोधपुर का पति किया था ५ उस बखतसिंह का पुत्र विजयसिंह पाट बैठा ६ जैतसिंह का ॥ २५ ॥ पहिले इन चारों को अपने मत पर (स्वतन्त्र) चलते ७देखकर राजा विजयसिंह ने इनको राज्य की सभा में ८ रोक कर ९ कैद में भेजकर

मो कटार कोसपुट जोधपुर दुर्ग माइ ॥
सोतो कीलिं मार्‌यो भो तनै तस सबलसिंह,
परिगो दगासौं सो पै तुपक प्रहार पाइ ॥
ताको हुतो तनय सवाईसिंह नाम तह,
जानै धरि बैर अब उक्त समै ढिग जाइ ॥
आराध्यो बिजय भूप ऊपरकी प्रीति सौं यौं,
भूलि कृत भोरो जैसैं धीजिगयो मन भाइ ॥ २७ ॥
कथित गुलाबराय जाटिनी खवासि करि,
रानिनको छोगा करिराखी जो बिजयराज ॥
राखी बँधवाइ तापैं भगिनीं कहत रह्यो,
कुदिल सवाईसिंह निबहन इष्ट काज ॥
तेजसिंह नामक खवासिकै हतो तनय,
बिस्फोटक रोग भयो ताकै सो बढत बाज ॥
तामैं न्हान आदि काम नियत असेस तजि,
साँचो भ्रात भास्यो भागिनीकौं सो उचित साज ॥२८॥
बिस्फोटक मिटिगो तथापि पटुता न बनी,
चँपाउत भाख्यो भगिनीसौं यह हेतु चहि ॥
मंडोउर जाइ पूज्य देवन मनाइ रचो,
पूजन बढैं ज्यौं बाल जामिजं अरोग रहि ॥
दंपति पधारि सब भटन समेत द्रुत,

१मेरी कटारी के म्यान के भंडारे में जोधपुर का गढ समा सकता है २ उसको तो कैद करके मारडाला ३ सवाईसिंह के पिता और पितामह के साथ कई प्रकार के कार्य किये थे जिनको भूलकर जैसे भोले स्वभाव का मनुष्य धीजै तैसे धीज गया ॥ २७ ॥ ४ उस जाटनी को बहिन कहता रहा ५ खोटे दिलवाला ६ पुत्र ७ शीतला (चेचक) ८ शीघ्र बढा ९ सच्चा भाई दीखा ॥ २८ ॥ १० भानेज ११ स्त्री पुरुषों का जोड़ा अर्थात् गुलाबराय जाटनी (पासवान)

अभय करो यों तेजसिंह मस्यो रोग महि ॥
सो सुनि गुलाबराय स्वामीकों सब समेत,
मानिमत महोउर लैंगई बिसास लहि ॥ २९ ॥
आपुनों दिखाय ऐसें चपाउत पैठि उर,
रीझत स्वैसाज्यों वस कीनी सो गुलाबराय ॥
ताके परतत्र हो महीपति विजय तैसें,
कहती वहै सो करतो मन१ वचन२ काय३ ॥
पीछैं जो मरयो सुत तज्यो व्हाँ अन्न दपंतिरनें,
चपाउत तबहु लिवायो अन्न हित चाय ॥
काहूमिस ऐसें उक्त १८४० संवत नृपहिं काढि,
लैगो पुरबाहिर पूर बाहिर लगाय लाय ॥ ३० ॥
स्वीय भट सर्व राखि पुरमैं सवाईसिंह,
सग ह्वै अकेलो काढि स्वामी समुपेत सब ॥
गोपुर जुराड पुर पाछो पैठि गढगति,
जेठो नृप नाती भीम कारातैं निकासि जब ॥
आप मत्रीपनको करार करि ताकों आनि,
आनमों सभाके सौध गद्दी बइठारि तब ॥
नालीगन उच्छवके सूचक दगाड नेर,
अखिल दुहाई फेरी भीमकी नवीन अब ॥ ३१ ॥
भूपति विजयके सुनें ए सुत सात७ भये,
फतैसिंह१ जालम२ रु भोमसिंह३ नाम कवि ॥

और महाराजा विजयसिंह ॥ २९ ॥ १ मलिन प्रसन्न हावे तैसे २ पासवान और राजा दोनों ने ॥ ३० ॥ ३ बाहर पूर्ण लाय लगाकर राजा को शहर बाहर लेगया ४ अपने भट ५ विजयसिंह सहित सबको ६ शहर के दरवाजे बंध करवाकर ७ राजा के बड़े पोते भीमसिंह को ८ कैद मे निकाल कर ९ रचा से १० सभा के महल मे ११ तोपे ॥ ३१ ॥

त्योंही सरदार४ सेरसिंह५ रु गुमान६ तह,
सामंतादिसिंह७ नाम सप्तम७ को छाइ छबि ॥
तेजसिंह१।८ नामक खवासिके भयो तनय,
होइ सुत जेठे सम जासौं रहे सर्ब दबि ॥
भूखन१ बसन२ सस्त्र३ बाहन४ अतुल भासैं,
रोचमान[1] जाको बपु ज्यौं जगमगात रबि ॥ ३२ ॥
भोम[2]३ सुत भीम१।१ रु गुमान[3]६ सुत मानसिंह१।२,
सप्तम७ के सूनु[4] भयो सूरसिंह१।३ नाम सह ॥
भूपको बडो१ सुत कुमारहि अनसु[5] भयो,
ताके पुत्र मान्यो[6] भीम भोमको तनूज तह ॥
बाहिरहो जालम१ जो जनक[7] प्रसाद बल,
जालपुर[8] मानहो२ गुलाबराय इष्ट जह ॥
ओर सुत नाँती जिते जियत हुते ते आप[9],
कारा कीलिराखेहे बिचारि घरमैं कलह ॥ ३३ ॥
कारातैं निकासि ऐसैं भीमकौं नृपति कस्यो,
सो सुनि बिजयसिंह आन्यो उर कष्ट अति ॥
रानी सम मानी सो खवासिहु गुलाबराय,
मारिडारी चोरैं भेजि घातक सदंभ मति ॥
कुटिल सवाई पुरबाहिर बिजय काढ्यो,
गोकुल[10]रथ गुरुन मिलापहिं कहत काति ॥
कैसैं कछु होहु पैं खवासिकौं हानि रु काक,

१प्रकाशमान(कान्तिवाला)शरीर॥३२॥२भोमसिंहका पुत्र भीमसिंह३गुमानसिंह का पुत्र मानसिंह४सामन्तसिंहकेपुत्रशूरसिंह५राजा का बडा पुत्र(फतहसिंह)तो कुमारपन में ही मरगया६जिसके भीमसिंह को गोद लिया७पिताकी प्रसन्नता के बल से जालमसिंह कैद बाहर था८मानसिंह जालोर था ९ विजयसिंह ने कैद कर रक्खे थे ॥ ३३ ॥ १० कितने ही लोक गोकुल में गुरुओं से मिलना कहते हैं

बाहिरलै विजय दयो दुख गरूर गति ॥ ३४ ॥
सेस भट सगहे बुलाइ तिनकों बिजय,
एकपन लै कह्यो सभामैं इम रोइ रोइ ॥
मै जरठ कोलौं अब रहिहों जियत मद,
पवनको जो मत कहो वह लछन पोइ ॥
पोखरनिवारेसों कहाई तब पवननै,
खोज बस क्यों यह कचक लेहु जस खोइ ॥
यों तिहिं कहाई मो१कों भीम२कों मिलैं अभय१,
होहु तुम वीच२ तो इहा विजय भूप होइ ॥ ३५ ॥
आंट कछु वासर रही यह उभय२ ओर,
जोरि छल गूढ जो महीपति बिजय जानि ॥
सबनके आगै निज इष्टके करत सौंहैं,
इनकों बुलायो मिल्यो चपाउत दुष्ट आनि ॥
बोल्यो पच करहु करार दस१०कोस बढ़ि,
जूझि पहुँचैवो भीम१ मो२जुत जियत जानि ॥
तुम सहधर्म यह बचन निबाहो तोतो,
विजयकों गादीद निकासों भीम हठ बानि ॥ ३६ ॥
वायस सवाई लै यों पवन बचन बीच,
जोधपुर आइ भाख्यो भीमसों जस जनाइ ॥
एक दुव अब्द भूप रहिहैं जियत अब,
जाके अत नियत तुम्हारो पट्ट कित जाइ ॥
लीजे रत्न दुलभ खजानौं खोलि सग सब,

॥३४॥१ गुप्त २ सवाईसिंह ने कहलाया कि मुझको और भीमसिंह को अभय मिलजावे ॥ ३५ ॥ ३ कुछ दिन ४ मार्ग मे युद्ध करके दश कोस पहुंचाने का ॥ ३६ ॥ ५ सवाईसिंह काक ने ६ निश्चय

कीजे कछुकाल बास मेघर यों बदिकाइ ॥
भीमहिँ उतारि त्यों सवाईसिंह पाप भट,
चाल्यो कोस लूटि पीछो नृपको गढ चढाइ ॥ ३७ ॥
जात गढऊपर छली नृप पकरि जोर,
धकि उर कोप तोप मुच्छनपैं पानि धरि ॥
जाजो निज मंत्रही चमूसों पठई जवनक,
जवन१ गोकुलस्थ२ जालम३ ए मुख्य कारि ॥
भीम१ रु सवाईसिंह२ दोउ रन के तोरि१ भट,
आनहु कैँ पकरि२ अधर्मी अति सीम टारि ॥
ऐसी कहि बाहिनी पठावत बचनदारे,
भीमहिँ बचावन मिले उतकों धर्मभारि ॥ ३८ ॥
चूकत करार भूप बिजय अधर्म चहि,
फेलि अघ सेना पठई सो पहुँची फँवर ॥
व्हांके जाट चंपाउत देवैं पकरायो हुतो,
तास नाँती वाको कुल संहर्यो असेस तर ॥
कोल जिन कीनों उत व्है तिन मुरन कह्यो,
बिजय अनकेँ तोहू मुरिबो न मानि वर ॥
खूब आसि भारत दुरऔरके सुभट खिरे,
पर्यो कछुकालसो सवाई१ भीम२ पीलुंपर ॥ ४० ॥

---

१ मेरे घर में २ खज़ाना लूट कर ३ राजा विजयसिंह को ॥ ३७ ॥ ४ अपनी सलाह में ५ उनकी सेना को ५ शीघ्र ही यवन, गोकुली गोस्वामी और जालमसिंह इन तीनों को ६ दोनों के मस्तक तोड़कर ७ अथवा पकड़ कर लाओ ८ सवाईसिंह को अभय का वचन देनेवाले ॥ ३८ ॥ ९ विजयसिंह ने १० फँवर नामक ग्राम में ११ देवसिंह चांपावत को गले में फन्दा डालकर पहिले पकड़ा था उसके १२ पोते और उसके सब कुलको मारा १३ विजयसिंह की सेना को पीछा फिरना कहा परतु तोभी उस सेना ने वापिस लौटना श्रेष्ठ नहीं माना १४ सवाईसिंह और भीमसिंह को हाथी पर देखे ॥ ४० ॥

जोधपुर राजकी सभा ही होते सून्य जह,
आपुनें जे जूझे तिनके हग बचाइ अब ॥
पीलुतें उतारि भीम१ संजुत पिहित पापी,
जो२ करभ बैठि लग्यो पोखरानि पथ जब ॥
काके आगें लरत इतै इनतें काहू कह्यो,
ते जे कछु सेस सून्य वारन निहारि तब ॥
कुशार्पन जारि गये ऊंबरे निज निकेत,
सेस इतके जे पहुँचे ते नृप पास सब ॥ ४१ ॥
साक वसु वेद नाग भू १८४८ मित समा समय,
जेपुर१ अवंती२के विरोध बढ्यो क्रोध जगि ॥
तुगापुर खेत आयो माहजि प्रसंभ तानि,
लक्ख दुव२००००० लै बल अहवंल आपासं लगि ॥
कूरम सचिव दोला आधोर राज्य देन कहि,
पर जो नवाब हमदानी आन्यो प्रीति पगि ॥
ऊंबरयो अनीक जोधपुरको सहाय आयो,
दोहूर ओर घोर अंबमर्द मच्यो तोप दगि ॥ ४२ ॥
क्रोधवस जोधं१ गयं२ हय३ मेंप४ नासकाल,
पेखत खरे दुव२ चमूं पारि गजन पीठि ॥
गोलालगि एतेमें करीतें हमदानी गिरयो,

१भीमसिंह सहित हाथी से उतर कर, वह पापी (सवाईसिंह)२ऊंट पर बैठकर ३हाथी को खाली देखकर ४मुरदों को जलाकर ५युद्ध से बचे सो अपने अपने घर गये ॥ ४१ ॥ ६उज्जैन के ७हठ फैलाकर ८सेना ९महन्ता (मेरे समान कोई नहीं)का१०भ्रम करके११कँवर के युद्ध से बचीहुई सेना१२युद्ध ॥४२॥ क्रोध के वश१३वीर१४हाथी, घोड़े और१५ऊंटों का नाश होते समय हाथियों की पीठ पर राजा प्रतापसिंह और हमदानी दोनों फटेहुए सेना को देख रहे थे इतने में गोला लगकर हमदानी हाथी के ऊपर से गिरा और जयपुर की

आकुलता होत जयनैरके कटक ईठि[1] ॥
भ्रात हमदानीको तदीय गज सज्जभयो,
कूरम कह्यो यों निज ओरके टकत नीठि ॥
दोला[2] यह गोला मम अंग लगतो तो देर,
दैन असु[3] नैकहु न होती यों परत दीठि ॥४३॥
भनत इतीक दोला बनिक कह्यो हे भूप,
स्वामीके निदेस बिनु आधोराज्य दैन पहि ॥
आन्यों सो मरयो तो अब रावरो रह्यो अखिल,
भागधेयं प्रभुको बलिष्ट भास्यो लभ्य लहि ॥
भूपति प्रतापके इतमैं लघुबाधा[5] भई,
चिन्त्यो[6] भूमि उत्तरन छोरिबो मतंग चहि ॥
बोल्यो दै दुसाला मंत्री याबिच हरहु बाधा,
नाँतो गज सून्य देखि टिकिहै अनीकँ[7] नहि ॥ ४४ ॥
तैसैंही[8] करत परदलके प्रबीर तह,
आगैं बढि आवते लखे रजगुन उफान ॥
हेतिं[9] झारि सेना जोधपुरकी दसहजार१००००,
समुख भिरी ठहाँ ठानि सत्रुनको अंवसान[10] ॥
काटि मरहट्ठ करवालनसों संपरांय[11],

सेना में घबराहट की १ इष्टि(इच्छा)हुई २ राजा प्रतापसिंह ने दोला नामक अपने मंत्रि से कहा कि हे दोला इधर(सेना की ओर)दृष्टि होने से ऐसी इच्छा होती है कि हमदानी के लगा सो यह गोला मेरे लगता तो ३ प्राण देने में कुछ देरी नहीं होती अर्थात् अब निर्लज्जता से भागने की अपेक्षा था शीघ्र मरजाना अच्छा था४आपके प्राप्त राज्यको लेने से अर्थात् हमदानी को आधा राज्य नहीं दियेजाने के कारण आपका भाग्य बलवान् दीखता है क्योंकि सब राज्य आपके ही रहा ५ लघुशंका (मूत्र करने) की पीड़ा हुई इससे ६हाथी को छोडकर नीचे उतरना चाहा ७ सेना नहीं ठहरेगी ॥ ४४ ॥ ८ शत्रु की सेना के वीर ९ शस्त्र चलाकर १० नाश करके ११ युद्ध में तरवारों से काटकर

माहजि मजायो करयो कूरमको जय मान ॥
झँवर१ बचे जो खेत तुंगा२ के अखिल झरे,
जोधपुर रच्छक रहे सिसु नहिं जवान ॥ ४५ ॥
जय जो कबधनके जोर यों प्रताप३ पायो,
या १८४८ ही उक्त सघतमैं दक्खिन प्रदेस इत ॥
टीपूसुलतान अंगरेजनके त्रास टारि,
जुद्ध पहिले ही मैं भज्यो सठ कहाइ जित ॥
हैदरअली जो महसूर नृप मंत्री हुतो,
हो जनक टीपूको सु स्वामीको बिगारि हित ॥
आप बरजोर महसूरको बन्यों अधिप,
चाल्यो मनमग्ग त्यों गिनैं न उचितोऽनुचित ॥ ४६ ॥
किंवदंती जानै किरस्तान पकरे कहत,
छअयुत६०००० मान तिनमें लव चतुर्थ१५००० छोरि ॥
क्रूर खिल पैंतालीस सँहस४५०००करे कतल,
बैरी सम भास्यो जो दयाकों अघसिंधु बोरि ॥
ताकै सुत टीपू भो कहायो सुलतान तिम,
जो श्रीरंगपट्टनमैं राजधानी निज जोरि ॥
सो सु सक उक्त१८४८बहिकायो फरासीसनको,
सत्रु कंपनीको सिध्यो मृधतैं तुरग मोरि ॥ ४७ ॥
नेर बुंदी त्यों इत हमीरसिंह नाथाउत,
विष्णुसिंह२००१२ नृपकी खवासी बैठि एक अंह ॥
मत्री बनि स्वामीको पितामहसों मारि मन,

१ सघ ॥ ४५ ॥ २ जयपुर के राजा प्रतापसिंह ने ३ टीपू का पिता था ४ बल पूर्वक जपरी से ५ मन चाहे मार्ग ६ उचित और अनुचित नहीं गिना ॥ ४६ ॥ ७ जनश्रुति (दन्तकथा) है ८ चौथा अंश (भाग) ९ पापी के १० पाप के समुद्र में डुबोकर ११ युद्ध से घोड़ा मोड़कर ॥ ४७ ॥ १२एक दिन१३भोजित

भाख्यो आप भूपति१स्वतंत्र२बलि३ओज सह४ ॥
ईस कोटा जालम अमात्य कहिबेको आज,
इच्छत बिवाही सुता आपकों मचाइ मेंह ॥
है स्वसुर बंदगी बनाइबे उचित होइ,
जासों संधि राखत सितारा१ दिल्ली२ आदि जह ॥४८॥
बात यह नृपहिं मनाइ यों करी बिदित,
श्रीजित निवारयो उक्त सगपन होत सुनि ॥
सूचकन सिच्छ१ बय जोबन उफान२ बस,
चाह करि व्याह कीनों अंगीकृत लाह चुनि ॥
भाख्यो सुनि श्रीजित बडे हमहु आज भये,
गेह हमरेमें ऐबो झालीको अलभ्य गुनि ॥
मान्यो बरजोर तोहू सगपन सो महिप,
पिसुन१ कहा न करै लागो प्रभुकान२ पुनि ॥ ४९ ॥
साहसी जो चंपाउत्त इतकों सवाईसिंह,
आपुने सदन संग पोखरनि भीम आनि ॥
दूजे२ अब्द लैगयो बिवाहन अजलँ देस,
जैसलसहित मेर भाटिन उचित जानि ॥
व्याहिकैं सुन्यों तहँ महीपति मरयो बिजय,
ठीक लखि दुल्लहकों खल सैल पीठि ठानि ॥
जोधपुर लायो अर्धरजनी समय जोही,
पाए जुरे अँरर न खोले इन्हैं पहिचानि ॥ ५० ॥

उम्मेदसिंह से १ उत्सव ॥ ४८ ॥ २ सूचना करनेवालों की शिक्षा से ३ व्याह करना स्वीकार किया ४ उस सम्बंध को जबरी से स्वीकार किया ५ चुगल क्या नहीं करता ॥ ४९ ॥ ६ अपने घर पोकरण नगर में भीमसिंह को लाकर ७ निर्जल देश ८ जैसलमेर में ९ ऊंट की पीठ पर चढाकर १० कपाट ॥ ५० ॥

जाइ उपद्वार जब साहसी सवाईसिंह,
वित्त दै अधिक पटा दैबेको करार बहि ॥
जालिम तहांके फोरि बारी खुलवाइ जाइ,
गादी धरयो भीमहिं ढुराए चौंर बाँइँ गहि ॥
तबहि अचानक बधाईकी चलत तोप,
कोलाहल मच्यो दग जोधपुर आहि कहि ॥
बाहिर हो जालमै रह्यो सो पुर बाहिरही,
मारे सेस रुद्र राजबीजी भीम लेत महि ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

अक वेद वसु चंद १८४९ इह, निपमित संवत नाम ॥
अर्क१चतुर्दसि१४ सुचि४ असित२,तज्यो विजय वपु ताम५२
तदनतर रट्ठोर तह, अष्टमि८ सित१ आषाढ४ ॥
भट चपाउत भीमकों, विजय पट्ट दिय बाढ ॥ ५३ ॥
वय त्रिसट्ठि६३ हायन विजय, तज्यो कलेवर तत्र ॥
वय छवीस२६सम भीम बलि, छितिप बन्यों धरि छत्र॥५४॥
पहिलें सूचिय जोधपुर, नाम अजित नरनाह ॥
तनय भए बाईस२२ तस, अभय१ आदि रज राह ॥ ५५ ॥
सुत जोरावर१ खेमसर१, स्वामी अक समप्पि ॥
पुत्र देव२ इत पोखरनि२, ईस अक थिर थप्पि ॥ ५६ ॥
कछुक दये इम भटनकों, सुत अकस्थै सुभाइ ॥
भजे सेस बखतेस भय, हन्यों अजित तब हाइ ॥ ५७ ॥

---

१ खिड़की पर २ पहरायतों को ३ जालमसिंह ४ राजवंशियों (राज-वियों) को ॥ ५१ ॥ ५ आषाढ़ वदि ६ विजयसिंह ने तहां शरीर छोड़ा ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ७ वर्ष ॥ ५४ ॥ ८ अभयसिंह आदि ॥ ५५ ॥ ९ गोद देकर १० पोकरण के ठाकुर देवसिंह के ॥ ५६ ॥ ११ अमरावों को, पुत्र गोद दिये १२ बखतसिंह ने, पिता अजितसिंह को मारा, तब बाकी के सब भागगये ॥ ५७ ॥

देव सु इम काकाहु दमि, भूपति बिजय भतीज२ ॥
कीलि हन्यौं न गिनैं कुहक, बंधुभाव नृपबीज ॥ ५८ ॥

प्लवङ्गमम्—सु इम सवाईसिंह पितामह बैर पर,
दुख बिजयहिं अति दै रु करयो सब राज्य कर ॥
मग्ग खवासि मराइ अजस१ अघ आदरिय ॥
अब भीमहिं पुनि आनि कथित१८४९ सक भूप किय५९

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंहचरित्रे बुन्दीपतिविष्णुसिंहविक्रमपुरविवहनश्रीजिद्दाक्षिणयात्राकथन १ जयपुरेशपृथ्वीसिंहपरासुतातदनुजप्रतापसिंहसिंहासनासादनपृथ्वीसिंहसंदिग्धसुतमानसिंहवृन्दावननिवसन २ एकोनविंशतिशतकसंबन्धिशकक्रमकथाऽपरिज्ञानसूचनविष्णुसिंहकरोलीविवहन३ विक्रमपुरपतिगजसिंहपञ्चत्वतदनुजसुरतसिंहपट्टाक्रमण ४ लुण्टितदिल्लीकरुहिल्लयवनगुलामकादिरशाहालमान्धीकरणश्रुतदिल्लीशामात्यमाहजिसिंधियागमनकांदिशीकरुहिल्लकारामरण ५ कृष्णग

इस कारण देवसिंह काका था, जिसको १ भतीजे राजा विजयसिंह ने कैद करके मारा २ राज्य वशवाले सम्बन्ध को नहीं गिनते ॥ ५८ ॥ ३दादा देवसिंह के वैर पर विजयसिंह को दुःख देकर ४ राज्य को अपने हाथ में किया ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके अष्टमराशि में, विष्णुसिंहके चरित्र में बुन्दी के पति विष्णुसिंह का बीकानेर विवाह करना और श्रीजित् का दक्षिण की यात्रा करना १ जयपुर के राजा पृथ्वीसिंह का देहान्त होकर छोटे भाई प्रतापसिंह का गद्दी बैठना और पृथ्वीसिंह के सन्देह युक्त पुत्र मानसिंह का जन्म होकर उसका वृन्दावन में रहना २ उन्नीस सौ के शतक में सम्वत्वार कथा नहीं जानने की सूचना करना और विष्णुसिंह का करोली विवाह करना ३ बीकानेर के राजा गजसिंह का देहान्त होकर छोटे पुत्र सुरतसिंह का पाट बैठना ४ रुहिल्ला यवन गुलामकादिर का दिल्ली को लूटकर शाहआलम को अन्धा करना और दिल्ली के वजीर माहजी सिंधिया का आना सुनकर भागे हुए रुहिल्ला का कैद होकर मारा जाना ५ किशनगढ के

ाधीशप्रतापसिंहकलेवरहानतत्पुत्रकल्याणसिंहगद्दिकोपविशनज
पुरेशप्रतापसिंहबुन्दीविवाहकरण ६ मरुदेशसामन्तपोकरणठक्कुर
सवाईसिंहस्वपितामहदेवसिंहघातकयोधपुरेशविजयसिंहराज्यच्युति
समयतत्पौत्रभीमसिंहपट्टप्रदापनपुनाराजसिंहासनारूढविजयसिंह-
झँवरग्रामयुद्धपलायितभीमसिंहपोकरणग्रामनयन ७ तुंगाग्रामयो-
धपुरेशानीकसहायजयपुराधीशप्रतापसिंहावन्तीपतिमाधजीसिंधिया
समरविजयनाङ्गरेजसमरटीपूसुलतानपलायन ८ योधपुरेशविजयसिं
हमरणचापाउत्तसवाईसिंहभीमसिंहपट्टोपवेशनभीमसिंहस्वबन्धुमार
ण सप्तमो मयूख ॥ ७ ॥ आदित ॥ ३५७ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ चूडालदोहा ॥

हत बुद्धिप वय तरुन अब, विष्णुसिंह२००१२वसुधेस बिराजत॥
गज१हय२विद्या सत्र३गुन, श्रुति४पुराण५इतिहास६काव्य७रत॥१॥
असह वेग वेधत उडत, वाजीन बल बरछीन बराहन ॥

राजा प्रतापसिंह का देहान्त होकर उसके पुत्र कल्याणसिंह का गद्दी बैठना और जयपुर के राजा प्रतापसिंह का बुन्दी विवाह करना ६ मारवाड़ के उमराव पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह का, अपने दादा देवसिंह को मारनेवाले जोधपुर के राजा विजयसिंह को छल से गादी से उतार कर उसके पोते भीमसिंह को गादी पर बिठाना और फिर विजयसिंह को गद्दी पर बिठाकर झँवर ग्राम के युद्ध से भागकर भीमसिंह को पोकरण लेजाना ७ तुंगा नामक ग्राम में जयपुर के राजा प्रतापसिंह का जोधपुर की सेना की सहायता से उज्जीण के पति माधजी सिन्धिया के युद्ध में विजय करना और अंगरेजों के युद्ध से टीपू सुलतान का भागना ८ जोधपुर के राजा विजयसिंह का देहान्त होने पर चांपावत सवाईसिंह का भीमसिंह को गद्दी बिठाना और भीमसिंह का अपने बान्धवों को मारने का सातवां ७ मयूख समाप्त हुआ ॥ ७ ॥ और आदि से तीनसौ सतावन ३५७ मयूख हुए ॥

१ भूपति ॥ १ ॥ २ घोड़ों के बल से ३ सूवरों को

प्रदर१तुपक२कारि मृगपतिन, सहज हनिहु समुझैं सु सराहन॥२॥
कवि१बुध२भट२आदर करन, सचिव४न संसद मान प्रसारन ॥
पंच५अंग मंत्र१हिं परखि, वलि प्रगल्भ हित२ वैर३ बिचारन ॥३॥
रामभक्त कपिराजकों, मन्त्रिय इष्ट सु दिए महीपति ॥
धुज्जत जिहिं सब धाटिधर१, अरि२मेवास३अनिष्ट लहैं अति॥४॥
नृप सगपन हुव नांनता, कोटामंत्रिय झल्ल कनी सन ॥
सो श्रीजित चाह्यो न सुनि, पालतँ पहु प्रतिमल्ल धनीपन ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक ख पंच बसु सोम १८५० असित२ सुक्र३ग सप्तमि७ ग्रह ॥
इंद्रसिंह२०१।१अभिधान तनय जह्नोनि जन्यों तह ॥
प्रथम कुमर भव पर्व तास उच्छव अति तानिय ॥
बिष्णुसिंह २००।२ बुन्दीस दये नानाविध दानिय ॥
करि जातकर्म१ आदिक क्रिया लहि अवसर जग जस लयो ॥
श्रीजित तटस्थ भावहु सुनि सु भोंवत मह बिरचत भयो ॥ ६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

नाथाउत चालुक हमीर पलटायो नृप,
भावी बस सो मरयो रु मनोहर१ताको भ्रात ॥
कृष्णसिंह२ तनय उमेद३हो राज काज करैं,
ए काका१ भतीज२ द्रोह श्रिजितपैं उफनात ॥

---

१ तीरो से ॥ २ ॥ २ सभा में ३ मन्त्र (सलाह) के पांच अगों "कर्मणामारम्भोपाय, पुरुषद्रव्यसम्पत्, देशकालविभाग, विनिपातप्रकार, कार्यसिद्धि" की परीक्षा करनेवाला और बुद्धिमान् ॥ ३ ॥ ४ हनुमान को इष्ट माना श्रेष्ठ भाग्यवाले राजा ने ५ धाड़ा डालनेवाले ॥ ४ ॥ ६ झाला जालमसिंह की कन्या से ७ वह राजा अपने दादा से शत्रुता और स्वामीपन की पालना करता था अर्थात् उम्मेदसिंह के विरुद्ध था और उसकी आज्ञा में नहीं था ॥ ५ ॥ ८ ज्येष्ठ वदि ९ जन्म समय १० आपकी ओर का, वा रुचि पूर्वक उत्सव ॥६॥ ११ विष्णुसिंह को

सवत कहे १८५० मैं तिनहीनैं सुचि४ मास सित,
देवगुरु५ वार दसमी१० कों लग्न दरसात ॥
जालमकी तनया बिवाह्यो नृपकों लै जाइ,
अजबकुमारि २००।३ नाम तीजी३ रानी क्रम आत॥७॥
जालम स्वसुर तदनतर समय जानि,
आपओर आन्यों मोरि जामातों धरार्धनिक ॥
ईरनमैं नानावस्तु कीने भेट साधि हित,
मेंगल१ तुरग२ सस्त्र३ वस्त्र४ हेम५ त्यों मनिक ६ ॥
मोदसों पठाइ बुंदी निकट महीपतिकै,
फेली जन जूह राखे आपुने जथा फनिक ॥
उक्त १८५० सकहीमै इत कालख नगर आंजि,
वीर दोला जैपुरको मत्री सो मर्यो वनिक ॥ ८ ॥
सवत अवनि पच अष्ठ इक१८५१ मान समै,
मत्तपनतैं करदलाके चोक जग मचि ॥
भागपुर नरेस१ रु माहजि कुमर२ मिरे,
लगत प्रहार भागे जवन सभीके लचि ॥
कपनीकी सेना सम निपुन कवायदमैं,
रारि तँहँ नौरिनकी पलटनि दोइ२ रचि ॥
भागपुर लेगई नवाबकों निबहि भोन,
सन्ध्याके सिपाहनके वेढेंतैं बचाइ वचि ॥ ९ ॥
लीनों अगरेज७न मलाका१ उपद्वीप इत,
वर्मा१ मास२ तैं जो लग्यो दक्खिन२।३ दिसा बिथेरि ॥

१ आषाढ सुदि २ बृहस्पतिवार ॥ ७ ॥ ३ जमाई ४ राजा को ५ दहेज में ६ हाथी ७ जवाहिरात ८ फैल करनेवाले मनुष्यों का समूह ९ सर्पों के समान १० युद्ध में ॥ ८ ॥ ११ मय सहित १२ गाघरा पलटन १३ घेरे से या युद्ध से ॥ ९ ॥ १४ फैलाव (विस्तार)

द्वैरही लघु टापू ओर तासौं लगतेहि दाबे,
सिंहपुर१ नाम रुपि नाँग२ नाम अग्रसारि ॥
अच्छे जल१ पवन२ बनावत सुखद इहाँ,
कालापानी कहत प्रजामैं इन्हैं रूढि परि ॥
क्रूर अपराधी इनहीमैं बसिबेके काज,
कौलिकैं पठावत न ऐबेको प्रबंध करि ॥ १० ॥
पुण्यापति पेसवा नाम बिप्र,
जाति चितपावन जो अपनैं न सुत जानि ॥
अंक निज लेतभो तनैं गिनि अमृतराव१,
औरसभो पीछैं तास बाजेराय२ सुत आनि॥
रीति कहि पीछैं टारि पंचन अमृतराव१,
बाजेराय२ बैठाऱ्यो पिताके पट्ट मह मानि ॥
उक्त१८५१ सकहीमैं कहे ए भये उदंत उभै२,
कढिकैं अमृतराव१ कीनौं द्रोह तजि कानि ॥ ११ ॥
पुण्याको प्रदेस सब लूट्यो इहिं दुष्ट पीछैं,
बादी खल बिप्र१ गाइ आदिक हनैं बहुत ॥
पीछैं जिहिं कासी आइ लाखन खरच पारि,
द्विजनकी दुस्थतां दबाई व्है उदार हुत ॥
पाप१ मैं रु दान२ मैं हु२ घाँ जो अतिसीम पायो,
सो१ इम बिडारि राख्यो२ इमहिं तदपि सुत ॥
भोग बसु पुण्या बाजेरावहु कुपुत्र भयो,
देसहि गुमाइदैहैं जो पुनि प्रमाद जुत ॥ १२ ॥
संवत नयन बान बारन अवनि१८५२ समा,
बुन्दी इत श्रीजित नरेसतैं भये बिमन ॥

१ कैद करके ॥ १० ॥ २ गोद ३ कुलवंती विवाहिता स्त्री से ॥ ११ ॥ ४दरिद्रता ॥ १२ ॥ ५ विष्णुसिंह से उदास हुए.

पेच पिसुननके उपायतैं अवस पाइ,
जात्रा जगदीसकी करी पुनि सभक्त जन ॥
आपुनैं परिग्रह समेत जाइ आश्रमतैं,
पूजि उपचारन१ दे उपदां२ उदार पन ॥
जात१ अरु भ्रात२ पहिलैं१ जे परसे न जानै,
तीरथ समस्त परसे ते सुद्ध भाव सन ॥ १३ ॥
सोलखिन१ नागर२न दे इत नृपहिं सीछा,
कासी आत श्रीजित कहाई यह रोधे करि ॥
आवहु न देस अब रहहु उहाँहीं आप,
भेट सतपंच५०० दम्म प्रतिदिन लेहु भरि ॥
एक१ संग बिक्रम१।१ हो थाँनांपतिको अनुज,
धीर दूजो२ भूरा२ महासिंह१९।१९ बसी धर्म धरि ॥
सामतके७।१।१संगी च्यारि४भैरव१।३बिनयसिंह२।४,
सूर खुसहाल३।५ ज्ञानसिंह४।६ हुते संग सँरि ॥१४॥
संगी दुहितासुत कवधज नवलसिंह१।७,
सोमानी प्रधान खुसहालीराम१।८ पुत्र१।९ सह ॥
संकर१।१० रु बिनय२।११ तृतीय३ तैसें शिवदान३,
तीन३ संगी चारन बुलाये तिनकौंहु तह ॥
कृष्णराम१।१३ धात्रेय रु मोप२।१४ तिम कोटवाल,
श्रीजितके राज्य संग कोटवाली उज्झि वह ॥
कायस्थहु केसोराम१।१५ सालिग्राम२।१६ वैस्य संगी,
विष्णुदास१।१७ नाजर हे इत्यादिक सार्थ वह ॥ १५ ॥

१ चुगलों के २ पूजा ३ भेट ॥ १३ ॥ ४ राजा विष्णुसिंह को शिक्षा देकर ५ श्रीजित का बुन्दी में आना रोककर कहलाया ६ हाथों की एक शाखा का नाम है ७ बख्तर ॥ १४ ॥ ८ दौहित्र ९ छोड़कर ॥ १५ ॥

स्वीय गुरु कुसल१।१८ भतीज तथा सुरतान१।१९,
जाइ जगदीस द्वै२ मिले ये पीछे आत जिम ॥
कापरनि हठन पठायो सुरतान १।१९ कह,
आयो कछवाहनके रामपुर ब्याहि इम ॥
जानैं तास सामंत२० रु सगत २००।२ तनूज जुग,
कापरनि आयो सु१तो नायो गुरु मानि किम ॥ १६ ॥
श्रीगुरु१ सहित जे१हे हाजरि तिनहिं सभा,
श्रीजित बुलाइ भाख्यो जाहु सबही सदन ॥
जानि तिम बिन्नति करी तिन करन जोरि,
जातबेर आपुन अयोध्या सुन्यो पाप पन ॥
बुंदीके उदंतमैं अनिष्ट जिम पीछैं बन्यौं,
सूनु सरदार१९९।४ जैसैं छोरि बास दुक्ख सन ॥
जेठे१ सुत ईश्वर२००।१ समेत गयो जैपुर जो,
मुरनकी भाखी तब आप सो चही न मन ॥१७॥
नैर लखनेऊ१ फैजाबाद२के नवाबहुनैं,
आपतैं कहाइ कही बंदगी बताइ भरि ॥
मामके पितामह१के रावरे पिता२सौं मेल,
हो यौं मिलि जाहु कालिह मो घर पवित्र करि ॥
सोपै प्रभु मानी नाँ नवाबकी व्हाँ भेजि सेना,
नाँती समुझायो क्यौं न अन्यद्वारा जाक्ष जरि ॥
नाथाउत कृष्ण१ अरु छाऊलाल२ नागरहि,
भूप पलटायो जोर जालमके पाप भरि ॥ १८ ॥
पीछे न पधारे१ लखनेऊ न पधारे२ पुनि,

॥ १६ ॥ १ अपने अपने घर जाओ ॥ १७ ॥ २ मेरे दादा से ३ इस कारण४ पोते को ५ जालमसिंह झाला के जोर से ॥ १८ ॥

जाइ जगदीस पुरि आत इहाँ सर्वजुत ॥
कासी रहिबेहीकों कहाइ अव आप कहो,
आसय कहाइ बनें पालै१ जेहि सत्रु२ उत ॥
भाख्यो तहाँ श्रीजित यों बरजत मोहि भूपे,
सर्व तुम जावहु सम्हारहु स्वनारि१ सुत ॥
रहिहों इहाँ मैं वानप्रस्थन३ उचित रीति,
इच्छा उनकीतैं पाइ कासी बसिबो प्रभुत ॥ १९ ॥
अैसो सुनि सासन कितेक जन छोरि आये,
श्रीगुरु१ कह्यो व्हाँ मैंतो रहिहों सततं सग ॥
श्रीजित कह्यो नहि निबाहनकों स्वापतेय,
मगिखैहों मैं द्विज कह्यो गुरु१ धरि उमग ॥
विक्रम सुभट कह्यो तिमहिं न चाहि बसुं,
इत्यादिक कतिक रहे ढिग ज्यों निज अग ॥
जालेम स्वसुर इत बुंदी राखि स्त्रीय जन,
भेद बल भूपकों रचायो अपनेंही रग ॥ २० ॥
धाइआत मंत्री सुखरामपे दंम धमाइ,
लाख१००००० द्रम्म नृपपें लिवाये जपि जालमहि ॥
जाकरि गनेसघाँटी१ कोट१ दरवाजे१ जुत,
तारागढ तेसें बडटाँका२ बर सिल्प बहि ॥
कलाधारी हरिको निकेत३ रु पृथुल कोस४,
श्रीजितके सम्मत रचे ए ४पाछैं मेल रहि ॥
पै अब कथित काल झालानें फारक पारि,
जनहु स्वकीय राखे बुंदी१ अरु देस२ चहि ॥ २१ ॥

---

१ बुन्दी का राजा मुझ बुन्दी आने को रोकता है ॥ १९ ॥ २ निरन्तर ३ धन
४ धन ५ जालमसिंह झाला ने ६ अपने वीर ॥ २० ॥ ७ दंभ ८ मन्दिर ॥२१॥

तारागढ एक[१] टर्यो झालाके प्रबंधनतैं,
नाथाउत१ नागर२ सु पै निज करन सीर ॥
तारागढ लै चले नरेसहिँ सिखाइ तिम,
बट्टतैं[१] कहाई पहु आतहाँ लै कति बीर॥
सरवर हुतो दुर्गपति सीसोलेस[२] अरज,
कराइ तानैं आप आवहु गुन गहीर ॥
जालमके पच्छको इहाँ न ऐहैं कोऊ जन,
श्रीजितको सासन यों है हम धरहु धीर ॥ २२ ॥
देसके सिपाह तिम छसत६००छुराइ दये,
कामपर राखे तहँ खारी[३]तटके कबंध ॥
मुख्य रनसिंह तिनमैं करि निज सु मान्यों,
दुर्गपति आवन दये न ऐसैं मदअंध ॥
नाथाउत१ नागर२ उहाँ भाखन लगे नृपहिँ[४],
श्रीजित न छोर्यो राज्य आप रहे हत संध[५] ॥
जाकी आन सीस रहै स्वामी सो कहायो जात,
रावरे निदेसमैं न जोरकी गिनहु गंध ॥ २३ ॥
स्वामीकों इहाँ इम मुराइराख्यो सूचकन,
खीजबस यातैं रह्यो पन्नगलों बलखाइ ॥
कासीपुर आत इहिँ कारनतैं रोध क्रम,
बरजि कहाइ रहिये तहँ बिधि बनाइ ॥
श्रीजितहु भाखी रहिबेकी जब एह सुनि,
छोरि तब आये घनें आयतन[६] मोहँ[७] छाइ ॥
मंगिहों न कछु साधिलैहों दासभाव मैंही,

१ मार्ग से २ सीसोला ग्राम का पति ॥२२॥ ३खारी नदी के किनारे के राठोर
४ विष्णुसिंह को कहने लगे ५ प्रतिज्ञा छोड़नेवाले ॥२३॥६ घरोंमें ७स्नेह करके

ऐसी बदि विक्रम१ रह्यो उहाँ प्रसभं पाइ ॥ २४ ॥
श्रीगुरु कुसल१ भट विक्रम२ दुवहि संगी,
साँचेमनसों ए रहे स्वामी पास प्रीति सन ॥
सेनमैं थोरेसे मध्यभावतें रहे सुनत,
और बहु छोरिआये मोह जोरि मोरि मन ॥
सबकों परखि ऐसैं कासीतैं उचित साधि,
आपहु प्रधान कीनो आजमके आयतन ॥
मग्ग बिच रोकन अनेक नृप दूत मिले,
पै तिन्ह रुक्यो न नैंक श्रीजित समर्थपन ॥ २५ ॥
माधोपुर आत यों कहाई कछवाह मनि,
जैपुरतें मनुज भरोसाके पठाइ जह ॥
आश्रम पधारहु व्है जैपुर प्रथम आप,
ऐहो जो न तो मैं आइ लाइहों सो पुराय अह ॥
माधवपुरहि जाइ झालाके सचिव मिले,
अरजकरी यों है न मंतु हमरो असह ॥
वय अनुसार नीतो रावरे प्रबल बनैं,
मानैं काहूकी न जानैं भोगनमैं नित्य मह ॥ २६ ॥
मंतु न तुमारो इम श्रीजित तिन्ह मनाइ,
जालमलों जेहरि कहायो नर्म गालिजुत ॥
जैपुरधनीको इत ऐबोही निर्यत जानि,
आपहि पधारे सोधि जामाता अभीष्ट उत ॥
समुह प्रताप आइ लेगयो उचित साधि,

१ हठ करके ॥ २४ ॥ २ स्थान में ॥ २५ ॥ ३ जयपुर के राजा ने ४ पवित्र दिन ५ हमारा अपराध नहीं ॥ २६ ॥ ६ जालमसिंह भी जयसिंह कहलाने लगा अर्थात् जैसे जयसिंह ने बुधसिंह से बुन्दी छीन ली थी तैसे यह भी छीनना चाहता है ७हसी (मसकरी) ८ निश्चय ९ जमाई का

पुब्ब जिम बैठो भिन्न अजित तहाँ प्रभुत ॥
जामाता कह्यो यों निज संग मम सेना जाइ,
देस१ जुत बुन्दी२ करैं रावरे अधीन हुतें ॥ २७ ॥
श्रीजित कह्यो यूं आहि नाती जारिका सुपहु,
बात घरकीहै इहां हैं नहिं कछु बिचार ॥
जात अब व्हाँ मो समुझायैंतैं समुझि जैहैं,
आप जिन आनों नैंक संसय मन उदार ॥
ऐसैं कहि जैपुरतैं बिरचि प्रयान इत,
आए निज आश्रम पढावत जस प्रसार ॥
बुन्दी कहि भेजी प्रभुरंगके चरन बंदि,
कासी पुनि जैहैं रहिबो चहि सब प्रकार ॥ २८ ॥
ऊपर१ की बात ऐसैं कासीतैं कहत आए,
आप ढंग जैपुरव्है आश्रम स्वकीय इत ॥
अंतर२की नैंक न जनाई बात दोहू२ ओर,
हित हिव१केन अहित२ न जो गिनि अहित ॥
सुभट१ अमात्य२ गये बुन्दीके सबै समुह,
माथावत कृष्ण१ कों निहारि कह्यो आंहि कित ॥
मो हग जरातैं होतजात अब ऐसे मंद,
ऐसी सुनि ओरन दिखायो कृष्ण१ सो विदित ॥ २९ ॥
कृष्णको बिबाहिबो समीप हो सो जानि कही,
आयु तनुमैं बं है न व्याह करिबो उचित ॥
पीछैं तुम बुंदीके मुसाहब सु मंत्र पटु,

१ शीघ्र ॥ २७ ॥ २ बुन्दी के इष्टदेव का नाम रंगनाथ है ॥ २८ ॥ ३ किध है ४वृद्ध अवस्था के कारण ॥२९॥५अब अल्प आयु में (कृष्णसिंह को मरवावें इस कारण उसके विवाह करने को अनुचित कहा)

करिहो विचारि काज मानिबो स्वबुद्धि मित ॥
सबको कुसल पूछि दे पुनि सबन सीख,
थान निज केदारेस पास बन्यों तत्र थित ॥
थ्योंस कछु अंतर पितामह१ रु नप्ता२ है३हि,
जालमको पच्छ जोपै जानतहो मत्रजित ॥ ३० ॥
एकदिन श्रीजित श्रीरंगके निलय आय,
आप रहते ज्यों रहे उत्तर४।७ त्रिद्वार ओर ॥
दक्खिन२।३ त्रिद्वार दिसा बैठे नरनाह नाती,
ठानैं बुधउत्तर४।७ त्यों दक्खिन२।३ भटनें ठोर ॥
नप्ताको कृपानलै निकासि लखि पानि लयो,
तबतो सिटाइ सकि पलटे सबन तोर ॥
तोहू धीर श्रीजित सो दे नृपहिं भाख्यो तूहि,
मोहि हनि१ औरनपैं क्यों हनात२ कुलमोर ॥ ३१ ॥
सो सुनि सिटाइ भूप भूमिकों लखन लग्यो,
पीछो दयो आप सो कृपान लयो कोस कारि ॥
कछु न कह्यो गो न मिलाइ दीठि जोरि कर,
भीत आत ह्वीत नैंन हेतं लेत लेत भारि ॥
जपी पच्छपोतिन कुपुत्रहु भैंजा जदपि,
पितर दयालु होत तदपि दया पसरि ॥
ऊठि तदनतर निजाश्रम सिधारे आप,
सो पहु खिसानु पछिताइबेके कष्ट परि ॥ ३२ ॥

---

१ पोता ॥ ३० ॥ २ मन्दिर में ३ उत्तर दिशा के तिबारे में ४ पोता विष्णुसिंह ५ श्रीजित की ओर पश्चिम और राजा की ओर उमराव बैठे ६ पोता की तरवार लेकर ७ वह खड्ग विष्णुसिंह को देकर कहा कि हे कुल के मुकुट मुझे दूसरों से क्यों मरवाता है तू ही मार ॥ ३१ ॥ ८ वह खड्ग म्यान में कर लिया ९ लज्जित १० स्नेह से ११ राजा के पक्षवालों से श्रीजित ने कहा कि १२ सन्तान कुपुत्र होजावे तो भी १३ राजा लज्जित हुआ ॥ ३२ ॥

कढत कितोक काल संसय बिघात करि,
कीनौं बिसवास जानि श्रीजितकौं सानुकूल ॥
बीच नृप जानी पिसुननकी कपटबाजी,
मानी मन सुद्धि पहिचानी प्रीति सुख मूल ॥
याही हेतु पीछैं कृष्णसिंह१ रु मनोहर२ ए,
बाग रंग आदिक बिलासमैं फबत फूल ॥
मंत्र मिस भोजनादि सालामैं बुलाइ मारे,
सीढीनपैं आत परयो मनोहर प्रोत सूल ॥ ३३ ॥
गयो भजि कोटा भीत छाऊलाल नागर सु,
जोपै कुँहकेस मरतो पै तज्यो बिप्रजानि ॥
सेसहु भजे कति रहे कति उदास सम,
महिप कह्यो मैं रह्यो पितामह पूज्य मानि ॥
नैर इत कोटा नाम महिप गुमान मर्‍यो,
सम्मत त्रि सर अष्ट अवनी १८५३ प्रमित आनि ॥
पायो तास तनय उमेदसिंह ताको पट्ट,
जालमके तंत्रहि रह्यो जो होत हित हानि ॥ ३४ ॥
आसफउद्दोला लखनेऊको नवाब इत,
हो जो अतिसीम दानी पै गुन परख हीन ॥
ताकै हो तनै न यातैं एक जवनीको तनैं,
बालक हलिदहु लख्यो रुचिर१ त्यौं प्रबीन१ ॥
ताहि सुत मानि अंगरेजन मनाइ तानैं,
कुलहिं मनाइ वह पट्टधर पुत्र कीन ॥

१ सन्देह मिटाकर २ प्रसन्न ३ रंगविलास बाग मे ४ सलाह करने के मिससे ५ भोजनशाला में ६ बरछी में पोया हुआ ॥ ३३ ॥ ७ ठगों का पति ८ राजा गुमानसिंह ९ जालमसिंह झाला के आधीन ॥ ३४ ॥ १० उसके पुत्र नहीं था ११ पाटवी पुत्र किया

जनकें अनंतर वजीरअली नाम जोही,
अवधि नवाब भो करे जिहिं सब अधीन ॥ ३५ ॥
जाको नाम जगमें सहादतअली सुनत,
दाइभागी याको भो पितृव्य सुत बहि डोरि ॥
दंग कलकत्ता अंगरेजन कतिक देस,
जैवो लिखि भाख्यो देहु मोकहँ तखत जोरि ॥
तबतो बिकाल यह विन्नति लगी न ताकी,
हाकिम वजीरअली चाहत सब निहोरि ॥
पै यह नवाब पीछैं मत्त वैं तरुन पाइ,
करन अनीति लग्यो साहसी व्है बिधि कोरि ॥ ३६ ॥
नीच सुनि पाइ जोहि पुरमें रुचिर नारि,
हठन बुलाइ सोही विलसी अभय होइ ॥
पीछैं तो पिताहुकी जनी जे अवरोध पाई,
बिलसि सबल तेहु तरुनी जस भिगोइ ॥
दग१अवरोध२रु कुटुंब३ बल४ मत्री५ देश६,
सबन कुपुत्र समुझायो पै खलत्व खोइ,
तानैं नाहिंमानी व्है बडे नवाबकी तियन,
अंगीकृत एह न यों रकलों कहिय रोइ ॥ ३७ ॥
भावी तब तैसो अंगरेजनको चाह्यो भयो,
वेग कलकत्ता जो सहादतअली बुलाइ ॥
वासूँ लिखवाइ देस अद्ध अो द्रविणा आदि,
जोहि बइठारयो लखनेऊके तखत जाइ ॥

---

१ पिता के मरे पीछे ॥ ३५ ॥ २काका के बेटे ने ३ पिता समय ४ तरुण अवस्था पाकर ॥ ३६ ॥ ५पिता की स्त्रियां ६जनाने में पाई उनको बल पूर्वक (जपरीसे) भोगी७दुष्टपन से उनका समझाना छोड़कर ८अंगीकार करके ॥३७॥९धन आदि

कामीं जो नवाब सब सम्मतिसौं दूरकीनौं,
सोंपै अधिकारी अंगरेज१हिं तँहँ नसाइ ॥
उक्त१८५३ सकर्हामैं *सकलत्रसौं वजीरअली,
भाजि आयो जैपुर प्रतापको सरन भाइ ॥ ३८ ॥
नृपसौं कह्यो इम सभाबिच मिलि नवाब,
सरन सहाय सुन्यौं बिरुद तुमारे बंस ॥
अत्र जो रहौं तो राखिलैहो१ सौंपि दैहो२ आप,
द्रब्यकी न हानि देहु ज्यौं मिटैं अरिन दंस ॥
राम२०।१४ नरनाह यौं जनश्रुति सुनतरहैं,
इष्ट बसु३ लैकैं कह्यो रामबंस अवतंस ॥
अर्थ लगिहै सो जो लगाइबे कहत आप,
धाम तुमरो तो रहो को करि सकत ध्वंस ॥ ३९ ॥
यौं पहु प्रताप राख्यो सरन वजीरअली,
जैपुरको जानि अंगरेजन यह उदंत ॥
आइ इष्ट महुर उपायनको लोभ१ आनि,
मंग्यो जो नवाब कछु औरहु नियम२ मंत ॥
सूचि यौं नवाब मुहिं चौरैं छोरि सस्त्र सह ॥
अरिन दिखैहो तोहु दुरित न पैहो अंत ॥
सोहु ताकी न सुनि अहो तजि बिरुद स्वीय,
कीलि अंगरेजनकौं सौंप्यो लखनेऊकंत ॥ ४० ॥
मानि इन कांतर प्रतापहिं कनकैंमुद्रा,

---

* स्त्री सहित ॥ ३८ ॥ १दन्त २ हे राजा रामसिंह ऐसे दन्तकथा (जबानं बात) सुनते हैं ३ चाहा हुआ (इच्छानुसार) धन लेकर ४ रामचन्द्र के वं के मुकुट ने ५ धन ६ नाश ॥३९॥७ मोहरें भेट होने का लोभ करके ८ तो मुझको सौंप देने का तुम्हैं पाप नहीं लगैगा ९ कैद करके ॥ ४० ॥ १०कार ११ सुवर्ण की मुहरें प्रचार (चलन) की तो नहीं दीं मोहरों का प्रचार सुध

रीतिकी१ न दीनी दीनी रीतिकी२ कनकरंग ॥
आश्रम विसिख अष्ट भू१८५४ समा सक अनेह,
अधिप प्रताप यों कलंक सु लगायो अग ॥
पीछैं पछितायो आरकूटकी महुर पेखि,
सो लग्यो रहन गूढ लै त्रपा१ कुजस संग ॥
प्रान जोलों कल्पियो बहु सूल लोह पंजरमें,
तोलों अंगरेजन वजीरअली आति तंग ॥ ४१ ॥
पट्ट लखनेऊको सहादतअलीहु पाइ,
स्वीय मतमाँहिं खिल दीनों सबकोंहि सुख ॥
पीछैं व्है प्रगल्भ नयपाटव अतुल पाइ,
देसतैं मिटैवो चाह्यो कंपनी निदेस दुख ॥
जानैं गजउत्तर अगाऊ लिखि केहि जानै,
मोरे अधिकारी सब लंधनके स्वामि मुख ॥
दूतहि इहाँको होतो छम सु इजारदार,
पै न फल पायो कछु दिष्टके बडे कलुख ॥ ४२ ॥
उक्त१८५४ सकहीमैं तक्कू हुलकर ईस इत,
विग्रह विहात भो मल्लार नाती काल वस ॥
इंदउर दंग जसवंतराव एकंदग,
तनय खवासिको तदीयें बैठो पट्ट तस ॥
उक्त१८५४ सकहीमैं भीमैं जोधपुर ईस इत,

का है सो तो नहीं दी और सुवर्ण के रंग की १पीतल की मुहरें दीं २ पीतल की मुहरें देखकर ३लज्जा लेकर गुप्त रहने लगा ॥४१॥ ४बुद्धिमान् अथवा जबरदस्त और नीति की चातुरी ५ विस्तार पूर्वक उत्तर ६ जाने (ज्ञात) हुए ७ आदि ८ भाग्य के बड़े पाप से अथवा बड़े पाप के भाग्य से ॥ ४२ ॥ ९ शरीर छोड़ा (मरा)१०काया११ तक्कू के खवास का पुत्र उसके पाट पर बैठा१२भीमसिंह नें

जाॅलपुर सेना भेजि बेढ्यो दुर्ग खोइ जस ॥
पंद्रह१५ समा बयमैं मानसिंह तास पति,
पायो नाँ पराजय रचायो खूब रारि रस ॥ ४३ ॥
संबत कलंब भूत अष्ट अवनी१८५५समय,
तामैं इत बुन्दी दूजो२ जादवी जन्यो तनय ॥
बाल २०।२ वह नाम संसकार बिधिलों न बच्यो,
इंद्रसिंह२०।१ अग्रज ज्यौं बालहि न पाइ अयं ॥
आश्विन७ के असित२ त्रयोदसि१३ जनमि इहै,
दूजो२ हू कुमार न रह्यो ज्यौं रविलों उदयं ॥
बुद्धि धन पहिलैं१ बधाइ मैं उभय२ बेर,
प्रसर्‌यो अकाल पीछैं२ भावीठै बिसिष्ठ भय ॥ ४४ ॥

,
॥
,
॥
,
॥
,
॥ ४५ ॥

उक्त१८५५ सकहीकै काल संहननं सन्ध्या उज्भि,
माहजि वजीर मर्‌यो उज्जइनी ईस इत ॥
राज्य तस पट्ट बैठो दौलतसहितराव,

१जालोरपुर में सेना भेजकर गढ को घेरा २ पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ॥४३॥ ३ आनेवाले समय के शुभ कर्मों का फल नहीं पाकर ४ सूर्य के समान उदय होनेवाला वह दूसरा कुमार नहीं बचा ॥ ४४ ॥ यहां एक छंद की त्रुटि है ॥ ४५ ॥ ५ शरीर ६ छोडकर ७ दौलतराव

हुलकर सीरी व्हैहु जित तित जग जित ॥
उक्त १८५५ सकहीमैं इत दक्खिन मथुल देस,
आंजि केही हारि अंव मद व्है जो मूढमित ॥
अतकी लराई रुपि टीपू अंगरेजनसों,
दिर्ष्ट मतिकूल भिरयो साहसी इहां विदित ॥ ४६ ॥
सट्ठिखट अयद६ मृत १ घायल२ भये सुभट,
सेस कंपनी१के सूर अच्छत रहे समर ॥
ज्योंही द्वैहजार२०००मृत२ घायल२ अखिल जानैं,
भीलुके पलानैं खिल टीपू२ के अनीक भर ॥
ताही रनमांहि मारि टीपूकों वलिष्ट तव,
जेनरल विलजली जई इम वढ्यो जवर ॥
सो श्रीरंगपट्टनमैं ताको अवरोध सोधि,
लूटिकैं खजानौ१ इंला२ लेतभो२ असेस अंर ॥
अंग सर नाग भूमि१८५६ संवत अनेह हृत,
——लखवाद्विज पटैलको भट निदान ॥
जैपुरसों आट कछुकारन उरभि जात,
आयो देस ढुंढाहर लुट्टत वल अमान ॥
जो भेल्यो मताप पहु कूरम समुख जाइ,
घोर पुरलवाके समीप मच्यो घमसान ॥
सेना मरहट्ठनतैं अधिक हुतो पै संग,
एक विनु दोलाके सध्यो न साचो अवधान ॥ ४८ ॥

देश में२युद्ध३अब वे मूर्ख के समान मद होगये ४विरुद्ध भाग्य से लड़ा ॥४६॥५युद्ध में विना चत(घाव)रहे६पाकी के कायर भागगये७भूमिद८शीघ्र॥४७॥ ९उज्जैन के पति पटैल का उमराव लखवा नामक ब्राह्मण१०युद्ध११एक दोला नामक मन्त्रीके विना१२सच्ची सावधानी नहीं सधी तथा मनोवाञ्छित नहीं सधा॥४८॥

स्वामी राम२०१।४ सुनहु जनश्रुति जनावत ज्यौं,
दक्खिन२।३ अनीक लच्यो पहिलैं बिदूर हुत ॥
पै कछु समय अंत जैपुरके चक्र पर,
भाग्य प्रतिकूल भयो जीत१ टारि हरि२ जुत ॥
कूरम सभीक४ह्वै अचानक भज्यो कहत,
आइ खरे पीछे खेत पाइ मरहट्ठ उत,
भूप सु कितेनके निवारतहु ऐसो भज्यो,
जैपुरमैं जात तामैं धाम दुरयो धीर धुत ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

बत्त जनश्रुति इम बदत, आंयुअवधि नृप एह ॥
कबहु न पुनि बाहिर कढ्यो, नय१ रु धर्म धरि नेह ॥५०॥
उक्त जु लखनेऊ अधिप, सौंपि वजीरअली१ सु ॥
लखवासन भजि२ लज्जमैं, बूड्यो जदपि बली सु ॥ ५१ ॥
इम जीवत मृत भो अधिप, पुर जयनैर प्रताप ॥
रोचि रहित बिमना रह्यो, अपजस बिस्तरि आप ॥५२॥
संबत हय सर अष्ट ससि१८५७, इत बुंदिय नरनाह ॥
पुर सोपुर परन्यौं प्रथित, बिहित चतुर्थ४ बिबाह ॥५३॥
गिनहु लग्न साध्यो गनित, सुंचि४ सित१ छट्ठी६ सोम ॥

१ हे स्वामी रामसिंह २दन्तकथा ऐसी सुनते हैं कि पहिले तो ३बहुत दूर तक दक्षिण की सेना भागगई परन्तु थोड़े समय पीछे जयपुर की सेना पर भाग्य उलटा हुआ जिससे विजय को छोडकर ४ जयपुर का राजा प्रतापसिंह भय युक्त होकर अचानक घोड़े सहित भागा जिसपीछे मरहठे उस क्षेत्र को पाकर आ खड़े हुए ५तहां धीरता को छोडकर मकान में छिपगया ॥ ४९ ॥ ६ जीवन पर्यंत ॥ ५० ॥ ऊपर कहेहुए लखनेऊ के पति वजीरअली को ७ अंगरेजों को देकर और लखना से भागकर वह राजा ८ बलवान् था तो भी लज्जा में डूबकर ॥ ५१ ॥ ९ कान्ति रहित उदास रहा ॥ ५२ ॥ १३ ॥१०आषाढ सुदि

कविन त्याग वसु भ्राढ्य करि, विथरि किंत्ति छिति व्योम५४
कन्या भूप किसोरकी, सरदकुमारि२००।४ सुभ सील ॥
स्वसा राधिकादासकी, सो पहु ऊढ सलील ॥ ५५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंहचरित्रे विष्णुसिंहपुत्रजननश्रीजिद्विरुद्धविष्णुसिंहझल्लजालमसिंहकनीपाणिग्रहण१ कालखनगरसमरजयपुरमन्त्रिदोलावैश्यपरासुभवनकरदाग्रामभागनगरनवाबमाहजीसुतसंग्रामनवाबपलायन २ पेशवाबाजेरावविरुद्धामृतरावपुण्यपत्तनमान्तलुण्टनकुपुत्रबाजेरावराज्यच्युतिसूचन ३ विष्णुसिंहविरक्तश्रीजिज्जगदीशयात्रागमनविष्णुसिंहश्रीजिद्बुन्द्यागमननिषेधन ४ रङ्गनाथदर्शनव्याजश्रीजिद्बुन्दीमत्यागमनविष्णुसिंहकरसमर्पितकृपाणश्रीजित्स्ववधसूचनविष्णुसिंहव्रीडासमासादन ५ कोटापतिगुमानसिंहमरणतत्सुतोम्मेदसिंहझल्लजालमसिंहायत्तीभवन ६ स्वजनन्यादिव्यभिचारहेत्वगरेजानिष्का-

१ धन से धनवान् ॥ ५४ ॥ २ पति ३ लीला सहित व्याहा ॥ ५५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके अष्टमराशि में, विष्णुसिंहके चरित्र में, बुन्दी के पति विष्णुसिंह के पुत्र प्रकट होना और श्रीजित से विरुद्ध होकर जालमसिंह झाला की कन्या से विवाह करना १ कालख नगर के युद्ध में जयपुर के मंत्री दोला वैश्य का माराजाना और करदा में भागनगर के नवाब और माहजी के पुत्र से युद्ध होकर नवाब का भागना २ पेसवा बाजेराव से विरुद्ध होकर अमृतराव का पूना का देश लूटना और कुपुत्र बाजेराव से राज्य छूटने की सूचना करना ३ बुन्दी में विष्णुसिंह से उदास होकर श्रीजित का जगदीश की यात्रा जाना और विष्णुसिंह का श्रीजित को पीछा बुंदी आने से मना कराना४ रंगनाथके मिस से श्रीजितका पीछा बुन्दी आना और पोते को खड्ग देकर अपने को मारने की सूचना करने से विष्णुसिंह का श्रीजित से लज्जित होना५ कोटा के पति गुमानसिंहका मरना और उनके पुत्र उम्मेदसिंह का झाला जालमसिंह के वशीभूत होना ६ लखनेऊ के नवाब आसिफुद्दौला के दत्तक पुत्र वजीरअली का, उसकी माता आदि से व्यभिचार करके अंगरेजों से उसका निकाला जाना और सहादतअली का नवाब होकर वजीर

सितलखनेऊपत्यासिफुद्दौलादत्तकपुत्रवजीरअलीजयपुरशरणग्रहण शहादतअलीनबाबपदप्रापण ७ स्वर्णादम्मप्रत्ययगृहीतरीतिमयदम्म जयपुरेशप्रतापसिंहस्वशरणागतवजीरअल्याख्यांगरेजायत्तीकरणन बाबशहादतअल्याख्यांगरेजविरोधन ८ इन्दोरेशहुलकरतक्कूमरणात दासीपुत्रजसवन्तरावपट्टासादनयोधपुराधीशभीमसिंहजाबालिपुरदुर्ग मानसिंहसमावरण ९ अवन्तीपतिमाधजीसिंधियामरणसिंहासना रूढदौलतरावकतिपययुद्धपराजयनांगरेजरणटीपूसुलतानहनन १० लावानगरावन्तीसामन्तलखवाविप्रयुद्धजयपुरेशप्रतापसिंहपलायन- बुन्दीपतिविष्णुसिंहसोपुरविवाहकरणवर्णनमष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥ आदितः ॥ ३५८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीयप्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत काबल ईरानकैं, उरझी प्रथम अनेह ॥
बन्यौं तबहि रनजित बली, इन लवपुर[2] सिख एह ॥१॥
नानकमत[1] अनुगत नियत, अवसर उचित उपाय ॥

अली का जयपुर शरण आना ७ जयपुर के राजा प्रतापसिंह का धोखे से पीतल की मोहरें लेकर अपने शरणागत वजीरअली को अंगरेजों के आधीन करना, नबाब सहादतअली का अंगरेजों से विरुद्ध होना ८ इन्दोर के पति हुलकर तक्कू का मरना और उसके पासबानिये पुत्र जशवन्तराव का पाट बैठना, जोधपुर के राजा भीमसिंह का जालोर के गढ में मानसिंह को घेरना ९ उज्जैन के पति माधजी सिंधिया का मरना और दौलतराव का उसके पाट बैठकर कई युद्धों में हारना और अंगरेजों की लड़ाई में टीपू सुलतान का मारा जाना १० लांवा नामक पुर में उज्जैन के उमराव लखवा नामक ब्राह्मण से लड़कर जयपुर के राजा प्रतापसिंह का भागना और बुन्दी के पति विष्णुसिंह का सोपुर विवाह करने के वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और आदि से तीनसौ अट्ठावन ३५८ मयूख हुए ॥

१ पहिले समय में २ लाहोर में ॥ १ ॥ १ नानक मत के साथ चलनेवाला

अप्प सुनहु प्रभु राम२०१।४पह, नृपति भयो जिहिं न्याय।२।

॥ घनाक्षरी ॥

जातिकरि जट्ट रनजीतकों पितामह जो,
सो चरितसिंह नाम जानों पहिलै समय ॥
जवू आदि आढ्य पुर लूटे वहुवेर जानैं,
वित्त वहु जोर्‍यो दोर्‍यो धारि धारि मध्य वय ॥
ताके भो तनूज महासिंह अभिधानं तैसे,
जिततित दोर्‍यो जोहु धांटि मेल खाटि जय ॥
सो रह्यो अधिक काल पत्तन अमृतसर,
ताके यह वीर रनजीत प्रकट्यो तनय ॥ ३ ॥
विस्फोटक रोगमैं गयो तम नयन वाम२,
पै जिहिं पिता छत सपूती प्रकटाइ पूर ॥
सैजातीय जाति चहुँ४ओरके सिख समूह,
स्वजनक पीछैं वढ्यो सीमासौं अधिक सूर ॥
साह पुर कावलको जवहि जमानसाह,
आयो लंघि अटक दिखायो जे इतहु दूर ॥
तानैं यों सुनी तँह ईरानपति सेना तानि,
जित्तन हिरात आत रित्तं न मुरैं जरूर ॥ ४ ॥
सो सुनत पीछो भज्यो सजव जमानसाह,
ताकी रही वूडि के वितस्ताके सलिल तोप ॥
पुनि घर तिन रनजीतकों दयो यों पत्र,
नोंलिगन भेजहु निकासि अधिकात ओप ॥

।२॥१धनवान् २ महासिंह नामक पुत्र हुआ ३ धाड़ायतियों से मिलकर जय स
पादन किया ॥ ३ ॥ ४ शीतला के रोग से ५ अपनी जातिवालों को ६ सेना
का विस्तार करके ७ खाली नहीं मुड़ेगा ॥ ४ ॥ ८ अटक नदी के पानी में
९ तोपें १० शोभा से

तोप आठ८ भेजी रनजीतनैं कढाइ तब,
ओरहु अनेक साध सासन हित अलोप ॥
व्है प्रसन्न यातैं साह काबल दयो हुकम,
लवपुरँ छीनिलेहु करि रन कालकोप ॥ ५ ॥
साहबादिसिंह१ चेतसिंह१ रु महुरसिंह३,
देस१ काल२ मूढ हुते हाकिम ए लवद्रंग ॥
जट्ट रनजीतनै मिलाय द्वारपाल जिन,
सज्जि यह गो तब कपाट खोले छल संग ॥
सो लाहोर लीनौं इम पहिले अनेह सिख,
जीत्यो बहु भूपनके दुर्ग१ देस२ जय जंग ॥
सो अब भुजग पंच बारन अवनि१८५८ साक,
उद्धत चलायो मुलतानपैं धरि उमंग ॥ ६ ॥
हाकिम मुजफ्फरखाँ नाम मुलतान हुतो,
तानैं सुनि आत गढमैं बल अतुल तानि ॥
तोपैं करि सज्ज रह्यो अंतर१ लरन तोर,
बाहिर निकसि भन्यौं बाहिर२ बिनति बानि ॥
मंडि महिमानी१ त्यौं उपायन२ बिबिध मंजु,
मनिगन आदि दये स्वामीलौं महत मानि ॥
तब रनजीत मुलतानकौं दुगम तांकि,
आयो मुरि गेह दया छलमैं प्रकट आनि ॥ ७ ॥
उक्त १८५८ सकही इत कबंध१ कछवाह२ईस,
पुष्करमैं भीम रु प्रताप२ मिले प्रीति पर ॥
द्वैरही भूप दुलही बिबाहे दुब२ घाँकी दुव२,
जोधपुर१ जैपुर२ सगाई सोधि तुँल्यतर ॥

१ हुकम २ लाहोर ॥ ५ ॥ ३ समय में ॥ ६ ॥ ४ सुन्दर भेट ५ दुर्गम देखकर ॥ ७ ॥ ६ दोनों ओर की (परस्पर) ७ अत्यंत बराबर पन देखकर

जेठो१ सुता आनदाँदिकुमरि१ प्रतापकी जो,
ब्याह्यो कछ्वाही इतैं कर्मध्वज भीम१ वर ॥
भीम अनुजा भगिनी३ तिम अर्बुदनामधेया,
भूप परताप२ परनी यों उभै२ पत्ते घर ॥ ८ ॥
नैर इत कोटा झल्ल जालम निपुन नीति,
भूपति उमेद निज तंत्रकीनों मल्ल भरि ॥
देसकाल कोविदँ वढ्यो सो प्रभुराम२०१४देखो,
कीलिराखे हाकिम समैके जिँहिँ दाव करि ॥
जानैं निज ओर जाहि दिल्लीके सबै जवन,
पेसवा२ प्रमानैं हमैं चाहत त्यौं छप हरि ॥
हुलकर३ सन्ध्या४ गिनैं जालम हमारो हितू,
अंगरेज५ मानैं झल्ल आपुनों ध्रुनत्व धरि ॥ ९ ॥
नीतिनल जानै देस१ काल२ की दसा निरखि,
जैपुर जैर्ड जो विप्र लखवा१ रहत जानि ॥
दुरजनसाल २ खीची राखि ए अधीन द्वैर हीं,
मौसिकमैं लाखनदे जगहि उचित मानि ॥
वनत विरोध दुवर यौं कछु निमित्त वस,
पेलि एनाकों उदैपुरपैं अनख आनि ॥
जाजपुर लीनों भीमैं रानोंतैं कलह जोति,
पच्छिम३५ कितीक करी कोटाके आधिप पानि ॥१०॥
मेवारन राख्यो स्वीय स्वामीतैं गुराइ मन,

---

१ आनन्दकुमरि २ कमधज (राठोड़) भीमसिंह ३ भीमसिंह की छोटी बहिन ४ जिसका नाम मालूम नहीं है ५ राजधानियो मे प्राप्त हो हो कर ॥ ८ ॥ ६ अपने पक्ष में ७ चतुर ८ कैद कर रक्खे थे ९ छल मिटाकर १० निश्चयपन धरकर ॥ ९ ॥ ११ जयपुर को जीतनेवाले ब्राह्मण लखवा को १२ तनखाह में १३ सेना भेजकर १४ महाराणा भीमसिंह से ॥ १० ॥

प्रधनं[1] मरे न जानैं नामी इम जाजपुर ॥
भिल्लहड़ापुरलौं भई बस कथित[2] भूमि,
धारत दुहाई महारावकी प्रधान धुर ॥
इतको अमल रह्यो सोलह१६ समा[3] अवधि,
अँबल[4] सिटाइ रह्यो रानौं कष्ट पाइ उर ॥
भाखे १८५८ सकहीं यौं झल्ल जालमके नीति धरे,
पेचनतैं कोटाको प्रताप बढिगो प्रचुर[5] ॥ ११ ॥
पंडितोपटं[6]की मरहट्ठ लाल कोटापुर,
काल पटुँ[7] संध्या को पठायो रह्यो लैन कर ॥
मित्र कीनौं ताकौं झल्ल जालम उचित मानि,
दोउ२नके एक१ चित्त मिटिगो कितोक डर ॥
बिप्र लखवा१ रु खीची दुरजनसाल२ बलि,
उक्त लाभ लै तिम छुराइ दये एहु[8] अर ॥
प्रभुके कुलादि भट देसके निबल पारि,
प्रबल अनीक परदेसी राखे प्रीति पर ॥ १२ ॥
उक्त १८५८ सकहीसौं कछु पहिले समय इत,
जेनरल बिलजली मिलापमैं सुख जनाइ ॥
लेख जुत पेसवातैं मित्रता चहन लागो,
संध्यानैं दयो तब सो बाजेराव बहिकाइ ॥
तासूँ प्रतिकूल जसवंतराव भो तबहि,
पेसवा मिल्यो ठहाँ जेनरलसौं भयहिं पाइ ॥
देकैं कंपनीकौं बुंदेलनको अखिल देस,
आपुनौं इलाका तज्यो कोलके नियम आइ ॥ १३ ॥

---

१ इस कारण युद्ध में नहीं मरे २ कहीहुई (मेवाड़ की) भूमि ३ वर्षतक ४ निर्धन ५ बहुत ॥ ११ ॥ ६ पंडित खिताबवाला ७ समयचतुर ८ शीघ्र ॥ १२ ॥ १३ ॥

वात यह सध्याकौं न भाई यातैं छेद्म बस,
नागपुर नृप१तैं पटैल तब मेल पारि ॥
काठमाँडू नृप२कौं स्वपच्छमैं बहोरि करि,
रुचिमैं मनाइ अंगरेजनसों लैन रारि ॥
ज्योंही लसवारी१ हाथ२ दिल्ली३ मुख्य जग जीति,
सध्या१कों हरायो विलजली२नै जु मद मारि ॥

॥ १४ ॥

अंक सर नाग भूमि १८५९ संवत समय अब,
हारि इम दो२उन निरंतर निबल होइ ॥
सध्या१नैं समस्थलिका२ देस कंपनीकों दयो,
घोंसल्या१नै ओडीसा२ दयो घन धन धिजोड ॥
उक्त १८५९ संकहीमैं अंगरेजननैं आगरा१ रु,
दिल्ली२पुर है२ही लये दक्खिन२।३को खेल खोइ ॥
जेनरल उक्त जो असाँई रन उक्त जीत्यो,
दु खित हराये सध्या१ घोंसल्या२ तबहि दोइ२ ॥ १५ ॥
पास विलजलीके व्हाँ हुतो दल सहस पंच५०००,
दोउ२नके पास व्हाँ हुतो हजार तीस३०००० दल ॥
तोहू विलजलीनैं झारि संतत असह तोप,
वज्र गति गोले गेरि कीनैं सत्रु हीन बल ॥
आगरा१ रु दिल्ली२ होत कंपनी अधीन इत,
दोनों मेटि दोउन२तैं सध्याको सब दखल ॥

१ छल के वश २ आदि ॥ १४ ॥ १ दक्षिणियों (मरहठों) का दुःख मिटाकर ४ नगर का नाम है ॥ १५ ॥ ५ सेना ६ निरन्तर

कैदी ज्यौं हुतो जु साह आलम४९ सु अंध काढि,
मुद्रा लाख १००००० मासिक कराइ दीनौं सोयकल
प्राचीके समुद्रतैं लगाइ सीमा दिल्लीपुर,
कोस सतसप्तक ७०० लौं कंपनी यौं राज्य कारि ॥
हाकिम पुरातन इहाँके सब गंजे हंत,
एक१ जसवंतराव१ मान्यौं बरजोर अरि ॥
जट्ट सिख दूजो२ रनजीत२सों इतो न जब,
बढन लग्यो ही जो मही तिय नवीन बरि ॥
जित्वर अजेय अब लंधन सबन जान्यौं,
जे भये अधीन दीन अंतर बिरोध जरि ॥ १७ ॥
संबत ख तर्क बसु भूमि १८६० सित सावनमैं,
जैपुर प्रताप मर्‌यो भूत१४ तिथि काल जाम ॥
सूनु तब ताको मत्त उद्धत जगतसिंह,
बित्रप[11] नरेस भयो रीतिसौं संतत[12] बाम ॥
जीवत प्रताप मान्यौं मारिबो उचित जाको,
नाहिं सुत दूजो२ हो बचायो[13] यौं रहन नाम ॥
उक्त १८६० सकहीमैं भीमैं[14] जोधपुर भूप इत,
बाहुलै[15]८की बिसद१ चउत्थी४ तज्यो बपु ताम ॥ १८ ॥

---

१ रुपये २ लाख रुपयों के ऊपर कुछ अंश ॥ १६ ॥ ३ पूर्व दिशा के समुद्र से लेकर ४ पहिले के ५ पृथ्वी रूपी स्त्री को ६ अन्य को जीतनेवाला और आप नहीं जीतने में आवै ऐसा ७ लंदन नगर को ॥ १७ ॥ ८ श्रावण मास के शुक्लपक्ष में जयपुर का महाराजा प्रतापसिंह मरा ९ जहां १० उस प्रतापसिंह का पुत्र उद्धत बुद्धिवाला और ११ निर्लज्ज (जगतसिंह) राजा हुआ सो १२ रीति से निरंतर विरुद्ध था १३ इस कारण नहीं मारा १४ भीमसिंह ने १५ कार्तिक सुदि चौथ को तहां शरीर छोड़ा ॥ १८ ॥ वहां मूर्ख सवाईसिंह ने

मातंगी करडपैं दुसाला तब डारि मूढ,
काढी सो सवाईसिंह चंपाउत छद्म कारि ॥
जात अवरोधतैं दिखाइ त्यों घने जनन,

१(व)चंडालिन (भंगिन) स्त्री के टोकरे पर दुशाला डालकर२उस चांडालनी को निकाली और ३ जनाने से आती हुई बहुत मनुष्यों को दिखाई और

(व)जोधपुर के महाराजा भीमसिंह के कृत्रिम पुत्र धोकलसिंह की उत्पत्ति का कारण दिखाने के लिये सवाईसिंह का यह कपट रचना ग्रंथकर्ता ने लिखा परंतु जोधपुर की ख्याति में यह वृत्तांत जिसप्रकार लिखा है वह नीचे लिखाजाता है ॥

महाराजा मानसिंह जालोर पै जहां फौजमुसाहिब सिंघी इंद्रराज किले के घेरा लगाये हुए था इस अरसे में महाराज भीमसिंह ने अदीठ के फोड़े से तीन दिन तक बीमार रहकर सं०१८६० में कार्तिक शुक्ला ४ को शरीर छोड़ा तब धाय भाई शंभुदान, भंडारी शिवचंद और मुणोयत ज्ञानमल जो जोधपुर का काम करते थे इन तीनोंने फौजमुसाहिब इंद्रराज को जालोर लिखभेजा कि महाराजा भीमसिंह का तो देहांत होचुका परंतु राणी देरावरजी को गर्भ है और यहांके प्रधान पोकरन के ठाकुर सवाईसिंह पोकरन हैं जिनको बुलानेको कासिद भेजा है सो उनके आने पर सलाह करके जब तक आखिरी हुक्म तुमारे पास न भेजाजावे तबतक जालोर के किले का घेरामत उठाना यहपत्र इन्द्रराज के पास कार्तिक शुक्ला५ को पहुंचा तो उसने विचारा कि अब महाराज बिजयसिंह के वंश में केवल मानसिंह ही बच रहे हैं अगर राणी देरावरजी को गर्भ होता तो साद बंटने वगैरह का उत्सव जरूर होता परंतु ऐसा न होनेसे पायाजाता है कि गर्भ का तो केवल ढोंग ही खड़ा किया है इसलिये अच्छा हो कि महाराज मानसिंह को जोधपुर पहुंचाकर गद्दी बैठावें यह विचारकर उसने उनसे बातचीत करके मृगसिर बदि ७ को उन्हें जोधपुर के किले में दाखिल किया इधर पोहकरन ठाकुर सवाईसिंह ने जोधपुर आकर महाराज भीमसिंह की राणी देरावरजी को गाम चांपासणी भेज दी और महाराज मानसिंह से अर्ज की कि राणी देरावरजी को गर्भ है यह सुनकर महाराज मानसिंहने लिखावट करदी कि यदि उनके लड़का होगा तो हम वापिस जालोर चलेजावेंगे और लड़की होगी तो उदयपुर या जयपुर ब्याह देंगे परंतु सुनते हैं कि उनको गर्भ होनेका बिल्कुल फरेब रचागया है सो उनको किले में दाखिल करदो ताकि सचझूट निकल आवे यह लिखावट करके महाराज मानसिंहने चांपासणी के गोस्वामी को देदी तब सवाईसिंहने यह विचारकर कि देरावरजी को गढ में दाखिल करने से फरेब खुलजावेगा इसलिये उन्हें तलहटी के महलों में भेजदी और वहां राज्य के तर्फ से पहरे खड़े होगये तब सवाईसिंह पिछली रातको उमराव सिरदारोंके सौ सवा सौ घोड़े इकट्ठेकर तलहटीके महलोंके नीचे गया और वहां से बाजार में हो, दरवाजा खोल मेड़तिये दरवाजेके रास्ते शहरके बाहिर निकल गया और सब घोड़ों को इधर उधर बिखेर दिये और दूसरे दिन सुबह को यह प्रकट करदिया कि रात्रिको भीमसिंह की राणी देरावरजी के पेट से बालक हुवा, सो उन्होंने खवासे में रखकर ऊपर से नीचे उतार दिया जिस लड़के को उसका मामा भाटी छत्रसिंह खेतड़ी लेकर चलागया ॥

प्रकट कही यौं कैदयौं१ कैगयो अत्र परि२ ॥
ऐसो दाव बिरचि पठाये पीछैं दूत इत,
लैबे जहाँ जालपुर घेरा रह्यो मान लरि ॥
भीमकी चमूके जहाँ हल्ला बहुबेर भये,
झगत अमाप तोप गोले रहे बज्र झरि ॥ १९ ॥
सेनापति सिंघी वनराज आदि व्हाँ सुभट,
कही जोधपुरके ऐसे कैमन आये काम ॥
त्यौं इत कालमैं नष्ट संग्रह सकल ताकि,
धारयो कढिजैबो मानसिंह सोपै तजि धाम ॥
काहू सिद्ध जोगी बन काहूसौं मिलत कह्यो,
तीन३ दिन लंघितहू मान टिकिजैहै ताम ॥
जोधपुर पैहै छत्र छादित इहाँतैं जैहै,
निजन बढैहै पट्टलैहै जग व्हैहै नाम ॥ २० ॥
कानफटा लिंगी तहां देवनाथ नाम करि,
दुर्गमाँहिं जातो भीखमाँगिबे पिहितद्वार ॥
भाखी सिद्ध जो सो जानि मानसौं कहतभयो,
स्वप्नमैं कह्यो यौं मोसौं जलंधरनाथ सार ॥
ताके बिसवास मान लंघन सहत तीजो३,
जालपुर दुर्ग जो रह्यो रुपि भुक्ति भार ॥
तिमहिं जु भीम मरिबेकी ध्रुव सुद्धि आई,
लैबे पुनि आये भट१ मंत्री२ मुख्य बहु लार ॥ २१ ॥

[...]द्धि में यह कहगया कि यहां यह कैद पड़ी हुई थी, यह दाव करके जिस [...]ँ १ जालोर में घेरा के भीतर २ मानसिंह लड़ रहा था उसको लेने को दूत [...] ॥ १९ ॥ ३ अन्य भी सुंदर वीर काम आये ४ लघन (उपवास) करके भी [...]० ॥ ५ खिड़की के छिपे द्वार से ६ तत्त्व (सिद्धान्त) ७ भीमसिंह के मरने [...] निश्चय खबर आई ॥ २१ ॥

बाहिरके सस्त्रहीन दुर्गमैं कति बुलाइ,
मानि नीठि सपथ भरोसाके दिवाइ मान ॥
पीछैं छत्र१ चामर२ चलाइ जाइ जोधपुर,
बैठो पट्ट छठी६ मग्ग९ मेचक२ सह बिधान ॥
जालपुर चाकरी बिपत्तिहुमैं कीनी जिते,
सकल बढाये ते बुलाइ दुक्ख अवसान ॥
कानफटा सोपे देवनाथ गुरु मुख्य कीनों,
थापि तँहँ दीनो महामंदिर बिरचि थान ॥ २२ ॥
उक्त१८६० सककेकी मग्ग९ मेचक२ चउत्थि४ इत,
बुन्दी नरनाह बिष्णुसिंह२००।२ कै स्वदिष्ठ बस ॥
तंजी३ मकुवानी रानी उदर प्रसूता तँहँ,
तनुजा भई सो मरी मानहु परयो न तस ॥
इतु खट बारन भू१८६१ संवत अनेह इहा,
आमयँ असाध्य देखी श्रीजितके अंतदस॥
आश्रमतैं लाये महलनमैं बिहायो भग,
जानैं मग्ग९ मेचक२ चउत्थी४ पैं उबारि जस ॥ २३ ॥
होती बुद्धि सुद्धि तो न आगमें महल होतो,
पै निज पितामह अचेत आनैं जाइ पंहु,
ब्यौंस दुव२ अंतर कहे समय छोरयो देह,
नौंती नरनाह बिधि राह दये दान बहु ॥
अब्द पहिलेतैं दुरभिच्छहु हुतो असह,
लोक इत आये देसदेसके बिसेस लैंहु ॥

१ सोगन दिलाकर २ मृगशिर बदि छठ के दिन ३ दुःख के अंत में ४ अपने भाग्य के वश ५ झाली रानी के उदर से ६ कन्या हुई सो ७ रोग ८ अन्तदशा में ९ मृगशिर बदि ॥ २३ ॥ १० बुद्धि और चेत होता तो महलों में आना नहीं होता ११ राजा बिष्णुसिंह ने १२ पोते बिष्णुसिंह ने १३ बहु(अधिक)

तेहु सब भोजे द्वादसाह१२मैं असन तानि,
भूखे जन लूट्यो सेस दूजे२ दिन भोजनहु॥ २४ ॥
भाखे१८६१ सकहीके मास फागुन१२ बिसद१भाग,
सोधित द्वितीया२ कर्मबाटी लग्न अवसर ॥
भाटिननैं डोला आनि बुन्दी परिनायो भूप,
कन्या रत्नसिंहकी अनन्या सील जोरि कर ॥
नाम लाडकुमरि२००।५ ललाम गुन१ रूप२ निज,
पंचमी५ सु रानी आनी कित्तिके प्रसार पर ॥
सालम हरामीकी हवेली माँहिँ लग्न साधि,
बिलस्यो बिलासनमैं बरनी१ उपेत वर२ ॥ २५ ॥
उक्त १८६१ सकहीके समै पत्तन करोली इत,
जो मानिक्यपाल भूप छोरत भो देह जब ॥
नाम हरिपाल भो तदीय सुत छोटो नृप,
तातके तखत बैठि उचित अनेह तब ॥
संबत नयन तर्क नाग भू१८६२ प्रमित समै,
अंध साहआलम४९।१नैं दिल्ली तज्यो देह अब ॥
पहिलैं कहायो आलीगुहर ४९।१ स नाम पीछैं,
साह भयँ लागे साहआलम ४९।१ कहन सब ॥ २६ ॥
सो आलमगीर ४८।१ दूजे२ को सुत कथित समै,
बुद्धिहर्ग सुद्धि अैसैं दिल्ली भयो काल बस ॥
तैसैं अभिधानँ करि अक्कबर ५०।१ दूजो२ तहाँ,
तात पट्ट बैठो पै गिरिसी फिरी आन तस॥
जोधपुर१ जैपुर२ उदैपुर३ बढ्यो जहर,

१ जिमाये ॥ २४ ॥ २ तिथि ३ परम ४ दुलहन सहित ॥ २५ ॥ ५ उसका पुत्र ॥ २६ ॥ ६ प्रज्ञाचक्षु (अन्धा) ७ अकबर नामवाला

राम २०१४ प्रभु सुनहु रह्यो ज्यों माँहिंमाँहिं सर ॥
मार्‌यो अरिसिंह रान रावरे पितामहनै,
जितजित छायो त्यों बढायो वीरभाव जस ॥२७ ॥
जेठो१ अरिसिंहको तेनूभव हमीर जव,
बैठो विधिके बस पिताके पट्ट बाल वप ॥
बेगहि मर्‌यो सो रान हायन अलप बचि,
दूजे३ तस भ्रात भीम४ पायो राज्य अभ्युदय ॥
भीम रानकें भई तनूजा इक ताको भयो,
सगपन जोधदुग भीमसों गये समय ॥
पुंडल विहायो जोधपुरके अधीस पीछैं,
पट्ट तस पायो मान आपुनें बलिष्ट अय ॥ २८ ॥
कन्याकी सगाई तब मानसों करन फेर,
जोधपुर भेजे निसवासके स्वकीय जन ॥
माननृप तबतो नटयो तस मंहत्व मानि,
जदपि निहोर्‌यो इन१ उतर२के किते जनन ॥
कन्याकी सगाई जयनैर तब रान करी,
पेखि जगतेसको समान१ कुल रूच्य२पन ॥
होतहि सगाई तदनतर कुपित होइ,
चपाउत भाख्यो देत कन्या पहिलो१ बचन ॥ २९ ॥
पहिलें मग्न भीम चेडाली कारें पर,
दुटनें दुमाला डारि काढी अवरोधे द्वार ॥

॥२७॥१पहला पुत्र हमीरसिंह २ थोडे वर्ष राना रहकर ३हमीरसिंह के छोटे भाई भीमसिंह ने ४ समृद्धियाला राज्य पाया ५ जोधपुर म भीमसिंह से ६ भीम-सिंह ने पीछे शरीर छोडा ७ शुभफल देनेवाले भाग्य के बल से ॥ २८ ॥८उस कन्या की अवस्था बडी समझ कर ९ जयपुर १० कुलह(पर)पन बराबर का देखकर ॥ २६ ॥ ११ढोकरे पर १२ जनाने द्वार स

राजा मानकों अब अधीन निज राखिबेकों,
बिरच्यो सवाईसिंह बायस यह बिचार ॥
जानि यह मान लागो रहन स्वतंत्र जिम,
आनि तिम जोरतें प्रधान ताको अधिकार ॥
भाख्यो यौं हमारे अधिराजकी सगाई भूलि,
कूरम लहैं सो कोन दुलही प्रथम१ दार ॥३०॥
बिरचि प्रबंध यौं लै पंचन मपंच विच,
सूची नृप मानसौं सवाईसिंह काक सम ॥
रावरी बधूटी बरिबेकों कछवाह रंक,
होइ सिर जैहैं मरिजैहैं जब सब हम ॥
भूप तुम कैसैं रह्यो बित्रपं२ चकित३ भाव,
जान कब देहैं कछवाहकों कबंध जम ॥
आप सिर सारी धारि लीनी तो धरहु और,
पट्टप उचित कोऊ धर्म ज्यौं रहै परम ॥ ३१ ॥
बचन प्रतोद३ ऐसैं देदै नृप मान बुद्धि,
फेरी फेरु४ चंपाउत के करि कपट फैल ॥
जानि स्वान छोरयो इक बिप्र मख छाग५ जैसैं,

१ जिसके साथ पहिले सगाईहुई उसी की स्त्री है ॥ ३० ॥ २ निर्लज्जपन ॥ ३१ ॥ ३ वचन रूपी चाबुक ४ गीदड़ रूपी चांपावत सवाईसिंह ने जैसे एक ब्राह्मण ने धूर्तों के कहने से यज्ञ के ५बकरेको(*)कुत्ता जानकर छोड़ दिया तैसे

(*)यह कथा हितोपदेश में इसप्रकार है कि एक ब्राह्मण यज्ञ के अर्थ एक बकरा लेजाता था उसे देख कर ४ धूर्तों ने यह बिचारा कि इस ब्राह्मण से यह बकरा छुडालेना चाहिये यह सलाह करके वे चारों रस्ते पर दूर दूर बैठ गये जब ब्राह्मण निकला तो उसे पहिला बोला कि तू ब्राह्मण होकर यह कुत्ता कंध पर क्यों लिये जाता है. यह सुनकर वह ब्राह्मण आगे चला तो उस दूसरे धूर्त ने भी ऐसे ही कहा और ज्यों ज्यों वह ब्राह्मण आगे चला त्यों त्यों तीसरा और ऐसे ही चौथा धूर्त भी मिला और पहिले ने कहा वैसे ही कहनेलगे तब वह ब्राह्मण यह जानकर कि इन चारों ने जो कहा वही सत्य है और मेरी दृष्टि में फर्क है, स्नान करके उस बकरे को छोड़ अपने घर चला आया, और उन चारों धूर्तों ने उस बकरे को मारखाया.

ओसैं वहुतनके कहेसौं एह गहि गैल ॥
ऐंचि कर मुच्छ भूप मानहु पलटि अव,
सोहि मत भाख्यो कोन लघहिं कैनकसैल ॥
रुंघ पहिले२ के जो सुवासिनी बरन रीति,
छीनि हम लैहैं व्याहि गजि तो अपर छैल ॥ ३२ ॥
पत्र ऐसो इतहु लिखाइ भेज्यो रान प्रति,
कै इत विवाहहु१ कै मारहु कैनी कुटिल ॥
क्यौं तुम विरोध पारयो जैपुर सगाई करि,
कूरम नपोतेकौं विनासहिं कवध किल ॥
रंडा रहिजैहैं इनिहोतो कहि भेजी रान,
वारन नमाइहै पिपीलिकाके छुद्र विल ॥
अवहु कनीकौं हमरे मत वरहु एक१,
खोलि रन झडे ञरि जीति रहो जोहि खिल ॥ ३३ ॥
ऐसी रीति दुरदिस लगाइ लाय चपाउत,
कोऊ कुल वालककौं भीमको तनूज करि ॥
जाको नाम धोंकल प्रसिद्धिमैं अव जनाइ,
पास विसवासके प्रवीर राखे वीच परि ॥
मान महिपालकौं अधीन अपनैं न मानि,
अट्ठहि८ मिसल आदि भटन स्वपच्छ भरि ॥
जैपुरलौं आप समुझावनके व्याज जाइ,
कूरमसे मिलिगो स्वमुच्छ करसौं कतरि ॥ ३४ ॥

---

१ सुमेरु का उल्लंघन कौन करेगा २ दुल्हा ३ पिता के घर रहनेवाली कन्या ४ दूसरे रसिक को मारकर ॥ ३२ ॥ ५ कन्या को ६ नप्ता से यह शब्द नपोता हुआ ७ निश्चय ही ८ कछवाहे जगतसिंह को मारोगे तो कन्या रांड रहजा वेगी परन्तु कीड़ी के ९ छोटे बिल में हाथी नहीं समावेगा १० शत्रु को मारकर जो बाकी रहै सोही कन्या को, विवाहो ॥३३॥ ११ किसी कुल के बालक को भीमसिंह का पुत्र बनाकर ॥ ३४ ॥

मिलि जगतेससौं कह्यो इम रहस्य[1] मत,
स्वामी हम सर्ब[2] चहि धौंकल जो भीम सुत ॥
आप चलि ताहि जोधपुरको करहु ईस,
द्रम्म नवलक्ख ९००००० दैहैं१ होतहि अभीष्ट द्रुत ॥
रावरो उदैपुर बिबाह१ कोऊ रोकिहैं नर२,
नामकरि ऐसैं सब भूपनमैं होहु लुत ॥
मान सठ आपकौं निवारे सो कवन मद,
जाहि गहि आनहु गहाइदैहैं बित्त जुत ॥ ३५ ॥
सुनत इतीक निज बुद्धिके जनन सह,
मत्त बारुनीमैं[3] जगतेस धारि अभिमान ॥
भाख्यो लिखिदेहु१ भट अट्ठ८हि मिसल आदि,
धौंकलकी[4] फैला लेहु२ टारिदेहु[5] व्यवधान ॥
कग्गर लिखाइ इम तबहि कबंधनको,
इष्ट धर्म सौंहन सवाईसिंह अघवान ॥
सौंप्यो जगतेसकौं करारमैं सबन साखि,
पाघ बिनु ह्वैबे१ पै बिपत्ति दैबे प्रभु[6] प्रान२ ॥ ३६ ॥
पापी इम पत्र इत भेज्यो मान भूपप्रति,
खूब समुझायो पै न मानै कछवाह खल ॥
यातैं अब जुद्धको बिलंब न करहु आप,
करहु चढाइ जीति लैहै प्रभुके सकल[7] ॥
कौन कौन ठाम जीते कूरम कबंधनसौं,
बाहिर करहु डेरा यातैं बेग बाँधि बल ॥
मत्त पई धौंकल बुलाइ मिलि तुल्य मानि,

१एकान्त मे २ स्तुतियोग्य ॥ ३५ ॥ ३ मद्य में मस्त ४ भीमसिंह के पुत्र धूंकलसिंह का उच्छिष्ट खाओ और उससे ५ अन्तर छोडदो ६ अपने स्वामी मानसिंह के प्राण को ॥ ३६ ॥ ७ सब आपके ही हैं ८ जगतसिंह

एक१ पट्ट बैठत इहाँतो मत है अचल ॥ ३७ ॥
पूछे नृप मान तँहँ सँसद बुलाइ पच,
चपाउत पत्रहु दिखायो मत लैन चहि ॥
ते सब पिहित मिले धोंकल सिसुहि ताकि,
गाढे हठ लोभी लेख द्विरगुन पटान गहि ॥
जो लिखी सवाईसिंह सोही करतव्य जपि,
बाहिर करहु डेरा सूची अतिदर्प बहि ॥
माननृप चॅार१ ६ विचार२ हग है२ही मोंची,
कीनो कह्यो तिनको भरोसातैं मपान कहि ॥ ३८ ॥
मथ मदमत्त इत जैपुर अधीस मानी,
जग उपहार सबै कीनैं सज्ज जगतेस ॥
तोहू इक१ बेरतो रुक्यो जो आनि कानि अँपा,
बुंदी प्रभु विष्णुसिंह२००।२ बरज्यो जब बिसेस ॥
पै जँहँ सवाईसिंह दमनक रपार पास,
आस मानिबेकी तँहँ कैसी लग्यो कान एस ॥
डाँकदार जैसैं मत्त नागनकों देदे डांक,
अैसे कछवाह काढ्यो बाहिर विधि असेस ॥ ३९ ॥
लाखन खरचि दम्म राखि दल तीन लाख ३०००००,
सज्जि पहु बीकानेर१ आदि बहु मित्र सग ॥
भीमसुत धोंकलकों जोधपुर देन१ भाखि,

१पहां तो एक गद्दी पर बैठने का निश्चल विचार है ॥ ३७ ॥ २ सभा में ३ इन्होंने धूकलसिंह से मिलेहुए थे क्योंकि कृत्रिम(फरेबी) बालक ने दुगुने पट्टे देने के लेख सब को कर दिये थे ४ करने योग्य कहकर ५ हलकारे और विचार ये दोही राजा के नेत्र हैं जिनको बंध करके ॥ ३८ ॥ ६ युद्ध की सामग्री ७कर्ज़ा ८ दमनक नामक गीदड़ पास था ९जैसे साटमार मस्त हाथी को कोप दिलाने के १०छोटे घाव लगावे तैसे ॥३९॥ ११भीमसिंह के कृत्रिम पुत्र धूकलसिंह को

आप बेंलि ब्याहन उदैपुर२ बय उमंग ॥
कोटादिक दंडि पैं[2] लगावन३ बिचार करि,
जोधपुर हंक्यो पहिलैं जय करन जंग ॥
श्रावकं[3] सचिव रायचंद बहुबेर रोक्यो,
तदपि रुक्यो न बढ्यो पंथन करत तंग ॥ ४० ॥
सेना यह राखि लायो अधिक जितीक सज्ज,
औरनकैं नाँ सुनी तितीक तिहिँ काल इम ॥
पायो पैं[4]१ हरोलिन ह्वाँ चंदोलिन पायो पंक२,
अध्वकें अरण्य तरु तूट भये चोक तिम ॥
साक दुव तर्क अष्ट इंदु १८६२ के शिशिर६ समैं,
जामैं हुव ग्राम नाम गिंघोली मुकाम जिम ॥
उततैं स्वसंगलैं अनीक सब मान आयो,
कपटमैं जानैं जयलोभी रुकिजाय किम ॥ ४१ ॥
अध्वबिच आत कृष्णगढके छली अधिप,
राज्य निज जैबो जानि मायाको प्रपंच रचि ॥
स्वीय भूमि लैबे कैंरकेरीवैं अमरसिंह,
संग पहु कूरमके हो तस सहाय सचि॥
मिथ्या पिसुनत्वैं[11] जगतेसको मुराइ मन,
मरवायो जो दगासौं ——पाप ताप तँचि[12] ॥
जैपुरको आप बनिबैठो सुभचिंतक ज्यौं,
जोधपुर छोरि जोरि याहीतैं प्रसाद जचि ॥ ४२ ॥
द्वैरही मिले ऐसैं ग्राम गिंघोली समीप दल,

नि २ चरणों में लगाने का विचार करके ३ सरावगी वैश्य ॥ ४० ॥ ४ ...
चड़ ६ मार्ग के वन के वृक्ष ७ जहां ८ अपने साथ सेना लेकर ९ म...
॥ ४१ ॥ १० करकेड़ी के पति अमरसिंह ११ झूठी चुगली करने से ...
रसिंह को मारडाला १२ पाप की अग्नि से जलकर १३ ...

जोधपुर१ जैपुर२ बनै जे चित्त बरजोर ॥
बाजिन उठाइबेकी बेरमें कबध कुल,
आये टरि टरिकैं सबही कछवाह ओर ॥
मान यह देखत बिचारयो करसों मरन,
नीठिन निबारि सोंपे सगके दुसह दोर ॥
जोधपुर जाऽ लरिबेकी थापि टेकी लागे,
मानकों निकासिकैं भजे लै ऽपारि४ भटमोर ॥ ४३ ॥
ऊदाउत अर्जुन १ स नाम रायपुर ईस,
नाह र्यों कुचामनिको मेरतिया सिवनाथ२ ॥
भद्राजनि१ लाडनों२ के जोधे द्वै३ कबधभट,
साथ बखतेस११३ अरु मगल११४ ए क्रम साथ ॥
लछमन११५ मान११६ हुकमेस११७ ए त्रय३ हि लार,
सोदर कनिष्ट सिवनाथके मधर्नपाथ ॥
काकासुत भ्राता सिवनाथ१ अरु मगल२के,
सगी सारदूल११८ पता११९ सक्रमगदितगाथ ॥४४॥
ए नव९ विदित नव९ अविदितं नाम ग्रैसें,
अष्टादस१८ मानं भजे मानकौं लैं असवार ॥
भूँरि धूरि पूरि ख भई इम तिमिर भीर,
आपुनें न भागे कर आपकों लखन लार ॥
मानवारे डेरनमैं आवत न मग्ग मिलि,
बाजि कछवाहनके उरझे जव बिहार ॥
जोंहीकरि मानको पलायन सबन जान्यों,

१मानसिंह ने अपने हाथ से मरना विचारा॥१३॥२छोटे भाई३युद्ध के अर्जुन४क्रम सहित कहीहुई कथा से॥१४॥५जिनके नाम नहीं जाने गये६प्रमाण(गणना)वाले ७ बहुत धूल ८ आकाश म भरकर अंधेरे में अपना ९ हाथ आपको नहीं दीखा १०कछवाहों के घोड़ा का गमन रुका ११जिससे१२मानसिंह का भागना जाना

पैठो जगतेस चित्त जाको *दर्प गतपार ॥ ४५ ॥
†संभर नरेस बरज्यो बलि जगतसिंह,
बुन्दीतैं पठाइ दूत दूजी१ बेर नीतिबल२ ॥
सो जब नमानी चढ्यो कूरम तबहि सज्जि,
द्वै सहँस २००० भेज्यो इत्तु जोधपुर ओर दल ॥
भूपालादिसिंह१ सुरूप पोवरेस संग भट,
बनिक प्रधान त्यौं गनेसराम२ धीविमल ॥
दोइ२ तिम तोप संग पलटनि दोइ२ दे रु,
भेज्यो कपतान नाम सीखनऊ सजें सकल ॥४६॥
इन तब सूची आइ मानसौं पलायनमें,
रावरे निदेस बस ह्वे हम रचहि गारि ॥
कीजे आप गोन रजपूतनके देखि कर,
जैपुर सम्मुख जंग पछिलें हमहिं पारि ॥
माननृप भाख्यो इहाँ व्यर्थ तुमरो मरन,
जीतिबो१ रह्यो पे बचिबो२ न बने विप जारि ॥
आहु मम संग यातैं देहु न अनर्थ असु,
जोधपुर जाइ रचिहैं रन पैर प्रचारि ॥ ४७ ॥
जोरिकर ऐसैं तब बुन्दीके भटन जंपी,
आपकौं न निंदें मिल्यो सत्रुनसौं चक्र ईम ॥
मुरि हम सज्ज सब भूपहिं दिखाँहि मुख,
कथन तँदीय टारि सम्मर्द विथारि क्रिम ॥
जातैं आप जोधपुर लरहु सवेग जाइ,

* अपार घमड ॥ ४५ ॥ † बुन्दी के चहुवाण राजा ने १ सेना २ निर्मल बुद्धिवाला ॥ ४६ ॥ ३ भागते समय मानसिंह से कहा ४ वृथा प्राण मत दो ५ शत्रुओं को ललकार कर ॥ ४७ ॥ ६ आपकी सेना शत्रु से मिलगई इस कारण ७ उनका कहना छोडकर ८ हर्ष

जुरि हम ठाढे इहाँ इकधाँ तटस्थ जिम ॥
चाहि हमपै जो बढिहैं तो करिहैं ज्यों चित्त,
पँहुचहु आप हम आडे आपगा प्रतिम ॥ ४८ ॥
ऐसी कहि एक ओर बुन्दीको रह्यो सु वक्त,
सत्रुनको मार टारयो तोपनके वार साजि ॥
मान महिपाल मढ्यो जोधपुर जाइ जग,
भाख्यो कछवाहन संमीक गयो सत्रु भजि ॥
बुन्दी इत आयो राखि गौरव अधीस वक्त,
त्यों गो जगतेस उत गम्य दुर्ग सक तजि ॥
जाल दल१ तोपन२ को द्रग गरदाइ जोरयो,
जगतैं न रोक्यो चित्त भोक्यो वित्त इष्ट जँजि ॥ ४९ ॥
जोधपुर सीम पैठो जबतैं जगतसिंह,
तबतैं चमूके लोक लाये गहि लोभ्य तिय ॥
तिनके निकेतके विनम्र लैन आये तब,
दोइ२ दोइ२ पैसे लै रु पीछी तिन्हैं सौंपि दिय ॥
जोधपुर घेरयो जगतेस मत्त ऐसैं जाइ,
केते काल पीछैं जीति द्रंगहु स्वतत्र किय ॥
दुर्ग एक मानके आधीन रहिगो दुर्गम,
जैसे सब देहमाँहिं आयुके आधीन जिय ॥ ५० ॥
जंत्रविच इच्छू जिम बिच्छू जिम मत्त बिच,
रसना रेंदन वीच ऐसे कष्ट मौन रहि ॥

१एक तरफ २नदी के समान हम आड़े हैं ॥ ४८ ॥ ३भय सहित होकर ४जाने योग्य (जोधपुर)गढ पर ५इष्ट की पूजा करके धन लगाया ॥ ४९ ॥ ६जो मिली उन स्त्रियों को पकड़ लाये ७उन स्त्रियों के घरवाले अधिक नम्र होकर ८नगर को भी अपने आधीन करलिया ॥ ५० ॥ जैसे ९ घाणी (चरखी) में गन्ना (साठा) १० वा दांतों के बीच में जीभ ११ मानसिंह रहा

देस१ जुत दंगर२ माँहिं अरिको अमल देखि,
कुहक[2] सवाईसिंह पास भेजी एह कहि ॥
अर्द्ध[3]- देस लेख जुत नागपुर लेहु आप,
बैठारहु धोंकल व्हाँ मोसों तुल्य[4] भाव वहि ॥
इज्जत हमारी बिगरावहु क्यों सह्ल आनि,
गेहमैं समुझिलेहु नेहमैं सु लेंह गहि ॥ ५१ ॥
मानको बिनय लेख सोहु न विनय[6] मान्यो,
चंपाउत१ मीन२ बैन१ स्रोत२ प्रतिकूल चढि ॥
दिन बिपरीत यातैं दुष्टहिं सुगम दीस्यो,
मान गहिलैबो१ गढलैबो२ घमसान मढि ॥
पच्छी कहि भेजी यों सवाईसिंह मान प्रति,
करहु न देर जोधपुरतैं वैं जाहुकढि ॥
सीसपैं अधीस धारि धोंकल करहु सेवा,
पावहु उचित पटा प्रभुके अधीन पढि ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

कहिपठई पच्छी कुहक, चंपाउत इम चैंकि[12] ॥
कोल सपथ[13] नागोरकी, फरद लिखी वह फैंकि ॥ ५३ ॥
इम परिगो संकट असह, महिप जोधपुर मान ॥
लुट्यो मुलक सब सीमलग, न मिट्यो द्रोह निदान[14] ॥५४

१ पुर मे २ इन्द्रजाली ३ आवे देश सहित नागोर लिखावट सहित ले ल
४ मुझसे बराबर पन लेकर अर्थात् धोंकलसिंह को मेरे बराबर कर द
५ लिखावट (लेख) ॥ ५१ ॥ मानसिंह की उस विशेष नम्रता को ६उस अर्न
तिवाले सवाईसिंह ने नहीं मानी सवाईसिंह रूपी मच्छ, वचनों रूपी ७प्रवा
में उलटा चढा ८ मानसिंह का पकड़ लेना ९ युद्ध करके १० अव ११ धोंकलसिं
की ॥ ५२ ॥ १२ क्रोध करके १३ सौगन ॥ ५३ ॥ १४ द्रोह का कारण ॥ ५४

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह
चरित्रे काबुलाधीशसाहाय्यसिक्खरणजीतसिंहलवपुरग्रहणयोधपु-
राधीशभीमसिंहजयपुरपतिप्रतापसिंहपरस्परविवाहसंबन्धकरणं १
समाप्तजाजपुरादिमेदपाटप्रान्तकोटासचिवझल्लजालमसिंहकोटाप्र-
तापवर्द्धनं २ विजितपेशवाबुन्देलखण्डपराजितसिंधियाहुल्करगृही
तोड्डीशान्तर्वेदजनपदस्यापत्तीकृतदिल्ल्यागरापत्तनशाहआलमार्थनियती
कृतवार्षिकवसुल्लार्डविल्जल्यासमुद्रनराज्यस्थापनं ३ जयपुरपति
प्रतापसिंहमरणजगत्सिंहतत्पट्टासादनयोधपुराधीशभीमसिंहदेहपात
जालपुरसेनासमावेष्टितमानसिंहयोधपुरपट्टप्रापणं ४ परिहृतबुन्दी
राज्यवानप्रस्थश्रीजित्सुरम्यसमासादनबुन्दीपतिविष्णुसिंहपाणिग्र
हणकरौलीनृपमाणिक्यपालपरासुताकालहरिपालगद्दिकोपवेशनं
५ दिल्लीन्द्रान्धशाहआलमप्रेतत्वपुत्राकबरपट्टसमासादनं ६ उदयपुराधी

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, विष्णुसिंह के चरित्र
में, काबुल के अमीर के पक्ष से लाहोर लेकर सिक्ख रणजीतसिंह का बढ़ना
और जोधपुर के राजा भीमसिंह व जयपुर के राजा प्रतापसिंह का परस्पर
विवाह करना १ कोटा के सचिव झाला जालमसिंह का मेवाड़ के जाजपुर
आदि प्रान्त लेकर कोटा का प्रताप बढ़ाना २ लार्ड विल्जली का पेशवा से बु-
न्देलखण्ड लेकर सिंधिया और हुल्कर को पराजय देकर अन्तर्वेद, ओडीसा
देश लेकर आगरा और दिल्ली विजय करना और शाह आलम को पिनसन
देकर पूर्व समुद्र से दिल्ली तक अपना राज्य जमाना ३ जयपुर के राजा प्रता
पसिंह का देहान्त होकर जगतसिंह का पाट बैठना और जोधपुर के राजा
भीमसिंह का देहान्त होकर जालोर में सेना से घिरेहुए मानसिंहका जोधपु
र के पाट बैठना ४ बुन्दी का राज छोड़कर वानप्रस्थ आश्रम में रहनेवाले
श्रीजित् (उम्मेदसिंह) का देहान्त होना और बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का
विवाह करना, व करौली के राजा माणिक्यपाल का देहान्त होकर हरिपाल
का गद्दी बैठना ५ दिल्ली के अन्ध बादशाह शाह आलम का मरना और
उसके पुत्र अकबर का पाट बैठना ६ उदयपुर के महाराणा भीमसिंह की पुत्री
को विवाहने के हठसे जोधपुर के राजा मानसिंह और जयपुर के राजा जगत
सिंह का सेना सजकर गींगोली नामक ग्राम में युद्ध क्षेत्र में मिलना ७ मार-

शमीमसिंहसुताकरग्रहणहेतुसज्जसैन्ययोधपुराधीशमानसिंहजयपुर
पतिजगत्सिंहयोर्गींघोलिग्रामरणाङ्गणलमायोजन ७ पोकरणठक्कुर
सवाईसिंहैकमत्यमरुसामन्तजयपुरसैन्यमिलनरणाङ्गणप्रत्यावृत्तमा
नसिंहयोधपुरागमनकृत्रिमदायादधोंकलसिंहार्थप्रतिज्ञातमरुधराधि
पत्यजगत्सिंहयोधपुरसमावेष्टन ८ कृच्छ्राक्रान्तमानसिंहकृत्रिमदाया
दधोंकलसिंहार्थनेममरुराज्यसहितनागपुरदानस्वीकरणपोकरणठ
क्कुरतदनङ्गीकरणं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥ आदितः ॥ ३५९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पाइ कष्ट ऐसो प्रचुर, भूरि परत सिर भार ॥
मान जबहि चिन्त्यो मरन, कलि करि खोलि किंवार ॥१॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सचिव दोइ२ तँहँ कारा[२] संगत, हुने कैद पहिलैं सन मन हत ॥
इंदराज सिंघी१ अधिकारिय, भनत द्वितीय२ गंग भंडारिय ॥ २ ॥
इन दिय अरज मानपति ऐसैं, प्रभु हम जो जैपुर भुवँ[३] पैसैं ॥
तो भुरि गेह भजैं जगतेसहु, इक्खहु पति रति मतिगति एसहु॥३॥
इम सुनि मान अखिख पठई इम, कौलित तुम बिस्वास बनैं किम

वाड़ के उमरावों का, पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह के छल से जयपुर की सेना में मिलजाने के कारण राजा मानसिंहका वहां से भागकर जोधपुर जाना और मारवाड़ के झूठे दावीदार धूंकलसिंह को जोधपुर की गद्दी पर बिठाने की प्रतिज्ञा से जगतसिंह का जोधपुर को घेरना ८ राजा मानसिंह का घबरा कर नागोर के साथ मारवाड़ का आधा राज्य धूंकलसिंह को देना स्वीकार करना और पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह का इस बातको अस्वीकार करने के वर्णन का नवमा ९ मयूख समाप्त हुआ ॥९॥ और आदि से तीन सौ उनसठ ३५९मयूख हुए ॥

१ युद्ध करके ॥ १ ॥ २ जेलखाने में ॥ २ ॥ ३ जयपुर की भूमि में घुसें तो ४स्वामी में बुद्धि पूर्वक प्रीति देखो ॥३॥ ५ तुम कैदी हो जिनका विश्वास कैसे

सूचिय तिन हेमठा हमरे सुत, दुव२ करि कैद हमैं भेजहु द्रुत ॥

॥ वैतालीयम् ॥

इम गग१ रु इंदराज२की, अरजीतैं तिनके तनै उभै२ ॥
कारा धरि लाजं काजकी, दे कढि गढतैं उतारि वे ॥ ५ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सिंघीइंदराज१ अरु गगराम२ ए सचिव,
कारातैं निकासि तिनकी टाँ पुत्र कैदकारि ॥
दुर्गतैं उतारे मान भूपन कथित देरही,
धारि विसवास आस भेजे भुजभार धरि ॥
आइ तिन अधर मिलायो छलि चपाउत,
भाजे गिनि कैदी मैंत्त धीजिगो प्रमोद भरि ॥
वाजिं दुव२ तारूँ लै रु आरुहि स्वबुद्धि बल,
दगतें कढे दे२ तिन सत्रुन समुद तरि ॥ ६ ॥
संग नृप मानके रह्यो जो कह्यो सिवनाथ,
मेरतिया सोंपै वहु गुनन विदंग्ध मति ॥
अधिप पठायो छिदमैं कढि निलंय आयो,
गाढे चित्त सो इन मिलायो बुद्ध मत्र गति॥
अल्प जीविकाके भट अखिल बुलाइ बल,
सहँसन जोरिसग अधिकहु राखि अति ॥
छन्नै सिवनाथ१ इंदराज२ लै उपाय छमें,
पैठे निस मग्ग अग्ग जैपुरके देसप्रति ॥ ७ ॥

कियाजावे १ हमारी जगह ॥ ४ ॥ २ इन के दोनो पुत्रों को कैद करके ३ इस काम की लज्जा तुमको है ऐसे भरोसा देकर ॥ ५ ॥ ४ कैदसे निकाल कर ५ नीचे आकर ६ इनको कैद से भगेहुए जानकर वह मस्त सवाईसिंह ७उससे दो घोड़े लेकर ८उन पर सवार होकर ॥६॥९चतुर १०अपने घर (कुचामन) ११ छोटी जीविकावाले उमरावों अथवा वीरों को १२ समर्थ ॥ ७ ॥

सोधि भय पीछैंको प्रमत्तहु जगतसिंह,
मंत्रिनके भाखैं गति दैवकी दुगम्म[1] जानि ॥
भेज्यो सिवलाल फौजबखसी स्वकीय[2] भुव,
जैपुर१रु देस२ आनैं[3] करन समर्थ जानि॥
फागीपुर ह्वो जो तब लौंकैं रही खिल फौज,
ऐसे खिन सोपै मत्त तीज३पै उमंग आनि ॥
अल्प भट संगी आप जैपुर सदनैं[4] आयो,
कटक असेस सेस व्हाँही राखि भय कानि ॥ ८ ॥
बीर सिवनाथ१ इंद्रराज२ त्यौं पिहिंत[5] बट्ट,
कितहु न हेरि रत्ति[6] फागी एक गम्य कहि[7] ॥
पहुँचि निसीथ[8] जयनैर दल सीस पर,
मारि१ बहु त्यौं बहु बिदारि२ कीनी सोनं[9] महि ॥
सेस असु[10] लैलै तजि भाजे उपहारैं[11] सब,
लूटे इन सोधि सोधि काहूकी न संक लहि ॥
व्है अब बिदित घेरि जैपुरकौं लैन हंके,
गैल इक१ कौ[12]किनीमैं नारिनकों देत गहि ॥ ९ ॥
ऐसैं गरदायो दंग जैपुर बलिन आइ,
तूटिपरयो सर्व ढुंढाहरपैं अतुल त्रास ॥
मचिगो पलायन[13] जितैं तित जि जिंन[14] मानि ॥
आलयँ[15] रहैंतैं रही काहूको न असु आस ॥

१भाग्य की दुर्गम्म गति२रक्षा करने को३थाकी की सेना ४ जयपुर मे अपने घर गया॥८॥५छिपेहुए मार्ग से६रात्रि में जानेयोग्य फागी नगर को कहकर७आधी रात को ८ भूमि को लाल करदी ९ बाकी के प्राण ले ले कर १० सामान छोड़ भागे ११मार्ग में जयपुर के देश की स्त्रियों को पकड़ कर छदाम(पैसे के चतुर्थांश) में उनके घरवालों को पीछी देनेलगे ॥ ९ ॥ १२ भागना १३ रहने से अपना जीना नहीं मानकर तथा जिधर मन हुआ उधर भागे १४ घर पर रहने से

स्वामी इत सगमैं हजारन सिपाहनके,
मासिक चढत सुनैं देतदेत प्रति मास ॥
मन प्रतिकूल मीरखानसे बहुत मुरे,
हठि ह्वैक लैन जगतेसको विरचि हास ॥ १० ॥
सुरभि१ निदाघ२ बरखा३ ऋतु खरच सहि,
भूप जगतेस नीठि निर्बह्यो सो दल भार ॥
चढत कितेक मास मूढ अकुलायो चित्त,
जानी इत जैपुरकौं भोगिहै दुसह जार ॥
मत्त मुरि आइबेको मत्र जग गूढ मान्यों,
गोगाउत सभूके खवासिके सुत विगार ॥
ठानि चंपाउतसौं कहाई खुसहाल ठाम,
दम्म खटलक्ख६०००००की भई सो देहु सरदार॥११॥
एक दुर्ग छोरि सबठा भो तुमरो अमल,
देम्म उक्त६०००००देय यातैं चिंति स्ववचन देहु ॥
दुर्ग दै तुम्हैं रु लैहैं सेस जे त्रिलक्ख३०००००दम्म,
यौं न करिहौतो लैहैं गहिकैं विदित एहु ॥
अैसे कहिवेपैं दुष्ट चपाउत टेक आनि,
गर्वसौं कहाई जाहु वापुरे ह्वै निजगेहु ॥
वधिकैं हमैं जो लैहो जानिहैं तबहि बली,
नारिनके भाग न तो लाजे भौंन मग लेहु ॥ १२ ॥
अैसी कहि साहसी सवाईसिंह चपाउत,
जैपुरके चंक्रसौं रह्यो टरि सटेक जब ॥

१किसीको प्राण की आशा नहीं रही १ मनका लेने को ॥१०॥ २ वसन्त,ग्रीष्म ३ सेना का भार कठिनाई से निवाहा ४ सवाईसिंह से ॥ ११ ॥५कहेहुए रुपये ६ देने योग्य है इस कारण ७ ये तीन लाख भी ८ लज्जा पायेहुए स्त्रियों के भाग्य से घर का मार्ग लो ॥ १२ ॥ ९ सेना से

सूची जगतेससौं यौं जोधपुर दुर्ग स्वामी,
धौंकलकौं ठानि धन उक्त काल लेहु अध ॥
नाँतो इम रीते बहिकाइबेमैं सार नहिं,
कोलमैं यहहि मुख्य सेस करिहो सु कब ॥
लूटी मारवारि नाँतो आप बहु बित्त लीनौं,
सोही गिनि कोलमैं पधारहु लै स्वीय[1] सब ॥ १३ ॥
उक्त करिहो न तो उदैपुर बिबाह आप,
कैसैं करिलैहो हमरे छत बर कहाइ ॥
तंत्र मेरे अबहि प्रचारौं[2] मरुदेस तोतो,
ज्यौं बनी जयातैं त्यौं बनाइहो घरन जाइ ॥
जंपि ऐसैं चंपाउत देसके रैवबस[3] जोरि,
मुर्यो करि डेरा भिन्न कूरम मन नमाइ ॥
ओरहु जे संगी मीरखान[1] से बलिष्ट ऐसैं,
लागे जगतेस देस लूटन उलटि आइ ॥ १४ ॥
ऐसैं जे इलेसं[4] बीकानेरके सुरत[5] आदि,
जैपुर[6] घटत जानि गर्दभकी गाज गति ॥
के घर गये१ तिम रहे मुरि तटस्थ व्है२ के,
मानी जगतेस अब मानी बल हानि मति ॥
चंपाउत बंचकको[8] संभवी कथन चिंति,
मेरयो मेंढामात्रनको गै ज्यौं कछवाह पति ॥

१अपने सब लोकों को लेकर॥१३॥२मेड़ता के घेरे से(जया को छलघात से मरवा डाला था) जया नामक सिन्धिया से बनी सोही ३ मारवाड़ के लोकों को अपने वश में करके ॥ १४ ॥ ४ राजा ५ सुरतसिंह आदि ६ जयपुरवालों को गधे के चीखने के समान घटते हुए जानकर "गधा भोंकता है तब तो बडे जोर से चीखता है और फिर उसकी आवाज धीरे धीरे घटती जाती है" ७ घमंडी जगतसिंह ने ८ ठग सवाईसिंह का होनेवाला कहना याद करके (छलघात से मरवा डालने को सत्य मानकर) ९ जैसे महावत का फेराहुआ हाथी फिरे तैसे

रायचद बनिक पुरोगन निहोरैं नीठि,
मान्यों घर जैबो मूढ ऐसें सलज्ज प्रति ॥ १५ ॥
ऐसें पट्ट वीर सिवनाथ१ इंदराज२ इत,
देकैं त्रास जैपुरपैं लूट्यो आढ्य अरि देस ॥
योंही मीरखानसें अमानन मुररि आइ,
लागि लूट्यो वहुन न राखिजान्यों कहुँ लेस ॥
चिंति भुव जैबो यों अचानक प्रमत्त चढि,
पैठो भजि गेह लजि निंदा उग्र सहि पेस ॥
आयो ज्योंही नाकदै कबंधनको चपाउत१,
त्योंही कछवाहनको नाक दैगो जगतेस२ ॥ १६ ॥
जोधपुर१ जैपुर२कै उरमी अधिक आनी,
भीमरान भूपति उदैपुरको भीरु इत ॥
भीरुनके भाखें डर आनि उक्त भूपनको,
मारिडारी कन्या वह पापी गेरदै अमित ॥
साक गुन तर्क नाग भू१८६३ मित सरद४ समै,
जैपुर अधीस भजि गो यों गेह दिष्टजित ॥
तदपि सँवाई मरुदेसमें अमल तानि,

कछवाहों का पति रूपी हाथी सचिवों (प्रधानों) का फेराहुआ पीछा फिरा "महामात्र नाम, प्रधान और महावत दोनों का है" १ आदि ॥ १५ ॥ २ शत्रु के धनवान् देश को ॥ १६ ॥ ३ कायरों के कहने से ४ जोधपुर और जयपुर दोनों राजाओं का भय मानकर ५ (*) बहुत विष देकर उस कन्या को मारडाली ६ समय का तथा भाग्य का जीता हुआ ७ तो भी सवाईसिंह ८ अधिकार फैलाकर

(*) महाराणा भीमसिंह की बाई कृष्णकुमारिको मीरखां ने उदयपुर में आकर बडे हठ से जहर दिलाया यह करुणामय दृश्य मेवाड के इतिहास वीरविनोद में हृदयविदारक लिखाहुआ है सो वहां देखो महाराणा ने उस कन्याको नहीं मारी थी परन्तु मीरखां के भय से उसको रोक नहीं सके सो कथा लंबी होने के कारण यहां नहीं लिखसकते

स्वामी करिराख्यो सोहि धौंकल चमू सहित ॥ १७ ॥
रच्छकन संग द्रंग नागोरहि ताकौं राखि,
देसमैं दुहाई फेरि वा सिसुकी आप हुत ॥
लूटत जो मुलक इतैं उत अटन लागो,
साल्यो मानके उर बलेस सबलेस सुत ॥
लभ्यं बसु१ हस्ती२ हय३ करभ४ गवा५दि लूटे,
जोरदै बिसेस कर६ देसके असेस जुत ॥
डारि डारि डाका मारवारिमु निचोरी डारि,
दीपक जरन दीनों आपके अधीन उत ॥१८॥
उक्त सक बन्हि तर्क नाग भू १८६३प्रमित इतैं,
बुंदीप्रभु विष्णुसिंह२००१२छट्ठो६ करयो निज ब्याह ॥
रानाउत सीसोदे अमानकी सुता रुचिर,
सो खुमानकुमरि२००१६ नाम बरी तस सराह ॥
आयो निज बुंदीनैर डोला दुल्लहीको यह,
पायो तिम दुल्लह महापट्ट नरननाह ॥
सूचित तपस्य१२ स्याम२ छट्ठी६ निस लग्न साध्यो,
वारही पंच्छ कीनों ब्याह सप्तम७ लै कविबाह ॥१९॥
भावन सनाम बंस सीसोदे उचित भाखि,
नाम नंदकुमरि२००१७ तनूजा अपनी निपुन॥
भूपहिं बिबाही इहाँ नैनपुर डोला भेजि,
गदित तपस्य१२ काल२ एकादसी११काल गुन ॥

॥ १७ ॥ १ फिरने लगा २ बलवान् सबलसिंह का पुत्र ३ जो मिलगये सो ४ जो जो घर अपने अधिकार में थे तिन तिन में दीपक जलने दिया ॥ १८ ॥ ५ सूचना कियेहुए फाल्गुन बदि ६ उसी पक्ष में ॥ १९ ॥ ७ पुत्री ८ कहेहुए फाल्गुन बदि में एकादशी के समय

ऐसे विधि रानी यह सप्तमी७ अधिप आनी,
साजि इत चपाउत वाहिनी जथा सकुन ॥
ईच्छु खंड अन्नतें कढे जिम विरस अग,
ऐसे मारवारि कीनी——नाँहि जत्न उन ॥ २० ॥
पूरे कष्ट व्याकुल महीप मान जोधपुर,
देस अर्द्ध³ देवेकी हहाई पुनि नम्रपन ॥
सोंपे नहिमानी काल केवल सवाईसिंह,
धृष्ट कहिभेजी ऐंहै धोंकलही भूमिधन ॥
लेख निज देकें तव धर्मके सपथ लेकें,
मित्र गूढ कीनों मीरखानकों मिलाइ मन ॥
ताहि अर्द्ध आसन विभागी कहि मान्यो तुल्य,
सूची मानें चपाउत मारिलेहु छद्म सन ॥ २१ ॥
द्रव्य बहु देनोंकरि इष्ट विच साखी दे रु,
मिच्छ इम प्रेरयो चपाउतकों हनन मान ॥
कैसें हमहिं धीजें सावधानीमें कितव काक,
खोजहु निमित्त यों पठाई कहि मीरखान ॥
सूची इम मान जोधपुरके वजार सह,
देस मम लूटहु खिसासमैं गिनि निदान ॥
नारी कहि गारि दै हमारी पै करहु निंदा,
ऐसे फंद सो खल परेगो आयु अवसान ॥ २२ ॥
स्वीय साजि सेना मीरखान तव कीनी सोहि,
लूटी मारवारि पैठि खधावारै नेर लग ॥

१घरसों से गन्ने का टुकड़ा विना रसवाला निकले तैसे ॥२०॥ २काल के ग्रास ३धूँकलसिंह ही राजा होवेगा ४ छिपाहुआ मित्र किया ५ आधी गद्दी पर बैठने वाला लिखकर ६मानसिंह ने कहलाया ७छल से॥२१॥ ८हमको कैसे धीजेगा ९कारण हेरो १०मानसिंहमे सूचना की ११आयुके अन्त में॥२२॥ १२राजधानी के नगर तक

दैदै गारि निंद्यो नृप मानकौं तिमहिँ दुष्ट,
जान्यौं सत्य इनकै बिरोध बढ्यो सब जग ॥
चंपाउत धीज्यो एह प्रथित[1] प्रमान चिंति,
पत्रन बिसास पारयो पहिलैं मिलाप मग ॥
सोपे खान नागोरहि आइ इनके सिविर[2],
मिलिगो प्रथम म्लिच्छ आडोदै बिसास अँग[3] ॥ २३ ॥
पोखरिन नाह हित राह गो मिलन पीछैं,
जवन मुकाम ग्राम मूँडवा सनाम जब ॥
केते इहाँ तुरकैं[4] कुरान बिच दीनी कहैं,
तारकीन[5] पीर ठहाँ हो ताके करे सौंह तब ॥
केते कहैं[6] सौंहँ तिन मानैं पै न सौंहँ करे,
ऐसैं मिलिगो सो आये तास डेरा तेहु अब[7] ॥
मंत्रके निमित्त एक तंबू तिन्ह मारनकौं,
पृथक तनाइ राख्यो म्लिच्छनैं चहै पँरब ॥ २४ ॥
तंबूमैं बिछायो सोर सघन बिछौनैं तर,
ररमैं काटिडारनकौं बाहिर सुभट राखि[8] ॥
तापैं इक ओर बहु तोपनकौं राखी तीरि[9],
सैन निज सूचनैं भरोसैपै दगन भाखि ॥
बिरचि प्रबंध यौं दगाको आप नम्र बनि,
आयो तिन्ह आत सुनि साम्हैं घात अभिलाखि ॥
धावन लगे ए तहाँ मेरतिया चंदाउत,

१ प्रसिद्ध प्रमाण जानकर २ सवाईसिंह के डेरे पर ३ विश्वास का पर्वत आडा देकर अर्थात् बहुत विश्वास देकर ॥ २३ ॥ ४ यवन मीरखां का बीच में कुरान देना कहते हैं ५ पीर का नाम है ६ चांपावत सवाईसिंह ने तो मीरखां के सौगन करने मान लिये परन्तु मीरखां ने सौगन नहीं किये ७ समय ॥ २४ ॥ ८ भरकर ९ अपने इसारे की सूचना पर चलाना कहकर

इनतैं बहादुर१ टस्यो इक सकुन साखिं ॥ २५ ॥
बेठारे कुबुद्धि इम सादर सबन आनि,
तबू उक्त अतर तथा जन निजहु तारि ॥
मन्त्रके निमित्त राखे इनके कथित मुख्य,
संग हुव तीननसों आप रह्यो छल सारि ॥
व्याज करि पीछैं मिच्छ छे२जुत निकसि बच्यो,
एक१ बधु रहिगो सक्यो न सु तिहिं उबारि ॥
बाहिर कढत सोर सैनसों पटकि बन्हि,
मानके अमित्र भूँजि डारे ज्यों चॅनक मारि ॥ २६ ॥
सोरके उडत१ गुन तबूके कटत२ संग,
तोप३न गुबार२नके बार होत भिन्न तेर ॥
रट्ठउर कुंपाउत बखसी प्रमुख राम१,
नाम जाको सो व्हाँ कढ्यो तबू चीरि बीर नर ॥
पैंड दे समुख पारि अहित अनेक परयो,
चहावल नाह चहे सूरनमैं अग्रसर ॥
छत्रके नरेसकैं न होतो संग तोतो छम,
भेदिजातो सोतो रविमंडल लै पुराय भर ॥ २७ ॥
सावन५तैं जगत कितौठौं व्यवहार सेक,
ऐसैं मिति भेदं होत सो मत न है उचित ॥
तदपि कितेक गुन तर्क६३ मान मानैं तथ्य,
मानैं किते सबतको अग्र वेद तर्क६४ मित ॥

१शकुनों की साक्षी से ॥२५॥२अपने लोकों को साड़ि (निकाल) कर ३ मानसिंह के शत्रुओं को ४ भाड़ में चणों के समान भूंज डाले ॥ २६ ॥ ५ रस्से ६ अत्यन्त कटगये ७ बखसीराम ८ अनेक शत्रुओं को गिराकर ९ छत्री राजा (जोकसिंह) के साथ नहीं होता तो १० यह समर्थ ॥ २७ ॥ ११ व्यवहार का सम्वत् १२ थोड़ा फरक

इनके सिविरै जाइ नागपुर लूटि आयो,
ऐसैं मीरखान हनि मानके सबै अहित ॥
जोधपुर भेजे काटि सीस तिनके जवन,
खानन कोँ डारि दैन सूची इन्हैं मान इत ॥ २८ ॥
चंपाउत बीर बखतावर बिहितै चाहि,
स्वामीकोँ मनाइ दाहे मंडोउर भाजि सिर ॥
मीरखान मित्र आइ मानसौँ सहित मिल्यो,
चाहि समभाव बैठे एकासन भोन चिर ॥
धाकल पलाइगो बच्यो जित जियन धारि,
जाजगढ पीछैं टिक्यो भीरु रनके अजिर ॥
मारी भीमरान वह कन्या सो करी कुमति,
याहीतैं उदैपुर कहायो थकितेसँ किर ॥ २९ ॥
बेद रस नाग भूमि १८६४ साक इत नैर बुंदीर,
अधिराज कीनौं—— अष्टम८ बिबाह बलि ॥
मार्गशिर९ मेचकर द्वितीयार गुरु लग्न मेल,
कृष्णगढ जाइ साध्यो संभर अभीत कलि ॥
कल्यानकी भगिनी प्रताप नृपकी जो कन्या,
सो अमानकुमरि२००।८ स नाम छबि मोद छलि ॥
चरमं बिबाह बिष्णुसिंह२००।२ नरनाह चारु,
दुलही बिबाही धानी दारिद कबिन दलि ॥ ३० ॥
भो जिम समौढ्य देस हाडोती उदित भाग१,

---

१ डेरे नागोर जाकर लूट लिये २ राजा मानसिंह के शत्रुओं को ॥ २८ ॥ ३ उचित जानकर ४ हित सहित ५ धौंकलसिंह भगगया ६ कायरों के चोक में ७ थकितों (कायरों) का पति ८ किल (निश्चय) ॥ २९ ॥ ९ कल्याणसिंह की बहिन १० अन्तिम विवाह ॥ ३० ॥ ११ शोभायुक्त धनवान्

कविनके पूरन भये जिम अखिल काम२ ॥
बिप्रनके गेह जिम रत्नाकर नाना बनैं३,
जोधनके रूपात जिम निकसे नियत नाम४ ॥
धर्म१ नीति२ सफल भये५ जिम धरनि धन्य,
तत्वबोध१ भक्ति२हु भये जग प्रकट ६तामें ॥
आँदरमैं वेद भो७ सपुत्र होत जाके इम,
रावरी सॉवित्री एह आइ गेह प्रभुराम२०।४ ॥ ३१ ॥
व्याहे जिहिं लग्न भूप रावरे पिता१ विदित,
कविके पिता२ हु तिम व्याहे तिहिं लग्न काल ॥
यातें न पधारिसके हरिना स्वकवि ऐन,
साधी तउ रीति सो पधारिबे ज्यों छितिपाल ॥
उक्त रनजीत जट्ट लाहोराधिराज इत,
भो वलिष्ट दुरसह बढ्यो वलि सुविधि भाल ॥
कीनों कपनीसों तानें उक्त १८६४ सकहीमें कोल,
वार सतलजके न आवनको सहि साल ॥ ३२ ॥
कपनीनें ताहि समुझावन वकील क्रम,
चारालिसासिकफ१ स नाम भेज्यो प्रीति चहि ॥
ताके समुझाइबे मैं जट्ट सु न आयो तब,
द्रग लुधियाना लगे भेजी फोज दर्प दहि ॥
आकटरलोनी करनेल फोजदार उहां,
रारिको उपक्रम दिखायो बरजोर रहि ॥
जीतिबो न जान्यों सर्वथाही रनजीत जब,

१ रत्नों की खान अथवा समुद्र २ वीरों के निश्चय ही नाम प्रसिद्ध हुए ३ तहां ४ वेद का आदर हुआ ५ आप (रामसिंह) की माता ॥ ११ ॥ ६ इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता ७ अपने कवि के घर हरणा नामक ग्राम में ८ लाहोर का पति ॥ १२ ॥ ९ उपाय पूर्वक आरम्भ

उक्त सीम कोल लिखिदीनौँ ह्वै[1] करंड अहि ॥ ३३ ॥
सो यातैं सतद्रू स्रोत वार न प्रसरि सक्यो,
छोटे१ बडे२ छितिप बचे यौँ इतके बहुत ॥
ते न रहते जो अंगरेजके अमल तंत्र[3],
जट्ट सबकी भू तो छुराइलेतो जोर जुत ॥
पै यौँ रहे कंपनीको दुर्लभ सरन पाइ,
आन रही ताकी स्रोत सूचितके पार उत ॥
खग्ग बल तोहू इनके उर रह्यो खटकि,
सेनाके समत्व सूर सोहू महासिंह सुत ॥ ३४ ॥
साक सर अंग अष्ट अवनि १८६५ अनेह[6] इत,
काबल वजीर दोस्तमुहुम्मद नाम करि ॥
खल ह्वै हरामखोर स्वामी दूर कीनौं साह,
आप बनिबैठो साह साहको कहाइ अँरि ॥
अहमदसाह दुररानी जो कथित उहाँ,
नादरकौँ मारि नाह भो जो अति१ दर्प भरि ॥
जीतिलीनी दिल्ली१ करि मथुरा२कतल जानैं,
प्राचीलग लूटयो देस अर्ज्जनको बाद परि ॥ ३५ ॥
रुहेला नजीबुद्दौला१ दिल्लीको वजीर राखि,
सानुकूल राखे लखनेऊ ईस२ आदि सब ॥
अहमदशाह४७।१ जो कलीज[9] कर्‌यो पीछे अंध,
जवनन ईस दिल्ली साह राख्यो सोहि जब ॥
काबल गयो जो तहाँ तबतैं तदीयँ कुल,

१ टिपारे में बन्ध कियेहुए सर्प के समान होकर ॥ ३३ ॥ २ राजा ३अंगरेजों के आधीन ४ अटक नदी के पार ५ बराबरवाला ॥ ३४ ॥ ६ समय ७ बादशाह का शत्रु कहाकर ८ आर्यों का ॥ ३५ ॥ ९ कलीजखां ने १० उसका कुल

अधिप रह्यो सो मद्य१ प्रमदा२ प्रमाद अव ॥
कावलको सासक सुजाउलमुल्क१नाम१काढ्यो,
ताके महमूद२ नाम सोदर समेत तव ॥ ३६ ॥
ऐसें उपटके जाको वारकजई सो एह,
धारत भो छत्र दोस्तमुहम्मद१ नामधेय ॥
तनय मुहम्मदादि अकवर२ नाम तानैं,
आपुनों वजीर राख्यो धी१ बल२ गिनि अमेय ॥
भावी वस वक्त वह कावल अधिप भाजि,
लवपुर आयो जानि जट्टको सरन लेय ॥
हीरा कोहनूर छीनिलीनों सिख यातें हत,
दाम पुछिवेपै कह्यो मोल जूती इक देय ॥ ३७ ॥
हीरा यह पायो हुतो साहजिहाँ३९१दिल्ली साह,
जोहु लेगो नादिर मुहम्मदह४सों वरजोर ॥
नादरकों मारि भो जो अहमदसाह नाह,
ताके रह्यो तवतें इहांलों भो न प्रभु और ॥
अहमदनाम दुररानीको पिनाती एह,
लेतभो सरन आइ जट्टको पुरी लाहोर ॥
तासों लेत हीरक पदत्र भाख्यो अर्घ तानें,
दै सु पवि पीछे लयो कपनी सरन दोर ॥ ३८ ॥
एक कछु भावी वर्त्तमानमैं वजीर ऐसें,
सूचे१८६५ सकमाँहिं वन्यों कावल तखत साह॥
रूसिनसों१ जानैं मेल पावन सहाय राख्यो,

१ स्त्रियों के प्रमादवाला ॥३६॥ २ सिताप ३नाम ४मुहम्मद अकबर ५ बुद्धि में और बल में अमाप जानकर ६ लाहोर आया ॥३७॥ ७ यहां तक इस हीरे का यवनों के सिवाय अन्य स्वामी नहीं हुआ ८ जूती ९ इस हीरे की कीमत में १० रणजीतसिंह को यह हीरा देकर ॥ ३८ ॥

राख्यो रनजीतहुसौं[2] मेल गट दैन राह ॥
अंग रस नाग ससि १८६६ संबत अनेह इत,
संध्या दोलतादिराव[1] स्वीपको सब सिपाह ॥
कारन कछुक पाइ जैपुर दमनें[2] क्रम्यों,
लालच लग्यो सो लग्यो दूनी दंग[3] बहु लाह ॥ ३९ ॥
जैपुर के निर्दय महा ठिग बिसेस जन,
उनमैं कितेक हुते गोगाउतके अहित ।
संभूसिंह भूपति प्रतापकै रह्यो सचिव,
सोपै सुमिराइ[4] अर्थ अतुल दिखाइ इत ॥
दूनीपुरपैं यौं मोरि संध्याकों लराइ दीनों,
मार्यो ताप तोपनको कल्पके कृसानु[5] मित ॥
जैपुर ह्वो संभूसुत दूनीपति चंद जब,
सद्महो[6] प्रधान सिंघी बीर जो लख्यो बिदित ॥ ४० ॥
रत्नचंद्रनाम जिहिँ मासनलौं रारि रचि,
टूटन दई न दूनी गोलनको सहिताप ॥
दिनमैं गिरैं जो कोट रत्तिमैं बनाइ दैदै,
थोरे बलतैंहु मारी तोपनके मुख थाप ॥
अर्थदै[7] मिलाइ राख्यो संध्याको स्वसुर अंबा,
बैजाँनाम नारि संध्या व्याही तास[8] यह बाप ॥
फौज याकी इकधाँ चलात रही खाली फैर,
दुर्गमैं रुकी न आत सामग्री इम दुराप[9] ॥ ४१ ॥
सोपै इन जैपुर पुकार्‌यो चंद संभू सुत,

---

१ दोलतराव २ जयपुर को दड दंन गया ३ दूणी नगर के धन का लाभ ॥ ३९ ॥ ४ बहुत धन देकर स्मरण कराया ५ प्रलय की अग्नि के समान ६ घर (दूणी) में ॥ ४० ॥ ७ धन देकर अंबा नामक सिन्धिया के श्वशुर को ८ उस बैजां का यह पिता था ९ दुर्लभ ॥४१॥

ताको वह कष्ट मेटिवेको भूप जगतेस ॥
कीनो खुसहालीराम वहुरा पेतानें केद,
ऐसें ठाँ सद्दाशी जपगढतें उतारयो एस ॥
आत राजमहल रुकाई तोप१ तानें अहो,
सिविरें मुराई सेना२ पेठत तस मदेस ॥
कही लाख मुद्रा लेन माहजिको लेख काढि,
सूची व्यर्य१ दड२लें हमारे देहु अव सेस ॥ ४२ ॥
सत्य अर्य वह राखि पटेल पिताके सिर,
दैनको दिखाये ठही जितेक दम्म लेख दल ॥
दड१ व्यय२ लेकें जे सक्यो न दे खिलहु दम्म,
वँदन विगारि सध्या चढिगो उपेत वल ॥
जैपुरहु जाइ वहुरा सु केद भो वहुरि,
वरजि पिता१ गो सो सो कीनी पुत्र२ धीविकल ॥
जाइपरयो सध्या द्रग ग्वालियर सीमा जव,
चढि न सक्यो सो रह्यो तवतें तहाँ अचल ॥ ४३ ॥
ऐसें रहि ग्वालियर सध्या सो अवनी ईस,
दाव्रत भो देस इत उतके वलिष्ट अति ॥
राधिकादिदास काढ्यो सोपुरतें गोर राजा,
तरुन पचीस२५ सँम तोहू मुँग्ध कुठमति ॥
ताहिदे वरोदा लाख १००००० मुद्रा मित आय ताको,
सोपुर समेत सवै दाव्यो देस गढ गति ॥

१ राजा प्रतापसिंह ने २ डेरे में ३ रुपये ४ फौज खरच और दंड सो सो और हमारे रुपये बाकी रहे सो दो ॥ ४२ ॥ ५ धन ६ लिखाहुआ पत्र ७ बाकी के रुपये नहीं दे सका तब मुख बिगाड़ कर ८ सेना सहित ९ विकल बुद्धिवाले पुत्र (जगतसिंह) ने पिता (प्रतापसिंह)मना कर गया था सो सब किया ॥ ४३ ॥ १० सेवैन का पति ११ वर्ष १२ मोटी बुद्धिवाला (मूर्ख)

ऐसैं बढि राघोगढ१ नरउर२ देस आदि,
काल कछु भावीमाँहिँ तानैं लये दाबि काति ॥ ४४ ॥
सुंडापान[2] मत्त इत जैपुर जगतसिंह,
नग्नठहे जो नग्न रमनीनिनमैं[3] लग्यो रहन ॥
लैकैं अंक[4] नारि मारि द्वार परदेपैं लात,
आयो कढि बाहर नसाबस निसा१ अहरन ॥
द्वारसेवी जनन[6] धकेल्यो पीछो मीचि दृग,
जुवती सतन[7] बीच निस्त्रर्प[8] करैं जह न ॥ ४५ ॥
जोधपुर१ बिखठहे उदेपुर२ सक्यो न जाइ,
पीछो आइ तदपि जंई[10] ज्यौं पाप दर्पपर ॥
पूरे हठ लाखन उपायमैं खरच पारि,
काम१ कामअंकुसर२[11] बढाय द्वैरहि चित्रंकर[12] ॥
सतनै[13] सुवाइ भोगै नारिन बिबिध संग,
आपुनी१ पराई२ गुरूलौं न गिनीठहे अडर ॥
जाकौं रतिजंग गनिका रसकपूरि जीति,
खूब बस कीनौं जो खरी१[14] ज्यौं चंडबेग खर२ ॥ ४६ ॥
याही लंजिकाको[15] कृपापात्र बन्यौं बिप्र इक,
नाम सिवनारायन जो दधीचिके जैनन[16] ॥

१ आगे आनेवाले समय में ॥ ४४ ॥ २ मद्य पीने के स्थान (मतवाल) में ३ नग्न स्त्रियों में नग्न होकर रहनेलगा ४ स्त्री को गोद में लेकर ५ दिन और रात में डोढीदार लोकों ने ७ सैकड़ों स्त्रियों में ८ वह निर्लज्ज नाहीं नहीं करता अर्थात् स्त्रियों के देखते हुए रत करता ॥ ४५ ॥ ९ जोधपुर से नकटा होकर विवाह करने को उदयपुर नहीं जासका १० तो भी विजय पाया हुआ हो तैसे ११ लिंग १२ आश्चर्य करानेवाले बढाये १३ सैसड़ों स्त्रियों को सुवा (लेटा) कर अनेक प्रकार से भोगता था १४ जैसे गधी १५ भयंकर वेगवाले गधे को वश में करै तैसे रसकपूर नामक गणिका ने उस राजा को वश में किया ॥ ४६ ॥ १६ वेश्या का १७ वंश में

वैहासिक जैसें अंतरग१ है मिथुन२ बीच,
मिश्र यह तैसें वढ्यो दोउ२नके जोरि मन ॥
याही गनिकाको भयो भ्राता वीतलज्ज३ यह,
पाँनि वधवाइ४ राखी पायो प्रभु५ सालपन ॥
सोही कर्यो मंत्री तहाँ भामसौं६ पिसुन सूचि,
धींसख गहायो रायचंद लैवे७ भाटि धन ॥ ४७ ॥
उक्त १८९९ सकमैं यौं रायचंदहि कितेक८ अंह,
कैद राखि पीछैं हनिगेरयो बिनु दाह करि,
भूपको सेकार९ मिश्र मारनमैं हेतु भयो,
जारनमैं हेतु न भयो जो मोघ मतु जरि१० ॥
बहुरा१ निकारहु न१ हरदे२ बिहारहु न३,
मारहु न२ रायचंद३ यौं कहिगो तात मरि११ ॥
सोसो करी सबही सपूती जगतेस सुत,
प्यारी गनिका१ सैंह सकार१२ वारे फंद परि ॥ ४८ ॥
कग्गर बैसन१३ धारि नारिन सहित करैं,
बोरि फाग कौतुक१४ दिगंबैर बनैं बहुरि ॥
कुल जान धारैं ताहि वहारि बिगारैं कामी,

---

१ विदूषक (स्त्रीपुरुष को मिलानेवाला) २ स्त्री पुरुष के बीच ३निर्लज्ज ४ उस वेश्या से अपने हाथ में राखी बन्धवाकर ५स्वामी (जगतसिंह) का साळापन पाया ६ बहिनोई (जगतसिंह) से, उस चुगल ने कहकर ७ धन लेने को उस सबये ने मन्त्री को पकड़वाया ॥ ४७ ॥ ८ दिन ९ राजा का साळा (राजा की अविवाहिता 'पासवान' स्त्री का भाई) यथा "मदमूर्खताभिमानी दुष्कुलैश्वर्यसंयुक्त ॥ सोयमनूढाभ्राता श्याल आकार इत्युक्त ॥" १० झूठा अपराध लगाकर उस मन्त्री के मारने में कारण हुआ परन्तु वह बिना जलाया पड़ा रहा जिसके जलाने में कारण नहीं हुआ ११ पिता (प्रतापसिंह) मरते समय कह गया था १२ साळे सहित प्यारी गणिका के फन्द में पड़कर ॥ ४८ ॥ १३ कागज के वस्त्र पहनकर १४ जल की फाग करता और १५ नग्न होकर

मोहैं चित्रबंध सुहि सोहैं लंक बंक मुरि ॥
द्रंगकी सतीन तजिदीनौं अवरोध ऐवो१,
दूर के पलाई२ दुख छाई रही केक दुरि३ ॥
हीजरे किसोर बय आदरे सुनत हंत,
जानैं कामग्रंथ व्है बिधाता सोहु बाद जुरि॥ ४९ ॥
मिश्र शिवनारायन स्वामीको सँकार१ मंत्री,
काज बिनु लाज सब राजके लग्यो करन॥
सुभट१ सिपाह२ गन गहन दुमन सवै,
सचिव३ त्रपा के गहि बैठे जित जो सरन ॥
काढयो बहुरा तब रेहस्यमैं किते कहत,
धृष्ट बल सत्थ बंथ ताहूकों लग्यो भरन ॥
भाख्यो मैं प्रसन्न तँहँ भाख्यो द्विज वृद्ध भो मैं,
पुत्रहिं पठैहों वे" नवीन निज१ जो पर२ न ॥५०॥
ओरन बुलाइ बेग विप्र कढिगो रु ऐसैं,
सचिव रेहस्य केक भुकते१ बचे२ सुनत ॥
जो रसकपूरि गनिकाही तैंस दर्प जीति,
मान१ मैं रु प्रानर२मैं अमान प्यारी स्वामि मत॥

१ टेढी कमर करके चित्रबन्ध आसन से मोहित करै सो ही स्त्री सुहावै "कामसूत्र में कहेहुए रतके आसनों में एक चित्रबन्ध आसन है सो स्त्री के टेढी कमर करने से होता है" २ नगर की पतिव्रता स्त्रियों ने जनाने में आना छोडदिया ३ कितनी ही स्त्रियां दूर भाग गईं ४ कितनी ही छिप रहीं ५ युवा अवस्थावाले हींजड़ों का आदर किया ६ खेदकी बात है ॥ ४९ ॥ ७ अपने मालिक का शाला और मंत्री (सलाहकार) ८ लज्जा ९ एकान्त में १० बाथ [अंक] में भरकर ११ नवीन अवस्थावाला है और यह भी आपका ही है अन्य नहीं है ॥ ५० ॥ १२ कितने ही सचिवों का इस एकान्त को भुगतना और कितनों ही का बचना सुनते हैं १३उस राजा जगतसिंह के घमंड को जीतकर १४ बल में अतोल

साध्यो वाजीकरन अकाल मरिवेकों सठ,
तातें प्रतिमल्ल मोहि *हेला१ हाव२ भाव३ तत ॥
जैपुर अधीस जगतेस करिलीनों निहिं,
वाजीगर वदर नचावैं जिम तारि तव ॥५१॥
कामीपन हाका अजमेर नृप वीसलको,
जैसो भयो भूपनमैं तैसो इहिं वेर जग ॥
औरनको जान्यों नाहिं एही महाराज उभै२,
मत्त इहिं वेर भये जानें छैल छैल मग ॥
जोधपुर१ भीम१ जगतेस२जु ए जैपुर२ज्यों,
एक सील१ चरित२ निलज्जताके उच्च अंग ॥
कैसे भये जैसे परदेसी सुनि रोकैं कान,
देसी कहा दुष्टननें भायो इम एक भंग ॥ ५२ ॥
एक१ काकिनीमैं पीछो देदे गही नारि इत,
सिंघी इंद्रराज१ उक्त दूदाउत्त सिवनाथ२ ॥
गंगाराम३ सजुत ए जबहि हजूर गये,
व्है कै जंई जौ जस दिखाये आछे निज हाथ ॥
मान महिपाल जे लगाये उर पूरे मोद,
सवहि वढाये सतकारक विभव साथ ॥
देनलागो सिंघीकों मुसाहबी उचित देखि,
नीतिसों नच्यो व्हाँ इंदराज असैं गुनगाथ ॥ ५३ ॥
जोरि कर स्वामीके समक्ष यों वनिक जपी,
आय१के अधीन व्यैं सवठौ विधेय ठयर्य२ ॥

*सुरत की प्रबल इच्छा और हाव भाव से तहां मोहित करके ताड़ना देकर ॥५१॥ १ रसिकों के मार्ग में रसिक था वकरे के समान रसिक इन्हीं दोनों को जाने २ एकसे स्वभाव और चरित्रवाले ३ ऊँचे पर्यंत ४ एक योनि ही अर्च्छा लगी ॥५२॥ ५ संग्राम में ६ जीतनेवाले होकर ॥५३॥ ७ रोपरू ८ जितनी आमद होवै उतना ही

रीति यह इंद१ विधि२ ईस३ हरि४ लौं जो रही,
नर तो कितेक तहाँ कैसैं बनैं छोरि नैय ॥
रीझ आदि व्ययमैं प्रमान जो प्रभु न राखे,
मोपै बनिहै क्यौं नाथ काम तो प्रबंधमय ॥
मान नृप भाख्यो हम तेरेही दिखाये मग्ग,
अबतैं चलहिं सदा तेरी मतिके उदय ॥ ५४ ॥
कैसैं व्है प्रतीति अरजी यों इंद्रराज करी,
देवनाथ इष्ट गुरु रावरे जे बिच देहु ॥
भीर तिनकौं मैं राखौं व्हैन ज्यों नियम भंग,
व्हैतो हित हेरि अटकैं तिहिं मिलित एहु ॥
सुधरन काज श्रीजलंधरके लै सपथ,
हानि१ लाभ२ हमकौं गिनौं इक१ दै निज गेहु ॥
करन बिहीन रीझ१ खीज२ न बिधेय करि,
लाह नरनाह पीछैं राहके पथिकैं लेहु ॥ ५५ ॥
॥ सोरठा दोहा ॥
जब प्रभुतैं करजोरि, इंदराज किय यह अरज ॥
नाथ सु तबहि निहोरि, कमधज्ज तस भीर किय ॥ ५६ ॥
सूचे सौंहन साथ, हित जिम बनिक प्रतीति हित ॥
नाम जलंधरनाथ, दोउ२ न अप्पन१ बीच दिय ॥ ५७ ॥
लिपि प्रभुकी१ लिखवाइ, लिपि नाथहु२ की संग लहि ॥
पुनि बिस्वासहि पाइ, काम बनिक लग्गो करन ॥ ५८ ॥
व्यय१ तब अधिक बिडारि, सिंघी रक्खिय आय२सम ॥

खरच उचित है १ शिव २ नीति ३ स्वामि का (आप का) काम ॥ ५४ ॥ ४ सहाय ५ जलंधरनाथ के सौगन ६ उचित ७ चलनेवाले ॥ ५५ ॥ ८ कमधज मानसिंह ने देवनाथ को उसका सहायक किया ॥ ५६ ॥ ९ कहे हुए सौगनों के साथ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ १० अधिक खरच था जिसको निकाल कर

नाथहिं भीर निहारि, उचित राह आनें अखिल ॥ ५९ ॥
नृपहिं वनिक¹ जुत नाय², राह तजत अटकत रहें ॥
सब वैभव नयें साथ, बढन राज्य लग्गो विविध ॥ ६० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह
चरित्रे मानसिंहात्मघातविमर्शकारामोचितसिंघीन्द्रराजभाण्डागारि
गङ्गारामकुचामणठक्कुरशिवनाथसिंहसहितजयपुरजनपदगमनकारी
नगरजयपुरानीकपलायनजयपुरावरण १ सेनाऽपयपथाकुलजग-
त्सिंहचम्पाउत्तसवाईसिंहविरसताहेतुस्वराष्ट्रनाशभीतजगत्सिंहजयपु
रदिगभिमुखपलायन २ राजयुग्मभीतराणाभीमसिंहस्वसुतागरलप
योगमारणसवाईसिंहमरुधरालुण्ठन ३ बुन्दीशविष्णुसिंहविवाहद्वय
करणार्द्धगद्दिकोपवेशनस्वीकारमित्रीकृतमीरखाँयोधपुरेशमानसिंहस
वाईसिंहच्छद्मघातमारण ४ कृत्रिमदायादधोंकलसिंहकादिशीकभ
वनबुन्दीभूपकृष्णगढाष्टमविवाहकरण ५ लवपुरपतिसिक्खरणजी

॥ ५९ ॥ १ देवनाथ सहित २ नीति के साथ ॥ ६० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में विष्णुसिंह के चरित्र में, राजा मानसिंह के आत्मघात विचारने पर सिंघी इन्द्रराज और गंग भंडारी का कैद से निकल कर कुचामण के ठाकुर शिवनाथसिंह सहित फागी नगर में जयपुर की सेना को भगाकर जयपुर को घेरना १ सेना के नाश से घबराये हुए राजा जगतसिंह और पोकरण के चांपावत सवाईसिंह से विरस होकर अपनी भूमि के जाने के भय से जगतसिंह का जयपुर जाना २ महाराणा भीमसिंह का दोनों राजाओं के भय से अपनी पुत्री को जहर देकर मारना और सवाईसिंह का मारवाड़ को लूटना ३ बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का एक मास में दो विवाह करना और जोधपुर के राजा मानसिंह का मीरखां को मित्र बनाकर उसको आधी गादी पर बिठाना स्वीकार करके पोकरण के ठाकुर चांपावत सवाईसिंह को छलघात से मरवाना ४ जोधपुर के कृत्रिम दावेदार धूंकलसिंह का भागना और बुंदी के राजा का कृष्णगढ में आठवां विवाह करना ५ लाहोर के सिक्ख रणजीतसिंह और ईस्ट इण्डिया कम्पनी से विरोध बढ़कर सुलह होना और काबल के वजीर दोस्त मुहम्मद का, काबुल

तेष्टइंडियाकम्पनीसंधिविधाननिःसारितकाबुलेशामीरसुजाउल्मु-
ल्कमन्त्रिदोरतमुहुम्मदकाबुलाधिपत्यप्रापणा ६ स्वशरणागतकाबु-
लेशामीरकोहनूराख्यवज्रसिक्खरणजीतसिंहग्रहणामीरकम्पनीशर
णसमासादन ७ दूणीपुरकृतसमरदौलतरावसिंधियापुनर्दक्षिणा-
दिग्गमनग्वालियरसमागतेतरततोदेशसमाक्रमणा ८ मद्यपकामुकज
यपुरेशजगत्सिंहविवस्त्ररमणीरमणादिगर्हितकर्मनिन्दनसिंघीन्द्रराज
विहितजयपुरजनपदोपद्रवहेतुत्यक्तयोधपुरावरणजगत्सिंहजयपुरप
लायनमानसिंहसिंघीन्द्रराजप्रधानपदप्रदानादिवर्णनं दशमो मयूखः
॥ १० ॥ आदितः ॥ ३६० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

सौराष्ट्री दोहा ॥

इंदराज अधिकार, पाइ मुसाहवको प्रथित[1] ॥
सब लखि सार असार, हेरयो हित प्रभुको हरखि ॥ १ ॥
कछुक भूत[2] इहिं काल, संगा नाथ समर्थ नमि॥
नियमहिं आनि नृपाल, कोविद[3] वनिक प्रधान किय ॥ २ ॥
जाके मतिगति जोर, नियम जदपि न रुच्यो नृपहिं ॥
तदपि लग्यो नय तोर, दिनप्रति चमक्यो अभ्युदय ॥ ३ ॥

के अमीर सुजाउल्मुल्क को निकाल कर बादशाह होना ६ अपने शरण आये हुए काबुल के अमीर से सिक्ख रणजीतसिंह का, कोहनूर नामी हीरा लेना और अमीर का कंपनी के शरण जाना ७ दौलतराव सिंधिया का दूणी नगर में युद्ध करके पीछा दक्षिण में जाना और गवालियर जाकर इधर उधर के देश दबाना ८ जयपुर के मद्यपी और कामी राजा जगतसिंह का नग्न होकर स्त्रियोंमें रमने आदि निन्दनीय कामों की निन्दा और जयपुर के देश में उपद्रव करके जोधपुर के घेरे से जगतसिंह को जयपुर में बुलानेवाले सिंघी इंद्रराज को राजा मानसिंह का प्रधान बनाने आदि वर्णन का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ ॥१०॥ और आदि से तीनसौ साठ ३६० मयूख हुए॥

१ विदित ॥ १ ॥ २ यह कथा कुछ गये समय की है ३ चतुर ॥ २ ॥ ३ ॥

.नेगम बहिर्गत न्याय, पच५ मकोरक पथ पथिक ॥
इत मत तदपि सहाय, कानफटा गुरु मान किय ॥४॥
दयो मोहि इन दान, प्रान ॐपसन खिन जोधपुर ॥
मतध्रुव इम हुव मान, किंकर कानफटेनको ॥ ५ ॥
इम नाथहिं बिच आनि सिंघी हुव प्रभुको सचिव ॥
मानहिं बहुमत मानि न मुसाहब होतो नतो ॥ ६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जैपुरके जोरतैं भज्यो जब महिप मान,
आपुनों अनीक देखि वेरपैं बन्यों आहित ॥
पाइ निज देस१ जगतेसहिं मुराइ पुनि,
सगी रहे जे भट बढाये सबही सहित ॥
उक्त सिवनाथसिंह१ मेरतिया दूदाउत,
मानि हित चिंतक दे लाख१००००० को पटा मँहित ॥
ओरनतैं अधिक समर्घि द्रम्म सिक्का१ आदि,
राख्यो सबिसेस ताहि ओरन तुला रहित ॥ ७ ॥
सूचे तीन३ सगी सिवनाथवारे सोदरन,
सहँस पचीस मुद्रा तुल्य दै पटा सबन ॥
नींबी१।२ मुख्य थान लछमन१।२ कौं दयो नृपति,
मान२।३ हित दीनौं मान भद्दलिया२।३ तुष्ट मन ॥
स्वामी कर्यो थान धनकोली३।४ को हुकमसिंह३।४,
सूँप्यो सारदूलता१।५ कौं पिप्पलाद१।५ प्रीति सन ॥
द्रम्म पच अयुत५०००० पटासौं पहिलैं तो दयो,

१वेद मार्ग से बाहिर २ वाम मार्ग में चलनेवाला ३ तो भी उस कनफटा को मानसिंह ने गुरु किया ॥ ४ ॥ ४ प्राण नाश होते समय ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५ शरीर पर शत्रु बना अर्थात् आत्मघात करने लगा ६ हित सहित ७ पूज्य (आदरणीय) ८ रुपये का सिक्का ६ बराबरी रहित ॥ ७ ॥ १० बराबर ११मन से प्रसन्न होकर

*भावीकाल देहैं बलि बूडसूर१५ पुरी भवन ॥ ८ ॥
ऊदाउत बंसमें प्रधान उक्त अर्जुन१६ कों,
अयुतन आय ग्राम बारह१२ दये उचित ॥
भद्राजनि ईस बखतावर१७ जो जोधा१ भन्यों,
द्रम्म लाख१००००० मानी पट्ट ताकों दयो हेरि हित
जंप्यो लाडनूं पति द्वितीय२ जोधा२ मंगल जो,
मान नृप ताहूके बढाइ पटा लाख१००००० मित ॥
पंच अयुता५००००ऽऽये तास बंधव पता१।३।९कों पट्ट
यो दयो त्रिसत३०० सादी स्वामिता२ उपेत इत ॥ ९
अल्पाजीव हे ए८ सब एक१ टारि अर्जुन१ कों,
ऊदा कुल पट्टपति सोतो रायपुर१ ईस ॥
आठ८ मिसलनमैं सिरायत हो आदिर्हातैं,
अष्टादस१८ संगी यों बढाये मान अवनीस ॥
तिनमैं कुचामनि१रु भद्राजनि२ लाडनूं३तो,
बढे लाख१०००००लाख१०००००के पटाकी ठानि बखसीस ॥
ऊदाउत मूलर्हातैं ऐसो सो बढ्यो अधिक,
जानैं जंग जैसे बढे संगी हीन द्विक२ बीस१८ ॥ १० ॥
ऐसैं भूत१ कालमैं बढे ए बंदगीतैं अरु,
इंद्रराज१ मंत्री भयो नृपकों नियम आनि ॥
बर्त्तमान२ मैं अब बुरो यह लगन लग्यो,
मानी मानवारे मन ६व्ययमैं अटक मानि ॥
सौंह लै जलंधर१के साखी देवनाथ२ सह,
तापैं पछिताइ हरैं छलतैं सचिव हानि ॥

* आगे आनेवाले समय में देखेगा ॥ ८ ॥ १ पचास हजार की आमद का २ तीन सौ सवारों की स्वामिता सहित ॥ ९ ॥ ३ वे थोड़ी जीविकावाले थे ४ राजा मानसिंह ने ५ दो कम बीस ॥१०॥६खरच रोकने से ७ सचिव को मारना

हाहा काहूकैं न ऐसो कपटी अधिप होहु,
पापी लोम अचक जो मारे रवीप पहिचानि ॥ ११ ॥
संवत तुरग अग सजुत भुजग ससि१८६७,
इदउर ईस जसवंतराव छोरयो अग ॥
जोलों रह्यो स्वास हुलकरकैं नियति२ जोर,
तोलों त्रास रह्यो अंगरेजनकै बल तग ॥
हंकि अरि तोपनपैं जाने बहुवेर हय,
ढंकि छिति दीनी रुंड मुंडनके करि ढंग ॥
पृथ्वीराज पीछैं वीर तैसो यह जान्यों पस्चो,
जाकौं वाह व्याहसो उछाह रह्यो सब जग ॥ १२ ॥
साहस१ उपाय२ बुद्धि३ विक्रम४ रु विद्या५सिद्ध,
एक१ अध्वैंद अध्वग ए अंगरेज आइ इत ॥
होनलागे हाकिम इहांको देस१ काल हेरि,
हेरै हेरै क्रमतैं वढाते निज लाभ हित ॥
एक१ प्रतिभटतैं मुरे न बहुवेर आजि,
मोरे महसूर१ मकसूदाबाद२ से अमित ॥
जोध कंपनीके जे मुराये बहुवेर जानें,
वीर एक१ ऐसो जसवंतराव भो विदित ॥ १३ ॥
सकटमें एकसमें वलको बुरज बंधि,
तोप दुव२ तामैं चटकारिनें मित चलात ॥
अंगरेज६ दक्खिन२।३ तैं उत्तर४।७ लरत आये,
काजहु करत आये पाउस३ सलिल पात ॥

---

१ सुनते ही बाल (रोम) खड़े होजावैं ऐसा ॥ ११ ॥ २ भाग्य के बल से ३ पृथ्वी को ४ घेर (समूह) ५ एक मार्ग में चलनेवाले ६ युद्ध में ७ बहुत ॥ १३ ॥ ८ सेना की ९ चुटकी बजने के समान १० वर्षा का जल पड़ने में

नीठि नीठि लंघि कृत्य कोविद[1] मिली नदिन[2],
गंगापर ठहैगये बढेक्रम निबहि गात ॥
लरत उहाँलौं गयो हुलकर पीछैं लागि,
बलको बुरज पै न बिगरयो जिनहि जात ॥ १४ ॥
असे अंगरेज अतिसीम[3] बुध१ बीर२ अहो,
ऐसैं एक काल दुर्ग भरतपुराख्य[4] अरि ॥
बाहिरतैं बेढिकैं[5] करयो रन कछुक काल,
टेक बल लेकनैं[6] अनेकनमैं एक१ टरि ॥
माँहि१के प्रघात जट्टराज रनजीत मारे,
काढे जसवंतराव बाहिर२के पातकरि[7] ॥
हारि न मुरे जे१मुरे तबतो कछुक हेतु[8],
लैकैं१ दयो जट्टनको पीछैं उक्त[9] दुर्ग लरि ॥ १५ ॥
ऐसे बज्रफेट जैसे अंगरेज६ आहवसैं[10],
हुलकरराज जे भजाये बहुबेर हनि ॥
एकबेर आवत दरेको करि[11] ऐंड द्वार,
माँहिं अंगरेजन लै कोटाके प्रधान नमि ॥
चम्मलि उतारि काढी सुखसौं कथित चमूँ,
तातैं रंच रुद्ध जसवंत पीछैं प्रीति तनि ॥
माँहिं नतिसौं[12] लै धरि रोधन जु कारा[13] माँहि,
बज्र कोप झेल्यो झल्ल जालमनैं नम्र बनि ॥ १६ ॥

---

१ कार्य में चतुर २मार्ग में मिली हुई नदियों को लांघकर ॥ १४ ॥ ३अत्यन्त चतुर और वीर ४ भरतपुर नाम के ५ घेर कर ६ अंगरेजों के सेनापति का नाम है ७ बाहर के प्रहारों से ८ कुछ कारण से अंगरेजी सेना पीछी फिरी ९ कहा हुआ गढ (भरतपुर) ॥ १५ ॥ १० युद्ध में ११ कोटा के राज्य में पर्वतों के बीच के मार्ग का नाम, दरा जिसको रोककर १२ नम्रता से १३ कैद में ॥ १६ ।

ऐसो नीति पाटवे दिखायो जिम रीझैं एह,
हो तबहु पाउसं३ पै हेरी नाँहिं बित्त हति ॥
दलहो पैटन ढाँक्यो भीजे करवाइ दूर,
तबू जे नवीन पीन तिनकी तनाइ ताँति ॥
देकैं उपदामैं ईए जो रह्यो जितेक दिन,
महि महिमानी दीखि अपुनैंसे तास मति ॥
रोकें मूढ रोधक तो ऐसी कहि राजी राखि,
काढ्यो जसवंतराव ऐसे खेलि दाव कति ॥ १७ ॥
एकवेर असेही परयो जो पुर बुंदी आइ,
गोपुर जराए नृपनें ठहाँ कछु हेतु गहि ॥
रंचहु न भेजि महिमानीकी न ठानी रीति,
सोहु हित हानी मानी मानी रह्यो तोहु सहि ॥
श्रीजितको केदारेस आश्रम निवास सुनि,
स्वल्प पत्ति संगी चल्यो तिनसौं मिलाप चहि ॥
जो लौ बाँह्यपथ गिनतीके जन दरवाजा,
ऊपरतै झारी एक१ तुपक तहाँतैं रहि ॥ १८ ॥
जाकों हो न सासन पै गोपुर जटित जानि,
एक मूढ ऊरुज सो आगस करयो असह ॥
पीछो आइ तबहि निदेस दीनों सेनापति,
लेहु१ गढ१ बुंदी लूटि२ आजके प्रवृत्त अंह ॥
पैरिखा कितीक जो पैंदत्रनतैं देहु पूरि,
ताको क्रुद्धताको होत सासन इतोक वह ॥

१ नीति की चतुराई २ वर्षा ३सेना को वस्त्रों से ढकी ४पचे डेरों की पंक्ति तना कर ५ इच्छानुसार भेट देकर ॥ १७ ॥ ६ नगर के द्वार बन्ध कराये ७ नगर के बाहर के मार्ग से ॥ १८ ॥ ८ दरवाजे जुड़े जान कर ९ वैश्य ने १०अपराध ११ वर्तमान दिन में १२ खाई कितनीक है जिसको १३ जूतियों से भर दो

बाहिरकी *बुंदी१ साखापुर२न समेत वेग,
जबहि लुटीसी दीसी साखी३ हीन साख जह ॥ १९ ॥
पत्तनके कोट१पैं रु दुर्ग२पैं प्रसारि पंति,
तोरि दीनी तोपनकों मोरि मोरि सिरत मुख ॥
लैलै तूल३ भार बहु खातिका४ भरन लगे,
राहकों धरन लगे निश्रेनिन चाह रुख ॥
निजन निहारैं नीठि बुंदीके बचावनकों,
श्रीजितके आतहि सो साम्हैं आइ पाइ सुख ॥
तंबू पधराइ उपालंभनको५ ओघ तानैं,
———अनखाइ दीनों तदपि मिटाइ दुख ॥ २० ॥
नाँती६ जिन दिनन प्रतीपहो पितामहसों,
तीव्र बल आयो इहाँ हुलकरराज तब ॥
याही तैं विलंबि पीछैं श्रीजित सहाय आयो,
जान्यों सह सचिव१ महीप२ को प्रमाद जब ॥
लुंटक७ पिटात१ बरजात२ के सरनि लखे,
उक्त बिधि ह्वैरही मिलि बैठे स्वस्वं थान अब ॥
सूचे उपालंभ जसवंतके असेस सुनि,
पीछो दयो उत्तर यों श्रीजित लहे पैंरव ॥ २१ ॥
मातुल११ मलार कुल तू भयो कुपुत्र मूढ,
बुंदीपति मूढ भयो१२ मो कुल कुपुत्र वंत ॥

* शहरपनाह जैसे बाहिर का शहर जिसको जूनी बुन्दी भी कहते हैं १शाखा हीन वृक्ष के जैसी ॥ १९ ॥ २ भरीहुई ३रूई के बोरे लेकर ४खाई को भरने लगे ५ उरहनों (ओलंभों) के समूह से ॥२०॥ ६ पोता (विष्णुसिंह)७लुटेरों को ८ मार्ग में देखे ९ अपने अपने स्थान पर १० समय पर ॥ २१ ॥ ११ मामा मलार के कुल में (उम्मेदसिंह के पिता बुधसिंह की राणी कछवाही ने मल्लार के राखी बांधी थी इस कारण उसको मामा कहता था) १२ खेद है

अग अपनेकों अहो काटन लग्यो तू१ आप,
मडन लग्यो त्यों भूप२ इतको प्रतीप मत ॥
दोउन२को सत्रु झारि तुपक भज्यो जो दुष्ट,
ताहि खोजि लावनकों भेजे जन जूह तत ॥
अखिल कुटुम्ब मेरो आत मारिवेको इहाँ,
मारि१ तिनको उवारि२ निज१ते निज सुरत ॥ २२ ॥
श्रीजितके बेन असे हुलकरराज सुनि,
नीचे करि नेन दये लुटक सब निवारि ॥
आश्रम पधारे इम तूटो हित जोरि आप,
धीरपन पीछें नृप आइ मिल्यो हित धारि ॥
स्वागत वलिष्टको बन्यो जिम सबहि साध्यो,
बोवासों वहोरि मिलि मंत्रिनको मद मारि ॥
पीछें चढि गो जो पर्वतनपें करत पथ,
सूबे सक सोपे जसवत मरयो जयकारि ॥ २३ ॥
भूत१ वत्त भाखी अब ताकी वर्तमान२ अब,
बैठो तास आसहु मलारहि स नाम वेलि ॥
नाम कहिवेको सो१ वहे२ सो थल धाम नहि,
इदंउर१ पुप्प२पें भो तोहूसो१ प्रसक्तअलि२ ॥
हाकिमपनोंतो जसवतहीकी गैल गयो,
छेल गयो छोनिको वहेही विप्रलंभ छलि ॥
कटक कढ्यो जो अंगरेजननें मानि कीनों,
उच्छत्र अपार कोऊ रोधक न जानि केलि ॥ २४ ॥

---

१ विरुद्ध २ मनुष्यों का समूह ३ क्या तू आता ॥ २२ ॥ ४ लूटनेवाला का रोक दिये ५ श्रीजित से ॥२३॥ ६पुनि७इन्दौर रूपी पुष्प पर आसक्त भ्रमर८भूमि का रसिक ९वियोग कर गया १० युद्ध म रोकनेवाला कोई नहीं जानकर ॥ २४ ॥

एक१ बलहीसों जई कलि४ में सुनत आये,
जाकैं सुन्यौं धीबल१ न ताकैं सुन्यौं बीर जस२ ॥
आयो कलि४ देखो प्रभुराम२०१।४ अपनीही ओर,
ओरनकैं आये कृत त्रेता२ बिधि कर्म बस ॥
देस१ काल२ बुद्धि३ बिद्या४ पाइकैं नवीन दृढ,
रमनी महीको लैन लागे अंगरेज७ रस ॥
ऐन भद्र इननैं बिचारि गहिलीनो एक१,
टेकसौं टरैं न तासौं अध्वनीन नित्य तस ॥ २५ ॥
उक्त१८६७ सकहीके मास बाँहुल८ असुक्र२ इत,
दीपमालिका३० की आदि तेरसि १३ निसा२ दुसह ॥
भूप बिष्णुसिंह२००।२ को पितृव्यज कनिष्ठ भ्रात,
मोरि मन स्वामीसौं हरामीपन मानि मह ॥
ईस गोठपत्तनको नाम बलवंत२००१ अहो,
द्रोहबस बूडिबेकौं पापके अगाध द्रह ॥
निश्रेनी लगाइ सहसाही पैठि नैनपुरं,
दाबिकैं दगासौं बनिबैठो जो अधीस जह ॥२६॥
श्रीजितके जीवतरहे जे कहे तीन३ सुत,
अग्रज अजितसिंह१९९ तिनमैं लह्यो तखत१ ॥
दूजे स्वामिधर्मी बीर अंगज बहादुर१९९। कों,
गोठद्रंग दीनो जाको मान उक्त औदि गत ॥

१ कलियुग में युद्ध में एक सेना के ही जीतते सुने हैं २जिसको बुद्धि का बल है उसको वीरत्व का यश नहीं है "दानाच्च प्रभवा कीर्तिः शौण्डीरप्रभवं यशः" अर्थात् दान से कीर्ति होती है और वीरतासे यश होता है ३हे प्रभु रामसिंह ४सत्ययुग ५ शुभदायक मार्ग ६ इन मार्ग चलनेवालों से वह कल्याण अलग नहीं होता ॥ २५ ॥ ७ कार्तिक बदि में ८ काका का बेटा छोटाभाई ९ गोठड़ा का पति १० नैणवा नगर॥२६॥११वह बहादुरसिंह इस कही हुई कथा से पहिले ही मरगया अथवा उस गोठड़े की आमद का प्रमाण गयेहुए पहिले कथन के अनुसार है

दीनों सुत तीजे३ सरदार १९९। हित दुर्ग पुर१,
कापरनि४दीप१९८।कों जो लक्ख१०००००को पटाकहत
ओसरपैं दाय भेद हेतु१ कहिआये आदि,
तत्र कहि आये उक्त तीन३ न मजों२ हु नत ॥ २७ ॥
तीन३ सुत तिनमैं बहादुर१९९।के आयुवली,
जेठो१ बलवत२००१ मध्य२ दलपति२००२ नाम जुत॥
सेरसिंह२००३ तीजो३ तिम द्वे२हीं इत आयुसगी,
ईश्वरी१रुदेवी२आदिसिंह२००१,२००२सरदार१९९सुत॥
ताहीके खवासिके पहार१ रु स्वरूप२ तने,
उक्त दायभागी—— दीप१९९। के तनूज उत ॥
अत्र आयुवारे सुरतान१९६।१ रु सगतसिंह१९९।२,
॥ २८ ॥
इनमें बहादुर१९९।२ तनूज बलवत२००। उग्र,
चोर खल सील पसु सिंहकी तुला वहत ॥
केही भूत१ भावी२ जिहिं सत्रुन समर करे,
मडिला१ रु बिंभोली२ से दुर्ग लोनके महत ॥
विगरे उपायजेतो निश्रेनी लगत देर,
नँगर१ नरूकनतैं लेहीलयो पै लहत ॥
तामें वेग आइपैठो भीमको कटक तातैं,
आयो कढि पीछो लूटि वैभव जो अमहत ॥ २९ ॥
कलह अनेक असे भूत अरु भावी करे,
केही रन जित्ति कित्ति बीरता करी विदित ॥

१उम्मेदसिंह के छोटे भाई दीपसिंह का दिया था सो२तीनों की सन्तान यहाँ कह आये हैं ॥२७॥३आयुवाले४ईश्वरीसिंह और देवीसिंह ॥२८॥५पशुके समान दुष्ट स्वभाववाला६पराक्रममें सिंहकी बराबरी करनेवाला७नगर नामकपुर॥२९॥

एक धर्म्महीकौं पीठि दैबेतैं दुरित१ ओडि,
इत अपकित्ति२हु लै हेर्‍यो एक लोभ हित ॥
बाम२ अध्व३ पथिक मपंचक४ निरत बुद्धि,
ईससौं बदलि सूचे १८६७ बर्त्तमानसो ब इत ॥
पैठिकैं दगासौं घरहीके दुर्ग्ग नैनपुरं५,
आसु अपनायो जोध अंतरके ठानि जित ॥ ३० ॥
सो सुनि सकोप बिष्णुसिंह२००१२ नरनाह सज्ज,
चित्यो आप चढन निवार्‍यो सो भटन न्याय ॥
बोले हम आगैं बलवंत२००१को कितोक बल,
छीनिगढ१ लैहैं अरि व्हैहै कैद हत छाय६ ॥
धोवरेस१ भूपाल रु बिक्रम२ सु खीना२ धनी ॥
अग्रज१ तदीय बिरुदेस२ ——— आय ॥
नाथाउत चालुक सता४ तिम पगारौं४नाह,
चंद्र५ कोरमौं५ को पति कूरम चरित चाय ॥ ३१ ॥
इत्यादिक सामंतन नीठिन निवारे ईस,
काल१ देस२ धर्म्म३ नय४ अर्य५ को जनाइ जय७ ॥
यौंही सचिवनमें प्रधेसं८ प्रभु त्युँही आइ,
मंत्री तुलाराम१ द्विज नागर सु नीतिमय ॥
नंदराम२ भट्ट रु प्रधानहु गनेस३ निज,
सेनापति चंद४ कृष्णधात्रेयहु जोरि सय९ ॥
सज्जकरि सेनाकौं पठातभये नैनपुर,
नामी नरनाहसो बिराजत रह्यो निलयं१० ॥ ३२ ॥

---

१ पाप छल कर २ वाम मार्ग में चलनेवाला ३ पंच मकार में ४ नियुक्त होवाला ५ नैणवापुर को शीघ्र अपना किया ॥ ३० ॥ ६ छाया (आश्रम) रहित ॥ ३१ ॥ ७ शुभ भाग्य को ८ प्रधानों का ईश ९ हाथ जोड़ कर १० घर विशेष शोभायमान होता रहा अर्थात् राजा बुन्दी में ही रहा ॥ ३२ ॥

पैठत दगासौं बलवंत२००। इत नैनपुर,
गुज्जर गुमान१ दुर्गपति जो रन गरूर ॥
जंग्यो अनिरुद्ध नृपकैं भो देव धावरजो,
साखापुर देवपुर१ सासक अतुल सूर ॥
हाकल अभेद यह ताके कुल जात हुतो,
तीर१ तुपक२नके प्रहारनमैं गुनपूर ॥
मंडे वीर गोलिन१ की माला वैटपत्र२ माँहि,
देदे पैत्रवाह१ पंत्रवाह२ खंडैं दूरदूर ॥ ३३ ॥
अग१ वय२ जोर कमनैतनको मोर यह,
स्वामिधर्म साधक बिबाधक बिपंच्छ बल ॥
जाके असुभाव छत कोऊ परिपंथक२ जो,
छीनिहु सकैं न पैठि छन्नहु प्रसारि छल ॥
पै यह गुमान धाइभाई दुर्गपैठनमैं,
खोलि वसु ताहीके बिसासवारे मोरि खल ॥
डरतैं अडर एह तिनपैं हनाइ डास्यो,
पार उर गोली भेदि जावत लग्यो न पल ॥ ३४ ॥
ऐसैं बिसवासवारे माँहिके अधर्मिननैं,
गोलीदे गढेस मास्यो गुज्जर यह गुमान ॥
किल्लाके सिपाह भेदि१ केक हनि२ केक काढि३,
थापि अपने गढ अधीन कीनों थान थान ॥
सामतके११।७१ सकर१ स नाम भुजनैरी स्वामि,
स्वामीको लजाइ लोन छीमी होन अवसान ॥

१ गूजरों की जाति विशेष २ वट वृक्ष के पत्ते में बंदूक की गोलियों की माला रख देता था ३ तीरों से ४ पक्षियों को ॥ ३३ ॥ ५ शत्रुओं के बल को मिटाने वाला ६ जीवित रहते समय ७ शत्रु ८ धन देकर ९ उनसे अस धाय भाई को मरवाडाला ॥ ३४ ॥ १० किल्लादार ११ अन्त में दुर्यश होकर

दुर्ज्जन लै दुर्जनकौं पैठो जिम बुंदी दुर्ग,
पैठो बलवंत२००१कौं लै नैनवा यह प्रधान ॥ ३५ ॥
बुंदी भट मुख्यनमैं मुहुकमसिंह१९४१५ बंसी,
नैनपुर रच्छक हो दूजो२ फतैसिंह२ नाम ॥
इत्यादिक और सुनि मरन गुमान सोर,
आये सुख ढंकि ह्वै पलायन रन अकाम ॥
बुंदीके बरूथ इततैं बाढि गढ सु बेढ्यो,
तत्थ अर्द्ध बाहुलतैं भो रन तुमुल ताम ॥
बीजैं सुहि पाइ हाइ देस१ काल२ दिष्ट३ बस,
राज्य यह बुंदी तत्र दुर्गत भो प्रभुराम२०१४ ॥ ३६ ॥
जाके रन नाथाउत चालुक सता१से जोध,
महासिंह१९४१९ बंसी बंधु छग्गन१।२ मगन२।२से ॥
के अरि बिदारि रारि झारि असि आये काम,
नट्ठे केक कातर जु लघुत्वमैं नगनसे ॥
श्रीजितके जेठो१ इंदुकुमरि१ खवासि सुता,
सूनु तस हत्थी१ आदि घायल सगनसे ॥
आयुबल ऊबरे१ मरे२ के लघु हीसौं इहाँ,
भाजि केक भीरु भये भीकरि भगनसे ॥ ३७ ॥

१जैसे दुर्जनसिंह शत्रु को लेकर बुन्दी में घुसा था तैसे ॥३५॥ २भागकर ३सेना ४आधे कार्तिक से तहां भयंकर युद्ध हुआ ५ इसी कारण से ६ भाग्य के वश ७ हे राजा रामसिंह बुन्दी के आधीनवाला राज्य दरिद्री होगया ॥ ३६ ॥ ८ भागे कितने ही कायर लघुपन में ९ नगण के समान होकर (नगण में सर्व लघु होते हैं तैसे होकर) १० सगण के समान घाव लेकर (सगण में अंतगुरु होता है तैसे प्रारंभ में छोटे और अंत में बढनेवाले घावों से) ११ भय से भगण के समान हुए (भगण में आदिगुरु होता है) सो प्रारंभ में तो बडे वीर दीखे परन्तु अंत में लघु के समान कायर होकर भागगये ॥ ३७ ॥

कृष्णागढ१ आदि केक सवधिन ताही काल,
जोध कछु भेजे भीर बुंदी यह विघ्न जानि ॥
आहव रह्यो जो कछु ऊनचउ४ मास अत,
खरचि खजानौं परे होत न रजत खानि ॥
भूखन१ अमत्र२ आदि वेतनमैं जात भूरि,
पूर वसु कष्ट परयो देत न रुकत पानि ॥
कष्ट ऐसो जदपि सह्यो पै बलवत२००।कँहँ,
तदपि निकासिदीनौं बुंदीभूप वल तानि ॥ ३८ ॥
तासदै निकास्यो बलवत२००। नैनवातैं तासौं,
अहन कितेन आदि मेचक२ तपस्य१२ मास ॥
हग बुंदी चोथी४ गोरि रानीकै द्वितीय२ दिन,
तीजो सु तनूज बलदेवसिंह२०११२ नाम तास ॥
जेठे द्वै२हि कुमर बचे न इम ताके जन्म,
बुद्धि धन दुर्गत दसाहुमैं जस विकास ॥
किति मसराइ आप जिततित नाम कीनौं,
धामकीनौं धवल खजानौं खोलि खिल खास ॥ ३९ ॥
कुमर तृतीय३ एह जनम्यो तदनुं कढ्यो,
अल्पहि दिनन अत भीत होइ भ्रात यई ॥
बुंदीको निसान फहरानौं नैनैनैर बलि,
विजय पताकाके बिसेस विधि लै निबद्द ॥
जोर अगरेज७नको फैल्यो प्रतिघस्र जहाँ,
द्रोही दल२ दक्खिनके होत मग्न लोभ दह ॥
केतुं कपनीको अपनौढिग बढत आयो,

---

१ पात्र २ धन का पूर्ण कष्ट ॥ ३८ ॥ ३ कितनेक दिन पहिले ४ फाल्गुन वदि ५ दरिद्र दशा में ही ६ बाकी का खजाना खोलकर ॥ ३६ ॥ ७ जिसपीछे ८ बलवन्तसिंह ९ फिर नैणवा नगर में १० प्रतिदिन ११ कुपनी का झंडा

एक१अैन पथिक प्रमाद हीन रत्ति१ अ्रह ॥ ४० ॥
भ्रात बलवंत२००१ नैनपुरतैं निकसि भीत,
मालिक अधीन भयो जोरि हाथ नम्र मन ॥
तबहि दयालु विष्णुसिंह२००१२ नरनाह ताहि,
सासि न मिल्यो पै ग्रामच्यारि४ दये नीति सन ॥
दूजे२ अब्द तासौं सबदेसके सुदिष्ट दिन,
अंतिम८ प्रियाकै अर्भ प्राची१ गर्भ ज्यों तपन ॥
भूप भोज१९१।२रतन१९२।१सता१९४।१के पुराय संभव भो,
भूमि तबहीतैं भासी सोभामय संहनन ॥ ४१ ॥
सो भुजंग अंग रु मतंग ससि १८६८ संबतके,
बिसद१ सहस्य१० मास उत्तमके बुध४ बार ॥
तीज३ तिथि घटिका छबीस२६ पल आकृति२२ त्यौं,
एकबिंसी२१ तारारद३२ छप्पन५६ क्रम उदार ॥
योगध्रुव१२ त्रेरह१३ औ अष्ठतीस३८ तैतिल त्यौं,
उत्कृति२६ द्विनेत्र२२ इष्ट पंच द्वै२५ छपंच ५६ पार ॥
लवचउ४ जात धनु९ रविके मिथुन लग्न,
ताही काल रांम२०११४ प्रभु रावरो भो अवतार॥ ४२ ।

१एक मार्गके चलनेवाले प्रमाद रहित २रात दिन॥४०॥ ३तरवार सहित नहीं मिल
४ श्रेष्ठ भाग्य के दिन से राजा विष्णुसिंह की अंतिम रानी के गर्भ से राज
भोज. रत्नसिंह और शत्रुशाल के पुण्य से पूर्व दिशा में ६ सूर्य उदय हो
तैसे ५ बालक (रामसिंह) का ७ जन्म हुआ तभी से भूमि शोभा के ८ शरीर
वाली दीखने लगी ॥४१॥ ९ पौष सुदि तीज बुधवार छबीस घड़ी बाईस पल
और इक्कीसवां (उत्तराषाढा) नक्षत्र बत्तीस घड़ी छप्पन पल, ध्रुव नाम योग
तेरह घड़ी अड़तीस पल, तैतिल करण छब्बीस घड़ी बाईस पल, इष्ट घटी पच्चीस
और छप्पन, धन के सूर्य के चार अंश जाकर मिथुन लग्न के समय में १० हे
प्रभु रामसिंह आप का जन्म हुआ ॥ ४२ ॥
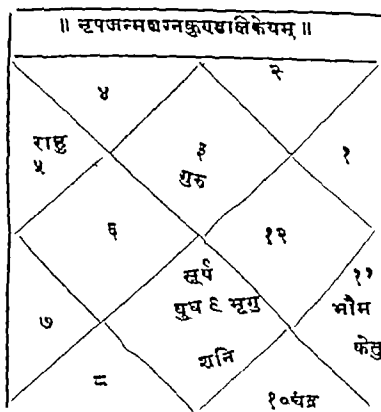
भास्पो तनुभावमैं वृहस्पति५ मिथुन३ भोगी,
तीजे३ भोन सिंह५ को विधुतुद८ प्रविष्ट तह ॥
रवि१ कवि६ मद७ बुध४ सप्तममैं धन्वी९ रहे,
अष्टम८ में इंदु२ मकर१० स्थित प्रकासि मह ॥
आर३ अरु आहिक९ ए कुंभ११के नवम९ ऐन,
ऐसो ग्रह जोग आत उक्त१० मास उक्त३ अह ॥
रानी अष्टमी८सों आप जनम अधिप राम२०१४,
सबके सुदिष्ट१ इष्ट२ विद्या३ नीति४ धर्म५ सह ॥ ४३ ॥
स्वामी बिष्णुसिंह२००१२ महिपालके सदन प्रभु,
बालके प्रसवं जन जालं के मिले मुदित ॥

लग्न में मिथुन का बृहस्पति, तीसरे भवन मे सिंह का राहु, सातवें भवन में धन राशि में सूर्य शुक्र शनि और बुध, आठवें भवनमें मकर का चन्द्रमा स्थित होकर चरस्रव प्रकाश करता है और मंगल और केतु नवम स्थानमें कुंभ राशि के हैं ॥ ४३ ॥ १घर में २ जन्म ३ समूह

आयो समै थानाँ कलिकालके उठावनको,
रोध रिपु ढालके ऽहे सालके रह्यो रुदित ॥
गालके बजात चंद्रभालके निहाल गति,
मालके मिलाप तंगहालके तज्यो तुर्दित ॥
बुंदीपुर सूचे काल थालके वजत बाल,
बालके बिकासी अंक भालके भये उदित ॥ ४४ ॥
सारघं१ सुवर्ण२ सुखं दै मुख१ कही सरँनि,
साधि जातकर्म्म२ बंस बिप्रन जिमाइ सब ॥
रत्नाकर रीझके दये तिन्ह बिबिध दान,
कबिहु निहाल कीनैं५ अहति उफान अब ॥
भैंमतैं असेस गायकनके निलय भरे६,
पुरमैं बधाई बटी चहुधाँ चहे पैरब७ ॥
भावी सुखमूल होत सौनैं अनुकूल भये,
बातके बघूल तूल पातक पहार तब ॥ ४५ ॥
धर्म धुर धोरी बेद रथके धुरंधरजे,
आदि मनु१ आदि गये कृत१मैं वहत वाम ॥
त्रेता२मैं निबाह्यो राम२आदिक नृपन तैसैं,
द्वापर३मैं कंकादिनँ३ लीनो भर जो ललाम ॥

१ कलियुग का थाखा उठाने का समय. शत्रुओं की ध्वजा को रोकनेवाला तथा शत्रुओं को रोकने के लिये ढाल और शाल होकर उनको २ रुलानेवाला ३ गाल बजाने से शिव निहाल करदेवै तैसे, धन के मिलने से दरिद्रीपन ४ दुःख से भागा ॥ ४४ ॥ ५ शहद और सुवर्ण ६ सुख में देकर ७ कहेहुए मुख्य मार्ग को साधकर जातकर्म किया ८ रीझ के समुद्र ने ९ दान के उफान से १० सुवर्ण से ११ कलावंतों के घर भरदिये १२ उस चाहेहुए समय पर १३ शकुन १४ पापों के पर्वत बघूले के पवन की रूई के समान हुए ॥ ४५ ॥ १५ वेद रूपी रथ के धुरको खैंचनेवाले १६ सत्ययुग में १७ युधिष्टिर आदि ने सुंदर भार लिया सो

आज कलि४में तो हरि४।१ विक्रम४।२ प्रमुख अहो,
धारि धारि जो धुर गये तजि उचित धाम ॥
सोहि धुर जानि करतारनैं बहुरि सूनौं,
रूप रावरेतें अवतार लीनौं प्रभु राम२०।१४ ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

हट्टवती अप उदित हुव, इम प्रभु जन्म अनेह ॥
अर्मादिक वितरन भये, गेहगेह मह गेह ॥ ४७ ॥
सक नव खट वसु चंद१८६९सम, मन जिन अमल उमाहि॥
अँगरेजन बानिज्य इत, सब मेटयो नेय साहि ॥ ४८ ॥
जिहि सक१८६९ सप्तम७ जेनरल, आयो अप्पन देस॥
अटक्यो प्रभुपनँ मन्नि इहिं, अब वानिज्य असेस ॥ ४९ ॥
चंविहै पुनि प्रभुके चरित, जेनरलहु सब जोरि ॥
नेपालन मड्यो अमल, बढि इत तबहि बहोरि ॥ ५० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौविष्णुसिंह चरित्रे योधपुरेशमानसिंहविपत्समयसेवारतसेवकोचितजीविकाप्रदान १ इन्दोरेमहुलकरजसवन्तरावबलवत्त्वदर्शनतद्देहान्तसमयसूचन कामुकमल्लाररावतत्पट्टासादन२ स्वपितृव्यजबलवन्तसिंहशत्रुभाव–

१ भर्तृहरि २ आदि ॥ ४६ ॥ ३ आनेवाले समय के शुभ कर्म फल ४ आप के जन्म समय घर घर में और इस ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) के घर में ५ सुवर्ण आदि का दान हुआ ॥ ४७ ॥ ६ नीति ग्रहण करके अंगरेजों ने सोदागर पन छोड़ा ॥ ४८ ॥ ७ इस देश का स्वामीपन मानकर वाणिज्य छोड़ा ॥ ४९ ॥ ८ रामसिंह चरित्र में सब जनरलों को जोड़ कर कहेंगे ॥५०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशिमें, विष्णुसिंह के चरित्र में, जोधपुर के राजा मानसिंह का आपत्काल में अपनी सेवा करनेवाले सेवकों को जीविका देकर पढाना १ इन्दोर के हुलकर जसवन्तराव का बलवान पना बताकर उस के देहान्त की सूचना करना और उसके पाट पर भोमों मे आसक्त मल्लारराव का बैठना २ बुन्दी के राजा के काका के बेटे भाई

नयनपुराक्रमणसोढानेकापद्विष्णुसिंहतान्निष्कासन ३ बुन्दीरावराड्रामसिंहप्रादुर्भवनत्यक्तवणिग्भावेष्टइंडियाकम्पनीभारतवर्षनृपत्वसूचनमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥ आदितः ॥ ३६१ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक नभ हय बसु ससि १८७० समय, इत नेपालिन आइ॥
नगरकोट लग अमल निज, किन्नो बल अधिकाइ ॥१॥
तनया दै रनजीत तब, सिख करि स्वीय सहाय ॥
नगरकोट तब तास नृप, रक्ख्यो सह बल१राय ॥२॥
प्रतिबल इम नेपालके, बढत उहाँ लग जानि ॥
जयकारि सप्तम७ जेनरल, पठ्ठुत किय असि पानि ॥ ३ ॥
तिनके रक्ख्यो पुब्ब३तट, काली सरिता केर ॥
पच्छिम३।५ तट लग कंपनी, जित्ते सब करि जेर ॥ ४ ॥
संसा५दिकचंद सो, नगरकोट नरनाह ॥
जो इम सिख रनजीतको, स्वसुर बन्यो अ-सिपाह ॥ ५ ॥
इत लखनेऊ याहि १८७० सक, अलीसहादत अंत ॥
तस लघु सुत बैठो तखत, पहुँचि थान परजंत ॥ ६ ॥
आगामीर स नाम इक, हो तस हुक्काभृत्य ॥
करि दृढ मन ताके कहैं, किय दोउ२ न यह कृत्य ॥ ७ ॥

बलवन्तसिंह का अपने स्वामी का हरामी होकर नैणवापुर लेना और अनेक आपत्तियें उठाकर विष्णुसिंह का उसको निकालना ३ बुन्दी के रावराजा रामसिंह का जन्म और ईष्टइंडिया कम्पनी का व्यापारीपन छोड़कर हिन्दुस्थान के पति होने की सूचना का ग्यारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥११॥ और आदि से तीनसौ इकसठ ३६१ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ रणजीतसिंह को अपनी पुत्री देकर ॥ २ ॥ २ हाथ में खड्ग लेकर भगाये॥३॥३ पूर्व का किनारा ४ काली नदी का ॥ ४ ॥ ५ संसारचन्द्र ॥ ५ ॥ ६ सहादत अली मरा ॥ ६ ॥ ७ ॥

अगरेज रक्खे उहाँ, राजद्वार सच रुद्द ॥
चढिग जेए तउ कोट चढि, पहुँचे अवधि प्रबुद्ध ॥ ८ ॥
तरजि साह बहि तेग गहि, आगा मख अधीन ॥
हैदर अत अधीस हुव, दिपत गाजियुद्दीन ॥९॥
उक्त १८७० सकहि प्रभु सुनहु इत, जोधनेर१ जयनेर२ ॥
परनि उभै२ नृप परसपर, वनें सुह्रद तजि वैर ॥ १० ॥
ए निज निज सीमा अवधि, द्वै२ संक्रमि कुल दीप ॥
रूपनगर१ मान१ सु रह्यो, मरवा२ जगत२ महीप ॥ ११ ॥
सुरहिकुमरि१ तँहँ निज सुता, व्याहि मानें वसुधेस ॥
अप्प स्वसुर ठ्है आदरयो, जामाता जगतेस ॥ १२ ॥
निज भगिनी जगतेस नृप, चन्दकुमरि२ हित चाहि ॥
मरवाँ बुल्लि सु मानकों, विहित काल दिय व्याहि ॥ १३ ॥
पति रट्ठोरन मान पहु भयो स्वसुर१ अरु भाम२ ॥
जामाता१ सालक२ जगत, कूरम हुव हित काम ॥ १४ ॥
अंह अष्टमि८ मह्व९ असित२, व्याह्यो मान बहोरि ॥
नवमी९ दिन कछ्वाह नृप, जगतसिंह पटे जोरि ॥ १५ ॥
मान सिविर कूरम गयो, थित एकासन थान ॥
तँहँ वैठारयो तुल्य गिनि, मीरखान गहि मान ॥ १६ ॥
तदेनतर आतहि तहाँ, कृष्णगढ पैं कल्यान ॥
वैठारयो जगतेसगहि, एकासन आति मान ॥ १७ ॥
इक्क१ तखत वैठे चउ४ हि, ए तुव२ सम्मुह अत्थ ॥

---

१ रोककर २ जीते ॥ ८ ॥ ६ ॥ ३ मित्र बने ॥ १० ॥ ४ गये ॥ ११ ॥ ५ राजा मानसिंह ने ६ जमाई जगतसिंह का आदर किया ॥ १२ ॥ ७ मानसिंह को मरवा नगर में बुलाकर ॥ १३ ॥ ८ पहिनोई ९ जगतसिंह ॥ १४ ॥ १० दिन ११ पक्ष जोड़कर ॥ १५ ॥ १२ मानसिंह ने मीरखाँ को बराबर जानकर एक गद्दी पर बिठाया ॥१६॥१३ जिसपीछे १४ कृष्णगढ के पति कल्याणसिंह को॥१७॥

न रुच्यो पै कूरम नृपहि, जवन तुलपपन[1] जत्थ ॥ १८ ॥
पत्तो कूरम सिविर पुनि, मीरखान जुत मान ॥
तखत न रक्ख्यो कुम्म तँहँ, बैठे इतर[2] बिधान ॥ १९ ॥
सक उक्त१८७० हि बुन्दीसकैं, पंचम५सुत गोपाल२०१५॥
सप्तम७ रानीकैं भयो, इस[3]७ सित१ तेरसि१३ काल ॥ २० ॥
जातक्रियादिक रीति जह, सब सद्दिय नरनाह ॥
दान१ बधाई२ बहुल दिय, रोचक उच्छव राह ॥२१॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत जैपुर ससि हय बसु इक १८७१ सक, छलि जगतेस भूप उद्धत छक ॥
रसकपूर गनिका अति मानी, रानिन मुख्य करी जो रानी॥२२॥
ताहि महारानी१ पद दीनौं, अधरांजानि[4]२ उपटंकहु कीनौं ॥
किते कहत याही १८७१ सक अंतर, पच्छिम ३ बढे गोरखे[5] बल पर ॥ २३ ॥
तिनकौं जीति कंपनीके दल, काली नदी उतारे हत बल ॥
उक्त१८७१ सकहि लरि इत अंग्रेजन, लंकाद्वीप अमल किय अप्पन ॥ २४ ॥
बिक्रम राजसिंह अभिधाको[6], त्रासित करि काढ्यो नृप ताको॥
तह कोलंब राजधानी पुर, धरयो स्वीय हाकिम थंभन धुर २५
इत संबत दुव मुनि अष्टादस १८७२, बनि नृप मान जोधपुर परबर्स ॥
इंदराज जिम राज्य अवेरयो, हित नय आय१उचित व्यय[8] हेरयो२६

१ मीरखां का बराबर पन जगतसिंह को नहीं रूचा ॥ १८ ॥ २ अन्य रीति से बैठे ॥ १९ ॥ ३ आश्विन सुदि ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ ४रानियों की मालिक का खिताब ५ हिमालय पर्वत की जाति विशेष ॥ २३ ॥ २४ ॥ ६नामवाला ७लंका (सीलोन) की राजधानी का नाम कोलंबो है॥२५॥८पराये वश में९खरच ॥२६॥

सो प्रबंध नृपकों न सुहायो, अक्खिय इम मरनहि मम आयो॥
इंद्रराज सुनि तब अक्खिय, सिंही इम हनिहैं प्रभु सक्खिय२७
भूप कह्यो यों तो नहिं भावहिं, मीरखान प्रति सूचि मरावहिं॥
तब किय मीरखान प्रति सूचन, जंपिय जवन कहहु नृप मो-
सन१ ॥ २८ ॥
कै लिखि देहु हनैं तब तौ हम, सुतो नृपहिं न रुची बचक सम॥
देवनाथ गुरु करि सकोचित, सपथ करे पहिलैं तिम सोचित२९
छत्रसिंह निज कुमर भेजि तँहँ, मारन सचिव कहाई तापँहँ॥
मिच्छ सु सुनत लैन मासिक मिस, दुर्गमाँहिं पठये भट नृप
दिस ॥ ३० ॥
रोकि द्वार कीनों तिन कलकल, छितिप सचिव प्रठयो तब तिंहि छल
रोक्यो गुरु नृप तउ हठ रगहि, सिंघी जात नाथ लिय सगहि३१
मोतीमहल माँहिं तिन मिच्छन, जातहि दुवरहि अमंतु हनें जन॥
वचे मिच्छ अतर नृप मंत बल, चिर करि जियत गये अपनें दल३२
धर्म सपथ इम लोपि धराधव, भाखि अलीक बिगारयो निज भंव
छन्न रह्यो न मान कृत यह छल, चल्यो प्रकट जिततित ह्वै चचल३३
दै बिस्वास सपथ मारे दुवर, हाहाकार जोधपुर इम हुव ॥
ओरमग्ग भास्यो न नृपहिं अब, तक्कि कपट उनमत्त बन्यौं तब३४
इक कोन रहिबो निज आदरि कुंहक बेस तैसोहि लयो करि ॥

१राजा मानसिंह द्रोही बहुत था सो उनका हाथ रुकने से कहा कि मेरा मरन आया ॥२७॥ १मीरखां ने कहा कि यातो राजा हम से रोबरू कहै या लिख दे तब मारें ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३ तनखाह लेने के मिष से राजा की ओर वीर भेजे ॥ ३० ॥४ कोलाहल किया ५ देवनाथ को जाने से रोका ॥ ३१ ॥ ६विना अपराध मारे ७ राजा के मत के बल से ८ चिरकाल करके अपनी सेना में गये ॥ ३२ ॥ ९ भूपति १० झूठ बोलकर ११ अपना जन्म बिगाड़ा १२ मानसिंह का कियाहुआ यह छल छिपा नहीं रहा ॥३३॥३४॥ १३ उस छली ने

जानि यहहि पंचन निहचै जिय,कुमर छत्रसिंह सुतव नृप किय३५
किय कतिकन पुहवीस परिच्छा, दीसी तदपि गहिलपन दिच्छा॥
सपंहु तँहँ छोरे कति सूचत, गहि लिय तेहु डरयो नहिँ छलगत३६
अधिक बिपन्न रह्यो नृप ऐसैं, परिजन मुख कोउ न तँहँ पैसैं॥
जो प्रभुकी सरसू तस रानी, सेवत रही सोहि भटियानी ॥३७॥
पै तानैंहु न आसय पायो, हठ छल ऐसो वेस दुरायो ॥
सुभट प्रताप बूड़सू सासक, यह हो जदपि अधीस उपासक॥३८॥
जानैं तदपि तथा जड़ जानिय, खेटक१ खग्ग२ उठाइ रु आनिय।
दुव२हि करे पुनि कुमर निवेदन, भट सब मिले रह्यो इम भेदन
कतिकन परनारिन रस कहि कहि, चपलकुमर मोरयो उत चहि चहि ॥
उपदँसादि रोग प्रकटे इम, कामुक चिर वैभव विलसैं किम॥४०॥
भनैं १८७२ सकहि प्रभुके कवि भूवर, पायो भैव असिता२दि१उ ज्ज८ पर ॥
कवि जैनकहु श्रद्धोचित मँह किय, दान द्विजादि बुँधन समुचित दिय ॥ ४१ ॥
इत बुंदिय सक गुन हय बसु इक १८७३, असित२ सैहस्य१०मास तिथि आदिक१ ॥
सरसरंग नामक खवासि सुव, बिनयसिंह१बुंदीस कुमर हुव॥४२॥

॥३५॥१राजा की परीचा की २ बावलेपन की क्रिया ॥ ३६ ॥ ३ विपद्ग्रस्त ४ पास के अपने मनुष्य ५ रावराजा रामसिंह की सासु और मानसिंह की राणी ॥३७॥३८॥६ढाल तरवार ॥३९॥७ गरमी (आतशक) आदि ८ कामी होवै सो बहुत समय तक वैभव कैसे भोगै ॥ ४० ॥ ९ हे भूपति कहे हुए सम्वत (अठारह सौ बहत्तर) में आप के कवि (सूर्यमल्ल, इस ग्रन्थकर्ता) ने ११ कार्तिक बदि एकम को १० जन्म पाया १२ सूर्यमल्ल के पिता (चंडीदान) ने श्रद्धा के उचित १३ उत्सव किया १४और ब्राह्मण आदि पण्डितों को दान दिया॥४१॥ १५पौष बदि ॥ ४२ ॥

इहिं १८७३ सक इत पुण्पापुर अतर, बाजेराय पेसवा *भूवर ॥
अग्रेजनको अमल उठावन, इच्छा करि भू सब अपनावन ॥४३॥
तत्थ रजीडटी डेरन तक, अनले लगायो प्रेरि अचानक ॥
समर रच्यो कपनी सिपाहन, इत उत बहुत भरे उच्छाहन॥४४॥
दोलतरावहु बैर दिखावन, पठयो दल नेपाल मेलपन ॥
पत्र किमहु ते इन पकराये, अग्रेजन गोचर तब आये ॥ ४५ ॥
आश्रम छप वसु ससि १८७४ सक अतर, सन दिस जित्ति कप-
नी सगर ॥
लिय अजमेर गजि मरहट्टन, पापड तजि लाहोर जईपन ॥ ४६ ॥
खानकपूर१ रु भीरखान२ दुवर, हुलकर भट तासों बदलत हुव॥
तिनमें मीरखान इहिं अतर, सजि तोपन जेपुर किय सगर ॥४७॥
ताको छिन्नि तोपखाना तब, अग्रेजन तस मद मेटयो अब ॥
पुनि इतउत लुटेरु जे पाये, ते सब धोरहि वृत्ति लगाये ॥ ४८ ॥
सध्याकेहु मेटि मद१ साहस२, निखिल करे रजवारे निज बस ॥
लार्ड मारकिस हेस्टिंगज१।७जँहँ, क्रम सप्तम७जेनरल हुतो तँहँ ४६
तिहिं पठयो रजवारन अतर, टाड१ नाम पहिलो१ अजट बर ॥
कोटा तिहिं भल्लँ सु सासित किय, जालमहुरानहिं दिवा८दिय५०
पहिलै सक अट्ठावन५८ अतर, भीम रान रनतैं भजाइ अरं ॥
भिल्लहडा लग जित्तिलई भुव, तबतै जालपुर सु इनको हुव ॥५१॥
सोलह१६अब्द अमल कोटा किय, अब जालम रानहिं पच्छो१दिय
कोटाके धन करि पहिले क्रम, इदुदा बधिय गढ उत्तम ॥ ५२ ॥
तँहँ भट बिष्णुसिंह सगताउत, जालम रक्ख्यो निचित चक्र जुत ॥

* भूपति ॥ ४३ ॥ १ अग्नि लगाई॥ ४४ ॥ २ अंगरेजा ने देखने में आये ॥४५॥
॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ३ लुटेरे ॥ ४८ ॥ ४ सब ॥ ४९ ॥ ५ अेष्ट ७ भाला जालमसिंह
को ८ दण्ड दिया ॥ ५० ॥ ९ पीछा ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ १० पूर्ण सेना सहित

मारे जिहिं सहँसन रन मैनँ, पारे कुंठ[1] रहे नहिं पैनँ ॥ ५३ ॥
इम तागढ जुत जाजपुर सु अब, रान तंत्र हुव सहित साज सब ॥
उक्त १८७४ सकहि चितपावन द्विज इन, बाजेराय पेसवा भ जित ॥ ५४ ॥
पुराया तजि अंग्रेजन पय परि, धी अबे ब्रह्मावर्त्त[2] रहन धरि ॥
पाइ द्रम्म बसुलक्ख८००००० अब्दप्रति, रह्यो बिठूर फेलि[3] भोजन रति
जिहिं चाकर हुलकर१ संध्या२ सम, पिंसन लहि सु रह्यो इम अप्रम ॥
हारि महीदपुरहि हुलकर बल, इनके बंस हुव डुंग कि बिना अल५६
महिप नागपुरको तजि निज महि, गो भजि सरन जोधपुर भय गहि
मान नृपहिं कछु प्रवल न मान्यौं, पै अंग्रेजन नय पहिचान्यौं ॥ ५७ ॥
वाको मुलक बहुत लहि अप्पन, थिर कछुमैं तस कुल किय थप्पन ॥
सक उक्त १८७४हि नवमी९ पोस१० असित२, इन जैपुर जगतेस मर्यो इत ॥ ५८ ॥
गनिका उक्त आदि तरुनी तह, हुव चालीस४२ जरी नृप बसु सह ॥
उक्त १८७४ सकहि लाहोर ईस इन, सिख रनजीत अरिन करि सासित ॥५९॥
नाम मुजफ्फरखान महाभति, प्रधन[11] हनि सु मुलतान दुर्गपति ॥
ताके पुत्रहु मारि घनैं तब, अमल कर्‌यो मुलतान दुर्ग अब॥६०॥
ताकों मिल्यो प्रचुर[12] धन तामैं, सिख इम बढ्यो अधिक सुखमामैं[13]

१ वे मैन भोटे होगये तीक्ष्ण नहीं रहे ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ २ ब्रह्मावर्तदेश में रहने की बुद्धि करके ३ उच्छिष्ट भोजन में प्रीति करके विठूर में रहा ॥ ५५ ॥ ४ समान ५ उत्कर्षता रहित ६ मानों विना डंक का बिच्छू ॥ ५६ ॥ ७ नीति ॥ ५७ ॥ ८ जयपुर का पति जगतसिंह ॥ ५८ ॥ ९ रसकपूर नामक वेश्या आदि १० दंडित ॥ ५९ ॥ ११ युद्ध में ॥ ६० ॥ १२ बहुत १३ परमशोभा में

सो कसमीर हारि इक१ सगर, दूजो२ रन तरिहै पुनि दुस्तर॥६१॥
जगतसिंह जैपुर नृपके सुत, उज्झत वपु न हुतो बिधि अद्भुत ॥
मोहन नाम सचिव तब नाजर, नरउर द्रग पठाइ चतुर चर ॥६२॥
नरउर नृपको भ्रात मनोरथ, तस सुत मान बुलाइ नीति पथ ॥
जैपुर पट्ट धग्यो सु मान जब, रानिनकें जान्यों न गर्भ तब ॥६३॥
पहिलें जालम बिबिध जत्न किय, बुंदीसहिं निजसुता ऊपाहि दिय
सो जब मरी तबहिसों जो सठ, हुव वैरी बुंदीको अतिहठ ॥ ६४ ॥
जिहिं बस रह्यो जाजपुर जोलों, तिहिं लुट्टी बुंदी भुव तोलों ॥
द्रग सथूर१ बरोदा२ आदिक, बुंदीपुर ढिगलों प्रतिवादिक ॥६५॥
कटक भेजि सब लुट्टिलयो कर, पुरबिच अमल रह्यो नृपको पर
अप्प मुदित तदपि न भय आन्यों, जालमसदा जथा नृत जान्यों६६
उक्त १८७४ सकहि झला वह जालम, लखि सु अंगरेजनको
आलम ॥
बुंदी सन पहिलें वंचक बढि, अंगरेज साधे छल नय पढि ॥६७॥
अधिक मुल्क दे बहुत उपायन, पिहितें लुभाइ मिलाइ धूर्त पन ॥
जन अजान मानें छल जैसें, अँगरेजन अपनें करि ऐसें ॥६८॥
बुंदीके भेंट बधु सदासों, इंद्रगढा१ दि८ फोर उँपदासों ॥
कोटा बस ए कुहके लिखाये, सब अजट१मुंख तिमहि सिखाये६९
इंद्रगढ१ रु खातोली२ ए दुवर, लुब्भिं इंद्रसल्लोत भिन्न हुव ॥
बलवनि१।३ द्रग बैरिसल्लोत सु, आतरदा१।४मुहुकमसिंहोत सु७०

॥ ६१ ॥ १ शरीर छोड़ते समय २ यह अद्भुत रीति है कि ऐसे कामी के भी पुत्र नहीं था ३ हलकारे ॥ ६२ ॥ ४ मानसिंह नामक ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ५ विरोधी ने ॥ ६५ ॥ ६ हासिल छाट लिया ७ विष्णुसिंह का अमल केवल बुन्दी नगर में ही रहा ८ जैसा झूठा था तैसा ही जाना ॥ ६६ ॥ ९ ठग ॥६७॥ १० भेट ११ छाने लोभ देकर ॥ ६८ ॥ १२ बमराव १३ भेट देने से १४ उस ठग जालमसिंह ने १५ आदि ॥ ६९ ॥ १६ लोभ करके ॥ ७० ॥

लोतसु होतसु अन्त्यानुप्रासः१॥

करबाट१।५ सु पिप्पलदा१।६।२।७ जुग जुत, ए तीन३हि फोरे हर-
दाउत ॥

बंधु सु भट जालम प्रतिवादिक, दै इच्छित फोरे इत्यादिक ॥७१॥
बुंदीतैं न मिल्यो महत्व जिम, सबको बहुत बढायो तिम तिम ॥
गहि कुलोभ.ऐसो बंधव गन, परबस भये निबहि गनिकापन॥७२॥
आवत१ जात२ बैठत३ रु उट्ठत४, जनम५मरन६ सेवन मुख सं-
गत ॥

समुखजान७ मुखं रीति बढावन, कोटा रहत नित्य धन पावन७३
अधिक पटाहु भवन हित अप्पन३, सब पहिलैं सब देय समप्पन॥
इत्यादिक अधिकार अप्पि इम, जालम स्वबस करे सब जिम
तिम ॥ ७४ ॥

कोटा बस तिनसोंहु कहाइ रु, जिम अंग्रेज प्रबोधे जाइ रु ॥
जालमं छल पीछैं यह जान्यौं, पछितैबोहि अजंट प्रमान्यौं ॥७५॥
पै इक बचन औन इनके पँर, यातैं पलटिसके नहिं अवसर ॥
इनको हितहु भल्ल सह्यो अति, हुलकर रोकि बचाई संहति७६
बहु उपकार ठानि यह याबिधि, निहचै इनहि भल्ल भाख्यो निधि॥
इम तदीय छलमैं ए आये, पुनि पुनि जाति जदपि पछितायें॥७७॥
उत रहि तदपि पिक्खि नय असहिं, बलि दिय बंटि भूहु तस बं-
सहिं ॥

इम नतं सिर जालम उपकारनं, अंग्रेजहु प्रबिसे रजबारन ॥७८॥

१विरोधी जालमसिंह ने ॥७१॥२जैसा उन उमरावों को बुन्दी से बडप्पन नहीं मिला तैसा ॥७२॥३आदि ॥ ७३ ॥४देने योग्य ॥७४॥ ५ अंगरेजों को समझाये ६ जालमसिंह का छल ॥ ७५ ॥ ७ अंगरेजों के एक वचन निबाहने का श्रेष्ठ मार्ग है इससे ८ जसवन्तराव हुलकर को रोककर अंगरेजों के समूह को बचाया था ॥७६॥९उसके छल में॥७७॥ १०मस्तक झुकाकर११उपकारों से ॥७८॥

उक्त १८७४ सकहि बुंदी तब आये, बुंदी पहुं सब मान बढाये ॥
तुलाराम मन्त्री द्विज नागर, प्रभु सम्मति लहिकैं नय तत्पर ॥७९॥
उपालंभ दीनों अंग्रेजन, जो सुनि रहे ठगे जिम जे जन ॥
सूचित १८७४ सक पचमी५ माघ१०सित, अंग्रेजन सु करारं लि-
ख्यो इत ॥ ८० ॥
भाख्यो हम ठिग झल्ल भ्रमाये, पुनि अब हेतु सत्य सब पाये ॥
बुंदी नृप हमरे हित वछ्छक, तिहिं झल्ल सु गोपित किय हम तक८१
मोदित साहब टाड महामन, संह लिपि काल कियउ बुंदीसन ॥
नत करजोरि मन्त्रि महमानी, बहुदिन रहि नृप किर्त्ति बखानी८२
सर हय अष्ट इक १८७५ पुनि सबत, इत रनजीतसिंह सिख
उद्धत ॥
पुर लाहोर अधिप साहस परि, करि रन जय कसमीर लयो
लरि ॥ ८३ ॥
बहुरि जुज्झि पेसोर कियउ बस, तँहँ कति मरे१भजे२रच्छक तस
इह सेना काबल पुनि आई, लग्गि प्रसभं करि घोर लराई ८४
तब पेसोर छुराइलयो तिन, खिज्जि पुनि सु लैहैं यह लहि खिन
उक्त १८७५ सकहि जैपुर पत्तन इत, सगत राध२ मास पच्छ
ति१ सित१ ॥ ८५ ॥
नृप रानी भटियानी ओरस, तनय भयो जयसिंह नाम तस ॥
मास च्यारि४अरु दिवस सप्त७मित, रह्यो माने गद्दीपर रोचित८६
लखि यह साहब अलटरलोनी, हेरन तब होनी१ अनहोनी२॥
दिल्ली सन जैपुर आयो द्रुत, सत्य किमहु करि कथित भयो सुत८७

१ बुन्दी के पति ने ॥ ७९ ॥ २ अंगरजों को उरहना (ओलमा) दिया ३ बुन्दी से ओलमामा हुआ ॥ ८० ॥ ४ कारण ५ छिपाये ॥ ८१ ॥ ६लिखावट सहित ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ७ हठ ॥ ८४ ॥ ८ वैशाख मास के साथ ९ शुक्लपक्ष ॥ ८५ ॥१० मानसिंह ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

रूप्यप पंच ५ नित्य जीवनं करि, मान सु दूर करयो मद संहरि ॥
ढ्रंग फेरि जयसिंह दुहाई, सुनृप करयो यह सबन सुहाई ॥ ८८ ॥
लखि सामोद नाह नाथाउत, राउल बैरीसाल बुद्धि जुत ॥
साहब ताहि मुसाहब कीनौं, निज संगहि नाजर वह लीनौं॥८९॥
गो पच्छो इम अकटरलोनी, छोनिप सिसु हुव जैपुर छोनी ॥
तर्क तुरग बसु ससि १८७६ सक अंतर, इत कोटा उम्मेद धरा
बर ॥ ९० ॥
बिधि अनुगत अब देह बिहायो, दुसह सोक तस झल्ल दिखायो ॥
जीवन लह्यो भूप इहिं जोलौं, तखत रह्यो प्रतिमा जिम तोलौं९१
खाद्यहुँ झल्ल दयो सुहि खायो, पहिरयो बसन इँहिं जु पहिरायो ॥
रक्खन सत्र दयो सुहि रक्ख्यो, उत्तर कछु न कबहु तिंहिं अक्ख्यो
असो नृप उम्मेद मरयो अब, तीन३ तनूर्ज हुते ताकै तब ॥
जे किसोर १ बलि बिष्णुसिंह२ जिम, तीजो ३ पृथ्वीसिंह ३ सूनु
तिम ॥ ९३ ॥
जुव्वन बय ए त्रय३ हि हुते जँहँ, तखत तदीय किसोर१ धरयो तँहँ
पहिलैं झल्ल जाजपुर दै करि, सुत दुव२सहित रान भीमहिं बरि९४
व्याही त्रि कँनी बुल्लि मबल पन, तँहँ मुख्य१जु बयमैं सु चिरंतन
नृप उम्मेद सुता रानहि दिय,क्रम पुनि व्याह रानकुमरन किय९५
अधिप मध्य २ सुत बिष्णु २ सुता इम, रान कुमर अमरेस बरी
तिम ॥
नाम अवान रानकौ लघुसुत, परिनायो सु इंद्रगढ जसजुत ॥९६॥

१मानसिंह के जीवन पर्यन्त ॥८८॥८९॥२जयपुर की भूमि पर, ३वह बालक भूपति हुआ ॥३राजा उम्मेदसिंह ने॥९०॥४विधि के साथ शरीर छोडा५झाला जालमसिंह ने ६ मूर्ति के समान ॥ ९१ ॥ ७ खाना (भोजन) ॥ ९२ ॥ ८ पुत्र ॥ ९३ ॥९ उस उम्मेदसिंह के तखत पर ॥९४॥१०तीन कन्या विवाहीं ११पुरानी (बुड्ढी) ॥९४॥९५॥

इन्द्रगढेस नाम सिवदान सु, तत्थ एह ब्याहयो भगिनी तसु ॥
बलकारि बुल्लि रान कुमरन सह, जालम झल्ल निबाहे इम जह९७
बपु पीछैं कोटेस बिहायो, पुत्र किसोर१ पट्ट तस पायो ॥
महाराव होतहि यह मानी, करतभयो जग कुजस कहानी ॥९८॥
जिहिं कछु साध्य असाध्य न जान्यो, पट्टु जिम रहन स्वतंत्र प्रमान्यो
जवनी इक जालम खवासि किय, जठर तास सुत इक १ जन्म लिय ॥ ९९ ॥
हुव गोवर्द्धनदास नाम तस, सो बदलाइ किसोर२ करयो बस ॥
मुख्य सचिव तिंहिं करन मनायो, इनमैं मुरि गोवर्द्धन घायो।१००।
त्रय ३ भ्रात रु यह झल्ल १ चउ ४ हि तब, स्ववस करन चाहन लग्गे सब ॥
पै जालम बल जाल अपुरब, कछु नय बिनु इन्ह तत्र होइ कब१०१
सैफअली अभिधान धजीठन, पलटायो सु अप्पि बलपति पन ॥
जालम इनहिं पुत्र माधव जुत, हढमत के पकरहिं बलकारि हुत१०२
पिहित मंत्र किन्नों यह पचन५, मिच्छ१ झल्ल२सोदर त्रय३।५इकमन
सोदर मध्यम बिष्णुसिंह सुनि, प्रकट रह्यो इनके सम्मत पुनि१०३
चित्त मुरि सुं जालमकों चाहत, बैठन पट्ट स्वबुद्धि निबाहत ॥
सैफअली अक्खिय अब सासन, देहु लखहु बुद्धि रु बल दासन१०४
नृप किसोर१ अक्खिय अबही नन, पुनि बिचारि सद्धहिं स्वतंत्रपन॥
संवतमुनिहयअट्ठइंदु१८७७सम,करिबिलंब पहिलैंनरच्यो क्रम॥१०५॥

॥ ९७ ॥ ९८ ॥ १ उस यवनी के उदर से ॥ ९९ ॥ २ गोवर्धनदास ने महाराव किशोरसिंह से उसको जालमसिंह से बदला कर अपने वश में किया ॥ १०० ॥ १०१ ॥ ४ नाम ५ सेनापतिपन से ॥ १०२ ॥ ६ पांचों जनों ने यह गुप्त सलाह की ७ एक तो सैफअली यवन, दूसरा झाला जालमसिंह का पासवानियां पुत्र, और महाराव सहित तीनों भाई, ये पांचो एक मन होकर॥१०३॥ ८ यह विष्णुसिंह ९ आज्ञा ॥१०४॥१० पहिले कहा हुआ क्रम नहीं रचा ॥१०५॥

पुनि कहि सैफअली नृप प्रेरयो, अति भर पै सु फिल्यो१न अवेरयो
जालम हो पुरढिग बाहिर जब, तिम माधव कोटा *अंतर तब१०६
द्वार जरन सासन नृप देतहि, †लघु कढि निजन हाजरी लेतहि ॥
‡अरर जरत कछु बिधि मिस आग्रह, भ्रात मध्य भजिगो जालम जह
जुज्झन द्वार हवेलीके जुरि, माधव सज्ज रुप्यो पुरमैं मुरि ॥
गोपुर जुरन सुद्धि सुनि संकित, आयो सजव जरठ जालम इत१०८
मिलि मग विष्णुसिंह मुजराकिय, लखि तिहिं बस जालम स्वसंग
लिय ॥
सूरजपोरि आइ इम अक्खिय, खुल्लहु द्वार रोध किहिं रक्खिय१०९
इन आक्खिय प्रभुको आदेस न, अहो अरर खुल्लन खिन एस न ॥
तबहि कुठारन अरर तुराये, इम झल्ल रु तस भट पुर आये११०
इक्खयो स्वसुत हवेली आवत, माधव सकुसल जंग मचावत ॥
तब जालम तजि सोक ससाहस, गहि कर मुच्छ घोर पकरी
गंस ॥ १११ ॥
बडी तोप दुव२ तहँ बुंदीकी, लैगो भीम हुती तबहीकी ॥
प्रथित धूरिधानी१ बहु पूजी, दुस्सह करकाबिज्जुली२ दूजी ॥११२॥
इनके गोलंदाज बुल्लि अर, कह्यो प्रहार करहु महलन पर ॥
इत सुनतहि जालम पुर आयो, पगि भय सैफअली सु पलायो११३
तस संगहि नट्ठे संगी तस, बल रंचक रहिगो नृपके बस ॥

---

* जालमसिंह का पुत्र माधवसिंह कोटा के भीतर था ॥ १०६ ॥ † शीघ्र अपने लोगों की हाजरी लेता हुआ ‡ कपाट जुड़ते समय महाराव किशोरसिंह का मध्यम भ्राता (विष्णुसिंह) जहां जालमसिंह था तहां भाग गया ॥ १०७ ॥ १ शहर के द्वार जुड़ने की खबर सुनकर २ बुड्ढा जालमसिंह शीघ्र आया ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ३ स्वामी का हुक्म नहीं है ४ किवाड़ खुलने का यह समय नहीं है ॥ ११० ॥ ५ अपने पुत्र माधवसिंह को ६ गांठ (आंट) ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ७ शीघ्र बुलाकर ८ भागा ॥ ११३ ॥ ९ उसके साथवाले

जब किसोर १ नृप अल्प भटन जुत, दुरयो जाइ महलन अंदर हुतें ॥ ११४ ॥
पृथ्वीसिंह अनुज नृप पासहि, सस्त्रनको न दुहुरन अभ्यासहि॥
गन प्रासाद गिरत लखि गोलन, झुल्ला जिम हल्लत गढ भो लन ॥ ११५ ॥
तजि अवरोध१ सस्त्र२ धन३ तत्थहि, सके न लै गज४ हय५ कछु सत्थहि ॥
धन कछु इक१ सिविका अतर धरि, तरि चम्मलि लै इक्क मि-ली तेरि ॥ ११६ ॥
पयचर निकसि भज्यो सानुज पहु, चलि मगमैं जिहिं छोरिगयेबहु॥
इम व्याकुल नृप बुंदी आवत, पै प्रबहन कछु मग्ग न पावत॥११७॥
रामलाल लछमीपुर सासक, सुन्यो हह्र६६ बुंदीस उपासक ॥
सोहु हुतो न तदपि तस तिप सुनि, पठई तिहिं निज उभय२ हयी पुनि ॥ ११८ ॥
दोउनरपैं चढि तब सोदर दुव२, ठहे स्वस्थ रु इम अग्ग वढत हुव ॥
सोदर पृथ्वीसिंह३ केर सुत, जो कोटा सासक अब छल जुत११९
सिसु बय एहु हुतो तिन्ह सगहि, अनुचर खध बह्यो जिन्ह अगहि
इम दुव२कोस अवधि पर आवत, समुह जाइ बुंदीस सुहावत१२०
अति आदर भ्रातहि ग्रह आनिय, मंडिप बिबिध उचित महमानिय॥
अक्खिय तिम तुमरो घर एसहु,देखि समय जित्तहिं निज देसहु१२१
इहाँ रहहु तोलों निज आलय, जानहु धर्म जहाँ सु तहाँ जय ॥

उसके साथ ही भागे १ छीम ॥ ११४ ॥ २ महलों का समूह ॥ ११५ ॥ ३ जनाना ४ पालकी म ५ जो मिली उसी नाव को लेकर ॥ ११६ ॥ ६ पैदल ७ छोटे भाई सहित राजा भगा ८ डोली आदि मार्ग म सवारी नहीं मिली ॥११७॥ ९ दो घोड़िया भेजी ॥११८॥११९॥ छोटे भाई पृथ्वीसिंह का पुत्र जो इस समय कोटा का पति है यह पालकी चाकरके कंधे पर चढा ॥१२०॥१२१॥

अप्पन लै निज मतअंग्रेजन, टारहिं१ऋच्छ त्वचा जिम तेजन२ १२२
कै मारहिं२ कै करहिं सु कीलित३, कतिक वत्त खल ऋच्छकु-
सीलित४ ॥

कहुँ गोपाल धनीको गोधन, अपनावत न सुने रचि रोधन॥१२३॥
धरा ६वकर कर्षुक नहिं धारत, स्वामी जब तब ताहि सम्हारत ॥
कोटा इम अपनौ जैहैं कित, सहबल१कोसँ२संग इम समुचित१२४
पै कछु देस १ काल २ क्रम पिक्खहु, साहहु धीरज त्वरा न सि-
क्खहु ॥

विष्णुसिंह२००१२ भूपति इम बहु बिधि, समुझायो कोटेस ९वस-
न्निधि ॥१२५॥

महाराव तदपि न यह मन्निय, क्रम संत्वर दिल्ली पयान किय ॥
इक अंग्रेज मिल्यो तह इनमैं, जालम पच्छ ओर सब जिनमैं ॥१२६॥
ए जिम निकसि भजे पलटत श्रेय, गोवर्द्धन ऋच्छहु तिम भजिगय॥
इत जालम अंग्रेज उपासक, सबल रह्यो कोटाधर सासक १२७

॥ दोहा ॥

इत नव९ हायन वय उदित, राजकुमर भनि रॅाम२०१४ ॥
सिंह सिसु कि हत्थिन हनन, करैं उचित वय काम॥१२८॥
गुटिका चाप१हि पुब्ब गहि, अंकुरि तस अभ्यास ॥

१ जैसे मांस की छाल (चमड़ी) निकाल देवै तैसे झाला को निकाल देवेंगे ॥ १२२ ॥ २ उस (जालमसिंह) को कैद करके ३ खोटे स्वभाव वाला ४ कहीं पर स्वामी का गोधन ५ रोककर ग्वाल को अपनाते नहीं सुना ॥१२३॥ और करसा ६ उसकी भूमि के हासिल को धारण नहीं कर सकता, जब तब उस भूमि का स्वामी (मालिक) ही उसे सम्हालता है, ७ सेना और खजाने सहित वह हमारे ही उचित है ॥ १२४ ॥ ८ शीघ्रता मत करो ९ अपने पास ॥ १२५ ॥ १० शीघ्र ११ सब अंगरेज जालिमसिंह के पक्ष में थे जिन में से एक महाराव किशोरसिंह से मिला ॥ १२६ ॥ १२ शुभ कर्म के पलटते ही ॥ १२७ ॥ १३ नौ वर्ष की अवस्था में १४ रामसिंह ॥ १२८ ॥ १५ उस अभ्यास में ७५'

मात नित्य करि तदनु पटु, बिरचहिं वेध्य बिनास ॥१३०॥

॥ घनाक्षरी ॥

नित्य करि लै निज वयस्यन कुमर राम२०॥२१॥१,
सानुज१ सुरीति खुरलीमैं खेल रूपात करि ॥
कोहल१ मतीर२ रु दसागुंल३ कपित्थ४ विल्व५,
क्रमतैं कितेही स्थूल वेध्यनके पात करि ॥
मडूरक१ मृत्तिका२ मिलाये गुरु गोल गाढे,
खातकरि जात ज्यों बढूकनसों बात करि ॥
तारीदै तराके जत्र स्वस्तिक१कौं फेरिदेत,
गेरिदेत गुजरन गिलोलनकी घात करि ॥ १३० ॥

॥ दोहा ॥

कदुक अम्भ उछारिकैं, मर्म गिलोलन मारि ॥
अनाधार रक्खत उहाँ१, इच्छित लेत उतारि२ ॥ १३१ ॥

॥ मनोहरम् ॥

छोरिकैं गिलोल१ तदनतर सरासनं२लै,
मित्रन अखारो मढि छोह छिति छेतीमैं ॥
आलीढ१ रु प्रत्यालीढ२ वैसाख३ रु मडल४ त्यौं,

(खड़ा) होकर १ निसाने का ॥ १२९ ॥ २ अपनी समान अवस्थावालों को ३ छोटे भाई सहित शस्त्राभ्यास में कोहला (कूष्मांड) मतीरा ४ खरबूजा ५ कैथ, बीला ६ लोहे के मल (कीटा) और मिट्टी के मिलाये हुए बड़े और दृढ गोले अड्डू करजाते हैं ७ यन्त्र विशेष ॥ १३० ॥ ८ गेंद को आकाश में उछालकर ९ बिना आधार वहीं पर रखकर चाहैं तब उसको नीचे उतार लेते हैं ॥ १३१ ॥ १० धनुष लेकर मित्रों के साथ अखाड़ा रचकर उत्साह से भूमि ११ ये सब पैंतरे हैं जिन में दाहिने पैरको आगे बढाकर बाम पैर को समेटने का नाम आलीढ है १२ आलीढ से उलटा करना प्रत्यालीढ है १३ एक वितस्त (बेंथ, विलस्त) के अंतर से दोनों पैरों को रखकर बाण चलाने का नाम वैशाख है १४ गोलाकार फिर कर बाण चलाने का नाम मण्डल है

साधि *समपाद५ थान रीति हित ठेतीमैं ॥
शब्दवेध आदिक समस्त बिधि साधनकौं,
पूरन प्रगल्भ प्रभा पारथकौं पैंतीमैं ॥
कातर कपोल कोपे फीलन१कौं फेरिदेत,
गेरिदेत गुंजर२न कलंब कसनैतीमैं ॥ १३२ ॥

॥ पादाकुलक ॥

इत नृप विष्णुसिंह२००।२ बुंदीइन, दिष्टतंत्र सुचि४पुरवास१५रवि
दिन ॥
छोरयो बपु तँहँ उचित रीति कृत, बिदित आयु दिष्टानुसार बत१३३

॥ दोहा ॥

सक नव दुव वसु इक्क १८२९ सम, असित२सहस्य१०अनेह॥
तिथि तेरसि१३ तँहँ अवतरयो, उद्भव लहि पहु एह ॥१३४॥
व्योम त्रि बसु ससि१८३०शुक्र३बदि२, तिथि एकादसि११तत्थ
राज्यासन पायो रुचिर, संभर सिसुँहि समत्थ ॥ १३५ ॥
बासर दुव२ बर्जित रवबय, पावत मितिनव१ पच्छ ॥
बिष्णुसिंह२००।२पायो बिदित, आजित१६९।२पद्द इम अच्छ
कुलभव अट्ठ८ बिबाह किय, इनमैं बय अनुसार ॥
पंच५ तनय इक१ पुत्रिका, पाये अधिप उदार ॥ १३७ ॥
तीन खवासिनमैं तनय, इक१ बिनैय१ लहि आप ॥

---

*दोनों पैरों को बराबर रखकर बाण चलाने को समपाद कहते हैं, ये ही पांच पैंतरे धनुर्विद्या जाननेवालों के हैं १ पूर्ण बुद्धिमान् २ पैंतरों (पदन्यासों) में अर्जुन के समान कांतिवाला ३ कपोलों के कायर ऐसे कोपे हुए हाथियों को फेरदेता है और तीरों से ४ चिरमियों को गिरा देता है ॥१३२॥ ५बुंदी का पति ६भाग्य के आधीन ७ खेद है कि आयु भाग्य के अनुसार ही होती है॥ १३३ ॥ ८ पोष वदि ९ यह राजा जन्म लेकर उत्पन्न हुआ ॥ १३४ ॥ १० ज्येष्ठ मास ११ बालक पन में ही ॥ १३५ ॥ १२ दो दिन कम साढे चार मास की अवस्था में ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३ एक विना नीतिवाला हुआ

वसु इय७८ सक इम छोरि वपु, पायो लोक दुराप ॥१३८॥
नाम नयनसोभा१ निपुन, मंजु पातुरिन माँहिं ॥
कथित काल नृप तनु तजत, इहाँ गर्भ तस श्राँहिं ॥१३९॥
पंच५मास पीछैं प्रसव, तनया प्रकटी तास ॥
रूपकुमरि जो रावरी, भगिनी प्रभु गुन भास ॥१४०॥
पोस१० असित२ तिथि प्रतिपदा१, कनी सु भावीकाल ॥
पैहै श्रव उद्भव प्रथित, प्रभु जँहँ श्रप्प नृपाल ॥१४१॥
ए क्रमकरि खट६ श्ररु उभय२, पैजा श्रष्ठ८ नृप पाइ ॥
गदित काल परलोक गत, जग जस श्रतुल जगाइ॥१४२॥

॥ गीति ॥

छत्र महलसौं लागतहि उत्तर४।७ दिस श्रत्तबाट१ श्रभिधानी ॥
बंजाग इष्ट थिति चहि, तिनको प्रासाद निर्मयो नृपने ॥१४३॥
पाहीविधि श्रभिरामकँ, पच्छिम३।५ दिस श्रर्द्ध-कोस निज पुरतैं ॥
विष्णुविलास१।२ स नामक, उपवन प्रसपम निर्मयो श्रैसैं ॥१४४॥
प्रभु रावरी प्रसू इम, पुरतैं दक्खिन२।३ समीप बहु व्ययसौं ॥
जग सुखदा निज घर जिम, चतु४रायतैं धर्मसालिका१ बिरची१४५
निज पति इष्ट प्रमानत, ता शिव बजागैं मूर्ति पधराई ॥
इच्छित भोजन श्रानत, श्रब जन जाके सदाव्रत उमहे ॥१४६॥
सुंदर घट्ट१ बनायो सुंदरसोभा१ खवासि सभैरकी, ॥
हरिमंदिर१ जुत ठायो, प्रासादगन२ जह्न तॉल तट पुरमैं ॥१४७॥

१ दुर्लभ लोक पाया ॥१३८॥१३६॥१४०॥१४१॥२ सन्तान ३ ऊपर कहेहुए समय में ॥१४२॥४ गमयाथा ५ हनूमान् के इष्ट की स्थिति चाह कर ६ महल (मंदिर) बनाया ॥१४३॥ ७ सुन्दर ८ बाग ६ नवीन बनाया ॥१४४॥१० हे प्रभु रामसिंह आपकी माता ने ११ चौकोन (चौरस) ॥ १४५ ॥ १२ हनूमान की ॥ १४६ ॥ १३ बहुवान (विष्णुसिंह) की १४तलाव गाम में तथा तलाव के किनारे ॥ १४७ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ विष्णुसिंह चरित्रे नगरकोटावधिनेपालागमनांगरेजतत्पुनर्निःसारणं १ अंगरेजलखनऊयोधनजयपुरयोधपुरसुहृद्भावसंबन्धकरणं २ ईष्टइंडियाकम्पनीगोरखाविजयनलंकाद्वीपसमासादन ३ सचिवेन्द्रराजवधदोषाच्छादनमानसिंहोन्मादत्वप्रकटनयुवराजच्छत्रसिंहमरणं ४ ग्रन्थकर्तृसूर्यमल्लजननसर्वतोविजय्यंगरेजाजमेराक्रमणं ५ अंगरेजप्रथमाजण्टकर्नलटाडराजपुत्रस्थानागमनझल्लजालमसिंहदण्डनपूर्वराणा-भीमसिंहार्थजाजपुरादिप्रान्तप्रापणं ६ अंगरेजगृहीतव्ययपुनायापति बाजेरावपेसवाविठूरनिवसननागपुरेशयोधपुराधीशशरणागमनतद्वंश्या थैषज्जीविकाप्रदापन ७ निःसंतानजयपुराधीशजगत्सिंहमरणानरउरागतमानसिंहपट्टाक्रमणविरोधीभूतझल्लजालमसिंहबुन्दीदेशलुण्टनपूर्वकरग्रहणं ८ छलकारितांगरेजसंधिपत्रझल्लजालमसिंहबुन्दीसा

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, विष्णुसिंह के चरित्र में, नेपालियों का नगरकोट तक बढ़ना और अंगरेजों का उनको पीछा हटाना १ अंगरेजों का लखनेऊ में युद्ध होना और जयपुर जोधपुर के राजाओं का मित्र होकर परस्पर सम्बन्ध करना २ ईष्ट इंडिया कम्पनी का गोरखों को जीतना और लंका नामक द्वीप को विजय करना ३ जोधपुर के राजा मानसिंह का अपने सचिव इन्द्रराज को मरवाकर उक्त दोष को दबाने के लिये फरेब करके बावलापन प्रसिद्ध करना और मानसिंह के पुत्र छत्रसिंह का राजा होकर मरना ४ इस ग्रन्थ के कर्ता सूर्यमल्ल का जन्म होना और अंगरेजों का सब ओर विजयी होकर अजमेर लेना ५ अंगरेजों के प्रथम एजंट करनल टाड का राजपूताने में आना और झाला जालमसिंह को दण्ड देकर जाजपुर आदि प्रान्त उदयपुर के महाराणा भीमसिंह को दिलाना ६ पूना के पति बाजेराव पेसवा का अंगरेजों से पिनसन लेकर विठूर में रहना और नागपुर के राजा का जोधपुर में शरण आकर उसके कुल को कुछ जीविका मिलना ७ जयपुर के राजा जगतसिंह का विना सन्तान मरने के कारण नरवर से आकर मानसिंह का पाट बैठना और जालमसिंह झाला का विरोधी होकर बुन्दी के देश को लूटकर हासिल लेना ८ जालमसिंह झाला का अंगरेजों से छलके

मन्तेन्द्रगढखातोल्यादिकोटाराज्यसमेलन ९ पश्चाद्बुन्द्यगरेजसधि
पत्रभवनरणजीतसिंहविजितपेशोरमान्तकाबुलसेनागमनतत्प्रत्यादा
न १० जयपुरेजगत्सिंहराज्ञीभटियाणीजठरजयसिंहजननहेतुदत्त
पत्यहपञ्चमुद्रमानसिंहनिष्कासनानन्तरजयपुरमान्तजयसिंहाज्ञाप्रव
र्तन ११ कोटानृपोम्मेदसिंहमरणाकिशोरसिंहतत्पट्टासादनकोटास
चिवझल्लजालमसिंहविरोधहेतुकिशोरसिंहपलायन १२ बुन्दीपति
विष्णुसिंहपञ्चत्वगमनतदनेहरचितस्थाननिर्माणसूचन द्वादशो मयू-
ख ॥ १२ ॥ आदित ॥ ३६२ ॥

समाप्तमिदं विष्णुसिंहचरित्रम् ॥

साथ अहदनामा करवा कर बुन्दी के उमराव इन्द्रगढ, खातोली आदि को कोटा के राज्य में मिलाना ९ जिनपीछे अंगरेजों का बुन्दी के साथ अहदनामा होना और रणजीतसिंह के विजय किये हुए पेसोर को काबुल की सेना का पीछा लेना १० जयपुर में राणी भटियाणी के उदर से राजा जगतसिंह के औरस पुत्र जयसिंह का जन्म होने के कारण मानसिंह को पांच रुपये रोज की पिनसन देकर निकाले पीछे जयपुर में जयसिंह की दुहाई फेरना ११ कोटा के राजा उम्मेदसिंह का देहान्त होकर किशोरसिंह का पाट बैठना और कोटा के सचिव झालाजालमसिंह से महाराव किशोरसिंह का विरोध बढ़कर कोटा से किशोरसिंह का भागना १२ बुन्दी के राजा विष्णुसिंह का देहान्त होना और उनके समय में बनेहुए मकानों की सूचना करने का बारहवां १२ मयूख समाप्त हुआ ॥१२॥ और आदि से तीन सौ बासठ ३६२ मयूख हुए ॥

इति विष्णुसिंहचरित्र समाप्त हुआ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ अथ रामसिंहचरित्रम् ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

श्री मम राज१ सरस्वती२, वखमह बुद्धि सु वित्त ॥
कहियत राम चरित्र अब, जो इहिं ग्रन्थ निमित्त ॥ १ ॥
एकादश११ दिन करि अखिल, कैरटा१दिक विधि काज ॥
पुनि अवसर लहि राम२०१।८ प्रभु, अप्प भये अधिराज॥२॥
द्विज पुर१के अरु देस२के, भोज तदिन असेस ॥
दान विविध बहुतन दये, गोगन१ पुरट२ प्रदेस३ ॥ ३ ॥
सजातीय१ कविकुल२ सकल, जिम पुर३अखिल जिमाइ॥
लखित किति मुख मुख लई, भूप सबन मनभाइ ॥४॥
नव९ अब्द रु खट६ मास मित, इहिं वय समय अधीन ॥
विधि अप्पहि दिन बारहम१२, कुल इह६१न इन कीन ।५।
सवत गज हय अष्ट ससि १८७८, स्रावन५ बारसि१२ स्याम
गुरु५ मृगासिर५ व्याघात१३ गत, तैतिल४करन सु ताम॥६॥
समरकद६ जहँ सहैरयो, नारायन१८७१२ नरराज ॥
भूपति तँहँ अभिसिक्त भो, कथित सहि विधि काज ॥ ७ ॥
आसापूरनि१ अम्बिका, पीताम्बर हरि पाप ॥

---

१ बुद्धि रूपी श्रेष्ठ धन २ जो इस ग्रन्थ (वंशभास्कर) के बनने का कारण है वह रामसिंह चरित्र कहता हूं ॥ १ ॥ ३ एकादशाह आदि सब श्राद्धों के कार्य करके ४ हे राजा रामसिंह आप स्वामी हुए ॥ २ ॥ ५ उस दिन सब ब्राह्मणों को भोजन कराया ६ सुवर्ण ७ भूमि ॥ ३ ॥ ८ अपनी जातिवाले (क्षत्रिय) और चारणों के सब कुल को ॥ ४ ॥ विधि पूर्वक आपको राजाओं का ९ पति किया ॥ ५ ॥ १० व्याघात नाम योग जाकर ११ तहां तैतिल करण में ॥ ६ ॥ जहां राजा नारायणदास ने समरकद को १२ मारा था तहां कहाहुआ विधि पूर्वक कार्य साधकर राजा का अभिषेक हुआ ॥ ७ ॥

पूजन करि प्रनम्यों सु पहु, समुचित मन्नि सहाय ॥ ८ ॥
पुनि पधारि महलन प्रथित, रचि अर्चित श्रीरंग ॥
पेंच१ पंच५सिख सीस धरि, बैठो पट्ट२ अभंग ॥ ९ ॥
गुरु१बुध२कवि३भट४सचिव५गन, अतुल सभा सब आइ ॥
॥ १० ॥
॥
॥११॥
॥
॥ १२ ॥

पुनि अजंट आइउ इहाँ, साहब टाड१ स नाम ॥
सभा बहुरि दूजी२ सुपहु, रची उचित अभिगाम ॥ १३ ॥
आसन५ बिसद१ चउत्थि४ सिर, पंचमि५ आगम पाइ ॥
सद्यो पुनि दसतूर सब, सूचित क्रम दरिसाइ ॥ १४ ॥
टाड१ अजंटहु गज१ तुरग२, भूखन३ सस्त्र४ दुकूल५ ॥
उपदा६ किय अधिराजकै, मुदित नम्र हित मूल ॥ १५ ॥
उत्तासन१ सद्यो उचित, रीति सहित नति रक्खि ॥
कह्यो कहहु हमपर हुकम, सब अनुगत नय सक्खि ॥ १६ ॥
महिमानी आदरि बहुरि, करि प्रभु हुकम बिकंट ॥
तदनन्तर लै सिक्ख गो, साहब टाड अजंट ॥ १७ ॥
अवसर क्रम भावी इहाँ, व्याह१ प्रजा२दि बखान ॥

॥८॥१मस्तक पर पांच शिखा(कलंगी)का शिरपेच धारण करके "हम ऊपर लिखआये हैं कि पांच शिखा का शिरपेच बांधना राजापन का चिन्ह है" २ किसी से भंग नहीं होनेवाला महारावराजा रामसिंह पाट बैठा ॥९॥३पण्डित ४ चारण ॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥ ५ वस्त्र ६ राजा को भेट किये ॥ १५ ॥ नीति पूर्वक नम्रता रखकर अजंट टाड साहब७वाम ओर बैठा॥१६॥८स्वामी रामसिंह के हुक्म को निष्कंटक करके ॥ १७ ॥ समय के क्रम से भाइयों सहित राजा रामसिंह के९आगे होनेवाले व्याह और१०सन्तान आदि का वर्णन करते हैं सो

भ्रातन जुत प्रभुको भनत, समुझहु सभ्य सुजान ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

भे उपयम चउ४ अधिप प्रथम१ तिनमाँहिं जोधपुर ॥
मानं सुता रठोरि परनि आनी रानी धुर ॥
नाम सुरूपकुमारि२०११ प्रसव जाके सु पुत्र मनि ॥
कुमर भीम२०२१ प्रभुकेर जई जनम्यों पाटव खँनि ॥
दूजे२ विवाह पुर झुंझनाँ सेखाउति व्याही सु वर ॥
अभिधा गुलावकुमारि२०१२ सु उचित स्यामसिंह तनया सुघर॥१९॥

॥ दोहा ॥

गया पधारे अप्प जव, पुर नागोद पधारि ॥
तीजो३ उपयम किन्न तहँ, दारिद कविन विदारि ॥ २० ॥
विदित सुता बलभद्रकी, गुन गन अतुल गंभीर ॥
चन्द्रभानु कुमरि२०१३ सु चतुर, व्याही रानिय वीर ॥२१॥
प्रनिहारी कुलकरि प्रथित, जाके औरस जात ॥
रगनाथ२०२१२ सुत रावरे, दूजो२ जस अवदात ॥ २२ ॥
ए त्रय३ रानी अरु लहे, सूनु उभय२ कुल सुद्ध ॥
चउ४ खवासि तिनकी चतुर, सतति सुनहु प्रबुद्ध ॥ २३ ॥
पट्ट सुरूपलतिका१ प्रथम१, तामैं हुव सुत तीन३ ॥
अर्जुन१ अविदितं नाम अरु, गोवर्द्धन३ गुन पीन ॥ २४ ॥
सदानद२ दूजी२ सुघर, जाकै जुग२ सुत ख्यात ॥
नारायन२१४ जेठो१ कुमर, जगन्नाथ२१५अनुजात२ ॥ २५ ॥

१ श्रेष्ठ बुद्धिवाले सभासद जानो ॥ १८ ॥ २ राजा के चार विवाह हुए ३ जोधपुर के महाराजा मानसिंह की पुत्री ४ रामसिंह के ५ चतुरता की खान ६ नाम ७ सुघड़ (चतुर) ॥ १९ ॥ २० ॥ ८ गम्भीर ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ २३ ॥ ९ जिसका नाम मालूम नहीं ॥ २४ ॥ १० छोटा भाई ॥ २५ ॥

सरसरंग³ तीजी³ प्रसव, स्वीय[1] नियति अनुसारि ॥
कन्या इक१ सुपठित[2] भई, नाम सुभद्रकुमारि१ ॥ २६ ॥
आनंदा१दिकवेल्लि[3]४ इम, चौथी[4]४ चतुर खवासि ॥
कन्या इक१ वल्लभकुमरि१।२, भई तास गुन भासि ॥२७॥
सुत इम पंच५ रु दुव२ सुता, प्रजा खवासिन सत्त७ ॥
प्रथम१ तृतीय२ रु पंचम५ सु, त्रय३ सुत सायुग[4] तत्त ॥२८॥
बाल बयहि वल्लभकुमारि२ धींदा[5] ठयसु विधि धारि ॥
विद्यमान तनया बडी१, सूरि[7] सुभद्रकुमारि१ ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

प्रभुअनुजनु[8] गोपाल२०१५ रहठउरन गागरनी ॥
चन्द्रकुमरि२०।१ रघुनाथ सुता अप्रज[9]१ इक१ परनी ॥
अरु खवासि भव अनुज बिनय१ व्याह्यो उनियारा ॥
जालमजा आनंदकुमरि१ सुहु प्रसव असारा[10] ॥
अरु रूपकुमारि१ विनया१ऽनुजा[11] बीकानैर नरेस सुन ॥
जीवन१हिं[12] रक्खि आश्रित इहाँ परिनाई प्रभु प्रीति जुत ३०
काका सुत धोंकल२०।१।२कुमार फतमल्ल२०।१।१उक्त दुव ॥
बीकापुर[13] नृप अनुज अजव तनया व्याहतहुव ॥
चन्द्रकुमरि२०।१।२ आनंदकुमरि२०।१।२क्रम सन अभिधा[14]करि
जैपुर बिरचि विवाह बिंद सोदर आयेबरि ॥
रहि अचिर[15] परे पट्टनिसमर[16] जे जुगर जनक१पितृव्य[17]२जुत॥

१ अपने भाग्य के अनुसार २ श्रेष्ठ पढीहुई ॥ २६ ॥ ३ आनंदवेल्ल ॥ २७ ॥ ४ तहां तीन पुत्र आयुष्यवाले हुए ॥ २८ ॥ ५ पुत्री ६मर गई ७ पंडिता ॥ २९ ॥ ८ रामसिंह का छोटा भाई ९ विना सन्तानवाली १० बालक जनने में असार ११ विनयसिंह की छोटी बहिन १२ जीवनसिंह को बुन्दी में आश्रित रखकर ॥ ३० ॥ १३ बीकानेर के राजा के छोटे भाई १४ नाम १५ थोड़े समय रहकर १६ पाटण के युद्ध में मारे गए १७ पिता और काका सहित

अल्पायु वीज इनकेहु इम सके जनामि न सुता१ न सुत२।३१।
भोमसिंह२०।१३ इन्ह अनुज अप्प ब्याह्यो रचि उच्छव ॥
नगर ऊमरी नाम मनित सीसोद बस भव ॥
भीम सुता महतापकुमरि२०१।१ रूपोपित अभिधाकरि ॥
पुत्री दुव२ इक१ पुत्र प्रकटहुव तास गर्भ परि ॥
तहँ अजबकुमरि१ जेठी१ सुता कृष्णाकुमरि२ दुजी२कथित॥
सुत विस्वनाथ२०२।१इनसौं अनुज विनु निकेत जो अव व्यथित३२

॥ दोहा ॥

भोम२०१।३ तनूज खवासि भव, वलदेव१ सु मृत वाल ॥
इक१ खवासि भव अगजा, नवनदा[1] इहिं काल ॥ ३३ ॥
सेर२००तनय जयसिंह२०१।१सो, प्रभु ब्याह्यो हित खुल्लि ॥
तनया देवीसिंहकी, डोला बुंदिय बुल्लि ॥ ३४ ॥
कुल भटियानी नाम करि, कहियत वदनकुमारि२०११ ॥
सिसु इक१ मृत व्है तस सुता१, न सके नामहु पारि ॥३५॥
राजाउतिब्याह्यो विजय२०१।२,राजकुमरि२०१।१अभिधान॥
ग्राम खजूरी धाम भव, उदय सुता मतिमान ॥ ३६ ॥
इक सुता याकै भई न परयो तासहु नाम ॥
अल्प आयु लहि पच५ अंह, जो परलोक जगाम ॥ ३७ ॥

॥ चूडाल दोहा ॥

सभू२०११ देवीसिंह२००।२सुत, दुर्गापुर पति ब्याह तीन३किय ॥
इक१नारव मुहुकम सुता, चंदकुमरि२०११ पुर लाव ब्याहिलिय३८
तखतकुमरि२०१।२ दूजी२ वधू, चाल्लुक रत्नसुता सु लई वरि ॥

१ अल्प आयु होने के कारण ॥ ३१ ॥ २ नाम से प्रसिद्ध ३ बिना घर (ठिकाना) ४ भय पीड़ित है ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ५ पांच दिन की अल्प आयु लेकर ६ परलोक गई ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

कूरम सुरतानोत कुल, लघु[1] आनंदकुमारि२०१।३ प्रीति धरि।३९।
संतति संभूसिंह२०१।१कें, पंच५ तहाँ सुत च्यारि४ सुता इक१ ॥
इक१ प्रथमा १ इक१ अंतिमा३, तनया १।५ जुत दूजी२ हु जन्य त्रिक३ ॥ ४० ॥
इन पंच५नमैं इक१ अनुज, वच्यो नाम ओंकार२०२।४आयुवल॥
इतर गये तजि तजि असुन[2], तनया तनय विहाइ छोनि तल ॥४१॥
उपयम त्रय३संभू२०१।१अनुज, क्रम सूचित सिवदानसिंह२०१।२क्रिय
जेठी१ राजाउत्ति जहँ, नाम सु चंदकुमारि२०१।१ वरी प्रिय ॥४२॥
बरी जवाहिरकुमारि२०१।२ बलि, ताही कुल दूजी२हु दिष्ट वस ॥
जेठी१ सुव सुव इक्क१जानि, तात सुनहु सिवराज२०१।३नाम तस४३
छत्रसिंह तनुजा चतुर, रठउरि तीजी३हु वरी बर ॥
ग्राम कचोले करि गमन, व्रजकुमरी सिरदारसिंह१९९।४हर ॥४४॥
व्याह उभय२सामंत२००।१सुत, परन्यौं इत वलदेव२०१।१कापरनि॥
सुत चतुष्क४ अरु दुव२सुता, जो सपज हुव तोकें[3] इते६ जनि॥४५॥
जेठी पतनी जादवी, जो आनंदकुमारि२०२।१ नाम करि ॥
सर मथुरापुर जाइ सो, लई मनोहरसिंह सुता वरि ॥४६॥
रठउरि दूजी२ वधू, जो महतापकुमारि२०२।२ बरी बर ॥
कँमन[4] सुता भूपालकी, इन्द्र फतैगढ जाइ दीप१९८।६ हर ॥४७॥
त्रय३जेठी सुत सुतनमैं, हलधर२०२।१तिम हरदेव२०२।२नामहुव॥
अनुज सु बैरीसाल२०२।३ अरु, दूजी२कै सुत इक्क१ सुता दुव४८
सुत दुर्जनसल्ल२०२।४ रु सुता, राजकुमारि१ खुसहालकुमारि२जँहँ
द्रंग सल्हानाँ दिय बडी१, कुल कबंध लखतेस१ बिंद कहँ ॥४९॥
कृष्ण२०१।२ बिरुद २०१।३ बलदेव २०१।१ के, अनुजन इक१

---

१ शीघ्र ॥३९॥४०॥ २ अन्य प्राण छोड़ छोड़ कर गये ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥
३इतने बालक जनकर सन्तानवाली हुई ॥४५॥४६॥४सुन्दर ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

इक१ ब्याह करे इम ॥
प्रथित जाइ सिवराजपुर, तकि कवध चदेल बस तिम ॥५०॥
क्रमकरि नाम वधूनके, उमरावकुमरि२०११ कचनकुमारि२०१२
दुव२॥
इनमें इक१के अंगजा, स्यामकुमारि१ विरुदेस गेह हुव ॥५१॥
इम अनुजन जुत रावरे, ब्याह१ प्रजा२ क्रम सग वखानित ॥
सब सतति उपयम सुनहु, अवसर अब प्रभुराम२०१४प्रमानित५२

॥ षट्पात् ॥

जगतसिंह नृप लवहि प्रचुर रानिन परन्यों पहु ॥
भट्टी जैपुर सुभट बने दे तब कन्या वहु ॥
जहँ राउल कुल१ देवराज कुल२ जात जथाक्रम ॥
बुंदी पठयो विजय सुता डोला इक१ संत्तम ॥
अरु मेघसिंह पठयो अपर२ दुव२ डोला आये विदित ॥
पट्टप कुमार भीम२०२१सु प्रगुन परिनाये प्रभु हेरि हित५३
कन्या जीवनकुमरि२०२१ विजय तनया पहिलें१ वरि ॥
ब्याही वोलि वर वेगनि मेघतनया ऋद्धिकुमरि२०२२ ॥
कथित गुलाबकुमारि२०२३ कैमन तीजी३ कुमरानिय ॥
वसवहाला ब्याहि उचित अति जस घर आनिय ॥
रघुनाथसिंह२०२२ तदनुजें कुमर मितें जीवितपाउससमय
नागोद द्रग मातुल निलयें, वपु उंज्झिय दसअब्द वय५४

१ प्रसिद्ध ॥ ५० ॥ २ स्त्रियों के ३ पुत्री ॥ ५१ ॥ ४ विवाह ॥ ५२ ॥ जयपुर का राजा जगतसिंह ५ बहुत राणियों को परना तब बहुत कन्या देकर भाटी ६ जयपुर के उमराव बनगये थे ७ सुन्दर ८ विशेष गुणवान ॥ ५३ ॥ ९ फिर १० सुन्दर दुलहिन ११ सुन्दर १२ उसका छोटा भाई १३ थोड़े समय जीवित रह कर १४ मामा के घर १५ शरीर छोड़ा ॥ ५४ ॥

जाठरि धारि सुरूपलता१ जिहिँ जामि सकारकी जच्चा वजी जनि
अर्जुन१ जेठो१ कुमार वहै परन्यो पहिलैं१ मह झालरापट्टनि ॥
सो मदनाधिप झल्ल सुता महिलाँ बडी१ खूबकुमारि१ वधू मनि॥
आयो निजोचित ब्याहियहाँ हितसौँकविलोकन दारिदकौँ हनि५५

॥ घनाक्षरी ॥

पीछैं जाइ तीन३हि कुमार ब्याहे जोधपुर,
अर्जुन१ द्वितीय२ बरी सूरजकुमारि२ इत ॥
त्यौँ कल्यानकुमरि१।२ बिवाह्यो जगन्नाथ३।५ तहाँ,
एतो द्वै२हि भूप तखतेसकी सुता उचित ॥
सेवकीपुरेस नृप मानको खवासि सुत,
नाम सिवनाथ ताकी नंदिनी हुलास हित ॥
नामकरि राज सु कुमार१ कुमरानी निज,
मध्यम२ कुमार ब्याह्यो गोवर्द्धन३।२ साम्य मित।५६।
जोधपुर भूप मानसिंहकै खवासि जात,
पुत्र लालसिंह१ नाम ढंग हरसोर पति ॥
सूनु ताको सुद्धकुलजा भव प्रतापसिंह१,
बिहित बरातसौँ बुलाइ बुंदी मंजु मति ॥
ब्याकरन आदि बहु बिद्यामैं प्रबीन बुद्धि,
सो सुभद्रकुमारि१ खवासि सुता रम्य रति ॥
दुल्लही बनाइ लग्नकाल तिहिँ दुल्लहको,

स्वरूपलता ने जिसको १ उदर में धारण करके २ रामसिंह के शकार (साले) की बहिन "पासवान" (अविवाहिता) स्त्री के भाई का नाम शकार है अर्थात् सरूपलता नामक पासवान जिसको जन कर जाचा (प्रसूता) बजी वह कुमर अर्जुनसिंह ३ राजा मदनसिंह झाला की पुत्री ४ स्त्री ५ अपने उचित अर्थात् पासवान की पुत्री विवाह कर आया ॥ ५५ ॥ ६ बराबर के प्रमाण वाला ॥५६॥ ७पासवान स्त्री से उत्पन्न८शुद्ध कुल में उत्पन्न ९ सुन्दर बुद्धिवाली

आप प्रभु कूकुंद विवाही दे सुदायं अति ॥ ५७ ॥
राम२०१४ प्रभु रावरे पितृव्यसूनु गोठपुर,
भोमसिंह२०१३ स्वामीके निवारे प्रतिकूल भनि ॥
राव फतमल्ल१ उनियाराके अधीस अर्थ,
जेठा१ सुता अजनकुमारि१ व्याही मोद जानि ॥
न गई नरूकनके कन्या इतकी कबहु,
बहुत कहाई आप तदपि स्वतन्त्र वानि ॥
व्याह यह कीनों दिष्ट तास फल दीनों वेग,
आलेप विहीन फिरैं खीन अहि ज्यों अमनि ॥५८॥

॥ चूडाल दोहा ॥

व्याह इक१बलदेव२०१।१सुत, हलधर२०२।१कापरनीस विवाहिय
मेरातिया रैंइया अधिप, देवसुत ————कुमारि २०२।१ तिय५९
तस ओरस प्रकटे तनय, राजसिंह२०३।१ अरु वीरसिंह२०३।२दुव॥
जो हलधर२०२।१इनको जनक, होत तरुनवय आसु अनसु हुव६०
उक्त उभय२ हलधर २०२।१ अनुज, गलथूनी कछवाह कनी दुव॥
——कुमरि२०२।१ ——कुमरि २०२।१, सह क्रम व्याहि गृहस्थ इह ६१ हुव ॥ ६१ ॥

राजसिंह२०३।१ पुर कापरनि, सासक सिसु उपयाम इक१किय ॥
कछवाहनके रामपुर, ——कुमरि २०३।१ स नाम सवय तिय६२
इम सबही भावी३ इहाँ, सब वधुन प्रभुके विवाह१ सुत२ ॥
सब सतानन व्याह बलि, जपिय अवसर रीति जथा जुत ॥ ६३ ॥

१ बहुधा युक्त कन्यादान करनेवाले आपने २ श्रेष्ठ दहेज देकर परणाई ॥ ५७ ॥ ३ काका के पुत्र ४ भाग्य ने ५सफा फल दिया ५ विना घर ६ विना मणिवाला क्षीण सर्प फिरै तैसे ॥ ५८ ॥ ७रिया नगर का पति ॥ ५९ ॥ ८ ताव (तप) से प्राण रहित हुआ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ९ कापरण के पति ने बालपन में एक व्याह किया ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

कारन पाइ प्रसंग कहुँ, भूत१ कथा क्रम भूप॥
बर्तमान२ अब वर्णियत, अप्प चरित अनुरूप॥ ६४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

धाइपनाँ प्रभु अप्प धवाये, इम कौमार१ लंघि इत आये ॥
अवसर पर क्रीड़न क्रम आयो, बलि पौगंड३ अनेह बितायो॥६५॥
दसम१०अब्द अंतर दिनदुल्लह, स्वामी हुव धरि धर्म१नीति उसह॥
तबहि कालक्रीड़ा सब त्यागी, राजन रीति गही अनुरागी ॥ ६६॥
सह्हि सुकवि१ बुंधर भेट३न समागम, आदरि हित समुझे सब आगम ॥
श्रीगुरु आसानंद१ समज्या, बरनैं आदि नृपन वरिवज्या ॥६७॥
पुनि कवि जनकैं चंड२खिनपावत, सन्निधि रहि पद्धति समुझावत॥
सह दुर्जनसल्ला१दि वयस्यन, महिप विधेय सुनैं सु धरैं मन॥६८॥

॥ दोहा ॥

बिधिसह लिन्नौं ताहि बय, बेद विहित उपवीत ॥
सावित्री जप निज समय, सहैं पढ्न प्रतीत ॥ ६९ ॥

---

१ आपके सदृश चरित्र का अब वर्णन कियाजाता है ॥ ६४ ॥ २ हे प्रभु (रामसिंह) आपको पना नामक धायने स्तन पान कराया (चुखाया) ३पौगंडता का समय बिताया "पांच वर्ष की अवस्था से लेकर दस वर्ष की अवस्था का नाम पौगंड है" ॥ ६५ ॥ ४ प्रतिदिन दुलह के समान रहनेवाला ॥ ६६ ॥ श्रेष्ठ कवि ५ पण्डित और ६ उमरावों का समागम साधकर, आदर के साथ हित करके सब ७ शास्त्र समझे ८ सभा में ९ प्राचीन राजाओं के आचरणों का वर्णन करता है ॥ ६७ ॥ समय पाने पर कवि सूर्यमल्ल के १० पिता चण्डी दान ११ समीप रहकर १२ राजाओं का मार्ग समझाता है जो दुर्जनशाल आदि १३ समान अवस्थावालों के साथ राजा(रामसिंह)१४उचित समझता है उसी को धारण करता है अथवा राजा के उचित समझता है उसीको धारण करता है॥६८॥१५वेद के कथनानुसार जनेऊ ली१६गायत्री के जप॥६९॥

॥ षट्पात् ॥

पाइ दसम१० समें षष्ट सुपहु षट्ठु राम२०।१४ सम्हारिय ॥
श्रुति निषेध१ विधि२ समुझि हेय१ आदेय२ निहारिय ॥
ब्याकृति१ शिक्षा२ वृत्त३ कल्प४ ज्योतिष५ निरुक्त६क्रम ॥
बदन१ नक्र२ पय३ वाहु४ नयन५ श्रुति६ निज छह् अग छम ॥
श्रुति चउ४ऋगादि४विद्यादसक१०मीमांसा११पुनि तर्क१२मत ॥
स्मृति१३अरु पुरान१४चउदह१९सुपहु श्रवन किन्न विद्या ततहु७०

॥ दोहा ॥

रचहिं नित्य संसद रसिक, बुधजन बुल्लाहु बुल्लि ॥
नहिं लखैं उपेय ओर नृप, तत्व लखन दृढ तुल्लि ॥७१॥
पहु तंहय पुच्छिय पट्टन, अज्जावत्त अगार ॥
कति हित मग्ग१कुमग्ग२ कति, कति अर्हेग३अनुकार७२

॥ षट्पात् ॥

सूरिनैं आक्खिय सुनहु सिसुहि पुंच्छक पहु सादर ॥

१दशम वर्ष में पाठ पाकर२वेदमें कहेहुए निषेध और विधिको समझकर३त्यागने और४ग्रहण करने के कर्तव्योंको देखे५व्याकरण, शिक्षा, छन्द, कल्प[श्रौतसूत्र] ज्योतिष और निरुक्त, यथा क्रमसे वेद के६मुख,७नासिका, पैर, हाथ, नेत्र और कर्ण (कान) इन छ. अंगों और ९ऋग्वेद आदि चार वेद, ये दश विद्याए और मीमांसा १०तर्क शास्त्र, स्मृति और पुराण, ये मिलकर चौदह विद्याए ८ उस समर्थ राजा ने११०हीं (उसी अवस्था में) श्रवण कीं॥७०॥यह रसिक राजा बुद्धिमान पण्डितोंको भी बुलाकर नित्य१२सभा करता है और तत्व को पहिचानना दृढ तोलकर१३अर्थ की ओर नहीं देखता है ॥ ७१ ॥ १४ उसी अवस्था में राजा ने विद्वानों से पूछा कि१५आर्यावर्त स्थान में हित के मार्ग कितने हैं और कुमार्ग कितने हैं और १६[   ]के सदृश कितने हैं "यहा मूल में [अर्हग] शब्द है इसका आगे कुछ वर्णन नहीं है और न यह शब्द कहीं मिलता है इस कारण हमने इसका विवरण करना छोड़ दिया है सो पण्डित लोग विचार लेवें"॥७२॥ १७ पण्डितों ने कहा कि हे १८ पूछनेवाले बालक राजा आदर सहित सुनो अथवा पूछनेवाला बालक राजा भी आदर योग्य है सो सुनो.

श्रुति मत कहियत सरनि१ ताहि उज्झन कुसरनि२ तर ॥
मन्नहु श्रुति सु त्रि३मग्ग चरम३ खट६ भेद बिचारहु ॥
अधिकारी जन उचित धीन नानागति धारहु ॥
समुझहु त्रि३मग्ग पहिलैं श्रुतिहु जहँ कृति१पुब्ब२सु अति जड़१न
मध्य२न उपासित२ दूजो२ महिप अद्वय११३ तीजो३ उत्तम३न ।७३।

॥ दोहा ॥

तीजो३ मग्गहु छ६विधि तँहँ, पहिलो१ त्रिक३ प्राकार ॥
उत्तर उत्तर त्रिक३ अपर२, सुभ फल मति अनुसार ॥७४॥
जैन १ बौद्ध२हैं कुपथं२ जिम, लोकायतं३ गिनिलेहु ॥

१वेद का मत २मार्ग कहा जाता है और उसको ३छोड़ना ४अत्यन्त कुमार्ग है तहां वेद के तीन मार्ग जानो और ५ अंतिम के छः भेद विचारो और अधिकारी लोकों की ६ बुद्धियों के योग्य नाना प्रकार जानो. पहिले वेद के तीन मार्ग समझो. जिनमें पहिला कर्म मार्ग (कर्मकांड) अत्यन्त अज्ञानियों के लिये है और हे राजा दूसरा उपासना मार्ग मध्य (जिनको ज्ञान उत्पन्न नहीं हुआ और कर्मों में आसक्त हैं उन) लोकों के लिये है और तीसरा ७ अद्वैत मार्ग उत्तम लोकों के लिये है ॥ ७३ ॥ तीसरा मार्ग (ज्ञान मार्ग) छः प्रकार का है जिनमें पहिला तीन ८ प्रकार का है अर्थात् न्याय, पूर्वमीमांसा और वैशेषिक भेदवाले द्वैतवादी हैं अर्थात् जीव और ईश्वर को भिन्न माननेवाले हैं और बाकी के ९ अन्य तीन अर्थात् सांख्य, योग्य और उत्तरमीमांसा [वेदान्त] ये बुद्धि के अनुसार उत्तरोत्तर शुभ फल देनेवाले हैं ॥ ७४ ॥ १०वेद को नहीं माननेवाले कुमार्ग छः हैं जिनमें एक तो जैन (*), दूसरा बौद्ध जो चार प्रकार का है, और तीसरा ११चार्वाक[देहात्मवादी]अर्थात् एक जैन, चार बौद्ध और छठा

(*)जैनमत का कुछ विवेचन हमने इस ग्रन्थ के चतुर्थराशि मे वीसलदेव के चरित्र की टीका में लिखा है उसके उपरान्त प्रकरण वश कुछ यहा पर लिखाजाता है कि, कर्मफल को देनेवाले और जगत् का नित्यमूल कारण जो ईश्वर है उसका स्वीकार यह(जैन)मत नहीं करता. जैन प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द ये तीन प्रमाण मानते हैं, वे आगम सर्वज्ञके शब्द हैं. मनुष्य ही उत्तम ज्ञान, सम्यक्दर्शन और सम्यक् चारित्रसे आवरणका नाश करके सर्वज्ञ बनसकता है "जिनको जैनी सर्वज्ञ पुरुष मानते हैं वे चौबीस तो अवसर्पिणी(भूत) काल में होगये, चौबीस वर्तमान काल में हुए और चौबीस उत्सर्पिणी (भविष्यत्) काल में होवेंगे और वर्तमान काल में, पहिले ऋषभदेव, तेबीसमे पार्श्वनाथ, और चौबीसमे महावीर हुए जिन्हीं का जैनियों में पूजन

होता है" जीव मात्र पर दया करने को ये मुख्य धर्म समझते हैं, इस मत में जीव और अजीव ये दो मुख्य तत्व मानेजाते हैं, ये दोनों अनादि और अनन्त हैं, कितनेएक पदार्थकी व्यवस्था नौ प्रकार की करते हैं अर्थात् जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष इनके भी कई अवांतर भेद मानते हैं, जैनोंकी प्रसिद्धक्रिया "सप्तभंगीनय" है यथा- "स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्तिचनास्ति, स्यादवक्तव्य, स्यादस्तिचावक्तव्य, स्यान्नास्तिचावक्तव्य, स्यादस्तिनास्तिचावक्तव्य ॥" इन सात भंगियों को स्वीकार करने से ये स्याद्वादी कहाते हैं इनका विशेष वर्णन 'सर्वदर्शनसंग्रह' में देखो जो जैन संसार का त्याग करते हैं वे 'यति' और जो गृहस्थाश्रम में रहते हैं वे 'श्रावक' कहाते हैं जैनों में दिगंबर और श्वेतांबर ये दो मुख्य पंथ हैं, इनके उपपंथ और भेद विस्तार के भय से यहां नहीं लिख सकते

बौद्धमत का दिग्दर्शन

इस मतके आदि प्रवर्तक कपिल वस्तुके गौतम कुलके शाक्य राजा शुद्धोदन के पुत्र सिद्धार्थ हैं, इस मतमें प्रत्यक्ष और अनुमान ये दो प्रमाण मानेगये हैं, चार भावना से पुरुषार्थ की प्राप्ति मानीजाती है यथा- "सब क्षणिक है, सब दुःख है, सब स्वलक्षण है (एक जैसा दूसरा नहीं) सब शून्य है, भावमात्र सत् भी नहीं है, असत् भी नहींहै, सदसत् नहीं है ऐसा भी नहीं है, यह अनिर्वचनीय और निस्स्वभावहै एकही गुरुके एकही उपदेश पर चार शिष्योंने चार प्रकारके सिद्धान्त बांधे, यथा सौत्रान्तिक तो बाह्यवस्तु को केवल शून्य नहीं मानते परन्तु उसको अनुमेय मानते हैं और वैभाषिक, बाह्यपदार्थ को प्रत्यक्ष मानते हैं और सविकल्प ज्ञानको अप्रमाण और निर्विकल्प ज्ञान को प्रमाण मानते हैं योगाचार, अज्ञात के ज्ञान की प्राप्ति के लिये पूछने को "योग" और गुरु के कथित अर्थ के अंगीकारको "आचार" कहते हैं, चारों भावना को निर्वाण का हेतु मानते हैं और बाह्य पदार्थ को शून्य मानते हैं परन्तु भीतर अर्थ-बुद्धि का स्वीकार करते हैं माध्यमिक, एकही पदार्थ में भिन्न भिन्न मनुष्यों की भिन्न भिन्न कल्पना होने से पदार्थ मात्रको केवल शून्य रूप मानकर सर्व शून्यत्व का अंगीकार करते हैं बौद्धोंमें यही चार भेद हैं जिनके सिद्धान्त ऊपर लिखे अनुसार हैं, इनका अधिक विवेचन स्थानाभाव के कारण यहां नहीं होसकता॥

॥ चार्वाक मतकी संक्षेप सूचना ॥

इस मतका आदि प्रवर्तक बृहस्पति कहा जाता है, इसमें ज्ञान साधन के लिये केवल प्रत्यक्ष प्रमाण मानाजाता है, अनुमान और शब्द प्रमाण को नहीं मानते, अतः ईश्वर और परलोक प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध न होने के कारण ये इन दोनों को नहीं मानते, सृष्टिको स्वभाव से मानकर इसका कोई कर्ता नहीं मानते, आत्मा को देहसे अभिन्न मानकर देहके सुखकोही पुरुषार्थ मानते हैं और मरनेकोही मोक्ष मानते हैं, इसी मतका दूसरा नाम लोकायत है (लोक में फैलाहुआ) अर्थात् इसमें अर्थ और काम की प्राप्ति ही पुरुषार्थ है और इन दोनों की कामना लोक में स्वतः और सर्वत्र देखीजाती है इनके सिद्धान्तके कुछ श्लोक संसारमें प्रसिद्ध हैं उनमें से तीन श्लोक पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे लिखते हैं॥

श्लोक-त्रयो वेदस्य कर्तारो भांडधूर्त निशाचराः। जर्फरी तुर्फरीत्यादि पण्डितानां वचः स्मृतम् ॥ १ ॥

यावज्जीवं सुखं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पिबेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥ २ ॥

पतिहीना तु या नारी पत्नीहीनश्च यः पुमान्। उभाभ्यां स्वच्छन्दाभ्यां न दोषो मनुरब्रवीत्॥ ३ ॥

बौद्ध२ तहाँ चउ४ भेद बलि, इम नास्तिक छ६हि एहु ॥७५॥
सौत्रांतिक१ वैभाषिक२ रु, योगाचार३हु आहि ॥
चउम४ माध्यमिक४ च्यारि४ही, सौगत सून्य समाहि ॥७६॥
लि३ प्रथम१ श्रुति कहिय तहँ, सहँसअसी८०००० श्रुति मानै ॥
कर्म१ धर्म२हेतुक करन, पहिलो१ यह सोपानै ॥ ७७ ॥
निजमति बोध१ रु भक्ति२ जुग२, पापहेतु प्रकटैन ॥
तिन अध्वग अंधन तरन, यह१ दिखात श्रुति अैन ॥७८॥
कर्म उचित करतहि करत, इहिँ मग अध्वग आइ ॥
गम्य सुद्धमति व्है गहत, बहु भव मिजल बिताइ ॥७९॥
जे संसृति सन बिरत जन, स्वसुखहिँ जानि सकैन ॥
पथ तिन्ह मध्य२ उपासना२, प्रतिगति इमहु पकैन ॥ ८० ॥
यह अक्खत सोलहसहँस१६०००, श्रुति द्वितीय२ सोपान ॥
जन्म१ मरन२ औषध यह२हु, प्रभुदासत्व प्रधान ॥ ८१ ॥

चार्वाक है इन्हीं छहों को नास्तिक जानो ॥ ७५ ॥ सौत्रान्तिक, वैभाषिक, योगाचार और माध्यमिक ये चारों ही १ बुद्ध के २ शून्य भेद में समाजाते हैं ॥७६॥ अब वेद के उपरोक्त तीन मार्गों को कहते हैं कि प्रथम कर्मकांड पर कर्म और धर्म करने के निमित्त अस्सी हजार ३ गणनावाली श्रुतियां हैं जो यह ४ पहिली सीढी है ॥ ७७ ॥ पाप के कारण जिनकी निज बुद्धि में ज्ञान और भक्ति प्रकट नहीं होवे उन ससारी अंधे पथिकों के तिरने के लिये वेद यह मार्ग दिखाता है ॥ ७८ ॥ ५ पथिक (संसारी) इस मार्ग पर आकर उचित कर्म करते करते ७ कई जन्मों की मंजिलों को बिताकर निर्मल बुद्धि होकर ६ पहुंचने योग्य स्थान (मुक्ति) को पहुंचता है ॥ ७९ ॥ जो मनुष्य ८ संसार से तो विरक्त हैं परन्तु ९ आत्मसुख(आत्मज्ञान)को नहीं जान सकते उनके लिये बीच का मार्ग उपासनाकांड (भक्ति) है जिससे भी मुक्ति होती है परन्तु उपरोक्त मार्ग के अनुसार एक ही जन्म में १० निश्चय ही मुक्ति होवेगी ऐसा परिपक्व नहीं होता क्योंकि इसमें द्वैत भाव रहता है ॥ ८० ॥ ११ इस दूसरी सीढी को सोलह हजार श्रुतियां कहती हैं जिसमें १२ ईश्वर का दास भाव प्रधान होने से यह भी जन्म मरण की औषधि है ॥ ८१ ॥

च्यारिसहँस४००० खिल श्रुति चवहिं, ब्रह्म१ जीव२ इक बोध॥
आरोहन तीजो३ यहै, रचन जहँ थिति रोध ॥ ८२ ॥
पहिली१ सीढी कर्म१ पर, स्मृति१ पुरान२ सब सार्थ ॥
वामा१दिक भ्रामक बहुरि, पथ जिहिं निंद्य अपार्थ ॥८३॥
भक्ति२ अनन्या भाखियत, सुभ दूजो२ सोपान ॥
पंच५रात्र मुख्य ताहि पर, तान्त्रिक ग्रंथ वितान ॥ ८४ ॥
साधत यहहु उपासना२, प्रभु व्है भक्ति प्रसन्न ॥
रचत भक्त उर बोध रवि, आकृत सब करि अन्न ॥ ८५ ॥
तत्व१ बोध बिनु मुक्ति२ तिय, भोगी इतर भिरैंन ॥
सततं पुकारत वेदसिरं, बारबार यह बैन ॥ ८६ ॥
इहिं तीजे३ आरोहै पर, श्रुतिसिर१ प्रमिति असेस ॥
व्यासस्त्र१ तिनपर बहुरि, योग२ सांख्य३ त्रिक३ एस ॥८७॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ बुन्दीन्द

१ बाकी की चार हजार श्रुतियां ब्रह्म और जीव के एक होने का ज्ञान कहती हैं यह २ तीसरी सीढी है जिसमें रोध की रंच मात्र भी रुकावट नहीं है ॥ ८२ ॥ कर्मकांड रूप पहिली सीढी पर स्मृति और पुराण हैं सो तो सार्थक (सत्य) हैं फिर जो वाम (कौल) मार्ग आदि ३ भ्रमोत्पादक मार्ग हैं सो निन्दनीय और ४ अर्थशून्य (झूटे) हैं ॥ ८३ ॥ ५ जिसमें अनन्या भक्ति [भक्त को जिसके समान संसार में कोई अन्य पदार्थ नहीं दीखता] होवे यह श्रेष्ठ दूसरी सीढी है जिस पर ६ नारदपंचरात्र आदि तान्त्रिक ग्रंथों का ७ विस्तार है ॥ ८४ ॥ इस उपासना के साधने की भक्ति पर ईश्वर प्रसन्न होकर आकारवाले सब पदार्थों को ९ भक्षण (नष्ट) करके भक्त के हृदय में ८ ज्ञान रूपी सूर्य को उदय करता है ॥ ८५ ॥ तत्वज्ञान के बिना ११ अन्यभोगी १० मुक्ति रूपी स्त्री से नहीं मिलसकता सो यह वचन १३ उपनिषद् १२ निरंतर (बारबार) पुकारते हैं ॥८६॥ इस तीसरी १४ सीढी पर १५ प्रमाण युक्त सब उपनिषद हैं और उन पर फिर व्याससूत्र (वेदान्तसूत्र) योग और सांख्य ये तीनों हैं॥ ८७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुन्दी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, रावराजा रामसिंह का बुंदी की गद्दी पर बैठना १

रामसिंहचरित्ने रावराजारामसिंहपट्टोपवेशन१ ससोदरराबराजाविवाहसन्तानवर्णन २ रामसिंहश्रेष्ठशिक्षाश्रवणपण्डितसकाशधर्मवर्त्मप्रश्नवर्णनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥

आदितः त्रिषष्ट्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३६३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

उत्तरमीमांसा१ इहाँ, प्रथम१ उक्त सोपान ॥
यह १ हि मुक्ति फल याहितैं, मुख्य वेद सिर मान ॥ १ ॥
बाक्य तत्वमसि१ मुख बदत, जीव१ ब्रह्म१ इक जत्थ ॥
सत१ अनंत२ चित३ बोध४ सुख५ सत्य६ असंग ७समत्थ॥२॥
सब प्राकृत३२ कल्पित ४असत, जिम गुन१ माँहिं ५भुजग२॥
केवल यह मन कल्पना, इक१ खिल ६आप१ अभंग ॥३॥

पट्पात् ॥

ब्रह्म स्वसुख प्रतिबिंब१ सहित जो प्रकृति२त्रि३ गुन सम ॥
अधिष्टान३ जुत यह२ हि ईस२ कहियत असुधोपम ॥

भाइयों सहित रावराजाके विवाह और सतानों का वर्णन२ रामसिंह का श्रेष्ट शिक्षा को सुनना और पण्डितों से धर्म मार्गों के पूछने के वर्णन का प्रथम मयूख समाप्त हुआ ॥१॥ और आदि से तीन सौ तेसठ ३६३ मयूख हुए ॥
यहां १ उक्त (तीसरी) सीढी पर उत्तरमीमांसा वेदान्त प्रथम है इसीमे मुक्ति रूप फल मिलता है इसी कारण से उपनिषदों में इसको मुख्य माना है ॥१॥
जहां तत्वमसि २आदि वाक्य जीव और ब्रह्म की एकता कहते हैं जिस [ब्रह्म का स्वरूप सत्, अनन्त, चित्, ज्ञान, आनंद, सत्य, असंग और समर्थ है ॥२॥
३सब प्रकृति संबंधी पदार्थ(संसार)कल्पित है४असत (अस्थिर)है जैसे रस्सी में ५ सर्प का होना कल्पित है वैसे ही यह संसार मन की कल्पना है बाकी एक ६ ईश्वर ही अखंड है ॥ ३ ॥ स्वयं सुख रूप ब्रह्म के प्रतिबिंब सहित जो तीन गुणों की [सत्व रज तमकी] साम्यावस्था[एक हालत] है उसीको प्रकृति

सत्व१ विमल माया२ सु तत्थ यह बिंब२ ईस२ तिम ॥
मलिन१ अविद्या२ माँहिं जीव३ तस वस अनेक जिम ॥
माया१ उपाधि ईस्वर२ अवस जीव३ अविद्योपाधि२वस ॥
कारन सरीर१ ताकों कहत अभिमता तँहँ प्राज्ञ१ अस१॥४॥

॥ गीर्वाणभाषा ॥ गुरूपजाति ॥

प्राज्ञ१स्य भोगाय तदीश्वरेच्छया तम प्रधानप्रकृते समुत्थितम् ॥
ख१वायु२तेजो३म्बु४भुव ५समाख्यया शब्दा२दिक५प्राकृतभूतपंचकम्५

॥ आर्या ॥

पञ्चा५ना भूताना सत्वांशे पञ्च ५ बुद्धिकरणानि ॥
श्रोत्र१त्वग्२दृग्३रसन४घ्राण५समाख्यानि जातानि ॥
ते सर्वे सत्वांशैरन्त करणं१ द्विधे२ति वृत्तिभिदा ॥
तत्र विमर्शात्म मनो१ निश्चयवृत्यात्मिका बुद्धि २ ॥ ७ ॥
भूताना५ च रजोंशे ५ क्रमेण पञ्चै५व कर्मकरणानि ॥

ते हैं, अधिष्ठान होने से उसीकी ईश्वर संज्ञा होती है उस माया में उस विशुद्ध आत्मा का बिंब जैसे ईश्वर होता है वैसे ही अविद्या में मैला होकर जीव कहाता है और उस अविद्या ही के वश से वह अनेक होता है, माया उपाधि से ईश्वर स्वतन्त्र है और जीव अविद्या की उपाधि से परतन्त्र है, इसी को कारण स्वरूप कहते हैं, अर्थात् अविद्या में जीव की प्रथम पञ्चनावस्था को कारण शरीर कहते हैं, जीव जब उस कारण शरीरमें अभिमान युक्त होता तब उसको प्राज्ञ कहते हैं ॥ ४ ॥ उस ईश्वर की इच्छा से प्राज्ञ शरीराभिमानी चेतन [जीव] के भोग [सुख दु ख] के अनुभव के लिये तम गुण प्रधान प्रकृति से आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी नामक तत्व और उनके क्रमश शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ये पांच गुण उत्पन्न हुए ॥ ५ ॥ इन पांचों तत्वों के सतोगुण अंशों से क्रमश कान, त्वचा, नेत्र, जीभ और नाक नामक पांच ज्ञानेन्द्रिया उत्पन्न हुईं॥६॥ उन्हीं सतोगुण अंशों से अंत करण हुआ जो वृत्ति भेद से दो प्रकार का है जिनमें विचारात्मक स्थितिवाला मन और निश्चयात्मक स्थितिवाली बुद्धि है ॥ ७ ॥ उक्त पंच महाभूतों के रजोगुण के अंशों

वाक्१पाणि२पाद३पायू४पस्थ५समाख्यानि जातानि ॥ ८ ॥
पञ्च५भिरेव रजोंशैरेतैः प्राणः१ स पञ्च५धा वृत्त्या॥
प्राणा१पान२समानो३दान४व्यानाः५ समाख्याभिः ॥ ९ ॥
धीन्द्रियपञ्चक५कृतिखशरैः५ प्राणपञ्चकै५श्च तथा॥
मनसा१।१६धिया२।१७शरीरंसूक्ष्मंसप्तदशभि१७र्लिङ्गम्॥१०॥
प्राज्ञ१स्तु तदभिमानात्तैजस२सञ्ज्ञामियात्स हि व्यष्टिः ॥
स हिरण्यगर्भ२सञ्ज्ञामेतीश्वर१ एष तु समष्टिः ॥ ११ ॥
ये ऽविद्यावैचित्र्याद्व्यष्ट्यव्यास्ते तु तैजसा२ नाना ॥
सर्वेषां तादात्म्यादीश्वर एकः१ समष्ट्या१रूपः॥ १२ ॥
व्यष्ट्य२भिधानां भुक्त्यै सभोग्य१भोगायतन२मनुष्ठातुम् ॥
पञ्ची५कृतमीशेन प्रत्येकं१ पञ्चकं५ खादि ॥ १३ ॥
द्विदलीकृत्यैकै१कं१ दलमेकै१कं विभज्य च चतुर्धा४ ॥

से क्रमशः वाणी, हाथ, पैर, गुदा और लिंग ये पांच कर्मेन्द्रियां हुईं॥८॥ इन्हीं रजोगुण के पांच अंशों से प्राण उत्पन्न हुआ जो वृत्ति भेद से प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान इन नामों से पांच प्रकारका है॥९॥ पांच ज्ञानेंद्रिय, पांच कर्मेंद्रिय, पांच प्राण, मन और बुद्धि, इन सत्रह से सूक्ष्म शरीर बना जिस का दूसरा नाम लिंग शरीर है ॥१०॥ उस सूक्ष्म शरीर के अहंकार से प्राज्ञ की तैजस संज्ञा हुई सो व्यष्टि रूप समष्टिका अंश अर्थात् एकदेशव्यापीहै और वही ईश्वर हिरण्यगर्भ संज्ञा को प्राप्त हुआ वह समष्टि सर्वव्यापी है ॥ ११ ॥ जो चेतन अविद्या की विचित्रता से व्यष्टि होनेयोग्य हैं वे तैजस अनेक हैं और इन सबका ईश्वर में तद्रूप अभेद होने से समष्टि नामवाला ईश्वर एक है॥१२॥ व्यष्टियों[तैजसों]को भोगके अर्थ भोग्य(भोगने योग्य पदार्थ) और भोगायतन (जिससे भोग भोगेजावैं ऐसा स्थूल शरीर) बनाने के लिये ईश्वर ने आकाश आदि पांचों तत्वों का पंचीकरण किया ॥ १३ ॥ वह पंची करण इस प्रकार से है कि पांचों प्रत्येक तत्व के आधे आधे बराबर दो दो भाग करके उनमें पांचों तत्वों के पांच आधे भागों को तो वैसे ही रहने दिये और बाकी के आधे आधे पांच भागों में प्रत्येक के चार चार विभाग करके फिर इन प्रत्येक पांचों अष्टमांश भागों को उन प्रत्येक अर्ध भागों में ऐसे

भागानपर२दलै२स्तान्सयोज्य च पञ्च पञ्चेति ॥ १४ ॥
तै५र्ग्राण्ड तत्र च भुवन१भोग्य२भोगायतन३मसृजदीश ॥
स्थूले३ हिरण्यगर्भो२ देहे वैश्वानर३त्वमित ॥ १५ ॥
तैजस२सञ्ज्ञा विश्वा३भिधानमीयुर्ह्यविद्यया२ जीवा २ ॥
सुर१नर२तिर्य३क्त्वभिदा परा२ग्दृशोन्तर१स्वगतिमूढा ॥१६॥
कुर्वन्ति कर्म भुक्त्यै कृत्वा कर्माऽपि भुञ्जते तत्तत् ॥
न लभन्ते स१च्चित्१सुख१मनुयान्तो जन्मनो जन्म॥ १७ ॥
स्वस्वहृदादितमिथ्याद्वैत२सदास्था सदैव तप्यन्ते॥
आवर्तादावर्तं यान्तो नद्या यथा कृमय.॥ १८ ॥
सत्कर्मोदर्कवशाद्यो यस्तेषूपदेशमेत्य गुरो ॥
स्वयमद्वैती१भवति हि स स जीवन्मुक्त उद्दिष्ट ॥ १९ ॥

मिलाये कि जिससे आधा तो एक तत्व और आधे में बाकी के चार तत्वों के चार अष्टमांश भाग मिलाकर पूरा तत्व बना दिया जैसे आकाश तत्व के आधे भाग में बाकी चार तत्वों के अर्थात् आकाश के अष्टमांश को छोड़कर शेष वायु, तेज, जल, पृथ्वी, इन चारों का एक एक अष्टमांश आकाश के उस अर्ध भाग में मिलाकर आकाश तत्व को पूरा किया इसी प्रकार के सयोग से पांचों तत्वों का परस्पर पचीकरण किया ॥ १४ ॥ उन पचीकृत पांचों तत्वों से ईश्वर ने ब्रह्माण्ड बनाया, उस ब्रह्माण्ड में चौदह भुवन (लोक) बनाये और उन भुवनों में भोग्य पदार्थ भोगायतन(भोगके घर)अर्थात् स्थूल शरीर बनाये इस प्रकार स्थूल शरीर होने पर हिरण्यगर्भ वैश्वानर सज्ञा को प्राप्त हुआ ॥ १५ ॥ स्थूल शरीरमें अविद्या के कारण तैजस नामवाले जीव विश्व नामको प्राप्तहुए, जो सुर, नर, पशु, पक्षि इन भेदोंवाले बहिर्दृष्टि होने के कारण अन्यतरहृदि (आत्मज्ञान) से मूढ हैं॥१६॥ व जीव भोगके अर्थ कर्म करते हैं और कर्म करके उस उस फलको भोगते हैं, इस प्रकार जन्म जन्मान्तर में फिरते हुए भी सच्चिदानन्द रूप परब्रह्म को नहीं पाते॥१७॥ वे जीव अपने आप हृदयमें ठहराये हुए मिथ्या द्वैत भाव में आस्था रखकर नदी के एक चक्र से दूसरे चक्र में पड़नेवाले कीड़ों के समान सदा ही दु ख पाते हैं ॥१८॥ इन में से जिन जीवों के सत्कर्मों का उदय होता है वे उस कर्मफल के बल से गुरु के उपदेश को पाकर स्वय अद्वैत [अहंब्रह्मास्मि]होजाते हैं वे ही जीवन्मुक्त कहाते हैं ॥१९॥

श्रुतिशीर्षमहावाक्यात्तत्ता१हन्ते२ विहाय तदुपाधी ॥
स१च्चित्सुख१बोधा१त्मन्यस्मितयोना स्थितिः परमा ॥
येशस्येशनशक्तिर्नियामिका सर्ववस्तुजातस्य ॥
चित्प्रतिबिंबावेशाद्विभाति साऽचेतने चैव ॥ २१ ॥
तच्छक्त्युपाधियोगात्सद्ब्रह्मे१श्वेश्वरत्व२मुपयातम् ॥
कोशो५पाधिविवक्षा जीवं२ प्रत्याययति त१द्धि॥ २२ ॥
यो हि पिता१ सुत१योगात् स नप्तृ२योगात्पितामहो१ऽप्येकः१॥
पितृ३योगेन स पुत्रः१ श्वसुरो१ जामातृ४योगेन ॥ २३ ॥
पुत्रा१द्युपाध्यसङ्गे क पिता१ क पितामहा२ङ्गज३श्वसुराः४ ॥
हो२कोश१शक्त्यु२पाधी हित्वा तद्वन्न जीवे१शौ२ ॥ २४ ॥
ईश२श्चिदधिष्टानं१ माया२ मायागतश्च चि.द्बिम्बः३ ॥
जीवश्चिदधिष्ठानं१ लिङ्गतनु२स्तत्स्थचिद्बिम्बः३ ॥२५॥

उपनिषदों [वेदान्त] के महावाक्यों [तत्वमसि] से तरे मेरे पन की उपाधियों को छोड़कर सच्चिदानंद और ज्ञानमय ब्रह्म में अहंकार रहित स्थिति है वही परम मुक्ति है ॥ २० ॥ जो सब वस्तु मात्र को नियम में रखनेवाली ईश्वर की प्रभु शक्ति है वही प्रतिबिंब को पाकर चेतन स्वरूप में भासती (प्रकाशती) है ॥ २१ ॥ उसी शक्ति रूपी उपाधि के सम्बन्ध से सत् रूप ब्रह्म ईश्वर पन को प्राप्त हुआ है और वही (ब्रह्म) पंच कोशों की उपाधि (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय आत्माको आच्छादन करनेवाले ये पांच कोष हैं) योग से जीव भाव को प्राप्त हुआ है, ऐसी प्रतीति कराता है ॥ २२ ॥ जो पुत्र के संबंध से पिता है वही पौत्र के सम्बन्ध से पितामह (दादा) है और वही पिता के संबंधसे पुत्र है और जमाईके सम्बन्धसे श्वसुर है वास्तव में वह एक ही है, परन्तु संबंध भेद से भिन्न भिन्न कहाजाता है॥२३॥ यदि पुत्र आदि उपाधियां न होवें तो कहां पिता, कहां पितामह, कहां पुत्र और कहां श्वसुर है; वैसे ही कोश और शक्ति इन दोनों का त्याग किये पीछे न तो जीव है, और न ईश्वर है अर्थात् दोनों एकही है॥२४॥ चैतन्य का स्थान माया है और मायामें रहनेवाले चैतन्यका प्रतिबिंब है वह ईश्वर है और जहां चैतन्यका स्थान लिंग शरीर है उस लिंग शरीर में चैतन्यका बिंब है वह जीव है ॥२५॥ अन्न (स्थूल

अन्न१प्राण२मनो३बुद्ध्या४नन्दा५रूपेषु पञ्च५कोशेषु ॥
तैरावृत एका१त्मा स्वविस्मृतौ भ्रमति संसारम् ॥२६॥
एवं विचार्य विद्वान्नरस्य नानाभ्रमं सुखमवाप्य ॥
भ्रमनाशावधि दुःखमवगीर्य कूटस्थ आतिष्ठेत् ॥ २७ ॥
अस्य सचिव१सेनान्या२वात्मज्ञाना१रूपसार्वभौमस्य॥
तौ सांख्य१योग२संज्ञौ भेदत्रिक३तः सदस्यभिमतौ ॥ २८ ॥
आत्मसु भेदो१ जगति च तथ्यत्व२मथेश्वरोऽन्य३ इति भेदान्॥
त्यजतश्चेद्भजतस्तौ सम्राजा स्वेन साम्यममुं२ ॥२९॥
धीर्व्याकुला न येषां ये चैक्यज्ञानविस्तृतात्मानः ॥
स्वैकात्मबोध१येव प्राप्यत इति ते सकृत्सुखतः ॥ ३० ॥
येषां बुद्धिर्मलिना ऽनन्तकलुषकर्मभिर्भ्रमोदर्कैः ॥

शरीर) प्राण, मन, बुद्धि, आनंद नामक इन पांच कोशों से ढका हुआ आत्मा जो एक अद्वितीय, ईश्वर से भेद रहित है वह अपने स्वरूप को भूल जाने के कारण उक्त पांच कोशों में आसक्त होकर संसार में भ्रमता है "अन्न जल से उत्पन्न और पुष्ट हुआ स्थूल शरीर अन्नमय कोश है, पांच कर्मेन्द्रियां और पांच प्राण यह प्राणमय कोश है, पांच ज्ञानेन्द्रिया और मन यह मनोमय कोश है, पांच ज्ञानेन्द्रिया और बुद्धि यह विज्ञानमय कोश है, और पुण्य कर्म के फल से दक्षिण अन्तर मुख हुई वृत्ति आनंदमय कोश है ये ही पांच कोश जीव को आच्छादन करनेवाले हैं" ॥ २६ ॥ इस प्रकार विचार करके विद्वान् मानवीय सुख को नाना प्रकार का भ्रम रूप जानकर जब तक भ्रम का नाश नहीं होवे तब तक दुःख सहकर दृढ होकर रहे ॥ २७ ॥ स्वजातीय, विजातीय और स्वगत, इन तीन भेदों की निवृत्ति के वास्ते आत्मज्ञान रूपी राजा है जिसके सांख्यशास्त्र तो प्रधान और योग शास्त्र सेनापति हैं ॥२८॥ आत्माओं में भेद मानना, संसार को सत्य मानना और परमेश्वर को जीव और जगत् से भिन्न मानना, इन भेदों को यदि छोड़ दे तो ये दोनों सांख्य और योग इस जीव को राजा के बराबर आत्मज्ञानी करदेते हैं॥२९॥ जिनकी बुद्धि व्याकुल गड़बड़ नहीं है और जिनकी आत्मा अद्वैत ज्ञान से विस्तीर्ण है वे तुरत सुख पूर्वक एकात्मज्ञान को पाते हैं ॥ ३० ॥ जिनकी बुद्धि भ्रम के फल रूप अनन्त कुत्सित कर्मों से मलिन है उनको प्रथम सांख्य और योग हितकारी

प्राक् तत्र सांख्य१योगौ२ हितौ यथा धीमतां धी ॥
सांख्य१सचिव२योग१चमुपत्रोध१नृप२रयास्त्र१मा ॥
मीमांसन१कणभुजा२ऽक्षपाद३मेतत्त्रयं सर्वम् ॥
धीनैर्मल्यविवृद्धौ केवलमन्त्यत्रिकोऽपयोगोऽत्र ॥
प्राप्ते स्ववीर्यसाम्राज्येऽस्त्र१चमू२दुर्ग३चिन्ता का ॥३३॥
श्रुतिकोदिता तृतीया३ निर्मलतरसंविदध्यगारोह्या ॥
श्रीराम२०१४भूमिभृदियं विद्वद्भिरवाप्यते श्रेढी ॥३४॥

(इतिज्ञानकाण्डम्)

अस्या आदि१र्मध्या२ या श्रेढी सा ह्युपासनो२पाख्या ॥
सारूप्यमेति जीवो विश्रब्धोऽस्यां२ परम्परया ॥३५॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

श्रुति जिहिं जंपित मध्य२ सो, उपासना२ अभिधान ॥
श्रेढी मध्यम२ नृप सुनहु, निखिल पै भक्ति निधान ॥ ३६ ॥
भिधान१ निधान२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

हैं, क्योंकि वे बुद्धि के मल का नाश कर देते हैं ॥३१॥ जिस आत्मज्ञान रूप चक्रवर्ती राजा के सांख्य तो सचिव और योग सेनापति हैं उसके मीमांसा, वैशेषिक और न्यायशास्त्र, ये तीनों क्रम से शस्त्र सेना और गढ हैं ॥ ३२ ॥ इन में पिछले तीनों मीमांसा, वैशेषिक, न्याय केवल बुद्धि की निर्मलता बढाने के उपयोगी हैं सो अपने पराक्रम से साम्राज्य प्राप्त कर लेने पर शस्त्र सेना और किले की फिर क्या आवश्यकता है? ॥३३॥ हे भूपति रामसिंह वेद की कही हुई निर्मल बुद्धिवाले पथिकों के चढने योग्य इस तीसरी सीढी को विद्वान् ही पाते हैं ॥३४॥ यह ज्ञानकांड समाप्त हुआ॥ अब आगे उपासनाकाण्ड कहते हैं॥ इस तीसरे सोपान से पहिले की जो उपासनाकाण्ड नामक मध्य[बीच] की सीढी है इस में भी विश्वास करनेवाला जीव परंपरासे सारूप्य मुक्तिको प्राप्त होता है ॥३५॥ वेद में जिसको उपासना१ नामक मध्यमार्ग कहा है, हे सबके पति और भक्ति के भंडार राजा रामसिंह उस(उपासनाकाण्ड)को सुनो ॥३६॥

अन्न१मय आप१ असग१कौं, सूरिहु जानि सकै न ॥
तेरा सांख्य योग२हुमैं समुझि, हाहा जिनकी व्है न ॥३७॥
मीमांसाऽऽदिक त्रय३ मनन, करिहु न बुद्धि रुकाइ ॥
सगुन ईस तवही समुझि, पटु निश्रेयस पाइ ॥३८॥

॥ षट्पात् ॥

नव९ विध भक्ति२ सुनियत जाहि प्रभुराम२०।१४भक्त जन॥
अविरत कृति आचरहिं मोरि प्राकृत गनतैं मन ॥
श्रवन१ रु कीर्तन२ स्मरन३ अंघ्रिसेवन४ तिम अर्चन५ ॥
प्रनति६ दास्य७ सख्य८ पुनि नवम९ जहँ स्वात्म निवेदन९ ॥
ए भक्ति नव९हि मिलि त्रि३गुन अब सप्तवीस२७भेदन सहित
ताहु भक्त१गुन३भेद करि मान त्रि३विध कहियत महित।३९।

॥ दोहा ॥

सप्तवीस२७ विध भक्ति सब, त्रि३विध भक्त करि ते२७हि॥
कहियत एकासीति८१ क्रम, जिन जिन जिम जिम जेहि४०

॥ षट्पात् ॥

एकरस और असग १ परमेश्वर को २ पंडित भी नहीं जानसकते [यहां 'आप्लृ व्याप्तौ' इस धातु से आप नाम सर्वव्यापी परमेश्वर का है] और खेद है कि सांख्य और योग में भी जिस परमात्मा की समझ नहीं है ॥३७॥ ३ मीमांसा, वैशेषिक और न्याय, इन तीनों के मनन करने से भी जिनकी बुद्धि स्थिर नहीं होती तब वे चतुर सगुण ब्रह्मको समझकर ४ मोक्ष पाते हैं ॥३८॥ हे प्रभु राम सिंह यह भक्ति नव प्रकार की है सो प्रकृति संबंधी (संसारके) पदार्थों से मन को मोड़कर भक्त लोक निरंतर भक्ति का ५ कार्य करते हैं, यह नवधा भक्ति श्रवण, कीर्तन, स्मरण ६ चरणसेवन ७ पूजन ८ वंदन९दासभाव१०सखाभाव और नवमी११अपनी आत्माको ईश्वरके अर्पण करदेना, ये नव ही प्रकार की भक्तियां तीन गुणों से सत्ताईस प्रकार की हैं और इन्हीं तीन गुणों के भेदों से १२ पूजनीय तीन प्रकार के भक्त कहते हैं॥३९॥ ये सत्ताईस भक्तियां तीन प्रकार के भक्तों के साथ मिलकर जिन जिन की जैसे जैसे होती हैं वे सब इक्यासी प्रकार की भक्तियां कहते हैं॥४०॥

सात्विक१राजस२सुनहु भक्त तामस३ त्रय३ भूपति ॥
इन३ करि एकासीति८१ भक्ति पूर्वोक्त त्रिनव२७ भंति ॥
इह हिंसा१ दंभ२ अरु चित्त मच्छरपन३ चाहत ॥
तकैं भक्त तामसिय१ बखि सु कर्ता क्रोधी१ वंत ॥
जस१भोग२भुक्ति३चहि भक्त जव रचत भक्ति वह राजसि
कर्ता१हि तत्थ कामी२कहत बहुत काम जिहिं हिय बसिय४

॥ दोहा ॥

ईश्वरमैं कृति अप्पिकैं१, अघ नासन२ अनुरूप ॥
चाहि सठ्य प्रभु३ आवरैं, भक्ति सात्विकिय३ भूप ॥४२॥
कर्ता१ कँहँ सात्विक३ कहत, सगुन भक्ति ए८१ सर्व॥
कर्ता भक्त सकाम१ हैं, अब निष्काम२अखर्व ॥ ४३ ॥

॥ षट्पात् ॥

प्रभु गुन सुनतहि१ पुरुष जानि अंतरजामी२ जिहिं ॥
बिनु फल३ बिनु उपवधान४ ताक्कि एकाग्र चित्त५ तिहिं ॥

हे राजा वे भक्त १ सतोगुणी १ रजोगुणी और १ तमोगुणी, इन तीन [illegible] के भक्तों से पूर्वोक्त सत्ताईस प्रकार की भक्ति मिलकर इक्यासी ४ [illegible] की होती है सो सुनो कि तमोगुणी भक्त हिंसा, कपट और ५मत्सरता करके भक्ति करता है सो ६ खेद है कि वह भक्ति करनेवाला क्रोधी होता है. और यश, संसार के पदार्थों के भोग और उत्तम भोजन चाहकर भक्ति करता है वह रजोगुणी भक्त है, वह भक्ति करनेवाला कामी कहलाता है कि जिस के हृदय में बहुत कामना बसती हैं ॥ ४१ ॥ हे राजा जो पापों का नाश करने को अपने सदृश सब७कार्यों को ईश्वर में अर्पण करके ईश्वरको आराधनीय जानकर भक्ति करै वह सतोगुणी भक्ति है ॥ ४२ ॥ इसको सतोगुणी भक्त कहते हैं, ये सब इक्यासी प्रकार की सगुण भक्तियां हैं जिनका कर्ता काम सहित है और अब आगे निष्काम(कामना रहित) भक्त कहता हूं जो सबमें ८ बडा है ॥ ४३ ॥ प्रभुके गुण सुनते ही उसे हिरण्यगर्भ (परब्रह्म) और अन्तर्यामी जानकर बिना फल और९आवरण रहित एकाग्रचित्त से देखैं(ध्यानकरैं)

सागर१ गंगा२ सलिल२ जया मन वृत्ति जमावहिं६ ॥
सांत१ दास्य२ रस सख्य३ रु सुचि४ वात्सल्य५ रमावहिं७ ॥
कति जन सु भक्ति निर्गुन१ कहत स्वांत विसय इम कति सगुन२॥
कहिदेहु सकल अभिधान कछु पेम अतुल चहियत प्रेगुन ॥४४॥

॥ मनोहरम् ॥

कहत परिच्छित१ ज्यों श्रवन१ तें आप्तकामं,
उपासुत२ कीर्तन२ ते बिदित वखानिये ॥
स्मरन३ तें दैत्यपति३ लच्छी४ पपसेवन४ तें,
पूजन५ तें पृथु५ से प्रतापी जिम जानिये ॥
वंदन६ ते विदित स्वफल्कसुत६ पायो इष्ट,
दास्य७ तें कपीस्वर७ प्रतीति पहिचानिये ॥
सख्य८ तें किरीटी८ बलि९ स्वात्मके समर्पन९ तें,
बलि६ से विमुक्त पद प्रापित प्रमानिये ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

यह मध्यम७ श्रेढी इहां, भक्ति निरंत हे भूप ॥

और जैसे १ समुद्र में गंगा का जल मिल जाता है तैसे मनकी वृत्तिको परमेश्वर में जमाते हैं और शान्तरस, दास्यभावरस, सखाभाव रस २ निर्मलभावरस और वात्सल्यरस से प्रभुको रमाते हैं इस भक्ति को कितने ही लोग तो निर्गुण भक्ति और कितने ही इसको ३ मनका विषय होने से सगुण भक्ति कहते हैं सो ४ नाम कुछ भी कहो परन्तु तुलना रहित ५ सरल गुणवाला अथवा प्रकृष्ट गुणवाला प्रेम होना चाहिये ॥ ४४ ॥ अब आगे नवधाभक्ति के उदाहरण दिखाते हैं कि श्रवण से राजा परीक्षित ६ स्वरूपानन्द से तृप्त हुआ, ७ कीर्तन से शुकदेव प्रसिद्ध हुआ, स्मरण से ८ प्रह्लाद, चरणसेवन से ९ लक्ष्मी, पूजन से प्रतापी राजा पृथु, वंदन से १० श्वफल्क का पुत्र अक्रूर, दासभाव से ११ हनुमान्, सखाभाव से १२ अर्जुन, १३ फिर आत्मसमर्पण से १४ बलि दैत्य, ये इष्ट फल पाकर १५ मुक्तिको प्राप्त हुए मानो ॥ ४५ ॥ हे भक्ति में १६ प्रीति करनेवाले राजा यह बीचकी सीढ़ी है जिसमें निष्काम भक्ति से विष्णु भगवान् को प्राप्त होकर

हरि पावत निष्काम व्है, अंत मुक्ति अनुरूप ॥ ४६ ॥
तत्वबोध निरतहुं तथा, भक्ति सहित हुव भूरि ॥
सिव१ बिरंचि२ सनका३दि सम, प्रेम द्विधा२ रुचि पूरि॥४७॥
दत्त१ रु कपिल२ बिदेह३ से, बहु रत केवल बोध ॥
व्यापहु भक्तिहु बोधमैं, बोधहि भिन्न बिरोध ॥४८॥

इत्युपास्तिकाण्डम् ॥

गीर्वाणभाषा आर्या ॥

भक्तेः श्रेढी प्रथमा १ यां स्वाधिष्ठाय धर्म्ममात्मीयम् ॥
आद्विजचाण्डालावधि कृत्वा कर्म्माश्नुते परमम् ॥ ४९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

षट्पात् ॥

इहाँ धर्म१ आचरन प्रथम१ श्रेढी जो भूपति ॥
सो सामान्य१ बिसेस२ गिनहु द्वि२बिध२हि श्रुति संगति ॥
आदि१ वर्ण सन एह१ स्वपचँ परजंत समुद्धर ॥

१अंत में सादृश्य मुक्ति होजाती है ॥ ४६ ॥ २ तत्वज्ञान में लगकर भी शिव, ब्रह्मा, सनकादिकों के समान बहुत भक्ति सहित (भक्त) होकर रुचि पूर्वक दोनों (ज्ञान और भक्ति) में पूर्ण हुए हैं ॥ ४७ ॥ ३ दत्तात्रेय, कपिलदेव और ४ राजा जनक जैसे बहुत केवल अद्वैतज्ञान में ही प्रीति करनेवाले हुए हैं और ज्ञान (आत्मज्ञान) में भी भक्ति होती है क्योंकि ज्ञान विरोध से भिन्न है इस कारण उसको भक्ति से भी विरोध नहीं है ॥ ४८ ॥

यह उपासनाकाण्ड समाप्त हुआ ॥ आगे कर्मकाण्ड कहते हैं ॥

भक्ति से पहिले जो कर्मकाण्ड रूपी प्रथम सीढी है जिसको पाकर अपने धर्म में स्थित होकर, कर्म करके ब्राह्मण से लेकर चाण्डाल पर्यन्त परम पद (मोक्ष) को प्राप्त होते हैं ॥ ४६ ॥ हे राजा यहां अपने धर्म में चलने की जो प्रथम सीढी है वह ५ वेद से सम्बन्ध रखनेवाली सामान्य और विशेष, इन दो प्रकार की है जिनमें सामान्य धर्म का भार सब मनुष्य मात्र के ऊपर कहा है सो ६ ब्राह्मण से लेकर ७ चाण्डाल पर्यन्त का ८ उद्धार करनेवाला है और दूसरा

सब मनुजनके सीस भनिय सामान्य धर्म१ भर ॥
दूजो२ विसेस धर्म१ सु वदिय अप्प बरन१ आश्रम२ उचित ॥
परधर्म वरंहु सद्धि रु परत२ निंद्य१हु निज निज होत हित५०
सुनहु धर्म सामान्य१ प्रथम१ सतोष१ छमा२ पुनि ॥
संम३ वहोरि दम४ सौच५सुपहु अस्तेय६ लेहु सुनि ॥
सहित दया७ तिम सत्य८ विहित निज पठन९ विचारहु ॥
आतम१ ब्रह्म२ एकत्व१ धी१० जु दसम१० सु हिय धारहु ॥
सामान्य धर्म लच्छन दस१०हिं मुख्य१ इतर अनुगत२सुमति
आर्जव१ रु मैत्र२ अनसूयता३ क्रम परोपकारा४दि कति५१
दसम१० मांहिं नहि दिपत अर्थ जह तह इम अक्खहिं ॥
सम१ मन मतिजय२सद्धि रु दम१ इंद्रियजय२ रक्खहिं ॥
सौच१ न्हान मुख२ सकल बहुरि अस्तेय१ बखानत ॥
विक्खत परधन विजन जु गन विष्टा सम जानत२ ॥

विशेष धर्म अपने अपने वर्ण और आश्रम के उचित कहा है जिसमें १ दूसरे का धर्म उत्तम होने पर भी उसको साधने (चलने) से गिरजाता है और अपना धर्म निन्दनीय होने पर भी उसमें चलना हित (भला) होता है ॥ ५० ॥ अब सामान्य धर्म सुनो कि प्रथम सन्तोष, फिर क्षमा, २ मनको जीतना, फिर इ-न्द्रियों को जीतना, शुद्धि (पवित्रता) ३ चोरी नहीं करना, दया, सत्य, ४अपने लिये जिसकी विधि होवे उसका पाठ करना ५ अपनी बुद्धि में जीव और ब्रह्म की ५ एकता को धारण करना, यही सामान्य धर्म के दश ७ लक्षण हैं सो मुख्य हैं और हे श्रेष्ठ बुद्धिवाले राजा रामसिंह ८ अन्य ९ सरलता, मैत्री (मित्रता) १० दूसरे के गुण में दोष नहीं लगाना, इस क्रम से कितने ही परोपकार आदि धर्म उपरोक्त दश लक्षणोंवाले धर्म के साथ चलनेवाले हैं ॥ ५१ ॥ ११ उपरोक्त सामान्य दश धर्मों में जिनका अर्थ स्पष्ट नहीं दीखता उनकी व्याख्या करते हैं कि मन और बुद्धि को जीतना सम है, और इन्द्रियों के रोकने का नाम दम है, स्नान आदि सब पवित्रता को शौच कहते हैं, १३ एकान्त में देखेहुए भी पराए धनको विष्टा के समान जानना १२ अस्ते य है, सो इस प्रकार सामान्य धर्म के सब लक्षणों और अपने अपने विशेष

प्रजात्रान१ यजन२ रु पठन३, भोग प्रसक्ति अभान४ ॥
वीरभाव५ वितरन६ विधि सु, बाहुज२ वर्ण विधान ॥ ५८ ॥
अइति१ ईज्या२अध्ययन३, कृषि४ पसुपालन५ कर्म ॥
वानिज्य६हु ए वैश्य३के, धरे सीस खट६ धर्म्म ॥ ५९ ॥
पठन१ निजोचित यजन२ पुनि, वितरन३ शिल्प विधान ॥
त्रि३वरन सेवा५ कारुता६, पज्ज४ छ६ धर्म प्रमान ॥६०॥

॥ मनोहरम् ॥

वरन चतुष्क४कै ए खट६ खट६ कर्म तहँ,
तीन३ तीन३ जीवन उपाय अवधारिये ॥
खट६में सम तय३सौं विप्र१ अरु अप्रसक्ति१,
त्रान२ सूरता३सौं जीवे बाहुज२ विचारिये ॥
वैश्य३ पसुत्रानै१ कृपिकर्म२ रु वनिज३तासौं,
सेवा१ शिल्प२ कारुता३सौं पज्ज प्रतिपारिये ॥
गेह१ देह२ मडन१।२ सुबैन३ पतिसेवा४ भक्ति५,

१प्रजाकी रक्षा करना, यज्ञ करना, पढना, भोगोंमे आसक्त नहीं होना, और२ दान देना, ये छ ३ क्षत्रियों के कर्म हैं ॥ ५८ ॥ ४ दान देना, ५ यज्ञ करना, पढना, खेती करना, पशुओंका पालन करना और व्यापार करना, ये वैश्यों के मस्तक पर छः धर्म रक्खे हैं॥५९॥ पढना, ६ अपने योग्य यज्ञ करना, दान देना, शिल्प कर्म(दस्तकारी करना, तीनों वर्णोंकी सेवा करना और७कमीयापन करना अथवा कारीगरी करना, ये छ धर्म ८ शूद्रों के हैं ॥ ६० ॥ चारों वर्णों के ये छ छः कर्म हैं जिनमें से तीन तीन कर्म ९ जीविका के उपाय के जानो उपरो क्त छ. कर्मों में से पढाना, यज्ञ कराना और दान लेना, इन तीन कर्मों से ब्राह्मण जीविका करै और १० भोगा में अनासक्ति, रक्षा और वीरता से ११ क्षत्रिय जीविका करै, इसी प्रकार १२पशुओं की पालना, १३खेती करना और व्यापार करना, इन से वैश्य जीविका करै और सेवा करना (नौकरी), शिल्प, कारीगरी वा कमीयापन से १४ शूद्र अपना पालन (जीवन) करै, घर और शरीर को शोभायमान रखना, श्रेष्ट(मीठे) वचन बोलना, पति की सेवा करना भक्ति करना और सम्पूर्ण वस्तुओं को शुद्ध रखना, ये मुख्य छः काम स्त्रियों

वस्तुसुद्धि६ सुरूप छद्महि नारिन निहारिये ॥ ६१ ॥

॥ षट्पात् ॥

आश्रम४ धर्म्महु अखिल धरहु अव कर्णा धराधव ॥१॥
पोते त्रि३वर्णज पाइ भनित बय परि द्वितीय२ भव ॥
अजिन१ जटा२ उपवीत३ मेखला४ दंड५ कमंडलु६ ॥
सविधि धारि दर्भ सय ख्यात गुरु गेह बसैं खलुँ ॥
मंगि सु द्वि२संध्य भिक्षा मुदित आनि निवेदहिं गुरु अरथ॥
ठहै तस नियोग तो तास ठहै असन१नतो उपवास२अथ६२
इंद्रिय जित१ मितं असन२ सौच३ श्रद्धा४ नति संजुत ॥
पुनि गुरु इच्छा पठन६ प्रथम पठनीयं निगम७ नुंत ॥
पठन आदि१ अंत२ पुनि प्रनति मंडहिं श्रीगुरु पय८॥
जुग संध्या मौन९ जिम नियत सावित्री जप१० नय ॥
सायं१प्रभात१गुरु१विष्णु२शिव३अर्क४कृसानु५उपासना११

के जानो ॥ ६१ ॥ १हे राजा रामसिंह अब आश्रम धर्म भी सब सुनो जिनमें प्रथम ब्रह्मचारी का धर्म कहते हैं कि तीनों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) के २ बालक यज्ञोपवीत लेने की कही हुई अवस्था में ३ द्विजन्मा होवैं अर्थात् यज्ञोपवीत लेवैं और ४ मृगचर्म, जटा, जनेऊ ५ कटिमेखला (मौंजी अर्थात मूजका कटिसूत्र जिसको लोकमें करधनी वा कणगती कहते हैं) दण्ड कमण्डलु (जलपात्र) इनको विधि पूर्वक धारण करके ६ दर्भ (डाभ) को हाथ में लेकर ७ निश्चय ही प्रसिद्ध गुरु के घर में बसै और ८दोनों सन्ध्या अर्थात् प्रात काल और सायंकाल को भिक्षा मांग कर प्रसन्नता पूर्वक गुरु की भेट कर देवै जो गुरु की ९ आज्ञा होवै तो खावै और आज्ञा नहीं मिले तो वहां उपवास ही करै॥ ६२ ॥इन्द्रियों को जीतै १०प्रमाण से भोजन करै शौच, श्रद्धा और नम्रता युक्त होकर फिर गुरु की इच्छा होवै तब पढै उसमें प्रथम ११ पढने योग्य और १२स्तुति योग्य वेद पढै पढने के आदि और अन्त में गुरु के चरणों में नमस्कार करै दोनों सन्ध्याओंके समय मौन रक्खै और नियम पूर्वक १३गायत्री जप करै यही ब्रह्मचारीकी नीति(न्याय)है सन्ध्या समय और प्रभात समय दोनों समय में गुरु, विष्णु, शिव, सूर्य और १४ अग्नि की उपासना

स्रज१मधु२पल३भूखन४गध५सह वर्जहिं नारिन बासना॥६३॥

॥ दोहा ॥

इम गुरु गृह पढि आयुको, वटि चतुर्थ४ विताइ ॥
गुरु अभीष्ट दे स्वीय गृह, उपनयं विरचहिं आय ॥ ६४ ॥
जो असपिंडा१ जननि कुल, स्वक असगोत्रा२ सुद्ध३ ॥
क्रम सवर्णा४ असी कनी, व्याहिं सु वट्ठ१ प्रबुद्ध ॥ ६५ ॥

॥ षट्पात् ॥

विवहिं नारि गृह वसहिं पच५ सूना जाके जिम ॥
कघर्ट१ चुल्लि२ वेहुकरिय३ आदि कडंन४ घरट्ट५ इम ॥
पचन मेटन पाप पच५ मख नित्य गृही पर ॥
पाठन पठन१ प्रसिद्ध ब्रह्ममख२ यह वसुधांवर ॥
बलि सुनहु श्राद्ध तर्पन नृपति मख२ पेत्र२ रु हवनादि३मत॥
सुरमख३रु भूतमख४वलि सुनहु नृमख५अतिथि पूजन५नियत॥६६॥

॥ दोहा ॥

करै १पुष्पमाला, शहत, मांस, भूषण, सुगन्धि पदार्थ और स्त्रियोंकी संगति, इन सबका त्याग करै ॥ ६३ ॥ इसप्रकार गुरु के घर में पढने में अपनी आयुका चौथा भाग बिताकर गुरु को २ मनवांछित देकर अपने घर पर आकर ३ उपनयन संस्कार (ब्रह्मचारी का विद्या की समाप्ति का संस्कार विशेष) करै ॥ ६४ ॥ जो अपनी माता के कुलकी ४ सपिण्डी में नहीं होवे (माता के कुलकी सपिंडी पांच पीढी पर्यन्त और अपने कुलकी सपिंडी सात पीढी पर्यन्त मानी जाती है) और ५ अपने गोत्रकी नहीं होवे उस शुद्ध और अपने वर्ण की कन्या को क्रम से विद्वान् ६ ब्रह्मचारी व्याहे ॥ ६५ ॥ स्त्री को व्याहकर घर में रहता है तब उस गृहस्थी के पांच ७ हिंसा होती हैं ८ जल का घड़ा ९ चूल्हा १० बुहारी ११ ऊखल और १२ घरटी, इन पांचों का पाप मिटानेको गृहस्थ पर नित्य पांच यज्ञ लगेहुए हैं तहां १४हे राजा रामसिंह पढना और पढाना यह तो १३ ब्रह्मयज्ञ है, श्राद्ध और तर्पण यह पितृयज्ञ है, यज्ञ आदि १५ देवयज्ञ है, बलि देना भूतयज्ञ है और अतिथि पूजन १६ मनुष्य यज्ञ नियत है ॥ ६६ ॥

क्रम करि करि मख पंचक५ रु, जति१ बटु२ अतिथि३जिमाइ
ज्यौं सब निज४न जिमाइकैं, खिल तव दंपति२ खाइ ॥६७॥
जाम१ रहत निस नित्य जगि, धर्म१ अर्थ२ गति ध्याइ ॥
सौच१ न्हान२ संध्यादि३ सब, बिधिसह कृत्य बनाइ ॥ ६८ ॥

॥ षट्पात् ॥

महिला ऋतु प्रतिमास घस्र चउ अग्ग जु लंघत ॥
अहं बारह१२ सो अधम बालहंताहि होत बत ॥
अष्टमि८।१ भूत१४।२अमा३०।३रु अखिल चंद्रा१४।४एकादसि११।५
इन्ह५।८ तजि अरु खिल२२ अहन मिलहिं तिपसन वांछा वसि ॥
गर्भ१ लखि करहिं तबतैं गृही२ संस्थावधि संस्कार सब ॥ १६ ॥
गृहि२ धर्म एह लाघव गदित अरु वैखानसं३ धर्म अब ॥ ६९ ॥

॥ दोहा ॥

आयु भाग दूजो२ सु इम, व्याहि रु गेह बिताइ॥
पुत्रन दै सब तब बिपिन, जावैं दंपति२ जाइ ॥७०॥

क्रम पूर्वक ये पांचों यज्ञ करके सन्न्यासी १ब्रह्मचारी और अतिथि को भोजन कराके और वैसे ही २ अपने सब लोगों को भोजन कराकर जो ३ शेष बाकी) रहै सो आप स्त्री पुरुष भोजन करै॥ ६७ ॥ एक प्रहर रात्रि बाकी रहते नित्य जगकर, धर्म और अर्थ की रीति सोच (विचार)कर फिर शौच, स्नान, सन्ध्या आदि कर्म विधि पूर्वक करै ॥ ६८ ॥ प्रतिमहीने४ स्त्री की ऋतु (रजस्वलापन)के शुद्ध हुए पीछे आगे के चार ५ दिनों को लांघ कर इसके अनन्तर बारह ६ दिन तक ऋतु काल रहता है [यहां पहले चार दिनों का इस कारण से त्याग है कि उन चार दिनों में गर्भाधान होने से बालक अधम और हिंसक पापी होता है] और अष्टमी, चतुर्दशी, अमावास्या, पूर्णिमासी और एकादशी, इन तिथियों को छोडकर बाकी सब ७ दिनों में इच्छा पूर्वक स्त्री से मिलै और गर्भ धारण किया हुआ देखकर गृहस्थ, गर्भाधान से लेकर ८ मरण पर्यन्त के सब संस्कार करै, यह गृहस्थ का धर्म संक्षेप से ९कहा है और अब१० वानप्रस्थ का धर्म कहता हूं ॥ ६९ ॥ इस प्रकार व्याह करके आयु के उस द्वितीयभाग को घर में बिताकर सब पदार्थ पुत्रों को देकर स्त्री और पुरुष दोनों ११ वन

पत्नी व्है संतति प्रिया, जब गृह छोरैं जाहि ॥
विपिन नतो उभय२ हि वसैं, तकि अकिंचनताहि ॥७१॥

षट्पात् ॥

केवल रहन कृसानु उँटज१ कंदर२ वा आश्रय ॥
नख१ रु रोम२ मल३निबहि सहै सीता१दि३ऋतु३।द्दन रंय॥
नीवारा१दिक वन्य अन्न१ फल२ पुष्प३ कंद४इम ॥
पुरोडास१ चरु प्रमुख करैं सह क्रम तिनसों तिम ॥
अवसेसको सु विरचैं असन बेर इक१ सबकारि बिहित॥
नीवार१आदि४जव होइ नव चतुर तजै तव पुब्ब चित॥७२॥

॥ पादाकुलकम् ॥

जो गिनि विहितै न्हान डारैं जल१, मंजन करि खोलैं न देह मल
कृति १ रु वल्कल२ दंड३ कमंडलु४, खिंच दर्भा१दि५ रहैं धारत
खलुँ ॥ ७३ ॥

में जाकर जोवे ॥ ७० ॥ यदि स्त्री १ संतान में प्रेम करनेवाली होवे तो उसको घर में ही छोड़ें और वह भी संतान का स्नेह छोड़ देवे तो उसको २ कामना रहित देखकर स्त्री पुरुष दोनों ही वन में वास करें ॥ ७१ ॥ केवल ३ अग्नि रखने के लिये ४ झोंपड़ी (टपरी) वा गुफा का आश्रय लेवे, नख और केश नहीं काटे, शरीर का मैल नहीं उतारे, सर्दी गर्मी आदि ऋतुओं के ५ वेग को सहन करे ६ तृणा से निकलनेवाले जंगली धान्य(सावा, मलीचा आदि अकृष्ट धान्य) आदि अन्न और फल, फूल, कंद, ७ जवके चूनकी रोटी, होमने के अन्न आदि से क्रम पूर्वक नित्य होम करके 'यहां चरु शब्द की संगति से होमका ग्रहण है" उचित कार्य करे होमसे बाकी बचे उसको दिनमें एकवार भोजन करे और ८ जब सावा, मलीचा, मुरद आदि वन के अन्न नवीन उत्पन्न होजावें तब वह चतुर पहिले का संग्रह किया हुआ अन्न त्याग देवे ॥ ७२ ॥ ९ विधि समझकर शरीर पर स्नान का जल डाले परन्तु १० मर्दन (मालिस) करके पसीना नहीं उतारे अर्थात् रगड़कर शरीर का मैल नहीं उतारे १२ डाभको आदि लेकर ११ मृगचर्म, वृक्षों की छाल(भोजपत्र आदि) दंड (हाथमें रखने की यष्टि, लकड़ी) कमंडलु (जलपात्र) १३ निश्चय ही धारण करे ॥७३॥

॥ दोहा ॥

इम तृतीय३ निज आयुको, बन रहि बंट बिताइ ॥
वैखानस३ सन्न्यास४ बिधि, पुनि सद्दैं खिन पाइ ॥ ७४ ॥
जोन बिरति तो वह जबहि, रचि अनसन बिधि एह ॥
तत्व२४न तत्व२४मिलाइ तनु, छोरैं छम लहि लाह१।२५॥७५॥
ब्रह्मचर्य१हीतैं बिरति, वा गृह१हीतैं आइ ॥
तो जुग२ आश्रम मध्य तजि, जती४ द्रुतहि होजाइ ॥७६॥
रहैं दिगम्बर १ बा धरैं, पट्ट कौपीन पिधान२ ॥
वस्तु कमंडलु१ दंड२ बिनु, न इतर जास निधान ॥ ७७ ॥
बिधि न सिखा१ सूत्र२हु वहन, तो को बिधि खिल तास॥
मिटन अहं१ ममता२ अवधि, अटैं असंग उदास ॥ ७८ ॥

॥ षट्पात् ॥

संगति भिच्छा समय करैं खिन वसति अटन क्रम ॥
आप१ ब्रह्म२ जग३ इक्क१ भेद बिनु पिक्खि छोरि भ्रम ॥

इसप्रकार अपनी आयु का तीसरा भाग वन में रहकर बितावै वह वानप्रस्थ समय पाकर सन्न्यास साधै ॥७४॥ यदि वानप्रस्थ अवस्था में १उपराम [वैराग्य] नहीं होजावै तो अथवा जिनको वानप्रस्थ अवस्था में ही वैराग्य होजावै तो वहीं पर २ अन्न जल का त्याग करके ४वह समर्थ तत्वों में तत्व मिलाकर लाभ के साथ३शरीर छोडै ॥७५॥ यदि ब्रह्मचर्य से वा गृहस्थ से ही ५वैराग्य उत्पन्न होजावै तो दो वा एक आश्रम बीचमें छोडकर वहींसे६शीघ्र सन्यासी होजावै ॥७६॥ सन्न्यासी या तो नग्न रहै या ७ ढाकने को कौपीन (लंगोटी) रक्खै, उस संन्यासी के कमंडलु और दंड, इन दो वस्तुओं के विना और कोई८धन नहीं है ॥ ७७ ॥ उसको चोटी और ९ जनेऊ धारण करने की भी विधि नहीं है तो फिर बाकी की उसके लिये कौनसी विधि होसकती है अर्थात् कोई वस्तु रखने की विधि नहीं है, जहां तक १०अहंता और ममता नहीं मिटै तहां तक वह (सन्न्यासी) ११ संग रहित और उदास होकर विचरै (फिरै) ॥७८॥ १३ बसती की १२ संगति(साथ)भिक्षा मांगने के समय क्षण मात्र करै, आत्मा, ब्रह्म और

ज्ञानकाड३ जो गदितं धरहिँ चर्या अवधूत सु ॥
जोजो जहँ जहँ जास पाय परसैं व्है पूत सु ॥
सुप्ति१ प्रबोध२ बिच सन्धिमैं जो थिति सो निज जानिकैं ॥
जो रहैं मुक्ति१ बंधन२ जुगरहि मायामात्र प्रमानिकैं॥७९॥

॥ दोहा ॥

नहि निरोध१ उतपत्ति२ नहि, बलिं न साधक३ न बद्ध४ ॥
अरु न मुमुक्षु५ न मुक्त६ इह, लब्धहि विस्मृत लब्ध ॥८०॥
ए वरन४आश्रम४धर्म१ इम, सुभ सामान्य१ बिसेस२ ॥
अर्थ२ राजनय सुनहु अब, नयपटु राम२०।५ नरेस ॥८१॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ बुन्दीन्द्र रामसिंहचरित्रे रावराजारामसिंहार्थज्ञानकाण्डोपासनाकाण्डकर्मकाण्डसहितवर्णाश्रमधर्मश्रावणं द्वितीयो मयूख ॥२॥

आदित चतुःषष्ट्युत्तरत्रिशततमो मयूख ॥३६४॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

जगत्, इनको भ्रम छोड़कर भेद भाव रहित एक जाने १ जो ज्ञानकाण्ड में कही है उस क्रिया को धारण करे वही अवधूत (सन्यासी) है, उस सन्यासी के जहां जहां जो जो चरणों को स्पर्श करता है वह वह २ पवित्र होता है, सुषुप्ति और जाग्रत् अवस्था की २ संधि में जो स्थिति है वही अपनी स्थिति जानकर बंधन और मोक्ष दोनों को माया मात्र मानकर रहता है ॥ ७९ ॥ नहीं तो नाश है, नहीं उत्पत्ति है और न साधन करनेवाला है, न कोई बंधन है, न मुक्ति की इच्छा करनेवाला है और न मुक्ति है, जो मिलता है वह केवल विस्मृति (आत्मस्वरूप को भूलना अर्थात् अज्ञान) से मिलता है ॥८०॥ इस प्रकार सामान्य और विशेष दो प्रकार के श्रेष्ठ वर्णाश्रम धर्म हैं हे नीति चतुर राजा रामसिंह अब पुरुषार्थवालो ५ राजनीति सुनो ॥ ८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुंदी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, रावराजा रामसिंह को ज्ञानकाण्ड, उपासनाकाण्ड और कर्मकाण्ड सहित वर्णाश्रम धर्म सुनाने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ॥२॥ और आदि से तीन सौ चौसठ ३६४ मयूख हुए ॥

(दोहा)

नृप१ अमात्य२ मंत्री३ रु निधि४, देस५ दुर्ग६ बल जुद्ध॥
अंग सप्त७ वपु राज्य ए, स्वामी१ अब तहँ सुद्ध ॥ १ ॥
सक्ति तीन३ खट६ गुन समुझि, च्यारि४ उपाय विचारि।
नृप१ जु वहै इन१३को नियत, रहै अजेय सु रारि ॥ २ ॥
निज वस१ सो उत्तम१ निपुन, मध्यम२ दुव२ वस मान ॥
विक्खहु अधम३ अमात्य वस३, स्वामी१ त्रि३विध सु जान॥३॥

पज्झटिका ॥

ए तीन३सक्ति समुझहु अधीस, इन३ करि जिम गंजत रावन ईस॥
सबसिर अमोघ सासन१विसेस, अवनीमहेन्द्र प्रभुसक्ति१ एस॥४॥
उपजै जहँ मंत्र५ जु पंच५ अंग, सो मंत्रसक्ति२ नृप नय प्रसंग॥
उच्छाह होइ उद्यम३ असेस, उच्छाहसक्ति३ इम सो रैसेस॥५॥
अब सुनहु मंत्रके पंच५ अंग, ॥
इक१ इष्ट काज साधन उपाय१, दूजो२समर्थ तम व्है सहाय॥ ॥

राजा, अमात्य, मंत्री, ? कोश[खजाना], देश, गढ़ और ? सेना ये राज्य के सात अंग जानो. जिनमें प्रथम स्वामी [राजा] का शुद्ध लक्षण कहते हैं ॥ १ ॥ कि तीन शक्ति, छः गुण और चार उपाय, इनको विचारकर जो राजा धारण करता है वह ३ निश्चय ही ४युद्ध में अजेय रहता है ॥२॥ जो राजा५ अपने ही वश में रहता है वह तो उत्तम है, और जो ६ अपने और अमात्य, दोनों के वश में रहता है वह मध्यम है, और जो केवल ७ अमात्य के ही वश में रहता है वह अधम है सो हे सुजान[रामसिंह]इसप्रकार स्वामी तीन प्रकार का जानो ॥ ३ ॥ हे स्वामी ये ही तीन शक्ति जानो. जिनसे स्वामी सब को दबाता है ८ सबके ऊपर अमोघ[पीछी नहीं फिरनेवाली] आज्ञा होवे उसका नाम९ हे राजा रामसिंह, प्रभु शक्ति है अथवा राजा की यह प्रभु शक्ति है ॥ ४ ॥ जिस मंत्र [सलाह] में १०पांच अंग उत्पन्न होवैं उसको ११ नीति के प्रसंग से राजा की मंत्रशक्ति कहते हैं और सम्पूर्ण उद्यमों में उत्साह होवे उसको १२ राजा की उत्साह शक्ति कहते हैं॥५॥ अब मंत्रके पांचों अंगों को सुनो कि प्रथम तो अनुकूल [इच्छानुसार]कार्य साधने का उपाय है, दूसरा अंग समर्थ होने का है जो कार्य

वलि देस१ काल२ संगति बिचार३, है चोथो४ अवयव विघ्नहार४
सुखदे अमोघ कर्मावसान५, पंचम५ मतीकै सो मंत्र मान ॥ ७ ॥
नरनाह सुनहु खट६ गुनन नाम, तँहँ संधि रु विग्रह यान तामें॥
आसन४तिम द्वैधीभाव५ मांहि, जहँ छठो६ आश्रय कहत जाहि।८।

॥ दोहा ॥

संधि१ मेल२ संबंधज३ रु, इतरेतर उपकार ॥
अरु उपहार४ स नाम इम, चउ४ तस भेद विचार ॥ ९ ॥

॥ षट्पात् ॥

पेलेमै गुन पिक्खि आप गुन रँगी व्है इम ॥
छोरि लोभ छर्म संधि करैं१ मैत१ सु जानहु जिम ॥
कन्या दे रु करैं२ सु संधि संबंधज२ धारहु ॥
मांहिं मांहिं उपकार व्है ३ सु उपकार३ निहारहु ॥
पुहवि१ रु रत्न२ गज३ हय४प्रमुख दै करैं४ सु उपहार४यह
चउ४ भेद संधि१ इम अब सुनहु अठ८ भेद विग्रह असह१०

॥ दोहा ॥

साधन का सहायक है, तीसरा अंग देश काल के १ साथ विचार करने का है, चौथा अंग कार्य के २ अंगों का विघ्न मिटाना है, और अंतका पांचवां अंग कर्म[कार्य] खाली नहीं जाने का सुखकारी है, सो मंत्र के येही पांच १ अंग मानो ॥ ७ ॥ आगे गुणों के नाम मूल में स्पष्ट हैं ४ तथा ५ है ॥ ८ ॥ प्रथम गुण संधि के चार भेद हैं इनमें मित्रता से, संबंध से, ६ परस्पर के उपकार से और भूमि आदि देकर उपहार [नजराना] करने से होता है, जिसके लक्षण आगे के छंद में स्पष्ट कहते हैं ॥ ९ ॥ दूसरे (शत्रु) में गुण देखकर आप गुणों में ७प्रीति करके ७ लोभ छोड़कर ८ समर्थता से संधि करै यह संधि मैत्रेयज है और कन्या देकर संधि करै उसको संबंधज संधि जानो और परस्पर उपकार करके संधि करै सो उपकारक संधि है और भूमि, रत्न, हाथी, घोड़ा ९ आदि देकर संधि करै उसका नाम उपहार संधि है इस प्रकार संधि के चार भेद हैं अब आगे नहीं सहन करने योग्य विग्रह के आठ भेद कहते हैं ॥ १० ॥

विक्रम१ मंत्र२ सहाय३ बल४ रत्न५ दुर्ग६ आरोग्य७ ॥
इत्यादिक करि हीन व्है, जो नृप विग्रह जोग्य ॥ ११ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अठ८हि बिग्रह२भेद सुनो इम, जे कामज१लोभज२भूमिज३जिम।
मानज४अभय५इष्टज६रु मदभव७, एक द्रव्य अभिलाख८धराधव१।
स्त्रीनिमित्त१ इनमैं कामज२ सो, श्रीनिमित्त२लोभज२जानहु सो।
भूनिमित्तभूमिज३ पहिचानों, बिरुद निमित्त४ मानभव४ मानों१
बिजय निमित्त५जु अभय सु५विग्रह, सरन निमित्त६नाम इष्टज६स
बिद्या१धन२जुव्वन३मदिरावस, रचैं७सु विग्रह२मदज७वीत रस।१४

॥ दोहा ॥

माँहिंमाँहिं विग्रह२ मचैं, एक१हि अर्थ निमित्त८ ॥
एकद्रव्य अभिलाख८ वह, चिंतहु भूपति चित्त ॥ १५ ॥
मंत्री१मंत्र२ रु कोस३बल४, मित्र५हु न भजतैं जाहि ॥

---

१ पराक्रम, मंत्र, सहाय, २ सेना, रत्न, गढ, ३ नैरोग्यता आदि हीन होवै वह राजा विग्रह करने योग्य है ॥ ११ ॥ इस विग्रह के आठ भेद हैं. काम से उत्पन्न, लोभ से उत्पन्न, भूमि से उत्पन्न, मान से उत्पन्न, भय से उत्पन्न, इष्टवांछा से उत्पन्न, मद से उत्पन्न, एक द्रव्य की अभिलाषा होने से ४ राजाओं में विग्रह होता है सो सुनो ॥ १२ ॥ ५ इनमें जो विग्रह स्त्री के कारण से होवै उसको कामज कहते हैं. और ६ लक्ष्मी (धन) के कारण विग्रह होवै वह लोभज है. ७ भूमि के कारण होनेवाला विग्रह भूमिज है. और ८ यश [स्तुति] के कारण विग्रह होवै वह मानज है ॥१३॥ विजय करने के कारण होवै जो मानभव, और किसी को शरण रखने के कारण से होवै वह इष्टज कहाता है. विद्या, धन, यौवन और मद्य के वश से जो विग्रह करै वह विगत-रसवाला मदज विग्रह कहाता है ॥१४॥ ९एक ही अर्थ के लिये परस्पर विग्रह होवै वह एकद्रव्यअभिलाष कहलाता है ॥ १५ ॥ जिस राजा को मंत्री, सलाह, खजाना, सेना और मित्र १० नहीं सेवन करते होवैं अर्थात् ये जिसके नहीं होवैं और जो मनु में कहे अठारह व्यसनों में से किसी में युक्त और

ठई व्यसनी१ बांरुग्ग२ सुही, यानू३ उचित नृप आहि ॥१६॥

॥ पादाकुलकम् ॥

यात्रा३इह तीजो३गुन अक्खिय, ऋषिन भेद सप्त७हि तस रक्खिय
सधानजा१ पार्ष्णिरोधा२ जिम, नाम मित्रविग्रहिनी३ है तिम१७
द्वद्व२जा४ रु कुल्पा५ निर्व्याजा६, शीघ्रगा७हु रंजत जिन्ह राजा ॥
श्रुति धारहु लच्छन अब सत्त७न,पहु जिन कारि पहुँ होइ प्रमत्त न१८

दोहा-पार्ष्णिग्राहसों संधि करि, जु इतर अरिपर जात१ ॥
जो यात्रा३ सधानजा१, कहत नीति निष्णात॥१९॥
पार्ष्णिग्राहके रोध पर, जु बल रक्खि पुनि जाइ२ ॥
ताहि पार्ष्णिरोधा२ कहत, पटु नयआगम पाइ ॥२०॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रथम कलह अरि१ मित्र२न पारैं, ताहि सत्रुपर सु पुनि सिधारैं३
एह मित्रविग्रहिनी३ यात्रा, मिलि दुव२ जहँ छिन्नैं अरि मात्रा॥२१॥
जांपर यात्रा सोहु समुख जब, ताकै जाइ४ द्वद्वजा४ है तब ॥
सत्रु वधु लै संग सत्रुपर, जाइ५ सु है कुल्या५ बसुधावर ॥ २२ ॥

---

१ अव्यपी होवे वह राजा यान (चढाई) के योग्य है अर्थात् ऐसे राजा पर चढाई करनी चाहिये ॥१६॥ इस यात्रा(यान)को तीसरा गुण कहा है जिसके ऋषियों ने सात भेद कहे हैं२इस शीघ्रगासे राजा लोग प्रीति करते हैं३हे प्रभुरामसिंह अब इन सातों के लक्षण सुनो कि जिनसे ४ राजा प्रमत्त नहीं होवे ॥ १७॥ ॥ १८ ॥ ५ पीठ पर से चढाई करके जीतने की इच्छा करनेवाले शत्रु से सन्धि करके जो अन्य शत्रु पर जावे उसको ६ नीतिनिपुण संधानजा यात्रा (यान) कहते हैं ॥ १९ ॥ पीठ पर से चढाई करनेवाले शत्रुको रोकने के अर्थ७सेना रख कर जो अन्य शत्रु पर जाता है उसको ८नीति शास्त्रको प्राप्त होनेवाले ९चतुर पार्ष्णिरोधा यात्रा कहते हैं ॥ २० ॥ प्रथम शत्रु से और १० शत्रुके मित्रों से कलह कराकर फिर उस शत्रु पर चढाई करै और ११दोनों मिलकर उसका धन छीनैं उसको मित्रविग्रहनी यात्रा कहते हैं ॥ २१ ॥ १२ जिस पर यात्रा करैं वह शत्रु युद्ध करनेको सन्मुख आवे उस यात्रा को द्वन्द्वजा कहते हैं और १३ हे राजा रामसिंह शत्रु के सम्बन्धियों को साथ लेकर शत्रुपर जावे

स्वस्थभाव सन अरिसिर*संक्रमह, निर्व्याजा६कहियत यह उत्तम
सत्रुहिँ हनन †प्रमाद छोरि सब, ‡सहसा जाइ७सीघ्रगा७ तो तब२३

॥ घनाक्षरी ॥

आसन चतुर्थ४ गुन भेद दस१० ताके अब,
स्वस्थ१ रु उपेक्षा सन२ मार्गअवरोध३ नाम ॥
देस स्वीकरन४ रमनीय तैसैं दुर्गासन६,
निकट७ रु दूर८ पराधीन९ रु प्रलोभ१० ताम ॥
अरि सब मारि राज्य अप्पन अकंटक कैं,
स्वस्थपनसौं जो रहैं१ स्वस्थासन१ सो ललाम ॥
बैरिन निबल जानि अप्पहिँ प्रबल मानि,
सदय जनावैं२ सो उपेक्षासन२ कित्ति धाम ॥ २४ ॥
तटिनी प्रवाह१ दवदाह२ आदि कारनकौं,
राह रुकैं३ आसन४०है मार्ग अवरोध३ गेय ॥
जीति अरि देसकौं करैं जो ताँहँ४ आसन४ सो,
राम२०१४ नरनाह देस स्वीकरन४ नामधेय ॥
सत्रुनकौं मारि तिन्ह नैर धन१ धान्य२ करि,

उस यात्रा का नाम कुल्या है ॥ २२ ॥ स्वस्थभाव से शत्रु पर*चढाई करै जिस उत्तम यात्रा को निर्व्याजा कहते हैं और शत्रु को मारने के लिये † आलस्य तथा असावधानी को छोडकर ‡ अचानक यात्रा करै वह शीघ्रगा है ॥ २३ ॥ चौथा गुण आसन है जिसके दस भेद कहते हैं १ तहां, सब शत्रुओं को मारकर २ राज्य को निष्कंटक करके आप चिन्ता रहित होकर रहैं उसको स्वस्थासन कहते हैं वह सब से सुन्दर है और शत्रुको निर्बल और आप को प्रबल मानकर ३दया जनावै वह उपेक्षा नामक आसन कीर्तिका घर है ॥२४॥ ४नदी के प्रवाह से वा अग्नि लग जाने आदि कारणों से मार्ग रुककर मुकाम होजावै उसको मार्गअवरोध आसन ५ कहते हैं, शत्रु के देशको जीतकर वहां निवास करै उसको हे राजा रामसिंह ६ देशस्वीकरण नामक आसन कहते हैं शत्रुओं को मारकर उनके नगरको धन से और धान्य से

रम्य गिनि तत्थहि रहैं५ सो रमनीय५ श्रेय ॥
जीति दुर्ग अरिकौं तहाँसौं खिल जीतिवेकौ,
अच्छौ गिनि जो रहैं६ सु दुर्गासन६ है अजेयं ॥ २५ ॥

दोहा-बल सह रिपु ढिग जाइ बलि, करन महर्घ कृपान ॥
राज्य विगारन तस रहैं७, वहै निकट७ अभिधानं ॥२६॥
निज देसहिं गिनि दूर नृप, आयो पाउस इक्खि ॥
रचैं सिविर८ दूरासन८ सु, सद्धत हित नय सिक्खि ॥२७॥
वैरी वस१ वा सुहृद वस२, नृप जो निकसि सकै न ॥
पराधिन९ नामक प्रथित, यह आसन४ नय ऐनं ॥ २८ ॥
कैटक जास बहु दैन कहि, रिपु गजन रक्खैं१० सु ॥
नाम प्रलोभासन१० नृपति, सूरि दसम१० अक्खैं सु ॥२९॥
वली रिपुन वस करि निवल, कढ्ढिसकै जु न काल ॥
तक्कैं द्वैधीभाव५ तव, पचम५ गुन छितिपाल ॥ ३० ॥
मिथ्यामन१ मिथ्यावचन२, मिथ्याकर्म३ उदार ॥
जुग२ वेतन४ जुग२ प्राभृतक५, पच५हि द्वैध५ प्रकार ॥३१॥

१सुन्दर जानकर वहां रहे सो सुंदर रमणीय आसन है, शत्रु का गढ जीतकर वहां से ही२धाली के देशको जीतना अच्छा जानकर वहाँ पर रहै उसको ३ है अजेय रामसिंह दुर्गासन कहते हैं॥२५॥४बलपूर्वक तथा सेना सहित शत्रु के समीप जाकर५फिर१मोल लेने की वस्तु को महंगी करने और राज्य बिगाड़ ने को रहै उसका७नाम निकट आसन है॥२६॥ जो राजा अपने देश को दूर जानकर और ८वर्षाको आया देखकर रहने को डेरे रखै और नीति की शिक्षा से हित साधन करै वह दूरासन है ॥२७॥ शत्रु के वश में होकर वा ९ मित्र के वश में होकर जो राजा नहीं निकल सकै वह ११ नीति का घर पराधीन नामक १० प्रसिद्ध आसन है ॥ २८ ॥ शत्रु को मारने के लिये १२ सेना को बहुत देना कहकर रक्खे उसको ११ पंडित लोग दसमा प्रलोभासन कहते हैं ॥ २९ ॥ बलवान् शत्रुओं के वश म होकर जो निर्बल १४ समय को नहीं निकाल सकने की अवस्था में द्वैधीभाव को देखै वह राजा का पांचवां गुण है ॥ ३० ॥ ३१ ॥

पादाकुलकम्

बैंनन हित मनमैं बिरोध बहि१, मिथ्यामन१ यह द्वैध५ख्यात महि
बैंनन हितरु बिरोध कर्म विधि२,बरनत मिथ्यावचन२नीति निधि३२
लघु१अरि काज करैं गुरु२लोपन३, मिथ्याकर्म३सु द्वैध५धरहु मन
इक१ सन प्रकट रु छन्न अपर२ सन, वेतनलैं ४ सु वजत जुग
वेतन४ ॥ ३३ ॥

रिपुहिं मरावन दै सु वित्त लहि, तस अरिसोंहु लहै तिम वित्त५हि
जुग२प्राभृतक५ नाम तस जानहु, अब छट्ठो६ आश्रय६हिय आ-
नहु ॥ ३४ ॥

अप्प निबल दंम भीत अनाश्रय, आश्रय सबल लै सु गुन आश्रय
जास त्रि३भेद सदाश्रय१ जैसैं, अन्याश्रय२ दुर्गाश्रय३ ऐसें ।३५।
बली सत्रुकौं जानि धर्मधर, निबल मिले१ सु सदाश्रय१ नय पर॥
रिपुसौंभीत बलिष्ठअपरं लहि, व्है तसबस अन्याश्रय२सो कहि३६
भज्जि निबल जो सबल सत्रु भय, सेवहिं दुर्ग६ है सु दुर्गाश्रय३॥

वचनों में हित और मनमें विरोध धारण करै वह भूमि पर मिथ्यामन नामका द्वैधीभाव प्रसिद्ध है, इसी प्रकार वचनों में हित और १ कार्य(काम) में विरोध होवे उसको नीति ही है धन जिनके ऐसे विद्वान् मिथ्यावचन नामक द्वैधीभाव कहते हैं ॥ ३२ ॥ छोटे शत्रु से २ बडे के नाश कराने का कार्य करना मिथ्या नाम का द्वैधी भाव है, एक से प्रसिद्ध और दूसरे से छाने ३ तनखाह लेवै उसको जुगवेतन द्वैधीभाव कहते हैं ॥ ३३ ॥ शत्रु को मरवाने को देवै सो ४ धन लेकर ५ इसी प्रकार उसके शत्रु से भी धन लेवै उसका नाम जुगप्राभृत द्वैधीभाव है. अब आगे आश्रय नामक छठा गुण कहते हैं ॥३४॥ आप निर्बल और ७ आश्रय रहित होकर ६ दंड के भय से बलवान् का आश्रय लेवै उस छठे गुण का नाम आश्रय है ॥ ३५ ॥ बलवान् शत्रु को धर्म धारण करनेवाला जानकर निर्बल उससे मिलै उसको ८ नीति के तत्पर लोग सदाश्रय कहते हैं, शत्रु से डरकर ९ दूसरे बलवान को बीच में लेकर उस शत्रु के बश में हो वै जिसको अन्याश्रय कहते हैं ॥ ३६ ॥ बलवान् शत्रु से भागकर जो निर्बल १० गढ का आश्रय लेवै वह दुर्गाश्रय है. अब उपाय के चार भेद कहते हैं सो

अब उपाय चउ४ भेद सुनहु यह, साम१भेद२उपदाम३दह४सह३७
जानहु भूप चउ४हि क्रमतैं जिम, उत्तम१मध्यम२अधम३कष्ट इम
इनच्यारि४नकेभेदमानअब, सहलच्छनप्रभुराम२०१।४सुनौं सब३८

॥ दोहा ॥

कर्णासुभग१ दैविक२ कथित, स्मारक३ लोभज४ सार ॥
बहुरि अप्प अर्पन५ विदित, पच५हि साम१ प्रकार ॥ ३९ ॥
परचित्तहिं करि प्रीति वस, हित संलाप गहाइ ॥
साम१ ऽहै जु दुहुँ२घाँ सुखद१, कर्णासुभग१ सु कहाइ ॥४०॥
सपथादिक करि परसपर, बिरचै जँहँ बिस्वास२ ॥
समुझहु दैविक२ साम१ सो, पावहिं नीति प्रकास ॥ ४१ ॥
सबधहिं सुमिराइकैं, ऽहै३ सो स्मारक३ होहि ॥
इष्ट परस्पर अप्पि ऽहै४, सान्त्वन१ लोभज४ सोहि ॥ ४२ ॥
मम वपु है तव अर्थ इम, जंपि रु बिरचै५ जाहि ॥
पचम५ सान्त्वन१ भेद यहु, आत्मअर्पन५ सु आंहि ॥ ४३ ॥
सिद्धिऽहै न जहँ साम१सौं, तहँ भेद२हि करतव्य ॥
जल१ पय२ सत्रुन हस जिम, भिन्न किये ऽहै भव्य ॥ ४४ ॥

सुना ॥ ३७ ॥ १ अधमाधम ॥ ३८ ॥ २ अपने आपको अपण करना, ये साम उपाय के पाच भेद हैं ॥ ३९ ॥ ३ दूसरे (शत्रु) के चित्तको प्रीति के वश करके ४ हित के वार्तालाप से साम होवै वह दोनों ओर सुखदाई है जिसको कर्णसुभग कहते हैं ॥ ४० ॥ ५ परस्पर सौगन आदि करके विश्वास कराकर साम करै उसको दैविक साम कहते हैं ॥ ४१ ॥ ६ सम्बन्ध को याद कराकर साम करै उसको स्मारक कहते हैं ७परस्पर चाहा होवै सो देकर ८ साम करै वह लोभज साम है ॥ ४२ ॥ मेरा शरीर तेरे अर्थ है यह ९ कहकर करै वह है राजा पांचवा आत्मसमर्पण साम१०है ॥ ४३ ॥ जहां साम से कार्य सिद्ध नहीं होवैं तहां ११ करने योग्य भेद उपाय है सो जैसे हंस पानी और १२ दूधको भिन्न भिन्न करदेवैं तैसे शत्रुओं को भिन्न भिन्न कर देने से१३कल्याण(शुभ) होता है ॥ ४४ ॥

अस्त१ अनादृत२ क्रुद्ध३ तिम, भेद२ उचित व्है भूप ॥
रिपुंगत निजजन गुप्त रहि, रचैं भेद२ अनुरूप ॥ ४५ ॥

(मनोहरम्)

प्रानभंग१ मानभंग२ चित्तभंग३ बंधक४ त्यों,
दारलाभ५ अंगभंग६ आद२ भेद खट६ हैं ॥
प्रानभय दैकैं भेद२ व्है१सो प्रानभंग मान,
हानि भय दैकैं व्है२सो मानभंग२ वटहै ॥
तीजो२ बित्तभंग३ वित्तहानि भय दैकैं व्है३ सु,
कारा२ भय दैकैं व्है४ सु बंधक४ बिकटहै ॥
पच्छ दुव२ पत्नी भय दैं व्है५ दारलाभ५ अंग-
भंग भय व्है६सो अंगभंग अति भेदहै ॥ ४६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सिद्धि जो न भेद२ सन जबहि उपदा३ प्रयोग जिम ॥
सोलह१६ बिध नृप सोहु कहत क्रमतैं अभीष्ट१ इम ॥
देश्य२ आब्द३ कर४ द्विरद५ सप्ति६ निचराथ७ पट८ सासन९
पुरट१० कनी११ पनना१२ रिश्ति१३ बेलाकर१४ भूखन १५
सोलहम१६ भेद प्रतिपत्तिज१६ सु अर्थ नाम अनुसार इन ॥
नहि बोध प्रकट जिनको न पति ते कति कहियत सुनहु तिन ॥४७॥

डराहुआ, अनादर पाया हुआ और क्रोधी राजा भेद करने के उचित है सो अपने लोग १ शत्रुके पास जाकर अपने सदृश भेद रचैं ॥ ४५ ॥ २कैद का भय देकर करैं सो ३भयंकर बंधक नाम भेद है और दोनों पक्ष में ४स्त्री को छीनने का भय देकर भेद करैं उसका नाम दारलाभ है और शरीर के नाश का भय होवै वह अगभंग नामक भेद है ॥ ४६ ॥ ५ भेद करने से कार्य सिद्धि नहीं होवै तब ६नजराना देनेका प्रयोग करै सो सौलह प्रकार का है ७इनके अर्थ इनके नामों के ही अनुसार है परन्तु नामों से जिनके अर्थ का ८ ज्ञान (समझ) प्रकट नहीं होता है उनको कहता हूं सो ९ हे पति रामसिंह सुनो ॥ ४७ ॥

(पादाकुलकम्)

मगैसुहिदेवो१ अभीष्ट१ मत, देवो देस२ सु देश्य२ कहावत॥
सह कुटुंब निवहैं जिहिं धन सन, अब्द इक्क१।३वह आब्द३महामन४८
देसहिं रक्खि तास कर देवो४, कर४ नामक उपदा३ वह कैवो ॥
सप्तिदान६ जह तुरग समप्पहिं६, अरु निवसथ७ सु ग्राम जह अ-
प्पहिं७ ॥ ४९ ॥
जबलग व्है ग्राहक सपिंड जन, तबलग जो न लुपत९सो सासन॥
कांचन१० पुरट१० कनी११ कन्या११ कहि, वेश्या१२ तिम पन-
नारि१२ नाम वहि ॥ ५० ॥
रत्न१ सुवर्ण २ रजत३ निकसैं जहँ, तिहिं देवो १३ खनिदान१३
ख्यात तँहँ ॥
जहँ वहित्र जीवन उतरैं धन, वेलाकर१४ कहियत तस वितरन५१
पीठ१ चमर२छत्रा३दि दान पहु, मान बढन१६प्रतिपत्ति ज१६मन्नहु॥
गज५पट८भूखन१५अर्थप्रकटगहि, लेहुसमुझिसत्वरप्रबोधलहि ५२

जो मागैं सोही दें उसका नाम अभीष्ट है, देशका देना है उसको देश्य कहते हैं जिस धन से१एक वर्ष पर्यन्त सब कुटुम्ब का निर्वाह होजावे उस दान को बड़े लोग आब्ददान कहते हैं ॥ ४८ ॥ देश को रखकर उस देश के २ शासित को देना है उस भेट का नाम कर है, जिस नजराने में ३ घोड़े देवैं उसको सप्तिदान कहते हैं और जिसमें ग्राम दियेजावैं उसको निवसथ दान कहते हैं ॥ ४९ ॥ लेनेवाले के ४ सपिण्डी (सातपीढी) तक के मनुष्य रहैं तबतक नहीं लुपै उस दान को सासन कहते हैं ५ सुवर्ण देने को पुरटदान और कन्या देने को कनीदान कहते हैं, वेश्या देने को पननारि नामक दान कहते हैं ॥५०॥ जहां पर रत्न, सोना ६चांदी निकले उसका देना खानि देना प्रसिद्ध है, जहां ७ जहाज (नाव) की उतराई के धन से जीवन होता होवै उसको ८ देना वेला कर कहाता है ॥ ५१ ॥ ९ सिंहासन, चमर, छत्र आदि मान बढानेवाला राजा का देना है उसको प्रतिपत्तिअ कहते हैं और हाथी देने से गिरद दान, वस्त्र देने से पटदान, गहना देन से भूषण दान कहाता है सो इन के १० नामों से ही अर्थ प्रसिद्ध है यह ११ शीघ्र प्रबोध लेकर समझलो ॥ ५२ ॥

सिद्ध काज जो ह्वै न दान३ सन, पंद्रह१५ भेद दंड४तहँ प्रेरन ॥
देसनास १ अरु अंगछेद २ जिम, गोग्रह३ धान्य हरन ४ बंधन तिम ॥ ५३ ॥

देसहरन६ अरु धन आदान७ हु, पुनि सर्वस्वहरन ८ पहिचानहु ।
दुर्गभंग९सहस्थानदाह१० श्रुत, देसनिकास११जुद्धघातन१२जुत५४
अवविसदंड१।१३ आभिचारिक२।१४ इम, अनुचित छद्मघात ३।१५ जहँ अंतिम३ ॥

पहिले दम बारह१२ प्रबलनके, अग्ग तीन३निंदित अबलनके५५

॥ घनाक्षरी ॥

बेल१ बन२ छेदैं१ त्यौं निवाननकौं भेदैं२लूटि,
जारैं पुर१ ग्रामन२ कौं३ सोतो दंम४ देसनास१ ॥
छेदैं पैरपाछिनके अंग२ वह अंगछेद२,
सर्व पसु आनैं घेरि३ गोग्रह३ दुख दुरास ॥
धान्य सब लूटैं४ धान्य हरन४सु जानौं बंधैं,
धनकं कुटुंबी५ नाम बंधन५ बिदित तास ॥
सत्रुकी प्रजाकौं बिसवासबढै तैसैं रहि,
आपुनी करैं६ सो देसहरन६ बलिष्ठ बास ॥ ५६ ॥
बलतैं दबाइ दंडि सत्रु धनलै७सो धन-

जहां दानसे कार्य सिद्ध नहीं होसके तहां पन्द्रह भेदवाले दण्ड की प्रेरणाकी जातीहै॥५३॥५४॥ प्रथम कहेहुए बारह दंड१प्रबल लोगोंके करनेकेहैं और२आ (अन्त)वाले निन्दनीय तीन दण्ड निर्बलों के करने के हैं ॥५५॥ बाग को और वनको काटना, जलाशयों को फोड़ना और नगरोंको व ग्रामों को लूटना और जलाना, इस ३ दंडको नो देशनाश कहते हैं ४ शत्रुओं के अंग छेदना अंगछेद है और सब पशुओंको घेरकर लाना यह खोटी आशावाला दुःखदायक गोग्रह नामका दंडहै, सब धान्यको लूटना धान्य हरण दंडहै५धनवानों और कुटुंबियों को बांधना इसका नाम बंधन प्रसिद्ध है, शत्रुकी प्रजा का विश्वास बढै तैसे रखकर अपनी करै वसयुत्स्थान् वास करनेवाले दण्डको देशहरण कहतेहैं॥५६॥

दान७ सरबस्वलें८ सो जानों सरबस्वहार८ ॥
गढन गिरावैं९ दुर्गभग९ सो त्यों *खधावार,
सत्रुकों मजारैं१० सो है स्थानदाह१० नाम धार ॥
देसतें निकासैं११ देसनिर्वासक११ नाम ताको,
जुद्धकरि मारैं१२ जुद्ध घातन१२ सो है उदार ॥
राम२०१४ प्रभु ऐसैं बलवान होइ ताके करि-
वेके कहे द्वादश१२ हीं प ते दंड४ के प्रकार ॥ ५७ ॥

॥ प्रकृति ॥

निवल उचित अथ दम त्रय३ मनैं, है विषदंड जु गेर करि हनैं१ ॥
आभिचारिक२जु आभिचारिसों२, छद्मघात३तिम छल वारसों३ ५८

(मनोहरम्)

सावधान ऐसैं प्रभुतादिक त्रि३ सक्तिनमैं,
संधि मुख छह६ गुन प्रमच पटुता धरैं ॥
साम१ आदि च्यारि४ हु उपाय अनपाय जानैं,
भेदन सहित सप्त७ प्रकृति हिये हरैं ॥
वर्णा१ऽऽश्रम२ राज३धर्म राजनय४ नेतां न्याय५,

सेना से दबाकर शत्रुको दंड देकर धन लेवें उसका नाम धनदंड है, और सर्वस्व छीनने को सर्वस्व कहते हैं, गढ के गिराने को दुर्गभग और शत्रुकी *राजधानी को जलावें उसका नाम स्थानदाह है, देशसे निकालने को देशनिर्वास और युद्ध करके शत्रुको मारें उसका नाम युद्धघात है, सो हे प्रभु रामसिंह ये बारह प्रकार के दण्ड तो बलवान् शत्रुके करने के कहे हैं ॥५७॥ अब निर्बल के करने के तीन दंड कहते हैं कि १जहर देकर मारें उसका नामविष दंड है, और जन्त्रमन्त्र से मारें उसको २आभिचारिक दंड कहते हैं ३छलके वार(घेप) से मारें उसका नाम छद्मघातहै ॥५८। इसप्रकार४प्रभुता आदि तीन शक्तियोंमें सावधान५संधि आदि छओं गुणों के रचने में चतुर,६नाश रहित साम आदि चारों उपायों को जानें और भेदोंके साथ राज्य के सातों अंगों को हृदय में धारण करें, वर्ण धर्म, आश्रम धर्म, राज धर्म और राजनीतिको७प्रवृत्त करनेवाला, न्यायचतुर, उदार,

निपुन उदार६ कोस कुधन नहीं भरै७ ॥
ऐसो नृप आपुनैं स्वतंत्र८ आप व्है सो एक१।९,
उद्यमी१० असेस अवनीकों अपनी करै ॥ ५९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सप्त७ राज्य अंगन विच स्वामी१, नयपटु१ सूर२ होत इम नामी ॥
अंग द्वितीय२अमात्य२सुनहु अब, सह लच्छन शेष५हु प्रतीक सब६०
श्रुतसंपन्न१कुलीन२धीर३सुचि४, रागद्वेष२वर्जित५आस्तिकरुचि६॥
वाग्मी७सम्मत८सास्त्रविसारद९,नयप्रगल्भ१०अरुजकारक११निर्गद१२
आय१व्यय२पटु१।३सत्यसंध१४इम,सूर१५अवैर१६महासत्व१७हुतिम
उपधासुद्ध१८कुलक्रम एधित१९, होत सचिव२ऐसे स्वामिनहित६२
अंग तृतीय३ सुनहु मंत्री१अथ, साध्य१असाध्य२विवेक धरै सब१॥
देस१सुविष्ट२अपोहन१ऊहन२,निपुन३।३धीर४स्वाकारनिगूहन५ ६३
स्वीय देस संभूत६ महामति७, गहैं सबन आकृति१ इंगित२गति८।

१ खजाने में खोटे धन को नहीं धरनेवाला २ संपूर्ण भूमि को अपनी करता है ॥ ५९ ॥ राज्य के सात अंगों में स्वामी (राजा) है वह इसप्रकार ३ नीति चतुर और धीर नामी होता है ४ बाकी के सब अंगों को भी अब लक्षण युक्त सुनो ॥ ६० ॥ ५ वेद की सम्पत्तिवाला अर्थात् वेद शास्त्र जाननेवाला कुलवान् धीर पवित्र राग द्वेष से वर्जित६परमेश्वर को मानने में रुचि रखनेवाला ७ उत्तम बोलनेवाला, सन्मानपात्र, शास्त्रों का जाननेवाला ८नीति में बुद्धिमान् ९ अपने सदृश कार्य करनेवाला१०रोग रहित ॥६१॥११आमद खरचके जानने में चतुर १२ सत्य प्रतिज्ञावाला, इसी प्रकार वीर, वैर रहित१३बड़ा पराक्रमी १४ धर्मार्थ आदि चारों पुरुषार्थों की परीक्षा करने में शुद्ध १५ कुल के क्रम से बढाहुआ, ऐसा सचिव होवे सो स्वामी का हित करनेवाला होता है ॥६२॥ राज्य का तीसरा अंग मंत्री है सो सुनो १६ होनेवाले और नहीं होनेवाले कार्यों के विचार (ज्ञान) को धारण करनेवाला देश काल १७ काम क्रोध शोक आदि से व्याकुल चित्तवाले की १८ तर्कना करनेवाला, निपुण, धीर १९ अपने आकार को गूढ रखनेवाला ॥ ६३ ॥ २० अपने ही देश का उत्पन्न हुआ बड़ा बुद्धिमान, सब की आकृति और २१ चेष्टा से गति को जाननेवाला

प्रथित९अलुब्ध१०मन्त्ररक्खनपर११,कुपथभूपमातीप्यसुपथकर१२ ६४
पच५दिमन्त्रअंगपरिचायक१३, आप्त१४कुलीन१५दूरदृगं दायक१६॥
ऐसे व्है मन्त्री३ अवनीपन१, पैरन गाजि प्रभु सुजस प्रदीपन ॥६५॥
अंग चतुर्थ४कोस४कहियत अन, सचित जहं रत्न१दि द्रव्य सब॥
पच५ रत्न तहं पुव्व प्रमानहु, जिनमैं प्रथम१ वज्र१ मानि जानहु ६६
तास पच५ गुन पच५ दोस तिम, जपिय चउ४ छाया व्रन्न जिम॥
लघु१छकोन२रगु८कोन३रुनिर्मल४,अप्रतिगम५ए५तोगुनअतिफल
त्रास१ बिंदु२ मल३ रेख४ काकपद५, हीरकं१मैं ए पच५दोसहद ॥
छाया स्वेत१अरुन२पीत३असित४,हैं क्रमतें चउ४वर्णों उचितहित६८
मनि दूजो२ मुक्ता२ सु धैंराधव, तस इभैं१ अहि२ किटि३ तिमि४
सिर सम्भव ॥
उपजत संख५ सुक्ति६ बंस७न उर, धाराधर विंदुज८अष्टम८धुर६९

१ प्रसिद्ध २ निर्लोभी, शत्रुओं से अथवा किसी अन्य से मन्त्र(सलाह) का रक्षा करनेवाला, कुमार्ग में चलनेवाले ३ प्रतिकूल राजा को शिक्षा देकर सुमार्ग में चलानेवाला ॥६४॥ मन्त्र (सलाह) के पांचों अंगों को ४ जाननेवाला, सत्यवादी, कुलवान ५दूरदर्शी ६राजाओं के ऐसे मन्त्री(सलाहकार)होवें वेही ७शत्रुओं को मारकर स्वामी के यश का प्रकाश करते हैं ॥६५॥ राज्य का चौथा अंग खजाना है जिसको कहते हैं जिसमें रत्न आदि सब द्रव्य संचय रहता है तहां प्रथम पांच रत्न हैं जिनमें भी प्रथम ८ हीरे को जानो ॥६६॥ जिस हीरे में पांच गुण, पांच दोष और चार छाया वर्ण ९ कही हैं, इनमें हलका (भार रहित) होना, छकोन, अठकोन, मल रहित और आगे का भाग तीखा होवे ये पांच ना ९ अत्यन्त फल देनेवाले गुण हैं॥६७॥त्रास(मणिदोष विशेष)अन्य रंग का छिदका मैल,लकीर, काकपदके समान चिन्ह१०हीरेमें ये पांच ही दोषहैं और श्वेत, लाल, पीली, काली ये चार छाया क्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र११वर्ण सो अपने अपने उचित हित करनेवाली हैं अर्थात् जिसवर्ण की छाया होवै वह उसी वर्ण को हित करनेवाली है ॥ ६८ ॥ १२ हे राजा दूसरा मणि मोती है जिसका जन्म १३ हाथी १४ सर्प १५ सूअर १६ मच्छ इन के मस्तकों में होता है और शंख, १७ सीप और बांस के भीतर भी उत्पन्न होते हैं और आठवीं उत्पत्ति १८ मेघ धारा के बिंदु में भी होती है ॥ ६९ ॥

गुनसर५ज्योति१वृत्तपन२गुरुपन३, अरुबिमलत्व४स्निग्धता५रूपन॥
दोसदस१०हि चउ४ बडे छ६ छोटे, मन्नहु तहँ पहिले चउ४मोटे७०
सिमिहग१सुक्तिलग्गन२ अरु तीजो३, जरठ३ दीप्ति१ छायाबिनुहीजो
बिद्रुमकांति४ चतुर्थ४ दोस बहि, लघु छ६दोस सुनिये अब क्रम
लहि ॥ ७१ ॥
जुबलीबलित१ त्रिवृत्त१ सो तर्जित, बलि चर्पट२बर्तुलता बर्जित
हे प्रलंब३ कृस३नाम कहावैं, पुनि जु त्रि३कोन४ त्र्यस्र४पद पावै
खंड५नाम सपिटक अवृत्त५ खिल, कहुँक भुग्न६ कुपापार्श्व६ ह
ठो६ किल ॥
पीत१ मधुर२ सित३ सिति४ चउ४ छाया, इनमैं चोथी४ असुभ
अनाया ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

तीजो३ मनि मानिक्य३ तहँ, गुन चउ४ औगुन अष्ट८ ॥
बहुसिता१दि धूम्रा२दि छवि, करैं तथा सुख१ कष्ट२ ॥ ७४ ॥

जिनमें १ गोल २ भारीपन (बोझल) ३ निर्मलता ४ सचिक्कणता और ५ मोट (बडा)पन ये पांच तो गुण हैं और दश दोष हैं जिनमें पहिले के चार बडे और पिछले छः छोटे हैं ॥७०॥ ६ बडे छिद्रवाला अथवा जिसके छिद्र में कीड़ा लगा हुआ होवे वह ७ जिसमें सीप का टुकड़ा लगा होवे ८ विना छाया, जिसकी मंद कांति होवे ९ मूंगा के समान कान्तिवाला ये चार तो बडे दोष हैं और अब छ: दोष छोटे हैं सो सुनो ॥ ७१ ॥ झुरियों (सलों) से घिराहुआ १० तीन गोलाईवाला होवे सो डरानेवाला भयदायक है, फिर चपटा ११ गोलाई रहित १२लंबा होवे उसको कृश कहते हैं,१३और तीन कोनेवालेको त्र्यस्रपद कहते हैं ॥ ७२ ॥ जो खंडित होवे उसका नाम १४ सपिटक है, यह खंडित होने से बाकी का भाग गोलाई रहित होता है १५ कुछ टेढा बांका होवे उसको १६ निश्चय ही कुपापार्श्व कहते हैं, पीली १७महुवा के रंग के समान १८श्वेत १९ काली, ये चार छाया होती हैं इन में चौथी श्याम छाया अशुभ और २०पीड़ाकारी है ॥ ७३ ॥ तीसरा रत्न माणिक्य है जिसमें चार गुण और आठ औगुण हैं और श्वेत आदि व धूम्र आदि बहुत छवि हैं वे २१गुणतो सुख करते हैं और

निर्मलपन१ अतिरक्तपन२, स्निग्धछवित्व३ गुरुत्व४ ॥
गदितें चयारि४ मानिक्य गुन, ए जिन्ह मद्द उरुत्व ॥ ७५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

द्वि२ छवि२ दोषहे जहँ छाया दुव२।१, व्है द्वि२रूप२ तस नाम द्वि
२ पद२ हुव ॥
भिन्न जु व्हैं३सु दोस भेदा०द्दर्प३,रेनुंजुत४सु कर्कर निरखहुनय७६
जुपटदोस पर्य रग लसुनँ५ जहँ, तिम जड६ नाम रगविनु व्है तहँ
मधुं निभ काति७सु कोमल७मानहु, धूमकाति८धूम्र८सु उरथानहु
मन्नहु इंद्रनील४ चोथो४ मनि, तहँ गुन पच५ छ६ दोस दये तनि
छाया अष्ट८ कहिय छितिनायक, देखहु गुन५जे अब सुभदायक

॥ दोहा ॥

स्निग्धछवित्व१ सुरगपन२, रजन पासपदेस३ ॥
गुरु४ता अरु तृनग्राहिता५।१९, इहि गुन पचक५ एम ॥ ७९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सुनहु दोस जहँ पटलैं अभ्रसम१, अभ्र१हि तस अभिधान अनुत्तम

अपगुन दु ख करते हैं ॥ ७४ ॥ निर्मलपना, बहुत लालपना, सचिक्कण छवि और भारीपन १ ये माणिक्य के चार गुण कहते हैं सो ये जिनके होते हैं २उनका कल्याण होता है ॥ ७५ ॥ जिसमें दो छाया होवे उसका नाम द्विछवि दोष है ३ जो दो रूप रगवाला होवे उसका नाम द्विपद दोष है, जो माणिक्य फूटा होवे ४ उसका नाम भेद है ५ रेणु[रेत] युक्त होवे उस दोष का नाम कर्कर है ॥ ७६ ॥ ६ दूध के समान श्वेत रग का जिसमें ७ चिन्ह होवे उसको पट दोष कहते हैं, जो विना रग का होता है उसका नाम जड है ८ महुये के सदृश जिसकी कान्ति होवे उसको कोमल नाम का दोष मानो और जिसका रग धूम्र के समान होवे उसका नाम धूम्र दोषजानो ॥ ७७ ॥६चौथा मणि नीलम है ॥ ७८ ॥ सचिक्कण छवि, श्रेष्ठ रग, समीप के प्रदेश को रग युक्त करना, भारीपन १०आकर्षण शक्ति से तृण को अपने में चिपका लेना, नीलमणि में ये पाच गुण हैं ॥ ७९ ॥ जिसमें बादल के समान ११ आभा होवे उसका १२ नाम ही अभ्र है सो उत्तम नहीं है,

ह्वै सह रेनुर सर्करीर आठह्य, दै जु भिन्न भ्रम३ त्रास३ सु हठ
दय ॥ ८० ॥
भिन्न४हि ह्वै जु भिन्न४ तिहिँ भाखत, मृद्गर्भ५ जु मृत्तिका ग
र्भ५ मत ॥
अस्मगर्भ६ अरमाहि जब अंतर६, बसु८छाया अब सुनहु धराबर८१
नीलीरस१ वैष्णावीसुमन२निभ, लवणीसुमन३ इंदीवर४घन५निभ॥
मननिभ१ घननिभ२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
सिवगल६ विष्णुसरीर७ उमासुम८, तिन सन्निभ इम अट्ठ८ गिन
हु तुम ॥ ८२ ॥
सिखिगल१९मधुकरपच्छ२१०समहु तस, द्वै पुनि धरि कति कहत
कांति दस१० ॥
पय१५मैं नील४गेरि पिक्खहु पय, नीलहोइ सुहि नील४सत्य नय८३
मनि पंचम५ मरकत५ इम मन्नहु, पंच५हि गुन तस दोस सप्त७पहु
बसु८छबि अब. पंच५हिं गुन बरनत, सुरागत्व१नीरेनुक२सम्मत८४
पुनि गुरुता३स्निग्धता४बिमलपन५,देखहु पैहु सप्त७हि अब दूखन

जो१रेत सहित होवै उसका नाम शर्करी है, हे हठदयावाले रामसिंह२फूटे हुए का भ्रम देवै उसका नाम त्रास है ॥ ८० ॥ और जो यथार्थ में ३टूटा होवे उसको भिन्न कहते हैं, जिसके भीतर ४ मिट्टी होवे उसको मृद्गर्भ कहते हैं ५ जिसके भीतर पत्थर होवे उसको अश्मगर्भ ही कहते हैं, हे राजा अब आठ छाया सुनो ॥ ८१ ॥ नीलके रस और ६ तुलसी के पुष्प के सदृश ७ लोणीनामक वृक्ष विशेष के पुष्प ८ नीलकमल और मेघ के सदृश ९ शिव, के कंठ १०विष्णुके शरीर ११हलदी के पुष्प १२इनके सदृश आठ छाया जानो ॥ ८२ ॥ और कितने ही लोग १३ मयूर के कंठ १४ भ्रमरके पंख के समान दो छाया फिर रखकर सब दस छाया कहते हैं १५ नीलमणि को दूध में डालकर देखो सो वह दूध नीला होजावै सोही सच्चा नीलम है ॥ ८४ ॥ पांचवां मणि १६पन्नाहै उसके हे राजा पांच गुण और सात दोषहैं और आठ कान्तिहैं१७ श्रेष्ठ रंग१८बिना रेणु(रेत)॥८३॥भारीपन, सचिक्कणता निर्मलपना, ये पांच तो पन्नाके गुण हैं और१९हे राजा अब इसके सात दूषण हैं सो देखो कि जिसमें

होइ रूक्षता१रूक्ष१कहावत, पिटक२नजुत सपिटक२पद पावत८५
छायाहीन३ सु मलिन३ महीवर, अस्मगर्भ४ अस्मोहि जब अंतर ॥
रजजुत५नाम सकर्कर५राक्खिय, दीप्तिहीन६—ज इम आक्खिय८६
पुनि कल्माष७जहाँ कर्बुर पन७, वसु८ छाया अब सुनहु धराधन
सुकासिसु९ केकि१० किकीदिवि११ छद सम, काच१२ हरित १३ सैवल
सौद्वल६ क्रम ॥ ८७ ॥
सिरीपसुम७खद्योतपृष्ठ८सह, इनैं सन्निम वसु८ छवि मरकत यह
कृत्रिम मनिन परिच्छा कहियत, लाभ उचित निश्चै जिम लहियत

॥ षट्पात् ॥

कृतिम वज्र१ जु करत वज्र विद्धहि वह विगरत१ ॥
कृत्रिम मुक्ता२केर मिटन जल१ लवन२ धोइ२ मत ॥
कृत्रिम ठठे मानिक्य१३ नील१४ मरकत१५ मुख तो तब॥
इन३कों घिसि१ औटाइ२ सत्य२ मिथ्या१ परखत सब ॥

१ रूक्षापन होय वह रूक्ष कहलाता है और जो २छालों [जाला] सहित होवे वह सपिटक पद को प्राप्त होता है ॥ ८५ ॥ ३ हे राजा जो पन्ना कान्ति से हीन होवे उसको मलिन कहते हैं ४ जिसके भीतर पत्थर होवे वह अस्मगर्भ है ५ ओ रेत से युक्त होता है उसका नाम सकर्कर है ६ जिस में कान्ति नहीं होवे उसको दीप्ति हीन कहते हैं ॥ ८६ ॥ जिसमें ७ कावरा (रंग बिरंग पन) होवे उसका नाम कल्माषपाद है, इस पन्ने में आठ प्रकार की कान्ति होती है सो हे राजा अब सुनो ८ शुक (सुवा) पक्षी के बच्चे की ९ मयूर की १० चातक (पपीहे) की पंखों के समान, ११ काच १२ कुमोदनी (काजी) १२ बालतृण (उगता हुआ घास) के समान ॥८७॥ १३ शिरीष(वृक्ष विशेष)के पुष्प के और १४ जुगनू (चानिया) की पीठके समान १५ ऊपर कहीहुई के सदृश आठ कान्ति पन्ने की हैं ॥ ८८ ॥ १६ झूठा हीरा है वह तो सच्चेहीरे से बेधने पर बिगड़ जाता है और झूठे १७ मोती की शोभा(जिलह) नमक से धोने से मिटजाती है झूठे माणिक्य १८ नीलम१९ पन्ना २०आदि नगों (मणियों) को घिसकर जल में उबालकर सच्चे झूठे की परीक्षा करते हैं सो औटाने से

ठहै क्वथित१ कुराग२ रु घृष्ट१ मृदु२ जे सबै कृत्रिम जानिये ॥
इह रत्न पंच५ ए मुख्य अब मनि सप्तक७ लघु मानियेद८९
सूर्यकांत१ जो सूर्यकिरन लहि वन्हि प्रकासत१॥
चन्द्रकांत२ जो चन्द्रअंस छबि स्राव उपासत२ ॥
पुष्पराग३ वैडूर्य४ स्फाटिक५ गोमेद६ रु विद्रुम७ ॥
यह सप्तक७ लघु आहि सकल द्वादस१२ तक्कहु तुम ॥
गुन तीन३ सब१२हि रत्नन गिनहु कांति१ कठिनपन२ स्वच्छपन३॥
तजि पँवि१गुरुत्व४गुन ग्यारहम११गुन पवि१गत लार्घव४ लखन९०

(दोहा)

इन१ रत्न१न करिकैं अधिप, करें निचित निज कोस४ ॥
हाटकं३ सोलह१६ बर्णको है, इनमैं अंत्य१ अदोस ॥ ९१ ॥
पावक तपि न घटैं पुरट२, सोलह१६बर्ण सु जानि ॥
नवरवि१ बिज्जु२ प्रकास निभैं, अंजहिं कोस४न आनि ॥ ९२ ॥
रजत१ नागमिश्रित रुचिर, सुचि ज्वालित बिच सुद्द ॥

१रंग बिगड़जावै और२घिसने में कोमल होजावे उसको झूठा जानो, ये पांच तो मुख्य रत्न हैं और अब सात छोटी मणियों को कहते हैं ॥ ८९ ॥ सूर्य की किरणों से जिससे ३ अग्नि उत्पन्न होजावै वह सूर्यकान्तमणि है, और चंद्रमा के किरणों से शोभा सहित ४ टपकनेलगे वह उसी की उपासना करने वाली चन्द्रकान्तमणि है ५ पुखराज, वैडूर्यमणि (लहसनिया) स्फटिकमणि, गोमेदमणि और मूँगा ये सात छोटी मणियां ६ हैं ७ हीरे को छोडकर बाकी की ग्यारह मणियों में भारीपन गुण है और एक हीरे में ही ८ हलकां होना गुण है ॥ ९० ॥ ९ अपने खजाने में सग्रह करैं, इन मणियों के अंत में सोलह वर्ण का १० निर्दोष सुवर्ण इकट्ठा करैं ॥ ९१ ॥ सोलह वार अग्नि में तपाने से कुन्दण होता है वह ११सुवर्ण आग्नि में तपाने से नहीं घटै तब उसको कुन्दण जानो जो १२ प्रभात के सूर्य और बिजुली के प्रकाश के १३ सदृश होता है ऐसे सुवर्ण को खजाने में १४ संग्रह करै ॥ ९२ ॥ १५शीसा मिलाकर १६आग्नि में जलाने से चांदी शुद्ध होती है

ऐंका ससि प्रकासरुचि, परिचित करहिं प्रबुद्ध ॥ ९३ ॥
रत्न१ रु दुव२ हाटक१।२ रजत२।३,अघटित१।२घटित२।३अ्रसेस
कोस४ अग चोथो४ करैं, नय चित निपुन नरेस ॥ ९४ ॥
करके चयारि४ बिभाग करि, धर्म्म१ अर्थ२ अरु काम३ ॥
तीन३नमें त्रय३ बट तजि, धरै चतुर्थ४हिं धाम४ ॥ ९५ ॥
सस्त्र१ वस्त्र२ धान्यादि३ सव, सचय इतरहु सज्जि ॥
पूरन रक्खैं कोस४पहु१, गिनैं सुकरँ सब गज्जि ॥९६॥भेकप्लुति
मुक्त१ अमुक्त२ रु मुक्तामुक्त३, यत्रमुक्त४ प्रहरन१ चउ४ उक्त॥
अरि१असि२सक्ति३रुसर४इत्यादि,बिक्खहुए४क्रमकरि रनबादि९७
बादर१ राकवँ२ क्षौमँ३ बखानि, जिम कौशेयँ४ बसन२चउ४जानि
सूत१रु रोम२सन३सु पुनिपट्ट४, वस्त्र१न भवक्रम करि चउ४बट्ट९८
सूक१अनगु२अणु३धुरैत्रय३धान्य३,महितसजातिहुसन्नद्धमान्य॥

१जिसकी क्रान्ति१चांदनी[गौरी]और चन्द्रमाकी उज्वलता की शंका कराती होवे ऐसी चांदीको चतुर लोग२१रीक्षा(पहचान)करके संग्रह करैं ॥९३॥ रत्न, सुवर्ण, चांदी,४घडेहुए और३बिनाघडे इन पदार्थोंसे५राज्यकेचौथे अंग(खजाने)को नीति चतुर राजा पूर्ण करै ॥ ९४ ॥ ६हासिल के चार बट करके तीन बट तो धर्म, अर्थ और काम में लगावै और चौथा बट(हिस्सा)खजाने में रक्खै ॥९५॥ अन्य संचय से भी खजाने को पूर्ण करके राजा उसको ७ सुख करनेवाला मानकर तथा उसको अपने हाथ में(स्वाधीन) किया जानकर सब पर गर्जना करै ॥९६॥ चार प्रकार के ८ शस्त्र कहे हैं जिनमें हाथ से छोडकर चलायाजावे उस चक्र आदि को मुक्त कहते हैं, और हाथसे बिना छोडे चलायेजावैं उन तलवार आदि को अमुक्त कहते हैं, और हाथसे छोडकरभी चलायेजातेहैं और बिना छोडे हाथ में रखकर भी चलायेजाते हैं वे भाला, बरछी आदि मुक्तामुक्त कहाते हैं, और जो यन्त्रसे प्रेरेजाते हैं उन बाण और गोली आदिको यन्त्रमुक्तकहते हैं, जिन को युद्ध में बाद [हठ] करनेवाले (वीर) ९चक्र, तरवार, बरछी और तीर आदि क्रम से देखो ॥९७॥१०सूतके वस्त्र ११ऊनके वस्त्र १२सणके वस्त्र १३रेशमके वस्त्र ये चार प्रकारके वस्त्र होते हैं ॥ ९८ ॥ १४ मुख्य करके धान्य तीन प्रकार का है, जिनमें चावल,जव, गेहूँ आदिको सूकधान्य कहतेहैं और चना,उडद,मूंग, मोठ,

लें इन४सों कर आय लखि, छमहूकों कछु छोरि ॥
जोतें कृषि हल हरखि जिम, रहैं कुलोभहिं मोरि ॥ १०५ ॥
रत्न१ कनक२ अरु रजत३ के, जहँ आकरै जे३ देस ॥
पोतजीवैं४ जहँ पोतसों, उतरैं वसु चय४ एस ॥ १०६ ॥
अष्टहि जनपद५ मुख्य ए, महि तिम पच५ अमुख्य ॥
उपवनं१अन२गोंचर३अर्ग४रु, खिल खनि५ए सब मुख्य १०७

पादाकुलकम् ॥

इन तेरह१३ देसनके आश्रित, होइ प्रजा जितनी चाहत हित॥
तस्कर१ धौटि २ आदि दुख तिनके, सकल हरै समा बासिनके
तब सब देस रहैं धन बरसत, देस५ अग पचम५ यह दरसत ॥
अगछठो६दुर्ग६भिधंअक्खिय, ऋपिनतदीयंभेदनव१राक्खिय १०९

( )

महिपति दुर्ग६सलिलमय१गिरिमय२, अंस्ममय३रु इष्टोंमय४अरु
वनमय५ विदित मृत्तिकामय६ बलि, सो मरुमयं७रु मर्त्यमय८सत्थ

इन देशों की जैसी आमद देखें वैसा ही उनका हासिल लवें और १ जो खेती करने में समर्थ होवें उनसे कुछ छोड़कर हासिल लेवें जिस कारण खेती करने वाले प्रसन्न होकर हल जोतें और खोटे लोभ को मिटाकर रहें ॥ १०५ ॥ रत्न, सुवर्ण, चांदी की जहां खानें होय २ उस देश का नाम आकर है, और जहां उतराई का ४ धन देकर नाव से उतरते हैं उस देश को ३ पोतजीवी कहते हैं ॥ १०६ ॥ इस प्रकार चार देश तो अनूप आदि और तीन देश खानवाले और चौथा पोतजीवी ये आठ५देश तो मुख्य हैं, और भूमि के पांच प्रदेश गौण हैं जिनमें ६ बाग, वन७गउवों के चरने की भूमि ८ पर्वत और उपरोक्त तीनों ६खानों के सिवाय बाकी की खानें ये अमुख्य हैं ॥ १०७ ॥ १० चोरों का ११ आततायियों का ॥ १०८ ॥ राज्य का छठा अंग १२ दुर्ग नामक है १३ जिसके ऋषियों ने नव भेद रक्खे हैं ॥ १०९ ॥ हे राजा ये दुर्ग जलमई, पर्वतमई, १४ पत्थरमई (पत्थरों से चुनाहुआ) १५ ईंटों से रचाहुआ, १६ निर्जल भूमिमय १७मनुष्यमई (मनुष्यों के समूह का बनाहुआ)।

बरनत नवम ९ दारुमय ९ इन ९ बिच, पहिले दुव २ उत्तम पहिचानि ॥
अग्गें छ ६ मित मध्यम२ सुवें इक्खहु, जो अंतिम९ सु अधम४ इक१ जानि ॥ ११०॥
तहँ अन्न १ रु उदक २ रु घृत३ तैल४रु, तूल५ दारु६ गोलक ७ तिम तोप८ ॥
सीसक९ सोर१० सूत्र११ सन१२सत्र१३न, रक्खहि गढ्ढन निंचय आरोप ॥
छठो६ अंग दुर्ग६ यह छोनिप, जो छोनिपं राज्जैं इहिं६ जुद्ध ॥
मुदित रहैं सु बलिष्ठहुसों सुरि१, पुनि दब्बैं पर अवनि२ मयुद्ध ॥
भनित अंग सप्तम ७ बलं ७ भेदहु, मनुज१ गज २ रु हय३ रथ ४ चउ४ मान ॥
मनुज१ छह६ भेद प्रथम१ तहँ मौलं१सु, पीढिनतैं सु बिसास प्रधान१॥
दूजो२ भृत्य२ बस जु लहि बेतन२, तीजो३ मैत्र३ जु लहि मित्रत्व ॥
श्रैण्य ४ सु ठहै जु समय बस आश्रित४, सो आर्टविक ५ वंयजा सत्व ॥ ११२ ॥

नवमा दुर्ग काष्टमई कहते हैं इनमें प्रथमके दूए दुर्ग[जलका और पर्वतका]उत्तमहैं १ और आगे के छः दुर्ग मध्यम हैं २ ये आठ दुर्ग तो श्रेष्ठ वास करने योग्य हैं और अन्तका काष्ट(लकड़ी)का दुर्ग अधम है ॥११०॥ ३जल४रुई५पलीता[ईंधन]६ शीशा ७ इन का संचय करके रक्खें, ८ हे राजा रामसिंह राज्य के छठे अंग इस दुर्ग को जो राजा युद्ध में सज्जित करता है वह ९ बलवान से भी मुड़कर प्रसन्न रहता है और वह चतुर पराई १० भूमि को दबाता है ॥१११॥ राज्य का सातवां अंग ११ सेना है जिसके मनुष्य, हाथी घोड़ा, रथ ये चार भेद हैं इनमें प्रथम मनुष्य के छः भेद हैं, जिनमें पीढियों से १२ मोल लिया हुआ होवे वह विश्वास में मुख्य है, दूसरा सेवक वह है जो १३ तनखाह लेकर वश हुआ होवे, तीसरा मित्रता से वश हुआ होवे, चौथा सेवक जो समय के वश से आश्रित हुआ होवे उसको श्रैण्य कहते हैं १५ वनके उत्पन्न हुए सत्व से जो आश्रित हुआ होवे उसको १४ आटवी कहते हैं ॥ ११२ ॥

अत्व१ सत्व२ अन्त्यानुप्रास १ ॥

आरि ह्वै स्ववस दबायो इतरन६, सो अमित्र६ समुझहु नरनाह॥
उत्तम१त्रय३चोथो४मध्यम२ इह, पुनि अतिम५।६दुव२ अधम३सिपाह
बल७ को अग द्वितिय२जु वारन२, सुहु चउ४विध नामन अनुसार॥
भद्र१मद२मृग३मिश्र४भिदाभनि, पुनि मुनि सूचित सुनहु प्रकार११३
मधुनिभ१ दंत१जघन३सूकर सम३, उन्नत३ बंस३धनुख आकार३
सुडा४ वृत्त४ लोम५ मृदु५ सजुत, ह्वै गर्जित६ बारिद अनुहार६॥
रग हरित७सुरभित७मद राजत, ओठ८ रु मुख८ काकुद८ आरक्त
मत्त९हु वाहय९नयन१०मधुपिंगल१०,——वृत्त११ग्रीवा११ सु विभक्त
जोकरसप्त७।१२उच्छ्रित१२रुजाकै,अठारह१८।१३किबीसनखआहि
इभ२ जिहिं भूप चतुर ह्वै ऐसिस, भाखत भद्र१ जाति करि जाहि
सिंह१नयन१ कछा२ उर२सिथिल२ रु, लव३थूल१ पेचक३गलपेट
जास चतुर ऐसो इभ२ जाकै, भनि बुध करत मंद२ पभ भेट ११५

१ ह राजा जो अन्य लोगों का दबाया हुआ शत्रु अपने पक्ष में होजावै उसको अमित्र समझो, इनमें पहिले कहेहुए तीनतो उत्तम हैं और चौथा सेवक मध्यम है और अनके दोनों (पांचवां और छठा) अधम हैं १ सेना का दूसरा अंग हाथी है सो भी नामों के अनुसार चार प्रकार का है १ भेद कहकर ४ मुनियों के सूचना किये हुए प्रकार सुनो ॥ ११३ ॥ ५ दूध के अथवा महुवे के समान जिसके दांत होवें और सूअर के समान (पुष्ट) ६ जंघा होवें और धनुष के आकार ७ उठी हुई पीठ की हड्डी (पासेका हाड) होवे ८ गोल सुंड कोमल ९ केशों सहित होवे १० मेघ के समान गर्जना, हरे रंग का और ११ सुगंधिवाला जिसका मद शोभा देता होवे और जिसके होठ, मुख १२ तालुवा १३ लाल होवें मस्त होने पर भी १४ सवारी देता होवे, जिसके नेत्र १५ महुवा के समान पीले होवें और श्रेष्ट भाग में घटी हुई गोल गरदन होवे ॥ ११४ ॥ जो हाथी सात हाथ १६ ऊंचा और जिसके अठारह अथवा बीस नख होवें १७ ईदृश [ऐसा] हाथी जिस राजाकी हस्तिशालामें होवे उसको भद्रजाति कहते हैं १८ जिस हाथी के नेत्र सिंह के समान होवें कुक्ष और छाती १९ ढीली होवे २० पूछ का मूलभाग, गला और पेट लंबा और मोटा होवे ऐसा हाथी जिसकी गजशाला में होवें उसको २१ मंदजाति का हाथी कहते हैं ॥ ११५ ॥

कर्ण१उदर१मेह्न१पय१कंठ रु, [२]केर१ रद१ लोम१=ह्रस्व जिहिं केर
सो मृग१जाति गज२रु मिश्रित[३] सब, बहि लच्छन मिश्र४सु इम बेरं
बल७ कौं अंग तुरग३ तीजो३ बलि, सूचित तास भिदा बहु सूरि[५]
बल१रय२ रूप३ आयु४ तिम बिक्रम५, पानिय६ खेत७अर्घ८क्रमपूरि

॥ षट्पात् ॥

खुरासान१ ताजिक२ तुखार३ भाड़ेज४खेत[६] भव ॥
बाँलि बनायु५ कांबोज६ जात बाल्हिक७ उत्तम१ जव[८] ॥
गोजिकान१ केकान२ मौढहर३ राजसूल ४ अव ॥
मध्यम[९]२ रु गव्हर१ सिंधुपार२ साकुं[१०]र३ कनिष्ट४ सब ॥
तिम इतर[११] देस भव जे तुरंग[१२] नीच४ कहे पांडव नकुल१ ॥
मुनि सालिहोत्र२ पुब्बहु सुमति बाजितं[१३] बरनिय बिपुल

॥ दोहा ॥

जल भव१कति कति ज्वलन[१४] भव२, वात[१५] प्रभव३कति बाजि
येन१ घूक२ भव३ क्रम इहाँ, रहत बर्ण चउ४ राजि॥११८॥

॥ षट्पात् ॥

कुसुमगंध१ मत्सग२ बिवेक३ द्विज[१६]१ हयकै देखहु ॥

कान पट १लिंग चरण कंठ २सुंड दन्त और केश जिसके छोटे होवै वह हाथी मृगजाति का है और जो अपने४शरीर पर ये सब लक्षण३मिलेहुए धारण करै उसको मिश्र कहते हैं. फिर सेना का तीसरा अंग घोड़ा है जिसके ५ पण्डित लोग बहुत भेद कहते हैं ॥११६॥६इन खेतों के जन्मेहुए७पुनि [फिर]८उपरोक्त देशों के पैदा हुए तो उत्तम वेग वाले होते हैं ९ उपरोक्त चार देशों के घोड़े मध्यम होते हैं१०इन दो देशों के घोड़े अधम और११अन्य देशों के उत्पन्न हुए घोड़े पांडव नकुल ने अधमाधम कहे हैं१२नकुल से पहिले ही बुद्धिमान् शालिहोत्र मुनिने १३ घोड़ों के शास्त्र शालिहोत्र में बहुत वर्णन किये हैं ॥ ११७ ॥ जल से उत्पन्नहुए घोड़े मृग१४अग्नि से उत्पन्न हुए उलूक (घूघू) और१५पवन से पैदाहुए घोड़े क्रम पूर्वक मंगल करनेवाले मानेजाते हैं जो चार वर्ण के रह कर शोभायमान रहते हैं ॥ ११८ ॥ १६ ब्राह्मण जाति के घोड़े के शरीर में

अगरु गंध१ रय२ ओज३ मान४ बाहुज२ गत पेखहु ॥
सर्पिगंध१ मन सभय२ अस्व ऊरुज३ अवगाहत ॥
सठ१ तिमिगंध२ असत्व३ चकित४ चोथो४ जु न चाहत ॥
सित१रक्त२पीत३हरित४रु असित५कपिस६संवल७ तिन्ह वर्ण क्रम
पीत१जु तुरग२सित१नेत्र२पय३चक्रवाक१सुभ छत्र छेम११९
स्वेत१चरन२मुख३संष्ति अग१जंबूफलों आकृति२ ॥
मल्लिकाक्ष२ वह महत भद्र२ वर्द्धक नृप भाँ१कृति ॥
स्वेत१ अग२ जो संप्ति स्याम१कर्ण२ सु अति सुभ फल॥
पय१।२।३।४मुख५केसर६पुच्छ७वच्छ८सित१सो वसुमंगल४ ॥
अंगोधि वरन१अरु पउ४चरन सित१सु पचं५कल्यान हय५ ॥
ए५सुभ१रु सित२जँघउ४पयअसितँ२जमदूत१सु गेरतअजय२ १२०

पुष्प की सुगन्ध मत्सरता अन्यकी भलाईमें द्वेष करना और ज्ञान[विचार]होता है ३ क्षत्रिय जाति के घोड़े के शरीर में १ अगर (काष्ठ विशेष) की गन्ध वेग तेज २ प्राण [पराक्रम] होता है ५ वैश्य जाति के घोड़े में ४ घृत की गन्ध और मन में भय होता है ८ शूद्र जाति के घोड़े में मूर्खता ९ मच्छी की गंध ७ पराक्रम हीन और भय युक्त होता है सो नहीं रखना चाहिये, इन घोड़ों के रंग वर्ण के क्रम से श्वेत (नुकरा) लाल (कुमैत) पीला, हरा (नीला), काला (अबलखी), ६ दो रंगका अबलख १० अनेक रंग मिला हुआ अबलख जानो और पीले रंग के घोड़े के चरण और नेत्र श्वेत होवें उस का नाम ११चक्रवाक है सो रखनेवाला यह १२समर्थ घोड़ा शुभ है ॥११९॥१३ जिस घोड़ेके चरण और मुख तो श्वेतहोवें और शरीरका रंग१४जम्बू(जामुण) के फलके समान होवें उस पुज्य घोड़ेको १५ मल्लिकाक्ष कहते हैं सो १६मंगल [शुभ] और राजा की १७ कान्ति बढ़ानेवाला है १८ जो घोड़ा श्वेत रंगका होवे और उसके कान काले होवें वह [श्यामकर्ण] अत्यन्त शुभ फलदेनेवाला है और जिस घोड़े के चारों चरण, मुख १९ केसवाला, पाछड़ा २० छाती ये आठ अंग श्वेत होवें उसको अष्टमंगल कहते हैं जो शुभ हैं और जिसके चारों चरण और२१ललाट श्वेत रंगके होवें सो शुभदायक२२पञ्चकल्याणनामक घोड़ा है इतने घोड़ेतो२३शुभहैं और२४श्वेत रंगके घोड़ेके चारोंचरण२५कालेहोवें उसको

दक्खिन भ्रम१ जिहिं कंठ२ दुव२, इन्द्र८ नाम तस आहि ॥
सु १८जनपद वर्द्धक सदा, वामावर्त२ वृथाहि ॥ १२४ ॥
अंसपार्श्व१ आवर्त इक१।२, पद्मलच्छन९सु पुराये९ ॥
नकमध्य१ इक१ वा दुव२ सु, चक्रवर्ति१०सुभ१० गुराय१२५
उत्तम१ ए दस१० अर्व अब, असु१ रु गल२भ्रम आनि ॥
कुक्षि३नाभि४हिय५पार्श्व६कटि७, जे क्रम मध्यम२जानि१२६

॥ षट्पात् ॥

इक१ पृष्ट१ आवर्त१ असुभ१ यह भनित भयकर१ ॥
भाल१ इक१ हु वाम२ भ्रम१ कलह द्रुत स्वामि स्वयंकर२॥
इक१ वदन१ आवर्त१ अपर२ कचात२ सु अर्दक३ ॥
जानुदेस१ भ्रम१ जोहु वाजि खल४ अध्व विमर्दक४ ॥
आवर्त१ जास सेफ१ सु असुभ५ प्रभुनासक५पहिचानिये ॥
आवर्त१त्रि३वलि१जाके वहहु नृप त्रि३वर्ग हय६मानिये१२७

॥ दोहा ॥

पृष्ठ१ वंस१ इक१ भ्रम१ असुभ७, धूमकेतु७ अभिधान ॥
नाभि१पुच्छ२गुद३त्रय३भ्रमन, सो८जमराज समान८॥१२८॥

वाली दो भमरियें होवें उसका नाम इन्द्र है सो शुभ १ है, और वे सदैव २ देश को बढ़ानेवाली हैं और वे ही भमरियें ३ वाम मुखवाली होवें तो वृथा हैं ॥ १२४ ॥ ४ कंधे के बगवाड़ पर एक भमरी होय उसका नाम पद्म लक्षण है सो ५ शुभ है, और ६ नासिका में एक वा दो भमरियें होवें उस का नाम चक्रवर्ती है सो शुभ जानो ॥१२५॥ ७ उपरोक्त दश घोड़े सो उत्तम हैं ॥ १२६ ॥ ८पीठ की भमरी अशुभ है और ललाट पर वाममुख की एक भमरी होवे वह ९ अपने स्वामी से शीघ्र कलह करानेवाली है १०एक भमरी मुख पर और दूसरी ११कानके अन्त में होवे सो१२पीड़ाकारी है, और घुटनों पर भमरी होवे वह दुष्ट घोड़ा भी१३मार्ग में ही मारनेवाला है १४जिसघोड़े के लिंग पर भमरी होवे सो भी स्वामी को मारनेवाला अशुभ जानो और जिस घोड़े के लिंग पर तीन भमरी होवें उस घोड़े को भी हे राजा त्रिवर्ग (वृद्धि का नाश करनेवाला) जानो ॥ १२७ ॥ १५ पीठ की लंबी हड्डी पर ॥ १२८ ॥

॥ रोला ॥

अध१ ऊरध२ आवर्त२ जुगर न परसैं जमदूत९ सु९ ॥
ओगुन खिल अवनीस सुनहु अब हय संभूत सु ॥
अधिक१हीन२ रद१ अंड२असित काकुंद३मुसली४इम ॥
बदन५करालीद्बहुरि घंटी७ शृंगी८त्रि३कर्ण९तिम ॥१२९॥
सह कंकोली१० द्वि२ सफ११ पंच५ जट२अंजनी१२हु पुनि॥
संथन१४ चउद्दह १४ असुभ१४गादित वृद्धन स्वबुद्धि गुनि॥
इंदिदिर समर असित१ तालु१ व्है तो वह असुभ न ॥
सब भ्रम दक्खिन१ससुभ१सव्य२वर्ती कहुँ ससुभ न२ १३०

॥ दोहा ॥

इम बाजि३न लखि सुभ१ असुभ२, समुचित संग्रहि संप्रि३।
सह पौंटव रक्खैं सुही, वाढैं अरिन विलाप्रि ॥ १३१ ॥
कंटक७ अंग तीजो३ कहिय, यह हय३ नाम उदार ॥

१ऊपर नीचे दो भमरियें होवें उसको जमदूत स्पर्श करता है २हे राजा वा... के अवगुण भी घोड़ोंसे३उत्पन्न होनेवाले हैं सो सुनो. अधिकदंता ४और हीन दन्ता इसी प्रकार हीन अण्ड और अधिक अण्ड अशुभ है ५श्याम तालुवाला ६ सब शरीर एक रंग का और एक चरण अन्य रंगका होवे उसको मुसली कहते हैं, इसीप्रकार ७ मुखकी अशुभ भमरी विशेषवाला ८ नीचे के ओठ से बाहर दंत निकला हुआ होवे उसको कराली कहते हैं ९ वह और गले की भमरवाला जिसको कंठभंजन कहते हैं वह और १०मस्तक पर सींगका चिन्ह होवे वह ११ तीन कानवाला॥ १२९ ॥ १२ ककोली (खोड़विशेष सहित १३ दो खुरवाला १४ मस्तक पर केशवाली में पांच भमरियें हों उसको पंचजट कहते हैं वह और फिर १५नेत्र के नीचे भमरीवाला १६ अधिकस्तन (चोंचे) वाला इन चौदह प्रकार के घोड़ों को वृद्ध लोगों ने अपनी बुद्धि को फैलाकर अशुभ १७ कहे हैं. इन में १८नील कमल (गट्टल) के समान श्याम तालुवाला होवे वह अशुभ नहीं है और ऊपर कही हुई सब भमरियें दक्षिण मुखवाली शुभ और १९वाम मुखवाली अशुभ हैं ॥१३०॥२०घोड़े एकत्र करें और२१चतुराई से रक्खै सो ही शत्रुओं को रुलाता है ॥१३१॥२२सेना क

स्पंदन४ अब चोथो४ सुनहु, प्रस्तुत च्यारि४ प्रकार॥१३२॥
कर्म उचित च्यारि४ न कथित, चउ४ छ६ अठ८दस१०चक्र
कहे चक्रन मित४।६।८।१०जुत्तहय,सुभ१सवेग२छितिसक्र१३३
रन समुचित चउ४ चक्र रथ, चउ४ हय सुखद विचारि ॥
गक्लिय अरु अब रथरनहु, धरनि लुप्त कलि४धारि॥१३४॥
अग राज्यके सप्त७ ए, मुख्य बला७वधि मानि ॥
इतरहु अग अवस्य इम, जेहु लेहु प्रभु जानि ॥ १३५ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

त्रेयी३।१ त्यों अथर्व२ दडनीति३ साति४ पुष्टि५कर्म,
कोविद कहे एरिसं पुरोहित१ प्रमान्यों जात ॥
सहिता१ गनित२ होरा३ केरल४ सकुन५ पच५,
भेद जानै ज्योतिष सो गणक३ वखान्यों जात ॥
पीढिनतें सील१ कुल२ वारो१ धीर२ वाजि१ गज२,
सस्त्र३ सास्त्र ४ विद्याबुध ३ सेनापति ३ जान्यों जात ॥
वेद१ स्मृति२ कुसल अरागा३ द्वेष४ चेष्टाबुध५,

१ सेना का चौथा अंग रथ है यह २सेना के इस प्रकरण से चार प्रकार का है ३ ऊपर कहे हुए पहिये के होते हैं सो ५हे पृथ्वी के इन्द्र (रामसिंह) इन रथों में जितने ४ पहिये होंय उतने ही घोड़े जुतने से शुभ वेगवाले होते हैं ॥ १३३ ॥ इनमें युद्धके ६ उचित चार पहियों का रथ ही है और चार घोड़ों का जोतना भी सुख देनेवाले विचार कर रक्खे हैं परन्तु अब ७ कलियुग में युद्ध के रथ भूमि पर मिटगये जानो ॥ १३४ ॥ राज्य के सात अंग ८ सेना पर्यन्त मानो परन्तु ९ और भी अवश्य अंग हैं वे भी हे प्रभु सुनो ॥ १३५ ॥ १०ऋक्, यजु, साम, इन तीन वेदों और मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि अभिचार अथ मंत्र में ११ नीति शास्त्र, शान्ति और पुष्टि कर्म में १२पंडित १३ऐसा पुरोहित चाहिये १४ऊपर कहे हुए पांच भेद युक्त ज्योतिष को जाननेवाला ज्योतिर्वी कहाता है १५किसी में प्रीति और द्वेष नहीं करनेवाला १६ चेष्टा से अभिप्राय को जाननेवाला

अष्टक[1]८ दसक[2]१० वा यौं न्यायकर्म[3]४ आन्यौं जात१३६
सर्व रनकोबिद[4]१ परीच्छित[5]रु सिद्धसस्त्र[6]३,
हस्ती४ हय५ यंता[7]४।५ दुष्टदंडक[8]६ ऐहै जोधं५ जोहि ॥
चो४उपाय[9]१ छः६गुनं[10]२प्रपंची१।२ देस३ काल४बुध३।४,
मंडलेस[11]मान्य५ आप्त[12]६ सांधिविग्रहिक[13]६ सोहि ॥
सर्व[14] संचयकारी१ यंत्रयोधी[15]२ आप्त[16]३ स्वामीके,
दिवायैंहू मरैं दैं गढ४ दुर्गपति[17]७ ऐसो होहि ॥
आप्त१ रु अलुब्ध[18]२सर्व भाषा लिपि वेदी[19]३ कूट,
गनित बिबेकी[20]४ अधिकारी लेखसाला[21]को८हि ॥१३७॥
स्मार्तकर्म कोबिद१जथा उचित दंडदाता२,
धर्मधुर धीर३ सत्यवादी४ होइ दंडधर[22]९ ॥
सुश्रुता[23]१दि आयुर्वेद अभ्यासी१निदान[24]पर२,

१मनुस्मृतिमें कहेहुए क्रोधसे उत्पन्न होनेवाले आठ दोष "पैशुन्यं साहस द्रोह ईर्ष्याऽसूयार्थदूषणम्॥ वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोपि गणोष्टकः" ॥ २ काम से उत्पन्न होनेवाले दश दोष "मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः। तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः" ॥ इन सब के जानने में कुशल होवे ऐसा ३न्याय करनेवाला रखना चाहिये ॥१३६॥४सब प्रकारके युद्धों में चतुर ५ परीक्षा कियेहुए ६ जिनके शस्त्र खाली नहीं जावैं ऐसे ७ हाथी घोडों को उत्तम चलाने (सिखादेते) वाले, दुष्टों को दंड देनेवाले ऐसे ८ योद्धा (वीर) रखने चाहिये ९ साम आदि चारों उपाय १० संधि आदि छहों गुणों को रचजाननेवाला, देश काल में चतुर ऐसा ११ देशाधिप (हाकिम) मान १२ पाने योग्य और १३ वही सन्धि विग्रहका कार्य करनेवाला होना चाहिये और सब १४ संचय का करनेवाला १५ तोप आदि यन्त्रों से युद्ध करनेवाला १६स त्यवादी १७ ऐसा किल्लादार होवे, सत्यवादी १८ निर्लोभी १९ सब भाषाओं के लेखको जाननेवाला २० कूटगणित को जाननेवाला २१ दफतर का अधिकारी होवे ॥ १३७ ॥ धर्म शास्त्र का पंडित, उचित दण्डका देनेवाला २२ ऐसा कोतवाल होना चाहिये २३ सुश्रुत आदि आयुर्वेद का अभ्यास किया हुआ २४ रोग का कारण पहिचानने में श्रेष्ठ,

धर्मधर३ धीर४ क्रिया कोविद५ सो वैद्य१० वर ॥
रत्न१ हेम२ रजत३ पटा४दिक बिधान बुध१,
आप्त२ रु कुटुंबी३त्यों अलुब्ध४ सो११ है भाण्डधर ॥
लेखन कुसल१ सर्वदेसलिपि१ बानी२ बुध१।२,
आप्त४ अग्रवाची५ते२ ऽहै बाचक१।१२रु लेखकर २।१।३ ॥११८॥
पीढिनतें आप्त१ स्वादुपाची२ सूदसास्त्र बुध३,
लोभहीन४ वैद्यक बिसारद५ऽहै सूपकार१४ ॥
मेधावी१ अलोभी२ परचिंतवेदी३ व्यक्तवाक्य४,
निर्भय५ प्रगल्भ६ सत्यवादी७ऽहै सदेसहार१५ ॥
स्थानदंडपाती१ गजसिच्छा१ हयसिच्छा२ दच्छ१।३,
सिद्धसस्त्र४ आप्त४ऽहै गजा१ऽर्च२अधिकारवार१६।१७ ॥
लोहभेद बोधी१ चित्रयोधी२ सानकर्मपटु३,
सूर४ सस्त्रसाधक५ समाश्रित६ऽहै सस्त्रधार१८॥११९॥
काना१ खर्ज२ वृद्ध३ कुब्ज४ बामन५ खलति६ पंगु७,

रत्न, सुवर्ण, चांदी, ⁴वस्त्र आदि के विधान में चतुर, सत्यवादी, कुटुंबवाला २ निर्लोभीऐसा ११ भंडारी(भंडारका दरोगा), सर्वदेशकीलिपि लिखनेमें कुशल, बोलने में चतुर, सत्यवादी, पढने में कहीं रुके नहीं ऐसा आगे से आगे बांचने वाला, इस प्रकार का ४ बांचनेवाला और लिखनेवाला (अहलकार, मुनशी) चाहिये ॥ ११८ ॥ पीढियों से सत्यवक्ता ५ स्वाद भोजन पकानेवाला ६ रसोई के शास्त्र में पण्डित ७ वैद्यक में निपुण ऐसा ८ रसोई पकानेवाला होवे ९ बुद्धिमान् १० दूसरे के मनकी बात को जाननेवाला ११ स्पष्ट बोलनेवाला १२उपस्थित बुद्धिवाला (हाजर जवाब) १३ ऐसा दूत होवे १४ दंड के स्थान पर दंड देनेवाला, हाथियों की और घोड़े की शिक्षा में चतुर, शस्त्र विद्या में कुशल(शस्त्रों के पूर्ण अभ्यासवाला)सत्यवादी ऐसा हाथी १५घोड़ोंका अधिकारी होना चाहिये, लोहे के भेदों को १६ जाननेवाला १७ आश्चर्य युक्त युद्ध करनेवाला, खरशाण के कार्य में चतुर, वीर, शस्त्रों का साधन कियाहुआ १८ श्रेष्ठ रीति से आश्रित होवे वह १९ सकलीघर होना चाहिये ॥ ११९ ॥ २० काणा, २१ लोड़ा, बुड्ढा २२ कुबड़ा, ठिंगना २३खल्वाट (टाटला)बागला, कोढी,

कुष्ट१ खैन२वारे८।९ अवरोध द्वारवासी१९एहि ॥
आप्त१ रु अरूप२ लोभहीन३ जितइंद्रिय४०है,
चेष्टा१ऽऽकार२वेदी५।६ अवरोध अधिकारी२०जेहि ॥
सर्वचित्तग्राही१ दर्पबर्जित२ मधुरबाची३,
रूप१ तेज२ वारे४।५ बैत्रवारे६प्रतिहार२१ तेहि ॥
औरहु अनेक राज्यवारे उपअंग ऐसैं,
जानौं प्रभुराम२०१४ उपयोगी जे नृपनकेहि ॥ १४० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम८राशौ रामसिंहचरित्रे राज्ञे राजनीतिश्रावणं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥
आदितः पंचषष्ट्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥ ३६५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तहँ ऐसैं पंडित जनन, सब मग बरनि सुरीति ॥
पुहवीपहुँ पहुराम२०१४प्रति, प्रथित कहे सहप्रीति ॥ १ ॥
सूरि कथित सब मति समुझि, जोग्य१ अजोग्यहि जानि ॥
नास्तिक मग खट६तजि नियत, आस्तिक मग पग आनि२॥२॥
सहित धर्म१ तिम भक्ति२ सह, आतमबोध३ उपदेस ॥
पथ यह मन्न्यौं सिसुपनहु, निज गिनि राम२०१४नरेस॥३॥

१क्षय (थैसिस) रोगवाला, ये २ जनाने द्वार पर रहनेवाले होवें ३ चेष्टा और आकार से अभिप्राय को जाननेवाला ४ जनानी डोढी का दरोगा होना चाहिये ५ उपरोक्त लक्षणोंवाले छड़ीदार और ६ द्वारपाल होवैं ॥ १४० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टम राशि में रामसिंह के चरित्र मे राजा को राजनीति सुनाने का तीसरा मयूख समाप्त हुआ ॥३॥ और आदि से तीन सौ पैंसठ ३६५मयूख हुए ॥

तहां इसप्रकार पण्डितो ने ७ राजा के सब मार्गों का श्रेष्ठ रीति से वर्णन करके ८ राजा रामसिंह प्रति प्रीति सहित ९ प्रसिद्ध कहे ॥ १ ॥ १० पण्डितों के कहे हुए ११ निश्चय ही ॥ २ ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

दस१० सम वय इम दिपत सकल १विबिधेप भूप सुनि ॥
दिये सभा बुध द्विजन पुरट१ भू२ पट३ भूखन पुनि ॥
रक्खि निकट अनुरूप भनित कवि१ सूरि२ मन्त्रि३ भट४ ॥
लग्गिय सिच्छा लेन सबन समुचित बीरन बट ॥
जगि१ ब्राह्मयमुहूरत१नित्य जिम करि मगल दरसन२कथित॥
दैं३द्विजन भर्म१भोजन२अदम स्वलखि आज्य भोजन४सहित॥४॥
हय१ गज२ सुरभि३ निहारि४ सौच आचरि६ सौचालय ॥
कर१ पय२ रद३ करि७ सुद्द नियत बिधि न्हाइ८ निपुन नय॥
सध्या बिरचि९ सग्रग अष्टि१६ भेदन प्रभु अर्चन१० ॥
श्राद्ध१० रु तर्पन२ सद्धि११श्रवन सुकथा जु सपर्चन१२॥
सध्या द्वितीय२लगतहि करि१३सु पुनि सुनि१४भारत भागवत२
अध्येयन धारि१५अप्पन उचित द्रुत अरोहि गज१हय२ द्रवत१६॥५॥
गवत१ द्रवत२ अत्यानुप्रास ॥ १ ॥
इनहिं फोरि वय उचित अस्त्र अनुक्रम अभ्यासहिं१७ ॥
बैश्वदेवकरि१८ बहुरि असन मध्यान्ह२ उपासहिं१९ ॥
मन्त्रिन सह रचि मन्त्र२० करहिं नय मर्म बिलोकन२१ ॥
सुनि व्यय१ आय समस्त२२ सद्धि खेल२३हु सखिलोकन ॥
अपरान्ह३ समय सध्याहु इम रचि२४गज१हय२ फेरत रहत२५॥

१ दश वर्ष की अवस्था में इसप्रकार शोभायमान होकर राजा ने २ अपना कर्त्तव्य सुनकर सभा में विद्वान् ब्राह्मणों को ३सुवर्ण, भूमि, वस्त्र दिये ४अपने सदृश ५ पवित्र ६ चार घड़ी रात्रि बाकी रहते उठकर ७ ब्राह्मणों को सुवर्ण देकर ८ घृत के पात्र में अपना मुख देख कर ॥ ४ ॥ ९ कानों में श्रेष्ठ कथा का सयोग करते हैं १० अपने उचित पढने को धारण करके शीघ्र हाथी घोड़े पर चढकर ११ चलते हैं ॥ ५ ॥ १२ तथा लोका से १३ सन्ध्या के समय भी "तीसरे पहर से सूर्यास्त पर्यन्त के समय को अपराह्न कहते हैं"

सस्त्रहु समरत४पुनि सद्धिकैं२६लै*अचवन१भोजन२लहत२७॥६॥
बिलोकन१ खिलोकन२ अंत्यानुप्रासः १ ॥

॥ दोहा ॥

जननी१ गुरु२ कुलवृद्ध३ जे, बंदि चरन तिन्ह२८ वीर ॥
मित्रन रमि२९ निद्रा समय, धरैं सयन पय३० धीर ॥ ७ ॥
ब्राह्ममुहूरत१ही बहुरि, ऐसैं जगि अवनीस ॥
चर्या प्रतिदिन आचरैं, श्रुति निदेस बहि सीस ॥ ८ ॥
ऐसे क्रम बुंदी अधिप, हायन दस१० बय होत ॥
सद्धि बढ्यो स्वबिधेय सब, इन कि मकर२ उद्योत ॥ ९ ॥
महाराव कोटा महिप, जो इत दिल्लिय जाइ ॥
बिफल होत चिंतत बिबिध, भयो बिमन खिन भाइ ॥१०॥
बिष्णुसिंह२००१२नृप३ सिक्खबिधि, चिंति सकल अब चित्त॥
पछितावत महि बिरतपनैं, बिरह पिक्खि भुव१ बित्त ॥११॥
अंगरेज अनुकूल इक१, मिल्यो तदुक्त६ न मानि ॥
मत्त अनुज७ सिखयो घुरयो, जुज्झत द्रुत बल जानि ॥१२॥
सब खिल८ सासक समयके, अंगरेज मति इद्ध ॥
जालम दिस अनुकूल जे, सज्ज भये बल सिद्ध ॥१३॥

॥ षट्पात् ॥

करन जुद्ध कोटेस सज्जि सानुज दिल्ली सन ॥
आयो सरद४ अनेह१० मज्झि देसहि स्वकीय मन ॥

---

* आचमन करके ॥ ६ ॥ ७ ॥ १ आचरण ॥ ८ ॥ २ मानों मकर संक्रान्ति का सूर्य बढै जैसे बढा ॥ ९ ॥ १० ॥ ३ बुंदी के राजा विष्णुसिंह ने पहिले शिक्षा दी थी उस सब को याद करके भूमि को ४ छोडकर उस भूमि रूपी ५ धन से विरह देखकर अब पछताता है ॥ ११ ॥ ६ उस अंगरेज का कहना नहीं मानकर ७ अपने मस्त छोटे भाई को सिखाया हुआ ॥ १२ ॥ ८ बाकी के इस समय के सब हाकिम ९ बडे बुद्धिमान् अंगरेज जालमसिंह की तरफ अनुकूल थे वे ॥ १३ ॥ १० शारद ऋतु के समय में

कति छक्ष१ रु कति मकट२ मिले बधव भोधानी ॥
इतरहु कोटा अनुग मिले इहिँ क्रम जय मानी ॥
परदेस सुभट१ जिनमैं प्रचुर कहत देस सुभट२हु कतिक॥
जालम अधीन जे सब जुरे मन भूपहि मारन मतिक॥१४॥
तयहि गोठेंपुर तजि रु तानि साहस वलवंत२००।२हु ॥
प्रभु पितृव्य सजि सत्थ लरन जावन लग्गो लहु ॥
पहु माता तब पत्र कलित नय भेजि कहाई ॥
लखहु कालगति लाल इक्खि आलय अधिकाई ॥
तुमरो अधीस वय वाल तिहिं सिक्ख देहु हित अनुसरहु ॥
भार जो परैं अप्पन भवन कोविद तस उपसम करहु॥१५॥
विन्नति लिखि इम विविध मंसू प्रभुकी देवर मति ॥
समुझायो सुमिराइ गेह१ कुल२ कर्म१ धर्म२ गति ॥
वढत दर्प वलवत२००।२ सोहु मन्नी न जथा सठ ॥
महाराव सन मिलि रु भयो तस मीर हेरि हठ ॥
अंग्रेज१ झल्ल२ उत ए१हि इत मगरोलपुर ढिग मिले ॥
पटकेहि झल्ल निज स्वामिपर गुरु गोले तोपन गिले ॥१६॥
इतके हंकन अंव कहत थाके कोटेसहिं ॥
कह्यो तदपि कोटेस सचिव करिहै न कलेसहिं ॥

---

१ माधवसिंह के बदा के हाडे २ और भी कोटा के सेवक ३परदेशी वीर बहुत थे ४ राजा किशोरसिंह को मारने की बुद्धि से ॥ १४ ॥ तभी बलवंतसिंह ६ रावराजा रामसिंह का काका हठ फैलाकर ५ गोठड़ा नगर को छोड़कर सेना सजकर ७ शीघ्र जाने लगा तब ८रामसिंह की माता ने नीति का ९प्रसिद्ध पत्र भेजकर कहलाया १०अपने घर (बुंदी) की ११हे चतुर १२उस समा को मिटावो ॥ १५ ॥ १३ प्रभु (रामसिंह) की माता ने १४झाला जालिमसिंह ने ॥१६॥ १५ इधर के वीर घोड़ चढाने के लिये कहकर थक गये १६ तोभी कोटा के पति ने कहा कि हमारा सचिव झाला जालिमसिंह क्लेश नहीं करैगा

इहिँ अंतर सहसाँहि[1] फैर जालम२००।२ तोपन फवि ॥
नृप किसोर ।१ दल निखिल[2] छोरि नँठो[3] कातर छवि ॥
सुनि फैर बाजि[4] न रह्यो स्ववस गहि पँसुत्व[5] इक१दिस गयो
असवार तास नृपको अनुज[6] भीत उतहि जावत भयो॥१७॥
मन ओर१हि मग मुरत अँब[7] भजिगो मग ओर२हि ॥
कुंट१[8]कुसार२दुहुँर२ करन जुरे इक्त१ बरजोरहि ॥
आयुध१ हय२ अभ्यास न दिय सिक्खन जालम जिम ॥
चमकत हय हुव चकित अनुज नृपको परबस इम ॥
जालम बरूथ[9] बिच जावतहि पृथ्वीसिंह सु जानि पँर[10] ॥
मल्लार नाम इक१ आयुधिक धर पटक्यो दै कुंत[11] धर ॥१८॥
कछु न हुतो नृपकोँहु[12] बाजि१ आयुध२ बिद्या बल ॥
अँब[13] खर्ब आरूढ देखि तोपन बिखरत दल ॥
भाखी अब मैं भजि रु कहाँ दुरिहौं अपजस करि ॥
अब मरनहि मम अच्छ धुँत्त[14] अरि सम्मुह पैंड धरि ॥
प्रभुके पितृव्य१[15] मुख रनपटुन तहँ जंपिय नय तक्कि तिम ॥
इम कह्यो तब न हंके हय रुआग न बिगारहु मिच्चु[16] इम१

---

१ अचानक २ सब सेना को छोडकर ३ कायर की तरह भागा ४ तोपों के फे सुनकर घोडा अपने वश में नहीं रहा और ५ पशुपना ग्रहण करके एक तर भागगया ६ उस घोड़े का सवार राजा का छोटा भाई डरकर उधर ही गय ॥ १७ ॥ सवार का मन तो और ही तरफ जाता था और ७ घोड़ा और ह तरफ भगगया, दोनों हाथों से ८ बाग के दोनों कोने जबरी से खिंचगये जालिमसिंह की सेना में जाते ही १०शत्रुओं ने पृथ्वीसिंह को जानकर बरी में ११भाला मारकर भूमि पर गिरादिया॥ १८ ॥१२राजा किशोरसिंह क भी घोड़े का और शस्त्र का विद्याबल कुछ नहीं था १३ छोटे घोड़े पर चढक १४धूर्त शत्रु (जालमसिंह) के सन्मुख कदम देकर मेरा मरना ही अच्छा है १ रावराजा रामसिंह के काका (बलवंतसिंह) आदि युद्ध के चतुरों ने कहा १ इस प्रकार मृत्यु मत बिगाड़ो ॥ १९ ॥

कहि इम सह कोटेस दुमनं नष्टो इड्ड५१हि दल ॥
पथ कछु तिहिं पहुचाइ विजय करि मुरिग भल्ल पेल ॥
अधकार मचि अतुल धूम तोपन अवर१ धर ॥
कति कोसन सक्रमत भये संगत बिछुरे भर ॥
अनुजहिं न इक्खि कोटाअधिप कहिय राहयपिरथल३कहा॥
वढि अग्ग चलत सगिनवदियं त्वरित आहु मिलिहै तहा।२०।
नगर बरोदा निकट भूप पहुंच्यो गोरंन भुव ॥
पुच्छत तहँ अति प्रसभं हन्यों अनुज सु जानंतहुव ॥
भनिय रोइ खिल भ्रात मरहु जिन तजहु संग मम ॥
जालम कोटा जाइ राज्य निज करहु मंनोरम ॥
श्रीद्वार जाइ में अब सदा प्रभुको करिहों अंनुगपन ॥
पन सोढि रक्खि कोटेस पुनि जाइ तत्थ किय हरि जंजन२१
पीछैं चिरंकरि पट्ट आनि रक्ख्यो जालम यह ॥
सून्य तखत तिंहिं समय तास कतिदिन रक्ख्यो तह॥
आक्खिय सुत माधवहुं विष्णुसिंह२००१२ हिं बैठारन ॥
जालम तउ तस जंनक कुमर बरज्यो कहि कारन ॥
आवन किसोर—१कोटा अवधि पंट्ट निकट धरि पावरी ॥

कोटा के पति सहित १ उदास होकर हाड़ाओं की सेना भागी २ झाला की सेना कितने ही कोस चलने पर बिछड़े हुए वीर ३ साथ हुए ४ साथवालों ने कहा ।२०। ५ गोरव क्षत्रियों की भूमि में ६हठ करके पूछने पर ७छोटे भाई का मारा जाना जाना ८ पाकी के भाई मत मरो और मेरा साथ छोड़दो ९ सुंदर राज्य करो १० विष्णु भगवान् का सेवकपन करूंगा सोही नाथद्वारे में जाकर ११ विष्णु भगवान् का पूजन किया "मेवाड़ देशमें नाथद्वारा नामक तीर्थस्थान है" ॥ २१ ॥ १२ बहुत समय पीछे महाराव किशोरसिंह को नाथद्वारे से कोटे में लाकर पीछा पाट बिठाया १३ तख्त शून्य रहा उस समय जालमसिंह के पुत्र १४ माधवसिंह ने कहा कि किशोरसिंह के छोटे भाई विष्णुसिंह को पाट देवें तोभी १५ माधवसिंह ने कारण बताकर अपने पुत्रको मना किया और १६ किशोरसिंह के पीछा कोटे में आने पर्यन्त १७ गादीके समीप किशोरसिंह की

तिन्ह अग्ग प्रनमि किय काम तिहिँ रैसा सकल कहि रावरी।२२।

॥अष्टपात् ॥

मंगरोल रन मचिग समय बसु हय धृति१८७८संबत ॥
निधि हय धृति१८७९ सक नियत इतहु सेना सजि उद्धत ॥
जुज्झन सिख रनजीत प्रबल हंकिय लवपुरपति ॥
पुर१ सदुर्ग२ पेसोर अनखि घेर्यो आग्रह अति ॥
चँक्र सहँस चौबीस२४०००अरिन पंचहि हजार५०००उत ॥
भयकर संगर भयउ जदिन दुहुँ२०ओर जोर जुत ॥
कलि पर्यो मुख्य रनजीतको भोलासिंह१ स नाम भट ॥
इक सहँस१०००कतल१घायल२ इहाँ बिदित परे सिख बीरबट२३
जहँ काबल सन जिति प्रहत करि कथित पठानन ॥
प्रतिभट लहि पेसोर उहाँ थानाँ धरि अप्पन ॥
हुव अजेय लाहोर बाहु बल करि पंजाप्रबहि ॥
कोउन हुव जट्ट कुल महिप दब्बत इतीक महि ॥
स्वीय सचिव इत सुपहु नैर बुन्दिय मृत नागर ॥
संभूराम स नाम जगत नय मत उज्जागर ॥
द्विज तुलाराम१ संभू२ दुव२हि भ्राता बर मंत्री भये ॥
तिनके अभाव धात्रेय तकि गेरन भँर जग दृग गये ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

पावड़ी रखकर उस (पावड़ी) के आगे प्रणाम करके १ सब भूमि आपकी है यह कहकर कोटाका काम करता रहा ॥ २२ ॥ २ निश्चय ही सेना सजकर लाहोर के पति सिख रणजीतसिंहने क्रोध करके गढ सहित पेसोर पुरको घेर ४रणजीतसिंह की सेना ५ युद्ध में रणजीतसिंह का मुख्य उमराव भोलासिंह मारागया ॥ २३ ॥ ६ कहेहुए पठानों को मारकर पेसोर को अपना शत्रु समझ कर ७ तुलाराम और शंभु, इन दोनों के अभाव (नहीं रहने) में धायभाई पर राज्य कार्य का भार डालने को संसार के नेत्र गये ॥ २४ ॥

ग्राम सूहरीको गदितें, गैंदा गुज्जर गग१ ॥
धावर नृप उम्मेद१९८४कै, जो हुव पुब्ब प्रसग ॥ २५ ॥
तस नेत्तों धात्रेय यह, कृष्णाराम अभिधान ॥
तारागढको दुर्गपति, मन्न्यों नय मति मान ॥ २६ ॥
पचनमत प्रभुकी प्रसू, अप्पहिं समुचित अक्खि ॥
सचिव किन्न धात्रेय सो, राज्य भार भुज रक्खि ॥ २७ ॥
किय मोहन१ तस ज्येष्ठ सुत, तारागढपति तत्थ ॥
सुख२ मंगल३ याके अनुज, स्वामिभक्त हित सत्थ ॥ २८ ॥
कृष्णाराम१ कोविद अनुज, रामकृष्णा२ धात्रेय ॥
दुर्ग अजितगढको हुतो, सासक जो रन श्रेय ॥ २९ ॥
तास तनय जेठो१ रतन१।४, भट सोपें प्रभु भक्त ॥
वाजि१ सस्त्र२ अभ्यास बुध, सब अधीस हित सक्त ॥३०॥
सुभटनके पुत्रहु सवय, हुव सब भूप हजूर ॥
सामर्थ जु बानन सग्रहैं, सिसुपन वहैं न सूर ॥ ३१ ॥
षट्पात्-कृष्णाराम धात्रेय सु इम हुव मुख्य मुसाहब ॥
सब प्रभु राज्य सम्हारि ताकि व्यय१ आय२ तुला तब ॥
मेटि असेस प्रमाद कोस धन१ अन्न२ रासि करि ॥

सूहरी नामक ग्राम का गैंदा गोत्र का गूजर गगाराम उम्मेदसिंह की धाय का पति हुआ १कहते हैं ॥२५॥ २उसका पोता ॥२६॥ ३ महाराव राजा रामसिंह की माताने ४ आप (रामसिंह) को उस कृष्णराम धाय भाई का सचिव होना उचित कहकर उसको सचिव किया ॥२७॥ कृष्णराम का छोटाभाई ५ चतुर ॥२८॥२९॥ ६घोड़े और शस्त्र के अभ्यास मे चतुर ७ स्वामी के हित में आसक्त अथवा समर्थ॥३०॥ अपनी अवस्थावाले उमरावोंके पुत्र राजाकी हजूरमें हाजिर हुए ८यह राजा अपने तुल्य युवा पुरुषोंका सग्रह करता है और बालकपनको धारण नहीं करता ॥३१॥ ९आमद खरच को बराबर देखकर १० सब भूलों को मेटकर (अनुचित खरचको घटाकर) खजाने में धन और अन्नका ११समूह करके

कुनय करज दूर किय भूप आलय लच्छी भरि ॥
अरु किय समाढ्य[2] देसहु अखिल बसुधा किय जस ख्यात बहु ॥
सुखराम सोहु बढिगो सचिव पहु अप्पहिँ लहि राम२०१।४ पहु३२

( )

नभअहिगजससि१८८०सक इतनिपुनन अंग्रेजनदिनदिनजय आस॥
लरत लरत हायन[3] दुव२तैं लगि पंचसहँस५०००निज बल लहि पास
प्राची१ ओर बिलायत बर्मा आवा१पुर तस खंधावार[4] ॥
अरु दूजो२जिहिँ नाम अइन्वा२रत्नपुर३हु तीजो३रुचिकार ॥३३॥
अब तस निकट पहुँचि अंग्रेजन मंजिल दुव२पर मंडि मुकाम ॥
बढि आवा१ लैबोहि बिचारिय तोपन लास धुजावत धाम ॥
तब करि संधि चकित बर्मापति द्रम्म कोटि१००००००० १बेल[5]व्यय
हित दिन्न ॥
दूजो२ मोलमीनको जनपद[6]२ कहि उँपदा[7] इनके बस किन्न ॥३४॥
इत कोटा जालम बपु उज्झिय[8] प्रतिमा[9] तुल्य नृपहि धरि पट्ट ॥
माधव तब हुव मुख्य मुसाहब बहत जनक[10] जालम गत बट्ट ॥
बिष्णुसिंह२००१२कोटेस मध्य२सुत जालमसौँ जु मिल्यो द्रुत जाइ॥
आय लक्ख१०००००[11]द्रम्मनपुरअनतादियताकहँमन अभयहढाइ ३५

१ राजा के घर को लक्ष्मी से भरकर सब देश को २ धनवान् कर दिया ॥ ३२ ॥ ३ लड़ते लड़ते दो वर्ष लगने पर, पूर्व दिशा की बर्मा नामक बिलायत और उसकी ४राजधानी आवापुर जिसका दूसरा नाम अइन्वा और तीसरा सुंदर नाम रत्नपुर है ॥ ३३ ॥ उसके समीप पहुंच कर ५ फौज खरच के लिये क्रोड़ रुपये दिये ६ देश ७ भेट कहकर अंगरेजों के अधिकार में किया ॥ ३४ ॥ ८ मूर्ति के समान महाराव किशोरसिंह को गद्दी पर रखकर कोटा में झाला जालिमसिंह ने ८ शरीर छोड़ा १० मरेहुए पिता जालिमसिंह के मार्ग पर चलकर उसका पुत्र झाला माधवसिंह कोटा का मुसाहब हुआ, कोटा के पति के मध्य पुत्र बिष्णुसिंह को जो जालिमसिंह से शीघ्र जा मिला था ११लाख रुपयोंकी आमदका अणता नामक पुर दिया॥३५॥

मार्‌यो जिहिँ पित्थल—।३ हनि तोमर सो वाहुजं मल्लार स नाम ॥
करि सत दुव२००सादिनको सासक धुरि गिनि ताहि दये धन१धाम
भ्रात१ भयो अनतापुर अधिप रु जिहिँ इक भूत हन्यो वरजोर ॥
अभय सु पै मल्लार२ बढयो इम कहिनसक्यो कछु भप किसोर३६
माधव अव जालम जिम मालिक अग अखिल करि अप्प अधीन॥
देस१कोस२सेना३दुर्गादिक४कोटा सव सासन वसकीन ॥
विष्णुसिंह२००।२बुन्दीस विराजत नरपति मान जोधपुर नाह ॥
२सुताको प्रभुसों किय सगपन कुमरपनहि सुनि सधन सराह।३७।
यातैं ब्याह त्वरा करिवे अव भट विक्रम१थानापति भूत ॥
दूजो२ चदकुमर विरुदेस२हु खँगारज कूरम जस ख्यात ।।
ए दुव२ तवहि जोधपुर पठये वलि आये तहँ मडि विवाह ॥
प्रभु वय इत हायन वारह१२पर सद्धिय सव राजन नय राह ॥३८॥

मनोहरम् ॥

खेलत खलूरिकांमैं खुरली सरासनकी,
पानि धरि पाटवँ यौं राम२००।२ छितिपालके ॥
ऊंचे अंव्म उडत पतत्रिनकों पारिदेत,
और न उतारिदेत वेभा चिरकालके ॥
दीठि जो परैं तो दूर वेधनमैं हालहाल,

१ मल्लार नामक जिस क्षत्रिय ने भाला मारकर महाराव किशोरसिंह के छोटे भाई पृथ्वीसिंहको मारा था॥३५॥ उसको २ जोधपुरके महाराजा मानसिंह ने बुंदीपति विष्णुसिंह था तब ३ अपनी पुत्री का सम्बन्ध रामसिंह से किया था ॥ ३७ ॥ ४ खंगारोत कछवाहा जो जसमें प्रसिद्ध था ॥ ३८ ॥ ५ अखाड़े में धनुष का ६ शस्त्राभ्यास करता है जहां महाराव राजा रामसिंह के हाथ ऐसा ७ चतुराई धारण करते हैं कि ८ आकाश में ऊंचे उड़ते हुए ९ पक्षियों को गिरा देते हैं और दूसरा के बहुत समय के ठहरे हुए १० निसाने को गिरादेते हैं और जो दृष्टि में आजावैं तो हिलते हुए केशों को केशके अंतर से

बालबाल अंतर बचै न बट *बालके ॥
केही चित्र क्रमतैं तयेमैं करि छेकछेक,
एकएक बेधैं मनि मोतिनकी मालके ॥ ३९ ॥
ऐसैं नरनायक अनेक क्रम आनि आनि,
साधि सर१ बिद्या पानि तुपक२प्रमानकी ॥
फैंकि नभ निंबू बेधडारत बिबिध रीति,
दोलाजंत्र१ त्यौं तति२ उतारत बटानकी ॥
कवि रविमल्ल३ बुद्धि बिसत कितीक बात,
सैरिभ४मैं सहित पखाल४ कढिजानकी ॥
चोचा१दल२ चनक१ खुमा६दिनके खंडिदेत,
मोचाँदल मंडिदेत माला गुटिकानकी ॥ ४० ॥
यौं धनु१ तुपक२ साधि बारहैं१२ बरस आप,
कार्सू३ कुंत४ पट्टिस५ कृपान६ कला पकरी ॥
हायन छ६वारे पीन कायन लुलायनके,
कंधर कठोरन ज्यौं काटिदेत ककरी ॥

*केशके टुकड़े भी नहीं बचते हैं, कितनेही आश्चर्यके क्रमसे तवेमें छिद्रही छिद्र करदेते हैं तथा छिद्र करके फिर उस छिद्रको छेक देते हैं और मोतियोंकी माला का एक मणिया वेध देते हैं ॥३९॥ १हींडते हुए (झूले में झूलते हुए) २काष्ठ के गोलों (लट्टुओं) की पंक्तिको गिरादेते हैं ३ कवि सूर्यमल्ल कहते हैं कि इन कामों में बुद्धिके प्रवेश होनेकी तो क्या बात है किन्तु पखाल सहित ४भैंसे में तीर कढजाता है और ५ तेजपात, चणा और६वारिपर्णी अथवा लता विशेष के पत्तों को काटदेते हैं और ७ केलके पत्ते में गोलियों की माला रचदेते हैं 'केलका पत्ता सामान्य चोट से फटजाता है इस कारण उस में गोलियों की माला रचने में विशेषता है' तथा नील और शाल्मली (सालर) के वृक्षों के नाम भी मोचा है जिनके पत्तों में ॥ ४० ॥ ८ बरछी, भाला ९ कटारी, तरवार की १०कलाको धारण की ११छः वर्ष के पुष्ट भैंसों के कठोर कंधों को काकड़ी के समान काटदेते हैं,

सायगंत माघहोत निस्सह निदाघहोत,
अस्त्रनको आघहोत वाघहोत वकरी ॥
टक्करी टराइ करी आवजाव अस्वनकों,
वीथी सकरी विच चलात जैसें चकरी ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

गत१ प्रत्यागत२ साचिगत३, पाटन४ रोध५ प्रहार६ ॥
हयारूढ सह्रे हुलसि, ए खट६ तोमर वार ॥ ४२ ॥
बाईस२हि असि मग्ग वलि, खुरली साद्धि स खेल ॥
वेधन लग्गो सवन वढि, सादी सिंहन सेल ॥ ४३ ॥
सूचित वय सवगुन गहत, वहत वृकोदर वेस ॥
प्रथित निर्युद्ध१ पटेतपन२, सिक्ख्यो नृपति असेस ॥ ४४ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सूकल१ तुरगनकों वाहन विनीत करि,
आरोहत१ मैंगल२ मतगन घराइ धीर ॥
काननके मैंह१ रु वराह२ खैंड्ड३ कठीरव४,
फादन फलगैं तिनके तँनु रुकैं न तीर ॥
निखिल नियुद्धमें न सेमवय साम्हें होत,
तत्त्वबोध१ भक्ति२ धर्म३ नीति४ सम साधि सीर ॥

इस शस्त्र विद्या में नहीं सहने योग्य १अग्रगत [आगे गया हुआ] पोष सहित माघ मास और इसी प्रकार नहीं सहन किये जानेवाली ग्रीष्म ऋतु में भी शस्त्रों का आघ होता है और जिनके सन्मुख सिंह बकरी के समान होता है २टक्कर से हाथियों को टलाकर ३सकड़ी गलियों में आवजाव करके घोड़ों को चकरी के समान चलाते हैं ॥४१॥४ घोड़ों पर सवार होकर ५ भालेके ॥ ४२ ॥ ६ घोड़े पर चढे हुए भाले से सिंहों को मारनेलगा ॥ ४३ ॥ ७ भीमसेन की भांति ८ बाहुयुद्ध ॥४४॥ ९अशिक्षित घोड़ों (बछेरों) को शिक्षित करके १० हाथियों पर ११ वन में जङ्गली (आरणे) भैंसो को १२ गैंडा, सिंह १३ इनके शरीरों में भी तीर नहीं रुकता १४ सम्पूर्ण बाहुयुद्ध में

*पाटव जितोक †पटु पागो पुहवीप ताहि,
‡आसु अपनायो एक बुंदी अधिराज वीर ॥ ४५ ॥
§सूरि१ सूर२ खोजनमैं आलंबन आदि१ वनैं,
सोहत सभज्यामैं सरोजनमैं गंध सम ॥
जागै जस जाको भू पचास५०कोटि जोजनमैं,
रैम्य रुचि रम्यतैं मनोजनमैं अंध सम ॥
ओजनमैं भोजन३मैं पावे पर मोजन४मैं,
फोजन५मैं को जन कहावैं वलावंध सम॥
॥ ४६ ॥

॥ चूडालदोहा ॥
अखिल हेय१ आदेय२ इम, ध्रुव धीक्रम तजि१ धारि२धराधन॥
नाम निकारयो नृपनमैं, डग राघव मग डारि महामन ॥४७॥
जिहिं बतरावैं सोहि जन, मन्नैं मोहन मंत्र पढयो मति ॥
कवि१बुध२भट३सचिवा४दिकन,त्वरित करेनिजतंत्र पढ्यो मति४८ ;
प्रभु पितृव्य इत गोठपुर, सुनि बाहुल८सित१अंत१५पुण्य सुख
पट्टनि तीरथ न्हान पर, रुचि धारिय बलवंत२००।२नाहि दुख४९
॥ ॥
कन्या निज उपयम पहिलैं किय दुर्गापुर सासक सरदार१९६।४॥
सोपुर अधिप राधिकादासहिं बुल्लिय व्याहन सबिधि बिचार ॥

*चतुराई †चतुर रामसिंहने ‡शीघ्र॥४५॥ §पंडितों के खोजने में १फूलों में सुगन्ध के समान सभा में शोभित होता है २सुन्दर कांति में ३कामदेव और कामदेव के अवतार प्रद्युम्न इन दोनों की गणना करने को यहां बहु वचन में नकार का प्रयोग किया है अर्थात् रामसिंह की सुन्दरता से उन दोनों की सुंदरता भी नहीं दीखती थी ४प्रताप में और दान में भोज भी ऐसा नहीं था और फोजों में ५ आडावला नामक पर्वत के पति के समान कौन मनुष्य सुहाता है ॥४६॥ सम्पूर्ण छोडने और ६ग्रहण करने को ७बुद्धि के क्रम से निश्चय ही छोडा और धारण किया ८ रामचन्द्र के मार्ग में चरण देकर ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ९रामसिंह का काका १० कार्तिक सुदि पूर्णिमा को ॥ ४९ ॥ ११अपनी कन्या का विवाह

सध्यापति ताको सह सोपुर दोलतराव लयो सब देस ॥
बैठनहित दिय ताहि वगोधा सासन वस रचक भुव सेस ॥ ५० ॥
दुर्गापुर आयउ नह दुल्लहु तिहिं *मह गो वलवत२००।२हु तत्थ॥
सोपुर लैन मत्र किय तासन सूचिय हम जुज्झहिं अब सत्थ ॥
सर हुलकर१ सध्या संध्या२ जुग२ मालव बटि अनीक अमान ॥
भू जिततित दव्वी वहु भूपन पटकि आस †भवलत्व प्रमान ॥५१॥
कूरम१ गोर२तथा खिच्ची३ कुल पुनि जदव४ बुंदेल५प्रमार६ ॥
गढ नरउर१सोपुर२राघवगढ३धूमि करोलिय४ झांसिय५ धार६ ॥
सध्या लिय इनकी अवनी सब निन्नतिपर कछु रक्खि निवाह ॥
बुंदेल१न खिच्चि२न तब गहि बल दिय जुरि जुरि सध्या उरदाह ५२
जत्थहु वीर रचहिं जुज्झिय रन रन रन इक१ जयसिंघ१ नरेस॥
वहु वेरहि लक्खन अरिदल बिच इत१मन उत२कढिकढि गयएस॥
जिहिं ईश्वर न हनैं तिहिं को जन महत वरूथ हनैं रनमाहिं ॥
इम खिच्चि२प राघवगढको ईन निर्भय भिरत मर्यो कहु नाहिं॥५३॥
वहुवेरन इहिं नृप किय व्याकुल रुद्र स्वसित सम दोलतराव ॥
तोपन ईस फिरंगिन तीन३न दहि रनरन वन जिम तप दाव ॥
जे भट मुख्य सिकंदर१ जेकम२ निडर उपानवत्तीस३२ स नाम॥
ए त्रय फ्रांस विलायत उद्भव तिन बल अधिप लहैं जय ताम॥५४॥
तोप१न भारि२संतत तरकावहिं ए३ हरिमथं१अरि२न रन ऐन ॥
तूनजिम गिनि जयसिंह१सु तीन३न निजबल जुरिग मिचावत नैन

॥५०॥*उस उत्सवमें पद्मनसिंह भी गया †पद्मपानपन से भाग पढ़कर॥५१॥ १ सिंधियाने इनके लोकों की भूमि छीन ली थी ॥५२॥ २सेना में उसको कौन मार सकता है ३ राघोगढ़ का पति लड़कर कहीं नहीं मारा गया ॥ ५३ ॥ ग्रीष्म ऋतु की अग्नि वन को जलावे जैसे४युद्ध युद्धमें जयसिंहको जलाया ५सहा इनके पक्षसे॥५४॥१निरंतर तोपोंकी मार में शत्रुओं रूपी ७पर्यों को तड़फाते थे

आयु बिताय समय वपु उज्झिय राघवगढ जयसिंह[1]नरेस ॥
ध्रुव सुव तास नामकरि धोंकल[2]अंक[3]रिथत भुवहित हुव एस ५५
संगर सोहु जनक जिम सत्रुन व्याकुल करतभयो बहुबेर ॥
मानत असह कह्यो तिहिं मारन दोलतराव न करि छिन देर ॥
परिचर रक्खि सिकंदर प्रमुख न धारत हुव अप्पहु अवधान ॥
चरन पठाइ कहां इम चाहत धोंकल सुद्धि सुनत व्यवधान ॥५६॥

अवधान१ व्यवधान२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

लिखि छंद तब धोंकल पठयो लघु गोठनगर अनुचर निज गूढ ॥
तामैं लिपि सोदर उभय२ हि तुम आहव धीर१ प्रवीर२असूढ ॥
संध्या रिपु हमरी भुव१ लै सब प्रान२हु लैन चहत अब पाप ॥
इम खिची १भ्राता तुम हड्डू१२न दलपति २००।३ देहु सहाय दुराप ॥ ५७ ॥
दल यह बंचि भीर गय दलपति २००।३ जो बलवंत २००।२ सहोदर जोध ॥
सन्ध्या सह जनजन मन सालत बालत हुव दुव२ रचभुव विरोध॥
सुद्धि दुहुँ२न इक अह सुनि बलसह चपल ज्यानबत्तीस चलाइ ॥
स्वल्पहि सुनि परिगह इन्ह संग रु जुगर२ बंधुहि बेढे तहँ जाइ ५८
मिलि सम्मुह दलपति२००।३ रन मंडिय भजि निकसन समुझत जस भंग ॥

१उस राघवगढके राजा जयसिंहने आयु बिताकर शरीर छोड़ा, पृथ्वीके कारण निश्चय ही उसके धोकलसिंह नामक पुत्र २गोद बैठा ॥५५॥ वह भी युद्ध में३ पिता जयसिंह के समान, दोलतराव ने५सिकंदर आदिको ४सेनापति रखकर ६दोलतराव ने भी सावधानी धारण की७हलकारों को भेजकर धोकलसिंहकी गुप्त खबर सुनता था॥५६॥८धोकलसिंह ने पत्र लिखकर शीघ्र ९गोठड़ा नामक पुर में भेजा १० तुम हाडाओं के हम भाई हैं इस कारण हे दलपतसिंह ११ दुर्लभ सहाय दो॥५७॥१२यह पत्र पढकर१३एक दिन दोनोंकी खबर सुनकर॥५८॥

तुरगारूढ सद्धि भुज तोमर जुज्झत वहुत हने अरि जग ॥
परत तुरग पदाति अभै पन पैंड धरत हयमेध प्रभाव ॥
वारह १२ वीर हनें आसि वाहत दलित तुरग पच५ धारि दाव॥५९॥
तुट्टत खग्ग कटार गह्यो तिम कलह कितेकन वच्छ बिदारि ॥
तिलतिल रन दलपति २००।३ वपु तुट्टिग धोंकल कढिग लरन पुनि धारि ॥
सोदर बैर इक्क१ यह सालत वलि जामिप तुम अवनि बिहीन ॥
सोपुर लैन१ राधिकादासहिं दुसहन हनन२ वचन इम दीन॥६०॥
प्रथम भई सु कही दुर्गापुर भूत१हुमै सु कथा इम भूत१॥
सगर हनन ज्यानवतसिहिं अनुज बैर वालन अरि ऊत ॥
सद्धि अभीष्ट राधिकादास सु भाम करन सोपुर भूपाल ॥
उभय२ कज्ज वलवत२००।२करन इम किय रहस्य तामति तिहिं काल॥ ६१ ॥
अब वह वत्त सुमिरि मन अंतर इक अहि वसु ससि १८८१ संम सकआत ॥
प्रसलैं५।१सिसिर६।२भावी ऋतु खिनपर सोपुरसमरबिचारियवात॥
मातुल स्त्रीय सवाई१ लछमन२ जदुकुल दुर्ग अमरगढ जत्थ ॥
तिनप्रति इम छंद लिखि सूचिय तुम सब भेदेंहु सोपुरगढ सत्थ६२

१घोड़े पर चढकर हाथमें भाला लेकर२घोड़ा मरने पर पैदल होकर ३ अश्वमेध के ॥५९॥४छाती फाड़कर ५एक मो छोटे भाई दलपतिसिंह का बैर सालता है, फिर तुम बहिन के पति भूमि बिना हो रहे हो इसकारण सोपुर को लेने और शत्रुको मारने का वलवतसिंह ने राधिकादास को वचन दिया॥६०॥ ६यह गये समय में भी गये समय की कथा है ७ छोटे भाई का बैर लेने और शत्रुको ८ धन रहित करने को९पहिनोई राधिकादासको सोपुर का राजा करने को॥६१॥ १०विक्रम के शाक का वक्त सम्वत आने पर आगे आनेवाली ११ हेमन्त और शिशिर ऋतुके समय१२पत्र लिखकर१३सोपुरवालोंको फोड़ो(अपनेमें मिलाओ

सुनि यह तब चिंतिय जदुवंसिन जिन संहरि दलपति २००।३
जामेय१॥

अतिबलपन दक्खिय छिति२अप्पन हुत अब त्रास अरिन तिन्ह देय
भनि इम भेजि पिहित जन भेदन लिय सोपुर भट कातिक लुभाइ
इहिं अंतर बलवंत २००।२ चह्यो इत पट्टनि गमन श्रवन सुभ
पाइ ॥ ६३ ॥

जिहिं पहिलैं बिरचाहिं बहु अंग रु निज प्रभुको दब्बयो इंगनेर१ ॥
जित्तिलयो बुंदीस वहै जब तिहिं बंधिय जिततित बहु बैर ॥
लै पुर नगर२ अबस पुनि लुट्टिय चहि ब्याकुल किय नागरचाल३
बिंझोली४ मंडिलगढ५ बेढत बस न भये तउ चकित बिहाल६४
झल्लन पर पहुँच्यो आसि झारन मंगरोल कोटापति मेल६ ॥
सत्रु करे चहुँ४ घाँ भूधन सब खग्गन अतुल मचावत खेल ॥
इहिं कारन पट्टनि सुनि आवत बलवंत२००।२हिं मारन चहि बंट६
माधव१ झल्ल रहस्य७ मिलायउ अंगरेज कलफिल्ड२ अजंट ॥६५॥
साजि दल पिहित रुद्ध किय मग सब इक आहि बसु ससि १८८१
सम सक एस ॥

प्रथित तित१ बाहुल८ तेरसि१३ पर दिन तीजै२गय गंम्य प्रदेस ॥
करि तहँ न्हाँन पूजि प्रभु केसव इक आलय पट्टनि बिच आइ ॥
अप्प रह्यो राका११निसआगम इतर१२ निलय हयगन पठवाइ ॥६६॥

।६२।१भानेज दलपतिसिंह को जिन्होंने मारा है २छाने ॥६३॥३नैणवा नगर को दबाया था ४ उखिपारे के प्रान्त को ॥ ६४ ॥ ५ चारों ओर के राजाओं को शत्रु कर दिये ६बलवतसिंह को मारकर उसकी भूमिके बट(हिस्से)करना चाहे-कर ७ सलाह मिलाकर ८ अजंट का नाम है ॥ ६५ ॥ ९ छाने सेना सजकर सब मार्ग रोकदिये१०कार्तिक के तेरसके दिन प्रस्थान करके जाने योग्य स्थान (पाटन) गये ११पूर्णिमासी की रात्रिके आगम पर घोड़ों के समूह को १२अन्य मकान में भेजकर आप(बलवंतसिंह)केसोराय भगवान् के मंदिर में रहा॥६६॥

देयकरन अनुचर इक निज दल स्वल्प बिच सु मालिक करि संग
बलि माधव साइब बल अतिबल भेजिय करन नाम बल२००भग
रहत मुहूर्त उभय२ खिल रोका दुजनन ताहि बयो गरवाइ ॥
लरतरह्या स जाम सप्तक ७ लग सोदर १ सुत २ भट ३ सबन
सजाइ ॥ ६७ ॥

प्रतिपद१ रत्ति निसीथ कढ्यो पुनि पारि कुंडय गृह चरम प्रतीक ॥
जानत कढत हक्क पुट्ठिय जब उत झुकिय सब मेटि अनीक ॥
सेरसिंह २००।५ अभिधान सहोदर सुत धोंकल २०११ फतमल्ल
२०१२ समेत ॥
सैंतालीस४७ प्रमित भट सगर खग्गन रमत चले बिच खेत ॥ ६८ ॥

वित्तत बारि पिपासा बिकलन जल पिन्नों चम्मलि तट जाइ ॥
तुट्ट सब तिलतिल तरवारिन पुनि रुपि खेत सुजस प्रकटाइ ॥
पानिन तुपक१चाप२असि३पट्टिस४सद्दिय सब बलवत२००।२सधीर
पट्टिस फेंकि जवन इक१ जाठर बिधिसु गिराइ दयो वह बीर।६९।
सोदर अनुज१ उभय२ जेठे सुत अप्प१ तिमहि भटवर्ग४७ असेस
सतकन हनि घायल करि सतकन गिद्धसेनाम अंस धरि गूढ ॥

१ झाला माधवसिंह और फलफीयस अजटने बलवंतसिंह को मारने को पछी सेना भेजी २ पूनम की चार घड़ी रात बाकी रहते शत्रुओं ने बलवंतसिंह को घेरलिया ३ सात पहर तक लड़ता रहा ॥ ६७ ॥ ४ पड़िवा (एकम) की आधी रात को ५ घर के पिछली भीत (दीवार) के हिस्से को गिराकर निकला ६ गयानावाले ॥ ६८ ॥ पानी खूट जाने पर ७ प्याससे घबराये लोगों ने चामल नदी के किनारे जाकर पानी पिया ८ कटारी ९ कटारी १० एक यवन के पेट में लगाकर मारडाला ॥६९॥ ११(*)सैकड़ों को मारकर १२ गीधा नामक चाकर १३ अपने कंधे पर बलवंतसिंह के पालक को लेकर

(*)राजपूताना में प्रसिद्ध है कि नैणवा नगर दबा लेने आदि विरुद्ध कार्यों से बलवन्तसिंह बुन्दी का शत्रु समझा गया इसकारण रावराजा रामसिंह की सम्मति लेकर बुंदी के सचिव कृष्णराम धायभाईने झाला माधवसिंह और अजयट साहिब द्वारा बलवन्तसिंहको दगासे मरवाडाला।

निकस्यो लै सु स्वामिकुल १ नाम २ हिँ रक्खन सिसु वह जनन प्ररूढ ॥ ७० ॥
प्रभु कविं जनक रचिय तिहिँ रनपर बल २०।१२ विग्रह १ अभि धान प्रबंध ॥
उद्धत गुंफ बीररस आलय सह बल२००।२ लरन१ मरन२ दृढसंध ॥
प्रकटत सुद्धि इम सु बुन्दीपुर सुनि प्रभु अप्प असह किय सोक॥
आप्लँव ठानि दई जलअंजलि अब ऋतु पसर्ल्यछयो सबओक७१
सो बित्तत प्रकटयो सिसिरागम जहँ प्रभु ब्याह प्रथम१मह जात॥
घरघर हरख नगर बुन्दी घन बहुजन हुलसत चलन बरात ॥
ससि पन्नग बसु इक १८८१ सूचित सक असिंसद २ फग्गुन १२ नवमि९ अनेहँ ॥
दुवरदिस थप्पि लगनकॅग्गर दिय आवन दुलह समय सुभएह७२

॥ दोहा ॥

इम नवमी९ फग्गुन१२ असित२, समै लगन थपि सुद्ध ॥
मचन लग्यो पुर१ देस२ मह, दिसदिस पटह प्रबुद्ध ॥ ७३ ॥
कृष्णाराम१ धात्रेय कुल, सचिव मुख्य सब साज ॥
सज्ज करे समुचित सुमति, करन स्वामि जस काज ॥७४।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम सिंहचरित्रे फ्ल्लजालमसिंहसमरस्वसोदरपृथ्वीसिंहमरणापलायित

अपने स्वामी के वंश का नाम रखने को १ वह बुड्ढा छाने निकला ॥ ७० ॥ हे प्रभु रामसिंह २ आपके कवि (सूर्यमल्ल) के पिता चंडीदान ने उस युद्ध पर उद्धत वीर रसके ४ गुथेहुए घर रूपी बलविग्रह नामक ३ ग्रन्थ बनाया जो बलवंतसिंह के लड़ने और मरने की दृढ ५प्रतिज्ञावाला है ६खबर ७आपने भी स्नान करके जलांजलि दी ८ अब सब घरों में हेमंत ऋतु छाई ॥ ७१ ॥ रावराजा रामसिंह के प्रथम विवाह का ९ उत्सव हुआ १० फाल्गुन के कृष्ण पक्षकी ११ समय १२ पत्र दिये ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, रामसिंहके चरित्र

नाथद्वारगतकोटापतिकिशोरसिंहविष्णुपूजनसमासजन १ नाथद्वारस्थकिशोरसिंहपादुकाज्ञयाझल्लजालमसिंहकोटाराज्यकार्यकरण २ विजितकाबुलजनपवलवपुरपतिसिखरणजीतसिंहपेसोरविजयन ३ विजितवर्माराष्ट्रांगरेजकोटिद्रम्मसहितदेशैकभागग्रहण ४ कोटासिंहासनसंस्थापितकिशोरसिंहजालमसिंहमरण ५ किशोरसिंहानुजविष्णुसिंहलक्षद्रम्मपट्टप्रापण झल्लमाधवसिंहकोटामहामात्यीभवन ६ सिंधियाहुलकरकतिपयलघुराज्यहरणसूचनसहितराघवदुर्गाधिपजयसिंहवीरत्वसूचन ७ बुन्दीपतिरामसिंहपितृव्यबलवतसिंहपट्टन९नननिधनरामसिंहप्रथमविवाहप्रारम्भसूचन चतुर्थो मयूख ॥ ४ ॥

आदित षट्षष्ट्युत्तरत्रिशततमो मयूख ॥ ३६६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(उपदोहा)

---

१ कोटाके महाराव किशोरसिंह का अपने भाई पृथ्वीसिंह को मरवाकर झाला जालमसिंह के युद्ध से भागना और नाथद्वारे में विष्णु भगवान् के पूजा में लगकर रहना १ किशोरसिंह के नाथद्वारे रहने के समय किशोरसिंह के पादुकाओं से आज्ञा लेकर झाला जालिमसिंह का कोटाका राज्यकार्य करना २ लाहोर के राजा सिख रणजीतसिंह का काबलको विजय किये पीछे पेसोरको विजय करना ३ अंगरेजों का वर्माकी बलायत को जीतकर क्रोड़ रुपयों के साथ देश का एक भाग लेना ४ महाराव किशोरसिंह को कोटा की गद्दी पर पीछा बिठाये पीछे झाला जालिमसिंह का मरना ५ किशोरसिंह के छोटे भाई विष्णुसिंहको लाख रुपयोंका पट्टा मिलना और झाला माधवसिंह का कोटा का मुसाहिब होना ६ सिंधिया और हुलकर का कई छोटे छोटे राजाओं के राज्य छीनने की सूचना के साथ राघवगढ के राजा जयसिंह की वीरता की सूचना करना ७ बुंदीके पति रामसिंह के काका बलवतसिंह का पाटण के युद्ध में मारा जाना और रामसिंह के प्रथम विवाह के प्रारंभ की सूचना का चौथा मयूख ४ समाप्त हुआ ॥४॥ और आदि से तीन सौ छासठ ३६६ मयूख हुए ॥

हड्डवती[1] भुव समह हुव, अधिपति उपयमें[2] उचित ॥
निखिल भये उपहार[3] नव, चित जन मन रुचित ॥ १ ॥
लग्गि निमंत्रन दिसन लग, द्योंस१ निस२ न मह दुरत[4] ॥
सद्द तुमुल भेरिन[5] सतत, फैलि प्रतत[6] जस फुरत ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

सचिव भरत बेसर१न[7] भोर्लि२[8] सकट३न सु चित्त भर ॥
दिसदिस देस बिदेस व्यावहारिक क्रमि कग्गर[9] ॥
समय अंत सब सुभट होइ हाजरि सुख संधिय ॥
हुव पूजित हेरंब[10]१ बिहित क्रम कंकन२ बंधिय ॥
जाजि माइ देव३भजि तैल४जव५फबि बरातजस सर फलिय॥
इम अप्प बरस तेरह१३उदित चित्त मुदित व्याहन चलिय॥३॥

(मुक्तादाम)

चढयो प्रभु चक्र[11] बिशिष्ट[12] बरात, सबै जन कुंकुम[13] चैल सुहात॥
करी[14] मदमत्त चले सह केक, सजे जनु कज्जल अद्रि सटेक ॥४॥
जथाकुल भद्र१मृगा२दिक जात, झरैं मद ज्यों झरनाँ गिरिगात॥
चलेकतिमक्कुन१उद्धत[15]व्याल२,कितेकल[16]भा३भिधबिक्क[17]४बिसाल॥५॥

हाडोती की भूमि १ उत्सव सहित हुई २ राजा के विवाह के उचित ३ सम्पूर्ण सामग्री नवीन हुई ॥ १ ॥ दिनरात्रि उत्सव में ४ छिपते हैं ५नौबतोंका शब्द निरन्तर भरगया ६ निरंतर फैलकर यश फुरा ॥२॥ ७ खच्चरों, ८ ऊंटों व छकड़ों पर ९ व्यवहार के पत्र चले १० गणेश का पूजन होकर उचित रीति से कंकन बंधा और माईदेव (मांयां) का पूजन होकर तेलवान चढा ॥ ३ ॥१२ जानके सहित राजा की ११ सेना चढी वहां सब मनुष्य १३ केसरिया रंग के वस्त्रों सहित शोभायमान हुए १४ कितने ही मस्त हाथी साथ चले सो मानों हठ सहित कज्जल के पर्वत सज्जित हुए ॥ ४ ॥ जो हाथी भद्र, मृग आदि कुलों में उत्पन्न और पर्वत के झरनों के समान जिनका मद झरताहुआ, जिन हाथियों में कितनेही मुकने (विना दांतवाले) और कितने ही उद्धत १५ तिरछी घात करनेवाले १६ कितने ही कलभ नामके (बच्चे) १७कितने ही बड़े बच्चे ॥ ५ ॥

महाजव जुत्थप५ मैंगल६ मत्त७, रहें मग इष्ट*बसा८।१ सुख रत्त॥
अपोमय †अंदुक लब लगाइ, जरे डगवेरिन जेर न जाइ ॥ ६ ॥
गहें नर ‡नेगुक प्रेरत गैल, डिगें डग §डाकन चैक चरैल ॥
अपछेन घात १संमुक्कर२ अग्ग, सजे हुव हाटक होदन सग्ग ॥ ७ ॥
महावत ३ठीतें घुमावत मत्थ, हठी फट कारत भौंरन हत्थ४ ॥
प५ कुथ्थपट्ट६ जरी७ मय पिट्ठि, हवाइन डाकन नोदत निट्ठि ॥ ८ ॥
चहें खग सिंचत जे वमथून, जगें जिन लोचन खून जनून ॥
कलापक कंठ मिले मखतूल, मरोरत जाँखिन साखिन मूल ॥९॥
दु१२दंतन कौंनक वग्गर वेस, बजें लगि घंटन घोर बिसेस॥
तनें तनु हिंगुलु१ त्यों हरिताल२ जथाऽवर१ गात२ न भात जँगाल३॥१०॥

कितने ही बड़े यूथपति, कितने ही मदकल (मद में फलेहुए) कितने ही सामान्य मस्त ७ कितने ही हाथी मार्ग में हथनियों के सुख में प्रसन्न रहने वाले अर्थात् आगे हथनी होने से मार्ग में चलनेवाले जो † लोहे की सांकल जंजीरा से जड़े हैं तो भी वे नहीं होने के समान जाते हैं ॥ ६ ॥ जिनके पीछे ‡ भाले लिये हुए मनुष्य प्रेरणा करते हैं और § क्रोध दिलानेवाले छोटे पांव लगाते हैं तब वे भिड़नेवाले हाथी क्रोध करके आगे पैंड (पग) देते हैं १ अंकुश के अग्रभाग की घात से २ अग्र को उठाकर सुवर्ण के होदों के साथ सज्जित हुए ॥ ७ ॥ ३ महावत के हूलने (पगों की ठोकर देकर प्रेरणा करने) से मस्तक को हिलाते हैं और वे हठी ४ शुंड मस्तक के भ्रमरों को फटकारते हैं जिन पर रेशम की और जरी की ५ झूल पड़ी हैं वे हवाइयां (बारूद के अग्नियन्त्रों) से और ललकारों से कठिनाई से ६ प्रेरणा कियेजाते हैं ॥ ८ ॥ जो हाथी ७ सुंडके जलकणों से उड़ते हुए पक्षियों को सींचते हैं और जिनके नेत्रों में ८ क्रोध का खून जगता है "फारसी भाषा में जनून का अर्थ बावलापन है परन्तु यहां लाक्षणिकी से क्रोधके अर्थ में प्रयोग किया है" कंठों में १० रेसम के ९ कलाप लगे हुए हैं और ११ वृक्ष को मरोड़तेजाते हैं ॥ ९ ॥ दोनों दंतों में १२ सुवर्ण के उत्तम पगड़ लगे हैं और घंटाओं का विशेष शब्द होकर बजती हैं १३ जिनके शरीर पर हिंगलू और हरताल फैलायेहुए हैं और इसी प्रकार अन्य शरीरों पर जंगाल १४ शोभित है ॥ १० ॥

उठावत पोंगर दान अमान, पटावत पच्छिन लैन प्रमान ॥
बढे अंग उच्छ्रय मेचक बर्ष्या, करैं चल सुप्प समाकृति कर्ण्या ॥११॥
अगड्ग बानि बले अतिकाय, चले इम सामज१ कामज चाय ॥
खरे रचि राजिय बाजिय२ खेल, मलंगत ताजिय२राजिय मेल१२
भये भुव बाल्हिक१ कच्छ२ बनायु४, सअर्व५इरान६हिरातज साघु
तुखार८ इराक९ रु तिब्बत१० चीन११, किते घट१२ कच्छ१३ रु बंग१४ कुलीन ॥ १३ ॥
किते सित१नील२ईलाह३कुल्लाह४, सुनावत सादिनै ओरन वाह॥
नचैं बजि प्रोथन आनिल नाद, बढैं गति पंचक५ अंचैक बाद १४
लसैं छबि चम्मर डम्मर लूम, घलैं कर मंडत घुम्मर घूम ॥
घनैं रय ठहै न कसा अवघात, झरैं खुरतारन अग्गि अलात॥१५॥
समीर करैं जिनतैं अनुसार, परैं उडि पानि पचीस२५न पार ॥

अमाप मदमें १शुंडके अग्रभागको उठाते हैं सो मानों उसको पक्षियोंको लेने को भेजते हैं२वे काले वर्ण के ऊंचे पर्वत ३छाजलेकी आकृतिके कानोंको चपल करके बढे॥११॥ वे बडे शरीरवाले हाथी महावत और सांटमारों की ४ अगड्ग वाणी से फिरे "यह हाथी को बढाने का सांकेतिक शब्द है" ५ इस प्रकार के हाथी कामना की चाह से चले, उधर खेल करते हुए घोड़ों की ६ पंक्ति खड़ी हुई और ७ कूदते हुए घोड़ों का उस पंक्ति से मिलाप हुआ ॥ १२ ॥ ८ बाल्हिक शब्द से लेकर बंग शब्द पर्यन्त देशों के नाम हैं जिनमें उत्पन्न हुए घोड़े ॥ १३ ॥ कितने ही स्वेत, नीले, ९ अबलख १० कुछ पीले रग और काले घुटनोंवाले जो दूसरों से ११सवारों को प्रशंसा सुनानेवाले १२नचतेहुए घोडों के फुरणों (नासिका) में १३ पवन का शब्द होता है सो मानों घोड़ों की पांचों गतियों में बढने का १४ पवन से वाद करते हैं ॥ १४ ॥ जिनका बालछा (पूंछ) चमर के १५आडम्बरसे शोभा देता है सो घूमर में घूमकर हाथ में लिये चमर के समान रचता है, बडे वेग के कारण जिन पर१६चाबुक का प्रहार नहीं होसकता और खुरतालों से १७ धूम रहित अग्नि गिरती है ॥ १५ ॥ १८ पवन भी जिनके पीछे ही चलता है बराबरी नहीं करसकता क्योंकि जब ये घोड़े उडते

सजे कसि खध *कवी मुख सच्च, नचैं पय चातुरि पातुरि नच्च॥१६॥
तुले समभाग †कुसा मखतूल, फबैं गल चौसर हाटक फूल ॥
खरे मुख आयस पक्क खलीन, जरे जरजाल बिराजत जीन॥१७॥
बनी पय नाल ठनी गजवेल, खनकत नेउर तंडव खेल ॥
गुथे घन घुम्म उड़ै गजगाह, बनैं स्वरगच्युत गंग प्रवाह ॥ १८ ॥
किते अहिपेच१पटी२गति३कावा४, फिरैं पटु आदसफूल५फिराव॥
भुजंगन साव१ सटा तति२ भास, करैं मनि१ ज्यों मनिगुंफ२ प्र-
कास ॥ १९ ॥
लसैं वपु बोधितरू छद१लोल, कनीनिय कैं२गनिका दृगगोल
कर छबि नोक कढे जुग२कर्ण, प्रदीप सिखा१किंमु केतकपर्ण२
अमेय तरोगति निम्न अलीक, झुलावत जे सिबिका भरि भीक॥

६ जो पवन के पास हाथ आगे जापड़ते हैं, जिनके कपे कसकर सजेहुए और मुख में * लगाम के कच और पगों की चतुराई से पातुर (वेश्या) के समान नाचनेवाले † रमम की पाग ५ बराबर से झुलेहुए जिनके गले में १ सुवर्ण के फूलों की चोसरें शोभा देती हैं, जिनके सचे मुख में पक्के २ लोहे की लगाम और जरी की जालीवाले जीनों से शोभायमान ॥ १७ ॥ गजवेल (लोहा विशेष) की बनीहुई पगों में नालें लगी हुई और ३ नाचने में नेउर बजते हुए, जिनमें बहुत घूमने में गुथे हुए गजगाह उड़ते हैं सो मानों स्वर्ग से ४ गिरती हुई गंगाका प्रवाह है ॥ १८ ॥ कितने ही ५ नागपेच, पटी (शीघ्रदौड़) ६ सरपट तथा समान सीधी दौड़, कावा(गोलकुण्डल) ७फूलआदस (घिरीदौड़) में चतुराई से फिरते हैं ८ सर्पों के पचों की भांति ९ केसवाली शोभा देती है और उस केसवाली में १० गुथीहुई मणियां हैं सो ही सर्प की मणिका प्रकाश करती हैं ॥ १९ ॥ जिनके शरीर चपलता में ११ पीपल के पत्ते के समान शोभा देते हैं १२ किंवा गणिकाके नेत्रों के गोलेकी पुतली के समान हैं, दोनों कानों की कटी हुई नोक दीपक की शिखाकी १३ किंवा केतकी के पत्ते की शोभा करते हैं ॥ २० ॥ १४ शीघ्रता की गति में अमाप १५ गहरा ललाट (बैठाहुआ तथा) जो ल्हीक भरकर १६ पालकी को झुलानेवाले

महामृदु [1]लोम जथा पसमीन, [2]बटा नटके जिम झंप प्रवीन ॥२१॥
अटैं झुकि बक्र [3]हयच्छट अच्छ, मुरैं [4]छक बिंजक [5]ज्यों दक मच्छ
[6]किंधौं सफ१ आयस [7]कांत कटोर, उडैं अति अंबर जुब्बन जोर२२
[8]थरक्कहिं अक्कहिं संभ्रम थप्पि, बहैं सुख बग्गहिं मग्गहिं मप्पि ॥
[9]जवाधिक [10]रथ्थ किते जुग जुत्त, मनो रय पानिय१ पावक२ पुत्त२३
सुहात चले इम [11]अब्बर२ समूह, जथा सुख मंद न [12]स्यंदन३ जूह ॥
[13]वरप्रधि१ नाभि२ [14]सकूबर३ [15]चक्र४, बनैं [16]जुग५ चंदन संभव बक्र२४
[17]प्रभाकर जे जर जाल [18]पिनद्ध, बहैं [19]धुर उद्धुर६ रेसम बद्ध ॥
लगे [20]अनुकर्ष७[21]वरूथ८विधेय, रजे पथ यौं रथ३।१[22]गोरथ३।२गेय २५
चली बहुधासिबिका३।१सुखपाल३।२,चले[23]बहु भोलि१बजावतगाल
क्रमें सह जन्य४सु धन्य कुलीन, हजारन दान१कृपान२न [24]हीन२६

और पसमीना के समान बडे कोमल १ केशोंवाले २ नटके पट्ठे [छोकर] के समान कूदने में चतुर ॥ २१ ॥ उत्तम झुकेहुए टेढे ३ कन्धे से फिरते हैं और छक को ४ जनानेवाले ५ जल में मच्छी के समान पलटते हैं किंवा ७सुंदर लोहेवाले कटोरों रूपी ६खुरों से यौवन के जोर से आकाश की तरफ उडते हैं ॥ २२ ॥ ८ सूर्य को भ्रम कराकर ठहरते हैं और बागों में मार्ग को मापकर चलते हैं ९ अधिक वेगवाले कितने ही दो दो घोड़े १० रथों में जुते सो मानों वेग में जल और अग्नि के पुत्र हैं ॥ २३ ॥ इस प्रकार ११ घोड़ों के समूह शोभित होकर चले और तिसी प्रकार बडे सुखवाले १२ रथों के समूह चले जिनके उत्तम १३ पूठियें, नाही और १४ पीनशी सहित १५ पहिये हैं १६चंदन के बनेहुए जूवे (जूड़े) ॥ २४ ॥ १७कान्ति करनेवाली जरीकी जालियों [खोलियों] से १८ बंधे हुए, १९रथ का अग्रभाग और जूवा रेसम की रस्सी से बंधेहुए, जिनमे उचित २०औदण [रथके नीचे का आधार भूत काष्ट] और २१ रथ कवच (शत्रु के शस्त्रों से बचानेवाली लोहे की जालीयुक्त खोली) लगेहुए इस प्रकार के रथ मार्ग में शोभायमान हुए और कहेहुए २२ बैलों के रथ भी चले ॥ २५ ॥ बहुतसी पालखियें और सुखपालें भी चलीं और २३ बहुत ऊंट गाल बजातेहुए चले और धन्यता योग्य कुलवान हजारों जानेती(बराती) साथ चले जो तरवारों से और दान से २४ चीण हैं ॥ २६ ॥ और ज्योतिवाले

भरे नग भूखन जोति जराय, कसैं सब हेतिं गिनैं तृन काय ॥
भले भुज१हत्थिन ठिल्लनहार२, श्रहो कर१आसुग२पाय१पहार२७
नहार१ पहार२ अत्यानुप्रास ॥१॥
कहे अँत तूटिपरो किन सीस, निहारत इक्क१ वकारत वीस२० ॥
सजे कछवाह१कमधज२सत्थ, तृना१हित ता२व जादव३तत्थ२८
मिले वडगुज्जर४ झल्ल५प्रमार६, डिले गहिलोत७तथा प्रतिहार८॥
उमगत चालुक९ के चहुवान१०, स जावल११ सैंगर१२ वैस १३
सुजान ॥ २९ ॥
चलो धंनुउत्कट१४ गोर१५ रु बिंद१६, महारन सत्रु गइंद मइंद ॥
रमें खुरली पट्ट सद्धि कृपान, वढे विन वेधत के नभवान२ ॥३०॥
लहे कति लच्छय तुपक३न तक्कि, छजैं कति कुंत४न सगि५न छक्कि
कटार६ गदा७ इलिका८छुरिकादि, वढे रमते इम सस्त्रन वादि३१
चले झपटावत वाजि नचाय, किते उडि लंघत हत्थिन काय ॥
टरें झपटावत हे पलटाइ, जँघी कति हत्थिनपें कढिजाइ ॥३२॥
सजे इम सूर चले प्रभु संग, बन्यों वर भूँवर श्रोप अनंग ॥
मजी सिर कुंकुम पुंजित पग्ग१,नव९श्रँह गो५सिखपट्ट२श्रँनग्घ३३
महामनि पंच५सिखी तिम मोर३, जर्यो तूररा४।१ रु किलगि५।२
य जोर ॥

नगों के जड़ेहुए भूपणा से भरेहुए १सब शस्त्रोंको कसेहुए २शरीर को तृण के समान जाननेवाले और उत्तम भुजोंसे हाथियों को हटानेवाले ३आश्चर्य करानेवाले पवन के समान शीघ्रता करनेवाले हाथ और पर्वत के समान अचल ४ चरणवाले ॥ २७ ॥ ५ मस्त ही कहते हैं ६ अकेले होने पर भी बीसों शत्रुओं को ललकारनेवाले ७ तृण रूपी शत्रुओं को छजानेवाला अग्नि रूपी ॥२८॥२६॥ ८धानोत्कट [धाधड़ा] ये सब क्षत्रियों के वंशोंके नाम हैं बड़े युद्ध में शत्रु रूपी हाथियों के ९ सिंह १० बाणों से आकाश में पक्षियों को वेधन करनेवाले ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ११ कितने ही वेगवाले ॥ ३२ ॥ १२ भूपति १३ केसर के रंग की पाघ १४ नव रत्नों का जड़ाहुआ पांच कलंगीका १५अमूल्य शिरपेच ॥ ३३ ॥

लगी मृगनाभि[1] त्रि३ रेख६ ललाट, लसैं श्रुति[2] कुंडल२।७ झल्ल
तैंलाट[3] ॥ ३४ ॥

हसैं मनि पंच५ प्रपंचक हार८, दिपैं भुज२ [4]अंगद२।९ ओज अपार
बन मनिबंध[5]२ अनर्घ [6]अवाप२।१०, छजैं कर[7]साख १० मंहोर्मिक१
छाप ॥ ३५ ॥

रह्यो फबि कं[9]चुक१२ जाँ[10]गुड रंग, सटी [11]सैमलंक करयो अधिकं[12]ग१३
धरयो सित१सानघुट्यो [13]ईक१धार,करयो निज [14]पत्तनजात कटार३६
बन्यौं बर [15]खेटक१६ पिट्ठि बिसाल, मनौं कन[16]काचलपैं घनमाल ॥
सु [17]शृंखल२।१७ सोहि[18]रै गोहि[19]रै२ संग, अलंकृत१८ अंघ्रि[20]न अंगु
लि१० अंग ॥ ३७ ॥

छयो मनिमंडित दंडित छत्र१९, [21]बीजित चामर२।२०[22]बर्ह२।२१पतत्र
चल्यो बनि [23]दूल्ह इभेंद्र अरोहि, सु ज्यों सत[24]सलैं घन[25]द्विपैं सोहि ३८
समै [26]सिसिरोत्तर [27]पक्कत सस्य,[28]तपा११गत [29]कल्प र गम्य [30]तपस्य१२॥
नकीबन सं[31]कुल लग्गि ललक्क, चल्यो इम राम२०।१४[32]धराधवचक्क

१कस्तूरी २कानों में कुंडल ३गालों के नीचे तक ॥३४॥ ४ भुजबन्ध ५पूंचे ६कड़े (कंकण)७अंगुलियोंमें ८चड़ी अंगूठियां ॥३५॥१०केसर के रंग का ९जामा(बागा) शोभायमान होरहा है ११सिंहके जैसी कमर पर "सदा विचरते यस्य ज नदी" १२कमरबंधा बांधा साण से घिसाहुआ तीक्ष्ण १३ खांडा (खड्ग विशेष)धारण किया १४ अपने पुर (बुंदी) का बनाहुआ कटार बांधा ॥ ३६ ॥ १५ सुंदर बड़ी ढाल बांधी सो मानों १६ सुमेरु पर्वत पर मेघमाला है १९पगों के गिरियों पर १७सुन्दर पगसांकले १८ सुवर्ण के लंगर शोभित हैं २० चरणों की दस हीं अंगुलियां भूषण युक्त हैं ॥३७॥ चमर २२मोरछलों से२१पवन ढोला हुआ, बड़े हाथी पर सवार होकर २३ दुल्लह चला सो मानों २४ इन्द्र २५ ऐरावत पर सवार होकर शोभा युक्त हुआ ॥३८॥ २६शिशिर ऋतु के उतरते २७ खेती के पकते २८ माघ मास के उतरते और गमन करने योग्य ३० फाल्गुन मास के २९समय छड़ीदारों से३१भरीहुई ललक लग कर इसप्रकार३२भूपति रामसिंह

दिसा१ विदिसा२न निसानन नद्द, बजे सिर भेरिन कोन विहद्द ॥
दुघा३दल अग्ग१रु पिट्ठि२दिपात, बनैं अति ओपन तोपन व्रात४०
नटो५नट१भंड२नटी३बहुरूप४, भये गन गैल रिझावन भूप ॥
अधीमहु दै तिन्ह इष्ट अछेह, महा बसु बिंदुन बुट्ठत मेह ॥४१॥

॥ षट्पात् ॥

मनिमुकाम क्रम मंचुर सुकवि पंडित सनमानिय ॥
सह बरात मह सुलह दिपत प्रस्थित तह दानिय ॥
पणव१ स दुंदुभि२ पटह३ मुरज४ ढक्का५ गोमुख६ मुख ॥
ह्रिहित१ हेसा२ विविध तुमुल घन तनित रनिन रुख ॥
रुचि भाग राग गायक रचत भनत बदि भोगावलिय ॥
मारीच द्विरद आतहि महिप चतुर रूप्प उपाहन चलिय४२
फुट्टि फुट्टि हय खुरन गिरिन पाखान गरद मिलि ॥
छुट्टि छुट्टि छितिसधि सिथिल भोगीस सीस झिलि ॥
तुट्टि तुट्टि तरु दुगम पृथुल पद्धति हुव पद्धर ॥
कुट्टि कुट्टि बंत वज्ज कोन गत गज्ज दिगतर ॥
वित्थारि वखांन जस दिस१विदिस२विदित बत्त हुव नर नरन
बुदीस बिंद पहु जोधपुर क्रमत अज्ज उपयम करन ॥४३॥

की सना चली ॥ ३९ ॥ १ नगारों का शब्द २ नोबतों के ऊपर बेहद ३ ढके [ढाके] बजे ४ तोपों का समूह ॥ ४० ॥ ५ नट विशेष ६ भांड ७ स्वांग लानेवाला ये सब नटों के भेद हैं ८ बड़े घन की बुंदों से ॥ ४१ ॥ ९ बहुत १० ये सब बाजों के भेद हैं ११ आदि १२ हाथियों की गर्जना १३ घोड़ों का हींसना १४ मेघ गर्जना के समान १५ भाट लोग स्तुति करते हैं १६ पाटवी (राजा की सवारी के) हाथी के होदे पर आते ही ॥ ४२ ॥ १७शेष नाग १८सीमें मार्ग होगये १९ टापों से फूट फूट कर नोबतों का बजना और हाथियों की गर्जना दिशाओं में गई २० दिशा दिशाओं में यश के वाखाण [व्याख्यान] होकर, २१ विवाह करने को जोधपुर के राजा के घर जाता है ॥ ४३ ॥

गजन फरकि बैहरक्क थरकि गन गगन बिराजत ॥
छोनी बैमथुन छिरकि झर कि भद्दव घन साजत ॥
बरकि दद्ध बाराह लरकि फनमाल नाग इँन ॥
धरकि धरकि भय छुज्जि दरकि उर असह अरातिन ॥
गढ गढन संक अंतर उपजि करत मंत्र मंत्रिन कतिक ॥
कुलरीति रीति इह्इ६१न कहत समिति१ब्याह२उच्छाह इक१॥४४॥
गरद अक्क अच्छादिय सरद घन जरद सोम जिम ॥
तोमं गगन तोमरन मंदर पुंखन कलाप तिम ॥
भजत भजत बनजंतु कटक अंतर थकि छुट्टत ॥
कति कमनैतन करन सरन बिकिरैन वपु फुट्टत ॥
इम पिट्ठि अप्प बिरुदन सुनत भनत दैन रंकन बिभव ॥
सुरनाह राह अतिछबि अटत रटत जलेब नकीब रैव ॥४५॥
उलटि उलटि दैल ओट पवन मंडत प्रैत्यागम ॥
सुगम हरोल१न सलिल दुगम चंदोल१न कैर्दम२ ॥
आसपास रहिँ चौस त्रास मैवासन पत्तिय ॥
हेतुंन हास हुलास बास सेतुंन गुन बत्तिय ॥

१हाथियों पर२ध्वजाओंके समूह उडकर३हाथियोंकी शुंडके जलकणोंसे भूमि छिड़की जाती है सो मानों भादवाका झड़ सजता है४शेष नागके फणोंकी माला झुकती है५शत्रुओंके हृदय फटकर६युद्धका और विवाह का उत्सव एकसा ही होता है॥४४॥ जैसे शरद ऋतुके वद्दल ८चन्द्रमाको जड़ देवे तैसे रजने७सूर्यको ढक दिया और जैसे १०बाणों के पंखों से भाथा भरजाता है तैसे भालों के ९समूह से आकाश भरगया ११बाणों से पखियों के शरीर फूटते हैं १२इन्द्र के मार्ग से १३नकीब शब्द करते हैं ॥ ४५ ॥१४सेना की ओट से १५ उलटा गमन करता है १६ सेना के पिछले भाग को कीचड़ मिलता है १७इस खबर से १८ लुटेरों और चोरों के घरों में त्रास पहुंची १९ मित्रों को प्रसन्नता पूर्वक हास्य होता है और रामसिंह के गुणों की वार्ता का वास २० मर्यादा पर्यंत होता है अर्थात् भूमि की मर्यादा (सीमा) समुद्र है वहां तक गुणों की वार्ता होती है.

सुनि धन्य धन्य सूचक सुजस जन्य जनन अति मोद इत॥
प्रति ग्राम गाम वधत कलस धाम धाम मंगल मंहित।४६।
भागधेय भौमिकन निकर लैलै प्रताप नत ॥
उपहित अंजलि आत नात सिर भेट निवेदत ॥
कहत नाथ किंकरन पूत करि ओदन१ पानिय२ ॥
मंडहु उचित मुकाम मञ्जि स्वीकृत महमानिय ॥
विसवासि मिष्ट वैनन वरहु मन्त्री हम सूचत मुदित ॥
मगजाल जुगत आवरि मनुज होत निछावरि परम हित।४७।

॥ दोहा ॥

प्रतिमुकाम सचिवन प्रकर, गोनिन रुप्पय१ गेरि ॥
पट२ भूखन३ हय४ मय५ प्रचुर, हाजरि रक्खत हेरि॥४८॥
जहँ मिश्रन प्रभुकवि जनक, चारन मनि कवि चंड ।१ ॥
भट्ट रतन२ वटत भये, ए दुवर त्याग अखंड ॥ ४९ ॥
इच्छित धन इम कविकुलन, मिलत मुकाम मुकाम ॥
सुनत त्याग जस सक्रमिय, रूंच्प मुकुटप्रभुराम२०१।४।५०

॥ घनाक्षरी ॥

प्रथम१ पगारा१ दिय देवली२ मुकाम दूजो२,
केकरी३ तृतीय३ सरवार४ चोथो४ जसकाम ॥
गमसर५ श्रीनगर६ कावरि७ यों वीच रहि,

---

१ पूजनीय तथा बड़ा मंगल होता है ॥४६॥ प्रताप से नम्र होकर भोमियों के समूह २ हासिल (खिराज) लेलेकर आते हैं और ३ हाथ जोड़कर (अञ्जलि सहित) मस्तक नमाकर नजर करते हैं ४ अन्न जल ४ पवित्र करके मनुष्यों के समूह की ६ आवलि (पंक्ति) जुड़कर ॥ ४७ ॥ ७ गोणियों में रुपयोंका समूह नाखकर ८ छूट ॥ ४८ ॥ हे प्रभु रामसिंह आपके कवि सूर्यमल्ल के पिता ९ चंडीदान नाम्वा का चारण चंडीदान ॥ ४९ ॥ १० चले ११ मुकुटों के मुकुट रामसिंह का यश सुनकर॥ ५० ॥

अष्टम८ सु पुष्कर८ मों न्हांन दान अभिराम ॥
अल्हनादिआवास९ रु मेरता१० निवसि ऐसैं,
बोरूंदा११ पीपाड़१२नैर बीसलपुर१३स नाम ॥
अध्व इम खंधावार[3] तेरह१३ बिरचि आप,
धन्यता धुरंधर नियरायो[4] नृप मान[5] धाम ॥ ५१ ॥

॥ षट्पात् ॥

किय मग बिच कासार[6] इक्क १ रानिय सेखाउति ॥
आवन सम्मुह अवधि सोंहि निश्चित उक्ति[7]१ रु श्रुति२ ॥
अब तासौं बढि अधिक पैंड संख्या असीति८० पर ॥
सम्मुह आइ नृप स्वसुर मिल्यो मान सु वसुधावर ॥
नालकी जान आरूढ नृप जुग२ हि कुलक्रम रीति जिम ॥
बिरचित बिधेय मोदित मिलि रु आये गंम्य निकेत इम ५२

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

प्रथित जोधपुर पास, राईको उपवन[10] रहत ॥
नृप बल जन्य निवास, किय तिहिं सिबिर[11] प्रबंधकरि॥५३॥
महलन गो नृप मान, सिक्ख बहुरि करि मग्गंसन[12] ॥
अंबरघर[13] चहुवान, ठहै कृत दान प्रविष्ट हुव ॥ ५४ ॥
मिले स्वसुर१ जामात[14]२, सूचित.क्रम जवतैं सरनि[15] ॥
तबतैं द्विगुन दिपात, जर ऋर बुधो इंद्र जिम ॥ ५५ ॥
महुर१ द्रम्म अति मान, ऐसे बिधि नभ उच्छलिय ॥

---

१ सुंदर २ आल्हणियावास ३ इसप्रकार मार्ग में तेरह मुकाम करके ४ राजा मानसिंह के धाम ४ राजधानी (जोधपुर) को समीप ली ॥ ५१ ॥ ६ तलाव ७ निश्चय ही कही और सुनी है ८ उचित रीति करके ९ जहां जाना था वहां आगये ॥ ५२ ॥ १० बाग ११ राजाकी सेना और जान के लिये डेरों का प्रबंध किया था वहां निवास किया ॥ ५३ ॥ १२मार्ग में से १३ डेरों में ॥ ५४ ॥ १४जमाई १५ मार्ग में ॥ ५५ ॥

देखि पिहित जिम दान, कर लिय भेलि अजाचकहु ५६॥
इत सध्यादिक अग, नित्य क्रियाके विरचि नृप ॥
पावत समय प्रसंग, सज्ज भयो पुर सक्रमन ॥ ५७ ॥
भरि जो लग अति भीर, रंच्य सदन बाहिर रही ॥
पाई सकट पीर, जिम तरउप्पर लब्ध जन ॥ ५८ ॥
इभ मारीच अरोहि, पहु सज्जित अत्र समय पर ॥
मनमन जनजन मोहि, चल्यो विवाहन लग्न चहि ॥ ५९ ॥
जत्थ रिझावन जानि, सामग्री समुचित सहित ॥
अभिमुख महिप आनि, नट१न गान२ पातुरि निकर ॥६०॥
पट्पात्-पृथुलं दारुं पट्टिरिप कमनं चित्रित लिपिकारिनं ॥
असें नरन थित अटन नच्च उप्पर पननारिनें ॥
तंडव पटु वय तरुन झोक रागन झुम्मावत ॥
चडातकें चल चरन घेर घुम्मर घुम्मावत ॥
श्रुति१ जाति२ ताल३ वाद्न४ कुसल मोहत तत गीतन सुमति ॥
आरोह ग्राम अतिम३ अवधि ग्राम प्रथम१ अवरोह गति६१

१गुप्तदान २याचना नहीं करनेवाला ने भी लेलिया ॥५६॥५७॥ ३दुल्हा के डेरे से बाहर॥ ५८ ॥ ४राजा की मुख्य सवारी के हाथी का नाम मारीच है जिस पर चढ़कर ॥५९॥ ५ सन्मुख आकर ६ पातुरियों के समूह ने ॥६०॥ ८ काष्ट की ७ बड़ी पट्टी (तख्ते) १० चितेरों की ९ सुंदर चित्राम की हुई ११ मनुष्यों के कंधों पर चलती है उस पर १२ वेश्या का नाच हुआ १३ नृत्य करने में चतुर और तरुण वेश्या झोक के साथ राग को झुकाकर चपल चरणों से घूमर में १४ लहँगे के घेर को घुमाने लगी और सीआ से लेकर कोहनी पर्यन्त तक के १५स्वरों के बाईसों ही भेदों में राग की जाति ताल और वाद्य बजाने में कुशल वह वेश्या अंतिम ग्राम तक आरोह करके प्रथम ग्राम पर उतारने लगी [सात स्वरोंमें षड्ज, मध्यम और गान्धार, ये तीन ग्राम हैं यथा—"षड्जग्रामो भवेदादौ मध्यमग्राम एव च। गांधारग्राम इत्येतद्ग्रामत्रयमुदाहृतम् ॥" इनमें मतान्तर से गांधार के स्थान में पंचम को भी ग्राम मानते हैं] ॥ ६१ ॥

घुरि नेउरि घंटकिन झमकि सिंजित झइनावत ॥
बिधि क्रम ताल बढाइ बहुरि प्रतिलोम बनावत ॥
मिलि संक्रम मुच्छनन मोद निकसंत नाद मय ॥
कंदुक१ अहि२ गति क्रमन चढत उतरत अलाप चय ॥
आनद्ध१ वितत२ बादन उचित मादन मुदित नरेस मन ॥
बसि बास आइ सायकबिसम निज निवास गावन१नटन६२

॥ नाराच ॥

तहाँ अलाप जाल बाल रुद्रतालतैं तन्यौं ॥
अदोस घोसं तोस पोस मालकोस२ उप्फन्यौं ॥
भुजंग जाइ ज्यौं घुनाइ उंद्ध छाइ थंभयो ॥

नूपुरों की १ घूघरियें बजकर २ भूषणों का शब्द हुआ, विधि पूर्वक क्रम से ताल को दुहरी, तिहरी, चोहरी यथाशक्ति बढाकर फिर चोहरी, तिहरी, दुहरी इस क्रम से प्रतिलोम बनाने लगी, जिसके ३मूर्छना पर मिलकर चलने से शब्दमय मोद निकलता है "सप्त स्वरों में उत्तर मद्रा से लेकर ज्वाला पर्यन्त इक्कीस मूर्छना हैं" अलापका ४समूह कंदुक और अहिगतिसे चलकर चढता है, उतरता है अर्थात् गेंद की गति से आरोह, स्थिति और अवरोह, तथा अहि-गति से आरोह, स्थिति और अवरोह करती है; तहां ५चर्म से मढे हुए (मृदंग आदि) वाद्य विस्तृत होकर तांत के वाद्य (सारंगी आदि) वदित हुए जिस ६ मदन (कामदेव) सम्बन्धी कार्यों से राजा का मन प्रसन्न हुआ और ७ विषम सायक(कामदेव)ने नृत्य और गान रूपी अपने निवास के स्थानों में बास किया ॥ ६२ ॥ वहां पर उस नायिका ने अलापों के ८ समूह ९रुद्र ताल से उस राग को फैलाया "रुद्र ताल का यह लक्षण है कि जिसमें छठा ताल समे पर होवै और आगे के पांच ताल विषम होवैं जिनके आगे के पांच स्थान शून्य होवैं फिर पांच ताल विषम होवैं इस क्रम से ग्यारह ताल होवैं उसको रुद्रताल कहते हैं" वह १०निर्दोष शब्दवाला और सन्तोष के साथ पोषण किया हुआ मालकोश नामक राग बढा "मालकोश राग की ऋतु शिशिर है और विवाह भी शिशिर ऋतुमें ही हुआ इसकारण मालकोश राग का ही वर्णन कियाहै" भुजंग की स्त्री [नागिनी] जावै जैसे जाकर, घुमाकर ११ ऊपर छाकर ठहराया

पिकारवा पे५ टारि उच्चरयो छ६ में अचभयो ॥ ६३ ॥
वढाइ मंजु मुच्छनां मिलाप माप विस्थरयो ॥
अधीन ग्राम तीन३ पीन इक्क१ इक्क१ उद्धरयो ॥
झनकि जत्र तत्र गोन झारि कोन झमकैं ॥
अलीन आवलीन लीन मीनकेतु उप्पटैं ॥६४॥
स१ रे२ ग३ मे४ध५।६ने६।७निवेस छक्क६ छक्क संचरयो ॥
पकार५ दीन भो प्रखीन पंतिहीन ज्यों परयो ॥
स्वरच्छटाऽनुलोम१ व्है विलोम२ तान सकरी ॥
भिदा अपोह सोहनी समस्त मोहनी भरी ॥ ६५ ॥
स्वलोकधाँ दिपात छान जात राग श्रेणिका ॥

कोयल के समान शब्द करनेवाली उस वेश्या ने १ पंचम स्वर को टाल [छोड़] कर बाकी के छः स्वरों में उच्चारण किया [मालकोश राग छः स्वरोंवाला ही है] यह अचंभा [आश्चर्य] है क्योंकि "कोकिलो रौति पंचमम्" कोयल पंचम स्वर में बोलती है तो पिकारवा अर्थात् पिकके समान आरव (शब्द)वाली पंचम स्वरको छोडकर गाई यही आश्चर्य है और मालकोश राग में पंचम स्वर नहीं है ॥६३॥ २ सुन्दर मूर्छना मिलाकर उनके मिलाप से राग के मापको फैलाया, एक एक स्वर के साथ तीन तीन ग्राम हैं सो निकाले और ३ कोण (नजराव) से तारों को झजटे यह सखियों की ४ पंक्ति में अन्तर्गत होकर ५ कामदेव बढ़ा ॥६४॥ संगीत शास्त्र में स षड्ज, रे ऋषभ, ग गांधार, मे मध्यम, प पञ्चम, ध धैवत, नी निषाद, ये सात ही स्वरों की संज्ञा है जिन में पञ्चम को छोडकर बाकी के छहों रागों का छठे राग [मालकोश] में प्रवेश करके चला, यह ६ पञ्चम स्वर दीन और अत्यन्त क्षीन होकर पंक्ति बाहर होवे तैसे पड़ा रहा और स्वरकी शोभा अनुलोम और विलोम तानों से बढ़ी ७ अपोहनी नाम से शोभा देनेवाली अथवा अपोहनी आदि भेदों से शोभा देनेवाली सबको उस मोहनी (नायिका) ने भरदी ॥ ६५ ॥ रागों की पंक्ति है सो ८ अपने लोक [गन्धर्व लोक] की ओर शोभा देती जाती है और तीनों ग्रामों की रेख तथा मंद्र, मध्य, तार, इन तीनों स्वर भेद की रेख

त्रिक३ प्ररोह१ रेल तीन३ मेलज्यौं त्रि३ बेणिका ॥
घुरंत पाय घुम्मरी घमंकि घोर२ घंटिका ॥
उपंग१ चंग२ के बजैं मृदंग३ अंग अंटिका ॥ ६६ ॥
तथुंग थुंग तत्त थेइ थेइ लेइ तालपैं ॥
क्रमैं मतानु चुक्कि मान पैं बिधान कालपैं ॥
बनाव हाव भावमैं रनंकि हत्थ बंगरी ॥
किधौं पिकादि चंप झंप रोरे सोरकी करी ॥६७॥
तती मुखेंदुतैं कढैं सती सिंगार तारसी ॥
ढरी बिनिद्र कंजतैं मनौं मरंद ढारसी ॥
पलट्टि अंग के झुकैं लचक्क लंकपैं परैं ॥
उरोज भार निट्ठि जो बली त्रि३बंध उद्धरैं ॥६८॥
क्रमैं अधोदुकूल फेर घुम्म घेर केणिका ॥
अपांग गोल लोल ज्यौं बिछोह टोल एणिका ॥
उरोज अग्रचार हार इंदछंद उच्छटैं ॥

त्रिवेणी के मेल के समान १ अंकुर [खड़ी] हुई २ घूघुरों का शब्द ३ विशेष ४ नफ्ली [नजराष] अर्थात् वीणा आदि वाद्य वजाने की वस्तु॥ ६६ ॥ ५ ये सब शब्द नृत्य के अनुकरण के हैं ६ राग के मत के साथ चलती है ७ पगों को उचित प्रमाणसे नहीं चूककर समय पर, हावभाव के बनाव में हाथ की वंगड़ी [भूषण विशेष] बजती है सो मानों कोयल आदि पक्षियों ने ८ चम्पे के वृक्ष की शाखा से, शब्द करने की ९ केलि [क्रीड़ा] की है ॥ ६७ ॥ १० मुख रूपी चन्द्रमा से स्वरों की पंक्ति ११श्रेष्ठ शृंगार रसके तार जैसी निकलती है सो मानों १२प्रफुल्लित कमल पर मकरन्द [पुष्परस] की ढाली जैसी है पलटने कई अंग झुककर कमर पर लचक पड़ती है१४कुचोंका भार कठिनाई से पेटकी त्रिवलि[तीनसल]उठाती है ॥६८॥१५चलनेसे लँहँगेका बिस्तार घेर[वर्तुल अर्थात् गोलाई] घूमर में १६छोटे डेरे के आकार होता है और उस वेश्याके १७नेत्रों के कोये और गोले टोले से बिछुड़ी हुई १८हिरणी के सदृश हैं, कुचों के आगे चलनेवाला १९ इन्द्रछन्द नामक हार "जिस हार में१००८ मूँगे होवैं उसका नाम

अगार इक१ थान क्यों न तान सगही घटैं ॥ ६९ ॥
लुठत पिट्ठि केसपास आस रासमैं लगी ॥
पसारि गत्त जानि मत्त केलिपत्त पन्नगी ॥
छुटी अलक अंसपैं लसैं अतीव तच्छटा ॥
रहे कि लुब्भिं कालनाग बाल रागकी रटा ॥ ७० ॥
सु नीर छाँह वक्रव्है रचैं दुर चक्र रगसों ॥
मही रहैं समीप हत्थ इक१ उत्तमंगसों ॥
समीर चक्र नच्चमें लखे समस्त सम्मुही ॥
सु चित्त माधुरी झरैं स्मरेच्छु जत्र व्है सुही ॥ ७१ ॥
जु अंग जास दिट्ठिगो सु देखें अकव्है जुरयो ॥
अलाप आनके उफान पच५ बान अंकुरयो ॥
धुन्यों घुमाइ टोडिका१दि पच५ नारिको धनी ॥
त्रि३ अग उत्तमा१दि सर्ग इक१ लै तेती तनी ॥ ७२ ॥

इन्द्र छन्द है" उछटता है १जिसका घर और स्थान एकही है अर्थात् तानभी गले मे रहती है और हार भी गले में रहता है इस कारण वह हार तान के साथ क्या नहीं चले, अर्थात् तानका वियोग नहीं सहने के कारण साथ ही अटन करता है ॥ ६९ ॥ २ चोटी ३ नृत्य की आशा में लगी हुई पीठ पर लोटती है सो मानों, मस्त हुई सर्पिणीने ४ अपने शरीर को केलके पत्ते पर फैलायाहै ५ कंधे पर अलक छुटी हुई दीखती है ६ जिसकी अत्यन्त शोभा दीखती है सो मानों उस स्त्री के रागकी ध्वनि पर काले सर्प ७ लुभारहे हैं ॥ ७० ॥ श्रेष्ठ नीर में जैसी छाया टेढी दीखै तैसी वक्र होकर रग[रस]पूर्वक दुचक्र नाच नचती है जिस में ८ मस्तक से भूमि एक हाथ रहजाती है ९ पवन के चक्र के जैसी अर्थात् गोलाकर नाच में इतनी शीघ्र फिरती है कि सबको सन्मुख ही दीखती है १० उस कामदेव के यत्न (चरखी) म चित्त रूपी नशा मिठास को टपकाता है ॥७१॥ जो अग जिसको दीख गया वह उसके आगे ११अटल होगया अर्थात् उसको वही दीखता रहा और अन्य अलापों के उफान से कामदेव उदय हुआ, टोडी, खंभावती, गौरी, गुनकली और ककुभ, इनके पति मालकोशको धुना, तहां उत्तमा आदि तीनों अगोंमें सबही एक१२पंक्ति

धरैं प्रतीति यौं न तान कोन थानतैं धपी ॥
करैं पिधानैं गान जानि वानि पानि कच्छपी ॥
निखंग१ चाप२ आदि हेर्ति रूप मंडती नचैं ॥
बिलोकिबे त्रिलोक ओक नैन कोनके बचैं ॥ ७३ ॥
स्वरावली समुद्रमैं तिरैं निसंक सुंदरी ॥
तरंग तान रंग बीण तुंबिका धरी तरी ॥
जु मंद१मैं सु मध्य२मैं जु मध्य२मैं सु तार३मैं ॥
भजे तथापि भिन्नदेत सारथैं सु मारमैं ॥ ७४ ॥
तंजैं कुझैं कुझैं कुतत्थ धित्थ धित्थ तंडई॥
छटा अनुद्रुतादि१तैं प्लुत५ प्रमानलौं छई ॥
ग्रह१ प्रकास अंस२ न्यास३ व्है विलास गानमैं ॥
तुलैं न इक्क इक्कसौं असंख्य कूट तानमैं ॥ ७५ ॥

तथादी ॥ ७२ ॥ यह प्रतीत नहीं हुई कि तान किस स्थान में १ चली है वह वेश्याकी वाणी है सो मानों २ छिपा हुआ गान ३ सरस्वती की बीणा कर रही है ४ शस्त्रों का रूप रचती हुई अर्थात् इनको चरणों के न्यास से रचती हुई नचती है जिसको देखने के लिये ५ तीनों लोक के स्थानों में किसके नेत्र बचैं ॥ ७३ ॥ ६ स्वरों की पंक्ति रूपी समुद्र में वह सुन्दरी रस की तानें रूपी तरंगों में वीणा के तुंबों रूपी ७ नाव करके निशंक तिरती है जो रस मंद्र स्वर में है वही मध्य स्वर में है, और जो रस मध्य स्वर में है वही तार (उच्च) स्वर में है, तोभी तार (वीणा आदि के तार) में और ८कामदेव में आनन्द भिन्न भिन्न देता है ॥ ७४ ॥ १० ये सब शब्द नृत्यके अनुकरण के हैं ११ अनुद्रुत से लेकर प्लुत पर्यन्त शोभा छागई अर्थात् अनुद्रुत, द्रुत, द-विराम, लघु, ल-विराम, गुरु और प्लुत, ये सातही तालकी कलाके अंग हैं, जिन सब में शोभा छागई १२ जिस स्वरसे राग उठावे उसको ग्रह कहते हैं और स्वर में रागको स्थिर करै उसको अंश कहते हैं तैसे ही जिस स्वर में राग की समाप्ति करै उसको न्यास कहते हैं, जिनका प्रकाश और विलास गानेमें हुआ और १३कूटतान(मूर्छना आदि के क्रम विना तान होवे उसको कूटतान कहते हैं) असंख्य हैं जो एक एक से नहीं मिलती ॥ ७५ ॥ उसकी क्षीण कमर का

बितस्ति दोइ२ मध्य लीन मध्य खीन यों बन्यों ॥
तुटैं घुटैं रुटैं मुटैं छुटैं प्रमाद यों तन्यों ॥
क्रम प्रमान ध्वान यों अनोंट१ फुल्लरी२ करैं ॥
उदार मार चट्टसार भा प्रकार उद्धरैं ॥ ७६ ॥
दुकूल ओट भास्य आस्य लास्य यों कढे१ दुरैं२ ॥
विछद्द कंद फंद ज्यों अमद चंद बिप्फुरैं ॥
कढेपरैं उरोज पीन चीन अंगिका कसे ॥
फमैं सरोज पत्त रोक मत्त कोक ज्यों फसे ॥ ७७ ॥
पलट्टि ताल तालमें अनेक कालमैं प्रमा ॥
वढैं१ घटैं२ घटैं१ वढैं२ तुलैं तुलां तुलैं समा ॥
श्रुती दुवीस२२ तीव्रिका१दि छोहिनी२१ वैसानलों ॥
मिली स१।१मै म४।२मैं प५।३मैं तिचपारि४चपारि४मानलों ॥७८॥
रि३।१मै ध६।२मैं त्रि३रु स्वि३दुै२रु दे२ग३।१मैं नि७।२मैं रहैं॥

नृत्य दो (वित, वितस्त) के २ भीतर बनगया ३ यह कमर टूटती है इधर उधर घुटती [घूमती] है, रुकती है, मुड़ती है, परन्तु उसमें उस नायिका किसीको कोई प्रमाद (घमंड) नहीं रहा इसप्रकार यह राग अथवा नृत्य फैला ४ उसके नाचने के क्रम के प्रमाण से अणघट और फोलरी (भूषण विशेष) शब्द करते हैं सो ५ उदार कामदेव की पाठशाला की कान्ति के प्रकार निकलते हैं॥७६॥ वस्त्र की आड़से ६ उसके मुखकी कान्ति ७ नृत्यमें निकलती और छिपती है सो मानों ८ बादलों के फंदके आधीन होकर मदता रहित चन्द्रमा कढ़ता छिपता है, उस नायिका के पुष्ट कुच ९ चीनी कंचुकी में कसे हुए निकल पड़ते हैं सो मानों कमल के पत्रकी रोक से १० मस्त दो चकवे फसे हैं ॥ ७७ ॥ ताल ताल के साथ पलट कर अनेक समय में ११ उस रागका निश्चय ज्ञान चढ़ने उतरने से बढ़ता और घटता तथा घटता और बढ़ता है परन्तु लय रूपी १२ तराजू में बराबर तुलता है १३ तीव्रका को आदि लेकर १४ छोहनी के अन्त तक बाईस श्रुतियें हैं, सो षड्ज में, मध्यम में, पंचम में, १५ ते(वे) श्रुतिए, चार चार के प्रमाण से मिली (रहती) हैं ॥ ७८ ॥ वे (श्रुतिया) ऋषभ में,, धैवत में क्रम से

बिचारि जो पं५ टारि नारि तास च्यारि४ क्यों वहैं ॥
रु जाति पंच५दीप्तिका१दि१अंत५मध्यमा५ रजैं ॥
श्रुतित्व जाति२ संग प्रान राग अंग उप्पजैं ॥ ७९ ॥
चलाहि१ उज्वलाहि२द्वैरहि अल कोशिकोरुचिता ॥
समाइदेत भिन्न भिन्न रुद्रताल सम्मिता ॥
समस्त चित्त१ ग्यान२ कान३ नैन४ बैन५ संग्रहे ॥
रुके निनाद ब्रह्ममैं प्रलै जड़त्व लैरहे ॥ ८० ॥
अलंक्रिया१ कपाल२ पास३ घामका४ दि अंगजे ॥
समाप्ति५ सूड६ मेल७ बर्ण८ भाग९ रागसंगजे ॥
स्वरूप१ वै२ रु काल३ नाम४ लिंग जाति५ सूचनी ॥
मुनीन धीनके अधीन भिन्न भिन्न जोभनी ॥ ८१ ॥
सुतो बिचार रागलार बुद्धिफार साध्यहै ॥
बिगूढ ऊढ बादरूढ मूढ उक्ति बाध्यहै ॥

तीन तीन और गान्धार में, निषाद में, दो दो रहती हैं सो विचार पूर्व
१ पंचम को टालकर वह वेश्या पंचम की चार श्रुतियों को कैसे धारण क
अर्थात् पंचम की श्रुतियों को छोडदी और राग की पांच जातियां हैं जिन
आदिमें दीप्तिका और अन्त में मध्यमा शोभायमान है, श्रुति और जा
ये दोनों राग के प्राण और अंग हैं सो यहां उत्पन्न होती हैं ॥ ७९ ॥ पां
जातियों में यहां चला और उज्वला ये दोनों २ मालकोशकी उचित स्थि
हैं जिनमें सब ग्यारह तालों को भिन्न भिन्न समा देती हैं, सब के चित्त
ज्ञान कान नेत्र और वचन रोक लिये सो ४ शब्द रूपी ब्रह्म में रुककर प्रल
के समान जड़पना लेरहे ॥ ८० ॥ ५ अलंक्रिया को आदि लेकर भाग पर्यं
राग के अंग हैं ६ स्वरूप से लेकर लिंग पर्यन्त रागकी जाति है, इनकी सूच
मुनियों की बुद्धि के आधीन भिन्न भिन्न कही है ॥ ८१ ॥ वह विचार तो र
के साथ ७ बुद्धि के फैलाव से साध्य है अथवा बुद्धि के समूहवाले (विद्वा
से साध्य है, विशेष गुप्त [छिपेहुए] को धारण करनेवाले और ८ यथार्थ बं
की इच्छावाले वचनोंपर चढेहुओं(विद्वानों)से मूर्खोंकी उक्तिका बोध होता

सुरिंद बिंद संक्रम्यो नरिंद मानं नेरमैं ॥
वहे अपार तोप वार फार फेरफेरमैं ॥८२॥
चलैं दुरपास व्है मकास चंद्रभास१ भैंचपा२॥
छई प्रभा सु द्यौसलौं दई छिपाइ सो छपा ॥
प्रयास दोर ओरओर निष्क१ द्रम्म२ उच्चरैं ॥
किते विहाल व्है निहाल माल जाल चैं करैं ॥ ८३ ॥
वदैं निहारि दंग नारि लोंन वारि विंदपैं ॥
अहो निकाम कोटि काम राम२०॥४छोनिइंदपैं ॥
अहो सु धन्य दुल्लही लहो विसिष्ट इष्टकौं ॥
दहो अनिष्ट रिष्ट त्यों वहो अभीष्ट विष्टकौं ॥ ८४ ॥
नरेस यों सुवेस रूप देत रीझ नृत्यपैं ॥
प्रधान मुख्य द्वारलों करयो विवाह कृत्यपैं ॥
कैसा प्रहार रूप द्वार रीति लौकिकी करी॥
उहां अपार फेर हेम१ तार२बुद्धि उच्छरी ॥ ८५ ॥

(दोहा)

सुपहु विंद मारीचें सन, कारि लौकिक मत कैंज्ज।
इंभ सन तोरन उत्तरिय, श्रुतिमंत साधन सज्ज ॥ ८६ ॥

इस प्रकार इन्द्र के समान दुल्हा रामसिंह २ महाराजा मानसिंह के नगर (जोधपुर) में १ गया तहां तोपों के ४ समूह के ३ अपार फैर चले ॥ ८२ ॥ दोनों ओर प्रकाश होकर चन्द्रज्योति और भैंचपे आदि अग्निक्रीड़ा (आतश बाजी) चलने से दिन के समान ५ कान्ति छागई और उस ६ रात्रि को छिपादी ७ मोहरें और रुपये उछलने से चारों ओर परिश्रम से दौड़ दौड़ कर कितने ही विहाल होते हैं और कितने ही निहाल होकर धन के समूह का ८ संचय करते हैं ॥ ८३ ॥ ९ पृथ्वी के इन्द्र रामसिंह पर १० दुलहन धन्य है सो विशेष वांछित फल को लो ११ बिना इच्छावाले दुःखोंको १२ इच्छानुसार भाग्य को धारण करो ॥ ८४ ॥ १३ तोरण पर चाबुक मारना आदि १४ समूह १५ चांदी ॥ ८५ ॥ १६ सवारी के हाथी से १७ कार्य १८ हाथी से १९ वेद का मत ॥ ८६ ॥

॥ पद्धतिः ॥

इम दुल्लह तोरन मुख्य आइ, बंदन१ नीराजन क्रम बनाइ ॥
मंडप थल जावनहुव समोद,बिष्टर२रु पाद्य३वनि बिधि बिनोद८७ ★
बिष्टर४रु अर्घ५आँचवन६बहोरि, जहँ मधुपर्क७रु गोदान८जोरि ॥
कन्याऽऽगम ९ व्यवहित बसन १० काम, वर१ वरनि २ परस्पर
तिलक११ ताम ॥ ८८ ॥

बलि प्रवर१ गोत्र२ आख्या१२ बिधान, बर पूजन१३ भूषन१ वस्त्र
२ दान१४ ॥

कन्या करग्राहन समय किन्न १५, दै कनक १६ दक्खिना १७
तदनु दिन्न ॥ ८९ ॥

क्रम गौ प्रदान१८तांबूल कर्म१९, पुनि दंपति२सयमेलन२० सधर्म
बरमाला२१ अंचल गंठि२२बंध, खिन तदनु धरन दकुंभ खंध२३
बर१ बरनि१ मिथो दरसन२४ बिधेय, पुनि अग्नि परिक्रम२५
सद्धि श्रेय ॥

पावकें सन चँमां३ऽऽसन प्रविष्ट२६, आचार्य बरन२७ कुंसकंडि
२८ इष्ट ॥ ९१ ॥

क्रम बिहित होम तहँ चउ४प्रकार, धुर१तत्थ राष्ट्रभृत१।३१नामधार

१ आरती २ आसन और पैर धोना ॥ ८७ ॥ ३ आचमन ४ दधि मधु घृत मिली हुई वस्तु का निवेदन करना ५गोदान "यहां दान शब्द को दान के अर्थ में ग्रन्थकर्ता ने विचार पूर्वक लिखा है परन्तु गोशब्द के योग में यह प्रयोग करना दोष है" ६ वस्त्रों से छिपी हुई कन्या का आना ७ दुलहे दुलहिन (बींद बिंदनी) का ८ लहां पर परस्पर तिलक करना ॥ ८८ ॥ ९ हथलेवा जोड़ना १० जिस पीछे सुवर्ण की दक्षिणा दी॥८९॥ ११ फिर गोदान करके बीड़ी चबाना १२ स्त्री पुरुष का हाथ मिलाना १३ वस्त्र गंठ (गंठजोड़ा) करना १४ जल का घड़ा ॥ ९० ॥ १५ परस्पर दर्शन कराना १६ अग्नि से १७पश्चिम दिशा के आसन पर बैठना १८ होम के प्रारम्भ की विधी ॥ ९१ ॥ ८ ये बिवाह

सुजया२।३२ रु मखीता२।३३ नाम सत्थ, तिम लाजहैवन ४।३४
हुव चउम४ तत्थ ॥ ९२ ॥
वहुरिहु करग्राहन३५ बिधि विलास, दुलही पय दक्खिन१ उंपल
२ न्यास३६ ॥
वनि गाथा गावन३७तहँ विधेय, करि अग्नि परिक्रम३८पुनिहु प्रेय
सालक संतुष्टि३९ रु होम शिष्ट४०, पुनि सप्त७पदी बिधि४१
क्रम प्रदिष्ट ॥
इह कन्या निविसन बाम३अग४२, अभिसेचन घटजल करि ४३
अभग ॥ ९४ ॥
क्रम हृदयाऽऽलभन४४ रु तिलक कर्म४५, चहि बैठन वृखमंव
अरुन चर्म्म४६ ॥
किय तिम ध्रुवदरसन४७ रत्ति काल, वलि अप्पिय गुरु हित
बसुं४८ विसाल ॥ ९५ ॥
इत्यादि वेदविधि भाजि असेस, नववय विशिष्ट व्याहिय नरेस ॥
दे इष्ट नेग नेगिन उदार, फैलाइ दयो जस दिसन फार ॥९६॥
॥ दोहा ॥
जोरी लखि अवरोध जन, कहन लगे बलि कज्ज ॥
रुचि दपति२ पर काम१ रति२, वारैं कोटिन अज्ज ॥९७॥
निस वित्तत रहि नालकी, गत प्रच्छद पटगूढ ॥
पट गृंह जन्प निवास प्रति, आये दपति२ ऊँढ ॥ ९८ ॥

के समय होनेवाले चारों होमों के नाम हैं १ संस्कार किये हुए चावलों का होम ॥ ९२ ॥ १ दुलही के दहिमे पैर नीचे पत्थर रखना ॥ ९३ ॥ १ यहां कन्या का वर के वाम ओर बैठना ॥ ९४ ॥ ४ हृदय का स्पर्श करना ५ बैलके लाल रंग के चर्म पर बैठना ६ रात्रि के समय ७ धन ॥९५॥ ८ समूह ॥९९॥ ९ जनाने के लोग ॥ ९७ ॥ १० नरयान विशेष ११ वस्त्र से ढकीहुई १२ जानके डेरों में १३ व्याहे हुए ॥ ९८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम सिंहचरित्रे रामसिंहप्रथमविवाहवर्णनं पञ्चमो मयूखः ॥५॥

आदितः सप्तषष्ट्युत्तरत्रिशततमो मयूखः ॥३६७॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

हेम१ रजत२ मय बुट्ठि हुव, इम जन्यालय आत ॥
धन्य धन्य जय जय ध्वनित, खुलि ठाँठाँ हुव ख्यात ॥१॥
बैदिक१ लौकिक२ सद्धि बिधि, बहि सम्मति निर्वाद ॥
पिता जनन दुलही सु पुनि, पधराई प्रासाद ॥२॥
संग सखि१न दासि२न संतन, नंद१ जीव२ छम३ नद्द ॥
भो तिम सहचरि भूखनन, सिंजित कलकल सद्द ॥ ३ ॥
पधराई दुलही पिहित, इमि जो जनक अँगार ॥
पति दासी जन बिबिध पटु, लगे सतन गन लार ॥ ४ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत डेरन खिंन इक्खि अतुल आरंभि त्याग अब ॥
चतुर मुकुट कवि चंड१ जनक कविके बुलाइ जब ॥
बंदी रतन१ बहोरि पुच्छि संभव दोउ२न पहँ ॥
कहिय त्याग व्यय कतिक कतिक परिमान कविन कहँ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के अष्टमराशि में रामसिंहके चरित्र में राजा रामसिंहका प्रथम विवाह होने के वर्णन का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ ॥५॥ और आदि से तीनसौ सड़सठ ३६७ मयूख हुए ॥

१जानके डेरे आते ही सोने चांदी की वर्षा हुई २ ठाम ठाम प्रसिद्ध हुआ ॥१॥ ३ बाद रहित ४ पिता के वंशवालों ने दुलही को महलों में पधराई ॥ २ ॥ ५ सैकड़ों ६ जीवको आनन्द देनेवाला ७ समर्थ शब्द हुआ ८ साथ जानेवाली स्त्रियों के भूषणों के बाजे का ९ कोलाहल शब्द हुआ ॥३॥ १० पिता के घर में ॥ ४ ॥ ११समय देख कर १२ ग्रन्थकर्ता के पिता चंडीदान को १३त्यागका खरच

नृप मान कृपापात्रहु कतिक मुख्य सुकवि इह मानियत ॥
करियत तदीय सतकार किम जिम अच्छुत जस जानियत५

॥ दोहा ॥

कवि अक्खिय चउ४ मुख्य कवि, अतिसय प्रीति अमत्र ॥
मानैं जे नृप मानके, अतुलित वैभव अत्र ॥६॥

॥ षट्पात् ॥

प्रथम प्रतोलीपात्र अवनिपति वृत्ति उपासक ॥
नाम जास अवनाड१ सु पुर मुंध्याहर१ सासक ॥
कथित जाति रोहडिक पट्ट पचायुत५०००० पावत ॥
इहिं५००००प्रमान पति अधिप सुभट वहु तंत्र सुहावत ॥
इम लक्ख१०००००अधिप चारन यह रु छिदतजेंति नृप उदय छत॥
आउवा मरयो जवतैं अंखय वीसरुसत१२० सासक वजत।७।
वलि द्वितिय२ कवि नर्क२ धीर सव गुनन धुरधर ॥
अयुतक१०००० सासन इम बिदित छक्षगिरा गनिका बर ॥
वानि सु न्याय१ व्याकरन२ सर३।१ रु साहित्य१ समुद्र२हि॥

कितना है और कवियोंका प्रमाण कितना है १और राजा मानसिंहके कृपापात्र कितने हैं २उनका सत्कार कैसे करना चाहिये जिससे अछूता यश जानाजावै [इस छप्पय में एक चरण अधिक है सो मूल से बनाया जाना पाया जाता है और यह मूल भी अधिक मद्य पानके कारण जानी जाती है] ॥५॥ ३ अत्यन्त प्रीतिपात्र ॥६॥४पोलपाल "गोपुर हि प्रतोल्यां तु नगरद्वारयोरपीति महीप ॥" महीप कोश में नगर के द्वार का नाम प्रतोली लिखा है जिससे ग्रन्थकर्ता ने यहां सामान्य दृष्टि से द्वार मात्र का ग्रहण किया है ५ राजा की वृत्ति की उपासना करनेवाला ६ मूंध्याड़ नामक पुरका पति ७ रोहड़िया शाखा का धारण ८ स्वामी (राजा) के उमरावों के आधीन ९ राजा उदयसिंह के समय आउवा पुर में चारणों ने धरणा दिया तब १० उसमें अखयसिंह मरा जब से रोहड़िया बारहठों को चारणों की एक सौ बीस शाखा के ११ पति कहते हैं ॥ ७ ॥ १२ पुनि १३ बांकीदास १४ छ. भाषा रूपी गणिकाओं का पति

जो यह*आसिक जाति वत्त कवि भूत ख्याति वहि ॥
†जगतेस१‡मान२किय मेल जब बुध यह हुव सब जग विदित॥
कछवाह बिप्र भाखा सुकवि जो पदमाकर किन्न जित॥८॥
महादान३ मद्दू तृतीय३ जो भूप कृपाजुत ॥
जुरत मान१ जगतेस२ नस्यौं कमध्वज बिद्रुत ॥
रिपु हुव सब रट्ठोर काव्य तिनको मद्दू किय ॥
[३]सूचनबिनु निज [४]सदन निखिल [५]मारव भट निंदिय ॥
सो कवि बुलाइ मेवार रान तिहिं [६]उत्थान१ [७]नृजान२ तक ॥
दियमानअयुत१००००आयकद्रविनसासनरोढाबास३सक॥९॥
भीम[९] जोधपुर भूप [१०]आजि दुजोर२ आरंभिय॥
जुरत मान जालोर दइय [११]अनसन बिपत्ति दिय ॥
सो चारन बनसूर [१२]जुगत१ नामक आश्रित जब ॥
अप्पतहुव तँहँ आनि [१३]स्वतियँ भूखन समेत सब ॥
पहु मान ताहि लहि जोधपुर जहँ उत्थान१ नृजान२ जुत ॥
दिय तिथि सहस्र१५०००सासन दिपत प्रथित पाडलाऊ[१५]सुत॥१०॥

॥ दोहा ॥

इन[१६]मैं [१७]आदि१ सु आदितैं, सूचित बिभव समत्थ ॥

---

* आशिया शाखा का चारण † जयपुर के राजा जगतसिंह और ‡ जोधपुर के राजा मानसिंह मिले थे तब १ पदमाकर को विजय किया ॥ ८ ॥ जगतसिंह और मानसिंह जुड़े जब २ राठोड़ भाग गया ३ मानसिंह की विना ही सूचना किये ४ अपने घर पर काव्य बनाया और सब ५ मारवाड़ के उमरावों की निन्दा की ६ ताजीम ७ पालखी ८ धनकी आमदनी वाला ॥ ९ ॥ ९ भीमसिंह १० युद्ध ११ आपने मानसिंह को निराहार रहनेकी विपत्ति दी तब बणसूर शाखा के १२ जुगता नामक चारण ने १३ अपनी स्त्री के भूषण सहित सब धन मानसिंह को लाकर दिया १५ विशेष स्तुतियोग्य ॥ १० ॥ १५ मूंधियाड़ का पति तो पहिले से ही कहेहुए वैभव सहित है और बाकी के

भाखे हेतुन करि भये, ए त्रय३ प्रविदित अत्थ ॥ ११ ॥
अभिउत्थान१ नृजान२ इभ३, संजुत त्रय३हि सुवाद ॥
वढि इनमें दुव२ वंक१नें, पाये लक्ख१००००० प्रसाद ॥१२॥
पट्टपातु-इनच्यारि४नदितउचितग्राम१इक१इक१इक१इक१गज२॥
पंचमहँस५००० प्रत्येक विहित वितरन मुद्रा३ब्रज ॥
खास विभूखन४ खिलत५ सुल्वपत्रर्क६ लिपि सासन ॥
पठवहु च्यारि४न पास स्वल्प अक्खि रु पट्टता सन ॥
ए च्यारि४ मुख्य तिनके इहाँ क्रम जानहु यह मुख्य१करि॥
वलि सेस कृपाभाजन वहुत पच्छहु मध्य२ कनिष्ठ३परि १३
पट१हय२कुंडल३कटक४पंचसत५००दम्म मध्य२ प्रति ॥
सेप्ति१कटक२पट३दुसत२००गनित मुद्रा४कनिष्ठ३गति ॥
इम नृप सेवी अत्र सुकवि द्वैसत२००पावहिं सव ॥
सोतो अधिक न सुनहु अधिक वैसु व्यय निदान अव ॥
सोरठ१कच्छ२गुजर३सहित मरु४जंगल५ए पंच५ मंति ॥
कुल खानिदेस पौरानिकन इम अयुतन अेकत्र प्रति ॥१४॥
दुलह हड्ड६१ बुन्दीस इहाँ व्याहन वलि आवत ॥
लक्खन उप्पर लगि मिले कुल कविन नमावत ॥

तीनों १ ऊपर कहे हुए कारणों से यहाँ प्रसिद्ध हुए हैं ॥ ११ ॥ २ ताजीम ३ अष्ट पचना से ४ पाकीदास ने ५ बालप्रसाद ॥ १२ ॥ ६ दान के रुपयों का ७ समूह ८ ताम्र पत्र पर लिखे हुए वक्फ ग्राम ९ इनको न्यून कहकर अर्थात् आप के योग्य नहीं है ऐसा कहकर चतुराई से भेजो १० फिर बाकी के कृपापात्र भी बहुत हैं ॥ १३ ॥ मध्य श्रेणी के चारणों को वस्त्र, घोड़ा, मोती, कड़े और पांच सौ रुपये और कनिष्ठ श्रेणी के चारणों को ११ घोड़ा, कड़ा, वस्त्र (सरपाव) और दोसौ रुपये, इस प्रकार प्रति मनुष्य देना चाहिये १२ अधिक धन के खरच का कारण सुनो १३ ऊपर कहे पांच देश चारणों के कुल की खान है इस कारण हजारों इकट्ठे हुए हैं ॥ १४ ॥

राजाढिग नहिँ रहत तदपि वैभव सम्रृद्धिनर[1] ॥
सहँसन[2] कर सासनिक सतन मित इत अग्रेसर ॥
उपबसथ[3] नाम मंथानें[4]१इक तीन अयुत३००००कर दम्म तहँ॥
अैसे अनेक सासन अतुल जनपद[5] पंच५ प्रपंच जहँ ॥१५॥
बंदी[6]३।२।१पूरब१ बंस सूतँ१।२संतति पच्छिम३।५ सब ॥
अैसैं पृथु अवतार तिनहि दिय देस बंटि तब ॥
यातैं भट्ट२।१ न अधिक तदपि चारन१।२अतिसयतम[8] ॥
तिहिं निदान[9] करि त्याग कठिन भासत बंटन क्रम ॥
पहु सत्रुसल्ल१।९४।१उदयादिपुर परे अग्ग कछु वाद पर
रूप्पय छलक्ख६०००००बंटि रु रसा अद्भुत जस किन्नौं अमर॥१६॥
तितो[10] मुलक१ धन२ तांम अब न अप्पन अँगार[11] इम ॥
श्रद्धा१ छिति[12]२अनुसार करहि क्रम तो सु बनैं किम ॥
धीर सचिव धात्रेय जानि मत कविन एह जब ॥
कह्यो कछु न भय करहु सुकवि[13] बढि करहु तुष्ट सब ॥
बुंदिय१ कुबेर पुरतैं बिथँरि[14] त्वरित जोधपुर२ द्वार तक ॥
सहपंति जोरि रुप्पय सकटैं[15] सरनि[16] बंधि दैह्यौं सड़क ॥१७॥
सहँसपंच ५०००सिरूपाव१सहँस१०००हय२दुरद३सत्तसय७०० ॥
दुलह[17]सँता१।९४।१अग्ग दिय रानघरँ[18] लक्खछ६०००००रुप्पय४॥

१अत्यन्त वैभववाले हैं २ सालाना हजारों रुपयों के हासिल के उदकग्रामवाले यहां सैकड़ों हैं ४मथाणिया नामक ३ग्राम ५ऊपर कहे पांचों देशों में ऐसे तुला रहित अनेक सांसण हैं ॥१५॥६भाट लोगों का वंश पूरव देश में और ७ चारणों का वंश पश्चिम में है ८ चारण अत्यन्त अधिक हैं ९ इस कारण त्याग का देना कठिन दीखता है ॥ १६ ॥ १० तहां उतना देश और धन ११ अपने घर में अब नहीं दीखता १२ श्रद्धा भूमि के अनुसार है १३ सब श्रेष्ट कवियों को बढकर प्रसन्न करो १४कुबेर के पुर रूपी बुंदी से फैलाकर १५रुपयों के छकड़ों की पंक्ति जोड़कर १६ मार्ग में ॥१७॥ १७ दुलह शत्रुशालने आगे १८ राना के

तब ओरहु पहु तत्त पत्त बनि बिंद उदैपुर ॥
पहुँचे तोरन पिहित धुत्त छलसों चढि सिंधुर ॥
छम चढि तुरग जानि सु छलहु गम्य बलजं इहेस६१ गय॥
अकरुयो सु बार बारन उचित हेरि चारन तहँ निंदि यह२॥१८॥
कुंजर थित रचि कपट इतर दुल्लह नृप आवन१ ॥
दूखन बिनु हरिदास विफल तस सत्व बनावन२ ॥
हेरि सता१९४१ दुव२ हेतु रोकि रोधक हठ रानौ ॥
तिम वढि वटिय त्याग खुल्लि अलकेस खजाना ॥
तैसो इहाँ न सभथ तुलत बनिहु जाइ तो टेक बस ॥
प्रभुराम२०१४आन देहौं पलटि सत्रुसँल्ल१९४१संचित सुजस १९
सचिव बैन इम सुनत कविन सादर सराइ करि ॥
नृप भाऊ१९५१छत निपर्त घने नेगन चिंतन धरि ॥
थैलिन बिच कर थप्पि पसिय निज निज भरि रुप्पय ॥
इक१ इक१ महुर उपेत लये दोउ२न जन्यालिय१ ॥
इम वीरमुष्ठि नामक यहै दुल्लह कवि२ लहि नेग हुत ॥
क्रम सग त्याग उपहार करि पहिलैं पुर प्रविसे प्रनुत॥२०॥
धारित क्रम अभिधान कथितं गेहद१ आसिक२कुल ॥

घर (उदयपुर) म छिपे थे यहां अन्य राजा भी बिंद बनकर आये थे धूर्त हाथि यों पर चढ़कर १ छाने आये और समर्थ हाथों का पति बादशाह घोड़े पर चढ़कर जानेवाले (राना के) २ द्वार पर गया तब ३ हरिदास नामक चारण ने घोड़े पर चढ़ने की निन्दा करके कहा कि यह द्वार हाथी के उचित है ॥ १८ ॥ ४ हरिदास ने अपना पक्ष बताने के लिये ५अधिक खरच करने से रोकनेवाले राणा के हठ को रोककर ६ कुबेर का ७ बादशाह के सचय कियेहुए यश को पलट कर लाढूंगा ॥ १६ ॥ भाऊ के समय में ८ निश्चय किये हुए बहुत नेगों को घर में याद करके रुपयों की थैली में हाथ रखकर ९ मोहर सहित १० जान के डेरे में वीरमूठ नामक नेग दुल्लह के कवियों ने लिया ११ त्याग की सामग्री १२ विशेष स्तुतियोग्य ॥ २० ॥ १३ ऊपर कहेहुए क्रम से,

सहमहडू३बनसूर४ मिले च्यारि४न हित मंजुल ॥
पंचसहँस५००० प्रत्येक अग्ग रुप्पय१ इक१ इक१ इभ२ ॥
सासनैपत्र३ समेत निखिल रक्खे पद सन्निभ ॥
भूखन४ पटा५दि जे लखि भये राव प्रसन्न सूचित सुजरा ॥
नृप सत्रुसल१९४१४नत्तिय दुलह क्यौँन धरहिं जस ग्रह कलस२१
चित्त सबन हुव चाह धन सु आदान करन ध्रुव ॥
भूप मान दिय बिभव हृदय सोपै चिंतितहुव ॥
लैबे मंगि निलज्ज धनी हेरि सु कर्मध्वजँ ॥
नलये च्यारि४न नटि रु ग्राम१ पट२धन३भूखन४गज५॥
क्रम सोहि मान सेवी कविन लखि ईतर न काहु न लयो॥
तकि गित्त चित्त ललचैं तदपि द्वेहिसत२००न उत्तर दयो२२.
दृढ साहसदानीप निखिलं कवि जदपि निहोरे ॥
ललचि मनन धन लैन जनन तदपि न हेंग जोरे ॥
साहस बस प्रभु सुकवि जतन बहु प्रेरिचुके जव ॥
इन जन्यालय आइ सचिव संबोधि कह्यो सब ॥
नृप मान कृपाभाजन निखिल लचे मनहु त्याग न लहत ॥

रोहड़िया, आशिया, महडू और वनसूर इन चारों कुलों के चार चारणों से सुन्दर हित के साथ मिले १ हाथी २ तांबापत्रों के ३ सदृश सामग्री अपने अपने पदों के सदृश उनके समीप रक्खी ४ इन चारों ने कहा कि यह दुलहा शत्रुशाल का पोता है सो अपने घर पर यश का कलश क्यों नहीं धरै अर्थात् धरना उचित ही है ॥ २१ ॥ ५ धन लेने की चाहना हुई परन्तु ६ राजा मानसिंह ने जो वैभव दिया था उसको सोचा कि ७राठोड़ जैसा स्वामी होने पर दूसरों का दान लेना निर्लज्जता है ८राजा मानसिंह की सेवा करनेवाले अन्य कवियोंने भी किसीने नहीं लिया ॥ २२ ॥ तोभी दृढ दानी (रामसिंह) ने ९ सब कवियों को त्याग लेने के अर्थ बारम्बार निवेदन किया १०परन्तु उन्होंने उनसे नेत्रही नहीं मिलाये ११ जानके डेरे आकर १२ सचिव कृष्णराम (धायभाई) को समझाकर सब कहा

न विरत्त तोहु सबके नयन स्वामि स्वसुर कानिहिं कहत२३

प्रभु आसय मानमति हुनहि साचिव सु जमाइ दिय ॥
मनविनु अक्खिय मान लेहु तदपि न तिननो लिय ॥
प्रभुके सुकविन मंसभ जानि नाइक जंपिय जब ॥
द्वैसत२०० लेहुन देय इहाँ माइक अयुतन अब ॥
इम अक्खि भिन्न पेटगेह इक थिर वहु थमन थंभयो ॥
तहँ वैठि स्वामि स्वकविन अतुल अब वितरनं आरमयो ॥२४॥

सतन स्वीय कवि१ सचिव२लिखन सब दिस पठये लहु ॥
जे वटि वटि वसु८ जाम वनें जामिक लेखन बहु ॥
आवन लग्गे अमित पत्र लिपिकृत चित पुस्तक ॥
हुव अर्हति आरम सोम वसु धृति१८८१सगत सक ॥
अतर तपस्य१२दसमी१०असित२गोरन अंह तह मेघ गति॥
रचयो अंजस्र झर रुप्पयन त्याग प्रगुन सब देय तति॥२५॥

जाचक अनुचरं जनन दम्म पचास५० अवधि दिय ॥
सतजुग२००सोवाह सहँस१६०००कविन उपहारं पृथा किय ॥
मुंदा१ लक्खन प्रमित वँसन२ अयुतन मित विस्तारि॥
क्रम सहँसन मित कटकं३ सतन सम्मित कुंडल४ करि ॥

१सबके नेत्र विरक्त नहीं हैं तो भी ॥२३॥ २ रावराजा रामसिंह का त्याग देने का आशय रामसिंह के कवियों ने मानसिंहके कवियोंका १हठ जानकर कहा कि तुम दोसौ चारण भले ही ४ दान मत लो यहां और हजारों लेनेवाले हैं, इसप्रकार कहकर बहुत थम्भोंवाला ५ डेरा तनाकर ६ त्याग देने का आरम्भ किया ॥२४॥ ७शीघ्र लेख(निमन्त्रण पत्र)भेजे ८दानका आरम्भ हुआ ९फाल्गुन वदि१०गोरण के दिन मेघ की भांति रुपयों का ११ निरन्तर झड़ रचकर बह विशेष गुणवाला त्याग सब पंक्तियों को दिया ॥२५॥ १२चारणोंके चाकरों को प्रत्येक मनुष्यको पचास रुपयों तक दिये और प्रत्येक चारण को दोसौ लेकर सोलहसौ रुपये१३भेट करनेका कार्य प्रसिद्ध किया जिसमें१४लाखों रुपया१५ हजारों शिरोपाव१६सैकड़ों कड़े१७कानोंमें पहिननेके सैकड़ों मोती और इसी

ताही प्रमान हय५ मेघ६ वितरि सब देसन तर्कुक[2] सकल॥
किन्नैं निहाल सादर कथन बादर[3] पथन स्वबुद्धि बल॥२६॥

(दोहा)

द्रविन बुद्धि बिधि इम दुलह, प्रस्तरि त्याग प्रवाह॥
उभय२ घटी मित रहत अह, चढ्यो स्वसुर गृह चाह॥२७॥

[उपदोहा]

जिततित सब जाचक जनन, सुजस स्व संचित सुनत॥
गोरन भोजन स्वसुर गृह, चल्यो नगर सर चुनत॥२८॥
कर्मध्वज हक्कारैं क्रम, लघु१ गुरु२ मानव लहत॥
महासुभट१ सचिव२न मिलित, चल्यो स्वसुर मन चहत२९

(पद्धतिका)

प्रभु दुलह जोधपुरके प्रवेस, अधिरूप१ कमनँ२पन लहि असेस॥
सरवापुर१ बहुबिध लखि समत्थ, तकि भैरत१ कुसीलवं२ भैंट३ न तत्थ॥ ३०॥
बुट्ठत स्वबुद्धि मघवों बनाव, भूपाल लखत मग सवन भावँ३॥
दोलाअरँघट्टक४ कहुँ दिपात, पावत तिन प्रेरक वसुनँ व्रात॥३१॥
गावत कहुँ बंसि५न धमि गवार, पावत प्रसाद धन प्रकटि प्यार॥

प्रमाणसे घोड़े१ऊंट देकर२याचकों को आदर के साथ कथन करके३मेघके सदृश वृष्टि के बल से निहाल करदिये॥२६॥४इसप्रकार धनकी वर्षा करके और त्याग का प्रवाह फैलाकर दो घड़ी दिन बाक़ी रहते॥२७॥ अपना संचय किया हुआ यश सुनकर गोरण के दिनका भोजन करने को॥२८॥ राठोड़ राजा मानसिंह के ५ बुलाने के क्रम से ६ छोटे बड़े सब मनुष्यों को साथ लेकर॥ २९॥ अधिक रूप और सब ७ सुन्दरपना धारण करके शहर के बाहर के पुर सब देखकर तहां ८ नाटक करनेवाले नटों और ९ कत्थक (नटविशेष) १०भाट तथा नट विशेष को देखकर॥ ३०॥११ इन्द्र के समान धनकी वर्षा करता हुआ १२ मार्ग में सबका भाव (अभिप्राय) देखता हुआ १३कहीं डोलरहिंडे शोभा देते हैं जिनके प्रेरणा करनेवाले (झुलानेवाले] १४ धनका समूह पाते हैं॥ ३१॥

वहुचित्र६ भाड१ नर्तक२ बनाइ, लावत वसु३ पावत प्रमद लाइ३२
मंदिरमहां४दि उदयादि५ मान७, निरखत स्वसुरार्चित६ नय निधान
लघुवाटि८न कहुँलघु मनुज९लीन,पिक्खत प्रसन्नवर वेहुप्रवनि३३
मालिक१०न सुमन उपहार मेल, हाटक११ चय बुट्ठत गनित हेल१२॥
कजर१३न कहुँक तंडव मकार, दु१७हरी१ ति३हरी२ तिन्ह रचत
दार ॥ ३४ ॥
जोजोहि रिझावत जिम जथाहि, सोसोहि स्वसगत१३तिम तथाहि
कहुँ कहुँ खेंट१ इधन२ निचप कार, पहिलैंहि पटाकि वेरदल
प्रसार ॥ ३५ ॥
ले रीझ१४वहुरि लेवे लँवार, पावत धन१५करि अति नुति प्रसार
जुरि फिरिफिरि सम्मुह नट१६न जूह, सु रिझाइ लेत वहु वसु
समूह ॥ ३६ ॥
गन निपं१ कुंभारि१७न वसु गिराइ, पुनि कहुँ वागुरिक१८न
मृग२न पाइ ॥
देवहु वसु१ वखसततिन्ह निदेस,अवसोंन करहु तुम कर्मऐस२२॥३७॥

१बहुरूपिया, भाड[मुखसे नकाई करनेवाले]नाचनेवाले अपने पलाओं से २धन लेकर३हर्ष प्राप्त करते हैं ॥ ३२ ॥ ४ महामंदिर ५ उदयमंदिर दोनों अपने ६ श्वसुर [मानसिंह] के पूजन किये हुए स्थानों को ७ नीतिनिपुण [रामसिंह] ८ छोटी बगीचियों के छोटे मनुष्य ९ बहुत चतुर दुल्हहको लीन होकर देखते हैं ॥३३॥१०मालियों के पुष्प भेट करने पर ११ सुवर्णका समूह १२ खेल के समान देता है कहीं काजर १३नाचते हैं और कहीं पर उनकी स्त्रियां दोदो तीन तीन कछाटे लेती हैं॥३४॥ कहीं पर १४जड़(घास) और १५बलीता सचय करनेवाले १६ दुल्हह की सेना में डालकर ॥ ३५ ॥ रीझ लेकर फिर लेने के लिये वे १७ लापर(झूठे) नम्रता करके धन पाते हैं १८नटों का समूह राजा से धन का समूह लेता है ॥ ३६ ॥ कुमारियों के १९ कलशों के समूह में धन डालकर २० मृग पकड़नेवाले बागरिया (व्याध विशेषों) को २१ धन देकर आज्ञा देते हैं कि २२ ऐसा काम फिर [illegible]त करो अर्थात् मृगों को मत पकड़ो ॥ ३७ ॥

इम देत जनन धन घन अछेह, प्रविस्यो पुर *गोपुर उचित अेह॥
नृप गोपुर पाल१न करि निहाल, बिक्खत पुर२ जन जुव१ वृद्ध२
बाल३ ॥ ३८ ॥

कहुँ नट३न ‡नटन उड्डन †कुरंग, भंजि कहुँ §नरेन्द्र४दिखवत भुजंग॥
कहुँ द्यूत द्यूतदेवि५न निकार,समपन२कहुँ जय३कहुँ रय प्रसार३९
प्रबहत[1]कुल्ल्याजल२कहुँ दु२पास, मरु[2]छिति हुलसत जिम भाद्रमास॥
बैतालि[3]क१७ चाक्रि[4]क२८ बिबिध ब्रात, जय१ जीव२ [5]जल्प सबि-
रुद३ सुनात ॥ ४० ॥

नच्चत बहु [6]बारन बारना[7]रि९, पटु [8]धाव१ हाव२ भाव३न प्रसारि ॥
कहुँ सान [9]भ्रमासक्त१०न सनंकि,भ्कारत फु[10]लिंग सस्त्रन झनंकि४१
बि२हुँदि[11]सैन असीसत द्विज११न [12]बार, स्वे[13]हासम पावत बसु प्रसार
कहुँ उघारि चित्रसालन कपाट,बिक्खत तिय१२बिंदहिं नयन बाट४२
उ[14]त्तारन उड्ढ१३हि कहुँ करंत, [15]बलि१४ करन प्रान हित बित्थरंत॥४३

*नगर के द्वार में प्रवेश किया जहां पर नगर के द्वारपालों को निहाल करके, पुर के जवान, वृद्ध और बालक को देखता हुआ नगर में गया ॥३८॥ तहां कहीं पर तो ‡ हिरणों के समान नट † नृत्य करके उडते हैं और कहीं पर § विष वैद्य (कालबेलिये) सर्प दिखाते हैं और कहीं द्यूत खेलनेवाले द्यूत देवी को निकाल कर कोई तो बराबर का दाव लगाते हैं, कोई जीतते हैं और कोई अपना वेग फैलाते हैं ॥३९॥ कहीं पर दोनों ओर विशेष मार्ग में १जलकी नहरें हैं जिनसे २मारवाड़ की भूमि भाद्रपद मासमें प्रसन्न होती है "वहतः पान्थे" इतिशब्दार्थचिन्तामणिः ॥ ३ स्तुति करके राजा को जगानेवाले भाट और ४ घंटा बजाकर राजाकी स्तुति करनेवाले भाट विशेष "बैतालिका बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिकार्थकाः" इत्यमरः॥ जय होओ, जीवो, बढो ऐसा ५ कह कर स्तुति करते हैं ॥ ४० ॥ ६ घरों के बहुत द्वारों पर ८ चतुर दौड़ से हाव भाव करके ७ वेश्यायें नचती हैं ९ कहीं पर सकलीगर शाण पर शस्त्रों को भणकाकर १० अग्नि कण झाड़ते हैं ॥४१॥ ११दोनों ओर ब्राह्मणों का १२ समूह आशीर्वाद देता है जो १३ अपनी इच्छानुसार धनका फैलाव पाता है ॥ ४२ ॥ १४ कहीं पर ऊपर से ही नोछावर करते है १५ पुनि प्राण नोछावर करने का हित

बिखरत नोछावरि वसु१५ वजार, अबि रक होत तिन्ह लहि उ-
दार१६ ॥ ४३ ॥

प्रभु१ आदि जन्य जन२ गजन पिट्ठि, द्रुत परत निछावरि दंविन
दिट्ठि१७ ॥

सोसो आधोरन१मुख२समेटि, मग गेरिदेत१८दुख दुखिन मेटि४४

समेटि१ नमेटि२ अत्यानुप्रास ॥ १ ॥

कहुं अन्नरासि१९ नाना प्रकार, मप्पत२० द्रोणा१दिन बिनु सुमार
कहुँ आढक२ प्रस्थ३न मपन कर्म२१, मुसियत अधमर्णा२१न पि-
हित मर्म ॥ ४५ ॥

रचि व्रीहि सुगंधिक१ कुलमं२ रासि२३, पावत कहुं विक्रय१ क्रय२
प्रकासि२४ ॥

जव३ सुमन४ मदन५ हरिमंथ६ जात, भरमुद्ग७ राजमुद्ग८न बि-
भात२५ ॥ ४६ ॥

जवनाल९ वीजपुष्पि१०न जया२६हि, अति रासिन इतिमुख सीत्य
आहि२७ ॥

फैलाते हैं, पजार में नोछावरका धन बिखरता है जिसको लेकर रंकभी उदार होते हैं ॥४३॥ दुल्लह रामसिंह आदि १बरात के लोग हाथियोंकी पीठके ऊपर नोछावर का २ धन पड़ाहुआ देखते हैं उसको ३ महावत आदि शीघ्र सिमेट कर दुखी मनुष्यों का दुःख मिटाने को मार्ग में गिरादेते हैं ॥ ४४ ॥ कहीं पर नानाप्रकार के अन्न के ढर (समूह) होरहे हैं जिनको ४ द्रोण (बत्तीस सेरके तोल का नाम द्रोण है) आदि तोलों से ५गणना रहित तोल रहे हैं और कहीं पर ६ आढक (लीलावती में द्रोण के चतुर्थ भाग अर्थात् आठ सेरको आढक लिखा है) और ७ प्रस्थ [आढक के चतुर्थ भाग का नाम प्रस्थ है] से नापने का काम होता है और कहीं पर ९ ऋण लेनेवालों को छिपेहुए कामों से व्यहारे लोग ८ ठगते हैं ॥ ४५ ॥ कहीं पर १० धान्य में ११ चावल १२ कुलथी [धान्य विशेष] की राशि करके प्रसिद्ध १३ बेचते और १४ मोल लेतेहुए पाते हैं और कहीं पर जव १५ गेहूँ १६ उड़द १७ चणा १८ मूँग १९ मोठ तथा चँवला ॥ ४६ ॥ २० जवार २१ बाजरा २२ इत्यादि २४धान्य के २९समूह

भासत कहुँ हट्ट२८न भ्रमर भीर २९, पीतन १ कपूर२ मृगमद३ पटीर४ ॥ ४७ ॥

कहुँ कुसुम निकर३०नाना प्रकार, अधिपतिपर वारत३१विविध बार।
नृप करत रीझि मालि३२न बिहाल, चल्लत१ खिन रहि२ खिन सिथिल२ चाल३३ ॥४८॥

प्रभु द्विरद अग्ग बहु दारुपट्ट३४, बहि१ढवत२कहारन अंस बट्ट ॥
गनिका जन३६ तिनपर नटन१ गान२, बज्ज३न सह बिरचित३७ बहु विधान ॥ ४९ ॥

उनपैंहु महुर१रुप्पय२उछारि३८, बुट्ठहिं जन जन्य कि भाद्र बारि॥
तहतह तिन्ह बांदक लोभ तानि, लचिलेतें ३९ होत लय ताल हानि४० ॥ ५० ॥

अधिकारी तिनके तिन्ह उतारि४१, पुनि इतर चढावत४२न खिन पारि ॥
बिखरत ४३ पट्टन सन द्रविनं व्रात, बहु लुट्टत ४४ बहु पथ रुद्ध दबात४५ ॥ ५१ ॥

पुरलोकबहुरिजिन्हढुंढि४६प्रात, बनिबिविधगये बहु आढ्यं४७व्रात
बिक्खतकहुँइत१उत२मनिनबार४८,क्रमबिबिधअर्घ४९नानाप्रकार५०

शोभा देते हैं, कहीं पर दुकानों में भ्रमरों की भीड़ होरही है और कहीं पर १कुंकुम तथा हरताल तथा आमला, कपूर २ कस्तूरी, चंदन ॥ ४७ ॥ ३पुष्पोंके समूह ४समूह ५क्षण मात्र ठहर जाते हैं और क्षण मात्र धीरी चाल से चलते हैं ॥ ४८ ॥ दुलह के हाथी के आगे कहारों के ७कंधे पर रक्खा हुआ ६ काष्ठ का चडा तखता है उस पर वेश्याओं का ८ नाचना गाना होता है सो वे वेश्याएं वाद्य के साथ अनेक विधान रचती हैं ॥ ४९ ॥ ९ बरात के मनुष्य भादवाके जलके समान मोहर और रुपये वर्षते हैं तहां उन वेश्याओंके १० बजानेवाले लोभ करके ११ झुककर उनको लेते हैं जिससे लय और ताल चूकजाते हैं ॥ ५० ॥१२ धन का समूह ॥ ५१ ॥ १३ धनवानों के समूह हो १४मणियों के समूह को देखते हैं १५ मूल्य के विविध क्रम से ॥ ५२ ॥

पविं१ नीलं२ मुक्तिमव३ पद्मराग४, बैडूर्य५ बहुरि चउ४१९ खिल्ल विभाग५१ ॥

दुहुँ२ओर पहुल कहुँ पट५२दिपात, जे रांक्व१वादर२क्षौम२जात५३
कौसेय४ सहित इम चउ४ प्रकार, विक्खत५३ दुर२ओर बर विविध वार ॥

कहुँ कुंकुम१ मृगमदं२ सुमं३ प्रकीर्ण५४, सब ठाम अंगुरु४ चंदन ५ विशीर्ण५५ ॥ ५४ ॥

दुल्लह सुगंध प्रथम१हि दिपात५६, पुनि२ नगर जनन सौरभ लिपात५७ ॥

फग्गुन१२ खिन उच्छव फाग५८ फार, कति विध तस खेलन ५९ मरु प्रकार ॥ ५५ ॥

प्रभु दगन कहुँक कर्पूर पूर, हितपुव्व हारि६० रिफवत हजूर ॥
वलिंवलिसुगधमयद०प६१ज्ञात, जनप्रीतजननजैंन्यनजनात६२।५६।
वंचि अक्खि१न हारत६३ सुरभि बारि, नृप दुल्लह हित सह भाति निहारि ॥

जागुडं१ मृगनाभि२न जानि जानि, प्रभु जन्यन सिंचित ६४ हित प्रतानि ॥ ५७ ॥

दुहुँ२ओर नारि१नर२लखि दुंरूह,आनत६५अनेक विध सुजसऊँह
कहुँगंधिनि१मालिनि२बहुप्रकार, फैलावत६६बरसिरसुरभिफार५८

---

१ हीरा २ नीलम ३ मोती ४ माणक ५ बाकी के चार प्रकार के रत्न ६ वस्त्र ७ ऊन ८ सूत ९ सण से उत्पन्न ॥५३॥ १० रेशम सहित चार प्रकार के ११ केसर १२ कस्तूरी १३ पुष्प १४ फैले हुए १५ अगर, चंदन १६विखरेहुए ॥ ५४ ॥ १७ज्ञाग का समूह ॥ ५५ ॥ १८ फिर फिर (बारबार) १९ बरात के लोगों को प्रीति जनाते हैं ॥ ५६ ॥ २० नेत्र बचाकर २१ गुलाबजल आदि सुगंधि का जल डालते हैं २२ केसर, कस्तूरी ॥ ५७ ॥ २३ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसे दुल्हह को २४तर्कना करते हैं ॥ ५८ ॥

चहु कहत६७ अम्ह नृप मति विचार, सुभ बिधि गय६८ बुंदिय समुझि सार ॥
यह जोग दुलह१ दुलहिन२ अपुव्व, बिरचिय६९ कबंध दै दहि१ रु दुव्व२ ॥ ५९ ॥
कहुँ कहत७० स्वपत गिंघोलि खेत, दुल्लह जनक न जो भीर देत
होतो७१ अनर्थ तो हाइहाइ, पै हुव७२ सुभ दुलहिनि१ दुलह२ पाइ६०
इम लखत७३ नगर सोभा असेस, पहु पत्त७४ मुरूप तोरन पदेस
इम दुल्लह लोहापोरि१ अंत, बुट्ठतगो७५ बसु चय सुम बसंत ।६१
मृगमद१ पटीर२ कुंकुम३ मिलाप, छिरक्यो७६ बर फग्गुन समयछाप॥
वुट्ठिय७७ पहु तह बहु बसु बिसेस, अंदर लिय७८ सह बिधि सुँबर एस ॥६२॥
वहुविध वहुदासि१न सखि२न बार, किय ७९ पुनि नीराजन सह प्रकार ॥
त्रिक १ नाड़िन जावत रजनि जत्थ, पहुँच्यो ८० मह दुल्लह स्व-पुर पत्थ ॥ ६३ ॥
पहुमान आइ पहिलो१ पंउट्ठ, तक्किय८१ मिलि सम्मुह अधिक तुट्ठ॥
जावत घटिका चउ ४ रजनि जामें, किय ८२ सँमिति फतैमहल सु१ प्रकाम ॥ ६४ ॥

---

१ हमारे राजा (मानसिंह) की बुद्धि का विचार ॥ ५९ ॥ गींघोली के क्षेत्र में॥ २ हमारे स्वामी को दुल्लह का ३ पिता सहायता नहीं देता तो ॥ ६० ॥ दुल्लह ४ मुख्य द्वार के स्थान पर गया ५ वसंत ऋतु में पुष्पों की वर्षा होवे जैसे लोहापोल (जोधपुर के गढ पर महलों के मुख्य द्वार का नाम है) पर्यन्त धन के समूह की वर्षा करता गया ॥ ६१ ॥ वहां दुल्लह पर कस्तूरी ६ चंदन और केसर मिलाकर फागुन मास का समय होने से छिड़का वहां भी राजा ने विशेप धन की वर्षा करी ७ इस श्रेष्ठ वर को ॥ ६२ ॥ ८ आरती की ९ तीन घड़ी रात्रि जाने पर ॥ ६३ ॥ १० प्रथम सीढी पर आकर ११ अधिक तुष्ट (प्रसन्न) हुआ १२ जहांपर १३ फतहमहल में सभा की ॥६४॥

कापरनि ईस सामत काज, दिय गहि आदि८३ रहोरराज ॥
बैठारवो ८४ नृपदिस इम सु वीर, ध्रुव बैठे८५ सम थित दुव २
हि धीर ॥ ६५ ॥
ईसान ८ नृपन मुख दुहुँ २ न आस ८६, सामंत अनिल दिस
मुख ८७ सुभास ॥
थित सव्य १ मान २ दाहिन१ धिरेस२, इम हुव ८८ समाज कछु
काल एस ॥ ६६ ॥
रहि इक मुहूर्त ससद८९ रसेस, पुनि परिग९० पंति भोजन प्रदेस
पश्चिम ३।५ मुख बैठे ९१ तहँ नृपाल, थित पट्टन चउ ४ विध
असन९२थाल ॥ ६७ ॥
जुरि पतिन९३ पचम५ पेय५ जुत्त, विस्तरिय९४ मिधा सूदन बहुत्त
जल२ थल२ भव दुव २ विध अन्न ९५ जात, पल १६ त्रिशविधि
खेंचर३ जुत विधि दिपात ॥ ६८ ॥
प्रतिथाल साकगन ९७ दस १० प्रकार, विस्तरि पुनि तेमन ९८
बिबिध बौर ॥
इम वारि परिवेसन ९९ द्रुत असेस, रस छ ६ जुत पत्तहुव१००दुव२

१दोनों राजा बराबर स्थित होकर बैठ।६५। २दोनों राजाओं का मुख ईशान दिशा को हुआ और सब उमरावों के मुख वायु कोण में प्रकाशित हुए वहां राजा मानसिंह बाम हाथ को और ३ राजा रामसिंह दहिना बैठा ४ कुछ समय यह सभा हुई ॥६६॥ ४भूपति के दो घड़ी तक सभा में रहे पीछे भोजन के स्थान पर पात (पातिया) हुई ६ चार बाजोटों पर विधि पूर्वक ७ भोजन के थाल रक्खेगये ॥ ६७ ॥ ८ पाचमी पक्ति मय सहित जुड़ी पश्चात् ९ रसोई एकाने वालों ने बहुत भेद फैलाये जिनमें जलसे और स्थल से पैदा हुए दो प्रकार के अन्न (जल से उत्पन्न चावल आदि और स्थल से उत्पन्न गेहूं आदि) और ११ पक्षियों सहित तीन प्रकार के१०मास (एक तो बकरे आदि ग्रामपशु, दूसरे सूअर आदि वनपशु और तीसरे पक्षियों का) ॥ ६८ ॥ और थाल थाल प्रति दश प्रकार के शाकों के अनेक प्रकार के १३ समूह के१२तीवनों (व्यञ्जनों) की श्रेष्ठ १४ परुसगारी हुई।

रसेस ॥ ६९ ॥
जहँ *चसक१†चसक २ मनुहारि जात१०१, प्रभु‡रूच्य नट्यो १ सनियम दिपात ॥
रतपान बुंद्द दिय १०३ हारि राज्य, तस सुत उम्मेद सु कियउ १०४ त्याज्य ॥ ७० ॥
वर १ अक्खिय १०५ स्वसुर १ हिं इम प्रवीन, सामंत तदपि किय पान सीर१०६ ॥
पुनि लहि अदेस सब असन पाइ १०७, उट्ठिय १०८ लहि बीटक जल अचाइँ ॥ ७१ ॥
कछुखिन रहि १०९ संसद हित मकाम, तब दिय११० सब जन्यन सिक्ख ताम ॥
पधराइ प्रभुहिँ अवरोध१११प्रीत, गावत गन बंदिन बिरुद गीत ७२
कुलदेवि कबंधन नागनेचि, पूजाइ ११२ प्रभुहिँ सुम निकर सेचि
सज्जा पोढाये११३ नृप स्वगेह, अभिलाखिन सुरतरु रजनि एह७३
इह वर स्वासुर कुल तियन आइ, लहि कछुक काल अतिहित लडाइ११४ ॥
लखि समय कियउ दंपति २ मिलाप ११५, इहिँ काल बुट्ठि बसु हुव ११६ अमाप ७४

॥ ६९ ॥ जहां * मद्यकी † चुसकी की मनुहार हुई तहां ‡ दुल्लह ने इनकार किया और वह इनकार १ नियम के साथ दिखाया कि २ बुधसिंह ने मद्य पीने में प्रीति करके बुंदी का राज्य गुमा दिया था उसके पुत्र उम्मेदसिंह ने मद्य पीने का त्याग कर दिया ॥ ७० ॥ तो भी ३ उमरावों ने मद्य पीने में ४ सीर (सामिल हुए) किया ५ आदेश (आज्ञा) लेकर भोजन किया ६ पान बीड़े लेकर ७ आचमन किया (आचमन लेने से पहिले पंक्ति में पान बीड़े देनेका राजपूताने में कायदा है) ॥ ७१ ॥ ८ तहां बरातवालों को सीख दी ९ दुल्लह को जनाने में पधराया ॥ ७२ ॥ १० फूलों के समूह चढाकर ॥ ७३ ॥ ११ इस समय स्वसुर के कुलकी स्त्रियोंने —

वहुरीति चतुर वर रचि विधेय ११७, साद्धिय सब लौकिक ११८
सहित श्रेय ॥
रहि ११९ सुख सह वित्तत उचित रत्ति, घन गानाजीविन द्रविन
घत्ति१२० ॥ ७५ ॥
नृप आइ १२१ मात निज पटनिकाय, राजस सुख विलसत इह्न
६१ राय ॥
तिम निवासि १२२ दिवस वावीस २२ सत्थ, सब तर्कुक जन करि
वसु समत्थ१२३ ॥ ७६ ॥
वहु अप्पि हरनें १२४ सबविधि विसेस, नृप मानें तुष्टकरि१२५
वर निसेस ॥
ग्रामक१ उपेत केकीन्द्र२ढंग, पुनि मान सुता हित हित प्रसंग७७
प्रतिकृति सहस्र २५००० मित दम्म आप, दे १२६ दुव२ लडाइ
पठये१२७ सदाप ॥
रडपों पुरेस सिवनाथसीह१, मेरतियन मालिक वत्त अबीह॥७८॥
रुचिभोजन नाजर अमृतराम२, तिन दुहुँ२न सिक्ख दिय १२८
सग ताम ॥
लक्खन मित सबसैन१ धन२ लुटाइ१२९, भूखन३ गैय४ हय५
मैंय६ दान भाइ१३० ॥ ७९ ॥
सब चुकिसके न तब कति स्वसर्ग, आयो लौं१३१ जाचक छबि
अनग ॥

१ गान से जीवन करनवाले कलावन्त आदि को धन देकर ॥ ७५ ॥ २ अपने डेरे में जाकर ३ याचक लोगों को धनवान् करके ॥७६॥ ४ बहुत दहेज देकर ५ राजा मानसिंह ने वरको पूर्ण प्रसन्न किया ६ ग्रामों सहित ७ केकीन्द्र नामक नगर ८ राजा मानसिंह ने प्रसन्न होकर अपनी पुत्री को दिया ॥ ७७ ॥ दुलह दुलहनका प्यार करके ९ दहेज सहित भेजे १० निर्भय ॥ ७८ ॥ ११ प्रीतिपात्र १२ वस्त्रों सहित १३ हाथी १४ ऊट रीति पूर्वक दिये ॥ ७९ ॥ १५ कितने ही

मधु१ असित२ आदि१ तिथि१ चढि१३२ महीप, दरकुंचन प्रथित
१३३ बंसदीप ॥ ८० ॥

मीनाऽर्क बिसनें पुर न सुभ मानि१३४,पटगृह केदारेश्वर प्रतानि
इह करि१३६ बनीयकन खिलन आढय, संसद बुलाइ१३७ सब
जस सलाढय ॥ ८१ ॥

सह मह१ आस्वासन२ तिन्ह सराहि, दिय१३८ सिक्ख सबन दा-
रिद्र दाहि ॥

निवसन करि बहुदिन तह नरेस,आरंभिय१३९अवसरपुर प्रवेस८२

॥ दोहा ॥

श्रामराँध२ गत पक्ख सित२, तिथि——दिन तथ्य ॥८३॥
प्रविसे१४० दिन पच्छिम४ पहर, सहर सकल नर्ल सत्थ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम
सिंहचरित्रे महारावराजरामसिंहयोधपुरविवाहानन्तरबुंदीपुरप्रवे-
शनं षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥

आदितः अष्टषष्ट्युत्तरद्विशततमः ॥ ३६८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

याचकों को अपने साथ ले आया १ चैत्र बदि एकम के दिन ॥ ८० ॥ मीन संक्रांति के सूर्यमें पुरमें २प्रवेश करना अशुभ मानकर केदारेश्वर शिवके स्थान पर ३ डेरे लगाये, इसी स्थान पर सब ४ याचकों को धनवान् किये और उनको ५ सभा में बुलाकर सबसे आप यशयुक्त (यशसे धनवान्) हुआ ॥ ८१ ॥ ६ उत्सव सहित उन (याचकों) का आश्वासन करके प्रशंसा के साथ सब का दरिद्र जलाकर सीखदी ॥ ८२ ॥ ७ वैशाख मास के शुक्लपक्ष की तीसरे पहर पीछे ८ सब सेना सहित पुर में प्रवेश किया॥८३॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के अष्टमराशि में, रामसिंहके चरित्र में, महारावराजा रामसिंह का जोधपुर में विवाह करके पीछा बुंदी आनेका छठा मयूख समाप्त हुआ॥६॥ और आदि से तीनसौ अड़सठ ३६८मयूख हुए ॥

पुर प्रविसन पुरजन प्रचुर, स्वामि लखन हित संग ॥
काढिहु करत दरसन किते, *अप१ चुबक२ बिध अग ॥१॥
अटत जाय वन ताल तट, दिपत †उदीची४।७द्वार ॥
बिसि ‡गोपुर बिक्रुपो सु वर, पुर निज बिबिध प्रकार॥२॥

॥ भुजगप्रयातम् ॥

उदीची४।७दिसा द्वार यों भूपआयो,प्रवेस्यो पुरी सज्ज सेना सुहायो
दिप्यो अप्पनोंदिंगशृंगारसज्ज्यो,लखें इंद्र१को श्रीद२को नैरलज्ज्यो ३
पइठ्ठो तहां द्रग यों जेव पायो, अकस्मात ज्यों कायमें प्रान आयो ॥
कहों वेम१प्राकार२सोहैं सुधारे, कहों कंगुरे३मंजु ऊंचे अटारें४।४।
कहों ग्रावपैं टंक मां मंजु मंडै५, कहों मोन चेंक्री धरे चक्र भंडैं६॥
कहों सार ठ्योंकारके कूटवज्जै७, कहों वर्णचचूनके लेख८रज्जैं५
कहों वर्द्धकी स्यदनाली सुधारे९, कहों कंदुजीवी हवी कंदु डारैं१०
कहों चेल चंगे वने नंतुवाई११,कहों उब्बटैं अंग अंतीवसाई१२।६।

*लोहे और चुंबक के मिलने की भांति ॥ १ ॥ †उत्तर दिशा के द्वार से ‡नगर के द्वार में घुसकर अपने पुर को नाना प्रकार का देखा ॥ २ ॥ इसप्रकार वह राजा उत्तर दिशाके द्वारमें आया और सुहावनी सजीहुई सेनासे प्रवेशकिया वरा अपना नगर शृंगार किया हुआ ऐसा दीखा जिससे इन्द्र की पुरी (अमरावती) और २ कुबेर की पुरी(अलका) लज्जित हुई ॥ ३ ॥ राजा भीतर घुसा उस समय वह नगर ऐसी शोभा को प्राप्त हुआ कि जैसे मृतक शरीर में अचानक प्राण आगया, जिसमें कहीं तो २ घुस कोट कहीं १ पक्का कोट सुधारा हुआ शोभायमान है, कहीं पर कागरे और कहीं सुन्दर छतें हैं ॥ ४ ॥ ४ पत्थर पर टांकी से ५ लक्ष्मी की सुंदर मूर्तिय मांडते हैं और कहीं घरों में ६ कुमार चाक पर भांड (मिट्टी के पात्र) घरते हैं, कहीं लोहे पर ७ लुहार के घण बजते हैं और कहीं पर ८ चित्रकारों (चितेरा) के लेख (चित्राम) शोभा देते हैं ॥ ५ ॥ कहीं पर ९ सुथार रथों की पंक्ति को सुधारते हैं और कहीं पर १० कंदोई कड़ाह में घृत डालते हैं ११ कहीं पर जुलाहे उत्तम वस्त्र बुनते हैं १२ कहीं पर नाई शरीर पर उबटन मालिस करते हैं ॥ ६ ॥

भ्रमासक्त[1] मंजैं कहीं हेति१३भारी, धरैं सान भंभान फुलिंग[2] धारी
बढे बस्त्रजोरैं कहीं तुन्नवाई[3]१४, छमंकैं कहीं पिंजरी तूल[4]१५छाई॥७॥
कहीं सूत१ कांसी २ चितीभूत[5] चोरैं१६, कहीं सीस३ कत्थीर४ के जाल जोरैं१७ ॥
कहीं चित्र आवास[9] मंडैं चितारे १८, कहीं स्तोत्र बंदी पढैं नव्य१९ न्यारे ॥ ८ ॥
कहीं के करैं मालिनी माल्य[11] भंगैं२०, कहीं रंगरेजावली[12] चैल रंगैं२१
कहीं व्री[13]हि१गोधूम[14]२के गंज२२भारी, कहीं रासि मप्पैं२३गहैं द्रोन[15] १ खारी२ ॥ ९ ॥
कहाँ रक्त१[16] री[17]तीर२नके गंज डारे२४, कहीं नैर नाना रुपय्ये३ बिथारे२५ ॥
कहाँ स्वर्णकारावली[18] हेम४तुल्लैं२६, कहाँ ग्राम[19] गंधीनके गंध५खुल्लैं
कहाँ थंभ६संबंद्ध[20] तुल्लैं तराजू२८, कहीं हेम हिंडोल बंधे दुरवाजू२९
कहीं निक्खसैं नीर कुल्या१[21] प्रणाली[22]२।३०, कहीं अच्छ सोहैं बनैं

१कहीं पर सिकलीगर उत्तम शस्त्र मांजते हैं और साणको फेरनेवाला२अग्नि कणों को धारण करता है ३ कहीं पर तुनगर कटेहुए वस्त्रों को जोड़ते हैं और कहीं पर ४ रूई से छाई हुई पींजण बजती है ॥ ७ ॥ कहीं पर ५ पारा ६ कांसी के ७ समूह चोड़े पड़े हुए हैं और कहीं पर ८ सीसा और कथीर के समूह को जोड़ते हैं, कहीं चितेरे ९ मकानों को रंगते हैं, कहीं पर भाट लोग जुदेही १० नवीन स्तुति पढते हैं ॥ ८ ॥ कहीं पर कितनी ही मालनियें ११ मालाओं के भेद करती हैं १२ कहीं रंगरेजों की पंक्ति वस्त्र रंगती है १३कहीं पर धान्य के १४ गेहूँ के बडे ढेर लगे हुए हैं सो १५द्रोण और खारी नाम के तोलों से राशियो को नापते हैं [बत्तीस सेर का एक द्रोण और सोलह द्रोण की एक खारी होती है] ॥ ९ ॥ कहीं १६ तांबा १७ पीतल के समूह पड़े हैं और कहीं पर नगर में अनेक शिक्कों के रुपये फैलाये हुए हैं १८ कहीं पर सुनारों की पंक्ति सुवर्ण तोल रही है और कहीं गंधियों के १९समूह गंध खोल रहे हैं॥१०॥ कहीं पर थंभों से२०बंधीहुई तराजू से तोल रहे हैं और कहीं दोनों ओर सुवर्ण के झूले(हिंडलाट) बंधे हैं २१कहीं नहरों और २२नालियों से पानी बहता है

आलवाली३१ ॥ ११ ॥

कहोंके घटीजत्र चल्लैं चठहैं३२,कहों नीतिकी प्रीतिधी भीतिनहैं३३
खलूँरी कहों खग्गके मग्ग सद्धैं३४, कहों तोंबर२के राहमैं लाह
लद्धैं३५ ॥ १२ ॥

कहोंवान२संधानपंच्छीन पारैं३६,कहों भारि वदूक४गुंजा उतारैं३७
पटेवाज के ढालतैं वारपेलैं३८, कहों मल्लविद्या वढे दावमेलैं३९ १३
कहों वाल१ हुल्लासके रास रच्चैं४०, कहों भट्ट१ बुल्लैं४१ कहों न
ट२ नच्चैं४२ ॥

कहों खजरी१ झज्झरी२ ढोल३ गज्जैं४३, कहों डिंडिमी४दुंदुभी५
चग६ वज्जैं४४ ॥ १४ ॥

कहोंतंति७की पतिपैं कोनलग्गैं४५,कहों वारनारीनचैं द्वारअग्गैं४६
कहोंसुद्धशृंगार१की धार चल्लैं४७,कहों हास२उल्लासआभाउझल्लैं४८
मचैं४९ क्वापि कारुण्य३ के उग्र४ मंडैं५०, कहों वीर५ आतंक ६
अक्खैं५१ अखंडैं ॥

वनैं५२ क्वापि वीभत्स७के चित्र८ बल्लैं५३, कहों सात९मैं कौत

१कहीं पर थावले बने हुए वृक्ष शोभा देते हैं ॥ ११ ॥ कहीं कितनी ही घरटियें चलती हैं और कहीं नीति की प्रीति से २ बुद्धिका भय नष्ट होता है अर्थात् नीति की चरचा होती है ३ कहीं पर खलाड़े में खड्ग के मार्ग साधते हैं और कहीं ४ माला फेरने के मार्ग में लाभ प्राप्त करते हैं ॥१२॥ कहीं पर बाणों का सन्धान करके ५ पक्षियों को गिराते हैं और कहीं बदूक चलाकर ६ चिरमी उड़ाते हैं ॥ १३ ॥ कहीं पर ७पाखंड दूर करके ८ नाचते हैं ॥ १४ ॥ ९कहीं पर तांतके बाजा पर नजराक[नक्शी]लगती है और कहीं द्वार पर वेश्यायें नचती हैं कहीं पर शुद्ध शृंगार रसकी धार चलती है और कहीं प्रसन्नता से हास्य रसकी कांति पड़ती है ॥१५॥१०कहीं पर ११करुणरस मचता है और कहीं १२ रौद्ररस रचते हैं, कहीं पर वीर रस और कहीं पर पूर्ण १३भयानक रस उचार ते हैं, कहीं पर वीभत्स रस बनता है और कहीं १४ अद्भुत रस कहते हैं और कहीं पर१५सुन्दर निर्वेद है स्थायीभाव जिसका ऐसा शांत रस प्रकाशित करते हैं "निर्वेदस्थायिभावोस्ति शान्तोपि नवमो रस" बहुधा आचार्य रस आठ

निर्वेद खुल्लैं५४ ॥ १६ ॥
कहौं भारती१ सात्वती२वृत्ति आनैं५५, कहौं कौसिकी३ आरभ-
ट्टी४ वखानैं५६ ॥
कहौं नाटक५१ प्रक्रिया२ भाणा३ कहैं५७,

ही मानते हैं तहां कोई कोई ऋषियों का मत है कि वैराग्य है स्थायीभाव जिसका ऐसा शान्त भी नवमा रस है ॥ १६ ॥ अब यहां भारती से लेकर भाणिका पर्यन्त नाटक वृत्तियें(नाटकोंके भेद)हैं जिनके लक्षण साहित्यदर्पण के मतानुसार लिखते हैं सो जिनको इनका विस्तार देखना होवै वे साहित्यदर्पण में देखैं १ जिसमें प्रायः संस्कृत के वचनों का व्यापार होवे और वह स्त्री के आश्रित नहीं किन्तु पुरुष के आश्रय होवै उसे भारती वृत्ति कहते हैं. जिसका सविस्तर वर्णन साहित्यदर्पण की २८५कारिका से देखो. १महानुभावता शौर्य, दान, शक्ति, दया और सरलता से पूर्ण, हर्ष सहित, अल्प शृंगारवाली, शोक रहित और आश्चर्य सहित होवे उसको सात्वती वृत्ति कहते हैं. जिसके अधिक भेद देखने की इच्छावाले ४१६ वीं कारिका से देखैं ३ नायिकाओं के भूषणों का मनोहर वर्णन जिसमें होवे उसको कौशिकी वृत्ति कहते हैं. जिसका पुरा वर्णन ४११ वीं कारिका से है. ४ माया, इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध और घवराना आदि चेष्टाओं से युक्त, तथा वध और बन्धन आदि से उद्धत वृत्तिका नाम आरभटी है, इसके चार भेद हैं सो साहित्यदर्पण की४२०वीं कारिका से देखो. ५ जिसका वृत्तान्त प्रसिद्ध होवे, मुख आदि पांच संधियां होवैं, विलास और ऋद्धि आदि गुणवाला होवे, नानाप्रकारकी विभूतियों से युक्त होवै, सुखदुःख की उत्पत्ति से नानाप्रकारके रसों से परिपूर्ण होवे, इस में पांच से लेकर दस तक अंक होते हैं, प्रसिद्ध वंशवाला राजऋषि, धीर, उदार, प्रतापी, दिव्य, अथवा दिव्य गुणवान् नायक होता है अंगी रस एकही होता है शृंगार अथवा वीर रस प्रधान होता है, अन्य रस अंगभूत होते हैं, निर्वहण नामक संधियें, उद्धत रस होते हैं, चार मुख्य कर्म करनेवाले नट होते हैं और गोपुच्छ के अग्र के समान जिसकी रचना हो उसको नाटक कहते हैं ६ प्रक्रिया नामका कोई जुदा भेद नहीं है परंतु प्रकरण को प्रक्रिया माना है सो इसका लक्षण ५११ की कारिका में है कि वृत्तान्त लौकिक और कविकल्पित होवै, शृंगार अंगी, नायक ब्राह्मण अथवा बनियां होवै, जो धर्म अर्थ काम आदि सकाम साधन में परायण होवै उसको प्रकरण कहते हैं ७ जिस में धूर्त नायक का चरित्र होवै, बीच

मेहासा४रूप डिंवा५रूप व्यायोगं६ पट्टे५८ ॥१७॥
समवादिकारात७ को कापि सद्दे५९, कद्दों अंक८ वीथी९नसौ

बीच में अनेक प्रकार की अवस्थायें बदलती रहें, एकही अंक होवे, निपुण और पण्डित विट एकही पात्र होवे, अनेक अनुभव किये हुए अथवा अन्यके अनुभव किये हुए पदार्थ को रंग भूमि में प्रकाशित करे, संबंध और उक्ति प्रत्युक्ति आकाश की ओर मुख करके करे, शौर्य और सौभाग्य के वर्णन से वीर और शृंगाररस को सूचितकरे, इतिहास कल्पित होवे, मुख और निर्वहण नामक दो संधियां होवें और दशों लास्य[नृत्य]अंग होवें जिसको भाण कहते हैं १ भाण के समान संधि, संधियों के अंग, लास्य के अंग, और अंक से जिस की रचना होवे, निंदनीय पुरुष का जिस में वृत्तांत होवे, और कविकल्पित होवे, जिसको प्रहास [प्रहसन] कहते हैं इसका अधिक वर्णन देखना होवे तो ५३४ की कारिका से देखो २ जिसमें माया, इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध, घबराना आदि चेष्टायें और सूर्य चन्द्र के ग्रहण विशेष कर होवें, जिस में पुराण आदि से प्रसिद्ध इतिहास होवे, अंगी रौद्र रस होवे और अन्य रस अंग होवें, चार अंक होवें, विष्कम्भक और प्रवेशक न होवें देवता गन्धर्व यक्ष राक्षस बड़े सर्प भूत प्रेत पिशाच आदि उत्पन्न बहुत सोलह नायक होवें वृत्तियों में से कौशिकी नहीं होवे, संधियों में से विमर्ष संधि न होवे, हास्य शांत शृंगार रसों को छोड़कर बाकी के छ रस उज्वल होवें जिसका नाम डिम है ३ जिस में प्रसिद्ध इतिहास होवे, स्त्रीजन अल्प होवें, गर्भ और विमर्ष संधि न होवे, बहुतसे मनुष्य होवें, एक अंक होवे, युद्धका उदय स्त्री के निमित्त बिना होवे, कौशिकी वृत्ति नहीं होवे, प्रख्यात नायक होवे, वह राज-ऋषि, दिव्य व धीर उद्धत होवें, हास्य शृंगार और शांत इन रसों को छोड़कर अन्य रस अंगी होवें, जिसको व्यायोग कहते हैं ॥ १७ ॥ ४ समव है आदि में जिस के और कार है अंत में जिसके ऐसे "समवकार" का लक्षण यह है कि देवता और दैत्यों के आश्रित प्रसिद्ध वृत्तान्त होता है, विमर्षरहित सन्धियां होती हैं तीन अंक होते हैं उनमें से पहिले अंक में दो सन्धियां होती हैं और पिछले दो अंकों में एक एक सन्धि होती है प्रसिद्ध देवता और दानव उदात्त बारह नायक होते हैं इसका सविस्तर लक्षण ५१५ की कारिका में देखो ५कहीं पर ६ जिस में उत्सृष्टिक नाम अंक होवे प्रयोग करनेवाले मनुष्य सामान्य होवें, करुणरस स्थायी होवें, बहुत सी स्त्रियों का रुदन होवे, प्रसिद्ध वृत्तान्त को कवि अपनी बुद्धि से बढावे, भाण के समान सन्धि वृत्तान्त और

नैर नहैं६० ॥

कहौं केक ईहांमृगैं१० अच्छ आनैं ६१, लहे पंक्ति१० संख्याति
एकैं बखानैं६२ ॥ १८ ॥

कहौं रूपकैं अंतलै यौं उपादी, बदैं अंग संख्या समाक्षेप वादी।
मुखे१ नाटिका२ भाणिका१८ अंतर सप्पी, थिरा पंक्ति१०ओ आ
८ए सर्व१८ थप्पी ॥ १९ ॥

अङ्ग होवैं, हार जीत होवै, वाणी से युद्ध होवै, और बहुत दुःखोत्पादक वच
होवै उसे अङ्क कहते हैं. जिस में एक अङ्क होवै, नायक चाहे सो कल्पनाकर
लियाजावै, चित्र विचित्र प्रत्युक्ति का आश्रय लेकर आकाशभाषित के वचनों से
अधिकतर शृंगार को और कुछ और रसोंको भी सूचित करै, मुखऔर निर्वहण
ये दो सन्धियां होवैं, और समग्र पांचों ही बीज आदि अर्थप्रकृतियोंका प्रयोग
होवै,नगर को बांधते हैं अर्थात् ऊपर कही हुई वृत्तियों से नगर को बांधते हैं
१जिसमें मिश्रित वृत्तान्त होवै, चार अंक होवैं, मुख प्रति मुख और निर्वहण ये
तीन सन्धियां होवैं, नायक और प्रतिनायक प्रसिद्ध और धीरोद्धत मनुष्य
तथा दिव्य होवै परन्तु यह नियम नहीं कि नायक अमुक ही होवै और प्रतिनायक
अमुक ही होवै, नायक प्रतिनायक के सिवाय दूसरा एक अनुचित कार्य करने
वाला होवै, यह इच्छा रहित दिव्य स्त्री को हरण करने आदि से चाहता है इस
कारण इसका शृंगाराभासभी कुछ कुछ दिखायाजावै, इत्यादि विशेष विस्तार
५१८ की कारिका में देखो. २पंक्ति नाम का कोई भिन्न भेद नहीं मिलता परन्तु
आगे के २०के छंद से रूपक को ही पंक्ति मानना लिखा है ॥ १८ ॥ इन सबको
रूपक (दृश्यकाव्य) कहते हैं जिनमें ३ समाक्षेपवादी, मुख, नाटिका, भाणिका
को अन्त में लेकर उसीके अंग कहते हैं. इनमें मुख का लक्षण यह है, जिस में
नानाप्रकार के अर्थ और रसकी उत्पत्ति होवै, बीजकी उत्पत्ति होवै, प्रारम्भ
होवै. नाटिका का लक्षण है कि वृत्तांत कल्पित होवै, पात्र प्रायः स्त्रियां होवै
चार अंक होवैं, नायक प्रसिद्ध धीरललित राजा होवै, नायिका अन्तःपुर से
संबध रखनेवाली, संगीत में तत्पर, नवीन अनुरागवाली, राजवंश से उत्पन्न
कन्या होवै. इसका विशेष वृत्त ५३९ की कारिका में देखो. भाणिका का यह
लक्षण है कि जिसमें उत्तम सामग्री होवै मुख और निर्वहण संधि होवै, कौशिकी
और भारती वृत्ति होवै, एक अंक होवै, उदात्त नायिका होवै, नायक हीन होवै
इसके उपन्यास आदि सात अंग हैं ॥ १९ ॥ साहित्य में दश प्रकार के रूपक हैं

मिती पंक्ति१०ह्यौं रूपकाख्या प्रमानी, जथा अष्ठ भू१८ ते उपा-
ध्याहुजानी ॥

कहौं स्तंभ१ प्रस्वेद२ रोमाच३ कत्थैं६३, स्वरामोट४ लेद६४ अश्रु५
वैवर्ण्य६ सत्थैं ॥ २० ॥

कहौं कप७ केठा प्रलै८भाव भासैं६५, कहौं पीठमर्द१ प्रहासौ२
विलासैं६६ ॥

सजैं६७काषि सगीत१कालानुसारी,भनेवत्तिके जातके भेदभारी२१
मचे व्है श्रुती वेद बाईस२२मोहैं६८, स१में चो४ म४में चो४ प५में चो
४हिं सोहैं६९ ॥

गिने७० रे२ रु धे६ त्रि३ त्रि३ द्वै२ ग३ नी७ मैं, सुले१तीम्रिका१
छोहिनी२२ अत२२ श्रीमें ॥ २२ ॥

लसैं७१ पच५ही जाति दीप्ता१दि लेकैं, छटैं७२ जे जथा भाग सौं
राग छेकैं ॥

मचे मोद त्रि३ ग्राम खड्डा१दि मंडैं७३, मिली७४ मूर्छना इक्कबीसी
२१ अखंडै ॥ २३ ॥

क्रिया१ गीत्य२ लंकार३ भ्रो गामका४ऽऽदी, बदै७५ रम्पता ब्रुष्ट
के पुष्ट वादी ॥

कहौं सैंधवी१ कंम्म आलाप आनैं७६, मुखारी२ कहौं गौड़३

कियागया है सो यहां पर ग्रन्थकर्ता ने इसी रूपक को पक्ति लिखा है १ स्वर भंग 'यहां पर स्तम्भ आदि सब हाव हैं जिनके अर्थ प्रसिद्ध हैं इस कारण इन की भिन्न भिन्न टीका लिखना अनावश्यक है'॥२०॥२कहीं पर समय के अनुसार सगीत सजते हैं ॥ २१ ॥ ३ षड्ज में चार ४ मध्यम में चार ५ पंचम में चार ६ ऋषभ में तीन ७धैवत में तीन, गांधार में और निषाद में दो दो श्रुतियां हैं सो तीव्रा को आदि लेकर छोहनी के अन्त तक शोभा देती हैं ॥ २२ ॥ दीप्ति आदि लेकर राग की पांचों ही जातियां शोभा देती हैं, षड्ज को आदि देकर तीनों ग्राम रचते हैं और इक्कीस ही मूर्छना त्रुटि रहित मिली हुई हैं ॥ २३ ॥ ८ गमक आदि ९ सुन्दरता से युक्त हैं १० यहांसे लेकर इक्कीस के छन्द तक

सालंग४ मानैं७७ ॥ २४ ॥

कहाँ राग घंटा५ रमा६ टक्क७ कहैं७८, पहाडी८ विहंगा९रूप स।
मंत१० पढ़ैं७९ ॥

कहाँ कोकिलैं ११ कोकिलालाप कूजैं८०, प्रगाता कहाँ कर्णाटी
१२ मारु१३ पूजैं८१॥२५॥

कहाँ नाट१४ कल्यान१५ गौरी१६ कुरंगी१७, स सौदामिनी १८
कौमुदी१९ चक्रि२० संगी८२ ॥

बराली२१ कहाँ एल२२ पट्टा२३ऽऽदि बंधैं८३, सबैठाँ ग्रह१ न्यास २
अंसा३दि संधैं८४ ॥ २६ ॥

अहो एकसो अग्ग बावीस१२२ ऐसैं, पुरी मुख्य रागावली प्रान
पैसैं८५ ॥

निबद्ध१ निबद्धा१ऽऽख्य व्है भेद न्यारे८६, अनुप्रासलैं८७ आदि१
मध्या२न्त३ वारे ॥२७॥

गहैं८८ क्वापि व्हाँ पंक्ति१० संख्या गुणा१०ऽऽली, सजैं ८९ क्वापि
त्रेता३ प्रबंधा३ऽऽख्य साली ॥

कहाँ ताल चंचत्पुटैं१ लै क्रमावैं९०, कहाँ चाचपुटैं लै पुटैं२ लीन
लावैं९१ ॥ २८ ॥

कहाँ षट् पितापुत्र३ उद्घट्ट४ कहैं९२, बनैं मार्ग१ तालाख्य यौं
सर्व बहैं९३ ॥

कहाँतालदेशीय२लैमैंक्रमावैं९४,लखोजेजथासंभवीछंदलावैं९५।२९।
कहाँतालश्रीरंग१लैमैंनिकासैं९६,भलेमंठिके२चच्चरी३मंठभासैं९७

रागनियों के नाम हैं ॥ २४ ॥ १ कोयल की अलाप से शब्द करती है ॥२५॥
२६ ॥ २ रागों की पंक्ति में ॥ २७ ॥ ३ चञ्चुपुट से लेकर इकतीस के छंद
पर्यन्त तालों के नाम हैं जिनके लक्षणों का संगीतरत्नाकर के तालाध्याय में
सविस्तर वर्णन है सो वहां देखो. यहां इनकी अत्यन्त विस्तारवाली व्याख्या
नहीं की जासकती ॥ २८ ॥ २९ ॥

कहीं मल्लिकामोद५में मोद कहैं९८, पगे पूर्गा६ ककाल७ त्यौं म-
ल्ल८ पहैं९९ ॥ ३० ॥
कहीं भुम्मरी९ हंस१० झपा११ कमावैं१००, सु लै स्कद१२ त्यौं
सिंह१३ घत्ता१४ समावैं१०१ ॥
तथा चित्र१५ कुता१६रूप१०२ लै एकताली१७, मचैं१०३ ब्रह्म १८
ज्यों रुद्र१९ त्यौं बिंदुमाली२० ॥ ३१ ॥
कहीं इक१ लै१सर्वही ताल सद्दैं१०४, विधा ०पाहके राहके ला-
हु१ लद्दैं१०५ ॥
ठनैं देव आगार घटा१ठनकैं१०६, कहीं झल्लरी२ *कबु३झम्झा४
झनकैं१०७ ॥ ३२ ॥
कहींधामआरामआमोद१खुल्लैं१०८,कहींदारुकेलोलहिंडोलझुल्लैं१०९
कहीं द्वार१ बाजार२ हट्टा३ कँवारी४, सुढारी सजी११०चित्रकारी
१११ सँवारी ॥ ३३ ॥
कहीं कुट्टिमागार५ भंडार६ भासैं११२, नये ओकं७ बासोक ८ के
सोक नासैं११३ ॥
कहीं सधिला९ मग्ग १० शृंगाट११सोहैं११४, कहीं चत्वरा१२ऽऽली
मिली चित्त मोहै११५ ॥ ३४ ॥
कहीं गोख१३ जाली १४ लगे ११६ तोखकारी, कहीं ११७ सौध
१५ संधानिका१६ चित्रसारी१७ ॥
कहीं सुभ्र११८सद्मानिनी१८हस्तिसाला१९,कहीं मदुरा२०वीतिमाला

॥३०॥३१॥*शंख ॥३२॥कहीं पर घरोंमें और १ बागों में सुगंधि खोलते हैं "दूर तक आनेवाली सुगंधि का नाम आमोद है" ०काष्टके चपल हिंडोले ॥३३॥कहीं पर ३छोटे घर और कहीं पर भंडार शोभा देते हैं ४कितने ही नवीन घर और ५शयन घर शोकका नाश करते हैं ६ कहीं गुप्त मार्ग(सुरंग)और कहीं ७चौहट्टे शोभा देते हैं ८चबूतरोंकी मिली हुई पंक्तियां मनको मोहती हैं ॥३४॥९संतोष कारी १०राज सदन (महल) ११मंदिरा गृह १२ गोशाला १३हयशाला में घोड़ों

बिसाला११९ ॥ ३५ ॥

कहीं भित्ति२१लै कित्ति बेदी२२बिलासैं१२०, कहीं अंगना अङ्ग-
ना२३भा प्रकासैं१२१॥

कहीं पुण्यप्रासाद २४ खुल्लैं १२२ पताका२५, रजैं १२३ हेमके
कुंभ२६ज्यों चंद राका ॥ ३६ ॥

कहीं राजती देहलीं२७ गेह पक्की१२४, कहीं अर्गलां २८ ताल २९
खासा१२५ खडकी३० ॥

सुधामैं सने धामके थंभ३१ धारैं१२६, बने तीव्र ३२ गोपानसी ३३
भा बिथारैं१२७ ॥ ३७ ॥

कहीं१२८ दंते३४ मघीवें३५ अट्टी३६ अलिंदी३७, भिधीं सर्बतोभद्र
३८ लैकैं बिछिंदी१२९ ॥

भनैं सिल्पि सोभा१३० कहीं सालभंजी३९, कहीं अंजली कारि-
का४०रंगरंजी१३१ ॥३८॥

की विशाल पंक्तियां हैं ॥ ३५ ॥ कहीं पर दीवारें और १ चबूतरियां बड़ी कीर्त्ति लेकर प्रकाश करतीहैं "विलासः प्रकाशे"इति शब्दार्थचिन्तामणिः॥ कहीं पर घर के आंगन (चौक) में २ स्त्रियां कान्ति प्रकाश करती हैं ३ सुन्दर महलों पर ध्वजायें खुली हैं और जैसे शरद ५ पूर्णिमासी में चंद्रमा शोभा देवै तैसे श्वेत महलों पर ४ सुवर्ण के कलश शोभा देते हैं "शरद की पूर्णिमा की रात्रि में जल विंब के कारण चंद्रमा का रंग लाल होता है" ॥ ३६ ॥ कहीं घर की पक्की देहलियां ६ शोभा देती हैं तथा चांदी की पक्की देहलियां हैं ७ आगल (भागल) ताले और उत्तम खिड़कियां हैं ८ चूना में भीगे हुए ९ तीर "तीव्र नाम तीर का है और देश भाषा में सीधे लंबे काष्टको सेतीर कहते हैं इसकारण यह शब्द बलींडेके अर्थमें प्रतीत होता है"१०सियालें(छादनाधार वक्र काष्ट) शोभा देती हैं ॥ ३७ ॥ ११ खूंटियां १२ झरोखे १३ महलों के ऊपर की अटारियां १४ द्वार के बाहर का चौक १६ चौमुखा (चौपाड़) १५ नामवाले स्थान से लेकर १७ अभिलाषा युक्त परमेश्वर के मंदिर पर्यन्त १८ हाथी दांत आदि की रची हुई पुतलियां १९रंग से रंगी हुई लज्जा युक्त पुतलियां ॥३८॥

सजे१३२कापि सोपान४१ श्रेढी४२ निसैंनी४३, नटैं१३३ नट्टसाला
४४ कहौं कंजनैंनी ॥
कहौं कैंणिका४५।१ थूंल४६।२ उल्लोच४७।३कच्छे१३४, कहौं
पीठँ४८।४पल्ल्यक४९।५आस्तीर्ण५०।६अच्छे१३५॥३९॥
कहौंविप्रमंडैं१३६कथावेद१वादी,कुतौंकापिअद्वैत२अर्प्पैं१३७अनादी
कहौं सत्थ साहित्य३के अत्थ कड्ढैं१३८, कहौं न्याय४की कोटियैं
चाय चड्ढैं१३९॥ ४० ॥
दियैं१४० द्यूतविद्या५ कहौं अक्षदेवी, कहौं मोहमाया६ करैं १४१
सौंठ्यसेवी ॥
कहौं १४२ वापिका१ कुंड२ कासार ३ कूपी४, रुचे नीर नारी भरैं
१४३ भानुरूपी ॥ ४१ ॥
धरे१४४ घँसौ१ कहौं धीरैं२ त्यों गंधधूली३, फबैं१४५ केतकी ४।१
मँल्लिका५।२ कापि फूली ॥
कहौं धूप धूमावली६।३जाल कड्ढैं१४६, चहे सेवती७।४ तब रोलंबै
चड्ढैं१४७ ॥ ४२ ॥
कहौं ब्रह्मचारी१ क्रमैं१४८रीतिं' रागी, कहौं दान अर्प्पैं १४९ गृही

१पत्थरोंके रचेहुए जीने (पगथिये) २ काष्टके रचेहुए जीने और नीसरनिया, ये सब पदार्थ सिल्पियों (कारीगरों) की शोभा बताते हैं और कहीं नृत्य शालाओं में ३ कमलनयनी स्त्रिया नृत्य करती हैं ४ कहीं पर छोटे डेरों ५ बड़े डेरों और ६ चदवों (सामियानों) के समूह हैं ७ सिंहासन तथा बाजोट, ढोलिये (पिलग) और उत्तम ८ बिछोने हैं ॥ ३९ ॥ ९ कहीं पर पण्डित लोग वेदान्त के अनादि अद्वैत मत का उपदेश करते हैं १० साहित्य का अर्थ निकालते हैं ॥ ४० ॥ कहीं पर द्यूत करनेवाले द्यूत करते हैं ११ छली मनुष्य अविद्या की माया फैलाते हैं १२ तालाबों में १३ अपने अपने सदृश पानी भरते हैं ॥ ४१ ॥ कहीं १४ कपूर १५ कुंकुम १६ कस्तूरी रक्खीहुई है १७ बेला १८ सेवती के गुच्छों पर भ्रमर चढते हैं ॥ ४२ ॥ १९ मुक्ति में प्रीति

पंच ५ पागी ॥

जुरे अग्निहोत्री जुहू अग्नि अंचैं१५०, सुधी के कहों नव्य अन्यादि संचैं१५१ ॥ ४३ ॥

कहों आला१ जंगाल२ सिंदूर३ केरे१५२, कहों हेम१ हीरे २ सके रासि हेरे१५३ ॥

कहां नील३ गारुत्मती ४ चैं प्रकासैं १५४, भले पद्मरागा५रूप मुक्ता६रूप भासैं१५५ ॥ ४४ ॥

प्रवाली१७ रसोनी१८ कहों रंग पहैं१५६, कहों पुष्पवंता२ऽऽदिकां तां२ त३।९।४।१०कहैं१५७ ॥

कहों १५८ तैल १ छीरा २ दि लौ स्फाटिका ५।११।६।१२ऽऽरूपा, सगोमेद७।१३ इत्यादि केही समाऽऽरूपा१५९ ॥४५॥

सुहाये कहों सिठ्ठ बानिज्य साजैं१६०, रचे चे कहों हुंन१ निष्कों२ दि राजैं१६१ ॥

कहों लौ कला१ नीवि २ बित्तैं बढावैं १६२, प्रभा क्रय१ क्रैय्या२ऽऽवली कापि पावैं१६३ ॥४६॥

कहों बोहरे१ क्वापि छोरैं१६४ धुरे२कों, कहों के१न रक्खैं १६५ स्वर्धां बाहुरे२कों ॥

करनेवाले ब्रह्मचारी फिरते हैं १ होम की अग्नि का पूजन करते हैं २ कितने ही श्रेष्ठ बुद्धिवाले ३ नवीन विलक्षण यज्ञ का संचय करते हैं ॥ ४३ ॥ ४ पन्ना १५ माणक नामक ॥ ४४ ॥ मूँगा और ६ लहसनियां ७ पुखराज आदि सुन्दर ८ इत्यादि कितने ही नामवाले रत्नों से ॥ ४५ ॥ शोभायमान ९ सेठ वणज करते हैं १०कहीं पर संचय कियेहुए मोहर और ११ रुपये "निष्क व्यवहाररूपके" इतिशब्दार्थचिन्तामणिः॥ आदि शोभा देते हैं, कहीं पर १२ व्याज (सूद) लेकर १३ मूलधन को बढाते हैं और कहीं पर मोल लेने और १४ बेचने की वस्तुओं की पंक्तियां शोभा पाती हैं ॥ ४६ ॥ कितने ही बहोरे धुरको १५सूद छोडते हैं और कहीं पर कितनेही बहोरे १६अपनी ओर अधिक

परार्द्ध१००००००००००००००००००ऽऽदिके गयय गोये प्रकासैं१६६,
कहों श्रेढि१ त्रैराशिकौ२ भन्नि भासैं१६७ ॥ ४७ ॥
कहों चैल चो४ भेद चे चैलकेता, जथा हट्टसोभा रचै१६८लाभ जेता
उमा१ पट्ट२ कार्पास३ रोमा४दि वारे, बनें यों चतुर्द्धा४ कहों के
बिथारे १६९ ॥ ४८ ॥
लसैं१७० आम्र१ मोचा २ कहों द्वार लग्गे, प्रभा दारिमी३ निंबु४
नारग५ पग्गे१७१ ॥
कहों लागली ६ पूर्ग ७ एला८ निकाई १७२, छजे १७३ छत्रिका
गोस्तनी९ लोंग१० छाई ॥ ४९ ॥
झरैं१७४केकहोंसोरभीबिंदु१झीनें,भरैं१७५केकहोंचोदंमामोदंभीनें
दुरघों रूचपें द्रव्य१ यों के उतारैं१७६, कहों गोखतें पुष्प२ के
डोरें हारैं१७७ ॥ ५० ॥
रहे रीझि वारे१७८ कहों लोन१ राई२, कहों बिक्खिके बिंद बंटैं
१७९ बधाई ॥
लसैं१८० मग्ग गेरे दही१ दुब्ब२ लाजा३, रिझावैं१८१ सिंचे सौर
भी वारि४ राजा ॥ ५१ ॥

आये हुए धनको पीछा देते हैं १ परार्ध आदि छिपी हुई गिनती का प्रकाश करते हैं २ लीलावती में कहा हुआ गणित विशेष ॥ ४७ ॥ ३ वस्त्र मोल लेने वाले चार भांति के वस्त्रों का संचय करके दुकानों की शोभा बढाते हैं और उनमें होनेवाले जितने लाभ हैं वे रचते हैं, वे चार प्रकार के वस्त्र ४ तथा ५ रेसम, सूत और ऊनके बनते हैं जिनको फैलायेहुए हैं ॥ ४८ ॥ कहीं द्वार पर लगेहुए सुन्दर ६ केल ७ नारियल ८ सुपारी ९ इलायची १० दाख छाये हुए शोभा देते हैं ॥ ४९ ॥ कहीं पर सुगंधिवाले बारीक बारीक बुंद गिरते हैं और कहीं दूर जानेवाली १२ सुगन्धि के भीगे हुए ११ चूर्ण भरते हैं सो दोनों ओर से इसप्रकार के द्रव्य १३ दुलह पर डालते हैं १४ फूलों के पुञ्जे डालते हैं ॥ ५० ॥ १५ पके हुए चावल "दही, दूब और पके हुए चावलों का डालना मंगलीक मानते हैं" और सुगंधि के जल से सींचकर राजा को प्रसन्न

बिस्यो भूप बुंदीपुरी इक्खि ऐसी, कहीजाइ जोलाइ सामस्त्य कैसी
बिधा बैदिकी१ लौकिकी२योग्य लही, सबै भूप जे प्रीतिकी रीति
सही ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

परिकर द्विरदमतोलितें, सबिधि भिन्न हुव सर्व ॥
दंपति३ अंचलपर्व जुत, पेठे सह्त पर्व ॥ ५३ ॥
उपयमं देव१न अर्चि इम, वलि गुरु२जन पय वंदि ॥
अंचल छुटि निज निज अयन, आये उभय२ अनंदि ॥५४॥
निज परिकर सब हित निरंत, वलि प्रासाद बुलाइ ॥
कवि१बुध२भट३सचिवा४दिकन, खिन दिय सिक्खखुलाइ ५५
करि भोजन नर्तन क्रिया, लखि कछुकाल ललाम ॥
इम अवसर सहिय सयन, राजराज प्रभु राम२०१४ ॥५६॥
जग्गि समय सूचित जथा, नित्य१ असन२ करि नाह ॥
बुध१कवि२भट३सचिव४नबिलासि, लिय संसद रसलाह५७

॥ षट्पात् ॥

सुनि१लखि२संसद सुपहु काव्य१ नर्तन२ आदिक क्रम ॥
रायं बिबिध दै रीझ रायं बढि चाय मनोरम ॥
समा अनंतर सबन कानि लोकन व्यवहितं करि ॥

करते हैं ॥ ५१ ॥ १ उस सब पुरी का वर्णन कैसे किया जासकता है "यहां लेखक दोष से सामर्थ्य के स्थान में सामस्त्य होजाना पाया जाता है जिसका अर्थ है कि सब पुरी का वर्णन किस शक्ति से कहा जावै अर्थात् इस के वर्णन की शक्ति नहीं है" ॥ ५२ ॥ परगह के लोग २ हाथीपोल से जुदे हुए ३ पति पत्नी दोनों ४ वस्त्र के गठजोड़ सहित ५ समय साधकर भीतर प्रवेश हुए ॥ ५३ ॥ ६ व्याह के देवताओं का पूजन करके ॥ ५४ ॥ फिर हित में ७ नियुक्त होकर अपनी परगह के सब लोगों को महल में बुलाकर ८पंडित ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ९ सभा के रस का लाभ लिया ॥ ५७ ॥ १० धन ११ राजा को सुन्दर उत्साह बढकर ५ अदब (संकोच) वाले लोगों को दूर करके

सकलबयस्यन सहित सकल गुन पठन समुद्धरि ॥
बलि इम प्रदोस सध्या३बिरचि रत्ति कछुक सबयस्य रहि॥
लहि असन जाइ जननी निलयं जोग्यसयन बिलसैंजुगरहि
इत धात्रेय अमात्य कृष्णाराम सु बढते क्रम ॥
रचि सिवनाथ१९ अमृतराम२२ सम्मद सभव सम ॥
पतिन सह आपान१असन२ बिहरन३ आखेट४न ॥
सर१उपवन२ प्रासाद३ मुख्य दिखवन झुकाइ मन ॥
सब स्वीय आधिप परिकर सहित प्राघुनं गन इम घस्र प्रति
बिलसन बढाइ रक्खे बिबिध कति मासन करि लाड कति॥५९॥
रूपराम१ सरदार२ बिप्र१ ऊरुज२ अमात्य बिय२ ॥
स्वंसुता बापज सत्थ बेय पेंहु मान सग दिय ॥
तिनहिं बुल्लि धात्रेय सुमति सिवनाथ१अमृत२सह ॥
किय पट्टा लिपि कथित महारानिय हित अति मह ॥
पुर हिंडउली१नवगाम२ पुनि इत पुर बच्छोजा१दि इत ॥
कर अयुत पच५००००सह ग्राम कतिसचिवनतिन्हअप्पियसहित६०
उन महिप तह अमल पट्ट रानिय१ सासन पागि ॥
इत प्राघुनं गन अखिल लोक मेरव सम्मद लागि ॥
प्रभु भट१ सचिव२न प्रथित लाड अतिसीम लहाये ॥
कतिक पेंच्छ इम कहि प्रीति मरुपुर पहुँचाये ॥
इत भूप सकल गुन सप्प सन उन्नति लहि प्रत्यहं अधिक

१समान अवस्थावालों सहित२अपनी समान अवस्थावाले३माता के स्थान में ॥१८॥४धायभाई ५हर्ष उत्पन्न होने से ६पानगोष्ठी (मद्यपान)७पाहुनों के समूह को ८ प्रतिदिन ॥ ५९ ॥ ९ वैश्य १० अपनी पुत्री के साथ ११राजा मानसिंह ने दहेज में भेजे थे १२पट्टा लिखकर विदित किया ॥६०॥ सब १३पाहुने लोग १४ मारवाड़ियों ने १५ कितने ही पक्ष ऐसे मिजाजकर १६ जोधपुर में १७ प्रतिदिन

बुधपन वयस्य[1] गनतँहु बढि सब पटु हुव मति साहसिक ६१

करन अग्घ बुध३ कविन२ बहुत हित पटु३न बिबेचन ॥
स्वगुन सिद्ध भट४ सचिव५ सद्धि हित रस अभिसेचन ॥
माधव[2]२ इम गत महत सुक्र[3]३ आगत समाज सह ॥
उचित समय उपहारं बिभव बिलसत दिनदुल्लह ॥
प्रति जन बदान्य रीझत प्रगुन मुष्ट सगुन मन घन मुदित ॥
इम अस्थिपाल अन्वय[6] अरुन उँदय अद्रि[7] बुंदिय उदित ६२

घनाक्षरी॥ सेखाउत स्यामसिंह जुंझुन नगर नाह,
कूरम कुहर्क[8] मुख्य भ्रात१ रु भतीज मारि ॥
आप पाइ पत्तन बसाऊ गल अंगमि रु,
धिग्गु[9] चित धीठ भयो धूतन धुरहिं धारि ॥
ही गुलाबकुमरि[10]२०२।२ तनूजा तास ज्ञात गुन,
सगपन ताको कर्यो प्रभुसौं हित प्रसारि ॥
जोधपुर जाइ बर बिदालौ सिधारे सुनि,
बुल्ले गृह व्याहिबे बडे जव मैंड बिथारि[11] ॥ ६३ ॥
तब सुचि[12]४ सुक्र६ मध्य२ रिक्त१९ पै सुमह तानि,
व्याह पुब्ब[13]१ बरने सबै बिधि सधाइ सिवै[14] ॥
केदारेस थान ढिग श्रीजित रचित कंम्र[15],
आठहय सिकार अट्ट[16]१ निबासि सुरेस[17] इव ॥

१ समान अवस्थावालों से ॥ ६१ ॥ २ वैशाख मास गया ३ ज्येष्ठ मास आते ही ४ सामग्री ५ अपने गुणों से सब के मन चुराकर ६ अस्थिपाल के कुल का सूर्य ७ बुंदी रूपी उदयाचल पर उदय हुआ ॥ ६२ ॥ ८ ठग कछवा हे ने ९ धिक्कार योग्य १० गुणों को जाननेवाली उसकी पुत्री का ११ उत्सव बढाकर ॥ ६३ ॥१२ आषाढ सुदि १३पहिले विवाह में वर्णन किये हुए सब १४ मांगलिक कार्य १५ सुन्दर १६ जिसका सिकारबुरज नाम है वहां निवास किया १७ इन्द्रकी भांति

कज्ज विधि साधि मात वहुरि बिधेय कारि,
*चक्र लै चलत देखिवेकों जुरे देव †दिव ॥
थेलिन खुलाइ ताही थानसों ‡बसुन बुद्धि,
सिंचे काव कृष्णराम सुमति महासचिव ॥ ६४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ रामसिंह चरित्रे विहितयोधपुरविवाहरामसिंहबुन्दीपुरप्रवेशसमयबुन्दीवर्णन सेखावाटीविसाऊविवाहार्थप्रयाणवर्णन सप्तमो मयूख ॥ ७ ॥
आदित एकोनसप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूख ॥ ३६९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ आर्या ॥

विधि सव मद्धि विवेकी, किय सिव केदार पोत दल पहिलो१ ॥
कविजन घन१ जनु केकी२, लसि सम्मर्द रीझ लैन लगे॥ १ ॥

बेताल ॥ केदार ईस निकेत प्रभु कहँ सव विधेय सधाइ ॥
धात्रेय कृष्ण अमात्य धुरधर महा प्रमेय मचाइ॥
पोगंड१ जात किसोर२ प्रकटत अर्ह सव उपहार॥
वय तुल्लि तुल्लि दिखाइ वहु विधि देय देन उदार॥ २॥

* सेना लेकर चलते समय † आकाश में ‡ धन बांटकर॥६४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में, बुंदी के भूपति रामसिंह के चरित्र में रामसिंह के जोधपुर विवाह करके पीछे बुंदी में प्रवेश होते समय बुन्दी के वर्णन का और सेखावाटी मे बसाऊ विवाह करने के अर्थ प्रयाण करने के वर्णन का सातवां ७मयूख समाप्त हुआ॥७॥ और आदि से तीन सौ उनसठ ३६९ मयूख हुए ॥

१ सेना का पहला पड़ाव किया २ मेघ से मयूरों के ३समान कविलोग हर्ष युक्त होकर रीझ लेने लगे ॥१॥ ४केदारेश्वर नामक शिव के स्थान में ५प्रभाव उत्पन्न करके, पौगण्ड अवस्था (पांच वर्ष से लेकर दश वर्ष की अवस्था का नाम पौगण्ड है)जाकर६किशोर अवस्था(दश वर्षसे लेकर सोलह वर्ष पर्यन्तकी अव स्थाका नाम किशोर है)के प्रकट होने पर७पूजनीय तथा योग्य सामग्रीकरके८दान

वहुरीति इम बसु बिंद बुद्धिन पात्र जन मन पूरि ॥
रचि भा द्वितीय२बिबाह बिरचन सज्जहुव सब [1]सूरि ॥
बुध बिप्र१ [2]सूत२ रु [3]मागध३न [4]अंज सुमति [5]बंदि४न सत्थ ॥
इह दै अनेक बिधान उल्लसि इक इक्कहिं अत्थ ॥ ३ ॥
निज [6]रंठ जोलग संक्रमैं नृप चाहि तोलग चित्र ॥
पिक्खाइ भाइ अनेक [7]पाँटव मान [8]चाटव मित्र ॥
बुंदीपुरी सन त्याग बंटत संक्रम्यों पहु [9]सूरि ॥
मग लौनहारन तर्कुकन मचि भीर जस रैव भूरि ॥ ४ ॥
जसलेत देत अनेक बिध बसु संक्रमें तिम जन्य ॥
इन१ भिदा [10]इंन२ छत्र१ चामर२ [11]अंकै अंकन अन्य ।
सब बस्त्र१बाहन२भूखना३दिन और रीति समान ॥
करते चले प्रभु व्याह कौतुक किति कानन कान ॥ ५ ॥
जे सूत१ मागध२ बंदि३ लै [12]बसु१ सिक्ख२ गेहन जात ॥
उनतैं अतीव प्रसार ओरन [13]अध्वमैं अधिकात ॥
नमि सेस जाचक जीत बाचक पंथ होत निहाल ॥
प्रति[14]पांत यौं [15]बसुव्रात पूरन संक्रम्यौं छितिपाल ॥ ६ ॥
[16]मैंय१ [17]के चले हय२ के चले गय३ के चले बय मत्त ॥
पहिलैं कहे [18]मैंय१ अंग उन्नत जंगली जयपत्त ॥

॥ ३ ॥ १ पण्डित २ चारण ३ बड़वा भाट ५ स्तुति करनेवाले भाटों सहित ४ चले ॥ ३ ॥ ६ अपने राष्ट्र (राज्य) में चले तहां तक ७ चतुराई से ८ मान और मित्रता के प्रिय वचन बोलकर, याचकों की भीड़ होकर यश का बहुत ९ शब्द हुआ ॥ ४ ॥ इन बरातवालों की भिन्नता दिखाने के कारण १० राजा छत्र, चमरों के ११ चिन्हों से चिन्हित रहा ॥ ५ ॥ १२ धन लेकर १३ मार्ग में १४ मुकाम मुकाम प्रति १५ धन का समूह देता हुआ ॥ ६ ॥ अवस्था में मस्त १७ कितने ही १६ऊंट, घोड़े और हाथी चले जिनमें प्रथम कहेहुए ऊंचे शरीरवाले जंगल (बीकानेर के) देशके पैदाहुए जय को प्राप्त करानेवाले १८ऊं

कतिबेग पूर चलाक बासर इक१में सत१००कोस ॥
परिविष्ट दुंदुभि सिष्ट मस्तक प्रच्छदे सिरपोस ॥ ७ ॥
जुगर कन्न धावन बाह पावन छन्न जेवर जाल ॥
थल उच्च१ नीच२हु नाँ ढरैं जिनपैं भरे जलथाल ॥
गोधेर आनन तिक्खता गुन पीत अजलि अभ ॥
थकिबो न जानत ढानँ तानत बाहु देउल थम ॥ ८ ॥
आरूढ अक लगाइ मस्तक जाइ बान उडान ॥
मिलि अग्गि सोर घने चले जनु बान इक१ दिस मान ॥
मग सूचनी ललि बाहु बजत तार घुग्घरमाल ॥
बहु दूर जानत जावते तिन्ह बेग धाव बिसाल ॥९॥
लघु लूम संहित यौं लसैं परि पैंट्ट रज्जुव पास ॥
अटक्यो समीर कि ताहि खैंचत अध्व पहुँचन आस ॥

वेग से पूर्ण १ एक दिन में सौ कोस चलनेवाले जिनकी पीठ पर नगारे २ बन्धे हुए और मस्तक ३ श्रेष्ठ शिरपोशों से ४ छायेहुए ॥ ७ ॥ जिनके दोनों ५ छोटे कान प्रशंसा पाने योग्य जेवर से ढके हुए, जिन ऊंटों पर ऊंचे नीचे स्थलों पर भी थाल में भराहुआ जल नहीं गिरता ६ जो गोह (गोहिली) के समान तीखे मुखके गुण से अञ्जली (धोबा तथा खुबाचिया) में पानी पी लेते हैं ७ जो दाब (ऊंट की शीघ्र चाल विशेष) को फैलाकर थकना नहीं जानते वे मंदिर के थम्भों के समान भुजोंवाले ॥ ८ ॥ ८ सवार की गोद में मस्तक लगाकर तीर के समान उड़े जाते हैं और जैसे बारूद का भराहुआ बाण ६ अग्नि के मिलने से एक दिशा में जावे तैसे जाते हैं मार्ग की सूचना करनेवाली १० ललित (सुन्दर) घूघरमाल भुजों में ११ ऊंचे स्वर से बजती है, वे ऊंट शिघ्र वेग की दौड़ से जाते हुए दूर जाकर नजर आते हैं ॥९॥ १३ रेसम की डोरी से बंधी हुई छोटी १२ लूम (तंग के पास बंधा हुआ रेसम या ऊन का गुच्छा) ऐसी शोभा देती है कि मानों ऊंट को १५ मार्ग में पहुँचने की आशा से रुका हुआ १४ पवन उसको खैंचता है [ऊंट जब वेग से जाता है तब लूम पीछे को रहती जाती है सो मानों ऊंटसे पीछे रहजानेवाला पवन उसको पकड़कर उसके सहारे से ऊंटकी बराबर होना चाहता है इसीसे वह लूम पीछे रहती है] भूमि पर ऊंटके चरणों के चिन्ह होते जाते हैं सो मानों अपनी कोमल और छोटी

मृदु न्हस्व पायतलनि मंडत छोनि मप्पन छाप ॥
अति लोल बाजिन लज्ज आनत आवजाव अमाप ॥ १०॥
उपविष्ट इडुर१ बाहु२ अंगन मध्य के अवकास ॥
भ्रूस धावते कढिजाइ सूलिक मोक खंदुक भास ॥
लगि पट्ट लूम दुपास लंबित गुंफ के गजगाह ॥
प्रतिपास पब्बयके कि रंजित बारि च्यारि प्रवाह ॥ ११ ॥
मढि तोर१ पिट्ठि पलान दोरव२ कृत्ति३ कंबल४ मेल ॥
ककुदंग ले बिच जे कसे मखतूल तंगन मेल ॥
कृत कांति रजत नक्कईल१न राजती कटि कान ॥
पगि बंध पट्ट बिचित्र रस्सिन जे इले अतिप्रान ॥ १२ ॥
जमेल१ नमेल२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
गन घंटिका बजि तोर हार१ हमेल२ शृंखला३ ग्रीव ॥

१पगतलियों से २ भूमि को नापने की छाप लगाना है कि यहां तक की भूमि नापली गई, वे ऊंट अमाप आवजावमें अत्यन्त३चपल घोड़ों को लज्जित करते हैं ॥ १० ॥ ४ आसण में और ईंडर व भुजों के बीच में जिनके अवकाश (छेटी) है अर्थात् जिनकी पीठ के आसण लम्बे और भुजों व ईंडर के बीचका भाग छेटा बाला है और जैसे ७ बिलको छोडकर ६ खरगोस निकले तैसे शोभायमान होकर ५ शीघ्र दौड़ते हुए निकलजाते हैं ८ जिनकी पीठ पर दोनों ओर लटकती हुई ८ रेशम की लूमें और कितने ही १० गुथेहुए गजगाह लटकते हैं सो मानों ११ पर्वत के दोनों ओर जल का प्रवाह गिरता है ॥ ११ ॥ १३ काष्ट १४ कोमल चर्म और कम्बल के मेल से बने हुए १२ चांदी के पलानों से जिनकी पीठ ढकीहुई है, वे पलान १५ कुभी (मोरों के ऊपर के मांसपिंड) को बीच में लेकर १६ रेशम के तंगों के मिलाप के साथ कसे हुए हैं और नाकों में १७ चांदी की १८ नकेलें (गुरबाणें) और कानों में चांदी की १९ कड़ियां शोभा देती हैं, ये बडे बलवान (ऊंट) २० रेसम की विचित्र रस्सियों से कसेहुए जाते हैं ॥१२॥ गले में २२ उच्चस्वर से २१घूघरे बजते हैं और गरदन में हार, २३ हालरा (हारविशेष) और सांकलियां बजती

सह भेक१ झिल्लिरन जोर सोर कि ओरओर अतीव ॥
जिनपैं सु वाजिनके चढाकनके लुभे मन जाइ ॥
छम हाल कौतुक काल चाल अनेक चित्रन छाइ ॥ १३ ॥
पृथुभाल१ वेग२ बिसाल उच्छ्रित अक्षिकूट३ प्रदेस ॥
वतरात गात दिपात वातन वाततेंहु बिसेस ॥
वलमैं क्रमेलक यों चले कति जान छुट्टत बान ॥
बिलसत वाहन दाबि वाहन भुम्मि१ व्योम२ विमान ॥१४॥
कति भारवाहक धार लाइकें पार गाहक पंथ ॥
नहि लारवाहक औरनाहक जे सहैं गति ग्रथ ॥
मुख मध्य१ मंल्लन फुल्ल गल्लन आनि बाहय२ मंतिक ॥
घटना कवर्ग१ चतुर्थ४की घन ठानि गज्जत ठीक ॥ १५ ॥
धवली करैं अँवली अटे धर बुट्ठि फेनन वीर ॥

है सो मानों चारों ओर १ मेंडक और झिल्लियों का अत्यन्त कोलाहल होता है, जिन ऊंटों पर चढनेवाले २घोड़ों पर चढनेवालों के मनजाते हैं ३उनकी समर्थ चाल में क्रीड़ा के समय की चाल से अनेक आश्चर्य छाते (होते) हैं ॥ १३ ॥ ४ जिनके बड़े ललाट, बड़ा वेग और ५ नेत्रों के गोखों का स्थान ऊंचा उठा हुआ है उनके शरीर बतराने से शोभा देते हैं (मस्त ऊंट को बतलाने से वह गर्जना किया करता है) और चलने में ६ पवन से भी विशेष हैं "वा गतिगं धनयो" इस धातु से वात शब्द का अर्थ चलना है उस सेना में कितने ही ७ ऊंट ऐसे चले ८ मानो बाण छूटा, वे ऊंट भूमि के वाहनों को और आकाश के विमानों को दबाकर विशेष शोभायमान हुए ॥ १४ ॥ उन ऊंटों में कितने ही ९ लाम धारण करनेवाले भारको उठानेवाले और मार्ग के पार होने के १० ग्राहकी ११ जिनके साथ में कोई नहीं चलसका, वे चलने में गुथे (लगे) हुए १२ वृथा प्रेरणा को नहीं सहन करते और मुख में १३ दांतोंके भीतर १४ गालोंको फुलाकर १५ शरीरके अवयव (गालों के एक हिस्से) को मुखके बाहर लाकर कवर्ग के १६चौथे अक्षर 'घ' की घटना कर के गाजते हैं(घ घ शब्द करके, और उस भागका आकार भाग घ के समानही होता है)॥१५॥ जिस भूमि में उन ऊंटों की १७पंक्ति चलती है उसको मुखके झागों के १८समूह

अनखे लगैं मग उट्ठि अप्पहि पिट्ठि धारि पहार ॥
जिनके दुरपास कसे सलीतन भार हिंडत जाइ ॥
असुमंत तोलत अल्प अद्रिन ज्यों तुला अधिकाइ ॥ १६ ॥
उँरुचारमें गुरुभार उच्छलि यों लगैं प्रतिअंग ॥
करि१ कुम्भर२ पच्छन लै तुले परखैं कि राजपतंग ॥
अंपटी१ कनात२ बितान३ थूल४रु कोशिका५ चिक६आदि
बिनु [10]बिट्ठि पिट्ठि बहैं रहैं रय नाद [11]उद्धत नाहि ॥ १७ ॥
लहि मंच१ आदि१ [12]संमूहनी२ लगर२ [13]अध्वके उपहार ॥
लदवाइ सर्व [14]अखर्व गर्व तजैन स्वामिन लार ॥
जिन संगको [15]खिनें कुंचके तिनकों[16]हुँ क्यों रहिजाइ ॥
बहिजाइ अतिभर१ श्रांतपत्त२[17]न तो बाह्य बनाइ ॥१८॥
जिनतैं बसैं पुर [18]रत्ति पात सु प्रातलों उठिजाहिं ॥
बसि सोहिसोहि बहोरि मंगल होत जंगलमाहिं ॥

घर्षा करके श्वेत कर देते हैं २ पीठके ऊपर पर्वत रूपी बाझको धारण करके १ क्रोधित होकर आपसेआप उठकर मार्ग लगजाते हैं, उन ऊंटों के दोनों ओर कसे हुए सलीतों का भार हींदता जाता है सो मानों ३ प्राण धारण करनेवाला तराजू पर्वतों को तोलता है ॥ १६ ॥ ४ लंबी (शीघ्र) चाल में उनके ऊपर लदा हुआ बडा भार उछलकर ऐसा शोभा देता है मानों हाथी और कच्छपको अपनी पांखों में लेकर ५ पक्षिराज (गरुड़) उनकी परीक्षा करता है [वाल्मीकि रामायण में यह एक कथा है कि लड़ते हुए एक हाथी और कछुएको, गरुड़ अपनी पांखों में लेकर उडगया था] ६ पड़दा ७ ७ चंदवा (सामियाना) ८ बडा डेरा ९ छोटा डेरा आदि को १० भार उठाने के विना ही क्लेश के उस भार को पीठ पर उठाकर वेग में उद्धत ११शब्द करते रहते हैं ॥ १७ ॥ मांचा (पिलंग) से आदि लेकर १२ बुहारी तक १३ मार्ग की सामग्री १४ बडा गर्व करते हैं १५ कूच करने के समय १६ तृण भी बाकी पड़ा नहीं रहता १७ वे ऊंट श्रम युक्त होने पर भी अत्यन्त भारको उठाकर बाहर नगर बनादेते हैं ॥ १८ ॥ १८ रात्रि का पड़ाव होने पर जिनसे पुर बस जाता है और प्रभात तक वह पुर उठजाता है १९ वही पुर वारंवार बस कर

वहु यों चलै मय१नारवाह१ रु भारवाह२ दुर भेद ॥
पहु त्यों चलै हय२ मानके पवमानके छकछेद ॥१९॥
धट१ अगर२ वंग३ कलिंग४ गुर्जर५ कच्छ६ जगत७धाम ॥
कंबोज८वाल्हिक९पारसीक१० वनायु११ भवं जवकाम ॥
तातार१२चीन१३हुखार१४ताजिक१५अर्व१६रूम१७इरान१८
खुरसान१९रूस२०फिरंग२१खेत भये नये वय मान॥२०॥
जिनतैं प्रयोजन भिन्न०है जयधार पंचक५धाव ॥
आखेट१ आहव२ अटि३ वन४ मग५ साध्य सिद्धिप्रभाव ॥
मुख वंजू गुंफित केसरावलि भिन्न भिन्न समान ॥
इक१०है अधोगत लव अहि मनिमंत वहुफन मान ॥२१॥
समान१ नमान२ अत्यानुप्रास १॥
जिनकेंप्रफुल्ल खुरे वहिर्नुत नासिकाग्र जनात ॥
मनु ०हीत०है जित ताहिमें घुसिजात वातें नमात ॥
क्रम पत्र तिच्छन कर्तरी कि करैं गतागत कर्ण ॥
मनवेग कहत जानि सत्रुहिं ठानि सत्व मेंइर्ण ॥२२॥
नुत पाइ नाइ हैं पच्छटा कृत जेरवध निरत्थ ॥
सिथिलत्व धारत सिंजनी जनु उत्तरे धनु सत्थ ॥
जर गुफ नेत्र पिधानिका तिइहरी लसैं छवि जुत्त ॥

जगत में प्रगट होजाता है, इस प्रकार के १मनुष्यों को और भार को लेजाने वाले दो तरह के ऊंट चले और इसी प्रकार पवनके घमंड को काटनेवाले राजा के २ घोड़े घाए चले ॥ १९ ॥ ३ इन देशों के जन्मे हुए ॥ २० ॥ ४ पांचों गतियों में जय को धारण करनेवाले ५ हीरों आदि से गुथी हुई केसवालियां६ मणि युक्त बहुत से फणोंवाले सर्प के समान ॥२१॥ बाहर झुके और ७ फूलेहुए फुरणों के अग्रभाग जनाते हैं ८ लज्जित होकर ९ पवन नम्र होकर घुसता है १० तीखी करतणी के पानों के समान कान गतागत करते हैं ११ पराक्रम का समुद्र ॥ २२ ॥ स्तुति योग्य १२ कंधे को नमाकर १३ दांवापन १४ जरवध रूपी प्रत्यंचा १५ नेत्रों के ढकने का वस्त्र (घजाळी)

जवनीनके त्रि३कतैं करे जनु [2]गंल्लकी हरि जुत्त ॥ २३ ॥
[3]पबि गंड१ मंड२न भा करैं नत१ वृत्त२ गोधिं प्रदेस ॥
[5]जयलेख पट्ट कि जानि जो [6]उपदा धरैं मन एस ॥
जिन्ह हिट्ठ हिंदत जेबदै लरलूम मुत्तिय जाल ॥
मनु मूर्तही जव द्वार [7]अर्थिन बद्ध बंदनमाल ॥ २४ ॥
बय जोर तोर मरोर मंडत मात खंधन [8]छाम ॥
छक जानि जुब्बनकों भरैं बढि पारि प्रतिबल छाम॥
जिन्ह पास पट्ट [10]कुंसा लसैं भृकुटी भिरी अधिजीन ॥
खर पक्व [11]आयस शृंखला सह लास्य [12]आस्य खलीन॥ २५
कलनां[13] बिसाल [14]कुलाल चक्र कि द्वैरहि पुठ्ठन दोर ॥
अधिपिट्ठि सन्नतं[15] मध्य आसन जेब मासन जोर ॥
नतभाव यों सहजैं लसैं तस ज्यों दुरतंगन नंद्व[16] ॥
पसमीन पीन अधीन बैठक लीन जीन प्रबद्ध ॥ २६ ॥
बढि व्योम झंपत होत चामर नाचि सौंचि बिसेस ॥
गति अच्छके गुनज्यों उडैं चउ४ पच्छके पंतगेस ॥
[19]चंल बेरं[20] नच्चत बेर नच्चत लुम्म भार चउक्क४॥

१ तीन पड़दों की ओट में २ शालिग्राम विष्णु सहित ॥ २३ ॥ कपोलों के ऊपर ३ हीरों के कलश और ४ ललाट के झुके हुए भाग पर भूषण का गोलाकार पत्र शोभा देता है सो मानों मनके वेग को जीतकर मन के ६ भेट कियेहुए ५ विजय पत्र को धारण करते हैं, जिसके नीचे मोतियों की जाली शोभा देकर झूलती है सो मानों वेगने मूर्तिमान् होकर ७ याचकों के अर्थ बंदनमाल बांधी है ॥ २४ ॥ ८ गरदन बाथ में नहीं समाती ९ समर्थों को दुर्बल करके १० रेसम की बाग का मस्तक जीण के ऊपर भिड़ाहुआ ११ पक्के लोहे की सांकलियां सहित १२ मुखमें नृत्य करती हुई लगाम ॥ २५ ॥ १४ कुम्भार के चाककी मोटाई की १३ गणना के समान जिनके दोनों पुट्ठोंका फैलाव १५पीठके ऊपर आसण का मध्यभाग झुकाहुआ१६बंधा हुआ॥२६॥१७ विशेष वक्र होता है १८ चार पांखोंवाला गरुड़ उड़ता है २० नचने के समय चारों गजगाहों के भार सहित १९ चपल शरीर भी नचता है

मतजानि सिक्खत नच्चको जह एहु आनि मउक्के ॥ २७ ॥
प्रतिफाल केकि कलाप फुल्लन वालहस्त प्रसार ॥
फवि के रहे छवि के गहे बनि तेहु चामर फार ॥
खुर पक्क लोह कटाहसों खर यों भिरी खुरताल ॥
किमु सत्रुके सुत मद१ कों तम२नें ग्रस्यो ततकाल ॥२८॥
इम लग्गि अंघ्रि छुवें इला जिम अग्गि दज्झत जात ॥
वलि होत त्यों चपलत्त्व निर्जित चचला१ मन२ वात३ ॥
जित सत्थि सूचन ह्वै मुरैं तित नोत्थि देर जनाइ ॥
जव मग्ग ठानत वग्गकों सिथिलत्त्व आनन जाइ ॥ २९ ॥
चपलत्व चक्रमके चवौं चिरैं वातचक्र१ चलाव ॥
धरनी धुजावत धारि केचेन नागपेच२न धाव ॥
लसि के कुविंदन वान भान अटैं अटरनि३ लेत ॥
वपपैं चढे जपपैं वढे कति भीक४ क्रम संमवेत ॥ ३० ॥
भरि फूलआदस ५ के१ तिरैं धर२ ज्यों फिरैं सैर१ मग२ ॥
इम लै पटा६ कति अैनं श्रीसेन देन दीसन अग ॥
कतिझप७ धारन लै तरारन जात वारन कुहि ॥
जिन्ह वेग मारुत जोर दिठ्ठिहु दै महावत मुहि ॥ ३१ ॥

१कथा किये हुए मृगलोक समय का लेकर माना पे जड़ गजगाव भी नृत्य को सीखते हैं "यहां 'म' मृगलोकका और उक्त कथन किये हुए का वाचक है" ॥२७॥ २मलग मलग प्रति मयूर पुच्छके समान ३पालछा फूलता है ४चमरों के समूह के समान पनकर ५ पक्के लोहे की खुरताल, मानों अपने शत्रु (सूर्य) के पुत्र शनैश्चर को ६ राहुने पकड़ा है ॥ २८ ॥ ७भूमिको चरण ऐसे छूते हैं ८पुनि चपलता में विद्युत्, मन और पवन पराजित होते हैं ९देरी नहीं जनाते ॥ २९ ॥ पवन के गोटे (घघूलिये) के समान १० चपलता के कारण इधर उधर फिरते जाते हैं ११ कितने ही नागपेचों से दौड़ते हैं १२ जुलाहे [वस्त्र बुनने वाले] के तीर के समान अटेरने फिरते हैं १३ मिले हुए ॥ ३० ॥१४टूटे हुए तीर के समान फूलआदस फिर कर भूमि को तिरते हैं १५ हिरणों की १६शोभा से १७ हाथियों को कूदजाते हैं १८ जिनके पवन के जोर से महावत के नेत्र मिच

खुरतार मारन ग्राव[१] बारन खेरि[२] फार फुलिंग ॥
प्रकटात तास प्रकास पास प्रदेस भासन पिंग[३] ॥
पखराल चातुरि देत के नखराल पातुरि पाय ॥
कति साचि कच्छत तेगकीगति बेगकीगति काय ॥३२॥
पलटाति छाइ छटा करैं कुलटा कटच्छ[४] प्रमान ॥
मिटिजाइ जो लखि मीन१ दर्पन बिंब२ अंबक३ मान ॥
सननंकि नत्थत दम्यलों[५] फबि फुल्लि प्रोथन स्वास ॥
कर कन्ह[६] नत्थित याल जाल कि काल व्याल प्रकास ॥३३॥
प्रमान१कमान२अन्त्यानुप्रासः १ ॥
त्रिकको[७] नमाइ कितेक उच्छत ऐंड[८] अंग तुरंग ॥
कमनैत किति गिनैं न जिन्ह जव रोकि रंककुरंग[१०] ॥
हरते हिंडोरन हौंसदोरन और घोरन दाहि ॥
गति एक मंडत केक डोकर[११] टेक मोकर[१२] गाहि ॥ ३४ ॥
इत१ की मुरी इत२ मानबे तन आन देतन अंखि ॥
पटु मग्ग अग्गल जान देतन मान[१३] एतन पंखि ॥
मन सादिके[१४] जित जात छुट्टि गुलाल मुट्ठिय मान ॥
उततैं तथा इत बाह अंचित आत बात उडान ॥ ३५ ॥

जाते हैं ॥ ३१ ॥ १पत्थरों के समूह से २अग्नि कणों का समूह छोरते हैं जिनकी कांति से समीर का प्रदेश ३ पीला दीखता है ॥ ३२ ॥ ४ कटाक्ष के समान ५ नेत्रों का घमंड ६ जैसे नाथने के समय वृषभ (बैल) की नासिका बोले तैसे फूलेहुए फुरणों में श्वास बोलता है ७ कृष्ण के हाथ से नाथेहुए काली नाग के समान ॥ ३३ ॥ ८ कमर को झुकाकर ९ शरीर के घमंड से १० जिनके वेग से दीन हिरणों को रोकने में कमनैत कुछ कीर्ति नहीं गिनते ११ कूदने में हठ करके १२ कंगुरों को दबाते हैं ॥ ३४ ॥ शरीर के इधर से उधर मुड़ने में नेत्रों को भी नहीं आने देते अर्थात् उनका मुड़ना दीखता ही नहीं और वे चतुर घोड़े मार्ग में किसी को आगे नहीं जाने देते और पक्षियों के प्राणों का १३ निसासा लेते हैं १४ जिधर सवार का मन जावे उधर ॥ ३५ ॥

बिधि बग्ग मोर्टन व्योम जात बिख्यात त्रोटन वट्ट॥
पटरी सहायक लै टरी नटरी कि उद्दव उट्ट ॥
जिन्ह भेट लग्गत फेट चक्रित केट गे रहि जाइ॥
जिनकी कटीपर पै पटी पर जे छदित्त्व जनाइ ॥ ३६ ॥
कति लेत कच्छिप मोर मच्छिप पैर वरच्छिस ग्राम ॥
प्रतिधाव आवत पाव जे धरि पाव चिन्हन धाम ॥
जुरिजात है कति ज्यों कि संदिय१ संग तक्रिय२ ओह ॥
जिन्ह जाह हानत होइ मानेत भक१ सकैर हु ईहै ॥ ३७ ॥
घिसि चक्र संकट जात वीथिन चैंक सक्रम सिद्ध॥
डम केक वैंट विवेक ठेकत छोनि छेकत इद्ध ॥
मृधमें मतगँन पिट्ठि प्रगन आनिकैं असवार ॥
हनि ते निपादिनैं बच्छ जे छुरिका वहावन हार ॥ ३८ ॥
क्रमके वढे जयके पढे भटभेरदे ततकाल ॥
सरकात जे रैथके चढें जपके पढे हठसाल ॥
कति तोप गोलन संगके परखे स्वभाव प्रमान ॥

आकाश में जाते समय १ बाग मोड़ने में पक्षियों की भांति दीखते हैं २ मानों ऊपर को नटनी उछलती है ३ हाथी पीछे (नीचे) रह जाते हैं ४ चीमता की दौड़ में जिनके चरण हाथियों की कमर पर ५ छापेहुए दीखते हैं ॥ ३६ ॥ ६ कितने ही घोड़े मच्छी के समान मुड़कर दो पाछियों के अंतर को फांदकर ७ विश्राम लेते हैं, प्रत्येक दौड़ में जहां चरण चलते हैं उन्हीं चिन्हों पर फिर चरण रखते हुए दौड़ते हैं और कितने ही घोड़े ऐसे जुड़जाते हैं जैसे ८ शाब्दिक (व्याकरणवाले) के साथ ९ तार्किक न्यायशास्त्रवाले की जिव्हा जुड़ जाती है और जिसके लाभ पर नम्र होकर सूर्य और ११ इन्द्र भी १२ इच्छा १० लाते हैं ॥ ३७ ॥ सेना की १३ सकड़ी गलियों में घुस कर १४ चकरी के समान फिरना सिद्ध करते हैं १५ मार्ग में विचार पूर्वक कूदकर पृथ्वी भूमि छेकते हैं १६ युद्ध में १७ हाथियों की पीठ पर १८ हाथियों के सवारों की छाती में ॥ ३८ ॥ १९ वेग के २० अपने दौड़ने का प्रमाण

ईरखे बहैं करके गहैं सिथिलत्वं संक्रम हान ॥ ३९ ॥
सित१ के उडैं जिम सूत२ नालन ध्याव पावक संग ॥
हिमबालुंका३ जित आलुका किंधु ०है अनावृत अंग ॥
मनि नील१ सच्छविके उडैं मिलबे कि व्योम२हि मित्र ॥
कति बालवायुज१ रंग क्रीड़न पोन१ मित्र पवित्र ॥ ४० ॥
कति पद्मराग१ सराग मिंटन ज्यों रजोगुन२ कज्ज ॥
सुरराज१ सच्छवि केक पीवल२ सत्रु जीवंल सज्ज ॥
द्विक२ बाजि रूप चउक्क२ सच्छबि मेलमित्र नदैन ॥
इम जे बिनीतं बिनीत क्रीड़त ऐनंके क्रम ऐनं ॥ ४१ ॥
जलजात१ के कति बान्हिजात२ किते प्रभंजन जात३ ॥
द्विज१ आदि वर्ण त्रई३ जई पन तत्तई सुदिपात ॥

१चलनेमें शिथिलता की हानि करके ॥३९॥ नालों और २पत्थरोंके संगसे आग्नि उत्पन्न होकर कितने ही श्वेत रंग के घोड़े २ पारे के समान उडते हैं ४ उडने में कपूर को जीतनेवाले ५ मानों एलवालुक (गन्धद्रव्य विशेष) को जीतनेवाले विना छिपेहुए शरीर से उड़ते हैं अर्थात् कपूर तो छिपाहुआ उड़ता है और ये दीखते हुए शरीर से उडते हैं ६ नीलम मणिके समान (नीले) रंगवाले घोड़े मानों अपने मित्र आकाश से मिलने को उडते हैं "आकाश का रंगनीला है जिस में मिलने को" कितने ही ७ वैडूर्य मणि के समान रंगवाले घोड़े मानों अपने पवित्र मित्र पवन से क्रीड़ा करने को उडते हैं ॥ ४० ॥ कितने ही ८ माणक के रंगवाले (कुमैत) घोड़े अपने समान रंगवाले रजोगुण से मिलने के कार्य करते हैं "रजोगुण का रंग लाल है" कितने ही पन्ना के समान रंगवाले १०और शत्रुओं के जीव लेनेवाले ९ पीवर (पुष्ट, ताजा) सजे ११ शिक्षा पाये हुए विशेष नम्र घोड़े १३ मार्ग में १२ हिरणों के क्रम से क्रीड़ा करते हैं ॥ ४१ ॥ १४ पवन(*) से उत्पन्न

(*)उम्मेदसिंह चरित्र से लेकर रामसिंह चरित्र के इस स्थान पर्यन्त युद्ध घोड़े हाथी संगीत और वेदान्त आदि के प्रकरणों पर सविस्तर टीका कर दी गई परन्तु यहां से आगे इन्हीं प्रकरणों के वर्णन फिर फिर आते हैं जिन पर सविस्तर व्याख्या करना पिष्टपेषण के सिवाय निरर्थक विस्तार बढता है इस कारण विस्तार वाली टीका करना छोड़कर कठिन शब्दोंकी संक्षेपसे टिप्पणी ही करेंगे जिसको पाठक लोग त्रुटिनहीं समझैं और फिर भी कोई विशेष वर्णन आवेगा वहां पर टीका कर दी जावेगी परन्तु पीसेको नहीं पीसेंगे॥

कति पच५ मंगल अष्ट८ मंगल मल्लिकाक्ष३ कहाइ ॥
कति चक्रवाक४ कजाक्ष महत मान पान न माइ॥ ४२ ॥
मनिबंध१ नाभि२ रु वच्छ३मस्तक४आस्य५गोधि६रु अंस ७
त्रिक८ देस कंठ९ पिचंड१० रध्र११ न भद्र भ्रम अवतंस ॥
आवर्त ए दसइक्क११ उत्तम भिन्न दै अभिधान ॥
तहँ इंद्र१ पद्म२ रु चक्रवर्तिक३ चिंतितार्थ प्रतान४ ॥ ४३ ॥
विजपा५ रूप शुक्ल६ रु चंद्रकोसक७ आदि जे इहिं वट्ट ॥
पगि पुष्प१ चंदन२ आज्य३ गंधक राज्य संधक पट्ट ॥
चउ४ दह्व वारह१२ दंत२ सु स्थित रोचि मेचक चारु ॥
कठिनत्वमैं प्रभुता तनात बनात बज्रहिं कारु ॥ ४४ ॥
मुख१ मानं सत्त रु वीस२७ अंगुल कान२ मान छ६ मान॥
सत१० मान अंगुल उच्च विग्रह३ पिट्ठि४ जिन२४ अवसान
ललितत्व उल्लसि कंधरा५ बसुबेद४८ लव ललाम ॥
तिहिं मान४लूंम६रु मध्य७ल त्रय३०सरूप अंगुल ताम॥४५॥
इह च्यारि४दिग्घ१रु च्यारि४लोहित२च्यारि४सन्नत३ अंग ॥
सुभ च्यारि४ उन्नत४च्यारि४सुच्छम५च्यारि४ह्रस्व६ प्रसंग॥
इम भव्य आयत च्यारि४ आयत७ पाइ मंजु प्रतीक ॥
मन१ नैन२ चोर मरोर मंडत ठानि संगति ठीक ॥ ४६ ॥
अब दिग्घ१ आदि गुनत्व अंगन सूचना क्रम आनि ॥
मुख१ बाहु२ केस३ निगाल४ देस प्रलंब१ता गुन मानि ॥
क्रम सेफ१ अाठ२ रु जीह३ काकुंद४ लोहितत्त्व लसाव॥

॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १ मुख का प्रमाण (माप) २७ अंगुल का माप है ३ शरीर ४ गरदन ५ पाछा ६ कमर "यहां घोड़े के शरीरके अवयवों के नामों के आगे अंक रक्खे हैं वही उन अंगोंके मापके प्रमाण(माप)के अंगुल हैं अर्थात यह अंग इतने अंगुलों का होना उत्तम है" ॥ ४५ ॥ ७ अंग ॥ ४६ ॥ ८ गला पे चार अंग लंबे ९ लिंग १० तालुवा ये चार अंग लाल

भरि कच्छ१कुक्षि२रु जानु३पिट्ठि४प्रतीक सन्नत३भाव॥४७॥
सफ१ भालकोसिर२ पोथ३ पायु४ समुन्नत४त्व समान ॥
पय१ कोर्ड२ बालधि३कर्ण४सोभित सुच्छम५त्व प्रमान ॥
श्रुति१।२ भ्रो तदंतर२ बंस३ आसन४ बामन६त्व प्रसिद्ध ॥
नलकीलै१ बंक्रि२ रु खंध३ आनन४ ए बिसंकट७इद्ध॥४८॥
कहुँ वे बिसेस जवान१ नच्चत जे बिसेस जनात ॥
कहुँ जोर दोर किसोर२ तंडव भोरतैं अधिकात ॥
स्वच्छंदपत्ति१न मान सत्ति२नैं मेल ठानत श्रेय ॥
ईभ मानलो उडिजान उंद्ध दिपात सैंादिन श्रेय ॥ ४९ ॥
प्रभु१को बयस्य२नैं दान१ मोदित२ दान सूचक२ पाइ ॥
असवार१कों बहि स्वामि२ अंतिकैं देय देत दिवाइ ॥
सुचि४मास घर्म प्रकासके करि सेक बारि सुगंध ॥
प्रभुसों अभीष्ट प्रसाद पावत स्वामिधर्मित संध ॥ ५० ॥
क्रम१मैं गहे गुनहैं२ रहे अब गै३ लहे अवकास ॥
बरं बै१ लहे तन जै२ लहे रन रै३ लहे पन बास ॥
संमवेत उत्तम खेत संभव जे तनै जस जूह ॥

१ कांख २ तार. ये चार ३ अग झुके हुए ॥ ४७ ॥ ४ खुर ५ गुदा, ये उठे हुए ६ पगों के गाबे ७ पालछा ८ छोटे होवैं ९ कान १० दोनो कानों के बीच का अतर [छेटी] ११ बांसे की हड्डी १२ ये छोटे होवैं १३नली १४मदूदू १५मुख इन का १६ चंधा होना उत्तम है ॥ ४८ ॥ १७ बछेरे नृत्य करते हैं १८ स्वतंत्र पैदलों का १९ घोड़ों से २० हाथी के बराबर २१ ऊपर २२ सवारों को ॥ ४९ ॥ २३समान अवस्थावालों२४समीप२५आषाढ मास की गरमी में२६वांछित ॥५०॥ २७ क्रम के अनुसार २८ घोड़ों के गुण कहे "इस छन्द के प्रारंभ में प्रथम ऊंटों फिर घोड़ों और जिस पीछे हाथियों का चलना कहा, उसी क्रम से प्रथम ऊंटों का वर्णन करके फिर घोड़ों का वर्णन किया" और अब २९ हाथियों के वर्णन ने अवकाश लिया ३० श्रेष्ठ अवस्थावाले ३१ शरीर से जय लेनेवाले ३२युद्ध में वेगवाले ३३ मिले हुए (साथ)

दिपती छटा जिनकी घटा घुमड़ी घटा कि दुरूह ॥ ५१ ॥
चलि भद्र१मंद२मृगा३रूप मिश्रक४ जात जात चउक४ ॥
श्रम अच्छके परपच्छके गेंप जे करैं मेंप सुक्क ॥
मधुरोचि१ दत२ वराह१ जघन२ रु चाप१ रीढक१ मान ॥
द्युति१में हरित्व२ झरित्व सालि३सुगंध सोभित४दाम५ ५२
मधुमास१ पिंगल२ नैन२ ओ मृदु१ लोम२ अग३ ललाम ॥
तिम तास आनन१ ओठ२ आकुद३ रोचि रोहित४ ताम ॥
सम१ वृत्त२ पीवर३ कधरा४ कर५ मेघ१ वृंहित२ सह॥
नख१वीस२०१२के धृति१८१३नेम ३६कर१सत्त७१२उच्छूप३हह॥५३॥
जिन्ह मत्थ१ मुत्तिय२ जुद्ध१में जप२ ओ सदा१अनुकूल२॥
इम भद्र१ लच्छन सूचना अब मंद२ बोधन मूल ॥
गज१ कुच्छि२ पेचक३ थूल४लंबित५दिट्ठि१इट्ठि मृगेस२ ॥
पुनि कच्छ१वच्छ२उभै२ कहे सिथिलत्व जुत्त३ प्रदेस ॥५४॥
मृग३के वडे१दृग२तत्थ ए वसु८ अग१ खर्व२ प्रमान ॥
कर१दत२अंघ्रि३पिचड४मोहन५कंठ६लोम७ रु कान८॥
सब चिन्ह१ मिश्रित२ मिश्र४ जाति चउक्क४यों गज३ सज्ज॥
गति मेघ१विग्रह२विज्जु१ भूखन२ गाढ गज्जित१ मज्ज५५
अरि राहु१के सनि२केक सोदर ध्वांत३के धवअग ॥
प्रसरे तमोगुनके कुटुंब कि अन्य जुग्म२ प्रसग॥
पय सेकेॅ पूरत निर्झरैं वपुसों प्रवृत्ति प्रवाह ॥
लसि ज्यों मनोरम अद्रि जगम श्रोत संगम लाह ॥ ५६ ॥

१कठिनाई से तर्कना में आनेवाली ॥५१॥ शत्रुओं के १ मदको सुखानवाले २ हाथी ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ४ भद्र जाति के हाथी के ५मन्द जाति के हाथी के लच्छण जानो ॥ ५४ ॥ ६ मृग जाति के हाथी के ७ मिश्र जाति के हाथी के ८ मेघ के समान शरीर और९बिजुली के समान भूपणोंवाले ॥५५॥१०शनैश्चर के सगे भाई ११ अंधेरे के पति १२ मार्ग को सींचते हुए१३चलते हुए पर्वतों के ॥५६॥

तृनमानदै मग तुंग साखिन बाम दक्खिन२ तोरि ॥
मनके बिचारत डिग्घ डारत मेरुशृंग मरोरि ॥
घन कुंभिके उर दाहघल्लत राह चल्लत रोहि ॥
जब ओघ मोघ जनाइ सत्तिन इत्थ कत्तिन सोहि ॥ ५७ ॥
दृढ दंभि के खिन थंभि दोरत ठहै समग्र हरोल ॥
लवहू लगात न सत्रु सातनँ तोप गोलक लोल ॥
पय लंब लंगर पाइ जंग रचाइ चित्र प्रतीति ॥
रद१ हेम बंगर२ रोचि दै ससि१ सूर२ संगर रीति ॥ ५८ ॥
मचलै हमल्लन भू हलावत के चलावत मग्ग ॥
बटे१ लेत उब्बट२ उज्झि के असु आनि अंकुस अग्ग॥
उलटान इच्छत अंभ्भकेइभ फौंकि सुंडिन उड्ड ॥
रय अंड उड्डर के कढै तिरछे उपाय अरुद्ध ॥ ५९ ॥
चल केक बान१ रु मैचपा२ चिरखी चटच्चट चैंकि ॥
बहुधा बिचित्र तनैं गैंतागत बीति रीति बनैं कि ॥
छिरकैं पतत्रिनं के बली बमथून ठपोम झपाइ ॥
उलटे कँ बुट्टन जानि सिक्खत मेघ मेचक आइ ॥ ६० ॥
मचिजात अंदुक अग्ग अँचत मग्ग१ जंगल मग्ग२ ॥
दिपि बिंदुपक्षक१ ज्यौं जरे बपु पद्मरागें२ उदग्ग ॥

१तृण के समान २ ऊंचे वृक्षों को ३ सुमेरु के शिखरों को मरोड़ना ४ऐरावत के उर में ५ घोड़ों के वेगको निरर्थक जनाकर ६ सुण्डों में तरवारें शोभायमान हैं ॥ ५७ ॥ ७ शत्रु के मारने में ८ आश्चर्य युक्त युद्ध करके ९ दांतों में सुवर्ण के बंगड़ १० सूर्य चन्द्रमा के युद्धकी रीति स ॥ ५८ ॥ ११उब्बट लगना छोडकर मार्ग लेते हैं १२ ऐरावतको उलटाना चाहते हैं १३ नहीं रुककर ॥ ५९ ॥१४वि चित्र आवजाव करके मानों १५ घोड़े की भांति बनते हैं १७ सुण्डके जलकणों से ढककर १६पक्षियों को छांटते हैं सो मानों काले मेघ उलटा १८जल बर्षाना सीखते हैं ॥ ६० ॥ १९ जञ्जीर खैंचने से २१माणिक्य के समान शरीर पर २० बिन्दुजाल (धीरघंट) जड़े हैं

कति मग्ग लग्ग वहैं करे वस अग्ग लग्ग *करेनु ॥
वहु मत्त[१] †डाक लगे[२] वहैं वहुगत्त[१] वेधत ‡त्रेनु[२] ॥ ६१ ॥
जरि रत्न §सीस[१]भिरी सिरी[२] उदयाद्रि ज्यों उडुजाल ॥
त्रि[३]पदी जरे त्रि[३]पदी तथापि चलैं [४]अनर्गल चाल ॥
मचलैं महावत वीत पावत के घुमावत मत्थ ॥
जनु छुत्त [५]अंबर छत्ति[२]कों विखरात ओ घसि जत्थ ॥६२॥
[६]खतूल्ल झूल[१] कपाल[२] मंडित जो अखंडित जोर ॥
[७]मृधमल्ल [८]खंडित खोम पंडित [९]जोम तोमें मरोर ॥
[१०]कर कुंडली करि लंव [११]अंबर क्रुद्ध के फटकारि॥
वट लेत अखिन देत पखिन वेग वेतें विडारि ॥६३॥
[१२]जगाल[१] हिंगुलु[२]ताल[३] जालित सीस[१]सुंडि[२]सुहाइ ॥
[१३]बुध[१] [१४]आर[२] जीव[३] कि चारचक्रन [१५]आक्रम्यो सनि[१] आइ ॥
[१६]कुंथ रत्त[१] पैं गुड कात [१७]आपस[२] हेम[३] रत्न[४]अमुल्ल ।
फवि ज्यों रहे रवि[१]गोद [१८]मंद[२] रु [१९]चक्र[३] लौं उडु[४]फुल्ल ॥६४॥
वहुधा सुखासन[१] पिट्ठि सोहत नद्ध पट्ट [२०]वेरत्त ॥

* हथनियों का आगे करने से वश न होकर चलते हैं † क्रोध दिलानेवाले छोटे घाव लगने से ‡भालों से शरीर को वेधने से ॥ ६१ ॥ रत्नों से जड़ीहुई सिरी (मस्तक भूषण) § मस्तक से भिड़ीहुई है सो मानों सुमेरु पर्वत पर १ नक्षत्रों का समूह है २ तीनों पैर सांकलों से बंधे हैं तोभी ३ बिना रुकावटकी चाल से चलते हैं ४ महावत के हूलने को पाकर मस्तक घुमाते हैं सो मानों ५ आकाश रूपी छाती को मस्तक से घिसकर बिखेरते हैं ॥ ६२ ॥ ६ रेसमकी ७ युद्ध के मल्ल ८ बुरजों को गिराने में चतुर ९ मद के समूह की मरोड़वाले १० सूंड की कुण्डली करके ११ आकाश में पक्षियों के वेग को बिखेर देते हैं ॥ ६३ ॥ १२ हरताल के समूह से रंगाहुआ मस्तक और सूंड शोभित हैं सो मानों बुध १३ मंगल और १४ बृहस्पति ने शनैश्चर को १५ घेरा है १६ लाल झूल पर सुवर्ण और रत्नों से जड़ीहुई सुंदर १७लोहे की सिलह लगीहुई है सो मानों सूर्य की गोद में१८शनैश्चर और १९ शिशुमार चक्र में तारे फूलरहे हैं ॥ ६४ ॥ २० रेसम के रस्सों से बंधेहुए

कति झंड१झुंडन अग्ग संक्रमि मग्ग छेकत मत्त ॥
सब हेति होदन मज्झ१ बंज्झ२ असंज्झ स्वोचित सज्ज ॥
करिबे निसादिन बीर बादिन सर्बथा जय कज्ज ॥६५॥
बढिकै महावत बोलदे जिम जाति लै बिरुदाइ ॥
जवमें हठी तिम सत्ति१ पत्ति२न पंति पिल्लत जाइ ॥
मनधाव ज्यों चलभाव दोरनमें सु घोरनमैं न ॥
प्रतिकाल१ चाल२ बिभिन्नता इभ ओघ ओरनमैं न ॥ ६६ ॥
घोरनमैंन१ ओरनमैंन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
गंभीरबेदि१ कितेक मैंगल२ केक परिणत३ गाढ ॥
कति ठयाल४ चाल अराल करि करि बेग धारतबाढ॥
कति फीत बाहक नीत कल्पित५ बीत अंकुस१नीत२ ॥
उपबाह्य६ के कति दंतईषिक७ दंतिपंति अतीत॥६७॥
आटोप के अहिभोग सन्निभ उद्ध पोगर आनि ॥
पलटा गता१गत२ के करैं मतके प्रमान प्रमानि॥
लघुनैन१ दिग्घ निहारिबे२ करि के रचैं गति लीह ॥
आगामि१ गामि२ प्रकार आनत जे अनर्गल ईह ॥ ६८ ॥
पटु पालकाप्य प्रणीत तंत्रन हत्थिपालक हुल्लि॥

सब शस्त्र २ बंधेहुए ३ असह्य [नहीं सहने योग्य] ४हाथियों के सवारों के ६५ ॥ ५ घोड़ों और पैदलों की पंक्ति को हटाते जाते हैं ॥ ६६ ॥ ६ आवं ादि के घाव को नहीं माननेवाले ७मदकल [मस्त] ८पकेहुए दृढ ९छुपट हाथी ...टेढी चाल से वेग को धारण करते हैं १२अंकुश की प्रेरणा और १३महावत के पैरों के हूलने से ११ प्रसन्न होकर चलनेवाले सज्जित हाथी १४ कितने ही राजाकी सवारी के, कितने ही लंबे दांतोंवाले १५ दांतों की पंक्ति १६व्यतीत होगई ऐसे [मुकने] हाथी ॥ ६७ ॥१७ सर्प के फणके सदृश १८सुंडके अग्रभाग को ऊपर करके छत्र करते हैं १९दौड़ने की लकीर रचते हैं २० आना और जाना २१ विना रोक टोक वाली इच्छा से करते हैं ॥ ६८ ॥ पालकाप्य मुनि के बनाये २२ शास्त्र (हस्त्यायुर्वेद) में चतुर महावत कूटबोली [दगदग आदि

विफ्फराइ फाइ अनीक निरमप बुल्ल कूटिकबुल्लि॥
जिम जाइ जितजित आनि इतइत वानि१ अकुस२बोध॥
चलजेपलात रिभ्कातविंवर्हि जुद्धज जिम जोध॥ ६९॥
इभपाल१ आसन२ पं प्रभा इक१ सम्मुहे न लखाइ॥
जनु पिट्ठि जे थित वीर तेहि निसक पिल्लत जाइ॥
इभपाल अगन व्है न भूखन रोचि जो अभिराम॥
तो उक्त अर्थ मबोध व्है तिनके चढाकन ताम॥७०॥
भ्कननकि शृंखल ज्यों वजे तिम पिट्ठि विस्मित भ्कंकि॥
अति सेन संकट अग्ग सादिप वट्ट विक्खत सकि॥
मारीचगजँ१ ढिग के मतंगज२ यों निपादन आनि॥
प्रभु पानि रीभ्क दिवान पिल्लत जात किल्लित जानि॥७१॥
कति हत्थि होदन भौंर सक्रम गेल पत्तनगोपि॥
अति लासे कज्जल्ल भास आनत औसनावधि ओपि॥
गज३ यों अनेक अनीक सगत देत खेत दिपाइ॥
रथ१४के सजे पथके मनोरम जे मनोरम जाइ॥७२॥
कति पारियानिकें२ केक पुंष्परथा३रुप वैनयिका४रुप॥

चोल्फर सेना मे लाते हैं॥६९॥ उन हाथियोंके ऊंचे कुमस्थलों के कारण सामने से महावतों की १ कान्ति नहीं दीखती सो मानो पीठ ऊपर के सवार हैं उनको २ पहाले जाते हैं, महावत के शरीर पर भूषणों की सुन्दर ३ कान्ति नहीं होवे तो ५ तहां उन पर चढनेवालों का ४ऊपर कहे हुए अर्थ का ही बोध होता है॥ ७०॥ ६ घोड़ों के सवार ७ राजा की सवारी के हाथी के समीप ॥ ७१॥ कितने ही हाथियों के होदों में ८ भ्रमर चलकर अपनी पाखों से ९ सवारों के शरीरों को छिपा देते और १०नृत्य करते हुए ११आसन की अवधि पर्यन्त शोभित होकर अत्यन्त कज्जल की शोभा को लाते हैं १२सेनाके साथ १३ मार्ग में सुन्दर चलनेवाले १४ मन में रमते जाते हैं॥ ७१॥ १५ चौतरफ से खुलेहुए रथ १६ बिना युद्ध (हवाखोरी) के रथ १७ अस्त्राभ्यास करने के रथ, जिनके पहिये

अंरि[1]नेमि२अक्ष[2]३रु पिंडिका[3]४आणि[4]५पेसलत्व[5] मथारव्य ॥
संम्पा[6]६धुँरा[7]७जुग[8]८ओ जुगंधर[9]९गुप्ति[10]१० आदि सुहात ॥
सबही प्रतीकन[11] सज्ज स्यंदन यों बढे बहु व्रात[12] ॥७३ ॥
हुव सज्ज आरुहि पट्ट हात्थिय इष्ट सत्थिय अप्प ॥
द्युति देखि दुर्लभ देवकी[13] दुरिजात दर्पक[14] दप्प॥
उष्णीषे[15]१ सीस२ कुसुंभ अर्चित स्वीय बंध सुघट्ट ॥
सह सालप[16]२नौलप किरीट३सेखर[17]४पंच५रत्नक पट्ट[18] ॥ ७४ ॥
लगि मुत्ति अच्छुत१धीर२चंदन३चंद्र४हाड ललाट२ ॥
तिम रत्न कुंडल१।२ कर्ण३ जामल२ लाल गल्ल तलाट ॥
हद रोचि गुंफित रत्न पंच५क कंठ४ हिंडत हार१ ॥
बहुधा बिचित्र अनेक आवलि जो जै[19] ओज बिथार ॥७५॥
लहा ललाम सु काय५कंचुक[20]१ बिप्फुरैं जर बान२ ॥
सांयंतनारुण[21] अभ्र१ सीम कि बिज्जुर२ पंति बितान ॥
कटिबंध१ मध्य६ लसैं कस्यो पगि पग्ग राचि२ प्रकास ॥
केयूर[22]१।१कटक१।२आवाप[23]१।३भुज७।१कर८।२भ०पमनि९।३मनिभास ॥
बहु मुद्रिका१बहुरत्न बेढ२दु२पंच५।१०पँल्लव[24]१० पाइ ॥
अहिहै२ कि कर फनपंन५ पंच५ ऊँरुत्व[25] मनि अधिकाइ ॥

१पूठियां २पाचर ३ नाभी (नाहि) ४ अरों के ऊपर लगाने के काष्ठ (आंघल) ५ सुंदरपन में प्रसिद्ध हैं ६ जूए की कील (सोल) ७ ओदण ८ जूआ (जूड़ा) ९ जूआ बांधने की जगह १० रथकवच (शत्रु के शस्त्रों से बचानेवाली लोहे की खोली) आदि से शोभायमान है, इस प्रकार रथ के सब ही ११ अंगों को सज्जित करके रथों के बहुत १२ समूह बढे ॥ ७३ ॥ १३राजा की कान्ति देखकर १४कामदेव का घमंड छिपता है १५कसूमल रंग की पाघ १६बड़ा मोड़ (मुकुट) १७ शिखाबंधन (लटकण) १८पांच रत्नों का शिरपेच ॥७४॥ १९ जय को और प्रताप को फैलाते हैं ॥ ७५ ॥ २० जामा (झगा) २१ संध्या समय के लाल बादलों के समान किंवा बिजुली की पंक्ति के फैलाव के समान २२ भुजबंध २३ पूँचां तथा कोई अन्य कर भूषण विशेष ॥७६॥ २४दसों अंगुलियों में२५ मणियों

कटि६।११सान सुद्द कृपान१पट्टिस२कर्त्तिका३छुरिका४ऽऽदि
चउ४पुप्प ग्रहन१अष्ट८चदक पिट्ठि१२ दिढि प्रसादि ॥७७॥
उपवीत१प्रतिपंथ१३मेखला१इत रत्न रोचि२अपुव्व ॥
उर१३देस१जानि अगाध अर्णव२ एस१ वेस कि उव्व२ ॥
सह धौत१ आवृत अग्नि१४ कंचुक२ लंब आघट३ साजि
चनि जुग्म२ गोहिर१५रत्नशृंखल१।२नेम हेम विराजी ॥७८॥
अभिरूप यों वर भूप प्रस्थित पट्ट पीलु अरोहि ॥
सहचारि जन्य वयस्प सत्थिय सक्रम्यों तिम सोहि ॥
नृपनाग१के चहुँ४ओर जोर मरोर महत नाग२ ॥
परिवेस१ भेस२ सवेस प्रस्थित वेस१ देस२ विभाग ॥ ७९ ॥
इभ व्यूह१ वाँह्म समूह२ अर्वन ऊँह यों अधिकात ॥
जनु पच्छछेद अभेद अदिन वेढि सैरुप जनात ॥
गजव्यूह१में गजपट्ट२कों गन पंत्ति२ के गरदाइ ॥
प्रभुके प्रसाद प्रसन्न प्रस्थित चक्र चंक्रम पाइ ॥ ८० ॥
सिर रूचपके सह रत्न१ हाटक२ आतपत्र१ सुहाइ ॥
जनु रत्नसानु२हि भानुको तव ताप टारत जाइ ॥

से बड़प्पन बढ़ाते हैं १ कटारी २ चार फूलोंवाली ढाल ॥ ७७ ॥ ३ जनेऊ ४ उदर पर ५ काची (करधनी, कणगती) ६ उदर के प्रदेश को अगाध समुद्र जानकर यह वेस मानों ७ बड़वाग्नि है ८ धोवती से ढकेहुए चरण ९ दोनों गिरियों (चरण ग्रंथियों) पर सुवर्ण के पगसाकले ॥ ७८ ॥ १० सुंदर ११पाटवी हाथी पर चढ़कर, समान अवस्थावाले परागियों के १२ साथ शोभित होकर चला १३ राजा की सवारी के हाथी के चारों ओर १४ सूर्य के चारों ओर कुण्डली होवे जैसे ॥७९॥ हाथियों के व्यूह के १५ बाहर घोड़ों का समूह है जिनकी ऐसी १६तर्कना होती है कि मानों विना पक्ष कटेहुए पर्वतों का घेर कर ये घोड़े१७मिश्रता जनाते हैं १८पैदलों का समूह१९सेना इधर उधर चलती है ॥ ८० ॥ बुद्धिह के मस्तक पर रत्नों का जड़ाहुआ सुवर्ण का २० छत्र ऐसा सुहाता है मानों २१ सुमेरु पर सूर्य के ताप को बचाता जाता है,

दुहुँ२ओर बीजत सोमसुच्छ कि रोमगुच्छ१।२ दिपात ॥
पुरटादि सूचित छत्र ज्यों पगि द्वैध गंग निपात ॥ ८१ ॥
इम अर्ह१ बर्ह२।३ अगर्ह बीजत बिल्थरे दुहुँ२ओर ॥
मनु चोर१ अभ्र२ अदभ्र३ मोदित मंडि तंडव मोर ॥
द्विसती२०० नक्कीबन दंड१ प्रेरित हत्थ हाटक दंड२ ॥
अतिसीम अर्णाव फौज बाडव ओज२ जानि अखंड ॥८२॥
पहु पत्त यों दरकुंच जैपुर मंडि चक्क मुकाम ॥
तह भूप सिसु जयसिंह१तैं नन रीति सद्धिय ताम ॥
इह बैरिसल्ल१ स नाम राउल कुम्म नाथकुलीन ॥
कछवाह भूप प्रधान ठ्हाँ सतकार स्वोचित कीन ॥८३॥
तँहं भूप कूरमकेर मुख्य प्रकोष्ठ पालक ताम ॥
प्रति द्वारपालन जीर्न१ जैन२ स्वरूपचंद्र१ सनाम ॥
जिहिं भेजि राउल भूप१ द्वार स्वरूप२ बाल्य जनाइ ॥
भनि ऐन सद्धिय बैन स्वागत अैन आगत भाइ ॥ ८४ ॥
इम जैन जो प्रभुबिंद तोरन दूर बाहन उज्झि ॥
बय अब्द सत्तरि७० लंघि औरन मंदलोचन बुज्झि ॥
कहि बुल्लि मुख्य प्रकोष्ठपालक हड्ड१ भूपति केर ॥
अवधान हानि दिखाइ अप्पन बाढ स्वागत बेर ॥ ८५ ॥

दोनों ओर चन्द्रमाकी किरणों रूपी चमरों से पवन होता जाता है सो मानों ऊपर सूचना कियेहुए छत्र रूपी २ सुमेरु पर्वतसे गंगाकी दो धारें पड़ती हैं ॥८१॥ इसी प्रकार ३ पूजनीय ४ मयूरपंखों (मोरछलों) से दोनों ओर ५ अनिन्द नीय पवन होता है सो मानों चमरों रूपी बादलों से ६ बहुत प्रसन्न हो कर मयूर ७ नाचते हैं ८ सुवर्ण की छड़ियां हैं सो मानों सीमा रहित सेना रूपी समुद्र में बड़वाग्नि है ॥ ८२ ॥ ९ सेना का मुकाम किया ॥ ८३ ॥ १० कछवाहे राजा का मुख्य द्वारपाल ११ वृद्ध जैनी १२यह आप का घर है ऐसा कहकर वचनों से स्वागत किया ॥ ८४ ॥ १३ बाहर के द्वार से १४ बाहन छोडकर १५ सित्तर वर्ष की अवस्था और मंद दृष्टिवाला दूसरों से पूछकर १६ हाडा राजाके द्वारपाल को १७अपने आने के समय अपनी सावधानी की

जिम भूप बालम प्रमाद व्है तिम सर्व देर जनाइ ॥
आहूत हुड्ढ६१ इलेसें प्रतिक एसें एकक७१ आइ ॥
संपजोरि अक्खिय एह बिन्नति बेरिसल्ल१ संमुक्त ॥
जो कल्हि व्है रहिवो ततो बनिजाइ स्वागत जुक्त ॥ ८५ ॥
क्रम सज्ज ससंद व्है मिलाप१ उभै२ अधीसन केर ।
विधि सद्धि दो२उन नेहसों संहभुक्त२ व्है मह बेर ॥
धात्रेय१ मुख्यन व्हां कही नरनाह सम्मति धारि ॥
सम मग्गमान प्रमान जानहु लग्न विन अनुसारि ॥ ८७ ॥
इम व्है न नैक विलंव१ औ इम व्है हठी२ इत आत ॥
वनिजाइतो कछवाह१के यह लाह नाह२ बरात ॥
जो अधकल्प चल्पो यहै संचिवादि सूचित जानि ॥
प्रतिहारसों इतकेन अक्खिय जाहु लौ गहि पौंनि ॥८८॥
चहि जो अनर्महु१ नर्म२ बुल्लिय जैन जो हित चोर ॥
आमेरनाथ गह्यो यहै कर को गहैं तिहिं ओर ॥
जड दर्भ खानि हसाइ हड्ढ६१न जाइ यौं उत जैन ॥
प्राकृत अक्खिय मैंन सत्वर व्हैन थमन ऐंन ॥ ८९ ॥
इम जात व्याहन ईस भो जयनैर एह उदंत ॥
दरकूंच हकिय जुज्झनौ१ दिस सज्ज जन्य सुमत ॥

---

१ बुलाया हुआ २ हाडा राजा के समीप ३यह अकेला आया ४हाथ जोड़कर ५ रावल बैरीसाल की कहीहुई विनती ६ आपका आदर सहित ॥ ८५ ॥ ७ सभा में ८ शामिल भोजन ६ धायभाई आदि १० राजा रामसिंह की सम्मति देखकर ११ मार्ग के प्रमाण के साथ ॥ ८७ ॥ १२ अध के सदृश १३सचिव आदि का कहाहुआ जानकर १४ बुंदीवालों ने अपने द्वारपाल से कहा १५ इस का हाथ पकड़ कर ले जा ॥ ८८ ॥ १६ यह हंसी नहीं थी तोभी इसको हंसी मानकर १७ यह हित का चोर जैनी बोला १८ कपट की खान १९अभिप्राय कहा २० मार्ग की शीघ्रता से २१ अपने घरमें (यहां) ठहरना नहीं होसकता ॥ ८९ ॥ २२ वृत्तान्त

पुर *गम्य अंतिक जात अंतर कोस द्वै२ परिमान ॥
तह कुम्म †सेखकुलीन सम्मुह संजुरे बलतान ॥ ९० ॥
सब मुख्य सेखनमैं मनोहरढंग१ ‡बै हनुमंत२॥
सहसत्थ तहँ खंडेल२ बैं१२ सुत२ बातदा जुहि संत ॥
बखतेस३ कूरम खेतरी३पति बाहबाहन बुद्ध ॥
इक१ खंजपैंहु बिपर्यलखन४ सीकरेस४अलुद्ध ॥९१॥
प्रभु रूच्यके स्वसुरत्व उद्धत स्याम५जुज्भनपाल ॥
जिहिँ दुष्ट भ्रात१ भतीज२ मुख्य दले दगा अघजाल ॥
सहदंत६ रामगढा७दि इम सब कुम्म सेख कुलीन ॥
करिकैं महामद बिंद सम्मुह आइ स्वागत कीन ॥ ९२ ॥
उँपदा१ निछावरि२ सद्धि सादर संग जे सब आइ ॥
प्रभुकों पटालय मुख्य अंतर प्रीतिसों प्रविसाइ ॥
लहि सिक्ख अप्पन ऐन संक्रमि आत अंतिक लग्न ॥
मिलि सर्ब मंडपके महामहँ मोद अर्णवै मग्न ॥ ९३ ॥
चहुवान इंदहिँ लैचले पधराइ व्याहन प्रीत ॥
गजपट्ट आरुहि हह्ल६१ इंकिय होत मंगल गीत ॥
सुचि४ मासके सुचि१ पक्ख द्वै अहि अठ भू१८८१मितसाक
दसमी१०दिपी पैंतनी जहाँ पति मंद७ छंद मिलाक॥९४॥
निज लग्न पुब्ब अनेह यों तहँ संक्रम्यों नरनाह ॥

* जिस पुर में जाना था उसके समीप † सेखावत ॥ ९० ॥ ‡ प (पति) १ घोड़े को चलाने (फेरने) में चतुर २ एक पैर से खोड़ा ३ विपरीत लक्षण वाला ४ निर्लोभी ॥ ९१ ॥ ५ जूंझनों का पति श्यामसिंह ६ दांता नामक पुर के पति सहित ॥ ९२ ॥ ७ नजर ८ डेरे में ९ लग्न के समीप आने पर अपने घर गये १० उस बड़े उत्सव में सब मांझावाले ११ हर्ष के समुद्र में डूबे ॥ ९३ ॥ १२ आषाढ मास के १३ शुक्लपक्ष की दशमी रूपी १४ स्त्री शोभायमान हुई तहां १५ शनैश्चर वार रूपी पति स्वतंत्र होकर मिला ॥ ९४ ॥

चंउ४दत१ पै मघवा२ कि सोभित व्है सची।हित चाह ॥
इचि अग्ग तोप१न पंति ओपन कति भाति अनेक ॥
बढि तास पिट्ठि निसान धारन इंट्ठि बारन२ केक॥ ९५ ॥
तिन पिट्ठि गाहन व्यूह ५पाइन३ लो तरारन तत्थ ॥
चहुँ४ ओर व्है तिन दोर चक्रमें जोर सक्रम सत्थ ॥
तिनमध्य पत्ति४न व्यूह तक्खिनं व्है सहस्रन संग ॥
इनमध्य हत्थि५न व्यूह सत्थिन जूह ऊह उमंग ॥९६॥
तिनमैं तथा परिघेसैं पत्ति६न व्है बिसेस प्रतान ॥
विच१ यों लस्यो बरनाग२ मेरु२ कि द्वीप जम्बुव२मान ॥
गज अग्ग व्है कछु चोक ता बिच नच्च१बादन२ गेय३ ॥
पननारि१ सज्ज भई कड़ार२न खध पट्ट३न प्रेय ॥ ९७ ॥
वनि अग्ग१ थेइं२तथुंग३धुकट१धकर२पिट्ठि३ बिभाग ॥
रस प्रीति वास बिलास मंडिय मेघ११ मंजुल राग ॥
मा१रभ मूर्छन ता१हिसों ग्रह१ अस२न्यास३ग्रहीत ॥
गैं३।१नि७।२हीन भोडव३जो अहोबल१वज्जपुर२मत गीत९८
संगीत आदिक पारिजातक१ग्रंथमैं सुर२ प्रसिद्ध ॥
वरखा३ समागममें मनोज्ञ करैं रैंमरासुग विद्ध ॥

२ इन्द्राणी के हित की चाहसे माना १ऐरावत पर इन्द्र शोभायमान हुआ ३. दृष्टि (चाभिलाष) युक्त कितने ही हाथी चले ॥ ९५ ॥ ४ इधर उधर दौड़ना ५ पैदलों का समूह ६ उस समय ॥ ९६ ॥ ७ पैदलों के घेरे में ८राजा की सवारी का श्रेष्ट हाथी ऐसा शोभित हुआ जैसे जम्बूद्वीप में सुमेरु पर्वत ९ गाना ॥ ९७ ॥१०ये सब नृत्य और वाद्य के अनुकरण के शब्द हैं ११सुन्दर मेघराग ने "यह विवाह आषाढ मासमें हुआ इसकारण इसी समय के मेघरागका वर्णन किया है॥" आरम्भ सहित जो मूर्छना उसी से ग्रह, अंश, और न्यास ग्रहण किये १२ गधार और निषाद से हीन(ये दोनों स्वर मेघराग में नहीं लगते हैं) जो अहोबल और हनुमानके मतसे औडव[पांच स्वरवाला]राग है वह गाया ॥९८॥ १३संगीतपारिजातक नाम ग्रन्थमें१४कामदेवके बाणोंसे वेधन करता है

रागार्णवा१दिक तंत्र गत संपूर्ण१ आदि२ जु राग ॥
बपु रूप धद्यप३ उत्तरापत१ मूर्छना२ प्रविभाग ॥ ९९ ॥
मत बज्रविग्रह१को प्रमानत वर्तमान बिशेष ॥
इम पुब्ब१ उक्त२ हि उद्धर्यो सविलास लासित श्रेय ॥
दिपि नीलउत्पल१ आभ बिग्रह२ इंदु१गोर२दुकूल३ ॥
सपिपासं चातक१याच्यमान२ सु मत्त जुब्बन१मूल॥१००॥
पीयूष१ मंदस्मिता२ऽऽर्द्रपल्लव ओठं३ अंबुद१ ऐन२ ॥
गन धीर बीर१न जुट्ठ२ तुट्ठत३ बारि१ बुट्ठत गैन२ ॥
कलकेक केकि१ रुचा२ रचावन३ ठहै नचावनहार४ ॥
इहिंरूप राग लयो उठाइ सु सर्बराग अगार ॥ १०१ ॥
मल्लारको१दिक पंच५ तिय पति उप्फन्यों बय मत्त ॥
अतिमोद ठानत रूंच्य१ आदिन रीझमैं अनुरत्त ॥
श्रुति१ जाति२ग्राम३रु मूर्छना४ सब थप्पि संभव थान ॥
तिय मंजु माप अलाप मंडिय ब्रह्मताल५ प्रतान ॥ १०२ ॥

१रागार्णव आदि ग्रन्थों में यह राग सम्पूर्ण(सात स्वरवाला) और आदि राग है जिसके शरीरकारूप ॥९९॥ २[ ]वर्तमानमें गानेवाले बहुत लोग ३हनुमानके मतको ही प्रमाण करते हैं ४श्रेष्ठ नृत्यमें इसी मेघरागको ४उठाया, इस रागका शरीर ६ गहूल (रात्रिविकाशी कमल)के समान और चन्द्रमा जैसे श्वेत ७ वस्त्र हैं, ऐसे यौवनवाले मुख्य मेघराग की याचना करनेवाला ८ प्यासयुक्त चातक(पपीहा) है ॥ १०० ॥ ९ अमृत रूपी जिसका मंदहास्य १० गीले पत्रों रूपी ओठ और मेघ ही जिसका घर ११ धीर वीरों के समूह से युक्त, प्रसन्न होकर आकाश से जल बरसानेवाला १३ मयूरों को १२ मधुर ध्वनि की १४ इच्छा कराकर नचानेवाला, इस रूप के मेघराग को उठाया जो सब रागों का १५ घर है ॥ १०१ ॥ १६ मल्लार, भूपाली, टंक, सारंग और गूजरी, इन पांच स्त्रियों का पति यौवन में मस्त होकर सदा १७ हुल्लह आदि को रीझ में प्रीति कराकर हर्ष कराती हुई उन वेश्याओं ने बाईस श्रुति, पांच जाति, तीन ग्राम और इक्कीस मूर्छना को संभावित स्थानों पर स्थापन करके सुन्दर मापसे अलाप रचकर १८ब्रह्मताल (इकताला) फैलाया ॥ १०२ ॥

चउ४कोन पट्ट१न तास यों पैपन्यास२ मंडित चित्र ॥
मनु बाटिका^३ बहु पुष्प भौंर२न भास३ भौंरन मित्र ॥
किंमु पत्र१ पै बहुचित्र२ सोभित चित्रकारन केर ॥
इम अंघ्रि उट्ठत इष्ट आकृति देन भा कृति देर ॥१०३॥
पयफेर अंकुस घेर१ घुम्मत कंणिका कि मतान२॥
मुरिजात ज्यों लचकात लंक विवेक तुट्टन मान ॥
फविजात तेंडव यों गता१गत२ सोंचि३ चक्र४ फिराव ॥
भ्रमिजात मैंच्छरि भावमें गुमिजात अच्छरिभाव ॥ १०४ ॥
तत१ आदि वादन च्यारि४ नौंदन धारि रारिहु तत्थ ॥
सत्र भेंकु१ धित्थ२पिपी३ ठनंक४ न मान मेलत सत्थ ॥
उद्ग्राहक१ रु मेलापक२ ध्रुव३ अंतर४रु आभोग५ ॥
जहँ लहि गीतक पच५ भागन सह्नि सभय जोग ॥१०५॥
पंद१ ताल२ श्रो स्वर३ पाट४ तेन५ बहोरि बिरुदक्षु तत्थ ॥
इम गीत अग छ६ भग आश्रित संभवी क्रम सत्य ॥
मिलि देस ताल१ रु थानि२ मानुज३ गीत जो हुव गीत ॥

चार कोनेवाले१वस्त्र(बिछायत)पर अथवा चार कोनेवाले वस्त पाटिये(तख्त) पर चरणासे विचित्र२विन्यास रचा सो मानों१बगीचेमें पुष्पोंके बहुत गुच्छों पर उनकेमित्र भ्रमरोंने प्रकाश किया है४किंवा पत्रके ऊपर चितेरोंने शोभाय मान चित्र किये हैं ५ इस प्रकार उन नायिकाओं के चरण अनुकूल आकृति से उठते हैं सो ६शोभा करने म दरी नहीं करते ॥१०३॥ पैरों के फेरसे ७ लहँगे का घेर घूमता है सो मानों ८ छोटा डेरा फैला है ९ विशेष पाक वाली कमर को लचकातीहुई तूटीहुई (कमर) के समान मुड़ती है १० नृत्य में जाने आने और ११टेढी होकर गोलाकार फिरनेमें ऐसी शोभा पाती है कि जिसके भावमें१२ मच्छी भी भ्रम जाती है और अप्सरा का भाव भी गुम जाता है ॥१०४॥ १३ तात आदि के चारों वाद्यों मे १४शब्द करके तहां पर युद्ध किया, यहां झेंकु आदि उन चारों वाद्यों के अनुकरण के शब्द हैं १५ गीत के इन पांच भागों को लेकर जहां जिसका समय था वहां उसको मिलाया ॥ १०५ ॥ १६ ये राग के छ. अंग हैं १७ यह गीत गाने योग्य हुआ, स्वर के घुजाने को गमक कहते

स्वरकंप जो गमका१रूप पंद्रह१५भेद तास प्रतीत ॥१०६॥
*तिरपा१रूप आदि१म लै तथा इम सर्व१५नामित१६अंत॥
जिम अष्टि१६ सम्मित एहि मिश्रित१६सोलहैं१६परजंत ॥
आरोह१मैं अवरोह२मैं थिति३ मैंहु ए१६ इम आनि॥
लहरी मनों रचिबेलगी स्वर सिंधु †तानन तानि॥१०७॥
जति१ प्रास२ प्रापित गीत१ दस१०गुन व्यक्तता१दिक जुत्त॥
त्रि३बिधत्व भिन्न प्रबंध३ जे तनु इक्क१इक्क१अछुत्त ॥
तिन्ह नाम ए सूडस्थ१ अलिश्रित२ बिप्रकीर्ण तथाहि ॥
एला१दि रूपांपित्र अंग अट्ठ८न सूड१ नामक आहि॥१०८॥
बर्ण१दि मित चउबीस२४सों अलिसंश्रया२रूप बखान ॥
श्रीरंग१आदि१छत्तीस३६सों बपु बिप्रकीर्ण३बिधान ॥
जहँ पंच५ मान प्रबंध जातिहु आदि तत्थ छ६ अंग ॥
पुनि अंग इक्क१इक्क१ हानि जे पगि सिद्ध व्है क्रम संग१०९
अभिधान ए तिन्ह मेदिनी१ अरु नंदिनी२ अभिराम ॥
पुनि दीपनी३लिम पावनी४ तारावली५ जुत ताम ॥
तिन्ह ठानि संभव१आनि संभव२में असंभव३ त्यागि ॥

इसके पन्द्रह भेद हैं ॥ १०६ ॥ जो * तिरपा को आदि लेकर सब पर्यन्त पन्द्रह हैं और नामितको अंत में लेने से सब मिलकर सोलह भेद हैं जिनको चढाने, उतारने और ठहरानेमे, इन सोलहों गमकों को लाकर स्वर रूपी समुद्र में † तानों को फैलाकर मानों लहरें रचने लगीं ॥ १०७ ॥ जती और प्रासको लेकर व्यक्त आदि राग के दश गुण हैं वे भिन्न प्रबंधों से १ तीन प्रकार के हैं वे एक एक से नहीं मिलते जिनके नाम आगे कहते हैं इनमें एलाको आदि लेकर आठ अंगवाला सूड नामक २ प्रसिद्ध ३ है ॥ १०८ ॥ वर्ण से आदि लेकर चौबीस के प्रमाणवाला अलिसंश्रय नामका कहते हैं और श्रीरंग को आदि लेकर भेदवाला विप्रकीर्ण है तहां पांच प्रमाण. जाति में प्रथम के छः अंग हैं जिनमें से एक एक कम करने से क्रम सहित सिद्ध होते हैं ॥ १०९ ॥ ४ जिनके नाम आगे कहते हैं ५ सुंदर ६ तहां, इनको जहां जिसका संभव

रस मीति आलय१वोर दै सव रजये अनुरागि ॥११०॥
सिव१ सक्ति२ संभव ताल देसिय२ उक्त ह्यां किय सज्ज।
तस वर्ण पंच५ अनुद्रुता१दिक हेर हेलय कज्ज ॥
लघु इक१के सु सपादलघु२ मत भेद३तें दुव२ मान।
उच्चारिवे मित ह्वै अनुद्रुत१ वर्ण१ तस अभिधान ॥१११॥
मिलि द्वै२अनुद्रुत इक१ह्वै द्रुत१।२वर्ण काल प्रमेयं।
मिलिकैं द्रुतद्वय२इक१लघु१।३लघु द्वै२मिले गुरु१।४ गेय ॥
लघुतीन३तें प्लुत१।५वर्ण ह्वै इक१ ताहि मान ललाम।
रहि तालमैं मिति पच५ भेदक वर्ण ए५ अभिराम ॥११२॥
अब तालके दस१० मान ह्वै तहँ काल१ उक्तहि एस।
मिलि गेह५ मग्ग२क्रिया३रु अंग४ग्रहा५रुप जाति६बिसेस॥
पुनि हैं कला७लय८त्यों गिनोजति९दसम१०तहँ प्रस्तार१०।
इहिं दसक१०कारि अंसुमत सद्धिय ब्रह्मताल उदार ॥११३॥
ता१नाम दक्खिन१पानि जानिल२नाम बामक२तत्थ।
सिव१ सक्ति२ ए मिलि ताल सभव ह्वै कहे क्रम सत्थ ॥
सिव१तें समाहत सक्ति२ ह्वै बिधि३अन्यथा१बिधि हानि२।

था यहां उनको लाकर असभव को छोड़कर प्रीति रस के घर में छुपाकर सब प्रेमियों को प्रसन्न किये ॥ ११० ॥ एक शिव से और दूसरा शक्ति से उत्पन्न हुए दो प्रकार के देशी ताल कहते हैं सो यहां सज्जित किए इनके अनुद्रुत का आदि लेकर लयके लिये पाच वर्ण कहे हैं यहां मत भेद से कोई एक लघु और कोई १ सवाको अनुद्रुत वर्ण कहते हैं ॥ १११ ॥ दो अनुद्रुत मिलकर एक द्रुत होता है जिससे वर्ण के समय का २यथार्थ ज्ञान होता है, दो द्रुत मिलकर एक लघु और दो लघु मिलने से गुरु ३ कहते हैं और तीन लघु से एक प्लुत नामक वर्ण का ४सुदर प्रमाण होता है सो ताल में ऐसे वर्ण नामके सुदर पाच भेद हैं ॥११२॥ अब आगे तालके दश प्राण कहते हैं इन दश प्राणों से ५ प्राणधारी ब्रह्मताल साधा ॥ ११३ ॥ इन में दहिने हाथ से बजनेवाला ताल शिव से और बामहाथ से बजनेवाला शक्ति से उत्पन्न हुआ कहते हैं जिनमें प्रथम १ दहिने हाथ से बजाकर फिर बाम हाथ से बजावें यह बिधि

संपा१ रु ताल२ रु सन्निपात३ अघात बेद प्रमानि ॥११४॥
इम नेर्तकी[1] जन जूह पट्टनपैं[2] कहारन अंस ॥
रचिबेलगी नृत्य गीत सुचि[3]१ रस अन्य तिय अवतंस[4] ॥
करि हाव१भाव२कटाक्ष३के क्रम अच्छरिन अनुकार[5] ॥
हुव मोहिनी मन जन्य१मंडप[6]२ लोक मोहन हार ॥ ११५ ॥
त्रिक३गान१बादन२नाटय३संतत मान मेलित मोहि ॥
इक१लै प्रसारिय राग२ आदिक रोहि[7]१ त्यौं अवरोहि२ ॥
सह घेर अंसुक[8] फेर घुट्टन लंक[9] तुट्टन संक ॥
बिरचैं जथातथ आनि संभ्रम ठानि बंक१अबंक२ ॥ ११६॥
लसि मोद लंभहिं[10] इक्खि अंबरहिं[11] जन्य१ मंडप२ लोक ॥
शृंगार१मैं सभिभाव[12] जे भनि इष्ट चाहत ओकैं[13] ॥
इम बिंद बुक्त बित्त संचैय[14] गम्य स्वासुर अैन ॥
पहुँच्यो पुरीजन लाजके निधि पाल ठानत नैन ॥ ११७ ॥
अति प्यार कार बजारके जन वारके दुहुँ२ओर ॥
लखिबे अनारतकार[15] लग्गिय चंद्र१ जानि चकोर२ ॥
उपदा१ निजोचित[16] उद्धरैं रु करैं निछावरि२ केक ॥
दानीय जे खिनपैं दिपे इनमैंहु आढ्य[17] अनेक ॥११८॥

क है और ऐसा नहीं करने से रीति बिगड़ती है ॥ ११४ ॥ १ इस प्रकार याओं का समूह २ कहारो के कंधे के पाटिये के ऊपर ३ शृंगार रस में ४ अन्य स्त्रियों का मुकुट ५ अप्सराओं के सदृश ६ मांढा और जानके लोकों के मनको मोहने के लिये वह मोहन करनेवाली हुई ॥ ११५ ॥ ७ चढाकर और उतारकर, घुटनों से लहँगे के घेरको फेरकर ८कमर टूटने की शंका से ॥११६॥ ११ आकाश में इस १० लाभ को देखकर जान और मांढा के लोक प्रसन्न होते हैं (कहारों के कंधे पर आकाश में नचती थी इस कारण आकाश में देखना कहा है) १२शृंगार रस में भीजकर १३वांछित घर को चाहतेहैं १४धनके समूह की वर्षा करता हुआ जाने योग्य श्वसुर के घर पर गया ॥११७॥१५निरंतर १६ अपने उचित भेट निकालते हैं १७ अनेक धनवान शोभायमान हुए ॥११८॥

इम जाइ तोरन सद्धि लौकिक दै कसा अवघात,
वलि वंदि१के वलि दीपर्पंतिय केर वेरं विभात ॥
प्रविसाइ त्यों अवरोध भूपहिं थप्पि उद्वहं थान,
वरन्यों अनुक्रम ठानि ठ्याहिय पुव्व१ व्याह प्रमान॥११९॥
बिधि वेद सूचित सद्धि दुल्लह१ दुल्लही२ वपु वाम,
वपु वाम२ नेमें वरी करी वपु वाम२ प्रेम प्रकाम ॥
कुल सेखके अभिजात कूरम स्यामसिंह सुताजु,
कहिये गुलावकुमारि२०२।२कोविद नामधेय नुंताजु॥१२०॥
गुन१ रूप२ उत्तम चाहि ताहि विवाहि कैं पटगेह,
अभिराम राम२०२।४ नरेस आइउ ओज१ मोज२ अछेह ॥
निज कृष्ण१ धीसख बुल्लि वटन त्याग थप्पि निदेस,
प्रारभ मंडिय कित्ति पूरन वाढ देस१ बिदेस२ ॥ १२१ ॥
कविके पिता कविराज चड१ रु भट्ट रत्न२ सुकज्ज,
करिवे लगे सव द्रव्य चे करि स्वामि जे करि सज्ज ॥
रजनी द्वितीयरहु सद्धि लौकिक रीझिकैं अधिराज,
किय इभ्यं गाइक१गाइका२ कुल सर्व साज समाज॥१२२॥
रहि यों किते दिन त्यों वैनायक वर्गकों अनुरत्त,
द्विप१वाजि२भूषन३वस्त्र४रुप्पय५आदि उत्तम दत्त ॥
पुर जुज्झनौ सन सिक्ख१सग सु दाय२ओसर पाइ,

१ तोरण पर चाबुक का प्रहार करके २ शरीर विशेष शोभा युक्त हुआ ३ विवाह के स्थान पर स्थापन करके ४ जोधपुर में प्रथम विवाह हुआ उसमें वर्णन किये अनुक्रम से ॥ ११९ ॥ उस स्त्री के शरीर को प्रेम सहित वरकर अपने वाम शरीर में उसको ५अर्धांगी बनाई ६सेखावत कछवाहे स्यामसिंह की पुत्री ७ स्तुतियोग्य ॥ १२० ॥ ८ डेरों में ९ मंत्री १० प्रारंभ रचा (किया) ॥ १२१ ॥ ११ ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल के पिता १२ धनवान् ॥ १२२ ॥ १३ याचकों के समूह को प्रीति युक्त होकर १४ हाथी बहुधान रामसिंह के चलने पर

चहुवान चल्लत मंडपी[1] हद्दतैं मुरे चहुँ[2]आइ ॥१२३॥
तहँ सेख नत्तिय खेतरीपति नामतैं बखतेस,
[3]उपदा कस्यो तिहिँ खास अप्पन बाज१ बेग बिसेस ॥
अति दँ[4]च्छ उड्डन कच्छ[5] संभव लाडिया१ अभि[6]धान,
बर अंग रंग कुमैत२ अंगन जंग गैंन[7] बिमान ॥ १२४ ॥
लहि निठ्ठि सप्ति सु वहै दुरघाँ हठ सप्त[8]सप्ति लुभाइ,
प्रतिमग्ग प्रस्थित टारि जैपुर यौं बिरँ[9]यो पुर आइ ॥
बिरचे असेस बिसेस [10]ब्याहृत बेद१लोक२ बिधेय,
दिय पँट्ट[11]१ तत्वहजार२५०००दम्मन दुल्लही हित देय॥१२५॥

॥ दोहा ॥

स्यामसिंहदास जु सचिव, स्व[12]सुताकै दिय सत्थ ॥
सिविविराम१ नामक सुपै, [13]आकारित हुव अत्थ ॥ १२६ ॥
सम्मति करि तस तंत्रसौं, माहुंदा१ पुर मुख्य ॥
कृष्णाराम१ धात्रेय किय, स्वामि हुकम चहि सुख्य ॥१२७॥

॥ मत्तमयूरः ॥

यौंही बिंदाँ[14]१ जाहि प्रधानी करि अप्पो, माहुंदा१ पच्चीससहस्त्रो २५००० बाँ[15]लि मप्पो ॥
ताहूनैं तच्छं[16]द बढायो बसु तामैं, [17]सारो पट्टा फुल्लनछायो [18]सुखमामैं१२८

---

१ मांडा के लोग अपनी हद से २ चारों ओर से पीछे फिरे ॥ १२३ ॥ ३ नजर ४ उड़ने में चतुर ५ कच्छ का पैदा हुआ ६ लाडिया नामक घोड़ा युद्ध क्षेत्र में ७ आकाश का विमान ॥ १२४ ॥ दोनों ओर हठ होकर वह घोड़ा कठिनाई से लिया जिस पर ८ सात घोड़ोंवाला (सूर्य) भी लोभ करता था ६ बुंदी में प्रवेश किया १० उक्त (कहेहुए) ११ पट्टा ॥ १२५ ॥ १२ अपनी पुत्री के साथ शिवराम नामवाले को यहां १३बुलाया ॥१२६॥१२७॥ १४दुलहन ने उसी को प्रधान करके १५ हासिल १६ उसने अपने अधिकार में और भी धन (हासिल) बढाया १७ सब पट्टा १८ परम शोभा से फूलोंछाया होगया ॥१२८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणोऽष्टमराशौ बुन्दीन्द्रारामसिंहचरित्रे रामसिंहजूंझणूंनामकनगरद्वितीयविवाहकरणानन्तर बुंदीप्रत्यागमनवर्णनमष्टमो ८ मयूख ॥ ८ ॥

आदित सप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूख ॥ ३७० ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभा ॥

दोहा—इम बिलसत बुंदिय अधिप, वैभव अतुल बिलास ॥
जुगर रानिन अनुरत्त जहँ, प्रस्तरि स्वजस प्रकास ॥ १ ॥
सूरि१ सुकवि२ सुभट३न सहित, बिहरत रहित बिकार ॥
सर१धर२वन३उपवन४सदन५, मंसद६सग्गि७सिकार॥२॥
ऋतु पाउस अंतर रसिक, राजत अतुल रसेस ॥
समनुंभूत संगीत१ सह, समुचित कुतुक असेस ॥ ३ ॥
पाउस३ सुख इम भुग्गिपहु, बिलसत सरद४ बहार ॥
इसँ७ प्रति अह बिलासिय अखिल, सह कत्तिप८महसार॥४॥
सूचित हुव गज धृति१८८२ सकहि, अर्ज्जुन२स्मरातिथि१३ उज्ज॥
प्रभु अमात्य कोटापुरहि, प्रस्थित हुव गुनपुज्ज ॥ ५ ॥

( )

कृष्णाराम अमात्यकोबिद स्वामि सत्रुनसाल,
कालफिल्ड१।२ अजण्टसों मिलिबे चल्यो तिहिं काल ॥
सो हुतो तहँ थान सूचित द्रग बाह्ये प्रदेस ॥
बगला१ जहँ बद्ध बिस्तृत लद्ध लभ्य बिसेस ॥ ६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुंदी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, रामसिंह का जूंझणूं नामक नगर में द्वितीय विवाह करके पीछे बुंदी आने के वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और आदि से तीनसौ सत्तर ३७० मयूख हुए ॥

१ पण्डित २ तालाबों में ३ सभा में ४ सामिष भोजन करने में ॥ १ ॥ २ ॥ ५ भूपति ६ अनुभव किया ॥ ३ ॥ ७ आश्विन मास में ८ उत्सव का सार ॥ ४ ॥ १० कार्तिक ९ सुदि तेरस के दिन ॥५॥ ११नगर के बाहर ॥ ६ ॥

॥ उद्धुरः ॥

जब सक बेद हय धृति १८७४ जात, बढि इत अंगरेजन *आत॥
छिति †कर दक्खिनीन छुराइ, इन लिय प्रांत यह अपनाइ ॥७॥
जैपुर१ जोधपुर२ धुर जोरि, बुंदिय३ उदयद्रंग४ बहोरि ॥
करि बस त्यौंहि खिल कोटा५दि, छिति सब स्वीय सासन छादि८[1]
इति[2]मुख थान थप्पि अजंट, बिरच्चिय तंत्र निज निज बंट ॥
सहरन बा[3]ह्य सासन संधि, बहुबिध बंगला लिय बंधि ॥ ९ ॥
करि इक१ सा[4]सिता सब केर, मालिक थप्पि दिय अजमेर ॥
बुंदियनैर तब लहि बंट, आइउ पुब्ब१ टाड अजंट ॥ १० ॥
तिम हुव कालफिल्डर२ द्वितीय, सजि इन्ह अन्यतर१ घर स्वीय ॥
किय तहँ बंगला१ चिति[5]काम, पुरसन पुब्ब१धर सिर धाम ॥११॥
सो हुव पीठ[6]माल समाप्त, पुनि रहि रुद्ध नहि [7]चयप्राप्त ॥
तजि कछु हेतु करि इम ताहि, चर्य तस नं[8]दगामहि चाहि ॥१२॥
तिहिँ पुरतैं सु उत्तर४।७ ओर, दिय तस अस्त दिस३।५ नदि दोर
पगि कछु दूर नदि सन पुब्ब, परिचि[10]तं बंगला१ जु अपुब्ब ॥१३॥

॥ नपुब्ब१अपुब्ब२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

तबसन हो अजंटहु तत्थ, प्रभु पुर आत अवसर अत्थ ॥
इहि प्रति मिलन उक्त अने[11]हैं, आदरि कछु प्रयोजन एह ॥ १४ ॥
तकि हित प्रभु मुसाहब ताम, नयपटु कृष्णाराम स नाम ॥

*अंगरेजोंके समूहने बढकर †दक्खिणियोंके हाथसे भूमि छुडाकर इस प्रान्तको अपने अधिकार में करलिया ॥७॥ १ राजपूतानेकी सब भूमिको अपनी आज्ञासे छाई ॥ ८ ॥ २ इत्यादि स्थानों पर ३ नगरों के बाहर ॥ ९ ॥ ४ सब पर आज्ञा करनेवाला अर्थात् सब के ऊपर एक हाकिम करके उसको अजमेर में रक्खा ॥ १० ॥ ५ बंगले की नीम (बुनियाद) डाली ॥ ११ ॥ ६ पीढा (थाला) मात्र तयार हुआ ७ काम रुककर संचय को प्राप्त नहीं हुआ अर्थात् पूरा बन नहीं सका ८ कोटे में उसको ९ बनाना चाहा ॥ १२ ॥ १० जानने योग्य अपूर्व बंगला हुआ ॥ १३ ॥ ११ कहे हुए समय में ॥ १४ ॥ १५ ॥

सुमति सु पाइ प्रभु सन सिक्ख, तनि प्रभु राज्य वैभव तिक्ख१५

पत्तन *नदग्रामहि पत्त, तकि नय बगला गय तत्त ॥

भिंटिय कालफिल्ड२-सु भाइ, वह जह रीति सम्मुह आइ॥ १६ ॥

मंदिर लैगयो सनमानि, तकि हित उचित स्वागत तानि॥

विरचन विविध†अवस्पनवस्प, रचि कछु मन्त्र ‡बिजन रहस्प।१७।

पुनि लहि गंधतैल१रु पान२, दुवरहि दुरदिस नेह निदान॥

पुनि करि सिक्ख सिविरहिं पत्त, अर्थिन बितरि बसु अनुरत्त।१८।

इम तिथि असित१ मग्ग९ उपादि२, विरचन मिलन झल्लहिं बादि

विदित जु माधवादि विलास१, उपवन झल्ल कृत जहँ आस॥१९॥

जन तहँ हो सु जालम जात, माधव विफल दर्प मचात ॥

दमि निज नृपहिं मासिक देत, अप्पहि बनि नृपत्व उपेत ॥२०॥

प्रतिवल कथनमात्र प्रधान, सबविधि स्वामिभाव समान ॥

धुदिय सचिव तब तिहिं बेल, मडन दुरदिस नय मय मेल ॥२१॥

माधवसोंहु चहत मिलाप, इम गय तास उपवन आप ॥

अभिमुख झल्ल सुनतहि आइ, बाहिर बेल बैलज बिहाइ ॥२२॥

वढि मग पचसत५०० मित अंस, सम्मुह भिंटि अधिक प्रसंस ॥

पुनि दुव२ उवत उपवन पत्त, विरचिय काल कछु हित बत्त ॥२३॥

दिय१ लिय२ अतर१ वीटक२ देय, पटकुटि पत्त पुनि सह श्रेय ॥

हुव यह दोजि२ दिन व्यवहार, बलि करि भूप भेट बिचार ॥२४॥

अतर त्रि३दिन दे तस अग्ग, मेचक१ मिलत गुहतिथि९ मग्ग९॥

---

* कोटा पुर में गया ॥१६॥ † कई प्रकार से वश में नहीं थे उनको वश में करने को ‡ एकान्त में सलाह की ॥ १७ ॥ १ अतर पान लेकर ॥ १८ ॥ २ माधवविलास नामक झालों का किया हुआ ३ बाग ४ है ॥ १९ ॥ ५ जालमसिंह का पुत्र ६ माधवसिंह ७अपने राजा को दड देकर तनखाह देता था ॥ २० ॥ ८ उस बाग में ९ नीतिमय मिलाप करने को ॥ २१ ॥ १० सन्मुख ११ बाग के कोट को छोड़कर बाहर आया ॥ २२ ॥ २३ ॥ १२ डेरे में ॥ २४ ॥

माधव स्वीय नृपहिँ मनाइ, बुल्लन उतहु *श्रील बनाइ॥ २५ ॥
परिकर सज्ज नृप ढिक पेलि, मनिगन आभरन१ पट२ मेलि ॥
बुंदिय सचिव तहँ बुलवाइ, सब बिधि मिलन रीति सधाइ ॥२६॥
बर हय१ खिलत२ †अर्घ बिसाल, मनिमय ‡पट्ट३ मुत्तियमाल४॥
निज नृप पानि प्रति पहुँचाइ, इढ हित बस्तु च्यारि४ दिवाइ ॥२७॥
आदरि नंदग्राम अधीस, सूचित ठानि इम बक्खसीस ॥
सद दिय कृष्णरामहि सिक्ख, तुलि मति ऋछ सम्मति तिक्ख२८
इम बलि² मिंटि उक्त अजंट, कृत दुव२ राज्य भुव गत कंट ॥
इम मुरि हड्ड६१इंद अमात्य, बुंदिय भू बहिष्कृत भ्रात्य³ ॥ २९ ॥
सासन स्वसिर निबहन सूर, हुव नत आइ स्वामि हजूर ॥
बिदलित बिक्खि प्रतिबल बाद, प्रभु किय कज्ज सिद्धि प्रसाद३०
मेचक१ तदनु उतरत मग्ग९, अधिगत पक्ख धवलित२ अग्ग ॥
बनि जहँ तीज३ तिथि ससि बार२, बिरंचिय गोठ६गोन बिचार३१
कारि दुबिलान१ इक्क१ मुकाम, रुचि गय गोठपुर२ प्रभु राम२०१।
साहब कालाफिल्ड२हु संग, दल सह पत्त सूचित ढंग ॥ ३२ ॥
पट्टनिनैर रन करि पुब्ब, अरिदहि अंबुगासि१ कि उब्ब२ ॥
खिरि बलवंत२०१।त्तिलतिल खेत, सूचित भ्रात१ सूनु२।२ समेत३३
तिहिं किय सभ्य निज त्रिबिवेसं, सुत लघु भोमं२०२ तस रहि सेस ॥
तब दिय तातै आसन ताहि, नृपबर प्रीति१ रीति२ निबाहि ॥३४॥

* अपने राजाको लक्ष्मीवान् बनाकर॥२५॥२६॥ †बडे मूल्य के ‡ शिरपेच॥२७॥१ सभा से ॥ २८ ॥ २ फिर अजंट से मिलकर, बुंदी की भूमि के बाहर से वह ३ (कृष्णराम) ॥ २९ ॥ ३० ॥ ४ शुक्लपक्ष के प्राप्त होने पर ५ गोठड़ा नगर जाने का विचार किया ॥३१॥ ६सेना सहित ॥३२॥ ७ समुद्र में ८ बड़वाग्नि समान ॥ ३३ ॥९इन्द्रने उस बलवंतसिंह को अपना सभासद किया जिसका पुत्र १० भोमसिंह बाकी रहा तिसको ११ पिता का पाट दिया ॥ ३४ ॥

लहि जस आइ पुनि दुविलान, अहे कछु रामि सिकार अमान।
परतट जो अजट पठाइ, इत पुर अप्प विलसिय आइ ॥३५॥
समुझहु यह१८८७हि लग्गत साक, जट्टन खहि महि कजाक।
तोपन भरतपुर गढ तोरि, मृध जय सवन मान मरोरि ॥३६॥
थिर सब देस१ पुर२ वस थप्पि, अर्भक नृपहिं सो पुनि अप्पि॥
कारि यह कंपनी जय काम, नृप१ अयर२ उद्धरिय जस१नाम२ ३७
भाकत कतिक इहिं १८८२ एक भाव, बर्मा नृपहु तास बढाव।
सूबा अराकान१ रचकीय, तिम वलि तनासरम२ द्वितिय२ ॥३८॥
द्विकर२ यह अंगरेज७न दिन्न, कतिकन अत्र ससय किन्न ॥
समुझहु ता१८८२हि सूचित साक, जैपुर ठानि कपट कजाक ३९
श्रावक इक१ झूत१ सनाम, करि तिहिं धुत्त धुत्तन काम ॥
अतर भेदि सब अवरोधं, बहु दल छवि रानिन बोध ॥ ४० ॥
मुख्य जु भट्टिनी तिन माँहिं, निस्त्रप नाँहिं जिहिं किय नाँहिं ॥
तिय वह भट्टियानिय१ तास, हुव करि द्वैशहि कुल उपहास।४१।
रूपा किंकरिय अधरत्त तस हुव मुख्य मत्रिय तत्त॥
इत राहि झून१ बाहिर ईस, उत द्वैन२ उक्त मध्य अधीस॥ ४२ ॥
श्रावक बुद्धि फंद प्रसारि, राउल वैरिसल्ल विडारि ॥
बाहिर मुख्य झूत१ कुबोध, रूपा१ धांसँखी अवरोध ॥ ४३ ॥

१कुछदिन २यामल नदी के परले किनार ॥३५॥ ३ युद्ध करके जाटों को मारके ४युद्ध में ॥३६॥ ५बालक राजा को भरतपुर पीछा देकर ६ ईष्ट इंडिया कंपनी ने जय का काम करके भरतपुर के राजा और ७ आगे आनेवाले समय के शुभ भाग्य के यश और नाम का उद्धार किया ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ कितनेही लोग इसमें सन्देह करते हैं ॥ ३९ ॥ १० झूनाराम नामक ११ धूर्त ९ सरावगी वैश्य धूर्तों का काम करके १२ सब जनाने को अपने में मिलाकर ॥ ४० ॥ १४निर्लज्ज १३ भटियानी रानी ने नाहीं नहीं की ॥ ४१ ॥ भीतर रानी भटियानी और रूपा पडारन ये १५ दोनों ही मालिक रहीं ॥ ४२ ॥ १६ निकाल कर १७ जनाने में रूपा पडारन उसकी मन्त्री रही ॥ ४३ ॥

मन जिहिं झुंत१ रानिश्न मेलि, खलपन खेल अद्भुत खेलि ॥
महलन छन्न द्वैरहि मिलाइ, समुचित[1] राउलहिं निकसाइ । ४४ ।
बहु बसु[2] अंगरेजनअप्पि, थिर सब तंत्र[3] अप्पन थप्पि ॥
कति अवरोध[4]जन प्रतिकूल, सह हठ जे लखे हिय सूल । ४५ ।
जे सब नारि१ नाजर२ जूह, आये न लखि निज मति ऊह[5]॥
गहि तिन्ह पटकि कैद[6] अगार, दुष्टन रुद्ध करि करि द्वार । ४६ ।
गन बहु ठानि अनँसन[7] गूढ, मारे सँतन[8] जन करि मूढ ॥
सिसु वय पिक्खि नृप जयसीह, बहि त्रिक३ त्रास तास अबीह[9] ४७
मिलि तह स्यामसिंह४।१प्रमत्त, प्रँभु स्वसुरत्व[10] चाहि जिहि पत्त॥
सठ इक चिमनसिंह५।१ सनाम, धरि भव मनोहरपुर धाम ।४८।
जो खल हो खवासिप्रजात[11], यह द्विक२ सेख कुल इत आत ॥
मालिक उक्त रानिय१ मांहिं, अभिमत किंकरी२[12] जुत आंहिं ४९
इत हुव उक्त जुग२ जुत एस, बाहिर झुंत१वैश्य[13] बिसेस ॥
तँहँ इम नारि दुव२ नर तीन३[14], इम मिलि भुक्त राज्य अधीन ॥५०॥
दृढ दम झुंत१ रानिय२ द्वैरहि, हाकिम उग्र सब सिर ठैहि ॥
असहन[15] ज लखे भट ओर, जिन्ह दिय काढि घर बरजोर[16] ॥ ५१ ॥

---

१ राउल वैरीशाल उचित था जिसको निकाल दिया ॥ ४४ ॥ २ अंगरेजों को बहुत धन देकर सबको अपने ३ आधीन कर लिया ४ कितने ही जनाने लोग विरुद्ध थे ॥ ४५ ॥५इनकी बुद्धि की तर्कना में नहीं आये ६ कैद घर में ॥ ४६ ॥ ७ खाने निराहार रखकर ८ सैकड़ों मनुष्यों को मार डाले, राजा जयसिंह को बालक जानकर इन तीनों (एक झूंताराम और दोनों उपरोक्त स्त्रियों) की ९ निर्भय त्रास बही ॥४७॥१०रावराजा रामसिंह का श्वसुर ॥ ४८ ॥ ११ पासवान स्त्री से उत्पन्न १२ रूपां नामक दासी सहित तीनों आदर पायेहुए तथा उस रानी का अभीष्ट साधनेवाले थे ॥ ४९ ॥ १३ झूंताराम वैश्य १४ इस प्रकार दो स्त्रियां भटियानी और रूपां और तीन पुरुष (झूंताराम और दोनों सेखाउत) इन पांचों ने मिलकर सब राज्य को अपने अधीन करके भोगा ॥ ५० ॥ १५ नहीं सहने योग्य १६ जबरी से निकाल दिये ॥ ५१ ॥

नतसिर जे रहे वल नासि, मुरुपहु ते लयेहि बिसासि ॥
जयपुर ईस१ तजि भजि जार२, इम हुव अधकार अगार ॥५२॥
राउल जो प्रधान विरत्त३, प्रेरित मान बिनु गृह पत्त ॥
सो रहि द्रग निज सामोद, कट्टहि काल पत्त प्रमोद ॥५३॥
मिलि सक अग्ग अहि धृति१८८३ मान, थिर गिनि अज्जभुव नि-
ज थान ॥
हो इह नवम९ जनरल हत, जिहिँ कहिँ सिंधु जुग२ परजंत॥५४॥
अवहित कपनीजन आनि, मन निज छद अज्जन मानि ॥
अब दिय यह निदेस अभग, स्त्री जिन१ दहहु निजपति२सग॥५५॥
थित पुनि नवम९जनरल थान, अह कछु मटकलप१०१आभिधान
अर्ज्जन रोध मेटि असेस, दिय जिहिँ सुद्धि लेख निदेस ॥ ५६ ॥
तिम लिखि खबर छेद तब तेहि, हुव मिथ प्रहित जित तित हेहि ॥
सक इत उक्त १८८३ मिति अनुसार, बनि जहँ छद्मुख तिथि६
बुध वार ४ ॥ ५७ ॥
पगि सित१ पक्ख आम सहस्य१०, रुचि मन कोहु कज्ज रहस्य ॥
पिप्पललव जहँ तहँ प्रात, अह चढि पंच५ नाडियँ आत ॥५८॥
गदियत खेरला१ जहँ ग्राम, आवत मटकलप१०१ अभिराम ॥

१ मस्तक झुकाकर ॥ ५२ ॥ २ प्रधानपन से विरक्त ३ बिना मान होकर घर गया ॥ ५३ ॥ ४ आर्यावर्त को अपना निश्चल स्थान समझ कर खेद है कि जिसका कथन पूर्व और पश्चिम के दोनों समुद्रों तक था उस नवम गवरनर जनरल ने ॥ ५४ ॥ ५ कपनी के लोकों को सावधान करके यह आज्ञा दी कि स्त्रियों को अपने पतियों के साथ ६ मत जलाओ अर्थात् सती होना बंध किया ॥ ५५ ॥ ७ कुछ दिन ८ आर्य लोकों की सम्पूर्ण रोक मेट कर खबर के लेखों (अखबारों) की आज्ञा दी ॥ ५६ ॥ उसी समय से ९समाचार पत्र लिखे जाकर १० परस्पर प्रेरित हुए जो अब तक हैं ११ स्वामिकार्तिक की तिथि (ज्योतिष में छठ तिथि का स्वामी स्वामिकार्तिक है) ॥ ५७ ॥ १२ पौष सुदि १३ पाच घड़ी दिन चढे ॥ ५८ ॥

इतसन कृष्णराम१ अमात्य, जिहिं जस जातरूप[1] कि जात्य[2] ॥५९॥
पहुँचि सु खेरला हद पास, मिलि जिम पंगु[3]१सन कइमास२॥
इम तिहिं लै मुरयो मग आस, सद्धिय ताल१ तालहरा१ स ॥६०॥
जनरल नवम९ प्रतिनिधिजो१हि, संभर मंत्रि पटु१ इत सोहि॥
ख्यात जु जवन जमियतखान३।१, थित ढिग सो वकीलहु थान[4]६
जहँ इम जाम त्रिक३ निस जात, परि खिल[5] जाम इक्क१हि प्रात ॥
ह्वाँसन होइ प्रस्थित प्रीत, आवत ग्राम१ तीन३ अतीत ॥६२॥
गहि नवग्राम३।१ उत्तर४।७ ओक, चहि जह रम्य आयत चोक ॥
प्रभु उत आइ सम्मुह पत्त, रहि थित रीतिक्रम अनुरत्त ॥६३॥
मिलि तहँ मटकलप१०।१ महिपाल२, बाहुरि तुष्ट नेह बिसाल॥
रहि वह१ चैल[6]गृह अनुरत्त, प्रभु२ इत सुभ्र सौधन[7] पत्त ॥६४॥
इह गुरु५ सप्तमिय७ अवदात, जहँ निस इक्क१ नाडिय जात॥
भिंटन भूप१ सूरि१ सतेज२, आइउ उक्त तहँ अंग्रेज२ ॥६५॥
सु बिसत छत्रसौध[8] समाज, अभिमुख[9] उठि तब अधिराज ॥
जिम बिधि अद्ध अंगन जाइ, आनि सु संग हित अधिकाइ ॥६६॥
बैठिय इक्क१ पीठें१ बिसेस, अभिहित[11] अंगरेज१ इलेस२ ॥
जहँ कछु बिजन[12] मंत्रहु जोरि, बखसिय अतर१ पान२ बहोरि६७
जनरल दसम१० सम्मत जोहि, हाकिम सबन सिरपर होहि ॥
तिहिं क्रम अधिक आदर तास, करि दियसिक्ख प्रीतिप्रकास६८
जिहिं पुनि अजिर दल[13] लग जाइ, प्रभु इम बाहुरिय पहुँचाइ ॥

जिसका यश १श्रेष्ठ २चांदी के समान था ॥५९॥ ३ जयचन्द्र से कैमास मिला जैसे ॥ ६० ॥ ४ कायम मुकाम ॥ ६१ ॥ ५ एक पहर रात बाकी रहते ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ६ डेरे में ७ श्वेत महलों में ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ८ छत्रमहल की सभा में घुसते ही ९ पेसवाई को ॥ ६६ ॥ १० एक आसन पर ११ कहाहुआ अंगरेज और भूपति १२ एकांत सलाह करके ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ १३ आधे चौक तक

वह गय तदनु जनपदं डए, संभर विभव बिलसत सिष्ट ॥ ६९ ॥
सुचित१८८३ सकहि तनि गृह सोक, जिय इत सधिया परलोक॥
रहि अवलों सु दोलतराव, पावत पद पटेल पसाव ॥ ७० ॥
वितजिय वेर तिहि इहिं वेर, गृह गृह हत हुव ग्लालेर ॥
इहिं सुत कृतक तात अभाव, रहि तस पट्ट जनकुव१राव ॥ ७१ ॥
माहजि१ पुत्र२ पुत्र३ सु मानि, किय तिम अगरेजन कानि ॥
इत प्रभु अप्प इह्व६१न भर्क, सत्रन सिद्ध इद्द उदर्क ॥ ७२ ॥
सत्थिन सत्थ उक्त १८८३हि साक, काननं मढि दोर कजाक ॥
वह्निय घात पात बिसक्ति, सक्तिन कोलि बेधन सक्ति ॥७३॥
दोरत पिछि वाजिन देत, लघु वढि अप्प किरि हनि लेत ॥
वढि वढि दे पटी इक१ बीच, करि करि मग्ग सोनित कीच॥७४॥
दुव२ अप३ वेधि इम छितिदार, भूपति वटि सत्थिन भार ॥
अगामि अप्प किति अक्त, जहँ मुरि तोवं अरुयान जुत ॥ ७५ ॥
आवहिं सिद्ध सस्त्र अगार, वत्सर पद्रहम१५ बय वार ॥
मिलि चउ अठ धृति१८८४ सक माप, इत पुर नंदग्राम इलाप७६
जबलग आयु लहि विधि जोर, किय निज देह हानि किसोर ॥
पिथ्थिल३१ मगरोल प्रघात, गय नृप भ्रात लघु तजि गात ॥७७॥
तस सुन पट्टपति किय तांम, सचिवहिं रामसिंह सनाम ॥

१जिसपीछे जहां जानेकी इच्छा थी उस२देशमें गया और ३बहुपाव(रामसिंह) ने ३अष्ट वैभव का विलास किया ॥६९॥७०॥ उसने इस समय ४शरीर छोड़ा ५ दत्तक (गोद लिये हुए) ने पिता के अभाव मे ग्वालेर का पाट लिया ॥७१॥ ६आगामि शुभ कर्म फल से॥७२॥७वनमें८परछियों से मूवरों को वेधनेकी शक्ति ॥७३॥ ९शीघ्र पकड़कर सूवरों को मारलेते हैं ॥७४॥ १०सूवरों को ११रक्त से लाल भालों सहित मुड़ते हैं ॥७५॥ कोटाके १२भूपति ॥७६॥१३किशोरसिंह ने शरीर छोड़ा १५ मगरोल के युद्ध में राजा किशोरसिंह का छोटा भाई १४ पृथ्वी-सिंह मरा था ॥ ७७ ॥ उसके पुत्र को १६ तहां पाट का पति किया

कहियत ता१८८४हि सक समकाल, मृतइत उदयपुरमहिपाल॥७८
*रतजस भीमसिंह जु१ रान, जिहिं सुत भो अधीस जवान२ ॥
बलि अब लखनेउव बात, जहँ सुत लघु सहादत१ जात ॥ ७९ ॥
दिय असु गाजिमुखयुद्दीन२, रहि इम तह नसीरुद्दीन ॥
सूचित१८८४सकहि बाहुल८२वेत२, प्रतिपद१बीर२रवि समुपेत ८०
निजकवि जनक चंड सनाम, तुम प्रभु पूज्य मन्निय ताम ॥
करि इक बैठि अग्ग कुमंत, अंबकद्दंग लिय बलवंत२०१ ॥८१॥
तबसन रावरे प्रभु तात, खिजि हुव आत सिर अनखात ॥
कविबर चंड तदपि लुकेन, रुचि बस गोठ जात रुकेन ॥ ८२ ॥
तब नृप इतहु भासत भीम, तिन्ह प्रति बंध किय ताजीम ॥
सो अब उक्त१८८४खिन अनुसार,प्रभु पुनि अप्पदिय करिप्यार८३
सत्थहि खास हय२ सिरुपाव४, भूधव तुष्ट दिय हित भाव ॥
आदरि चंड कवि इम अप्प, दलि किय नष्ट कुपनन दप्प८४
इत सर नाग धृति१८८५ सक आत, अह जह नवमि९मधु१ अव-
दात१ ॥
बिक्कमनैर लहि बिधि बाम, नृप मृत सुरतसिंह१ सनाम ॥ ८५ ॥
तस सुत रत्नसिंह२सु तत्थ, हुव नृप राज्य करि निज हत्थ॥
सकतिहिं१८८५बिसद२फग्गुन१२आमें,इतपुरकापरनिअभिराम ८६

॥७८॥*यशमें अनुरक्त रहनेवाले महाराणा भीमसिंहका देहान्त हुआ जिनका पुत्र जवानसिंह उदयपुर का पति हुआ॥७९॥१लखनेऊ का नवाब गाजियुद्दीन मरा २ कार्तिक सुदि पक्ष में ३ रवि वार सहित ॥८०॥ ४ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान को हे प्रभु (रामसिंह) तुमने उनको पूज्य माना ५ बलवंतसिंह ने खोटी सलाह से नैणवा नगर लेलिया था ॥ ८१ ॥ ६ गोठड़े जाते नहीं रुके ॥ ८२ ॥ ७ आपने प्यार करके वह ताजीम पीछी दी ॥ ८३ ॥ ८ भूपति ने प्रसन्न होकर ९ दर्प (घमंड) ॥ ८४ ॥ १० चैत्र सुदि नवमी के दिन ११ बीकानेर में ॥ ८५ ॥ फाल्गुन १२ मास के शुक्ल पक्ष में ॥ ८६ ॥

हव लहि वधु *परिणाय हेत, नृप गय निज †पितव्य निकेत॥
करि तहँ कज्ज विधि सतकार, आगत कित्ति जित्ति अगार॥८७॥
वनि सामत सुत उत विंद, ‡अहति उचित ठानि आनद॥
सरमथुरा१रुप नैर सिधारि, सोधित लग्न खिन अनुसारि॥८८॥
कुमरिय जो मनोहर केर, वनि आनदकुमरि सु वेर॥
वासर कतिक तत्थ विहाइ, छिति थिति अमिति चिंतिजसछाइ८९
सुत बलदेव१ इम वल सत्थ, जनकहु जाइ व्याहि सु जत्थ॥
लालित लै वधु१ वर२ लार, आगत रम्य गम्प अगार॥९०॥
इत हय हत्थि धृति १८८७ सक आत, मिति१ दल१ सुक्र३ मास सुहात॥
प्रभु तहँ अनुज निज गोपाल२०२।४।१, सानुज विनपहरि२ अरि साल॥९१॥
भेजिय दुव२हि व्याहन भ्रात, बल सजि भिन्न भिन्न बरात॥
नागरनी पुरी पति गेह, अग्रज१ विंद गो इत एह॥९२॥
तिहिँ रघुनाथ व्याहिय ताम, नंदिनि चदकुमरि२०२।१ सनाम॥
वासिर१ रहऊरि२ विनीत, अह कछु किन्न तत्थ अतीत॥९३॥
पित्थल१ रान वँश्य प्रधान, सह तह खाँहमीद२ सुजान॥
किय जुग२ मुख्य तहँ जस कम्म, दिय तिन त्याग सहँसन द्रम्म१
भूखन१ वस्त्र२गय३हय४भोलि५, खिल सब द्रव्य को सन खोलि॥
अँहति भट्ट लहि अधिकार, हुव व्रजलाल वंटनहार॥९५॥
इम करि आढय जाचक जात, बहुरिय गम्य बट्ट बरात॥

*विवाह के कारण †काका के घर गये॥८७॥ ‡दान॥८८॥१ यश का समूह छाकर॥८९॥९०॥२ ज्येष्ठ मास के आधे शुक्ल पक्ष में ३ विनयसिंह॥९१॥९२॥४ तहां कितने ही दिन वितीत किये॥९३॥५ राणा के वंश में प्रधान (राणावत)॥९४॥६ ऊंट ७ दान का अधिकार॥९५॥

इत पुर पहुँचि उनियाराहु, लिय बरि बिनयहरि२ तिय लाहु॥९६॥
सुत तहँ भीम भव *दासेय, गुन पटु नाम जालिम गेय ॥
तनुजा रूप१ गुन२ जुत तास, आनंदादिकुमरिय१ तास ॥ ९७ ॥
बिधि सह बिनयसिंह१ सु ब्याहि, गनवसुदत्त जस अवगाहि ॥
कूरम बिरुदसिंह१ कुमार, इत हुव मुख्यपन अधिकार॥ ९८ ॥
कहि तहँ रत्न१ भट्ठ कुलीन, क्रम हित त्याग बंटन कीन॥
सद्दन स्वामिपन गत सल्ल, मन्त्रि सु जान सुत फतमल्ल ॥ ९९ ॥
निज करि स्वामि तिहिं जुत नेह, अरु हुव सचिव जालिम एह ॥
जिहिं जामात हित बसु जाल, बहुबिध हरन दत्त बिसाल ॥१००॥
इत इन बंटि बहु बसु व्रात, हंकिय हुलसि बट्ट बरात ॥
इन कँहँ स्वसुर नारव आइ, चल्लिय सरनि३ हद पहुँचाइ ॥१०१॥
इम हुव उभय२दिस उपयाम, किय बिधि बिचहि असहन काम॥
इत नृप मान ताहि अनेह, बाढन बहुल सद्धि सनेह ॥१०२॥
निज लिपि पत्र प्रीति निकेत, सतदुव२०० सादि संघ२ समेत ॥
चारन इक१ जिहिं नृप चित्त, मानस खास खिलिबत मित्त।१०३।
जो सुत जुगत नामक जात, भैरव स्वीय नाम भनात ॥
सो इत पठ्यो बनसूर, हित हित हड्ड१ हेलि हजूर॥ १०४ ॥
दक्खिन२।३ द्रंग बाह्य प्रदेस, आतहि उत्तरिय तहँ एस ॥
बहुबलँ दुरदिस प्रस्थित बिक्खि, सठ इत दुरित छल बल सिक्खि

॥९६॥*दासी का पुत्र ॥९७॥९८॥९९॥१दहेज ।'१००॥२नरूका ३मार्ग में ॥१०१॥ ४ विवाह ५ नहीं सहन करने योग्य ६ उसी समय जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने ७ बहुत स्नेह बढाने के लिये ॥ १०२ ॥ ८ दो सौ सवारों के समूह सहित ॥ १०३ ॥ ९ जुगता का पुत्र १० भैरवदान नामवाले ११ बणसूर शाखा के चारण को १२ हाडाओं के सूर्य (रामसिंह) की हजूर में भेजा ॥ १०४ ॥ १३ नगर के बाहर दक्षिण दिशा में उतरा. १४बुंदी की सेनाको विवाहों में दोनों ओर गईहुई देखकर ॥ १०५ ॥

कुसचिव पट्टरानिय केर, बिच पुर जे जुरे तिहिं बेर॥
मिलि तह रूपराम१ अमात्य, बलि सरदारमल्ल२हु बात्य ॥१०६॥
निस इक१ विप्र१ पोखरनीय१, बानिंज ओसवाल२ बिईय२॥
इन विच तीसरो३ अघऊत, बाहुज३ सिंह३भत विभूत३ ॥१०७॥
यह रठोर मेरतियाहु, बलि हुव भीर कहि मल वाहु ॥
इम द्विज१एक१ ऊरुज३ एक१, बाहुज२ एक१ हीन विवेक ॥१०८॥
मिलि त्रिक३ एह महिय मत्र, तनि छल मात होहु स्वतन्त्र ॥
मारहु कृष्णराम१ अमात्य, प्रतिभट होहु तेहु निपात्य ॥ १०९ ॥
इन्ह वल उँपाज जुग गत आँहिं, निरखहु कोहु रोधक नाँहिं ॥
विलसहिं राज्य करि निज वस्य, रक्खहु रत्ति गूढ रहस्य ॥ ११० ॥
भूपति चहै इक सुख भोग, नकरहिं नैक जास विजोग ॥
मन इम रीझि प्रभु जामातें, मन्नहिं मुदित विलसन बात ॥१११॥
जो कछु विघ्न बिच परिजाइ, मेरहि भूप भट हठ भाइ ॥
जुद्धहु जानि हैं भय भार, तो निज तंत्र दक्खिन२।३ द्वार ॥११२॥
दुवसत२०० सादि भट समुदाय, समुझहु अप्पनैंहि सहाय ॥
जिन्ह वल दग बाहिर जोरि, बस निज द्वार पेठि बहोरि ॥ ११३ ॥
करि इम नियतँ इच्छित कज्ज, अगमि लेहु बुदिय अज्ज ॥
जेपुर जो करी हम जाइ, पुनि इह क्यों न सभव पाइ ॥११४॥
सुनि द्विज१ मत्र यह दृढ संधँ, कृतघन ओसवाल२ कबध३॥

---

१ पाटवी रानी के खाट संपिधन २ शूद्र ॥ १०६ ॥ ३ वैश्य ४ क्षत्रिय ५ विभूतसिंह ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ ६ जो मुकाबला करनेवाला होवे उसको भी मारो ॥ १०६ ॥ हानों सेना गई हुई है इस कारण अपने ७ छलको ८ रोकनवाला कोई नहीं है ६ राज्य को वश म करके भोगेंगे १० इस सलाह को रात्रि में गुप्त रक्खो ॥ ११० ॥ ११ राजा अपना जमाई है सो ॥ १११ ॥ १२ दक्षिण का द्वार अपने आधीन है ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ १३ निश्चय हो चाहा हुआ कार्य करके ॥ ११४ ॥ १४ दृढ प्रतिज्ञा

तिहिँ निस तीन३ ठ्है इक१ तंत्र, सदनन गुप्त मंडिय मंत्र ॥११५॥
प्रेरिय सुद्धि हित चर प्रात, जदपि न नेक अवसर जात ॥
जहँ गत अंघ्रि१ऊन दु२जाम, तहँ लखि इष्ट संभव ताम ॥ ११६ ॥
अग गज अह ससि१८८७सक आहि, अधिगत सुक्र५मास अमा३०हि
तहँ तिथि उक्त भुक्त अनेहँ, अनुचित एह तकि त्रिक३ एह ॥११७॥
बाहुजँ२ नाम सालुव१ बुल्लि, खलपन मंत तिहिँप्रति खुल्लि ॥
अक्खिय कृष्णाराम१ अमात्य, घर अब है जु इकल१ घात्य ११८
आवहु ताहि जो हनि अज्ज, कृत मत होत सब निज कज्ज ॥
तो भट ग्राम दै दस१० तोहि, करिहैं ईस सब बल कोहि ।११९।
सुनतहि एह सालुव सज्जि, मन तस वीररस बस मज्जि ॥
सय गहि सानसित खर खग्ग, धुरि लिय सचिव परिखद मग्ग१२०
द्रुत जिहिँ सचिव संसद द्वार, पहुँचत ठानि दंभ प्रसार ॥
पठई कहि मुसाहब पास, बिन्नति करन संधिय१ ठपास२ ।१२१।
भेजिय मोहि सत्वर भाखि, अप्पहिँ सूचिबे अभिलाखि ॥
जो मुहिँ बिजन खिन मिल जाइ, तुमकहँ तो सु गोप्य सुनाइ१२२
करिहो सिष्ट जो इहिँकाल, कहिहौं सोहि जाइ कृपाल ॥
बिगरहिँ कज्ज होइ बिलंब, बज्जहिँ तो अपष्टुर बंब ॥ १२३ ॥

१घरोंमें सोते हुओं ने यह सलाहकी ॥११५॥ प्रभात हीर२खचरके लिये हलकारे को भेजा ३पौने दो पहर जाने पर४नहां ॥११६॥५ज्येष्ठ मासकी अमावास्या के प्राप्त होने पर६उक्त तिथि के भोगने के समय ॥११७॥७सालू नामक चत्रिय को बुलाकर ८ घात करने (मारने) योग्य ॥११८॥ ९ सब सेना का सेनापति करेंगे ॥ ११९ ॥ उसका मन वीर रस में १० डूबगया ११ हाथ में साण से तीक्ष्ण कियाहुआ १२लांदण खड्ग लेकर१३सचिव की सभाका मार्ग लिया ॥१२०॥ १४ सभा के द्वारपर ॥१२१॥ १५ शीघ्रता कहकर १६ आपको सूचना करने को भेजा है १७ एकान्त समय मिलजावे तो तुमको वह १८ गुप्त वार्ता सुनाऊं ॥ १२२ ॥ १९ इस समय जैसा शिष्टाचार करोगे वैसा ही जा कहूंगा २० निन्दा के तथा विपरीत नगारे बजेंगे ॥ १२३ ॥

सुनियत धाइभ्रात असेस, जो पटु जदपि दिष्ट१ रु देस२ ॥
पै परि गहन कुक्कुटि पास, हुव बहु पटुन पुव्वहु ३हास ॥१२४॥
मन ऋजु१ सत्यबैन२ अमूढ३, गहत न कुमति कुहकन गूढ ॥
जु कहै सत्य सुहि दृढ जानि, उरझत पास मग पग हानि ।१२५।
चतुरहु सचिव इम हित चाहि, तिहिंखिन निकट बुल्लिय ताहि ॥
इम ढिग सचिव सालुव१ आइ, सकुसल सब उदत सुनाइ ।१२६।
लघुगोति बिप्र आसिख१ लार, जिहिं कहि ओसवाल जुहार२ ॥
खल हनि पास पहुँचत खग्ग, इक१कर किन्न छिन्न अलग्ग१२७
असि सुहि झारि पुनि तस अस, बढ्ढिय साचिउर१ सह बस२ ॥
परिजन दर्श तहँबिस३।१पंज्ज४।२,कछु रहिदूर निबहत कज्ज१२८
जिततित ते दुरे भय जानि, सचिवहिं सत्रु इत मृत मानि ॥

यह चतुर था तोभी १ देश काल के कारण २ उस छली की पाश में पड़गया सो इसी प्रकार पहिले भी बहुत चतुरों का ३ नाश होगया है ॥ १२४ ॥ ४ सरल (सीधे) मनवाले और सत्य बोलनेवाले चतुर छली लोगों की छिपीहुई बुरी बुद्धिको नहीं जान सकते और जो वह कहे उसीको सत्य जानकर उसकी पाश में उलझ जाते हैं ॥ १२५ ॥ इस प्रकार उस चतुर सचिव ने भी हितकी चाह से उस समय उसको पास बुला लिया ॥ १२६ ॥ ५ छोटा कहे जैसे उस ब्राह्मण का आशीर्वाद कहकर ओसवाल वैश्य (सिंघी) का जुहार कहा और उस दुष्टने समीप पहुँचते ही तरवार मारकर उस धाय भाई का एक हाथ काट कर अलग करदिया॥ १२७ ॥ उसी तरवार को फिर उसके कंधे पर मारी सो ६ तिरछी होकर छाती सहित पीठ की पांसे की हड्डी को काट डाली ७ उस समय पास के लोग कम ही थे एक वैश्य और दूसरा ८ छुद्र था जो भी कुछ काम करते हुए दूरही थे ॥ १२८ ॥ ९ (*) मराहुआ जानकर

(*)यहनोट लिखतेहुए हमको बहुत खेद होताहै क्योंकि इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्लने इसग्रन्थमें इतिहासलिखने में अपूर्व रीति से सत्यका निर्वाह किया है जिसमें यहां आकर इस नोट से उस सत्यता पर कलंक आताहै, परन्तु सत्यके अनुरोध से हमको लिखना पड़ता है, अर्थात् महाराव राजा रामसिंह के विवाह और कृष्णराम धायभाईके मारेजानेमें जो वृत्तान्त जोधपुरकी ख्यातमें लिखा है उसमें और सूर्यमल्ल के कथनमें बहुत अन्तर है और यह ख्यात उसी समय की लिखी हुई होने से विश्वासनीय है इसके अतिरिक्त इस ख्यात का

लिखना अनेक ख्यातों के लेखो से प्रामाणिक सिद्ध होगया है इस कारण जोधपुर की ख्यात का सारांश नीचे लिखाजाता है कि रावराजा रामसिंह के विवाहके व्ययके अर्थ कृष्णराम धायभाईने कोटाके सेठ दानमल जोरावरमल से दो लाख रुपये ऋण लेकर खत लिख दिया जिसकी खबर जोधपुर के महाराजा मानसिंहको हुई तब अपने भले आदमी भेजकर उक्त सेठ के रुपये चुकाकर वह खत असल ही अपने पास मंगवा लिया और विवाह के समय वह खत, पचास हजार रुपये नकद और पचास हजार रुपयों की मौल्यकी मोतियोंकी कंठी इनके साथ अपनी पुत्रीके हतलेवेमें रख दिया, इस खतके हतलेवेमें रखनेके कारण कृष्णराम धायभाई बहुत अप्रसन्न हुआ कि महाराजा मानसिंहने असली खत हतलेवे मे रखकर हमारे राज्य का हतक कर दिया और इसी अप्रसन्नता के कारण यह प्रसिद्ध किया कि इसी बरात से यहा से ही सीधे जूंझनू जाकर रावराजा साहिबका दूसरा विवाह किया जावेगा, इस बात से महाराजा मानसिंह भी बहुत अप्रसन्न होगये और आज्ञा की कि एक बार जोडे सहित बुंदी मे जाकर पीछे जो चाहे जहा विवाह करे परन्तु बाईको मार्ग में छोडकर जाना अनुचित है इसीकारण बाईको पहुँचाने के नाम से सिंवी मेघराज आदिके साथ अपनी सेना देकर पहुँचाने को भेजे जिन्होंने रावराजा को परभारे जूंझनू नहीं जाने दिया और बुंदी लेगये और कंकनडोरे खोले पीछे दूसरे विवाह के अर्थ जाने दिया.

कुछ समय पीछे महारावराजा रामसिंह की माता जो कृष्णगढ के महाराजा कल्याणसिंह की बहिन थी उससे और उक्त रावराजा की महारानी (महाराजा मानसिंह की पुत्री) से बहुत विगाड होगया और कृष्णराम धायभाई उक्त माजीसाहिबा का कृपापात्र था जिसको बाईजी साहिबा (जोधपुर के महाराजा मानसिंह की पुत्री) ने अपने पीहरवालो के द्वारा मरवाडाला उस समय महाराजा मानसिंह ने अपनी पुत्रीको लानेके लिये बणसूर शाखाके चारण भैरवदानको जमइयत के साथ भेजा था उसकेवहा पहुँचने पर उक्त धायभाई मारागया तब रावराजा साहिब की माताकी आज्ञासे जोधपुरवालो पर तोप चलना प्रारम्भ होकर लडाई होनेलगी तब भैरवदान अपने लोगो सहित कोटाके राज्य नानते में चलागया और भभूतसिंह आदि नौहरे के लोग मारेगये जिसपीछे महारानी राठोडी को मारनेके लिये उनका महल घेर लिया गया परन्तु महारानी की लोंडिया बंदूक आदि शस्त्र लेकर खडीहोगई और किंवाड बंद करलिये इससे बचगई और यह खबर कोटा में बूडसू के ठाकुर प्रतापसिंह के पास भेजी सो उक्त ठाकुर और भैरवदान पाचसौ सवारों से बुंदी गये और अपनी बाईके महल का घेरा उठाकर चार दिन से अन्नजल रोक रक्खा था सो पहुँचाया और उसी समय पर अजंट साहिबने आकर दोनो ओर का बखेडा मिटादिया, यह वृत्तात सुनकर जोधपुरके महाराजा मानसिंह ने ठाकुर प्रतापसिंह का बूडसू का ठिकाना पीछा बखश दिया अर्थात् बूडसू का ठिकाना खालस[1] होजाने के कारण ठाकुर प्रतापसिंह कोटे में जा नौकर हुआ था सो उक्त सेवा के कारण बूडसू का ठिकाना पीछा बखश दिया गया बुंदी और मेवाडवालो के द्वेष है इसी प्रकार बुंदी और जयपुरवालो के भी द्वेष चला आता है इसी कारण इन राज्योंवाले परस्पर एक दूसरे की अनेक निन्दनीय बातें उडा दिया करते हैं जैसे बुंदीवालो ने जयपुर के झूंताराम आदि की निन्दा उडा रक्खी है जो इस ग्रन्थ में भी ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) ने लिख दी है वैसे ही उक्त राज्योंवालो ने बुन्दी की घडतें कररक्खी हैं परंतु मूर्खता से ईर्षा द्वेष करके अनेक लोग अनेक घडंते किया करते हैं वे विद्वान्

बाहुरि छिप चोर विधान, सो लगि उत्तरन सोपान२ ॥१२९॥
कायथ सासिता वल केर, बिच भिरि सम्मुहो तिहिं वेर ॥
लगि हठ नामकरि सिवलाल, कर तस नग्ग लखि करवाल१३०
अखसी ताहि भरि निज वत्थ, जुज्झिय रक्खि हानि न जत्थ ॥
सत्रुहु जो सिट्यो भय भार, परसिर दे सक्यो न प्रहार ॥१३१॥
इम तहँ लुत्थिवत्थन आइ, जुज्झत द्वै२ गिरे अध जाइ ॥
रचि जन जामिकन तह रीस, सालुव१ सो कस्यो गतसीस१३२
उपयम करन इत अनुजात, भूपति भेजि इम दुव२ भ्रात ॥
तहँ कुल पक्ख जुग२ सम तुल्लि, बीकानेर पति सुत बुल्लि१३३
जीवनसिंह१ नाम सु जाहि, बहिनिय रूपकुमारि१।२ बिवाहि ॥
रक्खन गेह तिहिं नरराय, दिय दुव२ आढय ग्राम१ सु दायँ१३४

---

१ शाख चोर की भांति २ सीढ़िया उतरने लगा ॥ १२९ ॥ ३ सेनापति ४साळू के हाथ में नागी तरवार देखकर ॥१३०॥ ५शत्रु के ऊपर तरवार का प्रहार नहीं करसका ॥ १३१ ॥ ६दोनों नीचे जागिरे तहां ७रक्षपालों ने क्रोध करके साळू का मस्तक काट लिया ॥ १३२ ॥ ८ दोनों छोटे भाइयों को विवाह करने के लिये ९ दोनों पक्ष बराबर तोलकर ॥ १३३ ॥ १० राजाने ११ दहेज में ॥१३४॥

लोगों को ग्राह्य नहीं होतीं इसी कारण हमने भी निंदनीय किम्वदन्तियों को छोड़कर जहां तहां प्रामाणिक लेखों को ही ग्रहण किया है इसी कारण यहां पर भी जोधपुर की ख्यात की नकल करदी गई है

अब रहा यह कि जोधपुर की ख्यात में लिखे हुए विषय को इस ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल ने छिपा दिया यह इनकी सत्यता पर कलंक आता है परंतु सामान्यतया विचार किया जावे तो कैसा ही सत्यवक्ता होने पर भी वर्तमान समय का सच्चा इतिहास लिखना दुर्घट है यदि कोई लिखभी देवे तो भी बर्नियर जैसा विदेशी ही लिख सकता है किंतु सेवक होकर वर्तमान स्वामी की सच्ची निंदा कदापि नहीं लिखसकता सो ही इस ग्रंथकर्ता के लिये जान लेना चाहिये सूर्यमल्ल के समीप रहनेवालों से हमने सुना है कि महाराव राजा रामसिंह की निंदा लिखने से उक्त रावराजा ने सूर्यमल्ल को मना किया इसी कारण ग्रंथकर्ता ने यह ग्रंथ बनाना छोड़दिया इसीसे यह ग्रंथ अपूर्ण रहगया सो यह भी समझमें नहीं आता क्योंकि यहां सत्य का विषय छोड़गये और जहां तहां प्रशंसा ही की गई तो फिर आगे जाकर इसी बात पर अड़ना समझ में नहीं आता परंतु ऐसी बातों की छान बीन करना हमको भी आवश्यकीय और अभीप्सित नहीं है ॥

भूषन२ बस्त्र३गय४ हय५ भव्य, दिय रथ६ दास७ दासिय८द्रव्य॥
सह मह ताहि समय बिसेस, ब्याहिय जो स्वसा बसुधेस ॥१३५॥
हे [2]ईम हिठ महलन माल, मुत्ति[3]पसौध१ थित महिपाल ॥
पगि इत [4]छद्म खग्ग प्रहारि, सालुव१सचिव[5]मनि२ लिय मारि१३६
सुनतहि भूप इत यह [6]सुद्धि, बिस्तरि बीरपन१ नय२ बुद्धि ॥
[7]जहँ पुर पत्ति संघ जितेक, तिन्ह कारि मग्ग मग्ग तितेक ॥१३७॥
चउ४ भट भेजि गो[8]पुर च्यारि४, बस किय जे कपाट बिथारि ॥
पुब्ब१हि रोकि दक्खिन२।३पोरि, ज्यों पुनि सेस रोधक जोरि१३८
रन दुव२ दुर्ग सज्ज कराइ, असहन [9]मंतुपर अनखाइ ॥
बलि [10]कँलि अप्प कसि कटिबंध, सं[11]संद सज्ज रहि दृढ संध१३९
प्रभुढिग रहनहार प्रबीर, सब किय सज्ज कज्ज सधीर ॥
आतप [12]उंष्ण२ऋतु अधिकात, जहँ सुत ज्येष्ट१[13]कृष्ण१मजात१४०
मोहन१ रमन सिंह [14]मृगव्य, [15]भूधव सिक्ख लहि चहि भव्य ॥
उत्तर४।७ गहन सह अवधान, मग वह गो त्रि३जोजन मान१४१
लघु तस भ्रात मंगललाल२, संगर [16]अजिर पर बल साल ॥
नल [17]निभ बाजि बिधि मतिमान, नरवर स्वामिधर्म निधान॥१४२॥
सूर रु सरलपन मन सुद्ध, बैरिहु जास मित्रहि बुद्ध ॥
तिम यह कृष्णाराम [18]तनूज, प्रापित स्वामि सेवन पूज ॥१४३॥

राजाने १ बहिन का विवाह किया ॥१३५॥ २इस कारण राजा नीचे के महलों में ३ मोतीमहल में थे ४छल से तरवार के प्रहार को पाकर ५ सालू ने सचिवों के मणि रूपी कृष्णराम धायभाई को मार लिया ॥१३६॥ ६ राजाने यह खबर सुनते ही ७ पुर में जितनेक पैदलों के समूह थे ॥ १३७ ॥ ८ शहर के चारों दरवाजों पर ॥ १३८ ॥ ९नहीं सहने योग्य अपराध पर क्रोध करके १० युद्ध प्रि. आपने कमर बांधकर ११ सभा में दृढ प्रतिज्ञा से सज्जित रहा ॥ १३९ ॥ १२ ग्रीष्म ऋतु की अधिक गरमी में १३ कृष्णराम का बड़ा पुत्र ॥ १४० ॥ सिंहकी १४ शिकार खेलने को १५ राजा की आज्ञा लेकर ॥ १४१ ॥ १६ युद्ध के चौक में १७ नलके सदृश ॥ १४२ ॥ १८ पुत्र ॥ १४३ ॥

इह पर लोहिता अभिधान, थानौ रक्खि नृप तिहिं थान ॥
*सादिन सघ सासक मुख्य, मगल२ तत्थ किय प्रभु मुख्य१४४
काका तनय तस जस काम, सो पुनि रत्नलाल१।३ सनाम ॥
बिद्या तुपक मय जिहिं वीर, सद्दिय बर्म मुख्य सधीर ॥ १४५ ॥
ए दुव भ्रात तिहिं दिन अत्थ, सज्जित स्वीय हय१ भट२ सत्थ ॥
तिन्ह मन लोहितापुर जाइ, उत्सुक हनन सिंघ अघाइ ॥ १४६ ॥
प्रिय मद अमल बितरत पान, जिन्ह हुव देर यह चलिजान ॥
तत्थहि बुल्लिलिय कविताात, खिलवालि कतिक भटबरखपात१४७
प्रभुढिग रहनहार प्रवीर, सब तहँ मिलित बिछुरन सीर ॥
त्यसुं हुव सचिव इत तिहिंबार, परि सब ओर हक पुकार॥१४८॥
सुनतहि रत्न१ मगल२ सत्थ, हकिय सर्व भट असिं हत्थ ॥
इनकँहँ सिंहचत्वर आत, बुल्लिय भूप ढिग सुहि भाँत ॥ १४९ ॥
ए तब सत्रुदिस मग उज्झि, सब गय स्वामिढिग हित सुज्झि ॥
ससुभट रत्न१ मंगल२ संग, प्रभु कति रक्खि बिघ्न प्रसंग ।१५०।

लसंग१ प्रसग२ अत्यानुप्रास १ ॥

सचिवहिं देहनदत्त सहाय, पठये पुत्र२ सह समुदाय ॥
दाहन जाइ पच्छिम३।५ द्वार, इन गिनि इष्ट प्रेत अगार ॥ १५१ ॥
अम्बुवंनाथ सिव जहँ आहि, दिय तहँ जो मुसाहब दाहि ॥
पुनि सब न्हाइ प्रभुढिग पत्त, इत प्रभु भृत्यहित अनुरत्त ॥१५२॥

* सवारों के समूह का हाकिम करके ॥ १४४ ॥ १ कवच पहना ॥ १४५ ॥ २ सिंह मारने को उत्कंठित हुए ॥ १४६ ॥ ३ सूर्यमल्ल के पिता को बुला लिया ॥ १४७ ॥ ४ उस समय इधर कृष्णराम मारागया ॥ १४८ ॥ ५तरवारें हाथों में लेकर चले ६ सिंहचौक में आने पर ७ उस समूह को ॥ १४९ ॥ ८ शत्रु की दिशा का मार्ग छोड़कर ॥ १५० ॥ ९ सचिव को जलाने में सहायता देने को ॥ १५१ ॥ १० जहां आम्बुनाथ शिव है ॥ १५२ ॥

सब लहि मंतु[1] कारन सुद्धि, रंचहु[2] छिद्र निकसन रुद्धि ॥
ठाँ[3] जुग२जे रहे थिति ठानि, तुपक्कन जंग बिच बिच तानि॥१५३॥
सुनि नृप दै निदेस[4] प्रसस्त, बंधन धूर्त ठानि बिहस्त[5] ॥
तब उडुदुर्ग[6]की हुव२ तोप, अभिमुख राक्खि जममुख[7] ओप ।१५४।
जुग२ जुग२ देह चल्लन जंपि, कछुहिँ छुद्र गोलन कंपि ॥
पटुभट दानसिंह१ पुरोग, जुरि तहँ पिक्खि पंध्वर[9] जोग ॥ १५५ ॥
चुटकिन ओप तोप चलात, बिगरत बेश्म आलय[10] ब्रात ॥
मतिगति मंडि फैरन फैर, निर्मित व्यग्र[11] मन जन नैर ॥ १५६ ॥
व्यवहित भूँहर[12]१न कति बैठि, कति गय कंदर२न प्रति पैठि ॥
हुव यह दरित पूरन हाल, जय रस फुरित सूर२न जाल ॥१५७॥
अद्रिन खोह फुट्टि अवाज, गिरि गृह१ जात पोतन गाज ॥
तरकत थंभ१ मंडप२ ताव, लरकत फुट्टि छित्ति४ लदाव५॥१५८॥
बिखरत गोख६ जालिन७ ब्रात, उड्डत प्रजरि पट्ट८ अलीत[13] ॥
वलज९ रु कुड्य१० प्रघन११ बितर्दि१२, उंबुर१३ अजिर१४ कु-
ट्टिम१५ आर्दि ॥ १५९ ॥
सह अधिरोहिनिय१६ सोपान१७, बिर्दहत[14] कोशिका१८ रु बितान
परिघ२० रु उत्तरंग२१ कपाट २२, बलभिय २३ नीध्र २४ प्रसरत
बाट ॥ १६० ॥
तेम दहि नागदंत२५ तमंग२६, पिट२७ पुट२८पेटिका२९जरिजंग

---

[1] अपराध के कारण की खबर मंगाई सो २ कुछ भी छिद्र नहीं निकला ३ दो
जगह पर ॥१५३॥ ४ उत्तम आज्ञा ५ धूर्तों को व्याकुल करके बांधने की ६ तारागढ
की ७ शत्रुओं के सम्मुख ॥ १५४ ॥ ८ दानसिंह आदि ९ पाधरी (सीधी)
॥१५५॥ १० घरों का समूह ११ व्याकुल ॥ १५६ ॥ १२ कितने ही लोग भौंहरों
तहखानों में तथा भूधरों (पर्वतों) में छिपकर बैठे ॥ १५७ ॥ यहांसे आगे का
जो वर्णन है इस में उपमा आदि कोई चमत्कार नहीं है केवल स्थानों के नाम
हैं सो इस प्रकरण की सविस्तर टीका करना पिष्टपेषण है ॥ १५८ ॥ १३ अग्नि
॥ १५९ ॥ १४ विशेष जलते हैं ॥ १६० ॥

कुट३० फुट मत्तवारन३१केतु३२, हुव हुव दहने असहन हेतु १६१
खिरि खिरि थट्ट हट्ट३३न खंड, बिखरत बट्ट अट्ट३४ बरंड३५ ॥
जिततित सालभंजि३६न जुध, दहियत मच३७ पट्ट३८ दुरूह॥१६२॥
उडिउडि ओघ गुमटन ग्राव, बिरचित व्योम पटल बनाव ॥
मजरत डीन पत्रिन पत्र, अव्भ कि चंग राल्त अमत्र ॥ १६३ ॥
तजि तजि तीर नीर निपान, छिन छिन छिज्जि मेटत मान ॥
कपिसिर१ साल२ खोम३कलाप, धुज्जत लोल गोलन धाप१६४
प्रतिभट पूर सूरहु सकि, भारत तुपक छिदन भांकि ॥
जिनदिन१धूम२लखिनिस१ज्वाल२, मुग्न न देत गोलन माल१६५
भेदत भपद बहु पुत भित्ति, अदिन असनि कठ्ठन कित्ति ॥
वीथिप१त्रिक२रु चत्वर३वार, बिस्तरि जग्गि जग्गि बजार४॥१६६
वनिकन बिविध किय क्रय बध, गन ससि१ धीर२ मृगमद३गंध॥
छिति ढकि अन्न१ रासिन छार, इनउत मजरि तैल२भगार॥१६७॥
विदलित तरकि मनि३ गन व्रात, जरि बहु बिपनि औषध४जात॥
द्रुत द्रुरि वग१ नाग२ अदभ्र, उडि उडि चढत पारद३ अभ्र॥१६८॥
मचि पुर ध्वात निभ करमाल, जिहिं सिति१भून सित२गृह जाल
मिलि मिलि धूम१सोग२समेत, लगि दृग लेत घन जन लेत॥१६९॥
इम हुव जाम सत्त७ अतीत, गोलन कोस दस१० गत गीत ॥
बिस्सन सचित्र करि श्रुति बंट, इत तब नेंदयाम भजट ॥ १७० ॥
सुनतहि सेरनि लगि भ्रिउ लैन१ आगत भ्रंष करि रन भ्रैन ॥

१ आग्न ॥ १६१ ॥ २ कठिनाई मे तकना किये जाने योग्य ॥ १६२ ॥ ३ उड़ते हुए पक्षियों के पत्र ४ पात्र ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ ॥ १६९ ॥ ५ इस प्रकार सात पहर व्यतीत हुई ६ दश कोश पर्यन्त गोलों का शब्द गया ७ विश्वास योग्य मन्त्रिय का मार्ग जाना सुनकर ८ कोटा मे ॥ १७० ॥ ६ म र्ग लगा "यहां जो भ्रिउ शब्द है यह कहीं नहीं मिला सो मालूम नहीं अशुद्ध है या क्या है" १० घोड़े पर चढ़कर

दिन इन जात जाम द्वितीय२, गय यह तत्थ पुर *गमनीय॥१७१॥
खिरकिय सौम्य३।७ द्वार खुलाइ, पुरबिच लिन्न इन खिन पाइ॥
सूचित सचिव सुत जुहि †जिठ्ठ, सुहु यह सुनत उग्र अनिठ्ठ॥१७२॥
मोहन१ ताहि निस हुत मग्ग, आगत स्वामि सबिध उदग्ग ॥
साहब समुख जिहिं तब जाइ, आनिय उक्त पथ प्रविसाइ ॥१७३॥
जमियतखान२ संगहि जास, निर्भय चिंति रहन निवास ॥
अधिपहु खास महलन आइ, स्वनिकट जालिनी९ सु बसाइ।१७४।
जानिय इम अजंट१ जनेस, आइउ समर अटकन एस ॥
पै तिहिं कहिय प्रत्युत प्रेरि, गिनि खल गहहु१हनसुशक्ति हेरि१५७
भइ विक३ असह तोपन त्रस्त, —— हुव अब आहित बिहस्त ॥
सीसक१ सोर२ उदक४ रु अन्न४, बित्तन घोर कष्ट बिपन्न।१७६।
इत सुनि सचिव इत मग आत, बुंदिय पत्त द्वैरहि बरात ॥
हाजरि सकल बर्ल तब होइ, दब्बिय बेढि अरि गृहदोइ२॥१७७॥
जानहु श्रीचतुर्भुज१ तत्थ, तिनसन बारूनी३।५ दिस तत्थ ॥
परिमित दंड बिंसति२० पास, आयंत जो हवेलिय१ आस ॥१७८॥
थिर हुव स्वामिनी बस थान, परिखद तत्थ रहन प्रधान ॥
द्विजकहँ जो हवेलिय दत्त, हाजरि सो हुतो तिम तत्त ॥ १७९ ॥
गोलनसौं बैं बिगरत गेह, आतुर रूपरामहु एह ॥
लै सब स्वीय अप्पन लार, कढि निस छिन्न खुल्लि किंवार१८०

---

१ जहां जाना था उस पुर (बुंदी) में ॥ १७१ ॥ † कृष्णराम का ज्येष्ठ पुत्र १ बड़ा अनिष्ट (प्रतिकूलवर्ता) सुनकर ॥१७२॥१७३॥ २ चित्रशाला में ॥ १७४ ॥ ३राजा ने यह जाना कि ४ उलटी प्रेरणा करके कहा ॥१७५॥५तीन दिन ६ शत्रु व्याकुल हुए ७ आपदा से घिरे ॥ १७६ ॥ ८ सब सेना ने हाजर होकर ॥१७७॥ ९ पश्चिम दिशा में १०बीस दंड के अंतर पर ११ मोटी हवेली है ॥१७८॥१२वह स्थान पाटवी रानी के आधीन हुआ था १३ दीथी ॥ १७९ ॥ १४ अब ॥ १८० ॥

*विपनि सु पुव्व१ दिस लगि वट्ट, हरि बसु लुट्टि मग इक१ हट्ट ॥
†जमदिस२।३ उक्त गोपुर जाइ, परबस ‡रुद्ध ताकहँ पाइ ॥ १८१ ॥
हैं ढिक ब्हाँ पुरोहित हर्म्य, गजमुख गढित कौलन कर्म्य ॥
तब सरदारमल्लहु तत्थ, ऊरुज३।२ हो सु ठानि अनत्थ ॥ १८२ ॥
भनित जु सिंहअंतविभूत२।३, सगहि सोहु पर रजपूत ॥
द्विज तिन्ह कहिय विघटनं द्वार, उन लिय एहु मध्य अगार१८३
महल सु जदपि दुर्ग्ग समान, हुव तहँ तदपि जल मुँख हान ॥
रहि द्विज१ वनिक२ तहँ दिन१ रत्ति२, पुनि दुव२ निक्खसिय
निस पत्ति ॥ १८४ ॥
वाहुज रहिय तत्थहि वध्य, ते लडि सचरत मग मध्य ॥
वनि भय१भूख२प्यास विहाल, जुग२भ्रमि परिग नागन जाल१८५
तिन लखि विष्णुस्वामि मंतीय, सिंचिय उदक रक्खन जीय ॥
जुग२ तिन भोजि१ पेय पिबाइ२, जोगिनें रक्खि रत्ति जिवाइ१८६
हुव खिल रत्ति जहँ दुरमुहूर्त, ध्रुव प्रभु छुनत पकरन धूर्त ॥
विप्र१हु वनिक२ सह हठ वाद, मारिय वय किसोर प्रमाद ।१८७।
प्रभु तिहिं दोप अग पछिताइ, भाखत दुरितें एह न भाइ ॥
महिसुर१वनिक२इम जुग२मारि, निज पटु सचिव वैर निकारि१८८

* बजार में पूर्व दिशा के मार्ग लगकर † दक्षिण दिशा के ‡ रुका हुआ (पद) पाकर ॥ १८१ ॥ १ मकान २ गजमुख नामक पुरोहित का बनाया कारीगरों के काम का ३ बनिया ॥ १८२ ॥ ४ अमृतसिंह ५ किवाड़ खोलने को कहा ॥ १८३ ॥ ६ गढ़ के समान था ७ जल आदि सामान लूटगया ८ रात्रि में पैदल निकले ॥ १८४ ॥ ९ मारने योग्य क्षत्रिय अमृतसिंह वहीं रहा ॥ १८५ ॥ १० विष्णुस्वामी के मतवाले देखकर ११ पानी पिलाया १२ उन नागा जोगियों ने ॥ १८६ ॥ १३ चार घड़ी रात्रि बाकी रहते राजा ने किशोर अवस्था के प्रमाद से हठ करके उन ब्राह्मण और वैश्य को मारडाले ॥ १८७ ॥ उस दोष से १४ रावराजा रामसिंह अब पछताते हैं और कहते हैं कि यह १५ पाप हमको अब अच्छा नहीं लगता १६ ब्राह्मण ॥ १८८ ॥

तिम पुनि होत *घस्र द्वितीय२, गिनि जमदंग निज †गमनीय ॥
कातर जो रह्यो सु कबंध३, सस्त्रन डारि ह्वै हत‡संध ॥ १८९ ॥
पच्छिय पच्छ२ द्वार प्रवेस, आदरि पत्त बाहिर एस ॥
जमदिस२।३द्वार जुग२बिच जाहि, रोचक भोजि१पाइ३सराहि११०
मंद सु जवन इक लिय मारि, तिन्ह खल सस्त्र लहि दियतारि ॥
इक१ द्विज अंगतैंहु अवध्य, मन्निय सेस अरिजुग१ मध्य।१९१।
बाहुज१ बनिक२ सस्त्र बिहीन, करि हम ²अनसु अनुचित्त कीन ॥
इम अब करत सासन आप, पै तब बय बिसेस प्रताप ॥ १९२ ॥
त्रिक३ हनि हेतु बिनु खिल तारि, उद्धरि बैर बिजय उबारि ॥
इत सब कह्वि मारव दिन्न, कंटक रहित पुर इम किन्न ॥१९३॥
चारन³ चिंति इष्ट बिचार, आइउ द्विसत२०० लहि असवार ॥
तिहिं सुनि सचिव तिम मृत ताम⁴,किय भजि कोस पंचमुकाम१९४
रहि तहँ मरत त्रिक३ लगि राह, प्रनमिय पहुँचि निज ⁵नरनाह ॥
बुंदिय त्रि३दिन बसि इत एह, गो इम अँगरेजहु गेह ॥ १९५ ॥
इत प्रभु सचिव सुत ⁶आकारि, मोहन१ मत्थ ध्रुव कर धारि ॥
पुनि दिय सचिवपन सिरुपाव, आदरि अधिक वृत्ति बढाव॥१९६॥
अनुजँनु मंगल२ जु तस आहि, तारादुर्ग पति किय ताहि ॥
पुव्वहि आत गृह प्रबिसाइ, लिय चउ४ बरनि२ बिंद२ लडाइ१९७

॥ कौंकिरवम् ॥

महिपाल१यौं मोहन२थप्पि मंत्री, जग कित्ति बिस्तारि दिगंतगंत्री

---

* दूसरे दिन यमराज के नगरको अपने † जाने योग्य जानकर ‡ हतप्रतिज्ञ होकर ॥१८९॥१दक्षिण दिशाके॥१९०॥१९१॥२रावराजा रामसिंह कहते हैं कि इनको मारकर हमने अनुचित किया ॥१९२॥१९३॥ ३ भैरवदान नामक चारण ४तहां सचिव को मराहुआ सुनकर ॥१९४॥५ अपने राजा मानसिंह से प्रणाम किया ॥१९५॥६कृष्णराम के पुत्र को बुलाकर ॥१९६॥७उसके छोटे भाई ८चारों दुलहन दुलहों को ॥ १९७ ॥ ९ दिशाओं के अंत में जानेवाली कीर्ति फैलाई

वप वर्ष अठ्ठारह१८अग्ग१६वर्त्ती, अभिरूप दूरीकृत देसअर्त्ती१९८
कुसलत्व आच्छोटनं अमकर्मा, खुरलीं२ खलूरी धृत धुर्यधर्मा ॥
विविधत्वविद्या३रनबुद्धि वर्म्मा,मितसत्व४संसीदितदस्युमर्मा५।१९९
६अवधानता सज्जित अग६ अगी, सव सास्त्र७ ऊहा, पटु सूरिसगी
रुचिमग्गवेदोदित८एकरगी,जितजुद्ध९खड्गो१कवची२निखगी३।२००
करिबे लग्यो कज्ज१०सु तीन३ सक्तिसों, धरिबे लग्यो धी धुर राज्य रक्तिं२सों ॥
वरिबे लग्यो वीर१३न वीर व्यक्तिसों, भरिबे लग्यो श्रीप्रभु रग भक्तिसों ॥ २०१ ॥
विसिष्ट१४ जो हय१ गय२ वाहि वेवली, भनें सदा सबहित१५लें विधा भली ॥
अधीसिता बुध१भट२मलि३आदरैं१६, हठैंनें१७सों इतर सभा प्रभा हरैं ॥ २०२॥

॥ त्रिष्टुबुपजाति ॥

---

१ सुन्दर २ देश की पीड़ाको दूर करी ॥ १९८ ॥ ३ शिकार में कुशल होकर अग्रणी हुआ ४अखाड़े में शस्त्राभ्यास करके धर्म के धुर को धारण किया और नाना प्रकार की विद्या और युद्ध का कवच और निश्चय ही शत्रुओं के मर्म को ५ कपानेवाला हुआ ॥ १९९ ॥ राज्य के सात अंगों में एक तो स्वयं आप और बाकी के छ अंग और अंगियों में सावधानी करके पंडितों की संगति से शास्त्रों की ६नर्कना में चतुर हुआ और वेद के कहे मार्ग में एक रंग होकर रुचि की, युद्ध जीतनेको खड्ग, कवच और भाथे को धारण किया ॥२००॥ श्रेष्ठ नीति और राजा की तीनों शक्तियों से कार्य करने लगा, राज्य में ७ प्रीति करके मुख्य बुद्धि को धारण करने लगा और वीर व्यक्ति से वीरों का अपने० करने लगा ८ अपने मनको श्रीरंग नामक परमेश्वर की भक्ति से भरनेलगा (बुन्दीवालों के इष्टदेव का नाम श्रीरंग है) ॥ २०१ ॥ जो बलवान् हाथी, घोड़ों के चलाने में अत्यन्त श्रेष्ठ और सदैव भले प्रकार से सब के हितको कहनेवाला, स्वामिपन से पंडित, उमराव और मंत्रियों का आदर करनेलगा ९ बहुत हठ से अन्य सभाओं की कांति हरनेलगा ॥ २०२ ॥

इलेस ऐसैं सु बयस्य संगी, संगीत१नाटया२दि कला प्रसंगी॥
संगीयमान स्तव भानु संगी, संगीर्ण अंधार ससी पिसंगी॥२०३॥
न दानबेला कबहू नकारी, संपत्न सेना कुल घातकारी॥
साहित्य आस्वाद कवि प्रकारी, प्रमाद व्यापार बकी बंकारी२०४

( )

बुंदियपुर बैभव इम बिलसत, हड्ड ६१न हेलि अधिप पट्टु एस॥
ललित अखंड सुधर्मा कि लसत,सहपुर अहप्रति समह सुरेस२०५
इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टमराशौ बुन्दीन्द्ररामसिं
हचरित्रेहतदाक्षिणात्यक्षोणिकांगरेजराजपुत्रस्थानस्वाजंटस्थापन१
विजितभरतपुरजट्टांगरेजपुनर्भरतपुरजट्टवितरण२ ब्रह्माराजसकाशां
गरेजप्रान्तद्वयग्रहणसूचन ३ जयपुरराज्यराज्ञीभाट्टियानीझूंतारामवै-
श्यदुराचारसूचन ४ पतिसगहमनार्यावर्तप्राचीनप्रणालीवारणपूर्वा

इस प्रकार १ राजा रामसिंह अपनी समान अवस्थावालों के साथ संगीत को आदि लेकर नृत्य आदि की कलाके प्रसंग में ३ प्राप्त की है स्तुति योग्य २ सुख से गाईजानेवाली, सूर्य का साथ करनेवाली और अंधेरे पर चन्द्रमा को ४ पीला दिखानेवाली उज्ज्वल कीर्ति जिसने "यहां उज्ज्वलता और चन्द्रमा आदि के प्रसंग से कीर्ति का अध्याहार ऊपरसे होता है"॥२०३॥ दान के समय कभी इनकार नहीं करनेवाला ५ शत्रुओं की सेना को कुल सहित मारनेवाला, कवियों के प्रकार से साहित्य का स्वाद लेनेवाला और प्रमाद के व्यापार रूपी बकासुर के ऊपर ६ श्रीकृष्ण-रूपी ॥२०४॥ हाडाओं का सूर्य चतुर स्वामी रामसिंह इसप्रकार बुंदी में वैभवका विलास करता है सो मानों अमरावती पुरी सहित ७ देवसभामें ८ प्रतिदिन इन्द्र उत्सव करता है ॥२०५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुन्दी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, अंगरेजों का दक्षिणियों से भूमि छुड़ाकर राजपूताने के राज्यों में अपने अजंटों को स्थापन करना १ अंगरेजों का भरतपुर को विजय करके पीछा जाटों को देना २ ब्रह्मा के राजा से अंगरेजों का दो सूबा लेने की सूचना करना३ जयपुर के राज्य में राणी भटियाणी और वैश्य झूंताराम के दुराचार की सूचना करना४ अंगरेजों का आर्यावर्त में सती होने की रीति

गरेजसमाचारपत्रप्रचारण ५ जनरलमटकलफबुन्द्यागमन ६ कोटापतिकिशोरसिंहदेहांतरामसिंहपट्टसमासादन ७ उदयपुरमहाराणा भीमसिंहपरासुताजवानसिंहसिंहासनाधिरोहण ८ लखनेऊनवाबगाजियुद्दीनपरेतभावनसूरुद्दीनगद्दिकोपविशन ९ विक्रमनगरेशमहाराजसुरतसिंहासुहानिरत्नसिंहराजतिलककरण १० बुन्दीसचिवधातेयकृष्णरामच्छलघातवधवर्णन नवमो मयूख ॥ ९ ॥

आदित एकसप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूख ॥ ३७१ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥　　॥

अग्ग दीधितिमें वडो१ अब भूप नंदन भूप ॥
भीमसिंह२०३।१ कुमार भूखन पट्टरानि प्रसूत ॥
पुव्व अब्द८८ सहस्य१०में तस गर्भ दिष्ट प्रसाव ॥
भव्प धारन स्वामिनी२०।२।१ किय भानु१ प्राचिय२भाव॥१॥
कर्क४।१नक्र१०।२ पतंगके क्रम रत्ति१ वासर२ रीति ॥

को यद करना और आर्यावर्त में समाचारपत्रों (अखबारों) का जारी होना जनरल मटकाफ का बुंदी आना ६ कोटा के महाराव किशोरसिंह का देहांत होकर रामसिंह का पाट बैठना ७ उदयपुर के महाराना भीमसिंह का देहान्त होकर जवानसिंह का पाट बैठना८ लखनऊ के नवाब गाजियुद्दीन के मरने पर नसूरुद्दीन का गद्दी बैठना ९ बीकानेर के महाराजा सुरतसिंह का देहांत होकर रत्नसिंह का गद्दी बैठना१० बुन्दी के सचिव कृष्णराम धायभाई के छलघात से मारेजाने के वर्णन का नवम ९ मयूख समाप्त हुआ ॥९॥ और आदि से तीन सौ इकहत्तर ३७१मयूख हुए ॥

प्रथम आगे १ किरणों मे बड़ा (बहुतेजवाला) राजा रामसिंहका पुत्र, कुमरों का भूषण भीमसिंह पाटवी रानी से हुआ सो कहते हैं २ पहले वर्ष के पौष मास में भाग्य की प्रसन्नता से उसके शुभ गर्भ को, जैसे पूर्व दिशा सूर्य को धारण करती है तैसे स्वामिनी ने धारण किया ॥ १ ॥ कर्क और मकर संक्रांति के २ सूर्य के क्रम से जैसे रात्रि और दिन बढ़ता है और शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा

पक्ख उज्जल१ इंदु२ ज्यों हुव ऐंधमान प्रतीति ॥
पाइ सुर्जन १९११ भोज१९२१२ रत्न१९३१३ सता१९५१४ रु भाउ-
व१९६१५ पुराय ॥
गर्भ१ जो महिषी गह्यो अनला१ऽरणी अनु गुराय ॥ २ ॥

॥ पद्धतिका ॥

इम तनय जनन१ जस२ जन अगर्भ, गत अब्द२८६ प्रसर्ले५ ऋतु
गहिय गर्भ ॥
आधान१ विहित संस्कार इद्ध, सीमंत२ पुंसवन३ तदनु सिद्ध॥३॥
रानीय अदोहद१ बिबिध रक्खि, संपूरन पावत२ स्वमन सक्खि ॥
पहुँचत३ ढिग गम्यहु सखिन पानि, उत्थानँ२ अटन३ अवलंब४
आनि ॥ ४ ॥
प्रतिदिन गति५मंथर६--प्रसंग, उच्छ्वास७क्रमरहु श्रम८असह्यअंग९
रवि बिंबहु३ गौरव१० हरितराग११, भासन लगि गोचर१२ मध्य
भाग४ ॥ ५ ॥
जिमतिम परि-- घन३ कठिन जोट२, उन्नत१४ उठि चिबुक५हु

बढता है तैसे १ बढना प्रतीत हुआ २ पाटवी रानीने ३ अरणी की अग्नि की गणना से (दो लकड़ियों को परस्पर घिसकर यज्ञ के अर्थ अग्नि निकालते हैं उनका नाम अरणी है) ॥२॥ ४ हेमन्त ऋतु में गर्भ धारण किया ५ जिस पीछे गर्भ के उचित सीमंत और पुंसवन बडे संस्कार किये ॥ ३ ॥ रानी को ६ गर्भ नहीं होवै ऐसे नाना प्रकार से छिपाकर रक्खी, अथवा रानी स्वयं छिपाकर रही. उस गर्भकी संपूर्ण साक्षी अपना मनही पाता है, समीप जानेवाली सखियों के हाथ का आधार लेकर ७ उठती और फिरती है ॥४॥ यहां छिपाने पर भी गर्भ के लक्षण जानलिये जाते हैं उन्हीं को दिखाते हैं कि ८प्रतिदिन चाल धीरी होती जाती है ९ श्वास लेने का और चलने का श्रम शरीर में असह्य होता है १०सूर्य के समान कान्तिवाला शरीर भारी और ११हरे रंग का होता जाता है और पेट १२दीखने लगा(ऊंचाउठगया)॥५॥ शरीर की जोड़ें(संधियां) बहुत कठिन होकर १३ ठोडी और कुच ऊचे उठगये जो वस्त्र के समूह से

कुन्न ग्रोट ॥

इन दुरहुन अगोचर१५वनि विचाल६, जिम घन१ससि२नँ दुरत१६
चोल जाल॥६॥

व्यापार१हलुव२मित३वनत वैन१७, कीडा१ओहा२करि नमत१८नैन
लहँगा१ विवर्तलघु१९ चैल२ चीन२०, चोलि२१ जुत चीर४हु धृति
अधीन२१ ॥ ७ ॥

सौभाग्य चिन्ह द्विक२हि सुहाइ२२, मर अल्प वलय१ निष्का१
दि भाइ२३

अर्चित खिल भूखन सब उतारि२४,धवे मंगल सूचक नियतधारि८
असनादि नियम सब सद्धि२५ आप, अँहर्पति सुख विलसिय
मह अमाप ॥

अववर्तनँ आश्विन७मास आइ, वेजननँ वेर तह मह तनाइ ॥ ९ ॥
नव९ गात्र अवधि९ निज अय उदर्क, अस्ताचल पहुँचत पाँथअर्क

दककर १ नहीं दिखाने पर भी उनके विशेष पढ़ने से नहीं छिप सकते जैसे बादलों से २चन्द्रमा नहीं छिपता है ॥ ६ ॥ बोलने की क्रिया हलवे (धीरे) और कमती होती है ३ क्रीड़ा करने में लज्जा से नेत्र नीचे होते हैं ४ छोटे घेरवाला लहँगा और कांचली सहित ओढ़ने का वस्त्र ५ बारीक वस्त्र के धारण तथा सन्तोष दायक होते हैं ॥ ७ ॥ सौभाग्य के दो चिन्ह अल्प भार के रक्खे ६ चूड़ा "यहां तिमणियां का नाम नहीं है, परन्तु सुहाग के दो चिन्ह कहने से तिमणियों का ग्रहण है, क्योंकि स्त्रियोंके सुहागका चिन्ह चूड़ा और तिमणिया ही माना जाता है" ७ स्वर्ण आदि के सुहाल हैं "यहां आदि शब्द से मोती आदि का ग्रहण है" ९ बाकी के सब भूषण उतार दिये और ८ ये दो भूषण पूज्य और १०पतिके मंगलकी सूचना करनेवाले होने के कारण निश्चय ही धारण किये ॥८॥ ११भोजन आदि १२दिन प्रति १३जीविका प्राप्त करानेवाला "यहां अव शब्द प्राप्त करानेका और वर्तन शब्द वृत्ति(जीविका)का वाचक है" अर्थात् राजकुमार के जन्म से सबको जीविका दिलानेवाला आश्विन मास आकर १४ तहां गर्भ के जन्म समय का उत्सव फैला ॥९॥ १५आगे आने वाले अपने शुभ कर्म फलसे १६ चन्द्रमा के अस्ताचल पहुँचते समय महाराव

प्रभु सजि अनीक चोगान पत्त, देविय निमित्त बलि१अजन२दत्त१०
चे बिबिध सद्धि प्रहरन दुरूह, जहँ दत्त परिच्छा भटन जूह ॥
त१ अचल२ बेध्य गन सफल चोट, जिततित कहुँ सादिन द्रव-
त जोट ॥ ११ ॥
पन चिँति चलत असह ताप, मिलि सम्मुह हंकत हय अमाप॥
न कृत्रिम आहव बल बिधान, बलि चढत बस्त१ मह२ सुरन
मान ॥ १२ ॥
त प्रसव सुद्धि तहँ पहुँचि तामँ, किय बिधि मन जनजन सफल
काम ॥
क मुनि भुजंग बसु ससि १८८७ समान, ईस७ मास पक्ख इह
बिसद२बान ॥ १३ ॥
र्तत नवमी९ तिथि मिहिर१ बार, पैंतीस३५ घटी पल द्विचउ४२
पार ॥
०षा० २०उडु बिकृति२३ रु तिथि१५ प्रमेय, सौभाग्य१ धृति१८
रु पल प्रकृति२१ श्रेय ॥ १४ ॥

ाजा रामसिंह सेना सजकर चौगान में गये और देवताओं का बलिदान व पूजन
ादया ॥ १० ॥ १ कठिनाई से तर्कना की जावै ऐसी शस्त्रों की परीक्षा २हिलते
हुए और ठहरे हुए निसानों को ३ सवार घोड़ों की जोड़ियां दौड़ाते हैं
११ ॥ ४ तोपों के समूह, देवताओं के बलिदान में ५ बकरे और ६ भैंसे
ाढते हैं ॥ १२ ॥ ७ तहां रावराजा के (*पुत्र होनेकी खबर पहुँची ८ आसोज
ासके शुक्ल पक्षकी नवमी ॥१३॥९रविवार पैंतीस घड़ी बयालीस पल, पूर्वा-
ाढा नक्षत्र तेईस घड़ी पंद्रह पल, सौभाग्य नाम योग अठारह घड़ी इक्कीस

---

*)इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल ने राजकुमार भीमसिंह की मृत्यु तक का इतिहास नहीं लिखा इसकारण नहीं
ालूम कि वे इस विषय मे क्या लिखते परंतु हमने बहुधा मनुष्यो की जबान से सुना है कि महाराज
कुमार भीमसिंह अपनी युवावस्था के घमंड में महारावराजा रामसिंह की आज्ञा को नहीं मानते थे और
यवनों का संग बहुत रखने व इसकारण रावराजा ने उक्त राजकुमार को विश्वास घात से मरवाडाला ।
इन राजकुमार भीमसिंह के शारीरक बल और बाणविद्या व वीरता की हमने बहुत प्रशंसा सुनी है ॥

बान५ रु तिथि१५ बालव२ मिति बिभात, तीस३० रु छतीस३६ इह इष्टग्रात ॥
रवि१ सर५ रु हर११ रु अधिपति १६ रु अष्टि१६, सिव ११ रासि दु२ लव लग्नहु समष्टि ॥ १५ ॥
मगल३ सफर१२ स्थित लग्न१ माँहिं, अरिगृह६ कवि६ सनि७तम ८ सिंह२ आँहिं ॥
दयिता७ गृह७ कन्या६ थित दिनेस१, अतालय८ ससिसुत४ धटग एस ॥ १६ ॥
ससि२ गुरु कर्मालय१० चाप९ सत्य, आहिक९ सकुभ११ व्यय मीन१२ अत्थ ॥
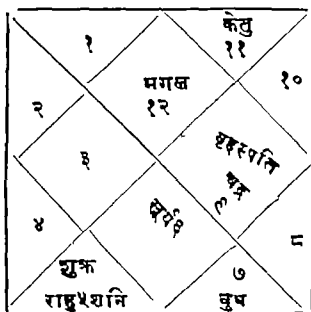
पल ॥ १४ ॥ बालव करण पांच घड़ी पन्द्रह पल, इष्ट तीस घड़ी और छत्तीस पल, सूर्य पांच राशि ग्यारह अंश, सोलह कला और सोलह विकला, लग्न ग्यारह राशि, दो अंश ॥ १५ ॥ मीनका मगल लग्न में है, और शुक्र, शनि, राहु तीनों ग्रह छठे भवन में सिंह के हैं, कन्या राशिका सूर्य सातवें भवन में, और तुलका बुध आठवें भवनमें गया है ॥१६॥ चन्द्रमा और बृहस्पति दसवें स्थान में धन राशि के हैं, और कुंभ राशि का

इम ग्रह९न भोग्य राशि१२न अधीन, क्रम कथित छ६ गेहन वास
कीन ॥ १७ ॥

जँहँ हड्ड६१पुरंदर१ कुमर२ जात, केसव१ गृह दर्पक२सम सुहात॥
ऋतु मथन१ गृह कि कार्तिक२ कुमार, इन१ गृह वैवस्वत२किमु
उदार ॥ १८ ॥

बिधु१कै बुध२ बिधि१कै मनु२ महंत, जंभाहित१कै जय२ कै
जयंत३ ॥
आसुग१कै भीम२किं असनिअंग३, अप्पति१कै---२किमु अभंग१९
कुह१ कुल नलकूबर२ किमु कुमार, किमु राम१ सदन कुस२
सुजसकार ॥
श्रीप्रभु ऋषभा१लय भरत२ श्रेय, कृतवीर्य१ कुट कि अर्जुन२
अमेय ॥ २० ॥
दुक्खंत१ सदन भरत२ कि द्वितीय२, बुध१ वसति ऐल२ इन हरि
द्वितीय ॥
धर्मा१लय ज्यौं अजमीढ२ धीर, बल१ निलय उल्मुक२क निसठ३
वीर ॥ २१ ॥

केतु बारहवें स्थान में है, ये ऊपर कहे हुए नव ग्रह छः भवनों में वास करते हैं और छः भवन खाली हैं ॥ १७ ॥ जहां हाडाओं के १ इन्द्र के कुमर हुआ सो मानों श्रीकृष्णके घर में कामदेव (प्रद्युम्न) के समान शोभा देता है, इसीप्रकार शिव के घर में मानों स्वामिकार्तिक, २ सूर्य के घर में मानों उदार वैवस्वत मनु ॥ १८ ॥ ३चन्द्रमा के बुध, ४ ब्रह्मा के मनु, ५ इन्द्र के अर्जुन किंवा जयन्त, ६ पवन के भीमसेन और ७ हनुमान, वरुण के मानों अभंग ॥ १९ ॥ मानों कुबेर के घर में नलकूबर, रामचन्द्र के घर में सुयश के करने वाले लव कुश, ऋषभ के घर में श्रेष्ठ भरत, कृतवीर्य के घर में मानों तुलना रहित सहस्रार्जुन ॥ २० ॥ दुष्यन्त के घर में मानों दूसरा भरत, बुध के घर में परमेश्वर का भक्त राजा ऐल, जिसप्रकार धर्म के घर में धीर अजमीढ, बल के घर में वीर उल्मुक और निसठ ॥ २१ ॥ अर्जुन के मानों युद्ध में नहीं सहन

जप१के अभिमन्यु२कि असह जुद्ध,*स्मर१सद्म†उषावर वरप्रबुद्ध
नरपति नल१ सद्म कि इंद्रसेन२, नाहुष१ निकेत पूरु२‡अनेन२२
मनु१के कि प्रियव्रत२ गुन अमेय, ध्रुव१के किमु उत्कल२ नाम-
धेय ॥
वैवस्वत१ गृह इक्ष्वाकु२वुद्ध, ————————१२ §अलुब्ध ॥ २३ ॥
कालिदमन परिच्छत१ नृप निकेत, २पनधन जनमेजय२ जयउपेत
उदयनन्रृप१ गृह इत गृहसराह, नरवाहन दत्त२ कि कुमरनाह२४
पहु चंड महासेना१ख्य पस्त्य, गोपालकुमर अरिकाधि१अगस्त्य२॥
विक्रम१ निकाय क्रम चित्र२वीर, हुवभोज१ निलय २ गहीर ॥२५॥
समर पिथल१७।१।१ गृह रत्नसीह२, बिजया१लय करन किरन
अबीह ॥
जयचंद१ महोदयपुर जनेन, सुत किमु तदीय वरदायसेन२ ॥ २६ ॥
नृप सिद्धराज जयसिंह१ नाम, सुत गोभिलराज२ कि तस सुधाम॥
सरवधिक कर्ण१रैवत रसेस, सुत तस कैवर्त२कि जस असेस२७

क्रिपेजानेवाला अभिमन्यु, * प्रद्युम्न क बुद्धिमान् † उषा का पति अनिरुद्ध, राजा नल के घर में इन्द्रसेन नहुष के घर में ‡ पाप रहित पुरु ॥ २२ ॥ मनुके मानों अमाप गुणोंवाला प्रियव्रत, ध्रुव के मानों उत्कल नामक पुत्र, वैवस्वतके घर म चतुर इक्ष्वाकु　　　§ निर्लोभी ॥ २३ ॥ १ कलियुग को दंड देनेवाले परीक्षित् के घर में २ प्रण ही है धन जिसके ऐसा जय सहित जन्मेजय, राजा उदयन के घर में घर की प्रशंसा करानेवाला कुमार का पति मानों नरवाहनदत्त ॥ २४ ॥ ४ महासेन नामक ३ प्रचंड राजा के घर में कुमर गोपाल, अरिकधि के अगस्त्य ५ विक्रम के घर में चित्रवीर्य ॥ २५ ॥ ६ चहुवा-ण पृथ्वीराज क घर में रत्नसिंह ७ सरवहिया विजय के घर में युद्ध में नहीं डरनेवाला करण, महोदयपुर के राजा जयचंद के घर में ८ मानों उसका पुत्र वरदाईसेन ॥२६॥ राजा सिद्धराज सोलंखी के श्रेष्ठ घर म मानों गोभिलराज १० रैवत के राजा ९ सरवहिया करण के घर में मानों सम्पूर्ण गुणोंवाला उसका पुत्र ११ कैवाट हुआ॥ २७ ॥ इस प्रकार गुणों की खान हाडाओं के

गुन आकर हइ६१न हेलि गेह, इहिं तुल्य कुमार हुव तिहिं अनेह
नर पहुँचि सुद्धि दायक अनेक अधिगत अभीष्ट हुव एक एक२८
भू१ धन२ गृह ३ भूषन ४ बसन ५बाह६, सतकार पगे सब लद्ध
लाह ॥
बांधव१ बयस्य२ भट३ सचिव४ वर्ग, सुनि कुमर जन्म अंहति
निसर्ग ॥ २९ ॥
वृत्तिहिं बचाइ सर्बस्व२ स्वीय, बहु देत भये रुचि जस वरीय ॥
कति संघ दत्त भूखन दुकूल२, मुद्रा३ दिय कतिकन प्रमदमूल३०
आब्दिक४ दिय कतिकन अवनि आय, कतिकन दिय मासिक५
निज निकाय ॥
मद्दि६ दत्त कतिन श्रद्धा प्रमान, दिय हो ढिग जो सु७हि कतिन
दान ॥ ३१ ॥
इम दत्त कतिन भूखन८ अगार, बसनालय९ कतिकन बसन वार
लुटवाइ मंदुरा१० कति अलुब्ध, सल११ महिषी१२सुरभी१३ वृषभ
१४ सुद्ध ॥ ३२ ॥
कतिकन दिय सस्त्र१५हि प्रमद काल, बटि द्रंग बधाई वसु
बिसाल ॥
रीझहिं सक्यो न कहुँ कोहु रोकि, बिग्रहं१ अंसु२ आगम मह
बिलोकि ॥ ३३ ॥

सूर्य (रामसिंह) के घर में १ इनकी बराबरी करनेवाला कुमर उस (ऊपर कहे) समय में हुआ सो राजाको खबर देनेवाले अनेक मनुष्य पहुँचे उन सबको वांछित फल २ प्राप्त हुए ॥ २८ ॥ ३ दान के ४ स्वभाव से सत्कार को प्राप्त हुए ॥ २९ ॥ अपनी वृत्ति को छोड़कर अपना सर्वस्व ॥ ३० ॥ ५ अपनी भूमि की सालियाना आमद और कितनोंने ६ घर की माहवारी आय (आमद) दी ॥ ३१ ॥ कितने ही निर्लोभियों ने ७ हयशाला लुटा दी ८ ऊंट ॥ ३२ ॥ ९ शरीर में १० प्राण आने के समान उत्सव देखकर ॥ ३३ ॥

प्रभु विहित कृत्य महजन पधारि, पोढे पुनि दुस्थन दुक्ख दारि ॥
सद्दिय दसमी१०दिन विधि असेस,अवसरनिगमोदित बिरचि एस३४
क्रम जातकर्म ४।१ सह विधि कराइ, किय नाम कर्म ५।२ पुनि
समय पाइ ॥
कवि चंड । पत्त दानाधिकार, सह सचिव बुल्लि तहँ मह प्रसार३५
अधिराज दुहु२न दिय हुकम एहु, दिन समह बधाई बंटिवेहु ॥
भरि तव बहु थैल्लिन धन अभग, करि कर्म सचिव कति सुकवि
संग ॥ ३६ ॥
जव अखिल दान सँभार जोरि, पितावर श्रीहरि निलय पोरि ॥
निज ठानि अधोमहल्लन निवास, पट्ठ उचित बंधु१ कवि रक्खि
पास ॥ ३७ ॥
तिहिँ थान वधाई१ नाम त्याग, भनिहित प्रारंभिय क्रम विभाग ॥
भूखन१पट२हय३ गय४ भँमं५ भुम्मि६, घन द्रम्म७ददन जमछाक
घुम्मि ॥ ३८ ॥
बुध१ कवि२ द्विज१विधा२समर सूर, पौरानिक३मागध३ वंदि४पूर
वैतालिक५ चाक्रिक६भाड भ्रात, जंगर८बिरुदव्रत भट्ट९जात॥३९॥
वहुरूप१० भँरत११ चौँरन१२ वहोरि, जिम नाँदी१३ सूचकँ१४जूह
जोरि ॥
पुनि पीठँमर्द१५ पार्श्विकँ१६ प्रवीन, प्रीतिदँ१७ बिटँ१८ चेटक १९

१दारिद्रियों का दुःख काटकर २यद का कहा हुआ ॥३४॥ ३इस ग्रंथ के कर्ता सूर्य-मल्ल के पिता चंडीदान को दान का अधिकार दिया ॥ ३५ ॥३६॥ ४सामग्री ५मंदिर की पोळ [द्वार] में ६नीचे के महलों में ॥३७॥ ७सुवर्ण ॥३८॥ ८चारण ९भाट विशेष १० जांगड़ (ढोली)॥३९॥ ११नट १२कत्थक(नाचनेवाले नट विशेष) १३नाटक के आदि में मंगल पाठ करनेवाले नट १४सूत्रधार (नाटक करनेवाले नट विशेष)१५नाटक के नायक विशेष१६माया कारक नट विशेष और १७ विदूषक १८ विट, चेटक (ये तीनों कामी पुरुष के सखाओं के भेद हैं)

स्वगुन पीन ॥ ४० ॥

पात्र२० रु भ्रकुंस२१ पनजुत्ति२२ जत्थ, वादन१ चउ४ वादक२३
श्रेनि२४ सत्थ ॥

पहिले१ अधिकारी१चउ४प्रधान, मोताजदार२पुनि मध्य२ मान४१
उपटंक बनीयक वृंद एस, गुन बेतन ग्राहक३ श्रेनि३ सेस३ ॥

इह अन्यहि चारन१ भट्ट२ उक्त, पौरानिक१बंदी२पनप्रयुक्त॥४२॥
तर्कुक बिदेश्य१ अरु देश्य२ तत्थ, आये जुरि सहसन अर्थ अत्थ

इम मंग्ग९अवधि जुग२मास अंत, दिय बंटि बधाई जस दिपंत४३
बटि मंप१ हय२ भूखन३ सतन व्रात, सिरुपावन४ सहसन मित
सुहात ॥

बितरत अयुतन मित द्रम्म बार,सिंधुन बिलंघि हुव जस प्रसार४४
उच्छव१ यह जान्यों दिसन अंत, क्रम संसकार सोभित सुमंत ॥

निस्कासन१ प्रासन२ बिधि बनाइ, पुनि अवसर छुरिका३ बंध
पाइ ॥ ४५ ॥

सह चौलं४उपनयन५०याह६सिष्ट,दिपि है सब इतिमुख भाविदिष्ट

१अपने अपने गुणों में पुष्ट ॥४०॥२नाटककर्ता विशेष ३स्त्री का वेष करके नाचने वाले नट विशेष ४वेश्याएं ५चार प्रकारके वाद्य (तत, आनद्ध, [*]सुषिर, घन) बजानेवालों की ६ पंक्ति सहित ॥४१॥ इन पदवियोंवाले ७ याचकों के समूह और बाकी गुण के साथ तनखा पानेवालों की पंक्ति ८ इन से भिन्न ऊपर कहे हुए चारण और भाट जिनको पौराणिक और बंदी कहते हैं ॥ ४२ ॥ ९ याचक १० धनके अर्थ ११ मृगशिर मास पर्यन्त ॥ ४३ ॥ १२ ऊट १३ गिनती में १४ रुपयों का समूह ॥ ४४ ॥ अब आगे संस्कारों के नाम बताते हैं १५ बाहर निकालना१६अन्न खिलाना१७छुरी बधाना॥४५॥१८चूडाकर्म(हजामत बनवाना)१९जनेऊदेना और व्याह करना इत्यादि श्रेष्ठ संस्कार२०आगे आनेवाले

[*]"ततं वीणादिकं वाद्य आनद्ध मुरजादिकम् ॥ वंशादिकं तु सुषिरं कास्यतालादिकं घनम्" इत्यमरः ॥ अर्थ–वीणा आदि वाद्य का नाम तत, मृदंग आदि को आनद्ध, वंशी आदि को सुषिर और कासी के ताल आदि वाद्य को घन कहते हैं ॥

अब वर्तमान क्रम करि उदत, कोविद श्रुति धारहु अवनिकत४६
वलि उर्ज्ज८ मग्ग९ अह मह विताइ, अवलच्छ२ पच्छ अब पो-
स१० आइ ॥
वर्तत तिथिपंचमि५तरनि१वार,क्रम लहिय जन्म अर्जुन१कुमार४७
खनि१ मनि स्वरूपलतिका२ खवासि, जो रत्न १ जन्यौ २ रुचि १
रूप२ रासि ॥
कविजनक किन्न वलि कवि विवाह, सक भावी१८८८मधु सि-
ति१ लग्न लाह ॥ ४८ ॥
कोटेस प्रतोली पात्रकेर, वहिनी सन सगपन किय सु वेर ॥
जहँ विद्यमान कवि मालजास,श्रुत विजयसिंह१अभिधानआस४९
जो मालिक महियारियन जात, कविराज मोघ उपपद कहात ॥
सासन थोहनपुर१मैंमुख सत्त७, पूरन१कति कतिकन वट२पत्त५०
सब कुल माधानि न नेग सत्थ, आजीवन कोटा व्रात अत्थ
तस जामि वधू हित मगि तात, प्रारंभिय उच्छव समय पात॥५१॥
सक हय अहि वसु इक १८८७ पकत सस्य, तिथि बारसि ससि
सुत४ सित२ तपस्य१२ ॥
अर्प्पहि निमंत्रि कवि निज अगार,बुल्ले सह परिगह मह विथार५२
समुपेत पत्ति१सादि२न सहस्र, घटिका दस१०जावत कथित घस्र

समय म शोभा पावेंग [होवेंगे] १ हे चतुर राजा सुनो अथवा हे राजा के पंडितो सुनो ॥ ४६ ॥ २ कार्तिक ३ पौष मास का कृष्णपक्ष ४ रविवार ॥ ४७ ॥ मणियों की ५ खान ६ सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान ने ७ इस ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल का विवाह किया ८ चैत्र सुदि ॥ ४८ ॥ ९ पोळपात्र की ॥४९॥ १० कवि नहीं होने पर भी कविराजकी झूठी पदवी कहाता था ११शुभ थाकुर आदि ॥ ५० ॥ १२उसकी बहिन को १३पिताने ॥५१॥ १४ खेती के पकते समय १५ बुधवार १६ फाल्गुन सुदि १७ कविने आपको न्यौंता देकर परगह सहित अपने घर बुलाये ॥ ५१ ॥ १८ कहेहुए दिन

प्रभु निवसथ हरिना१ निकट पत्त, अभिमुखं कवि२आगत त्वरित तत्त ॥ ५३ ॥

पहुँचे न कास द्रोनि३प४ प्रदेस, सोदागर भैरव२ पहुँचि सेस ॥
सह बिरुद१ दत्त आसिख२ सुहाइ, उपदा किय हय इक१ प्रमद पाइ ॥ ५४ ॥

रक्खयो न तुरंग१ सु हड्ड६१राज, क्रमि अग्ग मग्ग१ लखि समय काज ॥
बाहलि कारुंड२सु संकट बट्ट३, उत्तरि इत आये थरकि थट्ट॥५५॥
क्रमि मग डुंडुभ द्रह४ रु दुड़कूप५, दै छलियद दक्खिन१ भुजहिं भूप ॥
जिम सब करि दक्खिन १ इंच्छुजंत्र ७, तजि तुरग रुंडतट ८ पुनि स्वतंत्र ॥ ५६ ॥

थित देवी चालकनेचि थान९, तहँ बहु तनाइ पँटगृह बितान १०॥
अंतर प्रवेसि ११ कटिबंध उज्झि १२, समयानुसार सब कज्ज सुज्झि ॥ ५७ ॥

दै सैन्य जिमावन तहँ निदेस१४, पठये नियोगि जन१५निपुन पेस
जिल्ला निज लैलै १६ तिनहु जाइ, जे सब कवि आलय दिय जिमाइ१७ ॥ ५८ ॥

आदरके भट१ खिल रहि उदार, रहिकैं अधीस ढिग रहनहार२ ॥
बल आत जिम्मि जनजन बिबेक, अवसेसं रहत दिन जाम एक१

१हरणा नामक सूर्यमल्लके ग्रामके समीप पहुंचे वहां कवि चंडीदान २सम्मुख [पेशवाई] को आया ॥५३॥३पर्वत की संधि के स्थान पर ४ नजर ॥५४॥ ५गाड़ा [छकड़ा] के मार्ग से ॥ ५५ ॥ ६गन्ना पीलने की चरखी [जंत्र] को दहिने हाथ रखकर ॥५६॥७डेरे और ८ चंदवे तनाकर ९कमरबंध खोला ॥५७॥ १०जीमनेका हुक्म देनेवाले मनुष्यों को भेजे ॥ ५८ ॥११एक पहर दिन बाकी रहते ॥ ५९ ॥

सह सौच१ वि२ सध्या २ सद्धि सूर, आरोहि३अर्व हय मृग१हजूर
हहती गोवाटी१ मुख प्रविष्ट४, आवत४ निवसथ२ बिच स्वकवि
इष्ट ॥ ६० ॥

तवतें पामडे६ पट१न तानि, अति अर्घ पट्टमय२ अग्ग आनि७ ॥
तिम अग्ग ८ मिलित जर १ तार २ तार३, अधिराज पत्त ९ इम
कवि अगार ॥ ६१ ॥

गनपति१ सिव२ थान जु चतुर गोल१०, तजि११हय तहँ लालित
१ लालित२ लोलं३ ॥

चतुर १२ जु आव्हय करि रामचोक ३, अनि चउ ४ जुत करनी
संक्ति ओक१३ ॥ ६२ ॥

पैठे१४ तहँ संसर्द प्रभु बनाइ, प्रविसे१५ पुनि अंदर समय पाइ। ॥
कवि आलय चत्वर विविध कंति, परि चो ४ सर चत्वर भांति
पनि१६ ॥ ६३ ॥

प्रभु तत्थ सखा१ सुभटन उपेत, हड्ड६१न इनं बैठे१७ असन हेत॥
आचात अबु १८ स्वदनांवसान, पानिय पवित्र लहि १९ अप्प
पान२० ॥ ६४ ॥

पुनि इम ंअपन१तर अयन पत्त, महिला कविकुलकी जहँ समस्त॥
भट दुजनसल्ल १ गोकुल २ भुंवाल, लहि सग कर्ण३ तिम रत्न-
लाल४।१ ॥ ६५ ॥

त्रय३आदि महासिंहोत्त तत्थ, स्व सचिव काका——चउ४समत्थ

॥६०॥१ भाड़ी और मोतियों सहित ॥ ६१ ॥ २ चपल घोड़े को छोड़ा ३ करनी माता के स्थान मे ॥ ६२ ॥ ४ सभा करके बैठे ५ चौक में ॥ ६३ ॥ ६ हाडों का पति भोजन करने को बैठा ७ भोजन के अंत म आचमन लेकर ॥ ६४ ॥ ८ घर के भीतर के घर में पहुंचे जहा कवि के कुल की १० सब ९ स्त्रिया थीं ११ रावराजा रामसिंह ने जिनकी लाज से स्त्रिया नहीं करती थीं ॥६५॥ इन चार

ए ४ स्वामि १ संग चउ ४ बीर आस, पंचम ५ लहि मो१ कहँ अप्प पास ॥ ६६ ॥
पंच५न जुत अंतर गृह प्रविष्ट, पहिचानी सबतिय कवि प्रदिष्ट॥
कवि जननि नजर इक द्रम्म किन्न, लहि सो२ रु न ३इतरन भेट लिन्न ॥ ६७ ॥
उत्तारन४ करि तब तिय असेस, अक्खिय पवित्र किय सद्म एस॥
प्रभु आसिख इम कहि तियनपाइ,६उपविष्ट सभा जह पुब्बआइ६८
सिरुपाव ७जकुट २ बर १ बरनि २ सीर, मुद्रा सतसह १०० हय ८बितरि बीर ॥
॥ ६९ ॥
दासि९न घट२ मुद्रा पंच५ दत्त, पुनि इक१ पुरोहित२कलस३ पत्त॥
इक१हि नि१०पैं मोतीसर३न आइ, ११पयधावक नापित४उभय२पाइ७०
इक१द्रम्म भेजि श्रीहरि१ अगार, दुग्गा१२वी२ मंदिर इक१उदार ॥
उपदा इक१चालकनेचि३अत्थ, सह्यि इक१करनी४ भेट सत्थ७१
इततैं इक१ इक१ सिरुपाव १ अर्ब१, कवि जनक १ किन्न १३प्राभृत २ सुपर्ब ॥
रक्ख्यो न उपायन वह र१४सेस, मोताज मिलिय इततैं असेस॥७२॥
चैलाल१५य १ अधिकृत द्रम्म चपार, ध्रुव चउ४हि फरास२न नि१६कर धारि ॥

भाइयों को और पांचवे १ ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल को पास लेकर ॥६६॥ २सूर्यमल्ल की माता ने ३ दूसरी स्त्रियों की भेट नहीं ली ॥ ६७ ॥ ४ न्यौछावर ५ हमारे इस घर को पवित्र किया ६ सभा में जहां पहिले बैठे थे तहां आये ॥ ६८ ॥ दुल्लह दुलहन के लिये ७ दो शिरोपाव ८ देकर ॥६९॥ ९दासियों के कलश में १० मोतीसरों के कलश में ११ पग धोनेवाले नाई ने ॥ ७० ॥ १२ देवी के मंदिर ॥ ७१ ॥ १३ श्रेष्ठ समय पर कविने भेट किये १४राजा ने वह नजराना नहीं रक्खा ॥ ७२ ॥ १५फरासखाने के दरोगे को १६ फरासों के समूह को

दुव २ दम्म द्वारपाल३न दिवाइ, पुनि दुव२हि नकीब४न निकर पाइ ॥ ७३ ॥

तांबूलकार५ इपभृत्य६ताम, दुव२ दुव२ इत्यादिन लहिय दाम ॥
लहि सेमन इक्क१इक्क१दम्म लाइ, अक्खिय पाकस्तव सबन वाइ७४
पुहवीस ऽपाइ मइ इम पधारि, बहु पोलिपात्र गौरव बधारि ॥
तिमसद्धि निमंत्रन इक्क६१हेलि, किय आइ पुष्पसर१बेल२केलि७५
खिन पुत्र भोज१९७१२ भूपति खवासि, रुचि सुजस ठानि ऽपय वित्त रासि ॥
निंपतार्थ फुल्लतिका१स नाम, जिहिं नरन१ भरन२ करि अष्ट८ जाम ॥ ७६ ॥
भुत सोधि पवनदिस३।८ कोस१ भाग, तहँ नाम फुल्लसागर१तड़ाग
बिरच्यो विसाल जहँ तहँ सुबेस, आराम११२ रचिय भाऊ१९६ इलेसँ ॥ ७७ ॥
सवसाख्यो दल१ फल२ फुल्ल३ सालि, चहारि१ नला२दि जलजंत्र चालि ॥

सुभसिल्प कुंड१वापिय२सुहात, प्रासाद३ बेरन४ छबिप्रचुर पात७८
लहिकाल भयो उपवन सु लुप्त, गुरु१विरल तरु२न रहिगो अगुप्त
अप्पहु प्रभु बिहरत कबहु आइ, लखि ताहिसज्ज बिरचन लुभाइ७९
दिय कृष्णाराम१ सचिवहिं निदेस, अभिनव वलि बिरचहु यह्रों एस
सुत जेठो१ मोहन१ प्रीति मत्थ, तारागढ अधिकृत बुल्लि तत्थ।८०।
इम कहिय सचिव यथं बेल एस, नृप किपउ न०प बिरचन निदेस

॥७३। १पकवान की स्तुति करके अपने प्रशंसा की ॥७४॥ २ फूलसागर नामक तालाव के बाग में क्रीड़ा की ॥ ७५ ॥ फूललताने अपना नाम ३स्थिरचय रखने के अर्थ ४ भरण पोषण करके ॥ ७६ ॥ ५ वायु कोण में ७ राजा भाऊने बड़ा ६ बाग बनाया ॥ ७७ ॥ ८वृक्ष, महल और ९कोर्ट ॥७८॥ १० पीछे से बड़े वृक्षों से प्रसिद्ध रहा ॥७९॥ १२इस बाग को फिर ११नवीन रचो ॥८०॥११ वचन कहा

सासन सु पुत्र सुहि धरहु सीस, मतिगति अरुद्ध मन्नहु महीस८१
सुनि जनक बैन प्रभु हुकम सद्य,इक्खि सु सुहूर्त तजि सब*अवद्य
प्रारंभिय उपबन नियम पारि, प्राकार †सुधा धवलित पसारि ।८२।
नवधातु ‡उदुंबर के बनाइ नलिका१§उखा२दि बहुविध तनाइ३ ॥
तब गत छिति अंतर रक्खि ताम,जलजंत्र१जाल लग्गिय ललाम८३
चद्दरि२ तिम चल्लत तनत चित्र, परिवाह सुद्धजल भृत पवित्र ॥
सरसेतु १ बेल २ बिच अति बिसाल, किय कुंड ३ किल्लोलन उष्णुकाल ॥ ८४ ॥
तत श्रेढि४न सबदिस जहँ तनाइ, बिच तास पृथुल छत्री५ बनाइ॥
दिस उत्तर ४।७ तस तट रम्य देस, प्रासाद पंति ६ बिरचिय बि-सेस ॥ ८५ ॥
चद्दरि७ जलजंत्र८ हु तहँ चलंत, छत्तिन लगि नल जल उच्छलंत॥
महलन उदीचि ४।७ दिस रुचिन मेल, बिस्तारिय सब ऋतु तरु ९ न वेल ॥ ८६ ॥
सब कूप १० कुंड११ बापी१२ सुधारि, चउ४ कोन बरनं१३ किय द्वार१४ च्यारि४॥
उत्तर तरु संभृत अखिल अैन, दल१५फल१६ प्रसून१७ सवका-ल दैन १८ ॥ ८७ ॥
प्राची१ आसा भव द्वार पास, अभिगम राम प्रासाद१९आस ॥
दक्खिन २।३ सन ध्रुवदिस ४।७ रुचिर राह, बिच नहर २० बहत चद्दरि प्रवाह ॥ ८८ ॥

॥ ८१ ॥ * सब अशुभों को छोडकर † चूने का उज्ज्वल कोट ॥ ८२ ॥ नवीन धातु की कितनी ही ‡ देहलियां बनाकर नलियां और फुहारों के नीचे की § हांडियां आदि उनको भूमि के भीतर रखकर तहां १ फुहारों के समूह ॥ ८३ ॥ २ आश्चर्य फैला कर ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ३ उत्तर दिशा में ॥८६॥ ४ कोन ॥ ८७ ॥ ५ पूर्व दिशा में ॥ ८८ ॥

बिच तास चलत जलजंत्र जात, जिन अवधि कुहू२१ नव९ नलन जात ॥

अतिवेग अबु चढि तरुन उद्द २२, बरखा ३ दिखात बिनुकाल बुद्द२३ ॥ ८९ ॥

प्रतिवाटी१ *इच्छु२४न सुमर२५न पाइ, छत्री२ लवग २६ द्राक्षा २७दि छाइ ॥

इत उपवन नैर्ऋत२।४कोन †अट्ट२८,बहु रमन सिंह आखेट बट्ट२९

निकटहि तस बाहिर कृत ‡निपान३०, तस दु २ दिस घोक३१ परिमित बितान ॥

अतहपुर सह तह रहि उदार, प्रभु रमत प्रचुर सिंहन सिकार।९१।

सर सेतु सिरहु वाटिन सुढार, बहु कुसुम३२नागबल्लि३३न बिथार

कुंड१ रु तडाग२ विच विविध कज३४, गुन सौरभ बिकसत कुसुम गज ॥ ९२ ॥

अति तुंग गिरिन चहुँ४ ओर ओघ३५, मुख१ अत्य ४ जाम७ रवि रहत मोघ३६ ॥

अति जीरन१नव२इमबिरचिबाग, सद्धिप प्रभु सासनरक्खिराग९३

यह भूतकाल१ उपवन उदंत, समुझहु हुव पहिले सचिव संत ॥

अब वर्तमान२क्रम वत्त आहि,कविगृह पवित्र करि इम उमाहि९४

नृप तहँ विवाह गौरव मनाइ, आये इहिं उपवन प्रमद पाइ ॥

इत जाइ ठ्पाहि सूचित अनेह, बहु त्याग बटि गय सुकवि गेह९५

इत सक्र अहि गज धृति १८८८ सरद ४ अत, मनसिज तिथि १३ बाहुल८सित२मिलत ॥

॥८९॥*इच्छु (गन्ना) † बुर्ज ॥९०॥‡प्रपा(खेली) ॥९१॥१तलाव की पाल पर २नागर बेल ॥९३॥३ऊंचे पर्वतों के समूह से ४आदि और अंत की दो पहर में सूर्य नहीं दीखता ॥९३॥९४॥५सूचना कियेहुए समय में ॥९५॥६कामदेव की तिथि७कार्तिक

भूपति सुत अर्जुन१मध्य भ्रात,जो सिसु स्वरूपलतिका२प्रजात९६
ा सक्यो परि नामहु तत्र तास, निधि वाम विचहि विरचिय विनास
रक तिहिं१८८८ तदनंतर माघ१२ श्याम, ध्रुव मिलन थप्पि प्राज-
मेरा धाम ॥ ९७ ॥

प्रग्रेज७न अनुसारि मंत्र एस, पृकत किन्न भूपति अशेस॥
हँ उदयनेर१ जयनेर२ ताम, सह जोधदंग३ बुन्दिय४ सनाम।९८
कोटा५ रु कृष्णगढ६ प्रमुख केक, बुल्लाय नरेस प्रमुदन विवेक
महिपति जवानै१ सीसोद १ सोर, कूरम २ जयसिंह २ सु वय
किसोर ॥ ९९ ॥

कुल हड्ड६१न दिनकर उक्त काल, प्रभु राम २०।३।४।३ पन
अप्पहु कृपाल ॥

पुनि पत्त राम४ कोटा पुरेस, इक सचिव झल्ल आयत्त एस।१००।
कल्लयान५ कृष्णगढ विभु कहात, विभु करि सुत ६ कढ्ढिय जु
२ भट ज्ञात ॥

इत्यादि अधिप सब बल्ल सजाइ, आहूत निगम अजमेर आइ१०१
मैं इक१ जोधपुर३ नृप प्रमत्त, पति अलस नरन नहि मान३ पत्त ॥
सुरस्यो गिन्यों सु जग मद मरोर, जिहिं फल्ल पुनि पैहै कुविधि जोर
सूचित १८८८ सक मेचक१ माघ११ श्याम, तिथि नवमि९ आंगिर
स५ वार ताम ॥

तहँ नाड़ी चउदह१४निस विताइ,पुनि सुभमुहूर्त तस अग्गपाइ१०३

सुदि॥ ९६ ॥ १माघमास में ॥९७॥९८॥ २आदि ३ जवानसिंह ॥ ९९ ॥ ४सचिव झाला माधवसिंह के वश में था ॥ १०० ॥ ५ कल्याणसिंह ६ प्रभु (राजा) पुत्र को किसनगढ में मालिक करके उमरावों सहित निकला ७ अंगरेजों के बुलाये हुए अजमेर नगर में आये ॥ १०१ ॥ ८ आलस्य करके नरनाथ मानसिंह नहीं आये ॥ १०२ ॥ ९ मास में १० गुरुवार ॥ १०३ ॥

वह लहि प्रभु प्रस्थित्त बल्ल सुहात, पगि प्रथम१पगारौ१सिविर पात
दल पात देवली२किय द्वितीय२,तीजो३सु केकरी३आस्थितीय१०४
सरवाट४रासपुर५वीर६ सीम, किय क्रम मुकाम भट अरिन भीम ॥
सप्तम७मुकाम कछु देर सग,दल पहुँचि सक्यो नहि गम्य द्रग१०५
परिमग्ग विपिन विच कटक घात, भुग्गि सु निस सप्तम ७ हुव
प्रभात ॥
अष्टम८दिन दु२पहर लघिअप्प, आरुहि इभ दुजनन दलतदप्प१०६
दुंदुभि १ पटहा२दिक्क विग्घ बज्जि, सब भट १ बयस्य २ कवि ३
सचिव४ सज्जि ॥
मप्पत लगिडेरिन गमनमग्ग,बलहिकिय इद ढिग सिथिलबग्ग१०७
उतते अंग्रेजहु पर्व पाड, अधिकारी पचक५समुख आइ ॥
मातंगारूढन हुव मिलाप, इम मुदित पटालय पत्त आप ॥ १०८ ॥
गोरेहु गये लहि सिक्ख गेह, अष्टम८ मुकाम अजमेर८ एह ॥
तहँ पुर सन उत्तर४।७तालताम,अभिधान अन्नसागर१ सनाम१०९
उत्तर४।७ प्रपात तस रचिय आत, जैपुर जन सर पृतना प्रपात ॥
तिम जानहु दक्खिन२।३ तीर तास, परि बल प्रभु अप्पन सिविर
आस ॥ ११० ॥
दक्खिन२।३दिस पुर सन कछुक दूर, तहँ रान तंत्र परि तत्र पूर॥
बलिरान१के रु पुर२केविचाल,जोरिय कोटाबल सिविरजाल१११
इत्यादि अधिप उत्तरि असेस, पंटकुटन रहे परिसर प्रदेस ॥
लगि ललित कलित बसा१वलभ, पंटबरन१ सरन२ आयत१ प्र-

॥१०४॥१०५॥१०६॥१०७॥१समय पाकर२हाथियापर चढ़ेहुए ॥१०८॥१०९॥३पड़ाव (मुकाम)॥११०॥ ४ महाराणा के अधिकार म गुडा(डेरों)का समूह हुआ ॥१११॥ ५नगर के समीप डेरों में रहे, सुंदर मोटे और लंबे पासों की ६मासिक ७कनात

लंबर ॥ ११२ ॥

वलंब१प्रलंब२अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

शूल१न प्रति उच्छ्रित थूल थंभ२, सिर कनक कलस३ खचि म-
नि सदंभ४ ॥

बनि अग्र अजिर[२]५ नाना बितान६, सब ठां बनि [४]स्रस्तर७ बिबिध
बान ॥ ११३ ॥

लगि बेणु इसीकन चिक८ ललाम, चित्रन बिचित्र धृत धाम धाम
सिचय[६]९ रु जवफल[७]२ मय कृत सुढार, परदा[८]९अपटी१० दिपि द्वार
द्वार ॥ ११४ ॥

सब कृत्य सदन११ बसु८ दिस बिभाग, पल्ल्यंक१२ पीठ१३ रुचि
रम्य राग ॥

गन तलिन१४न मलिन न निचुल[१०]१ गुप्त, ऊधस्य[११] फेन छवि फबि
अछुप्त ॥ ११५ ॥

प्रति थूल चूल[१२]१५ सध्वज पताकि १६, लहरात बात बेणु१न ल
ता१कि ॥

क्रम करि प्रभुबिलसनअप्पकज्ज, सिचपालय[१३] ऐसे बिहितसज्ज११६

का कोट लगा ॥ ११२ ॥ १ डेरों के थंभ ऊंची चोबों के लगे जिन पर मणियों से जड़े हुए सुवर्ण के कलश लगे २ जिनके आगे चौक रहकर अनेक प्रकार के ३चंदवे (सामियाने) तने ४अनेक प्रकार के शयन के तथा खसके डेरे बने "यह माघ मास था इस कारण खसके डेरे नहीं सभवते किन्तु शयन के डेरे ही जानो" ॥ ११३ ॥ ५ बांस की सुन्दर तूलियों की चिकें लगी ६ वस्त्र और ७ बांसोंमई श्रेष्ठ पड़दे और डेरों की ८ कनातें द्वार द्वार पर शोभित हुई ॥ ११४ ॥ भीतर मलिनता रहित १० वस्त्र की ९ बिछायत हुई जो ११ स्तनों से निकले हुए दूधके झागों के समान अस्पर्श कीहुई शोभा देती थी ॥ ११५ ॥ प्रत्येक डेरे पर १२ थंभो थंभों(चोबचोब) पर ध्वजा और पताका "अनेक वस्त्रों वाली ध्वजा और एकवस्त्रवाली पताका कहलाती है" उड़ती है सो मानों बांसों की लता को पवन हिलाता है १३ उचित डेरे सजे ॥ ११६ ॥

प्राकार१७ कील१ मस्कर२प्रविद्ध, सपुट त्रिक३ जवनिं३न वल-
ज१८ सिद्ध ॥
रहि तत्थ रुचिर बिलसतविलास,पुनिसज्जिय जावन लाठपास११७
चलि अग्ग चक्क चरख१न चठ्ठि, तोप१न गन लोपन गढन तेंहि॥
थहरात हेतु झडन थरक्कि, फहरात केतु१ दडन फरक्कि ॥११८॥
वहि कतिन जुत्त हय३ कतिन वैल४, गुनं रत्त रत्त५ प्रव पत्त गैल
तिन्हपिछि तरल नागह्ननिसान७,रुचिपीवल रोचन दिपिदिसान११९
सज्जित कति होद८न निंयहि सिंठि, परि मेघाडवर९ कतिन पिठि
घहि पिछि पलट्टनि१०विहित व्यूह, जहँ सद्धत मेहरन पंत्ति जूह१२०
इन्ह केंटें आयुधिक पत्ति११ओर, जिन्ह केट सादि१२गन नियति
जोर ॥
पुनिकेंट चोक१३रंज्जुनप्रमेय, सादिन प्रवेक गुन१४पिछिश्रेय१२१
तिन्ह केंटें प्रमित पुनि चारु चोक१५, अति मुख्य पत्ति१६ तिन्ह
मध्य ओक ॥
रहि पास सामि तहँ अतरंग १७, तहँ पदग मुख्य तिम१८ स्वामि
सग ॥ १२२ ॥
आरूढ तुरग तिन विच अधीस १९, सहदह१ खचितें मानि २ छ-
त्र२० सीस ॥
पाडुरँ रुचि चामर२१ढुरि दु२पास, ससिपर कि दु२घन सितँ रचत

१प्रसिद्ध पासो की कीलों२कनातों के तीन घेरों का कोट और द्वार॥११७॥१शत्रुओं का नाश करने को तष्टि [कुठार]रूपी॥११८॥ ४लाल लाल रंग को मार्गमें फैला नेवाली ५ चपल हाथियों के निसान ६ पीले रंग के ॥११९॥ ८ विशिष्ट [आज्ञा] को ७ निपाहकर १० पैदलों का समूह ९ शस्त्रों को साधते हैं ॥ १२० ॥ ११ इन के पीछे १२ सोरियों का नापा हुआ चोक ॥ १२१ ॥१३ जिनके पीछे इसी प्रमाण का सुदर चोक ॥ १२२ ॥ १४ मणियों के जड़े हुए दंड सहित १५ श्वेत रंग के चमर ढुलते हैं सो मानों १६ चन्द्रमा पर दो १७श्वेत बादल नृत्य करते

रास ॥ १२३ ॥

मोरछल२२ *पुरट१ मनि२ दंड३ मेल, खिल ग्रह६ जनु †सनि सन करत खेल ॥

नरनाह१ बाह इय मनि२ नचात, प्रेच्छकन पंथ ‡मेदुर मचात ॥१२४॥

संक्रमिय सज्ज बल दभ्र¹ बीर, उरझात अस्रि² सेलन समीर॥

नागन१क्रम भ्रमि१जिम उदधि नाव, भुव भजत कंप२ तजि अ-चल भाव ॥ १२५ ॥

फिरि लेत तरारन तुरग२ फाल, भिरि देत दरारन उरग माल ॥

सिर ³अगन डिगन लगि लरज संग, चिर्भट कि चरन चिपि भजत भंग ॥ १२६ ॥

दुव२ दुव२ भट कुंतन करत दाव, पटु घात दैन१ टारन२ प्रभाव।

बहु खगन ⁵खगन गनगगनबेधि, समलगन दैन तुपकन निसेधि१२

संगिन कति ⁶भंगिन करत सिद्ध, सद्धत कति तुपकन मन समि

मंडत कति दुद्धर असिन मग्ग, अभ्यासत हेतिन⁷ इन उदग्ग ।१२८

प्रस्थित इम संभर धरनिपाल, बिधि क्रम पथ पहुँचत इद बिचाल

उततैंहु लाठ१ प्रभु २ समुख आइ, लैगो सु निलय बल जि बिसाइ ॥ १२९ ॥

हैं ॥ १२३ ॥ मणियों के मिलाप सहित * सुवर्ण के दंडवाले मोरछल सो मानों बाकी के ग्रह † शनैश्चर से खेलते हैं, राजा रामसिंह बाहन के मणि रूपी घोड़े को नचाता है सो मार्ग में देखनेवालों को अत्यन्त ‡स्नि ग्ध करता है ॥ १२४ ॥ १ अल्प सेना सझकर चला २ भालों की अणिय [नोकों]में पवनको उलझाता हुआ, हाथियों के चलनेसे समुद्रकी भ्रमि[भमर में नाव के समान भूमि धुजती है ॥ १२५ ॥ ३ पर्वतों के शिखर डिगकर धू नेलगे सो मानों चरणों से चिपकर ४ काकड़ी टूटती है ॥ १२६ ॥ तरवारों आकाश में उडते हुए ५ पक्षियों के समूह को बेधते हैं ॥ १२७ ॥ कितने ही स धी बरछियों से ६ लहरों को सिद्ध करते हैं ७ शस्त्रों का अभ्यास करते ॥ १२८ ॥ ८ मकान के द्वार में प्रवेश कराकर ॥ १२९ ॥

निज सबप सुभट कति सूचि नाम, धरनीस सग लिय गम्य धाम
क्रम कारि तहँ दुर्जनसल्ल१ कर्ण२, पर अहि१न बिजय३ गिरि
धर४ सुपर्ण२ ॥ १३० ॥
वलि ईश्वर५ मगल१।६रत्न२।७ वीर, धात्रेयज अतिम इह दुरधीर ।
थितिसत्त७स्वभृत्यन वलजथप्पि,इन्हसत्त७न भृत्यन कर्मअप्पि१३१
दोउ२न कर इक१ इक१ चमर२ दत्त, पुनि दोउ२न इक१ इक१
बार्हि२पत्त ॥
खिल तीन३न ठैपजन१।५ रु चर्म२।६ खग्ग३।७, इन्ह थप्पि अनुग
इम पिठि१ अग्ग२ ॥ १३२ ॥
छबि सारद कादंबिनि छटा१कि, घनगज कुलीन कुभिन घटा२कि
जनु प्रालेयाचल सिखर३ जाल, सिवसैल सानु४ बिसद कि बि-
साल ॥ १३३ ॥
अद्भुत पटआलय ओरओर, ठनि बित्त रहे बनि ठोरठोर ॥
निज निपत लाठ पटकुट निवास, पाडुर अनेक इमआसपास१३४
सचिवाग्रग मोहन१ सह सुसील, इन तेन खान जमियत२ वकील
ए दुव२गत पुच्छहि लाठ औन, लाये तिहिं सम्मुह प्रभुहिं लौन१३५
सह प्रीति१ रीति२ नृप नीति३ संग, अत्तप सब नय मय रक्खि
अग ॥
इन दुहुँ२न लाठ१के सगआइ, बिभु१जुक्त उक्तपटगृहबिसाइ१३६
तत चारु दारुमय पीठ तत्थ, उपविष्ट अधिप१ सह मुख्य सत्थ॥

॥१३०॥१धायभाई ॥१३१॥२मोरछल ३पखा ४ढाल ॥१३२॥ मानों शरदऋतु की मेघमाला की शोभा किंवा ५ ऐरावत के कुल के हाथियों की घटा है (ऐरावत का रंग श्वेत है)६मानो हिमालय पर्वत पर शिखरों का समूह है ७किंवा कैलास पर्वत पर श्वेत रंग के बडे शिखर हैं ॥ १३३ ॥ इस प्रकार के अद्भुत डेरे चारों ओर हैं,८ श्वेत रंग के ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ ९ काष्ठमय सुंदर सिंहासन कुरसी पर १०राजा बैठा

हितजुत बिधेय व्यवहार होइ, प्रतिहित१ गुनेर गुन१ सुभर२ मा-
ल्य पोइ ॥ १३७ ॥
दलनाग२१ अतर२ आदत्त१ दत्त२, रस१ रुचित रक्खि बदि उचित
वत्त२ ॥
नृप आतत सिक्खहिँ करि निकेत,पहुँचान आय लाठहुउपेत१३८
सिबिर मुख खरे हय स्वार्स सर्व, आरुहि तहँ नृप हयमृग१ सु अर्ब॥
लहि लाठ हार्द फेरिय इलेस,बलि तिहिँ तजि आरुहि हय बिसेस२
——————————— धाम, नर्तिन सु मदनमतवार२ नाम ॥
तजि ताहि बहुरि आरुहि तृतीय३, हय मनि३ समाख्य हय गुन
गरीय ॥ १४० ॥
तीय१रीय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
गोपालसिंह २०२१५ निज अनुज गेय, जुरि उभय २ मल्लफेरिय
अजेय ॥
हय फेरि रहिय थित जबमहीप,मनमुदित लाठ गत हयसमीप१४१
हीप१ मीप२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
तसँ थप्पलि निजकर खंध ताहि,अक्खिय यह घोरन लाठ आहि
थित रहिय लाठ आदिक स्वथान,हंकिय निज डेरन चाहुवान१४२
सित १ माघ ११ चुत्थि ४ तिथि बार सूर१, प्रभु इम आये मिलि
प्रमद पूर ॥
अह त्रिक३बिताइ अष्टमि८अनेह,आयो प्रभु१पटगृहँ लाठ२एह१४३
आधिपहु समिालग समुह आइ, लैगो पटआलय भय लसाइ ॥

१ डोरे में पोई हुई श्वेत रंग की माला ॥ १३७ ॥ २ नागरवेल के पान ३ लिया और दिया ॥ १३८ ॥ ४ अपने सब घोड़े ५ राजाने ॥ १३९ ॥ ६ नाम ॥ १४० ॥ ॥ १४१ ॥ अपने हाथ से ७उस घोड़े का कंधा थापकर ॥ १४२ ॥ ८रावराजा रामसिंह के डेरे पर ॥ १४३ ॥

सुचि मोहन १ जमियतखान २ सत्थ, संलपि अनेह कछु मति समत्थ ॥ १४४ ॥
थित रहिय सभा तिहिं सिबिर१ थान, इक१ मत्र पंटालय२पिठ्ठिआन
तिहिं प्रविसिय नृप१ सह लाठ२ तत्थ, साहब सिकत्तर ३ अजट ४ सत्थ ॥ १४५ ॥
सचिव१ रु वकील २ दुव चलिय संग, इक१ मोहन १।५ जमियत खाँ २।६ अभग ॥
थित खुरसिन६हुव सव६मंत्र थान,जपिय नरेस लाठहिं सुज्ञान१४६
केसवपट्टनि पुर पूर्वकाल, हमरो हुतो सु विख्यात हाल ॥
दक्खिन अधीस वह किय दलेल, मढिय मग्हट्ठन हिंतु मेल ।१४७॥
संवत श्रुति मुनि गिरि इक १८७४ सार, किन्नों जु अप्प हमतें करार ॥
दिन्नोंहि लख्यो ताविच सु दग,सो देहु हमहिं अब लेखसंग१४८
कोटरिय इदगढ मुख७ कुचाल, जे परि सब जालमँ कपट जाल
प्रतिवार्षिक सूबा दम्म पूर, कोटा सम्मलि व्है देत कूर ॥१४९॥
अब करहु सवन हमरे अधीन, क्यों अप्प राज्य यह अनय कीन२
पुनि रान हिंतु हम चहत प्रीति,रक्खैं वे हम सन द्वेष रीति॥१५०॥

१कुछ समय पास करके॥१४४॥२सभावाले यहीं स्थिर रहे३सलाह करनेका डेरा ॥१४५॥१४६॥४दलेलसिंहने यह नगर दाक्षिणियों को देकर ५उन दाक्षिणियों से मेल किया ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ ६ इन्द्रगढ आदि कोटाकी छोटी शाखा से ७ जालमसिंह झाला की जाल में पड़कर ॥ १४९ ॥ आप के राज्य में यह ८ अनीति क्यों की ९ उदयपुर के (*)महाराणा से हम प्रीति करना चाहते हैं ॥१५०॥

(*) पंचम राशि के अन्त में बुन्दी के राव सूर्यमल्ल के हाथ से महाराना रत्नसिंह के मारेजाने में जो कारण बुन्दीका ख्यातके अनुसार इस ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) ने लिखा है वही कारण रावराजा अजितसिंह के हाथ से महाराना अरिसिंह के मारेजाने में उदयपुरवाले बताते हैं जिसको स्पष्ट रीति से लिखने की प्रतिज्ञा हमने वहीं पर की थी परन्तु भूलके कारण अरिसिंह के मारेजाने के प्रकरण में नहीं लिखागया सो प्रकरण

कछु द्वेस हेतु हुव पूर्वकाल्त, हम तिहिं न गिनत वे गिनत हाल्त ॥
किन्नों वे चहत सम्मिलन काम, सम अप्पमध्य नहिं करहु नाम१॥१५१॥
तहँ विटक सुनि नृप बत्त तीन३, क्रमतें प्रत्युत्तर३ लाठ कीन ॥
किय पूर्व ग्वालियर हम करार, दिय पट्टनिता बिच लेखद्वार॥१५२॥
बदलै सु लेख जब तबहि बत्त, तुमरो वकील यह कहहु तत्त ॥
कोटरिय तिमहि कोटा कगार, बिच पुब्ब दई हम लेख बार॥१५३॥
सुहु जबहि लेख बदलैं सु सील्त, कारित चिंतन तब कहं वकील्त ॥
तब होत होन संभवप्रतीति, नहि बिचहि बचन बदलैं सु नीति२॥१५४॥
अरु रान मिलन जो चहत आप, मन्नत सु हमहु उचितहि मिलाप ॥
पै पुच्छि रान सम्मतहिं पाइ, जो होइ सु हम देहें जनाइ ॥१५५॥
तदनंतर स्वागत पर्व३ तत्त, द्विप१ इक१ अखर्व४ हुव२ अर्व२ दत्त ॥
मंजुल महर्घ५ सिरुपाव१३ श्रेय, महि वेद४१ मंगलपतखत्रीप्रमेय॥१५६॥

१ अब हम उनसे मिलाप करना चाहते हैं ॥ १५१ ॥ उस डेरे में राजा की तीनों बातें सुनकर ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ २ याद करानेवाला ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ ३ स्वागत करने के समय ४ एक बड़ा हाथी ५ बहुमूल्य ॥ १५६ ॥

वशात् यहां लिखाजाता है कि कृष्णगढ के महाराजा बहादुरसिंह की बड़ी पुत्रीके साथ रावराजा अजितसिंह और छोटी पुत्रीके साथ महाराना अरिसिंह व्याहे थे, और उदयपुर में निजी यवनों के बखेड़े से घबराकर महाराना अरिसिंह कृष्णगढ मे रहे वहांसे मेवाडके फरेबी राना रत्नसिंह के पक्षवाले उमराव जो महाराना अरिसिंह से विरुद्ध थे उन्होंने रावराजा अजितसिंहके नाम ऐसा पत्र लिख भेजा कि जिससे क्रोध में आकर महाराजा अजितसिंह ने अरिसिंह को छलघात से मारडाला. बुंदीवालों ने जो कारण महाराणा अरिसिंह के मारेजाने में बताया है इस पर करनल टाडने भी अपनी किताब (टाडराजस्थान) में शङ्का प्रकट की है और मेवाड़ के इतिहास (वीरविनोद) में स्पष्ट ही इशारा किया है, जिससे भी यही सिद्ध होता है कि यह मेवाडके उन उमरावों की ही दुष्टता थी कि एक कल्पित अपराध पर अपने स्वामीको मरवाडाला और इसी कल्पित अपराध पर मारेजाने के कारण उदयपुरवाले बुंदीवालों से कभी मिलना नहीं चाहते और बुन्दीवाले वारंवार महाराना से मिलाप करने का उपाय करते रहते हैं जिनमें यह पहला ही प्रयत्न था जो लाठसाहिब के द्वारा कियागया. इस पीछे तो अनेक यत्न हुए वे खालीगये किंतु सबसे पीछेका यत्न जो बबुर के मुसाहिब आला करनल सर प्रतापसिंह साहिबने इस टीकाकार[बारहठ कृष्णसिंह]के द्वारा किया था वह भी निरर्थक हो गया ॥

दृढ इक्क१ जटित मनि मुट्ठिदार, कमनीय प्रतन बुन्दिय कटार१।४
अभिनव दुस्सह वल तुपक १।५ एक१, ए उक्त उभय२ प्रैहरन
प्रवेक ॥ १५७ ॥

इत्यादि अप्पि लाठहिं इलेस, दिय सिक्ख आइ सीमा प्रदेस ॥
दूजे२अहं नवमी९भाग्य दिष्ट, अप्पहुपहु बिरचन सिक्ख इष्ट१५८
पुनि लाठ पैटालय प्रगुन पत्त, बिधि आनि ठानि हित तानि बत्त
तीन३हि मिलाप भट सत्त७तेहि, हितपुञ्ज अनुगॅपन रतरहेहि१५९
इक१ दंती१ इक१ हय१जव अमान, सिरुपाव १।३ इक्क १ सुचि
बर बितान ॥
तखती मिति निधि गुन ३९ सरुप तास, इत्यादि आदि प्रभु भेट
आस ॥ १६० ॥
दीरघ दु२नालि१ हुक१ नालि२दार, बिनु अनल१ उपल२ फल१
बल बिथार२ ॥
इम तुपक१ बिधा अद्भुत अनेक, कटितत्र तमैंचा२ जन्त्र केक१६१
पुनि दूरबीन१ घटिका२ पुरोग, बिस्मय करि वरतुन जोरि जोग॥
उपदा इत्यादिक पुनि अनेक, पुनि भेट लाठ किय गुन प्रवेक१६२
करि सिक्ख आइ प्रभु पटनिकेत, चिंतिय पुनि पुष्कर गमन चेत
इत उदयनेर१जयनेर२ईस,हुव मिलन उत्कें जिम कुल हदीस१६३
पै कुम्भ १ झुतैं २ सिंघी प्रथोय, गुनैं ६।१ सक्ति ३।२ रहित जु न
प्रभु गणोय ॥

१सुंदर २शस्त्र ॥१५७॥ ३दूसरे दिन ॥१५८॥ ४डेरे में ५सेवकपन में तत्पर होकर ॥१५९॥६अमाप वेग वाला ॥१६०॥७ बन्दूक ८ पत्थरकला ९ पिस्तोल ॥१६१॥१० घड़ी आदि ॥ १६२ ॥११डेरों में १२मिलने को उत्कंठित हुए ॥ १६३ ॥ जयपुर का राजा कछवाहा जयसिंह १३झूंतारास सिंघी के वशीभूत और १४ संधि आदि छहों गुण और मंत्र आदि तीनों शक्तियों से रहित था इस कारण वह प्रभु (स्वामी) गिनेजाने योग्य नहीं था ॥ १६४ ॥

इत तदपि झुंत सम्मति अधीन, कछवाहश्रावक न सज्जकीन १६४
सामजे[1] चढाइ दल दभ्र[2] सत्थ, प्रथित किय कुम्म१ हिं रान२ पत्थ
जहँ हुकमचंद्र१ झूंता[3]२ ग्रजात, नृप पिट्ठि खवासी थिति निभात १६५
सह दंड१ जटित मनि छत्र२ सीस, मोरछल१ चमर२ वीजित[4] म-
हीस ॥

इम रान सिबिर जयसिंह आइ, कछु बढि गज हुल्लिय[5] क्रम चु-
काइ ॥ १६६ ॥

प्रतिहार[6] मुख्य तहँ रान पोरि, निज जनन पिल्लि गजप[7] निहोरि॥
कछवाह करी करि राह रुद्ध, उतराइ अधिप सीमा अबुद्ध[8] ॥१६७॥
पटबरन पुटन अंतर पंउठ[9], जयहारि१ इम पहुँचत स्वजन जुंठ[10] ॥
उततैं तिम तदवधि[11] समुह आइ, सीसोद राजकुल[12] क्रम सधाइ १६८
कर १ तास अप्प कर २ रक्खि तान, जग विदित जनन[13] आव्हय
जवान२ ॥
विष्टर[14] इक पुनि किय थिति विसेस, दाहिन१ जवान१ जयर२ वा
म२ देस ॥ १६९ ॥
इम बैठि सभाऽऽसन कछु अनेह, संलाप आप करि भारि सनेह ॥

---

१ हाथी पर चढाकर २ अल्प सेना सहित कछवाहे को राजा के पस्त्य (घर) को रवाना किया ३ झूनाराम का बड़ा भाई ॥ १६५ ॥ ४ पवन होता हुआ ५ हाथी को हूलकर उतरने की सीमा से क्रम चूककर आगे चढाया ॥१६६॥ राना के मुख्य द्वार पर ६ द्वारपालने अपने लोगों को ७ महावत को बारं बार कहकर कछवाहे के हाथी का मार्ग रोककर ८ उतरने की सीमा नहीं जाननेवाले राजा को अथवा राजा को उतरने की सीमा समझाकर हाथी से उतारा ॥ १६७ ॥ कनात के पुड़ों के कोटके भीतर अपने लोगों से १० सेवित राजा जयसिंह ९प्रविष्ट हुआ ११अवधि पर्यन्त १२रावल कुलवाला ॥१६८॥ जयसिंह के हाथ पर अपना हाथ रखकर, संसार में प्रसिद्ध १३ वंशवाला महाराणा जवानसिंह१४गद्दी पर दाहिना जवानसिंह और बाम ओर जयसिंह बैठे ॥ १६९ ॥

वलि अतर१पान२मुखवनिबिधेय,पटकुट गो कूरम भट प्रमेय१७०
रहि क्रम लहि अवसर तदनु रान, जयसिंह१पटालय२गय जवान॥
कुल रीति साद्धि किय मिथ मिलाप, दक्खिन१ दिस उपाविसि
इतहु आप ॥ १७१ ॥
नवोल१ अतर२लै१ दे२ तथाहि, स्वसिबिर गय रानहु नय समाहि
प्रभु १ चहि निज मातुल मिलन प्रीति, कल्लपान कृष्णागढ़ नृप
पुनीति ॥ १७२ ॥
बुल्लिय स्व पटालय क्रम विधान, मातुल२ तहँ अनुचित गहिय
मान ॥
भाखिय तुम लघुवय १ भागिनेय २, गुरु वृद्ध१ रु मातुल २ हम
गणेय ॥ १७३ ॥
तकि तारतम्य कारन तदीय, इम वाढहु गौरव अस्मदीय ॥
उल्लंघि रीति विधि कज्ज एस, न गिन्यों हित ससचिव१ भट २
नरेस ॥ १७४ ॥
जहँ इम इतरेतर दर्प जोर, अवनीस मिले जाने न ओर ॥
मिच्छननिदेस सब धग्तमत्थ, न मिले ति परस्पर मदअनत्थ१७५
इत प्रभुहु तीर्थगुरु गम्य आइ, किय न्हान१ दान२ क्रम मह मचाइ
द्विज चिमनराम१मुख गुरु उदार,कियश्राद्धसर्बकुल१बधु२वार१७६
नर१ नारि२ सिसु३न भूपन१ निचोल२, अखिलन अधीस अप्पिय
अमोल ॥

उमरावों के साथ २ यथार्थ ज्ञान लेकर १ कछवाहा अपने डेरे गया ॥१७०॥ ३ परस्पर ४ यहां भी महाराना जवानसिंह ही दहिनी ओर बैठे ॥ १७१ ॥ राव राजा रामसिंह ने अपने ५ मामा कल्याणसिंह से मिलना चाहा ॥ १७२ ॥ अवस्था में छोटे और ६ भानेज हो ॥१७३॥ आप के ७छोटे बड़े होने का कारण देखकर ८ हमारा गौरव (बड़प्पन) बढ़ाओ ॥ १७४ ॥ ९ परस्पर घमंड करके ॥ १७५ ॥ १० जहां जाना था वहां पुष्कर आकर ॥ १७६ ॥ ११वस्त्र १२सबको

इभ १ हय २ रथ ३ मंडित एक १ एक १, इम धेनु ४ निकर अप्पिय अनेक ॥ १७७ ॥

रुप्पय सोलहसत १६०० दे रसेस, अजमेर आइ रहि रत्ति एस ॥ बुंदिय दिस प्रस्थित हुव वहोरि, पहिले १ मुकाम पुनि २ जात जोरि १७८

तिथि तीज ३ असित २ असित ७९ * तपस्य, बुंदिय विसेस सह मह १ सेवस्य २ पुर १ पुर २ अमात्य १ जुव्वन २ प्रदिष्ट, विलसिय विलास प्रभु अप्पि इष्ट ॥ १७९ ॥

॥ दोहा ॥

दिनदुल्लह होरिय जनन, सह मह कौतुक साहि ॥
सचिव १ सुहृद २ भट ३ बुध ४ सभा ५, लिय क्रीडन रस लाहि १८०

कुसुम १ रु रंग २ गुलाल ३ क्रम, करि वाहिर १ बहु केलि ॥
सह रानिन अंतर २ सभा, होरिय किय कुल हेलि ॥ १८१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ बुन्दीन्द्ररामसिंहचरित्रे महारावराजारामसिंहराजकुमारभीमसिंहजनन १ ग्रन्थकर्तृसूर्यमल्लप्रथमविवाहतन्महसूर्यमल्लहरणाग्रामरामसिंहगमन २ योधपुरेशमानसिंहातिरिक्तोदयपुरमहाराणाजवानसिंहादिराजस्थानभूपाललार्डाभिधांगरेजप्रधानाधिकारिसंमिलनाजमेरराजसभागमन

दिये ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ * फाल्गुन वदि तीज को १ सभासदों सहित विशेष उत्सव से बुंदी में गये २ अमात्य रूपी यौवन ने शरीर रूपी पुर में प्रवेश करके स्वामी को वांछित फल देकर विलास किये ॥१७९॥ ३ मित्र ४ पण्डितों के साथ सभा में ॥ १८० ॥ ५ कुलके सूर्य ने होली खेली ॥ १८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुंदी के भूपति रामसिंह के चरित्र में, महारावराजा रामसिंह के राज कुमार भीमसिंह का जन्म होना १ इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल का प्रथम विवाह और सूर्यमल्ल के ग्राम हरणा में रावराजा रामसिंह का महमान होना २ अजमेर में आम दरबार होकर जोधपुर के महाराजा मानसिंह के विना उदयपुर के महाराणा जवानसिंह आदि राजपूताना के रईसों का लाठ साहब की मुलाकात को अजमेर

३अजमेरप्रत्यावृत्तपुष्करस्नातरामसिंहबुन्दीप्रत्यागमनवर्णनदशमो मयूख ॥ १० ॥

आदितो द्विसप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूख ॥ ३७२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

समरसिंह१८२७ नृप चरित सन, लहि आरभ१ उदंत२ ॥
रु अजमेर सन रावरे, आगम लग जिहिं अंत२ ॥ १ ॥
इते ग्रथ विच किय अनिस, विदित वरन सबंध ॥
त्यागि मनोहर१ आदि त्रिक३, सबहि छद दृढ संध ॥ २ ॥
मनोहरा१रुप घनच्छरी२, सरूपक३ हु इन माँहिं ॥
वृत्ति१ छेक१ बहु पै नियत, वरनसगाई३नाँहिं ॥ ३ ॥
सब खिज छदन नियम सह, विहित वरन सबंध ॥

जाना३ अजमेर से पुष्कर स्नान करके रावराजा रामसिंहके बुंदीमें पीछे आने के वर्णन का दसवां १० मयूख समाप्त हुआ ॥ १० ॥ और आदि से तीनसौ बहत्तर३७२ मयूख हुए ॥

राजा समरसिंहके चरित्र १से प्रारंभ का २ वृत्तान्त लेकर रावराजा रामसिंहके अजमेर से पीछे बुंदी ३ आने पर्यन्त ॥ १ ॥ इतने ग्रन्थ में ४निरंतर ५ [*]वर्ण सम्बन्ध (वरणसगाई) नामक अलंकार रक्खा है जिसमें ६मनोहर ८ घनाक्षरी और रूपक इन तीन छन्दों को छोड़कर बाकी सभी छन्दों में दृढ ७ प्रतिज्ञा से वर्णसंबंध है और उपरोक्त तीनों छन्दों में भी ९ छेकानुप्रास तो बहुत है परन्तु वर्ण संबंध नहीं है ॥ २ ॥ ३ ॥

---

[*]वर्णसम्बन्ध (वरणसगाई) नामक अलंकार केवल चारणों की कविता में ही है अन्य कवियों की कवितामें यह अलंकार नहीं है सो अन्य जातिके कवियोंके ग्रंथोंसे स्पष्ट सिद्ध है, इस अलंकारका सर्वोत्तम नियम यह है कि जो अक्षर चरण के आदि में आवे वही अक्षर चरण के अंतिम शब्द के आदि में होना चाहिये जिसके उदाहरणमें इसी ग्रंथका यह दोहा है "धामाके सिरकी धटक, खोज कटक रनखेत ॥ हारयो कर आयास हर, हारयो तदपि न हेत॥" परन्तु इतने बड़े ग्रंथमें कहीं परभी कोई अशुद्ध शब्द नहीं आने देकर इस नियमका निर्वाह करना कठिन था, इस अवस्था में अशुद्ध शब्द के प्रयोग नहीं करने के नियमकी पूर्ण रक्षा करके वरणसगाई का जो नियम सूर्यमल्लने इस ग्रंथमें रक्खा है वह भी प्रशंसनीय है ॥

इक्क१ चरन१ गत इक्क१ अरु, द्विर२ ता३दिहु श्रुत संध ॥४॥
चरन१।४।१ केर अद्ध१।२।२रु चरन१।४।३, इनके अलपहु अंस ॥
तिन्हलौ आदि१ रु अंत४ तक, सुहि संबंध प्रसंस॥ ५ ॥
स्मृत न भयो कहुँ तो सुबुध, न गिनहु कठिन बनै न॥
मनको धर्म्महि बिस्मरन, यहहि सनैन१ अनैन२ ॥ ६ ॥
कथित प्रयत्न २ प्रबंध करि, अच्छर सगपन आनि ॥
अब प्रयत्न तजि आक्खियत, ठांठां नियम न ठानि॥ ७ ॥
कवि के सविता चंड कवि, अति प्रभु प्रीति अनत्र॥
लैन सिक्ख तिन किय अरज, तीरथ सेवन तत्र ॥ ८ ॥
षट्पात्॥सुकवि चंड तिहिं समय बरस चालीस इक्क४१वय ॥
भाखा१ त्रिकं३१ साहित्य२ तुपक बिद्या३रु स्वरोदय४॥
सकुना५दिक जय सद्धि अब जु श्रुति सिर६ आलोचिय ॥
सक सत्तरि७० सन संतत रमन मृगया२ रस रोचिय ॥
पहिले समै सु७ दस१० अब्द प्रति मृगया७ इम रुचिमैं रहिय
मारे छह६ सिंह१ महि रोकं रहि अमित बराह२ न असु गहिय ॥९॥

१कहीं तो एक चरणमें एक ही वरणसगाई है और कहीं एक एक चरण में २ दो दो तीन तीन वर्णमें संबंध है ॥४॥ कहीं पर ३चरण की चौथाई में और कहीं आधे चरणमें है और कहीं कहीं इनसे भी अल्प अंशोंमें है सो इनको आदि से लेकर अन्त तक यह वर्णसंबंध ४ प्रशंसा योग्य है ॥ ५ ॥ ५ जहां कहीं उपरोक्त वर्णसंबंध रखना याद नहीं रहा वहां पण्डित लोग ऐसा नहीं जानैं कि यह कठिन था इससे नहीं बना किंतु नेत्रवाले और बिना नेत्रवाले सबके मनका धर्म भूलने का है ॥ ६ ॥ ऊपर कहेहुए ग्रन्थ में प्रयत्न करके ६ वर्ण संबंध रक्खा है परन्तु अब इसका प्रयत्न छोड़कर जगह जगह नियम नहीं रखकर कहते (बनाते) हैं ॥ ७ ॥ ७ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के ८ पिता चंडीदान ९ रावराजा रामसिंह के अत्यन्त प्रीतिपात्र थे ॥ ८ ॥ १० संस्कृत, प्राकृत और देशभाषा में ११वेद के मार्ग को शिर पर रखना विचारा १२निरंतर १३ भूमि में खुदी हुई ओदियों (खड्डों) में रहकर १४ अगणित सूवर मारे ॥ ९ ॥

सिंह१ न सन कछु खर्व सिंह२ आव्हयं तदपि अब॥
द्वीपि१ वग्घर२ सद्दूलं३ सुनहु इतिमुख बाचक सब ॥
छक३ -- त्रिक३ मुख बहुत ‍‍‍६हस्र तिनमें अति हिंसक ॥
हनें प्रकट भुव वेठि१ कतिक ठठ्ठरहि छये छक ॥
सूकर१ अंदम्र२ खिल१दभ्र२सब हायन दस१०मृग सहरिय
आरंभि१ऊर्ज८फग्गुन१२अवधि९काल पंलल्हास न करिय॥१०॥
आवा१न करि आखेट सुपहु२ सद्धिय रस सेलन ॥
सद्धिय अंवट१ सिकार सुकवि२ स्वतुपक३ सम्मेलन ॥
इम असीति८० सक अत अतुल१ इकल२कटैल३ किटि ॥
सीमा निज सबसथ महावल४ निडर५ गये मिटि ॥
अवतैहि दया१ अंकुरि हृदय पलि रँगा२दिक करि विजय॥
प्रभुके समीप निवसन प्रथित भुव भावितें हुव वीत भय११
अप्पहि प्रमुदित अप्प किन्न कवि अरज जोरि कर ॥
तीरथ सेवन सद्धि नसत मो कृत अघ निर्भर ॥
देहु सिक्ख प्रभु सदय त्वरित अैहौं करि तीरथ ॥
बनिहै अघ न बहोरि पाइ कुमतिन सु सग पथ ॥

१सिंह न कुछ छोटे सिंह मारे उनके ये १ नाम हैं२चीता ३ व्याघ्र(बघेरा)४शार्दूल चौफूल्या (बघेरा विशेष) ५ इत्यादि कहेजाते हैं ६ मीन भेड़िये(स्याळी) आदि हिंसा करनेवाले बहुत छोटे जानवर मारे ७ बड़े सूवर और पाकी के छोटे सूवर, इस प्रकार के मृगा को दश वर्ष तक मारे ८ कार्तिक से लेकर फाग्गुन मास पर्यन्त ६ सूवर के मास खाने का च्य नहीं किया अर्थात् इसका कभी अंतर नहीं किया (बराबर खाते रहे) ॥१०॥ १०हे राजा रामसिंह उनने बाणों से और भालों से और ११ भूमि में खुदी हुई ओदियों में बैठकर बंदूक से अठारह सौ अस्सी के सबल तक १२ दाढ़ोंवाले एकल सूवर १३ अपने ग्राम की सीमा में १४ स्नेह आदि को जीतकर, आपके (रामसिंह के) समीप रहने के कारण १५शुद्ध होकर निर्भय प्रसिद्ध हुए ॥११॥

प्रभु कहिय *बाह१सेवक२प्रमुख कतिक संग लेहो कहहु
कवि कहिय है२हि गृहजन बहुत प्रभु प्रसन्न रुचि करि रहहु॥१२॥
जंपिय प्रभु दुवर२ जनन१ काय सेवनर२ सहिहिँ किम ॥
बलि न लेत तुम †बाह१ राह२अति कष्ट अहो इम॥
प्रभु१जुत मित्र२न प्रकर जदपि—— हठ जोरिय ॥
दोइ२ जनन गहि तदपि निखिल बिधि संग निहोरिय ॥
सक अंक अचल गज बिधु१८८९समय मास भद्द६पाउस३अमा३०
कविराज कढिय बुन्दि बितंजि, बिधु रु वेद४१स्वक वय रामा१३
अक्खिय पुनि अधिराज प्रीति अंतर पर२ उप्पजि ॥
रथ१ नृजान२हय३रहित तुम न बिहरे३ मृगया१ तजि॥
भारबाह इक१ भोलि१ ऋस्व इक१लेहु किधों हय१।२ ॥
इक१बाह१।३चढि अप्प जाहु बिरचत श्रमादि जय ॥
जामिक स्व संग लहि अठ८जन अभय पुराय बिधि आचरहु
बालपन१ तैं जु अब२लग बन्यों कलुख६ भस्म वह सब करहु॥१४॥
स्वामि१हुक्म२जिम सुहृद७जन१न तिम ८प्रसभ२जनायउ ॥
ताजि हठ कवि हिय तदपि भृत्य तीजो३हु न भायउ॥
वनत असन इक१ बेर मद्य२ तब लै लि३चषक मित ॥
बलि लहियत चउ४बेर अरक भंगार२ मय अंचित ॥
अहिफेन११३निसा दिन खिन उभय२हुक्का४जंत्र छ६जाम हित॥

* सवारी और सेवक आदि ॥ १२ ॥ † फिर तुम सवारी भी नहीं लेते हो १ बुंदी को छोड़कर अपनी इकतालीस वर्ष की अवस्था में निकले ॥ १३ ॥ २ परम प्रीति उपज कर रावराजा रामसिंह ने कहा ३ बिना शिकार के इन सवारियों को छोड़कर कभी नहीं फिरे ४ ऊंट ५ पहरायत ६ पाप को ॥ १४ ॥ ७ मित्रों ने भी ८ हठ किया, चंडीदान दिन में एक समय भोजन करते थे तब ९ मद्य की तीन चुसकियां पीते थे और दिन में चार बार भांग का १० पूज्य अरक और रात्रि दिन में दो बार ११ अमल (अफीम) लेते और छः पहर हुक्का

चढि वाह चलन५।५इह सुकवि सब उज्झिय बुंदिय६सहित।१५।
महित१ सहित२ अत्यानुमास ॥ १ ॥
को साहस इम करहिं सूर तजि सब सरीर सुख ॥
चउ४ मादकें तजि चित्त दंमि रु क्रमि पयन लहैं दुख ॥
स्वप्रभु१ मन लहि सिक्खर सुहृद१लोकन इम सम्मति२ ॥
कढि बुंदिय सन सुकवि पत्त हरिनौ१ हरिनौपति ॥
बांधव१ कुटुंब२ सब बुल्लिकैं कहिय धाम चउ४मुरुप कारि॥
तिन्ह सरनि न्हाइ सन तीरथन एहों अछल अजातं अरि१६
रूद्रदान१ अभिधान सुकवि सविता सोदर सुत ॥
मम माता निजनारि२ जुग२हि इम नैनप२।४ विनय जुत ॥
अप्पन जन इत्यादि विरचि हारे सब विन्नति ॥
पै तीजा३ जन पास दास न लयो मनस्विमति ॥
पंथिदेव१ पुज्जि इष्ट२हिं प्रनमि करि निज ग्राम परिक्रमन३
पिता१दि प्रस्थित४लै विधि प्रथित गम्य सरनि मंडिय मनन१७
लीलावति१ निज लार भृत्य इक१ लिय स्वसद्मं भव ॥
दूजो२ सेवक द्विज सु रामकृष्णा२ऽभिधेय रव ॥
सेवक ए२ दुव२ सग लै रु प्रस्थित कविंद लैहु ॥
जित चित मादक जात पयन गतोंहु अयन पहु ॥

पीत थ सो इनको और सवारी पर चढ़कर चलने का १ खुशी के साथ ही छोड़े ॥ १० ॥ २ चारा नशों को छोडकर ३ अपने चित्तको दण्ड देकर, पैदल चलकर इस प्रकार कौन सुख लेता है ४ हरणा नामक ग्राम के पति हरणा मे प्राप्त हुए ५ चारा धाम "जगदीश्वर, बद्रीनारायण, रामेश्वर और द्वारका" और इनके मार्ग म आनेवाले तीर्थों मे स्नान करके छल रहित और ६ अजात शत्रु होकर आऊंगा ॥ १६ ॥ ७ सूर्यमल्ल के पिता चण्डीदान के सगे भाई का पुत्र ८ चण्डीदानकी स्त्री ९ सूर्यमल्ल और जयलाल ये दोनों पुत्र १० उस धीरता की बुद्धिवाले तथा अभिमान की बुद्धिवाले ने ११पथवारी पूजकर १२प्रसिद्ध रीति से १३जाने योग्य मार्ग में गमन किया ॥ १७ ॥१४अपने घर का उत्पन्न (खानाजाद)१५शीघ्र, नशावाले चित्त को जीतकर १६ मार्ग में पैदल

परब१ पयान पूरब१ कैकुभ करि सेवित व्रजभूमि१ किय ॥
तिहि ठाम धाम क्रम तीरथन सुनहु राम२०१४प्रभु नाम प्रिय।१८।

॥ पद्धतिका ॥

गिरिराज१ रु गोकुल अनघ गम्य, मथुरा३ वृंदावन४ रुचिर रम्य
जमुना५ अघहरनी न्हाइ जत्थ, सुरबापी६ न्हाये प्रनति सत्थ १९
पुनि सेवित सूकर७ छत्र पास, इह रामघट्ट८ सह कर्णवास९ ॥
जमुना१ गंगा२ जुग२सुबिधि सज्ज, करि मुंडन१ मज्जन२ श्राद्ध ३ कज्ज ॥ २० ॥

सेवक जे सूचित स्वामि सत्थ, तजि रत्ति सुप्त ढुव२ तेहु तत्थ ॥
ऐकाकी१ व्है इम पथ पिधान, सूकर७सन हंकिय अब सुजान२१
पुनि प्राची१अभिमुख रक्खि राग, पहुँचे कवि तीरथ पति प्रयाग१०
सित१ असित२ संधि जल कृत सनान१, दिर्तलोम२ न्हाइ३ कृत श्राद्ध४ दान५ ॥ २२ ॥

बिश्वेश्वर पालित पुर बहोरि, किय कासी११जिय तिम कृत्यजोरि
पुनि स्रोत कर्मनासा१२ प्रवाह१, इहिं आसय न्हाये धरि उछाह२३
सरसिंधुर२ भस्म किय दुरित २ सर्ब, यह१ पुण्य २ भस्म करिहैं अखर्ब ॥
तो सुगम मुक्तपन लभ्यताम,किय तहँ इम मज्जन मनअकाम२४

चलनेवाले प्रभु ने पहिले १ पूर्व दिशा में गमन करके व्रजभूमि का सेवन किया ॥ १८ ॥ १९ ॥ २ स्नान करके श्राद्ध किया ॥ २० ॥ साथ जानेवाले दोनों सेवक जो ऊपर सूचना किये गये हैं उनको रात्रि में वहीं ३ सोतहुओं को छोडकर ४ अकेले ५ गुप्त (छिपे) मार्ग से ॥ २१ ॥ ६ पूर्व दिशा के सन्मुख प्रीति करके ७ गंगाकी श्वेत धारा और जमुना की श्याम धारा की संधि में स्नान करके ८मुण्डन कराकर ॥ २२ ॥ २३ ॥ यहां की पवित्र भस्मों से सब ९ पाप भस्म होवेंगे तो मुक्ति पाना सहज है, इस प्रकार मनकी कामना करके तहां स्नान किया ॥ २४ ॥

बलि न्हाइ सोननद१३में बिसेस, पुनि करि पुन पुना १४ धुनि प्रवेस ॥
जिम उद्धरि गयपुर १५ पितर जात, प्रभु विष्णु अंघ्रि १६ करि पिंड पात ॥ २५ ॥
धरि भेट गदाधर१७ चरन धाम, कृत फल्गु१८ मेत गिरि१९ बल्गु काम ॥
गंगो१दधि२ संगम२० पगि प्रवीन, कपिलाश्रम२१ बदन१ न्हान २ कीन ॥ २६ ॥
जगदीस द्रग२२ चढि पोत जाइ, प्रभु को प्रसाद१बहु बिबिध पाइ
करि उदधि२३ न्हान२ दाना३दि कज्ज, सेये जगदीश्वर२४ प्रनति सज्ज ॥ २७ ॥
रहि दक्खिन २।३ अभिमुख सिंधु रोध, सक्रमि रामेश्वर ४ दिस सुबोध ॥
संप्लुत चिलका१ नदि सिंधु१ सग२५, इम प्रास्थित इक्खत भ्रमन१ भंग२ ॥ २८ ॥
द्रुत गौन अंग १ क्रमि बंग २ देस, बिसि इम कलिंग ३ जनपद बिसेस ॥
गोदावरि२६ तटिनी जल गहीर, किय मजन भंजन दुरत भीर२९
कृष्णा २७ धुनि न्हाये सह प्रकार, भस्मीकृत कलिमल असह भार ॥
धर तहँ पनाह नरसिंह २८ धाम, निज बपु असक्त जोंजि १ किय प्रनाम२ ॥ ३० ॥

---

१ नदी में ॥ २० ॥ २६ ॥ २७ ॥ २ न्हाये ३ समुद्र की भ्रमियों और तरगा को देखकर ॥ २८ ॥ २६ ॥ ४ पापा को भस्म करके ५ अपने अशक्त शरीर से पूजन करके ॥ ३० ॥

इम भुवकलिंग३प्रविसत अनेह, दृढ *जग्ध ज्वर१ रु अतिसार२ देह ॥
मंजिल दु२कोस इक१कोस मान, पथ निहि निहि विरचत प्रयान३१
इकग्राम जाइ बपु गद असक्त१, गृह द्वार गिरे नत२निवल२नक्त
गृहवासिन जानि सु कहियगच्छ, ए डिगिसकेन तउ बपुअनच्छ३२
मन मन धकि बढि हठ माँहिं माँहिं, न डिगत लखि अक्खिय गृहन नाँहिं ॥
हुव तदपि प्रसभ दुखदेनहार, गल१ पय२धरि ईसा छल अगार३३
दृढ हठ उठाइ क्रमि ग्राम दूर, पल्वल इक तट तजि पाप पूर ॥
आये गृह अरु इत कवि उदास, बलि तहँ निस दस १० मित बिमति बास ॥ ३४ ॥
संतत दस १० लंघन करि सहाय, बपु चेति जित्ति ज्वर १ रेकँ२ वाय३ ॥
अति अदय देस ऐसे अतथ्य, पटु तदनु चले भजि सुलभ पथ्य३५
बलि पत्त सह्य २९ कुलगिरि बिसेस, भजि लछमन बाला ३० तहँ भगेस ॥
धर अधर पुरी त्रिपदी३१सुधाम, तहँ इंधन चंदन अरुन ताम ॥३६॥
भव १ हरि २ भट काँची ३२ पर दु २ भंति, पुर सप्त ७ मध्य

ज्वर और दस्तों के रोग से शरीर का अत्यन्त * चर्वण (कुचलना) होकर ॥ ३१ ॥ १ रोग से शरीर अशक्त होकर २ रात्रि में निर्बल होकर एक घर के द्वार पर जा गिरे ३ घरवालों ने कहा कि यहांसे चलेजाओ ॥ ३२ ॥ ४ हठ दुःख देनेवाला हुआ सो गला और पैरों को हल की हालों पर रखकर ॥ ३३ ॥ इन पूर्ण पापियों ने एक ५ तलाव की तीर पर छोडकर वे तो घर आये चंडीदान ने उदास होकर दस दिन तक मूर्छित दशा में वहीं वास किया ॥ ३४ ॥ ६ निरंतर दस लंघन करके ७ दस्त ॥ ३५ ॥ ८ विष्णु भगवान् ९ लाल चंदन का ईंधन होता है ॥ ३६ ॥

हतपाप पंति ॥
गर लघु वेदाचल३३ नामधेय, सुदि पच्छी तीरथ३।२नाम श्रेय३७
क्रमि पत्त सलबर३४ कुंभकोन, वाहिनि काबेरी३५ भद्रभोन ॥
कढि काढितस धारा भिन्नभास,बिसतार त्रि३जोजन जन बिलास३८
श्रीरग छत्र३६ मंदिर१ सुढार, श्रीरंगनाथ३७ जहँ सेव्य सार ॥
ाखान स्याम मूरति१ प्रसिद्ध, अवनीतलसाई३ तल्प इद्ध ॥३९॥
प्राकार४ घेर गव्यूति१ पाय, श्रीरंग द्रग५ ढिग प्रभु सहाय ॥
[illegible] बिभीषन६सेवक जातुजात, श्रीरंग३७अनुतं सबविधि सुहात ४०
अग्गें समुदतट३८ पुराप अैन, बिनु तेरि तदग्ग पहुँचत बनैन ॥
तहँ नव नव पत्थर१ घटित जानि, पिक्खत इम जगंहग के
प्रमानि ॥ ४१ ॥
ारि करि तरि सकर सफल संध, बिक्खे रामेस्वर३९ सेतुबंध ॥
श्रीरामचंद लंघत समुद, रुचि कपिंल मुट्ठि त्रय३ प्रमित रुद ।४२।
श्रीज्योतिर्लिंग नति१ नुति२ समेत, कृत दरसन३ सेवित४ जय
निकेत ॥
तदनंतर ठहे ज्वर असह ताप, पच्छिम प्रयान टारिय बिपाप॥४३॥
ाहितो जजि पच्छिम ३।५ धाम धार ३, बदरीस ४ प्रनमि आगम
बिचार ॥

।३७॥३८॥१श्याम रूपी बड़ी शय्या पर सोते हैं ॥३९॥२उसके कोट का घेरा प्राय
ो कोशका है३राक्षस बिभीषणका बनाया हुआ है ४विशेष स्तुति योग्य ॥४०॥
।बिना नाव जिसके आगे नहीं पहुंच सकते५सूर्यके प्रमाणसे दीखते हैं अर्थात्
सूर्य की चमक से दीखते हैं ॥४१॥ नाव से तैर कर अपनी प्रतिज्ञा को सफल
करके सेतुबंध रामेश्वर शिव के दर्शन किये ७कांतियुक्त अग्नि की तीन
मुट्ठी रक्खी थी उसने ही शिवलिंग हैं ॥ ४२ ॥ ८ स्तुति सहित नम्रता करके
। ४३ ॥ द्वारका और बद्रीनारायण को नमस्कार करके ६ आने का विचार

पै बिचहि मोरि ज्वर इत पयान, हढ हुव निकेत आगमनिदान४४
अग सहय ४० ठहै रु दिस सौम्य४१७ आइ, पुनि कृष्णा४१ गोदा
४२ न्हान पाइ ॥
पूर्णा ४३ अरु तापी४४ वपु पखारि, रचि मज्जन रेवा४५ विमल
वारि ॥ ४५ ॥
रेवा१ काबेरी४६।२ मिलन रम्य, गहिरे न्हद न्हाये सहस गम्य ॥
सेवित मेकलजा पुलिन सीस, श्रीज्योतिलिंग ओंकार४७ ईस४६
सब ओर सिंधु पूरब१ प्रवाह, रेवा१ गति केवल वरुन राह३।५ ॥
उल्लंघ्य विंध्य ४८ कुलगिरि अमान, पहुँचे भुवमालव४९ सिथिल
प्रान ॥ ४७ ॥
बिच ढंग बिसाला५०जहँ बिसिष्ट, अरु ईस महाकाला५१रुय इष्ट
गुरु सप्त७ पुरन पुर जो गणेय, श्रीकृष्ण अध्ययन धाम श्रेय४८
सिप्रा५२ सैविलिनी पुण्य श्रोत, साकिनि कृत प्रासन पाप पोत
तदनंतर प्रवणा ५३ सिंधु ५४ स्याम, तटिनी चर्मणवति ५५ न्हाइ
ताम ॥ ४९ ॥
मिलि सक ख नंद वसु इंदु १८९० मेय, सित२ पच्छ जेठ३ नव-
मी९ सु गेय ॥
वसु८दिवस मासनव६के बिचाल,कविआये बुंदिय उष्ण२काल५०
क्रम भुव त्रिसहस्र द्विसत३२०० कोस, दुव२ धाम परसि ध्रुव हुव
अदोस ॥
इक्कल१ पदाति२ सूचित अनेह, पुर बुंदिय प्रविसे दुबल देह ।५१।
दिनदुल्लह प्रभु सुनि न किय देर, बुल्लिय कवि परिखद आत बेर।
इम ठानि कुसल पृच्छादु२ओर, मोदित ससभ्य प्रभु महिपमोर५२

था ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ १ पश्चिम दिशा में ॥ ४७ ॥ २ उज्जैन ३ श्रीकृष्ण के पढने के कारण वह धाम श्रेष्ठ है ॥ ४८ ॥ ४ नदी ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

अक्खि सु असेस पैद्धति उदंत, हरिनाँ निज निवसथ पत्त हत ॥
तत्र निज प्रकार तजि चरनचार, आलय गय रयहय अस्ववार५३
पथिदेव१ पूजि गुरुजन१ उपेत, कछु अह१ गंगामह२रहि निकेत
पत्ते बलि बुदिप कविप्रवीर, श्रीस्वामि स१प१गुरु सुहृद३सीर५४
मन१तहु पर स्नेहा मिटाइ, अघ काइक१ वाचक३ दिय उठाइ ॥
विनु सिंह१ छोरि मृगया१ विलास, हित समुझि नसा मद्या२दि ऱ्हास ॥ ५५ ॥
तह मिथ्या संसन३ काम४ क्रोध५, मद ६ लोभ ७ मोह ८ सहरि सुबोध ॥
असहत्त९ ग्रसूया१० ईरखा११ रु, सठता१२दि उभिंभ छम भ्रम १३ सरारु ॥ ५६ ॥
मायामय१ गोचर२ अखिल मानि, स्वा१ऽभिन्न२ अगोचर३ विभु३ वखानि ॥
इम अप्प१ अवस्था त्रय३ अतीतं२, पर१ बोध२ तुरीयो ४ स्थिति प्रतीत३ ॥ ५७ ॥
चउ४ वेदसीस वचनन विचारि, जड१ प्राकृत२ चेतन१सुचि२प्रजारि

१ सब मार्ग का वृत्तान्त कहा २ हरणा नामक अपने ग्राम में खेद के साथ पहुँचे ३पैदल चलना छोड़कर ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ४मन से भी पराई वस्तु की इच्छा मिटाकर शरीर म और वचन से होनेवाले पाप उठा [छोड़] दिये ५मद्य आदि के नसे छोड़दिये ॥ ५५ ॥ ६ झूठ बोलना ७ इस अष्ट ज्ञामी ने छोड़ दिये और हिंसा करना भी छोड़ दिया ॥ ५६ ॥ ८ शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, इन इन्द्रियों के विषयों को मायामय (झूठे) जानकर ९ अपने को अगोचर (इन्द्रियों से नहीं जाना जावे) ऐसे परमेश्वर से अभिन्न(भेद रहित) कह कर इस प्रकार, १०अपनी तीन अवस्था मिटाकर परम ज्ञानवाली ११ चौथी अवस्था म अपनी स्थिति प्रसिद्ध की ॥ ५७ ॥ चारा वेदों के उपनिषदों के वचनों को विचार कर प्रकृति सबधी जड़ पदार्थों को चैतन्य रूपी१२अग्निमें जलाकर,

आनंद१ अप्प२ अव्यय३ असंग४, अक्खी१ सम२ रोचन३ एक१ रंग४ ॥ ५८ ॥
सुभ१ सत्व२ सत्य३ अनुभव४ अनंत५, सर्वोत१ प्रोत२ अज३ सतत२ अंत४ ॥
निष्ठा यह कवि मनि गहि अनिच्छ, दुर्लभ स्वबोध १ मख २ प्राप्त दिच्छ ॥ ५६ ॥
प्रभुके उत्तेजन तस प्रकासि, निर्णय जय संसय निचय नासि ॥
बोधन छ६ तर्क छम बुधन वार, देसीय१ बिदेसज१ के उदार६०
करि मति तदीय तत्त्वानुकूल, मत और जोर तत दलि समूल ॥
कवि१जित बहि१रंतर२ करन काम, निज सख द्विज आसानंद२ नाम ॥ ६१ ॥
तिन्ह मत उत्तेजित प्रभु३ तृतीय३, सन्नद्ध वाद रन सुभट स्वीय॥
परिपूर्ण सत्व १ चित २ सुख ३ प्रभाव, धी सुद्ध रुद्ध गन करन धाव ॥ ६२ ॥

१आनंदमय, आत्मरूप, नाश रहित, संग रहित, क्षय रहित, सम, प्रकाश रूप, एक रस॥५८॥ शुभ, सत्वरूप, सत्य, अनुभवरूप, अनंत, सबमें ओतपोत अर्थात् सर्वव्यापक, अजन्मा २सदा सत् रूप ऐसे परमात्मा में उस कविशिरोमणि चंडीदानने इच्छा रहित होकर निष्ठा धारण की और दुर्लभ आत्मज्ञान रूपी यज्ञ की दीक्षा ली ॥ ५६ ॥ और देश विदेश के बड़े विद्वानों के समुदाय में छहों शास्त्रों का उपदेश करने में समर्थ ५उस कविचंडीदान नें राजा के मनमें उस निष्ठा का ३उत्तेजन करके निर्णयका जय और संशय के ४समूहका नाश किया॥६०॥ फैलेहुए अन्य मतों केबल का मूल सहित नाश करके १उस राजा की बुद्धि को उत्तेजित की, और उस कविने बाहिर और भीतर की इंद्रियों की कामना जीत ली, इनका मित्र आशानंद नामक ब्राह्मण था ॥ ६१ ॥ इन दोनों के मत से तीसरा राजा रामसिंह उत्तेजित हुआ जो अपने सुभटों सहित शास्त्रार्थ रूपी रणमें सज्जित रहता था और सच्चिदानंद के प्रभाव से परिपूर्ण रहता था और उस शुद्ध बुद्धिवाले ने इन्द्रियों के समूह की दौड़ को

आस्थान१ गान२ तिम नटन३ तूर, परिहास४ संग्धि५ रस६ नव-
क९ पूर ॥
जय सिद्ध सस्त्र७ रय८ मल्ल जुद्ध९, आखेट १० फाग ११ क्रीड़न
अलुद्ध ॥ ६३ ॥
गज१२ वीति१३न वाहन रीति गैल, फटकारि विडारत सठन फैल
इत्यादि रजोगुनके उफान, भुग्गैं पहु कौतुक विविध भान ॥६४॥
पै तत्त्व सत्त्व गुरु कवि प्रसाद, व्युत्थान१ समाहित२ सहस बाद ॥
इम पत्त राज्य तरु फल अलुद्ध, सब रीति १ प्रीति २ पटु नीति ३
सुद्ध ॥ ६५ ॥
संधा लो वितरन जस प्रसक्त, उल्लंघि सक्ति रज१ सत्व२ अक्त॥
भंडार भूपके भर्म भूरि, पूरे धात्रेयन सुमह पूरि ॥ ६६ ॥
संधा जिन्ह सचिवन सह विसेस, धन कोस नित्य धरि नुत निसेस
अन्नो१दक२ पीछैं लहत आप, पट्ट स्वामिधर्म सेवन प्रताप॥६७॥
विसेस१ निसेस२ अत्यानुप्रास ॥ १ ॥
रक्खिय प्रभु तहँ इम दान रीति, जगके उदार सब आधिप जीति

होक दी ॥ ६२ ॥ १सभा, गान,नृत्य, २वाद्य, हँसी, ३महाभोजन(गोठ)पूर्वक नव रस, शस्त्रों के साधने में जय, पाहुयुद्ध करना, मल्लयुद्ध देखना, शिकार, फाग खेलना ॥ ६३ ॥ हाथी ४घोड़े की रीति पूर्वक चलाना दुष्टोंके फैलको फटकार कर मिटाना, इत्यादिक रजोगुण के उफान रूप नाना प्रकार के कौतुकों को अनासक्त होकर वह राजा भोगता था ॥६४॥५परंतु गुरु(आशानंद)और कवि यशोदान की कृपा से ब्रह्मभाव की विद्यमानता से उक्त ७ विरुद्ध कार्य और समाधि ये दोनों याद करके समान भाव से रहते थे इस प्रकार सब भांति की रीतियों में और प्रीति में चतुर नीति से शुद्ध उस राजाने अनासक्त हो कर राज्य का फल पाया ॥ ६५ ॥ रजोगुण और सतोगुण में ६ आसक्त हो- कर जस में लगकर दान की प्रतिज्ञा की और राजा के धायभाई (मंत्री) ने उत्साह से पूर्ण होकर राजा के भंडार को स्वर्ण से भर दिया ॥ ६६ ॥ स्तुति योग्य सब धनको खजानेमें रखकर पीछे आप अन्न जल लेते हैं और स्वामिधर्म

जँहँ द्विज १ पौरानिक २ बंदि ३ जात दिगबिजयी १ सबबुंधर २ जो
दिपात ॥६८॥
तिँहिँ अयुत १०००० दम्म अप्पत इलेसँ, पट १ भूखन २ हय ३
गज ४ भू प्रदेस ५ ॥
बादीन १ तदपि जो सब प्रबुद्ध २, लहत सु सहस्र पंचक ५०००
अलुद्ध ॥ ६९ ॥
इक १ देस सूरि १ कल्पक २ अभंग ३, सो लहत सहँस १०००
मुद्रा प्रसंग ॥
बादीन १ तदपि इक १ देस बीर २, सतपंच ५०० लहत मुद्रा सुधीर ७०
सत १०० दम्म लहत लहि अब्द सुद्धि १, बितँरन क्रम संस्कृत
बुध १ न बुद्धि ॥
भाखा छ ६ कोहि जिनको न भान १, प्राकृत १ मुख पंच ५ हु हत
प्रमान ॥ ७१ ॥
केवल नृगिरा कवि जे कहात, जानै न प्रकृत सब अब्दजात २ ॥
पै जिन्ह कबित्त हिय जाइपैठि २, सिक्रसाइ देन मन सबन बैठि ७२
जे काव्य केर सब १० अंग जानि, अैचत श्रोता मन रीझि आनि
सत १० संख्य तदर्थहुँ दम्म देग, सिरुपाव १ तुरंगम २ संग श्रेय ७३

के सेवन में चतुर ॥६७॥ ब्राह्मण १ चारण २ भाट जो दिग्विजयी ३ और सर्व
देशी होवे ॥ ६८ ॥ उस को ४ राजा दश हजार रुपये देता है ५ शास्त्रार्थ कर
नेवाला नहीं होने पर भी सब शास्त्रों का जाननेवाला होवे वह निर्लोभी
होने पर भी पांच हजार रुपये पाता है ॥६९॥ ६ जो एकदेशी (एक ही शास्त्र
को जाननेवाला पंडित होवे और उसमें कल्पना करनेवाला, दूसरों से नहीं
जीतने में आवै वह एक हजार रुपये लेता है और एक देशी पंडित शास्त्रार्थ
नहीं करनेवाला) होने पर भी उस शास्त्रमें वीर कुशल होवे उसको पांच सौ
रुपये मिलते हैं ॥ ७० ॥ बुंदी में सालियाना ७दान के क्रम से सौ रुपये मिलते
८हैं प्राकृत आदि पांच भाषा में भी प्रमाण रहित है ॥ ७१ ॥ ९ केवल देश
भाषा का कवि कहलाता है ॥ ७२ ॥ १० उसको भी सौ रुपये मिलते हैं ॥७३॥

सामान्य कवि१ रु वर्जित बिवाद२, सस्कृत ३ कवि लहत सु सत १०० प्रसाद ॥
अैसो भासाकवि१मति अनिंद्द२,पचास५०द्रम्म लहत सु प्रसिद्ध७४
इत्यादिनतें गुन घटि१अनेक, बिंतरन क्रम बहुविध तिन्ह बिबेक॥
पच्चीस२५ आदि१ करि अत२ पच५, रोहयो न चालिस१न वट हु रंच ॥ ७५ ॥
हापन इक१ टारि१ रु लेनहार, पुनि लहत आइ सुहि सुहि प्रकार
इम खट६ऋतु बारह१२मासअत,अंहति१ करु महिप जस२उदत७६
दुव २००० दुव २००० सहस्र कोसन बिदूर, पुर लग्गे आवन बुधन पूर ॥
उज्ज्वल रुचि बुदिय तिहिंअनेह, गिनिये कि पुरंदर१धनद२गेह७७
तृन मान सबन मन धन१ तुलत, अक्कुरि मह १ सब अह २ सादि १ अत२ ॥
अैसे उदारपन करि इलेस, प्रतप्यो परिपालत देसदेस ॥ ७८ ॥
आयुध सब साधक वहु उपाय, मृगयादि कुतूहल रमत राय ॥
आनन कलिंदिका निलय इद्ध, सब ठाम तदपि अद्वैत सिद्ध॥७९॥
चोगान तुरग बाजी प्रचार, खेलैं बिदग्ध बिजई खिलहार ॥
हठि कुसल सिकारिन ठिगनहार, किरि १ केहरि २ अैसे छल प्रकार ॥ ८० ॥
छलिकैं तिन्ह बेधत सर समूह, दै डाक थकावत गज दुरूह ॥
अवगेध जनन क्रीडन अनेक,विलसत विदग्ध इम एक१एक१।८१

१ यहां बुद्धिवाला नहीं होने पर भी ॥ ७४ ॥ २ दान के क्रम से ॥ ७५ ॥३दान का फल रखा ॥ ७६ ॥ ४ इन्द्र का अथवा कुबेर का घर ॥ ७७ ॥ ७८ ॥५यमुना नदी यमराजकी बहिन है इस कारण उस का और यमराज का घर एक ही है सो उपरोक्त कर्मों में तो रामसिंह का मुख्य यमुना का घर है तोभी सब जगह अद्वैत मत ही सिद्ध है ॥७९॥८०॥६क्रोध दिखानेवाले छोटे घाव लगाकर ॥८१॥

व्युत्थानं बनत ऐसे अनेह, अन्यत्र अधिप चित बोध एह ॥
कवि चंड१ रु आसानंद२केर, सफली हुव सिच्छा स्ववय बेर।८२।
पौरानिक१ कै हुव सुख प्रबोध, रहिगो द्विज२कै तस तदपि रोध ॥
कवि चंडतैंहु इय अग्ग हंकि, अद्वय४२ मय अंतहकरन अंकि॥८३॥
कवि१ सूरि२ सुभट३ सचिव४न कलाप, अखिलन रिझात मन गुनन आप ॥
जिहिं गुन प्रसार जन विदित जोहि, स्वामीकहँ समुझत पठित सोहि ॥ ८४ ॥
प्रभु मंनु बसीकरन१ मनु प्रभाव, विद्या कि मोहिनी२ मनु बढाव॥
करि नैन१बैन२करि ध्रुव धनेस१,जन जन मन पैठो जनु जनेस८५
पिक्खन१संलापन२के प्रसाद,बिनु बेतँन सेवन प्रकटि वाद॥
इम सबन चित्त कर गहि इलेस, देखत बलि हारत ढंग१देस२।८६
इम अब्द पंद्रहम१५ बय प्रबेस, बिलासिय बिलास बैभव बिसेस॥
हायन बिंसति२०तम लगबहार, सुख राजस लुट्टिय नीतिसार८७
अब सक नव गज बसु ससि १८८९ अनेह, सुरभि१ रु निदाघ २ बिलासिय सनेह ॥
क्रम निज तजि सावन१ भद्द २ काल, बदल्यो ऋतु पाउस ३ वह बिचाल ॥ ८८ ॥
बुट्ठिय जल ढिग ढिग त्रि३चउ४बेर, पै सो न समय घन प्रचुरघेर

ऐसे समय मे तो १ विरोधाचरण बनता है, बाकी अन्य स्थानों में २राजा के चित्त में एक ज्ञान ही रहता है ॥ ८२ ॥ ३ चारण चंडीदान के सुखकारी ज्ञान होगया तो भी आशानन्द ब्राह्मण के उस ज्ञानकी रोक रहगई अर्थात् आशानन्द को ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ ४अद्वैत मत से अपने अंतःकरण को चिन्ह युक्त करके ॥८३॥८४॥५मानों मनुके प्रभाव से मन वश करके, मानों कुबेर के समान ६ राजा निश्चय ही मनुष्य मनुष्य के मनमें घुसा ॥८५॥ देखने और बोलनेकी प्रसन्नता से ७ हठ करके विना ही तनखा सेवा करते हैं ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८वसन्त और ग्रीष्म ॥ ८८ ॥ ९ परंतु मेघ के अत्यन्त घेर से वर्षा नहीं हुई

वर कर दहि दिस दिस सस्यें १ खेत, अग किंसलय २ बीरुंध ३ तृन४ उपेत ॥ ८९ ॥
अस्त्रपँ अस्र४।२ रु पच्छिम५।३ दुश्मोर, रचि पौन गोन किय भोन रोर ॥
पप्पीहँ१०पास खिन खिन बढात, घटि लासँ मयूरन आस घात९०
लालित्य बेल१ वन २ गिरिन ३ लोप, किय भखर भंखर किरन कोपि ॥
हाकार मचिग गत इर्स७हु होत, श्रोत७न चंडन गय तुष्टि श्रोत९१
गडि भेक १ कमठ २ भख ३ पंक गर्त, ठेयसु सम बिचेष्ट वर्तन बिबर्त ॥
तउ तजन नक्र४गन तरफरात, जल मति पल छिति तल१बिसंत जात ॥ ९२ ॥
पवमान२ भान३इत विरचि पौन, निपरात करत हत छबि निपान
जलजातें१ रु कैरव २ कुमुद ३ जाल, सैवल ४ नल ५ सजुत हुत बिहाल ॥ ९३ ॥

चिपान१ निपान२ अंत्यानुमास ॥ १ ॥

जनँपद मरु१ जंगल२ सिंधु३ जत्थ, श्रमि सूरसेन४हरियान५सत्थ

१गरमी से दिशा दिशा में २खेती के खेत३कोंपलें ४भूमि पर फैलनेवाली लता और तृणों सहित सब सूख गये ॥ ८९ ॥ ५दक्षिण कोण का और पश्चिम दिशा का इन दोनों ओर का पवन चलकर सब भवन भयंकर कर दिये ६ चण क्षण में पपीहे की प्यास बढकर मयूरों की आशा का नाश होकर उनका ७ नृत्य घट गया ॥ ९० ॥ ८आश्विन मास के आते ही हाहाकार होगया ॥ ९१ ॥ ९मरे हुओं के समान चेष्टा रहित होगये १० भूमि के नीचे घुसेजाते हैं ॥ ९२ ॥ पवन और सूर्य की किरणें ११पान करके समीप लेकर प्रपा(प्याव, पो) आदि छोटे जलाशयों को शोभा रहित करते हैं १२ कमल, रात्रिविकासी कमल (गुलहल तथा गहूल)श्वेत कमल विशेषों के समूह, जलनीली (कुमोदनी) और कमलिनी सहित उस बड़ी अग्नि में जलगये ॥ ९३ ॥ १३ देश

ढुंढार६ सेखवट्टी७ कुढंग, मेवार८ मुलक सु पहार९ संग ॥९४॥
इत्यादि मनुज *उज्जट अगार, सकुटुंब कढे नत भूख भार ॥
इन्ह सूचित देसन अंतराल, हड्डोतिय१०मुव हुव बिक्कल हाल९५
कंकाल करंकन निचित कोट, इम पसुन अस्थि प्रतिगाम ओट॥
तरु पत्र असन कबलग कराइ,पय नाम मिट्यो रव२हाम पाइ९६
कनिका१दि अह८ जल घोरि केक, बहिकात सिसुन जन पय
बिवेक ॥
जिम मृत तर्पादिक ग्रामजन्य१,बचि तिमहिँ रहे कहुँ बिरलबन्य९७
पसु तृन१बुसा२दि प्रमितहु न पाइ, खिल ग्राम्य जियत कहुँ कीट
खाइ ॥
नाकँहिँ जिम नाकुन ऋच्छ रक्खि, करखत छिति कीटन स्वास
सक्खि ॥ ९८ ॥
इम चट्टि पिपीलिक १ दीम आदि, जीवत कहुँ गो १ महिषी २
अजा३दि ॥
तिन्हँ थनन ऐंचि जन अधम ओहि, दित करुन लेत पय अरुन
दोहि ॥ ९९ ॥
दधि तस बिलोरि तजि तंक्र दूर, कुभृतहु वह बेचन गहत कूर ॥

॥ ९४ ॥ * ऊजड़ घर ॥ ९५ ॥ १ हड्डियों और मस्तकों के समूह के कोट हो गये २ पशुओं की दुर्बलता के कारण दूध के नाम का शब्द ही मिटगया ॥ ९६ ॥ पानी में ३ गेहूँ का आटा घोलकर ४ जैसे वनके पशुओं में गऊ आदि कोई ही बचे तैसे ग्राम के लोग भी विरले ही बचे ॥ ९७ ॥ पशुओं ने तृण और ५ तुष आदि का ज्ञान भी नहीं पाया अर्थात् इनको जान ही नहीं सके और ग्रामों में ६ कीड़े खाकर कोई ही बाकी जीवित रहे ७ जैसे रीछ अपनी नासिका को उदेही (दीमक) के ऊपर रखकर खैंचता है तैसे पशु श्वास से भूमि के कीड़े खैंचते थे ॥ ९८ ॥ ८ कीड़ियां और दीमक आदि को चाटकर ९ करुणा हीन मनुष्य लाल रंग का दूध दोह लेते थे ॥ ९९ ॥ उस दही को विलोकर १० छाछ को दूर रखकर खोटी वृत्ति करनेवाले उसको बेचते थे

निज सिसुन वेंचि कहुँ अन्न आनि, खल वहु अस धारत दुरित
खानि ॥ १०० ॥

ऐसो प्रवृत्त सकट अनेह, संवधिन ठहर्‌यो नन सनेह ॥
दयिता१मारि२पति१इहिंदु२काल, हाहारव बाढिय असहहाल१०१
अति व्याकुल तजि इम देस उक्त, आये इहोतिय मान मुक्त ॥
प्रभु बुल्लि सचिव धात्रेय पास, करुनापर सासन किय प्रकास१०२
अंवार निचित अप्पन अगार, वरखनतैं चित सब धान्य बार ॥
उनके सबरुप्पय करनकाल, वसुमति रस बिलसन जसबिसाल१०३
जन रंक१ कुटुंबिय२ दुस्थ जानि, भासन चहि ओहैं आनि पानि
अप्पहुतिन्ह भोजन अर्धउज्झि, सबभतिविसासहु पुण्यसुज्झि१०४
वसु आढ्य१ कुटुंबी२ जे विपन्न३, उचितार्घ लै रु तिन्ह देहु अन्न ॥
नव कोस निकर भृत द्रम्म १ निष्क२, व्है अधिक गोप गृह
जिम हविष्क ॥ १०५ ॥

सचिवहु निवेदि आकून सोहि, अन्नालय खुल्लिय विविध ओहि ॥
प्रतिदेस पहुँचि तस जस प्रसार, द्रुत आये जे खिल तेहु द्वार।१०६।
इम अल्प अर्ध किय कल्प अन्न, वसु दुर्विध निबहे जिम विपन्न॥
रहि मुल्लप आढ्य देसन परत्र,अष्टम‌८लव ता सन लहियअत्र१०७
इहिं मोल तोल जिम कोल ऊखें, भजि भाजि जन आये भनत भूख
वेंचे जे अर्भक११ जननि१२ वप्पर, उनकों छुराइ वसु आत्थि अप्प१०८

१वे पापा की ग्रान जीते थे ॥१००॥ २ स्त्री को ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ अपने घर म वर्षों में सञ्चय किया हुआ धान्य के समूह का ३ दर पूरित है ४ भूमि पर ॥ १०३ ॥ ५ दारिद्री ६ कीमत छोड़कर ॥ १०४ ॥ ७ धनवान् कुटुम्बी व्याकुल हैं उनको ८ उचित मोल लेकर, नवीन खजाने में रुपये और मुहरों का समूह भरा है जिसमें, श्रीकृष्ण की सम्मति से व्रज के गोपों के घर में ९होम हुआ था उससे भी अधिक होवै ॥ १०५ ॥ १०अभिप्राय ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ ११जैसे गन्नों पर सूअर आवै तैसे १२ बालकों को ॥ १०८ ॥

जानें जिम जाके बर्ण१ जाति२, ते भ्रष्ट होन दिय न सिव ताति ॥
कंटक दुकाल इम अन्नसत्र, अधिपति बिस्तारिय जस अमत्र१०९
प्रतिदिन चित सहसन दम्म पूर, दुख भूख जनन हुव जनन दूर ॥
जिन सिसुन लये कुल १ ग्राम २ जानि, तिनके संबंधिनहू ति
तानि ॥ ११० ॥
बुल्लि१ रु मिलाइ३ परिचय बिबेक, सह बास निबाहे इम अनेक॥
बिप्रा१दि बर्ण१४ आश्रम२४ बिधान, सब ब्रात्य न किय जिहिँ
जो समान ॥ १११ ॥
जिनके बसुधा१ बसु२ निज निबाह, ते पहुँचे सु समय घरन ताह
जिन्ह रंकन रंचन वृत्ति जोग, प्रभु सीस बसे ते सुख पुरोग॥११२॥
लक्खन जमाइ इम पुण्य १ पारि, बलि कोस दम्म २ लक्खन
बिथारि ॥
इम यह दुकाल अंकिय १ अधीस, सब दीप जनन जस २ बहिय
सीस ॥ ११३ ॥
निज जनन त्रि ३ हायन लखि निबाह, लिय खिल्ल करि दुर्लभ
पुण्य लाह ॥
जस दूत बुलाये सुकबि जूह, आनायक कोटिन कोटि ऊह११४
मूढहु तदीय कुल बिरचि मान, जाचक सब पोखे तिम सुजान ॥
दलि दलि दयालु दुस्सह दुकाल, किय नृप सुभांड१८७१४पहिलें
सुकाल ॥ ११५ ॥
दब्बत तिहिँ घन धन१ अन्न२ दान, अैसो सुकाल किय चाहुवान
इहिँ जस उफान दिस१ बिदिस२ अैन, हतरोचि१ व्हीण२ नत ३

१ अन्न का यज्ञ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ २ शूद्र नहीं किये ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥
३ यश रूपी जाल में ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ४ कान्ति रहित और लज्जित होकर
राजाओं ने नेत्र नीचे किये

नृपन नैन ॥ ११६ ॥

॥ दोहा ॥

ऐसो असह दुकाल यह, दिनदुल्लह कुल दीप ॥
सु दुख दळि पोखे सकल, हड्ड६१न हेलि महीप ॥११७॥
जनपद हुव उज्जट जिते, बचि हड्डोतिय बास ॥
स्वस्व बसाये ग्राम१ गृह२, पुनि तिन स्वर्घ प्रकास॥११८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ बुन्दीन्द्ररामसिंहचरित्रे आगामिग्रन्थगुम्फनवर्णसंबन्धाख्यालङ्कारपरित्यागसूचन १ ग्रन्थकर्तृपितृचण्डीदानमृगयामद्यपानादिदुष्टाचरणसूचनपदातितीर्थयात्राविधानाखिलपापमुक्तवेदान्तज्ञानसमधिगमन२प्रतिवर्षनियतीकृतरामसिंहदानविवेचन ३ एकोननवत्युत्तराष्टदशशततमसंवत्सरदुर्भिक्षरामसिंहोदारत्ववर्णनमेकादशो मयूख ॥ ११ ॥
आदितस्त्रिसप्तत्युत्तरत्रिशततमो मयूख ॥ ३७३ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अन्वयं हड्ड६१न इह इम, देसन दलित दुकाल ॥
निबहे सब आपन्न नर, जे सीमागत जाल ॥ १ ॥

॥११६॥११७॥ १ देश में ऊजड़ होगये थे २ अपनी ओर से मूल्य देकर॥११८॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के अष्टमराशि में बुंदी के [illegible]
रामसिंह के चरित्र में आगे की ग्रन्थ रचना में वर्ण सम्बन्ध नामक [illegible]
के छोड़नकी सूचना करना १ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान के [illegible]
कार और मद्यपानादि दुष्टाचरणों की सूचना करने के पीछे पैदल तीर्थ [illegible]
सब पापों से मुक्त होकर वेदान्त के ज्ञान में प्राप्त होने का कथन २ [illegible]
वर्ष में महारावराजा रामसिंह के दान नियत करने का विवेचन ३ [illegible]
सौ निवासी के दुर्भिक्ष में रामसिंह की उदारता के वर्णन का ग्यारहवां [illegible]
मयूख समाप्त हुआ ॥११॥ और आदि से तीनसौ तिहत्तर ३७३ मयूख हुए ॥
३ हाडाओं के वंश के राजा ने ४ आपदा प्राप्त हुए मनुष्यों को निबाहे ॥ १ ॥

भूपति बिक्रम१ भोज२की, पद्धति१ लग्गि पवित्र ॥
दहि दुभिच्छ२ महि मंडियो, चाहुवान जस चित्र ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

नभ नव वसु ससि १८९० नियत सुखद लग्गत सुकाल सक ॥
बारिद अभिमत३ बरसि दरसि आसार महोदक ॥
औषधि गन अन्नादि बिबिध निपजे सीमा बढि ॥
कर्षुक कुल मन मुदित उदित कृषि ताँव४ चाव चढि ॥
बहु बहुरि देस उज्जट बसे प्रान बारि बुंदीस पर ॥
निज सत्रु१आदि मंडल नृपहु पढन लगे नत५ नुति प्रसर ॥३॥
बंदी इक१ तिहिं बेर सहर बुंदी पत्तो सजि ॥
सावन५ लग्गत समय भ्रमत अतिसीम दर्प भजि ॥
बाम मग्ग सठ बहत रहत रत पंच५मकारन ॥
तुलसी१ मालहिं तजि रुद्द अच्छ२हिं करि धारन ॥
नैंकन छिपाइ बरतैं निलज स्वपचादिक सब कृत असन ॥
स्वपचीहु गम्य९ जाके सुरत दुरत न गज दरसन दंसन ॥ ४ ॥
चंडबाद कवि चंड इहां प्रभुके११ अनुकंपित ॥
तिनप्रति मुरि धावपै१२ सचिव मोहन अनख्यो इत ॥
भनि सहाय वह भट्ट बुल्लि बुंदिय रुचि रक्खिय ॥

---

१ मार्ग २ दुर्भिक्ष को मिटाकर ॥ २ ॥ ३ महात्मा मेघ न अभीष्ट (वांछायोग्य) वर्षा करके मेघधारा दिखाई ४ तहां खेती का उत्साह बढा ५ नम्र होकर स्तुति का विस्तार पढने लगे ॥ ३ ॥ उस समय एक ६ भाट ७ रुद्राक्ष पहनकर ८ भंगी आदि का कियाहुआ भोजन खाता था ९ जिसके मैथुन करने में भंगिन भी जाने योग्य थी १० हाथी के दांतों के समान उसके पाप छिपे नहीं थे (हाथी के दांत किसी प्रकार छिपते नहीं हैं) ॥ ४ ॥ ११ रावराजा रामसिंह की कृपा में भयकर शास्त्रार्थ करनेवाले, अथवा शास्त्रार्थ करने में भयंकर इस ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान थे जिनसे बुंदी के सचिव १२ मोहनराम धायभाई ने क्रोध किया

अप्प सचिव अवलंब भयो प्रभुकवि *परपक्खिय ॥
करि निज सु भट्ट दे छन्न कछु अधिपति प्रति किन्नीअरज
आयु प्रवीन कवि भट्ट इक गुनकी जो कछहिं गरज ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

सुकवि चंड आदिक सदा, प्रचुर रहैं प्रभु पास॥
तिन सबसों यह अधिकतम, वदी स्वगुन विलास ॥ ६ ॥

॥ षट्पात ॥

भूपहिं मोहन भनिय भट्ट यह अद्वितीय भव ॥
रामचंद अभिधान वाद वादन विजयी हुव ॥
तिन दिवसन कवि तात स्वीय प्रभुको लहि सासन ॥
किय भारत उद्योग५पर्व नरभाखा भासन ॥
कवि तत्थ एह संधा करिय सुर१ नर२ बानी सब्दमय ॥
इम अर्थ१ बिपुल२ अच्छर१अलप२जुहि आनैं सुहि लै विजय
सुरबानिय१ भव सब्द बिदित जे पुनि नर बानिय२॥
इह द्विविधहि उद्योग५पर्व अंतर सब आनिय ॥
पंच५ अनुष्टुप प्रमित अर्थ अँचिय इक१ अंतर ॥
संधा लिय तहँ सुकवि दिपत जस पूरि दिगंतर ॥
बहु१अर्थ२अलप१अच्छर२विहित जो बिरचैं कहुँ अन्य जन॥

---

*आपके कवि चण्डीदानका शत्रु हुआ, उस भाटको अपना करके मोहनराम ने रावराजा रामसिंह से अरज की ॥५॥ चण्डीदान आदि श्रेष्ठ कवि आपके पास१ बहुत रहते हैं॥६॥ मोहन नामक भाटभाईने राजासे कहा१शास्त्रार्थ करनेवालों से२सूर्यमल्लके पिताने रावराजा रामसिंहकी आज्ञालेकर, उसमें कवि चण्डीदान ने यह प्रतिज्ञा की कि४संस्कृत और देश भाषाके शब्दोंमें इसप्रकार थोड़े अच्छ रों में बहुत अर्थ लावै वही मुझसे विजय पा सकता है ॥७॥५संस्कृतसे उत्पन्न हुए ६ महाभारत उद्योग पर्व के पाच पांच अनुष्टुप श्लोकों का अर्थ खैंचकर एक एक छन्द में लाये वहां चण्डीदानने ७यह प्रतिज्ञाकी ८घोषित अथवा रचकर

तो खुल्लि पाय टुड्डर[1]१तजौं ध्रुवन बजौं अब का[2]व्यधन ॥८॥
करि संधा कवि चंड धीर लंगर पय धारिय ॥
कहिय जोहि इम करहु कवि सु जय१ जस२अधिकारिय॥
अ[3]र्जुन शृंखल अग्ग द्विजन भोजन हितदेहैं ॥
जयपट्ट[4]हु लिखि जाहि सोपि गुरु गिनि गुन गैहैं ॥
यह नियम धारि किय ग्रंथ वह नाम सारसागर नियत ॥
निर्भयनि[5]योग प्रभुको स्वसिर जु किय सुजनमुख सुखजियत९
बंदी इक१ ब्रजलाल१ कृष्णधालेय आढ[6]य किय ॥
अधिराजहिं करि अरज ग्राम१ गौरव२ गज३ अप्पिय ॥
सचिव कृष्ण त[7]नु तजत अग्ग सहि साचि खग्ग उर ॥
सुत तस मोहन सचिव धर्‌यो अधिकार राज्य धुर ॥
प्रभुकेर कृपाभाजन परम जानैं कवि चं[8]डादि जन ॥
तिन्ह मानहान मिटवान तिम मोरन लग्गो स्वामि मन १०
तब अक्खिय धात्रेय अरज इम प्रभुहि उप[10]ह्वरं ॥
चित्र[11] बढत कवि चंड लहत जयमय पय लंगर ॥
कविअनेक भुवचक्र परत पैर[12] जुरत परिच्छा ॥
संसदं[13] बानिय समर सकल उघरैं धृत सिच्छा ॥
भा[14]रती जुद्ध रस स्वाद भर एहु लेहु आनंद इन ॥

---

१ चरण में प्रतिज्ञा का लंगर है जिसको खोलकर इस का पहनना छोड दूंगा और २ काव्य ही है धन जिसके ऐसा कवि फिर निश्चय ही नहीं बजूंगा ॥८॥ ३ श्वेत रंग (चांदी) की सांकलियां ४ विजयपत्र ५ स्वामी की आज्ञा से निर्भय होकर ॥ ९ ॥ ६ धनवान् किया, कृष्णराम धायभाई ने छाती में ८ तिरछी तरवार सहकर ७ शरीर छोड़ा तब ९ चंडीदान आदि मनुष्यों को ॥१०॥ १०एकान्त में अरज की ११चंदीदान आश्चर्य योग्य बढता है कि पैर में विजयी होने का लंगर पहनता है १२शत्रु आकर जुड़ै जब परीक्षा होती है १३सभा में वचन के युद्ध में १४सरस्वती के युद्ध के रस का स्वाद

कवि चंड रचत सधा कुसल करिये बिभव बिलास किन११
प्रभु आक्खिय जहँ प्रीति सो न मेटहु कूटाश्रय॥
सुहृदभाव जहँ सुनत तहँ न छल लेस कहन नय॥
पुनि असहन यह पाप महत बिस्वासघात मय॥
उज्झहु स्वमति उपाय एह विधि बलित टारि रय॥
तत्थ्य१ रु अतत्थ्य२ न दुरैं तदपि जिहिं जैसो कहिवेत जग॥
दुख सहत चिंति करिकैं हुरव मिलित द्रोह यह घोरमग१२
यातें कपट उपाय कवि न कोऊ आकारहु॥
बहु आवत बिनु जतन बिबिध पावत बसु वारहु॥
जो सभव वनिजाइ विक्खिलैहैं बानी बल॥
पर दुख चिंतन पाप त्वरित लैजाइ रसातल॥
सुनि यह निदेस मोहन सचिव बिन्नति किय सब स्वामिबस
प्रभुके प्रसाद जो धर्मपथ सु सब गम्य रहिहैं सरस॥ १३॥
आवन लगि तिन अहन प्रचुर भूसुर१पौरानिक२॥
मागध३ बंदि४ सुमति बहुत बिरचहिं कवि बानिक॥
पुव्व कथित क्रम पाइ घरन जावत लै धन घन॥
तिहिं अनेहँ धात्रेय पाप प्रेरिय कपटीपन॥
ब्रजलाल भट्ट वह बुल्लिकैं कुटिल उपह्वर मंत्र किय॥
बुन्दिय अधनि बंदिन बहुरि लै बिच सम्मति सबन लिय॥१४॥

॥ ११ ॥ १ दंभ (छल) के आश्रय से २ इस उपायवाली अपनी बुद्धि को छोड़ दो रीति से ३ टेढ़े मार्ग के वेग को ४ सत्य झूठ नहीं छिपता ५ नीचपन करके ॥ १२ ॥ ६ कपट करके किसी कवि को बुलाना ७धन का समूह पाते हैं ॥ १३ ॥ ८ उन दिनों में ९ बहुत ब्राह्मण १० चारण ११ बड़वाभाट १२ स्तुति करनेवाले भाट १३ उस समय में धायभाई मोहन ने १४ एकांत में (गुप्त) सलाह की ॥ १४ ॥

लंगर पय धृत लखत ईरखाको गिनि आकर ॥
लै ढिग वह व्रजलाल चविय कवि चंड चंडतर[1] ॥
या कविको उतकर्ष[2] सह्यो नन जात सदस्यन[3] ॥
हमहु रुद्ध मुख होहिँ बनत उत्तर कहुँ बरयन ॥
कविचंड मान निर्मूल करि अप्पन रहहिँ अभीत इम॥
तस अर्द्ध्द कविहु पावहिँ ततो जयी करहिँ निज पच्छ जिम॥१५॥
भन्यों सचिव सुनि भट्ट बदिय तुमरे सासन वस ॥
रामचन्द्र१ अभिधान इक्क१ वंदिय जाहिर जस ॥
वृत्ति नाँहिँ बाहुज२१न[4] पज्ज४१२[5] वर्द्धकि तस पालक ॥
पै सुनियत कवि निपुन व्यूह ऊहन[6] उत्तालक ॥
जय आस प्रथम१ बिजुही जतन पच्छ२न[7] तो तावकँ प्रबल
इक१तंतु१चटक२तोरैँ अलप[8] मिलिबहु१गज२मोरैँ मिसल१६
स्वामी प्रति नटि सचिव ताहि न सक्यो बुलाइ तब ॥
व्याह व्याह बाहुजन[9] अटन व्रजलाल मिल्यो अब ॥
करि दुर२ मंत्र१ सांकूत२ पिहित समझाइ प्रयोजन३[10] ॥
सो तिहिँ आवन सज्ज बिरचि आयो गृह अप्पन ॥
सक गगन अंक बसु ससि समय १८९० ॥

सूर्यमल्लस्य काव्यं समाप्तमिदम् ॥

---

१ चंडीदान कवि अत्यन्त भयंकर है जिसका २ वड़प्पन ३ सभासदों से सहा नहीं जाता ॥ १५ ॥ सचिव का कहा हुआ सुनकर भाटों ने कहा कि तुमारे हुकम में रामचंद्र नामक भाटप्रसिद्ध यशवाला है जिसके ४क्षत्रियों की वृत्ति नहीं है ५ शूद्र खाती (सुथार) उसको पालते हैं ६ तर्कना से समूह को उडाने वाला है ७तुम्हारा प्रबल पक्ष है ८एक तंतुको तो छोटा चिड़ा भी तोड़ सकता है और बहुत ततु मिलकर हाथी को रोकदेते हैं ॥ १६ ॥ ९क्षत्रियों के विवाह विवाह में फिरते हुए व्रजलालको वह रामचन्द्र मिला १० अभिप्राय सहित खोटी सलाह करके उसको समझा कर व्रजलाल अपने घर आगया ॥

श्रीनीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपराय
ण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदाबारहठ-चारणकुलावतंस-शाहपु
राप्रतोलीपात्र सुयोग्यपितुरऽक्नाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्या शृङ्गा
रनामजनन्या प्राप्तप्रसवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराऽऽ
ज्ञाकारिभिराऽऽत्मजैः केसरिसिंह-किसोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगत
भाव्याऽऽधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासाऽऽ
प्तकाव्यशिक्षेण, सन्तोषादिसद्गुणसम्पन्नविद्वच्छिरोमणिपरमवैष्ण
वरामानुजसम्प्रदायिन श्रीमदाचार्यसीतारामाऽऽह्वयगुरोराऽऽसा
दितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भवरघुवंशीयराणावतशाहपुराधिपराजो
पटाङ्किनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकररविकुलशिरोरत्नरघुवंशीयगु
हिलोत्तमेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीशसज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न
महाराणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारिमहाराणाफतैसिंहव

श्रीयुत नीति निपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्म मूर्ति वीर उदार सोदावारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पोळपात सुयोग्यपिता अोनाड़सिंह के पुत्र ने, पण्डिता सणगारबाई नाम माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरिसिंह किशोरसिंह जोरावरसिंह से मिटगई है आनेवाले समय में होनेवाली मनकी चिन्ता जिसकी पण्डित कवि अपने मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्यशिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परमवैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम नामक गुरु से पाई है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में उत्पन्न रघुवंशी राणावत शाहपुराके पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और आर्योंके सूर्य सूर्यकुलके शिरोमणि रघुवंशीय गुहिल राजाके वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के अधीश सज्जनता आदि सद्गुणोंकी समृद्धिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यकुल के भूषण राठोड़ कुलके मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर

र्म, भानुवंशभूषण राष्ट्रकुलाऽवतंसमरुधराधिपजोधपुरेशराजराजे- श्वरमहाराजयशवन्तसिंहवर्मभ्योलब्धाऽतिवदानमानरचर्णारचितपाद भूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथातदुत्तराधिकारितत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रति पालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफल यितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानि वासिना कविवरबारहठकृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटी कायां समाप्तोयं सूर्यमल्लविरचितो वंशभास्करनामको ग्रन्थः ॥

के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यशवतसिंह वर्मा से पाया है दान बड़प्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्त राधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक पालना करनेवाले मारवाड़ के पति श्री सरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढीहुई विद्याको सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे श्रेष्ठ कवि बारहठ कृष्णसिंह की बनाई हुई उद धिमन्थनी नामक टीका में सूर्यमल्ल का रचाहुआ वंशभास्कर ग्रन्थ समाप्त हुआ ॥

॥ दोहा ॥

कविवर सूरजमल्लकी, यहँ लग कविता आहि ॥
तापर टीका बिस्तरी, सधाको हठ साहि ॥ १ ॥
अगेकी कविता यहाँ, रची मुरारीदान ॥
ताकी टीका तजतुहैं, देखत किते निदान ॥ २ ॥
जे निजबुद्धि विवेकजुत, हैं अधुना निजगेह ॥
तिनके विरचित काव्यके, जानो अधिकृत जेह ॥ ३ ॥
तजनेहीके व्यङ्गतैं, सुकवि समुझिहैं सार ॥
कुत्सितवचन प्रयोगको, विरचत नहिं व्यापार ॥ ४ ॥
को उपकारी ग्रन्थकारि, परउपकार प्रचार ॥
अन्यहि हितसाधन उचित, भुजन उठावत भार ॥ ५ ॥

घनाक्षरी ॥

कवि रविमल्लको बनायो वंशभास्कर सो,
छायो कष्ट शब्द घन छोनीपैं दिखायो छाम ॥
बुद्धिबात बेगतैं विडारि मेघ मडलकों,
निर्मल दिखाय दोनों रचि टीका अभिराम ॥
कृति कवि कोकनकों दापन अमोघ सुख,
ज्ञापन करायो हिय कज विकसैबो ताम ॥
कूरन कुतर्कि घूक मूक कारि कृष्णकवि ॥
जीवन सफल जान्यों करि उपकारी काम ॥ ६ ॥
रस व्योम ग्रह महि१९०६ पायो भव कृष्णसिंह,
शाहपुर भूपकों सुहायो सुखमा पसार ॥
मेदपाटभूपमनि सज्जन रिझायो पुनि,
फतैसिंहहुतैं पायो दान मान प्रीति फार ॥

जोधपुरभूप जशवंतनैं बढायो ज्यूँहीं,
चर्ननमें चामींकर भूषनको धरि भार ॥
इभ सर नंद इन्दु१९५८ चैत्र श्याम सत्तमिकों,
पूरन बनाय टीका कीन्हीं उपकारी कार ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥

ावन वर्ष त्रिताय बराबर, सम्मदमैं न लह्योकहुँ अन्तर ॥
ासन जाको महीपनके सिर, होय अमोघ रह्यो सु अमंथर ॥
ायस मात पिता सिर आनिकैं, पुंगव पंथ निबाह्यो परंपर ॥
ंसृतिभार सबैं तजिहों रु, अबैं भजिहों करतार निरंतर ॥८॥

॥ दोहा ॥

समय मिले पर सद्धिहों, पर उपकार पवित्र ॥
जाकों पुण्य महर्षिजन, मन्नत जगको मित्र ॥ ९ ॥
वह डिंगलको कोस इक, रचि नव निज अनुरूप ॥
काव्य पुरातन अति कठिन, परे निकासहिं कूप ॥ १० ॥

उत्तरपीठिका

सूर्यमल्लकी कविताके क्षोभसे हमने इस परोपकारी कार्य का भार उठाया था वह क्षोभ यहीं पर समाप्त होता है इस कारण हम भी टीका बनाने के भारको इसके साथ ही छोड़ते हैं अर्थात् इससे आगेकी पूर्ति सूर्यमल्लके दत्तक पुत्र मुरारिदानने की है जो स्वय इस समय विद्यमान हैं उनकी विद्यमानता में भी हमारा टीका बनाना अनावश्यक ही समझा गया इतना ही नहीं किन्तु यह अव्यापार है जिसमें व्यापार करना अनुचित है इसीकारण से आगेके काव्यमें हमने कुछभी हस्ताक्षेप नहीं किया है यहा तक कि कविवर सूर्यमल्लकी छोड़ीहुई मयूख की इतिश्रिया हमने बनाई हैं वह भी आगे की कवितामे बनाना उचित नहीं समझा किंतु जैसा कुछ लिखा हुआ मिला वैसाही छपवा दिया गया है

इस ग्रंथकी प्रथम राशिमें ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्लने प्रतिज्ञा की थी कि ग्रन्थ के अन्तिम चार राशिमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारो पुरुषार्थों का वर्णन करूंगा परन्तु वह सूर्यमल्ल से नहीं होसका जिसके लिये हमारे कई मित्रोंने अनुरोध किया कि इस ग्रन्थकी उत्तरपीठिकामें उपरोक्त चारों पुरुषार्थों का वर्णन करके ग्रंथकर्ताके अभिप्रायको सफल करदेना चाहिये परन्तु प्रथमतो हमारे शरीर म पक्षाघात, मधुप्रमेह आदि रोगों क होजाने से इतनी शक्ति नहीं रही, इसके उपरान्त ग्रन्थकर्ता के समय में तो इन पुरुषार्थों के लिखने की आवश्यकता थी क्योंकि वे ग्रन्थ उस समय संस्कृत में होने के कारण सर्व साधारण को समझाना अवश्य था परन्तु अब तो वे ग्रन्थ भाषानुवाद सहित छप कर सब प्रसिद्ध होचुके हैं जिनका फिर यहां लिखाजाना केवल पिष्टपेषण है अतएव हमारे मित्रोंका भी इससे संतोष होजाने पर यह विचार छोड़कर यहीं पर समाप्ति कर दी गई है इस ग्रन्थ के अपूर्ण रहने का कारण हमने सूर्यमल्ल के शिष्यो से कई द्वारा सुना है परन्तु उस पर हमको विश्वास नहीं है जिसका सङ्केत रामसिंह चरित्र में जोधपुर में महारावराजा रामसिंहका विवाह होना और धुर्राके धायभाईके मारेजानेकी कथा पर नोट किया है वहा दिखा दियाहै

सूर्यमल्ल के मरे पीछे महारावराजा रामसिंह ने सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान से इस ग्रन्थ की समाप्ति कराकर एक ग्राम मुरारिदान को देकर सूर्यमल्लकी जो स्त्रियां उस समय विद्यमानथीं उनको भी एक एक ग्राम उनके जीवन पर्यंत देकर सूर्यमल्लकी इस सेवाका फल दिया अब हमारे पाठकों से सविनय प्रार्थना है कि इस टीका का बड़ा भाग हमारी रुग्णावस्था में बनने के कारण जहा कहीं अर्थदोष मिले उसको कृपा पूर्वक सुधार कर हमारा दोष क्षमा करें किमधिकं विज्ञेष्वलम् ॥

शाहपुरा के पोलपात सोदाबारहठ शाखा के चरण कृष्णसिंह ने
इस टीका को जोधपुर में समाप्त की ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

बसु नव गज भू १८९८ मित बरस, समय सोधि सुभ भूप॥
पहु यात्रा प्रारंभकों, निज मन किय अनुरूप ॥ १ ॥
श्रीभट्टजी महाराज सह, प्रभु दुवर सासन पाइ ॥
उमरावन पंचप्न अखिल, नरपति हार्द सुनाइ ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम बिचारि अजमेर पत्र मंडिय पुहवीपति ॥
बाहुल८ बदि तिथि तीज३ सोमवासर२ साहब प्रति ॥
रजीडंट अंग्रेज सदरलैनहु सब सासक ॥
अरु अजंट चारलिस रिचारडिस तिनको आसिक॥
कलकत्त नगर स्वामी सबन तहँ सु लार्ड प्रति पल तिम ॥
लिखि अट्ठ८कलम जग जस रहत अधिपहिँ भेजिय छिप इम॥३॥

॥ पद्धतिः ॥

मम सेना सन्निधि पंथ मान, व्है नाँहिँ धर्म१गो२ प्रान हान१॥
प्रतिपंथ मम सु दरजा प्रमान, व्है सलक सलामी न तहँ हान२॥
सेना अरु पुरजन सत्थ मोहि, जो नागफाग रत रहत जोहि॥
लखि ताहि पंथ मासूल लैन, व्है हत्थ अमल तो रोष व्हैन ॥५॥
पुनि दुग्ग१ थान२ जो व्है प्रसिद्ध, सब जन हम जावै सस्त्र सिद्ध
बलि चक्र माँहिँ जो सस्त्रबंध, सो नाँहिँ रोक पावै सु संध४ ॥६॥
पुनि पथ स्नानयात्रा प्रसंग, अंतेउर उतरैं जहँ उमंग ॥
जो नीच उच्च व्है पुहवि जत्थ, तो व्है प्रबंध हम तोर तत्थ ॥ ७ ॥
उतरैं जो हम जिहिँ थान आय, पुनि स्नान निमित्तक पट्ट पाय॥
बनवावैं हम तापैंहि बात, रोधक नह बुल्लैं दिन रु रात ॥ ८ ॥
हमरेहि सत्थ व्है नयन२ नालि, आवै इम भोलिन नालि नालि॥

तस सलक सलामी नित्य मांग, जाकोहु हुकम व्है सर्व जाग ।९।
कहाँदि वरतु सब प्रति मुकाम, दल मामकतैं लै सुविधि दाम ॥
दृढ चित्त अग्ग व्है थानदार, सबकों सु दिवावैं वस्तु सार ॥ १० ॥
खत बीच अष्ट८ कलमा लिखाइ, जो तूर्ण चार अजमेर जाइ ॥
अर्पित किय साहव हत्थ अैन, लै त्वरित वचि दल सदरलैन११
प्रतिउत्तर भेजिय इम प्रजेस, अधिपति सु अन्यतर जिम असेस ॥
जो क्रम सु सनातन तिन जवाब, सो सब व्हैजैहैं तिहिं हिसाब१२
तिनदिवस जहाँ व्यवहार तत्थ, आसय दृढ भेजिय तहँ सु अत्थ॥
इम करि रु सर्व भूपति उदार, साज्यादि श्राद्ध सास्त्रानुसार ।१३
श्रीरंग सिंह लै पुनि रसेस, क्रमकरि रु परिक्रम पुर असेस ॥
स्नुद्धात सहित पुनि किय पयान,दिय रंक रु भूसुर अमित दान१४
पहु लिपउ भीम पट्टव कुमार, तिम कियउ कुमर अर्जुन तयार ॥
गोवर्धन तदनुज गुन गरीय, बचना सु सिंह भूवर बरीय ॥ १५ ॥
पथि माता पूजन करि प्रजेस, वलि किय सिकार बुरजहि प्रवेस
सित२ पौष द्वितीया२ऽऽगिरस५ वार, नाड़ी त्रय३ मध्यहि रजनि कार ॥ १६ ॥
कोटेस राम प्रति अब्द काज, भेजे पउसाक सु प्रीति भाज ॥
सो पत्र सहित लै रत्नलाल, आइउ पचोली तहँ उताल ॥ १७ ॥
घटिका सब वित्तत जब सु घस्र, हाजरि वितर्द हुव अष्ट८ अस्र ॥
नजर रु निछावर करि सिरनाय, पढि कुसल तास कृत मिसल पाय ॥ १८ ॥
आविक पुनि अवर अरज आखि, किय नजर पत्र संमदकराखि॥
अरु कहिय जयश्रीकृष्ण आप, आदेस ममोपरि इम इलाप॥१९॥
पथि संग रहन यात्रा प्रसंग, तसमात चित्त ममहै उमंग ॥

गो अरज सुनि रु तस कुसल किन्न, दयया सह ताकों सीख दिन्न
सेत१ पौष१० पंचमी५ सूर वार१, किय वर्षगंठि अर्जुन कुमार ॥
तदनंतर तहँ संबंध ताहि, मंदेस फल्ल नंदन उमाहि ॥ २१ ॥
हेंदूमल जीवन भट हिताय, दिय तार भर्म लांगलि दुराय ॥
तेम पंच५ लांगली१ क्रमक२।५ त्यौंहिं२, सिरपेच १ जटित इक पुनि सुयौंहिं ॥ २२ ॥
तेम दियउ२ इक१ उरसूत्रिकाहि २, मौक्तिकय कर्णिका ३ दुव उमाहि ॥

काहि१ माहि२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सिरुपाव४ चतुर्दस१४ पुनि सप्रीति, राजत मतंग५।१ इक हय६।२ सुरीति ॥ २३ ॥
इत्यादिक दुव२ लै आजगाम, हुव अरज त्वरित तहँ हितहि काम
सित१ सोम२ षष्ठिका६ पुहवि सक्क, अंबक२ सह घटिका रहत अक्क ॥ २४ ॥
रचि सभ चोक मानिक रसेस, आहूत सर्ब उमरा असेस ॥
देठ्या१दि सिंह दुर्गापुरेस, जय१ बिजय२ सिंह आइउ जयेस ।२५।
साचिवा१दि ऊरुजा२ सर्ब आइ, प्राघुन हुव हाजरि प्रीति पाइ ॥
अरु अप्प कुमर अर्जुन उमाहि, रहि ब्रह्मघट्ट त्रि३ द्वार काहि।२६।
तिम कतिक तहाँ उमराव तत्थ, अर्चित करि नवग्रह कुमर अत्थ
प्राघुनक प्रथम हे प्रीति पाय, तिन अंक कुमर अर्जुन हिताय२७
भरि किपउ तिलक कुंकुम सुभाल, इम महुर नजर करि तिन उताल ॥
पूर्वोक्त जवाहर बस्तु पेस, सब कियउ भूप हित तहँ असेस॥२८॥
करि सगपन तिन्ह दिन कतिक राखि, अप्पिय सु सीख पुनि कुसल आखि ॥

उग्गत रवि सप्तमि७ आरवार३, सामतसिंह आइउ उदार ॥२९॥
धोउर पुरेस महिपाल धीर, बाल सम्मुह भेजिय तस प्रवीर ॥
जो उपवन भट्टजि असजाइ,अति प्रीति मिलि रु पटगृह सुआइ३०
पुनि रहत वेद४ नाडी पतग, कापरनि कात आये उमग ॥
बलि वेल बिलासहिं देवमाँहिं,अति स्वच्छ जलासय आवआँहिं३१
सामत पितृव्यक तहँ सचाह, आतहि प्रभु गौरव दिय उछाह ॥
मिलि बहुरि भुजातर उर मिलाइ, किय मुजरा तिन्ह अति भवि-
क पाइ ॥ ३२ ॥
संलाप कुसल हुव पुनि सप्रीति, अरु कहिय रहहु रह अप्प रीति॥
कहि इम रु तास दसतूरकिन्न,सीतहि सु जानि स्थुलसीखदिन्न३३
आ धवल तप११पत्तति१जीव५आत, दुव लाल नयन२विश्रामदात
रहि तत्थ द्वितीया२ सुक्र६वार, किय बहुरा जीवक्क कारदार ॥३४॥
तिम अंकित मुद्रा नाम तास, प्रभु दियउ निरतर रहन पास ॥
हुव कुच्च तृतीया३सौरि७होत, दृढ अप्प नयनपुर किय सु द्योत३५
वदि वासर पंचमि५ चद्र वत्त, साहब रिचार्गडिस भर स पत्त॥
प्रेषित किय लंघन हर्ष पाइ, आदि सु अजट गढइद आइ ॥३६॥
करि साम कोटरिन तत्थ काज, रहतहि तस खब्बरि सु आत राज
प्रभु भेजिय सह दल अप्पपास, हुव राणी विकटोरियाहुलास३७
सुनि पत्त किपउ अति मेह प्रसारि, दारिद दिय सूरिन इम बिदारि
उग्गत बुध४ सत्तमि७ पुनि उदंत, भेजिय अजंट साहब भनंत३९

दत१ नत२ अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥

सेना १ अरु पुरजन २ सहँस दोइ २०००, सुहि जावैं भूपति
गहोइ ॥

अरु दुग्ग१थान२ तहँ पथ आत, जँहँ व्है असस्त्र सह सेन जात३
साहब न जात जिम अप्प सत्थ, इम सुनि मुकाम क्रम कारि ।

अत्थ ॥ ४० ॥
[ए]कादसि११बदि दिन अर्क१ जात, प्रभु अप्प सिबिरतैं सौध पात
[श्र]ीरंग दरस करि तहँ सप्रीति, संसद रचि तत्रहि प्रभु सनीति४१
प्रीति१ नीति२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
[म]ांत्रद अधीस मुहुकम्म उत्त, आह्वान राम प्रति दियउ छुत्त ॥
[ह]ाजरि हुव सत७ सु जनहि आइ, प्रभुतैं सुहि अभ्युत्थान पाइ४२
[क]िय मुजरा तिहिँ अति भविक पात, दृढ अप्प पानि सुहहि दिखात
[क]िय कुसल तास तिन नजर किन्न, दुव २ नाड़ी राखि रु सीख
दिन्न ॥ ४३ ॥
[स]ुदि होत प्रतिपद१ सुक्क६ वार, ॥
, तब कियउ पन्नानुरूप ॥ ४४ ॥
सेत सौम्य ४ चतुर्दसि १४ सूर आत, व्यापृत चतुष्क ४ राखिय
विख्यात ॥
[इ]क १ ईस नंद जुत लाल १ आँहिं, तिम राखि पठान जु जमित
खाँहिं ॥ ४५ ॥
[प]ालि पन्नाजुतलालहिं सुवाल, इह मंगल राखिय अंतलाल ॥
[श]ेरराज चतुष्क ४ न अत्थ आप्पि, महिपाल लेख त्रिंसति ३०
समाप्पि ॥ ४६ ॥
[इ]मतैं जु लेख सुनिये कृपाल, बल आदि सर्व बच आलबाल ॥
[ज]मवार दसावर इतर पत्र, आवैं उदंत तामाँहिं अत्र॥ ४७ ॥
[ज]ो होइ आसु तो झटिति देय, न त्वरित जो सु मम प्रतिहि नेय
[च]ोरु स्तेयो १ व्यापृत २ अन्य आइ, करि दंड इतर बिधि जुन
कराइ२ ॥ ४८ ॥
[ज]न स्वीय अन्यतर राज जाइ, इह स्तेय आदि करि जोहि आइ
[ति]मैं प्रमान डारैं सु तत्थ, पूरब स्वदंड करि तास पत्थय३ ॥४९॥

मेवारज मैंनें जात मोसि, पूर्वोक्त लेख जिम स्तैन्य पोसि ॥
साहब अजंटतैं कहि सु लेप४,विधिजुत इत्यादिक तब विधेय५०
इम करत प्रबध सु राज्य अग, महिपाल लगत फग्गुन १२ उमंग
रविवार१तृतीया१रमत फग्ग, स्थलकमल गुलालादिक समग्ग५१
इम रमत फग्ग पुरिणाम१५सु आत,पभु चलत सत्थ मागीन पात॥
मधु१ लगत मास पत्तति१पतग१, साहब रिचारिडिस अर उमंग५२
तग१ मंग२ अत्यानुप्रास. ॥ १ ॥
पट्टनितैं साहव झल्ल केर, मग बैठि डाक हय ना अबेर ॥
आराम नयनपुर राम आइ, तस अत्थ सिबिर प्रभुतैं तनाइ ॥५३॥
तस मिलन अत्थ प्रभु तहँ पधारि, साहब उदंत पात्रिक सु धारि॥
साहब सु उभय२ लै अप्प सत्थ, प्रभु सौध पधारे पग्ग अत्थ५४
तहँ छत्रमहल्ल विच रंग ताहि, अक्खत कवि आठहय तास आहि
कौसुभि१ रु कुकुम२नीर कारि, बर्णाक३अबीर४तोखीर५पारि५५
पत्तग६नीर पुनि करि रु स्फीत, पिचकारिन साहब किय पुनीत ॥
साहब अजंट प्रभुपैं सु बारि, दृढ प्रीति बहुरि दिय तबहि डारि५६
प्रभु अप्प डारि पुनि सहँस १००० धार, किय बर्णाक जुत पट्टप कुमार ॥
कारिफग्ग अजटहि सीखदिन्न,अरुअप्प स्नान२आदिक सु किन्न५७
आत्मीय शिबिर साहब उम्हात, अंगार३ तीज३ मध्यान्ह आत ॥
तस सम्मुह ड्योढी अप्प जाइ, आनदित तासह मांहिं आइ॥५८॥
क्रमतैं जु बैठि पुनि तहँ छपाल, किय सार्द्ध मुहूर्त२ रहस्यकाल॥
छुदी१ अरु यात्रा कारि प्रबध, तिन्ह अतर१पान२ दे पुनि सुसबध५९
इम सीख दै रु मग कुसल आखि, तँहँ अप्प नयन२ विश्राम राखि
उग्गत रवि षष्ठी६कवि६गरीय, विश्राम समाधी दिय तृतीय३ ६०
क्रिय चोरू सप्तमि ७ सनि ७ मुकाम, माधवपुर अष्टमि ८ दिय

विश्राम ॥
नवमी९मूकाम किय पुर पडान,दसमी१०अंगारक३करि निदान६१
डुंगरमलारने किय मुकाम, वाटोंदै एकादसि११ विश्राम ॥
पुनि जीव५द्वादसी१२घस्र आत, नवमो९कुशालगढ चक्र पात६२
पुनि असिता तेरसि१३ कवि६ प्रभात, पीलोंदै प्रभु किय सेन पात
हिंडोन चतुर्दसि१४ होत बास, परताप करोली पति हुलास॥६३॥
बलदेव१ बनिक दीवान ख्यात, पुनि प्रियादास२ बाड़व उम्हात ॥
अरु ऊरुज चूनीलाल३ एम, गुस्साई रक्तीगर४ हि तेम ॥ ६४ ॥
सचिवा१दि सुजन चउ४ए पठाइ, मनुहारि बिबिध बिधि जुत कराइ
सतपंच५००रौप्य महमानि अत्थ, पक्वान्न मंथनी तास३०सत्थ६५
इत्यादि उहाँ लै त्वरित आइ, रहि रत्ति प्रात पहु हुकम पाइ ॥
हाजरि हुव पटग्रह होत कुच्च, आसिख सलाम करि प्रीति उच्च६६
अरु नजर निछावर अरज किन्न, भूपति जुहार भाखिय अभिन्न
अरु कहिय आगमन इह स्वकीय,गृह करहु पवित्रहि अस्मदीय६७
कीय१ दीय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
सतपंच५०० रौप्य पुनि ठहै प्रसन्न, ॥
तामैं सुदोइ२ नारंग एम डाल्याँ कंडोल च्यारि४ फल कुसुम२६८
कूष्मांड इक१ इक१ भूमिकंद, अहिबल्लिपत्र सत चउ४००अनंद
महमानिकरहु स्वीकार एह,सो अरज सुनि रु पुनि करि सनेह६९
करि माफ रौप्य कंडोल राखि, जय रंग कहहु नृपतैं इमाखि ॥
दै सीख ताहि पुनि कुच्च पाइ, बिश्राम कियउ सूरैट जाइ ॥ ७० ॥
पत्ति १ मुकाम सित दिय बियान, तहँ करत द्वितीया ३ दिन॥
मिलान ॥
चूड़ामनि जटहि बंस जात, लैवाल मुकुंदाऽऽतित्थ्य आत ॥७१॥
रचि सिबिर सभा लिय तिहिं बुलाइ, हाजरि हुवें तहँ सो हुकमपाइ

करि नजरिनिछावर पुनि सलाम,दुव२सचिवहेठ बैठि रु सुआम७२
किय अरज मुकदहि फौजदार, बलवंत कियउ मालुम जुदार ॥
अरु पचमतक५००नाखाकसु एह,स्वीकारकरहु प्रभु करिसनेह७३
विज्ञप्ति सुनि रु तस भव्य आखि, आतित्थ्य रौप्य आदिक सु
राखि ॥
व्यवहार भरतपुर करि सुअत्त, दुव२घट्टि राखि तिन्ह सीख दत्त७४
पुनि सदरलैन साहब मिलाप, भेजिय हमीदखाँ मदल आप ॥
तिहिं जाय पत्र दिय करि सलाम, रुहि एह मिलन प्रभु चउ४
मुकाम ॥ ७५ ॥
पुनि दियउ तृतीया तहँ मिलान, सब जन दिय उत्सव गोरि दान
पुनि होत चतुर्थी४ दिन प्रभात, खाअतहमीपद छदन आत ॥७६॥
तामँहिं लेख पंचमि५ मिलाप, अरु सदरलैन व्है मुद अमाप ॥
कहि रामसिंह राजाधिराज, हढचित्त रु है वार्द्धक दराज ॥७७॥
तातैं हम चाहत मिलन तूर्ण, पुनि चहत भरतपुर ईस पूर्ण ॥
आवत हम सम्मुह उभय तत्थ,सुनि राम अरज करि कुचसत्थ७८

॥ दोहा ॥

पचमि५ दिन करि कुच्च प्रभु, बैर मुकामन आत ॥
नगर कनावरतैं निकट, पिप्पलतरु इक पात ॥ ७९ ॥
उहा भरतपुर ईसके, बारीदारन आइ ॥
रजित किन्न बिछात सम, मन बहु मोद मनाइ ॥ ८० ॥

॥ षट्पात् ॥

सदरलैन साहब१ रु भूप बलवत२ भरतपुर ॥
बाजी१ रथ थित होइ उभय२ सम्मुह उमगि उर ॥
तीन३ कोस लग आइ बहुरि ठहे बिछात पर ॥
तब जीवन बहुरा रु हमिदखा तह वकील तर ॥

चहुवान तरनि सन्निधि त्वरित आइ निवेदिय अरज इम ॥
प्रभु वेर२ बिछात ठट्ठ उपरि अप्प पधारहु देर किम ॥ ८१ ॥

(दोहा)

यहँ अरज सुनतहि अधिप, तहाँ हय स्थित आत ॥
अस्त्र बिछायतके उपरि, हुलासित तुरग बिहात ॥ ८२ ॥
सदरलैन साहब समुह, अरु बलवंतहु आइ ॥
सय इक१ भरत पुरेसहू, लिन्नों सीस लगाइ ॥ ८३ ॥
प्रभु तब अप्प सु पानि इक१, आनन ढ्रयस उठाइ ॥
कुसल परस्पर किन्न पुनि, मुद जुत खंध मिलाइ ॥८४॥

॥ षट्पात् ॥

उत्तमंग पुनि सदरलैन कर इक्क लगाइय ॥
तब पहु आनन निकट अप्प सुभ पानि उठाइय ॥
गाइय१ ठाइय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
खंध जुट्ट मिलि मुदित दुव२हि रचि कुसल परस्पर ॥
तुच्छ समय तहँ बैठि बत्तकरि देस१ काल२ बर ॥
जेट्टस केर चउ४ तुरग रथ बैठे तीन३हि मुदित मन ॥
बलवंत बाम दक्खिन सदरलैनहु सम्मुह अप्प सन९ ॥८५॥
सिरैरहि रु प्रभु अप्प१ चले डेरन प्रति सत्वर ॥
हुव सु अग्ग जय१ बिजय२सिंह आसुहि तुरंग बर ॥
इम त्रय३ डेरन आइ अधिप सह तजि रु अस्व रथ ॥
बाजी स्यंदन चढि रु वे सु दुव२ चलिय वैर पथ ॥
इत होत सिबिर दाखिल अधिप ताप कीन नाली त्वरित॥
दसपंच१५ फैर उततैं चलत इत नालिय चालिय सहित ॥८६
रित१ हित२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
हुव हाजरि बलवंत बहुरि जन तहँ सु प्रतिष्ठित ॥

अरज कराइय एह भूप महमानि सेनहित ॥
सासन करहु प्रसिद्ध लेहु पक्वान्न चक्र सब ॥
यह सुनि गु दियजु हुकम सचिव आवें मामक जब ॥
मिलि सचिव चक्रपति आदि तहँ जाइ दिवाइय स्वच्छ मन॥
आमोद तत्थ इम राखि पुनि आये व्यापृत सठ सदन॥८७॥

॥ पादाकुलकम् ॥

षष्ठीद् दिवस मिलान तहाँ दिय, पुनि बलवंत भविक जन आइय
तब प्रभु निकट हमिदखाँ जाइरु,कियउ अरज प्रभुतैं मुदपाइरु८८
प्रभु बलवत सुजन पठवाये, पधरावन अप्पहिं उत आये ॥
समय प्रजेस हार्द जो पाऊ, सो उनकौं मैं जाइ सुनाऊ ॥ ८९ ॥
सुनि इम अरज निदेस दयो जब, नाडी नयन२ रहँ दिनकर तब॥
इम क्रम क्रमन उहाँ तुम जानहु, पुनि तहँ साहब मिलन प्रमा–
नहु ॥ ९० ॥
इम वकील सासन सुनि आयो, सुजन त्वरित बलवत सुनायो ॥
स्वनृप जाइ तिन वृत्तनिवेदिय, तब सभ्य रु ससद तयार किय९१
पट्टप भीम २०३।१ कुमार जुत्त पुनि, गोवर्द्धन कुमरहिं प्रभु लिय
चुनि ॥
सेना सर्ब चार भट सारे, प्रभु नवलक्खा बाग पधारे॥ ९२ ॥
प्रथम जात बलवत गेहपट, सम्मुह विंसति२०पैंड वे सु अट ॥
तुच्छ समय पुनिवस्त्रसदन रहि,साहब शिबिर बरव्वर क्रमचहि९३
तहाँ अव्यय१बलवंत२ सिधाये, रद३२पद सदरलैन समुहाऽऽये ॥
करि सँल्लाप भव्य मुद पाव्उ,त्रय३हि सौध ससद जहँ आइउ९४
खुरसी अप्प मध्य आरुहि जहँ, भीम२०३।१कुमर दाच्छिन कुरसि
तहँ ॥
तदनतर जय१ विजय१सिंह दुवर, उपवेसन गोवर्द्धन ततहुव॥९५

तातैं बक्र मिसल सम्मुह सन, खुरसिन लग्गिय तास सुभट जन॥
स०यहि सदरलैन साहब रहि, सन्निधि तास भरतपुर ईसहि ।९६।
समय मुहूर्त वृत्त तहँ जंपिय, अतर१ पान२ पुनि चरन निवेदिय ॥
साहब उक्त१ सु अप्प लगाये, पानदान प्रभु नजर निराये ॥९७॥
संग्रहि कहिय सिबिर संजावन, प्रभुकों तब वे दुव२ पहुँचावन ॥
महलनतैं सु चोक लग आये, सदाचार तीन३हिं तहँ पाये॥ ९८ ॥
प्रभु पुनि अप्प सिबिर दाखिल हुव, तुरतहि तहां वे सु आये दुव
जब वहि सिबिर दु२ दिस भट राखि रु, प्रभु पुनि मुख्य सिबिर रह बाहिरु ॥ ९९ ॥

खिरु१ हिरु२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

प्रभु तहँ खुरसी मध्य बिराजिय, सदरलैन उपविष्ट स०य किय ॥

जिय१ किय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

पुनि बलवंत असव्यहि पाये, प्रभु तत लार्ड पलास दिखाये।१००।
तामें लेख कोल नामाँको, साहब देखि चविय नृप याको ॥
उत्तर झटिति अत्थ नहिं ऐहैं, बासर कातिक विचारिहु दैहैं॥१०१॥
अतर अप्प दोउ२न पुनि अप्पिय, पहुँचावन प्रभु तिन्हें गमन किय
बाहिर सिबिर तनावहिं आइ रु, दियउ सिक्ख तिन्ह सुवच दृढाइ रु
बाजी स्यंदन चढि रु सिबिर प्रति, कियउ गमन प्रभु दुव२हि र-क्खि रति ॥
इत पटआलय अप्प पधारिय, बलाधीस कटिबंध निवारिय।१०३।
षष्ठी६ दिन तहँ रत्ति बिहाई, सुज्जवार१ सप्तमि७ अग्र पाई ॥
सत्त७ कोस व्हांतैं कवईपुर, हुव प्रभात दाखिल अंतेउर ॥१०४॥
करत कुच पुनि प्रभु तहँ भेजिय, सुजन प्रताप महीप करोलिय ॥
इम बिज्ञप्तिआइ तिन्हअक्खिय,भूप मर्दायमिलन प्रभुभक्खिय१०५
पुनि निर्देस समयको पावैं, प्रभु मामक द्रुतही पधरावैं ॥

इम सुनि भरज नियोग दयोनृप, हमरो तुम जानहु हुतहीसृप१०६
इम सुनि सुजन पटालय आइ रु, प्रभु इत समय सक्रको पाइ रु
कर्म नित्य आदिक सब किन्नों, ससद रचन निदेसहु दिन्नों १०७
बान५ घटी रजनी पुनि बित्तत, चढि इभ भूप प्रताप सु चित्तत ॥
उतरयो द्वार पटालय आइ रु,पहु सुनि सम्मुह अप्प पधारिरु१०८

इरु१ रिरु२ अंत्यानुप्रास ॥ १ ॥

शस्त बहुरि मिलि कियउ परस्पर, बैठे इक आसन धरनीवर ॥
समय देस वृत्तांत सु जंपिय, नाडी इक१ उपवेसन रक्खिय१०९
दें तिन्ह सिक्ख कियो पहुँचावन, असुक सदन द्वार लग आवन॥
इम दें सिक्ख अप्प तुरगासहि, सिबिर प्रतापपालके आसुहि११०
कियउ क्रमन प्रभु रत्ति रक्खि रति, सुभट मुख्य——सह संहति ॥
तिन्हें तबहि आगमन रु सम्मुह, संलाप रु उपविष्ठ आदि सुह १११

मुह१ सुह२ अंत्यानुप्रास ॥ १ ॥

प्रथम रीति जिम कियउ धराबर, जंपिय सिक्ख अप्प तदनतर ॥
इम सुनि सोहु पुगावन आये, पटगृह द्वार हपसही पाये ॥ ११२ ॥

॥ दोहा ॥

सदाचरन करि तह सुबत, पुनि चल्लिय मुद पाइ ॥
नयन२ घटी रजनी रहत, हुव दाखिल स्थुल आइ ॥११३॥
अष्टमि८ दिन पुनि तहँ अधिप, राखि रु श्रम विश्राम ॥
शस्त्रादिक पूजन सकल, रजित किय प्रभु राम ॥ ११४ ॥

॥ मुक्तादाम ॥

कियो नवमी९ कुज३ वार पयान, दयो सु कुमेर मुकाम दिवान॥

यान१ वान२ अंत्यानुप्रास ॥ १ ॥

तहा बलवंत सुनाग पठाइ, जरी कुथ तास सिरी सु बनाइ ॥११५॥
सुतारन मंडित हौदन साजि, पलास बहोरि सु यावनि राजि ॥

किंयो तस लंच सु मानुस आइ, कर्यो सुररीकृत भाविक पाइ।११६।
दियो दशमी१० दिन डिग्घ मुकाम, रहे तहँ रुद्र११ तिथी प्रभु राम
तहां भवनाभिध सुंदर थान, तिन्हैं किय देखन गोन दिवान११७
उहाँ ब्रजमोहन दुग्गप आइ, दये तिंहिं भोन असेस बताइ ॥
बिताइ घटी बसु८ह्हाँ क्षण देस, कियो प्रभु अंबरओक प्रवेस११८
चले पुनि द्वादसि१२ लै चतुरंग, गिन्यो सु मुकामहि मानुसि गंग॥
तहां इक१ गोरधनाह्वय सैल, मिटैं जहँ जातहि मानुस मैल ।११९।
अनंग१३ तिथी दिन स्नान उमंग, सु गोन कियो प्रभु मानसिगंग
उहां करि आप्लव अंहति अत्थ, मगायउ नाग१तुरंगम२ तत्थ१२०
सिरी१कुथ२ताहि बनात सु साजि, बनाइ रु तादृश त्योंहि सुबाजि
महीप बहोरि सु द्रम्म पचास५०, तथासर५निष्क१रु चीर२सतास१२१
तुरंग१ बहोरि सनिष्क३हि तीन३, दये पुनि द्रम्म पचीस२५ सु दीन
बलापति ॥ १२२ ॥
अंबर१ पिट्ठि रु तार खुराहिँ, उहाँ दस१० द्रम्म दुर्निष्क सु आहिँ॥
प्रदेसन दै इम प्रीति प्रजेस, कियो पुनि अंसुक ओक प्रबेस ।१२३।
मुकाम तहां करि पुरिग्राम दीह, अगेस परिक्रमकों पुनि ईह ॥
प्रभू किय लै अवरोध पयान, कियो गिरिराज परिक्रम यान१२४
पयान१ मयान२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
निसीथ घटी दुव२ उप्पर जात, प्रदेसन ह्हां करि डेरन पात ॥
तिथी पडिवा१बदि माधव२मास, बली सत वै किय बाहिनिबास१२५
॥ दोहा ॥
कियउ द्वितीया२ दिन क्रमन, राजराज प्रभुराम २०२।४ ॥
माहब सुनि आयो समुह, मथुरा जानि मुकाम ॥ १२६ ॥
सुहु डिपटी अभिधा बिदित, पद रु किलट्टर पाइ ॥
मथुरा तजि सम्मुह मिल्यो, इक्क१ कोसलों आइ ॥ १२७ ॥

मिलत अनामय पुच्छि करि, सत्र६१७ नालिन फेर ॥
राहव सह आय उमँगि, वस्त्रमदन वह नेर ॥ १२८ ॥
पुनि वृंदावन नेर पहु, मातामही मिलाप ॥
कियो तुरग आरुहि क्रमन, अल्प सत्य करि आप ॥ १२९ ॥
जाइ अरज सुभ करि जहां, प्रसूमही पय वदि ॥
आधघरी रहि सिक्ख करि, आये सिविर अनदि ॥ १३० ॥

इतिश्री वंशभास्करे　　　　त्रयोदशो मयूख ॥१३॥

॥ गीर्वाणभाषा अनुष्टुप् ॥

राधाकुण्डात्तृतीयाया कृत्वा श्राद्धादिकं नृप ॥
पञ्चम्या विश्रामघट्टाय पञ्चम्या सायमव्रजत् ॥ १ ॥

॥ गीति ॥

जयसिंहविजयसिंहेत्याख्यमहाराजसंयुतस्तत्र ॥
आचम्य पट्सुवर्णामुपायनीकृत्य तस्थिवान् घटिकाम् ॥२॥

॥ उपजाति ॥

विलोक्य नीराजनमत्र घट्टे नारायणं चापि गतश्रमाख्यम् ॥
नत्वोपहृत्य द्रविणं यथार्हं भूपो निवासं स्वमलंचकार ॥ ३ ॥

(* राजा रामसिंह वैशाख वद तीज का श्राद्ध आदि करके पंचमी के दिन पैदल विश्राम घाट गया ॥ १ ॥ महाराजा जयसिंह और विजयसिंह के साथ आचमन करके सुवर्ण की छह मोहर भेट करके घड़ीभर बैठा ॥ २ ॥ और आरती के दर्शन करके विश्राम नामक नारायणको पृथ्वी पर साष्टांग विधि

(*) हमारे नियमानुसार टीका का समाप्ति ऊपर करदी गई यहीं पर्यन्त हमारा रचाहुई टीका जाननी चाहिये परन्तु ऐसा सुना गया है कि रावराजा रामसिंह की तीर्थयात्रा के प्रकरण में ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल ने यह एक मयूख सामकाय के समग्र पहिले बना रक्खा था जिसको सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान ने अपनी रचा कविता में मिला दिया इसकारण सामान्य पाठकों की सुगमता के अर्थ जोधपुरके कविराजा मुरारिदान के अनुरोध से इस एक मयूख का अर्थ फिर लिखदिया जाता है जिसको हमारी नियमानुसार टीका के बाहर जाना इससे आगे की कविता सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान की रचीहुई होने के कारण इस पर टीका बनाना छोड़ दिया गया है ॥

॥ प्रहर्षिणी ॥

सप्तम्यामुषसि परिक्रमाय पद्भ्यामायस्यन् ददथ तत्र तत्र वित्तम्॥
विश्रामं प्रथममथ प्रयागघट्टं संपश्यन्नथ बलदेवघट्टमागात् ॥४॥

॥ वसन्ततिलका ॥

श्यामाभिधं कनकनाख्यमथार्थघट्टं घट्टं ध्रुवस्य कलयन्नथ मोक्ष तीर्थम् ॥
रङ्गावनौ तदनु भूतपतिं महेशं दृष्ट्वातपे स्वशिबिरं पुनराजगाम ॥५॥

॥ उपजातिः ॥

अथो भुजिष्यातनये निवृत्तमसूरिरोगेऽर्जुनसिंहनाम्नि ॥
आचारतः प्राप्तमुदस्तविघ्नमकारयद्भूपतिरम्बुसेकम् ॥ ६ ॥
अश्वे स्थितोऽध्यष्टमिभूतनाथपर्यन्तमेवाथ चलन् पदाभ्याम ॥
विलोक्य रामं बलभद्रकुण्डेऽथ ज्ञानवापीमवलोकते स्म ॥७॥

॥ स्वागता ॥

बालकृष्णपटशोधनकुण्डं जन्मसद्म पितृबन्धनभूमिम् ॥
भूपतिस्तदनु केशवदेवं पश्यति स्म वनखण्डशिवं च ॥ ८ ॥

॥ शिखरिणी ॥

से नमस्कार करके अपने डेरे पीछा आया ॥ ३ ॥ सप्तमी के दिन प्रातःकाल में पैदल परिक्रमा करने को जहां तहां द्रव्य देता हुआ पहिले विश्राम घाट गया फिर प्रयाग घाट का दर्शन करके बलदेव घाट गया ॥ ४ ॥ वहांसे श्याम घाट, कनक घाट, अर्थ घाट, ध्रुव घाट और मोक्ष तीर्थ गया वहांसे भूतनाथ महादेव के दर्शन करके धूप में अपने डेरे पीछा आया ॥ ५ ॥ जिसपीछे राजा ने पासवानिये पुत्र अर्जुनसिंह को कुष्ट (कोढ) रोग मिटाने के अर्थ जल में स्नान कराया ॥ ६ ॥ अष्टमी के दिन भूतनाथ महादेव तक तो घोड़े पर चढकर गया और वहां से पैदल होकर बलभद्र कुंड पर राम (बलदेव) के दर्शन करके पीछे ज्ञानवापी का दर्शन किया ॥ ७ ॥ जिसपीछे राजा ने बालकृष्ण के वस्त्र धोने के कुंड जन्मघर भूमि और माता पिताके बंधनकी भूमि को देखकर केशवदेव और वनखंडी शिव के दर्शन किये ॥ ८ ॥

महाविद्या देवीमगमदृदसीया च सरसीं,
सरस्वत्या• कुण्ड तदनु च तदीयं झरमपि ॥
शिव गोकर्णेशं तदनु गणप दीर्घवदनं,
ततस्तीर्थं भूपो दशतुरगमेधाभिधमगात् ॥ ९ ॥

॥ उपजाति• ॥

सरस्वतीसङ्गमकृष्णगङ्गावैकुण्ठघट्टानथ सामघट्टम् ॥
ददर्श भूमीपतिरष्टकुण्डघट्टे हनूमन्तमथैकदन्तम्॥ १० ॥

उपजाति•

ततो द्वारकाधीशमालोक्य देव पुन प्राप विश्रान्तिघट्ट क्षितीश ॥
परिक्रान्तिमेता यथार्हं विधाय निकेतं निज भूषयामास भूप ।११।

उपजाति

ततोभिधाय प्रभुणा नवम्यामाकारणां माथुरपण्डितानाम् ॥
प्रश्नानुवादेतररीतिचञ्चत्तर्कालिरश्रूयत शास्त्रचर्चा ॥ १२ ॥

॥ शालिनी ॥

एकादश्या प्राप्य विश्रान्तिघट्टं तत्र स्नात्वा सावरोध क्षितीश ॥
स्तुत्वा भानोर्नन्दिनीं भक्तियुक्त प्रादाद्दान शास्त्ररीत्या द्विजेभ्य १३

वहां से महाविद्या देवी के दर्शन करके असकिया नामक सरोवर पर, गया, वहां से सरस्वती कुंड और सरस्वती कुंड के झरने को भी देखा तिस पीछे गोकर्णश्वर महादेव के दर्शन करके दीर्घवदन गणेश के दर्शन किये तिसपीछे दशाश्वमेध तीर्थ गया ॥ ९ ॥ सरस्वतीसंगम, कृष्णगंगा, वैकुण्ठ घाट और साम घाट के दर्शन करके राजा ने वैकुण्ठ घाट पर हनुमान् और गणपति के दर्शन किये ॥ १० ॥ जिसपीछे द्वारकाधीश के दर्शन करके राजा पीछा विश्राम घाट आया, इस परिक्रमा को यथायोग्य रचकर राजा अपने डेरे आया ॥ ११ जिसपीछे राजा ने नवमी के दिन मथुरानिवासी पंडितों को बुलाकर शास्त्रचर्चा सुनी ॥ १२ ॥ एकादशी के दिन राजा ने विश्राम घाट जाकर राणियां सहित स्नान करके और यमुना की भक्ति पूर्वक स्तुति करके

॥ उपेन्द्रवज्रा ॥

गजं शतद्रम्मयुतं विचित्रप्रवेणिपर्याणनिबद्धशोभम् ॥
ददौ महीशो दश१०निष्कयुक्तं द्विजाय सर्वाम्बरपूजिताय ॥ १४ ॥

॥ उपजातिः ॥

अश्वं शतद्रम्मयुतं सपञ्चनिष्कं स्फुरद्राजसुभाण्डशोभम् ॥
वस्त्रैः समस्तैः परिपूज्य भक्त्या ददौ द्विजेन्द्राय महीपतीन्द्रः ॥१५॥
एकैकनिष्कान्वितपञ्चपञ्चद्रम्मार्चिताः पञ्चदशात्र गावः ॥
द्विजेश्वरेभ्योम्बरपूजितेभ्यो भक्त्यात्यसृज्यन्त महीश्वरेण ॥ १६ ॥
सुवर्णमर्त्यादिकमर्चनाङ्गं वधूचितं श्रीयमुनाम्बरौघम् ॥
अष्टाधिकं विंशतिमत्र भूमेर्निवर्तमानामदिशत्प्रजेशः ॥ १७ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

सम्पूज्य तं तीर्थगुरुं स्वमाघ्रिशौचादिना जीवनरामसंज्ञम् ॥
नानाम्बरैर्मौक्तिककर्णवेष्टहारान्वितैर्भूषयति स्म भूपः ॥ १८ ॥

॥ उपजातिः ॥

भोज्यं द्विजेभ्यो वसु भूरि चापि संकल्प्य सम्यग्गुरुदक्षिणां च ।

शास्त्र के अनुसार ब्राह्मणों को दान दिया ॥ १३ ॥ राजाने सौ रुपये और दश मोहर के साथ हाथी दान, सम्पूर्ण वस्त्रों से पूजन करके ब्राह्मण को दिया॥१४॥ और सम्पूर्ण वस्त्रों से भक्ति पूर्वक पूजन करके ब्राह्मण को सौ रुपये और पांच मोहर के साथ घोड़ा दिया ॥ १५ ॥ श्रेष्ठ ब्राह्मणों का भक्ति से पूजन करके एक एक मोहर और पांच पांच रुपयों के साथ पन्द्रह गायें दीं ॥ १६ ॥ राजाने यमुना पर सुवर्ण की मूर्ति आदि का दान दिया. और उस पूजा के अंगभूत स्त्रियों के योग्य वस्त्र समुदाय दिये. और अट्ठाईस निवर्तन भूमि दी. बीस बांस का एक निवर्तन होता है. " निवर्तनं विंशतिवंशसंख्यैः " इति लीलावत्याम् ॥ १७ ॥ जीवनराम नामक तीर्थगुरु को अपने हाथ से चरण धोने आदि विधि से पूजन करके अनेक प्रकार के वस्त्र, मोतियों के कुंडल और हार से सुशोभित किया ॥ १८ ॥ दक्षिणा सहित ब्राह्मणभोजन और गुरुदक्षिणा का संकल्प करके थोड़ासा दिन बाकी रहने पर राजा ने राजकुमार को जनाने

दिनेल्पशेषे सकुमारमन्त पुर निकेताय समादिदेश ॥ १९ ॥
नरीजनानहेसि तत्र पुष्पवृष्टिं विधायाऽऽव्रजता नृपेण ॥
अकार्यत स्वानुगहस्तिनिष्ठजनेन वृष्टी रजतात्मिकापि ॥ २० ॥
परेद्युराहूय निजाऽनिजान्बुधान्पुरोधसाऽर्च्य प्रतिमूर्त्यदित्सत् ॥
द्रम्म तथान्नादि च पञ्चभोज्यं द्विजान्सहस्र च तदन्वभोजयत्॥२१॥

॥ अनुष्टुप् ॥

त्रयोदश्या१३ दिगद्रयङ्गो६७१०न्मितान्स्त्रीसहितान्द्विजान् ॥
अभोजयच्चतुर्वेदान्सपादद्रम्मदक्षिणाम् ॥ २२ ॥

॥ उपगीति ॥

राधारमणो भट्टाचार्योपाख्यव्रजकिशोर ॥
पुत्रोस्य रामबाबूरेते वृन्दावननिवासा ॥ २३ ॥

॥ गीति ॥

माथुरगङ्गारामश्चेतिबुधा॰ प्रागनागता मुख्या ॥
आजग्मुर्नृपहूता यमुनातीर्थान्तिकोत्सगतसदसम् ॥ २४ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

सरिन्नरेन्द्रस्य वरेण्य आशानन्दस्तथा मैथिलबापुदेव ॥

में जाने की आज्ञा दी ॥१९॥ सायकाल की आरती के समय में वहा (विश्राम घाट) पर राजा ने पुष्पों की वृष्टि करके रजत (चांदी) की वृष्टि भी ॥२०॥ दूसरे दिन अपने और दूसरे पंडितों को बुलाकर पुरोहित के द्वारा सब का जुदा जुदा पूजन करके एक एक रुपया दक्षिणा के साथ पाच [illegible] से एक हजार ब्राह्मणों को भोजन कराया ॥ २१ ॥ फिर त्रयोदशी के [illegible] सवा सवा रुपया दक्षिणा के साथ स्त्रियों सहित छः हजार सात सौ [illegible] चौवे ब्राह्मणों को भोजन कराया ॥ २२ ॥ वृन्दावन में रहनेवाले [illegible] भट्टाचार्य, व्रजकिशोर, व्रजकिशोर का पुत्र राम बाबू और मथुराका [illegible] ये प्रधान चार पंडित पहिले नहीं आये थे सो राजा के बुलाने पर आये ॥२३॥ ॥ २४ ॥ जिनमें से गंगाराम के साथ राजा के श्रेष्ठ पण्डित आशानन्द [illegible]

शास्त्रार्थमातेनतुरत्र गङ्गारामेण साधं घटिकोनयामम् ॥२५॥

॥ वसन्ततिलका ॥

ते प्रेषिता निजगृहान्प्रति पंचपंचद्रम्मार्चिता अथ परत्र दिने तु पौरः॥
सद्रम्मदक्षिणमभोजयत विप्रवर्गः शिष्टाप्ययपूरि सहसत्कृतिदेयमात्रा२६

॥ वैतालीयम् ॥

अथ माधवशुक्लपक्षतावनुवृन्दाविपिनं व्रजन्नृपः ॥
निशि षड्घटिभाजि कालियन्हृददेशे शिबिरं स्वमाविशत्२७

॥ वसन्ततिलका ॥

मातामहीसदनमेत्य परेद्युरप सार्द्धासु षट्सु घटिकासु निशि स्ववासम्
आचम्य कालियन्हृदेथ तृतीयतिथ्यां वृंदावनस्य निरियाय परिक्रमाय

॥ इन्द्रवज्रा ॥

गोपालघट्टाद्यमुनाल्पधारापर्यन्ततीर्थानि समेत्य पद्भ्याम् ॥
अश्वेन वासं स्वमुपेत्य मातुः पुण्याय राज्ञार्पित गौस्सनिष्का ।२९।

॥ द्रुतविलम्बितम् ॥

अथ विहारिहरिं शिरसा नतो मदनमोहनमेत्य च संस्तुवन् ॥

मैथिल बापूदेव ने एक घड़ी कम एक पहर तक शास्त्रार्थ किया ॥ २५ ॥ तिस पीछे उन चारों पण्डितों को पांच पांच रुपयों के साथ पूजन करके घर पहुंचाए और दूसरे दिन पुरवासी ब्राह्मणों को एक एक रुपये के साथ भोजन कराया और बाकी रही यात्रा को सत्कार के साथ पूर्ण की ॥ २६ ॥ इसपीछे वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को वृन्दावन को जाते हुए राजा ने कालीदह प्रांत में लगेहुए अपने डेरों में प्रवेश किया ॥ २७ ॥ दूसरे दिन नानी के स्थान पर जाकर साढे छः घड़ी रात गये पीछा डेरे आया जिसपीछे तीज के दिन कालियद्रह में आचमन करके वृन्दावन की परिक्रमा करने को निकला ॥ २८ ॥ गोपाल घाट से लेकर यमुना की अल्प धारा तक पैदल होकर तीर्थोंकी परिक्रमा करके घोड़े से अपने डेरे आकर माता के पुण्य के अर्थ राजा ने एक मोहर के साथ एक गौ अर्पण की ॥२९॥ इसके अनन्तर श्रीकृष्ण विहारी को नमस्कार करके स्तुति करता हुआ मदनमोहन को प्राप्त होकर अपनी माता की माता (नानी) का

स्वजननीजननीत्वथाकृन्नृप शिविरमाप निशि प्रहरे गते ॥३०॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

चतुर्थ्यां४ कलिंदात्मजास्वल्पधारास्थलाच्छेषतीर्थानि पद्भ्यामुपेत्य
परेद्युर्ह्रदे कालियस्याप्लुतस्सन् गजाना जलक्रीडनान्यालुलोचे३१

॥ उपजाति ॥

षष्ठ्या नृपेणाद्भुतशास्त्रचर्चासभाजिताकारि सभा बुधानाम्॥
भूय परेण द्युयुगेन सान्त पुरेण तत्तीर्थपरिक्रमोपि ॥ ३२ ॥

॥ पुष्पिताग्रा ॥

तदनु सदरलैनमङ्गरेज भरतपुरेड्बलवतसिंहयुक्तम् ॥
प्रकटयितुमुदन्तमुर्व्यधीशप्रहित इयाय हमीदखां नवम्याम्।३३।

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

दशम्या ययौ राजमाता स्वमातुर्विलोकाय घस्रेर्द्धयामावशेषे ॥
धरेशस्तु मातामहीं वीक्ष्य नैज निकेत पुन प्राप रात्रौ निशीथे।३४।

॥ मन्दाक्रान्ता ॥

एकादश्यामकृत बहुलस्त्रीजनैर्देवयात्रा-
मध्वन्येवामिलदवनिपस्य प्रसू स्वप्रसूयुक् ॥

दर्शन करता हुआ पहर रात गये अपने डेरे पहुंचा ॥३०॥ चौथे दिन यमुनाकी अल्पधारा के स्थल से लेकर बाकी के सब तीर्थ राजाने पैदल होकर किये और दूसरे दिन कालियह्रद में स्नान करके हाथियों की जलक्रीडा देखी ॥ ३१ ॥ छठ के दिन सभा को जीतनेवाले राजा ने पण्डितों की विलक्षण शास्त्र चर्चावाली सभा कराई तिसपीछे दो दिन में जनाना सहित वृन्दावन की प्रदक्षिणा की ॥ ३२ ॥ जिसपीछे नवमी के दिन भरतपुर के पति बलवन्तसिंह के साथ सदरलैन अगरेज को समाचार जनाने के अर्थ रावराजा का भेजा हुआ हमीदखां गया ॥ ३३ ॥ दशमी के दिन राजमाता चार घड़ी दिन बाकी रहे अपनी माता से मिलने को गई और राजा अपनी नानी से मिल कर अर्द्ध रात्रि को पीछा अपने डेरे आया ॥ ३४ ॥ एकादशी के दिन बहुत स्त्रियों के साथ देवयात्रा की और मार्ग में अपनी नानी से मिलकर राधारमण आदि

नत्वा राधाप्रियतमसुखारतत्र गोविन्दमूर्ती-
र्वाकूसार्द्धप्रहररजनेराजगाम स्वधाम ॥ ३५ ॥

॥ प्रहर्षिणी ॥

द्वादश्यां सदनमुपेत्य मातृमातुः प्रत्यागात्सपरिकरो निशि स्ववेश्म॥
अन्येद्युः सुरसदनेक्षणं भुजिष्यावर्गेणाकृत नृपतेः कनिष्टमाता३६

॥ उपजातिः ॥

तीर्त्वा तरीभिर्यमुनां परेद्युः प्रतिस्थलं राजतपंचरूपैः ॥
रासस्थलीमानसतीर्थमानविहारिणः सत्कुरुते स्म भूपः ॥ ३७ ॥
संस्थानमायन्नपि वृष्टिरुद्धो मातामहीकेतनमेत्य भूपः ॥
संध्यादिकर्माशनं च तत्र विधाय रात्रौ निजवासमाप ॥३८॥
सेवानिकुञ्जादिषु पंचदश्यामुपेत्य राधारमणं विलोक्य ॥
द्रम्मान् शतं पंचसुवर्णयुक्तान्दत्वैक्षतान्या अपि देवमूर्तीः॥३९॥
दिने तृतीयांशमिते व्यतीते निकेतनं स्वीयमुपेत्य भूपः ॥
पितामहस्याथ महासतीनां श्राद्धानि चक्रे प्रतिवर्षजानि ॥४०॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम-

गोविन्दकी मूर्तियों को नमस्कार करके डेढ पहर रात्रि से पहिले अपने डेरे आया ॥३५॥ द्वादशीके दिन नानी के स्थान जाकर पीछा अपने परिवार के साथ अपने डेरे आया और दूसरे दिन पासवान स्त्रियोंके साथ राजाकी छोटी माता ने देव मंदिरों के दर्शन किये ॥३६॥ दूसरे दिन नावों से यमुना को तिरकर राजाने जगह,जगह पांच पांच रुपयों से रासथली, मानसथली और मान बिहारी का सत्कार किया ॥३७॥ चौराहे पर पहुँच गया तो भी वृष्टिसे रुककर नानी के मकान पर पहुंच कर वह राजा सन्ध्या आदि सत्कर्म और भोजन वहीं करके रात्रि में अपने निवास स्थान आया ॥३८॥ पूर्णिमाके दिन सेवाकुंज आदि स्थानों में राधाकृष्णके दर्शन करके पांच मोहर के साथ सौ रुपये देकर और भी देवमूर्तियों के दर्शन किये ॥ ३९ ॥ और दिनके तृतीयांश (तीसरा) भाग व्यतीत होने पर राजाने पितामह (दादा) की पतिव्रता राणियों के वार्षिक श्राद्ध किये ॥ ४० ॥

सिंहचरित्रे

चतुर्दशो मयूख ॥ १४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तजि वृंदावन तीज३ तिथि, रहत घटी चउ सूर ॥
किय आरुहि वाहन क्रमन, द्विजन दु ख करि दूर ॥ १ ॥
पहर इक१ रजनी नृपति, गोकुल मग्ग बिहाइ ॥
हुव दाखिल डेरन हरखि, धीरन मोद बढाइ ॥ २ ॥

षट्पात्

भुजगतिथी५ सु प्रभात प्रथम अंतेउर चल्लिय ॥
आरुहि प्रभु पुनि अस्व महावन अप्पहि क्रम किय ॥
कन्ह चरित जो पुहवि तास प्रभु दरस उहाँ करि ॥
अतेउर सह सिबिर होइ दाखिल सु ध्यान धरि ॥
आप्लवन अत्थ सुद्धान्त सह किय पुनि जमुनातट क्रमन ॥
महिपाल जोरि अचल महिषि कियउ अप्प मोदित सबन३
मन१वन२अत्यानुप्रास ॥ १ ॥
तर्पन आदिक तत्थ बहुरि करि नित्यकर्म बलि ॥
अवारुहि किय अटन द्विजन दारिद छद्दन दलि ॥
मंदिर गोकुलनाथ जाइ करि दर्स महामति ॥
प्रनमि प्रभू करि भेट बहुरि किय गमन श्रीजिमति ॥
करि दरस रौप्य दुन२सतक१००कर पच५निष्क उच्चारन सु
इत्यादि सदन ईश्वर अखिल चालि इच्छन किय बहुत बसु४

दोहा

सुक्र६ असित२ षष्ठी६ सुरहि, सत्तमि७ उग्गत सूर ॥
मुदजुत प्रभुहि मिलानहू, दिय बलदेव हजूर ॥५॥
राम राम करि दरस बलि, पुनि करि सिबिर प्रवेस ॥

भावितादि नैवेद्यहू, भेजिय भोग धरेस ॥ ६ ॥
करत कुच्च अष्टमि८ अहन, पुनि चढ़ि दरस जरूर ॥
तुरगारूढ़ि हाजरि त्वरित, हुव वलदेव हजूर ॥ ७ ॥

षट्पात्

करि इच्छन सत१०० दम्म पंच५ निष्क रु करिनी इक१ ॥
उरसुत्ती१ सिरुपेच२ जटित हीरक१ सौवर्णिक२ ॥
इम करि भेट सुजान ग्राम मइनाम अटन किय ॥
तहँ अवरोधन सहित महामति सिबिर प्रवेसिय ॥
करि कुच्च बहुरि नवमी९ अहन खंदोली सु मुकाम किय ॥
बिश्राम बहुरि दशमी१०दिवस मिलन अत्थ तहँ लार्डदिय८
रहि एकादशि११ तत्थ बहुरि द्वादसि१२ धरनीवर ॥
तेरसि१३ दिन पुनि रहि रु कुच्च चउदसि१४ किय सत्वर॥
चल्लत अकबर नगर तास गव्यूति२ प्रभू रहि ॥
चउ४ इक१ ५ साहब त्वरित उत सु आये मेलन चहि ॥
इनकेहु नाम उपपद सहित भिन्न भिन्न इह आनिये॥
सम्मुह उदंत आवन सबै छप्पय छंद प्रमानिये ॥ ९ ॥
आजम नायब लार्ड सिकत्तर जाके उपपद ॥
इमलटीम१ इम नाम प्रथम१ हुव हाजरि संसद ॥
दूजो२ मौलन२ सोहु किलट्टर पद स मजष्टर ॥
डीपरसन३ पुनि राम३ तिमहि उपपद सु कमिश्नर ॥
पुनि जंटमजष्टर रेडल४ सु डिपटी नेट किलट्टरहि॥
जंगी अनीकपति जहँ हुलसि आयो जनरल५ मेल चहि१०

हरिगीतम्

तजि अन्न सब्बन गब्ब वे५ हुतही बिछायत आइकैं ॥
जयसिंह ओ तस भ्रात बिजय सु सिंह पुब्ब मिलाइकैं ॥

उमराव दुर्जनसल्ल१ गोकुलसिंह२द्वै२ पुनि त्यों मिल्ले ॥
तिम महासिंह पउत्त दुज्जनसल्ल३ मेलनकों मिल्ले ॥११॥
पुनि खधजुट्टि मिलाप आपहि हमलटीनहुतैं करयो ॥
जनरल्ल१ रु मोलन३ आदितैं इक१ हत्थ भाविकपैं धरयो ॥
चढि वाह चल्लत चाह साहब वाम दक्खिन ह्वै चल्ले ॥
रहि अप्प मध्य निसेसज्यों वसुधेस अकबरपुर हल्ले ॥१२॥
इम शिविर अकबरनैर उपवन राम नामक आइकैं ॥
चउ४इक्क१।५साहब नैर चल्लिय सिक्ख सासन पाइकैं ॥
तब दुग्गतैं दस१०तीन३।१३फेरहु नालि कागनके करे ॥
अरु अप्प तस प्रासाद आइ रु आन्हिकादिक आचरे॥१३॥
पुनि रहत चउ४ घटिका दिवापहि अप्प तरनिन आरुहे ॥
प्रभु ताजवीवी मुकरबन क्रमि अप्प दिट्ठिनतैं छुहे ॥
रुहे१ छुहे अन्त्यानुप्रास ॥१॥
तस इक्खि उपवन१ तोपजत्रन२ अप्प तुरगारुह भये ॥
जो जत्र२ साहब सिट्टितैं तस किंकरन किय फरमये॥१४॥
सवितास्त भूधरपैं गये हुव शिविर दाखिल आइकैं ॥
रवि रहत घटिका नैन२ नवमी९ सोमवासर पाइकैं ॥
रथ तुरग आरुहि लार्ड मेलनवरा शिविरहि आइकैं ॥
तजि यान आवत तास सम्मुह अप्प२०।४सत्वर जाइकैं१५
करहू परस्पर सीस मात्र उठाइ भावुक त्यों भन्यू ॥
वल्लि भीमसिंह२०४।१कुमार पट्टप लार्ड मेलनहू बन्यू ॥
जयसिंह१विजय२सु सिंह सोदर कुमर अर्जुन त्यों मिले ॥
साहब सिकत्तर तास सन मिलि मोद पकज मन खिले१६
तिमही सिकत्तर हमलटीन मिलाप इडविटहू करयो ॥

अरु लार्ड बाम अबाम इडविट रहि रु संसद पद धरयो ॥
खुरसी स्वकीया मध्य राखि रु लार्ड बाम विराजयो ॥
चलि हमलटोन सिकत्तरादिक लार्ड बामक बैठयो ॥१७॥
अरु महाराजकुमार पट्टप अप्प२०२।४दक्खिन ओरमें ॥
स्वक२०४।४बंधु जय ओ विजयसिंह सु तास सन्निधि रोरमैं॥
अध तास अर्जुनसिंह बाबा ताज कुमरन पालजो ॥
अरु महासिंह पउत्त गोकुलसिंह दुज्जनसालजो ॥ १८ ॥
तस हेठ दुज्जनसल्ल नाथाउत्त खुरसिनतैं ठयो ॥
इत्यादि भटवर मुख्य राखि घटीदु२परिखद मंडयो ॥
लै अतर दुव२कर राम२०३।४पहु पुनि लार्ड अंगहि लाइकैं॥
दै पान सिक्ख बहोरि पूरब अप्प२०३।४ रीति पुगाइकैं ।१९।
दशमी१०बलाप हिताय औलनबरा बस्तु समाजयो ॥
तरवारि इक१ गुजरात संभव मुट्ठि हाटक प्रेसयो ॥
अरु समरपट दल२ चर्म३इक१ब'र्धा सु किरणापलूहरी ॥
इक१ बेणु मय सिबिका४बना॰.य टाटवाफियकी करी२०
तिमही हवद्द५ सु तारको लालित्य कुंजर प्रेसयो ॥
अरु कुमर पट्टप भीम२०४।१हित हय१साज राजत साजयो॥
उरसूत्रिका२ सिरुपेच३इक१मंदील४ सिवपुर जो भयो॥
बाणारसीज दुपट्ट५ नामक ब्रुठि कासहहू दयो ॥ २१ ॥
दुस्साल६इक१त्यौं गरमपोसक७ स्वर्णमय घटिका८दई ॥
ताकै हुती इक शृंखली पुनि सो सुबर्णमई नई ॥
दुव२ नैन मय दुरबीन९ इक१ सौवर्णमासि आदान१० जो ॥
अरु कलमदान११ ससाज ओ बन्नात१२ रंग दुरभोनजो२२
इम लार्ड प्रेषित बस्तु जो सब अप्प२०३।४स्वीकृतहू करयो

अरु तास मानुषकों पचत्तर७५भूप रुप्पय बिस्तरयो ॥
भूपाल हरितिथि१२ भरतपुर बलवत सहर सु थानभो ॥
तस द्वार जाइ तुरंग उज्झत सोहु सम्मुह आतभो २॥३॥
करिकैं परस्पर हत्थ मत्थ बहोरि भावुकहू भयो ॥
अरु तास करपर अप्प कर करि बामव्है परिखद गयो ॥
अरु राखि दक्खिन अप्प२०३१४भो खुरसी अदक्खिनपें ठयो
इक१ नालिका तहँ देसकाल उदंत मोदमई भयो ॥ २४ ॥
गहि अतर कर बलवत हहनइद२०३१४ अग लगावनों ॥
बलि सिक्खदै अति मोद जुत करि पुव्वक्रमपहुँचावनों ॥
कर उभय२ उत्तमअग भो बलवंत स्वक गृहमें गयो ॥
चहुवान अब्ज निसापको बलि आन डेरनहू भयो ॥२५॥
गणनाथ तिथि४ दिन आगरापुरतें सु कुच्च प्रभू भयो ॥
अजमादपुर बलि विं८पईस मुकाम बाहिनिकों दयो ॥
तिथि५नाग पीरोजा सु बाद बिभावरी पुनि त्योंरहे ॥
तिम पष्टि६का बिश्राम सक्करबाद जाइ रु उम्महे ॥ २६ ॥
किय सत्तमी७ बुधवार४ वास धरोल नामक गाममैं ॥
तहँ आइ साहब टालबट सँग रहन यात्रा याममैं॥
तब उट्ठि गहिपतें प्रभू पयच्यारि४ सम्मुह जाइपें ॥
पुनि हत्थ दोउ२न मत्थ माल उठाइ भावुक पाइकैं ॥२७॥
कथ टालबट नरपालतें पुनि अमा जावनकों कह्यो ॥
चहुवान अब्ज दिवापनैं सुनि एह ओपितहू चह्यो ॥
आदेस जीवनलालतें तस सग भोलि सुजानकों ॥
जो कहैं साहब एह मिलनसों कथा सब आनकों ॥ २८ ॥
इम अग्ग साहबकों चलाइ रु अष्टमी८ सु प्रभातही ॥
करि कुच्च मैनपुरी समीप महीप सत्वर जातही ॥

पुरतैं सु साहब आइकैं विज्ञप्ति भूपतितैं कही ॥
प्रभु अप्पतैं पुर साहबन मिलनार्थ प्रीति घनी चही ॥२९॥
अरु अप्प सम्मुह आइबे सुहि ढंग परिसरपैं खरे ॥
तसमात चल्लहु बेगहू ब मिलाप आपहितैं वरे ॥
इम नालिकिस्थ प्रभू चले विज्ञप्ति साहब पाइकैं ॥
उततैंहु मैनपुरीस्थ साहब भूप सम्मुह आइकैं ॥ ३० ॥
मिलि मत्थ हत्थ लगाइ दोउश्न ओ अनामयहू करे ॥
अरु सत्थ साहब लै महीपति आइ डेरन उत्तरे ॥
करि सिक्ख साहब द्वारतैं चढि तुरग रथ पुरमैं गयो ॥
इत होइ दाखिल तूर्णही कटिबंध भूपति उज्झयो ॥ ३१ ॥
दिवसेस घटिका१ इक्क१ रहत सु शिविर साहब आतभो ॥
तस संग रीवाँनगरके सुभमनुज संसद पातभो ॥
कछवाह भेट गनेससिंहहिं पंच५ रूप्पयतैं करी ॥
अर नयन२ वर्तुलतैं निछावरि अक्खि सुभ प्रभु आचरी३२
भानेज बैठकपैं तिन्हैं प्रभु अग्ग बाम बिठाइकैं ॥
अरु धाइभ्राता रत्नलाल सलाम१ बलि२ किय आइकैं ॥
पुनि देसकाल उदंत साहब अक्खि पुरपति संक्रमे ॥
अरु रत्नलाल गनेससिंह स्वईस कथ इम कहि नमे ॥३३॥
प्रभु विश्वनाथ स्वईसहू ब जुहार मालुमहू करयो ॥
विज्ञप्ति सुनि तस भद्र आखि स्वसीस छीबन कर परयो ॥
दै सिक्ख डेरन तास ओ कटिबंध अप्प निवारयो ॥
करि नित्यकर्महि आदि सर्बरिहू मुकाम तहाँ दयो ॥ ३४ ॥
रयो१ दयो२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
कविबार६ नवमी९ अर्क उग्गत कुच्च सत्वर ओ करयो ॥
प्रभु विवर नामक ग्राममैं दलपात जामिनि भो परयो ॥

सनिवार७ दसमी१० दिवसछपरामहू जाइ रु ग्यौंरहे,
एकादसी११ गुर१ साहिगज मुकाम राखन उम्महे ॥ ३५ ॥
पुनि चंद्रवासर२ द्वादसी१२ मीरासरायहि पाइकैं,
अरु ह्वाँ फरुक्काबादतैं मिलनार्थ साहब आइकैं ॥
मिलि देसकाल उदंत अक्खि रु सिक्ख साहबकौं दई,
बिल्लोर होत मुकाम चउदसि१४ छुटि दिवनिस ह्वाँ भई३६
पुनि तत्थ पुग्गिाम दीह सक्ति प्रसाद मेलनहू रहे,
शिविराजपुर पति सम्मुहाऽऽगम कोस इक१ रहि उम्महे ॥
तब मेघ बुद्धिनतैं प्रभू तिनकोहु द्रग प्रपानभो,
आदेस तस सतकारकौं बलदेव अत्थहि दानभो ॥ ३७ ॥
बलदेवहू ब प्रधान सत्वर तास पुरप्रति जाइकैं,
अनुशिष्टि जिम सतकार तस करि सिबिर अप्पन आइकैं
अरु सत्थ साहबतैं महीपति अग्ग जान कहातभो,
बलि मिलन कन्ह पुरत्थ साह—— सुनि तहँ पातभो ॥३८॥

॥ दोहा ॥

सुचि४मास रु पडिवा१ असित, तजि बिल्लोरहि तात ॥
चढि चल्लिय शिविराजपुर, हरि जिम बिभव सुहात ॥३९॥
सुनि इम सक्तिप्रसादहू, प्रभु सम्मुह मुदपाइ ॥
पुरतैं वे गव्यूति२ पर, आधिप मिलन रहि आइ ॥ ४० ॥

(षट्पात्)

सम्मुह सक्तिप्रसाद आइ कर मत्थ लगाइय ॥
तब प्रभु आनन द्वयस अप्प सय इक१ उठाइय ॥
कुसल परस्पर कहि रु क्रमिय डेरन दुव२सत्वर ॥
सिक्खहु सक्तिप्रसाद करि रु किय गमन द्रग पर ॥
बलि रहत अट्ठ८ घटिका दिवस महमानी प्रेषित करिय ॥

प्रभु पंच सतक५००नाणक बहुरि पंचक५मन पक्कान्न दिय॥४१॥
कुच्च दोजिर२दिन करत सचिव तस आइ शिबिर तहँ ॥
भूपति भ्रातन माहि नाम जहुवारसिंह जहँ ॥
करजोरि रु किय अरज प्रभू प्रासाद पधारहु ॥
मामक भूपति मिलि रु बहुत दुव२ प्रीति बढारहु ॥
सुनि एह अरज चढि तुरग चलि पुरप्रति सत्वर संक्रामिय॥
सिवराजपुरप उततें सुनि रु महिपति सम्मुह गमन किय।४२।

[दोहा]

पुर परिसर नृप पाइ पुनि, मिलि कर मत्थ मिलाइ ॥
कियउ अप्प उन जिम सु कर, अरु दुव२ महलन आइ।४३।
पहु तहँ सक्तिप्रसादहू, बैठिय नृप दिस वाम ॥
स्वभट सर्ब अपसव्यहू, इम क्रम राखिय आम॥ ४४ ॥
पुनि भट सक्तिप्रसादको, उग्रसिंह अभिधान ॥
अरु जुहारसिंहहिं नजर, किय माखन दीवान ॥ ४५ ॥

[षट्पात्]

प्रभुकें इक१ सिरुपाव पंच५ तखतोमय तिन किय ॥
असि इक१ पट्टिस एक१ स्वर्णमय मुष्ठि समप्पिय ॥
दंती इक१ कुथ सहित तास होदन सु कष्ठ मय ॥
तिम बनात कुथ साजि तुरग किय भेट महारय ॥
पंचदश अधिक रूप्पय सतक११५ ये प्रभु नजर निवेदये ॥
महाराजकुमर अत्थसु बहुरि सिरुपावादि समप्पये ॥ ४६ ॥

दृये१पये२अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

पंचक५ तखती प्रमित दियउ सिरुपाव१ खङ्ग२ पुनि ॥
पट्टिस३ हाटक चोक१ मुष्ठि२ किय नजर अच्छ चुनि ॥
तुपक इक१।४ तिम तुरग५ रजत भूखन शृंगारित ॥

किपउ भेट तिम द्रम्म भूत५ भूपाल निष्क१ मित ॥
इम करत अप्प प्रभु उच्चरिय हमरो अब जालाअटन ॥
तसमात यहै दसतूर सब भूपति तुम रक्खहु भवन ॥४७॥

॥ दोहा ॥

पुनि प्रभु साक्रिमसादकों, दृढ पय घोटक दिन्न ॥
राजत भूपन सहित रय, क्रम शिरुपावहिँ किन्न ॥ ४८ ॥
तखती पचक५ केरसहु, अरु तोमर सुभ तास ॥
तस नेउर करि रजत मय, ललित दिय रु हुल्लास ॥ ४९ ॥
करत कुच्च कल्ल्यानपुर, प्रभुकों तब पहुँचान ॥
महिपति महलान द्वार लग, उमगि कियो उन आन ॥५०॥

॥ षट्पात् ॥

कुसल परस्पर करि रु दुव२हि कर मत्य द्वपस दिय ॥
करि तस प्रभु सतकार क्रमन कल्ल्यानपुरहिँ किय ॥
इम चल्लत पटसदन पंथ उपबन इक१ दिट्ठो ॥
प्रभु सद्यादिक कर्म करन तहँ जाइ पइट्ठो ॥
असनादि कर्म तहँ करि अधिप रहत घटी१ दिन संक्रमिय
सर्वरी पच५ घटिका गयैं अंसुकसदन प्रवेस किय ॥५१॥

पद्धतिका ॥

किय कुच्च तृतीया३दिन दिवान, सुकथा जु एह साहब सुजान२
जनरल जग आ०हय कहत जाहि,आमय बहु वासर तास आहि५२
तातैं सु मजष्टर कालडीक, अधिपति मिलाप भेजिय सुठीक ॥
पुनि सुनि रु टालबट मोद पात, ए दुव२हि मिलि रु तजि पुरहिँ
आत ॥ ५३ ॥
कंपू रु फन्दपुर बिच मिलाप, करि तत्थ बिछायत हित अमाप ॥
तहँ रहिय उभय२ साहब हिताप, प्रभु तास बिछायत अप्प पाय५४

जज आदि मजष्टर कालडीक, जानि रु प्रभु आगम अति नजीक
तब कालडीक तजि अश्वतात, अति प्रीति बिछायत प्रथमआत५५
तब अप्प टालबट तजि तुरंग, आइ रु बिछात मिलि तहँ उमंग ॥
करि कुसल परस्पर हित दिखाय, पुनि उभय२ प्रीति कर मत्थ
पाय ॥ ५६ ॥

जज आदि मजष्टर कहिय एह, जनरलहिँ अप्प शिव चविय नेह
प्रतिउत्तर दिय प्रभु पुनि पुनीत, व्यवहार तासतैं इम सुनीत।५७।
पुनीत१ सुनीत२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इम अक्खि तुरंगम चढि रु तीन३, साहब सह शिबिरहिँ क्रमन कीन
इक१कोस हुती नाली तुरंग, किय फेर त्रयोदश१३तिन्ह उमंग५८
कथ कालडीकतैं इम कहाइ, आतप बहु यातैं गेह जाइ ॥
इम कहि रु सिक्ख दै तास आप, लैं टालबटहिँ डेरन अचाप ५९
पुनि क्रमन चउत्थी४ किय प्रभात, सरसोल ग्राम दिय सन पात
कर कुच्च पंचमी५ दिवस राम२०२१४, कल्यानपुरै दिय पुनि
मुकाम ॥ ६० ॥

विश्राम फतैपुर षष्ठि६कासु, तहँ रहत घटी दुव२ दिवस आसु ॥
साहब चउ४ आये मिलन काज, सुनिये तस आव्हय राजराज६१
उपपद सु मजष्टर सुहि थरंट१, नायब सु मजष्टर आदि जंट ॥
पलियम जु पिरासन२नाम ताहि,इम रीढ३नाम साहब सु आहि६२
साहब सु टालबट४सत्थ जोहि, मिलि च्यारि४सभा आये सु मोहि
अरु अस्त्र बिछायत लग उताल,आतहि तब सम्मुह क्रमि नृपाल६३
मिलि सबन मत्थ कर तब मिलाइ, आनन तक प्रभु कर जबहि
आइ ॥

करि कुसल परस्पर हित बढारि, प्रभु बैठि तखत संसद पधारि६४
दिस बाम दुलीचनहू बिछाइ, तिहिँ उप्पर साहब सब बिठाइ ॥

छाइ१ ठाइ२ अंत्यानुप्रास ॥ १ ॥

करि समय वृत्त गहि अतर दान,चवि सिक्ख लगायो चाहुवान६५
किय क्रम पुरी साहव पुरस्थ, तत्तव टालवट रहिय सस्थ ॥
इक सिविर अत तारा स आहि, प्रभु अप्प१टालवट२दुव३माहि६६
अव वहुरा जीवनलाल आइ, पुनि हुकम हमीपदखाँ सु पाइ ॥
किय मत्र अद्ध घाटिकादिवान,दे सिक्ख ताहि किय तखतआन६७
वलभद्र हुतो नागोध पट्ट, दिन दिवस सोहु लग्गो कुवट्ट ॥
साहव अनाम किय केंद जाहि,गक्खिय प्रयाग निवसथ रसाहि६८
तस राघवेंद्रसिंह जु अपत्य, दिय साहव तासहि राजकृत्य ॥
सुभ मनुज तिन्है भोजिय भुवाल,सोती सु मारफत कृष्णलाल६९
पौराणिक कासीनाथ२ पात, अरु पुगोधाहि नदन उम्हात ॥
सो रामरसील२ नाम ख्यात, पंडित३ अनाम मिलि सभा पात७०
दे आगिख अक्खि रु भद्र भूप, इक१ तुपक निवदिय पुनि अनूप ॥
टद्दरी सु जात सौवर्ण अग, अरु कुद रजतमय कलि अभग॥७१॥
त्यारी सु राजती वहुरि सत्थ, वलि सम्मुह पैठि रु मिसल पत्थ ॥
अक्खिय जुहार नृपअस्मदीय, सुभ आक्खिय तिन्ह पुनि तस सुहीय
प्रभु पूछि राजवृत्तान्त सर्व, दिय सिक्ख सिविर हित करि अखर्ब ॥
पट्टप सु भीम२०३।१ आयउ कुमार, आमय मसूरि सिंधूततार॥७३॥
करि नजर निछावरि मिसल लेन, तस पूछि अनामय सिक्ख देत ॥
किय कासमहू सप्तिम७ मुकाम, रीवाँपुर आगम सुनर राम२०२।४
मथुराप्रसाद१ भूसुर भुवाल, नारायन२ पाठक तिम उताल॥
सवध रचन तहँ दुव२हि आइ, इनकी सु प्रभू पुनि अरज पाइ।७५।
अरु वहुरा जीवनलाल थान, आरुहि गज उप्पर कियउ आन ॥
ताजिगजरु शिविर प्रविसे सु विप्र मिलि कुसल आक्खि अरु मत्राछिम
तव वहुरा जीवनलाल१ तत्थ, अरु अमृतलाल२ भाता सु अत्थ ॥

तीजो३ वकील हम्मीदखाँहिं, आचारज आसानंद आँहिं ॥ ७७ ॥
नृप विश्वनाथ इम कथन गेय, ममगेह पुलिका तुमहिं देय ॥
सुनि मंत्र एह घटिका सु तीन३,पुनि जीवनलालहिं सिक्खकीन७८
अरु बत्त नाँहिं स्वीकार एह, बलि विप्र गय दुव२आसु गेह ॥
पुनि नयन२ सप्तमी७ दिन प्रभात, प्रभु सरैई सु किय सेन पात७९
करि कुच्च अष्टमी८दिन सुकाम, पहु दियउ कर्सोया नाम गाम ॥
इक१कोस हुती गंगा उहांसु,अवरोध सहित किय गमन त्हांसु८०
करि स्नान धेनु दुव२दियउ दान, इंकिय निज डेरन चाहुवान ॥
इम आइ शिविर सर्बरि वितात,पुनि करिय कुच्च नवमी९प्रभात८१
मँगतीपुरा सु प्रभु दिय मिलान, दसमी१०किय हुमनगंज थान ॥
एकादशि११वासर सोम पात,अति उमगि प्रयान सु राज आत८२
संमट१रु हलीहर२समट३नाम, कपतान लय३हि उपपद सु काम
आइउ प्रभु सम्मुह अर्द्धकोस, जो जनरल साहबकै भरोस॥८३॥
मिलि कमन बरब्बर बाम भाग, प्रभु आइ शिविरसन्निधि प्रयाग॥
तस दुग्ग बरब्बर बाग ताहि, अवनीपति तामैं रहन आहि ॥८४॥
किय शिविर तत्थ प्रभु हुकम पाइ, अवरोध रु भट सब शिविर आइ
प्रभु सिक्ख साहबन पुनि समप्पि, कटिबंध निवारन बहुरि थप्पि

॥ दोहा ॥

श्रीप्रयाग संज्ञा किते, बदत इलाहाबाद ॥
किमहु द्रोहु पै पाप गज, गज्जत सिंह निनाद ॥८६॥

॥षट्पात् ॥

चढि तुरंग किय कमन अप्प माधवबेनी पहँ ॥
करि मुंडन पुनि स्नान अस्थि पूजन प्रभु किय तहँ ॥
प्रनमि भूप उर द्विपस मोद सह गमन नीर किय ॥
पितरन पुनि करि स्तवन अस्थि कर अप्प प्रवेसिय ॥

आप्लवन करि रु पुनि धेनु इक१उभयमुखी दिय भूसुरन,
बलि महुर पच५दै नित्य करि कियउ प्रभू डेरन गमन।८७।
द्वादशि१२ दिन नृप सदन गवरनर जनरल लार्डहु,
नाम अलीनवराहु तास प्रतिहार आइ पहु ॥
अरज कराइय एह लार्ड पहु मिलन अज्ज चहि,
अरु वकील नरनाह हमिदखाँ वृत्त एह कहि ॥
सुनि यह अरज प्रतिहारप्रति उत्तर दिय तुम इम चवहु,
अज्ज करि पितर तर्प्पन बहुरि कल्हि मिलन हमरो चहहु॥८८॥
इम कहाइ चढि अधिप चलिय गगा१मिलाप तहँ,
सरस्वती२जमुना३हु इक१ हुव नीर आइ जहँ ॥
पचम५ नामक गुरुहि बहुरि बुधजनन बुलाइय,
शास्त्र उक्त विधि सहित श्राद्ध तिन प्रभुहिं कराइय ॥
दे दान द्विजन पचम सु मुख रस६घटिका जावत रजनि,
आरुहि सु अर्थ नमि द्विजनन शिविर प्रवेशिय महीपमनि८९
तेरसि१३ दिन पुनि रहत गमन साहब मिलाप सन,
नाम अलीनवराहु गवरनर जनरल कमरन ॥
भेजिय सम्मुह त्वरित इस्तरेजी सु सिकत्तर,
सचिव लार्ड१को बहुरि नाम नाहि सु साहबवर ॥
सकटो१तुरंग चढि पुनि दुव२सु आइ रु मिलि प्रभूतें सुमन,
कर मत्थ करि रु सुभ लार्ड कृत अग्ग प्रभू सह किय अटन ॥९०॥

॥ दोहा ॥

पहुँचत कमरन अधिप तहँ, चोक अनापत पाइ ॥
अयमय नालिनके उतसु, तेरह१३ फैर कराइ ॥ ॥ ९१ ॥

॥ षट्पात् ॥

कमर लार्डसन क्रमत इस्तरेजी१ पुनि आइरु ॥

मैंडक२ साहब आइ बहुरि अतिमोद बढाइरु ॥
करन परस्पर सीस कुसल करि कसर प्रवेसत ॥
उततैं सम्मुह लार्ड द्वारलग सत्वर आवत ॥
मिलि खंध जुट्ट भावुक भनि रु वलि लगाइ दुव२ मत्थ कर॥
संसदहिं पाइ साहब सहित खुरसिन उप्पर बैंठि वर ॥ ९२ ॥
बैठिय नृप दिस बाम अलीनबरा१ सु लार्ड तहँ ॥
मैंडक२ बैठिय सव्य बहुरि जयसिंह१ विजय जहँ ॥
याके अध भट१ सचिव२ तीस३० अमुकेर मुदित मन ॥
मध्य विराजिय अप्प समय चवि कृत धाराधन ॥
घोटक१ मतंग२ भूखन३ तुपक४ वरआदिक प्रभु भेट दिय
इम तुपक१ तास पुर जात पुनि नाम रफल करि नजरकिय९३

॥ दोहा ॥

किय अवरोधन सह क्रमन, गंगातट प्रभु न्हान ॥
मज्जन करि डेरन गमन, चउदसि१४ दिन चहुवान ॥ ९४॥
अमा३ दिवस पुनि गंगतट, अंतेउर सह आइ ॥
कियउ स्नान आदिक प्रथम, ग्रहन सगम तहँ पाइ॥ ९५ ॥
प्रसू दुव२हि किय दान पुनि, रजततुला प्रभुअप्पि ॥
अंबा अमानकुमरी उमगि, बैठि रु विप्र समप्पि ॥ ९६ ॥
महिषी स्वरूपकुमरी दियउ, द्विजन दान मुद पाइ ॥
कथन सरिस पुनि अप्प करि, उमडित डेरन आइ ॥ ९७ ॥
पड़िवा१ सित पंचम सुरहिं, महिप बुलाइ मिलान ॥
पूजन करि तस प्रीति सह, दियउ अप्प कर दान ॥ ९८ ॥

॥ षट्पात् ॥

इक१ मतंग बन्नात सिरी कुथ सहित समप्पिय ॥
हाटक भूषन१ तुरग२ बहुरि बन्नात जीन दिय ॥

सिरुपाव१।३रु सिरुपेच१।४कटक१।५उरसूत्रिका१।६हितिम
धेनू दुव२ शिविका१ रु निष्क८ पंचक५ रुप्पय९ जिम ॥
इखुख५०९सोहु पचक अरथ गाम१लोहुली१।१०निष्कदुव२
इम करत बहुरि अवरोध सन भिन्न भिन्न तहँ दान हुव॥९९॥
दोजि२ दिवस उपवीत लियउ प्रभु ब्रह्मचर्य पुनि॥
पचमि५ दिन लौ अप्प भीम२०३।१ कुमरहि सुभटन चुनि॥
शास्त्रउक्त विधि सहित भीम२०३।१ सह सुभट सधाइय ॥
दियउ दान भू१ भर्म२ द्विजन बहु मोद वढाइय ॥
षष्टिका६ दिवस हुवे मेघ झर सप्तमि७ बुधहिं मिजानरहि
अवरोध सहित एकादशिय११चालिय गगतट न्हान चहि१००

मनोहरम्

भूप दशाश्वमेध उप्पारि पधारि पुनि,
अप्प कर न्हाइ भरे दुव२ घट प्रचाहतैं ॥
तर्प्पन रु नित्यकर्म आइ करि तीर्थ द्विज,
देकैं गो१ सनिष्क२।१ द्रम्म३।५ पंचक५ उछाहतैं ॥
पुनि प्रभु अश्वदश१०मेधके वितर्द पर,
जाइ रु प्रनाम कियो पर्वईके नाहतैं ॥
निष्क इक१ नाणक२।१ महीपति व्हाँ भेट करि,
भोजन द्विजन दये रुप्पय सलाहतैं ॥ १०१ ॥
शिविर प्रवेसि पुनि द्वादशी१२ दिवस प्रात,
भेजिय हमीदखाँ वकील लार्ड घरकों ॥
जाइ तहँ मैंडक सिकत्तरसों अक्खि इम,
लौचलो हेरन हमारे गवरनरकों॥
जाइ तिन लार्ड अल्लीनबरातैं एह कही,
चाहहू मिलाप आप बुन्दीधराबरकों ॥

बहुरि हमीदखाँकी अरज यहही सुनि,
आवत शिबिर प्रभु लेकैं सिकत्तरकों ॥ १०२ ॥
साहब सिकत्तर वजीर नाम डोरन१ यो,
कालविल२ त्योंही हरीसन३ हलीहर४कों ॥
लार्ड अलीनवराको अमात्य गखन तोस,
समरल६ नाम पैं कुहात सिकत्तरद्कों ॥
अंसुकसदन ईस गाइब७ खुरम८ सोही,
स्यंदन सदन ईस आयो रागर०२४घरकों॥
टालबट९ आयो त्यों उमगि नहिपाल पुनि,
जनरल१० जंगी ईस तजिकैं गुमरकों ॥ १०३ ॥
बैठकै चउअनको तुरंगरथ इक१ तापैं,
लार्ड चढि सिबिर महीपतिके आतभो ॥
एह सुनि लार्ड अलीनवराके सन्मुहकों,
जीवनसहितलाल१ सचिव पठातभो ॥
महासिंहउत्त भट धौंकल२ रु गोकुल३त्यों,
सासन भुवालकेतैं त्रिकन जातभो ॥
जाइ मिलि उक्त लार्ड साहब सहित सब,
सिबिर महीपतिके उमंगि सु आतभो ॥ १०४ ॥
शिबिका अरोहि प्रभु सन्मुह बहुरि जाइ,
मिलिकैं परस्पर लगायो सीस करकों ॥
कुसल दुहूँरघाँ होइ साहब बहुरि कही,
भूप हम सन्निधि विराजैं बत्त बरकों ॥
सुनिकैं नृपाल लार्ड साहबके वामभाग,
बैठि रु कुसल कियो भूप सिकत्तरकों ॥
मोदसह लार्ड भूपर मैंडकैं सिकत्तरहू,

बैठिकैं तुरगरथ आये वस्त्रघरकों ॥१०५॥
शिविर प्रवेसि लार्ड साहब सहित आप,
ससद पधारि सब बैठे खुरसिनतैं ॥
खुरसी स्वकीया मध्य राजतीपैं बैठे अप्प,
मेडक२६ सव्य बैठो— राम२०२१४ इनतैं ॥
वामभाग बैठो लार्ड साहब महीपतितैं,
समर जु आदि नव९ बैठे अध जिनतैं ॥
जीवन३ अमात्य हो हमिदखाँ४ वकील बैठे,
करन५ कल्यान६ आदि वीर अध तिनतैं ॥ १०६ ॥

(दोहा)

समय देस वृत्तांत चवि, करन मत्र एकत्त ॥
शिविर अत ए लार्ड सह, तिम मैडक क्रमि तत्त ॥ १०७ ॥
जीवनलाल बुलाइ जहँ, अरु हमीदखा आइ ॥
करि रहस्य इक१ नाडिका, पुनि पहु ससद पाइ ॥१०८॥
अतरपान पुनि अप्पिकैं,
शिरुपेच१।२रु दुस्साल१।३पुनि, जटित गिलगी१।४अप्पि१०९
मुत्तिनमय उरसूत्रिका१।५, पट्टिस१।६ निज पुरजात ॥
चोक स्वर्ण वलदार मय, तुपक इक१ दिय तात ॥ ११० ॥

(षट्पात्)

दती इक१।७ बन्नात सिरी कुथ महित समप्पिय,
तुरग२।८ दोइ२ सौवर्ण बहुरि राजतखन——दिय ॥
इत दे सिक्ख सुजान वाहय डेरन लग आइ रु,
भनि भावुक प्रभु लार्ड मत्थ कर दुहुँरन लगाइ रु ॥
चढि लार्ड तुरगस्पंदन बहुरि मोदित बँगलन गमन किय,
इकबीस२१फैरनालिन आधिपकारि कटिबंध निवारिदिय१११

॥ निश्शाणी ॥

चउदसि दिन झर मेघतैं डेरन रहि पाया ॥
पुनि पुणिमा नृप न्हानकौं गंगातट आया ॥
जानि तिथि त्तय जनककी तर्पन उमगाया ॥
मज्जन करि बिधि सहित श्राद्ध द्विजदान मिलाया॥११२॥
रजनी बित्तत बान५ बहुरि डेरनपर आया ॥
सावन पड़िवा असित तत्थ प्रभु रहन उम्हाया ॥
दोजि२ दिवस नृप दत्त लार्ड शस्त्रादि भिजाया ॥
तब नृप सचिवन अक्खिकैं तस मोल कराया ॥११३॥
च्यारिसहँस४०००सत अट्ठ८००पंचनभ५०रौप्प मगाय ॥
दै हमदिखां हत्थ लार्ड बँगलन भिजवाया ॥
कियउ नजर तहँ जाइ लार्ड लै मोद बढाया ॥
दिन चउत्थ४ दीवान शिबिर साहब छद आया ॥११४॥
कग्गर बंचि अमात्यहू सब वृत्त सुनाया ॥
उदयपुराधिप रान नाम सिरदार कहाया ॥
वृंदाबन सेवन करन अग्गैं तहँ आया ॥
सो अट्ठारह१८ दिवस रहि रु परलोक पलाया ॥११५॥
पंचमि५ दिन पुनि पाइकैं चर एह सुनाया ॥
जैपुर गोकुलचंद्रमा जयसिंह थपाया ॥
सेवक बल्लभ ताहिको गुस्सांइ कहाया ॥
नंदन गिरिधर सहित उमँगि डेरन पहँ आया ॥ ११६ ॥
तब प्रभु सम्मुह तास बाहय डेरन लग पाया ॥
नमन करन करजोरि प्रीति सह सीस नमाया ॥
अंसुकसदनहि लाइ बहुरि तिन तखत बिछाया ॥
प्रभुको चोका तखततैं अपसब्य बिछाया ॥ ११७ ॥

बैठि रु चवि वृत्तात समय दुहुँ२सख्ख दिखाया ॥
नजर तीन३ किय निष्क प्रभु पट्टिस पुनि पाया ॥
चोक स्वर्णमय तास समन करि सिक्ख दिवाया ॥
बाह्य शिबिर लग बहुरि आइ तिन मुद पहुँचाया॥११८॥
बलि प्रभु डेरन प्रविसिकैँ कटिबध विहाया ॥
षष्ठी६ दिन तिन सप्तमी७ अष्टमि८ तहँ पाया ॥
नवमी९ साहब मिलन कज्ज बादापति आया ॥
अत मुहम्मदजुल्फकार नव्वाब कहाया ॥ ११९ ॥
आनत डेरन दुग्गतेँ नालिन चलवाया ॥
पच अधिक दश१० फेरहू मालुम करवाया ॥
दशमी१०दिन पुनि शिबिर भूप साहब घर आया ॥
मैंडककेर सलामहू मालुम करवाया॥ १२०॥
भावुक सहित सलाम भूपतिप्रति दरसाया ॥
एकादशि११ बाराणसी पढि द्विज इक१ आया ॥
गधी केसवरामके सुत ससद पाया,
आठ्य सह हरवखस जो पढि नृप उमँगाया ॥ १२१ ॥
बैठक ताके गुननतैँ पहु रीझि दिखाया,
द्वादसि१२ दिन बुधवार४कोँ चढि अश्व चलाया ॥
कोटेश्वर सिव दरस काज प्रभु पुनि उमँगाया,
करि दरसन मृडकेर बहुरि गगाजल न्हाया ॥ १२२ ॥
नितपकर्म करि सदर ईस इक१ निष्क चढाया,
गुन३ घटिका दिन रहत भूप डेरन पुनि पाया ॥
मक्खनतोस१ रु टालबट२ जु जात्रा सँग लाया,
पधरावन प्रभु लार्डगेद साहब दुव२ आया ॥ १२३ ॥

॥ दोहा ॥

चढि तुरंग तिन सह चतुर, लार्डकेर लग जात ॥
आदि सिकत्तर मैंडकहु, अधिपति सम्मुह आत ॥ १२४ ॥

॥ षट्पात् ॥

भनि भावुक प्रभुकेर सीस कर मुदित समप्पिय ॥
प्रभु तव अप्प सु पानि मत्थ रक्खिय रु सुभ अप्पिय ॥
साहब मैंडक सहित लार्डबँगलौं सु प्रवेसत ॥
उमँगि अलीनबराहु प्रभू सम्मुह तहँ आवत ॥
कर सीस परस्पर कुसल करि कमरुअंत राजाइ दुव२ ॥
खुरसीन बैठि बेला अलप हाकिम सह एकान्त हुव।१२५।

॥ दोहा ॥

तुच्छ समय एकांत रहि, कुसल जंपि करि मिक्ख ॥
आये प्रभु२०३ डेरन उमँगि, रक्खि हर्ष तहँ तिक्ख॥१२६॥
चढि तरंड करि कुच्च पुनि, अमा३० तिथी दिन आप ॥
झूँसी नामक सहरहू, अंसुक सदन अवाप ॥ १२७ ॥

॥ पद्धतिका ॥

सित प्रतिपदि१ सोमवार२, सहिदादि बाद रहियत उदार ॥
बहुरि द्वितीया२दिवस कुच्च,विश्रामवरोटहि कियउउच्च१२८
त्त सिविर चंक्रमन गाम२०३, अति मुद कासीपुर आजगाम
द्विजन तहाँ करि न्हांन दांन,इंग्रेजन मेलन करि दिवांन१२९
७धवल पुनि सुज्जवार१, लै क्रमन कियउ कछु भटन लार
८ऽसित अष्टमि८जीव५आप,मुदसहित गया पत्तनमवाप१३०
सबन श्राद्ध तहँ भूरि दान, दै दंती अश्वादिक दिवान ॥
१० सासित षष्ठी६ सौम्य२ वार, करि कुंच रहिय चरखी उदार ॥ १३१ ॥
ल सहस्य९ पुनि दोजि२ आप, बाराणसि नामक पुर अवाप

अविसदतपस्य१२सत्तमि७सआर३, राजातलाव रहि पटअगार१३२
इम करत कुच्च प्रभु२०३पुनि विश्राम, नागोध दग व्याहन जगाम
पुनि सुक्ला नवमी९ लग्न पाइ, व्याहिय निसीथ मासाव जाइ१३३
सो चंद्रभानु कुमरी स नाम, वामाग अप्प करि राम२०३ बाम ॥
अतुकगृह आइ रु बहुरि आप, जाचकन अत्थ बहु धन वदाप१३४
नभ गगन नंद इक १९०० लगत साल, किय कुच्च मास मधु१
चलि कृपाल ॥
विश्राम कुच्च करि करि रसेस, बुंदीपुर सुभ दिन किय प्रवेस१३५

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम८राशौ रामसिंह चरित्रे पञ्चदशो १५ मयूखः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अभ्र गगन नव इंदु१९०० सक, अनँगतिथी१३ आषाढ ॥
पक्ख असित बुंदीस पुर, प्रविसे प्रभु गुन गाढ ॥ १ ॥
तदनंतर भट्टिय प्रथित, जैसलमेरु जनेस ॥
मूलराज बधुन समुद, आनिय डोला एस ॥ २ ॥

षट्पात्

कन्या राउत्त विजयकुमारि जीवन गुनगोरिय ॥
राउल ज्ञान द्वितीय२ रिद्धिकुमरी तिम आनिय ॥
पट्टप भीम२०४।१ कुमारकेर सबध दुहुँन भनि ॥
प्रोषित आक्खि रु तास कियउ सतकार महिप मनि ॥
केदारनाथ शिवकेनिकट बुरजसिकारहिं हित विजय ॥
उपवन बहोरि ज्ञानहिं अपिय रक्खिय रूपविलास रय॥३

॥ मनोहरम् ॥

ईसतिथि८ उप्पर कुमार भीम लग्न काल,

व्याहन पठायो पहु बुरज सिकारकों ॥
राउल विजयसिंह उत्त उपहार ठानि,
कन्या करग्राहन करायो कुमारकों ॥
अनल परिक्रम औ सप्तपदी आदि दैकैं,
वेदबिधि आये पुर तिहि बारकों ॥
नवमी९ दिवस रूपआदिक बिलास जाइ,
ज्ञानसिंह तनया बिबाही गुरु५बारकों ॥ ४ ॥
ग्यारह सहस्र ऊन११०००लक्ख दुव२०००००रुप्पय औ,
तुरग द्विषष्टि६२ अरु कटक दुसत्त७२भो ॥
अप्प प्रभु सप्प रविमल्ल कवि मास सुचि,
एकादसी११हूतैं बिजैदशमी१०लौं दत्तभो ॥
सुनिकैं उदंत यह जच्चक विदेशहूके,
आये नैर बुंदी प्रभु दव्य अनुरत्तभो ॥
सुकवि समाज कति मिलिकैं निवाजे आप,
बाजे जस ताजे जेके बजाइकतिपत्तभो ॥ ५ ॥

॥ पज्झटिका ॥

ात कोटरिन करि उछाह, औ द्वादस बलि आये बिबाह ॥
म सहित सुनिये रसेस, यह भोमसिंह आये सरेस ॥ ६ ॥
...सिंह कापरनिकेर, सकुटुम्ब रचिय आगम नफेर ॥
व्यादिसिंह दुर्गापुरीस, सिवसिंह इन्द्रगढके रईस ॥७॥
कुटुंब कुमर गह अवर पाइ, आंगद अधीस पुनिराम आइ ॥
त्यादिक आइ रु रहिय एस, आदरतैं रक्खिय सब इलेस ॥ ८ ॥
ारि सभा तास सतकार लेय, दै सिक्ख ताहि दिय बस्त देय ॥
नकरि बिबाह--राम२०३आप,मोदित किय कबिबुधभटअमाप९
हैं अब्द१९००जोधपुरके नृपाल, किय भाद्रैकादसि११मानकाल

पुरियाम१५दिन पैठो तखत पट्ट, थंभिय समस्त मरुराज थट्ट॥१०॥
इक बिंदु अंक ससि१९०१वर्ष माँहिं, साहब अजट बटन सु आँहिं
साहब सन सम्मुह प्रभु पधारि,हुव महलन दाखिल हितवढारि११
जयचर्ती नाल प्रासाद जाइ, उत्तरि अजट पुनि प्रीति पाइ॥
तस सिबिर द्वितीयक २ अहन आप, किय कमन महीपालक मिलाप ॥ १२ ॥

उत साहब सम्मुह आजगाम, करि सीस परस्पर करन राम ॥
प्रभु किय उपवेसन तखत पाइ, उपवेसन साहब सव्य आइ॥१३।
पुनि लैन दैन किय अतर पान, हुव दाखिल महलन इह भान ॥
महलन पुनि साहब हित अमाप, अर्जुन तपस्य षष्ठी६अवाप१४
—अभिमुख पायदाज जत्थ, मिलि किपउ परस्पर हत्थ मत्थ ॥
तदनतर वैठिय तखत राम, साहब सु दुलीचन रहिय वाम ॥१५॥
बेलाल्प राखि करि अतर ताहि, पहुँचावन पायंदाज आहि ॥
दे सिक्ख ताहि दिय वस्तु देय, धरनीन्द्र अप्प २०३ किय जो विधेय ॥ १६ ॥

अब सुनहु प्रभू२०३इहिं अब्द१९०१अत, इंग्रेजन किय जो रन उदंत
ठपासा१सतलज२रु वीच देस, आक्रमन सिखन करि लिय असेस
सप गगन निधी अरु इक १९०२ साल, तेरसि १३ तिथि भाद्रा ऽसित भुवाल ॥

महाराजकुमर लघु रगनाथ२०४।२,उद्भवन भवन भव सर्व आथ१८
लाहोर ईस तिनदिन दिलीप, हुव सिष्टि कंपनी मनु महीप॥
जवकरि इंग्रेजन जुद्ध जास, नालिन तससेना करि रु नास॥१९॥
बालि करि निरोध भेजिय बिलात, तस जननी चदा नाम तात॥
नैपालज अटवी रहन कीन, इंग्रेज राज्य तस किय अधीन ॥२०॥
गुन गगन अंक इक१९०३अब्द आत, भो तनय भुजिष्या जठर जात

अभिधा नारायनसिंह आइ, वय बहुरि बाल्य पंचत्व पाइ ॥ २१ ॥
पहु कच्छ मदनसिंहाभिधान, हायन इहिं१८०३ पट्टनि भयउ हान
तस बैठिय पृथ्वीसिंह पट्ट, गनि प्रभू चलिय सामान्य वट्ट ॥ २२ ॥
सक बेद सून्य ग्रह इक१६०४ आत, पट्टन दुरवंट पहु अप्प पात॥
वलि केसव उच्छव हित बखारि, सित राधमास पट्टनि पधारि२३
दर्शन करि केसवके दिवान, अक्षयतृतीय३ दिन पुनि विधान ॥
उच्छव अरु पूजन करि रु आप,सब करि विधेय गिरिरहि अवाप
करि बहुरि तहाँ प्रभु न्हानदान, वर्टन अजंट वलि कियउ आन॥
चर्मण्वति घट्टोपरि बिछात, अधिराज प्रथम तहँ अप्प आत ।२५।
साहब सपुत्र आइउ उहांहि, अप्प२०३पु पहु सम्मुह छदपद आँहिं
करि दुरदिस सीस कर भद्रभाखि,गालीचन साहब वाम राखि२६
बैठिय पहु गद्दी सित अवाम, अल्पहि पुनि वेला रक्खि आम ॥
दै अतर पान तस सिक्ख दिन्न,क्रम छदपद तस पहुंचान किन्न२७
राजेन्द्र राध सित नवमि९ राम, करि कुंच सु बुन्दी आजगाम ॥
सक बान गगन नव ससि १९०५ अवाल, किय कुमर नरायन सिंह काल ॥ २८ ॥
तप असित नवमि९ दिन बहुरि तात, रसरंग सुभद्र सुकुमरि जात
इहिं साक १९०५ अधिप परतापपाल, किय नगर करोली भाद्र काल ॥ २९ ॥
सुत तास मदनसिंहाभिधान, व्है भूप चार भट कियउ मान ॥
रस व्योम अंक भू १६०६ वर्ष आहि, लाहोर इँग्रेजन लिय उमाहि॥ ३० ॥
हय गगन अंक इक१९०७ होत साल, दुर्गापुर देवीसिंह काल॥
सुत संभूसिंहसु गिनि अभिन्न, दुर्गापुर सासक अप्प किन्न।३१।
इहिं सक१९०७ इंग्रेजन युद्ध किन्न, नृप बर्मातैं कछु देस छिन्न॥

गज गगन अंक इक १९०८ आत साल, पट्टनि सु अज्ज प्रविसे
सुवाल ॥ ३२ ॥
साहव अजट तहँ मिलन काम, सो जानहु मार्रासैंन नाम ॥
चर्मण्वति तरनी उतारि चाहि, आइय बिछात उप्परि उमाहि॥३३॥
प्रभु अप्प तास अभिमुख पधारि, आइय समाज बहु हित बढारि
कछु समय राखि दे मिक्ख तास, पहुँचावन पायदाज पास ॥३४॥
पुन दाखिल शिविरहिं हद्दभान, दिन द्वितिय२कियउ तहँ न्हान दान
कारि कुच बहुरि प्रभु अप्प राम, बुंदी पुर सत्वर आजगाम ॥ ३५ ॥
तदनतर वीकानेर राय, पहु रत्नसिंह तज्जिग सु काय ॥
सरदारसिंह तस पट्ट पाइ, जानैं कछु प्रभुतैं हित जनाइ ॥ ३६ ॥
ग्रह गगन अंक इक१९०९आत साल,कापरनि कियो बलदेव काल
सब मेटि विघ्न कापरनिकेर, महाराजा हलधर कियउ फेर ॥३७॥
रागिनि सेखावति हद्दराइ२०४, उज्जाऽसित तिन दिन निधन पाइ
वर्मा उपवर्तन नृप वहोरि, इंग्रेजन लिय इक१दुर्ग तोरि ॥ ३८ ॥
सक गगन इक नव ससि१९१० समात,
प्रभु मिलन अत्य सौधन अवाप ॥३९॥
किय करन दु२दिसकछु कुसल कारि, पुनि अप्प तखत उप्प-
रि पधारि ॥
वर्टन गालीचन रक्खि वाम, वेलाल्प रहि रु गय वस्त्रधाम ॥४०॥
उप किय अजट अजमेर जान, अब सुनहु वृत्त इत हुव दिवान ॥
एक्कादसि११आश्विन असित आत, पटरागिनि पहु पचत्व पात४१
तदनतर जीवाराम तात, ग्वालेरप जनकू नाम ख्यात ॥
कछु रोग पाइ तिहिं कियउ काल,सुत जीवारामसु भो भुवाल४२
सक भूमि इक्क निधि ससि१९११उदार, शुक्राऽसित दशमी१० शु
क्रवार६ ॥

मदनेस भल्ल धीदा उमाह, कुमरार्जुन पट्टनि किय विवाह ॥४३॥
तहँ त्याग अमित पहु राम२०१४ आप, मोदित दिवाह किय कवि अमाप ॥
सक इहिं१९११इंग्रेजन रूससाह, आरकंदन जीति रु किय उछाह४४
सय भूमि अंक ससि१९१२ लगत साल, आयउ अजंट मेसन भुवाल ॥
जयवतिय ताल उत्तरन जास, आगत अजंट महलन हुलास॥४५॥
अभिमुख पहु पायंदाज आइ, करिको परिकर पुनि सग मिलाइ॥
उपवेसन गद्दी कियउ आप, आसन सु सभ्य रहि हित अमाप४६
रहि समय तुच्छ तस सिक्खिदिन्न, पहुँचावन आदिक पुब्ब किन्न
तदनंतर जानहु नरनपाल, पट्टप कुमार वंसनवहाल ॥ ४७ ॥
उद्वाह करन भेजिय इलाप, सह जन्य कुंच करि तहँ अवाप ॥
सह मास९एकादशि११बुद्धवार४,इहिं लग्नभीम२०३पट्टपकुमार४८
राउल सु भवानीसिंह धीय, अभिधा गुलाबकुमरी सुहीय ॥
परनि रु बुंदीपुर आजगाम, दंपति लिय महलन दिवस वाम॥४९॥
पुन भूमि अंक मृगअंक१९१३साल, किय इंदगढप सिवसिंहकाल
संग्रामसिंह हुव तास पट्ट, बनि चलिय महाराजा कुवट्ट ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

मेसन साहब मोटि अरु, बर्टन आइ बहोरि ॥
हुव अजंट हड्डोतिको, मद अरातिगन मोरि ॥ ५१ ॥
बलानाथ इहिं सक बहुरि, प्रोष्टासित नरपाल ॥
रंगनाथ२०४१सिंहहिं कुमर, किय नागोधहि काल ॥५२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ रामसिंहचरित्रे षोडशो मयूखः॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

बेद इंदु नव ससि १९१४ बरस, तपा मास सित पाइ ॥
पहु हलधर पंचत्वपन, पुन्निम१५ दिन प्रकटाइ ॥ १ ॥
तब कापरनिय तस तनय, राजसिंह नरराज ॥
आइय बनि महाराज इत, गोरवादि सुभ काज ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रसू अप्प २०।३ जो पहु तदनंतर, उज्ज।८।३सित एकादशि११ बासर ॥
जो अमानकुमरी ति जनावत, पन पंचत्व मध्यदिन पावत ॥ ३ ॥
याहि समय १९१४ सेना इंग्रेजन, अज्ञावत्तज मनुज फिरे मन ॥
सत्तर७०ही पलटनके स्वामी, साहिब रेटकप्तान सु नामी ॥ ४ ॥
सासन गोरन एह सुनायो, टोटन सिर काटन प्रकटायो ॥
तामैं मेघजीन खल्लासिय, ए उदंत समग्र सु जानिय ॥ ५ ॥
इकदिन आयुधीय तहँ आइय, खल्लासी जातैं दक मगिय ॥
तबहि अदेय आयुधिक अक्खी, जब खल्लासि बात यह भक्खी॥६॥
मेद मिलित टोटन गो१ सूकर२, रद छेदन करिहो तब सत्वर ॥
जातिहु जबर पुराय फल पैहो, दक जब हमहिं पानकों देहो ॥ ७ ॥
इम सुनि चमू आयुधिक आयो, सब अज्जन वह वृत्त सुनायो ॥
तब कप्तान रेट तिन्ह मारि रु, इकदिन सर्व छावनिन जारिरु ॥८॥
ससुत मेम साहब बहु मारे, कति भूपनके सरन सिधारे ॥
सुनि यह कौन दयो तब सासन, बाहिनि जाहु उपद्रव नासन॥९॥
सेनासहित लार्ड तब आये, कारेजन सब मारि भगाये ॥
दिल्ली साहबहादुर सानी, अधिपतिता हिंदुन उर आनी ॥ १० ॥
पकरि सोहु तब साहब भेजिय, पिंसन करि रु कपमहँ रक्खिय ॥
तदनतर कोटापुर स्वामी, रामसिंह२१२ महाराव जु नामी ॥११॥

कायथ जैदयाल१ तस किंकर, भो महरापखान२ अनुचित धर ॥
मैंम१ पुत्र२ सह बर्टन३ मार्‌यो, बैभव लूटि सदन तस वार्‌यो १२
बाहिर कोटा निजबस किन्नौं, दुःख अमित भूपति सिर दिन्नौं ॥
॥ १३ ॥

सुनि यह वृत्त करोलिय सत्वर, भेजिय मदनपाल दल भूवर ॥
पुर अंदर कछु यत्न प्रवेसिय, जैदयाल दारुन कलि मंडिय ॥ १४ ॥
कग्गर लिखि अजमेर खिनायो, महाराव अति नम्र दिखायो ॥
सु सुनि लार्ड तब —क सजायो, अति अमर्ष कोटापुर आयो॥१५॥
कतिदिन दुरदिस युद्ध तोपन किय, दुसह ताव साहब तस सिर
दिय ॥

जैदयाल१ महरापखान२ जब, सुभट मराइ तजि रु बैभव सब१६
भीरुक मनि कोटा तजि भज्जे, बंबि बिजय साहब बल बज्जे ॥
मेटि सकल बिग्रह पुर करि मह, साहब गो अजमेर सेनसह।१७।
सक सर भूमि नंद ससि १९१५ जानहु, पुरिखाम१५ तिथि इस७
सुक्क१ प्रमानहु ॥
देवीसिंह पुत्ति दुर्गापुर, मृत गोविंदकुमारि अंतेउर ॥ १८ ॥
अष्टि नंद इक१९१६ हायन आवत, मैंनेजन मिलि धाटि मचावत
दुःख पंथजन बहुरि सु दिन्नों. बुंदिय मुलक धाटि बस किन्नों१९
तु तब तापर चक्क पठायो, रहि वन रोक सु समर रचायो ॥
कतिदिन कलि करि कतिक पलायन, कतिक नयारि चक्क कि-
य आवन ॥ २० ॥
इय भू अंक इक्क १९१७ मित हायन, फग्गुन१२ असित२ त्रयोद-
सि१३ पावन ॥
यन१ वन२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
प्रतिहारी किय महिषि उद्यापन, तापर लिखि रु निमंत्रित भूधन२१

कवि रविमल्लहिं दिपउ कृपाकर, बलि भूदेवहिं वित्त दियउ वर
तिनदिन भोमसिंह२०३तदनंतर,लागो चलन कुमग्ग अनयकर२२
बिगरन राज्य उपाय सु बलि किय, मीनें मनुजहिं सरन अमित दिय,
जब प्रभु अप्प इहाँतें सुभजन,भेजिय भोमसिंह२०३समुझावन२३
जाइ रु तिन अति नय समुझायो, इक्क न वृत्त तास उर आयो ॥१
उत्तमाग बिनु नक्क कहिय इम,कहो बिचारि ललित लग्गें किम२४
इम सुनि सब बुंदीपुर आये, तास उक्त सब वृत्त सुनाये ॥ १
सुनत गहन मैंनन मारन मन भेजिय चक्क गोठपुर भूधन ॥२५॥
ग्राम घेरि मैंने छन मंगिय, नहिंदै कहि रु भोम२०३ रन मंडिय ॥।
जब कुमार अर्जुन कलि किन्निय,दुसह ताप तोपन तससिरदिय२६।
कतिदिन कलह भोम २०३ गोलिन किय, भीरुक बनि रजनी
बलि भग्गिय ॥
नृप २०३ तस ग्राम सकल जब छिन्निय, कुमर सचक्क आगमन।
किन्निय ॥ २७ ॥
वसु वसुधा निधि इंदु१९१८अब्द मित,आवन किय बेलन अजट छत
पुब्बरीति सम्मेलन पहु किय,दृढ दिखाइ पुनि प्रीति सिक्ख दिय२८
तदनंतर इहिं सक१९१८इंग्रेजन, किय अजमेर नन्हजी पकरन॥
पुनि सु बिठूर भेजि गल अप्पिय, बोये बीज तास फल पक्किय२९
बाजगपज एह नखानिय, मिलि कारन कलि नन्ह प्रमानिय ॥
बलि वडोद संग्रहि सन्यासन, सोपुरपतिहिं दयो इंग्रेजन ॥ ३० ॥
सक इहिं बहुरि उदयपुर सासक, सिंहस्वरूप नामहुवनासक ॥
सभूसिंह पट्ट तस पावत, जे अकस्थन रीति जनावत ॥ ३१ ॥

[दोहा]

संवत इक निधि अंक ससि१९१९ तेरासि१३तैस१०रु स्याम
श्रीगङ्गोदक क्रम स्रवन, राजराज किय राम२०३१४ ॥ ३२ ॥

श्राद्धादिक सब बेद बिधि, पहु अप्प कर कारि ॥
सुभ मुहूर्त उडुदुर्गतैं, रहि केदार पधारि ॥ ३३ ॥

॥ पद्धतिका ॥

पुत सहित --- पडवा१पयान, दुवलान प्रवेशन किय दिवान ॥
मौजिष्य भ्रात त्रिक३ कियउ आन, ॥ ३४ ॥
अह बहुरि तृतीया३ आर३ वार, सो दिवस भयो प्रभुकोऽवतार ॥
करि पूज नवग्रह आदि केर, पटवास नयनपुर बेसि फेर ॥ ३५ ॥
रहि तहाँ चतुर्थी४दिन रसेस, आहूत सभा भटवर असेस॥
लै लंचा सामाजिक समाप, अंसुकअगार दै सिक्ख आप ॥ ३६ ॥
सितपक्ख पंचमी५ दिवस आत, पहु दियउ समीधी दल प्रपात ॥
विश्राम करत चोरू बलाप, तहँ सुजन टोंकपतिके अवाप ॥ ३७॥
दौलांत वजीर सु पहु नवाब, सुभ छद लै आये दुव२ सिताब ॥
पु अजीटग्गा अबदुल समनखान, विष्णुप्रसाद कायस्थ वान॥३८॥
सामाजिक किय दुव रत्नि समाज, करि नजर अरज कियहहुराज
पहु मामकीन अधिराज एह, नाणक रु सहस्र १००० नय करि
सनेह ॥ ३९ ॥
हंडोल हारहूरादि केर, मिष्टान्न एक शत १०१ नियन फेर ॥
हिमानिक लंचा लेहु लार, धरनीन्द्र अप्प ऊंदद-धार ॥४०॥
उडुनाथ उदित रस६ घटि अवाप, दै सिक्ख उज्झि पर्यरित आप॥
नि दुर२हुँन सभा बुलवाइ प्रान,सिरुपाव दियउ छदहित दिखात४१
क्रमन सप्तमी७ चाहुवान, आांमल साधवणु कियउ आन ॥
स नाम जवाहरमल्ल१ तात, अरु नायब बाजूलाल२भ्रात ॥४२॥
म नायब जन मनसुख३ तृतीय३, तित सुनसी नारायण४तुरीय॥
सम्मुह आये अद्धकोस, सुभ अरज नस्तरकि गत सतोस ॥४३॥
व दाखिल पटगृह हड्ड भान, पहु किय मिलान अष्टमि पड़ान ॥

नवमी९ दिनेस पुनि किय पयान, डुंगर मलारनें किय मिलान"
पदऊन कोस तँहँ पुनि नृपाल, आइय बिश हाकिम रामलाल
सुभ अक्खि नजर करि तिमसलाम,रहि तहाँ रत्ति धरनीन्द्रराम४१
वाटोदे दशमी१०दिन सुजात, पुर परिसर पन्नालाल पात ॥
ले लचा सुभ तस अक्खि आप, अधिराज बहुरि पटगृह पवाप४६
उग्गत एकादशि११ सौम्यवार४, जावत खुसालगढ पटअगार ॥
आइउ द्विज आमिल अद्धकोस,सिवदीन सु लषा किय सतोस४७
असुकअगार पुनि अप्प पास, सिवदीन पुत्त नारायनाऽऽस ॥
रहि द्वार कराइय अरज जोहि, ल्है हुकम सरबराकेर मोहि॥४८॥
तापैं पहु अक्खिय तावकीन, है रीति इक१ हम लिपउ तीन३ ॥
हमरे रु परस्पर एकचत्त,अब जानी यह तुम अप्रमत्त ॥ ४९ ॥
इम सुनि रु कराइय अरज एस, सामग्री किय पुब्बहि असेस ॥
सब पुब्ब माफ करिहे सुसंध, ल्है हुकम ततो वेहाँ प्रबंध ॥५०॥
सासन दिय सो सुनि पुनि रसेस, तष दिपउ सरबरा दल असेस
आवत अंतेउर गढकुसाल, मच्छीपुर जेमन कियउ काल ॥५१॥
मच्छीपुराप बलवत आइ, करि नजर पुहप कडोल काइ ॥
किय नजर सचिवी अप्प केर, प्राभृतक कियउ महिषी सु फेर५२
चैतनिक१ चाहुमव२ जोहि सत्थ, सतच्यारि४०० सगिध करवाइ तत्थ ॥
अंतेउर बेसिय शिबिर आइ, पहु रहिय तहाँ इम रत्तिपाइ ॥ ५३ ॥
करि कुच्च द्वादशी१२दिन दिवान, पीलोदे पुनि हुअ शिबिर आन ॥
तस सार्द्धकोस आमिल सुहात, श्रावक सुहि चुन्नीलाल भात५४
किय वलि वजीरपुरकेर भान, आमिल सु उदयचंदाभिधान ॥
लै भेट तास दे सिक्ख आप, अंसुकअगार पहु पुनि अवाप॥५५॥
हिंडौनि पात तेरसि१३ अनंद, आमिल बहोरि गुलआवचंद ॥

करि पावकोसलग नजर आइ, तहँ फेर रुद्र११ तोपन कराइ।५६।
लै सिक्ख गयो हाकिम सतोस,पहु किय उ शिबिर आगम प्रदोस
हिंडोनितैंहि सब सेन माँहि, इंधन तृनादि अरु भांड आँहि ॥५७॥
तहँ रहत चतुर्दसि१४ धरनिकंत, आमादसलेमाकेरहंत ॥
नामसु——————————, गोपेश्वरसरखा सु देवराव ॥ ५८ ॥
अधिकारि नरायनदास आइ, रहिद्वार मिलन बिज्ञति कराइ ॥
तब कहिय अप्परविचाहुवान,मान्योहम पुरिखाम१५मिलनमान५९
पुरिखाम१५ सर४ नाड़ी चढि पतंग,अधिराज मिलन हंकिय उमंग
पटथह गोपेश्वरसरखापाइ, अधिराज नमन करि भेट आइ ॥ ६० ॥
रहि पहर इक१धरनीन्द्र राम२०३१४, अंबुकयगार पुनि आजगाम
तप असित द्वितीया२दिन दिवान,लूटै सरिप किय तिलन्झिलान६१
तिथितीज३बयानैं किय सुकाम, हाकिम तत्र आगत मिलन राम
बलदेवसिंह तस नामधेय, इक्कोस आइ सम्मुह अजेय ॥६२॥
मातुल सु भरतपुर महिप केर, ताजि तुरग नजर करि गए फेर ॥
रहि तहाँ चतुर्थी४दिन रसेस, नाड़ी१इक१रहतहि अहन सेस॥६३॥
तत्रत्य सुजन पटद्वार पाइ, पक्वान्न द्व्यंक९२मन भांड लाइ ॥
सरसतक५००बहुरि नाखाकन सत्थ,महिमानिक सामग्री समत्थ६४
सुदपाइ पहू यह मानकान, भेजिय सु अत्र इम अरज कीन ॥
रक्खिय सु सर्ब सो सुनि रसाप, इम लंचा लै दै सिक्ख आप६५
तिथि नाग५दिवस तहँ मोद पाइ, साहब सु मिठाई मिलन आइ॥
तजि तुरग सभा करतहि प्रवेस,सम्मुह द्वि२पैंड क्रमकरि जनेस६६
बलि करत सलाम सु हित बढारि, तब तास तत्र टोपी उतारि ॥
सँल्लाप दुरविसि हुव सब बहोरि,एकांत करन कहि सुभटओरि६७
बाहिर उपवेसन करिउ सर्ब, रहि अप्प मंत्र कारन अखर्ब ॥

वशि भीम २०४१ कुमर पट्टप भुवाल, वहुरा अमात्य जविन सु
लाल ॥६८॥
करिमत्र उक्त सवही समेत, दुवर पाम वजत तिहिं सिक्ख देत ॥
छट्टी६ दिन चढ्ढत एक जाम, वलदेवसिंह पहु दरस काम ॥ ६९ ॥
हाजरि हुव ससद करि सलाम, करि नजर निछावर मिसल वाम
उपवेसनकिय अथ सुभटतीन३,कछुसमय१वत्त शास्त्रोक्त२कीन७०
तत जाम उपरि वज्जत तृतीय३, सिरुपाव सिक्ख दे गुनि स्वकीय॥
वलि आइ करोली जादवन्द, सो मदनपाल मेलन रसेन्द्र ॥ ७१ ॥
वलि होत सप्तमी७ सोमवार, अधिराज अप्प सम्मद अपार ॥
रवि चढत जाम ऽक१ राजराम, किय कमन शिविर तस मिलन
काम ॥ ७२ ॥
तजि तुरग प्रवेसत तहँ भुवाल, अभिमुख तव आइय मदनपाल ॥
मिलिकरि रु परस्पर हत्थ मत्थ, तत मेलन खधा जुट्ट तत्थ॥७३॥
मिलि वहुरि महाराज सु कुमार, पूर्वोक्त रीति करि सव अपार ॥
इम दुवरहि गद्दिकाउपरि आइ, पहु अप्प रहे अपसव्य पाइ॥७४॥
आत्मीय सुभट रहि तिम अवाम, पुनि मदनपाल वैठिय सवाम ॥
वामजु तस रक्खिय सुभट सर्व,दुहुँ२ओर भयो इम सभा पर्व॥७५॥
सागिर वत्त समयानुसार, करि कमन कियउ पहु मुद अपार ॥
पहुँचावन आइय मदनपाल, डोढीलग-भूपा मध्यकाल ॥ ७६ ॥
सप करि रु परस्पर वहुरि सीस, स्वस्थान गयो जाद्रव सुधीस ॥
उपवेसन सिविका अप्प आत, दस सत्त१७फेर नालिन करात७७
पहुअप्प सिविर आइय प्रजेस, नाड़ी इक१ रहतहि पुनि दिनेस ॥
पहु मिलन सुभट सहमदनपाल, आत्मीय शिविर आइउ उताल७८
नरयान छोरि पटद्वार पात, सम्मुह तहँ सत्वर अप्प आत ॥
सप दु २ दिस वहुरि हुव सीस रक्खि, अधिराज दुवरहि आमोद

आक्खि ॥७९॥

उपवेसन किय दुवरतखत आइ, पहु अप्प रहिय तहँ सव्य पाइ॥
पट्टप कुमार तहँ भीम२०४१ तात, अरु कुमर दुवरहि भौजिप्प
भ्रात ॥ ८० ॥

सुभट जु बलि आत्मक रहि सु वाम,रक्खिय सु महामाआदि राम
सम्मुह सु सर्ब कवि बुधन ढल्ल, मिश्रन कवीन्द्र तहँ अर्कमल्ल८१
ज्ञालित्य यावनी अमृतलाल, नीती सुहु संकर मुकटलाल ॥
तलाल१ टलाल२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इम राखि सर्ब अप्पन भुवाल, अपसव्य रहिय पुनि मदनपाल८२
अपसव्य चारभट तास रक्खि, अरु उचित समय वृत्तांत आक्खि॥
निस जात घटी त्रय३ सीख दिन्न, पहुँचावन पूरब रीति किन्न८३
उपवेसन किय नरयान आइ, दससत्त१७ फैर नालिन कराइ ॥
प्रामोद दुहुँरन इम रहि अपार, पहु मदनपाल गत पटअगार८४
उग्गत सु अष्टमी८ दिन दिवान, किय गाम नभेरै शिबिर आन ॥
नवमी९ सु भासकर बुध मिलंत,किय शिबिर फतैपुर धरनिकंत८५
कायस्थ सु हाकिम गुरुदयाल, इक१कोस आइ सम्मुह नृपाल॥
प्राभृतक निछावर करि सलाम,पहु अप्प सोहु गय उचित धाम८६
दसमी१० दिन मंडा कर मुकाम,द्वादसि१२खंदोली बलि विश्राम॥
पुनि गाम सैदआबाद पाय, हुव शिबिर चउद्दसि१४इक्कराय ॥८७॥
करि कुच्च अमावासि३० सोमवार२, हुव दाखिल इतरस पटअगार
सित पड़िवा१मंगल३दिन दिवाप, बलि काचकेर नगरै अवाप॥८८॥
बुधवार४द्वितीया२ दिवस पाइ, किय गाम सिकंदर शिबिर जाइ ॥
सोहन पुर चोथी४ दिन मुकाम,बलि कासगंज पंचमि५विश्राम८९
छट्ठी६दिन सूकरछेत्र पाइ, किय धारा गंगा शिबिर जाइ ॥
आप्लव करि सूकरछेत्र आप, करि भेट छपाधारा मवाप ॥ ९० ॥

कारि सवन पूर्णिमा १५ दिन दिवान, नाग १ रु गोर बाजी३ छिति ४ नृजान५ ॥
उष्णीष आदि सिरुपेच सत्थ, दिय दान सु गगागुरुहिं तत्थ ॥९१॥

॥ दोहा ॥

गगागुरु गोविंदकों, चाढि रु गज चहुवान ॥
दै पट संभूनाथ गुरु, आरुहि अस्व बिमान ॥ ९२ ॥
वस्त्रसदनके द्वारतैं, इम दुव२गुरुहि चढाइ ॥
महिपति राजकुमार सह, पहुँचावन तस पाइ ॥ ९३ ॥
गुरु नारिन दे वस्त्र गुरु, पिन्नस रथ सु बिठाइ ॥
इक निसान सादी कतिक, दे तस सद्म पुगाइ ॥ ९४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे　　　　　　　　　सप्तदशो मयूखः ॥ १७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

प्रतिपदि१ फग्गुन असित पुनि, गगधार तजि गेय ॥
मोहनपुरहि मुकाम वलि, सब कारि बेद बिधेय ॥ १ ॥

॥ मनोहरम् ॥

करत प्रयान श्रीदिवान राम दूजी२तिथि,
गाम कावनगरसो सिबिर सुहातभो ॥
बहुरि तृतीया३ सुक्रवासर बलापतिहू,
सैदाबाद आइ सुभ थूलन तनातभो ॥
फग्गुन चउत्थि४ स्याम सहादरे धाम राखि,
अकबरनैर षष्टी६ दिवस दिखातभो ॥
साहब प्रजंट नाम वेलन१ मुरुक२ द्रेरही,
सम्मुह दिवाप चढैं नाढी गुन३ आतभो॥ २ ॥
करिकैं सलाम ओ परस्पर भाविक भाखि,

साहब सहित अप्प डेरनलों जाइकैं ॥
अकबरनैर गये साहब दुरसिक्ख लैकैं,
अप्प प्रभु सिविर प्रवेसे हरखाइकैं ॥
एकादशी११ मंदवार जाम जुग२ वज्जतही,
हूतीहु पधारे लार्ड साहबको पाइकैं ॥
बेलन अजंट ओ सिकत्तर द्वैर साहबहू,
सम्मुह दसक१० अप्प डेरिनलों आइकैं ॥ ३ ॥
जातहि समीप लार्डसाहबके वस्त्रधाम,
आये द्वैर सिकत्तर न जानें ताके नाममें ॥
रजीडन्ट आयो पुनि साहबहू लारनस,
लैगये पहूकों लार्ड साहबके धाममें ॥
दी आनरेबल दी अर्ल आफ ऐलजिन,
आयो ऊठि सम्मुह त्रि३पैंड मेल काममें ॥
सीस कर करिकैंहू दुरदिस संलाप श्रेय,
बैठे पहु संसद जु लार्ड नहि आसमें ॥ ४ ॥
समय अतीत तहँ करिकैं कितोक आप,
कालोचित्त बत्त करी राजराज रामनें ॥
अतर लगाइ पान देकैं सकुमार लार्ड,
उठि दिय सिक्ख धर्मधारकके धामनें ॥
होत असवार लार्डकेर तहँ तोपनके,
सप्तदस१७ फैरहु कराये नेह नामनैं ॥
पाइ इम लार्ड प्रीति अंसुकसदन आइ,
उज्भयो कटिबंध यों अतीत जुग जामनैं ॥ ५ ॥
आर३वार असित चउद्दसि१४ तपस्य दिन,
बेलन अजंट आये पहु पधरानकों ॥

अरुहि अजट उक्त अप्प पहु अस्वरथ,
सेना सह त्वरित पधारे लार्ड थानकों ॥
पट्टप कुमार भीम२०४।१ अर्जुन रु गोबर्द्धन,
जगन्नाथ वावातिक अत प्रविसानकों ॥
जीवन अमृतलाल वीर बलवत भट्ट,
सत्थलै दिखायो अपसव्य चहुवानकों ॥६॥
तखत वितस्ति इक्क१ उच्चक विछाइ तापैं,
जातरूप जटित लगाइ खुरसी जहाँ ॥
बैठिकैं बुलाये लार्ड भूप रजवारेकेर,
सव्य अपसव्यहू बिठाये क्रमतैं तहाँ ॥
बेगम भोपालकी१ अपसव्यहू बिठाई पुव्व,
सन्निधि सिकत्तरो२पवेसन करयो वहाँ ॥
असि तास हेट्ठ ग्वालियरको नरेस जीवा३,
आसन अजंट कह्यो अप्प४को पहु चहाँ ॥७॥
भरतपुरेस५ भूप अप्प अध बैठो इम,
महाराव कोटा राम६ तातर बिठायोहै ॥
उत्तर अधीस७ अलउरको बिठायो तहाँ,
तास अध टोंकके नवाब८ थान पायोहै ॥
झालाकर पट्टनिको राजरानाँ पृथ्वीसिंह९,
रामपुर नबाव१० उत्तरोत्तर गायोहै ॥
अेक आधिराज अपसव्य लार्ड बैठो सब,
जानहु जनेस अथ सव्य क्रम आयोहै॥८॥
जैंपुरजनेस राम१ आसन सु सव्य कारि,
रजीडट लारनस२ईस रजवारको ॥
इतर अजंट३ ओ सिकत्तर४ सु ससंधाम,

राम नरनाह जानूं सर्व सुभ कारको ॥
दच्छिन जो सर्व रजवार भूप पीछैं तास,
आत्मज ओ भ्रात उपबेसन सुढारको ॥
जाके पिट्ठि सुभट ओ सचिव वलील स्वक,
ऐसैं करि आमकद्दयो धामजयधारको ॥ ९ ॥
राखिकैं कितेकबेर संसद बहुरि लार्ड,
सिरोपाव१ दत्तभो सु माला मुकतानकी ॥
अतरमगाइ लगाइ जु उत्तरोत्तरहू,
उट्ठिकैं दियउ सिक्ख सर्व निज थानकी ॥
अस्वरथ आरुहि स्वकीय क्रमैं भूप थान,
आरुहि तुरंगगति शिविर चुहानकी ॥
रहत दिनेस सेसनाड़ी कृत४ अप्प२०३।४पहु,
उज्झिय पर्यस्तिका विसेस करि तानकी ॥१०॥
दरस३० दिनेस सौम्य बासर बहुरि लार्ड,
मध्यदिन शिबिर पहूके आसु गाइकैं ॥
अंसुकसदन द्वारउज्झत तुरंग रथ,
सम्मुह क्रमि रु ताहि मोद दरसाइकैं ॥
भविक भनाइ भनि संसद सलाहै जाइ,
बैठिकैं सुविष्टर उदंत कछु पाइकैं ॥
सिरोपाव१ स्तंबेरम२ सप्तद६ सब लैचा लै रु,
दै लै सिक्ख लार्ड गयो सम्मद अमाइकैं ॥ ११ ॥
द्वादसी।८२ रहत नाड़ी नयन२ दिनेस सित,
आगरा किलद्दर बरून मेल आयोहै ॥
जीवन सु अंत लाल आदिक समाजी लोक,
सहित प्रजेस२०२।३ ताहि विष्टर बिठायोहै ॥

समय उदंत आखि रक्खिकैं कितेक बेर,
संक्रम चुहान साहबकों दरसायोहै ॥
जामिनी जुगल२ जात नारीजन नाथ अप्प,
आरुहि क्रमन काज बलन बढायोहै ॥ १२ ॥
सिविर बरोंदै सावरोध गाम ऐसे आइ,
वासर सु तेरसि१३ फतैपुर बितायोहै ॥
चतुर्दसी१४ चदवार४ नभेरे मुकाम करि,
शिविर बयानें राका दिवस१५ सुहायोहै ॥
पड़िवा१ – अर्जुन२ अधीस२०३।४ इम मधु१ श्याम,
गाम – सूरेंट धाम स्वजन –नायोहै ॥
मदवार७ दूजी२तिथि हइन अधीस इम,
रहत हिंडोनी बल थूल तनवायोहै ॥ १३ ॥
करौली मदनपाल भूपके प्रसस्त जन,
सुभट अमात्य आये पहु पधरानकों ॥
अभिधा ओंकार१ ओ मलूकपाल२बोलासिंह,
मत्री बलदेव ४ ए बलदेव सभा थानकों ॥
मुजर ओ नजर निवेदि लै मिसल कह्यो,
भावुक भनायो भूप जादवके भानकों ॥
बहुरि कहिय एह अनुकंपा करि ––,
ओमिति करोगे तूर्ण सबलक आनकों ॥ १४ ॥
अगीकार तास अरज करि तृतीया३ दिन,
शिविर वरोवाको कृपाल करवायोहै ॥
दिवस चतुर्थी४ क्रमै अस्व जु सवार इतैं,
भूप मदनेस उतैं अभिमुख आयोहै ॥
कोस इक१ तटिनी करौलीतैं उतरि नीर,

आइ अरवाक ठाढो राहि रु जितायोहै ॥
बावा ता कुमार नाम अर्जुन रु गोवर्द्धन,
जगन्नाथ सुत एस भावुक भनायोहै ॥ १५ ॥
महाराजकुमार पधारे पुनि भीमसिंह२०४।१,
अस्ववार अप्प२०३।४ मिले मदन मजापतैं ॥
दुहुँओर मुजरा स्वसीस सब भव्य कारि,
चंक्रम चुहान कर्‍यो सव्यक जु आपतैं ॥
उतरि नदीज जल उभय२ बिछात आइ,
गद्दीकोपवेसन ससव्य मुद मापतैं ॥
आप अपसव्य प्रभु रहिकैं विराज तहाँ,
पट्टप कुमार२०४।१ बैठे पच्छिम मिलापतैं ॥ १६ ॥
सुभट स्वकीय बलवंत राष्ट्रकूट पुनि,
जीवनादिलाल द्विक सम्मुह बिठायोहै ॥
बालू२ दिवान ओ ओंकारपाल२ अनपसव्य,
सव्य रहिकैं कितेबिर मनन मिलायोहै ॥
अस्ववार होइ दुव२ भूपन क्रमनक्रम,
सुभट समाज ओर पुव्वक्रम पायोहै ॥
नगर करोलीके समीप भो शिविर तहाँ,
प्रभुके प्रवेसतैं जु वदन उम्हायोहै ॥ १७ ॥
सेस दिव तत्व५ नाड़ी रहत करोली भूप१,
बिप्र बलदेव द्वार नायक पठायोहै ॥
पक्क एक अन्न चत्वारिंश४१हूके भाड पुनि,
पंचशत५०० नाणक सनेह दरसा योहै ॥
नजर निवेदि भव्य भाखिकैं जुहार जिम,
पाइकैं परागत प्रवृत्तपन पायोहै ॥

तीन३ अग्ग त्रिशत३०० टकेनभर सेर इक१,
पक्क अन्न सेना सयन प्रति दिवायोहै ॥ १८ ॥
पचमी५ दिनेस सेस रहतहि नाडी च्यारि४,
महल्ल पधारे अप्प मदन भुवालके ॥
महाराजकुमर सु नाम भीमसिंह२०४।१ बलि,
अर्जुनादि भ्रात तीन३ वावा ता नृपालके ॥
प्रासादन द्वार जात सेन सह हड्डइद,
सत्तदस१७ फेर सु कराये अपनालके ॥
अंदर जु चोक लग जातहि मदनपाल,
अभिमुख आयो अधसीढिन सुजालके ॥ १९ ॥
करिकै करन सीस दुरदिसही भद्द भाखि,
सव्य सातमा – पहु धारे ससदाममैं ॥
स्वीप सुभटालि सर्व वामहि बिठाइ राम२०३।४,
आप अपसव्य राखि बैठो तखतामैं ॥
पट्टपकुमार भीम२०४।१ और शिवदान भ्रात,
अप्प२०३।४ दिस बैठे बीच गद्दिका अबाममैं ॥
सुभट स्वकीप अन्य सहति सचिव सर्व,
ऐसैं आम बाम रची सभा सुख धाममैं ॥ २० ॥
करिकैं कितोक काल नरप अतीत तहाँ,
हड्डइद२०३।४ सिक्खलै पधारे निज थानकों ॥
मंजु क्रम तुरग अरोहन अधिप उहाँ,
पुव्वक्रम जादवेन्द आयो गड्डथानकों ॥
आरुहि तुरंग द्वार प्रासादन बाहिरात,
सप्तोत्तर दसक१७ कराये फेर जानकों ॥
जावन गुनक३ घटी बहुरि नरेन्द राम२०३।५,

नेह करि प्रबल प्रवेसे सिबिरानकों ॥ २१ ॥
सप्तमी७ दिनेस पंच५ रहतहि नाड़ी सेस,
करोली मदन भूप स्वीय शिबिरायोहै ॥
अंदरके द्वार लग वीरन सहित आत,
हड्डन अधीस तास सम्मुह सिधायोहै ॥
सोलह सहित इक्क१७ नालिन कराइ फैर,
अप्प दच्छि नासा तख्त उपरि बिठायोहै ॥ २२ ॥
अनेह अतीत घस्र करिकैं सिधायो सिक्ख,
पुब्ब लग द्वार अप्प आयो पहुंचानकों ॥
बाहिर शिविर द्वार आइ नरयान चढि,
आदिवन नेता गयो जेता निज थानकों ॥
अठ नव१७ फैर स्वीय तोपन कराइ पुनि,
आगत अधीस२०३१४ सभा बिहित बिधानकों ॥
आत्मीय सेना काज महीप जु सब अन्न,
पिष्ट आदिक समस्त बस्तु —— दानकों ॥ २३ ॥
ऐसैं राखि दशमी१० निसालग मदनपाल,
सिक्खदैन एकादशी११ थूल स्वक आयोहै ॥
ताजिकैं तुरंग द्वार अंदर प्रवेस पात,
सम्मुह तहाँही अप्प आवन रचायोहै ॥
संसद पधारि सव्य रहिकैं बहुरि आप,
भद्रासन ताहि अपसव्य बिठवायोहै ॥
एम क्रम तास आस सुभट समाज स्वीय,
पाइकैं प्रवृत्ति पहू प्रीतिपन पायोहै ॥ २४ ॥
मदन महीप गेह सिक्खदै स्वकीय गयो,
कुच्च सर५ जात नारी रति करवायोहै ॥

गाम कुर१ आइ थूल राखिकैं द्वितीय१ दिन,
काम तिथि१२ धाम खुसहालगढ२ पायोहै ॥
अमावासि३० अनेह सक्रमन चुहान करि,
वाटेदे३ बलाप चक्र पत्तन करायोहै ॥
पहिवा१ वलक्ष काव्य बासर बहुरि राम२०३१४,
ग्राम कमलानैं४ सु शिविर सुहायोहै ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

बलानाथ अथ पुब्ब सम, करि इम कुच्च मुकाम ॥
नवमी९ पुष्प तडाग निस, समुचित किपउ स्वधाम ॥ २६ ।
लीलीनामक दूरवा, चउदसि १४ दिन चहुवान ॥
सिंहअत सिरदारके, उपबन किय थुल आन ॥ २७ ॥
राध२ श्राम सित१ दोजि२ दिन, वैलैज उदीचि विसाइ ॥
मग्गराज छनकमहल्ल, हुव दाखिल हरखाइ ॥ २८ ॥
इतिश्रीवंशभास्करे अष्टादशोमयूख ॥१८

॥ दोहा ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सिविर लार्ड आगम सुनत, जीवनलाल जनेस ॥
सोदर अमृतलाल सह, अभिमुख भेजिय एस ॥ १ ॥
सम्मुहजाइ रु लार्ड सन, मिलि करि इन मनुहारि ॥
सिविर द्वार लग तस समुह, प्रभु पुनि अप्प पधारि ॥ २

(पद्धतिका)

कर सीस परस्पर करि मिलाइ, अधिराज सभा सह लार्ड ।
विष्टर सु लार्ड राजत बिठाइ, उपवेसन बाम सु अप्प पाइ ॥ ३
प्रभु हेठ बैठि पट्टप कुमार, अर्जुन त्रि३ वधु बैठे उदार ॥
तदनतर बैठिय सुभट सत्थ, पुनि सम्मुह जीवनलाल पत्थ ॥

रघु तास सहोदर अमतलाल, मंत्र रु रहस्य पाविनि कमाल ॥
ातर वकील तस जानि नात, पहु आस अप्प दिस सर्व पात।५।
अरु काल उचित संलपि उदंत, करटी१ तुरंग२ लंचा करंत॥
सिरुपाव पंच५ तखती समान, बहु प्रीति निवेदिय चाहुवान ॥६॥
पहु बहुरि समप्पि रु अनर पान, पहुँचान किय उ जिम पुव्व आन
चढितुरग यान साहब चचार, अवनीसन इतरन थुल्ल उदार ॥७॥

॥
॥ ८ ॥
॥
॥ ९ ॥

लै सिक्ख प्रभू इम करि मिलाप, अतिप्रीति करोलीपुर अवाप ॥
दसदिवस रहि रु चल्लिय दिवान, प्रविसे बुन्दीपुर हड्डभान ॥१०॥
नभ नयन नंद महि१९२०साक मान, कन्या सु भद्रकुमरी सुजानं
जिहिँ कहत भुजिष्या जठरजात,अरु व्रध्नकुमरि भौजिष्यआत११
ज्ञानसाह दुर्गापुरप जात, करग्रहन दुहुँ२न इक१ दिन करात ॥
सहमास ९ द्वादसी १२ सोमवार २, इहिँ लग्न दु २ बर आइय
उदार ॥ १२ ॥
जनी बहोरि इक१ पहर जात, दुल्लह दुव२ तोरन उपरि आत ॥
करि कसाघात अंदर अवाप, तहँ वेदरीति तनया ददाप ॥ १३ ॥
ाखतेस जोधपुर ईस पुत्त, सिरदारासिंह सुभ गुनन जुत्त ॥
देय व्रध्नकुमरि ताकों उदार,किय भीम२०३दान कन्या कुमार१४
रसोर लाल सुत पुनि प्रताप, कन्या सु भद्रकुमरी ददाप ॥
न्मथ तिथी१३ सु गोरन जिमाइ, पुनि रक्खिय कति दिन प्रीति
पाइ ॥ १५ ॥
ायज सम दुव२ हित पुनि समप्पि, सोदर जामाता सखि अप्पि॥

करि कुंच जन्य सह मुद ममाप, दुल्लह स्वसद्म मरुधर अवाप॥१६
अर्जुन१ गोवर्द्धन२ जगन्नाथ३, व्याहे सु जोधपुर इक्क साथ ॥
तपमास असित षष्टी६रसेस, सद्दिप सु लग्न इन विधि असेस१७
अधिराज सुनहु पुनि हुव उदंत, फग्गुन सित नवमी९ बुध मिलंत
मतिमान भीम२०३ पट्टप कुमार, महती कुमरानी गद ममार॥१८॥
मधु१ मास चउद्दसि१४ पुनि वदात, विमह स्वरूपलतिका विहात
ससि नयन नंदभू१९२१लगत साल,आगत अजंटसाहब उताल१९
सो पीलपाट इहिं नाम ख्यात, प्रभु तास रीति मेलन करात॥
करि अतर दान सतकार किन्न,पटगृहपधारि तस सीख दिन्न२०
दुव नयन नव ससि१९२२अब्द आत, सहमास९चतुर्थी४दिवसपात
कासीहु करन जात्रा जनेस, पटगेह प्रीति सहकिय प्रवेस ॥२१॥
लिय सत्थ भीम२०४पट्टप कुमार, भौजिष्य जगन्नाथहि उदार ॥
पटरागिनि लिय पुनिप्रीतिहारि,पुनि बुरजसिकारहिं रहि पधारि२२
तैपा:सित तेरसि१३दिन दिवान,प्रभु अप्प२०३सबाहिनिकरिपयान
टुबलान द्रग दिय पढ़ु मुकाम, दूजा२सु नयनपुर दिय विस्राम२३
विश्राम समीधी तिम तृतीय३, किय पुनि मुकाम चोरू तुरीय ॥
इमकरत मुकामन अधिपआप२०२,प्रतिमुद प्रयागनगरी अवाप२४
अनलावकअतिधृति१९२३लगत साल,मनु१मास असित ९ .रि
थि१३ नृपाल ॥
वलि हह भानु आगिरस५वार, उड्डीसपुरी बेसिय उदार॥२५॥
निर्वाहि वेदविधि कियउ न्हान, दिय इक पंचाशत५१ पुहविदान
नागोध राघवेन्द्रहि समत्थ, किय भीम२०४कुमर सम्बध तत्थ२६
अरु जगन्नाथ भौजिष्य एम, पुनि वीरसिंह कापरनि तेम ॥
करि तिलक बहुरि दे नालिकेर,सित सुक्र दसमि१०वे लग्न फेर२७
नागोध गमन किय राघविंद, चक्रमन कियउ पुनि इड्डइंद ॥

नागोध नवमि९ पगगृह पधारि, भेजिय उन मेवन हित बढारि॥२८॥
सित सुक्र दसमि पुनि सुक्रवार, सांढ्य सु लग्न पट्टप कुमार॥
बलि वीरसिंह तस२०४०याहि साथ,करग्रहन भिन्न किय जगन्नाथ
इनमाँहिँ राघवेन्द्राभिधान, कन्या स्वकीय दुव२ भीम२०४ दानं॥
सो सुरजभानु कुमरी गरीय, दिय तेजभानुकुमरी द्वितीय३ ॥३०॥
सुचि४असित२त्रयोदशि१३आरवार३,—तकुन ग्रामठक्कुरउदार २०३
हरवंशराय तनया सु आहि, सुभ नाथकुमरि प्रभु अप्प ब्याहि३१
सुचि४सुक्ल१पंचमी५सुक्रवार६, करि कुंच सिंहपुर रहि उदार२०३
इम चलत मुकामनकरत आप, हिंडोन इहु अधिपति२०३अवाप३२
महिपाल करोली मदनपाल, उत्तम जन भेजिय तहँ उताल॥
सो जानि सभा करि लिय बुलाइ, आहूत मलुकपालादि आइ।३३।
गौरव प्रभु मुजरा करत दिन्न, करि नजर निछावरि अरज किन्न
जय मदनमोहन–जन स्वकीय,कहि करहु सदन सुभ अस्मदीय३४
किर उत्तमांग करि अधिप आप,हढ क्रमन अक्खि सीख सु ददाप॥
ज्येष्ठा६ऽर्जुन नवमी९करि प्रयान, विश्राम वरोदहि दिय दिवान।३५।
चंक्रमन करि रु दशमी१०चुहान, इक१ —— करोलीतें दिवान॥
अहिफेन बेल राहि लिय नृपाल, प्रभु सम्मुह आगत मदनपाल३६
मिलि करि रु परस्पर हत्थ मत्थ, उत्तरन बहुरि हुव दुव२हितत्थ॥
मिलि दुव२हि बच्छतैं उर मिलाइ,उपवेसन किय घटि अद्धपाइ३७
अधिराज प्रीति सह पुनिअभिन्न, नालकिं उपवेसन इक्क१किन्न॥
अरु मिलि दु२सेन मुदजुत अमाप,वसनोक करोली दुव२अमाप३८
तहँ घटी इक्क१ राहि पुनि उताल, पुरप्रति किय जावन मदनपाल॥
इहि दिवस तिथी१५ तहँ इहु राम२०३, कुरगाम नाम बालि किय मुकाम॥ ३९॥
इम करत कुच्च प्रभु पुनि मुकाम, जनपति बुन्दीपुर आजगाम॥

कोटेस राम २१२ इहिं१९२३ साक माँहिं, अरु राध२ चउदसि १४
सुक्ल ऑहिं ॥ ४० ॥
महिपाल सोहु कछु गद ममार, तस पट्ट पंचसिख सुदत धार ॥
मो सत्रुसल्य२१३इहिं नामख्यात,सुभ दिन भद्रासन तिलकपात४
साहब सुग्हत इंडन सनाम, कोटेस२१३ हिं टीका देन काम ॥
आगतइह जावत तहँ उताल,कियक्रमन तास अभिमुख कृपाल४
सल्लाप भव्य सय करि रु सीस, आगमन ससाहब किय - ॱ
पुनि सिंहचतुष्पथ प्रीति पाइ, दे सिक्ख तासप्रासाद जाइ ॥ ४३ ॥
आरामरत्नसाहब अवाप, अमुकगृहसाहब जाइआप२०३ ॥
उपवेसन खुरसिन किपउजास,समयाल्प रहि रु दे सिक्खतास४
अधिराज कियउ प्रासाद आन, साहब किय कोटा द्रंग जान ॥
माघा११Sर्जुन एकादसि११मिलत,मथुराहुवभ्राता भोम२०३अत४
इतिश्रीवंशभास्करे　एकोनविंशो मयूख ॥ १९ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥
॥ दोहा ॥
सक विक्रम जिन नद ससि १९२४, अमा३०रु चैत्र अनेह
भोमसिंह२०३भ्रातृज भुवप२०३, आइ विश्वेश्वर२०४एह॥१
काढि दिवस आराम कति, प्रभुके लग्गिय पाय ॥
तवहि स्वकर सिर फेरि तस, लिन्नों क्रोड लगाइ ॥ २ ॥
॥मनोहरम्॥
विश्वेश्वर२०४।१सिहकों विसासि रु अधिप आप२०३,
प्रत्यह कराये वेद४ नाग्यक असनकों ॥
राखी कछु भिन्न पुव्व रीति सु महग करि,
पुव्व जो हवेली सोहु तास२०४ दे रहनकों ॥
व्याकरन आदि शास्त्र अध्यापक मेल्हि बलि,

दिनप्रति दूनी करि बुद्धिहु मननकों ॥
बहुरि नागोध दंग करिकैं विवाह ताकों,
नयो ग्राम नाम राम२०३ बाम दै बसनकों ॥ ३ ॥
मास नभ५ धवल१ चउद्दसि१४ रु आर३ वार,
दुर्गापुरी ईस संभूसिंह२० अवसानभो ॥
आत्मजहू ताको ओंकारसिंह२० पट्टपति व्है,
गोरवादि काज प्रभु राम२०३तहँ जानभो ॥
बिहित बिधान पुब्ब होजो प्रभु ताको तास,
सो सब ओंकार२० सिंहको ब प्रभुदानभो ॥
सस्त्र१ अरु सास्त्र२ तास२० अध्ययन सासन दै,
बुन्दीपुर राम२०३ को प्रवेसन बिधानभो ॥ ४ ॥
प्रौष्ठपद्सित नवमी९ दिवाकर उदय होत,
लच्छी प्रातिहारी जनी धीदा प्रसवकाल ॥
अंकक९ दिवस सोहुरहिकैं ग्रतासु भई,
सौवास्तिक ताको कर्म कारक भो नृपाल ॥
अष्टमी८ नभस्य६ सित बहुरि सु व्यवहार,
नाम रसरंग जो भुजिष्या कियउ काल ॥
साहब जु रूसइस७ बुन्दिय अजंट आत,
रामप्रभु ताको संमेलन कियउ ताल ॥ ५ ॥
भूत द्रुव अंक ससि१९२५सुचि४ सुचि मास केर,
एकादशी११ आर३ बेद४ नाड़ी दिवस आत ॥
मिश्रन कवींद्र रविमल्ल बहु आमयतैं,
बुन्दीदंग माँहिं प्रभु निर्जरनैर पात ॥
सो सुनि अनंत शोक करिकैं नरेंद्र आप,
स्नानकरि अनल अंजली दियउ तात ॥

तास पुत्र सगुन मुरारिदान नामककों,
अभ्युत्थान आदि दे विसासि हित दिखात ॥ ६ ॥
भाद्र६सित पष्ठी६ सदानंद जो भुजिष्यो भूप२०३,
जगन्नाथ जननी पंचत्वपन पातभो ॥
सहा९सित२ पक्ख दोजि२ उपरि तृतीया३ आत,
सोमवार२रत्ति सत्त७ नाडीकों विहातभो ॥
पट्टप कुमार भीमसिंह२०४।२हूके स्वर्ग जात,
हाहारव बुन्दी घरघरहि दिखातभो ॥
ताको दाहकर्महु पुरोधातें करायपुनि,
———कति अधिक कुमारन करातभो॥ ७ ॥
संवत तर्क दृग अतिधृति१९२६ समय होत,
स्वर्ग नभ५ भूप गो करौली मदनपाल ॥
नवमी९ नभस्य६ सित१ वहुरि अमात्य आप२०३,
वहुग गतासु भयो जीवन अतलाल ॥
सो सुनि नरेन्द्र आप२०३चंदनकों खंड इक१,
देकें प्रेतवनकों पठायो चर उताल ॥
सासनानुसारि प्रभु२०।३ सोहू तहँ जाइ पुनि,
उज्झिय सकल सो कापालिक क्रियाकाल ॥८॥
प्रातिपदि१ आरवार३ आश्विन७ असित२ आत,
लघ्वी प्रतिहारी प्रात होत जन्यो श्रीकुमार ॥
ताको जातकर्म वेदविधितें सधाइ पुनि,
आव्हय ताको रघुवीरसिंह२०४।३ भो उदार२०३ ॥
सार आढ्य रकनकों करिकें वहोरि आप२०३,
जाचकन अत्यहू दिवायो वसु अपार ॥
भूसुर गणाप अभिरूपजनहूकों वोलि,

स्वापतेय१ बसन२ निवाजे तैं धर्मधार ॥ ९ ॥
मार्गशीर्ष९ मासहू द्वितीया२ सित पक्ख होत,
साहब वृहत अजंट सह बुंदी आइ ॥
वृहत किटिंग इहिं नामक के सम्मुहकों,
गाम जोधसागरके संनिधि प्रभू जाइ ॥
तुरग बिहाइ रु विछ्रातके उपरि आत,
सीसकरि पानि परस्पर हित दिखाइ ॥
आरुहि सु अश्व किय क्रमन वरूवरतैं,
आइ पू बुंदी सिंहचत्वर बहुरि पाइ ॥ १० ॥
साहब सिबिर गयो मानिकसुचोकमाँहिं,
राजराज राम२०३अप्प प्रासादन पातभो ॥
बहुरि तृतीया३ सोमवासर२ किटिंग आत,
गोपुर बलवंत रहुऊर भिजातभो ॥
हत्थीपोल उत्तरि सु अंदर प्रवेस कियो,
अपाश्रय महल छत्र सन्निधि जातभो ॥
जाइ तहँ सम्मुह मिलाइ कर सीस करि,
मेवर अजंट सह संसदहि आतभो ॥ ११ ॥
बेला अल्प राखि दुव२ अतर रु पान करि,
सिक्ख दै प्रथम रीति किय पहुंचानकों ॥
अंसुकसदन तास बहुरि पधारि आप२०३,
सम्मुह किटिंग पद पंच५ किय आनकों ॥
अवसर अल्प राखि करिकैं समय वृत्त,
अतर किटिंग पुनि दियउ दिवानकों ॥
दैकैं सिक्ख ताहि श्वोवसीयस बचन भाखि,
राजराज राम२०३ निज धाम किय आनकों ॥ १२ ॥

सत दुव अंक ससि१ बाहुल८ अमावसि३०कों,
गोन अजमेर किय लार्डहि मिलनकों ॥
करत मुकाम कुच्च हुत अजमेर जाइ,
लार्ड मिलि गोन किय पुष्कर सबनकों ॥
न्हाइ तहाँ जाइ बेदबिधितें सधाइ पुनि,
भोजन जिमावहु भूसुरजननकों ॥
पचसत५०० नाणक अनेकप दिवाये दान,
आये पुर बुंदी अप्प बटि बहु धनकों ॥ १३ ॥
अहि दुव अंक इक१९२८ विक्रम नरेन्द्र सक,
अग्रवल तपस्य१२ द्वादसी१०हू सोम्यवार२ ॥
सत्त७ पल अमल निशीथके उपरि आत,
रानी प्रातिहारी जन्यो लच्छी लघु कुमार ॥
जात१ नाम२ कर्म वेदबिधितें सधाइ तास,
रगराजसिंह२०४१४ नाम मंजुल भो उदार ॥
चारन१ रु भट्ट२ आदि दैन सब जाचककों,
राज राज राम२०३ दयो वसु काति हजार ॥ १४ ॥
नंद दुव अंक भू १९२९ समा रु सुचि६ मास माँहि,
बीकानेर भूप सरदारसिंह कालभो ॥
ताके बंधुगनमें डुंगरसिंह नाम हुतो,
सोहू पट्ट पचसिख पाइकैं भुवालभो ॥
पुरियाम१५ दिवसतप ११ जोधपुर भूपतिहू,
स्त्रर्ग तखतेस जात रानिन विहालभो ॥
पट्टप कुमार जसवतसिंह पूरबहू,
राजकारि कज्ज पिता अतर नृपाल भो ॥ १५ ॥
नभ गुन अंक इक१९३० बाहुल८असुचि पक्ख,

सप्तमि७ सु बहुरि दिवाकर१ वारपात ॥
साहब वृहत पेली१ बर्कली अर्जंटी दुव२,
आवत नयर बुंदी द्रुतही सु प्रभात ॥
सम्मुह गमन आदि मेलन सु पुव्व जिम,
करि तस गेहपट जाइ हित दिखात ॥
महलन प्रवेस किय दैकैं सु सिक्ख तास,
साहब वृहत अजंट सह कोटै जात ॥ १६ ॥
बाहुल८ धवल१ तिथी हरि१२ हरिवार होत,
पट्टनिपुरीकों प्रभुराम२०३ किय पयान॥
ग्राम रहि ठिक्करे बहोरि तिथि मार१३ सौम्य४,
पट्टनि सिविरको प्रवेसितभो दिवान२०३।४ ॥
राका उपराग बलि केसव दरश करि,
बिहित बिधान करि बेद सु न्हान दान ॥
सार्द्धमासइक्क१॥ तहँ रहिकैं बहुरि आप२०३।४,
राजराज राम२०३।४ नैर बुंदी कियउ आन ॥ १७ ॥
इक्क गुन अंक भू १९३१ समान सक्क विक्रमके,
फग्गुन चतुर्थी४ श्वेत जीव५दिन पायोहै ॥
महाराज आदिक कुमार रघुराजसिंह२०४।५।३,
रजनी पहर१ गये उद्भव दिखायोहै ॥
लक्खन लुटाइ द्रव्य भूसुर रु रंकनकों,
जातक-वैदिक विधान वनवायोहै ॥
राम२०३।४ नरनाह सब देसनके जच्चनकों,
इच्छामित स्वापतेय अमित दिखायोहै ॥ १८ ॥
रस गुन अंक ससि १९३६ संवत बहुरि होत,
अष्टमी८ अनेहाऽसित सुक्र३ अपनायोहै ॥

इक१ पल छप्पन५६।१ घटीके इष्ट लच्छी अंस,
लक्षमण२०४१६ कुमारिहूको जनन जनायोहै ॥
नव गुन अंक इक १९३९ हायन नवीन होत,
सावन प्रथम मास विसद सुहायोहै ॥
चढत दिवाप तीन३ घटिकाहू पंच५ पल,
रघुवरसिंह२०४१७ जन्म चउदसि१४ पायोहै ॥ १९ ॥
उक्त सक १९३९ हीमें जसवंत भूप जोधपुर,
पुत्री तखतेसकी स्वभगिनी भनाईहै ॥
असित तृतीया३ माघ११ का०प११ दिन लग्नकाल,
कुमारी सौभाग्य रघुवीर२०४१३।१सिंह पाईहै ॥
रंगराजसिंह२०४१४।२ लघु सोदर बहुरि व्याहि,
सूरज कुमरि चोथि४ जोरावर जाईहै ॥
उक्त तिथि४हूमें सिंहमुहब्बत पुत्री बल,
दि०प देवकुमरी रघुराज२०४१५।३ हित दाईहै ॥ २० ॥
वावाता कुमार तखतेसको जवानसिंह,
पुत्रिका समर्थ नाम कुमरी कहाई है ॥
माघाऽ११सित२ चोत्थि४ मद७ वासरहू लग्नकाल,
जगन्नाथ पुत्र हरिनाथहित दाईहै ॥
करि उपयाम तत्थ रहिकैं कितेक दिन,
दुहूँ२दिस प्रीति रीति परम दिखाईहै ॥
महारावराजा श्री दिवान रामसिंह२०३१४ वलि,
आइकैं प्रवेसि खुसी नगर बधाईहै ॥ २१ ॥
गोपुर चोगान वनायो सत्रुसाल१९५ तास,
गोपुर१ बनायो वाह्य संनिधि अप्प राम२०३।४ ॥
तोरन प्रासाद जोव वज्जत हजारी द्वार,
ताके सन्निकर्ष त्रि३द्वारिका२ बनाई बाम ॥

तास अग्ग अंदर बनायो इक द्वार गेह३,
अंतिक बनाई तास त्रिद्वारि४ बंध काम ॥
मोतीकूप निकट बनाईहू तिवारी५ पुनि,
तामैं विष्णुस्वामीकाति रहत अष्ट जाम ॥ २२ ॥
न्याय६ शुल्क७ नामक कचहरी द्वै२ बनाई पुनि,
मंदुरा८ सुखम बनाई भीमकुंड पास ॥
मंदुरा९ द्वितीय२ कोंन नैर्ऋत बनाइ प्रभु,
अज्जहू बजत सोनपाइगाँ९ नाम तास ॥
छत्रमहल माँहिं जलजंत्र१० अरु होद११इक,
त्रिद्वारी१२ भई पुष्पगो रखन वितर्दी जास ॥
दूदा१९२१के महलहूतैं द्वार लग बाह्य दुर्ग,
खुरा१३ किय तातैं सर्थ जावत अनायास ॥ २३ ॥
दोहा—तोरन१४ अरु त्रिद्वारिका१५, मंगल द्वार समीप ॥
जीवरखा दूजेहु इक, महल१६ जु कियो महीप२०३१४॥२'
बज्जत चामुंडा बलज, तास बाह्य त्रिद्वारि१७ ॥
प्रभु भंडारन सहित पुनि, कमन राम२०३१४ प्रभु कारि॥२
बायुकोंन उडुदुर्गतैं, स्वापतेय सरसाइ ॥
देवी चामुंडा सदन१८, बलानाथ२०३१४ बनवाइ ॥ २६ ॥
कौतुक मृगया कज्ज बलि, तुंग१९ रचिय अति बाम ॥
बहुरि पुष्पसागर बली, रचिय मल्ल२० अभिराम ॥ २७ ॥
कुंड२१ इक्क१ ताके निकट, मध्य जु छत्री पाइ ॥
सागर पुष्पतड़ाग तट, केतक बाटि कराइ ॥ २८ ॥
बालागढ किल्लादि बलि, इतर जु थान उदार ॥
जँहँ जँहँ भ्रंशित भो तहां, किय जीरन उद्धार ॥ २९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे त्रिंशोमयूखः ॥३०॥

इतिश्रीवंशभास्करनामको ग्रन्थः समाप्तः ॥

॥ श्री ॥

बुधसिंह चरित्रका शुद्धिपत्र

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१	सब ही का उत्कठा	सब ही की उत्कठा
४	ज्यो का त्या	ज्यों की त्यों
२०	चिता चिता	चिंता चिंता
१८	ताके बशमे	ताके बशमें
२०	बुधसिंह को	बुधसिंह के
२०	ताको तनया	ताकी तनया
१०	अप्पनों सत्थ	अप्पनों सत्थ
२१	सोटी कठीरव	सोही कठीरव
४	मेर सट ६	फेर सट १
२४	आगर आगरा	अगगरा आगरा
२५	अम अमावास्या	अमा अमावास्या
११	दकिठट्टो	धकिठट्टो
११	अपसानयो रत्तयो	अपसानयो रत्तयो
२३	मिलकर	मिलाकर
१७	आलमके च्यारि ४	आलमके ए च्यारि ४
६	हकवारि	घकवारि
६	घटी बुव	घटी बुध
५	पक्खर तीन	पक्खर छीन
३	घुग्घर नट	घुग्घुर नद
,,	मेक कि भट	मेक किं भद
८	उमंगन	उमगत
१५	नग्गरों	नगारों
१	रनपह	रनराह
२२	तुगऊपी	तुगऊषी
२२	हजार	हजारों
२	यहिपीबिन	यहि बीबिन
१	यहि घूम	यहि घूम
राजिहिं रग		ए जिहिं रग
२१	मणिक्य	माणिक्य
११	प्रछल गय	प्रछलगय
११	दधिरव	धीदारथ-
७	मय्यो अनीक	मय्यो अनीक

२१७८	२५	कधबंधतैं	कंधबंधतैं
२१७९	२९	अंगाली	शृंगाली
२१८०	३	अग्निअकी	अग्गिकी
२१८१	७	सेरघटा	सेनघटा
"	२७	मडलाकार	मंडलाकार
२१८२	१८	फिफ लोके	फिफ्फ लोके
"	२१	धनी भीर	घनी भीर
२१८३	२४	पट्ट मतगज	पट्ट मतंगज
२१८९	६	बाहक महत	घाहकमहत
"	"	बहत उछाहक	महत उछाहक
"	७	तिततेसजव	तित तित सजब
२६८६	३	तान मंडन	तान मंडत
"	१२	जालम जन्यों	जालम जम्यों
२६८८	५	कोच कढैं	कोच कढैं
"	११	तननकत	तननंकत
२१६३	५	मंडलकोरि	मंडल फेरि
२६६९	१७	इहितर	इहिं अंतर
२१६९	३	बलीतैंरषी	बलीतैंराषी
३०००	६	पाये केवल छत	पायो केवल छत
३०१०	२५	पिता को	पिता के
३०१२	२६	हर्ष के साथ भेजो	हर्ष के साथ भोगो
३०१३	२१	समान आनकर	समान मानकर
३०१९	२४	मरापुत्र	मेरा पुत्र
३०२४	१३	महराणा सैन्य सहाय	महाराणा सैन्य सहाय
३०२५	९	प्रवुर्द्ध	प्रबुद्ध
"	०.	वाहि मुद्धपन	चाहि मुद्धपन
३०२६	६	जेतसिंह	जैतसिंह
३०२८	१७	सादर सुच न	सोदर सुच न
३०३१	१२	सतपंच५०० तामभीर	सतपंच५०० तोपभरि
३०३३	२	डगतारा	दृगतारा
३०४४	८	पातनचम्मलि	पोतनचम्मलि
"	२९	और आ आदि से	और आदि से
३०४६	२०	तह संध	हतसंध

काघसे	कोघ से
माईहनँ	माईहनँ
पच्छा अप्पिय	पच्छो अप्पिय
चीतोडके राव थे	चीतोडके उमराव थे
सुपच्चीगीत.	सुपच्चो गीत.
घाटा में	घटा में
सेनाकों को	सेनाओं को
कटोपतिप्रति	कोटापति प्रति
सुपकी किरणों को	सूर्य की किरणों को
निज भपति	निजभूपति
भानजी की	भानजे की
भुज्जहिं कल	भुज्जहिं किल
यहा जाओ	यहा आओ
अप्पजा दिक्खा	अप्पजा दिक्खी
स्वामिधर्म मगसै	स्वामिधर्म सीखसै
देययज्ञ कलहाता है	देवयज्ञ कहलाता है
धारनमें भरयो	धारन में धरयो
बुरे स्यभावयाला	बुरे स्वभाववाला
पुनारामपु लेखन	पुना रामपुरलेखन
भ्रात जाहि	भ्रातृजाहि
ज्योतिपियों में	ज्योतिष में
चाहना मिटाते हैं	चाहना मिटाती हैं
काल मर्षे	काल नर्षे
योगिनियों का	योगिनियों के
घोडों का	घोडों के
खानेयालों का	खानेवालों के
कुापयकै	कुपायकै
(खरणी)	(सरणी)
तेरती है सो	सिरती है सो
हडों के पाक्ष	हाडों के पाक्ष
शत्रुओं के ठोक कर	शत्रुओं को ठोककर
और वेरया	और वेश्या
धीर द रउह	वीर द रउद्र
धूमके नाम से	धूमर के नाम से

१८०	१९	झंपि वरकैं	झंपि फरकैं	१२७४	२१	मुरगे वाले	मुरगे चोखे
१८३	२७	पुरकर्ता है	फुरकर्ता है	,,	१६	७ शख	७ शंख
१८५	२१	देवसिंह के	देवसिंह का	१२७१	१४	अक सत्रह	अंक सत्रा
१८८	२४	साहयता के	सहायता के	,,	१७	धम धारनी	धूम धोर
१९४	१०	गहिमांहि	गहि बांहि	१२७७	२१	विनाविजलो	किनाविज
१९७	९	जाबहु	जावहु	१२७९	३	मुकल्या	मुकल्यो
,,	१५	रन	वन	१२८१	२०	तखत खान	तखतखा
२००	२१	खैंचती हुआ	खैंचता हुआ	,,	२१	उतरा तेय	उतरा तय
२०१	२२	संग्रामसिंहको	संग्रामसिंहका	,,		तख्त खापर	तख्तखां
,,	,,	दुर्जनशालका	दुर्जनशालको	१२८२	१	भलफिल	भलो फल
२०३	१०	नसे हौं	नसैहों	१२८३	१५	उद्घोस	उद्घोष
२१२	१४	भजहु	भेजहु	१२८८	२४	कुलावंतस	कुलावतं
२१३	२	बससैन	सघ सैन				
२१४	५	राम संग्राम	रान संग्राम				
२१८	२१	अधमी	अधर्मी				
२२२	२५	बाघसिंह पुत्र था	बाघसिंह का पुत्र था				
,,	२३	करनेवाला था	करनेवाला था				
२२५	२५	रहन तक का	रहने तक का				
२३५	१०	बधावनलाड	बधावनलाड्				
२४४	१	कालिया देवि	कालिका देवि				
२४८	२१	मन साथ	मन के साथ				
२५०	१६	महाराणा जयसिंह	महाराजा जयसिंह				
२५१	२२	जीम अक्षर ऐसा होता है	जीम अक्षर बडे पेटवाला होता				
२५१	२२	नरवर के राजा और कोटा के महाराव गजसिंह सहित	नरवर के राजा गजसिंह सहित				
२५८	२१	कलीजखां का	कलीजखां का				
२५८	२२	खांनदारा को	खांनदोरां को				
२६४	१	पखर जरजीन	पखरे जरजीन				
,,	२८	चपलते हैं	चमकते हैं				
२६८	७	लंबसिखी	लंबसिखा				
२७०	२१	नादरशाह को	किसीको				
२७३	१	न नाँके है	न नाँके है				
२७४	२१	कलही हमस	कलही तुम से				

उम्मेदसिंहचरित्र का शुद्धिपत्र

—※०※—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२६१	२१	✱छाटी	✱छोटी
३२६४	३	तब भयो	तबभायो
३२६०	१७	आभषेक	अभिषेक
३३०१	१५	अच्छे फिरहु	पच्छे फिरहु
,,	२३	१घगतसिंह	१घखतसिंह
३३१०	१४	दूजाघर	दूजीघेर
,,	१९	खग्गनको	खग्गनकी
३३१६	२२	नेताद्कर	न्योताद्कर
३३२०	१७	दमहुष	इमहुष
३३२३	२३	जनानम	जनान में
,,	२६	१५देफदे	१५दोफड़
३३२७	२१	सेदाका	सेनाकी
३३२९	९	पन्नगकी ७फनमाल	७पन्नगकी फनमाल
,,	२०	शेपनागका	शेषनागकी
,,	२२	चलक कर	लपकर
३३३१	२०	दोनोंभार	दोनों ओर
३३३२	२२	उसके अग्निसे	उस अग्नि से
३३३६	१९	अराहि	अरोहि
३३३७	२२	जुद्ध जीतनवाले	जुद्ध जीतनेवाले
३३४७	१०	सुखम ललाट	सुभ ललाट
,,	२२	(लफ्खा)	(लफ्खी)
,,	२८	रगवाल	रगवाले
३३४९	११	चाहए	चाहिये
,,	२५	दानों कानों के	दोनों काना के
३३५१	१८	भलगमें	भलग में
,,	१९	सघेभार	सबऔर
३३५४	१७	श प्रशाल	दुर्जनशाल
३३५८	१७	अथवा राज	अथवा राल
३३६२	२५	जवा कहते हैं	जधा कहते हैं
३३६५	७	अच घन	अचे घन
३३७३	२१	दच्छिण में	दच्छिण में
३३८४	१०	चकि	चुकि
	२४	भूमिका	भूमिको

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३८४	२६	पढ़ना जनाकर	पढ़ना जानकर
३३८५	१	लैनाकिय	लैनाकिये
,,	२७	तिरान	तिरानवे
३३८७	२४	७पुत्रीकी	पुत्रीको
३३९४	२	आपरू	आयरू
३३९७	११	चुरेल	गुरेल
३३९९	१९	उधरदादर	उधर दादुर
३४००	२४	और इधर १०	और उधर १०
३४०२	५	जग्गे अद्रिन	लग्गी अद्रिन
,,	२६	भखेको निकालो	भूखेको निकालो
३४०५	३	हेति बढाया	हेतिघटाया
,,	२३	हूरोंक	हूरोंके
३४०६	२२	अप्सराओंकी छातीपर परतलेलगे	अप्सराओंकीछाती पर हारऔर वीरों की छाती पर परतलेलगे.
,,	२४	नाकँफुलाये	नाकफुलाय
,,	२५	कानों में	कानोंके
३४०७	६	सुराग	सुराग
३४११	१६	निंदासुनन	निदा सुनत
,,	२५	तबसे नीचेकी	तव नीचेकी
३४१३	२१	अमरस	अमरसु
३४१४	२०	आदि स	आदि से
३४१५	१९	९आकाश में	९आरंभ होके आकाश में
३४१६		आडावाढ बजा	आडावाढ बजा अथवा ढाडाओंकी तरवारोंका ढालोंपरवाढबजा
३४१७	९	पासतुसार	पोसतुसार
३४२७	१९	८चक्खे हैं	८चकवे हैं
३४३०	२२	पेदल आर	पैदल और
,,	२३	१२ननीन	१२नवीन
पृष्ठकेअंक		१३४४	३४३४
३४३४	२०	काटमेखला	कटिमेखला
३४३६	१८	दियपत्त	दिवपत्त
३४३७	९	संगित सैन	संगिन सैन
,,	२४	खड्गका	खड्गकी
३४३९	८	कळ्योकछु	कट्योकछु
३४५०	९	साजय	सजिय

१

३४५१	२१	मधुगढ में	मधुकरगढ में
३४६३	१३	विंथ थटन	निंथ थटन
३४७१	१४	काकसैं थल	कालसैं थल
३४८०	७	सुद्दीमसि	सुहिमसि
३४८६	१	योंकह	यों कहै
३४९१	३	भायह्व	भायहु
,,	२३	निमंत्रित किये	निमंत्रित किये
३४९६	२४	खा डाल देते हैं	खा डालते हैं
३४९७	२०	कछयाहे रूपी	कछवाहे रूपी
,,	२१	जातवेद ओरि	जातवेद ओर
३४९८	३	धूम धीरनकी	धूम धोरनकी
,,	८	विजय येद	विजय वेग
,,	२६	सथ मर कथनार	सथ कथनार
३५०४	१५	कटत करकी	कटत कीरकि
,,	२५	मनी जाती है	मानी जाती है
३५०७	२६	पथरंग छके	पथरग छके
३५०८	२४	डहती है	उहती है
३५१०	१४	फैसनेम	फैलने से
,,	,,	चद्रमाक	चद्रमा के
३५१६	३	उदयपुर	उदय पर
३५१७	१	कटिगय	कढिगय
,,	२६	पीकण के प्रहार से	पीजण के प्रहार से
३५२०	५	समसेर मार	समसेर मारैं
३५२१	२१	वलिदान को है	वलिदान को लेते हैं
३५२३	८	क्योधन	क्योंधन
३५२५	५	जै नृपतिहू	जैपुर नृपहू
,,	१७	यहँरु	यह रु
,,	२६	निर्भय	निर्भय
३५२८	१०	जीवन भय	जामन भय
३५२९	१०	ईश्वरिसिंह	ईश्वरीसिंह
३५३०	१४	मुदीन विरुद	मदीन विरुद
,,	१९	भारघ्यो	भारघ्यो
३५३१	१४	कूर्म्मराज	कूर्म्मराज
३५३२	२८	तीनसो ३०६	तीनसो छै ३०६

३५३१ ११ रवायग्रसि खायग्रसि ३७०६ ३ अयदता अंवदात
३५४३ १६ जयपर जयपुर ३७१२ ३ अंतर ननहू अंतर सुनहु
३५४६ १६ दिक्खनराहि दक्खिनराहि ३७१४ १८समयमित्रछे समयके मित्रमे
३५५५ ९ यश१ दम१ यश१अरुदम१ ३७१५ २१ ६पुत्र ६,पुत्रअथवाभाई
३५५६ १४ चिद्रकूट१ चित्रकूट१ ३७२४ २७मटका कट मटकाकर
३५६१ १५ भटसप्रीति भटन सप्रीति ३७२९ १ लहिरागकछु लहि रोग कछु
३५६८ २४ लोगों का लोगोंकी ३७३१ २४गोघूंदेकाराजा गोघूंदकाराज
३५७० २६ ३यड़ेभाईको ३बडेभाईको ३७३२ २१इच्छावाल इच्छावाले
३५७६ १ संग्रामवि– सग्रामवित्सा ३७३७ १ पठवाये पठवाय
त्सादि १ दि१
३५८२ १० के लग्गत कँ लग्गत ३७४० १५तिनमैं सुनी तिननैं सुनी
३५८७ २३ शुक्लपच्चको शुक्लपच्चको ३७४३ १०फिप्फ फलतैं फिप्फ फैलत
द्वितीय प्रथम
३६०५ ११ वैरतीन बेरतीन ,, १४महाजरका महाञ्करका
३६१० ४ द्विजदीवकी द्विजदीनके ३७४६ १२चमउदेपुरकी चमूउदेपुरकी
३६१२ २१ ६ राजा ने ६गलेमेंराजा ,, २६इसकारण इसप्रकार
विष खाया नेविष खाया
३६१४ १० भत्तभयो मत्तभयो ३७५१ १८भरतासिंह भारतसिंह
३६२६ १३ सब अरज तब अरज ३७५५ १६०यय ऐसी व्यय ऐसो
३ ,, १९ तुन्हारेपिता तुम्हारे पिताने
३६४४ १४ फणों को धारण करनेवाला फणोंको नीचाकरके फूत्कारकरनेलग
३६४३ ९ वाहवाह चाह वे चाह
३६४६ ६ पापी छकैं पापी छकैं
३६४९ १२ खेल्हे खेल्हैं
३६५० ३ मात तव माततव
३६६८ २५ राजावतावेक्रमसिंहकेलिये राजावत विक्रमसिंह से लेकर
३६७२ २४ कुंभफलक कुंभकलस
३६८२ ६ तमंकेईत तमंकेइतैं
३६८४ २३ गिरतमार गिरतभार
,, ६८९ ५ सहन मार सहैनमार
३६९० ११ पोनछेहि पौनछैहि
३६९१ १७ कीड़ामें ऐम कीड़ामें ऐसे
३६९९ ७ परतापतियन राजसिंह तियन
३७०५ १२ मड़ि मंत्रन मंडि मंत्रन

॥ अजितसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१७६०	६	सहँ घेर	सहे घेर	१७८२	११	प्राविस	प्रविसे
१७६२	३	बाधनपारेकीवहारि उदयमानुकुडपारिदोहा	दोहाबाधनवारेकीवहारि उदयमानुकुलपारि	१७८२	१७	गजपारि	गजपोरि
१७६१	४	संखर्प	शृंगर्प	,,	१८	संतपक्ष	सतपक्ष
१७७३	११	गिरागर्कें	गिरापर्कें	,,	२५	वेखोगे	वेखुँगा
१७७१	१५	छेनगपो	छेनगये	१७८३	१	उग्रघो महि	उग्रयो महि
१७७१	१६	पमुदित	प्रमुदित	१७८८	२१	[पंतर]	[प्रतर]
१७७७	१८	नजरानियादि	नजरनियेहि	१७९६	११	बोमसिष्याद	योभविष्याम्यह
१७७७	१६	है प्रजमेरु	रहै प्रजमरु	१७९८	२१	राजाका	रानाका
१७८०	३	मणापपुरभप	मणापपुरभूप	१८०३	१३	निजपातिमगे	नि[illegible]

॥ विष्णुसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१८१५	१९	मन्पाहँपँ	मन्यापँहँ	१९०८	१५	सिषरिश्रे	सिंहचरित्रे
१८१७	१०	फोटपति	फोटापति	१९१०	५	प्रमात्यरनैश्रे	प्रमात्यरनव
१८१२	२१	प्रनिपारा	घनिपारा	१९११	२५	जनामसे	जनामासे
१८३१	१६	फीमोंही	फीमोंहो	१९१७	११	देर्वसिंह	देवसिंह
१८१६	१	घारनहीं	घारेंनहीं	१९३१	२२	वर्मा१मास२	वर्मा१साम२
१८४०	१६	फपडनाहै	पकडनाहै	१९१५	६	सन्ततसंग	सततसंग
१८४१	७	कन्याजाम	कन्याजामें	१९४४	१०	वधाइमें	वधाईमें
,,	११	मग्राहीसों	मगराहीसों	१९४७	२१	मिससे	दर्शनके मिससे
१८५२	२०	रणोपुर	रणोपूर	१९४८	२७	रक्षाहोरमें	[illegible]
१८६१	१३	रीतिघटी	रातिघटी	१९५७	१२	[illegible]	[illegible]
१८६७	११	साँफफे	साँफहीके	,,	२६	विष्णुसिंहमे	[illegible]
१८७२	१	माँहिराक्षि	माँहिराखि	१९६५	६	टेकीछागे	टेकिछागे
१८७७	२३	२प्रलपुर	२प्रलवर	१९६६	६	पाहुलमायें	
,,	२४	६अलपुर	६प्रलवर	१९७२	१२	पहुरपों	पहुरयों
१८८०	१०	कहाइ	कहाई	,,	१६	नारिनकों	नारिमकों
,,	१४	मुरापसो	मुरापयो	१९७१	८	निचोरिहारि	निचोरिव
१८८८	२०	मराहुआ जाना	मराहुआजानो	१९८०	६	माकस	धूँकस
१८९२	११	फीराजस	फीरोजखा	१९८९	१०	पापदर्पपर	पापदर्पपर
१८९३	१६	माताका	माताकामरना	४००७	५	प्राहिक०	प्राहिक
१९००	२३	मायरूपी	नायरूकी	४०१४	१२	वपदसादि	वपधसादि
१९०३	९	तपहीं	तबहि	४०१६	२१	प्रखटरखोमी	प्रकटरखोन

॥ रामसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

४०४३	४	प्रसिद्धक्रिया	प्रसिद्ध क्रिया	४१९०	४	जवओघ	जवओघ
,,	३१	भस्मीभूतस्थ	भस्मीभूतस्य	४१९४	१४	राचिरप्रकाश	रोचिरप्रकास
४०४५	२१	आकारवले	आकारवाले	४१९७	२१	समंतिदेखकर	संमतिदेखकर
४०५७	१०	दसम१०मॉहिं	दसन१०माँहिं	४१९८	४	‡बै	‡वै
४०६४	३	विधिएह	बिधिराह	४२००	५	दुकुल	दुकूल
४०६७	२९	सधि के	संधि के	४२०६	१९	मांडा के लोग	मांढा के लोग
४०७०	१४	ताँहें४	तँहाँ४	४२०९	१८	अंतर	अतर
४०७१	९	परावनि	पराधीन	४२१३	१४	मुक्तराज्य	भुक्तराज्य
४०७५	२५	कताहा है	कहाता है	४२१८	२०	माग में	मार्ग में
४०७७	२२	विष दड है	विष दंड है	४२२६	१२	छिलिरेलदाय	छत्तिरेलदा
				४२२७	१७	बहुपुत	बहुपुट
,,	,,	छोट होवैं	छोटे होवैं	४२३२	१२	सगहमना	सहगमना
४०९१	२५	केसवाला	केसवाली	४२३६	२३	नहा मालुम	नहीं मालूम
४०९५	१५	१५आराग	१५अराग	४२४७	३	त।बूलकार	तांबूलकार
४१०१	२३	सभाकोमिटाओ	उसकोमिटाओ	४२५८	२९	खाली गय	खाली गये
४१०३	१७	पावरा	पावरी	,,	२८	निरर्थकहागया	निरर्थकहीगया
४१०३	२७	माधवसिंहने	माधवसिंहके पिता जालमसिंहने	४२६४	१७	वर्णसेसंबधहै	वर्ण सबंध है
४१११	७	आप्लल	आप्लव	४२६५	६	कालपलल	कोलपलल
४११८	२४	कञ्चन के	कज्जल के	४२६९	८	बुन्द बितजि	बुन्दिय बिताजि
४११९	१९	शुडमस्तकके	शुडसेमस्तकके	४२७४	१५	अत्मस्रूप	आत्मस्रूप
४१२०	१३	१शुडके	१शुंड के	४२७५	१४	प्रकृत भव	प्रकृत भव
४१२१	२७	जोंव्हीकभर	जो भीक भर	४२८५	३	आयुप्रवीय	आयव प्रवीन
४१२४	१	फल्ल तलाटं	गल्ल तलाट	४२९२	४	परन बनाय	पूरन बनाय
४१३१	१	अंचभयो	अचंभयो	४३१०	१५	वसु भरि	वसु भूरि
४१३३	२२	गोलाकरनाच	गोलाकारनाच	४३२४	१३	सनपात	सेनपात
४१३६	२७	वोध होताहै	वाध होता है	४३२७	१४	द्विजनन	द्विज जनन
४१४९	१९	छटिावर्गाचियों	छोटीवर्गाचियों	४३३१	१५	ताजेजेके	ताजेके
४१६१	१५	चित्र८वल्लैं	चित्रदवुल्लैं	,,	२०	गढकै १ईस	गढकेर ईस
४१६५	१०	द्वैरगरेनी७	द्वैद्वैरगरेनी७	४३४१	२४	कपमॅहँ	कंपमॅहँ
४१७०	२६	धुरको	धुरेको	४३५४	२२	भाडपुनि	भांडपुनि
४१७५	६	पठेसलत	पैठे सहत	४३६१	२१	सिहको	सिंहको
४१८३	२६	अटेरने	अटेरन	४३६२	१४	ग्रतासुभई	गतासुभई
४१८४	१९	समीरकाप्रदेश	समीपकाप्रदेश	४३६६	२	अजरटीदुव	अजरटदुव

तो खुल्लि पाय टुंड्डर[१]तजौं ध्रुवन बजौं अब काव्यधन[२] ॥८॥
करि संधा कवि चंड धीर लंगर पय धारिय ॥
कहिय जोहि इम करहु कवि सु जय१ जस२ अधिकारिय॥
अर्जुन[३] शृंखल अग्ग द्विजन भोजन हितदैहैं ॥
जयपट्टहु[४] लिखि जाहि सोपि गुरु गिनि गुन गैहैं ॥
यह नियम धारि किय ग्रंथ वह नाम सारसागर नियत ॥
निर्भयनियोग[५] प्रभुको स्वसिर जु किय सुजनमुख मुखजियत९
बंदी इक१ व्रजलाल१ कृष्णाधात्रेय आढ्य[६] किय ॥
अधिराजहिं करि अरज ग्राम१ गौरव२ गज३ अप्पिय ॥
सचिव कृष्ण तनु[७] तजत अग्ग सहि साचि खग्ग उर ॥
सुत तस मोहन सचिव धरयो अधिकार राज्य धुर ॥
प्रभुकेर कृपाभाजन परम जानें कवि चंडादि[९] जन ॥
तिन्ह मानहान मिटवान तिम मोरन लग्गो स्वामि मन १०
तब अक्खिय धात्रेय अरज इम प्रभुहि उपह्वर[१०] ॥
चित्र[११] बढत कवि चंड लहत जयमय पय लंगर ॥
कविअनेक भुवचक्र परत पैर[१२] जुरत परिच्छा ॥
संसदं[१३] बानिय समर सकल उघरैं धृत सिच्छा ॥
भारती[१४] जुद्ध रस स्वाद भर एहु लेहु आनंद इन ॥

---

१ चरण में प्रतिज्ञा का लंगर है जिसको खोलकर इस का पहनना छोड दूंगा और २ काव्य ही है धन जिसके ऐसा कवि फिर निश्चय ही नहीं बजूंगा ॥ ८ ॥ ३ श्वेत रंग (चांदी) की सांकलियां ४ विजयपत्र ५ स्वामी की आज्ञा से निर्भय होकर ॥ ९ ॥ ६ धनवान् किया, कृष्णराम धायभाई ने छाती में ८ तिरछी तरवार सहकर ७ शरीर छोड़ा तब ९ चंडीदान आदि मनुष्यों को ॥१०॥ १०एकान्त में अरज की ११चंदीदान आश्चर्य योग्य बढता है कि पैर में विजयी होने का लंगर पहनता है १२शत्रु आकर जुड़ै जब परीक्षा होती है १३सभा में वचन के युद्ध में १४सरस्वती के युद्ध के रस का स्वाद

कवि चंड रचत संधा कुसल करिये विभव बिलास किन११

प्रभु अक्खिय जहँ प्रीति सो न मेटहु कूटाश्रय॥

सुहृदभाव जहँ सुनत तहँ न छल लेस कहन नय॥

पुनि असहन यह पाप महत विस्वासघात मय॥

उज्झहु[2] स्वमति उपाय एह विधि वलित[3] टारि रय॥

तत्थ्य१ रु अतत्थ्य२ न दुरैं तदपि जिहिं जैसो कहिदेत जग॥

दुख सहत चिंति करिकैं हुरव मिलित द्रोह यह घोरमग१२

यातैं कपट उपाय कवि न कोऊ आकारहु[6]॥

बहु आवत बिनु जतन विविध पावत बसु वारहु॥

जो संभव बनिजाइ बिक्खिलैहैं बानी बल॥

पर दुख चिंतन पाप त्वरित लैजाइ रसातल॥

सुनि यह निदेस मोहन सचिव बिन्नति किय सब स्वामि बस

प्रभुके प्रसाद जो धर्मपथ सु सब गम्य रहिहैं सरस॥ १३॥

आवन लगि तिन अहन प्रचुर भूसुर१पौरानिक२॥

मागध३ बंदि[12]यं४ सुमति बहुत बिरचहिं कवि बानिक॥

पुव्व कथित क्रम पाइ घरन जावत लै धन घन॥

तिहिं अनेहँ[13] धात्रेय पाप प्रेरिय कपटीपन॥

ब्रजलाल भट्ट वह बुल्लिकैं कुटिल उँपव्हर[14] मंत्र किय॥

बुन्दिय अधीन बंदिन बहुरि लै बिच सम्मति सबन लिय॥१४॥

॥ ११ ॥ १ दंभ (छल) के आश्रय से २ इस उपायवाली अपनी बुद्धि को छोड दो रीति से ३ टेढे मार्ग के वेग को ४ सत्य झूठ नहीं छिपता ५ गीदड़पन करके ॥ १२ ॥ ६ कपट करके किसी कवि को बुलाना ७धन का समूह पाते हैं ॥ १३ ॥ ८ इन दिनों में ९ बहुत ब्राह्मण १० चारण ११ बड़वाभाट १२ स्तुति करनेवाले भाट १३ उस समय में धायभाई मोहन ने १४ एकांत में (गुप्त) सलाह की ॥ १४ ॥

लंगर पय घृत लखत ईरखाको गिनि आकर ॥
लै ढिग वह व्रजलाल चाविय कवि चंड[1] चंडतर ॥
या कविको उतकर्ष[2] सह्यो नन जात सदस्यन[3] ॥
हमहु रुद्ध मुख होहिं बनत उत्तर कहुँ वरन्यन ॥
कविचंड मान निर्मूल करि अप्पन रहहिं अभीत इम॥
तस अर्द्ध कविहु पावहिं ततो जयी करहिं निज पच्छ जिम॥१५॥
भन्यों सचिव सुनि भट्ट वदिय तुमरे सासन वस ॥
रामचन्द्र१ अभिधान इक्क१ वंदिय जाहिर जस ॥
वृत्ति नाँहिं[4] बाहुज२१न पंज्ज[5]४१२ वर्द्धकि तस पालक ॥
पै सुनियत कवि निपुन व्यूह[6] ऊहन उत्तालक ॥
जय आस प्रथम१ बिबुही जतन पच्छ२न[7] तो तावकँ[8] प्रबल
इक१तंतु१चटकर्क२तोरैं अलप मिलिबहु१गज२मोरैं मिसल१६
स्वामी प्रति नटि सचिव ताहि न सक्यो बुलाइ तब ॥
व्याह व्याह बाहुजन[9] अटन व्रजलाल मिल्यो अब ॥
करि दुर मंत्र१ सांकूत२[10] पिहित समझाइ प्रयोजन३ ॥
सो तिहिं आवन सज्ज बिरचि आयो गृह अप्पन ॥
सक गगन अंक बसु ससि समय १८९०. ॥
सूर्यमल्लस्य काव्यं समाप्तमिदम् ॥

---

१ चंडीदान कवि अत्यन्त भयंकर है जिसका २ बड़प्पन ३ सभासदों से सहा नहीं जाता ॥ १५ ॥ सचिव का कहा हुआ सुनकर भाटों ने कहा कि तुमारे हुकम में रामचंद्र नामक भाटप्रसिद्ध यशवाला है जिसके ४क्षत्रियों की वृत्ति नहीं है ५ शूद्र खाती (सुथार) उसको पालते हैं ६ तर्कना से समूह को उडाने वाला है ७तुम्हारा प्रबल पक्ष है ८एक तंतुको तो छोटा चिड़ा भी तोड़ सकता है और बहुत तंतु मिलकर हाथी को रोकदेते हैं ॥ १६ ॥ ९क्षत्रियों के विवाह विवाह में फिरते हुए व्रजलालको वह रामचन्द्र मिला १० अभिप्राय सहित खोटी सलाह करके उसको समझा कर व्रजलाल अपने घर आगया ॥

श्रीनीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपराय
ण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदाबारहठ-चारणकुलावतंस-शाहपु
रामतोलीपात्र सुयोग्यपितुरऽवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याः शृङ्गा
रनामजनन्याः प्राप्तप्रसवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराऽऽ
ज्ञाकारिभिराऽऽत्मजैः केसरिसिंह-किसोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगत
भाव्याऽऽधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासाऽऽ
प्तकाव्यशिक्षेण, सन्तोषादिसद्गुणसम्पन्नविद्वच्छिरोमणिपरमवैष्ण
वरामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्यसीतारामाऽऽह्वयगुरोराऽऽसा
दितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भवरघुवंशीयराणोत्तशाहपुराधिपराजो
पटाङ्किनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकररविकुलशिरोरत्नरघुवंशीयगु
हिलोत्तमेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीशसज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न
महाराणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारिमहाराणाफतैसिंहव

श्रीयुत नीति निपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्म मूर्ति वीर उदार सोदाबारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पो लपात सुयोग्यपिता ओनाड़सिंह के पुत्र ने, पंडिता सणगारबाई नाम माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरिसिंह किशोरसिंह जोरावरसिंह से मिटगई है आनेवा ले समय में होनेवाली मनकी चिन्ता जिसकी पंडित कवि अपने मामा कवि राज श्यामलदास से पाई है काव्यशिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परमवैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम नामक गुरु से पाई है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में उत्पन्न रघु वंशी राणाउत शाहपुराके पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और आर्योंके सूर्य सूर्यकुलके शिरोमणि रघुवंशीय गुहिल राजाके वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के अधीश सज्जनता आदि सद्गुणोंकी समृद्धिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यकुल के भूषण राठोड़ कुलके मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर

र्म, भानुवंशभूषण राष्ट्रकुलाऽवतंसमरुधराधिपजोधपुरेशराजराजे-
श्वरमहाराजयशवन्तसिंहवर्मभ्योलब्धाऽतीवदानमानस्वर्णरचितपाद
भूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथातदुत्तराधिकारितत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रति
पालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफल
यितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानि
वासिना कविवरबारहठकृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटी
कायां समाप्तोयं सूर्यमल्लविरचितो वंशभास्करनामको ग्रन्थः ॥

के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यशवंतसिंह वर्मा से पाया है दान बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्त राधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक पालना करनेवाले मारवाड़ के पति श्री सरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढीहुई विद्याको सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे श्रेष्ठ कवि बारहठ कृष्णसिंह की बनाई हुई उद धिमन्थनी नामक टीका में सूर्यमल्ल का रचाहुआ वंशभास्कर ग्रन्थ समाप्त हुआ ॥

॥ दोहा ॥

कविवर सूरजमल्लकी, यहँ लग कविता आहि ॥
तापर टीका बिस्तरी, संधाको हठ साहि ॥ १ ॥
अगेकी कविता यहाँ, रची मुरारिदान ॥
ताकी टीका तजतुहैं, देखत किते निदान ॥ २ ॥
जे निजबुद्धि विवेकजुत, हैं अधुना निजगेह ॥
तिनके विरचित काव्यके, जानो अधिकृत जेह ॥ ३ ॥
तजनेहीके व्यङ्गतैं, सुकवि समुझिहैं सार ॥
कुत्सितवचन प्रयोगको, विरचत नहिँ व्यापार ॥ ४ ॥
को उपकारी ग्रन्थकारि, परउपकार प्रचार ॥
अन्यहि हितसाधन उचित, भुजन उठावत भार ॥ ५ ॥

घनाक्षरी ॥

कवि रविमल्लको बनायो वंशभास्कर सो,
छायो कष्ट शब्द घन छोनीपैं दिखायो छाम ॥
बुद्धिबात बेगतैं विडारि मेघ मंडलकों,
निर्मल दिखाय दीनों रचि टीका अभिराम ॥
कृति कवि कोकनकों दापन अमोघ सुख,
ज्ञापन करायो हिय कंज विकसैबो ताम॥
कूरन कुतर्कि घूक मूक करि कृष्णकवि ॥
जीवन सफल जान्यों करि उपकारी काम ॥ ६ ॥
रस व्योम ग्रह महि१९०६ पायो भव कृष्णसिंह,
शाहपुर भूपकों सुहायो सुखमा पसार ॥
मेदपाटभूपमनि सज्जन रिझायो पुनि,
फतैसिंहहूतैं पायो दान मान प्रीति फार ॥

जोधपुरभूप जशवंतनैं बढायो ज्यूँहीं,
चर्ननमें चामींकर भूषनको धरि भार ॥
इभ सर नंद इन्दु१९५८ चैत्र श्याम सत्तमिकों,
पूरन बनाय टीका कीन्हों उपकारी कार ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥

बावन वर्ष बिताय बराबर, सम्मदमैं न लह्योकहुँ अन्तर ॥
सासन जाको महीपनके सिर, होय अमोघ रह्यो सु अमंथर ॥
आयस मात पिता सिर आनिकैं, पुंगव पंथ निबाह्यो परंपर ॥
संसृतिभार सबैं तजिहों रु, अबैं भजिहों करतार निरंतर ॥८॥

॥ दोहा ॥

समय मिले पर सद्धिहों, पर उपकार पवित्र ॥
जाकों पुण्य महर्षिजन, मन्नत जगको मित्र ॥ ९ ॥
वह डिंगलको कोस इक, रचि नव निज अनुरूप ॥
काव्य पुरातन अति कठिन, परे निकासहिं कूप ॥ १० ॥

उत्तरपीठिका

सूर्यमल्लकी कविताके लोभसे हमने इस परोपकारी कार्य का भार उठाया था वह लोभ यहीं पर समाप्त होता है इस कारण हम भी टीका बनाने के भारको इसके साथ ही छोड़ते हैं अर्थात् इससे आगेकी पूर्ति सूर्यमल्लके दत्तक पुत्र मुरारिदानने की है जो स्वयं इस समय विद्यमान हैं उनकी विद्यमानता में भी हमारा टीका बनाना अनावश्यक ही समझा गया इतना ही नहीं किन्तु यह अव्यापार है जिसमें व्यापार करना अनुचित है इसीकारण से आगेके काव्यमें हमने कुछभी हस्ताक्षेप नहीं किया है यहांतक कि कविवर सूर्यमल्लकी छोड़ीहुई मयूख की इतिश्रियां हमने बनाई हैं वह भी आगे की कवितामें बनाना उचित नहीं समझा किंतु जैसा कुछ लिखा हुआ मिला वैसाही छपवा दिया गया है

इस ग्रंथकी प्रथम राशिमें ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्लने प्रतिज्ञा की थी कि ग्रन्थ के अन्तिम चार राशिमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों का वर्णन करूंगा परन्तु वह सूर्यमल्ल से नहीं होसका जिसके लिये हमारे कई मित्रोंने अनुरोध किया कि इस ग्रन्थकी उत्तरपीठिकामें उपरोक्त चारों पुरुषार्थों का वर्णन करके ग्रंथकर्ताके अभिप्रायको सफल करदेना चाहिये परन्तु प्रथमतो हमारे शरीर में पक्षाघात, मधुप्रमेह आदि रोगों के होजाने से इतनी शक्ति नहीं रही; इसके उपरान्त ग्रन्थकर्ता के समय में तो इन पुरुषार्थों के लिखने की आवश्यकता थी क्योंकि वे ग्रन्थ उस समय संस्कृत में होने के कारण सर्व साधारण को समझाना अवश्यथा परन्तु अब तो वे ग्रन्थ भाषानुवाद सहित छप कर सब प्रसिद्ध होचुके हैं जिनका फिर यहां लिखाजाना केवल पिष्टपेषण है अतएव हमारे मित्रोंका भी इससे संतोष होजाने पर यह विचार छोडकर यहीं पर समाप्ति कर दी गई है. इस ग्रन्थ के अपूर्ण रहने का कारण हमने सूर्यमल्ल के शिष्यों से कई द्वारा सुना है परन्तु उस पर हमको विश्वास नहीं है जिसका सङ्केत रामसिंह चरित्र में जोधपुर में महारावराजा रामसिंहका विवाह होना और बुंदीके धायभाईके मारेजानेकी कथा पर नोट किया है वहां दिखा दियाहै

सूर्यमल्ल के मरे पीछे महारावराजा रामसिंह ने सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान से इस ग्रन्थ की समाप्ति कराकर एक ग्राम मुरारिदान को देकर सूर्यमल्लकी जो स्त्रियां उस समय विद्यमानथीं उनको भी एक एक ग्राम उनके जीवन पर्यंत देकर सूर्यमल्लकी इस सेवाका फल दिया. अब हमारे पाठकों से सविनय प्रार्थना है कि इस टीका का बड़ा भाग हमारी रुग्णावस्था में बनने के कारण जहां कहीं अर्थदोष मिलै उसको कृपा पूर्वक सुधार कर हमारा दोष क्षमा करें. किमधिकं विज्ञेष्वलम् ॥

शाहपुरा के पोलपात सोदाबारहठ शाखा के चारण कृष्णसिंह ने
इस टीका को जोधपुर में समाप्त की ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

बसु नव गज भू १८९८ मित बरस, समय सोधि सुभ भूप॥
पहु यात्रा प्रारंभकों, निज मन किय अनुरूप ॥ १ ॥
श्रीभट्टजी महाराज सह, प्रभु दुवर सासन पाइ ॥
उमरावन पंचपन अखिल, नरपति हार्द सुनाइ ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम बिचारि अजमेर पत्र मंडिय पुहवीपति ॥
बाहुल८ बदि तिथि तीज३ सोमबासर२ साहब प्रति ॥
रजीडंट अंग्रेज सदरलैनहु सब सासक ॥
अरु अजंट चारालिस रिचारडिस तिनको आसिक॥
कलकत्त नगर स्वामी सबन तहँ सु लार्ड प्रति पल तिम ॥
लिखि अट्ठ८कलम जग जस रहत अधिपहिँ भेजिय छिप्र इम॥३॥

॥ पद्धतिः ॥

मम सेना सन्निधि पंथ मान, व्है नाँहिँ धर्म१गो२ प्रान हान१॥
प्रतिपंथ मम सु दरजा प्रमान, व्है सलक्क सलामी न तहँ हान२॥
सेना अरु पुरजन सत्थ मोहि, जो नागफाग रत रहत जोहि॥
लखि ताहि पंथ मासूल लैन, व्है हत्थ अमल तो रोष व्हैन ॥५॥
पुनि दुग्ग१ थान२ जो व्है प्रसिद्ध, सब जन हम जावै सस्त्र सिद्ध
बलि चक्र माँहिँ जो सस्त्रबंध, सो नाँहिँ रोक पावै सु संध४ ॥६॥
पुनि पथ स्नानयात्रा प्रसंग, अंतेउर उतरैं जहँ उमंग ॥
जो नीच उच्च व्है पुहवि जत्थ, तो व्है प्रबंध हम तोर तत्थ ॥ ७ ॥
उतरैं जो हम जिहिँ थान आय, पुनि स्नान निमित्तक पट्ट पाय॥
बनवावैं हम तापैंहि बात, रोधक नह बुल्लैं दिन रु रात ॥ ८ ॥
हमरेहि सत्थ व्है नयन२ नालि, आवै इम भोलिन नालि नालि॥

तस सलक सलामी नित्य माग, जाकोहु हुकम व्है सर्व जाग ।६।
कट्ठादि वस्तु सब प्रति मुकाम, दल मामकतैं लै सुविधि दाम ॥
दृढ चित्त अग्ग व्है थानदार, सबकौं सु दिवावैं वस्तु सार ॥ १० ॥
खत बीच अष्ट८ कलमां लिखाइ, जो तूर्ण चार अजमेर जाइ ॥
अर्पित किय साहब हत्थ ऐन, लै त्वरित बंचि दल सदरलैन११
प्रतिउत्तर भेजिय इम प्रजेस, अधिपति सु अन्यतर जिम असेस ॥
जो क्रम सु सनातन तिन जबाब, सो सब व्हैजैहैं तिहिं हिसाब१२
तिनदिवस जहाँ व्यवहार तत्थ, आसप दृढ भेजिय तहँ सु अत्थ॥
इम करि रु सर्व भूपति उदार, साज्यादि श्राद्ध सास्त्रानुसार ।१३
श्रीरंग सिष्टि लै पुनि रसेस, क्रमकरि रु परिक्रम पुर असेस ॥
सुद्धांत सहित पुनि किय पयान,दिय रंक रु भूसुर अमित दान१४
पहु लिपउ भीम पट्टप कुमार, तिम किपउ कुमर अर्जुन तपार ॥
गोवर्धन तदनुज गुन गरीय, बचना सु सिष्टि भूवर बरीय ॥ १५ ॥
पथि माता पूजन करि प्रजेस, वलि किय सिकार बुरजहि प्रवेस
सित२ पौष द्वितीया२ऽऽगिरस५ वार, नाड़ी त्रय३ मध्यहि रजनि
कार ॥ १६ ॥
कोटेस राम प्रति अब्द काज, भेजे पउसाक सु प्रीति भाज ॥
सो पत्र सहित लै रत्नलाल, आइउ पंचोली तहँ उताल ॥ १७ ॥
घटिका सब बित्तत जब सु घस्र, हाजरि बितर्द हुव अष्ट८ अस्र ॥
नजर रु निछावर करि सिरनाय, पढि कुसल तास कृत मिसल
पाय ॥ १८ ॥
आविक पुनि अंबर अरज आखि, किय नजर पत्र संमदकराखि॥
अरु कहिय जयश्रीकृष्ण आप, आदेस ममोपरि इम इलाप॥१९॥
पथि संग रहन यात्रा प्रसंग, तसमात चित्त ममहै उमंग ॥

सो अरज सुनि रु तस कुसल किन्न, दयया सह ताकों सीख दिन्न
सित१ पौष१० पंचमी५ सूर वार१, किय वर्षगंठि अर्जुन कुमार ॥
तदनंतर तहँ संबंध ताहि, मंदेस झल्ल नंदन उमाहि ॥ २१ ॥
हिंदूमल्ल जीवन भट हिताय, दिय तार भर्म लांगलि दुराय ॥
तिम पंच५ लांगली१ क्रमक२।५ त्यौंहिं२, सिरपेच १ जटित इक पुनि सुयौंहिं ॥ २२ ॥
तिम दियउ२ इक्क१ उरसूत्रिकाहि २, मौक्तिकय कर्णिका ३ दुव उमाहि ॥

काहि१ माहि२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सिरुपाव४ चतुर्दस१४ पुनि सप्रीति, राजत मतंग५।१ इक हय६।२ सुरीति ॥ २३ ॥
इत्यादिक दुव२ लै आजगाम, हुव अरज त्वरित तहँ हितहि काम
सित१ सोम२ षष्टिका६ पुहवि सक्क, अंबक२ सह घटिका रहत अक्क ॥ २४ ॥
रचि सभा चोक मानिक रसेस, आहूत सर्ब उमरा असेस ॥
दे०पा१दिसिंह दुर्गापुरेस, जय१ बिजय२ सिंह आइउ जयेस ।२५।
सचिवा१दि ऊरुजा२ सर्ब आइ, प्राघुन हुव हाजरि प्रीति पाइ ॥
अरु अप्प कुमर अर्जुन उमाहि, रहि ब्रह्मघट्ट त्रि३ द्वार काहि।२६।
तिम कतिक तहाँ उमराव तत्थ, अर्चित करि नवग्रह कुमर अत्थ
प्राघुनक प्रथम हे प्रीति पाय, तिन अंक कुमर अर्जुन हिताय२७
भरि किपउ तिलक कुंकुम सुभाल, इम महुर नजर करि तिन उताल ॥
पूर्वोक्त जवाहर बस्तु पेस, सब किपउ भूप हित तहँ असेस॥२८॥
करि सगपन तिन्ह दिन कतिक राखि, अप्पिय सु सीख पुनि कुसल आखि ॥

उग्गत रवि सप्तमि७ आरवार३, सामंतसिंह आइउ उदार ॥२९॥
धोउर पुरेस महिपाल धीर, वलि सम्मुह भेजिय तस प्रवीर ॥
जो उपवन भट्टजि अस्त्रजाइ, अति प्रीति मिलि रु पटगृह सुआइ३०
पुनि रहत वेद४ नाड़ी पतंग, कापरनि कांत आये उमंग ॥
वलि वेल विलासहिं देवमाँहिं, अति स्वच्छ जलासय आवआँहिं३१
सामंत पितृव्यक तहँ सचाह, आतहि प्रभु गौरव दिय उछाह ॥
मिलि वहुरि भुजांतर उर मिलाइ, किय मुजरा तिन्ह अति भवि-
क पाइ ॥ ३२ ॥
संलाप कुसल हुव पुनि सप्रीति, अरु कहिय रहहु रह अप्प रीति॥
कहि इम रु तास दसतूरकिन्न, सीतहि सु जानि स्थुलसीखदिन्न३३
आ धवल तप११पत्तति१जीव५आत, दुव लाल नयन२विश्रामदात
रहि तत्थ द्वितीया२ सुक्र६वार, किय वहुरा जीवक कारदार ॥३४॥
तिम अंकित मुद्रा नाम तास, प्रभु दियउ निरंतर रहन पास ॥
हुव कुच्च तृतीया३सौरि७होत, इढ अप्प नयनपुर किय सु द्योत३५
वदि वासर पंचमि५ चंद्र वत्त, साहव रिचारडिस अर स पत्त॥
प्रेषित किय लंघन हर्ष पाइ, आदि सु अजंट गढइंद्र आइ ॥३६॥
करि साम कोटरिन तत्थ काज, रहतहि तस खर्चरि सु आत राज
प्रभु भेजिय सह दल अप्पपास, हुव राणी विकटोरियाहुलास३७
सुनि पत्त किपउ अति मेह प्रसारि, दारिद दिय सूरिन इम बिदारि
उग्गत बुध४ सत्तमि७ पुनि उदंत, भेजिय अजंट साहव भनंत३८

दंत१ नंत२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सेना १ अरु पुरजन २ सहँस दोइ २०००, सुहि जावैं भूपति
गहोइ ॥
अरु दुग्ग१थान२ तहँ पंथ आत, जँहँ व्है असत्र सह सेन जात३
साहव न जात जिम अप्प सत्थ, इम सुनि मुकाम क्रम कारि ।

अत्थ ॥ ४० ॥

एकादसि११बदि दिन अर्क१ जात, प्रभु अप्प सिबिरतैं सौध पात
श्रीरंग दरस करि तहँ सप्रीति, संसद रचि तत्रहि प्रभु सनीति४१

प्रीति१ नीति२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

आंत्रद अधीस मुहुकम्म उत्त, आव्हान राम प्रति दियउ छुत्त ॥
हाजरि हुव सत७ सु जनहि आइ, प्रभुतैं सुहि अभ्युत्थान पाइ४२
किय मुजरा तिहिँ अति भविक पात, हढ अप्प पानि सुव्हहि दिखात
किय कुसल तास तिन नजर किन्न, दुव २ नाड़ी राखि रु सीख

दिन्न ॥ ४३ ॥

सुदि होत प्रतिपद१ सुक्र६ वार, ॥

, तब कियउ पत्रानुरूप ॥ ४४ ॥

सित सौम्य ४ चतुर्दसि १४ सूर आत, व्यापृत चतुष्क ४ राखिय

विख्यात ॥

[illegible]क १ ईस नंद जुत लाल १ आँहिं, तिम राखि पठान जु जमित

खाँहिं ॥ ४५ ॥

[illegible]लि पन्नाजुतलालहिँ भुआल, इह मंगल राखिय अंतलाल ॥
[illegible]रराज चतुष्क ४ न अत्थ आप्पि, महिपाल लेख त्रिंसति ३०

समप्पि ॥ ४६ ॥

[illegible]मतैं जु लेख सुनिये कृपाल, बल आदि सर्ब बच आलबाल ॥
[illegible]जवार दसावर इतर पत्र, आवैं उदंत तामाँहिं अत्र॥ ४७ ॥
[illegible] होइ आसु तो झटिति देय, न त्वरित जो सु मम प्रतिहि नेय
[illegible]रु स्तेयी १ व्यापृत २ अन्य आइ, करि दंड इतर बिधि जुत

कराइ२ ॥ ४८ ॥

[illegible]न स्वीय अन्यतर राज जाइ, इह स्तेय आदि करि जोहि आइ
[illegible]मैं प्रमान डाँरै सु तत्थ, पूरब स्वदंड करि तास पत्थ३ ॥४९॥

मेवारज मैंनें जात मोसि, पूर्वोक्त लेख जिम स्तैन्य पोसि ॥
साहव अजंटतैं कहि सु लेय४, बिधिजुत इत्यादिक तब बिधेय५०
इम करत प्रबंध सु राज्य अंग, महिपाल लगत फग्गुन १२ उमंग
रविवार१तृतीया१रमत फग्ग, स्थलकमल गुलालादिक समग्ग५१
इम रमत फग्ग पुरिग्राम१५सु आत, प्रभु चलत सत्थ मागीन पात॥
मधु१ लगत मास पत्तति१पतंग१, साहब रिचारिडिस अर उमंग५२
तंग१ मंग२ अंत्यानुमासः ॥ १ ॥
पट्टनितैं साहब भल्ल केर, मग बैठि डाक हय नां अबेर ॥
आराम नयनपुर राम आइ, तस अत्थ सिबिर प्रभुतैं तनाइ ॥५३॥
तस मिलन अत्थ प्रभु तहँ पधारि, साहब उदंत यात्रिक सु धारि॥
साहब सु उभय२ लै अप्प सत्थ, प्रभु सौध पधारे पग्ग अत्थ५४
तहँ छत्रमहल बिच रंग ताहि, अक्खत कवि आह्वय तास आहि
कौसुंभि१ रु कुंकुम२नीर कारि, वर्णक३अबीर४तोखीर५पारि५५
पतंग६नीर पुनि करि रु स्फीत, पिचकारिन साहब किय पुनीत ॥
साहब अजंट प्रभुपैं सु बारि, दृढ प्रीति बहुरि दिय तबहि डारि५६
प्रभु अप्प डारि पुनि सहँस १००० धार, किय वर्णक जुत पट्टप कुमार ॥
करिफग्ग अजंटहि सीखदिन्न, अरुअप्प स्नान२आदिक सु किन्न५७
आत्मीय शिविर साहब उम्हात, अंगार३ तीज३ मध्यान्ह आत ॥
तस सम्मुह ड्योढी अप्प जाइ, आनंदित तासह माँहि आइ५८।
क्रमतैं जु बैठि पुनि तहँ कृपाल, किय सार्द्ध मुहूर्त२ रहस्यकाल॥
बुंदी१ अरु यात्रा करि प्रबंध, तिन्ह अतर१पान२ दे पुनि सुसंध५९
इम सीख दे रु मग कुसल आखि, तँहँ अप्प नयन२ विश्राम राखि
उग्गत रवि षष्टी६कवि६गरीय, विश्राम समाधी दिय तृतीय३ ६०
किय चोरू सप्तमि ७ सनि ७ मुकाम, माधवपुर अष्टमि ८ दिय

विश्राम ॥

नवमी९मूकाम किय पुर पडान,दसमी१०अंगारक३कारि निदान६१
डुंगरमलारने किय मुकाम, वाटोंदै एकादसि११ विश्राम ॥
पुनि जीव५द्वादसी१२घस्र आत, नवमो९कुशालगढ चक्र पात६२
पुनि असिता तेरसि१३ कवि६ प्रभात्त, पीलोदै प्रभु किय सेन पात
हिंडोन चतुर्दसि१४ होत बास, परताप करोली पति हुलास॥६३॥
बलदेव१ बनिक दीवान रुपात, पुनि प्रियादास२ वाड़व उम्हात ॥
अरु ऊरुज चूनीलाल३ एम, गुस्साही रक्तोगर४ हि तेम ॥ ६४ ॥
सचिवादि सुजन चउ४ए पठाइ, मनुहारि बिबिध बिधि जुत कराइ
सतपंच५००रौप्य महमानि अत्थ, पक्कान्न मंथनी तास३०सत्थ६५
इत्यादि उहाँ लै त्वरित आइ, रहि रत्ति प्रात पहु हुक्म पाइ ॥
हाजरि हुव पटगृह होत कुच्च, आसिख सलाम करि प्रीति उच्च६६
अरु नजर निछावर अरज किन्न, भूपति जुहार भाखिय अभिन्न
अरु कहिय आगमन इह स्वकीय,गृह करहु पवित्राहि अस्मदीय६७

कीय१ दीय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सतपंच५०० रौप्य पुनि ल्है प्रसन्न, ॥
तामैं सुदोइ२ नारंग एम डाल्याँ कंडोल चपारि४ फल कुसुम२॥६८
कूष्मांड इक१ इक१ भूमिकंद, अहिबल्लिपत्र सत चउ४००अनंद
महमानि करहु स्वीकार एह,सो अरज सुनि रु पुनि करि सनेह६९
करि माफ रौप्य कंडोल राखि, जय रंग कहहु नृपतैं इमाखि ॥
दै सीख ताहि पुनि कुच्च पाइ, बिश्राम कियउ सूरैट जाइ ॥ ७० ॥
पत्तति १ मुकाम सित दिय बियान, तहँ करत द्वितीया २ दिन॥

मिलान ॥

चूड़ामनि जट्टहि बंस जात, लैवाल मुकुंदाऽऽतित्थ्य आत ॥७१॥
रचि सिबिर सभा लिय तिहिं बुलाइ, हाजरि हुवै तहँ सो हुकमपाइ

करि नजरिनिछावर पुनि सलाम,दुव२सचिवहेठ्ठ बैठि रु सुश्राम७२
किय अरज मुकंदहि फौजदार, बलवंत कियउ मालुम जुहार ॥
अरु पंचसतक५००नाणकसु एह,स्वीकारकरहु प्रभु करिसनेह७३
विज्ञप्ति सुनि रु तस भव्य आखि, आतित्थ्य रौप्य आदिक सु राखि ॥

व्यवहार भरतपुर करि सुवत्त, दुव२घट्टि राखि तिन्ह सीख दत्त७४
पुनि सदरलैन साहब मिलाप, भेजिय हमीदखाँ सदल आप ॥
तिहिँ जाय पत्र दिय करि सलाम, रुहि एह मिलन प्रभु चउ४ मुकाम ॥ ७५ ॥

पुनि दियउ तृतीया तहँ मिलान, सब जन दिय उत्सव गोरि दान
पुनि होत चतुर्थी४ दिन प्रभात, खांत्रंतहमीयद छदन आत ॥७६॥
तामाँहिँ लेख पंचमि५ मिलाप, अरु सदरलैन व्है मुद अमाप ॥
कहि रामसिंह राजाधिराज, दृढचित्त रु है वार्द्धक दराज ॥७७॥
तातैं हम चाहत मिलन तूर्ण, पुनि चहत भरतपुर ईस पूर्ण ॥
आवत हम सम्मुह उभय तत्थ,सुनि राम अरज करि कुच्चसत्थ७८

॥ दोहा ॥

पंचमि५ दिन करि कुच्च प्रभु, वैर मुकामन आत ॥
नगर कनावरतैं निकट, पिप्पलतरु इक पात ॥ ७९ ॥
उहां भरतपुर ईसके, बारीदारन आइ ॥
रंजित किन्न बिछात सम, मन बहु मोद मनाइ ॥ ८० ॥

॥ षट्पात् ॥

सदरलैन साहब१ रु भूप बलवंत२ भरतपुर ॥
बाजी४ रथ थित होइ उभय२ सम्मुह उमंगि उर ॥
तीन३ कोस लग आइ बहुरि ठहे बिछात पर ॥
तब जीवन बहुरा रु हमिदखां तह वकील तर ॥

चहुवान तरनि सन्निधि त्वरित आइ निवेदिय अरज इम ॥
प्रभु वेर२ बिछात ठट्ठे उपरि अप्प पधारहु देर किम ॥ ८१ ॥

(दोहा)

यहै अरज सुनतहि अधिप, तहां हय स्थित आत ॥
अस्त्र बिछायतके उपरि, हुलासित तुरग बिहात ॥ ८२ ॥
सदरलैन साहब समुह, अरु बलवंतहु आइ ॥
सय इक१ भरत पुरेसहू, लिन्नों सीस लगाइ ॥ ८३ ॥
प्रभु तब अप्प सु पानि इक१, आनन छुयस उठाइ ॥
कुसल परस्पर किन्न पुनि, मुद जुत खंध मिलाइ ॥८४॥

॥ षट्पात् ॥

उत्तमंग पुनि सदरलैन कर इक्क लगाइय ॥
तब पहु आनन निकट अप्प सुभ पानि उठाइय ॥
गाइय१ ठाइय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
खंध जुट्ट मिलि मुदित दुव२हि रचि कुसल परस्पर ॥
तुच्छ समय तहँ बैठि बत्तकरि देस१ काल२ बर ॥
जेट्टस केर चउ४ तुरग रथ बैठे तीन३हि मुदित मन ॥
बलवंत बाम दक्खिन सदरलैनहु सम्मुह अप्प सन९ ॥८५॥
सिरैरहि इु प्रभु अप्प१ चले डेरन प्रति सत्वर ॥
हुव सु अग्ग जय१ बिजय२सिंह आसुहि तुरंग बर ॥
इम त्रय३ डेरन आइ अधिप सह तजि रु अस्व रथ ॥
बाजी स्यंदन चढि रु वे सु दुव२ चलिय वैर पथ ॥
इत होत सिबिर दाखिल अधिप ताप कीन नाली त्वरित ॥
दसपंच१५ फैर उततैं चलत इत नालिय चालिय सहित ॥८६
रित१ हित२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
हुव हाजरि बलवंत बहुरि जन तहँ सु प्रतिष्ठित ॥

अरज कराइय एह भूप महमानि सेनहित ॥
सासन करहु प्रसिद्ध लेहु पक्वान्न चक्र सब ॥
यह सुनि रु दियउ हुकम सचिव आवैं मामक जब ॥
मिलि सचिव चक्रपति आदि तहँ जाइ दिखाइय स्वच्छ मन॥
आमोद तत्थ इम राखि पुनि आये व्यापृत सठ सदन॥८७॥

॥ पादाकुलकम् ॥

षष्ठी६ दिवस मिलान तहाँ दिय, पुनि बलवंत भविक जन आइय
तब प्रभु निकट हमिदखाँ जाइरु,कियउ अरज प्रभुतैं मुदपाइरु८८
प्रभु बलवंत सुजन पठवाये, पधरावन अप्पहिँ उत आये ॥
समय प्रजेस हार्द जो पाऊं, सो उनकोँ मैं जाइ सुनाऊं ॥ ८९ ॥
सुनि इम अरज निदेस दयो जब, नाड़ी नयन२ रहैं दिनकर तब॥
इम क्रम क्रमन उहाँ तुम जानहु, पुनि तहँ साहब मिलन प्रमा-
नहु ॥ ९० ॥

इम वकील सासन सुनि आयो, सुजन त्वरित बलवंत सुनायो ॥
स्वनृप जाइ तिन वृत्तनिवेदिय, तब सभ्य रु संसद तयार किय९१
पट्टप भीम २०३।१ कुमार जुत्त पुनि, गोवर्द्धन कुमरहिँ प्रभु लिय
चुनि ॥

सेना सर्व चार भट सारे, प्रभु नवलक्खा बाग पधारे॥ ९२ ॥
प्रथम जात बलवंत गेहपट, सम्मुह बिंसति२०पैंड वे सु अट ॥
तुच्छ समय पुनिवस्त्रसदन रहि,साहब शिबिर बरव्यर क्रमचहि९३
तहाँ अव्य१बलवंत२ सिधाये, रद३२पद सदरलैन समुहाऽऽये ॥
करि सँल्लाप भव्य मुद पाइउ,त्रय३हि सौध संसद जहँ आइउ९४
खुरसी अप्प मध्य आरुहि जहँ, भीम२०३।१कुमर दाच्छिन कुरसी
तहँ ॥

तदनंतर जय१ विजय१सिंह दुव२, उपवेसन गोवर्द्धन ततहुव॥९५

तातैं बक्र मिसल सम्मुह सन, खुरसिन लग्गिय तास सुभट जन॥
स०पहि सदरलैन साहब रहि, सन्निधि तास भरतपुर ईसहि ।९६।
समय मुहूर्त वृत्त तहँ जंपिय, अतर१ पान२ पुनि चरन निवेदिय ॥
साहब उक्त१ सु अप्प लगाये, पानदान प्रभु नजर निराये ॥९७॥
संग्रहि कहिय सिबिर संजावन, प्रभुकों तब वे दुव२ पहुँचावन ॥
महलनतैं सु चोक लग आये, सदाचार तीन३हिं तहँ पाये॥ ९८ ॥
प्रभु पुनि अप्प सिबिर दाखिल हुव, तुरतहि तहां वे सु आये दुव
जब वहि सिबिर दुर दिस भट राखि रु, प्रभु पुनि सुख्य सिबिर रह्न बाहिरु ॥ ९९ ॥

खिरु१ हिरु२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

प्रभु तहँ खुरसी मध्य बिराजिय, सदरलैन उपविष्ट स०प किय ॥

जिय१ किय२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

पुनि बलवंत असठ्यहि पाये, प्रभु तत लार्ड पलास दिखाये ।१००।
तामें लेख कोल नामाँको, साहब देखि चविय नृप याको ॥
उत्तर झटिति अत्थ नहिं ऐहैं, बासर कातिक विचारिहु देहैं॥१०१॥
अतर अप्प दोउ२न पुनि अप्पिय, पहुँचावन प्रभु तिन्हैं गमन किय
बाहिर सिबिर तनावहिं आइ रु,दियउ सिक्ख तिन्ह सुवच दृढाइ रु
बाजी स्यंदन चढि रु सिबिर प्रति, कियउ गमन प्रभु दुव२हि र-क्खि रति ॥
इत पटआलय अप्प पधारिय, बलाधीस कटिबंध निवारिय।१०३।
षष्ठी६ दिन तहँ रत्ति बिहाई, सुज्जवार१ सप्तमि७ अग्र पाई ॥
सत्त७ कोस ठ्हांतैं कवईपुर, हुव प्रभात दाखिल अंतेउर ॥१०४॥
करत कुच पुनि प्रभु तहँ भोजिय, सुजन प्रताप महीप करोलिय॥
इम बिज्ञप्तिआइ तिन्हअक्खिय,भूप मदीयमिलन प्रभुभक्खिय१०५
पुनि निर्देस समयको पावैं, प्रभु मामक झुतहीं पधरावैं ॥

इम सुनि अरज नियोग दयोनृप, हमरो तुम जानहु हुतहीसृप१०६
इम सुनि सुजन पटालय आइ रु, प्रभु इत समय संभ्भकों पाइ रु
कर्म नित्य आदिक सब किन्नों, संसद रचन निदेसहु दिन्नों १०७
बान५ घटी रजनी पुनि वित्तत, चढि इभ भूप प्रताप सु चित्तत ॥
उतर्यो द्वार पटालय आइ रु,पहु सुनि सम्मुह अप्प पधारिरु१०८
इरु१ रिरु२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
शस्त बहुरि मिलि कियउ परस्पर, बैठे इक्क आसन धरनीवर ॥
समय देस वृत्तांत सु जंपिय, नाड़ी इक्क१ उपवेसन रक्खिय१०९
दें तिन्ह सिक्ख कियो पहुँचावन, अंसुक सदन द्वार लग आवन॥
इम दें सिक्ख अप्प तुरगासहि, सिबिर प्रतापपालके आसुहि११०
कियउ कमन प्रभु रत्ति रक्खि रति, सुभट मुख्य---सह संहति ॥
तिन्हें तबहि आगमन रु सम्मुह, संलाप रु उपविष्ट आदि सुह १११
मुह१ सुह२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
प्रथम रीति जिम कियउ धरावर, जंपिय सिक्ख अप्प तदनंतर ॥
इम सुनि सोहु पुगावन आये, पटगृह द्वार हपसही पाये ॥ ११२॥

॥ दोहा ॥

सदाचरन करि तह सुब्रत, पुनि चल्लिय मुद पाइ ॥
नयन२ घटी रजनीं रहत, हुव दाखिल स्थुल आइ ॥११३॥
अष्टमि८ दिन पुनि तहँ अधिप, राखि रु श्रम विश्राम ॥
शस्त्रादिक पूजन सकल्ल, रंजित किय प्रभु राम ॥ ११४ ॥

॥ मुक्तादाम ॥

कियो नवमी९ कुज३ वार प्रयान, दयो सु कुमेर मुकाम दिवान॥
यान१ वान२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
तहां बलवंत सुनाग पठाइ, जरी कुथ तास सिरी सु बनाइ ॥११५॥
सुतारन मंडित होदन साजि, पलास बहोरि सु यावनि राजि ॥

किये तस लंच सु मानुस आइ, कर्यो छुरसीकृत भाविक पाइ॥११६॥
दियो दशमी१० दिन डिग्घ मुकाम, रहे तहँ रुद्र११ तिथी प्रभु राम
तहां भवनाभिध सुंदर थान, तिन्हैं किय देखन गोन दिवान११७
उहाँ ब्रजमोहन दुग्गप आइ, दये तिँहिँ भोन असेस बताइ ॥
बिताइ घटी बसु८ह्वाँ क्षण देस, कियो प्रभु अंबरओक प्रवेस११८
चले पुनि द्वादसि१२ लै चतुरंग, गिन्यो सु मुकामहि मानुसि गंग॥
तहां इक१ गोरधनाह्वय सैल, मिटैं जहँ जातहि मानुस मैल ।११९।
अनंग१३ तिथी दिन स्नान उमंग, सु गोन कियो प्रभु मानसिगंग
उहां करि आप्लव अंहति अत्थ, मगायउ नाग१तुरंगम२ तत्थ१२०
सिरी१कुथ२ताहि बनात सु साजि, बनाइ रु तादृश त्यौंहि सुबाजि
महीप बहोरि सु द्रम्म पचास५०,तथासर५निष्क१रु चीर२सतास१२१
तुरंग१ बहोरि सनिष्क३हि तीन३, दये पुनि द्रम्म पचीस२५ सु दीन
बलापति ॥ १२२ ॥
अंबर१ पिट्ठि रु तार खुराहिँ, उहाँ दस१० दम्म दु२निष्क सु आहिँ॥
प्रदेसन दै इम प्रीति प्रजेस, कियो पुनि अंसुक ओक प्रबेस ।१२३।
मुकाम तहां करि पुरिग्राम दीह, अगेस परिक्रमको पुनि ईह ॥
प्रभू किय लै अवरोध प्रयान, कियो गिरिराज परिक्रम यान१२४
प्रयान१ मयान२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
निसीथ घटी दुव२ उप्पर जात, प्रदेसन ह्वां करि डेरन पात ॥
तिथी पडिवा१बदि माधव२मास,बली सत वै किय बाहिनिबास१२५
॥ दोहा ॥
कियउ द्वितीया२ दिन क्रमन, राजराज प्रभुराम २०२४ ॥
साहब सुनि आयो समुह, मथुरा जानि मुकाम ॥ १२६ ॥
सुहु डिपटी अभिधा बिदित, पद रु क्लिक्टर पाइ ॥
मथुरा तजि सम्मुह मिल्यो, इक्क१ कोसलों आइ ॥ १२७ ॥

मिलत अनामय पुच्छि करि, सत्रह१७ नालिन फेर ॥
साहब सह आये उमँगि, वस्त्रसदन वह नैर ॥ १२८ ॥
पुनि वृंदावन नैर पहु, मातामही मिलाप ॥
कियो तुरग आरुहि क्रमन, अल्प सत्थ करि आप ॥ १२९ ॥
जाइ अरज सुभ करि जहां, प्रसूमही पय वंदि ॥
आधघरी रहि सिक्ख करि, आये सिबिर अनंदि ॥ १३० ॥

इतिश्री वंशभास्करे　　　　त्रयोदशो मयूखः ॥१३॥

॥ गीर्वाणभाषा अनुष्टुप् ॥

राधाकृष्णात्तृतीयायां कृत्वा श्राद्धादिकं नृपः ॥
पद्भ्यां विश्रामघट्टाय पञ्चम्यां सायमव्रजत् ॥ १ ॥

॥ गीतिः ॥

जयसिंहविजयसिंहेत्याख्यमहाराजसंयुतस्तत्र ॥
आचम्य षट्सुवर्णानुपायनीकृत्य तस्थिवान् घटिकाम् ॥२॥

॥ उपजातिः॥

विलोक्य नीराजनमत्र घट्टे नारायणं चापि गतश्रमाख्यम् ॥
नत्वोपहृत्य द्रविणं यथार्हं भूपो निवासं स्वमलंचकार ॥ ३ ॥

(* राजा रामसिंह वैशाख बाद तीज का श्राद्ध आदि करके पंचमी के दिन पैदल विश्राम घाट गया ॥ १ ॥ महाराजा जयसिंह और विजयसिंह के साथ आचमन करके सुवर्ण की छः मोहर भेट करके घड़ीभर बैठा ॥ २ ॥ और आरती के दर्शन करके विश्राम नामक नारायणको पृथ्वी पर साष्टांग विधि

(*) हमारे नियमानुसार टीका की समाप्ति ऊपर करदी गई वहीं पर्यन्त हमारी रचीहुई टीका जाननी चाहिये परन्तु ऐसा सुना गया है कि राजराजा रामसिंह की तीर्थयात्रा के प्रकरण में ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल ने यह एक मयूख सात्रकारा के समय पहिले बना रक्खा था जिसको सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान ने अपनी रची कविता में मिला दिया इसकारण सामान्य पाठकों की सुगमता के अर्थ जोधपुरके कविराजा मुरारिदान के अनुरोध से इस एक मयूख का अर्थ फिर लिखदिया जाता है जिसको हमारी नियमानुसार टीका के बाहर जानो इससे आगे की कविता सूर्यमल्ल के दत्तक पुत्र मुरारिदान की रचीहुई होने के कारण इस पर टीका बनाना छोड़ दिया गया है ॥

॥ प्रहर्षिणी ॥

सप्तम्यामुषसि परिक्रमाय पद्भ्यामायस्यन् ददद्थ तत्र तत्र वित्तम्॥
विश्रामं प्रथममथ प्रयागघट्टं संपश्यन्नथ बलदेवघट्टमागात् ॥४॥

॥ वसन्ततिलका ॥

श्यामाभिधं कनकनाख्यमथार्थघट्टं घट्टं ध्रुवस्य कलयन्नथ मोक्ष तीर्थम् ॥
रङ्गावनीं तदनु भूतपतिं महेशं दृष्ट्वातपे स्वशिबिरं पुनराजगाम ॥५॥

॥ उपजातिः ॥

अथो भुजिष्यातनये निवृत्तमसूरिरोगेऽर्जुनसिंहनाम्नि ॥
आचारतः प्राप्तमुदस्तविघ्नमकारयद्भूपतिरम्बुसेकम् ॥ ६ ॥
अश्वे स्थितोऽध्यष्टमिभूतनाथपर्यन्तमेवाथ चलन् पदाभ्याम् ॥
विलोक्य रामं बलभद्रकुण्डेऽथ ज्ञानवापीमवलोकते स्म ॥७॥

॥ स्वागता ॥

बालकृष्णपटशोधनकुण्डं जन्मसद्म पितृबन्धनभूमिम् ॥
भूपतिस्तदनु केशवदेवं पश्यति स्म वनखण्डशिवं च ॥ ८ ॥

॥ शिखरिणी ॥

से नमस्कार करके अपने डेरे पीछा आया ॥ ३ ॥ सप्तमी के दिन प्रातःकाल में पैदल परिक्रमा करने को जहां तहां द्रव्य देता हुआ पहिले विश्राम घाट गया। फिर प्रयाग घाट का दर्शन करके बलदेव घाट गया ॥ ४ ॥ वहांसे श्याम घाट, कनक घाट, अर्थ घाट, ध्रुव घाट और मोक्ष तीर्थ गया वहांसे भूतनाथ महादेव के दर्शन करके धूप में अपने डेरे पीछा आया ॥ ५ ॥ जिसपीछे राजा ने पासवानिये पुत्र अर्जुनसिंह को कुष्ट (कोढ) रोग मिटाने के अर्थ जल में स्नान कराया ॥ ६ ॥ अष्टमी के दिन भूतनाथ महादेव तक तो घोड़े पर चढकर गया और वहां से पैदल होकर बलभद्र कुंड पर राम (बलदेव) के दर्शन करके पीछे ज्ञानवापी का दर्शन किया ॥ ७ ॥ जिसपीछे राजा ने बालकृष्ण के वस्त्र धोने के कुंड जन्मघर भूमि और माता पिताके बंधनकी भूमि को देखकर केशवदेव और वनखंडी शिव के दर्शन किये ॥ ८ ॥

महाविद्यां देवीमगमददसीयां च सरसीं,
सरस्वत्याः कुण्डं तदनु च तदीयं झरमपि ॥
शिवं गोकर्णेशं तदनु गणपं दीर्घवदनं,
ततस्तीर्थं भूपो दशतुरगमेधाभिधमगात् ॥ ९ ॥

॥ उपजातिः ॥

सरस्वतीसङ्गमकृष्णगङ्गावैकुण्ठघट्टानथ सामघट्टम् ॥
ददर्श भूमीपतिरष्टकुण्डघट्टे हनूमन्तमथैकदन्तम्॥ १० ॥

उपजातिः

ततो द्वारकाधीशमालोक्य देवं पुनः प्राप विश्रान्तिघट्टं क्षितीशः॥
परिक्रान्तिमेतां यथार्हं विधाय निकेतं निजं भूषयामास भूपः॥११॥

उपजातिः

ततोभिधाय प्रभुणा नवम्यामाकारणां माथुरपण्डितानाम् ॥
प्रश्नानुवादेतररीतिचञ्चत्तर्कालिरश्रूयत शास्त्रचर्चा ॥ १२ ॥

॥ शालिनी ॥

एकादश्यां प्राप्य विश्रान्तिघट्टं तत्र स्नात्वा सावरोधः क्षितीशः ॥
स्तुत्वा भानोर्नन्दिनीं भक्तियुक्तः प्रादाद्दानं शास्त्ररीत्या द्विजेभ्यः॥१३

वहां से महाविद्या देवी के दर्शन करके अदसिया नामक सरोवर पर, गया, वहां से सरस्वती कुंड और सरस्वती कुंड के झरने को भी देखा तिस पीछे गोकर्णेश्वर महादेव के दर्शन करके दीर्घवदन गणेश के दर्शन किये तिसपीछे दशाश्वमेध तीर्थ गया ॥ ९ ॥ सरस्वतीसंगम, कृष्णगंगा, वैकुण्ठ घाट और साम घाट के दर्शन करके राजा ने वैकुण्ठ घाट पर हनुमान् और गणपति के दर्शन किये ॥ १० ॥ जिसपीछे द्वारकाधीश के दर्शन करके राजा पीछा विश्राम घाट आया, इस परिक्रमा को यथायोग्य रचकर राजा अपने डेरे आया ॥ ११ जिसपीछे राजा ने नवमी के दिन मथुरानिवासी पंडितों को बुलाकर शास्त्रचर्चा सुनी ॥ १२ ॥ एकादशी के दिन राजा ने विश्राम घाट जाकर राणियों सहित स्नान करके और यमुना की भक्ति पूर्वक स्तुति करके

॥ उपेन्द्रवज्रा ॥

गजं शतद्रम्मयुतं विचित्रमवेणिपर्याणनिबद्धशोभम् ॥
ददौ महीशो दश१०निष्कयुक्तं द्विजाय सर्वाम्बरपूजिताय ॥ १४ ॥

॥ उपजातिः ॥

अश्वं शतद्रम्मयुतं सपञ्चनिष्कं स्फुरद्राजसुभाण्डशोभम् ॥
वस्त्रैः समस्तैः परिपूज्य भक्त्या ददौ द्विजेन्द्राय महीपतीन्द्रः ॥१५॥
एकैकनिष्कान्वितपञ्चपञ्चद्रम्मार्चिताः पञ्चदशात्र गावः ॥
द्विजेश्वरेभ्योम्बरपूजितेभ्यो भक्त्यात्यसृज्यन्त महीश्वरेण ॥ १६ ॥
सुवर्णमर्त्यादिकमर्चनाङ्गं वधूचितं श्रीयमुनाम्बरौघम् ॥
अष्टाधिकं विंशतिमत्र भूमेर्निवर्तमानामादिशत्प्रजेशः ॥ १७ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

सम्पूज्य तं तीर्थगुरुं स्वमाघ्रिशौचादिना जीवनरामसंज्ञम् ॥
नानाम्बरैर्मौक्तिककर्णवेष्टहारान्वितैर्भूषयति स्म भूपः ॥ १८ ॥

॥ उपजातिः ॥

भोज्यं द्विजेभ्यो वसु भूरि चापि संकल्प्य सम्यग्गुरुदक्षिणां च ॥

शास्त्र के अनुसार ब्राह्मणों को दान दिया ॥ १३ ॥ राजाने सौ रुपये और दश मोहर के साथ हाथी दान, सम्पूर्ण वस्त्रों से पूजन करके ब्राह्मण को दिया॥१४॥ और सम्पूर्ण वस्त्रों से भक्ति पूर्वक पूजन करके ब्राह्मण को सौ रुपये और पांच मोहर के साथ घोड़ा दिया ॥ १५ ॥ श्रेष्ठ ब्राह्मणों का भक्ति से पूजन करके एक एक मोहर और पांच पांच रुपयों के साथ पन्द्रह गायें दीं ॥ १६ ॥ राजाने यमुना पर सुवर्ण की मूर्ति आदि का दान दिया. और उस पूजा के अंगभूत स्त्रियों के योग्य वस्त्र समुदाय दिये. और अट्ठाईस निवर्तन भूमि दी. बीस बांस का एक निवर्तन होता है. "निवर्तनं विंशतिवंशसंख्यैः" इति लीलावत्याम् ॥ १७ ॥ जीवनराम नामक तीर्थगुरु को अपने हाथ से चरण धोने आदि विधि से पूजन करके अनेक प्रकार के वस्त्र, मोतियों के कुंडल और हार से सुशोभित किया ॥ १८ ॥ दक्षिणा सहित ब्राह्मणभोजन और गुरुदक्षिणा का संकल्प करके थोड़ासा दिन बाकी रहने पर राजा ने राजकुमार को जनाने

दिनेल्पशेषे सकुमारमन्तःपुरं निकेताय समादिदेश ॥ १९ ॥
नरिजनानर्हीस तत्र पुष्पवृष्टिं विधायाऽऽव्रजता नृपेण ॥
अकार्यत स्वानुगहस्तिनिष्टजनेन वृष्टी रजतात्मिकापि ॥ २० ॥
परेद्युराहूय निजाऽनिजान्बुधान्पुरोधसाऽर्च्य प्रतिमूर्त्यदित्सत् ॥
द्रम्मं तथान्नादि च पञ्चभोज्यं द्विजान्सहस्रं च तदन्वभोजयत्॥२१

॥ अनुष्टुप् ॥

त्रयोदश्यां१३ दिगद्रयङ्गो६७१०न्मितान्स्त्रीसहितान्द्विजान् ॥
अभोजयञ्चतुर्वेदान्सपादद्रम्मदक्षिणाम् ॥ २२ ॥

॥ उपगीतिः ॥

राधारमणो भट्टाचार्योपारूयव्रजकिशोरः ॥
पुत्रोस्य रामबाबूरेते वृन्दावननिवासाः ॥ २३ ॥

॥ गीतिः ॥

माथुरगङ्गारामश्चेतिबुधाः प्रागनागता मुख्याः ॥
आजग्मुर्नृपहूता यमुनातीर्थान्तिकोत्सगतसदसम् ॥ २४ ॥

॥ इन्द्रवज्रा ॥

सरिर्नरेन्द्रस्य वरेण्य आशानन्दस्तथा मैथिलवापुदेवः ॥

में जाने की आज्ञा दी ॥१९॥ सायंकाल की आरती के समय में वहां (विश्राम घाट) पर राजा ने पुष्पों की वृष्टि करके रजत (चांदी) की वृष्टि भी ॥२०॥ दूसरे दिन अपने और दूसरे पंडितों को बुलाकर पुरोहित के द्वारा सब का जुदा जुदा पूजन करके एक एक रुपया दक्षिणा के साथ पांच ... से एक हजार ब्राह्मणों को भोजन कराया ॥ २१ ॥ फिर त्रयोदशी के ... सवा सवा रुपया दक्षिणा के साथ स्त्रियों सहित छः हजार सात सौ ... चौबे ब्राह्मणों को भोजन कराया ॥ २२ ॥ वृन्दावन में रहनेवाले र... भट्टाचार्य, व्रजकिशोर, व्रजकिशोर का पुत्र राम बाबू और मथुराका ... ये प्रधान चार पंडित पहिले नहीं आये थे सो राजा के बुलाने पर आये ॥२३ ॥ २४ ॥ जिनमें से गंगाराम के साथ राजा के श्रेष्ठ पण्डित आशानन्द ...

शास्त्रार्थमातेनतुरत्र गङ्गारामेशा सार्धं घटिकोनयामम् ॥२५॥

॥ वसन्ततिलका ॥

ते प्रेषिता निजगृहान्प्रति पंचपंचद्रम्मार्चिता अथ परत्र दिने तु पौरः॥
सद्रम्मदक्षिणमभोजयत विप्रवर्गः शिष्टाप्ययपूरि सहसत्कृतिरेषमात्रा२६

॥ वैतालीयम् ॥

अथ माधवशुक्लपक्षतावनुवृन्दाविपिनं व्रजन्नृपः ॥
निशि षड्घटिभाजि कालियन्हददेशे शिबिरं स्वमाविशत्२७

॥ वसन्ततिलका ॥

मातामहीसदनमेत्य परेद्युरप सार्द्धासु षट्सु घटिकासु निशि स्ववासम्
आचम्य कालियन्हदेथ तृतीयतिथ्यां वृंदावनस्य निरियाय परिक्रमाय

॥ इन्द्रवज्रा ॥

गोपालघट्टाद्यमुनाल्पधारापर्यन्ततीर्थानि समेत्य पद्भ्याम् ॥
अश्वेन वासं स्वमुपेत्य मातुः पुण्याय राज्ञार्पित गौस्सनिष्का।२९।

॥ द्रुतविलम्बितम् ॥

अथ विहारिहरिं शिरसा नतो मदनमोहनमेत्य च संस्तुवन् ॥

मैथिल बापूदेव ने एक घड़ी कम एक पहर तक शास्त्रार्थ किया ॥ २५ ॥ तिस पीछे उन चारों पण्डितों को पांच पांच रुपयों के साथ पूजन करके घर पहुँचाये और दूसरे दिन पुरवासी ब्राह्मणों को एक एक रुपये के साथ भोजन कराया और बाकी रही यात्रा को सत्कार के साथ पूर्ण की ॥ २६ ॥ इसपीछे वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को वृन्दावन को जाते हुए राजा ने कालीदह प्रांत में लगे हुए अपने डेरों में प्रवेश किया ॥ २७ ॥ दूसरे दिन नानी के स्थान पर जाकर साढे छः घड़ी रात गये पीछा डेरे आया जिसपीछे तीज के दिन कालियद्रह में आचमन करके वृन्दावन की परिक्रमा करने को निकला ॥ २८ ॥ गोपाल घाट से लेकर यमुना की अल्प धारा तक पैदल होकर तीर्थोंकी परिक्रमा करके घोड़े से अपने डेरे आकर माता के पुण्य के अर्थ राजा ने एक मोहर के साथ एक गौ अर्पण की ॥२९॥ इसके अनन्तर श्रीकृष्ण विहारी को नमस्कार करके स्तुति करता हुआ मदनमोहन को प्राप्त होकर अपनी माता की माता (नानी) का

स्वजननीजननीत्तणाकृन्नृपः शिविरमाप निशि प्रहरे गते ॥३०॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

चतुर्थ्यां४ कलिंदात्मजास्वल्पधारास्थलाच्छेषतीर्थानि पद्भ्यामुपेत्य
परेद्युर्ह्रदे कालियस्याप्लुतस्सन् गजानां जलक्रीडनान्यालुलोचे३१

॥ उपजातिः ॥

पष्ठ्यां नृपेणाद्भुतशास्त्रचर्चासभाजिताकारि सभा बुधानाम्॥
भूपः परेण द्व्युगेन सान्तःपुरेण तत्तीर्थपरिक्रमोपि ॥ ३२ ॥

॥ पुष्पिताग्रा ॥

तदनु सदरलैनमङ्गरेजं भरतपुरेड्वलवंतसिंहयुक्तम् ॥
प्रकटयितुमुदन्तमुर्व्यधीशप्रहित इयाय हमीदखाँ नवम्याम्।३३।

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

दशम्यां ययौ राजमाता स्वमातुर्विलोकाय घस्रेर्द्धयामावशेषे ॥
धरेशस्तु मातामहीं वीक्ष्य नैजं निकेतं पुनः प्राप रात्रौ निशीथे।३४।

॥ मन्दाक्रान्ता ॥

एकादश्यामकृत वहुलस्त्रीजनैर्देवयात्रा-
मध्वन्येवामिलदवनिपस्य प्रसूः स्वप्रसूयुक् ॥

दर्शन करता हुआ पहर रात गये अपने डेरे पहुंचा ॥३०॥ चौथे दिन यमुना की अल्पधारा के स्थल से लेकर बाकी के सब तीर्थ राजाने पैदल होकर किये और दूसरे दिन कालियद्रह में स्नान करके हाथियों की जलक्रीड़ा देखी ॥ ३१ ॥ छठ के दिन सभा को जीतनेवाले राजा ने पण्डितों की विलक्षण शास्त्र चर्चावाली सभा कराई तिसपीछे दो दिन में जनाना सहित वृन्दावन की प्रदक्षिणा की ॥ ३२ ॥ जिसपीछे नवमी के दिन भरतपुर के पति बलवन्तसिंह के साथ सदरलैन अंगरेज को समाचार जनाने के अर्थ रावराजा का भेजा हुआ हमीदखां गया ॥ ३३ ॥ दशमी के दिन राजमाता चार घड़ी दिन बाकी रहे अपनी माता से मिलने को गई और राजा अपनी नानी से मिल कर अर्द्ध रात्रि को पीछा अपने डेरे आया ॥ ३४ ॥ एकादशी के दिन बहुत स्त्रियों के साथ देवयात्रा की और मार्ग में अपनी नानी से मिलकर राधारमण आदि

नत्वा राधाप्रियतमसुखास्तत्र गोविन्दमूर्ती-
र्वाक्सार्द्धप्रहररजनेराजगाम स्वधाम ॥ ३५ ॥

॥ प्रहर्षिणी ॥

द्वादश्यां सदनमुपेत्य मातृमातुः प्रत्यागात्सपरिकरो निशि स्ववेश्म॥
अन्येद्युः सुरसदनेक्षणां भुजिष्यावर्गेणाकृत नृपतेः कनिष्ठमाता३६

॥ उपजातिः ॥

तीर्त्वा तरीभिर्यमुनां परेद्युः प्रतिस्थलं राजतपंचरूपैः ॥
रासस्थलीमानसतीर्थमानविहारिणः सत्कुरुते स्म भूपः ॥ ३७ ॥
संस्थानमापन्नपि वृष्टिरुद्धो मातामहीकेतनमेत्य भूपः ॥
संध्यादिकर्माशपशनं च तत्र विधाय रात्रौ निजवासमाप ॥३८॥
सेवानिकुञ्जादिषु पंचदश्यामुपेत्य राधारमणं विलोक्य ॥
द्रम्मान् शतं पंचसुवर्णयुक्तान्दत्त्वैक्षतान्या अपि देवमूर्तीः॥३९॥
दिने तृतीयांशमिते व्यतीते निकेतनं स्वीयमुपेत्य भूपः ॥
पितामहस्याथ महासतीनां श्राद्धानि चक्रे प्रतिवर्षजानि ॥४०॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम-

गोविन्दकी मूर्तियों को नमस्कार करके डेढ पहर रात्रि से पहिले अपने डेरे आया ॥३५॥ द्वादशीके दिन नानी के स्थान जाकर पीछा अपने परिवार के साथ अपने डेरे आया और दूसरे दिन पासवान स्त्रियोंके साथ राजाकी छोटी माता देव मंदिरों के दर्शन किये ॥३६॥ दूसरे दिन नावों से यमुना को तिरकर राजाने जगह,जगह पांच पांच रुपयों से रासथली, मानसथली और मान बिहारी का सत्कार किया ॥३७॥ चौराहे पर पहुँच गया तो भी वृष्टिसे रुककर नानी के मकान पर पहुंच कर वह राजा सन्ध्या आदि सत्कर्म और भोजन वहीं करके रात्रि में अपने निवास स्थान आया ॥३८॥ पूर्णिमाके दिन सेवाकुंज आदि स्थानों में राधाकृष्णके दर्शन करके पांच मोहर के साथ सौ रुपये देकर और भी देवमूर्तियों के दर्शन किये ॥ ३९ ॥ और दिनके तृतीयांश (तीसरा) भाग व्यतीत होने पर राजाने पितामह (दादा) की पतिव्रता राणियों के वार्षिक श्राद्ध किये ॥ ४० ॥

सिंहचरित्रे चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

मायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तजि वृंदावन तीज३ तिथि, रहत घटी चउ सूर ॥
किय आरुहि वाहन क्रमन, द्विजन दुःख करि दूर ॥ १ ॥
पहर इक१ रजनी नृपति, गोकुल मग्ग विहाइ ॥
हुव दाखिल डेरन हरखि, धीरन मोद बढाइ ॥ २ ॥

षट्पात्

भुजगतिथी५ सु प्रभात प्रथम अंतेउर चल्लिय ॥
आरुहि प्रभु पुनि अस्व महावन अप्पहि क्रम किय ॥
कन्ह चरित जो पुहवि तास प्रभु दरस उहाँ करि ॥
अंतेउर सह सिविर होइ दाखिल सु ध्यान धरि ॥
आप्लवन अत्थ सुद्धान्त सह किय पुनि जमुनातट क्रमन ॥
महिपाल जोरि अंचल महिषि कियउ अप्प मोदित सबन३

मन१वन२अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

तर्पन आदिक तत्थ बहुरि करि नित्पकर्म बलि ॥
अर्वारुहि किय अटन द्विजन दारिद वृत्तन दलि ॥
मंदिर गोकुलनाथ जाइ करि दर्स महामति ॥
प्रनमि प्रभू करि भेट बहुरि किय गमन श्रीजिपति ॥
करि दरस रौप्य दुव२सतक१००कर पंच५निष्क उचारन सु
इत्यादि सदन ईश्वर अखिल चलि इच्छन किय बहुत वसु४

दोहा

सुक्र६ असित२ षष्टी६ सुरहि, सत्तमि७ उग्गत सूर ॥
मुदजुत प्रभुहि मिलानहू, दिय बलदेव हजूर ॥५॥
राम राम करि दरस बलि, पुनि करि सिविर प्रवेस ॥

भावितादि नैवेद्यहू, भेजिय भोग धरेस ॥ ६ ॥
करत कुच्च अष्टमि८ अहन, पुनि चहि दरस जरूर ।
तुरगारुहि हाजरि त्वरित, हुव बलदेव हजूर ॥ ७ ॥

षट्पात्

करि इच्छन सत१०० दम्म पंच५ निष्क रु करिनी इक१ ॥
उरसुत्ती१ सिरुपेच२ जटित हीरक१ सौवर्णिक२ ॥
इम करि भेट सुजान ग्राम मइनाम अटन किय ॥
तहँ अवरोधन सहित महामति सिबिर प्रवेसिय ॥
करि कुच्च बहुरि नवमी९ अहन खंदोली सु मुकाम किय ॥
बिश्राम बहुरि दशमी१०दिवस मिलन अत्थ तहँ लार्डदिय८
रहि एकादशि११ तत्थ बहुरि द्वादसि१२ धरनीवर ॥
तेरसि१३ दिन पुनि रहि रु कुच्च चउदसि१४ किय सत्वर॥
चल्लत अकबर नगर तास गव्यूति२ प्रभू रहि ॥
चउ४ इक१ ५ साहब त्वरित उत सु आये मेलन चहि ॥
इनकेहु नाम उपपद सहित भिन्न भिन्न इह ग्यानिये॥
सम्मुह उदंत आवन सबै छप्पय छंद प्रमानिये ॥ ९ ॥
आजम नायब लार्ड सिक्त्तर जाके उपपद ॥
हमलटीम१ इम नाम प्रथम१ हुव हाजरि संसद ॥
दूजो२ मौलन२ सोहु किलट्टर पद स मजष्टर ॥
डीपरसन३ पुनि राम३ तिमहि उपपद सु कमिश्नर ॥
पुनि जंटमजष्टर रेडल४ सु डिपटी नेट किलट्टरहि॥
जंगी अनीकपति जहँ हुलसि आयो जनरल५ मेल चहि१०

हरिगीतम्

तजि अब्ब सब्बन गब्ब वे५ द्रुतही बिछायत आइकैं ॥
जयसिंह अो तस भ्रात बिजय सु सिंह पुब्ब मिलाइकैं ॥

उमराव दुर्जनसल्ल१ गोकुलसिंह२द्वै२ पुनि त्यों मिले ॥
तिम महासिंह पउत्त दुज्जनसल्ल३ मेलनकों मिले ॥११॥
पुनि खंधजुट्टि मिलाप आपहि हमलटीनहुतैं करयो ॥
जनरल१ रु मोलन२ आदितैं इक१ हत्थ भाविकपैं धरयो ॥
चढि वाह चल्लत चाह साहब वाम दक्खिन ह्वै चले ॥
रहि अप्प मध्य निसेसज्यों वसुधेस अकबरपुर हले ॥१२॥
इम शिंविर अक्बरनैर उपवन राम नामक आइकैं ॥
चउ४इक्क१५साहब नैर चल्लिय सिक्ख सासन पाइकैं ॥
तब दुग्गतैं दस१०तीन३।१३फैरहु नालि कागनके करे ॥
अरु अप्प तस प्रासाद आइ रु आन्हिकादिक आचरे॥१३॥
पुनि रहत चउ४ घटिका दिवापहि अप्प तरनिन आरुहे ॥
प्रभु ताजबीबी मुकरबन क्रमि अप्प दिट्ठिनतैं छुहे ॥
रुहे१ छुहे अन्त्यानुप्रासः ॥१॥
तस इक्खि उपवन१ तोपजंत्रन२ अप्प तुरगारुह भये ॥
जो जंत्र२ साहब सिष्टितैं तस किंकरन किय भरमये॥१४॥
सवितास्त भूधरपैं गये हुब शिविर दाखिल आइकैं ॥
रवि रहत घटिका नैन२ नवमी९ सोमवासर पाइकैं ॥
रथ तुरग आरुहि लार्ड ऐलनबरा शिविरहि आइकैं ॥
तजि यान आवत तास सम्मुह अप्प२०२।४सत्वर जाइकैं१५
करहू परस्पर सीस मात्र उठाइ भावुक त्यों भन्यूं ॥
वलि भीमसिंह२०४।१कुमार पट्टप लार्ड मेलनहू बन्यूं ॥
जयसिंह१विजय२सु सिंह सोदर कुमर अर्जुन त्यों मिले ॥
साहब सिकत्तर तास सन मिलि मोद पंकज मन खिले१६
तिमही सिकत्तर हमलटीन मिलाप इडविटहू करयो ॥

अरु लार्ड बाम अबाम इडविट रहि रु संसद पद धरयो ॥
खुरसी स्वकीया मध्य राखि रु लार्ड बाम विराजयो ॥
थलि हमलटीन सिकत्तरादिक लार्ड बामक बैठयो ॥
अरु महाराजकुमार पट्टप अप्प२०२।४दक्खिन ओरमैं ॥१७॥
स्वक२०४।४बंधु जय ओ विजयासिंह सु तास सन्निधि रोरमैं ॥
अध तास अर्जुनसिंह बाबा ताज कुमरन पालजो ॥
अरु महासिंह पउत्त गोकुलसिंह दुज्जनसालजो ॥
तस हेठ दुज्जनसल्ल नाथाउत्त खुरसिनतैं ठयो ॥ १८ ॥
इत्यादि भटबर मुख्य राखि घटीदु२परिखद मंडयो ॥
लै अतर दुव२कर राम२०३।४पहु पुनि लार्ड अंगहि लाइकैं॥
ई पान सिक्ख बहोरि पूरब अप्प२०३।४ रीति पुगाइकैं।१९।
शमी१०बलाप हिताय औलनबरा बस्तु समाजयो ॥
रवारि इक१ गुजरात संभव मुट्ठि हाटक प्रेसयो ॥
..रु समरपट दल२ चर्म३इक१बांधी सुं किरणापलूहरी ॥
इक१ बेणु मथ सिबिका४बनाि.य टाटवांफियकी करी२०
तिमही हवद५ सु तारको लालित्य कुंजर प्रेसयो ॥
अरु कुमर पट्टप भीम२०४।१हित हय१साज राजत साजयो॥
उरसूत्रिका२ सिरुपेच३इक१मंदील४ सिवपुर जो भयो ॥
बाणारसीज दुपट्ट५ नामक छुट्टि कासहहू दयो ॥ २१ ॥
दुस्साल६इक१त्यौं गरमपोसक७ स्वर्णमय घटिका८दई ॥
ताकैं हुती इक शृंखली पुनि सो सुबर्णमई नई ॥
दुव२ नैन मय दुरबीन९ इक१ सौवर्णमासि आदान१० जो ॥
अरु कलमदान११ ससाज ओ बन्नात१२ रंग दु२भोनजो२२
इम लार्ड प्रेषित बस्तु जो सब अप्प२०३।४स्वीकृतहू करयो

अरु तास मानुषकों पचत्तर७५भूप रुप्पय बिस्तर्यो ॥
भूपाल हरितिथि१२ भरतपुर बलवंत सहर सु थानभो ॥
तस द्वार जाइ तुरंग उज्झत सोहु सम्मुह आतभो २॥३॥
करिकैं परस्पर हत्थ मत्थ बहोरि भावुकहू भयो ॥
अरु तास करपर अप्प कर करि बामऽहै परिखद गयो ॥
अरु राखि दक्खिन अप्प२०३१४ओ खुरसी अदक्खिनपैं ठयो
इक१ नाड़िका तहँ देसकाल उदंत मोदमई भयो ॥ २४ ॥
गहि अतर कर बलवंत हड्डनइंद२०३१४ अंग लगावनों ॥
बलि सिक्खदै अति मोद जुत करि पुब्बक्रमपहुँचावनों ॥
कर उभय२ उत्तमअंग भो बलवंत स्वक गृहमें गयो ॥
चहुवान अब्ज निसापको बलि आन डेरनहू भयो ॥२५॥
गणनाथ तिथि४ दिन आगरापुरतैं सु कुच्च प्रभू भयो ॥
अजमादपुर बलि विंध्यईस मुकाम बाहिनिकों दयो ॥
तिथि५नाग पीरोजा सु बाद बिभावरी पुनि त्योंरहे ॥
तिम पष्टि६का बिश्राम सकरबाद जाइ रु उम्महे ॥ २६ ॥
किय सत्तमी७ बुधवार४ वास धरोल नामक गाममैं ॥
तहँ आइ साहब टालबट सँग रहन यात्रा आममैं॥
तव उठि गड्डिपतैं प्रभू पयच्यारि४ सम्मुह जाइपैं ॥
पुनि हत्थ दोउ२न मत्थ माल उठाइ भावुक पाइकैं ॥२७॥
कथ टालबट नरपालतैं पुनि आमा जावनकों कह्यो ॥
चहुवान अब्ज दिवापनैं सुनि एह ओपितहू चह्यो ॥
आदेस जीवनलालतैं तस संग भोलि सुजानकों ॥
जो कहैं साहब एह मिल्लनसों कथा सब आनकों ॥ २८ ॥
इम अग्ग साहबकों चलाइ रु अष्टमी८ सु प्रभातही ॥
करि कुच्च मैनपुरी समीप महीप सत्वर जातही ॥

पुरतैं सु साहब आइकैं विज्ञप्ति भूपतितैं कही ॥
प्रभु अप्पतैं पुर साहबन मिलनार्थ प्रीति घनी चही ॥२९॥
अरु अप्प सम्मुह आइबे सुहि ढंग परिसरपैं खरे ॥
तसमात चल्लहु बेगहू ब मिलाप आपहितैं वरे ॥
इम नालिकिस्थ प्रभू चले विज्ञप्ति साहब पाइकैं ॥
उततैंहु मैनपुरीस्थ साहब भूप सम्मुह आइकैं ॥ ३० ॥
मिलि मत्थ हत्थ लगाइ दोउश्न ओ अनामयहू करे ॥
अरु सत्थ साहब लै महीपति आइ डेरन उत्तरे ॥
करि सिक्ख साहब द्वारतैं चढि तुरग रथ पुरमैं गयो ॥
इत होइ दाखिल तूर्णहीं कटिबंध भूपति उज्झयो ॥ ३१ ॥
दिवसेस घटिका१ इक्क१ रहत सु शिविर साहब आतभो ॥
तस संग रीवाँनगरके सुभमनुज संसद पातभो ॥
कछवाह भेट गनेससिंहहिं पंच५ रुप्पयतैं करी ॥
अर नयन२ वर्तुलतैं निछावरि अक्खि सुभ प्रभु आचरी३२
भानेज बैठकपैं तिन्हैं प्रभु अग्ग बाम बिठाइकैं ॥
अरु धाइभ्राता रत्नलाल सलाम१ बलि२ किय आइकैं ॥
पुनि देसकाल उदंत साहब अक्खि पुरपति संक्रमे ॥
अरु रत्नलाल गनेससिंह स्वईस कथ इम कहि नमे ॥३३॥
प्रभु विश्वनाथ स्वईसहू ब जुहार मालुमहू कर्‌यो ॥
विज्ञप्ति सुनि तस भद्र आखि स्वसीस छीबन कर पर्‌यो ॥
दै सिक्ख डेरन तास ओ कटिबंध अप्प निवारयो ॥
करि नित्यकर्महि आदि सर्वरिहू मुकाम तहाँ दयो ॥ ३४ ।

रयो१ दयो२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

कविबार६ नवमी९ अर्क उग्गत कुच्च सत्वर ओ कर्‌यो ॥
प्रभु विवर नामक ग्राममैं दलपात जामिनि भो पर्‌यो ॥

सनिवार७ दसमी१० दिवसछ्परामहू जाइ रु त्यौंरहे,
एकादसी११ गुर१ साहिगंज मुकाम राखन उम्महे ॥ ३५ ॥
पुनि चंद्रवासर२ द्वादसी१२ मीरांसरायहि पाइकैं,
अरु ह्वाँ फरुक्काबादतैं मिलनार्थ साहब आइकैं ॥
मिलि देसकाल उदंत अक्खि रु सिक्ख साहबकों दई,
बिल्लोर होत मुकाम चउदसि१४ तृथि दिवनिस ह्वाँ भई३६
पुनि तत्थ पुरिग्राम दीह सक्ति प्रसाद मेलनहू रहे,
शिविराजपुर पति सम्मुहाऽऽगम कोस इक१ रहि उम्महे ॥
तब मेघ बुंदिनतैं प्रभू तिनकोहु ढंग प्रयानभो,
आदेस तस सतकारकों बलदेव अत्थहि दानभो ॥ ३७ ॥
बलदेवहू ब प्रधान सत्वर तास पुरप्रति जाइकैं,
अनुशिष्टि जिम सतकार तस करि सिबिर अप्पन आइकैं
अरु तत्थ साहबतैं महीपति अग्ग जान कहातभो,
बलि मिलन कन्ह पुरत्थ साह--- सुनि तहँ पातभो ॥३८॥

॥ दोहा ॥

सुचि४मास रु पड़िवा१ असित, तजि बिल्लोरहि तात ॥
चढि चल्लिय शिविराजपुर, हरि जिम बिभव सुहात ॥३९॥
सुनि इम सक्तिप्रसादहू, प्रभु सम्मुह मुदपाइ ॥
पुरतैं वे गव्यूति२ पर, आधिप मिलन रहि आइ ॥४०॥

(षट्पात)

सम्मुह सक्तिप्रसाद आइ कर मत्थ लगाइय ॥
तब प्रभु आनन द्वयस अप्प सय इक१ उठाइय ॥
कुसल परस्पर कहि रु क्रमिय डेरन दुव२सत्वर ॥
सिक्खहु सक्तिप्रसाद करि रु किय गमन ढंग पर ॥
बलि रहत अष्ट८ घटिका दिवस महमानी प्रेषित करिय ॥

प्रभु पंच सतक५००नाणक बहुरि पंचक५मन पक्कान्न दिय॥४१॥
कुछ दो३जिरदिन करत सचिव तस आइ शिबिर तहँ ॥
भूपति भ्रातन माहि नाम जहुवारसिंह जहँ ॥
करजोरि रु किय अरज प्रभू प्रासाद पधारहु ॥
मामक भूपति मिलि रु बहुत हुव२ प्रीति बढारहु ॥
सुनि एह अरज चढि तुरग बलि पुरप्रति सत्वर संक्रामिय॥
सिवराजपुरप उततैं सुनि रु महिपति सम्मुह गमन किय॥४२॥

[दोहा]

पुर परिसर नृप पाइ पुनि, मिलि कर मत्थ मिलाइ ॥
कियउ अप्प उन जिम सु कर, अरु हुव२ महलन आइ॥४३॥
पहु तहँ सक्तिप्रसादहू, बैठिय नृप दिस वाम ॥
स्वभट सर्व अपसव्यहू, इम क्रम राखिय आम॥ ४४ ॥
पुनि भट सक्तिप्रसादको, उग्रसिंह अभिधान ॥
अरु जुहारसिंहहिं नजर, किय माखन दीवान ॥ ४५ ॥

[षट्पात्]

प्रभुकैं इक१ सिरुपाव पंच५ तखतीमय तिन किय ॥
असि इक१ पट्टिस एक१ स्वर्णमय मुट्ठि समप्पिय ॥
दंती इक१ कुथ सहित तास होदन सु कट्ठ मय ॥
तिम बनात कुथ साजि तुरग किय भेट महारय ॥
पंचदश अधिक रुप्पय सतक११५ ये प्रभु नजर निवेदये ॥
महाराजकुमर अत्थसु बहुरि सिरुपावादि समप्पये ॥ ४६ ॥

दये१पये२अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

पंचक५ तखती प्रमित दियउ सिरुपाव१ खड्ग२ पुनि ॥
पट्टिस३ हाटक चोक१ मुट्ठि२ किय नजर अच्छ चुनि ॥
तुपक इक१४ तिम तुरग५ रजत भूखन शृंगारित ॥

कियउ भेट तिम दम्म भूत५ भूपाल निष्क१ मित ॥
इम करत अप्प प्रभु उच्चरिय हमरो अब जालाअटन ॥
तसमात यहै दसतूर सब भूपति तुम रक्खहु भवन ॥४७॥

॥ दोहा ॥

पुनि प्रभु साक्तिप्रसादकों, दृढ पय घोटक दिन्न ॥
राजत भूपन सहित रय, क्रम शिरुपावहिँ किन्न ॥ ४८ ॥
तखती पंचक५ केरसहु, अरु तोमर सुभ तास ॥
तस नेउर करि रजत मय, ललित दिय रु हुल्लास ॥ ४९ ॥
करत कुच्च कल्ल्यानपुर, प्रभुकों तव पहुँचान ॥
महिपति महलान द्वार लग, उमगि कियो उन आन ॥५०॥

॥ षट्पात् ॥

कुसल परस्पर करि रु दुव२हि कर मत्थ द्रपस दिय ॥
करि तस प्रभु सतकार कमन कल्ल्याँनपुरहिँ किय ॥
इम चल्लत पटसदन पंथ उपबन इक१ दिट्ठो ॥
प्रभु संध्यादिक कर्म करन तहँ जाइ पइट्ठो ॥
असनादि कर्म तहँ करि अधिप रहत घटी१ दिन संक्रमिय
सर्वरी पंच५ घटिका गयैं अंसुकसदन प्रवेस किय ॥५१॥

पद्धतिका ॥

किय कुच्च तृतीया३दिन दिवान, सुकथा जु एह साहब सुजान२
जनरल्ल जग आठहय कहत जाहि,आमय बहु वासर तास आहि५२
तातैं सु मजष्टर कालडीक, अधिपति मिलाप भेजिय सुहीक ॥
पुनि सुनि रु टालबट मोद पात, ए दुव२हि मिलि रु तजि पुरहिँ आत ॥ ५३ ॥

कंपू रु कन्हपुर बिच मिलाप, करि तत्थ बिछायत हित अमाप ॥
तहँ रहिय उभय२ साहब हिताय, प्रभु तास बिछायत अप्प पाय५४

नज आदि मजष्टर कालडीक, जानि रु प्रभु आगम अति नजीक
ाब कालडीक तजि अश्वतात, अति प्रीति बिछायत प्रथमआत५५
ाब अप्प टालबट तजि तुरंग, आइ रु बिछात मिलि तहँ उमंग ॥
करि कुसल परस्पर हित दिखाय, पुनि उभयर प्रीति कर मत्थ
पाय ॥ ५६ ॥
नज आदि मजष्टर कहिय एह, जनरलहिँ अप्प शिव चविय नेह
ातिउत्तर दिय प्रभु पुनि पुनीत, व्यवहार तासतैं हम सुनीत।५७।
पुनीत१ सुनीत२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥
इम अक्खि तुरंगम चढि रु तीन३, साहब सह शिबिरहिँ क्रमन कीन
इक१कोस हुती नाली तुरंग, किय फेर त्रयोदश१३तिन्ह उमंग५८
कथ कालडीकतैं इम कहाइ, आतप बहु घातैं गेह जाइ ॥
इम कहि रु सिक्ख दै तास आप, लैं टालबटहिँ डेरन अचाप ५९
पुनि क्रमन चउत्थी४ किय प्रभात, सरसोल ग्राम दिय सन पात
कर कुच्च पंचमी५ दिवस राम२०२१४, कल्यानपुरैं दिय पुनि
मुकाम ॥ ६० ॥
विश्राम फतैपुर षष्ठि६कासु, तहँ रहत घटी दुव२ दिवस आसु ॥
साहब चउ४ आये मिलन काज, सुनिये तस आव्हय राजराज६१
उपपद सु मजष्टर सुहि थरंट१, नायब सु मजष्टर आदि जंट ॥
पलियम जु पिरासन२नाम ताहि,इम रीढ३नाम साहब सु आहि६२
साहब सु टालबट४सत्थ जोहि, मिलि च्यारि४सभा आये सु मोहि
अरु अस्र बिछायत लग उताल,आतहि तब सम्मुह कभि नृपाल६३
मिलि सबन मत्थ कर तब मिलाइ, आनन तक प्रभु कर जग्गहि
आइ ॥
करि कुसल परस्पर हित बढारि, प्रभु बैठि तख्त संसद पधारि६४
दिस बाम दुलीचनहू बिछाइ, तिहिँ उप्पर साहब सब बिठाइ ॥

छाइ१ टाइ२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

करि समय वृत्त गहि अतर दान,चवि सिक्ख लगायो चाहुवान६५
किय क्रम पुरी साहब पुरत्थ, तलेच टालवट रक्खिय सत्थ ॥
इक सिविर अंत तारा स आहि, प्रभु अप्प१टालवट२दुव२उमाहि६६
अब वहुरा जीवनलाल आइ, पुनि हुकम हमीपदखाँ सु पाइ ॥
किय मंत्र अद्ध घाटिकादिवान,दे सिक्ख ताहि किय तखतआन६७
वलभद्र हुतो नागोध पट्ट, दिन दिवस सोहु लग्गो कुवट्ट ॥
साहब अनाम किय कैद जाहि,गक्खिय प्रयाग निवसत्थ रसाहि६८
तस राघवेंद्रसिंह जु अपत्य, दिय साहब तासहि राजकृत्य ॥
सुभ मनुज तिन्हें भोजिय भुवाल,सोती सु मारफत कृष्णलाल६९
पौराणिक कासीनाथ२ पात, अरु पुरोधाहि नंदन उम्हात ॥
सो रामरसीले२ नाम ख्यात, पंडित३ अनाम मिलि सभा पात७०
दे आसिख अक्खि रु भद्र भूप, इक१ तुपक निवेदिय पुनि अनूप ॥
टहरी सु जात सौवर्ण अंग, अरु कुंद रजतमय कलि अभंग॥७१॥
त्यारी सु राजती वहुरि सत्थ, वलि सम्मुह पैठि रु मिसल पत्थ ॥
अक्खिय जुहार नृप असमदी न, सुभ आक्खिय तिन्ह पुनि तस सुहीय
प्रभु पूछि राजवृत्तान्त सर्व, दिय सिक्ख सिविर हित करि अखर्व ॥
पट्टप सु भीम२०३।१ आयउ कुमार, आमय मसूरि सिंधूततार॥७३॥
करि नजर निछावरि मिसल लेन, तस पूछि अनामय सिक्ख देत ॥
किय कासमहू सप्तिम७ मुकाम, रीवाँपुर आगम सुनर राम२०२।४
मथुराप्रसाद१ भूसुर भुवाल, नारायन२ पाठक तिम उताल॥
संबंध रचन तहँ दुव२हि आइ, इनकी सु प्रभू पुनि अरज पाइ।।७५।
अरु वहुरा जीवनलाल थान, आरुहि गज उप्पर कियउ आन ॥
ताजिगजरु शिविर प्रविसे सु विप्र,मिलि कुसल आक्खि अरु मंत्रछिप्र
तव वहुरा जीवनलाल१ तत्थ, अरु अमृतलाल२ भ्राता सु अत्थ ॥

तीजो३ वकील हम्मीदखाँहिं, आचारज आसानंद आहिं ॥ ७७ ॥
नृप विश्वनाथ हम कथन गेय, ममगेह पुत्रिका तुमहिं देय ॥
सुनि मंत्र एह घटिका सु तीन३, पुनि जीवनलालहिं सिक्खकीन७८
अरु बत्त नाँहिं स्वीकार एह, बलि विप्र गये दुव२आसु गेह ॥
पुनि नयन२ सप्तमी७ दिन प्रभात, प्रभु सरैं सु किय सेन पात७९
करि कुच्च अष्टमी८दिन मुकाम, पहु दियउ कसीया नाम गाम ॥
इक१कोस हुती गंगा उहांसु,अवरोध सहित किय गमन व्हांसु८०
करि स्नान धेनु दुव२दियउ दान, इंकिय निज डेरन चाहुवान ॥
इम आइ शिविर सर्वरि वितात,पुनि करिय कुच्च नवमी९प्रभात८१
मँगतीपुरा सु प्रभु दिय मिलान, दसमी१०किय हुमनगंज थान ॥
एकादशि११वासर सोम पात,अति उमगि प्रयान सु राज आत८
संमट१रु हलीहर२समट३नाम, कप्तान लय३हि उपपद सु काम
आइउ प्रभु सम्मुह अर्द्धकोस, जो जनरल साहबकै भरोस ॥८३॥
मिलि क्रमन बरब्बर बाम भाग, प्रभु आइ शिविरसान्निधि प्रयाग॥
तस दुग्ग बरब्बर बाग ताहि, अवनीपति तामैं रहन आहि ॥८४॥
किय शिविर तत्थ प्रभु हुकम पाइ, अवरोध रु भट सब शिविर आइ
प्रभु सिक्ख साहबन पुनि समप्पि, कटिबंध निवारन बहुरि थप्पि

॥ दोहा ॥

श्रीप्रयाग संज्ञा किते, बदत इलाहाबाद ॥
क्रिमहु होहु पै पाप गज, गज्जत सिंह निनाद ॥८६॥

॥षट्पात् ॥

चढि तुरंग किय क्रमन अप्प माधववेनी पहँ ॥
करि मुंडन पुनि स्नान अस्थि पूजन प्रभु किय तहँ ॥
प्रनमि भूप उर द्वयस मोद सह गमन नीर किय ॥
पितरन पुनि करि स्तवन अस्थि कर अप्प प्रवेसिय ॥

आप्लवन करि रु पुनि धेनु इक१उभयमुखी दिय भूसुरन,
वलि महुर पंच५दै नित्य करि कियउ प्रभू डेरन गमन।८७।
द्वादशि१२ दिन नृप सदन गवरनर जनरल लार्डहु,
नाम अलीनवराहु तास प्रतिहार आइ पहु ॥
अरज कराइय एह लार्ड पहु मिलन अज्ज चहि,
अरु वकील नरनाह हमिदखाँ वृत्त एह कहि ॥
सुनि यह अरज प्रतिहारप्रति उत्तर दिय तुम इम चवहु,
अज्ज करि पितर तर्पन वहुरि कल्हि मिलन हमरो चहहु॥८८॥
इम कहाइ चढि आधिप चलिय गंगा१मिलाप तहँ,
सरस्वती२जमुना३हु इक१ हुव नीर आइ जहँ ॥
पंचम५ नामक गुरुहि वहुरि बुधजनन बुलाइय,
शास्त्र उक्त विधि सहित श्राद्ध तिन प्रभुहिं कराइय ॥
दे दान द्विजन पंचम सु मुख रस६घटिका जावत रजनि,
आरुहि सु अश्व नमि द्विजनन शिविर प्रवेशिय महीपमनि८९
तेरसि१३ दिन पुनि रहत गमन साहव मिलाप सन,
नाम अलीनवराहु गवरनर जनरल कमरन ॥
भेजिय सम्मुह त्वरित इस्तरेजी सु सिकत्तर,
सचिव लार्ड१को वहुरि नाम नांहि सु साहबवर ॥
सकटी१तुरंग चढि पुनि दुव२सु आइ रु मिलि प्रभूतें सुमन,
कर मत्थ कारि रु सुभ लार्ड कृत अग्ग प्रभू सह किय अटन ॥९०॥

॥ दोहा ॥

पहुँचत कमरन आधिप तहँ, चोक अनायत पाइ ॥
अयमय नालिनके उतसु, तेरह१३ फैर कराइ ॥ ॥ ९१ ॥

॥ षट्पात् ॥

कमर लार्डसन क्रमत इस्तरेजी१ पुनि आइरु ॥

मैंडकर२ साहब आइ बहुरि अतिमोद बढाइरु ॥
करन परस्पर सीस कुसल करि कसर प्रवेसत ॥
उततैं सम्मुह लार्ड द्वारलग सत्वर आवत ॥
मिलि खंध जुट्ट भावुक भनि रु वलि लगाइ दुवरमत्थ कर॥
संसदहिं पाइ साहब सहित खुरसिन उप्पर बैठि वर ॥ ९२ ॥
बैठिय नृप दिस बाम अल्लीनबरा१ सु लार्ड तहँ ॥
मैंडकर२ बैठिय सव्य बहुरि जयसिंह१ विजय जहँ ॥
याके अध भट१ सचिव२ तीस३० अमुकेर मुदित मन ॥
मध्य विराजिय अप्प समय चवि कृत धाराधन ॥
घोटक१ मतंग२ भूखन३ तुपक४ वस्त्रादिक प्रभु भेट दिय
इम तुपक१ तास पुर जात पुनि नाम रफल करि नजर किय९३

॥ दोहा ॥

किय अवरोधन सह कमन, गंगातट प्रभु न्हान ॥
मज्जन करि डेरन गमन, चउदसि१४ दिन चहुवान ॥ ९४॥
अमा३ दिवस पुनि गंगतट, अंतेउर सह आइ ॥
कियउ स्नान आदिक प्रथम, ग्रहन मगम तहँ पाइ॥ ९५ ॥
प्रसू दुवरहि किय दान पुनि, रजततुला प्रभुअप्पि ॥
अंबा अमानकुमरी उमगि, बैठि रु विप्र समप्पि ॥ ९६ ॥
महिषी स्वरूपकुमरी दियउ, द्विजन दान मुद पाइ ॥
कथन सरिस पुनि अप्प करि, उमडित डेरन आइ ॥ ९७ ॥
पड़िवा१ सित पंचम सुरहिं, महिप बुलाइ मिलान ॥
पूजन करि तस प्रीति सह, दियउ अप्प कर दान ॥ ९८ ॥

॥ षट्पात् ॥

इक१ मतंग बन्नात सिरी कुथ सहित समप्पिय ॥
हाटक भूषन१ तुरग२ बहुरि बन्नात जीन दिय ॥

सिरुपाव१।३रु सिरुपेच१।४कटक१।५उरसूलिका१।६हितिम
धेनू दुव२ शिविका१ रु निष्क८ पंचक५ रुप्पय९ जिम ॥
इखुख५०९सोहु पंचक अरथ गाम१लोहूली१।१०निष्कदुव२
इम करत बहुरि अवरोध सन भिन्न भिन्न तहँ दान हुव॥९९॥
दोजि२ दिवस उपवीत लियउ प्रभु ब्रह्मचर्य पुनि॥
पंचमि५ दिन लै अप्प भीम२०३।१ कुमरहि सुभटन चुनि॥
शास्त्रउक्त विधि सद्धि भीम२०३।१ सह सुभट सधाइय ॥
दियउ दान भू१ भर्म२ द्विजन बहु मोद बढाइय ॥
षष्टिका६ दिवस हुवे मेघ झर सप्तमि७ बुधहिं मिलानरहि
अवरोध सहित एकादशिय११चलिय गंगतट न्हान चहि१००

मनोहरम्

भूप दशाश्वमेध उप्परि पधारि पुनि,
अप्प कर न्हाइ भरे दुव२ घट प्रवाहतैं ॥
तर्प्पन रु नित्यकर्म आइ करि तीर्थ द्विजं,
देकैं गो१ सनिष्क१।१ द्रम्म३।५ पंचक५ उछाहतैं ॥
पुनि प्रभु अश्वदश१०मेधके वितर्द पर,
जाइ रु प्रनाम कियो पर्व्वईके नाहतैं ॥
निष्क इक१ नाग्राक२।१ महीपति व्हाँ भेट करि,
भोजन द्विजन दये रुप्पय सलाहतैं ॥ १०१ ॥
शिविर प्रवेसि पुनि द्वादशी१२ दिवस पात,
भेजिय हमीदखाँ वकील लार्ड घरकों ॥
जाइ तहँ मैंडक सिकत्तरसों अक्खि इम,
लैचलो डेरन हमारै गवरनरकों॥
जाइ तिन लार्ड अलीनबरातैं एह कही,
चालहु मिलाप आप बुन्दीधराबरकों ॥

बहुरि हमीदखाँकी अरज महही सुनि,
आवत शिबिर प्रभू लेकैं सिकत्तरकों ॥ १०२ ॥
साहब सिकत्तर वजीर नाम डोरन१ औ,
कालविल्लर२ त्योंही हरीसन३ हलीहर४कों ॥
लार्ड अलीनबराको अमात्य मखन तोस,
समर्लड६ नाम पैं कुहात सिकत्तरकों ॥
अंसुकसदन ईस गाइब७ खुरम८ सोही,
स्यंदन सदन ईस आयो राम२०२४घरकों॥
टालबट९ आयो त्यों उमगि महिपाल पुनि,
जनरल१० जंगी ईस तजिकैं गुमरकों ॥ १०३ ॥
बैठक चउअनको तुरंगरथ इक१ तापैं,
लार्ड चढि सिविर महीपतिके आतभो ॥
एह सुनि लार्ड अलीनबराके सम्मुहकों,
जीवनसहितलाल१ सचिव पठातभो ॥
महासिंहउत्त भट धौंकल२ रु गोकुल३त्यों,
सासन भुवालकेतैं त्रिकन जातभो ॥
जाइ मिलि उक्त लार्ड साहब सहित सब,
सिबिर महीपतिके उमंगि सु आतभो ॥ १०४ ॥
शिबिका अरोहि प्रभु सम्मुह बहुरि जाइ,
मिलिकैं परस्पर लगायो सीस करकों ॥
कुसल दुहूँ२घाँ होइ साहब बहुरि कही,
भूप हम सन्निधि विराजैं बत्त बरकों ॥
सुनिकैं नृपाल लार्ड साहबके वामभाग,
बैठि रु कुसल कियो भूप सिकत्तरकों ॥
मोदसह लार्ड भूपर मैंडकैं सिकत्तरहू,

बैठिकैं तुरंगरथ आये बस्त्रघरकों ॥१०५॥
शिविर प्रवेसि लार्ड साहब सहित आप,
संसद पधारि सब बैठे खुरसिनतैं ॥
खुरसी स्वकीया मध्य राजतीपैं बैठे अप्प,
मेंडकर२हू सव्य बैठो—— राम२०२१४ इनतैं ॥
वामभाग बैठो लार्ड साहब महीपतितैं,
समर जु आदि नव९ बैठे अध जिनतैं ॥
जीवन३ अमात्य हो हमिदखाँ४ वकील बैठे,
करन५ कल्यान६ आदि वीर अध तिनतैं ॥ १०६ ॥

(दोहा)

समय देस वृत्तांत चवि, करन मंत्र एकत्त ॥
शिविर अंत ए लार्ड सह, तिम मैंडक क्रमि तत्त ॥ १०७ ॥
जीवनलाल बुलाइ जहँ, अरु हमीदखां आइ ॥
कारि रहस्य इक१ नाडिका, पुनि पहु संसद पाइ ॥१०८॥
अतरपान पुनि अप्पिकैं,
शिरुपेच१।२रु दुस्साल१।३पुनि, जटित गिलंगी१।४अप्पि१०९
मुत्तिनमय उरसूत्रिका१।५, पट्टिस१।६ निज पुरजात ॥
चोक स्वर्ण वलदार मय, तुपक इक१ दिय तात ॥ ११० ॥

(षट्पात्)

दंती इक१।७ वन्नात सिरी कुथ सहित समप्पिय,
तुरग२।८ दोइ२ सौवर्ण बहुरि राजतखन——दिय ॥
इत दें सिक्ख सुजान वाह्य डेरन लग आइ रु,
भनि भावुक प्रभु लार्ड मत्थ कर दुहुँ२न लगाइ रु ॥
चढि लार्ड तुरगस्यंदन बहुरि मोदित बँगलन गमन किय,
इकवीस२१फैरनालिन अधिपकारि कटिबंध निवारिदिय॥११

॥ निश्शाणी ॥

चउदसि दिन भर मेघतैं डेरन रहि पाया ॥
पुनि पुरिणाम नृप न्हानकों गंगातट आया ॥
जानि तिथि क्षय जनककी तर्पन उमगाया ॥
मज्जन करि बिधि सहित श्राद्ध द्विजदान मिलाया॥११२॥
रजनी चित्तत बान५ बहुरि डेरनपर आया ॥
सावन पड़िवा असित तत्थ प्रभु रहन उम्हाया ॥
दोजि२ दिवस नृप दत्त लार्ड शस्त्रादि भिजाया ॥
तब नृप सचिवन अक्खिकैं तस मोल कराया ॥११३॥
च्यारिसहँस४०००सत अट्ठ८००पंचन५०रौप्य मगाय ॥
दै हमदिखां हत्थ लार्ड बँगलन भिजवाया ॥
क्रियउ नजर तहँ जाइ लार्ड लै मोद बढाया ॥
दिन चउत्थ४ दीवान शिबिर साहब छद आया ॥११४॥
कग्गर बंचि अमात्यहू सब वृत्त सुनाया ॥
उदयपुराधिप रान नाम सिरदार कहाया ॥
वृंदाबन सेवन करन अग्गैं तहँ आया ॥
सो अट्ठारह१८ दिवस रहि रु परलोक पलाया ॥११५॥
पंचमि५ दिन पुनि पाइकैं चर एह सुनाया ॥
जैपुर गोकुलचंद्रमा जयसिंह थपाया ॥
सेवक बल्लभ ताहिको गुस्सांइ कहाया ॥
नंदन गिरिधर सहित उमँगि डेरन पहँ आया ॥ ११६ ॥
तब प्रभु सम्मुह तास बाहय डेरन लग पाया ॥
नमन करन करजोरि प्रीति सह सीस नमाया ॥
अंशुकसदनहि लाइ बहुरि तिन तखत बिछाया ॥
प्रभुको चोका तखततैं अपसब्य बिछाया ॥ ११७ ॥

बैठि रु चवि वृत्तांत समय दुहुँ२सत्र दिखाया ॥
नजर तीन३ किय निष्क प्रभू पट्टिस पुनि पाया ॥
चोक स्वर्णमय तास समन करि सिक्ख दिवाया ॥
बाह्य शिबिर लग बहुरि आइ तिन मुद पहुँचाया॥११८॥
बलि प्रभु डेरन प्रविसिकैं कटिबंध विहाया ॥
षष्ठी६ दिन तिन सप्तमी७ अष्टमि८ तहँ पाया ॥
नवमी९ साहब मिलन कज्ज बांदापति आया ॥
अंत मुहम्मदजुलफक्कार नव्वाब कहाया ॥ ११९ ॥
आवत डेरन दुग्गतैं नालिन चलवाया ॥
पंच अधिक दश१० फैरहू मालुम करवाया ॥
दशमी१०दिन पुनि शिबिर भूप साहब चर आया ॥
मैंडककेर सलामहू मालुम करवाया॥ १२०॥
भावुक सहित सलाम भूपतिप्रति दरसाया ॥
एकादशि११ बाराणसी पढि द्विज इक१ आया ॥
गंधी केसवरामके सुत संसद पाया,
आढ्य सह हरवखस जो पढि नृप उमँगाया ॥ १२१ ॥
बैठक ताके गुननतैं पहु रीझि दिखाया,
द्वादसि१२ दिन बुधवार४कों चढि अश्व चलाया ॥
कोटेश्वर सिव दरस काज प्रभु पुनि उमँगाया,
करि दरसन मृडकेर बहुरि गंगाजल न्हाया ॥ १२२ ॥
नित्यकर्म करि सदर ईस इक१ निष्क चढाया,
गुन३ घटिका दिन रहत भूप डेरन पुनि पाया ॥
मक्खनतोस१ रु टालबट२ जु जात्रा सँग लाया,
पधरावन प्रभु लार्डगेह साहब दुव२ आया ॥ १२३ ॥

॥ दोहा ॥

चढ़ि तुरंग तिन सह चतुर, लार्डकेर लग जात ॥
आदि सिकत्तर मैंडकहु, अधिपति सम्मुह आत ॥ १२४ ॥

॥ षट्पात् ॥

भनि भावुक प्रभुकेर सीस कर मुदित समप्पिय ॥
प्रभु तव अप्प सु पानि मत्थ रक्खि रु सुभ अप्पिय ॥
साहब मैंडक सहित लार्डबँगलौं सु प्रवेसत ॥
उमँगि अलीनबराहु प्रभू सम्मुह तहँ आवत ॥
कर सीस परस्पर कुसल करि कमरुअंत राजाइ हुवर ॥
खुरसीन बैठि बेला अलप हाकिम सह एकान्त हुव॥१२५॥

॥ दोहा ॥

तुच्छ समय एकांत रहि, कुसल जंपि करि भिक्ख ॥
आये प्रभु२०३ डेरन उमँगि, रक्खि हर्ष तहँ तिक्ख ॥१२६॥
चढि तरंड करि कुच्च पुनि, अमा३० तिथी दिन आप ॥
झूँसी नामक सहरहू, अंसुक सदन अवाप ॥ १२७ ॥

॥ पद्धतिका ॥

ा८ऽसित प्रतिपदि१ सोमवार२, सहिदादि बाद रहियत उदार ॥
े बहुरि द्वितीया२दिवस कुच्च,विश्रामबरोटहि लियउउच्च१२८
रत्त सिविर चंक्रमन राम२०३, अति मुद कासीपुर आजगाम
द्विजन तहाँ करि न्हांन दांन,इंग्रेजन मेलन करि दिवांन१२९
मी७धवल पुनि सुज्जवार१, लौ क्रमन कियउ कछु भटन लार
मा८ऽसित अष्टमि८जीव५आप,मुदसहित गया पत्तनमवाप१३०
े सघन श्राद्ध तहँ भूरि दान, दै दंती अश्वादिक दिवान ॥
१।१० सासित षष्ठी६ सौम्य४ वार, करि कुंच रहिय चरखी उदार ॥ १३१ ॥
धवल सहस्य९ पुनि दोजि२ आप, बाराणसि नामक पुर अवाप

असितदतपस्य१२सत्तमि७सआर३, राजातलाव रहि पटआगार१३२
इम करत कुच प्रभु२०३पुनि विश्राम, नागोध ढंग ब्याहन जगाम॥
पुनि सुक्ला नवमी९ लग्न पाइ, ब्याहिय निसीथ प्रासाद जाइ१३३
सो चंदभानु कुमरी स नाम, वामांग अप्प करि राम२०३ बाम॥
अंतुकगृह आइ रु बहुरि आप, जाचकन अत्थ बहु धन ददाप१३४
नभ गगन नंद इक १९०० लगत साल, किय कुच्च मास मधु१ बलि कृपाल॥
विश्राम कुच्च करि करि रसेस, बुंदीपुर सुभ दिन किय प्रवेस१३५

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम८राशौ रामसिंह चरित्रे पञ्चदशो १५ मयूखः॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

अभ्र गगन नव इंदु१९०० सक, अनँगतिथी१३ आषाढ॥
पक्ख असित बुंदीस पुर, प्रविसे प्रभु गुन गाढ॥ १॥
तदनंतर भट्टिय प्रथित, जैसलमेरु जनेस॥
मूलराज बंधुन समुद, प्रानिय डोला एस॥ २॥

षट्पात्

कन्या राउल्ल विजयकुमारि जीवन गुनगोरिय॥
राउल ज्ञान द्वितीय२ रिद्धिकुमरी तिम आनिय॥
पट्टप भीम२०४१ कुमारकेर संबंध दुहुँन भनि॥
प्रोषित आक्खि रु तास किय सतकार महिप मनि॥
केदारनाथ शिवकेनिकट बुरजसिकारहिँ हित विजय॥
उपवन बहोरि ज्ञानहिँ अधिप रक्खिय रूपविलास रय॥३

॥ मनोहरम्॥

[illegible]

ब्याहन पठायो पहु बुरज सिकारकों ॥
राउल विजयसिंह उत्त उपहार ठानि,
कन्या करग्राहन करायो कुमारकों ॥
अनल परिक्रम औ सप्तपदी आदि दैकैं,
वेदबिधि आये पुर तिहि बारकों ॥
नवमी९ दिवस रूपआदिक विलास जाइ,
ज्ञानसिंह तनया बिबाही गुरु५बारकों ॥ ४ ॥
ग्यारह सहस्र ऊन११०००लक्ख दुव२०००००रुप्पय औ,
तुरग द्विषष्टि६२ अरु कटक दुसत्त७२भो ॥
अप्प प्रभु सभ्य रविमल्ल कवि मास सुचि,
एकादसी११हूतैं बिजैदशमी१०लौं दत्तभो ॥
सुनिकैं उदंत यह जव्वक विदेशहूके,
आये नैर बुंदी प्रभु दव्य अनुरत्तभो ॥
सुकवि समाज कति मिलिकैं निवाजे आप,
बाजे जस ताजे जेके बजाइकतिपत्तभो ॥ ५ ॥

॥ पज्झटिका ॥

नरु भ्रात कोटरिन करि उछाह, औ द्वादस बलि आये बिबाह ॥
ो नाम सहित सुनिये रसेस, यह भीमसिंह आये ससेस ॥ ६ ॥
ामंतसिंह कापरनिकेर, सकुटुम्ब रचिय आगम नफेर ॥
ब्यादिसिंह दुर्गापुरीस, सिवसिंह इंद्रगढके रईस ॥७॥
कुटुंब कुमर सह अवर पाइ, आंत्रद अधीस पुनिराम आइ ॥
:यादिक आइ रु रहिय एस, आदरतैं रक्खिय सब इलेस ॥ ८ ॥
ारि सभा तास सतकार लेय, दै सिक्ख ताहि दिय बस्त देय ॥
नकरि बिवाह--राम२०३आप,मोदित किय कविबुधभटअमाप९
हैं अब्द१९००जोधपुरके नृपाल, किय भाद्रैकादसि११मानकाल

पुरिराम१५दिन पैठो तखत पट्ट, थंभिय समस्त मरुराज थट्ट॥१०॥
इक बिंदु अंक ससि१९०१वर्ष माँहिँ, साहब अजंट बर्टन सु आँहिँ
साहब सन सम्मुह प्रभु पधारि,हुव महलन दाखिल हितवढारि११
जपवती नाल प्रासाद जाइ, उत्तरि अजंट पुनि प्रीति पाइ॥
तस सिबिर द्वितीपक २ अहन आप, किय क्रमन महीपालक मिलाप ॥ १२ ॥
उत साहब सम्मुह आजगाम, करि सीस परस्पर करन राम ॥
प्रभु किय उपवेसन तखत पाइ, उपवेसन साहब सच्य आइ१३।
पुनि लौंन दैन किय अतर पान, हुव दाखिल महलन हड्ड भान ॥
महलन पुनि साहब हित अमाप, अर्जुन तपस्य षष्ठीदअवाप१४
--अभिमुख पायंदाज जत्थ, मिलि किपउ परस्पर हत्थ मत्थ ॥
तदनंतर बैठिय तखत राम, साहब सु दुलीचन रहिय बाम ॥ १५॥
बेलाल्प राखि करि अतर ताहि, पहुँचावन पायंदाज आहि ॥
दै सिक्ख ताहि दिय वस्तु देय, धरनिन्द्र अप्प २०३ किय जो बिधेय ॥ १६ ॥
अब सुनहु प्रभू२०३इहिँ अब्द१९०१अंत, इंग्रेजन किय जो रन उदंत
ऽपासा१सतलंज२रु बीच देस, आक्रमन सिखन करि लिय असेस
सय गगन निधी अरु इक्क १९०२ साल, तेरसि १३ तिथि भाद्रा-ऽसित भुवाल ॥
महाराजकुमर लघु रंगनाथ२०४।२,उद्भवन भवन भव सर्व आथ१८
लाहोर ईस तिनदिन दिलीप, हुव सिष्टि कंपनी मनु महीप॥
जवकरि इंग्रेजन जुद्ध जास, नालिन तस सेना करि रु नास॥१९॥
बालि करि निरोध भेजिय बिलात, तस जननी चंदा नाम तात॥
नैपालज अटवी रहन कीन, इंग्रेज राज्य तस किय अधीन॥२०॥

अभिधा नारायनसिंह आइ, वय बहुरि बालय पंचत्व पाइ ॥ २१ ॥
पहु रूक्ष मदनसिंहाभिधान, हायन इहिं१८०३ पट्टनि भयउ हान
तस बैठिय पृथ्वीसिंह पट्ट, गनि प्रभू चलिय सामान्य वट्ट ॥ २२ ॥
सक बेद सून्य ग्रह इक१९०४ आत, पट्टन दुरबंट पहु अप्प पात॥
बलि केसव उच्छव हित बढारि, सित राधमास पट्टनि पधारि२३
दर्शन करि केसवके दिवान, अक्षयतृतीय३ दिन पुनि विधान ॥
उच्छव अरु पूजन करि रु आप,सब करि विधेय सिबिरहि अवाप
करि बहुरि तहाँ प्रभु न्हांनदांन, बर्टन अजंट बलि कियउ आंन॥
चर्मण्वति घट्टोपरि बिछात, अधिराज प्रथम तहँ अप्प आत ।२५।
साहब सपुत्र आइउ उहांहि, अप्प२०ऊ पहु सम्मुह छ्६पद आँहिं
करि दुरदिस सीस कर भद्रभाखि,गालीचन साहब बाम राखि२६
बैठिय पहु गद्दी सित अवाम, अल्पहि पुनि वेला रक्खि थाम ॥
वैश्वनर पान तस सिक्ख दिन्न,क्रम छ्६पद तस पहुंचान किन्न२७
राजेन्द्र राध सित नवमि९ राम, करि कुंच सु बुन्दी आजगाम ॥
सक बान गगन नव ससि १९०५ भुवाल, किय कुमर नरायन
सिंह काल ॥ २८ ॥
तप असित नवमि९ दिन बहुरि तात, रसरंग सुभद्र सुकुमरि जात
इहिं साक १९०५ अधिप परतापपाल, किय नगर करोली भाद्र
काल ॥ २९ ॥
सुत तास मदनसिंहाभिधान, व्है भूप चार भट कियउ मान ॥
रस व्योम अंक भू १९०६ वर्ष आहि, लाहोर इँग्रेजन लिय
उमाहि॥ ३० ॥
हय गगन अंक इक१९०७ होत साल, दुग्गापुर देवीसिंह काल॥
सुत संभूसिंहसु गिनि अभिन्न, दुग्गापुर सासक अप्प किन्न।३१।
इहिं सक१९०७ इंग्रेजन युद्ध किन्न, नृप बर्मातैं कछु देस लिन्न॥

गज गगन अंक इक १९०८ आत साल, पट्टनि सु अज्ज प्रविसे भुवाल ॥ ३२ ॥
साहव अजंट तहँ मिलन काम, सो जानहु मारीसैंन नाम ॥
चर्मण्वति तरनी उतारि चाहि, आइय विछात उप्परि उमाहि॥३३॥
प्रभु अप्प तास अभिमुख पधारि, आइय समाज वहु हित वढारि
कछु समय राखि दे सिक्ख तास, पहुँचावन पायंदाज पास ॥३४॥
हुव दाखिल्ल शिविरहिँ हड्डभान, दिन द्वितिय२कियउ तहँ न्हान दान
कारि कुंच वहुरि प्रभु अप्प राम, बुंदी पुर सत्वर आजगाम ॥ ३५ ॥
तदनंतर वीकानेर राय, पहु रत्नसिंह तज्जिग सु काय ॥
सरदारसिंह तस पट्ट पाइ, जानैं कछु प्रभुतैं हित जनाइ ॥ ३६ ॥
ग्रह गगन अंक इक१९०९आत साल,कापरनि कियो वलदेव काल
सव मेटि विघ्न कापरनिकेर, महाराजा हलधर कियउ फेर ॥३७॥
रागिनि सेखाउति हड्डराइ२०४, उज्जाऽसित तिन दिन निधन पाइ
वर्मा उपवर्तन नृप वहोरि, इंग्रेजन लिय इक१दुर्ग तोरि ॥ ३८ ॥
सक गगन इक नव ससि१९१० समात,
प्रभु मिलन अत्थ सोधन अवाप ॥३९॥
किय करन दु२दिसकछु कुसल कारि, पुनि अप्प तखत उप्परि पधारि ॥
वर्टन गालीचन रक्खि वाम, वेलाल्प रहि रु गय वस्त्रधाम ॥४०॥
उप किय अजंट अजमेर जान, अव सुनहु वृत्त इत हुव दिवान ॥
एकादसि११आश्विन असित आत, पटरागिनि पहु पंचत्व पात४१
तदनंतर जीवाराम तात, ग्वालेरप जनकू नाम रूपात ॥
कछु रोग पाइ तिहिँ कियउ काल,सुत जीवारामसु भो भुवाल४२
सक भूमि इक निधि ससि१९११उदार, शुक्राऽसित दशमी१० शुक्रवार६ ॥

मदनेस भल्ल धीदा उमाह, कुमरार्जुन पट्टनि किय विवाह ॥४३॥
तहँ त्याग अमित पहु राम२०१४आप, मोदित दिवाइ किय कवि
अमाप ॥
सक इहिं१९११इंग्रेजन रूससाह,आरकंदन जीति रु किपउछाह४४
सय भूमि अंक ससि१९१२लगत साल, आयउ अजंट मेसन सु-
वाल ॥
जयवतिय ताल उत्तरन जास, आगत अजंट महलन हुलास।४५।
अभिमुख पहु पायंदाज आइ, करिको परिकर पुनि संग मिलाइ॥
उपवेसन गद्दी कियउ आप, आसन सु सव्य रहि हित अमाप४६
रहि समय तुच्छ तस सिक्खिदिन्न, पहुँचावन आदिक पुव्व किन्न
तदनंतर जानहु नरनपाल, पट्टप कुमार वंसनवहाल ॥ ४७ ॥
उद्वाह करन भेजिय इलाप, सह जन्य कुंच करि तहँ अवाप ॥
सह मास९एकादशि११बुद्धवार४,इहिं लग्नभीम२०३पट्टपकुमार४८
राउल सु भवानीसिंह धीय, अभिधा गुलावकुमरी सुहीय॥
ररनि रु बुंदीपुर आजगाम, दंपति लिय महलन दिवस वाम॥४९॥
पुन भूमि अंक मृगअंक१९१३साल, किय इंद्रगढप सिवसिंहकाल
संग्रामसिंह हुव तास पट्ट, बनि चलिय महाराजा कुवट्ट ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

मेसन साहब मोटि अरु, बर्टन आइ बहोरि ॥
हुव अजंट हड्डोतिको, मद अरातिगन मोरि ॥ ५१ ॥
बलानाथ इहिं सक बहुरि, प्रोष्टासित नरपाल ॥
रंगनाथ२०४१सिंहहिं कुमर, किय नागोधहि काल ॥५२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणेऽष्टम ८ राशौ राम-
सिंहचरित्रे षोडशो मयूखः॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

वेद इंदु नव ससि १९१४ वरस, तपा मास सित पाइ ॥
पहु हलधर पंचत्वपन, पुरिणम१५ दिन प्रकटाइ ॥ १ ॥
तब कापरनिय तस तनय, राजसिंह नरराज ॥
आइय बनि महाराज इत, गौरवादि सुभ काज ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रसू अप्प २०।३ जो पहु तदनंतर, उज्जा८।३सित एकादशि११ बासर ॥
जो अमानकुमरी ति जनावत, पन पंचत्व मध्यदिन पावत ॥ ३ ॥
याहि समय १९१४ सेना इंग्रेजन, अज्जाबत्तज मनुज फिरे मन ॥
सत्तर७०ही पलटनके स्वामी, साहिब रैटकप्तान सु नामी ॥ ४ ॥
सासन गोरन एह सुनायो, टोटन सिर काटन प्रकटायो ॥
तामें मेघजीन खल्लासिय, ए उदंत समग्र सु जानिय ॥ ५ ॥
इकदिन आयुधीय तहँ आइय, खल्लासी जातैं दक मंगिय ॥
तबहि अदेय आयुधिक अक्खी, जब खल्लासि बात यह भक्खी॥६।
मेद मिलित टोटन गो१ सूकर२, रद छेदन करिहो तब सत्वर ॥
जातिहु जबर पुराय फल पैहो, दक जब हमहिं पानकों देहो ॥ ७ ॥
इम सुनि चमू आयुधिक आयो, सब अज्जन वह वृत्त सुनायो ॥
तब कप्तान रैट तिन्ह मारि रु, इकदिन सर्व छावनिन जारिरु ॥८॥
ससुत मैम साहब बहु मारे, कति भूपनके सरन सिधारे ॥
सुनि यह कोन दयो तब सासन, बाहिनि जाहु उपद्रव नासन॥९॥
सेनासहित लार्ड तब आये, कारेजन सब मारि भगाये ॥
दिल्ली साहबहादुर सानी, अधिपतिता हिंदुन उर आनी ॥ १० ॥
पकरि सोहु तब साहब भेजिय, पिंसन करि रु कपमँहँ रक्खिय ॥
तदनंतर कोटापुर स्वामी, रामसिंह२१२ महाराव जु नामी ॥११॥

कायथ जैदयाल१ तस किंकर, भो महरापखान२ अनुचित धर ॥
मैंम१ पुत्र२ सह बर्टन३ मार्‌यो, बैभव लूटि सदन तस वार्‌यो १२
बाहिर कोटा निजबस किन्नौं, दुःख अमित भूपति सिर दिन्नौं ॥
॥ १३ ॥

सुनि यह वृत्त करोलिय सत्वर, भेजिय मदनपाल दल भूवर ॥
पुर अंदर कछु यत्न प्रवेसिय, जैदयाल दारुन कलि मंडिय ॥ १४ ॥
कग्गर लिखि अजमेर खिनायो, महाराव अति नम्र दिखायो ॥
सु सुनि लार्ड तब -क सजायो, अति अमर्ष कोटापुर आयो॥१५॥
कतिदिन दुरदिस युद्ध तोपन किय, दुसह ताव साहब तस सिर
दिय ॥

जैदयाल१ महरापखान२ जब, सुभट मराइ तजि रु बैभव सब१६
भीरुक मनि कोटा तजि भज्जे, बंबि बिजय साहब बल वज्जे ॥
मेटि सकल बिग्रह पुर करि मह, साहब गो अजमेर सेनसह।१७।
सक सर भूमि नंद ससि १९१५ जानहु, पुरिखाम१५ तिथि इस७
सुक्क१ प्रमानहु ॥
देवीसिंह पुत्ति दुर्गापुर, मृत गोविंदकुमरि अंतेउर ॥ १८ ॥
अष्टि नंद इक१९१६ हायन आवत, मैंनेजन मिलि धाटि मचावत
दुःख पंथजन बहुरि सु दिन्नों. बुंदिय मुलक धाटि वस किन्नों१९
हु तब तापर चक्क पठायो, रहि बन रोक सु समर रचायो ॥
कतिदिन कलि करि कतिक पलायन, कतिक नयारि चक्क कि-
य आवन ॥ २० ॥
इप भू अंक इक्क १९१७ मित हायन, फग्गुन१२ असित२ त्रयोद-
सि१३ पावन ॥

यन१ वन२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

तिहारी किय महिषि उद्यापन, तापर लिखि रु निमंत्रित भूपन२१

कवि रविमल्लहिं दियउ कृपाकर, बलि भूदेवहिं वित्त दियउ वर
तिनदिन भीमसिंह२०३तदनंतर,लागो चलन कुमग्ग अनयकर२२
विगरन राज्य उपाय सु बलि किय, मीनें मनुजहिं सरन अमित दिय
जब प्रभु अप्प इहाँतें सुभजन,भेजिय भीमसिंह२०३समुझावन२३
जाइ रु तिन अति नय समुझायो, इक्क न वृत्त तास उर आयो ॥
उत्तमांग विनु नक्क कहिय इम,कहो विचारि ललित लगैं किम२४
इम सुनि सब बुंदीपुर आये, तास उक्त सब वृत्त सुनाये ॥
सुनत गहन मैंनन मारन सन. भेजिय चक्क गोठपुर भूधन ॥२५॥
ग्राम घेरि मैंने इन मंगिय, नहिंदै कहि रु भीम२०३ रन मंडिय ॥
जब कुमार अर्जुन कलि किन्निय,दुसह ताप तोपन तससिरदिय२६।
कतिदिन कलह भीम २०३ गोलिन किय, भीरुक बनि रजनी बलि भग्गिय ॥
नृप २०३ तस ग्राम सकल जब छिन्निय, कुमर सचक्क आगमन किन्निय ॥ २७ ॥
वसु वसुधा निधि इंदु१९१८अब्द मित,आवन किय बेलन अजंट इत
पुव्वरीति सम्मेलन पहु किय,दृढ दिखाइ पुनि प्रीति सिक्ख दिय२८
तदनंतर इहिं सक१९१८इंग्रेजन, किय अजमेर नन्हजी पकरन॥
पुनि सु बिठूर भेजि गल अप्पिय, बोये बीज तास फल पक्किय२९
बाजेरावज एह बखानिय, मिलि कारन कलि नन्ह प्रमानिय ॥
बलि बड़ोद संग्रहि संन्यासन, सोपुरपतिहिं दयो इंग्रेजन ॥ ३० ॥
सक इहिं बहुरि उदयपुर सासक, सिंहस्वरूप नामहुवनासक ॥
संभूसिंह पट्ट तस पावत, जे अकरत्थन रीति जनावत ॥ ३१ ॥

[दोहा]

संवत इक निधि अंक ससि१९१९ तेरसि१३तैस१०रु स्याम
श्रीगङ्गोदक क्रम स्रवन, राजराज किय राम२०३।४ ॥ ३२ ॥

श्राद्धादिक सब बेद बिधि, पहु अप्प कर कारि ॥
सुभ मुहूर्त उड्डुदुर्गतैं, रहि केदार पधारि ॥ ३३ ॥

॥ पद्धतिका ॥

सुत सहित --- पडवा१पयान, दुवलान प्रवेशन किय दिवान ॥
मौजिष्य भ्रात त्रिक३ कियउ आन, ॥ ३४ ॥
अह बहुरि तृतीया३ आर३ वार, सो दिवस भयो प्रभुकोऽवतार ॥
करि पूज नवग्रह आदि केर, पटवास नयनपुर बेसि फेर ॥ ३५ ॥
रहि तहाँ चतुर्थी४दिन रसेस, आहूत सभा भटवर असेस॥
लै लंचा सामाजिक समाप, अंसुकअगार दै सिक्ख आप ॥ ३६ ॥
सितपक्ख पंचमी५ दिवस आत, पहु दियउ समीधी दल प्रयात ॥
विश्राम करत चोरू बलाप, तहँ सुजन टोंकपतिके अवाप ॥ ३७ ॥
दौलांत वजीर सु पहु नवाब, सुभ छंद लै आये दुवर सिताब ॥
पु अजीटगा अबदुल समनखान, विष्णुप्रसाद कायस्थ वान॥३८॥
सामाजिक किय दुव रत्रि समाज, करि नजर अरज कियहहुराज
हु मामकीन अधिराज एह, नाणक रु सहस्र १००० नय करि
सनेह ॥ ३९ ॥
फंडोल हारहूरादि केर, मिष्टान्न एक शत १०१ नियन फेर ॥
ाहिमानिक लंचा लेहु लार, धरनीन्द्र अप्प ऊंदद-धार ॥४०॥
ाडुनाथ उदित रसह६ घटि अवाप, दै सिक्ख उज्झि पर्यस्ति आप॥
ानि दुरहुँन सभा बुलवाइ प्रात,सिरुपाव दियउ छदहित दिखात४१
क्रमन सप्तमी७ चाहुवान, आमिल माधवपुर कियउ आन ॥
स नाम जवाहरमल्ल१ तात, अरु नायब बाजूलाल२भ्रात ॥४२॥
ाम नायब जन मनसुख३ तृतीय३, तित मुनसी नारायण४तुरीय॥
सम्मुह आये अद्धकोस, सुभ अरज नस्तरकि गत सतोस ॥४३॥
त्र दाखिल पटगृह हड्ड भान, पहु किय मिलान अष्टमि पड़ान ॥

नवमी९ दिनेस पुनि किय पयान, डुंगर मलारनें किय मिलान॰
पदऊन कोस तँहँ पुनि नृपाल, आइय बिश हाकिम रामलाल
सुभ अक्खि नजर करि तिमसलाम,रहि तहाँ रत्ति धरनीन्द्रराम४५
वाटोदे दशमी१०दिन सुजात, पुर परिसर पन्नालाल आत ॥
लै लंचा सुभ तस अक्खि आप, अधिराज बहुरि पटगृह अवाप४६
उग्गत एकादशि११ सौम्यवार४, जावत खुसालगढ पटअगार ॥
आइउ द्विज आमिल अद्धकोस,सिवदीन सु लंचा किय सतोस४७
अंसुकअगार पुनि अप्प पास, सिवदीन पुत्त नारायनाऽऽस ॥
रहि द्वार कराइय अरज जोहि, व्है हुकम सरबराकेर मोहि॥४८॥
तापैं पहु अक्खिय तावकीन, है रीति इक्क१ हम लिपउ तीन३ ॥
हमरे रु परस्पर एकबत्त,अब जानी यह तुम अप्रमत्त ॥ ४९ ॥
इम सुनि रु कराइय अरज एस, सामग्री किय पुव्वहि असेस ॥
सब पुव्व माफ करिहे सुसंध, व्है हुकम ततो देहाँ प्रबंध ॥५०॥
सासन दिय सो सुनि पुनि रसेस, तब दिपउ सरबरा दल असेस
आवत अंतेउर गढकुसाल, मच्छीपुर जेमन कियउ काल ॥५१॥
मच्छीपुराप बलवंत आइ, करि नजर पुहप कंडोल काइ ॥
किय नजर सविबी अप्प केर, प्राभृतक कियउ महिषी सु फेर५२
बेतनिक१ बाहुभव२ जोहि सत्थ, सतच्यारि४०० सग्धि करवाइ तत्थ ॥
अंतेउर बेसिय शिविर आइ, पहु रहिय तहाँ इम रत्तिपाइ ॥ ५३ ॥
करि कुच्च द्वादशी१२दिन दिवान, पीलोदै पुनि हुव शिबिर आन ॥
तस सार्द्धकोस आमिल सुहात, श्रावक सुहि चुन्नीलाल आत५४
किय वलि वजीरपुरकेर आन, आमिल सु उदयचंदाभिधान ॥
लै भेट तास दै सिक्ख आप, अंसुकअंगार पहु पुनि अवाप॥५५॥
हिंडौनि पात तेरसि१३ अनंद, आमिल बहोरि गुलआवचंद ॥

करि पावकोसलग नजर आइ, तहँ फैर रुद्र११ तोपन कराइ॥५६॥
लै सिक्ख गयो हाकिम सतोस,पहु किय उ शिबिर आगम प्रदोस
छिंडोनितैंहि सब सेन माँहि, इंधन तृनादि अरु भांड आँहि ॥५७॥
तहँ रहत चतुर्दसि१४ धरनिकंत, आमादसलेमाकेरहंत ॥
नामसु——————————, गोपेश्वरसरखा सु देवराव ॥ ५८ ॥
अधिकारि नरायनदास आइ, रहिद्वार मिलन विज्ञति कराइ ॥
तब कहिय अप्परविचाहुवान,मान्योहम पुरिग्राम१५मिलनमान५९
पुरिग्राम१५ सर४ नाड़ी चढि पतंग,अधिराज मिलन हंकिय उमंग
पटद्वह गोपेश्वरसरखापाइ, अधिराज नमन करि भेट आइ ॥ ६० ॥
रहि पहर इक१धरनीन्द्र राम२०३१४, अंकुस्थगार पुनि आजगाम
तप आसित द्वितीया२दिन दिवान,सूरैट साहिप हिय तिलमिलान६१
तिथितीज३बयानें किय मुकाम, हाकिम तस आगत मिलन राम
बलदेवसिंह तस नामधेय, इककोस आइ सम्मुह अजेय ॥६२॥
मातुल सु भरतपुर महिप केर, ताजि तुरग नजर करि भ[illegible]फेर ॥
रहि तहाँ चतुर्थी४दिन रसेस, नाड़ी१इक१रहतहि अह्न सेस॥६३॥
तलस्थ सुजन पटद्वार पाइ, पक्कान्न द्वयंक९२मन भांड लाइ ॥
सरसतक५००बहुरि नाखाकन सत्थ,महिमानिक सामग्री समत्थ६४
मुदपाइ पहू यह मानकीन, भेजिय सु अत्र हम अरज कीन ॥
रक्खिय सु सर्ब सो सुनि रसाप, इम लंचा लै दै सिक्ख आप६५
तिथि नाग५दिवस तहँ मोद पाइ, साहब सु मिठाई मिलन आइ॥
ताजि तुरग सभा करतहि प्रवेस,सम्मुह द्वि२पैंड क्रमकरि जनेस६६
बलि करत सलाम सु हित बढारि, तब तास तत्र टोपी उतारि ॥
सँल्लाप दु२दिस हुव सब बढोरि,एकांत करन कहि सुभटओरि६७
बाहिर उपवेसन करिउ सर्ब, रहि अप्प मंत्र कारन अखर्ब ॥

वलि भीम २०४११ कुमर पट्टप भुवाल, बहुरा अमात्य जविन सु लाल ॥६८॥
करिमंत्र उक्त सबही समेत, दुव२ पाम बजत तिहिं सिक्ख देत ॥
छट्ठी६ दिन चढ्ढत एक जाम, बलदेवसिंह पहु दरस काम ॥ ६९ ॥
हाजरि हुव संसद करि सलाम, करि नजर निछावर मिसल बाम
उपवेसनकिय अथ सुभटतीन३,कछुसमय१बत्त शास्त्रोक्त२कीन७०
तत जाम उपरि बज्जत तृतीय३, सिरुपाव सिक्ख दे गनि स्वकीय॥
वलि आइ करोली जादवेन्द्र, सो मदनपाल मेलन रसेन्द्र ॥ ७१ ॥
वलि होत सप्तमी७ सोमवार, अधिराज अप्प सम्मद अपार ॥
रवि चढत जाम इक१ राजराम, किय क्रमन शिविर तस मिलन काम ॥ ७२ ॥
तजि तुरग प्रवेसत तहँ भुवाल, अभिमुख तब आइय मदनपाल ॥
मिलिकरि रु परस्पर हत्थ मत्थ, तत मेलन खंधा जुट्ट तत्थ॥७३॥
मिलि बहुरि महाराज सु कुमार, पूर्वोक्त रीति करि सब अपार ॥
इम दुव२हि गद्दिकाउपरि आइ, पहु अप्प रहे अपसव्य पाइ॥७४॥
आत्मीय सुभट रहि तिम अवाम, पुनि मदनपाल बैठिय सवाम ॥
वामजु तस रक्खिय सुभट सर्व,दुहुँ२ओर भयो इम सभा पर्व॥७५॥
सारीर वत्त समयानुसार, करि क्रमन कियउ पहु मुद अपार ॥
पहुँचावन आइय मदनपाल, डोढीलग-भूपा मध्यकाल ॥ ७६ ॥
सप करि रु परस्पर बहुरि सीस, स्वस्थान गयो जादव सुधीस ॥
उपवेसन सिबिका अप्प आत, दस सत्त१७फेर नालिन करात७७
पहुअप्प सिविर आइय प्रजेस, नाड़ी इक१ रहतहि पुनि दिनेस ॥
पहु मिलन सुभट सहमदनपाल, आत्मीय शिविर आइउउताल७८
नरयान छोरि पटद्वार पात, सम्मुह तहँ सत्वर अप्प आत ॥
सप दु २ दिस बहुरि हुव सीस रक्खि, अधिराज दुवरहि आमोद

आक्खि ॥७९॥

उपवेसन किय दुवरतखत आइ, पहु अप्प रहिय तहँ सव्य पाइ॥
पट्टप कुमार तहँ भीम२०४१ तात, अरु कुमर दुवरहि भौजिप्प भ्रात ॥ ८० ॥
सुभट जु बलि आत्मक रहि सु बाम,रक्खिय सु महामाश्रादि राम
सम्मुह सु सर्ब कवि बुधन ढल्ल, मिश्रन कवीन्द्र तहँ अर्कमल्ल८१
ज्ञालित्य यावनी अमृतलाल, नीती सुहु संकर मुकटलाल ॥

तलाल१ टलाल२ अंत्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इम राखि सर्ब अप्पन भुवाल, अपसव्य रहिय पुनि मदनपाल८२
अपसव्य चारभट तास रक्खि, अरु उचित समय वृत्तांत आक्खि॥
निस जात घटी त्रय३ सीख दिन्न, पहुँचावन पूरब रीति किन्न८३
उपवेसन किय नरयान आइ, दससत्त१७ फैर नालिन कराइ ॥
प्रामोद दुहुँरन इम रहि अपार, पहु मदनपाल गत पटअगार८४
उग्गत सु अष्टमी८ दिन दिवान, किय गाम नभैरै शिबिर आन ॥
नवमी९ सु भासकर बुध मिलंत,किय शिबिर फतैपुर धरनिकंत८५
कायस्थ सु हाकिम गुरुदयाल, इक१कोस आइ सम्मुह नृपाल॥
प्राभृतक निछावर कारि सलाम,पहु अप्प सोहु गय उचित धाम८६
दसमी१० दिन मंडा कर मुकाम,द्वादसि१२खंदोली बलि विश्राम॥
पुनि गाम सैदआबाद पाय, हुव शिबिर चउद्दसि१४हड्डराय ॥८७॥
करि कुच्च अमावासि३० सोमवार२, हुव दाखिल हतरस पटअगार
सित पड़िवा१मंगल३दिन दिवाप, बलि काचकेर नगरै अवाप॥८८॥
बुधवार४द्वितीया२ दिवस पाइ, किय गाम सिकंद्दर शिबिर जाइ ॥
सोहन पुर चोथी४ दिन मुकाम,बलि कासगंज पंचमि५विश्राम८९
छठी६दिन सूकरछेत्र पाइ, किय धारा गंगा शिबिर जाइ ॥
आप्लव करि सूकरछेत्र आप, करि भेट छपाधारा मवाप ॥ ९० ॥

करि सवन पूर्णिमा १५ दिन दिवान, नाग १ रु गोर२ बाजी३ छिति ४ नृजान५ ॥
उष्णीष आदि सिरुपेच सत्थ, दिय दान सु गंगागुरुहिं तत्थ ॥९१॥

॥ दोहा ॥

गंगागुरु गोविंदकों, चाढि रु गज चहुवान ॥
दै पट संभूनाथ गुरु, आरुहि अस्व विमान ॥ ९२ ॥
वस्त्रसदनके द्वारतें, इम दुव२गुरुहि चढाइ ॥
महिपति राजकुमार सह, पहुँचावन तस पाइ ॥ ९३ ॥
गुरु नारिन दै वस्त्र गुरु, पिन्नस रथ सु बिठाइ ॥
इक निसान सादी कतिक, दै तस सद्म पुगाइ ॥ ९४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे　　　　　　सप्तदशो मयूखः ॥ १७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

प्रतिपदि१ फग्गुन असित पुनि, गंगधार तजि गेय ॥
मोहनपुरहि मुकाम वलि, सब करि बेद बिधेय ॥ १ ॥

॥ मनोहरम् ॥

करत पयान श्रीदिवान राम दूजी२तिथि,
गाम काचनगरसो सिविर सुहातभो ॥
बहुरि तृतीया३ सुक्रबासर बलापतिहू,
सैदाबाद आइ सुभ थूलन तनातभो ॥
फग्गुन चउत्थि४ श्याम सहोदरै धाम राखि,
अकबरनैर षष्ठी६ दिवस दिखातभो ॥
साहब अजंट नाम वेलन१ बुरुक२ द्वैरही,
सम्मुह दिवाप चढैं नाही गुन३ आतभो॥ २ ॥
करिकैं सलाम औ परस्पर भविक भाखि,

साहब सहित अप्प डेरनलौं जाइकैं ॥
अकबरनैर गये साहब दुरसिक्ख लैकैं,
अप्प प्रभु सिबिर प्रवेसे हरखाइकैं ॥
एकादशी११ मंदवार जाम जुगर वज्जतही,
हूतीहु पधारे लार्ड साहबको पाइकैं ॥
बेलन अजंट ओ सिक्त्तर द्वैर साहबहू,
सम्मुह दसक१० अप्प डेरिनलौं आइकैं ॥ ३ ॥
जातहि समीप लार्डसाहबके वस्त्रधाम,
आये द्वैर सिकत्तर न जानें ताके नाममें ॥
रजीडन्ट आयो पुनि साहबहू लारनस,
लैगये पहूकों लार्ड साहबके धाममें ॥
दी आनरेबल दी अर्ल आफ अैलजिन,
आयो ऊठि सम्मुह त्रि३पैंड मेल काममें ॥
सीस कर करिकैंहू दुरदिस संलाप श्रेय,
बैठे पहु संसद जु लार्ड नहि आसमें ॥ ४ ॥
समय अतीत तहँ करिकैं कितोक आप,
कालोचित बत्त करी राजराज रामनैं ॥
अतर लगाइ पान देकैं सकुमार लार्ड,
उठि दिय सिक्ख धर्मधारकके धामनैं ॥
होत असवार लार्डकेर तहँ तोपनके,
सप्तदस१७ फैरहु कराये नेह नामनैं ॥
पाइ इम लार्ड प्रीति अंसुकसदन आइ,
उज्झयो कटिबंध यों अतीत जुग जामनैं ॥ ५ ॥
आर३वार असित चउद्दसि१४ तपस्य दिन,
बेलन अजंट आये पहु पधरानकों ॥

अरुहि अॅजंट उक्त अप्प पहु अस्वरथ,
सेना सह त्वरित पधारे लार्ड थानकों ॥
पट्टप कुमार भीम२०४।१ अर्जुन रु गोवर्द्धन,
जगन्नाथ वावातिकं अंतः पविसानकों ॥
जीवन अमृतलाल वीर वलवंत भट्ट,
सत्थलै दिखायो अपसव्य चहुवानकों ॥६॥
तखत वितस्ति इक१ उच्चकं विछाइ तापैं,
जातरूप जटित लगाइ खुरसी जहाँ ॥
वैठिकैं बुलाये लार्ड भूप रजवारेकेर,
सव्य अपसव्यहू विठाये क्रमतैं तहाँ ॥
वेगम भोपालकी१ अपसव्यहू बिठाई पुव्व,
सन्निधि सिकत्तरो२पवेसन करयो वहाँ ॥
असि तास हेठ ग्वालियरको नरेस जीवा३,
आसन अॅजंट कह्यो अप्प४को पहु चहाँ ॥७॥
भरतपुरेस५ भूप अप्प अध वैठो इम,
महाराव कोटा राम६ तातर विठायोहै ॥
उत्तर अधीस७ अलउरको विठायो तहाँ,
तास अध टोंकके नवाव८ थान पायोहै ॥
झालाकर पट्टनिको राजरानाँ पृथ्वीसिंह९,
रामपुर नवाव१० उत्तरोत्तर गायोहै ॥
अेक आधिराज अपसव्य लार्ड वैठो सव,
जानहु जनेस अव सव्य क्रम आयोहै॥८॥
जैपुरजनेस राम१ आसन सु सव्य कारि,
रजीडंट लारनस२ईस रजवारको ॥
इतर अॅजंट३ औ सिकत्तर४ सु संसधाम,

राम नरनाह जानूं सर्व सुभ कारको ॥
दच्छिन जो सर्व रजवार भूप पीछैं तास,
आत्मज श्रो भ्रात उपबेसन सुढारको ॥
जाके पिट्ठि सुभट श्रो सचिव बलीत्त स्वक,
ऐसैं करि आमकइयो धामजयधारको ॥ ९ ॥
राखिकैं कितेकबेर संसद बहुरि लार्ड,
सिरोपाव१ दत्तभो सु माला मुकतानकी ॥
अतरमगाइ लगाइ जु उत्तरोत्तरहू,
उट्ठिकैं दियउ सिक्ख सर्व निज थानकी ॥
अस्वरथ आरुहि स्वकीय क्रमैं भूप थान,
आरुहि तुरंगगति शिविर चुहानकी ॥
रहत दिनेस सेसनाड़ी कृत४ अप्प२०३।४पहु,
उज्झिय पर्यस्तिका विसेस करि तानकी ॥१०॥
दरस३० दिनेस सौम्य बासर बहुरि लार्ड,
मध्यदिन शिबिर पहूके आसु गाइकैं ॥
अंसुकसदन द्वारउज्झत तुरंग रथ,
सम्मुह क्रमि रु ताहि मोद दरसाइकैं ॥
भविक भनाइ भनि संसद सलाहै जाइ,
बैठिकैं सुविष्टर उदंत कछु पाइकैं ॥
सिरोपाव१ स्तंबेरम२ सप्त६ सब लंचा लै रु,
दै लै सिक्ख लार्ड गयो सम्मद अमाइकैं ॥ ११ ॥
द्वादसी८२ रहत नाड़ी नयन२ दिनेस सित,
आगरा किलट्टर बरून मेल आयोहै ॥
जीवन सु अंत लाल आदिक समाजी लोक,
सहित प्रजेस२०२।३ ताहि विष्टर बिठायोहै ॥

समय उदंत आखि रक्खिकैं कितेक बेर,
संक्रम चुहान साहवकों दरसायोहै ॥
जामिनी जुगल२ जात नारीजन नाथ अप्प,
आरुहि क्रमन काज बल्लन बढायोहै ॥ १२ ॥
सिविर बरोदै सावरोध गाम ऐसैं आइ,
वासर सु तेरसि१३ फतैपुर बितायोहै ॥
चतुर्दसी१४ चंद्रवार४ नभेरै मुकाम करि,
शिविर बयानै राका दिवस१५ सुहायोहै ॥
पड़िवा१ – अर्जुन२ अधीस२०३१४ इम मधु१ श्राम,
गाम – सूरैट धाम स्वजन –नायोहै ॥
मंदवार७ दूजी२तिथि हड्डन अधीस इम,
रहत हिंडोनी बल थूल तनवायोहै ॥ १३ ॥
करोली मदनपाल भूपके प्रसस्त जन,
सुभट अमात्य आये पहु पधरानकों ॥
अभिधा ओंकार१ ओ मलूकपाल२दोलासिंह,
मंत्री बलदेव ४ ए बलदेव सभा थानकों ॥
मुजर ओ नजर निवेदि लैं मिसल्ल कह्यो,
भावुक भनायो भूप जादवके भानकों ॥
बहुरि कहिय एह अनुकंपा करि ––,
ओमिति करांगे तूर्ण सबलक आनकों ॥ १४ ॥
अंगीकार तास अरज कारि तृतीया३ दिन,
शिविर बरोदाको कृपाल करवायोहै ॥
दिवस चतुर्थी४ क्रमै अस्व जु सवार इतैं,
भूप मदनेस उतैं अभिमुख आयोहै ॥
कोस इक१ तटिनी करोलीतैं उतरि नीर,

आइ अस्वाक ठाढो राहि रु जितायोहै ॥
बाबा ता कुमार नाम अर्जुन रु गोवर्द्धन,
जगन्नाथ मुस एस भावुक भनायोहै ॥ १५ ॥
महाराजकुमार पधारे पुनि भीमसिंह२०४।१,
अस्ववार अप्प२०३।४ मिले मदन प्रजापतें ॥
दुहुँओर मुजरा स्वसीस सय भव्य कारि,
चंक्रम चुहान कर्‌यो सव्यक जु आपतें ॥
उतरि नदीज जल उभय२ बिछात आइ,
गद्दीकोपवेसन ससव्य मुद मापतें ॥
आप अपसव्य प्रभु रहिकैं बिराज तहाँ,
पट्टप कुमार२०४।१ बैठे पच्छिम मिलापतें ॥ १६ ॥
सुभट स्वकीय बलवंत राष्ट्रकूट पुनि,
जीवनादिलाल द्विक सम्मुह बिठायोहै ॥
बालूर दिवान ओ ओंकारपाल२ अनपसव्य,
सव्य राहिकैं कितबिर मनन मिलायोहै ॥
अस्ववार होइ दुव२ भूपन क्रमनक्रम,
सुभट समाज ओर पुव्वक्रम पायोहै ॥
नगर करोलीके समीप भो शिविर तहाँ,
प्रभुके प्रवेसतें जु वदन उम्हायोहै ॥ १७ ॥
सेस दिव तत्व५ नाड़ी रहत करोली भूप१,
बिप्र बलदेव द्वार नायक पठायोहै ॥
पक्क एक अन्न चत्वारिंश४१हूके भाड पुनि,
पंचशत५०० नाग्राक सनेह दरसायोहै ॥
नजर निवेदि भव्य भाखिकैं जुहार जिम,
प्राइकैं परागत प्रवृत्तपन पायोहै ॥

तीन३ अग्ग त्रिशत३०० टकेनभर सेर इक्क१,
पक्क अन्न सेना सबन प्रति दिवायोहै ॥ १८ ॥
पंचमी५ दिनेस सेस रहतहि नाड़ी च्यारि४,
महल पधारे अप्प मदन भुवालके ॥
महाराजकुमर सु नाम भीमसिंह२०४१ बलि,
अर्जुनादि भ्रात तीन३ बाबा ता नृपालके ॥
प्रासादन द्वार जात सेन सह हड्डइंद,
सत्तदस१७ फैर सु कराये अयनालके ॥
अंदर जु चोक लग जातहि मदनपाल,
अभिमुख आयो अधसीढिन सुजालके ॥ १९ ॥
करिकै करन सीस दुरदिसही भद्र भाखि,
सव्य सातमी – पहु धारे संसदाममैं ॥
स्वीय सुभटालि सर्व वामहि बिठाइ राम२०३१४,
आप अपसव्य राखि बैठो तखतामभैं ॥
पट्टपकुमार भीम२०४१ और शिवदान भ्रात,
अप्प२०३१४ दिस बैठे बीच गद्दिका अबाममैं ॥
सुभट स्वकीय अन्य संहति सचिव सर्व,
ऐसैं आम बाम रची सभा सुख धाममैं ॥ २० ॥
करिकैं कितोक काल नरप अतीत तहाँ,
हड्डइंद२०३१४ सिक्खलै पधारे निज थानकों ॥
मंजु क्रम तुरग अरोहन अधिप उहाँ,
पुव्वक्रम जादवेन्द्र आयो गहुवानकों ॥
आरुहि तुरंग द्वार प्रासादन बाहिरात,
सप्तोत्तर दसक१७ कराये फैर जानकों ॥
जावन गुनक३ घटी बहुरि नरेन्द्र राम२०३१४,

नेह कारि प्रबल प्रवेसे सिविरानकौं ॥ २१ ॥
सप्तमी७ दिनेस पंच५ रहतहि नाड़ी सेस,
करोली मदन भूप स्वीय शिविरायोहै ॥
अंदरके द्वार लग वीरन सहित आत,
हद्दुन अधीस तास सम्मुह सिधायोहै ॥
सोलह सहित इक्क१७ नालिन कराइ फैर,
अप्प दच्छि नासा तख्त उपरि बिठायोहै ॥ २२ ॥
अनेह अतीत घस्र करिकैं सिधायो सिक्ख,
पुब्ब लग द्वार अप्प आयो पहुंचानकों ॥
बाहिर शिविर द्वार आइ नरयान चढि,
जादवन नेता गयो जेता निज थानकौं ॥
अठ्ठ नव१७ फैर स्वीय तोपन कराइ पुनि,
आगत अधीस२०३४ सभा बिहित बिधानकौं ॥
आदमीय सेना काज महीप जु सब अन्न,
पिष्ट आदिक समस्त बस्तु —— दानकों ॥ २३ ॥
ऐसैं राखि दशमी१० निसालग मदनपाल,
सिक्खदैन एकादशी११ थूल स्वक आयोहै ॥
ताजिकैं तुरंग द्वार अंदर प्रवेस पात,
सम्मुह तहाँही अप्प आवन रचायोहै ॥
संसद पधारि सभ्य रहिकैं बहुरि आप,
भद्रासन ताहि अपसभ्य बिठवायोहै ॥
एम क्रम तास आस सुभट समाज स्वीय,
पाइकैं प्रवृत्ति पहू प्रीतिपन पायोहै ॥ २४ ॥
मदन महीप गेह सिक्खदै स्वकीय गयो,
कुच्च सर५ जात नारी रति करवायोहै ॥

गाम कुर१ आइ थूल राखिकैं द्वितीय२ दिन,
काम तिथि१२ धाम खुसह्वालगढ२ पायोहै ॥
अमावसि३० अनेह संक्रमन चुहान करि,
वाटैदै३ वलाप चक्र पत्तन करायोहै ॥
पड़िवा१ वलछ्छ काव्य बासर बहुरि राम२०३१४,
ग्राम कमलारनैं४ सु शिविर सुहायोहै ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

बलानाथ अथ पुव्व सम, करि इम कुच्च मुकाम ॥
नवमी९ पुष्प तड़ाग निस, समुचित कियउ स्वधाम ॥ २६ ॥
लीलीनामक दूरवा, चउदसि १४ दिन चहुवान ॥
सिंहअंत सिरदारके, उपवन किय थुल आन ॥ २७ ॥
राध२ आम सित१ दोजि२ दिन, वैलैंज उदीचि विसाइ ॥
मग्गराज छतकमहल, हुव दाखिल हरखाइ ॥ २८ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे अष्टादशोमयूखः ॥१८

॥ दोहा ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सिविर लार्ड आगम सुनत, जीवनलाल जनेस ॥
सोदर अमृतलाल सह, अभिमुख भेजिय एस ॥ १ ॥
सम्मुहजाइ रु लार्ड सन, मिलि करि इन मनुहारि ॥
सिविर द्वार लग तस समुह, प्रभु पुनि अप्प पधारि ॥ २

(पद्धतिका)

कर सीस परस्पर करि मिलाइ, अधिराज सभा सह लार्ड ।
विष्टर सु लार्ड राजत बिठाइ, उपवेसन बाम सु अप्प पाइ ॥ ३
प्रभु हेठ बैठि पट्टप कुमार, अर्जुन लि३ बंधु बैठे उदार ॥
तदनंतर बैठिय सुभट सत्थ, पुनि सम्मुह जीवनलाल पत्थ ॥

लघु तास सहोदर अमतलाल, मंत्र रु रहस्य याविनि कमाल ॥
तातर वकील तस जानि नात, पहु आस अप्प दिस सर्व पात॥५॥
अरु काल उचित संलापि उदंत, करटी१ तुरंग२ लंचा करंत ॥
सिरुपाव पंच५ तखती समान, बहु प्रीति निवेदिय चाहुवान ॥६॥
पहु बहुरि समप्पि रु अतर पान, पहुँचान किपउ जिम पुब्ब आन
चढितुरग यान साहब चचार, अवनीसिन इतरन थुल्ल उदार ॥७॥

॥

॥ ८ ॥

॥

॥ ९ ॥

लै सिक्ख प्रभू इम करि मिलाप, अतिप्रीति करोलीपुर अवाप ॥
दसदिवस रहि रु चल्लिय दिवान, प्रविसे बुन्दीपुर हड्डभान ॥१०॥
नभ नयन नंद महि१९२०साक मान, कन्या सु भद्रकुमरी सुजान
जिहिं कहत भुजिष्या जठरजात,अरु ब्रध्नकुमारि भौजिष्यभ्रात११
ज्ञानसाह दुर्गापुरप जात, करग्रहन दुहुँ२न इक१ दिन करात ॥
सहमास ९ द्वादसी १२ सोमवार २, इहिं लग्न दु २ बर आइय उदार ॥ १२ ॥
रजनी बहोरि इक१ पहर जात, दुल्लह दुव२ तोरन उपरि आत ॥
करि कसाघात अंदर अवाप, तहँ बेदरीति तनया ददाप ॥ १३ ॥
खतेस जोधपुर ईस पुत्त, सिरदारासिंह सुभ गुनन जुत्त ॥
देय ब्रध्नकुमरि ताकों उदार,किय भीम२०३दान कन्या कुमार१४
रसोर लाल सुत पुनि प्रताप, कन्या सु भद्रकुमरी ददाप ॥
न्मथ तिथी१३ सु गोरन जिमाइ, पुनि रक्खिय कति दिन प्रीति पाइ ॥ १५ ॥
ायज सम दुव२ हित पुनि समप्पि, सोदर जामाता सीख अप्पि॥

करि कुंच जन्य सह मुद अमाप, दुलह स्वसद्म मरुधर अवाप॥१६
अर्जुन१ गोवर्द्धन२ जगन्नाथ३, ब्याहे सु जोधपुर इक्क साथ॥
तपमास असित षष्ठी६रसेस, सद्दिय सु लग्न इन विधि असेस१७
अधिराज सुनहु पुनि हुव उदंत, फग्गुन सित नवमी९ बुध मिलंत
मतिमान भीम२०३ पट्टप कुमार, महती कुमरानी गद ममार॥१८॥
मधु१ मास चउद्दसि१४ पुनि वदात, विग्रह स्वरूपलतिका विहात
ससि नयन नंदभु१९२१लगत साल,आगत अजंटसाहब उताल१९
सो पोलपाट इहिं नाम ख्यात, प्रभु तास रीति मेलन करात॥
करि अतर दान सतकार किन्न,पटगृहपधारि तस सीख दिन्न२०
हुव नयन नंद ससि१९२२अब्द आत, सहमास९चतुर्थी४दिवसपात
कासीहु करन जात्रा जनेस, पटगेह प्रीति सहकिय प्रवेस॥२१॥
लिय सत्थ भीम२०४पट्टप कुमार, भौजिष्य जगन्नाथहि उदार॥
पटरागिनि लिय पुनिप्रीतिहारि,पुनि बुरजसिकारहिँरहि पधारि२२
तैपाऽसित तेरसि१३दिन दिवान,प्रभु अप्प२०३सबाहिनिकरिपयान
दुवलान दंग दिय पहु मुकाम, दूजा२सु नयनपुर दिय विस्राम२३
विश्राम समीधी तिम तृतीय३, किय पुनि मुकाम चोरू तुरीय॥
इमकरत मुकामन अधिपआप२०२,प्रतिमुद प्रयागनगरी अवाप२४
अनलांवकअतिधृति१९२३लगत साल,मनु१मास असित ९ :र[illegible]
थि१३ नृपाल॥

वलि हड्ड भानु आंगिरस५वार, उड्डीसपुरी बेसिय उदार॥२५॥
निर्वाहि वेदविधि कियउ न्हान, दिय इक्क पंचाशत५१ पुहविदान
नागोध राघवेन्द्रहि समत्थ, किय भीम२०४कुमर सम्बंध तत्थ२६
अरु जगन्नाथ भौजिष्य एम, पुनि वीरसिंह कापरानि तेम॥
करि तिलक बहुरि दै नालिकेर,सित सुक्र दसमि१०दै लग्न फेर२७
नागोध गमन किय राघविंद, चंक्रमन कियउ पुनि हड्डइंद॥

नागोध नवमि९ पगगृह पधारि, भेजिय उन मेवन हित बढारि॥२८॥
सित सुक्र दसमि पुनि सुक्रवार, साढिय सु लग्न पट्टप कुमार॥
बलि वीरसिंह तस२०४०याहि साथ,करग्रहन भिन्न किय जगन्नाथ
इनमाँहिं राघवेन्द्राभिधान, कन्या स्वकीय दुव२ भीम२०४ दान॥
सो सुरजभानु कुमरी गरीय, दिय तेजभानुकुमरी द्वितीय३ ॥३०॥
सुचि४असित२त्रयोदशि१३आरवार३,—तकुन ग्रामठक्कुरउदार २०३
हरवंशराय तनया सु आहि, सुभ नाथकुमारि प्रभु अप्प०पाहि३१
सुचि४सुक्ल१पंचमी५सुक्रवार६, करि कुंच सिंहपुर रहि उदार२०३
इम चलत मुकामनकरत आप, हिंडोन हट्ट अधिपति२०३अवाप३२
महिपाल करोली मदनपाल, उत्तम जन भेजिय तहँ उताल॥
सो जानि सभा करि लिय बुलाइ, आहूत मलुकपालादि आइ।३३।
गौरव प्रभु मुजरा करत दिन्न, करि नजर निछावरि अरज किन्न
जयमदनमोहन–जन स्वकीय,कहि करहु सदन सुभ अस्मदीय३४
कर उत्तमांग करि अधिप आप,दृढ क्रमन अक्खिसीख सु दवाप॥
प्रोष्टा६ऽर्जुन नवमी९करि प्रयान,विश्राम वरोदहि दिय दिवान।३५।
चंक्रमन करि रु दशमी१०चुहान, इक१ -- करोलीतें दिवान॥
अहिफेन बेल राहि लिय नृपाल, प्रभु सम्मुह आगत मदनपाल३६
मिलि करि रु परस्पर हत्थ मत्थ, उत्तरन बहुरि हुव दुव२हितत्थ॥
मिलि दुव२हि बच्छतें उर मिलाइ,उपवेसन किय घटि अद्धपाइ३७
अधिराज प्रीति सह पुनिआभिन्न, नालकिं उपवेसन इक्क१किन्न॥
अरु मिलि दुरसेन मुदजुत अमाप,वसनोक करोली दुव२अमाप३८
तहँ घटी इक्क१ राहि पुनि उताल, पुरप्रति किय जावन मदनपाल॥
रहि दिवस तिथी१५ तहँ हट्ट राम२०३, कुरगाम नाम बालि किय
मुकाम॥ ३९॥
इम करत कुच्च प्रभु पुनि मुकाम, जनपति बुन्दीपुर आजगाम॥

कोटेस राम २१२ इहिं१९२३ साक माँहिं, अरु राध२ चउद्दसि १४ सुक्ल आँहिं ॥ ४० ॥
महिपाल सोहु कछु गद ममार, तस पट्ट पंचसिख सुदत धार ॥
सो सत्रुसल्प२१३इहिं नामख्यात,सुभ दिन भद्रासन तिलकपात४
साहब सुहृदत ईडन सनाम, कोटेस२१३ हिं टीका दैन काम ॥
आगतइह जावत तहँ उताल,कियक्रमन तास अभिमुख कृपाल४२
सल्लाप भ०प सय करि रु सीस, आगमन ससाहब किय - ...
पुनि सिंहचतुष्पथ प्रीति पाइ, दै सिक्ख तासप्रासाद जाइ ॥ ४३ ।
आरामरत्नसाहब अवाप, अंसुकगृहसाहब जाइआप२०३ ॥
उपवेसन खुरासिन किपउजास,समयाल्प रहि रु दै सिक्खतास४
अधिराज किपउ प्रासाद आन, साहब किय कोटा दंग जान ॥
माघा११ऽर्जुन एकादसि११मित्तंत,मथुराहुवभ्राता भोम२०३अंत५

इतिश्रीवंशभास्करे   एकोनविंशो मयूखः ॥ १९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

सक विक्रम जिन नंद ससि १९२४, अमा३०रु चैत्र अनेह
भोमसिंह२०३भ्रातृज भुवप२०३, आइ विश्वेश्वर२०४एह॥१
काढि दिवस आराम कति, प्रभुके लग्गिय पाय ॥
तवहि स्वकर सिर फेरि तस, लिन्नों क्रोड़ लगाइ ॥ २ ॥

॥मनोहरम्॥

विश्वेश्वर२०४।१सिहकों विसासि रु अधिप आप२०३,
प्रत्यह कराये वेद४ नाश्राक असनकों ॥
राखी कछु भिन्न पुव्व रीति सु महर करि,
पुव्व जो हवेली सोहु तास२०४ दै रहनकों ॥
व्याकरन आदि शास्त्र अध्यापक मेल्हि बलि,

दिनप्रति दूनी करि बुद्धिहु मननकों ॥
बहुरि नागोध द्रंग करिकैं विवाह ताकों,
नयो ग्राम नाम राम२०३ बाम दै बसनकों ॥ ३ ॥
मास नभ५ धवल१ चउदसि१४ रु आर३ वार,
दुर्गापुरी ईस संभूसिंह२० अवसानभो ॥
आतमजहू ताको ओंकारसिंह२० पट्टपति व्है,
गोरवादि काज प्रभु राम२०३तहँ जानभो ॥
बिहित बिधान पुब्ब होजो प्रभु ताको तास,
सो सब ओंकार२० सिंहको ब प्रभुदानभो ॥
सस्त्र१ अरु सास्त्र२ तास२० अध्ययन सासन दै,
बुन्दीपुर राम२०३ को प्रवेसन बिधानभो ॥ ४ ॥
प्रौष्ठाद्धसित नवमी९ दिवाकर उदय होत,
लच्छी प्रातिहारी जनी धीदा प्रसवकाल ॥
अंकक१ दिवस सोहुरहिकैं ग्रतासु भई,
सौवास्तिक ताको कर्म कारक भो नृपाल ॥
अष्टमी८ नभस्य६ सित बहुरि सु व्यवहार,
नाम रसरंग जो भुजिष्या कियउ काल ॥
साहब जु रूसइस७ बुन्दिय अजंट आत,
रामप्रभु ताको संमेलन कियउ ताल ॥ ५ ॥
भूत द्रुव अंक ससि१९२५सुचि४ सुचि मास केर,
एकादशी११ आर३ बेद४ नाड़ी दिवस आत ॥
मिश्रन कवींद्र रविमल्ल बहु आमयतैं,
बुन्दीद्रंग माँहिं प्रभु निर्जरनैर पात ॥
सो सुनि अनंत शोक करिकैं नरेंद्र आप,
स्नानकरि अनल अंजली दियउ तात ॥

तास पुत्र अगुन मुरारिदान नामककों,
अभ्युत्थान आदि दे विसासि हित दिखात ॥ ६ ॥
भाद्र६सित पर्व६ सदानंद जो भुजिष्या भूप२०३,
जगन्नाथ जननी पंचत्वपन पातभो ॥
सहा१सित२ पक्ख दोजि२ उपरि तृतीया३ आत,
सोमवार२रत्ति सत्त७ नाडीकों विहातभो ॥
पट्टप कुमार भीमसिंह२०४।१हूके स्वर्ग जात,
हाहारव बुन्दी घरघरहि दिखातभो ॥
ताको दाहकर्महु पुरोधातैं करायपुनि,
———कति अधिक कुमारन करातभो॥ ७ ॥
संवत तर्क द्रुव अतिधृति१९२६ समय होत,
स्वर्ग नभ५ भूप गो करोली मदनपाल ॥
नवमी९ नभस्य६ सित१ वहुरि अमात्य आप२०३,
वहुरा गतासु भयो जीवन अंतलाल ॥
सो सुनि नरेन्द्र आप२०३चंदनकों खंड इक१,
देकैं प्रेतवनकों पठायो चर उताल ॥
सासनानुसारि प्रभु२०।३ सोहू तहँ जाइ पुनि,
उज्झिय सकल सो कापालिक क्रियाकाल ॥८॥
प्रातिपदि१ आरवार३ आश्विन७ असित२ आत,
लघ्वी प्रतिहारी प्रात होत जन्यो श्रीकुमार ॥
ताको जातकर्म वेदविधितैं सधाइ पुनि,
आव्हय ताको रघुवीरसिंह२०४।३ भो उदार२०३ ॥
सार आढ्य रंकनकौं कारिकैं वहोरि आप२०३,
जाचकन अत्थहू दिवायो वसु अपार ॥
भूसुर गणप अभिरूपजनहूकों बोलि,

स्वापतेय१ बसन२ निवाजे तैं धर्मधार ॥ ९ ॥
मार्गशीर्ष९ मासहू द्वितीया२ सित पक्ख होत,
साहब वृहत अजंट सह बुंदी आइ ॥
वृहत किटिंग इहिं नामक के सम्मुहकों,
गाम जोधसागरके संनिधि प्रभू जाइ ॥
तुरग बिहाइ रु विछ्रातके उपरि आत,
सीसकरि पानि परस्पर हित दिखाइ ॥
आरुहि सु अश्व किय कमन वरव्वरतैं,
आइ पू बुंदी सिंहचत्वर बहुरि पाइ ॥ १० ॥
साहब सिबिर गयो मानिकसुचोकमांहिं,
राजराज राम२०३अप्प प्रासादन पातभो ॥
बहुरि तृतीया३ सोमवासर२ किटिंग आत,
गोपुर बलवंत रट्ठऊर भिजातभो ॥
हत्थीपोल उत्तरि सु अंदर प्रबेस कियो,
अपाश्रय महल छत्र सन्निधि जातभो ॥
जाइ तहँ सम्मुह मिलाइ कर सीस करि,
मेवर अजंट सह संसदहि आतभो ॥ ११ ॥
बेला अल्प राखि दुवर अतर रु पान करि,
सिक्ख दै प्रथम रीति किय पहुंचानकों ॥
अंसुकसदन तास बहुरि पधारि आप२०३,
सम्मुह किटिंग पद पंच५ किय आनकों ॥
अवसर अल्प राखि करिकैं समय वृत्त,
अतर किटिंग पुनि दियउ दिवानकों ॥
दैकैं सिक्ख ताहि ख्वोवसीयस बचन भाखि,
राजराज राम२०३ निज धाम किय आनकों ॥ १२ ॥

सत दुव अंक ससि१ बाहुल८ अमावसि३०कों,
गोन अजमेर किय लार्डहि मिलनकों ॥
करत मुकाम कुच्च हुत अजमेर जाइ,
लार्ड मिलि गोन किय पुष्कर सवनकों ॥
न्हाइ तहाँ जाइ वेदविधितैं सधाइ पुनि,
भोजन जिमावहु भूसुरजननकों ॥
पंचसत५०० नाणक अनेकप दिवाये दान,
आपे पुर बुंदी अप्प बंटि बहु धनकों ॥ १३ ॥
अहि दुव अंक इक१९२८ विक्रम नरेन्द्र सक,
अधवल्ल तपस्य१२ द्वादसी१०हू सौम्यवार२ ॥
सत्त७ पल अमल निशीथके उपरि आत,
रानी प्रातिहारी जन्यो लघ्वी लघु कुमार ॥
जात१ नाम२ कर्म वेदविधितैं सधाइ तास,
रंगराजसिंह२०४४ नाम मंजुल भो उदार ॥
चारन१ रु भट्ट२ आदि दैन सब जाचककों,
राज राज राम२०३ दयो वसु कति हजार ॥ १४ ॥
नंद दुव अंक भू १९२९ समा रु सुचि६ मास माँहि,
वीकानेर भूप सरदारसिंह कालभो ॥
ताके वंधुगनमें डुंगरसिंह नाम हुतो,
सोहू पट्ट पंचसिख पाइकैं भुवालभो ॥
पुरिगाम१५ दिवसतप ११ जोधपुर भूपतिहू,
स्वर्ग तखतेस जात रानिन विहालभो ॥
पट्टप कुमार जसवंतसिंह पूरवहू,
राजकारि कज्ज पिता अंतर नृपाल भो ॥ १५ ॥
नभ गुन अंक इक१९३० बाहुल८असुचि पक्ख,

सप्तमि७ सु बहुरि दिवाकर१ वारपात ॥
साहब वृहत पेली१ बर्कली अजंटा दुव२,
आवत नयर बुंदी द्रुतही सु प्रभात ॥
सम्मुह गमन आदि मेलन सु पुव्ब जिम,
करि तस गेहपट जाइ हित दिखात ॥
महलन प्रवेस किय दैकैं सु सिक्ख तास,
साइब वृहत अजंट सह कोटै जात ॥ १६ ॥
बाहुल८ धवल१ तिथी हरि१२ हरिवार होत,
पट्टनिपुरीकों प्रभुराम२०३ किय पयान॥
ग्राम रहि ठिक्करे बहोरि तिथि मार१३ सौम्य४,
पट्टनि सिविरको प्रवेसितभो दिवान२०३।४ ॥
राका उपराग बलि केसव दरश करि,
बिहित बिधान करि बेद सु न्हान दान ॥
सार्द्धमासइक१॥ तहँ रहिकैं बहुरि आप२०३।४,
राजराज राम२०३।४ नैर बुंदी कियउ आन ॥ १७ ॥
इक्क गुन अंक भू १९३१ समान सक विक्रमके,
फग्गुन चतुर्थी४ श्वेत जीव५दिन पायोहै ॥
महाराज आदिक कुमार रघुराजसिंह२०४।५।३,
रजनी पहर१ गये उद्भव दिखायोहै ॥
लक्खन लुटाइ द्रव्य भूसुर रु रंकनकों,
जातक-वैदिक विधान बनवायोहै ॥
राम२०३।४ नरनाह सब देसनके जच्चनकों,
इच्छामित स्वापतेय अमित दिखायोहै ॥ १८ ॥
रस गुन अंक ससि १९३६ संवत बहुरि होत,
अष्टमी८ अनेहाऽसित सुक्र३ अपनायोहै ॥

इक१ पल छप्पन५६।१ घटीके इष्ट लच्छी अंस,
लक्ष्मण।।२०४१६ कुमारहूको जनन जनायोहै ॥
नव गुन अंक इक १९३९ हायन नवीन होत,
सावन प्रथम मास विसद सुहायोहै ॥
चढत दिवाप तीन३ घटिकाहू पंच५ पल,
रघुवरसिंह२०४१७ जन्म चउद्दसि१४ पायोहै ॥ १९ ॥
उक्त सक १९३९ हीमें जसवंत भूप जोधपुर,
पुत्री तखतेसकी स्वभगिनी भनाईहै ॥
असित तृतीया३ माघ११ का०प११ दिन लग्नकाल,
कुमारी सौभाग्य रघुवीर२०४१३।१सिंह पाईहै ॥
रंगराजसिंह२०४१४।२ लघु सोदर बहुरि व्याही,
सूरज कुमरि चोथि४ जोरावर जाईहै ॥
उक्त तिथि४हूमें सिंहमुहुव्वत पुत्री बल,
दि०प देवकुमरी रघुराज२०४१५।३ हित दाईहै ॥ २० ॥
वावाता कुमार तखतेसको जवानसिंह,
पुत्रिका समर्थ नाम कुमरी कहाई है ॥
माघा5११सित२ चोथि४ मंद७ वासरहू लग्नकाल,
जगन्नाथ पुत्र हरिनाथहित दाईहै ॥
करि उपयाम तत्थ रहिकैं कितेक दिन,
दुहुँ२दिस प्रीति रीति परम दिखाईहै ॥
महारावराजा श्री दिवान रामसिंह२०३१४ बलि,
आइकैं प्रवेसि बुंदी नगर बधाईहै ॥ २१ ॥
गोपुर चोगान बनायो सत्रुसाल१९५ तास,
गोपुर१ बनायो वाम संनिधि अप्प राम२०३।४ ॥
तोरन प्रासाद जोव बज्जत हजारी द्वार,
ताके सन्निकर्ष त्रिद्वारिका२ बनाई बाम ॥

तास अग्ग अंदर बनायो इक द्वार गेह३,
अंतिक बनाई तास बिद्वारि४ बंब काम ॥
मोतीकूप निकट बनाईहू तिबारी५ पुनि,
तामैं विष्णुस्वामीकाति रहत अठ्ठ जाम ॥ २२ ॥
न्याय६ मुल्क७ नामक कचहरी द्वै२ बनाई पुनि,
मंदुरा८ सुखम बनाई भीमकुंड पास ॥
मंदुरा९ द्वितीय२ कोंन नैर्ऋत बनाइ प्रभु,
अज्जहू बजत सोनपाइगाँ९ नाम तास ॥
छत्रमहल माँहिं जलजंत्र१० अरु होद११इक,
त्रिद्वारी१२ भई पुष्पगो रखन वितर्दी जास ॥
दूदा१९२१के महलहूतैं द्वार लग बाह्य दुर्ग,
खुरा१३ किय तातैं मर्त्य जावत अनायास ॥ २३ ॥

दोहा—तोरन१४ अरु त्रिद्वारिका१५, मंगल द्वार समीप ॥
जीवरखा दूजेहु इक, महल१६ जु कियो महीप२०३१४॥२
बज्जत चामुंडा बलज, तास बाह्य त्रिद्वारि१७ ॥
प्रभु भंडारन सहित पुनि, क्रमन राम२०३१४ प्रभु कारि॥२
बायुकोंन उड्डुदुर्गतैं, स्वापतेय सरसाइ ॥
देवी चामुंडा सदन१८, बलानाथ२०३१४ बनवाइ ॥ २६ ॥
कौतुक मृगया कज्ज बलि, तुंग१९ रचिय अति बाम ॥
बहुरि पुष्पसागर बली, रचिय मल्ल२० अभिराम ॥ २७ ॥
कुंड२१ इक्क१ ताके निकट, मध्य जु छत्री पाइ ॥
सागर पुष्पतड़ाग तट, केतक बाटि कराइ ॥ २८ ॥
बालागढ किल्लादि बलि, इतर जु थान उदार ॥
जँहँ जँहँ अंशित भो तहां, किय जीरन उद्धार ॥ २९ ॥

ते श्री वंशभास्करे त्रिंशोमयूखः ॥३०॥

इतिश्रीवंशभास्करनामको ग्रन्थः समाप्तः ॥

॥ श्री ॥

बुधसिंह चरित्रका शुद्धिपत्र

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३	सब ही का उत्कंठा	सब ही की उत्कंठा
४	ज्यों का त्यों	ज्यों की त्यों
२०	चिंता चिंता	चिंता चिंता
१८	ताके वशमें	ताके वंशमें
२०	बुधसिंह को	बुधसिंह के
२७	ताको तनया	ताकी तनया
१०	अप्पनौं अत्थ	अप्पनौं सत्थ
२१	सोही फठीरव	सोही कंठीरव
४	मेर खट ६	फेर खट १
२४	अग्गर आगरा	अग्गरा आगरा
२५	अम अमावास्या	अमा अमावास्या
११	ढकिठ्ठो	धकिठ्ठो
१३	अवसानयो रतयो	अवसानयो रंतयो
२७	मिलकर	मिलाकर
१७	आलमके च्यारि ४	आलमके ए च्यारि ४
६	हकधारि	धकधारि
६	घटी हुव	घटी हुव
५	पक्खर तीन	पक्खर जीन
३	घुग्घर नट्ट	घुग्घुर नद्द
,,	भेक कि भट्ट	भेक कि भद्द
८	उमंगन	उमंगत
१५	नग्गरों	नगारों
१	रनएह	रनराह
२२	तुगऊंची	तुंगऊंषी
२२	हजार.	हजारों
२	वढियीषिंन	वढि बीचिन
६	वढि घूम	वढि धूम
	राजिहि रंग	ए जिहि रंग
२१	माणिक्य	माणिक्य
११	प्रछन्न नय	प्रछन्नगय
११	दढ़िारव-	दीदारव-
	[illegible] अनीक	मध्यो अनीक

२१७८	२५	कधबंधतैं	कंधबंधतैं
२१७९	२५	श्रंगाली	शृंगाली
२१८०	३	अग्गिश्रकी	अग्गिकी
२१८१	७	सेरघटा	सेनघटा
”	२७	मडलाकार	मंडलाकार
२१८२	१८	फिफ लोके	फिफ्फ लोके
”	२१	धनी भीर	घनी भीर
२१८३	२४	पट्ट मतगज	पट्ट मतंगज
२१८५	६	बाहक महत	बाहकमहत
”	”	बहत उछाहक	महत उछाहक
”	७	तिततेसजव	तित तित सजव
२१८६	३	तान मंडन	तान मंडत
”	१२	जालम जन्यों	जालम जम्यों
२१८८	५	कोच कढैं	कोच कटैं
”	११	तननकत	तननंकत
२१९३	५	मंडलकेरि	मंडल फेरि
२९९५	१७	इहिंतर	इहिं अंतर
२९९९	३	बलीतैंरषी	बलीतैंराषी
३०००	६	पाये केवल छत	पायो केवल छत
३०१०	२५	पिता को	पिता के
३०१२	२६	हर्ष के साथ भेजो	हर्ष के साथ भोगो
३०१३	२१	समान आनकर	समान मानकर
३०१९	२४	मरापुत्र	मेरा पुत्र
३०२४	१३	महराणा सैन्य सहाय	महाराणा सैन्य सहाय
३०२५	९	प्रबुद्ध	प्रबुद्ध
”	०	वाहि सुद्धपन	चाहि सुद्धपन
३०२६	६	जेतसिंह	जैतसिंह
३०२८	१७	सादर सुच न	सोदर सुच न
३०३१	१२	सतपंच५०० तामभीर	सतपंच५०० तोपभरि
३०३३	२	डगतारा	दृगतारा
३०४४	८	पातनचम्मलि	पोतनचम्मलि
”	२९	और आ आदि से	और आदि से
३०४६	२०	तह संध	हतसंध

	२९	क्राधसे	क्रोध से
	४	भाईहनँ	भाईहनें
	२	पच्छा अप्पिय	पच्छो अप्पिय
	२६	चीताड़के राव थे	चीतोड़के उमराव थे
	७	सुपचीगीतः	सुपच्चो गीतः
	२३	घाटा में	घटा में
	२१	सेनाकों को	सेनाओं को
	८	कटोपतिप्रति	कोटापति प्रति
	१६	सुपकी किरणों को	सूर्य की किरणों को
	५	निज भपति	निजभूपति
	२४	भानजी की	भानजे की
	१७	भुज्जहिं कल	भुज्जहिं किल
	१९	वहां जग्रो	वहां जाओ
	५	अप्पजा दिद्धा	अप्पजा दिद्धी
	११	स्वामिधर्म संगलै	स्वामिधर्म सीसलै
	२९	देवयज्ञ कलहाता है	देवयज्ञ कहलाता है
	११	धारनमें धरयो	धारन में धस्यो
३	२५	बुरे स्वभाववाला	बुरे स्वभाववाली
१	२०	पुनारामपु लेखन	पुना रामपुरलेखन
३	१४	भ्रात जाहि	भ्रातृजहि
६	२१	ज्योतिपियों में	ज्योतिष में
१६	२३	चाहना मिटाते हैं	चाहना मिटाती हैं
१	७	काल मचैं	काल नचैं
”	२१	योगिनियों का	योगिनियों के
”	२२	घोड़ों का	घोड़ों के
”	२८	खानेवालों का	खानेवालों के
५७	११	कुापयकैं	कुपायकैं
	२८	(खरणी)	(खेरणी)
६१	२९	तेरती है सो	तिरती है सो
६५	२०	हडों के शस्त्र	हाडों के शस्त्र
६८	१५	शत्रुओं के ठोक कर	शत्रुओं को ठोककर
७४	२४	और वैश्या	और वेश्या
७६	११	वीर रु रउद	वीर रु रउद्र
७७	२१	घूमके नाच से	घूमर के नाच से

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८०	१९	झंपि बरकैं	झंपि फरकैं
१८१	२७	पुरकती है	फुरकती है
१८५	२१	देवसिंह के	देवसिंह का
१८८	२४	साहयता के	सहायता के
१९४	१०	गहिमांहि	गहि बांहि
१९७	९	जाबहु	जावहु
,,	१५	रत	वत
२००	२६	खैंचती हुआ	खैंचता हुआ
२०१	२२	संग्रामसिंहको	संग्रामसिंहका
,,	,,	दुर्जनशालका	दुर्जनशालको
२०३	१०	नसे हौ	नसैहौ
२१२	१४	भजहु	भेजहु

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२७४	२१	मुरगे वाले	मुरगे बोले
,,	२६	७ शख	७ शंख
१२७६	१४	अंक सत्रह	अंक सत्र
,,	१७	धम धारनी	धूम धोर
१२७७	२१	विनाविजला	किनाविज
१२७९	३	मुकल्या	मुकल्यो
१२८१	२०	तखत खान	तखतरवा
,,	२१	उतरा तब	उतरा तब
,,		तख्त खापर	तख्तरवा
१२८२	१	भलीफल	भलो फर
१२८३	१५	उद्घोस	उद्घोष
१२८८	२४	कुलावंतस	कुलावतं
२१३	२	बससैन	सघ सैन
२१४	५	राम संग्राम	रान संग्राम
२१८	२१	अधर्मी	अधर्मी
२२२	२५	वाघसिंह पुत्र था	वाघसिंह का पुत्र था
,,	२३	करलेवाल था	करनेवाला था
२२५	२५	रहन तक का	रहने तक का
२३५	१०	बधावनलाड	बधावनलाड़
२४४	१	कालिया देवि	कालिका देवि
२४८	२१	मन साथ	मन के साथ
२५०	१६	महाराणा जयसिंह	महाराजा जयसिंह
२५१	२२	जीम अक्षर ऐसा होता है	जीम अक्षर बडे पेटवाला होता
२५१	२२	नरवर के राजा और कोटा के महाराव गजसिंह सहित	नरवर के राजा गजसिंह सहि
२५८	२१	कंलीजखां का	कलीजखां का
२५८	२३	खांनदारा को	खांनदोरां को
२६४	३	पखर जरजीन	पखरे जरजीन
,,	२८	चपलते हैं	चमकते हैं
२६८	७	लंबसिखी	लंबसिखा
२७०	२१	नादरशाह को	किसीको
२७३	१	न नाँकै है	न नाँकै है
२७४	२१	कलही हमस	कलही तुम से

उम्मेदसिंहचरित्र का शुद्धिपत्र

—*०*—

३२९१	२१	*छाटी	*छोटी
३२९४	३	तघ अयो	तवआयो
३२९५	१७	आभपेक	अभिषेक
३३०१	१५	अच्छे फिरहु	पच्छे फिरहु
,,	२३	४यगतसिंह	६यखतसिंह
३३१०	१४	दूजावेर	दूजीवेर
,,	१९	खग्गनको	खग्गनकी
३३१६	२२	नेतादेकर	न्योतादेकर
३३२०	१७	दमहुव	हमहुव
३३२३	२३	जनानमें	जनान में
,,	२६	१५देकड़े	१५दोकड़े
३३२७	२१	सेदाका	सेनाकी
३३२९	९	पन्नगकी ७फ़नमाल	७पन्नगकी फनमाल
,,	२०	शेपनागका	शेषनागकी
,,	२२	चलक कर'	लचकर
३३३१	२०	दोनोंआर	दोनों ओर
३३३२	२२	उसके अग्निसे	उस अग्नि से
३३३६	१९	अराहि	अरोहि
३३३७	२२	जुद्ध जीतनवाले	जुद्ध जीतनेवाले
३३४७	१०	सुलभ लाट	सुभ ललाट
,,	२२	(लक्खा)	(लक्खी)
,,	२४	रगवाले	रंगवाले
३३४९	११	चाहये	चाहिये
,,	२५	दानों फानों के	दोनों कानों के
३३५१	१८	मलगमें	मलंग में
,,	१९	सचेआर	सचेओर
३३५४	१७	शत्रुशाल	दुर्जनशाल
३३५८	१७	अथवा राज	अथवा राल
३३६२	२५	जघा कहते हैं	जंघा कहते हैं.
३३६५	७	अव घन	अवै घन
३३७६	२२	दत्तीण में	दत्तिण में
३३८४	१०	चकि	चुकि
..	२४	भूमिका	भमिका

३३८४	२६	पड़ना जनाकर	पड़ना जानकर
३३८५	१	लैनाकिय	लैनकिये
,,	२७	तिरान	तिरानवे
३३८७	२४	७पुत्रीकी	पुत्रीको
३३९४	२	आपरू	आयरू
३३९७	११	चुरल	गुरैल
३३९९	१९	उधरदादर	उधर दादुर
३४००	२४	और इधर १०,	और उधर १०,
३४०२	५	जग्गे अद्रिन	लग्गी अद्रिन
,,	२९	भखेको निकालो	भूखेको निकालो
३४०५	३	हेति बढाया	हेतिघटाया
,,	२३	हूरोंक	हूरोंके
३४०६	२२	अप्सराओंकी छातीपर परतलेलगे	अप्सराओंकीछाती पर हारऔ र वीरों की छाती पर परतलेलगे
,,	२४	नाकैंफुलाये	नाकफुलाय
,,	२५	कानों में	कानोंक
३४०७	६	सुराग	सुराग
३४११	१६	निंदासुनन	निंदा सुनत
,,	२५	तबसे नीचेकी	तब नीचेकी
३४१३	२१	अमरस	अमरसु
३४१४	२७	आदि स	आदि से
३४१५	१९	९आकाश में	९आरंभ होके आकाश में
३४१६		आडाबाढ बजा	आडाबाढ बजा अथवा ढाढाश्र की तरवारोंका ढालोंपरबाढब
३४१७	९	पासतुसार	पोसतुसार
३४२७	१९	दचक्खे हैं	दचकचे हैं
३४३०	२२	पैदल आर	पैदल और
,,	२३	१२ननीन	१२नवीन
पृष्ठकेअंक		३३४४	३४३४
३४३४	२०	काटमेखला	कटिमेखला
३४३६	१८	दियपत्त	दिवपत्त
३४३७	९	संगित सैन	संगिन सैन
,,	२४	खड्गका	खड्गकी
३४३९	८	कध्योकछु	कट्योकछु
३४५०	९	साजय	सजिय

३४५१	२१	मधुगढ में	मधुकरगढ में
३४६३	१३	विव घंटन	भिव घंटन
३४७३	१४	काकतैं चल	कालतैं चल
३४८०	७	सुहीमत्रि	सुहिमत्रि
३४८५	१	योंकहं	यों कहै
३४९१	३	आयहु	आवहु
,,	२३	निमंत्रित किये	निमंत्रित किये
३४९६	२४	ला डाल देते हैं	ला डालते हैं
३४९७	२२	कहवाहे रूपी	कछवाहे रूपी
,,	२१	जातवेद जोरि	जातवेद जोर
३४९८	३	धूम धीरनकी	धूम धोरनकी
,,	८	विजय वेद	विजय वेग
,,	२६	सब भर कचनार	सब कचनार
३५०४	१५	कटत करकी	कटन कीरकि
,,	२५	मर्ना जाती है	मानी जाती है
३५०७	१६	पचरंगे डंडे	पचरंग झंडे
३५०८	२१	डडती है	उडती है
३५१२	१४	फैलनेस	फैलने से
,,	,,	चंद्रमाक	चंद्रमा के
३५१६	३	उदयपुर	उदय पर
३५१७	१	काटिगय	कढिगय
,,	२५	पीलग के प्रहार से	पींजण के प्रहार से
३५२०	५	समसेर भार	समसेर भारैं
३५२१	२१	बलिदान को है	बलिदान को लेते हैं
३५२३	८	क्योंधन	कयोंधन
३५२६	५	जै नृपतिहू	जैपुर नृपहू
,,	१७	यहँरु	यह रु
,,	२६	निर्मय	निर्भय
३५२८	१०	जीवन अब	जावन अब
३५२९	१०	ईश्वरीसिंह	ईश्वरीसिंह
३५३०	१४	बुंदीन बिरुद	बंदीन बिरुद
,,	१८	अरध्यो	अरघ्यो
३५३१	१४	कर्म्मराज	कूर्म्मराज
३५३२	२८	तीनसो ३०६	तीनसो छै ३०६

३५३१ ११ रवायश्रसि खायश्रसि | ३७०६ ३ श्रयदता श्रवदात
३५४३ १६ जयपर जयपुर | ३७१२ ३ अंतर ननहू अंतर सुनहु
३५४६ १६ दिक्खनराहि दक्खिनराहि | ३७१४ १८समयमित्रके समयके मित्रमे
३५५५ ९ यश१ दम१ यश१श्ररुदम१ | ३७१५ २१ ६पुत्र ६ पुत्रअथवाभाई
३५५६ १४ चित्रकूट१ चित्रकूट१ | ३७२४ २७मटका कट मटकाकर
३५६१ १५ मदनसप्रीति मदन सप्रीति | ३७२९ १ लहिराशकछु लहि रोग कछु
३५६८ २४ लोगों का लोगोंकी | ३७३१ २४गोघूंदेकाराजा गोघूंदेकाराज
३५७० २६ श्यड़ेभाईको श्यडेभाईको | ३७३२ २१इच्छावाल इच्छावाले
३५७६ १ संग्रामवि-रसदि १ संग्रामविरसादि१ | ३७३७ १ पठवाये पठवाय
३५८१ १० के लग्गत कें लग्गत | ३७४० १५तिनमैं सुनी तिननैं सुनी
३५८७ २३ शुक्लपक्षको द्वितीय शुक्लपक्षको प्रथम | ३७४३ १०फिप्फ फलतैं फिप्फ फैलत
३६०५ १६ बैरतील बेरतीन | ,, १४महाजरका महाञ्करका
३६१० ४ द्विजदीनकी द्विजदीनके | ३७४६ १३चमउदेपुरकी चमूउदेपुरकी
३६१२ २१ ६ राजा ने विष खाया ६गलेमेंराजा नेविष खाया | ,, २६इसकारण इसप्रकार
३६१४ १० भत्तभयो मत्तभयो | ३७५१ १८भरतसिंह भारतसिंह
३६२६ १३ सब श्ररज तब श्ररज | ३७५५ १६०यय श्रैसी व्यय श्रैसो
३ ,, १६ तुम्हारेपिता तुम्हारे पिताने
३६४४ १४ फणों को धारण करनेवाला फणोंको नीचाकरके फूत्कारकरनेलगा
३६४३ ९ वाहवाह वाह वे वाह
३६४६ ८ पापी छकैं पापी छकैं
३६४९ १३ खेल्हे खेल्हैं
३६५० ३ मात तब माततव
३६६८ २५ राजावतविक्रमसिंहकेलिये राजावत विक्रमसिंह से लेकर
३६७३ २४ कुंभफलक कुंभकलस
३६८२ ६ तमंकेईल तमंकेइलैं
३६८४ २३ गिरतमार गिरतभार
,, ६८६ ५ सहन मार सहैनमार
३६९० ११ पोनछेहि पौनच्छैहि
३६९१ १७ क्रीड़ामें ऐम क्रीड़ामें ऐले
३६९९ ७ परतापतियन राजसिंह तियन
३७०५ १३ मड़ि मंत्रन मंडि मंत्रन

॥ अजितसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
३७६०	६	कहे देर	कहे देर	३७८२	११	प्राविस	प्रविसे
३७६२	३	बाधनवारेकीवहरि उदयभानुकुलधारिदोहा	दोहावाधनवारेकीवहरि उदयभानुकुलधारि	३७८२	१७	गजपारि	गजपोरि
३७६१	४	संखपं	शंगपँ	,,	१८	संतपञ्च	सतपञ्च
७६७३	११	गिरागकँ	गिरायकँ	,,	२५	देखोगे	देखूँगा
३७७१	१५	खेनगयो	खैनगये	३७८३	१	उद्रयो नहि	उद्वयो नहि
३७७१	१६	पमुदिम	प्रमुदित	३७८८	२१	[श्रंतर]	[अंतर]
३७७७	१९	नजरानिवादि	नजरनिवेदि	३७९६	११	वोभविष्याहं	वोभविष्यामहं
३७७९	११	हे अजमेरु	व्है अजमेरु	३७९८	२१	राजाका	रानाका
३७८०	३	मणापपुरभव	मणापपुरभूप	३८०३	१३	निजपतिमंगे	[illegible]

॥ विष्णुसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
३८१५	११	सन्ध्याहँपँ	सन्ध्यापँहँ	३९०८	१५	सिंचरित्रे	सिंहचरित्रे
३८१७	१०	कोटपति	कोटापति	३९१०	५	अमात्यरनैव	अमात्यरन[illegible]
३८२२	२१	अनियारा	उनियारा	३९११	२५	जनानसे	जनानासे
३८३३	१६	कीनोंही	कीनोंहो	३९१७	११	हेवसिंह	देवसिंह
३८३६	१	धारनही	धारैंनहीं	३९३१	२२	वर्मा१मास२	वर्मा१साम२
३८४०	१६	फपड़नाहै	पकड़ैनाहै	३९३५	९	सन्ततसंग	सततसंग
३८४१	७	कन्याजाम	कन्याजामैं	३९४४	१०	वधाइमैं	बधाईमैं
,,	११	मग्राहीसों	मगराहीसों	३९४७	२१	मिससे	दर्शनके मिससे
३८५२	२०	रणोपुर	रणोपूर	३९४८	२७	श्लाहोरमैं	[illegible]
३८६१	१३	रीतिघटी	रातिघटी	३९५७	१२	[illegible]	[illegible]
३८६७	११	साँफके	साँझहीके	,,	२६	विष्णुसिंहमे	[illegible]
३८७२	१	माहिंराखि	माँहिराखि	३९६५	६	टेकीलागे	टेकिलागे
३८७७	२३	२अलपुर	२अलवर	३९६६	६	शाहलमार्थं	
,,	२४	६अलपुर	६अलवर	३९७२	१२	बहुत्पां	बहुत्यों
३८८०	१०	कहाइ	कहाँई	,,	१६	नारिनकाँ	नारिनकों
,,	१४	मुरायसो	मुरायथो	३९७१	८	निचोरिडारि	निचोरि[illegible]
३८८४	२०	मराहुआ जाना	मराहुआजानो	३९८०	६	भाकव	धूंकल
३८९२	११	फाराजल	फीरोजलां	३९८६	१०	पापदर्पपर	पायदर्पपर
३८९३	१६	माताका	माताकामरना	४००७	५	आदिक९	आहिक
३९००	२३	नायरूपी	नायकको	४०१४	१२	वपदसादि	उपदंसादि
३९०३	९	तपहीं	तपहि	४०१६	२१	अक्तरलोनी	अकटरलोनं

॥ रामसिंहचरित्रका शुद्धिपत्र ॥

४०४३	१	प्रसिद्धक्रिया	प्रसिद्ध क्रिया	४१६०	४	जवओघ	जवओघ
,,	३१	भस्मीभूतस्य	भस्मीभूतस्य	४१९४	१४	राचिरप्रकाश	रोचिरप्रकाश
४०४५	२१	आकारवले	आकारवाले	४१९७	२१	समतिदेखकर	संमतिदेखकर
४०५७	१०	दसम१०माँहिं	दसन१०माँहिं	४१९८	४	‡वै	‡वै
४०६४	३	विधिएह	बिधिराह	४२००	५	दुकुल	दुकूल
४०६७	२९	सधि के	संधि के	४२०६	१६	मांडा के लोग	मांढा के लोग
४०७०	१४	ताँहँ४	तँहाँ४	४२०६	१८	अंतर	अतर
४०७१	६	पराधनि	पराधीन	४२१३	१४	मुक्तराज्य	मुक्तराज्य
४०७४	२५	कताहा है	कहाता है	४२१८	२०	माग में	लाग में
४०७७	२२	विष दड है	विष दंड है	४२२६	१२	छिस्ति२लदाव	छात्ति२लदाव
				४२२७	१७	बहुपुत	बहुपुट
,,	,,	छोट होवैं	छोटे होवैं	४२३२	१२	सगहमना	सहगमना
४०९१	२५	केसवाला	केसवाली	४२३६	२३	नहा मालूम	नहीं मालूम
४०९५	१५	१५आराग	१५अराग	४२४७	३	ताबूलकार	तांबूलकार
४१०१	२३	सम्माकोमिटाओ	उसकोमिटाओ	४२५८	२९	खाली गय	खाली गये
४१०३	१७	पावरा	पावरी	,,	२८	निरर्थकहागया	निरर्थकहीगया
४१०३	२७	माधवसिंहने	माधवसिंहके पिता जालमसिंहने	४२६४	१७	वर्णसेसंबधहै	वर्ण संबंध है
४१११	७	आप्लल	आप्लव	४२६५	९	कालपलल	कोलपलल
४११८	२४	कञ्चन के	कज्जल के	४२६६	८	बुन्द वितजि	बुन्दिय विताजि
४११९	१९	शुडमस्तकके	शुंडसेमस्तकके	४२७४	१५	अत्मस्वप	आत्मस्वप
४१२०	१३	१शुडके	१शुंड के	४२७६	१४	प्रकृत भव	प्रकृत भव
४१२१	२७	जोन्हीकभर	जो भीक भर	४२८५	३	आयुप्रवीय	आयउ प्रवीन
४१२४	१	झल्ल तलाट	गल्ल तलाट	४२९२	४	परन बनाय	पूरन बनाय
४१३१	१	अंचभयो	अचंभयो	४३१०	१५	वसु भरि	वसु भूरि
४१३३	२३	गोलाकरनाच	गोलाकारनाच	४३२४	१३	सनपात	सेनपात
४१३६	२७	बोध होताहै	बाध होता है	४३२७	१४	द्विजनन	द्विज जनन
४१५९	१९	छटिवर्गाचियों	छोटीवर्गाचियों	४३३१	१५	ताजेजेके	ताजेके
४१६१	१५	चित्र८वल्लैं	चित्रद्वुल्लैं	,,	२०	गढकै रईस	गढकेर ईस
४१६५	१०	द्वै२ग३नी७	द्वैद्वै२ग३नी७	४३४१	२४	कपमहँ	कंपमहँ
४१७०	२६	धुरको	धुरेको	४३५४	२२	भाडपुनि	भांडपुनि
४१७५	९	पेठेसत्कृत	पैठे सत्कृत	४३६१	२१	सिहको	सिंहको
४१८३	२६	अटेरेने	अटेरन	४३६२	१४	ग्रतासुमई	गतासुभई
४१८४	१६	समीरकाप्रदेश	समीपकाप्रदेश	४३६६	२	[illegible]	